Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

INDIA TODAY

1991 Sep-Dec

G K V LIB
HARDWAR

078606
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT-1302.

078 606

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

30 सितंबर 1991 11 रुपए

इंडिया टुडे

संपूर्ण समाचार पत्रिका

सोवियत संघ का बदलता
पासवान: एक और कीर्तिमान
उच्चवर्गों की बढ़ती उपेक्षा

078606

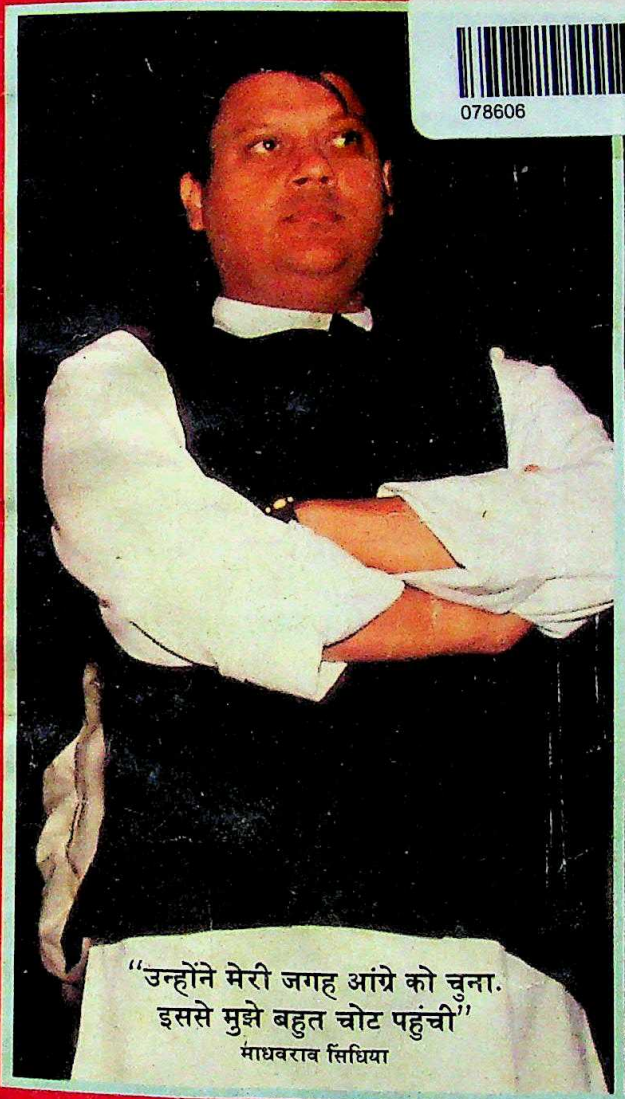

"उन्होंने मेरी जगह आंग्रे को चुना. इससे मुझे बहुत चोट पहुंची"
माधवराव सिंधिया

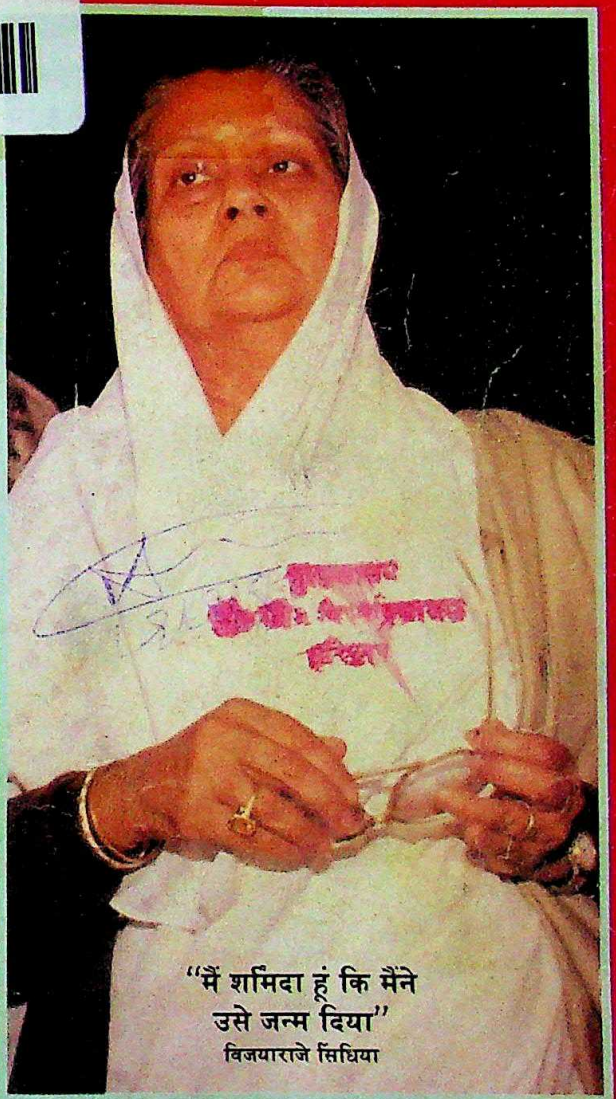

"मैं शर्मिंदा हूं कि मैंने उसे जन्म दिया"
विजयाराजे सिंधिया

सिंधिया बनाम सिंधिया

घराने में घमासान

करीब 1,000 करोड़ रु. मूल्य की जायदाद पर मां-बेटे के दावों, और अहं की टकराहट से दो प्रमुख राजनैतिक दलों की राजनीति में भी उथलपुथल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिव लाइफ़ किंगसाइज़

FOUR SQUARE
KINGS

चेतावनी : सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है
STATUTORY WARNING : CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

आखिरी कश तक वही भरपूर स्वाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घराने में घमासान

मां विजया राजे सिंधिया और बेटे माधवराव सिंधिया का घरेलू झगड़ा जारी है. पर दोनों के दो प्रतिद्वंद्वी दलों में शिखर पर होने के कारण यह झगड़ा और जटिल हो गया है. इस झगड़े का अंदरूनी ब्यौरा और मां, बेटे से बातचीत भी.

आवरण कथा 14

भूमिका की तलाश में

सभी प्रमुख पार्टियां उलझन में हैं. रण-नीति के अभाव में इंका को गांधी परिवार के करिश्मे की तलाश है तो जनता दल परस्पर झगड़ते नेताओं के पचड़े में टूट रहा है, वामपंथी साम्यवाद के प्रेत को जगा रहे हैं, तो भाजपा मंदिर के बवंडर में झूल रही है.

खास रपट.....26

उम्रदराजों की बढ़ती उपेक्षा

तेजी से हो रहे शहरीकरण के कारण परंपरागत मूल्यों में भारी बदलाव आ गया है. नतीजतन, उम्रदराजों की बढ़ती आबादी के सामने कई समस्याएं खड़ी हो गई हैं. समुचित आदर न मिलने से वे अपनी प्राथमिकताओं पर फिर से सोचने लग गए हैं.

विशेष लेख.....40

बिखराव और बदलाव

महज एक नाटकीय पखवाड़े के भीतर लोकतांत्रिक ताकतों ने महाशक्ति माने जाने वाले देश की जिंदगी में पूरी तरह रद्दोबदल कर डाला. इंडिया टुडे की टीम बाल्टिक और उक्रेन से होते हुए इस टूटते-बिखरते देश से गुजरी तो उसे भारत वाली स्थिति ही दिखी.

खास रपट.....55

फैलता नासूर

आतंकवाद अब केवल पंजाब या कश्मीर या असम की सीमाओं में ही सिमटा नहीं रहा है. इसका नासूर अब उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान जैसे अब तक अछूते राज्यों में भी फैल गया है. इन राज्यों में इसकी गतिविधियों पर एक नजर.

विशेष लेख.....64

वंचितों को वरदान

बिहार के कोयला क्षेत्र में आजकल एक रेलगाड़ी ने आशा का संचार कर दिया है. जीवन रेखा एक्सप्रेस नामक यह गाड़ी घुमंतू अस्पताल है जिसका मकसद ज्यादा से ज्यादा लोगों तक चिकित्सा सुविधा पहुंचना है. पर इसमें कई खामियां भी दिखीं.

विशेष लेख.....72

कसौटी 7
तेवर 8
राजरंग 10
हिंदोस्तां हमारा 12
आवरण कथा
सिंधिया बनाम सिंधिया:
घराने में घमासान 14
खास रपट
लालू प्रसाद यादव:
खतरे की घंटी बजी 24
राष्ट्रीय पार्टियां:
भूमिका की तलाश में 26
आजकल
महेंद्र सिंह टिकैत
टिक नहीं पाई दोस्ती 29
मध्य प्रदेश: कसती नकेल 30
दिल्ली पुलिस: काली करतूतें 35
दिल्ली: हितों पर हमला 37
सनद रहे 38
विशेष लेख
उम्रदराजों की बढ़ती उपेक्षा 40
व्यापार चक्र 48
कारोबार
शेयर बाजार 50
खास रपट
मिशनरी:
बुढ़ापे में वनवास का सदमा 51
खास रपट
सोवियत संघ:
बिखराव और बदलाव 55
विशेष लेख
आतंकवाद: फैलता नासूर 64
जीवन रेखा एक्सप्रेस:
वंचितों को वरदान 72
पड़ताल
रामविलास पासवान:
एक और कीर्तिमान 77
कहानी 80
किताबें 84
परदे के उस पार 86
चर्चित चेहरे 88

आवरण: शरद सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्या दीवार का यह हाल आपकी सुबह की ाय का स्वाद फीका नहीं कर देता?

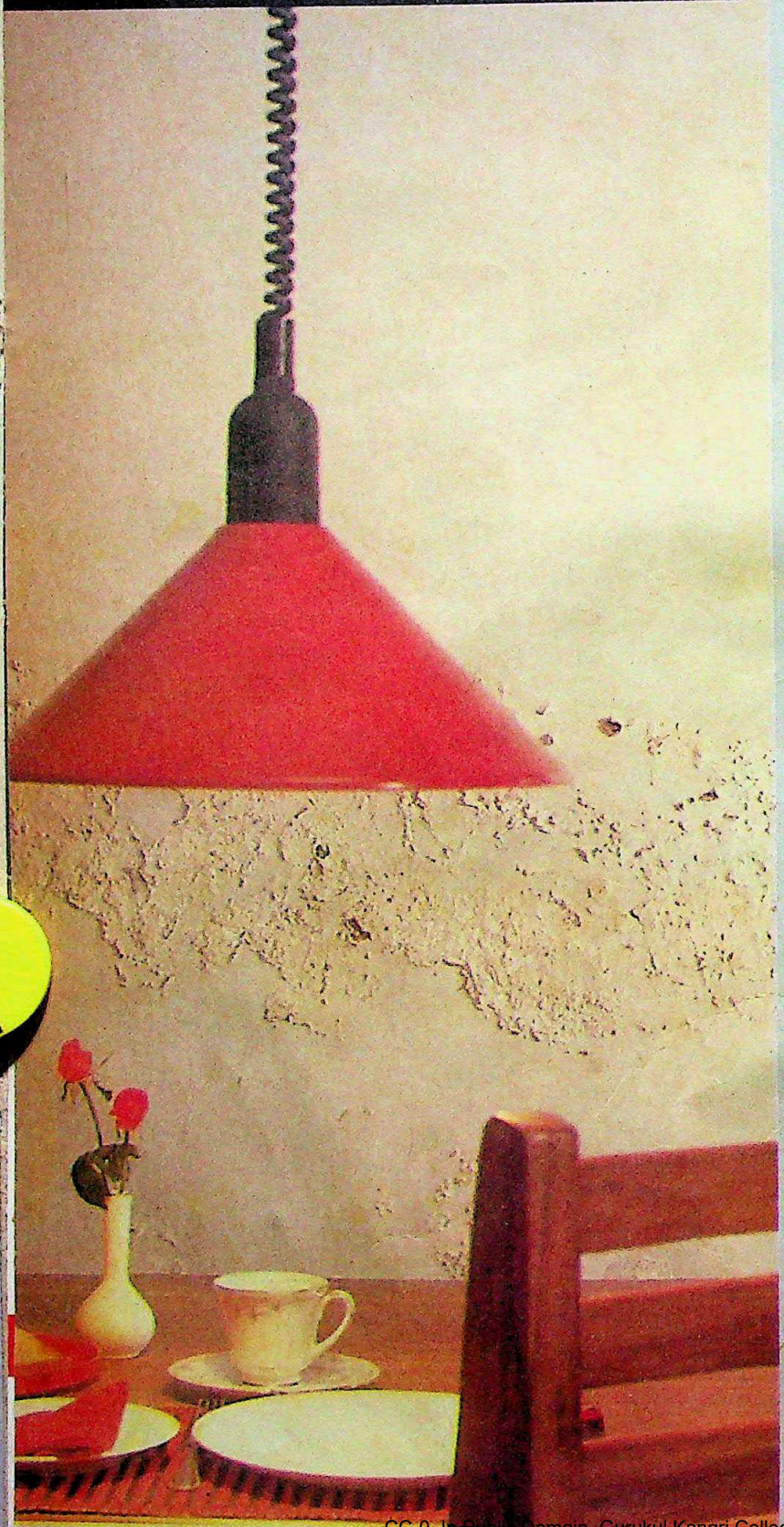

कभी घर की दीवारों को देखकर आपको कितनी खुशी होती थी। और अब....एक अजीब सी झल्लाहट। गीले गन्दे दाग़-धब्बोंऔर उखड़ते पेन्ट ने क्या हाल बना रखा है दीवारों का !

मगर अब ऐसी परेशानियों से निपटने का एक सीधा, सरल उपाय है – जे पी गोल्ड पेन्ट्स।

जे पी गोल्ड पेन्ट्स पेश करते हैं उत्कृष्ट पेन्ट की एक नयी, सम्पूर्ण रेंज। आपकी पेन्ट सम्बन्धी हर ज़रूरत पूरी करने के लिए।

इसमें घर की बाहरी दीवारों पर लगने वाले, मौसम से बेअसर, उच्च क्वॉलिटी के पेन्ट हैं, जो धूप और बरसात से दीवारों को सुरक्षित रखते हैं। साथ में घर के अन्दर की दीवारों पर लगने वाले 'वॉशेबल' पेन्ट भी। जिनके प्रयोग से दीवारों पर लगे दाग-धब्बे पल भर में पानी से साफ हो जाएँ।

यानी आपका घर, बाहर और भीतर से सालों-साल सुन्दर और आकर्षक बना रहे।

साथ में पुरानी सतह की मरम्मत के लिए विशेष उत्पादों की एक बेहतरीन रेंज। जिसमें गीले धब्बे, दीवारों में दरार और उखड़ते पेन्ट जैसी शिकायतों को दूर करने के अनेक उपाय हैं।

अपनी दीवारों को दीजिए, एक सुनहरा स्पर्श।

अगली बार जब आपको पेन्ट सम्बन्धी कोई ज़रूरत हो, तो बस एक नाम याद रखिए – जे पी गोल्ड पेन्ट्स। एक जीवन-भर का भरोसा।

Jaypee Gold Paints

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सीमेंट पेन्ट: गोल्डसेम सुप्रीम, गोल्डसेम **टेक्सचर्ड पेन्ट:** गोल्डटेक्स मैट, सुप्रीम एलिगेन्स **एक्रिलिक ड्राई डिस्टेम्पर :** सुपर एक्रिल **एक्रिलिक वॉशेबल डिस्टेम्पर :** स्टोक्स **सतह मरम्मत के लिए:** वाटरटाईट, मास्टर पाइपर, मास्टर पीकोट, मास्टर मैन, मास्टर वीर, मास्टर मिक्स

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमर के दर्द को रुकावट मत बनने दो!

हर रोज़, सुबह-शाम, सुख-दुःख के बीच घर गृहस्थी चलाने में जो आनन्द है इसे एक गृहिणी, एक माँ ही जान सकती है. प्यार-दुलार का संसार. इसमें ज़रा भी अड़चन नहीं आनी चाहिए. तो फिर कमर के दर्द को दिन पर क्यों हावी होने देते हो? हमेशा घर में 'मूव' रखिए.

3 तरह असरकारक

जोड़ों के ज़ड़ तक जाएँ

'मूव' में है प्राकृतिक तेल का असरकारक मिश्रण, जो त्वचा से होकर जोड़ों में दर्द की जड़ तक पहुँच जाता है.

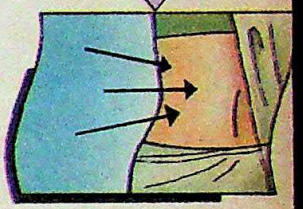

जल्द असर करने वाला

'मूव' अपने 'ऑयल ऑफ विन्टरग्रीन' और अन्य कुदरती तेलों से - जो शक्तिदायक लाभकर रस है, तुरन्त ही रक्त का प्रवाह बढ़ाता है. जोड़ों के बीच का चिकना तरल वापस आ जाता है. आपको मिलता है, जल्द आराम.

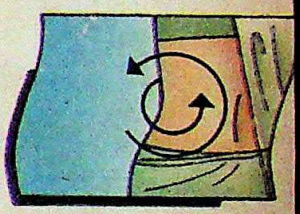

अधिक समय तक आराम दिलाए

'मूव' के मलते ही, उसका बेजोड़ फार्मूले वाला 'बेस' प्राकृतिक तेलों का स्थिर प्रवाह करता है, जो प्रभावित क्षेत्र को अधिक समय के लिए गर्म रखता है, बिना त्वचा को जलन पहुँचाये और आपको फिर से मिलती है वही चुस्ती-फुर्ती.

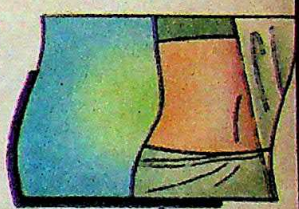

मूव

जल्द राहत, जल्द आराम

PARAS PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
Jitendra Chambers, Ashram Road, AHMEDABAD 380 014.

Interact:PPPL:523 D Hin.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का अभिमान. ब्रिटेन में सम्मान.

बी पी एल कलर टेलीविज़न. लाखों भारतीय घरों का जगमगाता सितारा. अब बन गया है अंग्रेजों की आंखों का तारा. ब्रिटेन में इसका निर्यात होने के साथ-साथ इसे ब्रिटेन की जानी-मानी 'व्हाट वीडियो' मैगज़ीन की ओर से प्रतिष्ठित सर्वोत्तम टी वी एवॉर्ड मिलने का गौरव भी हासिल हुआ है. यही नहीं, इसे ब्रिटिश टेस्टहाउस द्वारा ब्रिटिश स्तर के अनुरूप होने की मान्यता भी प्रदान की गई है. बी पी एल ही एकमात्र भारतीय कंपनी है जिसने कुछ ही महीनों में ब्रिटेन को 25,000 से भी अधिक सैट निर्यात किए हैं. आज बी पी एल अपनी इस निर्यात बिक्री को दुगुनी यानी 5,000 से 10,000 प्रतिमाह तक बढ़ाने के लिए पूरी तरह तैयार है. तो अब, आप भी अपनाइए भारत में अंतर्राष्ट्रीय स्तर की यही बी पी एल क्वालिटी जो गौरव है हर भारतीय का... और जिसकी उत्कृष्टता को अंग्रेज़ों ने भी सर-आंखों पर बिठाया।

अपनाइए उसी कलर टीवी को, निर्यात करते हैं हम जिसको.

बी पी एल-टीवी

सदैव सर्वोत्तम!

KAMERAD-NEWS-BPL-106-91 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐतिहासिक जीत

'टूटता सपना, सिकुड़ती सल्तनत' (आवरण कथा, 15 सितंबर) पढ़ी. सोवियत संघ में तख्तापलट के नाकाम होने और राष्ट्रपति गोर्बाचेव के पुनः सत्ता संभालने से पूरी दुनिया ने चैन की सांस ली है. सोवियत संघ में खुलेपन, उदारवाद और प्रजातंत्र की यह जीत सचमुच ऐतिहासिक है और इसके लिए सोवियत जनता की जितनी भी तारीफ की जाए, कम है.

सागर (म.प्र.) **विपिन खरे**

फैसला जनता पर छोड़ें

'सोनिया के नाम पर सियासत' (आवरण कथा, 31 अगस्त) पढ़ी. राजनीति में उनके आने के सवाल पर बेकार ही हंगामा खड़ा हुआ है. वे भारत की नागरिक हैं और इच्छा होने पर राजनीति में आने का उन्हें पूरा हक है. उन्हें अनुभवहीन या विदेशी जानकर राजनीति के अयोग्य ठहराना एकदम अनुचित है क्योंकि राजनीति में आने के लिए अंततः जनता के पास ही जाना होगा और यह फैसला जनता के हाथ ही छोड़ देना चाहिए.

पटना (बिहार) **पंकज**

■ सोनिया को राजनीति में लाने की जो पुरजोर कोशिश की जा रही है इसमें कुछ लोगों का मकसद ईमानदारी भरा है तो कुछ लोगों का भावनात्मक रूप से ब्लैकमेल करके अपना प्रभाव जमाने का. इस वक्त सोनिया को जरूरत है सूझबूझ और विवेक की, जिससे ऐसे लोगों को पहचानकर सही निर्णय ले सकें.

जोधपुर (राज.) **मेरी थॉमस**

■ आवरण कथा पढ़कर खेद हुआ. सत्ता के चंद ठेकेदार अपने कुछ राजनैतिक स्वार्थों के लिए देश की बागडोर अनुभवहीन हाथों में सौंपने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं, वह भी सोनिया की अनिच्छा के बावजूद.

यमुना नगर (हरियाणा) **विशाल जैन**

■ सोनिया पहले ही इंका अध्यक्ष पद अस्वीकार कर राजनीति में न आने का साफ संकेत दे चुकी हैं. लेकिन नेहरू-गांधी नाम पर कांग्रेसियों को मुफ्त की खाने की जो आदत पड़ी है, वह छूटती नजर नहीं आ रही.

उज्जैन (म.प्र.) **हरिशंकर एन. उपाध्याय**

नेहरूवाद की देन

'तर्क-वितर्क' स्तंभ (31 अगस्त) अच्छा लगा. दरअसल कश्मीर और पंजाब की समस्याएं सामान्यतः भारत की राष्ट्रीय एकता और विशेषकर अल्पसंख्यकों की विमुखता की

सोवियत संघ में आए बदलावों के प्रति भारत सरकार का रवैया अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा गिराने वाला है. मंडल-कमंडल जैसे मुद्दों पर जमीन-आसमान एक कर देने वाला विपक्ष भी इतने बड़े मसले पर चुप्पी साधे रहा. यह हैरत की बात है.

उज्जैन (म.प्र.) **महेशचंद्र जैन**

वर्ष: 5, अंक: 22,
16-30 सितंबर 1991

● **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3315801-4, टेलेक्स: 31-61545 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. **ग्राहकी चंदा भेजें:** इंडिया टुडे (हिंदी), पो.बॉक्स 114, नई दिल्ली-110001 ● **सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे, एफ-14, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुमेट, नई दिल्ली. ● **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, मुंबई. ● **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568446, 579037, 579080, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016. फोन: 225398, 221922, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता
● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनियंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित

समस्याएं हैं. इन दोनों समस्याओं का सामान्य कारण नेहरूवादी सामाजिक मॉडल में निहित है जो 1979 के बाद के भारत में एक स्वच्छ, कुशल और न्यायपूर्ण राजनैतिक व आर्थिक जिंदगी कायम करने में असफल रहा है. इसका विशेष कारण 1947 में भारत के सांप्रदायिक विभाजन और नेहरूवादी मॉडल की पुनरुत्थानवादी संस्कृति में मौजूद है. भारत में हिंदू रूढ़िवाद के जोर पकड़ने पर कश्मीर और पंजाब में मुस्लिम व सिख रूढ़िवाद का उभरना और अलगाववाद का जन्म लेना तर्कसंगत परिणाम है.

साम्बा (जम्मू-कश्मीर) **कुलभूषण सिंह**

■ 'तर्क-वितर्क' में पी.ए. रोशा के विचार बहुत सटीक लगे. यह तो सभी जानते हैं कि कश्मीर की मौजूदा स्थिति की जिम्मेदारी कांग्रेसी सरकार की है. अनुच्छेद 370 को समाप्त कर देना चाहिए और देश के दूसरे भागों से आकर जो लोग वहां बसना चाहते हैं उन्हें इसकी इजाजत दे देनी चाहिए. पाकिस्तानी घुसपैठ रोकने के लिए अब बातचीत से हल नहीं निकलने वाला. इसके लिए देर-सवेर शस्त्रों का सहारा लेना ही पड़ेगा.

मथुरा (उ.प्र.) **त्रिलोकशंकर गुप्ता**

संरक्षण से समस्या

अब सचमुच समय आ गया है कि उद्योगपति 'स्पर्धा में टिकना सीखें' (कसौटी, 31 अगस्त). अर्थजगत से जुड़े हर व्यक्ति को अब भलीभांति समझ लेना चाहिए कि जो तैरना नहीं सीखेगा वह निश्चित ही डूबेगा. लघु उद्योगों को दिया जाने वाला संरक्षण हमारी अर्थव्यवस्था के लिए काफी विनाशकारी साबित हुआ है. लघु उद्योग सरकारी पोषण से कभी विकसित नहीं हो सकते बल्कि और अधिक पंगु हो जाएंगे.

कलकत्ता (प. बंगाल) **आलोक खटेड़**

टूटना ही नियति

'अपना-अपना रोना' (31 अगस्त) जनता दल में फैले अंतर्विरोध को उजागर करता है. विभिन्न दलों को मिलाकर बनाए गए जनता दल के इस हश्र से कोई हैरत नहीं हुई. परिस्थितिवश इसने सत्ता तो हासिल कर ली थी लेकिन स्पष्ट नीतियों के अभाव और भीतरी मतभेदों के कारण यह सत्ता संचालित करने में असफल रहा.

बरेली (उ.प्र.) **कुलविंदर सिंह**

मिलकर कोशिश करें

खास रपट 'सिर्फ जबानी जमा-खर्च' (31

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त) पढ़ी. यह दुर्भाग्य ही है कि दुनिया में भारत की साख निरंतर घट रही है और ऐसे राष्ट्रीय संकट के क्षणों में भी विपक्षी दल वोट की राजनीति करने पर तुले हैं. हर वक्त आंदोलन को तत्पर किस विपक्षी दल का नेता यह दावा कर सकता है कि बिना कड़े आर्थिक अनुशासन का सहारा लिए वह देश को आर्थिक दिवालियेपन की कगार से आर्थिक समृद्धि की ऊंचाइयों पर ले जा सकता है. यदि किसी के पास ऐसी जादू की छड़ी नहीं है, तो क्यों नहीं देश की बीमार अर्थव्यवस्था के उपचारार्थ सम्मिलित प्रयत्न किए जाते?

भोपाल (म.प्र.) नंद कुमार सनमुखानी

पहले क्यों नहीं संभले

'आजकल' में 'लापरवाही का फल' और 'मिट्टी में मिला जीवन' (31 अगस्त) पढ़े. मोवाड में बाढ़पीड़ित 500 परिवारों या उनके संबंधियों को 15-15 हजार रु. सहायता राशि व 28 लाख रु. अनुदान देने की घोषणा हुई. यह राशि 1 करोड़ 3 लाख रु. है. यदि वहां की जनता की समस्याओं के मद्देनजर सुरक्षा दीवार बनाने में यह रकम खर्च की जाती तो इतने विनाश से बचा जा सकता था.

इंदौर (म.प्र.) मृत्युंजय राही

अधिकारों का हनन

'कचूमर निकालती कीमतें' (31 अगस्त) असल में नागरिकों के मौलिक अधिकारों का हनन है. मध्यम वर्ग के लिए, जो बहुत मुश्किल से अपने वेतन से पत्र-पत्रिकाओं का खर्च निकालता है, अब उन्हें खरीदना असंभव होता जा रहा है. आखिर यही होगा कि पत्र-पत्रिकाएं मांगकर पढ़ो, खरीदकर नहीं.

सीहोर (म.प्र.) शशिभूषण श्रीवास्तव

घोर अभिशाप

'माफिया की दहशत तले' (31 अगस्त) पढ़ा. राजनीति में अपराधी प्रवृत्ति के लोगों का आना न सिर्फ राजनैतिक मूल्यों के लिए बल्कि प्रजातांत्रिक व्यवस्था के लिए भी एक घोर अभिशाप है. डी.पी. यादव जैसे लोग नेता की छवि को धूमिल करते हैं और राष्ट्र को राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक हर मोर्चे पर पंगु बना दिया करते हैं.

पटना (बिहार) पूनम शर्मा

■ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बधाई के पात्र हैं जिन्होंने यादव जैसे हिस्ट्रीशीटर नेता की संपत्ति को जब्त करने का साहस दिखाया. राजनीति का कवच पहनकर ये लोग कौन-सी करतूत नहीं करते. आज जरूरत ऐसे मुख्यमंत्रियों की है, जो समाज और राजनीति को प्रदूषित करने वाले ऐसे नेताओं को बेनकाब करें.

अल्मोड़ा (उ.प्र.) जीवन सिंह

अजलान शाह हॉकी प्रतियोगिता में 6 वर्षों बाद भारत की जीत भारतीय टीम के आत्मविश्वास और प्रशिक्षक बालकिशन के कुशल नेतृत्व का परिचायक है. भारत को यूरोपीय शैली से खेलने वाली टीमों— ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी व हॉलैंड से निबटने की

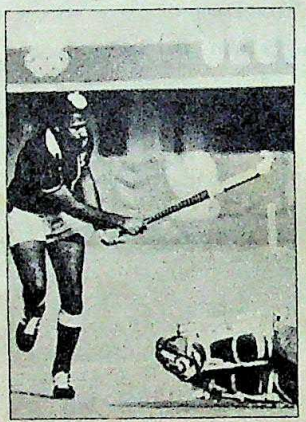

तैयारी करनी होगी, जिनके खिलाड़ियों का खेल कौशल व दमखम भारतीय खिलाड़ियों की अपेक्षा अधिक है.

बिलासपुर (म.प्र.) नवीन अरोरा

भारत की जीत निश्चय ही भारतीय हॉकी के सुखद क्षणों में से एक है. हमारे खिलाड़ियों ने जिस प्रकार टीम भावना से खेलते हुए प्रतियोगिता में अपनी जीत दर्ज की, वह उनके उच्च मनोबल का प्रतीक है.

बिसाऊ (राज.) देवेंद्र सिंह चौहान

आत्मविश्वास लौटा

'जीत से बढ़ा मनोबल' (31 अगस्त) अच्छा लगा. लंबी और काली रात के बाद भारतीय हॉकी के लिए सुनहरे दिनों की पहली किरण के रूप में इपोह की जीत ने प्रसन्न कर दिया. इपोह की जीत ने दिखा दिया की हमारी टीम में सब कुछ था. कमी थी तो सिर्फ आत्मविश्वास की, जो अब पूरी होती दिखती है.

बालाघाट (म.प्र.) आशुतोष राजवैद्य

■ भारतीय हॉकी में सुधार अवश्य हुआ है किंतु इतना नहीं कि यूरोपियन शैली में तेज-तर्रार खेलने वाले देशों की टीम को हरा सके. अतः असली परीक्षा की घड़ी तो तब होगी जब भारतीय हॉकी टीम विश्वकप में अपना किससे कहीं अच्छा प्रदर्शन दोहरा सकेगी.

उज्जैन (म.प्र.) चंद्रशेखर शर्मा

■ अजलान शाह हॉकी प्रतियोगिता जीतना कोई गौरव की बात नहीं है. इसमें सिर्फ पाकिस्तान की टीम ही टक्कर की थी. हमारी टीम की गोल बनाने की दर भी कम थी. जब हम इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी आदि देशों को हरा सकेंगे तभी विश्व स्तर की हॉकी टीम में शुमार हो सकते हैं.

सीतामढ़ी (बिहार) केदारनाथ मिश्र

उपेक्षा क्यों?

'स्टिक का नया जादूगर' (31 अगस्त) में परगट सिंह पर लेख पढ़कर उनके बारे में काफी कुछ जानने का मौका मिला. पर एक प्रश्न मन में उठता है कि क्रिकेट की तरह भारत में हॉकी को क्यों नहीं गंभीरता से लिया जाता? क्या हॉकी के खिलाड़ी इनसान नहीं होते या फिर वह उनसे कम मेहनत करते हैं. तब फिर क्यों हॉकी के खिलाड़ियों को गावसकर, कपिल या तेंडुलकर जैसा सम्मान और पुरस्कार तथा मेहनताना नहीं मिलता?

बरेली (उ.प्र.) राजेश कुमार

यह भी एक अपराध

'आजकल' में 'दादा बाहर' (31 अगस्त) पढ़कर लगा कि जेठमलानी कानून के ज्ञाता के रूप में भले ही सराहनीय हों लेकिन दुर्दांत अपराधियों की सहायता करके एक तरह का अपराध ही कर रहे हैं. इसे पैसे की हवस ही कहा जाएगा.

पूर्णिया (बिहार) मुकेश रोशन कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत घटनाओं से सबक

गणी रेखांकन: अजीत नैनन

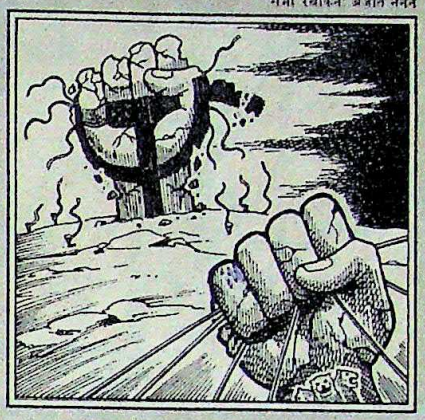

सोवियत संघ में इन दिनों परिवर्तन की जो आंधी चल रही है उससे भारत सबक ले सकता है. वहां सैद्धांतिक आग्रहों-दुराग्रहों और प्रचार हथकंडों की जगह इन दिनों समझदारी भरा यथार्थवादी रवैया अपनाया जा रहा है. विविधतापूर्ण आबादी वाले विशाल इलाके को बोल्शेविक विचारधारा के तहत साम्यवादी शासन तंत्र के अधीन एकजुट रखा गया था. लेकिन इस सैद्धांतिक बंधन के ढीला होते ही हर गणराज्य ने अपनी-अपनी राह चुन ली.

अब वास्तविक संघीय ढांचे के तहत एक नए संघ के निर्माण की जो कोशिश चल रही है वह उन दूसरे देशों, खासकर भारत, के लिए एक उदाहरण बन सकती है जो निरंतर क्षेत्रीय और जातीय तनाव झेलते रहते हैं. गोर्बाचेव और उनके साथी देश को नीचे से पुनर्गठित करने की जीवंत कोशिश कर रहे हैं. और इस कोशिश से उन तत्वों को पुनःपरिभाषित किया जा रहा है जिनसे किसी राष्ट्र का निर्माण होता है.

भारत भी सोवियत संघ की तरह विविधताओं वाला देश है. लेकिन यह देश सोवियत संघ से इस मायने में एक कदम आगे रहा कि इसने लोकतंत्र, और भाषायी आकांक्षाओं के सम्मान के जरिए राष्ट्र को एकजुट रखा. लेकिन कश्मीर, पंजाब, असम, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और बिहार के कुछ इलाकों ने उजागर कर दिया है कि भारत में क्षेत्रीय तनाव तेजी से बढ़ रहे हैं. लोकतंत्र जैसे-जैसे मजबूत होता गया, राज्यों ने ज्यादा स्वायत्तता की मांग उठानी शुरू कर दी. वे अपने संसाधन खुद जुटाने, आमदनी कराने वाली परियोजनाएं केंद्रीय हस्तक्षेप के बिना शुरू करने का अधिकार पाने और ज्यादा वित्तीय स्वायत्तता की मांग करने लगे.

परंतु मूलभूत आर्थिक सुधारों को लागू करते हुए केंद्र-राज्य संबंधों के तमाम पहलुओं को भी ध्यान में रखना होगा ताकि राज्यों को ज्यादा से ज्यादा स्वायत्तता दी जा सके. वास्तव में, 1977 का आनंदपुर साहिब प्रस्ताव (धार्मिक विचारों को छोड़कर) एक दूरदर्शितापूर्ण दस्तावेज था क्योंकि इसने अति केंद्रीकरण के खतरों को पहचानते हुए ज्यादा वास्तविक संघवाद की वकालत की थी. कोई भी देश ज्यादा सक्षम और गतिशील इसलिए नहीं होता कि इसके विविध चरित्रों वाले लोगों पर राष्ट्रवाद थोप दिया जाता है बल्कि इसलिए कि लोग आपसी समझदारी से राष्ट्र निर्माण में सहयोग देते हैं.

बदतर बदलाव की ओर

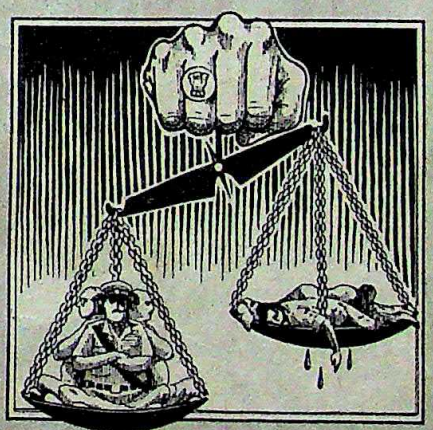

शासक दल दंड प्रक्रिया संहिता में परिवर्तन की जो कोशिश कर रहा है उसके नतीजे उन नागरिकों के लिए गंभीर हो सकते हैं जो संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन करने वाले या अपराध करने वाले सरकारी कर्मचारियों की ज्यादती के खिलाफ न्याय चाहते हैं. दुख तो यह है कि अधिकांश विपक्ष इस मामले में शासक दल का साथ दे रहा है.

इस संहिता की धारा 197 को बदलने की कोशिश की जा रही है. इस धारा के अनुसार किसी सरकारी कर्मचारी के खिलाफ किसी अदालत में कोई मुकदमा केंद्र या राज्य सरकार की इजाजत के बिना नहीं दायर किया जा सकता. इसी तरह किसी राज्य में तैनात किसी आईएएस या आईपीएस अधिकारी के खिलाफ मुकदमा संबंधित राज्य सरकार की मंजूरी के बिना नहीं दायर किया जा सकता.

नए प्रस्ताव के मुताबिक, किसी राज्य में तैनात कोई सरकारी कर्मचारी अगर कोई गलत काम तब करता है जब उस राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू हो तब उसके खिलाफ उस काम के लिए मुकदमा दायर करने की मंजूरी केंद्र से ही लेनी पड़ेगी.

प्रस्तावित परिवर्तन सरकारी कर्मचारियों को उनकी मनमानी कार्रवाइयों के लिए जवाबदेह बनाने की व्यवस्था पर ही चोट करता है. कल्पना कीजिए कि आंध्र प्रदेश में किसी आंदोलन के कारण इंका की सरकार को हटना पड़ता है और वहां राष्ट्रपति शासन लागू किया जाता है. प्रशासन और पुलिस विपक्ष का दमन करने के लिए झूठी गिरफ्तारियां, मनमानी गोलीबारी आदि का सहारा लेती है. इसके बाद राष्ट्रपति शासन खत्म करके चुनाव कराए जाते हैं और गैर-इंका पार्टियां सत्ता में आती हैं. अब यह नई सरकार उन सरकारी कर्मचारियों को दंडित करना चाहती है जिन्होंने मनमानियां की थीं. लेकिन ऐसा करने के लिए उसे केंद्र से इजाजत लेनी होगी. केंद्र में अगर इंका की सरकार हो तो वह इसकी इजाजत नहीं दे सकती है.

यानी प्रस्तावित परिवर्तनों से केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव तो बढ़ेगा ही, कानून के आगे सब बराबर हैं इस सिद्धांत की भी अवहेलना होगी. मौजूदा कानून अधिकारियों को मनमानी करने या राष्ट्रपति शासन की अवधि में अपराध करने से रोकता है. इस कानून में परिवर्तन का मतलब होगा बर्बर पुलिसवालों और भ्रष्ट नौकरशाहों को कानून के बंधनों से आजाद करना.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!
बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____
_____
डाक पता: _____
_____

मूल्य वार्षिक रु. 210/-
भुगतान का माध्यम-चैक/डिमांड ड्राफ्ट
दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास के चेक/डिमान्ड ड्राफ्ट एमआईसीआर वाले ही होना चाहिये।
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 15/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
दर व पेशकश केवल भारत में लागू।
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें।
इंडिया टुडे (हिन्दी)
पोस्ट बॉक्स नं.- 114
नई दिल्ली- 110 001

इंडिया टुडे

● इस बात से सहमत हूं कि समाज में काला धंधा करने वाले लोग हैं. पर कालाबाजारी करने वाले कौन हैं? ये विदेशी नहीं बल्कि हमारे ही यहां के काले अंग्रेज हैं. लोगों को चाहिए कि इन लोगों को पकड़ें और कहें कि 'हरामियो तुम ऐसा क्यों कर रहे हो'? ■ **बलराम जाखड़,** *राज्यों के सहकारिता मंत्रियों के सम्मेलन में*

● मैं जहां हूं वहीं खुश हूं. मैं किसी के लिए समस्या खड़ी नहीं करना चाहता. ■ **शरद पवार,** *दैनिक जागरण*

● बंगाल की मार्क्सवादी सरकार की तुलना में हमारी म.प्र. सरकार कार्यों के मामले में कई गुना बेहतर है. ■ **लालकृष्ण आडवाणी,** *नई दुनिया*

● मैं विनाश में नहीं, निर्माण में विश्वास रखता हूं. अजित सिंह कैसा निर्माण करेगा, समय बताएगा. ■ **अजित सिंह,** *आज*

● मैं देख रहा हूं कि पार्टी के कुछ नेता रिमोट कंट्रोल के जरिए पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच मतभेद पैदा करना चाहते हैं. ■ **रामसुंदर दास** (बिहार जनता दल अध्यक्ष), *हिंदुस्तान*

● प्रशासन जिस तरह से हेराफेरी में सक्रिय रहा है वह (मुख्यमंत्री) शेखावत की शह के बिना संभव नहीं है. ■ **नवल किशोर शर्मा,** (इंका नेता), *माया*

● दूरदर्शन, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय तथा सरकार को दूरदर्शन मुख्यालय के बाहर बैठा एक पानवाला चला रहा है. ■ **सरला माहेश्वरी** (माकपा सांसद), *राज्यसभा में*

● हिंदुस्तान में व्यापारी आरामतलब हो गया है. ■ **स्वराज पॉल,** *जनसत्ता*

● अरे अगर किसी और को न तैयार करो तो एकाध अपने लड़के, भाई-भतीजे को ही तैयार करके दिखलाओ और फिर जो कहना है कहो. ■ **फजील अहमद** (भारतीय बैडमिंटन संघ के अध्यक्ष), *धर्मयुग*

● मेरे नंगे पैर भागने से भारत की बेइज्जती होती है क्योंकि वहां दीनाराम को कोई नहीं जानता लेकिन भारत को सब लोग जानते हैं. बहरहाल, मेरे सामने मजबूरी है नंगे पैर भागने की. ■ **दीनाराम** (धावक), *स्वतंत्र भारत*

● मैं आयशा जुल्का हूं. जिस दिन ईश्वरीय सौंदर्य का खुलकर दीदार कराऊंगी उस दिन श्रीदेवी या जयप्रदा सभी उसके सामने घुटने टेक देंगे. ■ **आयशा जुल्का,** *नवभारत टाइम्स*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलता के नये कीर्तिमान

आई.ए.एस. परीक्षा 1990 में हिन्दी माध्यम से सर्वोच्च स्थान प्राप्त

प्रमोदकुमार तिवारी से भेंटवार्त्ता

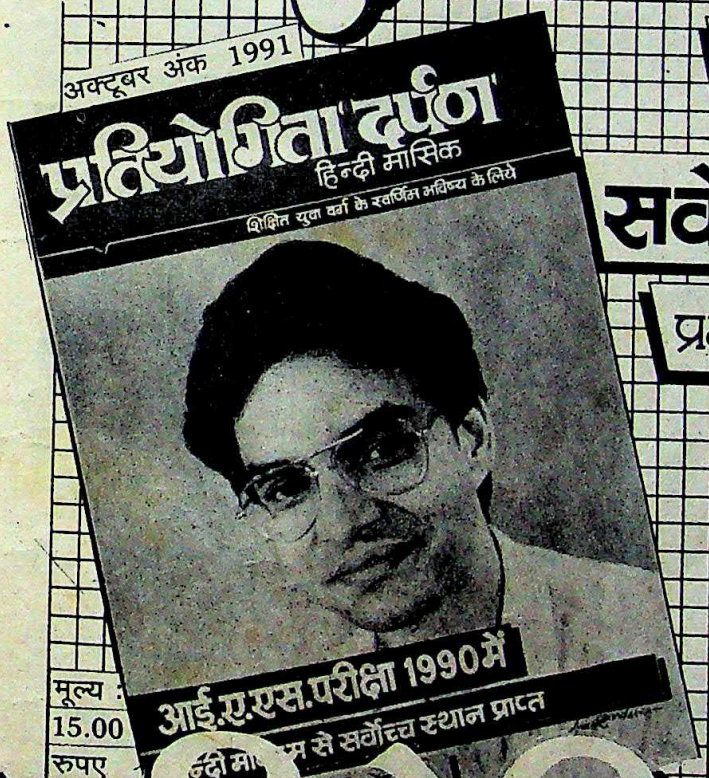

विशेष आकर्षण — **परीक्षा विशेषांक**

- ☐ राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
- ☐ भारतीय संविधान
- ☐ आर्थिक समीक्षा, विश्व परिदृश्य
- ☐ विभिन्न विषयों पर परीक्षोपयोगी लेख
- ☐ विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं के हल प्रश्न-पत्र
- ☐ विविध तथ्य
- ☐ तर्कशक्ति परीक्षा
- ☐ **साथ में सभी स्थाई स्तम्भ**

प्रतियोगिता दर्पण

हिन्दी मासिक

हर कदम आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनोखी जब्ती

● तस्करी की वस्तुओं की बरामदगी में कमी आ जाने से सीमा शुल्क के दिल्ली मुख्यालय के अधिकारियों ने अपने सभी कार्यालयों को और अधिक चौकस

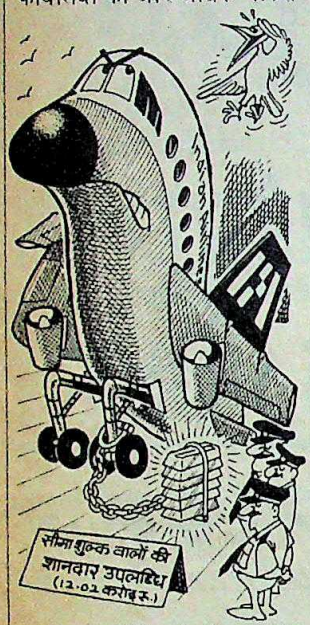

रहने का निर्देश दे दिया. सो, कलकत्ता के सुस्त सीमा शुल्क अधिकारियों ने जब उन्हें 12.028 करोड़ रु. मूल्य के सोने के बिस्कुटों की बरामदगी की सूचना दी तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा. लेकिन यह क्षणिक ही साबित हुई.

कलकत्ता के कनिष्ठ अधिकारियों ने दमदम हवाई अड्डे पर उतरे इंडियन एअरलाइंस के एक विमान के नकली चौखट से सोने के छह बिस्कुटों को पकड़ा था. लेकिन शुरुआती जश्न के बाद मुख्यालय के अधिकारियों को आशंका हुई कि सिर्फ छह बिस्कुटों की कीमत करोड़ों रु. कैसे हो सकती है. इतने सोने का मूल्य सिर्फ 2.8 लाख रु. बैठता है. क्या सोने की छड़ें ज्यादा लंबी या वजनी हैं?

दिल्ली के आका सोच-विचार कर ही रहे थे कि कलकत्ता के कर्तव्यनिष्ठ अधिकारियों ने सूचना भेजी कि उन्होंने सोना ही नहीं, विमान भी जब्त कर लिया है और सोने के मूल्य में विमान का मूल्य जोड़ दिया है. विमान को 24 घंटे बाद तभी छोड़ा गया जब मुख्यालय ने कहा कि यह बेमतलब है. लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या जब्त वस्तुओं की कीमत हमेशा उतनी ही होती है जितनी कि अधिकारी बताते हैं. अब अधिकारी देश में जब्त सोने की कीमत ठीक करने में लगे हुए हैं.

नया सत्ता-केंद्र

● इंका मुख्यालय जवाहर भवन की साज-सज्जा का काम आखिरकार पूरा हो गया और राजीव गांधी फाउंडेशन के सदस्य इस शानदार वातानुकूलित भवन में जाने के लिए पूरी तरह से तैयार बैठे हैं. अमेरिका से वापस आने पर सोनिया गांधी इसकी तीसरी मंजिल पर बने उस दफ्तर में बैठेंगी जो पहले राजीव गांधी के लिए बनाया गया था. सुमन दुबे, सैम पित्रोदा, एन.के. शेषन और सुशील नेहरू जैसे दूसरे लोग वहां अपनी कुर्सी संभालने लगे हैं.

लेकिन इस फाउंडेशन के कारण पार्टी के राष्ट्रीय छात्र संघ और सेवा दल जैसे प्रमुख संगठनों को भवन से बोरिया-बिस्तर समेटने का आदेश मिल गया है. छात्र संघ के एक नाराज सदस्य ने

सभी कार्टून: अजीत नैनन

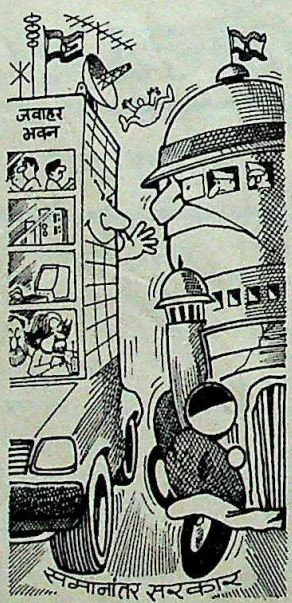

चुटकी ली, "अब शायद यहीं से समानांतर सरकार भी चलेगी."

दोनों हाथ मलाई

● भाजपा अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी की पांचों उंगलियां कई वर्षों से घी में डूबी हैं. वे ज्यादातर दिल्ली में बैठकर राजनीति की गोटियां चलने वाले

पूर्णकालिक नेता ही नहीं, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्रोफेसर भी हैं.

हाल ही में इलाहाबाद हाईकोर्ट में दायर याचिका में उन पर वर्षों से बिना पढ़ाए वेतन लेने का आरोप लगाया गया है. लेकिन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति आर.सी. मेहरोत्रा का मानना है कि जोशी ने सेवा शर्तों का कोई उल्लंघन नहीं किया है. और अपने मातहत शोध करने वाले छात्रों का उचित मार्गदर्शन करते रहे हैं.

लेकिन चूंकि जोशी देश की मुख्य विपक्षी पार्टी के अध्यक्ष हैं और प्रायः नई दिल्ली में रहते हैं, इसलिए इलाहाबाद में छात्रों के शोध कार्य में कभी-कभार ही मार्गदर्शन कर पाते होंगे. लखनऊ में अपनी पार्टी की सरकार होने के कारण जोशी की प्रोफेसरी सुरक्षित दिखती है, अलबत्ता राजधानी में गैरहाजिर रहना खतरनाक हो सकता है.

हाथ मलते रह गए

● यशवंत सिन्हा आजकल बहुत दुखी हैं. उनके मुताबिक उनके बनाए बजट प्रस्तावों को तोड़-मरोड़कर डॉ. मनमोहन सिंह ने पारित करा लिया.

पूर्व वित्तमंत्री ने गुस्से में कहा, "क्या आप विश्वास करेंगे कि उस शख्स ने मेरे बजट भाषण से कुछ अंश उड़ाकर अपने बजट भाषण में शामिल कर लिए?" मनमोहन सिंह ने सिन्हा के इस दावे पर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया कि खाद सब्सिडी पर 20 प्रतिशत की कटौती करने और निर्यात सब्सिडी की जगह आरईपी लाने की योजना उनकी थी.

सिन्हा बजट से जरा भी संतुष्ट नहीं थे. खासकर दो चीजों पर तो उन्होंने मनमोहन सिंह की जमकर खिंचाई की. उनकी मुख्य

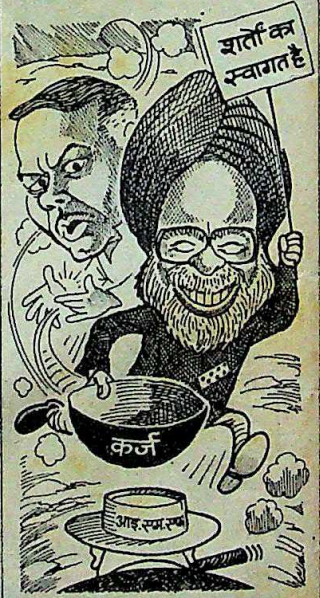

शिकायतों में एक यह थी कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के थोपे हुए अवमूल्यन को, जो आयात मुक्त अर्थव्यवस्था के लिए खतरनाक था, रोका होता.

सिन्हा के लिए यह शायद अच्छा ही रहा कि उन्हें बजट पेश करने का मौका नहीं मिला. यदि उनका यह मानना था कि वे मुद्रा कोष की शर्तों को माने बिना भारी कर्ज पा जाते तो उन्हें निराश ही होना पड़ता.

...और एक चुटकी

सांसद डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी ने हाल ही में नज्मा हेपतुल्ला से पूछा कि उन्होंने मर्सिया क्यों नहीं पढ़ा. राज्यसभा की उप सभापति ने स्पष्ट करने को कहा. स्वामी ने कहा, "सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की मृत्यु जो हो गई." हेपतुल्ला का जवाब था, "पार्टी हमारी संसद की सदस्य होती तो मैं जरूर पढ़ती."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

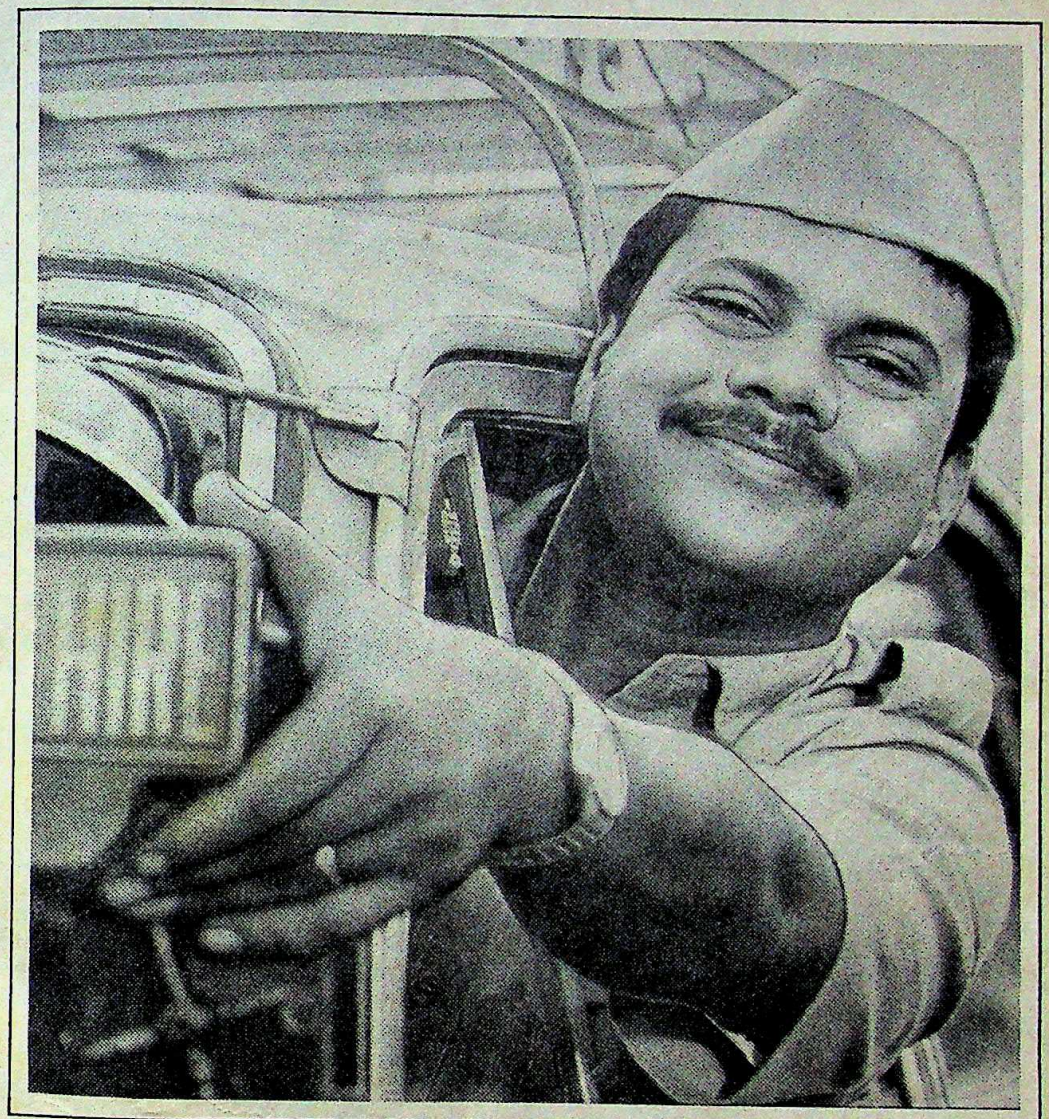

नागरिक डनलप

आगे बढ़ना। सिर्फ़ आगे बढ़ते रहना। ऊँची-नीची, पथरीली- लम्बी राहों को पार करते हुए निरन्तर बढ़ते जाना। धूप-छाँव, आँधी-पानी ... हर तरह की मुश्किलें झेलते हुए लगातार अपने रास्ते पर बढ़ता चला जाता है डनलप। इस गाँव से उस शहर ... लगातार पहुँचाता रहता है लोगों को, उनकी ज़रुरत की चीज़ों को। पूरा भरोसा, पूरी लगन के साथ। हर रोज़ एक नयी मंजिल की तलाश में डनलप का चलते रहना... आगे बढ़ते रहना... कभी नहीं रुकता।

डनलप। भारत में सबसे अधिक किस्मों के ट्रान्सपोर्ट टायर और ट्यूब के निर्माता। साईकिल, रिक्शे और बैलगाड़ियों के लिए। टू-व्हीलर, थ्री-व्हीलर और कारों के लिए। ट्रक और बसों के लिए। छोटी-छोटी ट्रक, मिनिबस आदि और जीपों के लिए। डनलप। हवाई जहाजों के टायर बनानेवाला भारत की एकमात्र कम्पनी। डनलप। आधुनिकतम कम्प्यूटर-नियन्त्रित विमान के टायरों के लिए विश्व में अनुमोदित गिनीचुनी कम्पनियों में से एक।

DUNLOP भारत को सदा आगे बढ़ाने का एक प्रण, एक समर्पण।

Campaign/DIL/265/1A /HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाकाहारी 'नागिन'

■ पिछले पखवाड़े अफवाह उड़ी एक नागिन ने अपने नाग की हत्या का बदला लेने के लिए तोरी, घीया और पालक जैसी सब्जियों को जहरीला कर दिया है. बात की शुरुआत हुई सब्जियों के पत्तों पर सांप जैसी लहरदार सफेद रेखाओं के उभरने से. एक किस्सा यह रहा कि एक नाग को सब्जियां ले जाने वाले ट्रक ने कुचल दिया. इसका बदला उसकी 'इच्छाधारी' नागिन ने इस तरह से लिया. पर असल में मौसम में हुए बदलाव से और कुछ अन्य कारणों से एक ऐसे कीड़े ने सब्जियों पर धावा बोल दिया जिसके एक-डेढ़ मिमी

सभी कार्टून: जयंतो

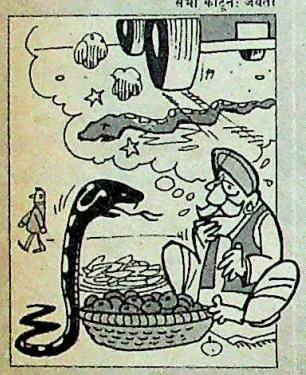

आकार वाले लारवा पत्तों में घुसकर उन्हें अंदर से खा जाते हैं और एक लहरदार खोखली रेखा बना देते हैं जो लारवा के बढ़ने के साथ-साथ नाग की तरह चौड़ी होती जाती है.

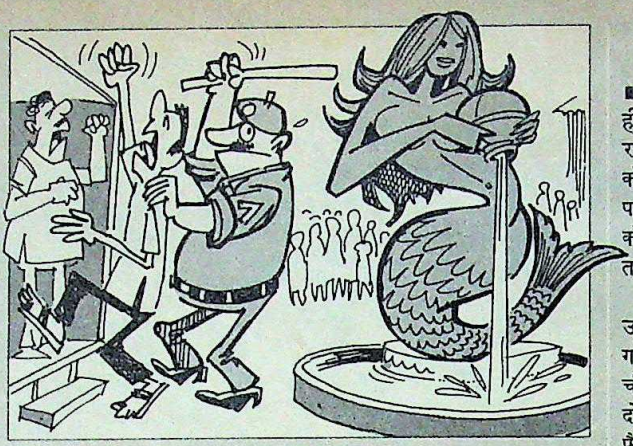

राजनीति और कला

■ **जमाना राजनीति का है इसलिए किसी को हैरानी नहीं होनी चाहिए अगर सरकारी नीतियों के अलावा सौंदर्यबोध और कलात्मक रुचियों का ठेका भी नेतागण अपनी झोली में डाल लें. इंदौर में पिछले दिनों कुछ ऐसा ही हुआ जहां स्थानीय प्रशासन ने एक चौराहे की खूबसूरती बढ़ाने के लिए मत्स्य-कन्या की एक मूर्ति लगा दी.**

आधी मछली और आधी नारी की यह प्रतिमा इस शताब्दी के शुरू में स्थानीय राजघराने द्वारा फ्रांस से आयात की गई पांच कलात्मक मूर्तियों में से थी. फव्वारे के धुंधलके के बीच खड़ी यह मूर्ति स्थानीय कलाप्रेमियों को भले ही अच्छी लगी हो लेकिन शहर की युवा कांग्रेस के नेताओं को यह फूटी आंख नहीं सुहाई. उनकी आपत्ति थी कि आसपास से गुजरने वाली महिलाओं को इसे देखकर बुरा लगेगा. लिहाजा उन्होंने इस 'शर्म' से शहर को 'मुक्ति' दिलाने के लिए मूर्ति को वहां से हटाए जाने का आंदोलन शुरू कर दिया. यह सोचकर कि इसे हटाने में प्रशासन कुछ देरी कर सकता है, उन्होंने तात्कालिक समाधान के तहत खुद ही एक तरीका ढूंढ़ निकाला. वे खादी की एक धोती लाए और मूर्ति को पहनाकर निश्चिंत हो गए.

कला पर राजनीति का यह कब्जा युवा इंकाइयों को भले ही पसंद आया हो पर स्थानीय प्रशासन ने अपनी राय नहीं बदली और धोती को फिर से हटा दिया गया. मामला यहीं नहीं रुका. प्रशासन की शिकायत पर इस चक्कर में कुछ युवा इंकाइयों को हवालात की हवा भी खानी पड़ी.

तू डाल-डाल...

■ उलटे उस्तरे से हजामत भले ही कहावत रही हो लेकिन राजस्थान के एक गांव के नाइयों को ऐसी ही परेशानी झेलनी पड़ी. बढ़ती महंगाई को देखते हुए कोशीथल के नाइयों ने कटिंग तथा शेव के रेट दोगुने कर दिए.

इधर नाइयों के दाम चढ़े और उधर पूरे गांव का पारा चढ़ गया. दुकानदारों ने अपनी सभी चीजों के दाम इन नाइयों के लिए दोगुने कर दिए. चायवालों ने भी फैसला किया कि नाइयों को दूसरों के मुकाबले दोगुने दाम पर चाय दी जाएगी. यही नहीं, मकान मालिकों ने भी नाइयों की दुकानों के भाड़े को दोगुना करने

की घोषणा कर दी. अगर कोशीथल का यह प्रयोग सफल रहता है तो उम्मीद की जानी चाहिए कि पूरे देश में कीमतों पर लगाम लगाने के लिए यही तरीका इस्तेमाल किया जाएगा.

बम का भूत

■ पुलिस विभाग के लंबे-चौड़े विज्ञापन भी आए दिन नागरिकों को उन जगहों पर भी बम ढूंढ़ने की प्रेरणा देते रहते हैं जहां बम की जगह उसकी सिर्फ कल्पना ही पहुंच सकती है. इस नई

लोककला के एक विकसित रूप का नमूना पिछले पखवाड़े दिल्ली से बरौनी जाने वाली एक रेलगाड़ी में देखने को मिला.

दिल्ली से रवाना होने के बाद यह पैसेंजर गाड़ी अभी गाजियाबाद स्टेशन पर रुकी ही थी कि किसी ने सीट के नीचे बम होने की खबर देकर सबको चौकस कर दिया. इस चौकसी के चलते ऐसी अफरातफरी मची कि लोग अपना बोरिया-बिस्तर गाड़ी में ही छोड़कर बाहर कूद गए. देखते-देखते पुलिस भी मौके पर आ पहुंची और उनके पीछे-पीछे बम निरोधक दस्ता भी आ गया. लगभग दो घंटे तक रेलगाड़ी की तलाशी के बाद आखिर असली चीज को ढूंढ़ निकाला गया. यह कांच के एक गिलास में ठूंसे गए केले के छिलकों का एक ढेर था.

सचमुच सद्व्यवहार

■ बस कंडक्टरों के दुर्व्यवहार के किस्से देश के कोने-कोने में मशहूर हैं. ऐसे में किसी बस का कोई कंडक्टर अपने यात्रियों से मीठा बोलने के साथ-साथ उनका मुंह भी मीठा करवा दे तो सुनने वालों को यकीन नहीं होगा.

पिछले पखवाड़े इंदौर में ऐसी ही अविश्वसनीय घटना घटी. पहले तो बस के यात्री यह देखकर हैरान रह गए कि कंडक्टर ने बिना पैसे लिए सबको टिकट बांट दिए. अभी वे इस पहेली को समझ भी नहीं पाए थे कि फिर एक जगह बस रोककर कंडक्टर ने सब यात्रियों को मिठाई और नाश्ता परोसना शुरू कर दिया. भौंचक यात्रियों को बात तब समझ में आई जब मुस्कराते हुए कंडक्टर ने उन्हें बताया कि वह अपने जन्मदिन की खुशी उनके साथ बांटने के लिए ऐसा कर रहा है. यह सुझाव दिए जाने पर कि उसे यह काम अपने परिवार के साथ करना चाहिए था, उसका जवाब था, "मेरे यात्री भी मेरे लिए परिवार जैसे ही हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Kingfisher presents the makings of a champion

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

From Kingfisher, a video tape on the men behind the scenes of the most thrilling moments on turf. The men who make champions. The men who ride champions. And the champions themselves.

Kingfisher presents
'Horsepower'.

The story of the Indian thoroughbred . A tape every horse racing enthusiast or sports fan would consider a collector's item.

KINGFISHER
PRESENTS
HORSEPOWER
THE STORY OF THE INDIAN THOROUGHBRED
TASTE THE EXCITEMENT

O R D E R F O R

Yes, I would like to order Kingfisher's cassette 'Horsepower', for Rs.175/- (taxes, packing and forwa included).
I herewith enclose a DD/MO payable in Bangalore (only Bangalore cheques accepted)
to: Kingfisher 'Horsepower', C/o *ONE-TO-ONE Communications Pvt. Ltd., No. 3, President Chamb 8, Richmond Road, Bangalore- 560 025. Ph: 217788.

Name..... Add.....

.....

..... Pin..... Tel.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंधिया बनाम सिंधिया

घराने

में

घमासान

मां-बेटे का संघर्ष पुराना है. मगर आज जबकि ये दोनों प्रतिद्वंद्वी दलों में शिखर पर हैं, यह और उग्र हो गया है. ब्यौरा और: विश्लेषण

—नरेंद्र कुमार सिंह

इस तरह के विरोधाभास विरले ही नजर आते हैं. विधवा मां भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेता और पार्टी की सर्वेसर्वा मानी जाने वाली त्रिमूर्ति की एक मूर्ति, और उनके एकमात्र पुत्र प्रतिद्वंद्वी पार्टी इंका के एक प्रमुख प्रकाश स्तंभ. एक, हिंदू हितों की रक्षक और राम जन्मभूमि आंदोलन के कारण राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त, तो दूसरा भाजपा को सांप्रदायिक और 'देशद्रोहियों' की टोली कहकर भाजपा विरोधियों की एकजुटता का केंद्र बिंदु बनता हुआ. यह दिलचस्प विरोधाभास ग्वालियर के पूर्व शासक परिवार के वंशज प्रस्तुत कर रहे हैं. पुराने यूनान जितनी बड़ी यह रियासत अंग्रेजी राज के दौरान उन पांच दूसरी रियासतों में शुमार थी जिन्हें 21 तोपों की सलामी का हकदार माना जाता था.

बहरहाल, देश की दो सबसे ताकतवर और प्रतिद्वंद्वी पार्टियों के सदस्य—भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, 72 वर्षीया विजया राजे सिंधिया और ऊर्जावान केंद्रीय पर्यटन व नागर विमाननमंत्री, 46 वर्षीय माधवराव सिंधिया—उस परिवार का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके हाथ में इस देश के राजनैतिक भविष्य की कुंजी जा सकती है.

यह परिवार उस समय एक बार फिर चर्चा में आ गया जब माधवराव ने भाजपा की तीखी आलोचना की और इसके जवाब में भाजपा कार्यकर्ताओं ने दिल्ली में उनके निवास पर धावा बोल दिया. भोपाल में पार्टी के एक नेता जनसभा में चीख रहे थे, "हम देशद्रोही नहीं हैं. सिंधिया के पूर्वजों ने 1857 में देश के साथ गद्दारी की थी." ग्वालियर का पूर्व राजपरिवार स्वतंत्रता की पहली लड़ाई में अंग्रेजों के साथ था. पर माधवराव इसके विरोध में कह रहे थे कि उन लोगों का इतिहास ज्ञान हास्यास्पद है. उधर, इस घटना से उनकी मां और

घटनाक्रम

दिसं. 1979	माधवराव सिंधिया इंका में शामिल पर उनकी मां जनता पार्टी में बनी रहीं.
जन. 1980	माधवराव के अमले ने आंग्रे और उनकी बेटी के खिलाफ घुसपैठ का मामला दर्ज कराया.
जून 1981	महल के खजाने की चाबियों को लेकर झगड़ा. राजमाता ने 42 दिन तक फलाहार लेने की प्रतिज्ञा की. .
मार्च 1982	राजमाता ने जयविलास महल आरएसएस द्वारा संचालित एक शिक्षा संस्थान को दान देने की घोषणा की.
अप्रै. 1982	माधवराव के आदमियों ने दरबार हॉल पर ताला जड़ दिया. पारिवारिक न्यासों के लिए कानूनी लड़ाई.
जुला. 1982	आंग्रे महल के संग्रहालय से पुरातन कलाकृतियों की चोरी के आरोप में गिरफ्तार.
अग. 1984	राजमाता ने संपत्ति के संपूर्ण बंटवारे के लिए अदालत में मुकदमा दायर किया.
मार्च 1990	भाजपा सत्ता में आई. पुलिस ने 'करोड़ों रु. के जमीन घोटाले' से संबंधित दस्तावेज बरामद करने के लिए जयविलास महल पर छापा मारा.
जन. 1990	पौत्र ज्योतिरादित्य ने दादी और पिता के खिलाफ याचिका में उन्हें पुश्तैनी संपत्ति बेचने से रोकने की मांग की.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

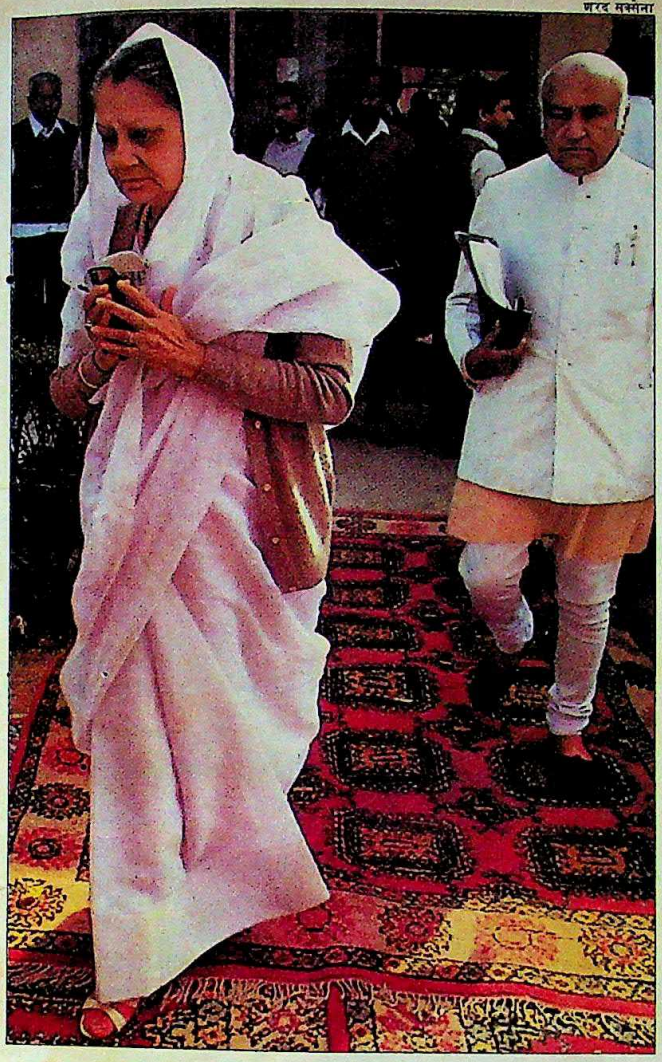

शरद सक्सेना

राजसी ठाटबाट में माधवराव (बाएं); और राजमाता के पीछे चलते आंग्रे: आमने-सामने

बहन स्तब्ध रह गईं. उनकी बहन वसुंधरा राजे सिंधिया झालावाड़ से भाजपा सांसद हैं. राजमाता ने बेटे को यह बताने के लिए फोन किया कि उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जो कुछ किया है, उससे वे कतई सहमत नहीं हैं. यह कल्पनातीत बात थी क्योंकि कई वर्षों के बाद मां ने परित्यक्त बेटे से बात की थी. परिवार के नाम पर कीचड़ उछाले जाने से राजमाता खिन्न थीं. उन्होंने कहा, "कुछ कहने के पहले उन्हें सोच लेना चाहिए था कि सिंधिया परिवार के कई लोग उनकी पार्टी में हैं."

मां-बेटे की सारी लड़ाई में मर्यादाओं को ताक पर रख दिया गया. आपसी हेलमेल की कोई मिसाल नहीं मिलती. इस लड़ाई में आंग्रे की मुख्य भूमिका रही है

चार्ट: बी.के. शर्मा

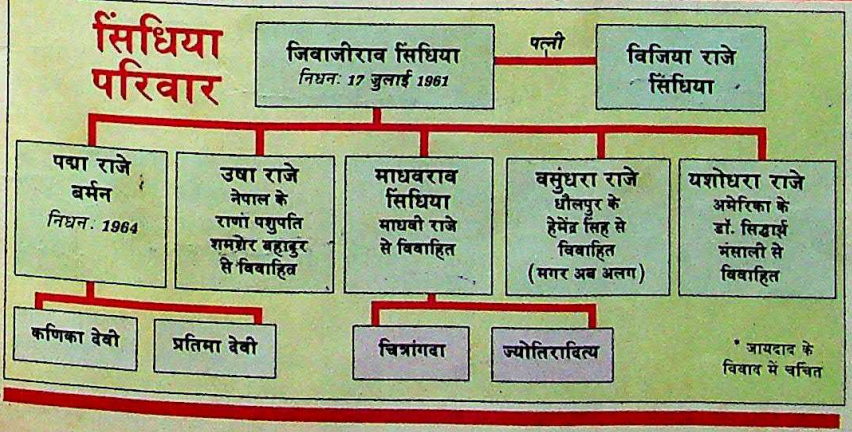

अकूत संपत्ति, अमर्यादित संघर्ष: उपरोक्त सवाल का जवाब है—नहीं. राजकुमार, राजमहल, राजकोष और राजनीति से जुड़ा यह नाटक सच्चा है. मां-बेटे की लड़ाई में सारी मर्यादाओं को ताक पर रख दिया गया. आपसी हेलमेल की कोई मिसाल नहीं मिलती. एक-दूसरे के खिलाफ बोलना, मुकदमे दायर करना और बेसिर-पैर के आरोप लगाना आम बात रही है. पूर्व शासक परिवार की अकूत संपत्ति पर कब्जे के लिए मां और बेटा वर्षों से जटिल कानूनी लड़ाई लड़ रहे हैं. और अब सिंधिया घराने की तीसरी पीढ़ी भी लड़ाई में कूद पड़ी है. पिछले साल माधवराव के बेटे, 20 वर्षीय ज्योतिरादित्य ने, जो फिलहाल हार्वर्ड में पढ़ रहे हैं, उत्तराधिकार का दावा करते हुए एक याचिका दायर की और अपने पिता और दादी द्वारा पुश्तैनी संपत्ति बेचने पर रोक लगाने की मांग की.

अब दांव पर सिंधिया परिवार की अथाह संपत्ति है. राजमाता खुद मानती हैं कि यह संपत्ति करोड़ों की है. एक अनुमान के अनुसार यह संपत्ति 1,000 करोड़ रु. मूल्य की है. इसमें सोने के जेवरात, हीरे, चांदी, पुरानी कलाकृतियां, चित्र, कालीन, झाड़फानूस, फर्नीचर, राजमहल; और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

ग्वालियर, मुंबई, पुणे, दिल्ली, उज्जैन तथा लंदन में बिखरी हुई जायदाद शामिल हैं. इमरजेंसी के दौरान कर अधिकारियों ने राजमहल पर छापा मारकर 53 क्विंटल चांदी की वस्तुएं और कई ट्रंक जेवरात बरामद किए थे. लेकिन इमरजेंसी के बाद ये चीजें वापस कर दी गईं. नई दिल्ली में ही सिंधिया परिवार के पास अनुमानतः 500 करोड़ रु. मूल्य की जायदाद है जो सिंधिया पॉटरी के नाम से जानी जाती है. मुंबई की एक अदालत को उनकी संपत्ति की सूची बनाने में चार साल लगे थे.

दांव पर सिंधिया परिवार की अकूत संपत्ति है. मां और बेटा अदना-सी चीजों के लिए भी उतनी ही ताकत से लड़ रहे हैं जितनी से दूसरी चीजों के लिए

संपत्ति जितनी विशाल है, उस पर होने वाले झगड़े उतने ही ओछे हैं. मिसाल के तौर पर, प्रशासन ने ग्वालियर का बकिंघम पैलेस कहे जाने वाले जयविलास महल के, जो 80 एकड़ में फैला हुआ है, कुछ हिस्से अदालत में पड़े मुकदमों के कारण सील कर दिए हैं. मगर तालों के खुलने, पुरानी कलाकृतियों की चोरी, संपत्ति बिक्री, जबरन कब्जा और जबरन खाली करवाने के

जयविलास महलः विवाद के केंद्र में

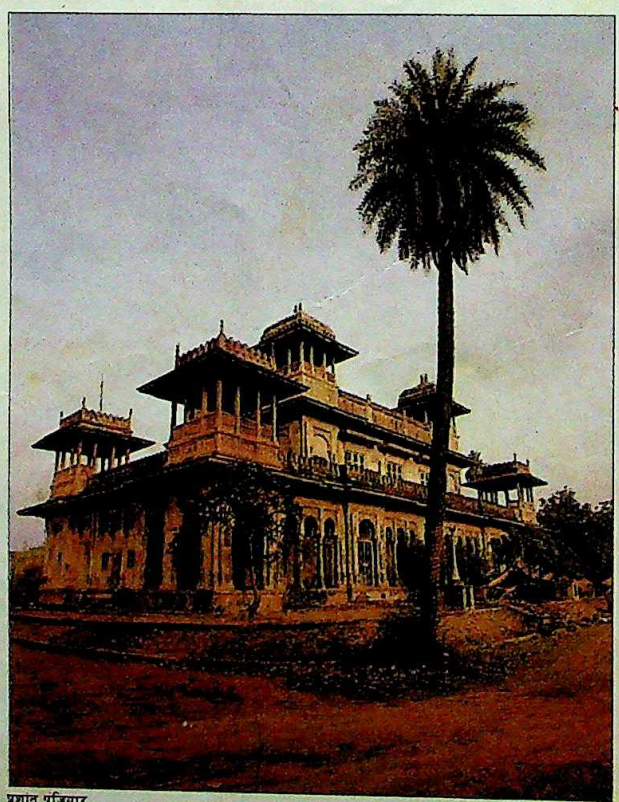
प्रशांत पंजियार

हिरणवन कोठीः संपत्ति पर टंटा

विचित्र किस्से भी कभी-कभी सुनने को मिलते हैं. जिन चीजों के नाम बंटवारे की सूची में दर्ज हैं उनमें जीभी, ऐशट्रे, पिन-कुशन, तौलिये और तकिये के कवर तक शामिल हैं.

सिंधिया परिवार जीभी और नैपकिन के लिए भी उतनी ही ताकत से लड़ रहा है जितनी कि दूसरी चीजों के लिए. इन मुकदमों को देखने वाले सुप्रीम कोर्ट के एक वकील कहते हैं, "यह भारत की सबसे बड़ी मुकदमेबाजी है." इन मामलों में अदालती शुल्क के रूप में ही भारी-भरकम रकम दी गई है. दिल्ली, मुंबई, पुणे, ग्वालियर और जबलपुर की अदालतों में 50 से अधिक मामले दायर हैं. आरोपों और प्रत्यारोपों की बौछार भी तेज रही है.

मोर्चेबंदीः पिछले साल जब भाजपा मध्य प्रदेश में सत्ता में आई तो सिंधिया राजपरिवार की लड़ाई में और तेजी आ गई. माधवराव ने अपने करीबी मित्रों से कहा कि उनकी मां उनसे राजनैतिक बदला लेने के लिए राज्य में अपने प्रभाव का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजया राजे सिंधिया

'फसाद की जड़ बहू है'

सफेद परिधान में शालीनता की मूर्ति दिखतीं राजमाता अपने नाराज बेटे का जिक्र आते ही अति भावुक हो उठती हैं. प्रमुख संवाददाता ***नरेंद्र कुमार सिंह*** *से बातचीत के दौरान वे दो बार अपने आंसुओं को काबू में न रख सकीं. बातचीत के कुछ अंश:*

- ***अपने बेटे के बारे में:***

मैं शर्मिंदा हूं कि मैंने उसे जन्म दिया. मुझे उससे बड़ी उम्मीदें थीं. वह मेरा इकलौता बेटा है. अब देखो कैसे मुझसे झगड़ रहा है.

- ***अपनी बहू के बारे में:***

वह बेहद लालची और महत्वाकांक्षी है. लोग उससे घृणा करते हैं. पता नहीं किस बात पर इतराती फिरती है.

- ***आंग्रे के बारे में:***

वे ईमानदार आदमी हैं. सही बात कहने से मेरी बहू उनसे चिढ़ गई. मेरा बेटा चाहता था कि मैं आंग्रे का साथ छोड़ दूं. मैं उस व्यक्ति से कैसे मुंह चुरा लूं जो मेरे गाढ़े वक्त पर काम आया?

- ***पोते-पोतियों से संबंध के बारे में:***

बच्चों को मेरे पास आने से मना किया जाता है. बहू मेरे खिलाफ बच्चों के मन में जहर घोलती रहती है.

- ***बेटे से अनबन के बारे में:***

वह अद्भुत आज्ञाकारी, सोने जैसा लड़का था. सबके सामने ही मेरे जूते उठा लाया करता था. उसकी पत्नी को मेरे प्रति उसका लगाव नहीं भाया. सो, उसने टंटा खड़ा कर दिया. वह पूरी तरह जोरू का गुलाम है.

- ***राजनैतिक मतभेदों के बारे में:***

इमरजेंसी में मैं तिहाड़ जेल में थी. भैया (माधवराव के बचपन का नाम) इंग्लैंड भाग गया. जब पुलिस ने राजमहल पर छापा मारा तो उसकी छोटी बहन यशोधरा ने, जो उस समय सिर्फ 17 साल की थी, अकेले ही सबका सामना किया. और यह लड़का इंका में शामिल हो गया.

- ***स्मृतियां:***

भैया मुझसे घुला-मिला था. मुझे याद है, एक रात वह होटल के मेरे कमरे में आकर कालीन पर लेट गया. उस रात दो बजे तक हम बातें करते रहे. वह अक्सर अपनी महिला मित्रों की चर्चा भी किया करता था.

- ***विषाद:***

मैं बहुत व्यथा झेल चुकी. बहुत अपमानित हो चुकी. अब मैं बेटे के हाथों और अपमान सहने को तैयार नहीं हूं.

माधवराव सिंधिया

'वे आंग्रे के असर में हैं'

ग्वालियर के पूर्व राजघराने के उत्तराधिकारी माधवराव सिंधिया ने पहली दफा अपने परिवार के नितांत व्यक्तिगत मामलों की चर्चा की. प्रमुख संवाददाता ***नरेंद्र कुमार सिंह*** *से पिछले कुछ महीनों में कई दौर की बातचीत में वे धीरे-धीरे खुलते गए. बातचीत के अंश:*

- ***अपनी मां के बारे में:***

वे बेहद तीखी जबान वाली और बहुत ही दबंग हैं. वे हमेशा अनावश्यक तनाव पैदा कर देती हैं. पिता जी के साथ भी उनका यही सलूक था. अब उनके अलग रहने से परिवार में बहुत शांति है.

- ***आंग्रे के बारे में:***

वह ऐसे दुष्ट स्वभाव वाला व्यक्ति है कि अब उसके बारे में कोई भी बात मुझे चौंकाती नहीं. वह मेरी मां को मूर्ख बनाकर उनकी संपत्ति खींच रहा है. कई बार मुझे लगता है कि उसने उन पर कोई 'जादू-टोना' कर दिया है.

- ***मां से अपने बच्चों के संबंध के बारे में:***

मुझे बच्चों को उनके घर भेजना पसंद नहीं. वे उनके दिमाग में जहर भर देती हैं. राजमहल की दुरभिसंधियों में वे उनका इस्तेमाल करने की कोशिश करती हैं.

- ***व्यक्तिगत अनबन के बारे में:***

मनमुटाव के लिए वे ही दोषी हैं. उन्होंने 1977 में अपना रास्ता चुन लिया था. मैं नहीं चाहता था कि आंग्रे हमारे घरेलू मामलों में टांग अड़ाए. मैंने उनसे फैसला कर लेने को कहा. उन्होंने आंग्रे को चुना. इससे मुझे बहुत चोट पहुंची.

- ***राजनैतिक मतभेदों के बारे में:***

मेरा जनसंघ से कभी सहज रिश्ता नहीं रहा. मैं 1972 में ही पार्टी छोड़ना चाहता था. लेकिन उस समय मेरी मां ने भावनात्मक रूप से मुझे ब्लैकमेल किया. आखिरकार जब मैंने 1979 में इंका में शामिल होने का फैसला किया तो उन्होंने नाराज होकर मुझे बरबाद कर देने की धमकी दी.

- ***स्मृतियां:***

मैं 16 साल का था जब पिता जी का स्वर्गवास हो गया. मैं इकलौता बेटा था. स्वाभाविक रूप से मेरा मां से गहरा लगाव था. 18 साल के होने पर मैंने एक स्पोर्ट्स कार की मांग रखी और मुझे दी गई.

- ***विषाद:***

सार्वजनिक रूप से जैसी बातें वे मेरे बारे में कहती हैं, उससे अलगाव और कष्टप्रद हो जाता है. एक बार उन्होंने कहा कि मुझे हाथी के पैर के नीचे रौंदवा देना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्वालियर राजमहल संग्रहालय का अनूठा दृश्य; और (दाएं) सास की आवभगत करतीं माधवी राजे: अब वो बात नहीं

इस्तेमाल कर रही हैं. उन्होंने आरोप लगाया, "उन लोगों ने मुझे परेशान करने के लिए कई अधिकारी बैठा दिए हैं."

पिछले साल मार्च में स्थिति उस समय गंभीर हो गई जब पुलिस ने जयविलास महल के उस हिस्से में छापा मारा जिसमें सिंधिया के कर्मचारी रहते थे. अधिकारियों के मुताबिक छापे में दूसरी चीजों के अलावा 'करोड़ों रु. के जमीन घोटाले' से संबंधित दस्तावेज भी मिले. पिछले साल अगस्त में विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं ने उज्जैन स्थित सिंधिया के कालियादह महल पर कब्जे की कोशिश की. माधवराव को परेशान करने का सिलसिला जारी रहा. पिछले वसंत में राज्य की भाजपा सरकार ने सिंधिया परिवार के गंगाजलि न्यास से उन्हें हटाने और उनकी जगह उनकी मां को बैठाने के लिए एक अध्यादेश भी जारी किया.

राजपरिवार में झगड़े की जड़ बहुत पुरानी है. इसकी शुरुआत के बारे में दोनों पक्ष अलग-अलग कहानी बताते हैं. माधवराव का कहना है कि झगड़े की शुरुआत 1972 में उस समय हुई जब वे अपनी मां की पार्टी जनसंघ से अलग होकर कांग्रेस में शामिल होना चाहते थे. उनका कहना है कि 1970 में ऑक्सफोर्ड से लौटकर जनसंघ में शामिल होना उनकी भारी भूल थी. एक दशक तक राजमाता के समर्थक रहे, और झगड़े में मुख्य भूमिका निभाने वाले 71 वर्षीय सरदार संभाजीराव चंद्रजीत आंग्रे कहते हैं, "उन्होंने इसलिए जनसंघ छोड़ा क्योंकि 1972 के विधानसभा चुनावों में पार्टी का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा."

भीतर ही भीतर पनपता तनाव इमरजेंसी में एकदम सामने आ गया. और मां-बेटे के बीच के संबंध, लगभग पूरी तरह टूट गए. इमरजेंसी में विजया राजे सिंधिया

मुकदमों का ब्यौरा

साल	मुकदमा	स्थिति
1982	आंग्रे और दूसरों पर 10 करोड़ रु. मूल्य की पुरातन चीजें चुराने का	भाजपा सरकार ने वापस लिया
1983	500 करोड़ रु. मूल्य के पारिवारिक न्यासों पर नियंत्रण का	सुप्रीम कोर्ट में लंबित
1984	50 करोड़ रु. मूल्य के ग्वालियर महल भवन की मिल्कियत का	ग्वालियर की अदालत में लंबित
1984	500 करोड़ रु. की संपत्ति के बंटवारे का	मुंबई की अदालत में लंबित
1990	पौत्र द्वारा दायर याचिका जिसमें 1,000 करोड़ रु. की विरासत का दावा	ग्वालियर की अदालत में लंबित
1990	उज्जैन महल की मिल्कियत के लिए दायर 10 करोड़ रु. का मामला	उज्जैन की अदालत में लंबित
1991	गंगाजलि ट्रस्ट के नियंत्रण का	म.प्र. हाईकोर्ट में लंबित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधवराव की पत्नी माधवी राजे राजमाता विजया राजे की आंख की किरकिरी रही हैं. वे उन्हें 'लालची और घमंडी औरत' कहती हैं

को गिरफ्तार कर लिया गया. माधवराव अपने परिवार के साथ इंग्लैंड भाग गए. माधवराव का कहना है कि उनकी मां ने उन दिनों उन्हें क्या करना है यह खुद फैसला करने की सलाह दी थी. इसके अलावा वे यह तर्क भी देते हैं, "मैं ऐसे काम के लिए क्यों जेल जाऊं जिसके प्रति मैं प्रतिबद्ध नहीं था?" इसके बाद उन्होंने जनसंघ से इस्तीफा दे दिया और भारत लौट आए.

1980 तक मां-बेटे के संबंध पूरी तरह से टूट गए. संसदीय चुनाव इसके सबूत हैं. माधवराव इंका टिकट पर गुना से चुनाव लड़े और उनकी मां रायबरेली से इंदिरा गांधी के खिलाफ विपक्ष के उम्मीदवार के रूप में खड़ी हुईं. दोनों पक्षों ने मोर्चे बांध लिए. ऐसे कई सार्वजनिक अवसर भी आए हैं जब माधवराव ने पारंपरिक आदर का भाव दिखाते हुए अपनी मां के चरण छूने की कोशिश की लेकिन उन्होंने पैर हटा लिए.

आंख की किरकिरी, नाक के बालः राजनीति और जायदाद से संबंधित झगड़े तो इस जंग के दो पहलू भर हैं. असली लड़ाई तो मां और बेटे के अहं की है. माधवराव की पत्नी माधवी राजे राजमाता की आंख की किरकिरी हैं. विजया राजे हमेशा कहती रही हैं कि "इस लालची और घमंडी औरत" ने उनके "सोने जैसे बेटे" को बरबाद कर दिया (देखें बातचीत). उनकी यह भी शिकायत रही है कि उनकी बहू की मां ने उनकी जगह ले ली है. आंग्रे इससे सहमत नहीं हैं. वे कहते हैं, "वे उस मां की तरह प्रतिक्रिया व्यक्त कर रही हैं जो सारे दोष अपनी बहू के मत्थे मढ़ देती है." आंग्रे के अनुसार, संबंधों के खात्मे के लिए खुद माधवराव जिम्मेदार हैं.

लेकिन परिवार को तोड़ने के लिए अगर कोई जिम्मेदार है तो वे हैं धूर्त, बातूनी आंग्रे जिन्हें उनके विरोधी 'गंजू' कहते हैं. माधवराव के पिता जीवाजीराव सिंधिया की 1961 में मृत्यु के बाद सिंधिया घराने में प्रवेश करने वाले आंग्रे ने धूर्त दरबारी की भूमिका ही निभाई है. उस समय विजया राजे 41 वर्ष की थीं और माधवराव 16 वर्ष के थे. उनकी चारों बहनें भी छोटी थीं. माधवराव को इंग्लैंड भेजने के बाद सरदार आंग्रे ने, जो उस परिवार के रिश्तेदार भी हैं, अपनी जड़ें जमानी शुरू कर दीं.

माधवराव ऑक्सफोर्ड से लौटे तो उन्होंने परिवार की स्थिति पर नाक-भौं चढ़ाई. उधर, आंग्रे को भी माधवराव की उपस्थिति नहीं सुहाई. दोनों में से एक को चुनने की नौबत आने पर राजमाता ने आंग्रे को चुना. वे कहती हैं, "गाढ़े दिनों में साथ देने वाले व्यक्ति से मैं कैसे मुंह चुरा लेती?"

युद्ध की तैयारीः अदने मुलाजिमों को लेकर परिवार में शुरू हुई चिक-चिक ने 1980 के विधानसभा चुनावों के बाद बाकायदा जंग का रूप ले लिया. माधवराव के मुलाजिमों ने आंग्रे, उनकी बेटी और राजमाता के सौतेले भाई ध्यानेंद्र सिंह के, जो अब मध्य प्रदेश सरकार में मंत्री हैं, खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई. उन पर राजमहल के एक कमरे का ताला तोड़कर फर्नीचर निकाल लेने का आरोप लगाया गया. राजमाता कहती हैं, "मैंने ही आंग्रे जी से कहा था कि सड़ रहे फर्नीचर को ले जाएं. सो, मुझे इतना अपमान बोध हुआ कि मैंने उनसे क्षमा मांगी."

लेकिन उन्होंने अपने बेटे को एक तीखी चिट्ठी भी लिखी. उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. Vanasthali Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोज, फर्क की

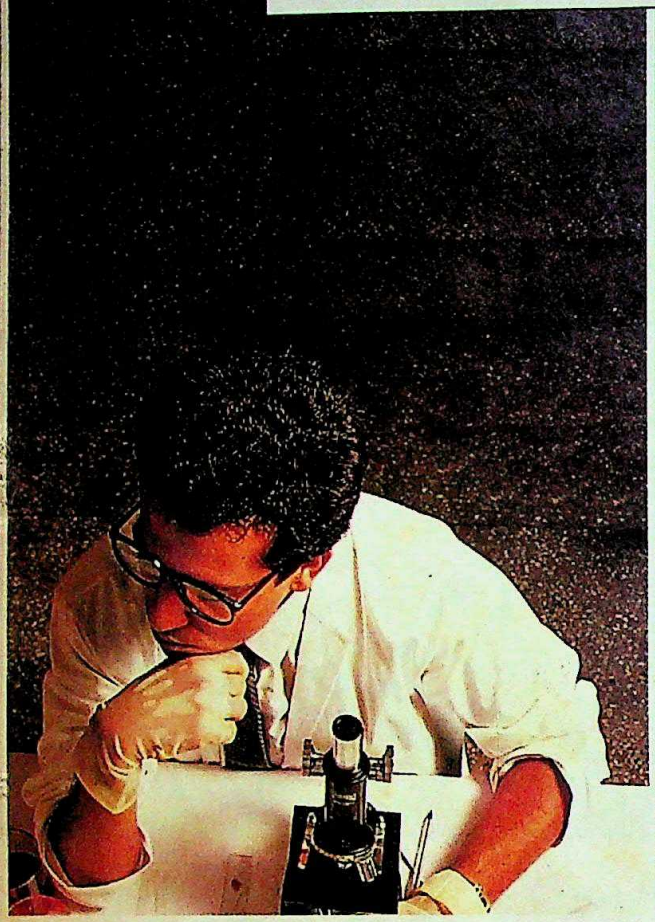

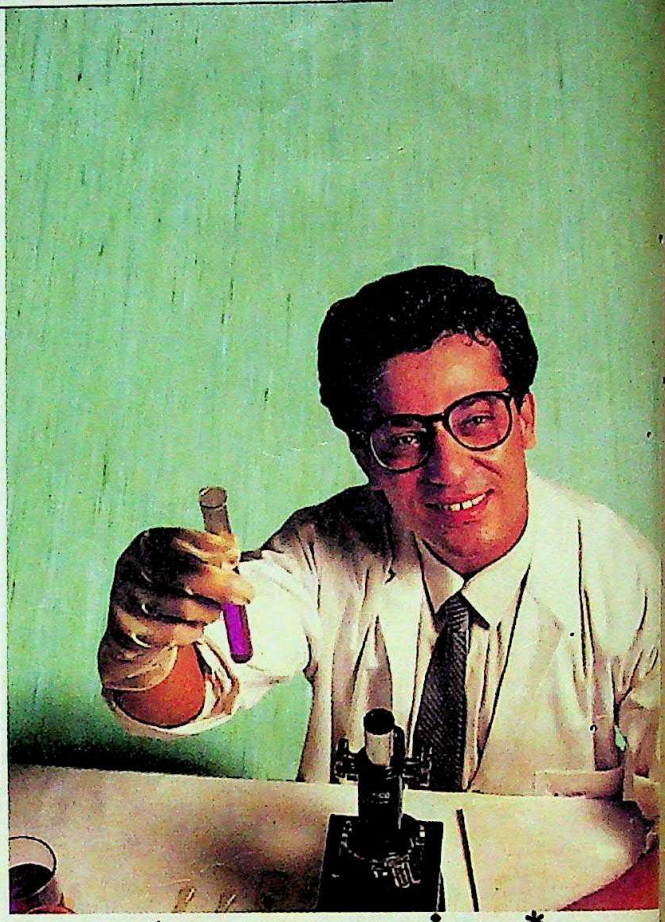

1360/- रुपए का अंतर*

फर्श चाहिए, जिससे कमरा साफ दिखे। पुख्ता और न टूटनेवाला।

बरसों तक लोगों की लगातार आवाजाही झेल सकने वाला, स्वस्थ और

खुशनुमा माहौल के लिये शोख रंगों वाला, न्यूनतम् जोड़ों के साथ

चंद घंटे में बिछाया जा सकने वाला बरसों साथ देने वाला,

जर्मन तक्नोलाजी से बना, ज़रा ढूंढिये तो इन तमाम खूबियों वाला फर्

WONDERFLOOR

VINYL FLOORING

वंडरफ्लोर । आज ही लीजिए।

और फर्क खुद आजमाइये।

टाइलों में भी उपलब्ध

*रु 123.50 प्रति वर्ग मीटर (रु. 11.50 प्रति वर्ग फुट)
इसमें एक्साइज़ ड्यूटी शामिल है। अन्य टैक्स और लगाने का खर्च अलग।

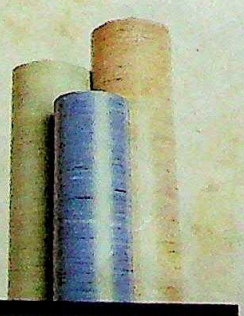

PREMIER VINYL FLOORING LTD

IN TECHNICAL COLLABORATION WITH GERMANY

EXCELLENCE THROUGH INNOVATION & QUALITY

Sales Offices:

New Delhi: C-4, Commercial Centre, Safdarjung Dev. Area, Ph.: 6864190, 6851226, 661087. **Ahmedabad:** C/o, Media, Opp. Sardar Patel Stadium, Narangpura, Ph.: 443515, 440887. **Bangalore:** 18 floor, Kota Shopping Complex, Brigade Rd., Ph.: 571178. **Bombay:** 328, Kaliandas Udyog Bhawan, Behind Century Bazar, Worli, Ph.: 4300289, 4228839. **Bhubaneshwar:** C/o Cofoam Agencies III, 113 Station Square, Ph.: 408795, **Calcutta:** 3rd floor, No. 3 Netaji Subhash Rd., Ph.: 281702, 281703. **Chandigarh:** H.No. 1074, sector 19B, Ph.: 43482. **Cochin:** C/o Mathewsons Industries tion, Mathewsons Bldg., Near St. Antony's Church, Kaloor, Ph.: 346920, 346104. **Coimbatore:** 37, 5th Street, Shri Sai Baba Colony, Ph.: 36361, 36935. **Guwahati:** C/o N.K. Corporation, Jan nka Automobiles, G.S. Road, Dispur, Ph.: 60989. **Hyderabad:** Emerald Complex, 3rd floor, Sarojini Devi Road, Secundrabad, Ph.: 844804. **Lucknow:** 20, Rana Pratap Marg, Ph.: 234318. 2, A-7, Murali Anand flats, Alamelumangapuram, Mylapore, Ph.: 6413272, 47849. **Patna:** Shiva Dham, Kadam Kuan, Nala Road, Ph.: 59342. **Pune:** C/o Jayesh & Bros. 11/4 Karve Road,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहना था कि उन्होंने 'पुराने समुद्र महल, क्लब हाउस, उषाकिरण, जयविलास संग्रहालय के भंडारों की सामग्रियों' से पुणे के अपने पद्म विलास और मुंबई के समुद्र महल के फ्लैटों की 'नई साज-सज्जा' की. उन्होंने पत्र में लिखा, "क्या हम अपनी ही संपत्ति को हड़पने में लगे हैं?" मार्च 1981 में जब उनके बेटे ने उन्हें राजमहल के तिजारतखाने की चाबियां देने से इनकार कर दिया तब वे 42 दिन तक फलाहार पर ही रहीं.

मां के साथ बेटा: कहां गए वो दिन

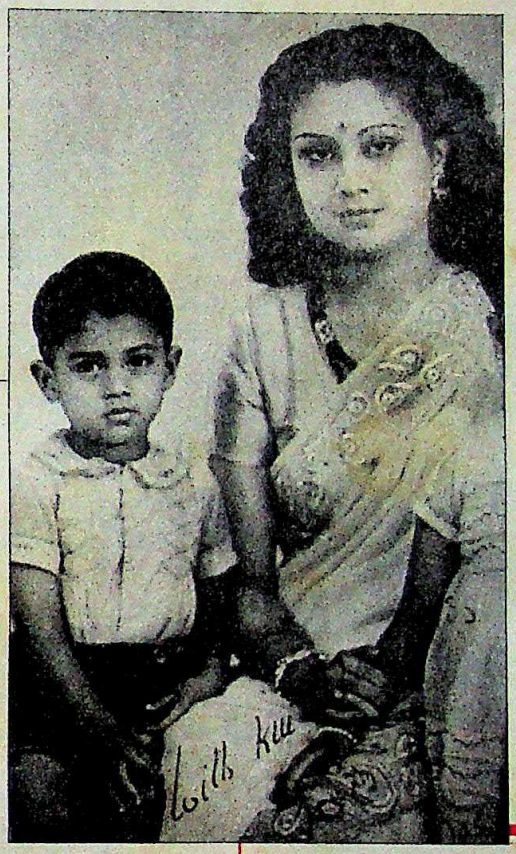

माधवराव ने अदालत से स्थगन आदेश ले लिया था. इस तरह परिवार की संपत्ति को संचालित करने वाले 15 पारिवारिक न्यासों के लिए अदालती जंग शुरू हो गई. यह मामला अभी लटका ही हुआ है. आरएसएस द्वारा संचालित संगठनों की राजमहल में घुसपैठ से माधवराव सबसे अधिक नाराज थे. चिनगारी मार्च 1982 में तब फूटी जब राजमाता ने आरएसएस द्वारा संचालित 'विद्याभारती' को राजमहल सौंपने की घोषणा की.

जुलाई 1982 में आंग्रे की गिरफ्तारी से शोला भड़क उठा. माधवराव के मुलाजिमों की शिकायत पर आंग्रे पर राजमहल संग्रहालय से बहुमूल्य प्राचीन वस्तुओं को चुराने का आरोप लगाया गया. भाजपा सरकार ने अब यह मामला वापस ले लिया है. आंग्रे का कहना है कि "वह सब बदले की कार्रवाई ही थी." 1983 में आंग्रे ने जवाबी कार्रवाई की. उन्होंने माधवराव पर पारिवारिक न्यास की संपत्ति, मुंबई के एक फ्लैट पर कब्जा करने के लिए जालसाजी और विश्वास भंग का आरोप लगाया. इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने माधवराव के पक्ष में फैसला सुनाया.

पर जंग तो जारी ही रही. अगस्त 1983 में जब राजमाता और आंग्रे लंदन में थे तब ग्वालियर राजमहल परिसर में उनके कब्जे वाली तीन इमारतों को माधवराव के हथियारबंद आदमियों ने दखल कर लिया. इसके बाद आंग्रे के घर को प्रशासन ने सील कर दिया. तब से आंग्रे का सारा सामान वहीं बंद है. इसके तुरंत बाद क्रुद्ध राजमाता ने संपत्ति के समग्र बंटवारे के लिए कार्रवाई शुरू कर दी और अगस्त 1984 में मुंबई हाईकोर्ट में इस मकसद से एक याचिका दायर की गई. यह मामला भी अभी लंबित है.

युद्ध की विभीषिकाएं: जाहिर है, यह परिवार अपने झगड़े सहज ही नहीं निबटा सकता. माधवराव की बड़ी बहन उषा राजे सुलह की तमाम कोशिशें करके हार चुकी हैं. छोटी बहन वसुंधरा राजे कहती हैं, "यह मेरी मां और भाई के बीच का मामला है."

ऐसा नहीं लगता कि सिंधिया परिवार में सुलह, मेलजोल के दिन जल्दी लौटेंगे. सुलह की सारी कोशिशें विफल रही हैं

इस बीच 1987 में माधवराव की बेटी के ब्याह पर भी राजमाता का दिल नहीं पसीजा. उन्होंने ब्याह के दौरान अपनी उपेक्षा की शिकायत की. दरअसल, उन्होंने अपने उत्तराधिकार से सिर्फ अपने बेटे को ही वंचित करने की धमकी नहीं दी है बल्कि पोते को भी ऐसी चेतावनी दी ही. लेकिन माधवराव अड़े हुए हैं. वे कहते हैं कि सुलह तभी संभव है जब आंग्रे को हटा दिया जाए.

जाहिर है, राजमाता अकेलापन महसूस करती हैं. वे दुख से कहती हैं, "दिवाली और दशहरा में भी मैं अकेली ही बैठी रहती हूं. कोई आता नहीं. वे बच्चों को भी नहीं भेजते." अब सवाल यही रह जाता है कि इस परिवार में सुलह, मेलजोल के दिन कब लौटेंगे. इस सवाल का जवाब देने की स्थिति में कोई नहीं है.

पारिवारिक न्यास

खजाने की चाबी

आपको 1,000 रु. प्रति माह किराए पर विशालकाय महल चाहिए? या फिर प्रति माह 700 रु. में दफ्तर की इमारत, बाग-बगीचे वाला बंगला और गैराज चाहिए? तो पूर्व ग्वालियर रियासत के राजकुमार, श्रीमंत महाराज माधवराव सिंधिया से मिलिए. वे ग्वालियर राजमहल में 60,000 फुट जगह वाले परिसर के लिए प्रति माह 1,700 रु. अदा करते हैं.

ग्वालियर राजघराने के वंशज अपने ही महल में किराएदार की तरह रहते हैं. राजमहल पारिवारिक न्यास की संपत्ति है. 1971 के बाद हदबंदी कानूनों और करों से बचने के लिए सिंधिया घराने की अधिकांश संपत्ति विभिन्न न्यासों के सुपुर्द कर दी गई. ये 15 न्यास ही मां और बेटे के बीच झगड़े की जड़ बने हुए हैं. न्यासों पर जिसका कब्जा होगा, उसी की संपत्ति होगी. ये न्यास हैं: जीवाजीराव न्यास, जयविलास न्यास, ज्योतिरादित्य न्यास, मनु महल न्यास, मनु राजे न्यास, रंगमहल न्यास, गोरखी न्यास, महादजी न्यास, जनकोजीराव न्यास, रानी उषा राजे धर्मार्थ न्यास, चिकू राजे न्यास, पद्मा राजे धर्मार्थ न्यास, यशोधरा राजे धर्मार्थ न्यास, वसुंधरा राजे धर्मार्थ न्यास.

महल के एक मुलाजिम के मुताबिक माधवराव के पूर्वजों द्वारा स्थापित अन्य 21 छोटे-मोटे न्यास भी हैं.

—नरेंद्र कुमार सिंह, ग्वालियर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसारभर में एक ही प्रेशर कुकर जो कि दि म्यूज़ियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट न्यू यॉर्क में प्रदर्शित

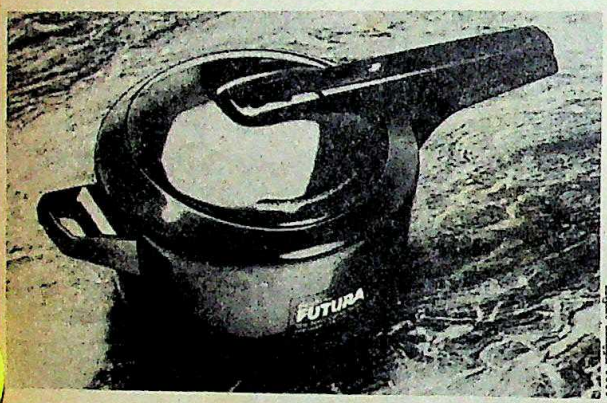

हॉकिन्स फ़्यूचुरा: संसार का सबसे आकर्षक प्रेशर कुकर.

सुडौल बनावट, खांचे में बिठाए सुगढ़ हैंडल, ढक्कन और बॉडी ऐसे जुड़े कि जोड़ जैसे हो ही नहीं. चिकने साटन जैसी आधुनिक सिलेटी चमक.

माइक्रोवेव से भी ४६% जल्दी पकाए. अनोखा, सुरक्षादायक ढक्कन-आधुनिक जेट हवाई जहाज़ के दरवाज़े की तरह अंदर के दबाव से बंद होनेवाला. अत्यंत स्वादिष्ट, स्वास्थ्यवर्धक भोजन पकाए.

हॉकिन्स फ़्यूचुरा: दि म्यूज़ियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट, न्यू यॉर्क के डिज़ाइन स्टोर में प्रदर्शित एकमात्र प्रेशर कुकर. डिज़ाइन, निर्माण तथा मार्केटिंग हॉकिन्स कुकर्स लिमिटेड द्वारा. २९ देशों में.

जिसके लिए हॉकिन्स फ़्यूचुरा को २९ देशों में सराहा जाता है डिज़ाइन और निर्माण की वही उत्कृष्टता ज्यादा किफ़ायती हॉकिन्स यूनिवर्सल प्रेशर कुकरों की श्रेणी में भी इस्तेमाल होती है. वह हॉकिन्स चुनिए जो आपकी ज़रूरतों के लिए सबसे अच्छा हो.

हॉकिन्स फ़्यूचुरा: ५ लिटर, रु. ९५०; ७ लिटर, रु. ११००. हॉकिन्स यूनिवर्सल प्रेशर कुकरों की श्रेणी आठ साइज़ों में-२ लिटर (रु. ३२५) से १२ लिटर (रु. ८२५) तक. सेपरेटरों के बिना मॉडलों के सभी करों सहित अधिकतम मूल्य.

संसार का सर्वोत्तम लीजिए. हॉकिन्स लीजिए.

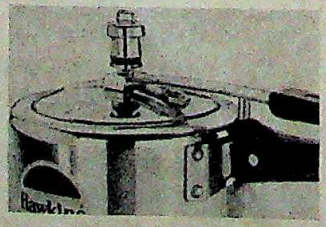

हॉकिन्स यूनिवर्सल

हॉकिन्स फ़्यूचुरा

इन विक्रेताओं के पास उपलब्ध किसी भी मदद के लिए यहां लिखें: हॉकिन्स, विभाग डा. पी. ओ. बॉक्स ६४८१, बम्बई-१६.

हॉ कि न्स फ़्यू चु रा डी ल र्स

आंध्र प्रदेश

गुंटूर: मेन रोड: मट्टपल्ली संबामूर्ति, अरुंडल पेट ☐ **हैदराबाद: आबिद्स:** अंजली इलेक्ट्रॉनिक्स, नामपल्ली स्टेशन रोड ● **आबिद रोड:** विशाल होम अप्लायंसेज, मेट्रो इस्टेट ● **नामपल्ली स्टेशन:** स्टील पैलेस ● **नारायणगुडा:** सिटी एम्पोरियम, पुलिस क्वार्टर्स के पास ● **सुल्तानबाज़ार:** बलीराम खियाराम, सब्ज़ी मार्केट के पास ● एवरशाइन स्टील पैलेस, सब्ज़ी बाज़ार ● गॉडविल स्टील स्टोर्स, सब्ज़ीबाज़ार के पास ☐ **काकीनाडा: मेन रोड:** गुप्ता एम्पोरियम, सूर्यराव पेट ☐ **सिकंदराबाद: आर. पी. रोड:** डेक्कन आयरन वर्क्स, बाटा के सामने ● साकीनाला स्टील पैलेस, बाटा के सामने ☐ **विशाखापट्टनम: मेन रोड:** बॉम्बे गैस लाइट स्टोर्स

अरुणाचल प्रदेश

नाहर लागून: ए. पी. को. ऑप. मार्केटिंग सप्लाई फ़ेडरेशन लि.

असम

बिश्वनाथ चारअली: पभई रोड: उदयशंकर स्टोर्स ☐ **डिब्रूगढ़: एच.एस. रोड:** वर्मा क्रॉकरी स्टोर्स ● **न्यू मार्केट:** एस. दत्ता एंड कंपनी ☐ **डीफू: मेन रोड:** ज्योत्स्ना स्टोर्स ☐ **गोहाटी: फ़ैन्सी बाज़ार:** आर. चंपकलाल एंड कं. ● श्याम मेटल स्टोर्स, एस. आर. सी. बी. रोड ● **लखटोकिया:** सी. एम. स्टोर्स ☐ **जोरहाट:** गरालीः आर्ट हाउस ☐ **कोकराझार: मेन रोड:** लक्ष्मी नारायण स्टोर्स, ☐ **मंगलदाई:** एल.एन.बी. रोड: इलेक्ट्रिक स्टोर्स ☐ **नलबाड़ी: एन.टी. रोड:** मारूति इलेक्ट्रॉनिक्स ☐ **नौगांव: डाकापट्टी:** न्यू चैतन्य स्टोर्स ☐ **शिवसागर: मारवाड़ी पट्टी:** हनुमानबख्श प्रदीपकुमार ● **टैपल रोड:** ए, रहमान एंड कं. ☐ **सिलचर:** हॉस्पिटल रोड: रविप्रकाश आनंद एंड कं. ☐ **तिनसुकिया: डेली बाज़ार:** नज़ीर अहमद एंड सन्स ● **जी.एन.बी. रोड:** रविप्रकाश आनंद एंड कं.

बिहार

बरौनी: बरौनी चौक: सिन्हा एंड कं., रेलवे गेट के पास ☐ **जमशेदपुर: साकची बाज़ार:** कुकर हाउस, 25 ओल्ड आलू लाइन, पान मार्केट ● नीलकमल स्टील सेंटर, 24 ओल्ड आलू लाइन, पान मार्केट ☐ **लहरिया सराय: बाकरगंज:** दयाल क्रॉकरी हाउस ☐ **मोतीहारी: मेन रोड:** स्टील कॉर्नर ☐ **मुज़फ़्फ़रपुर: सरैयागंज:** किचनकिंग ☐ **पटना: बोरिंग रोड:** एच. सी. एंटरप्राइज़ेस, नेपाली कोठी ● **मुरादपुर:** स्टील कॉर्नर, बांकीपुर पोस्टआफिस के सामने ● **न्यू मार्केट:** क्रॉकरी कं. ☐ **रांची: मेन रोड:** कैलाश क्रॉकरी हाउस

चंडीगढ़

चंडीगढ़: सेक्टर 15 डी: इंडियन क्रॉकरी हाउस, दुकान नं. 45 ● **सेक्टर 17 ई:** जगतसिंह एंड कं., एस सी एफ़ 32 ● कृष्णा क्रॉकरी स्टोर, एस सी एफ़ 32 ● **सेक्टर 26:** अग्रवाल डिस्ट्रिब्यूटर्स, शो रूम नं. 30 शो रूम नं. 30

गोआ

मडगांव: 10 **न्यू मार्केट:** दीनानाथ डी. सडेकर, पोस्ट बॉक्स नं. 331

गुजरात

अहमदाबाद: तीन दरवाजा: अकबरअली कादरभाई, 1822 तीन दरवाजा गांधी रोड ● बॉम्बे नॉवेल्टी स्टोर्स, 1839/1 तीन दरवाजा गांधी रोड ☐ **बड़ौदा: एम. जी. रोड:** पोपटलाल कृष्णलाल कंसारा, कंसारा बाज़ार, एम. जी. रोड ☐ **सूरत: बारानपुरी:** कंसारा ठाकुरदास नगीनदास मोदी, रेशमवाला बिल्डिंग, भागल ● **वुंदेलावाड़:** शाह ठाकुरदास जीवनराम, वुंदेलावाड़ भागल

हरियाणा

अंबाला कैंट: सौदागर बाज़ार: जगतसिंह एंड सन्स ☐ **एन आई टी फ़रीदाबाद: मार्केट नं. 1:** कृष्णलाल संजीवकुमार, दुकान नं. 116 ☐ **हिसार: मोतीचौक:** केवलकृष्ण इंदरसैन ☐ **जगाधरी: मनोहर नगर:** ओ.पी. मैटल इंडस्ट्रीज ☐ **पानीपत: हलवाई हट्ठा बाज़ार:** न्यू जैन बर्तन भंडार ● **मेन बाज़ार:** मनोहरसिंह घरीमल ☐ **रोहतक: रेलवे रोड:** प्रकाश क्रॉकरी हाउस ☐ **सिरसा: रोड़ी बाज़ार:** अग्रवाल बर्तन भंडार

हिमाचल प्रदेश

कांगड़ा: मेन बाज़ार: गुप्ता सुईंग मशीन ☐ **कुल्लू: अखाड़ा बाज़ार:** विगसन जनरल स्टोर ☐ **नगरौटा भगवां: निचला बाज़ार:** धर्मपाल एंड सन्स ☐ **शिमला: अंडा बाज़ार:** बंगाल क्रॉकरी हाउस ● **मालरोड:** राधामल बिशनदास, दुकान नं. 76

जम्मू कश्मीर

जम्मू: न्यू मार्केट: लड्डूमल देसराज जैन, रघुनाथ बाज़ार

कर्नाटक

बेंगलोर: ब्रिगेड रोड: लिबर्टी एजेंसीज ● पॉट्स एंड पैन्स, 11 कर्जन कॉम्प्लेक्स ● **चिकपेट:** राजा ट्रेडिंग कं., 802 ● रश्मि स्टील्स, 340 ● **रिचर्ड्स स्क्वेयर:** एडम्स एंड कंपनी, 19 शिवाजी नगर ☐ **बेलगांव: मारूति गली:** गिंडे रेडियो सेल्स एंड सर्विस, 1586 ☐ **चिकमंगलूर: रत्नागिरि रोड:** मल्टी एंटरप्राइजेज, पो. बॉ. नं. 8, ☐ **हरिहर: शिमोगा रोड:** अशोक इलेक्ट्रिकल्स ☐ **मैसूर: सयाजी रोड:** मोहन भंडार, कामधेनु ☐ **सिरसी: सी. पी. बाज़ार:** जयश्री इलेक्ट्रिक हाउस ☐ **उडिपी: अंबलपाड़ी:** प्रकाश इलेक्ट्रिक कं.

केरल

अलेप्पी: मुल्लकल: भीमा स्टेनलेस स्टील एंड इंडस्ट्रीज ☐ **अलवई: कैथलिक सेंटर:** वायरलेस मेट्रो

(अगले पृष्ठ पर जारी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉ कि न्स फ़्यू चु रा डी ल र्स

078806 राजस्थान

☐ **कालीकट:** मुथलाकुलम: ब्राइट मेटल्स ☐ **कन्नानूर:** एस. एन. पार्क रोड: गृहलक्ष्मी ☐ **एर्णाकुलम:** ब्रॉडवे: एंथनी फ्रांसिस एंड सन्स ● **टी डी रोड (नॉर्थ):** प्रॉडक्ट एंड सर्विसेज ☐ **मंजेरी:** मेन रोड: कोरांबइल फ्रैन्सी एंड फ्राइबर्स, सेंट्रल बाज़ार ☐ **मुवट्टुपुझा:** न्यू बाज़ार: मिनी स्टोर्स ☐ **पालघाट:** जी. बी. रोड: स्टील पैलेस ☐ **पट्टांबी:** मेन रोड: वीरमणि इंटरप्रर्न, वीरमणि बिल्डिंग ☐ **त्रिचूर:** एम. जी. रोड: मॉडर्न होम इक्विपमेंट्स, ओवरब्रिज के पास ● **पोस्ट ऑफिस रोड:** स्टीलालयम, हैड पोस्ट आफ़िस के पास ● **राउंडसाउथ:** केरल लैदर कंपनी, हॉस्पिटल के पास

मध्यप्रदेश

भिलाई: कैंप नं. 2: गार्गी जनरल स्टोर, बी-14 सर्कुलर मार्केट ☐ **भोपाल:** रौशनपुरा नाका: दरवेश बर्तन भंडार ☐ **डबरा:** कमला मार्केट: आधुनिक किचनवेयर ☐ **दमोह:** सिनेमा रोड: अजंता ट्रेडर्स ☐ **इंदौर:** जवाहर मार्ग: कुकर हाउस, दुकान नं. 370 ● **राम लक्ष्मण बाज़ार:** एन. आर. इलेक्ट्रॉनिक, दुकान नं. 23 ☐ **जबलपुर:** गोल बाज़ार: आशीर्वाद एसोसिएट्स, 212 दत्ता मंदिर ☐ **कोरबा:** मेन रोड: गणेश स्टील एम्पोरियम ☐ **रायपुर:** सदर बाज़ार: एम एस ट्रेडर्स

महाराष्ट्र

अहमदनगर: एम. जी. रोड: के.टी. रसाने, दुकान नं. 2554, न्यू क्लॉथ मार्केट ● **शहाजी रोड:** सुरेख संगम ☐ **बंबई दक्षिण:** दादर: धीरज सेल्स कार्पोरेशन, भवानीशंकर रोड ● किचन पैलेस, कबूतरखाना ● **फ्राउंटेन:** अकबरअलीज, वी. एन. रोड ● **कालबादेवी रोड:** रतिलाल मोहनलाल, 46 कंसारा चाल ● **लोहारचाल:** एशियाटिक इलेक्ट्रिक ट्रेडिंग कं., 46-48 विठ्ठल सयाना बिल्डिंग ● **चेंबूर:** अकबरअलीज, सायन ट्रांबे रोड ● नटराज एम्पोरियम, स्टेशन रोड ● सिल्वर सेंटर, 3 लक्ष्मी मार्केट ☐ **डोंबिवली :** पंकज स्टील एंड नॉवेल्टी, पातुरकर बिल्डिंग, रेलवे स्टेशन रोड ● परग स्टील एंड नॉवेल्टीज, कैनरा बैंक के पास ☐ **कल्याण: बाज़ार पेठ:** प्रभात एप्लायंसेज, विष्णु मंदिर के सामने ☐ **मध्यवर्ती उपनगर: सायन :** कनि एवरशाइनिंग एम्पोरियम, 5 शिवमहल ● श्री मुरगन स्टील हाउस, 11/39 मैरी लैंड कॉर्नर ● **ठाणे:** गोल्डन स्टील एंड एप्लायंसेज, गोखले रोड, नौपाड़ा ● हेम शॉपिंग सेंटर, गोखले रोड, नौपाड़ा ● **वाशी:** श्रीकृष्ण स्टील एम्पोरियम, सेक्टर-17, आनंद सागर, दुकान 10 ए प्लॉट नं. 39 ☐ **पश्चिमी उपनगर: बांद्रा:** शाज़ान, तल मंजिल, रिज़वी हाउस ● **बोरीवली:** प्रमाणिक सेंटर, एस. वी. रोड ● **माहीम:** अरुणोदय स्टोर्स, एल. जे. रोड, सिटीलाइट सिनेमा के सामने ● **सांताक्रुज:** अकबरअलीज, एस. वी. रोड ● **विलेपार्ले:** मनसुख डिस्ट्रिब्यूटर्स, श्यामकमल 'बी', अग्रवाल मार्केट ● मुरुगन एप्लायंसेस, श्यामकमल 'सी', अग्रवाल मार्केट ☐ **नागपुर:** इतवारी: बंदेअली मुहम्मद अली, भंडारा रोड ● **सीताबर्डी:** एम. एस. पांडे एंड सन्स, वेगयटी स्क्वेयर के पास ☐ **नासिक:** 84 भांडी बाज़ार: प्रकाश रामदास काले ● शालीमार बिल्डिंग: विंजय ट्रेडिंग कं., शिवाजी रोड ☐ **पिंपरी:** स्टेशन रोड: राजकुमार एंटरप्राइजेज, आर्य समाज के पास ☐ **पुणे:** रविवार पेठ: मेहता ब्रदर्स, फूलवाला चौक ☐ **सांगली:** मेन रोड: श्री अभेय स्टील सेंटर, करमरकर बिल्डिंग

मणिपुर

सिंगजमाई (इम्फाल): चिंगमाखौंग: न्यू वेराइटी ☐ **इम्फाल:** महात्मा गांधी एवेन्यू: मणिपुर बिल्डर्स ● **पाओना बाज़ार:** पासा एंटरप्राइजेज ● **थंगल बाज़ार:** रूपक एजेंसीज ● सुदर्शन्

मेघालय

शिलांग: बाउरी मेंशन: वी.के. घई एंड कं.

मिज़ोरम

ऐज़ल: बड़ा बाज़ार: बी. सी. टे एंड सन्स

नागालैंड

दीमापुर: चर्च रोड: पॉटरीज़ एम्पोरियम

नेपाल

काठमांडू: थमेल: मालू ट्रेडिंग, 16/78

ओडिसा

बरहामपुर: भापुर बाज़ार: सिल्ला गोपालम एंड सन्स ● **बन वे ट्रैफ़िक रोड:** जे. के. एंटरप्राइजर्स ☐ **भुवनेश्वर: अशोकनगर:** टी. कृष्णपात्र, 169 बापूजी नगर ☐ **कटक: डोलमुंडई:** इंडियन इंडस्ट्रीज, मेहताब रोड ● **तिनकोनिया बगीचा:** सुनीता ☐ **ढेंकानाल: कंचन बाज़ार:** ब्यूटी हाउस ☐ **जसीपुर: मेन रोड:** जनता एजेंसीज ☐ **क्योंझर:** न्यू मार्केट: श्री दुर्गा एजेंसीज ☐ **राउरकेला: मेन रोड:** चंदूलाल गुप्ता ● **सेक्टर 5:** प्रेस्टिज, दुकान नं. 1

पंजाब

अमृतसर: हॉल बाज़ार: हरबंस क्रॉकरी स्टोर ● रघुवीर सिंह कटारिया एंड सन्स ● **प्रताप बाज़ार:** पुरी बैटरी स्टोर ☐ **भटिंडा: थोबी बाज़ार:** गोयल बर्तन स्टोर ● **गांधी मार्केट:** कंचन क्रॉकरी हाउस ● सुभाष एंड कं. ☐ **गुरदासपुर: हनुमान चौक:** केदारनाथ एंड सन्स ☐ **होशियारपुर: जालंधर रोड:** बंसल क्रॉकरी हाउस, क्लॉक टावर के पास ☐ **जालंधर सिटी:बाज़ार शेखां:** खरबंदा शॉपिंग सेंटर ● **चौक रैनक बाज़ार:** गिफ़्ट सेंटर ● **जी. टी. रोड:** जे. ओमप्रकाश एंड सन्स, सिविल अस्पताल के सामने ● **रैनक बाज़ार:** बहल सन्स ☐ **कोटकपुरा: रेलवे रोड:** आहूजा गिफ़्ट हाउस ☐ **लुधियाना: चौड़ा बाज़ार:** जैन सन्स ● **साबन बाज़ार:** जैन क्रॉकरी हाउस ☐ **मोगा: बाग गली:** क्रॉकरी पैलेस ● **मेन बाज़ार:** नंदकिशोर अग्रवाल एंड सन्स ☐ **नवांशहर: रेलवे रोड:** हाशसिंह जसवंत सिंह आनंद ☐ **पठानकोट: मेन बाज़ार:** सिंगला गिफ़्ट हाउस ☐ **फगवाड़ा: लोहामंडी रोड:** ए. के. ट्रेडर्स ☐ **रायकोट: चौक मेन बाज़ार:** उप्पल मेटल स्टोर ☐ **सामना मंडी: मेन बाज़ार:** मोहनलाल सुदर्शनकुमार

भरतपुर: नीम का थोट: किशोरी श्याम बृजेशकुमार ☐ **चित्तौड़गढ़: मीरानगर:** आपकी दुकान, कलेक्टरी चौराहे के पास ☐ **जयपुर: नेहरू बाज़ार:** अशोक डिस्ट्रीब्यूटिंग स्टोर, मयूर सिनेमा के पास ● **राजा पार्क:** लॉगलाइफ डिस्ट्रीब्यूटिंग स्टोर, 2-ए गली नं. 1 ● **त्रिमोलिया बाज़ार:** बाबूलाल तर्सेनकुमार जैन ● महावीर जनरल स्टोर, 215 ☐ **खेतड़ी नगर: सुभाष मार्केट:** अमर ज्योति फ्रैन्सी स्टोर, 38 ☐ **सीकर: नेहरू मार्ग:** सीकर बर्तन भंडार, नेहरू मार्ग स्टेशनरोड ☐ **उदयपुर: बापू बाज़ार:** शाह लक्ष्मीलाल प्रकाश चंदर जैन, दुकान नं. 108 ● **ज़ीनीरत चौक:** नंदा ट्रेडिंग कं., 132 धामाशाह मार्ग

तमिलनाडु

मद्रास: टी नगर: रत्ना मेटल्स, 55 रंगनाथन स्ट्रीट, मांबलम रेलवे स्टेशन के पास ● रत्ना स्टोर्स, 47 शिवा कॉम्प्लेक्स पांडी बाज़ार ● शबरी डिस्ट्रिब्यूटर्स, 17 रामनाथन स्ट्रीट ☐ **मदुरै: अम्मान सन्नधि:** एस. संतोष नाडार कॉर्पोरेशन, 3 ● **बुलियन बाज़ार:** आनंद स्टोर्स, 42 साउथ अवानी मूला स्ट्रीट ● **ईस्ट गेट:** एस. चेलय्या नाडार एंड संस, 267 कामराजार सलाई ☐ **त्रिची: मदुरै रोड:** श्री लक्ष्मी मार्केटिंग, 2 श्री कॉम्प्लेक्स, 21 मदुरै रोड ● **मलई वसल के पास:** मंगल एंटरप्राजेज, 24/2 एन. एस. बी. रोड

उत्तर प्रदेश

आगरा: जौहरी बाज़ार: दादा ग्लास एंड क्रॉकरीज ☐ **अलीगढ़: रेलवे रोड:** गुलाटी स्टोर्स, न्यू मार्केट ● जयभारत क्रॉकरी हाउस ☐ **इलाहाबाद: बिजलीघर के पास:** नॉवेल्टी हाउस, 6 सी कमला नेहरू मार्ग ● **विवेकानंद मार्ग:** डायमंड टी सेल्स, चमेली धर्मशाला के सामने ☐ **अनपढ़ा बाज़ार:** मोती रेडियो सेंटर ☐ **बड़ौत: नया बाज़ार:** अभय जनरल स्टोर ☐ **बुलंदशहर:** अंसारी रोड: कंसल क्रॉकरी स्टोर ☐ **देहरादून: पल्टन बाज़ार:** सचदेवा स्टोर्स, 52 जामा मस्जिद के सामने ● सुशील एंड कंपनी, दुकान नं. 95 ● वेदप्रकाश गोयल, दुकान नं. 120 ☐ **इटावा: तहसील चौराहा:** उपहार केंद्र, पहली मंजिल ☐ **गाज़ियाबाद: चोपला मंदिर:** अजंता इलेक्ट्रिक स्टोर, 9 शांति मार्केट ● **दिल्ली गेट:** गुप्ता गैस लाइट हाउस, दुकान नं. 90 ☐ **गाज़ीपुर: गांधी रोड:** आदर्श बर्तन स्टोर ☐ **गोंडा: उतरौला रोड:** पारस स्टील एम्पोरियम, राजा रघुराम मार्केट ☐ **गोरखपुर: सिनेमा रोड:** गणेशीलाल एंड सन्स ● **टाउनहॉल:** विजय एजेंसीज, दुकान नं. 16-17 ☐ **हल्द्वानी: बरेली रोड:** सरदार क्रॉकरी हाउस, सिंधी स्वीट्स के पास ● **कारखाना बाज़ार:** बॉम्बे क्रॉकरी हाउस ☐ **हापुड़: रेलवे रोड:** क्रॉकरी सेंटर, गांधी भवन ☐ **हरिद्वार: मोती बाज़ार:** ओमप्रकाश चेलाराम ☐ **जौनपुर: हरलालका रोड:** ग्लास स्टोर्स ☐ **ज्वालापुर: मेन बाज़ार:** न्यू विमल मेटल्स ☐ **कानपुर: बिरहाना रोड:** एम. के. ट्रेडर्स, 58/45 ● सुप्रीम रेडियो एंड इलेक्ट्रिक कार्पोरेशन, दुकान नं. 26/49 ● **गुमटी नं. 5:** ईश इलेक्ट्रिकल्स, 118/2 कोशलपुरी, जयहिंद सिनेमा के सामने ● **हर्ष नगर:** एम. के. एजेंसीज, दुकान नं. 111/2, पहली मंज़िल, बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने ● **नवीन मार्केट:** कुमार फ्रैन्सी स्टोर्स, दुकान नं. 114 ☐ **लखनऊ: अमीनाबाद:** इंदरचंद जैन ● रामसरन एंड कंपनी ● **नज़ीराबाद:** चमनलाल अग्रवाल एंड सन्स, द्वारा कन्हैयालाल प्रागदास, दुकान नं. 7 ☐ **मेरठ: पान दरीबां:** मॉडर्न लाइट हाउस, 222 खैर नगर बाज़ार ☐ **मुरादाबाद: बाज़ार गंज:** क्रॉकरी एम्पोरियम, कोतवाली के सामने ● **चौमुखा पुल:** प्रेम क्रॉकरीज़, अमरोहा गेट ☐ **मुज़फ़्फ़र नगर: कोर्ट रोड:** पुरी डिपार्टमेंटल स्टोर्स ☐ **ऋषिकेश: क्षेत्र रोड:** मोतीराम रमाकांत ☐ **रूड़की: सिविल लाइन्स:** मुरादाबाद हाउस ☐ **रूद्रपुर: भगतसिंह चौक:** इंडिया इंडस्ट्रीज ● **मेन मार्केट:** बिहारी लाल मनोजकुमार, दुकान नं. जी-13 ● **पांच मंदिर रोड:** सोमदत्त एंड सन्स ☐ **सहारनपुर: नेहरू मार्केट:** निहालचंद हरबंसलाल, दुकान नं. 14 ☐ **शामली: बड़ा बाज़ार:** सुशीलकुमार एंड सन्स ☐ **सुल्तानपुर: शाहगंज चौक:** एस. आर. स्टील एम्पोरियम, लाला सूजलाल मार्केट ☐ **उन्नाव: शाहगंज:** न्यू हरीशचंद्र गुप्ता एंड सन्स, 72/73 ☐ **वाराणसी: बांस फाटक:** गिरधरदास एंड सन्स ● **लहुराबीर:** यू. पी. ग्लास स्टोर्स, दुकान नं. सी 26/10 बी, स्टेट बैंक के सामने ● **नीची बाग:** रसोई घर, बाटा शू कंपनी के पास

पश्चिम बंगाल

अलीपुरद्वार: न्यू टाउन: बसंती इलेक्ट्रिक स्टोर्स ☐ **आसनसोल: बैस्टिन बाज़ार:** साहा स्टील हाउस, 19 लेटन स्ट्रीट ● 103 **जी टी रोड:** ईगल ग्लास हाउस ☐ **बशीरहाट: नूतन बाज़ार:** सुरलिपि, टाउन हॉल के पास ☐ **बेलडांगा: बेलडांगा बाज़ार:** रेडियोघर ☐ **बोइंची: बोइंची रेलगेट:** सोनातारी ☐ **बोलपुर: श्रीनिकेतन रोड:** आनंद स्टोर ☐ **बर्दवान: पुलिस स्टेशन के पास:** प्रयोजिनी, 497 बी. सी. रोड ● **बी. सी. रोड:** विक्टरी स्टोर्स, दुकान नं. 31 ☐ **कलकत्ता: बागड़ी मार्केट:** श्याम ब्रदर्स, सी-23 बागड़ी मार्केट ● **बेहाला:** न्यू बेहाला स्टील हाउस, 400/1 डी. एच. रोड ● **भवानीपुर:** अमीता स्टोर्स, 144 ए, ए. टी. मुखर्जी रोड ● **चांदनी चौक:** क्रॉकरी सेंटर, दुकान नं 41 बी ● नाग एंड सन्स, 6 चंदनी चौक स्ट्रीट ● **कॉलेज स्ट्रीट:** दत्ता ब्रदर्स, 41/42 कॉलेज मार्केट स्ट्रीट ● **गोलपार्क:** टी. आर. इलेक्ट्रिक कं., कोला विला, 23/37 गरियाहाट रोड ● **लेक मार्केट:** श्री दुर्गा स्टोर्स ● **8 लेनिन सारिणी:** रसाइल इलेक्ट्रिक ● **11 एम. जी. रोड:** तारकनाथ स्टोर्स, 151/ए, वी. बी. गांगुली स्ट्रीट ● **नेताजी रोड:** घोष एंड घोष, बी-65 न्यू मार्केट ● **ओल्ड चाइना बाज़ार:** अमरनाथ कुंडू एंड ब्रदर्स, दुकान नं. 14/3, ● लैप हाउस प्रा.लि. 23 केनिंग स्ट्रीट ● एस. एल. कुंडू एंड कं., दुकान नं. 206 ● सतगौरीदास एंड कं., दुकान नं. 196 ● **पोस्ता:** नंदी स्टोर्स, 50 कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट ● **85 आर. बी. एवेन्यू:** नेपाल शंकर एंड कं. ● **स्यालदा:** लक्ष्मीनारायण बासनालय, 133 एच, ए, जी. सी. बोस रोड ☐ **चकदाह: बोनोग्राम रोड (बस स्टेशन):** बासन बिपानी ☐ **चिंसुरा: खड़ुआबाज़ार:** महादेव कुंडू एंड कं. ☐ **चित्तरंजन:** अमलादही मार्केट: मॉडर्न स्टील फर्नीचर (यूनिवर्सल), ए/1 आर-3 ☐ **कूचबिहार: बी. एस. रोड:** दास ब्रदर्स ● **जापानी पट्टी:** सत्यनारायण मैटल स्टोर्स ● **एन. एन. रोड:** तोलाराम डालिमचंद ☐ **दार्जिलिंग: हिलकार्ट रोड:** हिंद स्टोर्स, चौक बाज़ार ☐ **धनियाखाली: धनियाखाली बाज़ार:** कोहिनूर स्टील फर्नीचर ☐ **दिनहाटा: चौराहाट:** वैद्यनाथ साहा एंड ब्रदर्स ☐ **दुर्गा चौक:** दुर्गाचौक कॉलोनी: प्रतीक ☐ **दुर्गापुर: बेनाचिट्टी:** दीप्ति ● **हटोला रोड:** रुज ब्रदर्स, स्टेशन बाज़ार ● **ममरा बाज़ार:** संसार, चटर्जी मार्केट ☐ **फुलिया: फुलिया बाज़ार:** न्यू कात्यायनी स्टोर्स, द्वारा संतोषकुमार पॉल ☐ **घाटल: कुड़ी बाज़ार:** तेजस पात्र ☐ **हावड़ा: वैष्णवपाड़ा बाज़ार:** प्रयोजिनी, 44/1 चंद्रकुमार बनर्जी लेन ☐ **जलपाई गुड़ी: दिन बाज़ार:** प्रसादी राम प्रभु दयाल ● **मर्केट रोड:** मित्रा ब्रदर्स ☐ **कृष्णानगर: गौरी सोना पट्टी:** नादिया बासनालय, विश्वंभर रॉय रोड ☐ **मालदा: 3/49 डी. सी. आर. मार्केट:** वेराइटी स्टोर्स ● **एन. एस. रोड:** रेडियो साइन ☐ **मिदनापुर: बड़ा बाज़ार:** टूंक हाउस ● **बीबीगंज:** छबड़ी एंटरप्राइजेज ☐ **शांतिपुर: पब्लिक लाइब्रेरी के सामने:** साहा इलेक्ट्रिक, 33/ए एन. एस. रोड ☐ **सिलिगुड़ी: आलू पट्टी: डे ब्रदर्स** ● **बिधान रोड:** नार्थ बंगाल स्टोर्स ● स्टेनलेस हाउस, ए-93 (आर) ● **हिलकार्ट रोड:** माहेश्वरी मेटल स्टोर्स ☐ **सिमुरालीः स्टेशन बाज़ार:** कुंडू बासनालय ☐ **उलूबेरिया: उलूबेरिया बाज़ार:** रक्षित स्टील स्टोर्स, उलूबेरिया स्कूल के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लालू प्रसाद यादव

खतरे की घंटी बजी

असंतुष्टों और विपक्ष के दबाव के कारण मुश्किल में

—फरज़ंद अहमद और प्रवीण चोपड़ा

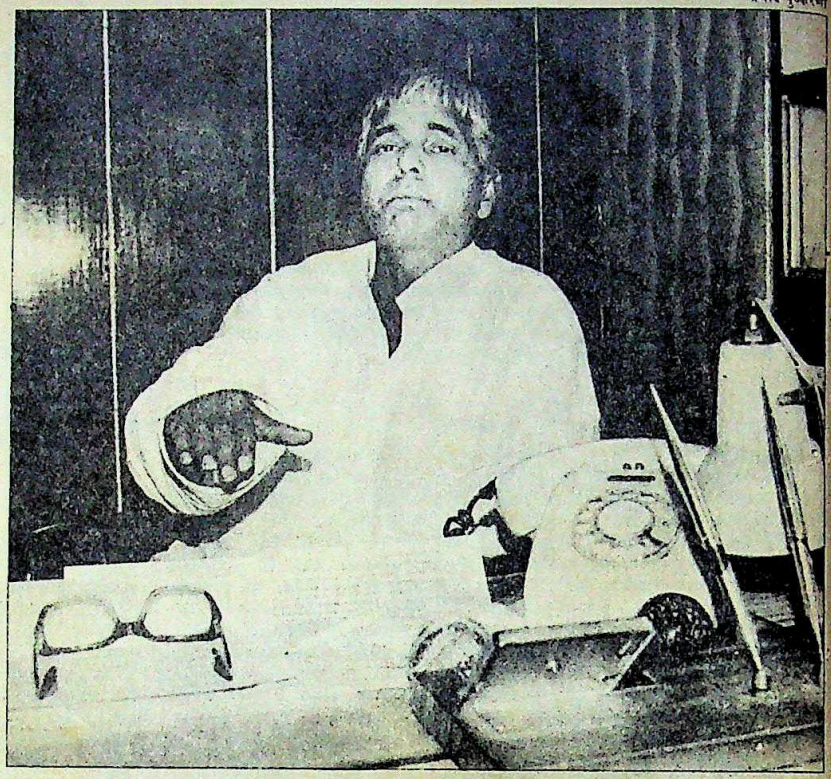
प्रमोद पुष्करणा

राजनीति बड़ी जालिम चीज है. सिर्फ दो महीने पहले संसदीय चुनावों में मंडल के मुद्दे पर अपने दल को राज्य से अच्छी-खासी सीटें दिलवाने वाले बिहार के मुख्यमंत्री लालू यादव ने बड़ी शान से घोषणा की थी कि मैं तो 20 साल तक सत्ता में बना रहूंगा. तब वे अजेय दिखते भी थे पर बिहार के इस अव्वल नेता पर अब उनके विरोधियों की ओर से दबाव बढ़ता जा रहा है. एक ओर तो जनता दल के असंतुष्टों ने पिछले महीने अजित सिंह की यात्रा के दौरान उनकी पीठ में छुरा भोंका, तो दूसरी तरफ विपक्ष के नेता डॉ. जगन्नाथ मिश्र ने विभिन्न मोर्चों पर लालू की नाकामियों के खिलाफ राज्यव्यापी आंदोलन छेड़ दिया.

जद के भीतर अजित सिंह और विश्वनाथ प्रताप सिंह के बीच सत्ता संघर्ष तेज हो जाने के साथ ही संकट और बढ़ गया. मंडलमय हो गए बिहार राज्य में अजित सिंह का कोई आधार नहीं दिखाई देता था. पर जब वे लालू के गढ़ में गए तो उन कई असंतुष्ट मंत्रियों और विधायकों ने, जो अभी तक वी.पी. सिंह और लालू के समर्थक माने जाते थे, उनका जोरदार स्वागत किया अजित सिंह लालू के विरोधी रामसुंदर दास से गठजोड़ बनाने में कामयाब रहे. लालू के समर्थकों का कहना है कि अजित सिंह इंका के साथ मिले हुए हैं, जो लालू की सरकार गिराना चाहती है.

लालू पर इंकाई हमले की बागडोर मिश्र के हाथ में है. वे विकास कार्यों के रुकने, औद्योगिक ठहराव, आर्थिक बदहाली और कानून-व्यवस्था की 'भयावह हालत' के मुद्दे को लेकर जनता के बीच जा रहे हैं. प्रदेश इंका के पूर्व अध्यक्ष रामशरण प्रसाद सिंह का कहना है कि "लालू सरकार के 16 महीनों में 9,000 लोगों की हत्या हुई. अपहरण और फिरौती वसूलने का धंधा जोरों पर चल निकला है."

कानून-व्यवस्था की बदहाली और प्रशासनिक निकम्मेपन के आरोप आधारहीन नहीं हैं. इसका सबूत यह है कि लालू इन आरोपों को गंभीरता से ले रहे हैं और सुधार की कोशिश में लगे हैं. मंत्रालयों के कामकाज की समीक्षा कर रहे हैं. स्वतंत्रता दिवस पर उनकी सरकार ने स्थानीय अखबारों में आधे पृष्ठ का विज्ञापन छपवाया जिसमें सरकार की उपलब्धियों को गिनाया गया था.

वैसे, लालू इतने लंबे-चौड़े वादे करते हैं कि उपलब्धियां फीकी दिखेंगी ही. अब तक उन्होंने कम-से-कम 200 बड़ी घोषणाएं की हैं और लगभग इन सभी के सिलसिले में कुछ नहीं किया.

वे अपने भारी-भरकम मंत्रिमंडल का आकार कम करने में भी नाकाम रहे. इस कदम का मकसद उस आरोप को शांत करना था कि वे राज्य के खजाने को खाली कर रहे हैं. पिछले साल पार्टी विभाजन के दौरान अपने गुट को एकजुट रखने के लिए उन्होंने अपने मंत्रिमंडल में 72 लोग भरे थे. बाद में उन्हें महसूस हुआ कि इनमें से ज्यादातर नाकाबिल हैं. उन्होंने अपने मंत्रियों को संकेत दिया कि वे इस्तीफे सौंप दें. तभी प्रदेश पार्टी अध्यक्ष रामसुंदर दास ने बगावत कर दी. कुछ मंत्रियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों को शांत करने के लिए लालू ने मंत्रियों से अपनी संपत्ति

नाकामियों का ब्यौरा

मुख्यमंत्री की भूल-चूक और विफलताएं

- 72 सदस्यों वाले मंत्रिमंडल का आकार घटाने की कोशिश के बाद इरादा रद्द.
- कुछ मंत्रियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों पर कोई कार्रवाई नहीं.
- वित्तीय कुप्रबंध के कारण सरकारी खजाना खाली.
- खस्ताहाल कानून-व्यवस्था: हत्याओं, पैसा हथियाने और फिरौती के लिए अपहरणों का सिलसिला जोरों पर.
- भागलपुर दंगे के दोषियों को सजा दिलाने में असफल; अपने नजदीकी यादवों को बचाने के लिए विशेष अदालतों को नकारा करने की कोशिश.
- अल्पसंख्यक वित्त आयोग धन के लिए मोहताज; उर्दू के प्रसार को धक्का.
- शिक्षक रहे विधायकों द्वारा दोहरा वेतन लेने के मुद्दे पर चुप्पी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

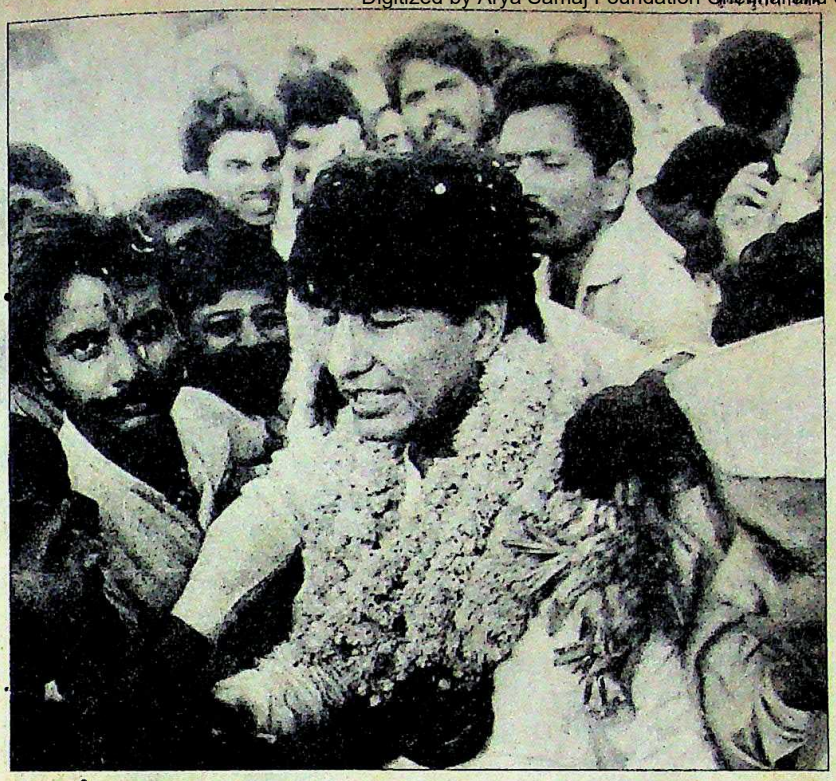

लालू के विरोधी

पार्टी के भीतर और बाहर दबाव बढ़ रहा है

अजित सिंह: वी.पी. सिंह को लक्ष्य करके लालू हटाओ अभियान को शह देने में सबसे आगे.

असंतुष्ट तत्व: गद्दी छिनने की आशंका से ग्रस्त मंत्री; पार्टी के वे विधायक जिन्हें वादे के मुताबिक सरकारी उपक्रमों के महत्वपूर्ण पद नहीं दिए गए; इस्तीफा दे चुके मंत्री नवल किशोर साही और विजय कृष्ण.

इंका: राज्य की बागडोर लपकने की फिराक में.

जगन्नाथ मिश्र: आर्थिक बदहाली, विकास कार्यों पर रोक, शैक्षणिक क्षेत्र में अराजकता और खस्ताहाल कानून-व्यवस्था जैसे मुद्दों पर राज्यव्यापी आंदोलन.

मुसलमान: असुरक्षा और अन्याय का अनुभव करने लगे हैं.

रामसुंदर दास: मुख्यमंत्री पद की होड़ में हुई हार और पार्टी अध्यक्ष के रूप में लालू द्वारा नीचा दिखाए जाने के सदमे से उबर रहे हैं. असंतुष्टों के साथ कदमताल.

घोषित करने को कहा.

असंतोष को दबाने के लिए लालू ने राज्य के 54 बीमार निगमों और परिषदों में से 41 के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष पदों पर नियुक्तियां कर दीं. इनका दर्जा भी मंत्री के बराबर ही होता है. इन पदों पर नियुक्त लोगों में 38 विधायक, दो सांसद और एक पार्टी पदाधिकारी हैं. यह हड़बड़ी में आग बुझाने की कार्रवाई जैसी ही लगी क्योंकि जिन विधायकों को ये पद देने का वादा किया गया था और जिन मंत्रियों की कुर्सी छिन जाने की आशंका थी, वे बगावत पर उतर आए थे. ये लोग अजित सिंह खेमे में जाकर लालू की नकेल कसना चाहते थे.

और जब राज्य पार्टी अध्यक्ष रामसुंदर दास ने भी तेवर बदले तब लालू के कानों में खतरे की घंटी बजने लगी. जवाब में लालू समर्थकों ने दास को पार्टी पद से हटाए जाने की मांग की और जनता दल बचाओ अभियान शुरू करते हुए धरना दिया. उधर, दास समर्थकों ने 'बिहार बचाओ' समिति गठित कर डाली.

लालू के लिए चिंता का एक और कारण है उनसे मुसलमानों का मोहभंग होना. मोहभंग की एक वजह तो यह है कि उनकी घोषणाओं के बावजूद भागलपुर दंगे के असली दोषी अभी तक नहीं पकड़े जा सके हैं. यही नहीं, दंगों में सक्रिय माने जाने वाले कामेश्वर यादव से लालू ने मेलजोल बढ़ाया. मिश्र ने तो उन पर दोषियों को, जिनमें अधिकांश यादव हैं, बचाने की कोशिश करने और विशेष अदालतों को नकारा कर देने का भी आरोप लगाया. बिहार अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष जाबिर हुसैन सरकार से पहले ही शिकायत कर चुके हैं कि भागलपुर जिला प्रशासन दंगों की जांच के लिए न्यायाधीश आर.एन. प्रसाद की अध्यक्षता वाले एक सदस्यीय आयोग के सामने प्रमुख गवाहों को पेश नहीं कर रहा.

और तो और, जांच आयोग खुद विवाद के घेरे में आ गया है. धनबाद संसदीय क्षेत्र से भाजपा सांसद रीता वर्मा ने चुनाव से पहले कहा था कि उनके परिवार के आरएसएस से पुराने संबंध हैं. रीता वर्मा उक्त न्यायाधीश प्रसाद की पुत्री हैं. संदेह दूर करने के लिए हुसैन ने आयोग में दो और सदस्यों को शामिल करने के लिए दबाव डाला था पर वे असफल रहे.

अब अल्पसंख्यक समुदाय अपनी शिकायतें खुलकर सामने ला रहा है. बिहार के अंजुमन-तरक्की-ए-उर्दू के अध्यक्ष अब्दुल मोघानी ने केंद्र सरकार को एक ज्ञापन पेश किया है. इसमें अन्य बातों के अलावा बिहार अल्पसंख्यक वित्त आयोग के वित्तीय संकट और दूसरी सरकारी भाषा उर्दू की प्रगति पर लगे ग्रहण की चर्चा है. साथ ही, अक्तूबर 1989 में दंगापीड़ितों को 1 लाख रु. मुआवजा देने का फैसला किया गया था लेकिन लालू सरकार ने इसे घटाकर 40,000 रु. कर दिया. जातीय और सांप्रदायिक दंगों से प्रभावित लोगों को भी राहत नहीं मिली है.

लालू के खैरख्वाहों की ओर से भी विरोध उभरने शुरू हो गए हैं. अध्यापक-विधायकों के दोहरे वेतन लेने के मामले पर मुख्यमंत्री के रवैए पर नाराज होकर उच्च शिक्षा राज्यमंत्री नवलकिशोर शाही ने इस्तीफा दे दिया. राजभाषा राज्यमंत्री विजय कृष्ण ने इसलिए इस्तीफा दे दिया कि उनके विधानसभा क्षेत्र बाढ़ को जिला बनाने से सरकार ने मना कर दिया.

यानी बिहार में राजनैतिक घटनाक्रम तेजी से बदलने लगा है. इसका अंत कहां होगा यह वी.पी. सिंह-अजित सिंह के बीच चल रही रस्साकशी और इंका में जनता दल के विलय आदि की चर्चाओं की अंतिम परिणति पर निर्भर करेगा. लालू की अल्पमत सरकार के जल्दी गिरने की संभावना तो नहीं है परंतु कभी दैदीप्यमान सितारे की तरह चकमने वाले लालू के सितारे गर्दिश में नजर आ रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय पार्टियां

भूमिका की तलाश में

इंका की अल्पमत सरकार डगमगाते हुए ही सही, संसद के सत्र में जमी रही और विपक्ष अपनी खामियों और वैचारिक उलझनों के कारण उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाया

—जफ़र आगा और कावेरी बमजई

यह तलाश की एक विचित्र-सी कहानी है. देश को स्थायित्व की तलाश है जो अल्पमत सरकार नहीं दे पा रही है. और विपक्ष है कि उसका विरोध नहीं कर पा रहा है. देश की चार मुख्य

इंका
नेतृत्व का संकट

राजीव के उत्तराधिकारी की तलाश. सोनिया के पीछे हटने से सिंधिया और पायलट दौड़ में.

पार्टियों को अपनी एक विशेष पहचान की तलाश है, पर वे सफल नहीं हो पा रही हैं.

नया नेता पाकर भी इंका परेशान है. वह नेहरू-गांधी परिवार के नेतृत्व वाले दिनों के लौटने का इंतजार कर रही है. अपने अनेक नेताओं की भारी-भरकम महत्वाकांक्षाओं से खंड-खंड होने की स्थिति में पहुंचे जनता दल को अपने भीतरी झगड़े निबटाने से ही फुरसत नहीं है, जबकि वामपंथी दल साम्यवाद की 'लाश' को जिंदा करने में ही जुटे हुए हैं. और भाजपा खुद अपने पैदा किए भस्मासुर से परेशान है.

ऐसे में जब लोकसभा का एक और सत्र समाप्त होने जा रहा है, देश अभी भी चकराया हुआ है. और इस मंच पर जमे खिलाड़ियों को यह मालूम है कि वे क्या कर रहे हैं तो कहना पड़ेगा कि वे राजनेता कम हैं, अभिनेता अधिक, क्योंकि सरकार और विपक्ष अपनी भूमिकाएं अदलते-बदलते देखे गए. जैसे खाद पर सब्सिडी घटाने के सवाल पर सरकार ने इंकाई सांसदों के डर से फैसला बदला. और पी.वी. नरसिंह राव सरकार का गला पकड़ने को तैयार दिखते हुए भी विपक्ष उसका बाल बांका नहीं कर पाया.

समीकरणों, पहचानों, स्थितियों में भारी बदलाव साफ दिखता है. लेकिन इस अस्तव्यस्तता के कारण उतने साफ नहीं दिखते. वैसे, अस्तव्यस्तता सबसे स्पष्ट तौर पर इंका में दिखाई देती है. इसके वरिष्ठ नेता और मानव संसाधन विकास-मंत्री अर्जुन सिंह अपनी पार्टी के लोगों के मूड का ही परिचय देते हैं, "कोई भी नेता राजीव जी की जगह नहीं भर सकता." लेकिन उनके युवा मंत्रिमंडलीय सहयोगी माधवराव सिंधिया और राजेश पायलट इस शून्य को भरने की कोशिश कर रहे हैं.

जनता दल भी अपनी अंदरूनी कलह पर मुलम्मा चढ़ाना पसंद करेगा. जॉर्ज फर्नांडीस मानते हैं कि पार्टी में झगड़े हैं पर वे इससे इनकार करते हैं कि ये अहं के टकराव का नतीजा है. पर सचाई इससे अलग और कड़वी है.

झगड़े नेताओं और उनकी राजनीति दोनों को लेकर ही हैं. चमक फीकी पड़ने के बावजूद विश्वनाथ प्रताप सिंह के लिए मुख्य राष्ट्रीय मुद्दा अभी भी सामाजिक न्याय ही बना हुआ है. वे कहते हैं, "अब हम इससे पीछे नहीं हट सकते." लेकिन उनके साथी रामकृष्ण हेगड़े भाजपा के खतरे की काट के लिए 'धर्मनिरपेक्ष ताकतों की साझेदारी' का आह्वान करते हैं. पार्टी के एक और दिग्गज अजित सिंह ने भी उत्तर प्रदेश में इंका से कुछ 'तालमेल' के लिए अपनी गांठ ढीली की है. लेकिन वी.पी. सिंह नहीं डिगे.

भाजपा की समस्याएं तो अपना घर खुद ही जला डालने जैसी है. अति सांप्रदायिक लहर पर सवार होकर इतनी दूर आने के बाद अब वह इंका की तरह

भाजपा
छवि की चिंता

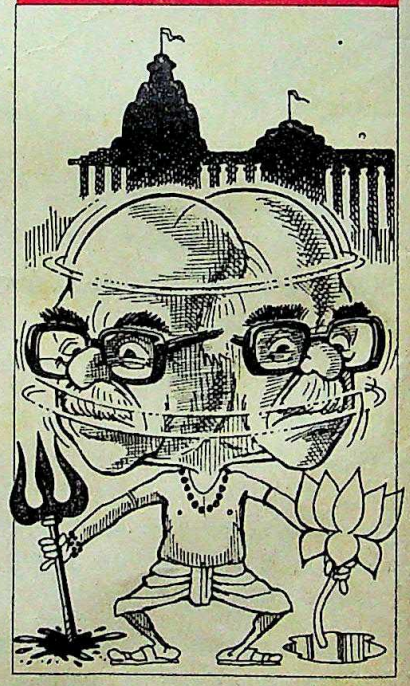

मंदिर के सवाल पर अलग-थलग. इसे विहिप के साथ रहना चाहिए या इंका की नकल करनी चाहिए?

सब कुछ एक ही टोकरी में समेटकर चलना चाहती है. इसके उन्मादी तेवर के अगुआ लालकृष्ण आडवाणी अपने तेवर को नरम करने की कोशिश कर रहे हैं. अब वे कहते हैं, "राम मंदिर बनाने का वादा विहिप ने किया है, भाजपा ने नहीं. हमने कहा था कि हम मंदिर निर्माण की सभी बाधाएं दूर कर देंगे. आज भी हम इस बात पर कायम हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

VIP BENZ

New VIP Benz steers a touch of German precision to men's underwear. You have the most comfortable stretchable fabric. And you have the most reliable imported rubber elastic. The rest is sheer styling. All perfect. All German.

VIP BENZ. Great mileage in comfort.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Avenues HH

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माकपा
वैचारिक उलझन

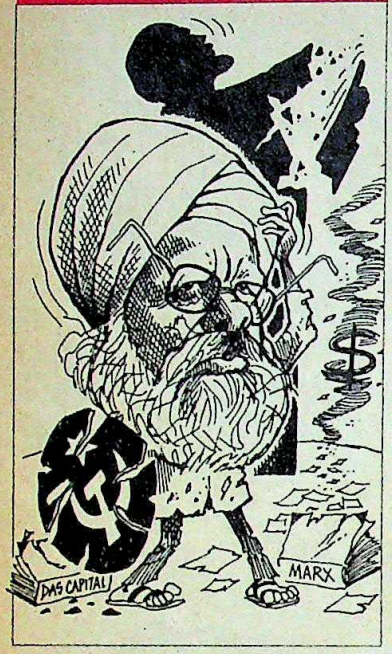

इसे हकीकत से आंखें मूंद लेनी चाहिए या बदलावों को बेहिचक स्वीकारना चाहिए?

उधर, वामपंथी अभी भी उन पुराने विचारों से ही चिपके हुए हैं जिन्हें उनके प्रवर्तकों ने त्याग दिया है. माकपा नेता प्रकाश कारत अपनी घबराहट छिपाते हुए कहते हैं, "मॉस्को की घटनाओं से पश्चिम बंगाल या केरल में हम प्रभावित नहीं होंगे क्योंकि यहां हमारा कामकाज ही हमारे काम आएगा."

लगभग सभी पार्टियों के नेता इससे सहमत हैं कि यह गहरे अस्थिरता का दौर है. इंका किसी संभावित दलबदलू को गंवाने का जोखिम नहीं उठाना चाहती ताकि आखिरकार विजय का सेहरा उसके माथे ही बंधे. एक वरिष्ठ इंकाई मंत्री कहते हैं कि तभी पार्टी अपनी राह चलने के काबिल हो पाएगी.

लेकिन विपक्ष इंका को इतनी सहजता से राह ढूंढ़ने नहीं देगा. महंगाई के खिलाफ वी.पी. सिंह की पदयात्रा और रैलियों का कार्यक्रम बन चुका है. 'आर्थिक मुद्दों' को बुलंद करने के लिए राष्ट्रीय मोर्चा-वाम मोर्चा ने वोट क्लब पर 27 सितंबर को रैली करने का फैसला किया है. तेजी से घूमते इस चक्र में भाजपा भी पीछे नहीं रहने वाली है.

जाहिर है, गुत्थमगुत्था होने की तैयारी जोरशोर से जारी है.

राम मंदिर निर्माण

फिर उठ रहा है गुबार

राज्य की भाजपा सरकार कानूनी दावपेंच में उलझी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह भी कानूनी दावपेंच के जाल में फंस गए लगते हैं. चोटी के कानून विशेषज्ञों से राय-विचार करने के बाद भी उन्हें राम मंदिर मसले पर अदालत की पकड़ से मुक्ति का मार्ग नहीं मिल पाया है. राज्य की भाजपा सरकार के सामने विवादास्पद स्थल के अधिग्रहण का विधेयक लाने के सिवा कोई चारा नहीं दिख रहा है.

इसकी वजह यह है कि पहले अदालत में चल रहे मामले में सरकार और विहिप की भागीदारी समाप्त करने पर विचार हो चुका था लेकिन बाद में इस विचार को इसलिए त्याग दिया गया क्योंकि इससे सुन्नी वक्फ़ बोर्ड का पक्ष काफी मजबूत हो जाता.

ऐसे में कल्याण सिंह सरकार अगले महीने विधानसभा में विधेयक लाने की तैयारी कर रही है. और विधान परिषद अधिक से अधिक यही कर सकती है कि वह विधेयक को कुछ संशोधनों के साथ विधानसभा को वापस कर दे. लेकिन दिल्ली में जाकर इस विधेयक को निश्चित रूप से अटक जाना है. तब भाजपा डंके की चोट पर इस बात का ऐलान कर सकेगी कि मंदिर निर्माण में केंद्र सरकार ही एकमात्र बाधा है.

कल्याण सिंह को इस योजना पर जल्दी अमल करना पड़ेगा क्योंकि विहिप नवंबर या दिसंबर में कार सेवा शुरू करने की तैयारी में जुट गई है. भले ही केंद्र के साथ टकराव हो और कानून-व्यवस्था की समस्या पैदा हो. विहिप ने पहले ही शिलान्यास स्थल के समीप पांच जायदादें खरीद ली हैं. अब वह उन आठ कमरों को भी हासिल करने के लिए बातचीत कर रही है जो किराए पर उठे हुए हैं.

उधर, मुख्यमंत्री कल्याण सिंह मुसलमानों को नाराज नहीं करना चाहते. लेकिन मुसलमानों को विश्वास में लेने की उनकी पहल सार्थक नहीं रही है. दो मंत्रियों और एक पार्टी सांसद वाली टीम का अयोध्या दौरा बेकार रहा क्योंकि ज्यादातर मुसलमानों ने टीम से बातचीत करने से इनकार कर दिया.

इस ज्वलंत मुद्दे पर भाजपा सरकार की सफलता संदिग्ध लगती है. मंदिर का भविष्य भी तब तक अंधेरे में ही रहेगा जब तक केंद्र में भाजपा का राज न हो. या फिर जब तक भगवान राम स्वयं ही विवाद का फैसला न लिख डालें.

—दिलीप अवस्थी

विहिप द्वारा बनाई गई छतरी

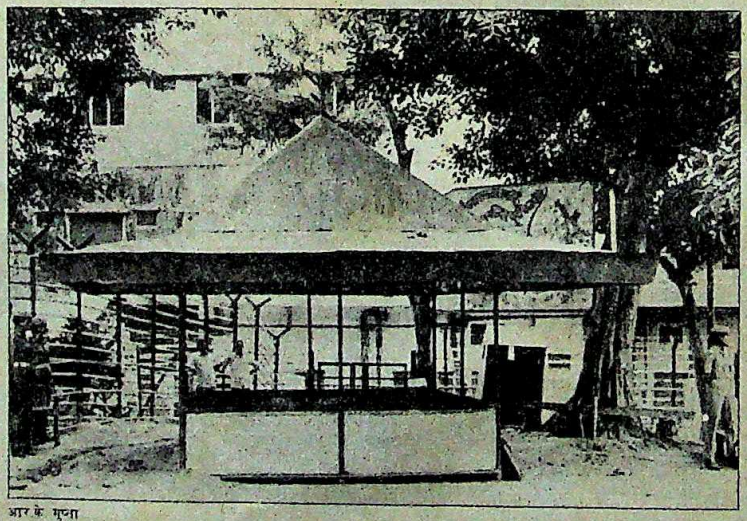

आर के गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

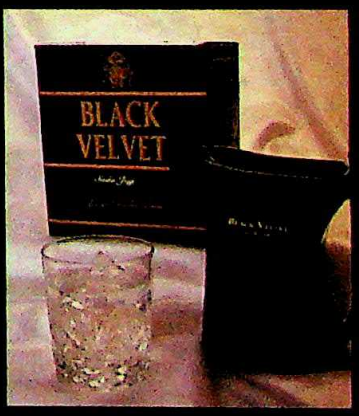

Soda jug bubbling with the sp
of good cheer.

BLACK VELVET

Soda Jug

Available at select outlets on

The best things in life are black

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेंद्र सिंह टिकैत

टिक नहीं पाई दोस्ती

भाजपा सरकार और टिकैत में दो-दो हाथ करने की तैयारी

भारतीय जनता पार्टी और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान नेता महेंद्र सिंह टिकैत के बीच का हनीमून समाप्त हो गया है. यूनियन की सिफारिश या उसके एक इशारे पर विधायक-सांसद का टिकट देने, राज्यमंत्री को कैबिनेट मंत्री बनाने या छोटे-मोटे फैसले करने का दौर समाप्त हो गया है. दो महीने में तकरार की दो घटनाओं के बाद अब दोनों एक-दूसरे को दुश्मन मानकर लड़ाई की अपनी-अपनी तैयारी में लग गए हैं. धौलड़ी कांड में जहां टिकैत ने प्रशासन को पस्त किया, वहीं लखनऊ की उनकी प्रस्तावित रैली को मात्र एक धमकी से रद्द कराकर मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने करारा जवाब भी दे दिया है.

और अब प्रदेश के मंत्रियों, प्रशासन के लोगों और भाजपा के कार्यकर्ताओं से बात करने से स्पष्ट लगता है कि गांव में किसी अपराधी को पकड़ने आए सिपाही की हत्या से संबंधित धौलड़ी कांड के मामलों को ही आगे बढ़ाते हुए राज्य सरकार टिकैत से अंतिम लड़ाई की तैयारी कर रही है. मेरठ के डीआईजी श्रीकृष्ण चंद्र बताते हैं कि इस मामले में दर्ज दोनों प्राथमिकी पर सीआईडी जांच हो रही है. वे कहते हैं, "हम टिकैत को कानून से ऊपर मानने को तैयार नहीं—टिकैत ही नहीं, किसी को भी नहीं."

उधर टिकैत बताते हैं कि उनके खिलाफ मौरा कलां थाने में, जो उनके गांव से मात्र 4 किमी दूर है, वारंट भी आ गया है और पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने की तैयारी कर रही है. टिकैत के बड़े पुत्र नरेश पाल, जो वंश परंपरा से चलने वाली खाप व्यवस्था के अनुसार उनके बाद बालियान खाप के प्रमुख होंगे, कहते हैं, "गिरफ्तारी हुई तो क्रांति हो जाएगी."

कार्टून जयंतो

लेकिन किसान यूनियन और टिकैत सिर्फ बातें कहने भर में भरोसा नहीं करते. उन्होंने अपनी तैयारी शुरू कर दी है. लखनऊ में रैली का फैसला इसी हिसाब से हुआ था. पर कुछ अपनी कमजोरी और कुछ प्रशासन की तैयारी देखकर टिकैत ने इसे रद्द कर दिया. किसान यूनियन ने एक बार फिर बाहर से भी समर्थन लेकर अपनी ताकत बढ़ाने की तैयारी की है. हाल में कर्नाटक राज्य रैयत संघ के अध्यक्ष प्रो. नजुंदास्वामी से टिकैत की लंबी बात हुई है. देश भर के किसान नेताओं को 15 सितंबर को दिल्ली में चरण सिंह की समाधि पर बुलाया गया है.

बहुत संभव है कि प्रदेश की भाजपा सरकार टिकैत पर कार्रवाई करने से पहले इस बैठक की सफलता-विफलता को देख ले. पर मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने जिस तरह का बयान दिया है उससे स्पष्ट है कि वे टिकैत से दो-दो हाथ करने के मूड में हैं. उन्होंने टिकैत पर अपराधी गिरोहों को संरक्षण देने का आरोप लगाया है. पर पुलिस का कोई भी अधिकारी ऐसे अपराधियों का नाम नहीं बताता.

टिकैत की गिरफ्तारी के अलावा इस पूरे इलाके से राजस्व वसूली करना भी साधारण काम नहीं है. किसान यूनियन के चार साल पुराने असहयोग आंदोलन में बिजली, पानी का बिल न भरना, कर्जे वापस न करना ही सबसे अहम रहा है.

पर राज्य के सहकारितामंत्री सुधीर कुमार बालियान, जिन्हें टिकैत के चलते ही विधायक और मंत्री पद मिलने की चर्चा है, कहते हैं कि मुजफ्फरनगर जिले में राजस्व वसूली सबसे ज्यादा हुई है. वे बताते हैं कि अकेले सिसौली में 99 फीसदी बिल भरे गए हैं. टिकैत की घोषणाओं के चलते जरूर कुछ गलतफहमी हुई. साथ ही वे यह भी बताते हैं कि 'कर्ज माफी नहीं हुई.

लेकिन राजस्व वसूली के बारे में सरकारी रिकॉर्ड कुछ और ही बात करते हैं. उनके अनुसार पूरे पश्चिमांचल में 20,000 रु. से अधिक बिजली के बकाया वाली कुल राशि करीब 32.36 करोड़ रु. है जिनमें अकेले मेरठ क्षेत्र का हिस्सा 27.61 करोड़ रु. का है. इस बकाए और कर्ज वसूली, बिजली की दर का अंतर और अब हुई खाद की कीमतों में वृद्धि ने किसानों को आंदोलित करने का मामला जुटा दिया है. और उनके सवाल पर अचानक अजित सिंह, देवीलाल और वी.पी. सिंह भी सचेत हुए हैं.

टिकैत ने पिछले चुनाव में भाजपा को वोट दिलाकर मुसलमानों में अपना आधार कम किया है. और धौलड़ी समेत कई दूसरे मामलों में भी हाथ डालकर सिर्फ जाटों के हितैषी होने की छवि पाई है. धौलड़ी ने यूनियन के प्रति पुलिस के सहानुभूति वाले रुख को भी बदला है. इस हिसाब से वे अभी कमजोर स्थिति में हैं. ऐसे में राज्य सरकार की तरफ से अगर नया हमला हुआ तो टिकैत समाप्त भी हो सकते हैं, या अपनी बिगड़ी स्थिति सुधार-कर फिर से उभर भी सकते हैं. यही द्वंद्व भाजपा सरकार को भी कोई फैसला लेने से रोक रहा है.

—अरविंद मोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधवार था पीला।

महकती यादों का सिलसिला।

याद है छत पर पहली बार? दुनिया जवां,

ऊपर तारों का कारवां।

ठहर गई ज़मीं, सिहर उठा आसमां।

हां पीला। प्यार-से-एक-बार-फिर-पीला।

बोली, क्यों न फिर बंध जाए यह समां?

प्यार-से-एक-बार-फिर-पीला। मैंने ज़मीं रोक दी उसके लिए। फिर से।

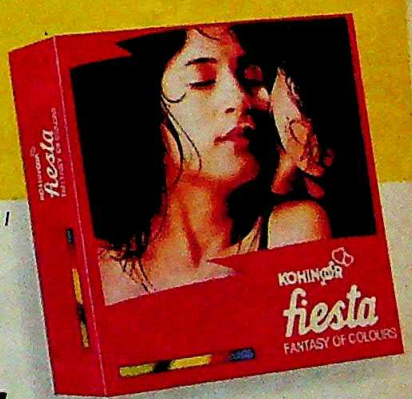

KOHINOOR
fiesta

ल्यूब्रिकेटेड रंगीन कॉन्डोम

MAA COMMUNICATIONS 1592 HIN

उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश

कसती नकेल

पटवा सरकार पर पार्टी का दबदबा

भोपाल में होने वाले भाजपा के संवाददाता सम्मेलनों में अब पत्रकारों को परोसे जाने वाले रसगुल्ले का आकार बढ़ गया है और चाय की जगह आइसक्रीम मिलने लगी है. कारण भाजपा आलाकमान का मानना है कि मध्य प्रदेश सरकार की छवि सुधारनी है.

इसके लिए पार्टी ने पत्रकारों को मिठाई खिलाना ही एकमात्र काम नहीं माना है. आलाकमान ने मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा के पर भी कतरे हैं. पिछले पखवाड़े उसने राज्य में सरकार और पार्टी के कामकाज पर नजर रखने के लिए उच्चाधिकार प्राप्त प्रबंध समिति बनाई है जिसे 'सुपर कैबिनेट' कहा जाने लगा है.

भाजपा की सर्वेसर्वा त्रिमूर्ति में से एक, विजया राजे सिंधिया की अध्यक्षता वाली इस 15 सदस्यीय समिति का घोषित काम पार्टी और सरकार के बीच बेहतर तालमेल बनाना है. सिंधिया ने कहा, "हम सरकार के काम का मूल्यांकन करने और विभिन्न मुद्दों पर सलाह देने के लिए हर पखवाड़े बैठेंगे." प्रदेश भाजपा अध्यक्ष लखीराम अग्रवाल कहते हैं, "समिति स्टीयरिंग तो नहीं थामेगी. यह सिर्फ ड्राइवर को दिशा बताएगी." सरकार इस समिति की मंजूरी के बिना कोई बड़ा फैसला नहीं कर सकती.

आर. मी. साहू

मुख्यमंत्री पटवा: शामत आई

जैसे, अपनी पिछली बैठक में समिति ने विभिन्न सरकारी निगमों और सार्वजनिक उपक्रमों के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष की नियुक्ति पर विचार करके सरकार को हरी झंडी दी. प्रदेश इंका उपाध्यक्ष हजारीलाल रघुवंशी ने इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, "यह सरकार चलाने का खुल्लमखुल्ला गैर-संवैधानिक तरीका है."

और तो और, लालकृष्ण आडवाणी और विजया राजे सिंधिया ने, जो अब तक पटवा का बचाव करती थीं, हाल में सार्वजनिक तौर पर पटवा की खिंचाई की. भोपाल के एक आयोजन में सिंधिया ने पटवा को 'विनम्रता' से काम करने की सलाह दी. बाद में आडवाणी ने संवाददाताओं से कहा, "मैं इस सलाह से सहमत हूं."

इसके पहले पार्टी उपाध्यक्ष सिकंदर बख्त उनसे कह चुके हैं, "आपको सरकार चलाना नहीं आता." फिर अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि जब वे राज्य सरकार की उपलब्धियों का जिक्र करते हैं तो श्रोताओं में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती.

सार्वजनिक तौर पर की गई इन टिप्पणियों के अलावा बंद कमरों की बैठकों में मंत्रिमंडल की खिंचाई होती रही है. कुछ महीनों से पार्टी कार्यकर्ता भी खुलेआम अपनी नाराजगी जाहिर कर पटवा के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं.

प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष नारायण प्रसाद गुप्त ने बिलासपुर में पत्रकारों से कहा कि पटवा दो महीने के 'ट्रायल' पर हैं. लगता है उन पर बड़े रसगुल्ले का असर नहीं हुआ. —नरेंद्र कुमार सिंह

चुरहट लॉटरी कांड

अधर में

शरद पंडित/नई दुनिया

न्यायमूर्ति सोहानी; और अर्जुन सिंह

चुरहट लॉटरी विवाद का कोई अंत नजर नहीं आता. केंद्रीय मानव संसाधनमंत्री अर्जुन सिंह का जन्म स्थान, सीधी जिले का वह छोटा-सा गांव अब इस कदर कुख्यात हो चुका है कि नाम लेने भर से करोड़ों के घोटाले की तस्वीर उभरने लगती है. अर्जुन सिंह के परिवार के सदस्यों और नजदीकी रिश्तेदारों द्वारा आयोजित चुरहट लॉटरी ने 1989 में उनसे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री की गद्दी छीन ली थी. और आज भी उसका दाग उनके दामन से धुला नहीं है.

पिछले पखवाड़े चुरहट लॉटरी जांच आयोग के लिए एक न्यायाधीश की नियुक्ति की बात तय कर ली गई. फरवरी 1989 में गठित इस जांच आयोग के गठन के बाद से दो न्यायाधीश बदले जा चुके हैं. यह तीसरी नियुक्ति होगी. मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने आयोग के शीर्ष पर पटना हाईकोर्ट के अवकाशप्राप्त मुख्य न्यायाधीश जी.जी. सोहानी की नियुक्ति के खिलाफ दायर दो याचिकाओं को रद्द कर दिया.

उल्लेखनीय है कि न्यायमूर्ति सोहानी की नियुक्ति 10 जुलाई को की गई थी और उन्होंने एक महीने के अंदर ही इस्तीफा दे दिया. उनकी नियुक्ति आयोग के पूर्व अध्यक्ष एस.टी. रामलिंगम के स्थान पर की गई थी. पर अर्जुन सिंह के लोगों ने यह प्रचार शुरू किया कि भाजपा सरकार ने अपने 'अनुकूल' न्यायाधीश की नियुक्ति की है. सोहानी ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "मेरा समूचा न्यायिक जीवन विवादों से परे रहा. अब मैं किसी विवाद में नहीं पड़ना चाहता."

राज्य सरकार का कहना है कि रामलिंगम को इसलिए हटाया गया क्योंकि वे 30 जून को मद्रास उच्च न्यायालय से अवकाशप्राप्त कर चुके थे. पटवा के अनुसार उन्हें अध्यक्ष बनाए रखने में 'व्यावहारिक कठिनाइयां' थीं.

अब राज्य सरकार नए न्यायाधीश की तलाश में है. पर राजनैतिक दांवपेचों के मद्देनजर लगता नहीं इसमें जल्दी हो पाएगी. —नरेंद्र कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष रूप से धर्मादा एवं धार्मिक न्यास तथा पंजीकृत समितियों के लिए

सीआरटीएस

उत्तम कारण के लिए उत्तम लाभ मिले.

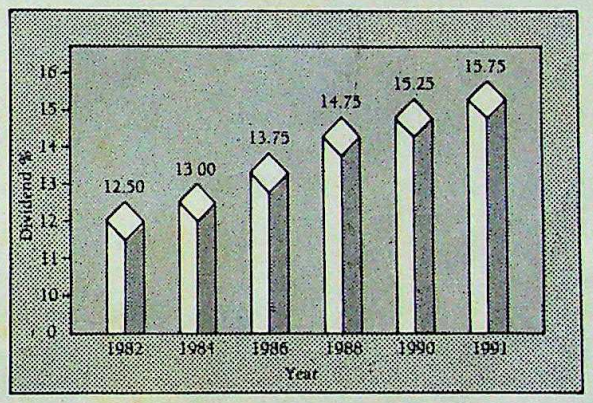

पिछले वर्ष का डिवीडेंड था 15.75%

सीआरटीएस- 81. न्यासों की अपेक्षाओं के अनुरूप सभी कुछ प्रदान करनेवाली योजना. सुरक्षा. ज़्यादा लाभ. कर छूट. तथा पुनः खरीद की सुविधाएं.

हालांकि इस योजना के अंतर्गत यूनिटों का अंकित मूल्य रु. 100/- है किन्तु वास्तविक बिक्री तथा पुनः खरीदी दामों को यूनिट ट्रस्ट हर महीने निश्चित करता है. इस योजना के अंतर्गत न्यूनतम निवेश 100 यूनिटों का है, तदोपरांत 10 यूनिटों के गुणकों में किया जा सकता है.

कर-छूट

यूनिटों को न्यासी सिक्योरिटी माना जाता है. आयकर अधिनियम की धारा 11(2)(बी) के अंतर्गत यूनिटों को केंद्रीय सरकार द्वारा अधिकृत सिक्योरिटी भी माना जाता है. इस प्रकार न्यासों को आयकर छूट का लाभ मिलता है.

अब ! बेहतर नकदी सुविधा.

3 वर्ष बाद पूर्ण पुनः खरीद का विकल्प.

डिवीडेंड का पुनः निवेश

यूनिटधारक यदि चाहें तो हर वर्ष डिवीडेंड पा सकते हैं या फिर इस योजना की अतिरिक्त यूनिटों में पुनः निवेशित कर सकते हैं. पुनः निवेशित डिवीडेंड से ख़रीदी गई यूनिटों को किसी भी समय वापस बेचा जा सकता है. अर्थात् नकदी की अधिकतम सुविधा.

मुफ़्त जानकारी पुस्तिका के लिए यूनिट-ट्रस्ट के किसी भी कार्यालय या प्रमुख प्रतिनिधि या एजेंट से संपर्क कीजिए.

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

एक करोड़ यूनिटधारकों की सेवा में समर्पित.

बंबई * कलकता * मद्रास * नयी दिल्ली * अहमदाबाद * बंगलोर * भुवनेश्वर * चंडीगढ * कोचिन * दुर्गापुर * गुवाहाटी * हैदराबाद * इंदौर * जयपुर कानपुर * लखनऊ * लुधियाना * नागपुर * पणजी * पटना * पुणे * राजकोट * शिमला * सूरत * तिरुचिरापल्ली * त्रिचूर * विजयवाड़ा.

सभी सिक्योरिटी निवेश के साथ बाज़ार का जोखिम होता है. किसी भी निवेश से पहले अपने निवेश सलाहकार या एजेंट से सलाह अवश्य लें.

Sista's-UTI-230/90 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

McDOWELL RALLYE.
THE SPIRIT OF DARING.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

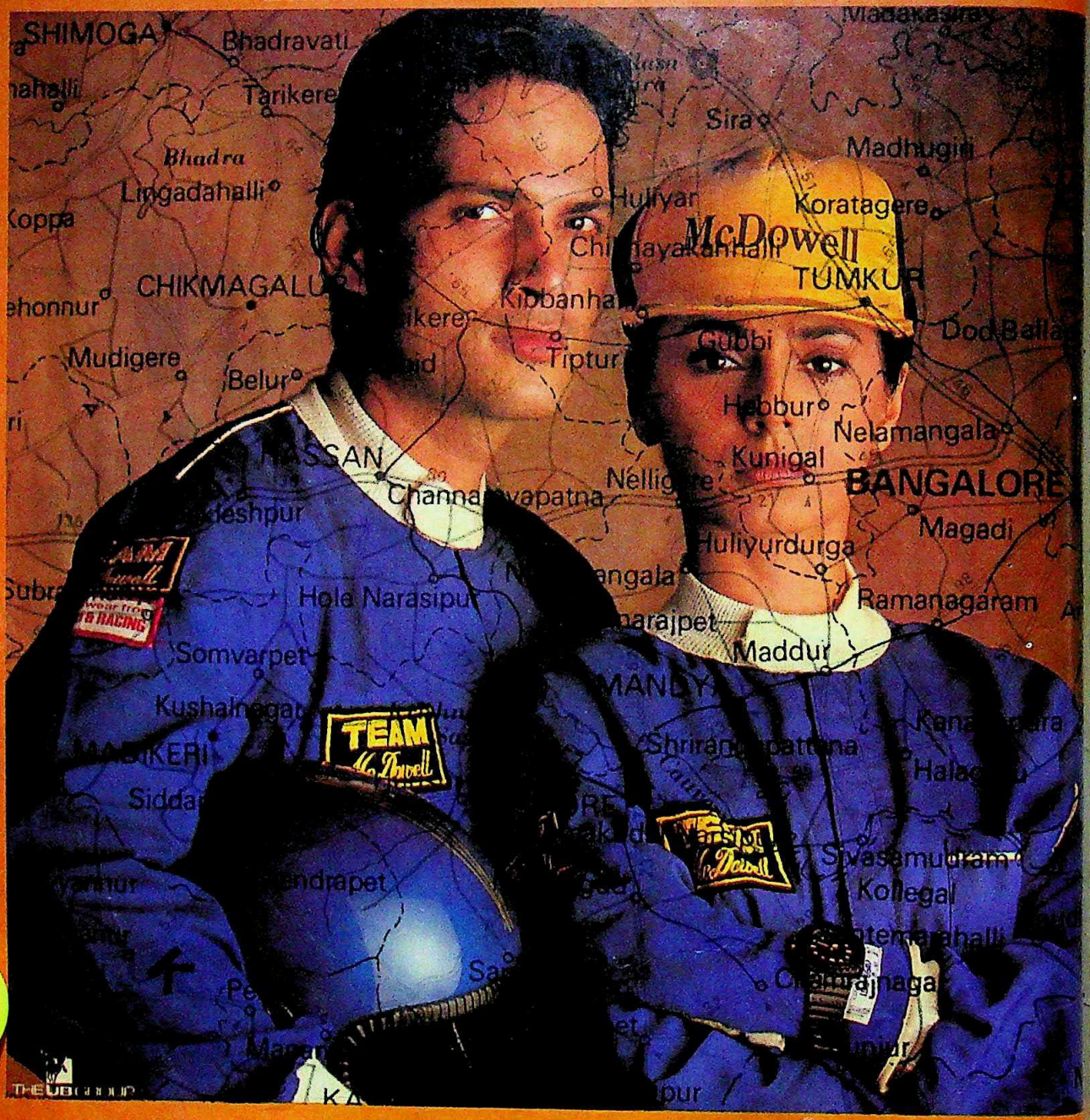

Face a truly heady experience. Where the excitement blasts off to fever height. And the pleasure takes your breath away. The McDowell Rallye. A thrill to the senses.

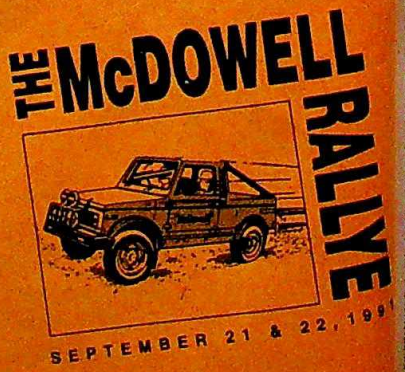

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

GOLDEN MOMENTS. McDOWELL MOMENTS

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली पुलिस

काली करतूतें

हिरासत में मौतों का नया रिकार्ड

अभी दो सप्ताह पहले नई दिल्ली के पटेल नगर थाने में 50 वर्षीय जयराम की मौत से उठा गुबार बैठा भी नहीं था कि 7 सितंबर को सुलतानपुरी थाने में एक युवक राजेश की मौत का समाचार आ गया.

राजेश की मौत की इस खबर के साथ ही इस साल अब तक दिल्ली पुलिस की हिरासत में मारे गए लोगों की संख्या आठ हो गई.

दिल्ली पुलिस की हिरासत में होने वाली मौतों का बारीकी से अध्ययन करने वाले मानवाधिकार संगठन पीपुल्स यूनियन फॉर डेमोक्रेटिक राइट्स (पीयूडीआर) के अनुसार 1980 से इस साल मार्च तक हुई 53 मौतों में से केवल सात मामलों में मुकदमे दर्ज किए गए. इनमें से केवल तीन मामलों में संबंधित पुलिसवालों पर अपराध संहिता की धारा 302 के तहत मामले बनाए गए. कई मामलों में तो अदालतों ने पुलिस द्वारा की गई हत्याओं को सही पाने के बावजूद संबंधित पुलिसवालों के खिलाफ कार्रवाई करने की जिम्मेदारी दिल्ली प्रशासन पर छोड़कर अपना पल्ला झाड़ लिया.

जाने-माने वकील और पीयूडीआर के गोविंद मुखौटी कहते हैं, "हैरानी की बात यह है कि पुलिस हिरासत में जाने से पहले ऐसे लगभग सभी लोग स्वस्थ और भले-चंगे होते हैं लेकिन पुलिस की 'पूछताछ' के बाद वे या तो छाती दर्द, दिल का दौर या पेट दर्द से मर जाते हैं या फिर 'आत्महत्या' कर लेते हैं." ऐसे लगभग हर मामले में जनता या फिर किसी मानवाधिकार संगठन के शोर मचाने के बाद ही में कोई कार्रवाई की जाती है.

उदाहरण के लिए 18 अगस्त की रात पटेल नगर पुलिस बलजीत नगर के 50 वर्षीय जयराम और उसके 12 वर्षीय बेटे मनोज को पकड़कर थाने ले गई. अगली सुबह हिरासत में ही जयराम की मृत्यु हो गई. परिवारवालों का कहना है कि रात के समय थाने में उसकी बुरी तरह पिटाई की गई. अगले दिन करीब 500 लोगों ने थाने का घेराव किया. कई घंटे तक सड़क जाम रही और एक बस फूंक दी गई. हालत पर काबू पाने के लिए पुलिस को लाठी चार्ज और आंसू गैस की बौछार करनी पड़ी. इसके बाद ही तीन पुलिसवालों को मुअत्तल किया गया और उन पर हत्या का मामला दर्ज किया गया.

पुलिस अधिकारियों के एक वर्ग में इस बात से रोष है कि इस मामले में हत्या का मामला दर्ज किया गया. नाम न छापे जाने के आग्रह के साथ एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना था, "हमसे उम्मीद तो यह की जाती है कि हर मामले को हल किया जाए. लेकिन अगर पूछताछ के दौरान कोई बीमार अपराधी मर जाता है तो इसे हत्या मानकर मामला दर्ज किया जाता है. यह तो ज्यादती है."

लेकिन इस सवाल पर मुखौटी अपराध संहिता की धारा 330 का हवाला देते हुए पूछते हैं, "अगर मार-पिटाई करके कुछ कबूलवाने के लिए पुलिसवाले को सात साल की जेल का प्रावधान है तो जान से मार देने पर क्या उसे माफ कर दिया जाना चाहिए?"

ऐसे भी कई कांड हो चुके हैं जिनमें दिल्ली के थानों में किसी की हत्या का मामला दबाने के लिए लाश को दूर फिकवा दिया गया या गायब कर दिया गया. इस साल मार्च में गोकुलपुरी थाने की हिरासत में एक महिला रिसहाना की पिटाई से मौत हो गई. पुलिस ने उसकी लाश नाले में फेंक दी. बाद में गुपचुप पोस्टमार्टम और नकली शिनाख्त के बाद राजघाट के बिजली शवदाहगृह में उक्त मुस्लिम महिला का अंतिम संस्कार किया गया. जब उत्तर पूर्वी जिले के पुलिस उपायुक्त को मामले की भनक मिली तब जांच की गई और थाने के छह पुलिसवालों को हत्या करने और सबूत नष्ट करने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया.

ऐसा ही दिल दहलाने वाला कांड 1988 में इंद्रपुरी थाने में हुआ था जहां मजदूरी के लिए 8 मजदूरों को थाने लाया गया. शाम को मजदूरी मांगने पर एक मजदूर महिला पतासी को नंगा करके पीटा गया और एक अपाहिज मजदूर राम स्वरूप को इतना मारा गया कि वह मर गया. बाद में लाश चुपचाप उत्तर प्रदेश में हिंडन नदी में फेंक दी गई. इस मामले में इस साल सुप्रीम कोर्ट ने मृतक के परिवार को 50 हजार रु., पतासी को नंगा करके पीटे जाने के एवज में 500 रु. और बाकी मजदूरों को 25-25 रु. का हर्जाना देने के आदेश दिल्ली प्रशासन के नाम जारी किए. संबंधित पुलिस अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई चलाने की जिम्मेदारी दिल्ली प्रशासन पर ही छोड़ दी गई.

यह कार्रवाई होगी भी या नहीं यह वे गरीब तो शायद कभी नहीं जान पाएंगे. पुलिस के शिकार ऐसे लोग ही होते हैं जिनके पास न तो अदालत में जाने की ताकत होती है और न ही कोई पहुंच. और तो और, यह जुल्म उस जमात के वर्दीधारी करते हैं जिन्हें उन्हीं की हिफाजत के लिए तैनात किया गया होता है.

—विजय क्रान्ति

एच.मी. तिवारी/हिंदुस्तान टाइम्स

यह सिर्फ संयोग नहीं है कि पुलिस की ज्यादती के शिकार आमतौर पर गरीब ही होते हैं. उनके पीछे न अदालत का बल होता है, न प्रशासन का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीना

'अब्बू-अम्मां के साथ रहूंगी'

*हैदराबाद के ऑटोरिक्शा चालक और आठ बच्चों के बाप शेख बदरुद्दीन की दूसरी संतान और बूढ़े शेख याह्या एच.एम. सगीश की बालिका वधू अमीना अब दिल्ली के बाल सुधार गृह 'निर्मल छाया' में है. वरिष्ठ संवाददाता **वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू** को उसने अपनी दुख भरी कथा सुनाई. कुछ अंश:*

● ***तुम निकाह के लिए क्यों राजी हो गई थी?***

मैं 'न' कहना चाहती थी पर हर किसी

टाइम्स ऑफ इंडिया

ने कहा 'हां कहो' तो मैंने 'हां' कह दी.

● ***तुम्हारे खाविंद का नाम क्या है?***

पता नहीं.

● ***अपने इस निकाह के लिए तुम किसे दोषी मानती हो?***

दो औरतें हैं, जिनके नाम नहीं जानती. एक पड़ोसी है और दूसरी बरकस की.

● ***और तुम्हारे घरवाले?***

उन्होंने जो किया वह गलत था.

● ***तुम अरब शेख के साथ सऊदी अरब जाने को क्यों तैयार हो गई?***

मुझे मालूम नहीं था. उन्होंने (मेरे घरवालों ने) कहा कि मैं छुट्टी मनाने दिल्ली जाऊंगी.

● ***और बाल गृह के बारे में? क्या तुम यहां रहना चाहती हो?***

मुझे यहां अच्छा लगता है पर मैं अब्बू-अम्मा के पास जाना चाहती हूं.

अंतर्कथा

इंद्रजीत बधवार

आस अभी बाकी

नई सरकार के लिए गृह मंत्रालय और 'रॉ' ने कश्मीर में कानून-व्यवस्था की स्थिति के विश्लेषणों का जो पुलिंदा तैयार किया है उसमें कहीं यह नहीं सुझाया गया है कि वहां राजनैतिक पहल अब कैसे की जा सकती है. पर दिल्ली में कैद कुछ बूढ़े कश्मीरी नेताओं ने ऐसे संकेत दिए हैं कि अगर सरकार उनसे सम्मानपूर्ण बरताव करे तो बातचीत हो सकती है.

कश्मीर में व्यापक जनाधार वाला मगर राजनैतिक रूप से दिशाहीन संगठन है जेकेएलएफ. इस हथियारबंद गिरोह के 'कमांडरों' के अप्रत्यक्ष संपर्क जेल में बंद अपने नेताओं से कायम हैं. इन नेताओं में मुस्लिम यूनाइटेड फ्रंट (एमयूएफ) के संस्थापक भी हैं जो फारूक अब्दुल्ला की बदनाम पार्टी नेशनल कांफ्रेंस का मुख्य प्रतिद्वंद्वी था. जेकेएलएफ हिज्बुल्ला और जांबाज फोर्स से अलग किस्म का है जो दिशानिर्देश के लिए पाकिस्तान का मुंह जोहते रहते हैं.

रेखांकन: प्रणव दत्त

1987 के 'बदनाम' चुनावों के बाद एमयूएफ के सैकड़ों निराश कार्यकर्ता उन दिनों निष्क्रिय रहे जेकेएलएफ में शामिल हुए और हथियार व प्रशिक्षण हासिल करने के लिए पाकिस्तान पहुंच गए. इनमें यासीन मलिक, इशफाक माजिद, मुश्ताक लतरम, जावेद नाल्का और जावेद मीर जैसे लोग थे जो अब इस संगठन के आला भूमिगत कमांडर हैं. पर उनका मकसद आजादी है, पाकिस्तान से किसी तरह का गठजोड़ नहीं. निर्वासित जेकेएलएफ नेता अमानुल्ला खां की तरफ से घाटी में सक्रिय बिलाल सिद्दीकी ही पाकिस्तान से संपर्क कायम करने में जरिया बने. कश्मीर लौटने के बाद जब उन्होंने पहला हथियारबंद हमला बोला तभी से पुलिस के धावे शुरू हो गए. इसमें जेकेएलएफ का एक वरिष्ठ कार्यकर्ता एहसान पुलिस की पकड़ में आ गया. एहसान बाद में जेल से भाग गया पर जेकेएलएफ की नजर में वह दागी हो गया. अब एहसान हिज्बुल्ला का नेता है जिसे पाकिस्तान ने बेहतर प्रशिक्षण और हथियार दिए हैं.

हिज्बुल्ला अगर अपने राजनैतिक मक्का पाकिस्तान के आसरे रहता है तो जेकेएलएफ के लोग अब्दुल गनी लोन, अली शाह गिलानी और मौलाना अब्बास जैसे एमयूएफ नेताओं के आसरे हैं. और ये सभी नेता कश्मीर में भारत के 'अधिमिलन' को स्वीकार कर चुके हैं. जब फारूक विरोधी भावनाएं भारत विरोधी आंदोलन में बदल गईं तो पहल उग्रवादियों के हाथ में पहुंच गई. इसी के साथ यह तिकड़ी जेकेएलएफ की नीति-नियंता बन गई. यह अब जेल में है.

इन बंदी नेताओं के मिजाज में कड़वाहट भर गई है. पर मूलत: ये राजनैतिक प्राणी हैं और यह महसूस करने लगे हैं कि नुकसान कश्मीर का ही हो रहा है. अब शायद वे राजनैतिक पहल का अंजाम भी देखना चाहते हैं. लेकिन नेशनल कांफ्रेंस और इंका शायद ऐसे राजनैतिक प्रतिद्वंद्वियों का स्वागत न करें जिनकी पीठ पर जनाधार वाले जेकेएलएफ का हाथ हो, फिर इन नेताओं का नाम पाकिस्तान समर्थक हिज्बुल्ला और जांबाज फोर्स की हिट लिस्ट में आ सकता है. परंतु जानकारों का कहना है कि अगर कश्मीर में राजनैतिक प्रक्रिया का पहला कदम भी शुरू करना है तो ये नेता बड़े काम के साबित हो सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली

हितों पर हल्ला

वकीलों ने फिर हड़ताल की

पिछले कई बरसों में शायद यह पहला अवसर था जब आपसी एकता के लिए मशहूर राजधानी की वकील बिरादरी परस्पर विरोधी खेमों में बंट गई. यह विरोध एक-दूसरे के खिलाफ हड़ताल और प्रदर्शन तक जा पहुंचा.

इस विवाद की जड़ में दिल्ली हाईकोर्ट की खंडपीठ द्वारा 1979 और 1989 में किए गए दो फैसले हैं. पहले फैसले में हाईकोर्ट में दायर किए जाने वाले धन संबंधी दीवानी मुकदमों की न्यूनतम धन सीमा को एक लाख से बढ़ाकर पांच लाख रु. करने की बात कही गई थी. दूसरे फैसले में यह निर्देश दिया गया था कि राजधानी को मौजूदा एक न्यायिक जिले की जगह पांच जिलों में विभाजित किया जाए और हर जिले में दीवानी और फौजदारी अदालतें स्थापित की जाएं.

वकीलों के एक वर्ग के विरोध के कारण ये फैसले लागू नहीं हुए. इस बार बारूद को चिनगारी संसद में पेश किए जाने वाले दिल्ली हाईकोर्ट संशोधन बिल से मिली जिसमें केवल धन संबंधी सीमा बदलने का ही प्रस्ताव है. इससे अपने धंधे में आने वाली मंदी से शंकित हाईकोर्ट वकीलों की एसोसिएशन ने अपनी इस मांग के समर्थन में हड़ताल कर दी कि दोनों फैसले लागू किए जाएं.

नई दिल्ली बार एसोसिएशन के सचिव कृष्ण कुमार निझावन कहते हैं, "धन सीमा ऊपर ले जाने से हाईकोर्ट के कई वकीलों का धंधा कम हो जाएगा. लेकिन नई अदालतें खुलने और पटियाला हाउस में दीवानी मुकदमे शुरू होने से उनके इस नुकसान की पूर्ति हो जाएगी." लेकिन दिल्ली की सबसे बड़ी तीस हजारी अदालत के वकीलों का संघ इससे सहमत नहीं है. वे जानते हैं कि पांच जिलों में पांच स्वतंत्र अदालतें बनने से उनका एकाधिकार खत्म हो जाएगा. नतीजा यह हुआ कि तीस हजारी की दिल्ली बार एसोसिएशन ने अपनी

अरुण सक्सेना

बोट क्लब पर वकीलों का प्रदर्शन

समानांतर हड़ताल के साथ-साथ बोट क्लब पर प्रदर्शन भी कर डाला.

इस बीच, पटियाला हाउस और शाहदरा की अदालतों के वकील भी समर्थन में हड़ताल में शामिल हो गए. यूं तो इस हड़ताल का बुरा असर कनिष्ठ वकीलों पर पड़ा लेकिन हड़ताल से ज्यादा परेशानी तो उनको हुई जिनके मुकदमों की तारीख इस बीच पड़ी. उन्हें अब और इंतजार करना पड़ेगा. —विजय क्रान्ति

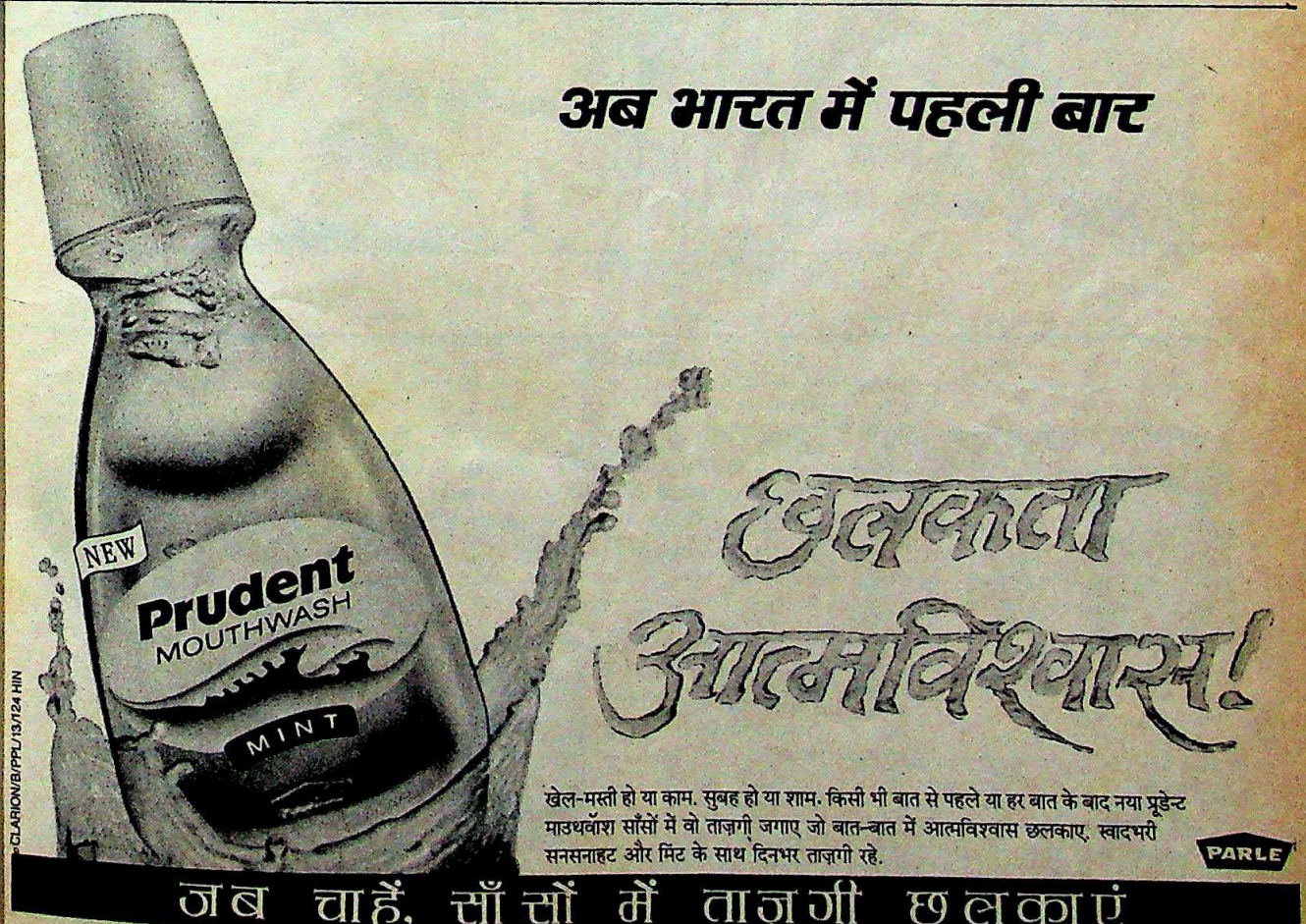

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाजपा का उत्थान और उलझाव

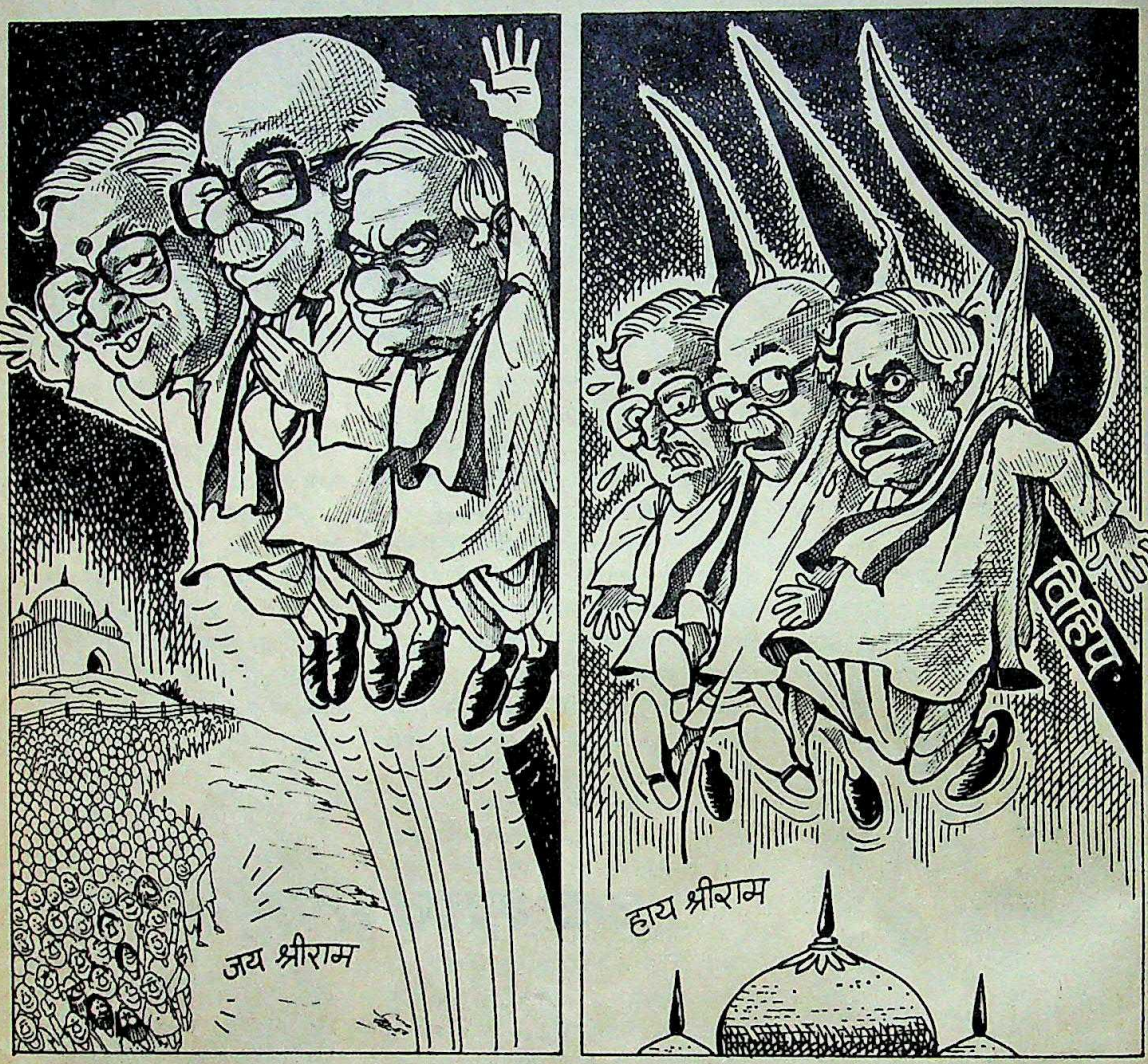

सनद रहे

सम्मानितः तमिल लेखिका **वसंती** को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने भारतीय साहित्य में उनके योगदान के लिए 10,000 रु. का पुरस्कार देने की घोषणा की है. उनके अधिकांश उपन्यास उत्तर भारतीय समाज और जीवन के चित्र पेश करते हैं.

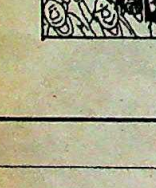

जमीन दानः प्रधानमंत्री **पी.वी. नरसिंह राव** द्वारा छोड़ी गई 941.94 एकड़ जमीन में से 330 एकड़ जमीन आंध्र प्रदेश सरकार ने राव के ही पुश्तैनी गांव वंगारा के 375 भूमिहीन किसानों में बांट दी.

विधेयक पेशः भाजपा सांसद **वी. शर्मा** ने निजी संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा में प्रस्तुत किया. इसमें ऐसे लोगों के उच्च पदों पर पहुंचने पर प्रतिबंध लगाने का प्रावधान है जो भारत के जन्मजात नागरिक नहीं हैं.

खंडनः एलटीटीई के सर्वेसर्वा **वी. प्रभाकरन** ने राजीव गांधी की हत्या में किसी तरह की भागीदारी से इनकार किया है. एक श्रीलंकाई अखबार के मुताबिक उन्होंने यह बयान जाफना में दिया लेकिन इस खबर की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हो पाई है.

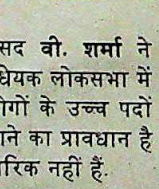

निधनः इंदिरा गांधी के हत्यारों में से एक बेअंत सिंह की 36 वर्षीया विधवा **बिमल खालसा** का मोहाली में दिल का दौरा पड़ने से देहांत हो गया. वे रोपड़ से लोकसभा सदस्य रह चुकी हैं. उनके एक संबंधी के मुताबिक वे उच्च रक्तचाप से पीड़ित थीं.

सम्मानितः श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए हॉकी कप्तान **परगट सिंह** को अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. पुरस्कार में 20,000 रु. नकद, कांस्य प्रतिमा और प्रशस्ति पत्र सम्मिलित होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माईक्रो ओवन से 53% अधिक जल्दी पकाता है

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

हरियाणा

☐ **अम्बाला सीटी** दीवान चन्द मनोहर लाल जैन, कोतवाली बाज़ार, सचदेवा बर्तन भंडार, पटेल रोड, संजीव वेयर हाऊस, कसेरा बाज़ार। ☐ **बल्लभगढ़** देवीचरण मुकेत लाल, घंटा घर। ☐ **चंडीगढ़** अग्रवाल डिस्ट्रीब्यूटर्स, शो रूम नं० 30 सेक्टर 26, मध्य मार्ग। ☐ **फरीदाबाद सीटी** मोहन स्टोर्स, मेन बाज़ार, न्यू लाईट हाऊस, मार्किट नं० 1 एनआईटी, किशन लाल, संजीव कुमार। ☐ **हिसार** क्रोकरी पेलेस, मोती बाज़ार। ☐ **हान्सी** हेम राज एण्ड सन्स, सदर बाज़ार, पुरुषोत्तम लाल एण्ड सन्स, सदर बाज़ार। ☐ **जाखल मन्डी** शिव दत्त राय कमल चन्द, अनाज मंडी। ☐ **जगाधरी** सुभाष स्टील्स, रेलवे रोड, राम चन्द इन्टरप्राइसिस, चौक बाज़ार। ☐ **जींद** केदार नाथ पवन कुमार, मेन बाज़ार। ☐ **कालका** राला राम द्वारका दास, गांधी चौक, बेनी प्रसाद प्रादुमन कुमार, बस स्टेन्ड गांधी चौक। ☐ **कैथल** सरस्वती बर्तन भंडार, नारवारिया बिल्डिंग, राम प्रकाश रमेश कुमार, तलाई बाज़ार। ☐ **कुरुक्षेत्र** सरस्वती बर्तन भंडार, मोती चौक थानेश्वर कुमार बर्तन स्टोर्स, कृष्णा गेट। ☐ **पलवल** उमराव सिंह ओम प्रकाश, मोती चौक, जैन बर्तन भंडार, मैन बाज़ार। ☐ **पानीपत** मोहन सिंह धारीमल, मैन चौक, जैन बर्तन भंडार, मैन बाजार, जीया लाल जैन दास, हलवाई हटटा, मेन बाज़ार। ☐ **रिवारी** बलदेव सहाय हेम राज सैनी, गोकल बाज़ार। ☐ **रोहतक** श्याम लाल आदेश कुमार, जैन, रेलवे रोड, श्याम बर्तन भंडार, किला रोड। ☐ **यमुना नगर** गुंजपाल बर्तन भंडार, जगाधरी रोड ☐ **सिरसा** सन्त लाल बजाज स्टील सेन्टर, पुरानी सब्जी मंडी।

गुजरात

☐ **अहमदबाद** फेन्सी नावल्टी स्टोर, 1811/2 थ्री गेटस, अब्दुल कादिर मो०. हुसैन 1812, थ्री गेटस, अकबर अली कादिर भाई, 1822 थ्री गेटस, भारत बर्तन भंडार, 7 पुराना 'जी' बार्ड, कुबेर नगर। ☐ **बरोदा** शिरजी मेटल कॉरपोरेशन, ढोलीकी मुकतेने पोल, बजवाड़ा, मोती लाल छोटे लाल कंसारा, एम०जी० रोड। ☐ **बुलसर** कंसारा दया राम बल्लभ राम एण्ड कम्पनी, रामजी स्ट्रीट, भगवान दास दया राम, एम०जी० रोड। ☐ **भावनगर** अतुल ग्रह वस्तु भंडार, वोरा बाजार, महालक्ष्मी मंदिर के सामने, नागर ग्लासवेयर मार्ट, वोरा बाज़ार। ☐ **गोधरा** महावीर मेटल कॉरपोरेशन, पुराना बस स्टेंड के सामने। ☐ **नावसारी** पुरापानजली स्टेन्लेस स्टील मार्ट, 12 सत्या नारायण मार्किट दुधीया तलाब, दीपक बासन भंडार, 4/371 पटवा स्ट्रीट मोटा बाज़ार के पास, नीतिन बासन भंडार, 56 शापिंग सेन्टर दुधीया तमाब, विजय स्टेन्लेस स्टील मार्ट, 7 गांधी मार्किट मेन रोड दुधीया तलाब। ☐ **नडीयाड** चारभुजा बासन भंडार, अहमदाबादी बाजार। ☐ **सुरत** ठक्कर दास जीवा राम एण्ड सन्स, 3/4227 बुन्देलवाद भागल, संगीता स्टील सेन्टर, 21 ए बालकिशन शापिन्ग सेन्टर कानीपिठ, अरीहन्त स्टील इम्पोरियम, छोटा बाज़ार, मेन रोड मोटा मन्दिर के पास, अनिल स्टील इम्पोरियम, छोटा बाज़ार, दीप सेन्स, 10/483 नगर फालिया, पानी-नी-भीत।

राजस्थान

☐ **अलवर** जूनेजा ब्रदर्स, 1 वीर चौक होप सर्कस, भारत बर्तन भंडार, बजाजा बाज़ार। ☐ **अजमेर** गोवरधन लाईट हाऊस, मदर गेट। ☐ **भीलवाडा** राठी मेटल ट्रेडिंग कम्पनी, मदादा स्ट्रीट, छोगा लाल कल्याण मल, गुल मन्डी, कबरा मेटल्स, गुल मन्डी, अरीहन्त मेटल्स, गुल मन्डी, राम विलास लाडू राम लोहाटी, बड़ा मंदिर के पास, झबक ब्रदर्स एण्ड कम्पनी, भोपाल गंज। ☐ **बिआवर** ओसवाल जनरल स्टोर, पाली बाज़ार। ☐ **बीकानेर** अब्दुल कय्यूम अबदुल नासिर घजी अबदुल गनी ठठेरा, कसेरा बाज़ार। ☐ **बनवारा** मथुर मेटल्स, क्रोकरी मार्किट, घर सुख केन्द्र, न्यू क्लोथ मार्किट। ☐ **चित्तौड़गढ़** सुरेश स्टील इम्पोरियम, 26 नेहरू बाज़ार, चारभुजा बासन भंडार, 6 नेहरू बाज़ार। ☐ **डूँगरपुर** थामस एण्ड कम्पनी, मेन रोड। ☐ **जयपुर** महावीर जनरल स्टोर, 215 तरीपोलिया बाज़ार, जगदीश जनरल स्टोर, 208 तरीपोलिया बाज़ार, जैन स्टील सेन्टर, 141 तरीपोलिया। ☐ **जोधपुर** एबन ट्रेडर्स, सोजाती गेट के अन्दर, सुपर स्टील सेन्टर, तरीपोलिया रोड, जीनेन्द्र क्रोकरी हाऊस, सराफ़ा बाज़ार, लीबींग इन स्टाईल, 7 नई सड़क, आरती स्टील सेंटर, आई०बी० रोड, सरदार पुरा। ☐ **बारमेर** पुरशोत्तम दास बंसीधर, स्टेशन रोड। ☐ **कोटा** गोस्वामी ब्रदर्स, भारतेन्दु भवन, लाडपुरा, नारायण जनरल स्टोर, रामपुरा बाज़ार। ☐ **बाम्बहारा** कंसारा तारा चन्द शंकर लाल, दित्ली बाज़ार। ☐ **नागौर** एच० दाऊदजी मोहम्मद, अय्युब, बर्तन बाज़ार। ☐ **उदयपुर** लाल चन्द छगन लाल चौधरी, घंटा घर, राजेश मैटलस, गली मांववाली, सूरज पोल के अन्दर, श्रीगंगानगर स्टेशन हिन्द बर्तन भंडार, 18 स्वामी दयानंद मार्ग।

मध्याप्रदेश

☐ **बिलासपुर** रुप जनरल स्टोर्स, गोला बाज़ार, राम एण्ड श्याम मेटल स्टोर्स, गोल बाज़ार, सुन्दर एल्मीनियम स्टोर्स, सनीचरी बाज़ार, लक्ष्मी स्टील भंडार, सदर बाज़ार। ☐ **भोपाल** राम चन्द ग्लास स्टोरस, बैरागढ़, लक्की सेन्टर, लालबानी प्रेस रोड, मद्रास स्टील हाऊस पुराना कबार खाना। ☐ **रायपुर** बोम्बे टॉयेज़ सेन्टर, बन्जारी रोड, मन मोहन चन्द जैन सदर बाज़ार, सुराना ब्रदर्स, पोस्ट बाक्स नं० 27/59 मालवीया रोड, अभीनव ट्रेडर्स, 19 अशोक मार्किट, नया पारा, जे०एम० डागा मेटल मार्किट, बुढापुरा, सुरेश ब्रदर्स, पोस्ट बाक्स नं० 53 मालवीया रोड, इन्दरा गीफ्ट हाऊस, 4/5 शादानी मार्किट, बन्जारी रोड। ☐ **ग्वालियर** स्टील पेलेस, जमुना लाल मार्किट, सराफ़ा बाज़ार, श्रीकिशन प्रभु दयाल अग्रवाल, सराफ़ा बाज़ार, लश्कर, राजू क्रॉकरी हाऊस, ढाऊद मार्किट, दौलत गंज। ☐ **इन्दौर** बम्बई इलेक्ट्रिक हाऊस, 6/5 खतीपुरा, एम०जी० रोड, राम चन्द गोविन्द राम, 2 कसेरा बाज़ार, चौएव राम एण्ड सन्स, केसरा बाज़ार, घनश्याम ब्रदर्स, 31 श्री महावीर मार्ग, पीपली बाज़ार, कुक्कर हाऊस 370 जवाहर मार्ग पीप्ली बाज़ार चौराहा। ☐ **जबलपुर** सिटीजन सेन्टर, 24-25 आर्शीवाद मार्किट, गंजीपुरा चौक नेशनल स्टोर्स, जवाहर गंज, परफेक्ट ट्रेडर्स, कोतवाली बाज़ार, नारायण ब्रदर्स, 631 खटीक मौहल्ला, सराफ़ा बाज़ार। पांडा मेटल्स सराफ़ा बाज़ार, श्री राम गोपाल राधे श्याम अग्रवाल मेन रोड।

☐ **रतलाम** हकीमूद्दीम एण्ड सन्स, मानक चौक, जय किशन रघुनाथ, 54 कसेरा बाज़ार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उम्रदराजों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ती उपेक्षा

प्रशांत पंजियार

—मधु जैन और रमेश मेनन

इस सदी के अंत तक अपने देश में 60 वर्ष से ज्यादा उम्र के लोगों की आबादी जर्मनी की मौजूदा आबादी के लगभग बराबर और अधिकतर यूरोपीय देशों की आबादी से दोगुनी यानी 7.60 करोड़ के आसपास हो जाएगी. इतना ही नहीं, भारत में बुजुर्गों की आबादी की वृद्धि दर पिछले दशक में 38 फीसदी से जरा ऊपर रही, जबकि बाकी आबादी की वृद्धि दर सिर्फ 19 फीसदी थी. जाहिर है, भारत बूढ़ों का देश बनता जा रहा है.

इसे और कुछ नहीं, खतरे का संकेत ही माना जा सकता है. आबादी के जिस दूसरे तबके की वृद्धि दर चौंकाने वाली है, वह तबका है 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चों का. इस तरह मध्य वय पर निर्भर लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है. ऐसे में भयावह सवाल यह उठता है कि इन बुजुर्गों की देखभाल की जिम्मेदारी अंततः किसकी है, खासकर ऐसे समय में जबकि बुजुर्गों के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है.

औसत उम्र 1980 के 54 वर्ष से बढ़कर अब 62 वर्ष हो गई है. भारत बूढ़ों का देश बनता जा रहा है. 1971 में 3.3 करोड़ लोग 60 वर्ष से अधिक उम्र के थे. यह आंकड़ा अब 5.5 करोड़ हो गया है

आज लोगों की औसत आयु 62 से ज्यादा है, जबकि 10 वर्ष पहले यह सिर्फ 54 वर्ष थी, और 1947 में 30 वर्ष से कुछ ही ज्यादा. स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार, शिशुओं की मृत्यु दर में कमी, जन्म दर में कमी और चिकित्सा जगत में नई-नई खोजों के चलते देश में बुजुर्गों की आबादी का जैसे सैलाब ही आ गया है.

उपरोक्त कारणों से जीवन की अंतिम दो अवस्थाओं—वानप्रस्थ और संन्यास—की अवधि बढ़ गई है और मौत का साया भी दूर हो रहा है. जीवन संध्या अब अंतहीन रेगिस्तान में उदास सफर की तरह हो गई है. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान अध्ययन संस्थान के प्रो. टी. के. ऊमन कहते हैं, "पहले 60 की आयु में जिंदगी का अंत आ जाता था, अब करीब 20 और वर्षों तक जिंदगी को ढोना पड़ता है."

जब बुढ़ापा शुरू हो चुका हो तो जिंदगी के ये बढ़े हुए वर्ष बहुत सुखदायी नहीं होते. कई मामलों में अकेलेपन की वजह से जिंदगी मौत जैसी लगने लगती है. परंपरा से उम्र की कद्र ही होती आई है. हमारा समाज बुजुर्गों का आदर करता आया है. दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स में प्रोफेसर और जाने माने समाज विज्ञानी ए.एम. शाह बताते हैं कि पहले बुजुर्गों का बहुत सम्मान होता था. उनकी जबान से निकला शब्द ही कानून होता था. कई गांवों में तो आज भी उम्र के साथ-साथ आदर बढ़ता जाता है. जोधपुर से कुछ मील दूर एक गांव की 75 वर्षीया सोनावती को ही लें. दबदबा बढ़ाने के लिए वे अपनी उम्र पांच वर्ष बढ़ाकर ही बताती हैं. लेकिन आज तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

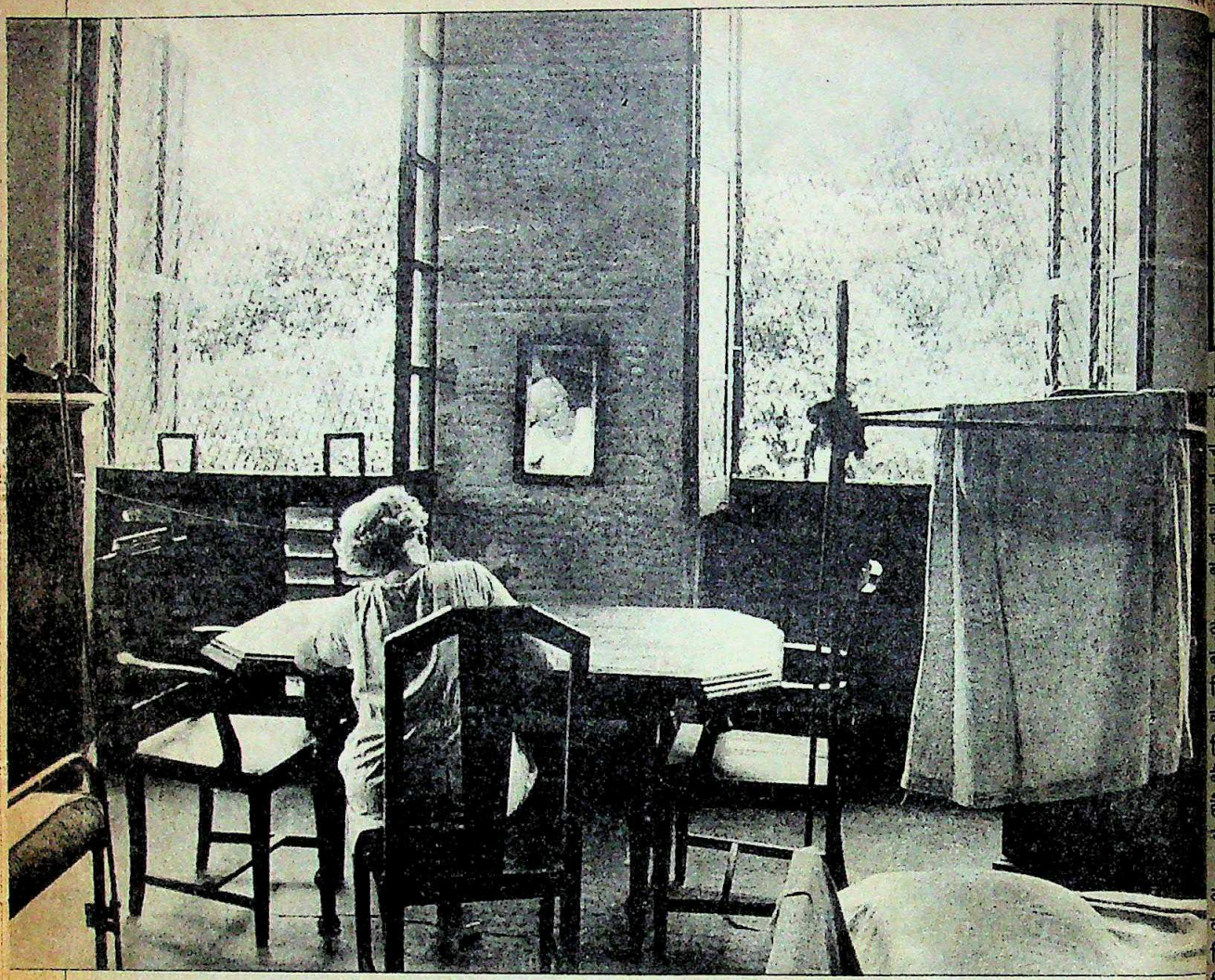

मृत्यु दर घटने और बूढ़ों की प्रतिष्ठा खत्म होने से जीवन के बढ़े हुए वर्ष कष्टकर हो गए हैं

बुजुर्गियत के खिलाफ एक खामोश बगावत शुरू हो चुकी है. घर के बूढ़े दादा या दादी या सबसे बड़े बेटे को दरकिनार करने की प्रवृत्ति जोर पकड़ रही है. युवा वर्ग हावी होता जा रहा है.

बच्चे अपने बूढ़े माता-पिता को घर से बाहर निकालने लगे हैं. मद्रास में एक 70 वर्षीय बूढ़े को उसके बच्चों ने मरने के लिए फुटपाथ पर धकेल दिया. ट्रक ड्राइवरों को उस पर रहम नहीं बल्कि गुस्सा ही आया तो उन्होंने उसे टूटे कांच के ढेर पर पटक दिया.

दिल्ली के गुलमोहर पार्क में पनाह ढूंढ़ती 90 वर्षीया विद्यावती के लिए जिंदगी और मौत में कोई फर्क नहीं रह गया है. पहले वे अपनी तीन बेटियों के पास ठहरती रहीं. बेटियां नहीं रख पाईं तो वे सड़कों की खाक छानने लगीं. वे बताती हैं, "लड़कियां कहती हैं कि मेरे शरीर पर लगे तेल से उनकी चादरें गंदी हो जाती हैं. मेरी खांसी से उनकी नींद में खलल पड़ता है."

पिछले दो दशकों में देश के सामाजिक माहौल में बहुत बदलाव आया है. जरा-विज्ञान विशेषज्ञों का कहना है कि इन बुजुर्गों का जीवन और कष्टमय ही होने जा रहा है, क्योंकि उनके प्रति पारंपरिक आदर का भाव लुप्त होता जा रहा है. बुजुर्गों से उनकी वह संपदा छिनती जा रही है जिससे वंचित होने की कल्पना वे नहीं करते. यह संपदा है वर्चस्व की, अधिकार की. 68 वर्षीया शकुंतला वर्मा, जिनके पति 26 वर्ष पहले गुजर गए, कहती हैं, "पहले आपके बच्चे आप पर निर्भर थे, अब आपको उनका मुंह ताकना पड़ता है." वर्तमान साहित्य भी बुजुर्गों के प्रति घटते आदरभाव को परिलक्षित करता है. साहित्यिक पत्रिका 'हंस' के संपादक राजेंद्र यादव बताते हैं कि अब उनके पास जो कहानियां आती हैं उनमें बुजुर्गों की निरर्थकता और अप्रासंगिकता का ही वर्णन होता है.

संयुक्त परिवारों के टूटने से ही बुजुर्गों की यह स्थिति पैदा हुई है. शहरीकरण, जगह की तंगी, युवाओं का शहरों से विदेश में पलायन, मुद्रास्फीति, बढ़ता व्यक्तिवाद, युवा पूजा संस्कृति का उदय जैसे जटिल कारण भी बुजुर्गों के प्रति उपेक्षा के लिए जिम्मेदार हैं.

संबंधों में यह बदलाव जितना परिवार में मुखर दिखता है उतना अन्यत्र नहीं. कभी बुजुर्गियत को समझदारी, जीवन भर और उन अच्छाइयों का पर्याय माना जाता था, जिनके चल भारतीय समाज का एक विशिष्ट स्वरूप बन गया था. भारत में युवा देश वृद्धों का सम्मान करने में गौरव महसूस करता था. वृद्धों की सेवा को पुण्य कार्य समझा जाता था. ऐसे देश में वृद्धावस्था में सामाजिक सुरक्षा की कोई गारंटी न हो, वहां संतान को ही बुढ़ापे का सहारा समझा जाता है. 74 वर्षीया सत्यवती कहती हैं, "संतान तो पौधे की तरह होती है. आपके बूढ़े होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह इज्जत का सवाल था. यदि कोई अपने माता-पिता की देखभाल नहीं करता तो बिरादरी में उसकी बहन या बेटियों की शादी में दिक्कत आ सकती थी."

डी.बी. मलिक, 66 वर्ष, हिंदुस्तान एविएशन के रिटायर अधिकारी

कभी बुजुर्गियत को समझदारी, जीवन मूल्यों और उन अच्छाइयों का पर्याय माना जाता था जिनके चलते भारतीय समाज का एक विशिष्ट स्वरूप बन गया था. भारत जैसा युवा देश वृद्धों का सम्मान करने में गौरव महसूस करता था. वृद्धों की सेवा को पुण्य का काम समझा जाता था.

यह घना पेड़ बन जाती है और आप इसकी छाया में बैठ सकते हैं."

लेकिन दुर्भाग्य से यह घना पेड़ अब बुजुर्गों को छाया नहीं देना चाहता. बूढ़ों और युवाओं की दुनिया एकदम अलग हो गई है. युवा रस्म के तौर पर थोड़ा-बहुत वक्त निकालकर अपना फर्ज भर पूरा कर देते हैं. थोड़ी बातचीत सुबह काम पर जाने से पहले, शाम को घर लौटकर, फिर बाहर निकलने या अपने कमरे में बंद होने के बीच थोड़ी औपचारिकता.

दादा, दादी और नानी के रिश्ते कभी अपने आप में बेहद अहमियत रखते थे. ये लोग अपने बेटे-बेटियों और पोते-पोतियों के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का काम करते थे. टेलीविजन और अमर चित्रकथाओं के प्रादुर्भाव से पहले रामायण और महाभारत की कहानियां बच्चे इन्हीं से सुना करते थे. लेकिन आज उनकी यह विशिष्ट भूमिका उनसे छिनती जा रही है. दादा-दादी एक कोने में बैठे रहते हैं, और पोते-पोती या तो टीवी, वीसीआर से चिपके रहते हैं या पाठ्यपुस्तकों के ढेर से दबे रहते हैं.

भाषा और कई बार उसका अभाव भी दो पीढ़ियों के बीच दीवार बन जाता है. मुंबई के सिटी बैंक के उपाध्यक्ष सुरेन खिरवाडकर के दो किशोरवय पुत्र अपनी दादी के साथ बात नहीं कर पाते क्योंकि दादी को मराठी के अलावा कोई भाषा नहीं आती, और बच्चे या तो अंग्रेजी बोलते हैं, या टूटी-फूटी हिंदी. कई बार सांस्कृतिक भेद भी दो पीढ़ियों में घनिष्ठता नहीं बनने देता. 18 वर्षीय मुन्ना राणा अपनी 82 वर्षीय दादी की इज्जत तो करता है पर उनके साथ कोई साम्यता नहीं पाता. वह कहता है, "बूढ़ी को अपना खयाल खुद रखना चाहिए."

समय और स्थान की तंगी और बढ़ता तनाव भी, जो कि आधुनिक सभ्यता के पर्याय बन चुके हैं, इस दूरी को बढ़ाने में सहायक हुए हैं. खिरवाडकर कहते हैं, "ये अपार्टमेंट तो व्यक्ति के चारों तरफ ऐसी दीवार खड़ी कर देते हैं, जो परिवार भी नहीं कर पाते. एक बार दरवाजे बंद हुए और ये फ्लैट एक अभेद्य किले बन जाते हैं. मैं अलग व्यस्त, मेरे बच्चे अलग व्यस्त! और मेरी मां अकेली बैठी रहती है."

शहरीकरण और जगह की तंगी ने बूढ़ों और शेष दुनिया के बीच दीवार खड़ी कर दी है. अब दो कमरों वाले फ्लैटों ने बड़े-बड़े बंगलों की जगह ले ली है. जगह कम, और दिमागों में भन्नाहट ज्यादा! 79 वर्षीय जी. इमले रेलवे में इंजन ड्राइवर थे. अब वे पत्नी के साथ नई दिल्ली के 'ओल्ड एज होम' में आए हैं. वे कहते हैं, "मेरी बेटी के घर में दो कमरे हैं, और पांच बच्चे. वहां मैं हमेशा कुढ़ता रहता था. फिर उनका शौचालय भी भारतीय शैली का है." यहां तक कि बच्चों को भी अलग कमरा चाहिए. लिहाजा दबावों में जीते इस समाज में दादा-दादी एक फालतू चीज बनकर रह गए हैं.

ज्यादा बुरा हाल उनका है, जो सांस्कृतिक सीमाएं लांघकर आए हैं. चाहे वह मदुरै से अपने बच्चों के पास दिल्ली आकर रहने वाला स्वामीनाथन

भवानी सिंह

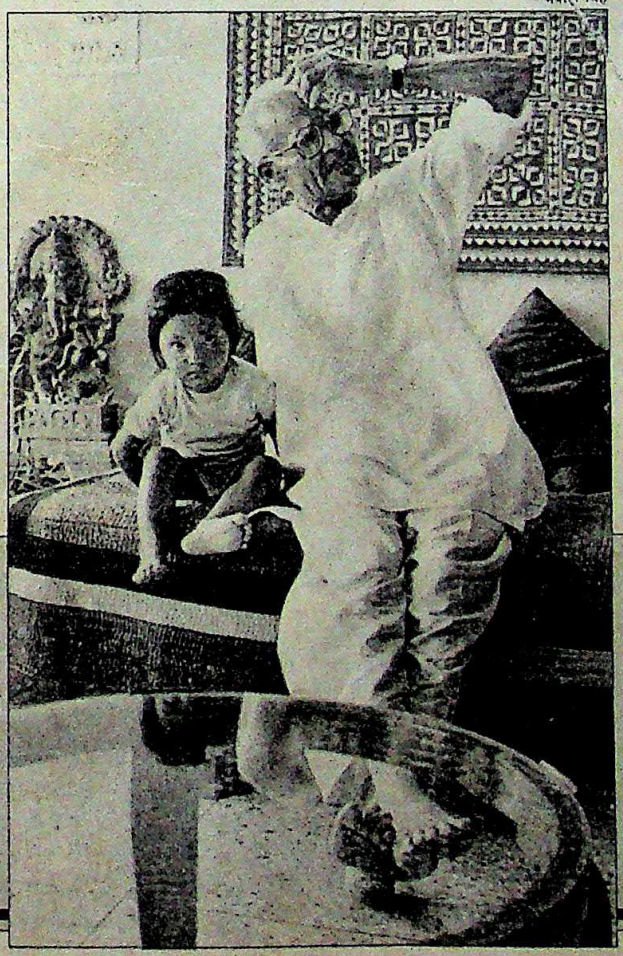

वी.एम मांगलिक, 75 वर्ष. देहरादून के रिटायर मुख्य अभियंता. इन्हें समय काटने नहीं दौड़ता क्योंकि वे घर का कामकाज देखते हैं, बागवानी करते हैं, खाना बनाते हैं, पड़ोस के बच्चों के साथ खेलते हैं. और इस तरह समाज में अपना योगदान देते हैं.

"बुढ़ापे में खुशी तो उसी समय आ सकती है जब हम आर्थिक और मानसिक तौर पर भी अपने बच्चों पर आश्रित न हों"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की संध्या बेला में बूढ़े दंपतियों में नया प्रेम जगता है

दंपती हो या दिल्ली से फ्लोरिडा में
बच्चों के पास जाने वाला चोपड़ा दंप
यहां यह भी जानना रोचक होगा कि
बुजुर्गों के विदेश दौरे भी छोटे होते जा
हैं. बाहर लंबी-चौड़ी सड़कों का जाल अ
घर के भीतर साथी के नाम पर टेलीविज़
ये बुजुर्ग जल्द ही इससे उकताकर स्वे
लौट आते हैं. 72 वर्षीया कण्णन बताती
"न्यू जर्सी में मैं बहुत एकाकी और के
रहती थी. कोई कितनी आइसक्रीम
सकता है, और कितनी शॉपिंग कर सक
है भला!" इसके अलावा अब ज्यादा
महिलाएं नौकरी करने लगी हैं. बुजुर्ग या
नौकर के हवाले रहते हैं, या फिर अकेले

शहरों में बुजुर्ग खुद को उपेक्षि
महसूस करते हैं, तो गांवों में वे अ
पड़ जाते हैं. बेहतर अवसरों की तलाश
ग्रामीण युवकों के शहरों की तरफ पला
ने वृद्धों की समस्याएं बढ़ाई ही हैं. उ
प्रदेश में तेंगोरा गांव के बढ़ई, 65 व
अब्दुल मजीद के शरीर का दर्द जब
जाता है तो उन्हें काम से छुट्टी करनी प
है. यदि वे रोज के 25 रु. भी न कमाएं
उनके परिवार को फाके करने पड़ें. उ
प्रदेश के अपने गांव में छोटे-मोटे काम
तलाश में भटकते 80 वर्षीय लीला खुद
आवारा ही महसूस करते है. उनके
बेटे अलग-अलग शहरों में जा बसे हैं. ली
खुद को समझा लेते हैं कि बेटों को भी अ
परिवार संभालने हैं.

गांवों में बुजुर्गों को, दिखावे के लिए
सही, जो आदर दिया जाता था, वह
अब कम होता जा रहा है. उत्तर प्रदेश
बुलंदशहर जिले के एक ग्रामीण 60 व
नरसिंह पाल कहते हैं, "हममें से बहुतों
बुजुर्गों की बहुत परवाह नहीं रही है
लेकिन हम उनकी उपेक्षा नहीं कर सकते
क्योंकि हमें समाज का डर था." शहरों
तो नैतिक बाध्यताएं भी बुजुर्गों के साथ ह
वाले अपमानजनक व्यवहार को नहीं रो
पातीं. हिंदुस्तान एविएशन लिमिटेड
सेवानिवृत्त अधिकारी, 66 वर्षीय डी
मलिक कहते हैं, "पहले लोगों को बिरा
का डर होता था. यदि कोई मां-बाप के स
ठीक बरताव नहीं करता तो उसकी ब
की शादी में दिक्कत आ सकती थी."

ऐसे मामले भी बढ़ते जा रहे हैं जि
युवा संतानें संपत्ति पर कब्जा मिलते
बुजुर्गों से किनारा कर लेती हैं. 60 व
अरुणाचलम को मद्रास के रोयपेट्टा में
कूड़े के ढेर पर पाया गया तो उन्हें अ
ले जाया गया. उन्हें परिवार लेने आ
लेकिन यह आदर-प्यार तभी तक था
तक उन्होंने अपनी 10 एकड़ की संप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज तो सम्मान उम्र से नहीं, धन-दौलत से मिलता है"

मनोहर श्याम जोशी, उपन्यासकार और टीवी धारावाहिक लेखक

बुजुर्ग अब अपनी तमाम संपत्ति अपने पास रखने लगे हैं. वे नहीं चाहते कि उन्हें बोझ समझा जाए और अच्छा जीवन जीने से वंचित कर दिया जाए. संदूक भरकर गहने रखने वाली वृद्धाएं भी अपना सब कुछ बैंक में रखना सीख गई हैं.

बच्चों के नाम न कर दी. इसके बाद उन्हें फिर गलियों में भटकने के लिए छोड़ दिया गया. इसी तरह 84 वर्षीया अलामेलू के पति जब मर गए तो उन्हें संपत्ति छोड़ने को मजबूर किया गया और मद्रास में एक आश्रम में भेज दिया गया.

बुजुर्गों को दी जाने वाली शारीरिक और मानसिक यातना से समाजशास्त्री बहुत चिंतित हैं. वृद्धों के प्रति अपराध भी आए दिन अखबारों की सुर्खियां बनते रहते हैं. उनकी हत्याएं दिनोदिन बढ़ रही हैं. दिल्ली के फौजदारी मुकदमों के वकील आई. यू. खां कहते हैं, "दिल्ली में वृद्धों के प्रति अपराधों के 50 फीसदी मामलों में उनके परिवारजन भी शामिल होते हैं. ज्यादातर मामले उत्तराधिकार की समस्याओं से संबंधित होते हैं." वे बताते हैं कि कई बार जब बुजुर्ग बच्चों को संपत्ति के उत्तराधिकार से वंचित रखने की धमकी देते हैं तो बच्चे उनकी हत्या के लिए भाड़े पर हत्यारे तक तय कर लेते हैं. कुछ बच्चे माता-पिता को अपनी संपत्ति उनके हवाले करने और फिर उन्हें ओल्ड एज होम में रहने को मजबूर कर देते हैं. इस वजह से उनकी हत्या और दूसरी तरह के अपराध आसान हो गए हैं. दक्षिण दिल्ली के डीसीपी नीरज कुमार कहते हैं, "बूढ़े लोग चूंकि घर के काम में मदद के लिए नौकरों पर आश्रित होते हैं इसलिए अपराधियों तक यह खबर पहुंच जाती है."

वृद्धों को मानसिक यातना आम बात हो गई है. लेकिन ऊमन कहते हैं, "बूढ़ों को न ढंग से खाना दिया जाता है, न कपड़े." महिलाओं की देखरेख करने वाली संस्था 'कर्मिका' की संस्थापक, 70 वर्षीया सुभद्रा बुटालिया कहती हैं, "दादी मां के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है जैसा आया के साथ किया जाता है." सेवानिवृत्त इंजीनियर, 72 वर्षीय डी. राय बताते हैं, "मैं 80 वर्षीया एक महिला को जानता हूं, जिसे गरमी हो या बरसात, अपने पोते-पोतियों को स्कूल से लाना पड़ता है."

नतीजतन, युवाओं के प्रति बुजुर्गों की कड़वाहट भी बढ़ती जा रही है. 82 वर्षीय पादरी जेफरिन रेगो जैसे लोगों ने दुनिया से पीठ ही मोड़ ली है. मुंबई के क्लर्जी होम के 18 बाशिंदों में से एक रेगो 'नैतिकता और विवेक से हीन' लोगों की दुनिया से बेहद नाखुश हैं. वे बताते हैं, "बाहर निकलता हूं तो लोग पादरी-पादरी कहकर मुझे चिढ़ाते हैं. तब मैं उन पर पत्थर फेंकता हूं. उस समय मैं बहुत बूढ़ा और उपेक्षित महसूस करता हूं."

युवा पीढ़ी अक्सर क्रूरता का परिचय देती है. और बुजुर्ग खिल्ली उड़ाए जाने के डर से त्रस्त रहते हैं. पंजाब की पूर्व विधायक, 76 वर्षीया ज्ञान कौर विद्यार्थी के अनुसार, "एक बार मैं गिर पड़ी और उठने के लिए मुझे जोर लगाना पड़ा. तब मुझे अपनी कोई हड्डी टूट जाने की नहीं, खिल्ली उड़ाए जाने की चिंता थी."

नमम भोजानी

परशुराम भोवजानी, 108 वर्ष, एक सिल्क फर्म के पूर्व सेल्स अधिकारी. इनके चार बच्चे हैं लेकिन ये बांद्रा, मुंबई में अकेले ही रहते हैं. बाहरी दुनिया से इन्हें कुछ लेना-देना नहीं है.

"मैं अतीत को पसंद करता हूं. मेरे समय में आदमी की बात की कीमत होती थी. आज विश्वास नाम की कोई चीज नहीं है"

बेइंतहा अकेलापन तो और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैयद दाम

कई लोगों के लिए वृद्धावस्था नए शौक पालने और लक्ष्यों को अंजाम देने जैसी है

भी बदतर है. स्नायु मनोचिकित्सक अवधेश कुमार कहते हैं, "बुजुर्ग अक्सर अज्ञात की आशंका से ग्रस्त होते हैं और उन्हें अपनी चिंता सताती है. कुछ तो यह भी पूछते हैं कि क्या वे सनक जाएंगे."

बंधनों से टूटने का अनुभव किसी जख्म में चीरा लगने जैसा होता है. पर अपराध-बोध की अनुभूति मन के किसी कोने में गुम हो जाया करती है और जीवन की आपाधापी में बुजुर्गों के लिए वक्त निकाल पाना असंभव जान पड़ता है. पर यह अपराध-बोध बहुत बाद में जागता है. मसलन, मुंबई स्थित एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में उच्च अधिकारी, 48 वर्षीय विजय अग्रवाल को ही लें. इस ऊंचाई तक पहुंचने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा. उनकी पत्नी एक अत्यंत समृद्ध परिवार से हैं और चित्रकारी करती हैं. शुरू में उन्होंने गठिया से बुरी तरह पीड़ित विधवा मां को अपने साथ रखा. पर जैसे-जैसे यह दंपती समाज की सीढ़ियां लांघता गया, बूढ़ी मां बोझ बनती गईं. भावनाओं की जगह महत्वाकांक्षाओं ने ले ली. उनके अनुसार, "मुझे पता था कि शिकायतें कम नहीं होंगी. और मुझे मानसिक शांति चाहिए थी." लेकिन अब जीवन के उत्तरार्द्ध में कदम रखने के साथ ही आशंकाओं के स्याह साए उभरने लगे हैं. उन्हें यह डर सताने लगा है कि कहीं उनके बच्चे भी वही सलूक न करें जो कभी उन्होंने अपनी मां के साथ किया था. पत्नी के प्रति उनका दमित क्रोध अब कहीं भी फूट पड़ता है. वे भागकर किसी आश्रम में शरण लेने की बात सोचने लगे हैं.

पुत्र भले ही अपने कर्तव्यपालन में खरे नहीं उतर पा रहे हैं पर बेटियों ने बंधनों की लाज रखी है. परिवर्तित भूमिका में अब अधिक महिलाएं अपने माता-पिता की देखभाल करती हैं. ज्यादा अर्सा नहीं गुजरा जब कई समुदायों में माता-पिता अपनी ब्याहता बेटी के घर का पानी तक नहीं पिया करते थे. लेकिन अब चूंकि बहुत-सी महिलाएं कामकाजी हैं, इसलिए वे अपने बच्चों के साथ-साथ माता-पिता की देखभाल भी बखूबी कर लिया करती हैं. दूरदर्शन धारावाहिकों के प्रसिद्ध लेखक मनोहर श्याम जोशी कहते हैं, "अब इटली की तरह सासों के चुटकुले यहां भी उपलब्ध हैं. मर्द तो अब मजाक में अपने ही घर में खुद को घर-जमाई बताने लगे हैं."

पुरातन परंपरा से टूटकर आज की परिस्थिति में क्या खो गया है, इसकी व्याख्या कठिन है. उनसे नाता तोड़ने का मतलब है खुद को अतीत से जोड़ती कड़ियों, अपनी संस्कृति और सभ्यता से अलग करना. बुजुर्ग पीढ़ी सामूहिक ज्ञान की अजस्र धारा की तरह है. पंजाबी की प्रसिद्ध लेखिका कृष्णा सोबती के अनुसार, "उनके साथ ही भारतीय परिवार की रही-सही मर्यादा और प्रतिष्ठा समाप्त हो चली है."

बुजुर्ग अब फिर चर्चा में हैं. भारत में अमेरिका की तरह 'ग्रे पैंथर्स' यानी बुजुर्गों के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाली कोई टोली तो नहीं है पर पिछले दशक के समय से ही कुछ बुजुर्ग संगठित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ग्रहों की तरह बूढ़े और जवान भी एक-दूसरे से बिना टकराए अपनी-अपनी कक्षाओं में घूमते हैं."

राजेंद्र यादव, लेखक, संपादक

बंधनों के टूटने का अनुभव किसी जख्म में चीरा लगने जैसा होता है. पर अपराध-बोध मन के किसी कोने में गुम हो जाया करता है और जीवन की आपाधापी में बुजुर्गों के लिए वक्त निकाल पाना असंभव जान पड़ता है.

रूप में सोचने लगे हैं. 'हेल्प एज इंडिया' और 'एज-केयर इंडिया' के अलावा देश में करीब एक दर्जन ऐसी संस्थाएं हैं. इनकी मांगों में रेल टिकटों में 50 फीसदी की रियायत, अस्पतालों में अलग वार्ड, बुजुर्गों के लिए कामकाजी महिलाओं की तरह ही हॉस्टलों की व्यवस्था आदि शामिल हैं. 'हेल्प एज इंडिया' के महानिदेशक मेजर आर. एस. पन्नू की राय में योजनाकारों को 'बुजुर्ग प्रतिभाओं का एक बैंक' बनाना चाहिए जहां बुजुर्ग अपने अनुभव बांट सकें.

इसके अतिरिक्त भी एक क्रांतिकारी परिवर्तन आकार ले रहा है. 81 वर्षीय एम.एस. राणा खुद को 'बुजुर्ग नहीं केवल विकलांग' मानते हैं. उनका मानना है कि उन जैसे लोगों को अपने ऊपर खर्च भी करना चाहिए. "हमें अच्छा पहनना चाहिए, अपना खयाल रखना चाहिए और जिंदगी का लुत्फ उठाना चाहिए." महीने के पहले रविवार को करीब एक दर्जन बुजुर्ग एक कॉफी हाउस में मिल-बैठकर 'खाते-गपियाते' हैं. शरारतपूर्ण मुस्कान लिए राणा बताते हैं, "हम अपने बच्चों-पोतों की बात नहीं करते. हम अपने पड़ोसियों और उनकी बेटियों की चर्चा करते हैं."

बुजुर्गों को अब यह एहसास भी हो चला है कि उनकी संपत्ति उन्हीं के हाथों में रहनी चाहिए. वे अब तमाम जायदाद बिना सोचे-समझे अपने बच्चों के नाम नहीं करते. संदूक भरकर गहने रखने वाली वृद्धा अब अपना सब कुछ बैंक में रखना सीख गई है. बुजुर्ग सावधि खातों में धन जमा करने लगे हैं और अब यह सुनिश्चित भी करने लगे हैं कि उनके पास पर्याप्त धन हो और वे आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो. हरिद्वार के एक आश्रम में पत्नी के साथ रह रहे अवकाशप्राप्त शिक्षा अधिकारी, 71 वर्षीय विद्यारत्न कहते हैं, "हमारे पास पैसा हो तो हर कोई आदर देता है. अपने बच्चे भी."

बुजुर्गियत के अपने फायदे भी हैं. कभी-कभी जीवन के उत्तरार्द्ध में प्रेम जागता है. पूरा जीवन कटु माहौल में रहने के बाद दंपती अपने जीवन के अंतिम चरण में बदलने लगते हैं. वृद्धावस्था अकेलेपन से लड़ रहे दंपतियों के आपसी रिश्ते को अक्सर नया आयाम देती है. बंगलूर के मनोचिकित्सक कार्लोस वेल्श के अनुसार कुछ लोग जीवन के आखिरी दौर में प्रेम का सही अर्थ जान पाते हैं.

बुजुर्गों की आजादी को लेकर कुछ स्वर मुखर जरूर हुए हैं. पर अधिसंख्य बुजुर्ग अभी भी अपने बाल-बच्चों या नियति के भरोसे हैं. भारत में बुजुर्गों की तेजी से बढ़ती हुई संख्या के मद्देनजर सरकार ने अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया है. किसी भी पंचवर्षीय योजना में बुजुर्गों की ओर ध्यान नहीं दिया गया है. 1982 में वियना में हुए बुजुर्गों के विश्व सम्मेलन में घोषणा की गई थी, "भारत में बुजुर्गों की बढ़ती तादाद को चिंता का विषय कतई नहीं माना जाना चाहिए."

प्रसिद्ध समाजशास्त्री एम.एन. श्रीनिवास के मुताबिक संकट टालने का एक ही रास्ता है कि भारत में बुजुर्गियत के प्रति जागरूकता बढ़ाई जाए ताकि समाज ऐसी जरूरतों के लिए पहले से ही तैयार रहे. जाहिर है कि भारत को इस दिशा में ठोस योजना बनाने की जरूरत है.

बहरहाल, पश्चिम की नकल कर वृद्धाश्रम बना भर देना समस्या का सर्वोत्तम हल नहीं होगा. जरूरत इस बात की है कि बुजुर्गों को वापस समाज की जीवन रेखा से जोड़ा जाए और उन्हें एकांत के शून्य से अलग रखा जाए.

(पहचान छिपाने के लिए कुछ नाम बदल दिए गए हैं.)

भवान सिंह

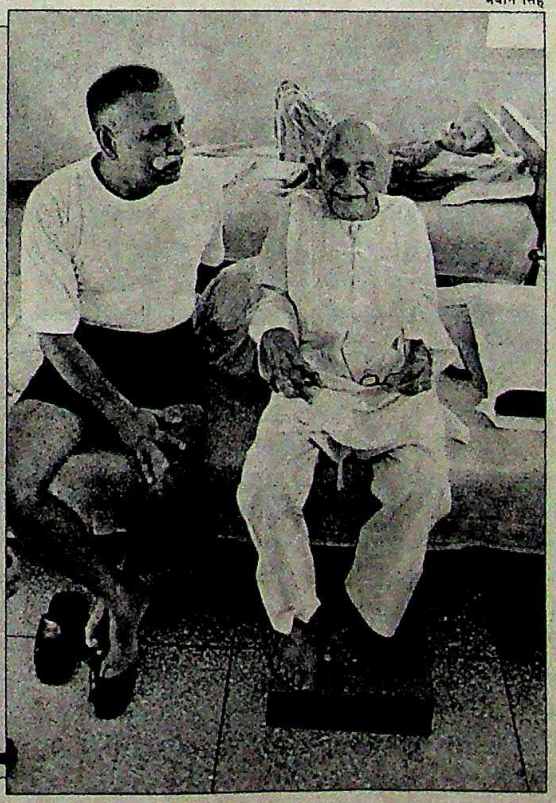

"जिंदगी के मूल्य और प्राथमिकताएं भी अब बदल गई हैं. वे दिन गए जब बुजुर्गों को आदर की निगाह से देखा जाता था और उनके अनुभव तथा ज्ञान की पूछ होती थी"

लाला कांशीराम चावला, 104 वर्ष, रिटायर सरकारी कर्मचारी, जो अब अपने बेटे के साथ देहरादून में रहते हैं. वे अखबारों में नैतिकता, हास्य-व्यंग्य आदि विषयों पर रोज लिखते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूरत में काम आने को तैयार

पैसों के वारे-न्यारे करने में सबसे माहिर माने जाने वाले जापानी अब अपने झंडे गाड़ने भारत आ रहे हैं. वैसे उनकी यह कोशिश 80 के दशक के मध्य में ही शुरू हो गई थी. तब भारत को अल्पकालिक कर्ज के लिए मुद्रा बाजार की शरण लेनी पड़ी थी और जापानी बैंक उसकी मदद के लिए आगे आए थे. अब भारत उनका 3 अरब डॉलर का देनदार है. इसमें से एक-तिहाई की वापसी तो इसी साल होनी है. बैंकिंग सूत्रों के अनुसार जापानी इसी की बदौलत भारत में परियोजनाओं के मामले में पश्चिमी देशों से बाजी मार लेंगे. वित्त विभाग के नौकरशाहों का कहना है कि इस तरह की कोशिश 'अगर सच में हो रही है तो बदमाशी' है. पर क्या करें! भारत को पैसों की जरूरत जो है!

नई पेंशन योजना

विधि मंत्रालय के सूत्रों का कहना है कि कर्मचारियों के लिए नई पेंशन योजना आने ही वाली है. इस कर्मचारी पेंशन योजना (ईपीएस) में मौजूदा कर्मचारी परिवार पेंशन योजना के सभी सदस्यों और पेंशनरों को शामिल किया जाएगा. केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड इस पर विचार कर रहा है. इस समय नियोक्ता अपने कर्मचारी की मूल तनख्वाह की 8.33 फीसदी रकम भविष्य निधि में और 1.66 फीसदी रकम परिवार पेंशन योजना में खींच लेते हैं. ईपीएस में यह अनुपात उलट जाएगा. इसमें कर्मचारी के सामने यह विकल्प होगा कि वह सारा धन रिटायर होने पर एक साथ न लेकर मासिक किस्तों में भी ले सकता है. निधन होने पर बाकी बचा पैसा उसके वारिस को दे दिया जाएगा. दूसरे, कर्मचारी के मूल वेतन का 10 फीसदी भविष्य निधि में चला जाएगा. अभी नियोक्ता को भी उतना ही धन भविष्य निधि में डालना पड़ता है.

हवा पर हौसला

मद्रास की नेप्च्यून इंफलैटेबल्स प्राइवेट लिमिटेड ने भारत में पहली बार जल शैया और कारों के लिए फुलाए जा सकने वाले जैक बाजार में उतारे हैं. 1983 में शुरू हुई यह कंपनी रक्षा प्रतिष्ठानों वगैरह के लिए जीवन रक्षा के कई उपकरण बनाती है. इसकी जल शैया की कीमत है 3,500 रु.और डबल बेड वाली जल शैया की 6,000 रु. मारुति, फिएट जैसी छोटी कारों के लिए फुलाए जाने वाले जैक 600 रु. में तथा बड़े वाहनों के लिए 630 रु. में मिलेंगे. ये चीजें अभी दक्षिण भारत के बाजार में उतारी गई हैं. इसके बाद मुंबई और दिल्ली में उतारी जाएंगी. कंपनी फुलाए जाने वाले फर्नीचर भी बनाने जा रही है.

वाहनों के लिए नई ताकत

वाहनों के लिए अब एक नई, ज्यादा टिकाऊ और ज्यादा महंगी बैटरी बाजार में आ गई है. क्लोराइड इंडस्ट्रीज लिमिटेड की इस बैटरी का नाम है—फ्रीडम. कंपनी का दावा है कि इसे छह महीने में एक बार ही दुरुस्त करवाना पड़ेगा. मगर ये दूसरी बैटरियों से 20 फीसदी महंगी हैं. दोपहिया वाहन की बैटरी 366 रु. और 423 रु., और कारों तथा ट्रकों की 1,758 रु. व 4,023 रु.के बीच है. 'फ्रीडम' बैटरियां शुरू में चार महानगरों में बेची जाएंगी. कंपनी के ही वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई यह बैटरी आईएसओ 9000 स्तर की है जिसकी वजह से यह यूरोपीय साझा बाजार में भी स्वीकार्य होगी.

तेल की महंगी धार

भारत सरकार को तेल के आयात और इस पर होने वाले खर्च पर नजर रखनी होगी. यह आयात बढ़ रहा है. 1987-88 में यह 2.2 करोड़ टन था जो इस साल 3.2 करोड़ टन हो सकता है. 1987-88 में भारत ने इस आयात के लिए 4,043 करोड़ रु. का भुगतान किया था. इस साल यह रकम 10,000 करोड़ रु. या इससे ज्यादा ही होगी. सरकारी अनुमान के अनुसार घरेलू मांग कम होने की कोई संभावना नहीं. इसलिए इस दशक में ज्यादा समय यह खर्च बढ़ेगा ही.

चार्ट: बी.के. शर्मा

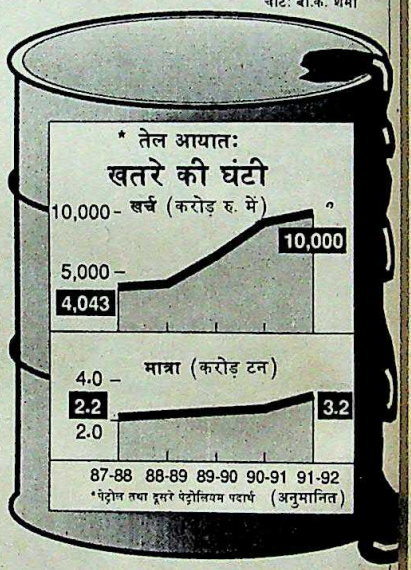

ब्याज का बखेड़ा

रेमंड्स सिंथेटिक्स के सार्वजनिक निर्गम के मामले में केंद्र सरकार के साथ उसका विवाद अब उच्चतम न्यायालय में पहुंचने वाला है. कंपनी ने यही तय किया है. विवाद कंपनी द्वारा पिछले अगस्त में निर्गम के असफल आवेदकों को उनके पैसे की वापसी पर ब्याज देने को लेकर था. रेमंड्स ने जब यह फैसला किया कि वह 26 लाख असफल आवेदकों को देय ब्याज के कुल 2.5 करोड़ रु. का भुगतान नहीं करेगी तभी से कंपनी मामलों का विभाग उसके पीछे पड़ा था. रेमंड्स ने सरकार से अनुरोध किया था कि वह इस मामले में हुई देरी के एवज में ब्याज देने की बाध्यता खत्म कर दे, क्योंकि यह देरी दुर्घटना की वजह से हुई थी. अक्तूबर में दिल्ली जा रही पश्चिम एक्सप्रेस में आग लग जाने के कारण रिफंड आर्डर जल गए थे. पैसा अंततः 15 दिसंबर को वापस किया गया. अब विवाद इन्हीं दो महीनों के ब्याज को लेकर है. लेकिन विभाग ने कंपनी को आदेश दिया कि वह ब्याज का भुगतान करे या कानूनी कार्रवाई का सामना करे. रेमंड्स ने जवाब में मुंबई हाईकोर्ट में याचिका दायर कर दी. न्यायाधीश ने याचिका खारिज कर दी. पर कंपनी हार मानने वाली नहीं थी. अब उच्चतम न्यायालय सितंबर में तय करेगा कि रेमंड्स को बख्शा जाए या नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8 sales offices.
Sales force of over 100.
A 10,000 dealer network.
In every state of the country.

Now, imagine them marketing your product.

INTERESTED?

– YES –

If your answer is yes, read on.

We are talking about a tie-up with Madura Accessories, a proven name for expertise in marketing of inhouse as well as sourced products. With a wide distribution network and a hard hitting sales force.

Not surprisingly, the division has notched up an impressive growth rate of 50% p.a. for the past three consecutive years.

All this, besides the obvious advantage of being a division of Madura Coats Limited – the world's largest thread manufacturer and a leading textile conglomerate in India.

If you have a quality product which you would like marketed through the length and breadth of the country, write to us, at the address below. We would particularly welcome marketing tie-ups with the small scale sector.

Marketing Manager

Madura Accessories

(A division of Madura Coats Limited)

H-85, Old Madras Road, P.O. Box 1600, Doorvaninagar, Bangalore - 560 016.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

उम्मीदें बढ़ीं

पखवाड़ा ठीकठाक बीता

चार सितंबर को खत्म हुए पखवाड़े में कोई बड़ी अशुभ घटना नहीं हुई बल्कि उसने उम्मीदें ही बंधाई. प्रमुख शेयर पहले तो कुछ लुढ़के पर पखवाड़े के अंत में फिर कुछ ऊपर पहुंचे. मुंबई शेयर बाजार (मुंशेबा) का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक 1,762.63 के अंक पर बंद हुआ और एक दिन बाद 1,800 की सीमा पार कर गया. मुंशेबा का राष्ट्रीय सूचकांक 6 अंक गिरकर 839.41 के अंक पर बंद हुआ. लेकिन इकॉनॉमिक टाइम्स का विस्तृत आधार वाला शेयर सूचकांक 2.4 अंक गिरकर 946.2 पर जा पहुंचा.

बाजार के माहिरों का कहना है कि व्यापार में उत्साह का माहौल ऐसी खबरों को लेकर था कि अर्थव्यवस्था को उदार बनाने की सरकार की कोशिशों के चलते अब काफी मात्रा में विदेशी निवेश की संभावना है. लेकिन यह सब कितना हो पाएगा इस पर अभी अनुमान ही लगाए

चार्ट: बी.के. शर्मा

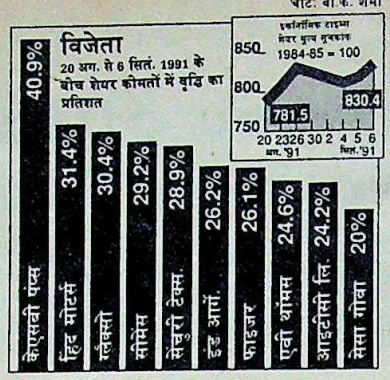

जा सकते हैं. प्रमुख शेयरों में रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड की खाता बंदी के बदला कारोबार को लेकर कुछ भ्रम था. आधिकारिक व्यापार में यह 3 रु. गिरकर 173 रु. में बिका पर बाजार के बाहर हुए सौदों में इसकी कीमत 180 रु. थी. टाटा स्टील 230 रु. के आसपास रहा और एसीसी 3,500 के आसपास. सटोरियों के नए दांव शुरू हुए तो सेंचुरी टेक्सटाइल 300 रु. की कमाई करके 8,500 रु. की नई बुलंदी पर पहुंच गया.

बाजार में एक खबर और भी थी कि आज के सबसे आक्रामक साझा कोष - कैनबैंक म्युचुअल फंड पर वित्त मंत्रालय किसी भी क्षण नकेल बांधने की तैयारी कर रहा है, जो भले ही कुछ समय के लिए हो. समझा जाता है कि कोष का निरीक्षण करने वाले भारतीय प्रतिभूति एवं बाजार बोर्ड ने इसके कामकाज में कई तरह की 'अनियमितताएं' पाई हैं. जब तक यह मामला सुलझ नहीं जाता, कोष को कोई नई योजना शुरू करने की अनुमति नहीं दी जाएगी. उसकी नई योजना कैनट्रिपल को अब कुछ इंतजार करना पड़ेगा.

पखवाड़े के शुरू में शेयर बाजारों के अध्यक्षों की वित्त मंत्रालय के साथ दिल्ली में बैठक से लगता है कि नगदी शेयरों के सात दिन में निबटारे की व्यवस्था बन जाएगी. अभी तक इसमें दो हफ्ते का समय लगता है. बाजार के कर्ताधर्ता लोग बाजार के माहिर एल.सी. गुप्ता के इस प्रस्ताव पर भी सहमत नहीं हुए कि बदला कारोबार को खत्म कर दें.

प्रतिभूति एवं बाजार बोर्ड की इस चेतावनी को अनसुना कर दिया गया कि बाजार में गर्मी कुछ जरूरत से ज्यादा ही है, शेयरों की कीमतें भी काफी चढ़ी हुई हैं और अर्थव्यवस्था की हालत खराब है. शेयर बाजार की निगरानी करने वाली यह सर्वोच्च संस्था बाजार की तेजी पर काफी गंभीर है मगर बाजार अभी तो खुशहाली की मौज लूटने में व्यस्त है.

जमा स्टॉक

	1991 ऊंचा	नीचा	बंद 6.9.91	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	174.00	109.00	149.00	24.00+
एसो.सीमेंट	3660.00	1300.00	3625.00	370.00+
एशियन पेंट्स	272.50	215.00	257.50	–
एटलस कोप्को	112.50	42.00	95.00	1.25+
बजाज ऑटो	780.00	500.00	770.00	82.50+
बड़ौदा रेयॉन	950.00	400.00	840.00	25.00+
बाटा इंडिया	120.00	72.00	116.00	2.00–
बल्लारपुर	310.00	228.00	302.00	2.00+
बिरला जूट	380.00	168.00	378.00	46.00+
ब्लो प्लास्ट	180.00	40.00	165.00	5.00–
बांबे डाइंग	300.00	150.00	280.00	–
ब्रिटा इंडिया	200.00	112.00	190.00	5.00+
ब्रूक बांड	172.00	116.00	144.00	9.00–
कैडबरी इंडिया	200.00	132.50	188.75	1.25+
कैस्ट्रोल इंडिया	447.50	162.50	436.25	46.25+
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	9050.00	3625.00	8800.00	1975.0+
कोलगेट पामो.	380.00	250.00	361.25	–
सायनामिड	175.00	76.25	175.00	20.00+
डीसीएम	300.00	123.00	266.00	4.50–
डनलप	89.00	46.50	76.00	5.00+
ईआई होटल्स	65.00	35.00	60.00	5.00+
एस्कार्ट्स	172.00	127.00	165.00	5.00+
फिनो. केबल्स	260.00	140.00	240.00	15.00+
गरवारे नाइलोन	44.00	27.00	40.00	1.00+
जी.ई. शिपिंग	104.00	25.00	98.00	10.00+
गुज.स्टेट फर्टि.	263.75	150.00	242.50	5.00+
ग्लैक्सो इंडिया	335.00	167.50	326.00	26.00+
गुज.अंबुजा	272.50	90.00	265.00	21.25+
हिंदु.एल्यु.	342.50	200.00	327.50	5.00–
हिंदु.सीबा	2100.00	650.00	1900.00	50.00+
हिंदुस्तान लीवर	180.00	132.50	153.00	5.50+
हिंदुस्तान मोटर्स	45.75	18.80	45.00	10.75+
हेक्स्ट	4250.00	2400.00	4150.00	550.00+
आईसीआई	80.00	30.00	70.50	0.50+
इंडियन आर्गेनिक	80.00	30.00	77.00	16.00+
इंडियन रेयॉन	238.00	104.50	231.00	43.00+
इंगरसॉल-रैंड	385.00	240.00	340.00	5.00–
आईटीसी	303.00	99.00	298.00	58.00+
जे.के.सिंथेटिक्स	60.00	27.00	51.50	1.50–
काइनेटिक इंजी.	225.00	145.00	180.00	25.00–
किर्लो. क्युमिंस	198.75	95.00	175.00	12.50–
केएसबी पंप्स	310.00	160.00	310.00	90.00+
लार्सन ऐंड टुब्रो	163.75	90.00	147.00	4.50+
लिप्टन	170.00	57.50	152.50	7.50+
लोहिया-मशीन्स	37.50	21.00	31.00	0.50–
महिंद्रा-महिंद्रा	115.00	57.50	90.00	2.50–
मास्टरशेयर्स	42.50	20.00	28.50	0.75–
मोटर इंडस्ट्रीज	1750.00	675.00	1500.00	50.00+
मुकुंद लिमि.	215.00	117.50	160.00	12.50+
नेशनल आर्गे.	1950.00	925.00	1510.00	65.00–
नेस्ले इंडिया	201.00	111.25	191.00	2.00–
निरलॉन	41.25	16.00	28.00	1.00+
ओरके सिल्क मि.	40.00	17.50	34.50	1.00+
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	132.00	53.00	120.00	5.00+
फाइजर	152.50	60.00	145.00	30.00+
प्रीमियर ऑटो	66.00	30.00	58.50	2.50+
रेमंड	212.50	110.00	192.00	14.50+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	206.00	91.25	175.00	10.00–
सीमेंस इंडिया	235.00	112.50	210.00	47.50+
शॉ वैलेस	185.00	77.00	146.00	21.00–
श्रीराम फाइबर्स	65.00	33.00	63.00	3.00+
एसकेएफ बेय.	2925.00	1650.00	2750.00	75.00+
स्पिक	76.00	33.00	68.50	2.50+
टाटा स्टील	255.00	170.00	234.00	2.00–
टेल्को	338.75	142.50	332.50	31.25+
टाइटन वाचेस	93.75	58.00	85.00	2.50+
वाम ऑर्गेनिक	232.50	102.50	212.50	2.50–
वीडियोकॉन	360.00	133.75	345.00	65.00+
वोल्टास	145.00	92.50	135.00	2.50–
विमको	47.00	16.00	37.50	0.50–

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	किसी मूल्य में (हाल)	इस मूल्य में (हाल)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	20.5007	20.2892
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	213.9099	211.3184
बहरीन	दीनार	1	69.3501	67.4233
बांग्लादेश	टका	100	73.0410	71.9307
कनाडा	डालर	1	22.8493	22.6181
डेनमार्क	क्रोना	1	3.8930	3.8525
मिस्र	पौंड	1	8.0980	7.9701
फ्रांस	फ्रैंक	1	4.4843	4.3764
जर्मनी	मार्क	1	15.2207	14.8368
हांगकांग	डालर	1	3.3613	3.3284
इंडोनेशिया	रुपिया	100	1.3372	1.3108
ईरान	रियाल	100	–	–
इटली	लीरा	100	2.0167	1.9925
जापान	येन	100	19.5695	19.0840
केन्या	शिलिंग	1	0.8895	0.8869
कुवैत	दीनार	1	–	–
मलेशिया	डालर	1	9.3831	9.2689
मारीशस	रुपया	1	1.5097	1.5746
नेपाल	रुपया	1	0.6070	0.6056
हालैंड	गिल्डर	1	13.3311	13.1953
पाकिस्तान	रुपया	1	1.0621	1.0476
सिंगापुर	डालर	1	15.1735	15.0178
स्पेन	पेसो	1	0.2411	0.2385
श्रीलंका	रुपया	1	0.6247	0.6157
स्वीडन	क्रोना	1	4.1400	4.0966
स्विट्जरलैंड	स्विस फैंक	1	17.1156	16.9387
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1191	0.1128
थाईलैंड	बहत्त	100	102.4582	99.5110
ब्रिटेन	पौंड	1	44.0723	43.7541
अमेरिका	डालर	1	26.0736	25.8231
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	7.1031	7.0286
सोवियत संघ	रूबल	1	29.9379	29.9356

स्रोत: बैंक ऑफ टोक्यो, नई दिल्ली, 7.9.91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

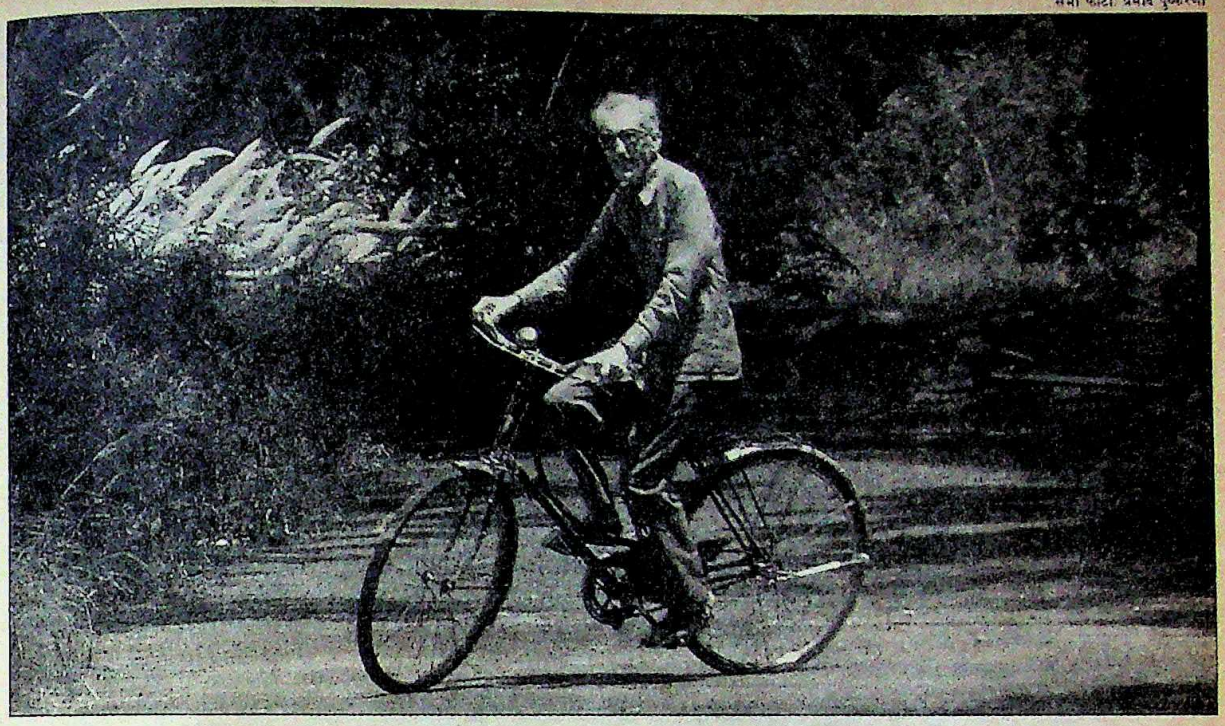

सभी फोटो: प्रभात पुष्करणा

मिशनरी

बुढ़ापे में वनवास का सदमा

वनवासियों के बीच उल्लेखनीय और लंबे समय तक काम करने के बावजूद तीन विदेशी मिशनरियों को देशनिकाला

—नरेंद्र कुमार सिंह

भारत ही अब उनका घर है, बाकी सब जगहों के लिए वे विदेशी हो गए हैं. फादर लुई द रेट, रेवरंड बर्नेज एडविन गैटर और उनकी बीवी जोन की कर्मभूमि भारत ही है. पर नागरिकता के लिए बार-बार आवेदन कर चुके ये तीनों व्यक्ति भारत सरकार के लिए अभी परदेसी ही हैं.

बेल्जियम में जन्मे 77 वर्षीय लुई भोपाल के कैंपियन स्कूल के पुस्तकालय में बैठे अपने कागजात उलटते-पलटते हैरानी जताते हैं कि 54 साल तक भारत में रहने के बाद भी यह समस्या क्यों हैं. गैटर दंपती की भी यही परेशानी है. वे 1948 में शादी के तुरंत बाद अमेरिका के सन फ्रांसिस्को से भारत चले आए थे. तीनों को मध्य प्रदेश सरकार ने पिछले पखवाड़े एक 'गोपनीय' आदेश में तुरंत देश छोड़ देने को कहा है.

देश छोड़कर चले जाने का आदेश उन्हें कोई पहली बार नहीं मिला है. 1985 में राज्य सरकार ने लुई, गैटर दंपती और आठ दूसरे विदेशी मिशनरियों को देश से निकालने का आदेश जारी किया था. ये सभी हर साल नवीकरण किए जाने वाले आवासी परमिट के आधार पर यहां रह रहे थे. बाद में इनमें से आठ को पांच साल का आवासी परमिट मिल गया. पर लुई और गैटर दंपती इनमें शामिल नहीं थे.

पर ये तीनों अगर बलात धर्म परिवर्तन के कामों में लगे थे, जैसा कि राज्य के गृह विभाग के सूत्र बताते हैं, तो उनके खिलाफ मध्य प्रदेश स्वतंत्रता अधिनियम 1968 के तहत कार्रवाई क्यों नहीं की गई? मध्य प्रदेश क्रिश्चियन एसोसिएशन की अध्यक्षा इंदिरा आयंगर के अनुसार, "मिशनरी जब तक शहरी संभ्रांत वर्ग के लिए स्कूल चलाते हैं, सुरक्षित रहते हैं. गरीबों के काम शुरू करते ही उनके लिए समस्याएं खड़ी होने लगती हैं."

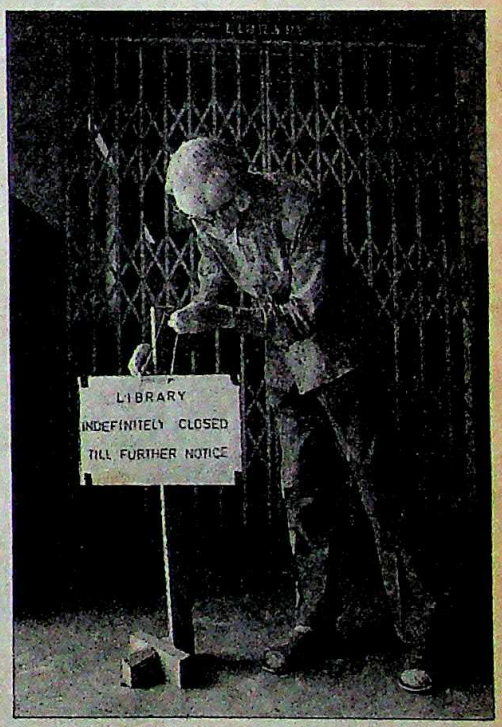

लुई (ऊपर) जाने की तैयारी कर रहे हैं और पुस्तकालय (नीचे) बंद पड़ा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भारत में अपने लंबे प्रवास के दौरान ये तीनों गरीबों के लिए ही काम करते रहे हैं. गैटर दंपती को सरगुजा की सीतापुर तहसील के गांव सूर्यपाड़ा में बने अपने घर से प्रेम है. वे '50 के दशक से वनवासियों को शिक्षित कर रहे हैं. जब वे यहां आए थे तो न सड़कें थीं, न बिजली. गैटर का कहना है, "तब मुझे मालूम था कि मैं यहां से कभी नहीं लौटूंगा." आज उनकी वनवासी शिक्षा, कृषि एवं चिकित्सा संस्था में 1,500 छात्र हैं.

लुई ने अपनी कठिन लेकिन लाभप्रद जवानी बिहार और मध्य प्रदेश के वनवासियों के बीच बिताई है. जब वे छोटानागपुर में इसाइयों के एक संप्रदाय के प्रमुख थे तो उन्होंने काफी इलाका छान मारा था, वह भी ज्यादातर घोड़े पर सवार होकर. 1985 से वे कैंपियन स्कूल में पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में काम कर रहे हैं. खुद को देहाती कहने में गर्व का अनुभव करने वाले लुई वनवासियों की हालत बताने में जरा भी संकोच नहीं करते हैं, "पहले जमींदार वनवासियों

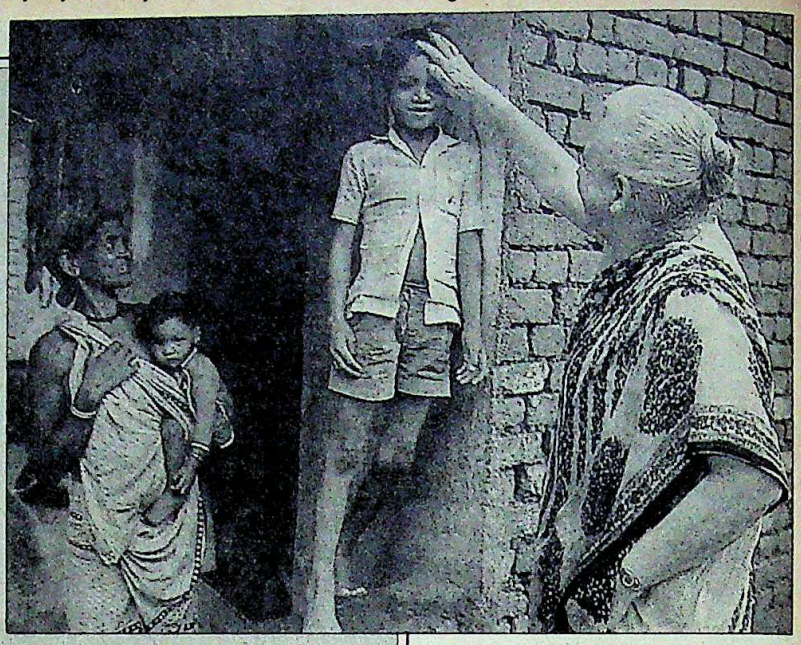

अपनी जन्मभूमि से नाममात्र का रिश्ता रखने वाले इन तीन मिशनरियों के लिए देशनिकाले का आदेश एक बड़ा आघात है

अपने स्कूल में गैटरः परदेसी हो गए

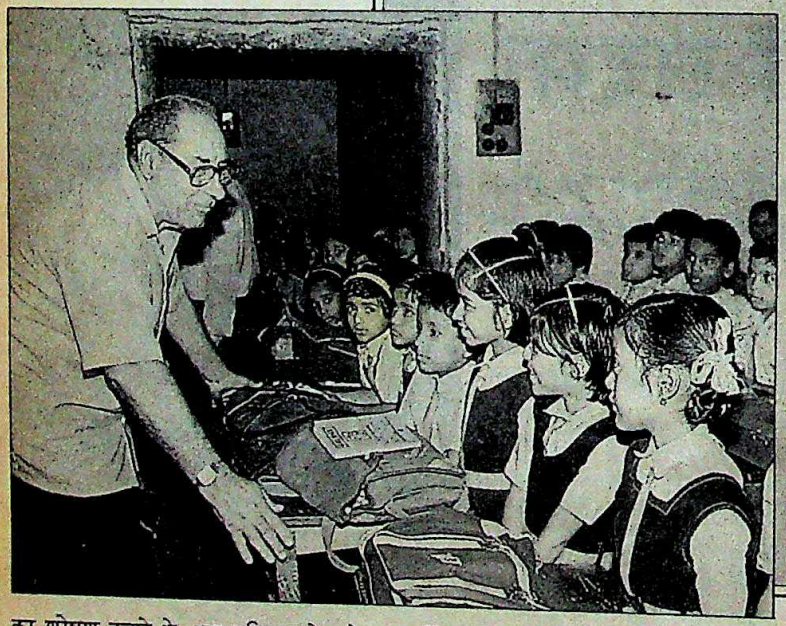

का शोषण करते थे, अब पुलिसवाले और अफसर करते हैं."

इन तीनों के लिए सरकारी आदेश किसी आघात से कम नहीं था. जिन देशों में वे पैदा हुए थे, उनसे उनके नाममात्र के संबंध रह गए थे. उन्हें देश छोड़ने की अंतिम तारीख दी गई 31 अगस्त जो गैटर दंपती की शादी की सालगिरह है. 64 वर्षीय जोन का कहना है, "हम अमेरिका में जितना समय रहे उससे दोगुना भारत में रह चुके हैं." लुई के दोस्त 'उसके लोग' भी यहीं हैं. फीकी हंसी हंसते हुए वे बताते हैं, "यहां पर 50 साल बिताने के बाद अब मैं टूटी-फूटी फ्लेमिश ही बोल सकता हूं." गैटर दंपती की तरह वे भी फर्राटेदार हिंदी बोलते हैं. संस्कृत और वनवासी

जोन गैटरः परदेस ही देश बना

भाषाओं—मुंडारी, ओरांव और सदरी पर भी उनकी अच्छी पकड़ है. रुंधे गले से वे बताते हैं, "मेरी एकमात्र इच्छा शांति के साथ यहीं मर जाने की है." निष्कासन को चुनौती देने के लिए उनके पास पैसे नहीं हैं.

जोन भी इतनी जल्दी हार मानने वाली नहीं, "उन्हें जबरदस्ती मुझे विमान में डालना होगा. मैं इतनी आसानी से नहीं जाऊंगी." एक सड़क दुर्घटना के आरोपी उनके 66 वर्षीय पति के पास यहां रहने का बहाना है. अदालत ने उनसे कह रखा है कि वे उसकी अनुमति के बिना देश न छोड़ें.

तीनों ने केंद्रीय गृह मंत्रालय को मामले की पुनर्समीक्षा के लिए याचिका दी है. उन्हें मालूम है कि भाजपा सरकार उनसे कोई सहानुभूति नहीं दिखाएगी. उसकी तो सारी चिंता यही है कि 1951 से 1981 के बीच सरगुजा में ही ईसाइयों की संख्या 545 से बढ़कर 28,000 हो गई. लुई को अभी भी उम्मीद है. पर दाहिने हिस्से से लकवाग्रस्त यह बूढ़ा पादरी यात्रा की परेशानियों में शायद ही बच पाए. अगर गैटर दंपती भी जाते हैं तो उनका घर ही नहीं, बहुत कुछ छूट जाएगा. उनका बड़ा बेटा बिलासपुर में दफन है. जोन के शब्दों में, "हमें हमेशा लगता रहेगा जैसे हमारा एक हिस्सा यहीं रह गया है." फिर भी संकीर्ण दिमाग वाली सरकार उनकी भावनाओं को शायद ही समझ पाए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत संघ

बिखराव और बदलाव

इस बिखरते देश का आंखों देखा हाल जानने के लिए फीचर संपादक शेखर गुप्ता और फोटो एडीटर भवान सिंह ने रूस, बाल्तिक देशों और उक्रेन की यात्रा की

"प्रभु की वापसी हो रही है"

—बिशप एंथनी, 31 वर्षीय पादरी, उक्रेन के कीव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत संघ पिछले दिनों जिन अनुभवों से गुजरा वह भारत के लिए कोई नया नहीं है. सामाजिक और राजनैतिक असंतोष के गुबार गाहे-ब-गाहे यहां भी उठते रहे हैं और यह विशालकाय संघ टुकड़े होने के कगार तक पहुंचता रहा है. नगालैंड, मिजोरम, असम, तमिलनाडु, कश्मीर और पंजाब सोवियत संघ के उक्रेन, लात्विया, एस्तोनिया, लिथुआनिया, अज़रबैजान और जॉर्जिया से भिन्न नहीं हैं. लेकिन दोनों देशों में कुछ बुनियादी फर्क तो हैं ही. तभी तो एक देश तमाम तनावों-दबावों को झेलते हुए एकजुट रहा है जबकि दूसरा देश 200 वर्षों के विजय अभियानों, विस्तारवादी नीतियों और राष्ट्र निर्माण प्रयासों के बावजूद टुकडे-टुकड़े हो गया है.

जिन कारणों से सोवियत संघ टूटा है उनमें से कई कारण भारत में भी मौजूद हैं. जाति, भाषा, राष्ट्रीयता, और धर्म के साथ-साथ भूगोल और जलवायु के मामले में भी यह देश विविधताओं से भरा हुआ है. मगर एक शक्तिशाली केंद्र कुछ तो 'दाम' और कुछ 'दंड' के बल पर देश को एकजुट रखने की कोशिश करता रहा है, सोवियत संघ ने तो बाल्तिक राज्यों में आतंक फैलाने वाले सैनिक 'ओमोन' बाद में भेजे, भारत ने इससे कहीं पहले केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का आविष्कार कर लिया था. साथ ही केंद्र द्वारा संचालित अर्थव्यवस्था भी अपनाई जा चुकी थी, जिसके दूरगामी परिणाम घातक ही होते हैं. केंद्र-राज्य संबंधों, संसाधनों के बंटवारे और वित्तीय स्वायत्तता पर होने वाली बहसें उबाऊ और बेकार लग सकती हैं पर इसी तरह की बहस के कारण आज सोवियत संघ विखंडन और अस्थिरता के कगार पर जा पहुंचा है. 18 वर्षीय छात्र कार्यकर्ता ज़िलीस जितरास ने मुझसे लिथुआनिया में कहा, "उस व्यवस्था में कौन रहना चाहेगा जहां अगर एक आदमी यह फैसला कर ले कि सभी चीनी मिलों का पुनरुद्धार जरूरी है, तो समूचे संघ की मिलें बंद हो जाती हैं. अगर आपके पास काला बाजार से खरीदने के लिए डॉलर न हो तो जरा चीनी खरीदकर दिखा दीजिए." कीव में रहने वाले वकील कार्ल बोंडर एक पुराना उक्रेनियाई चुटकुला सुनाते हैं, "हम अक्सर कहा करते थे कि हमारा राष्ट्र महान है. हमारी सीमाएं कार्पाथिया तक हैं. हमारी राजधानी मॉस्को में है और जेल साइबेरिया में हैं. लेकिन सवाल यह है कि हम हैं कौन? किस देश के हैं? कैसे लोग हैं?"

हर किसी में अपनी एक पहचान की ख्वाहिश होती है—चाहे वह उक्रेन का निवासी हो या लिथुआनिया का जिसे वर्षों तक दमन और ख़ास सैद्धांतिक ढांचे में ढालने की बर्बर कोशिशों को झेलना पड़ा हो. सेना और पार्टी मिलकर अगर राष्ट्र-निर्माण कर पातीं तो सोवियत संघ इस तरह नहीं बिखरता. या फिर कीव में उक्रेन की संसद के बाहर 20,000 लोगों की भीड़ इस गणराज्य के राष्ट्रपति और कम्युनिस्ट पार्टी के नेता लियोनिद क्राव्चुक के विरोध में नारे न लगा पाती. लोग इसलिए नाराज थे कि क्राव्चुक ने बोरिस येल्तसिन के साथ एक समझौता किया था, जिसके तहत उक्रेन रूस के साथ आर्थिक और राजनैतिक सहयोग करते हुए संप्रभु गणराज्य बन सकता था. नाजी लेबर कैंप और लेक बैकाल की

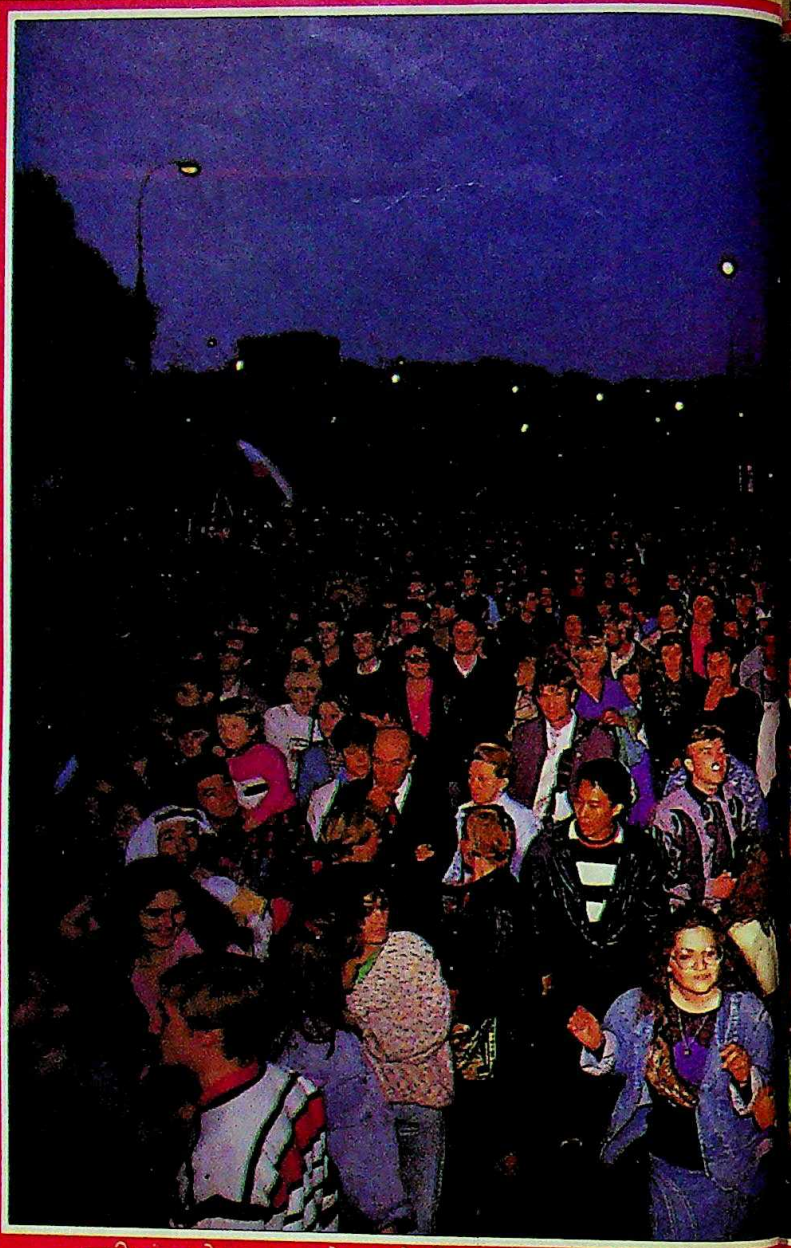

रूसी संसद के बाहर हफ्ते भर के विजय उत्सव में बेहतरीन रॉक मा... ने अपने संगीत से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया और यह देखकर...

"ऐसा संघ कौन चाहेगा जहां कोई एक आदमी चीनी मिलों में सुधार की वकालत करता है तो देश की सारी मिलें बंद हो जाती हैं"
जिलीस जितरास, 18 वर्ष
विलनियस का छात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

....मेरे सामने मॉस्कोवासियों का एक अनजाना पक्ष उजागर हुआ कि वे भावुक, हंसमुख और खुले दिल के लोग हैं.

यातनाएं भुगत चुके 76 वर्षीय ओलेग जिदिमा भीड़ में खड़े-खड़े चिल्लाते हैं, "बाहर निकलो कुत्तो! क्या तुम्हारी मां साइबेरिया गई थी? या क्या तुम्हारा बाप हिटलर की कब्रगाह में रहा था?"

भारत में वैसे यातना शिविर नहीं लगे जैसे सोवियत संघ में लगे थे. यहां कोई स्तालिन या ब्रेझनेव नहीं हुआ. न ही यहां केजीबी या रेड आर्मी जैसी कोई संस्था या संगठन है. पर सामाजिक टकरावों का इसका अपना इतिहास रहा है. और अब केंद्रीय सत्ता भी ऐसी हो गई है जो अपना नियंत्रण ढीला नहीं करना चाहती और वक्त की दस्तकों को अनसुना करके कई समुदायों को अपनी नई पहचान खोजने पर मजबूर कर रही है. इस तरह मेरी भाषा, मेरा धर्म, मेरी जाति, मेरे कपड़े, मेरा तेल और मेरा पानी जैसे नारे जोर पकड़ने लगे हैं. और मुझे तो लगता है कि जो लोग नाराज आबादियों से 'संतुलन' कायम करने के लिए मजबूत केंद्र और क्षेत्रीय पहचानों को एक राष्ट्रीय पहचान में विलीन करने के लिए अनुच्छेद 370 जैसे मंत्रों के उच्चारण पर जोर देते हैं, उन्हें बिखरती सोवियत सल्तनत की पदयात्रा करनी चाहिए.

> **"रूसियों के मन में बैठा है कि उक्रेन उनका पिछवाड़ा है. येल्तसिन के राष्ट्रवाद से साम्राज्यवाद की बू आती है"**
>
> **इवान थोलोवी, 30 वर्ष**
> **उक्रेन का राजनैतिक कार्यकर्ता**

इस पदयात्रा की शुरुआत रीगा या तालिन, विलनियस, बाकू, येरेवान कहीं से भी हो सकती है. मैंने शुरुआत कीव से की, जो सोवियत संघ के सबसे सुंदर शहरों में है और संघ के दूसरे सबसे बड़े गणराज्य तथा रूस के अस्तित्व के लिए अहम उक्रेन गणराज्य की राजधानी है. शहर के मुख्य चौराहे के ठीक सामने, और नदी के किनारे सुंदर पार्कों से सुसज्जित संगमरमर की इमारत उक्रेनी संसद भवन है जिसका आजकल सत्र चल रहा है. लेकिन सक्रियता तो इसके बाहर ही दिखती है. हजारों लोग सदन से निकल रहे सांसदों का इंतजार कर रहे हैं जो बाहर आकर भाषण देते हैं. आज सबसे लोकप्रिय वक्ता वाचेस्लाव चोर्नोविल हैं जो राष्ट्रपति पद के लिए 1 दिसंबर को होने वाले चुनाव में उक्रेनी रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार हैं. वे पूरे हुमक के साथ कहते हैं, "हमें क्या चाहिए? संपूर्ण स्वतंत्रता. और कुछ नहीं. गद्दी छोड़ दो..." और भीड़ उनके साथ-साथ नारे लगाती है. लोग नीले और पीले रंग का उक्रेनी राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहे हैं जिस पर उनका राष्ट्रीय चिन्ह त्रिशूल अंकित है. लोग रंगारंग परिधानों में हैं जिन्हें देख आंखें चौंधिया जाती हैं. बूढ़ी औरतें पारंपरिक परिधान पहने हैं. पादरी बेशकीमती धार्मिक लिबास में हैं— सोने और चांदी के काम वाले कोट और बहुमूल्य नग जड़े मुकुट वगैरह से सजे. इन पुराने परिधानों को मानो भंडार से निकालकर फिर रंग-रोगन करके पहना गया है.

बिशप एंथनी पूरी तरह सजे हुए हैं. मैंने उनसे पूछा, "फादर, आज आप बहुत खुश लगते हैं." वे खुशी से हामी भरते हुए कहते हैं, "हां, प्रभु की वापसी हो रही है क्योंकि उक्रेन आजाद है." मैंने पूछा, "लेकिन गोर्बाचेव ने भी तो पूजा और प्रार्थना की आजादी दी थी?" वे उलटा सवाल दाग देते हैं, "गोर्बाचेव मूर्ख है. कोई आदमी समाजवाद और ईसाइयत की बात एक ही साथ कैसे कर सकता है? हम पहले ईसाई हैं, उक्रेनी बाद में. और इसमें साम्यवाद की जगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे गोर्बाचेव और येल्तसिन से नफरत है. क्या इसी दिन के लिए फासिस्टों से लड़ते हुए लोगों ने अपने को बलिदान कर दिया था?"
इवान याकोव्लेव गारोशेंको, 77 वर्ष, द्वितीय विश्वयुद्ध के हीरो

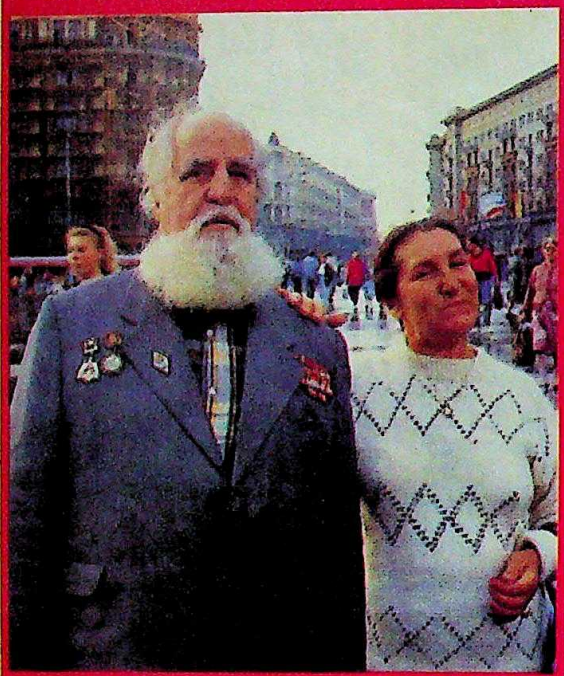

"हमें रूसियों से नहीं बल्कि कम्युनिस्टों से घृणा है. उन्हें मारा न जाए पर उनसे पिंड छुड़ा लिया जाए"
मारा वालपेत्रे, 20 वर्ष
लात्वियाई शहर रीगा की छात्रा

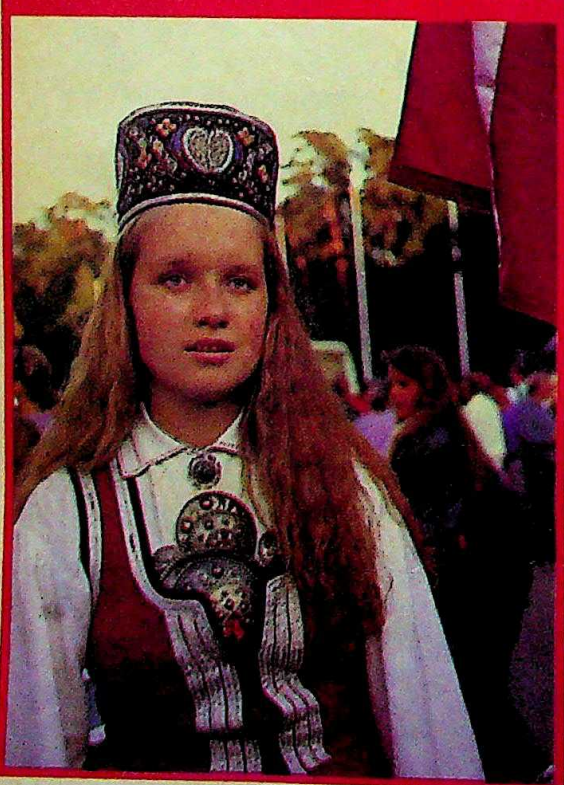

कहां है?" इतना कहते-कहते वे परेशान हो जाते हैं.

मैं चुपके से वहां से खिसक जाता हूं और किसी दुभाषिए की तलाश में एक फोटोग्राफर से टकरा जाता हूं जो अपने महंगे पश्चिमी लिबास में विदेशी लगता है. लेकिन वह विदेशी नहीं है पर अंग्रेजी बोल लेता है. ये 65 वर्षीय पीटर लेंकी हैं जो 1940 में उक्रेन से भागकर ऑस्ट्रेलिया चले गए थे.

वे कहते हैं, "आप जानते हो, लेनिन ने कहा था—अगर हम उक्रेन को जीत लेते हैं तो क्रांति सफल हो जाएगी. इसलिए उन्होंने सबसे पहले कृत्रिम अकाल पैदा करके हमारे 70 लाख लोगों को मार डाला. द्वितीय विश्व युद्ध में हमारे एक करोड़ लोग मारे गए. 1.5 करोड़ लोग निर्वासित कर दिए गए या अपनी जमीन से उखाड़ दिए गए. उन्होंने हमारी भाषा पर रोक लगा दी. इसे रूस की एक बोली करार दिया. उन्होंने हमारे नामों का रूसीकरण कर दिया. अब अगर हम रूसियों की हत्या नहीं कर रहे हैं तो इसकी वजह यही है कि हम शांतिप्रिय लोग हैं." लेकिन शांति के इस उद्घोष के बावजूद उक्रेनी अब अपनी फौज खड़ी कर रहे हैं.

"बदलाव की यह प्रक्रिया साम्यवाद से लोकतंत्र की ओर और सैन्यवाद से शांति की ओर है"
जनरल जोनस गेचस, 45 वर्ष,
नई लियुआनियाई सेना के प्रमुख

कीव में इन दिनों हर रोज दर्जनों विजय जुलूस निकलते हैं. अनेक लोग गुनगुनाते, झंडा लहराते और आजादी का नारा बुलंद करते संसद के सामने रैलियां करते हैं. लेनिन की मूर्ति के चेहरे पर नाजियों का स्वस्तिक निशान पोत दिया गया है. भीड़ में चश्मा लगाए, चिपके गाल वाले और दोहरे हो रहे बूढ़े पारंपरिक नीले रंग की पोशाक, पदक वगैरह से सजे दिखते हैं. यह पोशाक उक्रेनी 1918 तक पहना करते थे जब आखिरी बार राष्ट्रीय फौज के रूप में उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध लड़ा था. कोस्तीव रोमन 86 साल के हैं लेकिन पुरानी पोशाक को चमकाकर उक्रेनी झंडा थामे घंटों तेज धूप में खड़े दिखते हैं. वे अब किशोरों की तरह चहकते हुए कहते हैं, "अचानक मैं जवान हो गया हूं. मेरा मन दौड़ लगाने का करता है." लेकिन खुशी के पीछे गहरे कहीं भारी नाराजगी छिपी हुई है. "कम्युनिस्टों से छुटकारा पाओ, उन्हें खत्म करो या न करो लेकिन उन्हें उखाड़ फेंको. उन्होंने हमें दिया ही क्या है?"

मैं साम्यवाद का बचाव नहीं करना चाहता मगर मैं कह सकता हूं कि अगर एक कम्युनिस्ट मिखाइल गोर्बाचेव ने ही ऐसा खुलापन न लाया होता तो आज यह सब संभव न हो पाता. नीले-पीले रंग के झंडे लहराने वाले लोग यातना शिविरों में होते. आखिर मेरी बात से सहमत उक्रेनी मुझे मिल जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर रोज जब ४ करोड़ घरों में टीवी कार्यक्रमों का आनंद उठाया जाता है, उस समय ई सी आई एल का तंत्रज्ञान काम कर रहा होता है ।

टीवी संकेतों को पृथ्वी से उपग्रह तक और वहा से वापस पृथ्वी पर भेजने में मदद करके ।

यही तंत्रज्ञान आपके घर में भी पहुँचता है । सबसे आधुनिक किस्म के रंगीन टीवी सेटों के रूप में ।

ईसी टीवी लेजेंड ।

एकमात्र टीवी जो व्यक्तिगत कंप्यूटरों के लिए रंगीन मॉनीटर की तरह इस्तेमाल किए जाने का विकल्प प्रस्तुत करता है ।

ईसी टीवी जो मल्टीसिस्टम विकल्प प्रस्तुत करता है । ताकी आप पैल/सिकैम दोनो तरह के कार्यक्रम देख सकें ।

ईसी टीवी जो रिकॉर्डिंग की सुविधावाले वीसीपी पर आपको कार्यक्रम रिकार्ड करने दें ।

ईसी टीवी जिन्हें 'निद्रा' या कार्यक्रम की स्थिती प्रदर्शित करने के लिए 'प्रोग्राम' किया जा सकता है ।

ईसी टीवी जिनके मॉड्युलर डिजाइन के कारण सर्विसिंग का काम जल्दी व आसानी से हो ।

ईसी टीवी जो ९० वोल्ट जितने कम और २९० वोल्ट जितने अधिक वोल्टेज पर भी काम करें ।

अपने प्रतिस्पर्धियों से हम अंतरिक्ष में लगभग 35,887 कि.मि. आगे हैं ।

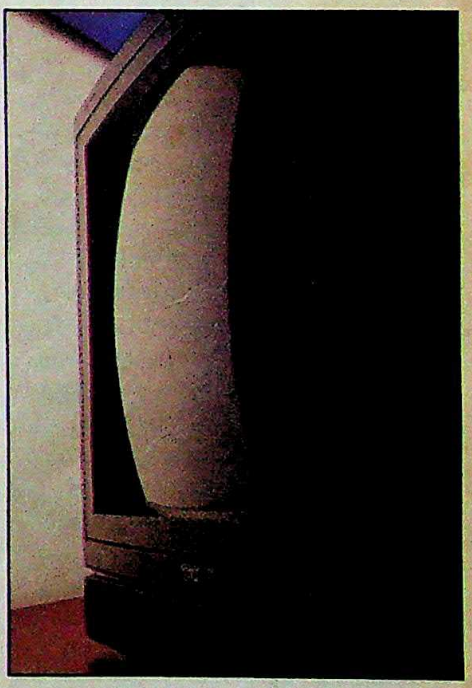

ई सी आई एल का तंत्रज्ञान टीवी संकेतों को पृथ्वीसे उपग्रह तथा वापस भेजने में मदद करता है ताकी भारत में ४ करोड़ से भी अधिक घरों में लोग टीवी कार्यक्रमों का आनंद उठा सकें ।

उन्नत गुणो से सज्जित है । जैसे कि टीवी मे लगे, फुल स्क्वेयर ट्यूब; ऑन-स्क्रीन डिस्पले;फुल आटो सर्च; फुल फंक्शन रिमोट...

ईसी टीवी लेजेंड अपने नजदीक के ईसी टीवी शोरूम या ईसी टीवी विक्रेता के यहा पधार कर टीवी का प्रदर्शन देख लिजिए ।

आपको स्पष्ट मालूम हो जाएगा कि प्रतिस्पर्धियों से ३५,८८७ कि.मी. आगे होने का अर्थ क्या होता है ।

ECtv

ECTV लेजेंड

भारत में टीवी देखने में सहायक तकनीक का अनुभव लीजिये ।

ईसी टीवी रंगीन तथा ब्लैक एंड व्हाइट मॉडलों की विस्तृत श्रेनी में उपलब्ध है । वाजिब कीमतों पर ।

इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया लि.। (भारत सरकार-परमाणु ऊर्जा विभाग का एक उद्यम) हैदराबाद 500 762.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इवान लोजोवी 30 साल के सौम्य तथा समझदार युवक हैं और ठेठ अमेरिकी लहजे में अंग्रेजी बोलते हैं. वे कई साल पहले वाशिंगटन में जा बसे थे और अब उक्रेनी स्वतंत्रता आंदोलन 'रुख' के प्रवक्ता के बतौर स्वदेश लौट आए हैं. 'रुख' का एक मामूली दफ्तर बूलेवर्ड शेवचेंको चौराहे पर है. लोजोवी कहते हैं, "हां, यह सब गोर्बाचेव की वजह से ही हुआ. लेकिन जरूरी नहीं कि वे यह सब ही चाहते रहे हों. उन्होंने ऐसी ताकतों को हवा दे दी जिनके बारे में उन्हें ठीक-ठीक पता नहीं था. देखिए कम्युनिस्ट आज जनता से दूर हो गए हैं." वे यह भी कहते हैं कि 1 दिसंबर को सचाई सामने आ जाएगी जब राष्ट्रपति चुनाव के साथ ही संघ से अलग होने के सवाल पर भी जनमत संग्रह होगा. लेकिन येल्तसिन के रूस से संबंध रखने के बारे में उनका विचार है, "येल्तसिन ने सीमा संबंधी समझौतों आदि की नितांत धूर्ततापूर्ण और विध्वंसक बात करके इस रिश्ते को चोट पहुंचाई है. हम जानते हैं कि वे ऐसा क्यों कह रहे हैं. रूसियों के मन में यह धारणा जमी है कि उक्रेन तो हमारा पिछवाड़ा ही है. येल्तसिन के राष्ट्रवाद में रूसी साम्राज्यवाद का विष भरा हुआ है."

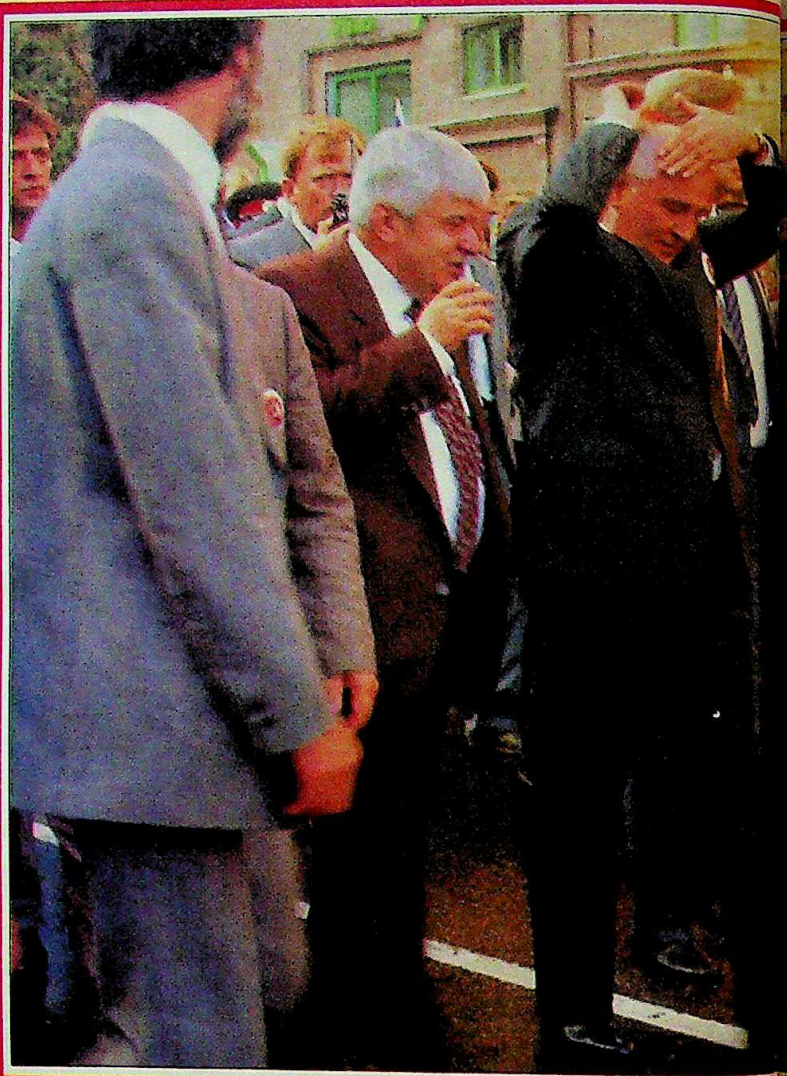

रेड स्क्वायर पर मॉस्को दिवस के समारोहों को देखने के लिए ... वे थके-टहलते हुए आए और मैंने वहां बिलकुल स्पष्ट रूप से देखा कि... निरुत्साहि

परंतु लिथुआनियाइयों को ऐसा कोई डर नहीं सता रहा है. अब वे आठ यूरोपीय देशों द्वारा उनकी आजादी को मान्यता देने पर मॉस्को से 950 किमी उत्तर-पश्चिम में स्थित विलनियस के सेंट्रल पार्क में जश्न मना रहे हैं. भीड़ पर नजर डालने से भारी-भरकम पोशाक में नई लिथुआनियाई सेना एकदम अलग दिखती है. सेना की टुकड़ी ने अपने युवा प्रमुख जनरल जोनास गेचस की देखादेखी पार्क में गुलाब की पंखुड़ियां तोड़कर हाथों में ले ली हैं. गेचस कहते हैं, "हम यहां अपने लोगों से लड़ने नहीं आए हैं."

मैं लिथुआनियाई संसद के बाहर गश्त करते एक 6 फुट 3 इंच लंबे जवान कावलियानोस को पकड़ता हूं. वैसे, लिथुआनियाई संसद आजकल लोकप्रिय पिकनिक स्थल बनी हुई है. वहां पिछली सर्दियों में रूसी सेना के साथ झड़प में मारे गए लोगों के स्मारक, घेराबंदी के लिए बाड़ों और एक पेड़ का तना है जिस पर सैकड़ों लोगों ने कम्युनिस्ट पार्टी के बिल्ले, पहचान पत्र, पर्चे और लेनिन पदक टांग दिए हैं. कावलियानोस रेड आर्मी की हवाई सुरक्षा रेजिमेंट के साथ मध्य रूस में तीन अपमानजनक साल बिता चुका है. "रूसी लोग हम बाल्तिकवासियों से घृणा करते हैं. वे हमें जर्मनों का सहयोगी और फासिस्ट कहते हैं."

लेकिन सोवियत सेना के विलनियस गैरिसन में अब लड़ने का हौसला नहीं बचा है. विलनियस का उपनगरीय इलाका सोवियत सेना सिटी ही शायद एकमात्र जगह है जहां मैं लेनिन की तस्वीर और लाल झंडा देख पाया. और सीए (सोवियत आर्मी, रूसी 'एस' का उच्चारण 'सी' होता है) का बिल्ला लगाए सोविय सैनिक भी सिर्फ वहीं दिखे. पूरे शहर में दीवा पर सीए=एसएस लिखा हुआ है, जिस मतलब यह कि सोवियत सेना हिटलर के की निजी फौज जैसी है. सोवियत सैनिक इस काफी चिढ़ते हैं. एक कप्तान आइगर याकोव कहते हैं, "आप जानते हैं, यहां के लोग हम बारे में क्या सोचते हैं? लोग यह क्यों समझते कि यहां हम उनसे लड़ने के लिए हैं? मैं तो मॉस्को ही जाना पसंद करूंगा."

> **"रूसी सैनिक हम बाल्तिकवासियों से घृणा करते हैं. वे हमें फासिस्ट व जर्मनों का सहयोगी कहकर पुकारते हैं. अब लड़ाई होने दो. मैं उनका सफाया कर दूंगा"**
>
> —लुइतॉतस कावलियानोस, लिथुआनियाई सैनिक

उस दिन मेरे सहयोगी और दुभाषिया थे वर्षीय केतुर्का वितॉतस जो एक पर्सनल कंप्यू बनाने वाली फैक्टरी में प्रबंधक हैं. वे एक जैसी इमारत की तरफ इशारा करते हैं. क यह चर्च था लेकिन कम्युनिस्ट प्रशासन ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

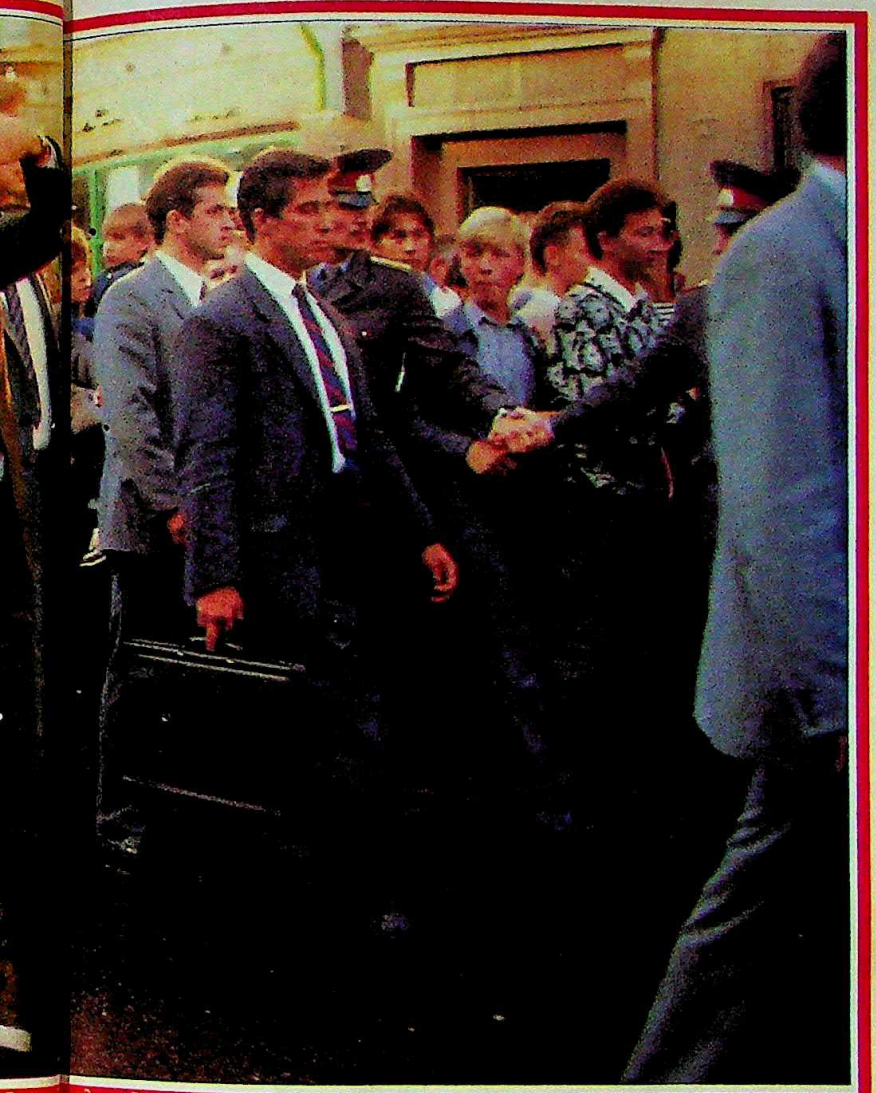

...लिए ...वे थके-मादे नेता की प्रतिच्छाया मात्र लग रहे थे जो उत्सुक लेकिन
...कि.. निरुत्साहित भीड़ की तरफ हाथ हिलाने की कोशिश कर रहे हैं

है, "यह शायद नहीं होगा. हमें सभी रूसियों से तो घृणा है नहीं, न पुश्किन से, न ही संस्कृति से."

संस्कृति की बात आने पर सोचना पड़ता है कि ऐसी व्यवस्था में जहां सब कुछ बिखराव की ओर अग्रसर हो वहां संस्कृति का अर्थ क्या हो सकता है. मौजूदा संदर्भ में संस्कृति का अर्थ है पुश्किन और गोर्की को तो बख्शा जाएगा जबकि मार्क्स और लेनिन इतिहास के कूड़ेदान में डाल दिए जाएंगे. इसका एक यह अर्थ, कम-से-कम उन लोगों के लिए जो संघ की किसी तरह की एकता में विश्वास रखते हैं, यह है कि साझा सांस्कृतिक बंधन बिखरते गणराज्यों को एक तार से जोड़ रखने का काम करेंगे. शायद इसीलिए इस वर्ष का मॉस्को दिवस विशेष महत्वपूर्ण हो गया है जिसे येल्तसिन समर्थक और यहां के मेयर गेवरिल पोपॉव से बढ़कर कौन जानता है.

मॉस्को शहर हर गणराज्य, ढेर सारे जातीय गुटों और स्वायत्त क्षेत्रों के विविध रंगों में रंगा है. रेड स्क्वायर पर तो विभिन्न इलाकों के नर्तक समूह आदि का मेला ही लगा रहता है. ये लोग नाचते-गाते पूरे माहौल को गुंजाए रखते हैं. यहां गोर्बाचेव भी नजर आते हैं. समारोहों की धूमधाम शायद उन्हें यहां खींच लाई है. लेकिन मुझे वे एक थके-मांदे नेता की प्रतिच्छाया ही नजर आ रहे हैं, जो उत्सुक लेकिन उत्साहहीन भीड़ की तरफ हाथ हिलाने की हल्की-सी कोशिश कर रहे हैं. उनसे कुछ ही कदम दूर मेरा सामना गुस्से से भरे एक बूढ़े व्यक्ति से होता है. ये हैं 77 वर्षीय इवान याकोव्लेव गारोशेंको, जो 'ग्रेट पैट्रियाटिक वार' के योद्धा रह चुके हैं. उनके सीने पर लटके तमगे उनकी वीरता के गवाह हैं. वे कहते हैं, "मुझे इनसे नफरत है. गोर्बाचेव से, येल्तसिन से और उनके समर्थकों से. मेरी पल्टन में 38 सिपाही थे, उनमें से 31 फासिस्टों के खिलाफ लड़ते हुए मारे गए. क्या इसीलिए उन्होंने अपनी जान गंवाई थी?" लेकिन इन बड़े मियां जैसा कट्टर कम्युनिस्ट समर्थक पंद्रह दिनों में दो ही दिखे. दूसरा था एक टैक्सी ड्राइवर. हैरत मुझे इस बात की है कि इस बदलाव को सबसे पहले ट्रैक्सी ड्राइवरों ने ही अपनाया था.

शामयेव की टैक्सी रुकवाता हूं तो वह कहता है, "आइए मैं आपसे डॉलर नहीं मांगूंगा." टैक्सी में बैठकर मैं उसे मार्लबरो सिगरेट का पैकेट पेश करता हूं तो उसका जवाब होता है, "नहीं मैं आपको इंदीस्की (भारत की) सिगरेट पिलाऊंगा" और चार मीनार का पैकट मेरे आगे कर देता है. तीन किमी की हमारी यात्रा काफी लंबी साबित होती है क्योंकि वोदका के नशे में वह राजनयिक क्षेत्र द्रोब्रिनिस्काया का रास्ता भूल जाता है. इस समय का सदुपयोग

की तस्वीर अस्पताल बना दिया था. अब इसे फिर से चर्च में तब्दील किया जा रहा है. इमारतों का स्वरूप तो जब चाहे बदला जा सकता है. लेकिन जनमानस पर लगे घाव कभी नहीं भर पाते. उनकी टीस गहरी होती है.

अब सूरज डूबने को है. और मेरा दुभाषिया मुझे शहर के पर्यटक स्थलों पर ले जाता है. शहर के बीचोबीच एक पार्क है और पार्क में चार्नेओव्स्की की प्रतिमा लगी है. यह प्रसिद्ध रूसी जनरल 1945 में जर्मनों के साथ लड़ते-लड़ते मारा गया था. वितॉतस बताता है, "अब इसकी जगह दूसरा बुत लगाया जाएगा. शायद हमारे किसी ड्यूक का." बाद में 15वीं सदी के किले की चढ़ाई करते-करते मुझे ऐसी प्रतिमा नजर आती है जिस पर उग्र भीड़ ने अपना गुस्सा नहीं उतारा है. यह बिलकुल सही-सलामत है. यह प्रतिमा पुश्किन की है. मैं पूछता हूं, "इसे भी आप हटा देंगे?" तो उसका जवाब

"स्वतंत्रता का एहसास क्या होता है? यह साइबेरिया में गंवाए बचपन की वापसी की तरह है. मुझे लगता है कि मैं अपने स्कूली दोस्तों के साथ दौड़ लगाऊं"

जोनास सेल्रोविसीयास, यातना शिविर में 10 वर्ष रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मेरा ज्ञानवर्धन करने में करता है, "नौकरीपेशा लोगों ने अभी तक अपना फैसला नहीं सुनाया था. गोर्बी और येल्तसिन एकदम फालतू लोग हैं. बगावत करने वाले नेताओं ने अपने समर्थकों को बाहर आने से रोका नहीं होता तो हम इन हिप्पियों और बेहूदा लोगों को वहीं दफन कर देते."

शामयेव जैसे कट्टरपंथी भी आर्थिक मोर्चे पर साम्यवाद की असफलता पर कोई सफाई नहीं दे पाते. मुझे कीव के लिए एक टिकट चाहिए था. पेत्रोव्का रेलवे स्टेशन काउंटर पर एक लड़की सलाह देती है कि मैं बुखारेस्ट के लिए एक टिकट खरीदूं. लेकिन मैं पूछता हूं कि क्यों ढाई गुना ज्यादा पैसे जाया करूं? इस पर उस लड़की ने मुझे बताया कि वास्तव में कीव के लिए 200 रूबल भाड़ा है और बुखारेस्ट के लिए मात्र एक सौ. मेरी मनोदशा समझकर वह कहती है, "यही तो हमारी अर्थव्यवस्था का विरोधाभास है." और इन्हीं बेतुकी विसंगतियों पर एक राजनयिक ने भी प्रकाश डाला. रूसियों तथा यहां रहने वाले विदेशियों के लिए व्लादिवोस्तोक तक की 10 घंटे की हवाई यात्रा का टिकट 191 रूबल का है. मौजूदा बैंक दर के मुताबिक यह 7 डॉलर होता है जबकि मॉस्को के दो हवाई अड्डों शेरमेत्योवो से देमिदेवोव का टैक्सी भाड़ा 10 डॉलर के करीब है.

ऐसी बेतुकी विसंगतियां भी पड़ी हैं. लोगों को हर चीज, खासकर साबुन के पाउडर, के लिए हर रोज रेड स्क्वायर के सरकारी डिपार्टमेंट स्टोर 'गम' में लंबी कतार में खड़े देखा जा सकता है. लक्मे सौंदर्य प्रसाधन के शोरूम में भारी भीड़ दिखती है. यहां प्रवेश केवल आमंत्रण पत्रों पर ही मिलता है. रूस में आज दो ही चीजों की पूछ है—विशेषाधिकार की और डॉलर की.

डॉलरों के लिए आतुरों का कमाल देखिए कि आधी रात में दो अजनबी छाया मेरे होटल के कमरे को खटखटाती हैं. मैंने डरते हुए पूछा, "क्या चाहिए?"

"हम वेश्या हैं?"

"लेकिन मुझे तो आप नन (महिला पादरी) दिखाई दे रही हैं." मैंने चुटकी ली.

"आपके पास डॉलर है?"

"नहीं, मेहरबानी करके आप बाहर चली जाइए." फ्लोर मैनेजर से शिकायत करने चल पड़ता हूं लेकिन वे पीछे पड़ गईं, "आप चाहें तो हमारा इस्तेमाल करके हमें भुगतान कर सकते हैं." मैं जानने की कोशिश करता हूं कि इन लोगों को कमरे की चाबी किसने दी. मैट्रन गुस्से से जवाब देती हैं, "ये लोग डॉलर कमाती हैं. उन्हें सब कुछ हासिल हो जाता है. तुम जानना चाहते हो कि चाबी किसने दी तो जाकर कार्ल मार्क्स से पूछो." मैं चुपचाप अपने कमरे में लौट आता हूं. दरवाजे के साथ एक कुर्सी को सटाकर रखता हूं और उसके ऊपर एक स्टूल और सोने के लिए बिस्तर में चला जाता हूं.

"जानना चाहते हो लिथुआनियाई हमसे कितनी नफरत करते हैं? हमारे साथ बस में यात्रा कर लो तो पता चल जाएगा"
इगॉर याकोव्लेव, 38 वर्ष

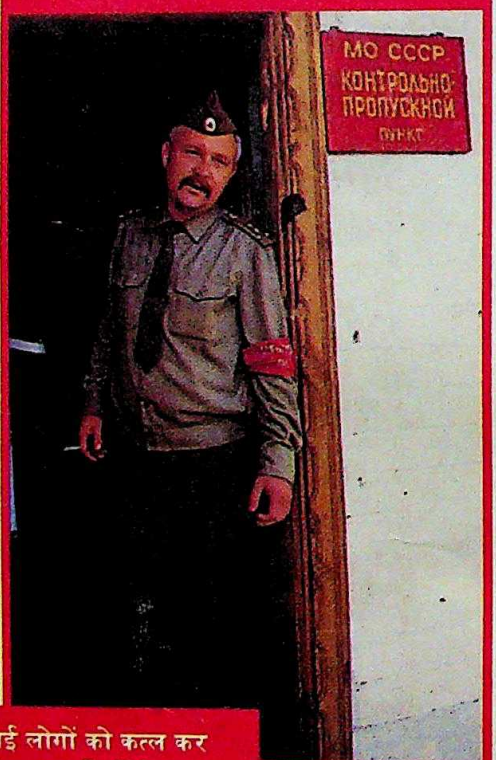

"साठ साल में हमारे एक-तिहाई लोगों को कत्ल कर डाला गया. तब भी पूछते हो कि हम रूसियों के साथ रहना चाहेंगे?"
पीटर लेकी, 65 वर्ष

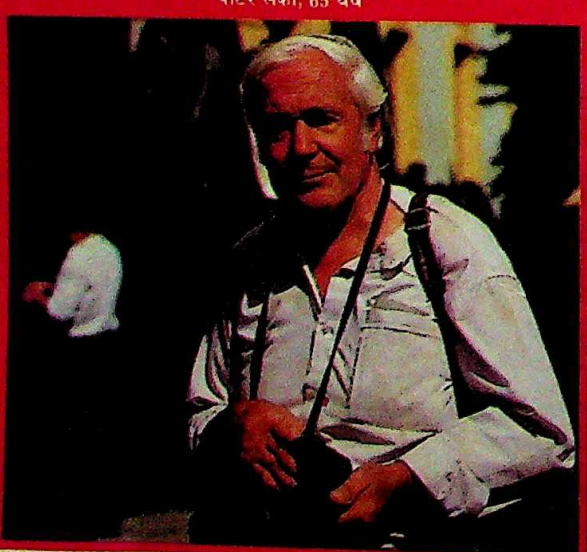

"हमें विभिन्न जातीय समूहों के नर्तकों को जुटाना है. जिसे साम्यवाद ने बांट दिया, शायद संस्कृति उसे जोड़ सके"
लुबा मिनेस्त्रावा, 30 वर्ष

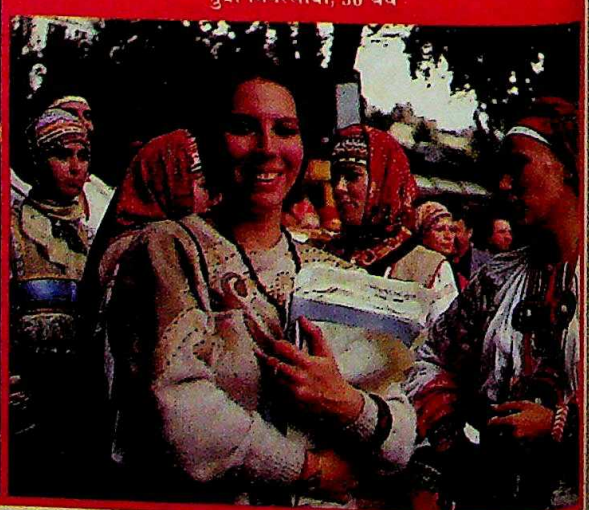

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KYOCERA

हर हसीन यादगार के लिए

38mm वाइड | 55mm स्टैंडर्ड | 80mm टैलिफोटो

38mm W ⟵ 80mm T

YASHICA ZOOMTEC ज़ूमटैक

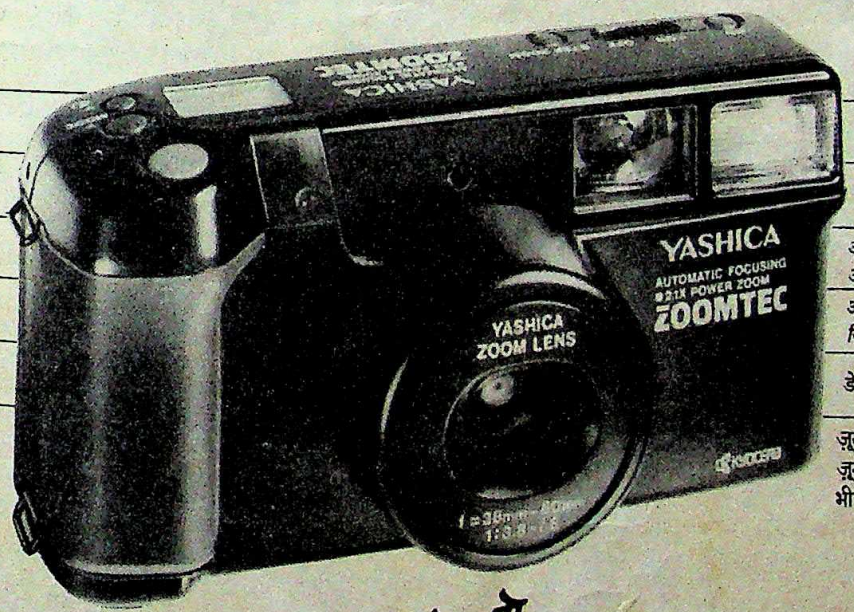

बटन दबाते ही...
ज़ूम-टैलि या ज़ूम-वाइड।

बटन दबाते ही...
३ स्टैप ज़ूम अगर आप चाहें।

ऑटो फ़ोकस, ऑटो और मैन्युअल फ्लैश।
ऑटो लोड, वाइन्ड और रीवाइन्ड।

और भी कई आधुनिक सुविधाए।
जिसके लिये याशिका दुनियाभरमे मशहूर है।

डेटा बैक वाला मॉडल भी उपलब्ध।

ज़ूमटैक 80 के अलावा, ज़ूमटैक 60 और ज़ूमटैक 90 (इन्फ्रा रेड वायरलेस रिमोट के साथ) भी उपलब्ध।

कैमरा हो-तो

याशिका

KYOCERA CORPORATION. Optical Equipment Division, 27-8, 6-chome Jingumae, Shibuya-ku, Tokyo 150, Japan
"YASHICA" is a trademark of KYOCERA CORPORATION.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Y/51TH

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-40

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकल अपने ढंग से | लड़ना होगा | खतरा नहीं है | मद्रास में हत्या | मामला निबटा दिया

बिफर गए | बड़ी बहन

चोट खा गए थे | अशेष साड़ी | दोनों पदों पर साथ | एक कब्रगाह | गुंटूर जिले में | कावेरी पर दबाव | खेल में प्रमुख

फूट को कोशिश | पुलिस ने छुड़ा लिया | एक सर्वकालीन | महिला व्यापारी

छाती पर मूंग | जीवन पहले जैसा नहीं | लाल, नीले के बाद | जान-बूझ-कर पिलाई

जादू चलाया | प्रशंसक भी | तो कभी बुरा

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

**वर्ग पहेली-40, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001**

**प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि
5 अक्तूबर 1991**

**उत्तर के लिए देखें:
16-31 अक्तूबर 1991 का अंक**

- यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 31 अगस्त 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

नाटक बताया | 70 के सेट | बदले से नहीं

जमाना लौटा लाऊं | स्वीडन के | गुप्त नाम

इस योजना से बाहर | वादों की बलि नहीं

जुमारू नेता | क्यों न आते

घाटे में रही | बूढ़े को शौक चर्राया | जिम्न बोतल में | समय पर पेस्ट्री नहीं | नाना के प्रचार में

कैसी दोहरी नीति | सत्ता संभाली है | आसन खतरे में | हथ-कंडे सीखता रहा | खोज भारत तक नहीं

फूंक कर कदम | नामा-वली के चित्र | राज्य पार्टी की

तेजतर्रार नेता | टूट ही नहीं

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-38 का हल

पुरस्कार विजेता

कृष्णा हर्ष
द्वारा-शिवशंकर हर्ष
म्युनिसिपल कॉलोनी
कमरा नं. 6, भटवाड़ी
घाटकोपर
बंबई-84 ए.एस.

सरूप चंद जीनगर
मोची मोहल्ला
पो. फलौदी
जिला जोधपुर (राज.)
342301

श्रवण कुमार जैन
दर्पण ज्वैलर्स
सर्राफा बाजार
सहारनपुर (उ.प्र)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अगर आपको ये वाकिया बढ़ाया-चढ़ाया सा लगे..

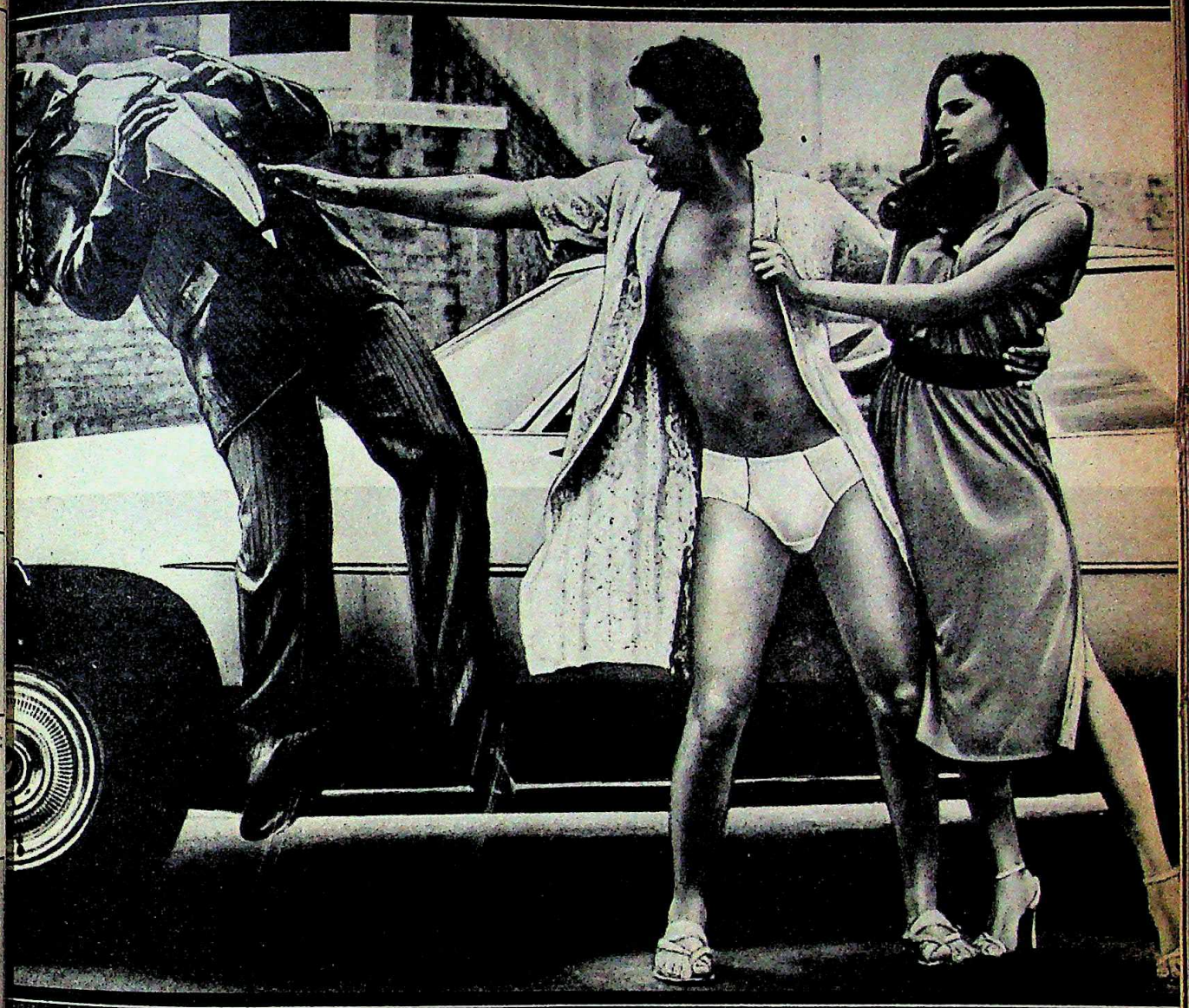

तो शायद आपने अब तक 'फ्रेंची' पहना ही नहीं!

वी आइ पी फ्रेंची. छोटा-सा बढ़िया जांघिया... चुस्त-दुरुस्त और मर्दाना ताकत से सराबोर. सारी दुनिया में इसकी मर्दानगी ने तहलका मचा रखा है और हमारे शहरों में भी इसी की धाक है, बोलबाला है! सचमुच एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय स्टाइल, एक ऐसा अंदाज़ जो वी आइ पी लाये हैं ख़ास आपके लिए!

VIP

फ्रेंची

जांबाज़ मर्दों के मनपसंद

Avenues HH 10.24 90

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

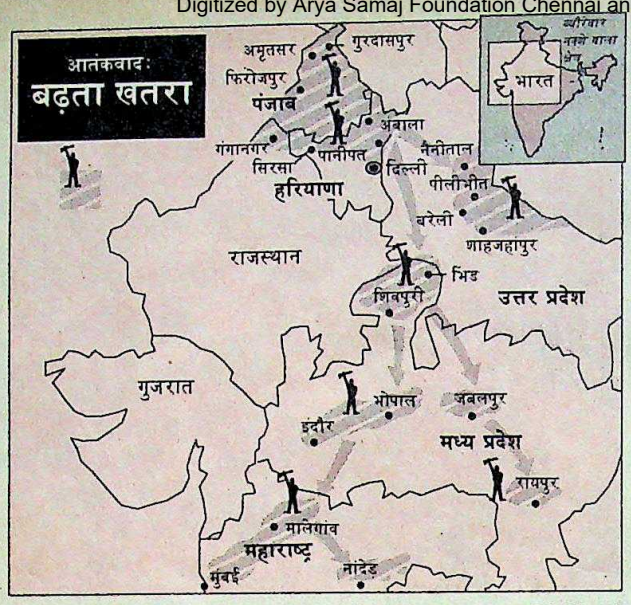

चार्ट: बी.के. शर्मा

आतंकवाद

फैलता नासूर

पंजाब के आतंकवादी सीमाएं लांघकर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और महाराष्ट्र में खतरनाक रूप से सक्रिय

—**विजय क्रान्ति** पीलीभीत से **दिलीप अवस्थी,** भोपाल से **नरेंद्र कुमार सिंह,** चंडीगढ़ से **कंवर संधू,** और मुंबई से **गॉडफ्रे परेरा** की रिपोर्टों के साथ

अभी कुछ ही साल पहले तक पंजाब में जारी आतंकवादी हिंसा को पंजाब और पंजाबियों तक सीमित समस्या माना जाता रहा है लेकिन पिछले तीन-चार साल में हुई घटनाओं ने सारा नक्शा ही बदल डाला है. पूरा देश अचानक यह देखकर सकते में आ गया है कि एक अंग को दुखाने वाले नासूर ने फटकर अपना जहर उन अंगों तक भी पहुंचा दिया है जिन्हें इससे पहले पूरी तरह सुरक्षित माना जा रहा था.

पिछले चार साल के दौरान पंजाब के बाहर सिख आतंकवादियों से जुड़ी 228 घटनाएं घटीं जिनमें 1,487 लोग हताहत हुए. इनमें मरने वालों की संख्या 300 से ऊपर रही (देखें चार्ट). इसके अलावा आतंकवादियों ने 107 स्थानों पर बैंकों और लोगों से लगभग एक करोड़ रु. लूटे. और उस पैसे का तो हिसाब ही नहीं जो आतंकवादियों ने धमकियों और बंधकों के माध्यम से बनाया.

उत्तर प्रदेश और राजस्थान में आतंकवादियों के गढ़ इतने मजबूत हो चुके हैं कि रक्षा बलों के सामने आतंकवादियों को पकड़ने से ज्यादा जरूरी अपने हथियारबंद जवानों की जान बचाना हो गया है.

उत्तर प्रदेश हो या फिर मध्य प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र, वहां की सुरक्षा मशीनरी को चलाने वाले लोग इस अचानक टूट पड़े पहाड़ को थामने की जगह सदमे से उबरने में ही लगे हुए हैं. आतंकवाद के मामले में कहीं अधिक अनुभव प्राप्त कर चुकी दिल्ली के पुलिस आयुक्त अरुण भगत कहते हैं, "आतंकवाद तो ऐसा क्षेत्र है जिसमें सबसे ज्यादा प्रभावी हथियार अनुभव ही होता है. सच तो यह है कि इस मामले में कितना ही जान लेने के बाद भी सीखने को बहुत कुछ बचा रहता है."

इन दिनों इन राज्यों के सुरक्षा संगठन सीखने की इसी आरंभिक प्रक्रिया से गुजर रहे हैं. लगभग सभी राज्यों के पुलिस विभागों में नए भर्ती अभियान चलाए जा रहे हैं और पुलिसवालों को आतंकवाद से निबटने, नए किस्म के हथियार चलाने, बमों को ढूंढने और नकारा करने तथा नए संचार उपकरणों का इस्तेमाल करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है.

उदाहरण के लिए 1984 के बाद दिल्ली में पुलिसकर्मियों की संख्या 30 हजा बढ़कर 53 हजार हो चुकी है. गश्ती प की संख्या भी 23 से बढ़कर 300 से ऊ चुकी है. हर क्षण केंद्रीय नियंत्रण क साथ संपर्क बनाए रखने वाली इन गाड़ियों में जिस स्तर के वायरलेस से हुए हैं वैसे कुछ साल पहले तक कमिश्न उस स्तर के दूसरे अधिकारियों उपलब्ध नहीं थे. इसी तरह, इन गाड़ि बैठकर गश्त करने वाले और 100 से चेक पोस्टों पर तैनात पुलिसकर्मियों भी एके-47, एसएलआर और रहती हैं जो आतंकवादियों के हथियारों के मुकाबले कम प्रभावी नहीं

इसके अलावा दिल्ली पुलिस में निरोधक दस्ते, जासूसी कुत्तों के 21 द दर्जन एंबुलेंस, कई आतंक विरोधी दस्ते और फिंगर प्रिंट ब्यूरो भी शामि चुके हैं. लेकिन इन सुविधाओं के बावजूद पुलिस विभाग में होने वा भर्तियों के मुकाबले ये सुविधाएं पिछले महीने केंद्रीय गृह राज्यमंत्री जैकब ने लोकसभा में बताया कि पुलिसकर्मियों और अधिकारियों के अतिरिक्त आधुनिक हथियारों की की जाएगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण सेठ

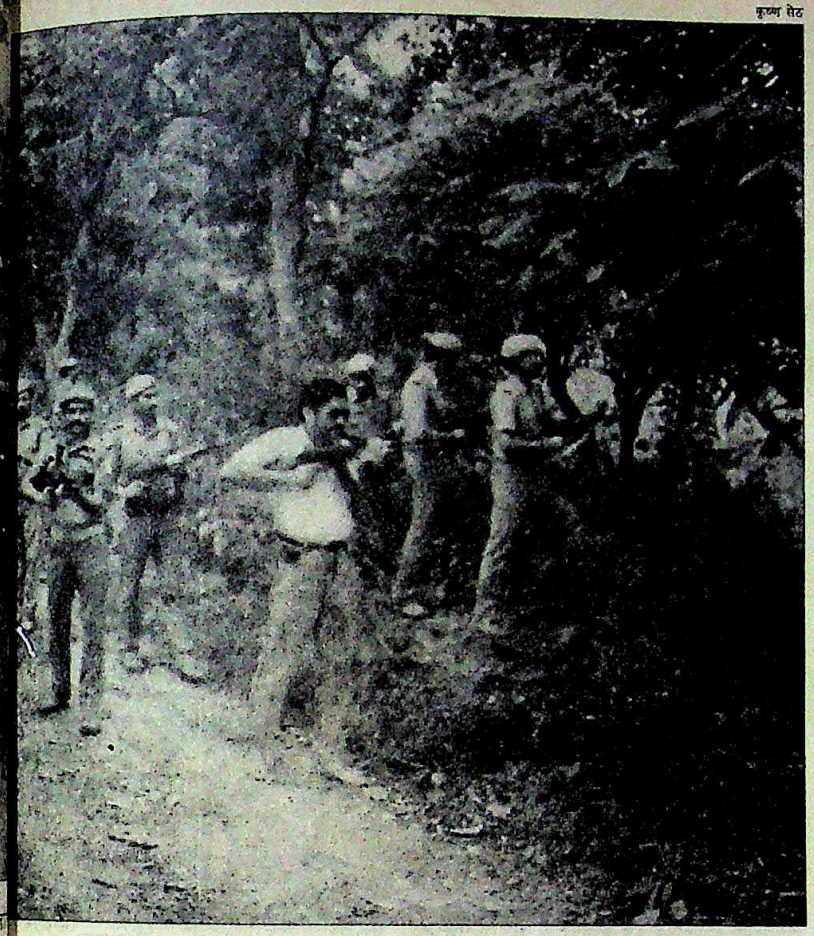

आतंकवादियों की तलाशः दुरुह कार्य

आतंकवादी रात के समय तराई में ठीक वैसे ही राज चलाते हैं जिस तरह पंजाब के अमृतसर, फिरोजपुर और गुरदासपुर जिलों में पिछले कुछ साल से चलाते रहे हैं

दिल्ली की ही तर्ज पर उत्तर प्रदेश में भी आतंकवाद विरोधी पुलिस दस्तों का गठन किया जा रहा है और दूसरे कई राज्यों में इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं. राजस्थान में पाकिस्तान के साथ लगने वाली 1,040 किमी लंबी सीमा पर हथियारों की तस्करी रोकने और आतंकवादियों पर नजर रखने के लिए सीमा सुरक्षा बल के लिए ऊंचे निगरानी टावर बनाने के अलावा उसे शक्तिशाली दूरबीनों और रात के अंधेरे में देख सकने वाले विशेष उपकरणों से भी सज्जित किया जा रहा है.

महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में भी पंजाब से आकर शरण लेने वाले आतंकवादियों और उन्हें शरण देने वालों पर नजर रखने के लिए खुफिया विभागों को और सक्रिय किया जा रहा है. केंद्रीय गृह मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "बदले हालात में आज हमें यह मानकर चलना होगा कि सिख आतंकवाद पंजाब की समस्या नहीं है. अब यह हर राज्य की स्थानीय समस्या बन चुकी है."

पंजाब की दहलीज लांघकर आतंकवाद के दूर-दूर तक जा पहुंचने के कई स्वाभाविक कारण हैं. सबसे पहला कारण तो पंजाब में सेना और दूसरे सुरक्षा बलों का बढ़ता हुआ दबाव दिखता है. तराई, श्रीगंगानगर, नांदेड़ और ऐसे सभी इलाकों में, जहां पिछले दो-तीन साल में आतंकवादी गतिविधियों ने जोर पकड़ा है, सिख आबादी अच्छी-खासी है. वहां रहने वाले अपने रिश्तेदारों और परिचितों के यहां आश्रय पाना भगोड़े आतंकवादियों के लिए बहुत आसान था. 1984 में सिख विरोधी दंगों से उपजी असुरक्षा और जातीय बोध ने भी आतंकवादियों के लिए इन इलाकों में अनुकूल वातावरण बनाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है.

लेकिन सिख मानस की अंतरंग समझ रखने वाले कई लोग आतंकवाद के इस नए फैलाव को पंजाब में चलने वाली राजनैतिक प्रक्रिया की अवश्यंभावी परिणति मानते हैं. जाने-माने पंजाबी लेखक कर्तार सिंह दुग्गल का कहना है, "ज्यादा जिम्मेदार केंद्र सरकार की बार-बार फैसले टालने की नीति है. इसी वजह से वहां राजनेता महत्वहीन हो गए और उनकी जगह लड़कों ने ले ली." अकाली नेता दर्शन सिंह फेरूमान की भूख हड़ताल में हुई मौत का हवाला देते हुए वे कहते हैं, "उसके बाद पंजाब के किसी भी नेता ने भूख हड़ताल जैसा लोकतांत्रिक रास्ता नहीं अपनाया. लोकतंत्र की इस असफलता की जिम्मेदारी उन लोगों पर है जिन्होंने फेरूमान को मरने दिया."

बहरहाल, इतिहास का विश्लेषण किसी भी नजरिए से किया जाए, आंखों के सामने जो सच है वह बहुत कड़वा है. दिल्ली में आतंकवादी हिंसा का इतिहास यूं तो 1981 में संत निरंकारी मंडल के प्रधान निरंकारी बाबा की हत्या से शुरू होता है लेकिन आतंक और हत्याओं का न थमने वाला दौर 1984 के बाद से शुरू हुआ. आतंकवाद भले ही एक खास नियमितता के साथ कायम है लेकिन उसके कुछ पहलू ऐसे हैं जो यह दिखाते हैं कि दिल्ली में आतंक फैलाने के पीछे आतंकवादियों का सबसे बड़ा लक्ष्य प्रचार पाना और केंद्र सरकार को मनोवैज्ञानिक दबाव में रखना है. भगत कहते हैं, "दिल्ली में एक ऐक्शन करके आतंकवादियों को जितना प्रचार मिलता है उतना कहीं और संभव नहीं है." लेकिन राजधानी में इन कांडों की निरंतरता एक ऐसा तथ्य है जो यह दिखाता है कि

नई पनाहगाहें

- नेपाल से लगी 210 किमी लंबी सीमा पर ज्यादातर गश्त नहीं होती और यहीं से पंजाब के आतंकवादियों को निकल भागने में आसानी होती है.
- गश्त के दौरान एके-47 लेकर चलने पर प्रतिबंध से पुलिस को हथियारों से बुरी तरह लैस आतंकवादियों का मुकाबला करने में मुश्किल आती है.
- आतंकवादी गतिविधियों का केंद्र बने तराई क्षेत्र का करीब 40 फीसदी हिस्सा घने जंगलों से भरा है.
- आतंकवादी 'उद्देश्य' के प्रति हमदर्दी रखने वाले स्थानीय सिख उग्रवादियों को पनाह और पैसा देते आ रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आतंकवादियों की हिट-लिस्ट में दिल्ली का नाम सबसे ऊपर है. राजधानी में पिछले नौ साल में होने वाली लगभग 80 आतंकवादी घटनाओं में 100 से ऊपर लोग मारे जा चुके हैं जिनमें केवल दो आतंकवादी थे.

उधर, हरियाणा भी अपनी भौगोलिक नजदीकी की वजह से पंजाब के आतंकवादियों का स्थायी निशाना बना हुआ है. लेकिन गनीमत है कि किसी आतंकवादी गुट ने दिल्ली की ही तरह हरियाणा को स्थायी ठिकाना नहीं बनाया है. पंजाब के साथ 520 किमी लंबी सीमा के बावजूद ज्यादातर पटियाला से लगने वाले इलाकों में ही हाल में आतंकवादी गतिविधियां देखने में आई हैं. इसके अलावा घग्घर नदी से लगे इलाके में सिख जमींदारों के फार्म हाउसों में आतंकवादियों ने कुछ शरण स्थल भी विकसित किए हैं.

लेकिन जिन दो राज्यों में फैलते आतंकवाद ने इन दिनों केंद्र सरकार और उसकी सुरक्षा एजेंसियों की नींद हराम की हुई है वे उत्तर प्रदेश और राजस्थान हैं. उत्तर प्रदेश का तराई इलाका, जिसमें छह जिले हैं, अपनी लगभग 30 लाख सिख आबादी और आतंकवाद के नए आवेग में मिनी पंजाब का रूप ले चुका है. इस इलाके में पंजाब से गए आतंकवादी पिछले चार साल से बैंक डकैती, हत्या और दूसरी गतिविधियां चला रहे हैं लेकिन इस इलाके की ओर देश का ध्यान पिछले महीने ही गया जब पीलीभीत में पुलिस के हाथों दस कथित सिख आतंकवादियों की मौत ने राष्ट्रीय स्तर पर विवाद खड़ा कर दिया.

इस इलाके में पिछले चार साल के दौरान आतंकवाद से जुड़ी घटनाओं में 163 लोग मारे जा चुके हैं जिनमें से 29 पुलिसकर्मी, 28 आतंकवादी और 106 नागरिक हैं. इस साल अब तक मारे गए 74 लोगों में से 16 पुलिसकर्मी हैं. राज्य सरकार द्वारा 'अशांत क्षेत्र' घोषित किए गए इस 600 वर्ग किलोमीटर इलाके में इन दिनों लगभग 300 आतंकवादी सक्रिय हैं. हालांकि ये आतंकवादी आधा दर्जन गुटों में बंटे हुए हैं लेकिन सरकारी सूत्रों के अनुसार यहां सबसे ज्यादा जोर बलविंदर सिंह बिंदा के नेतृत्व वाले खालिस्तान कमांडो फोर्स (पंजवार गुट) और सतनाम सिंह चिन्ना के नेतृत्व वाले भिंडरांवाले टाइगर्स फोर्स का है. इनमें से अधिकांश गुटों के पास अत्याधुनिक हथियार हैं. नेपाल से लगी 210 किमी की सीमा के उस पार से गोला-बारूद लाना उनके लिए बाएं हाथ का खेल है. इनके मुकाबले राज्य पुलिस के पास जो थोड़ी-सी एके-47 राइफलें हैं उन्हें भी डर के मारे तालाबंद रखने का फैसला किया गया है. एक वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी कहते हैं, "हम नहीं चाहते कि एके-47 के लालच में आतंकवादी हमारे गश्ती दलों पर हमले करें."

उधर, इस तरह के फैसलों से आम पुलिसवालों की हताशा भी देखने लायक है. पीलीभीत के एक घने जंगली इलाके में गश्त लगाते एक इंस्पेक्टर की टिप्पणी थी, "वे (अधिकारी) मुझसे उम्मीद करते हैं कि मैं बिना एके-47 लिए इन झाड़ियों में जाऊं जिनमें 5 फुट से दूर कुछ दिखाई नहीं देता. मैं तो यहीं सड़क पर रहूंगा. अफसर जंगल में जाना हो तो जाएं."

नतीजा यह है कि आतंकवादी समय तराई इलाके में ठीक वैसे ही चलाते हैं जिस तरह पंजाब के अ फिरोजपुर और गुरदासपुर जिलों में कुछ साल से चलाते आ रहे हैं. इलाके सिखों और गुरद्वारा प्रबंधकों की भी नहीं है जो मर्जी से या डर के मा आतंकवादी गुटों को पनाह देते हैं.

ऐसे में स्थानीय सिख आतंकवादियों और पुलिस के दो पा बीच खुद को पिसता पा रहा है. पीलीभ एक खाते-पीते किसान परिवार के 41 मंजीत सिंह बताते हैं जिले में शायद ही कोई किसान होगा परेशानी से बचने सुरक्षा पाने के लिए और आतंकवादियों दो मुट्ठी न गरम की हो."

तराई की ही त राजस्थान का ग जिला है जहां इंदिरा का पानी पहुंचने के पंजाब के लगभग 4 सिख जमींदार बस यह और निकटवर्ती जिला पिछले लगभग साल से पंजाब आतंकवादियों के

पंजाब से बाहर आतंकवाद

	आतंकवादी घटनाएं	हताहत	बैंक और अन्य डकैतियां	लूट
1988	45	120	10	30.92 लाख रु.
1989	20	72	16	20.21 लाख रु.
1990	78	724	29	18.36 लाख रु.
1991 (जुलाई अंत तक)	85	571	52	25.40 लाख रु.

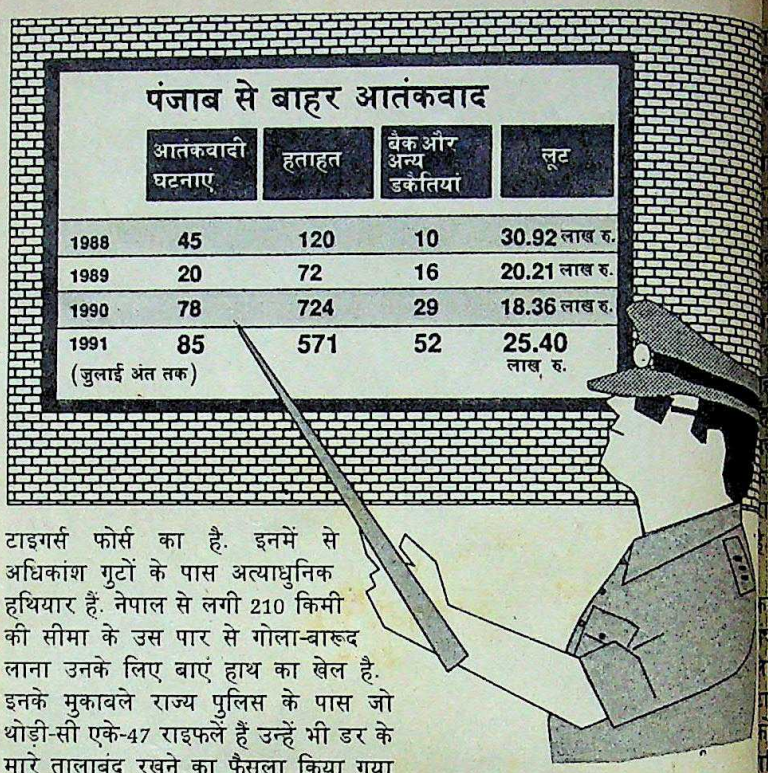

सतनाम सिंह चिन्ना और उसके साथी, जो तराई में सक्रिय हैं

कंवर संधू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस्तान आने-जाने और हथियारों
तस्करी का दरवाजा बने हुए हैं.
हां आतंकवादी गतिविधियां मुख्य रूप
हथियारों की तस्करी और पंजाब से
गे आतंकवादियों को शरण उपलब्ध
राने तक ही सीमित हैं. लेकिन कुछ
मय से इन जिलों में सुरक्षा बलों के
ढ़ते दबाव की वजह से तस्करी के
ए कुछ आतंकवादियों को दक्षिण में
सलमेर और बाड़मेर के सीमावर्ती
लाकों की ओर खिसकना पड़ा है.
हले तो तस्करी का मुख्य इलाका
दुमल कोट था लेकिन सीमा सुरक्षा
ल और राज्य पुलिस के बढ़ते दबाव
कारण अब यह काम अनूपगढ़,
यसिंह नगर और घुड़साना से हो रहा

इन इलाकों में वैसे तो खालिस्तान
मांडो फोर्स के जफरवाल और
रवार गुटों का ज्यादा प्रभाव है
किन इनके अलावा भिंडरांवाले
इगर्स फोर्स, खालिस्तान लिबरेशन
र्स और बब्बर खालसा की
तिविधियां भी हैं. मई चुनाव में
गानगर से अकाली दल (मान गुट) ने
म्मीदवार खड़ा किया. चुनाव प्रचार की
ड़ में मान गुट और कुछ आतंकवादी
गठनों को सक्रियता से पैर फैलाने का
ौका मिला है लेकिन इस प्रयास में कुछ
क्रिय लोगों को पहचानने में सुरक्षा बलों
ो भी मदद मिली.

आतंकवादियों की खोज में पुलिस के
ापों ने यहां भी वही समस्याएं पैदा की हैं
ा तराई में सिख जमींदारों को पेश आ रही
मान गुट के महासचिव अजीत सिंह
ायकायत करते हैं, "पुलिसवाले अपनी वर्दी
र एक तमगा बढ़ाने के लिए किसी को भी
ातंकवादी कहकर पकड़ लेते हैं. इस वजह
न तो पंजाब से लोगों का कोई रिश्तेदार
ा सकता है और न कोई गुरद्वारे में ठहर
कता है." दूसरी ओर पुलिस अधीक्षक
स.पी. सिंह कहते हैं, "पुलिस और
एसएफ की सख्ती के बाद अब यहां
ातंकवादी गतिविधियों में कमी आई है."
छले साल पुलिस ने यहां 29 आतंकवादियों
ो पकड़ा जबकि इस साल 26 पकड़े गए
र पांच मुठभेड़ों में मारे गए. पकड़े गए
ागों में अवतार सिंह और निरवैर सिंह जैसे
ामी आतंकवादी भी हैं. अभी हाल ही में
रा गया कुख्यात आतंकवादी गुरजंत सिंह
जस्थानी गंगानगर इलाके का ही रहने
ला था.

इन सीमावर्ती जिलों के अलावा पिछले
छ समय से कोटा और बूंदी भी
ातंकवादियों के लिए शरणस्थली बने हुए

कवर गंगु

गंगानगर में जब्त किए हथियारों का निरीक्षण करते शेखावत

राजस्थान के गंगानगर और बीकानेर जिले आठ साल से पंजाब के आतंकवादियों के लिए पाकिस्तान आने-जाने और हथियारों की तस्करी के दरवाजे बने हुए हैं

हैं. गृह मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश आने-जाने वाले आतंकवादियों और उनके संपर्क सूत्रों को यहां राजमार्ग पर बने पंजाबी ढाबों में शरण मिलती है.

इस मान्यता के पीछे बाहर से दिखने वाले कारण भी हैं. उदाहरण के लिए बब्बर खालसा के चोटी के सदस्य स्वयंभू ले. जनरल माधो सिंह को गिरफ्तार किए जाने के बाद पता चला कि महाराष्ट्र में पैसा इकट्ठा करने और संगठन खड़ा करने के लिए वह पंजाब और मुंबई के बीच तेल के एक ऐसे टैंकर के अंदर छिपकर यात्रा किया करता था जिसमें चारपाई और रसोई की व्यवस्था थी. माधो सिंह ने ही छह अन्य आतंकवादियों के साथ मिलकर नांदेड़ में महाराष्ट्र के कृषि राज्यमंत्री और केंद्रीय गृहमंत्री एस.बी. चव्हाण के दामाद के घर पर हमला किया था. लेकिन वहां किसी को न पाने के बाद इस गिरोह ने मालेगांव में बीएसएफ के डीआईजी के भाई निर्मल सिंह को बंधक बना लिया और उन्हें दवा देकर एक टैंकर में बंद कर दिया. लेकिन इंदौर पहुंचने पर निर्मल को होश आ गया और वे टैंकर से निकल भागे. इससे पहले जनरल वैद्य की हत्या और जिंदा के पकड़े जाने के कांड राज्य में सिख आतंकवादियों की सक्रियता सिद्ध कर चुके हैं.

मुंबई में पुलिस ने रेस्तरां के धंधे में लगे सिख व्यापारियों की शिनाख्त की है जो आतंकवादियों को शरण देते हैं और पैसा उगाही में उनकी मदद करते हैं. इस मामले में कोलीवाडा क्षेत्र को महत्वपूर्ण माना जा रहा है. पुलिस के संयुक्त कमिश्नर अरविंद इनामदार कहते हैं, "मुझे हैरानी नहीं है कि पंजाब के आतंकवादी हथियारों के लिए मुंबई आते हैं. अपराधी संगठनों की कमर तोड़ देने के बाद इन हथियारों के खरीदार आतंकवादी ही हो सकते हैं."

उधर, पिछले महीने निर्मल सिंह की सूचना पर इंदौर में बब्बर खालसा गुट के 11 आतंकवादियों के पकड़े जाने के बाद एक बार फिर स्पष्ट हो गया है कि राज्य का शांत क्षेत्र पंजाब के आतंकवादियों के लिए सुरक्षित शरणस्थली बना हुआ है. इससे पहले जिंदा और सुक्खा जैसे आतंकवादी मध्य प्रदेश के दुर्ग नगर में रहकर पुलिस की आंखों में धूल झोंक चुके थे.

आतंकवादियों को राज्य में मदद मिलने के दो स्रोत हैं. एक तो शिवपुरी, ग्वालियर और भिंड के वे इलाके हैं जहां सैकड़ों सिख परिवार खेती करते हैं. और दूसरे, भोपाल, इंदौर, जबलपुर, रायपुर और ग्वालियर जैसे इलाके हैं जहां रहने वाले सिख ट्रांसपोर्ट के धंधे में लगे हुए हैं. हाल ही में राज्य में जिस तरह आतंकवादियों के आकर ठहरने और वारदातें करने का सिलसिला शुरू हुआ है उसके बारे में मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा कहते हैं, "यह हमारे लिए चिंता का विषय है."

लेकिन जिस तरह आतंकवादियों की गतिविधियां उत्तर में पंजाब, दिल्ली और हरियाणा के दायरे को तोड़कर एकदम शांत माने जाने वाले राज्यों में फैल रही हैं, उसने पूरे देश को नई चिंता में डाल दिया है. अगर समय रहते इस फैलाव पर काबू न पाया गया तो आतंकवाद की यह आग पंजाब को नहीं, पूरे देश को लील जाएगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद जोशी

वह बहुरि अकेला आदमी

—प्रभाष जोशी

मुझे क्यों लग रहा है कि यह छपेगा और शरद जोशी बांचेंगे तो क्या सोचेंगे? जीते जी अपना मृत्युलेख पढ़ने से शरद जोशी का साबका नहीं पड़ा. लेकिन हेमिंग्वे की तरह अगर वे किसी दुर्घटना में मृत मान लिए जाते और अपने पर लिखी श्रद्धांजलियां पढ़ते तो जवाब में उनके पाखंड और प्रपंच पर निश्चित ही मजेदार व्यंग्य लिखते.

शरद जोशी धीर-गंभीर चेहरे और आंसू टपकाती आंखों को एक शरारती शंका से देखने के आदी थे. वे ओढ़ी हुई महानता के लबादे को बातों-बातों में उतार देते थे. लंबी, चौड़ी और गहरी मानी जाने वाली बातों के तल में पहुंचना और एकाध मोती के साथ चारों तरफ बिखरे पड़े कंकड़-पत्थर दिखाना वे अपना काम मानते थे. कंकर को मोती बताने की दुकानदारी का पर्दाफाश वे उम्र भर करते रहे. दंभ, बड़बोलेपन, झूठ, लाग-लपेट और मुंह दिखाने को मुंह चिढ़ाने वाले आदमी पर उनके पीठ पीछे क्या कहा जाए? शरद जोशी को क्या यह ठीक लगेगा कि उन्हें हिंदी का ही नहीं, भारत का सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार कहा गया? क्या वे खुद ही ऐसी प्रतिष्ठापना के धुर्रे नहीं बिखेर देते? दोस्त हो कर शरद जोशी के साथ कोई ज्यादती कैसे की जा सकती है. वे सोए हैं तो उनकी शान में कोई गुस्ताखी नहीं होनी चाहिए. वे उठेंगे तो कहेंगे नहीं कि तुम भी!

शरद जोशी ने 'नई दुनिया' में 'परिक्रमा' के साथ हर दूसरे दिन छपने वाले कॉलम से नियमित लिखना शुरू किया और उनके आखिरी दिन भी उनका 'प्रतिदिन' 'नवभारत टाइम्स' में छपा. रोज लिखना उनके लिए रोजी कमाना या लिखते रहने का शगल नहीं था. लिखना उनके लिए अपनी तरह जीने की अनिवार्य शर्त था. वे व्यंग्य में अभिव्यक्त हो कर ही जी सकते थे इसलिए उनका लिखना सांस लेने की तरह सहज, स्वाभाविक और निष्प्रयास था. रोज लिखकर जैसे वे अपने होने और बने रहने के अधिकार को पुनर्प्राप्त करते थे. शरद जोशी लिखने की सधुक्कड़ी पर जीते थे.

गुजराती मूल का उनका ब्राह्मण परिवार पुरानपंथी कहा जा सकता है और उनके पिता पक्की सरकारी नौकरी पसंद करने वाले आदमी थे. वे खुद भी सरकारी नौकरी में थे. इसके बावजूद शरद जोशी में सरकारी तो क्या, किसी तरह की भी नौकरी करने का माद्दा नहीं था. 'नई दुनिया' से 'आकाशवाणी' और वहां से मध्य प्रदेश के सूचना विभाग में उन्होंने नौकरी की और बड़ी मुश्किल से की. फिर एक दिन 'संभाल तेरी घोड़ी और बंदे ने नौकरी छोड़ी' कह कर अलग हो गए. इसके बाद सन् अस्सी-इक्यासी में कोई सवा-डेढ़ साल साप्ताहिक 'हिंदी एक्सप्रेस' निकाल कर नियमित संपादकी की.

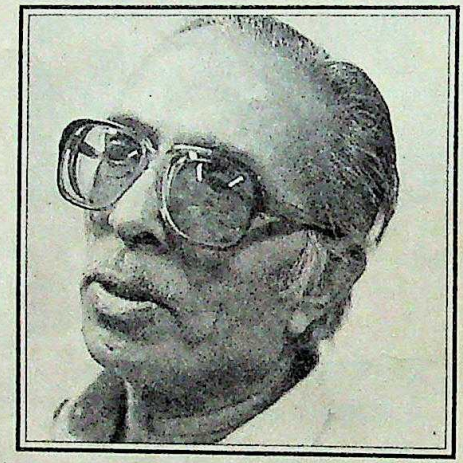

लंबी, चौड़ी और गहरी मानी जाने वाली बातों के तल में पहुंचना और एकाध मोती के साथ चारों तरफ बिखरे पड़े कंकड़-पत्थर दिखाना वे अपना काम मानते थे

लेकिन नौकरी करने के लिए स्वभाव में जिस ठहराव और स्थिरता की जरूरत होती है, छोटे-छोटे समझौते करने और उन पर टिके रहने का जो पकड़ाव होता है वह सब शरद जोशी में नहीं था. आकाशवृत्ति के आदमी थे और ज्यादा से ज्यादा किसी पेड़ की डाल पर घोंसला बना सकते थे. लेकिन उन्होंने एक मुसलमान कन्या से प्रेम किया, शादी की, गिरस्ती बसा कर तीन बेटियों के बाप भी हुए. बेटियों के ब्याह भी किए और आखिर बंबई जैसे शहर में एक फ्लैट भी ले लिया. लेकिन यह सब करते हुए निपट निस्संग और कलंदर बने रहे.

प्रतिष्ठानों से जुड़ना, प्रतिष्ठान बनाना या खुद ही प्रतिष्ठान हो जाना शरद जोशी की फितरत में नहीं था. वे सभी तरह के प्रतिष्ठानों से लड़ते रहे—चाहे अशोक वाजपेयी का भारत भवन हो या प्रतिष्ठित लेखकों समालोचकों का साहित्यिक समाज हो, फिल्मी दुनिया या छोटे परदे के प्रपंच हों या सत्ता प्रतिष्ठान हो. प्रतिष्ठान विरोधी अगर वे होते तो वर्तमान प्रतिष्ठान पर लगातार हमले करके उसे तोड़ते हुए अपना प्रतिष्ठान बनाते. लेकिन वे लिखते रहे और किताबें हैं कुल जमा चार-पांच. अपने लिखे का प्रतिष्ठान हो जाना भी उन्हें बर्दाश्त नहीं होता. वे अपनी शैली, अपनी भाषा, अपने लिखे की भी पैरोडी करके उसका मखौल उड़ाते.

शरद जोशी का सबसे सटीक वर्णन कबीर के एक पद में है—सब ठौर हमरी जमात, सब ठौर पर मेला. सब हम मांही, हम सब मांहीं, हम हैं बहुरि अकेला. तभी तो शरद जोशी किसी साहित्यिक आंदोलन के कार्यकर्ता, कर्ता या नेता नहीं हुए, किसी विचारधारा के जमावड़े में शामिल नहीं हुए. गुटबाजी से आक्रांत हिंदी साहित्य के किसी गुट में पाए नहीं गए. इसलिए उनकी उपेक्षा हुई और मान्यता भी मिली तो बहुत बाद में.

लेकिन सच्चा व्यंग्यकार ऐसा नहीं होता तो कैसा होता? क्या कोई व्यंग्यकार प्रतिष्ठान का हो कर रह सकता है? व्यवस्था की लगातार आलोचना करने वाला व्यक्ति व्यवस्थापक कैसे हो सकता है? शरद जोशी की पैनी नजर से कोई पाखंड, कोई प्रतिष्ठान और कोई व्यक्ति नहीं बचा. बाद के वर्षों में उन्होंने अपने को भी नहीं बख्शा और तभी वे सच्चे व्यंग्यकार हुए. इस तरह के व्यंग्यकार हिंदी में दो ही हुए—हरिशंकर परसाई और शरद जोशी. परसाई कोई दस-बारह साल हुए चुक गए. शरद जोशी आखिरी दिन तक चलते रहे. कबीर की तरह की बहुरि अकेला आदमी बहुत दूर तक जाता है. जहां शरद जोशी पहुंचे वह खाला का घर नहीं है. वहां शरद जोशी अपना सिर दे कर गए हैं. कोई माई का लाल वहां क्या पहुंचेगा. शरद जोशी ने आसमान में अपनी खूंटी गाड़ी है. कोई गाड़ेगा? गाड़े तो मुझे बताना.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ डायल वाली बहुउपयोगी घड़ी। समय, दिन, दिनांक, महीना और चांद की कला दशति यंत्र समूह। Rs.2419*

टाइटन की क्लासीक. बारीक पसन्द की पहचान.

ऐसी अनोखी घड़ियां भारत में पहले कभी नहीं बनीं। क्लासीक युरोपियन डिज़ाइन और सूक्ष्म तकनॉलजी का निराला संगम।

टाइटन की बहुउपयोगी घड़ियां। पूनम से अमावस्या तक चांद की हर तस्वीर सही दिखाने वाली मूनफ़ेज़ घड़ियों से लेकर एक ५ डायल वाली घड़ी तक, जो शानदार कैलेन्डर का काम दे।

ये जितनी जटिल हैं, उतनी ही लुभावनी और उनके रूप को निखराती है, १८ और २३ कैरेट गोल्ड प्लेटिंग की दोहरी परत और शानदार लेदर।

टाइटन की ४०० से भी ज़्यादा अन्तर्राष्ट्रीय क्वार्ट्ज़ घड़ियों के खज़ाने में सबसे बेहतरीन, यह बहुउपयोगी घड़ियां - सिर्फ रु.११२५ से रु. २५०० तक। हर घड़ी के साथ आपको मिलेगा टाटा के नाम का भरोसा और २ साल की गारण्टी।

नयी बहुउपयोगी क्लासीक घड़ियां। फ़र्क शान का। बारीक पहचान का।

Classique

Rs.2057* Rs.1573* Rs.1543*

TITAN
QUARTZ
The Changing Face Of Time

*दिखाई गई कीमतों में दिल्ली में लागू सभी कर शामिल हैं।

Ogilvy & Mather 3288

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

म्यूज़िक टुडे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की नई पेशकश

ऋतु संगीत

ए-91021
बिस्मिल्लाह ख़ान *(शहनाई)*
राग हमीर बहार
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग बसंत बहार

ए-91022
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग बहार और राग हिन्डोल बहार
रवि शंकर *(सितार)*
राग सिन्दुरा और राग मिश्रा काफी

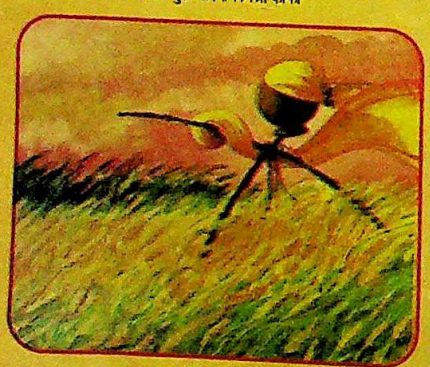

ए-91023
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग बसंत
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग बसंती केदार और राग बसंती कान्हरा

Basant Baha

भारतीय शास्त्रीय संगीत के सुर सागर में ऐसे अनेक
जो ऋतुओं के बदलते मिज़ाज से भलीभांति परिचि
यह श्रृंखला पेश करती है – दो सबसे हसीन, मोहक और
ऋतुओं का एक बेहतरीन उ
बसंत बहार बसंत के सदाबहार रंगों, उमंगों और ताज़
परिपूर्ण है। राग बहार की सुरीली और लहराती तानों से त
यूं खिल उठता है जैसे बसंत आने पर फुलवारी के

ए-91024
पंडित जसराज *(गायन)*
राग भवानी बहार और राग अदि बसंत
हरिप्रसाद चौरसिया *(बांसुरी)*
राग शहाना बहार और पहाड़ी धुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए-91025
रवि शंकर *(सितार)*
राग मियाँ की मल्हार
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग रामदासी मल्हार

ए-91026
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग मेघ
पंडितर जसराज *(गायन)*
राग धूलिया मल्हार

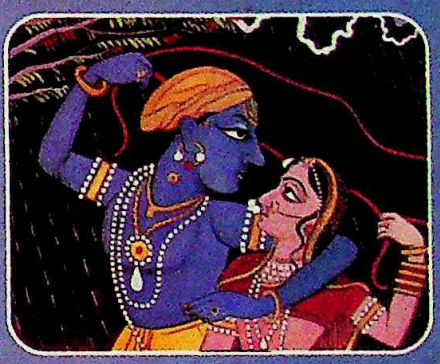

ए-91027
हरिप्रसाद चौरसिया *(बाँसुरी)*
राग मधु मल्हार
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग मियाँ की मल्हार

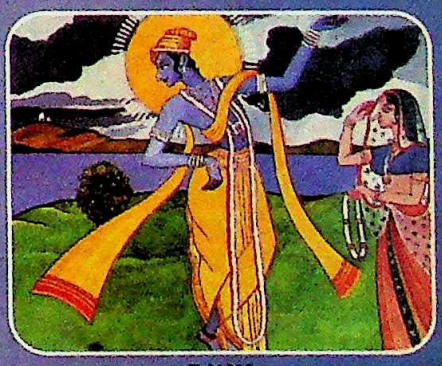

ए-91028
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग गौड़ मल्हार
बिस्मिल्लाह खान *(शहनाई)*
मिश्र मेल की मल्हार और कजरी

MEGH MALHAR

ा अनेक
ति परिच
हक औ
तरीन उ
और ता
नों से त
वारी के

न मल्हार में सावन की रिमझिम पिया-मिलन की चाह और
ीहे के गीतों की गूंज है। राग मल्हार के खनकते सुर
हराते बादलों और उनका सीना चीरती बिजली की चमकती
लवार का आइना बन जाते हैं।
ुत संगीत ... इस श्रृंखला के हर राग को हमारे समय के
ान कलाकारों ने बड़ी लगन और साधना से
जाया-संवारा है। एक घंटे के इन ऑडियो कैसेटों की
ल डिजीटल रिकार्डिंग सुनकर आप रसविभोर हो जाएंगे।

मूल्य

प्रति कैसेट रु. 50 (कर सहित)। पैकिंग एवं वितरण शुल्क के रूप में रु. 15 अतिरिक्त। ऑर्डर कम से कम 4 कैसेटों के लिए हों तथा आगे भी 4 के गुणक में हों।

कृपया ध्यान दें

- दिल्ली से बाहर के चैकों पर रु. 15 अधिक जोड़ें।
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली से भेजे गए चैक/ड्राफ्ट का एम आई सी आर होना ज़रूरी है।
- कैसेट डाक अथवा कूरियर द्वारा भेजे जाएंगे।
- कृपया ऑर्डर के बाद डिलीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक प्रतीक्षा करें।
- उपहार भेजने के लिए संलग्न ऑर्डर-फार्म का प्रयोग करें।
- अपने चैक/ड्राफ्ट और अन्य भुगतान 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर इस पते पर भेजें :— म्यूज़िक टुडे, पो. बा. 29, नई दिल्ली-110001।
- उपरोक्त ऑफर और कीमतें केवल भारत में लागू होंगी।
- ऑर्डर फार्म के न होने पर कृपया अपना नाम और पता भुगतान के साथ डाक द्वारा म्यूज़िक टुडे को भेज दें।

मेल-ऑर्डर फार्म

कोड सं.	कैसेटों की संख्या
ए 91021	
ए 91022	
ए 91023	
ए 91024	
ए 91025	
ए 91026	
ए 91027	
ए 91028	

हाँ, मैं 'म्यूज़िक टुडे' कैसेट रु. 50/- प्रति कैसेट के दर पर दिए हुए विवरण अनुसार खरीदना चाहता/चाहती हूँ। (ऑर्डर कम से कम 4 कैसेटों के लिए हों तथा आगे भी 4 के गुणक में हों। कृपया पैकिंग अथवा वितरण शुल्क के रूप में रु. 15/- अतिरिक्त भेजें तथा दिल्ली से बाहर वाले चैक पर रु. 15/- अतिरिक्त जोड़ें।)

अपने लिए ☐ उपहार के लिए ☐

म्यूज़िक टुडे को देय रु. _____ का क्रास किया गया चैक एवं डिमांड ड्राफ्ट संलग्न है।

ऑर्डर किए गये कुल कैसेटों की संख्या _____

कुल देय राशि रु. _____

मेरा नाम _____

पता _____

_____ पिन _____ फोन _____

उपहार पाने वाले का नाम _____

पता _____

_____ पिन _____

MUSIC TODAY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—फरजंद अहमद

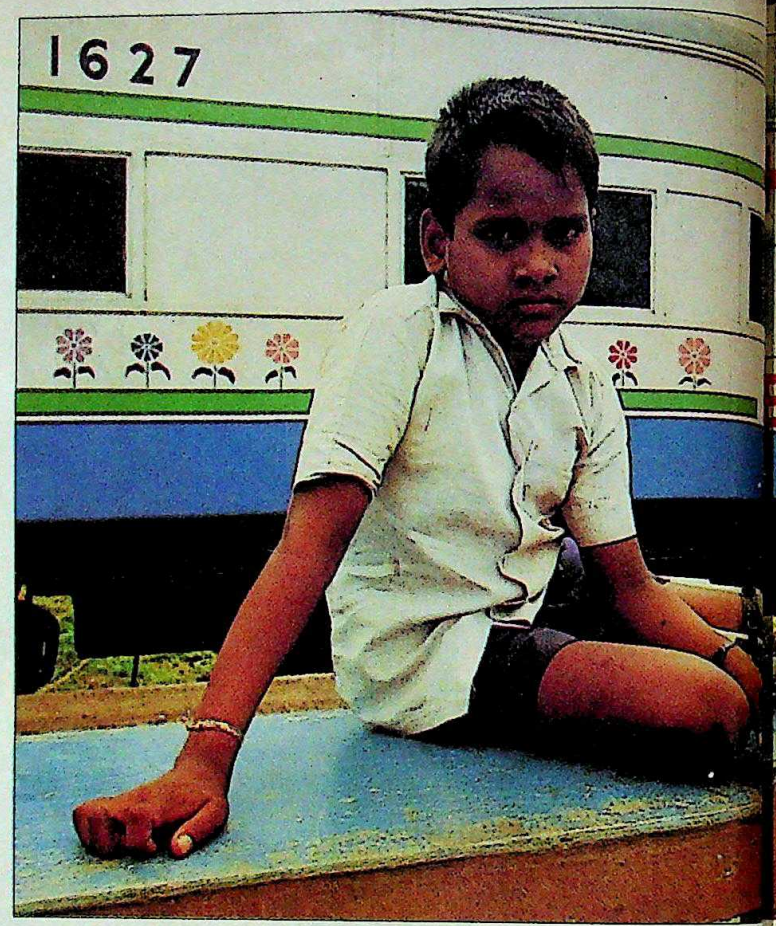

जीवन रेखा एक्सप्रेस

वंचितों के लिए वरदान

सेवा की शानदार मिसाल पेश करता अपनी किस्म का अनूठा घुमंतू अस्पताल

दक्षिण बिहार में कोयला खदानों के उजाड़ से इलाके में चर्चा का केंद्र या तो वहां के माफिया सरगना होते हैं, जिन्होंने पूरे क्षेत्र में आतंक का राज कायम किया हुआ है, या उन्हें संरक्षण देने वाले नेतागण. लेकिन जुलाई में एक बिलकुल अलग ही किस्म की चीज चर्चा का विषय बन गई. यह चीज थी बीमारों में आशा और उत्साह का संचार करने वाली एक सफेद रेलगाड़ी. इस रेलगाड़ी के तीन डिब्बे चिकित्सा की अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस हैं. इसमें एक ऑपरेशन कक्ष भी है. जीवन रेखा या लाइफलाइन एक्सप्रेस नाम की यह अनोखी चिकित्सा सेवा 'इम्पैक्ट इंडिया' ने शुरू की है. सुदूर मुंबई से यात्रा करती हुई यह रेलगाड़ी जुलाई में बिहार के इस वनवासी क्षेत्र के भीतरी भाग में पहुंची.

मध्य जुलाई में रांची जिले के खेलाड़ी रेलवे स्टेशन पर जब यह गाड़ी ठहरी तो सैकड़ों की संख्या में गरीब ग्रामीण वहां जमा हो गए. और डॉक्टर पोलियो, मोतियाबिंद और बहरेपन से पीड़ित रोगियों की जांच शुरू करने लगे. जरूरत पड़ने पर ऑपरेशन भी किया जाता है.

सबसे पहले आए मरीजों में 12 वर्षीय विजय कुमार यादव भी था जिसे बचपन में पोलियो हो गया था. खेलाड़ी से 120 किमी दूर पलामू के अनुसूचित जाति के गरीब जूठन यादव के लड़के विजय का ऑपरेशन किया गया. उसे कैलिपर दिए गए. वह इनके सहारे चल सकता है. 26 अगस्त को 'जीवन रेखा' जब वापसी के लिए खेलाड़ी स्टेशन पर लगी तो विजय उसे विदा देने के लिए खड़ा था. 'जीवन रेखा' पड़ोसी जिले हजारीबाग की पश्चिम बोकारो कोयला खान के चैनपुर की ओर रवाना हुई. उसकी तरफ हाथ हिलाते हुए विजय खुशी से चहकता है, "अब मैं चल सकता हूं."

लेकिन इसी प्लेटफार्म पर रिटायर्ड रेल कर्मचारी केदारनाथ चौधरी भी निराश खड़े थे. पूर्वी उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के निवासी केदारनाथ अपने पोलियोग्रस्त पोते रणजीत कुमार को यहां इलाज के लिए लाए थे. बड़े दुख से वे बताते हैं, "इस गाड़ी के बारे में हमने बहुत सुना था. किसी तरह हम यहां पहुंच गए. दुर्भाग्य से देरी हो गई और अब यह गाड़ी जा रही है." यहां केदारनाथ की गाड़ी भले ही छूट गई लेकिन उन्होंने उसके पीछे-पीछे चैनपुर पहुंचने का फैसला कर लिया है.

चिकित्सा सुविधाओं से वंचित, बिहार के ग्रामीण इलाकों के निवासियों में इस रेलगाड़ी ने आशा का संचार किया है. असल में इस घुमंतू अस्पताल की चर्चा सुन-कर कई गांववाले लंबी यात्रा करके इस तक पहुंचे लेकिन उन्हें निराश होना पड़ा क्योंकि यहां पोलियो, मोतियाबिंद और बहरेपन का इलाज ही किया जाता है.

रेल की पटरियों पर अस्पताल उतारने का श्रेय 'इम्पैक्ट इंडिया' को है. यह न्यूयॉर्क स्थित अंतरराष्ट्रीय स्वैच्छिक संगठन की शाखा है. यह ऐसी विकलांगताओं के खिलाफ संघर्ष छेड़े हुए हैं जिनसे बचा सकता है. मुंबई और मद्रास के झोंपड़ी इलाकों में बच्चों को प्रतिरक्षक दवा भारी सफलता से उत्साहित होकर रेल पर अस्पताल की यह नई सेवा शु है. यह पाया गया कि इस इलाज से झोंपड़ियों में पोलियोग्रस्त बच्चों की में भारी कमी आई है. नतीजतन, यह गया कि यह सुविधा महानगरों पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लो भी पहुंचाई जाए.

इस तरह रेल की पटरियों प अस्पताल चल पड़ा. इसने पोलियोग्र बच्चों को उनके पैरों पर खड़ा कि महाराष्ट्र के पालघर जिले के एक ग 9 वर्षीया संगीता के जीवन को दो व इस अस्पताल ने बिहार के विजय जीवन की ही तरह बदल दिया है रेखा' जब पूर्वी प्रदेश की यात्रा पर तो संगीता ने ही उसे झंडी दिखा 'इम्पैक्ट इंडिया' के अध्यक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: प्रशांत पंजियार

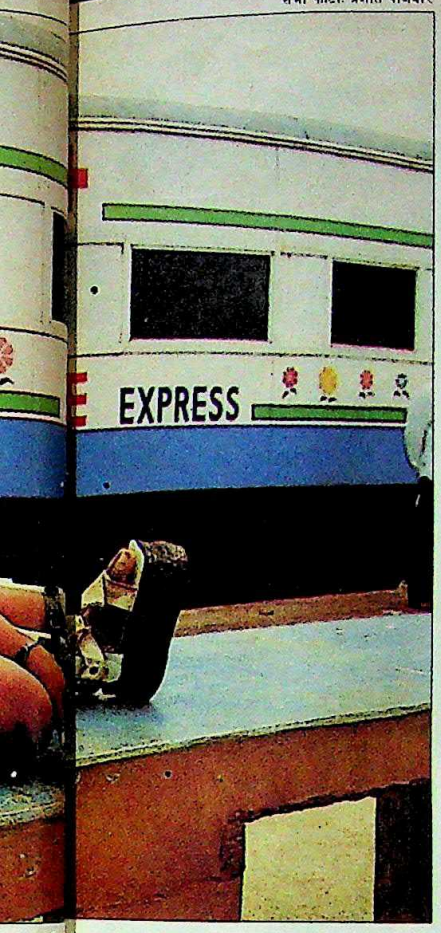

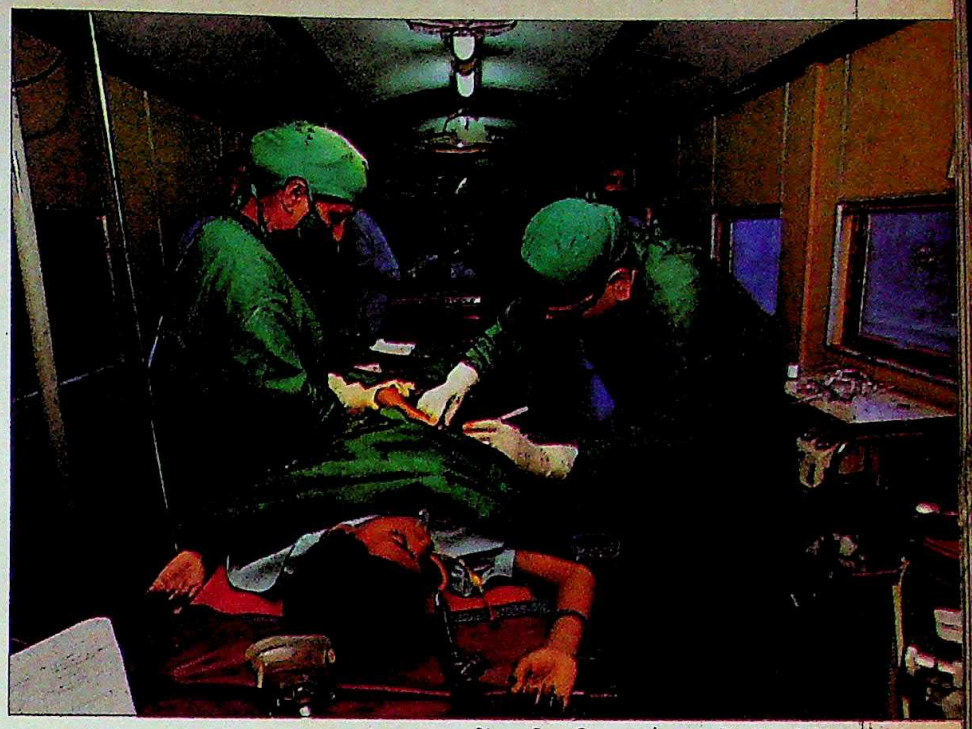

विजय यादव (बाएं); वातानुकूलित ऑपरेशन कक्ष (ऊपर); बिस्तरों वाला वार्ड: वंचितों के लिए पांच तारा सुविधा

बेकोवाला ऐसे चलते-फिरते अस्पतालों की जरूरत पर जोर देते हुए बताते हैं कि विकासशील देशों में विकलांगता के मामले बढ़ते जा रहे हैं. हर 10 में से एक व्यक्ति विकलांग है. ऐसे आधे मामलों में इस विकलांगता को रोका जा सकता था.

चलता-फिरता अस्पताल बनाने के लिए हर किस्म की बाधाओं से लैस वैन की जगह ट्रेन को प्राथमिकता इसलिए दी गई क्योंकि 65,000 किमी लंबी पटरियां, 7,000 साइडिंग के अलावा बिजली-पानी की बाधाओं की वजह से रेल को देश के दूरदराज इलाकों में पहुंचने का सहजतम साधन माना गया. तत्कालीन रेलमंत्री जॉर्ज फर्नांडीस ने यह योजना तुरंत मंजूर कर इसके लिए तीन डिब्बे मुहैया करा दिए. इम्पैक्ट इंडिया ने इन्हीं तीन डिब्बों को जीवन रेखा एक्सप्रेस में परिवर्तित कर दिया. इन तीन डिब्बों में से एक को वातानुकूलित ऑपरेशन कक्ष में तब्दील किया गया. इसमें तीन मेजें लगाई गईं. एक कोने में विसंक्रमण के लिए जगह बनाई गई. निदान केंद्र बनाया गया और वार्ड भी. बाकी दोनों डिब्बों में कर्मचारियों के लिए निवास स्थान, कार्यालय, पैथॉलॉजी प्रयोगशाला और रसोईघर बनाए गए. 'इम्पैक्ट इंडिया' ने इस परियोजना पर 2 करोड़ रु. खर्च किए. इसके अलावा केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय, यूएसएड, इम्पैक्ट यूके और देश के कई निगमों ने आर्थिक मदद की.

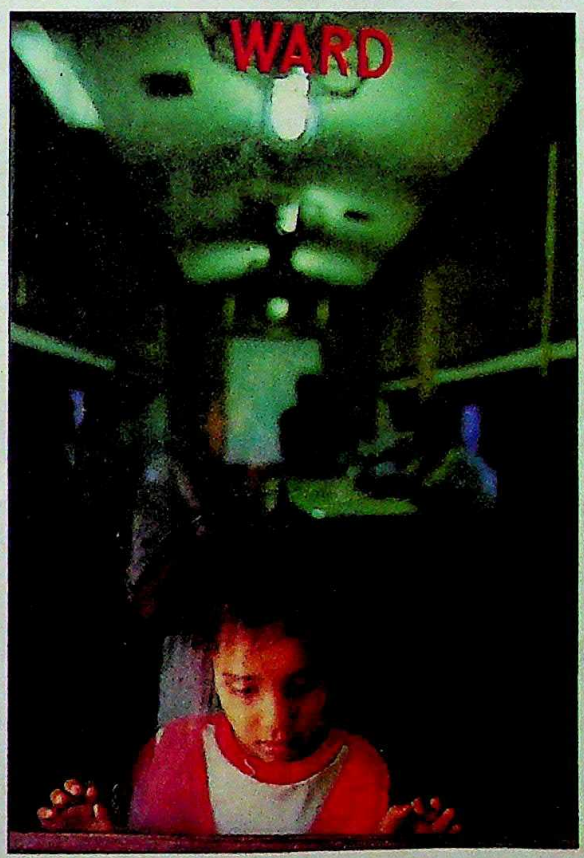

मजेदार बात यह रही कि पूरी तैयारी के बाद गाड़ी इस बात पर अटकी कि इस गाड़ी को कैसे संचालित किया जाए. और यह कहां-कहां का दौरा करे, क्योंकि तब तक न तो डॉक्टरों और नर्सों की नियुक्ति हुई थी और न ही इस अस्पताल की मंजिल तय की गई थी. इसी मौके पर 'इम्पैक्ट इंडिया' के शीर्षस्थ लोगों की संगठनात्मक दक्षता और उच्च संपर्क काम आए. 'इम्पैक्ट' ने कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) से संपर्क साधा. इसके अध्यक्ष एस.पी. नारायणन शुरुआती दौर में आर्थिक सहायता देने को राजी हो गए. सीआईएल की चिकित्सा सेवा के प्रमुख डॉ. मोती सिंह ने सुझाव रखा कि यह रेलगाड़ी सीआईएल की सहयोगी कंपनी सेंट्रल कोलफील्ड्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशिष्ट व्यक्ति की विशेषता

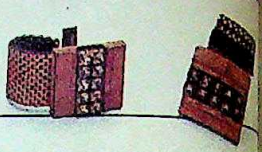

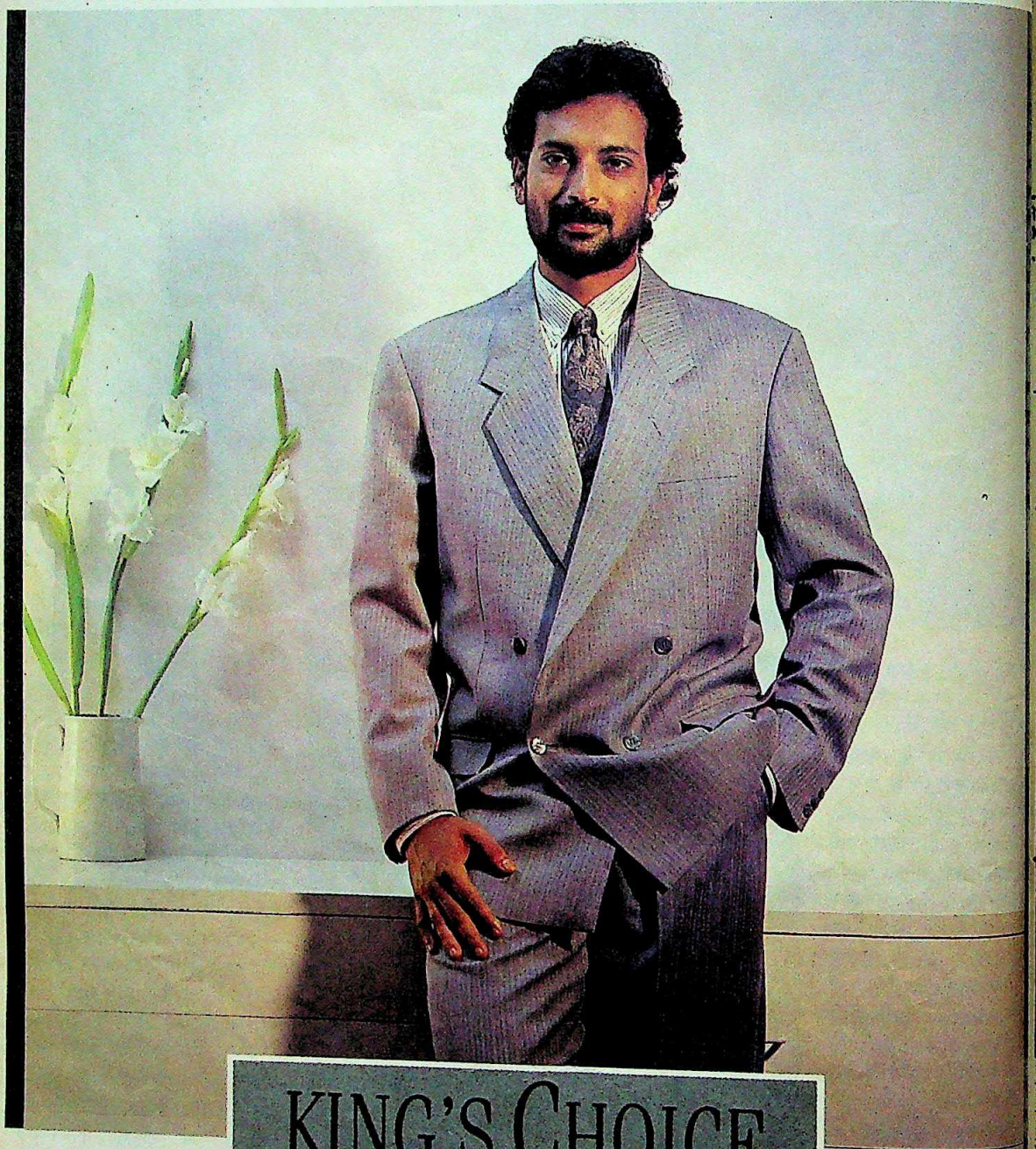

KING'S CHOICE

बेहतरीन सुपरफ़ाइन सूटलेंथ्स

DIGJAM

वी एक्स एल इंडिया लि. का उत्पाद

Woolmark (वूलमार्क)
PURE NEW WOOL
INTERNATIONAL SYMBOL OF PURE NEW WOOL

आराम और शान के लिए
शुद्ध ऊनी सूटिंग्स

SUMANGAL और अन्य प्रमुख स्टोर्स में उपलब्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिमिटेड (सीसीएल) द्वारा संचालित रांची के वनवासी क्षेत्रों में भी जाए. डॉ. सिंह इस क्षेत्र में पहले से काम कर रहे डॉक्टरों और चिकित्साकर्मियों को इसकी सेवा में मुहैया कराने को भी तैयार हो गए.

लेकिन यह प्रयोग गलत अवधारणाओं, क्रियान्वयन संबंधी भूलों और लक्ष्य की अस्पष्टता जैसी खामियों से अछूता नहीं रहा. इसके आलोचकों का, जिनमें स्थानीय डॉक्टर भी शामिल हैं, कहना है कि रांची और हजारीबाग जिले न तो इतने दूरदराज के हैं और न ही इतने पिछड़े. यहां की ग्रामीण जनता सीआईएल और टिस्को की स्वास्थ्य सुविधाओं का पहले से ही लाभ उठा रही है.

चूंकि 'जीवन रेखा' एक्सप्रेस के पास अपने कर्मचारी नहीं हैं, इसलिए क्षेत्रीय अस्पतालों के डॉक्टरों को तैनात कर दिया जाता है. इससे स्थानीय अस्पतालों के कामकाज पर असर पड़ता है. रेल

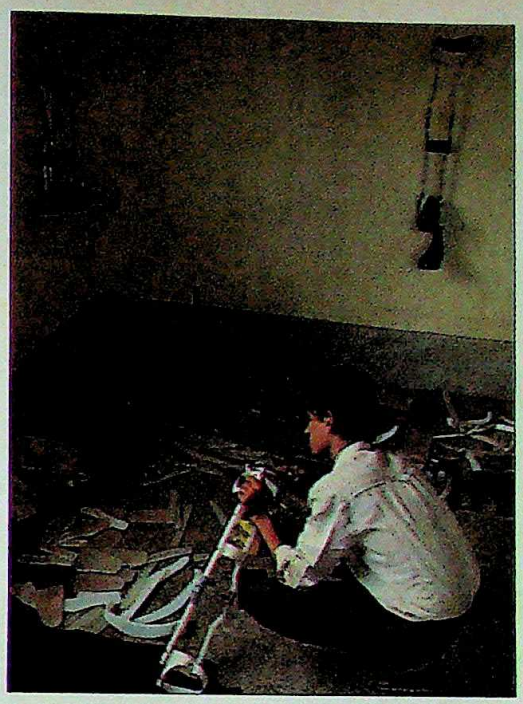

खेलाड़ी में कैलिपर निर्माण; और (नीचे) एक वनवासी महिला विदाई देते हुए

में बने इस अस्पताल का कामकाज जारी रखने के लिए सीसीएल के रांची स्थित अस्पताल के डॉक्टर छह हफ्ते तक खेलाड़ी और रांची के बीच की 60 किमी दूरी ही नापते रहे. इन डॉक्टरों को देखकर गांववाले निराश ही हुए. उन्हें उम्मीद थी कि यह रेल बड़े शहरों से विशेषज्ञ डॉक्टरों को लाएगी.

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह कि इस अस्पताल के कर्मचारियों का खासा वक्त ऑपरेशन करने में ही बीत जाता है. खेलाड़ी में पड़ाव के दौरान 'जीवन रेखा' एक्सप्रेस के डॉक्टरों को आधुनिकतम तकनीक द्वारा मोतियाबिंद के 47 ऑपरेशन करने पड़े और 77 पोलियोग्रस्त बच्चों को शल्यचिकित्सा के बाद कैलिपर लगाया गया. इसके अलावा इस रेल में ऑपरेशन के बाद की देखभाल की समुचित व्यवस्था भी नहीं है. ऑपरेशन के बाद रोगियों पर निगरानी रखने और ऑपरेशन बाद के उपचार के लिए कोई कमरा नहीं है. पोलियोग्रस्त मामलों में तो भारी खामी यह है कि यह जांच करने की कोई व्यवस्था नहीं है कि कैलिपर से पैरों की गतिशीलता बढ़ी है या नहीं. लेकिन सीसीएम अस्पताल के विकलांग चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. ए.के. सिंह कहते हैं, "हमने फैसला किया है कि आगे से ऑपरेशन बाद की देखभाल के लिए डॉक्टरों को भेजा करेंगे."

'जीवन रेखा' एक्सप्रेस अभी प्रयोगात्मक चरण में ही है. बहरहाल, अगले दौर में 'इम्पैक्ट' की योजना इस अस्पताल को उत्तर भारत के पांच-छह इलाकों में भेजने की है. सीआईएल के डॉ. सिंह कहते हैं, "यह तो शुरुआत है. खेलाड़ी और चैनपुर में इसके कार्यक्रमों के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया और खामियों पर एक रिपोर्ट तैयार की जाएगी." वैसे, लोगों की प्रतिक्रिया बहुत उत्साहवर्धक रही. फिर भी स्थानीय लोगों, डॉक्टरों और अधिकारियों का मानना है कि यह कार्यक्रम एक स्वैच्छिक संगठन और उनके सहयोगी निगमों का ग्लैमरयुक्त प्रचार भर बनकर रह गया.

आलोचक इस आरोप की पुष्टि में खेलाड़ी में इसके धूमधाम भरे उद्घाटन कार्यक्रम का उदाहरण देते हैं. कोयला राज्यमंत्री पी.ए. संगमा खास तौर से विमान से वहां आए. उद्घाटन कार्यक्रम भी खासा रंगारंग रहा. यहां सर्वधर्म प्रार्थना के बाद आदिवासी नृत्यों का कार्यक्रम चला. चैनपुर में तो स्थानीय नेतागण इस कार्यक्रम से जुड़ने को इतने बेताब नजर आए कि पहले दिन तो डॉक्टरों ने ऑपरेशन करने से ही एकदम इनकार कर दिया.

इतनी आलोचनाओं के बावजूद 'इम्पैक्ट इंडिया' के निदेशक लेजारस को यकीन है कि अपनी किस्म की यह पहली स्वास्थ्य सेवा विकासशील देशों में चिकित्सकीय देखरेख का आदर्श स्थापित करेगी. यह कोई आदर्श बना पाए या नहीं, लेकिन यह सच है कि इसने गरीबों के मन में उम्मीदें जगा दी हैं. इस घुमंतू अस्पताल में इलाज कराने वाले चार वर्षीय अनु की दादी, 55 वर्षीया सोहरी ओरांव कहती हैं, "मुझे उम्मीद है कि बच्चा जल्द ही चलने-फिरने लगेगा." उम्मीद की जानी चाहिए कि पटरियों पर दौड़ती यह 'जीवन रेखा एक्सप्रेस' जहां भी जाएगी, उम्मीद की रेखा बनती जाएगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

I feel passionately about some things. My room for one. With my PC, paintings and jazz. Ah! Also the colours. Carefully chosen. Even for the walls. Light Cream. Autumn Gold. Sun Beam. Corn Husk. Coral Softie. Shades of harmony and peace. From Superlac.

My favourite place in the world... My room

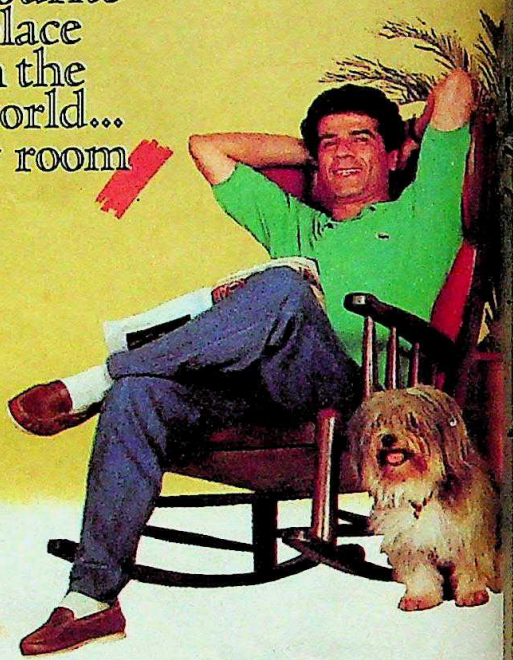

A dream made true by Superlac Acrylic Emulsion

Shalimar Pain

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामविलास पासवान

एक और कीर्तिमान

सीएजी ने सरकारी खजाने के दुरुपयोग पर उंगली उठाई

—शेफाली भीमाल

सबसे ज्यादा वोट पाने का विश्व रिकार्ड बनाने वाले जनता दल के उपाध्यक्ष और सांसद रामविलास पासवान ने एक और कीर्तिमान स्थापित किया है. जब वे केंद्रीय मंत्री थे तब सरकारी उद्यमों के मार्फत उन्होंने अपने निजी उपयोग के लिए बहुत-सी चीजों की खरीदारी की. इसे तमाम सरकारी निर्देशों का खुला उल्लंघन कहा जा सकता है.

पासवान के पक्ष में दलील देने वालों का कहना है कि इन खरीदारियों में बहुत मामूली रकम खर्च हुई. उनका तर्क यह भी है कि ऐसे आरोप 'जातिवादी' कारणों से भी लगाए जा रहे हैं जिनका मकसद शिखर तक पहुंचे हरिजन नेता की छवि को धूमिल करना है. लेकिन दूसरे लोगों के लिए मुख्य सवाल यह है कि नैतिकता की दुहाई देने वाली विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार के एक कैबिनेट मंत्री को क्या अपने पद का दुरुपयोग करना चाहिए था.

सबसे अधिक चौंकाने वाली बात यह है कि पूर्व श्रम तथा कल्याणमंत्री के लिए की गई यह ज्यादातर खरीदारी कर्मचारी भविष्य निधि कोष (ईपीएफ) से की गई जो कम आय वाले कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए बना सबसे बड़ा सामाजिक सुरक्षा संगठन है. खर्च की गई उक्त रकम पर नियंत्रक एवं महा लेखापरीक्षक (सीएजी) के कार्यालय ने आपत्ति उठाई है. साथ ही यह सवाल भी उठाया है कि ऐसी खरीद के लिए निर्धारित रकम की सीमा का ध्यान क्यों नहीं रखा गया और वी.पी. सिंह सरकार के पतन के बाद ये चीजें मंत्री से वापस क्यों नहीं ली गईं.

ईपीएफ का संचालन केंद्रीय ट्रस्टी बोर्ड (सीबीटी) करता है जिसमें श्रममंत्री पदेन अध्यक्ष होता है. 1990-91 के वित्तीय वर्ष के दौरान इस संस्था पर कई सवालिया निशान उठे. संभवतः इतिहास में पहली बार इसके सर्वोच्च अधिकारी, अध्यक्ष के क्रियाकलापों की जांच की गई.

समूचे घटनाक्रम की शुरुआत पिछले वर्ष अप्रैल में हुई जब नवनियुक्त अध्यक्ष रामविलास पासवान ने अपने सरकारी आवास 12, जनपथ की सजावट की फरमाइश की. सबसे पहले 'सरकारी उपयोग के वास्ते' एक डबल बेड की मांग हुई, जिसकी खरीद पर 10,945 रु. खर्च किए गए. उसके बाद 'देर रात या अवकाश के दिनों में महत्वपूर्ण बैठकें बुलाने' और 'कार्यालय के कामकाज की सुविधा के लिए' कई और चीजें खरीदी गईं. 'इंडिया टुडे' को प्राप्त कागजात के अनुसार इन वस्तुओं में कुर्सियों, मेजों और एक टीवी कैबिनेट पर 29,700 रु. का खर्च बैठा. फिर एक विडियोकॉन रंगीन टीवी की खरीद पर 13,500 रु. खर्च किए गए. इसी तरह परदों पर 52,300 रु., वोल्टेज स्टेबिलाइजर सहित एक एअरकंडीशनर पर 27,500 रु. खर्च आया. इसके अलावा दो रेफ्रीजेरेटर तथा कुछ और वस्तुओं की खरीद की गई. मई महीने के अंत तक ईपीएफ के पैसे से अध्यक्ष के लिए 1.76 लाख रु. निकल चुके थे. यह तमाम साज-सज्जा श्रममंत्री की हैसियत से मिली सुविधाओं के अतिरिक्त थी.

कई महीनों बाद जनता दल सरकार गिर गई और ईपीएफ के अधिकारी एक के बाद एक पत्र भेजकर पासवान से चीजें वापस करने का अनुरोध करने में लगे ही थे कि सीएजी कार्यालय ने सवाल उठा दिए.

लेखापरीक्षक इस बात से बेहद खफा हुए कि ऐसी खरीद तो अप्रैल-मई में ही हो गई पर इसकी सरकारी

पासवानः कटघरे में

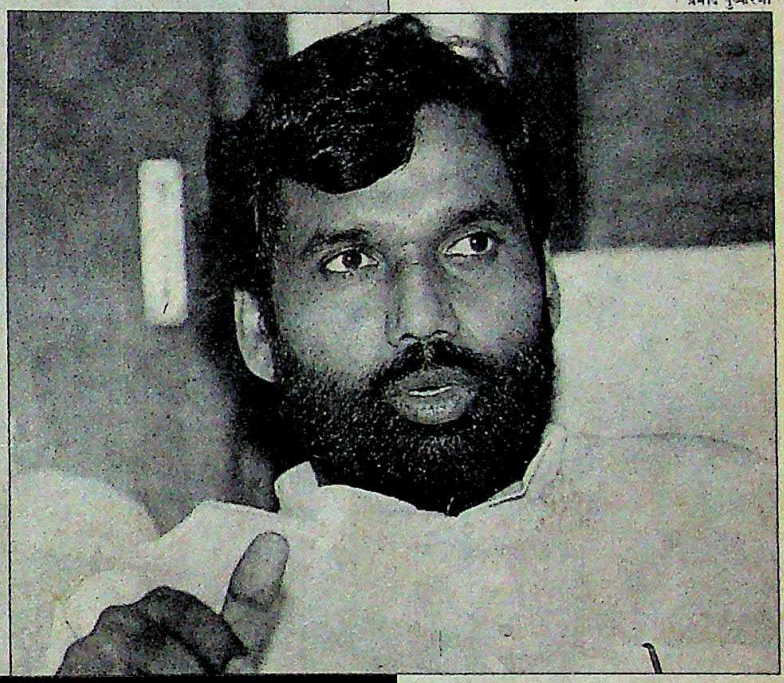

प्रमोद पुष्करणा

कायदों का उल्लंघन

- ईपीएफ ने अध्यक्ष रामविलास पासवान के आवासीय कार्यालय की साज-सज्जा के लिए 1.76 लाख रु. की अनियमित खरीद की जो 45,000 रु. की आधिकारिक सीमा से बहुत अधिक है.
- पासवान ने केंद्रीय ट्रस्टी बोर्ड में प्रस्ताव पास कराए बिना इस खरीद की मंजूरी दी जो परंपरा और नियम का सरासर उल्लंघन है.
- अध्यक्ष के लिए वातानुकूलित टैक्सियों के किराए पर 1.15 लाख खर्च किए गए हालांकि बतौर मंत्री वे स्टाफ कार का उपयोग कर सकते थे.
- वी.पी. सिंह सरकार के गिर जाने और केंद्र के निर्देश के बावजूद पासवान ने ईपीएफ के नाम पर खरीदी चीजें अभी लौटाई नहीं हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमति नवंबर 1990 में ली गई. सीएजी की विस्तृत रिपोर्ट तो अगले वर्ष ही संसद के पटल पर रखी जाएगी पर इस खरीद के लिए ईपीएफ ने जो कारण बताए हैं उन्हें सीएजी ने अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट में अपर्याप्त माना है. ईपीएफ ने अपने बचाव में कहा है कि, "कर्मचारी भविष्य निधि योजना, 1952 के पैराग्राफ 24-ए के अनुसार ईपीएफ के बेहतर कामकाज के लिए अध्यक्ष को किसी भी वस्तु की खरीद का आदेश देने का अधिकार है, चाहे इसके लिए पूंजीगत खर्च करना पड़े या राजस्व का खर्च." दलील में यह भी कहा गया है कि कुछ चीजों को जरूरी और कुछ को गैर-जरूरी श्रेणी में बांटा जा सकता है पर यह मसला पूरी तरह से संगठन के अधिकार-क्षेत्र में आता है और इसके लिए कोई वित्तीय सीमा निर्धारित नहीं है. दूसरे शब्दों में अध्यक्ष जो भी चाहे आसानी से हासिल कर सकता है.

अध्यक्ष की फरमाइश

- डबल बेडः 10,945 रु.
- रंगीन टीवीः 13,500 रु.
- टीवी कैबिनेटः 29,700 रु.
- परदेः 52,300 रु.
- स्टेबिलाइजर सहित एअरकंडीशनर : 27,500 रु.
- वातानुकूलित टैक्सियों का किरायाः 1.15 लाख रु.

प्रदीप सक्सेना

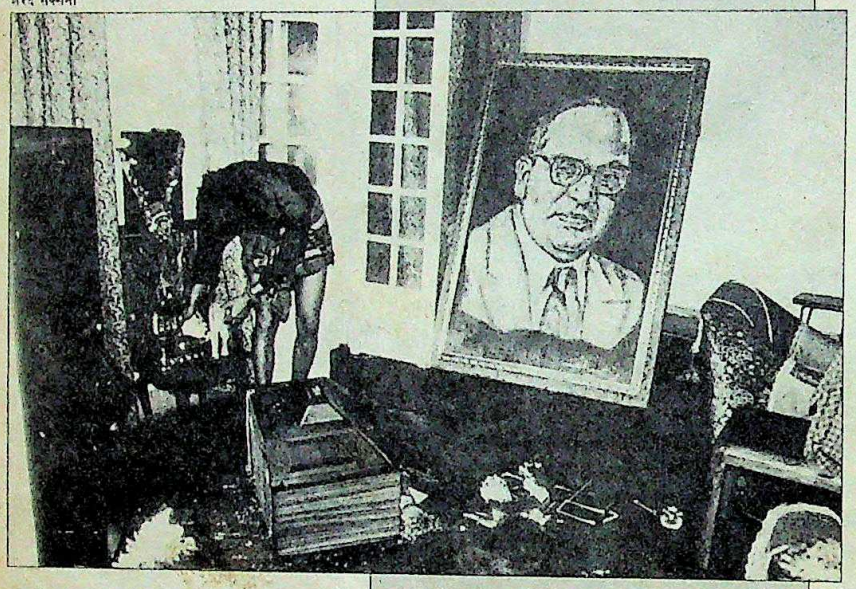

दिल्ली में पासवान के मकान में तोड़फोड़

कर्मचारी भविष्य निधि कोष के अधिकारियों के अनुसार खरीदी गई अधिकांश चीजें पासवान के घर पर अभी भी सुरक्षित हैं

लेकिन सीएजी कार्यालय पर इन दलीलों का कोई असर नहीं पड़ा. सीएजी के अनुसार अध्यक्ष ऐसी खरीद का तब तक अधिकारी नहीं होता, जब तक सीबीटी इसकी मंजूरी न दे. और ऐसा कोई प्रस्ताव सीबीटी के सामने लाया ही नहीं गया. सीएजी के अनुसार, "अध्यक्ष के आवासीय कार्यालय पर किया गया खर्च वाजिब नहीं माना जा सकता क्योंकि अध्यक्ष इस पद पर पदेन रूप से काम करता है. वैसे भी यह खर्च सरकारी निर्देशों के अनुरूप नहीं है. जाहिरा तौर पर खर्च की गई रकम 45,000 रु. से अधिक है. मंत्रियों के लिए साज-सज्जा के सामान पर खर्च की यह सीमा सरकार ने 1984 में ही तय कर दी थी."

इतना ही नहीं, पिछले वर्ष मई और नवंबर के दौरान अध्यक्ष के लिए किराए पर ली गई वातानुकूलित टैक्सियों पर हुए 1.15 लाख रु. के अतिरिक्त खर्च पर भी जांचकर्ताओं ने प्रश्नचिह्न लगा दिया है. ईपीएफ का कहना है कि उसके द्वारा अध्यक्ष को दी गई सरकारी गाड़ी पिछले वर्ष मई में दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी. इसलिए नई गाड़ी की खरीद होने तक 'अध्यक्ष को एक नई टैक्सी दी गई

पर सीएजी कार्यालय इस सफाई से संतुष्ट नहीं हुआ. लेखापरीक्षकों का कहना था कि अध्यक्ष को सरकारी गाड़ी मुहैया कराना और कोई टैक्सी किराए पर लेना, दोनों ही बातें निर्देश के विपरीत हैं कि सरकारी है का कोई भी उद्यम किसी मंत्री के पर उसके उपयोग के लिए कार व्यवस्था नहीं करेगा. पासवान ने खर्च श्रममंत्री की हैसियत से स्टाफ कार आदि पर किए गए 35,0 रु. के खर्च के अलावा किया. मंत्रालय के नए उपमंत्री पवन घटोवार ने इस बारे में पूछे पर बताया, "कोई भी मंत्री अधीन किसी सरकारी उद्यम अपने लिए खर्च करवाने हकदार नहीं है. वैसे, इस मामले मुझे अभी जांच करनी है."

उधर, सीबीटी ने अपनी 12 बैठक में केंद्रीय कार्यालय को निर्दे दिया कि वह तमाम चीजें वा करवा ले. साथ ही श्रम मंत्रा ईपीएफ पर जोर डाल रहा है वह की गई कार्रवाई पर रि दर्ज करे. मामले की जांच में अधिकारियों के अनुसार रा गांधी की हत्या के बाद पासवा निवास पर हुए अग्निकांड सीबीटी की अधिकतर चीजें सुरक्षित रह गई थीं. पासवान ने आश्वस्त भी किया कि वे नि भविष्य में सभी चीजें लौटा देंगे अभी तक ऐसा नहीं हुआ है.

दूसरी तरफ पासवान कुछ और तर्क देते हैं. उनके शब्दों में, "जो मेरे पास था, लौटाया जा चुका है बाकी राजीव गांधी की हत्या के मेरे मकान पर हुए हुड़दंग में स्वाहा गया." लेकिन पूछे जाने पर उन्हों ब्यौरा देने से इनकार किया. उन अनुसार इस घटना का एक और पहलू है जो हमेशा से नजरअंदा किया जाता रहा है. वे पूछते हैं, "एक लौटा दिए जाने पर इन चीजों का होता है? नया मंत्री पुरानी चीजें ले लेता, फिर इन्हें लेता कौन है? क्या अफसरों की भेंट चढ़ जाती हैं? मैंने को इसकी जांच के लिए लिखा है."

यह सवाल प्रासंगिक जरूर हो सक है पर इसका उद्देश्य उस मूल सवाल ध्यान बंटाना ही लगता है कि मंत्रीगण अपने विभाग को निजी स समझकर उससे मनमानी करवाते रहें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़कियां नहीं कठपुतलियां

आजकल अमीना की चर्चा मुल्क भर में हो रही है. शाहबानो के किस्से की तरह अमीना की दास्तान ने भी सबकी नज़रें दोबारा मुस्लिम पर्सनल लॉ की तरफ घुमा दीं.

हमारी नजर में ये मसले न हिंदू हैं न इस्लामी! ये औरत की मजलूमियत के सबूत हैं. एक शेख को पकड़ने से क्या फायदा? ऐसे हिंदुस्तानी शेख तो करोड़ों की तादाद में हर गली में फिरते हैं जिनकी हवस मां और बहनों में भी फर्क नहीं कर सकती.

अमीना का बाप तो गरीब है, अनपढ़ है. उसकी तकलीफ वाजिब है. यहां तो पढ़े-लिखे मां-बाप अपने ज्ञानी और कमाऊ बेटों का सौदा करते हैं, बल्कि जितना पढ़ा-लिखा है उतना ही उसका मोल बढ़ाते हैं. लड़कों की यह 'सेल' ही अमीना को जन्म देती है.

हमें जो दुख है वह यह कि अमीना और शाहबानो के किस्सों को मुसलमानों का ही विषय क्यों मान लिया गया है? क्या अमीना, रूपकंवर और कमला में कोई भेद है? जैसे ही हम औरतों से संबंधित घटनाओं को सियासी मोड़ देते हैं, हम फिर चालबाज़ नेताओं और लालची मर्दों के जाल में फंस जाते हैं. इसीलिए हम कहते हैं कि मुस्लिम पर्सनल लॉ पर चर्चा सिर्फ उस हाल में हो सकती है जबकि मुसलमानों को यकीन हो जाए कि बाकी देशवासी उनका भला चाहते हैं.

चलिए मुस्लिम पर्सनल लॉ की कुछ बातें करें. इसके अच्छे पहलू बहुत कम लोग जानते हैं. यों तो हम उस पर बहस करने के क़ाबिल नहीं हैं लेकिन कुछ बातें हम कहना चाहेंगे. इस्लाम में शादी की बुनियाद दूल्हे-दुलहन की इच्छा होती है. पहली 'हां' हमेशा लड़की से ली जाती है. साफ-साफ शब्दों में वकील मेहर की रकम तय करके उसकी 'हां' सुनता है. कोई जबरदस्ती नहीं चलती और न कोई और उसकी तरफ से शादी के लिए 'हां' कह सकता है. दूल्हे की मर्जी उसके बाद ही ली जाती है. 'निकाह' के समय दुलहन का शादी से इनकार करना कभी-कभी ही सुनने में आता है.

हम ऐसे बच्चों को भी जानते हैं जिनके मां-बाप ने अपनी दोस्ती पक्की करने के लिए उनका निकाह कर दिया. बालिग होने पर इन बच्चों ने इनकार कर दिया, सिर्फ इस कारण कि वे उस समय नासमझ थे. पर्सनल लॉ के बिना उनका यह फैसला कानूनी है. बाद में इन बच्चों ने अपनी मर्जी से शादी कर ली. न घर में हंगामा हुआ, न कचहरी में. इस्लामी कानून में बाल विधवा जैसी कोई बला नहीं है. विधवा या तलाकशुदा औरत के लिए दूसरी शादी करना बिलकुल जायज है. मुसलमानों में इसको बुरी नजर से नहीं देखा जाता बल्कि इस्लाम में यह पुण्य का काम माना जाता है. मुसलमान औरत के लिए विधवा होने पर न सिंदूर पोछने का, न चूड़ियां तोड़ने का जज्बाती दबाव है, न उसको सफेद पोशाक पहनकर एक अछूत की तरह रहना पड़ता है.

अमीना, शाहबानो के किस्सों को मुसलमानों का ही विषय क्यों मान लिया गया है?

जब बाप या पति मरता है तो बेटी और बीवी को उसकी जायदाद का हिस्सा मिलता है. हकीकत में भी मुसलमान मर्द आम तौर से कोर्ट-कचहरी के चक्करों से पहले ही यह जायदाद दे देते हैं. कारण यह है कि मां, बहनों का यह हक मारना इस्लाम में बहुत बड़ा पाप है. अगर कोई मुसलमान बाप विरासत में अपने बेटों को सारी जायदाद छोड़ जाता है तो बेटी कामयाबी से कैसे जी सकती है? ऐसी ही सूरत में हिंदू बेटी कानूनी तौर पर कुछ नहीं कर सकती.

रही बात बाक़ी मांगों की, वे शादी से पहले तय हो सकती हैं. इस्लाम में शादी एक समझौता है, जन्म-जन्म का साथ नहीं. 'निकाह' से पहले बहुत-सी बातें शर्तिया तौर पर 'निकाहनामे' में लिखवाई जा सकती हैं. अफसोस तो यह कि मुसलमान औरतें खुद इन बातों को नहीं जानतीं. मजहब के दायरे में जो हक उनको हासिल है वह भी उन को पूरी तरह नहीं मिलते. अपनी जहालत की वजह से वे समाज के हाथों में कठपुतलियां बनी रहती हैं.

हमारी जब पहली शादी टूटी तो हमने अपने शौहर से रुपया लेना नहीं चाहा. खुद कमाते हैं. किसी और के टुकड़ों पर नहीं पलना चाहते. खुद्दारी तो तभी आ सकती है जब हम रोजी-रोटी के लिए किसी के मोहताज न रहे.

इसी तरह दूसरी शादी पर हमने बड़ी लंबी-चौड़ी शर्तें अपने 'निकाहनामे' में लिखवाईं. अब तलाक का हक तक हमें प्राप्त है. इसीलिए हम डर कर नहीं रहते हैं बल्कि अपने मियां को अपनी उंगलियों पर नचाते रहते हैं. माना कि हम अनोखे हैं. हिंदुस्तान की हर लड़की को इसी तरह अनोखा बनाना हम सबका फर्ज है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंदी

माला भोजवानी

माला भोजवानी हिंदी कहानी के उन नए हस्ताक्षरों में हैं जो अपने आसपास घटने वाले सच को अपने शब्दों में पिरोने और उसे समाज के सामने आईने की तरह पेश करने में विश्वास करते हैं. हिंदी की कई प्रमुख पत्रिकाओं में उनकी कहानियां प्रकाशित हो चुकी हैं. प्रस्तुत कहानी में औरत के दो प्रतिनिधि मगर परस्पर विरोधी चेहरों का रेखाचित्र पेश किया गया है.

"यह सामान भी बाहर रखवा दो." उद्योग केंद्र के बाहर निर्देश दे रही महिला मेरी तरफ पीठ किए होने के बावजूद अपनी आकृति व आवाज से मेरी स्मृति पर चोट कर रही थी.

ट्रैफिक में फंसी मेरी टैक्सी कुछ देर रुक-रुक कर आगे बढ़ी तो अचानक मेरे मस्तिष्क में कौंधा, "अरे! यह तो चिंदी थी." पर तब तक टैक्सी काफी आगे बढ़ चुकी थी और मैं चाहते हुए भी टैक्सी रुकवा नहीं पाई.

घर पहुंची तो श्यामा बाहर इंतजार कर रही थी. "मेमसाब, बेबी बहुत रो रही है, हल्का-हल्का बुखार भी हो गया है." मैं अंदर भागी, अगले तीन-चार दिन रश्मि के बुखार ने मुझे व्यस्त रखा. राकेश घर परिवार में कोई दिलचस्पी नहीं रखता था. ऐसे में जिम्मेदारियों से घिरकर मैं चिंदी को लगभग भूल गई मगर चार दिन बाद रश्मि के स्वस्थ होते ही चिंदी मुझे फिर याद आने लगी. हम इस शहर में नए-नए आए थे. आस-पड़ोस में परिचय भी नहीं था. घर में दो नौकरों, श्यामा और गौतम के सिवा कोई नहीं था, जिनसे मेरी बहुत सीमित बातचीत होती थी. राकेश का देर-रात तक कोई ठिकाना नहीं होता था. ऐसे में रश्मि के अलावा मेरे लिए घर में कोई आकर्षण नहीं था. इसलिए चिंदी जैसी परिचिता का मिल जाना मेरे अकेलेपन के लिए किसी वरदान से कम नहीं था. मैं उससे मिलने के लिए बेचैन हो उठी. अगली दोपहर रश्मि को सुलाकर, श्यामा को आवश्यक निर्देश देकर मैं उससे मिलने पहुंच गई. उस दिन की भांति सामान रखवाती चिंदी मुझे देखते ही मुझसे लिपट गई. "हाय! सुरभि दी, आप यहां? इस शहर में कब आईं? जीजा जी कहां हैं आजकल?" उसके प्रश्नों की बौछार बढ़ती जा रही थी.

"सांस तो लेने दे, जानती है तुझे कैसे ढूंढ़ा है?" हम गैलरी में बेंच पर बैठ गए.

"मैं जल्दी से चाय कह आऊं," चिंदी तेजी से भाग गई. मुझे चिंदी का स्वरूप कुछ अटपटा-सा लगा. सफेद झक साड़ी जहां चौंका रही थी, वहीं पतली-सी लाल किनारी सांत्वना देती प्रतीत हो रही थी. बिंदी विहीन चेहरे पर वही बड़ी-बड़ी पलकों वाली सूनी-सी आंखें. चेहरे पर आत्मविश्वास की आभा जरूर नई थी. यह सौम्य आकर्षण कब पाया इस ने चिंदी ने? कई सौंदर्य प्रसाधनों, वेशभूषाओं से भी जो चमक मैं न उसे चिंदी के चेहरे पर देख मैं असहज होने लगी. मुझे चिंदी से द्वेष? मेरे अंतर्द्वंद्व ने मुझे उलझा दि

"यह लीजिए चाय सुरभि दी," गिलास थामे खड़ी थी.

"तुम यहां काम कैसे कर रही हो और राघव..."

"घर आओ न कभी, वहीं बातें करेंगे," चिंदी ने मेरी बात क

वहां से लौटकर फिर आपा-धा उलझी दिनचर्या में चिंदी को भ दिया. एक दिन दोपहर लॉन में रही थी कि सामने से चिंदी को आ

"हाय! कितना सुंदर घर है आ वह प्रवेश करते ही बोली. अपनी आदत की तरह उसका चहकना बरकरार था. "आपको आमंत्रित क हूं सुरभि दी, मेरे बेटे का कल जन्म आप आएंगी न?"

"चार का हो जाएगा कल," वह दी, "यों तो बस आसपास के बच्चों बुलाया है पर सोचा बहाना मिल आपको तो बुला ही लूं."

कुछ देर ठहरकर वह चली गुनगुनी धूप में आराम कुर्सी में क्षणों को याद करने लगी जब चि मिली थी.

पापा के उस कस्बेनुमा तह ट्रांसफर से घर में सभी अनमने राजीव भैया को कॉलेज हॉस्टल मुझे व मम्मी को लेकर पापा व सरकारी मकान मिलने तक हम एक मकान में रह रहे थे. बस में लड़कि

सभी रेखांकन: सुदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र जब फुसफुसातीं तो मुझे अजीब लगता. एक दिन दो वर्ष छोटी एक लड़की पास आकर बैठ गई. "आप से आई हैं?"

बैंग्लोर से."

"आप तो हमारे पड़ोस में ही हैं न?"

"मैं नहीं जानती तुम्हारा" मैंने रूखेपन से कहा.

पर वह रुके बिना बोली, नाम है आपका?"

"सुरभि." "मेरा नाम चिंदी कल में तो मुझे सब दुर्गा है पर घर का नाम चिंदी आप आएंगी मेरे घर?" साथ में सवाल जड़ दिया. चुप रही. "मैं आऊं?" मैं उतर दिए घर के सामने गई. अगले दिन से चिंदी रोज शाम मेरे घर धमकना कर दिया. शुरू-शुरू में तो निर्लिप्त रही मगर धीरे-धीरे की बड़ी-बड़ी झपकती पलकें ने कैसा वशीकरण मंत्र मुझ फेरने लगीं कि मैं उसके में बंध-सी गई. कभी वह कपड़ों को देखती, कभी लौनों को, कभी पांच पत्थर र कंचा लेकर खेलना खाती तो कभी फर्श पर कोयले से खाने चकर उनमें कूद-फांद करती. पापा को न दी पसंद थी न उसके 'निम्नस्तरीय' खेल. बीच हमें सरकारी मकान मिला और उसमें से चले गए. मैं फिर से अकेली हो स्कूल से लौटने के बाद मैं अपने बड़े से न में चक्कर काटती रहती. एक दिन दूर भागकर आती चिंदी दिखाई दी. मेरे पास ी होकर बुरी तरह हांफते हुए बोली—

"देखा, आखिर ढूंढ़ ही लिया न आपको, रभि दी."

"मैं क्या खो गई थी?"

ऐं! उसकी जादुई पलकों ने झपकना ड़ दिया.

"आप बहुत अच्छी हैं."

"तुमसे भी?" उसके सांवले-से चेहरे पर ग्ध स्मित फैल गई.

आहिस्ता-आहिस्ता वक्त से बेखबर हम पनी मंजिलें तय कर रहे थे. स्कूली शिक्षा म होते ही मैं हॉस्टल चली गई. मेरी हित्य में रुचि देखकर, आर्ट्स दिलवाकर पापा खुश नहीं थे पर मेरा विद्रोही भाव जानते थे. उधर चिंदी भी दसवीं ा में पहुंच गई थी. मेरे आने-जाने की ना उसे न होने के कारण हम बहुत कम मिल पाते थे. ग्रीष्मावकाश में मैं लौटीं तो अगले ही दिन वह आ गई. "आप इतनी देर से क्यों लौटीं?"

"कॉलेज में परीक्षाएं देर से होती हैं."

"मेरा तो रिजल्ट भी आ गया."

राघव को पीने, उड़ाने, घर-परिवार की उपेक्षा की आदत थी. शुरू में मैंने समझाने का बहुत प्रयास किया पर हमारा समाज वो संस्कार ही कहां देता है कि पुरुष औरत की बात को महत्व दे? तरस तो मुझे अपने जन्मदाताओं की असहायता पर आता है

"क्या रहा?" मैं निर्लिप्त बनी हुई थी.

"फर्स्ट डिवीजन." "क्या?" मैं चौंकी.

"क्या फायदा? घरवाले आगे तो पढ़ाएंगे नहीं."

"क्यों?"

"पढ़-लिखकर बिगड़ना है क्या?" वह व्यंग्य से बोली.

"तुम्हारे काला अक्षर भैंस बराबर मां-बाप को यह भी पता है कि बिगड़े-सुधरे में क्या फर्क होता है?" पास बैठे पापा उबल पड़े, "हिंदुस्तान इन जैसे जाहिलों की वजह से ही तो बरबाद हो गया है. अंगूर न मिलें तो खट्टे हैं." चिंदी चुपचाप उठकर फाटक से बाहर हो गई. बहुत दिनों तक मैं उससे मिल नहीं पाई. किताबें-पढ़ाई-परीक्षा-रिजल्ट, यह चक्र जैसे थमता ही नहीं. द्वितीय वर्ष में परीक्षा तैयारी की छुट्टियों में मैं घर आई तो चिंदी आ गई, "अंकल तो नहीं हैं न?"

"नहीं हैं, आ जा."

"सुरभि दी, मुझे भी पढ़ना है, यदि आप मदद करें तो?" उसके बाद मैंने उसकी किताबों का प्रबंध किया, फार्म भी जाकर भरा, उसे यथासंभव पढ़ाया भी मगर परीक्षा के दिन मैं उसके सेंटर से वापस बैरंग लौट आई. इतना गुस्सा आ रहा था कि कहीं मिल जाए तो दो थप्पड़ रसीद करूं. मगर मिलने पर उसकी आंसुओं से झिलमिलाती आंखों में अपना अक्स देखकर मैं खामोश हो गई.

"मेरे भाई ने मुझे पढ़ते हुए देख लिया सुरभि दी, उसने मुझे बहुत मारा, किताबें भी फाड़ डालीं. अब तो घूमना-फिरना भी बंद, बड़ी जो हो गई हूं."

"कहां तक पढ़ा है तुम्हारा भाई."

"बी.एस.सी. किया है."

"फिर भी?" मैं चकित रह गई.

"सब कहते हैं तुम्हें तो रोटी पकानी है और फिर पढ़ा-लिखा लड़का भी तो महंगा मिलेगा न?"

उसकी उम्र से अधिक परिपक्वता मुझे नागवार लगी. "देखना अगले साल मैं जरूर परीक्षा दूंगी."

मैंने अगले साल फिर सारी खानापूर्ति की. इस बार चिंदी ने मेरा खूब दिमाग खाया. मेरी किताबों के ढेर में हर वक्त सेंध लगाना उसकी आदत हो गई. अपने भाई और पिता के घर से बाहर जाते ही वह मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास भाग आती. मगर नतीजा कुछ नहीं निकला. ऐन वक्त पर उसके भाई की शादी आ खड़ी हुई, और चिंदी फिर गोल हो गई.

"शादी क्या बार-बार होती है सुरभि दी," वह जैसे वक्त के साथ किए गए समझौते पर हस्ताक्षर कर रही थी.

"तू अपनी और अपने भविष्य की सोच. तेरे अनगिनत भाई-बहनों में से कुछ की शादी तेरे देखने के लिए बच ही जाएगी." इस बार मैं अपना गुस्सा जज्ब नहीं कर पाई. अंतिम वर्ष की परीक्षा देकर छुट्टियों में लौटी तो अगले दिन फिर चिंदी आ गई, "मेरा एक काम है."

"क्यों? फिर पढ़ने का शौक चर्राया है?"

"नहीं, आप मेरे साथ ब्यूटी पार्लर चलो."

"क्या!" मैं जैसे छत से गिरी. मुझे याद था एक बार उसके बाल मैंने जरा-से बराबर किए तो उसने कितनी मार खाई थी. "तेरी अम्मा?"

"मेरी सगाई हो गई है सुरभि दी?" वह थोड़ा-सा शरमाई.

"अभी एक बारात के साथ वो भी आए थे. मुझे ठीक ढंग से रहने को कह गए हैं. अब तो मां का अधिकार खत्म न?"

"और पति का शुरू?" न चाहते हुए भी मेरा स्वर तिक्त हो गया.

"छोड़ो भी सुरभि दी, आप हैं ऊंचे खयालों की मगर मेरे जैसी तो बस ठिकाने भी लग जाए तो क्या कम है?"

ब्यूटी पार्लर से लौटते हुए मैं उस नई चिंदी में पुरानी चिंदी खोज रही थी. कटे बाल, सधी बरौनियां, लिपा-पुता चेहरा. हर बार यह दूसरों के लादे फैसले स्वीकार क्यों कर लेती है, यह विद्रोह क्यों नहीं करती? क्या इसे अस्तित्व बोध नहीं है? मुझे नए स्वरूप के बावजूद चिंदी जंची नहीं. मेरा उसके प्रति प्रेम दया में बदलने लगा. उसकी शादी में मैं चाहकर भी जा नहीं पाई. बी.ए. के बाद मैंने पत्रकारिता का कोर्स किया जिसके दौरान मेरी राकेश से मुलाकात हुई. मेरी रुचियों, प्रतिभा, महत्वाकांक्षा की राकेश हर समय प्रशंसा करता. मेरा एक स्थान बनाने के उसके वादे पाकर मैं मुग्ध हो जाती थी. इसीलिए पापा के तमाम विरोध व संदेहों के बावजूद मैंने राकेश से ही शादी का फैसला कर लिया. मेरी आधुनिकता व अतिरिक्त अस्तित्व बोध की तुष्टि का एकमात्र जरिया शायद मैं इसे ही समझने लगी थी. पर शादी के कुछ समय बाद ही सपने भरभराकर चूर होने लगे. राकेश को मैंने अपनी जड़ों से उखड़कर अपनाया पर वह मुझे वैसा कुछ नहीं दे पाया कि मैं फिर से खिल पाती. पहले मैं उसके अति हस्तक्षेप से विकल रही तो बाद में अति-उदासीनता से. उसे न मेरा लेखन पसंद था, न नौकरी. घर से सहेजकर लाए इनामों के ढेर को देखकर मेरे अंदर हूक-सी उठती थी. जब कभी शिकायत करती वह बिफर उठता, "क्या नहीं है तुम्हारे पास? न काम, न जिम्मेदारी. दो दो नौकर हैं, चाहो तो एक और रख लो पर मुझसे यह अपेक्षा मत करो कि प्रेम-विवाह किया है तो बस चौबीसों घंटे तुम्हें निहारने का काम ही बच गया है मेरे पास." मैं आवाक रह जाती. किससे कहती? बजाए शिकायत करने के मुझे घरवालों के सामने खुशी का ढोंग करना पड़ता था. दूसरों को भरसक धोखे में रखा जाए पर खुद को छलते हुए जो मानसिक यंत्रणा मैं झेल रही थी, वह मुझे खोखला करती जा रही थी. रोज-रोज होने वाले तबादलों ने मेरे सामाजिक जीवन का अंत ही कर दिया था. किसी तरह घिसटता हुआ जीवन बस गुजर रहा था. राजीव भैया की शादी तय हो गई थी. मां ने खत लिखा कि कम-से-कम पंद्रह दिन पहले आना. सारी खरीदारी मुझे ही करनी है. राकेश से मैंने जिक्र किया तो बिफर उठा, "तुम न होती तो राजीव की शादी ही नहीं होती शायद. है न? महीने भर पहले जाओ मेरी बला से पर मुझे माफ करो. मैं शादी के दिन ही आऊंगा और अगले दिन चला जाऊंगा. तुम्हारी तरह निठल्ला तो नहीं हूं न?"

पहले जिस चिंदी पर मैं तरस खाया करती थी आज उसकी बेबसी को मुझसे बेहतर कौन समझ सकता था. पर अब उसका यह रूप, नौकरी सब उसके व्यक्तित्व को रहस्यमय-सा बना रहे हैं. मैं चिंदी को गौर से देख रही थी. ग्यारहवीं जमात तक पढ़ी यह लड़की इतना ज्ञान कहां से पा गई!

हमारे संबंध शायद मजबूरी के [illegible] जिन्हें हर हालत में लादे रखना [illegible] अब न मुझे राकेश की उदासी [illegible] शिकायत रह गई थी, न उसे [illegible] चिड़ेपन से. इसी को अहं का [illegible] कहते हों शायद.

मम्मी के पास जाकर रोजाना [illegible] दुकानों के चक्कर लगाती रही. [illegible] महरी बोली—

"सुरभि बीबी, चिंदी [illegible] मिलोगी?"

"अच्छा! कब आई?"

"कल ही, वो तो आपसे मिलना थी पर उसका खसम यहां ही है तभी आवेगी."

उसके पति राघव से मिलने की [illegible] थी इसलिए भैया की शादी का [illegible] मैं उसके घर जा पहुंची. पतली-दुबली का सांवला-सलोना रंग बिलकुल [illegible]

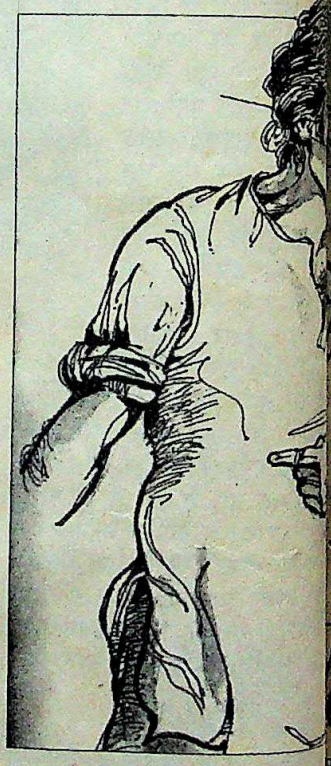

गया था. गोद में सात-आठ [illegible] कृशकाय बच्चा चिपटा हुआ था. [illegible] बुझी-बुझी चिंदी में जैसे कोई उमंग [illegible]

"आएगी न शादी में, अभी कित [illegible] यहां रहेगी." मेरे शब्द समाप्त भी न [illegible] कि चिंदी का पति राघव दरवा [illegible] चिल्लाया, "चल जल्दी सामान बां [illegible] बजे चलेंगे."

"क्यों बेटा? तू तो महीने भर [illegible] कह रहा था." चिंदी की मां भी आ [illegible]

"महीने भर वहां काम कौन [illegible] यहां मजे से बैठकें करें और वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए शब्दों को बीच में छोड़कर मेरी तिरछी नजर डाली. "सुना नहीं क्या तक?" उसने चिंदी को बांह पकड़कर घसीट ही डाला. अपने आंसुओं को ने का असफल प्रयास करती हुई चिंदी से भाग गई.

या की शादी में चिंदी की मां आई. की बात करते हुए फूट-फूटकर रोने "क्या बताऊं बेटी, जाने क्या दिमाग के पति का? शराब पीकर मार-पीट है. जब चाहे यहां छोड़ जाता है, जब ले जाता है. आठ महीने का बच्चा है, से गर्भ है. जाने कैसी किस्मत है मरी मर ही जाएगी."

सोचती रही. क्या फर्क है राघव और में? राकेश पर झूठी शानो-शौकत शिक्षा का मुल्लमा न चढ़ा होता तो वह भी राघव ही नहीं होता? दोनों ही हैं—औरत को अपनी जागीर

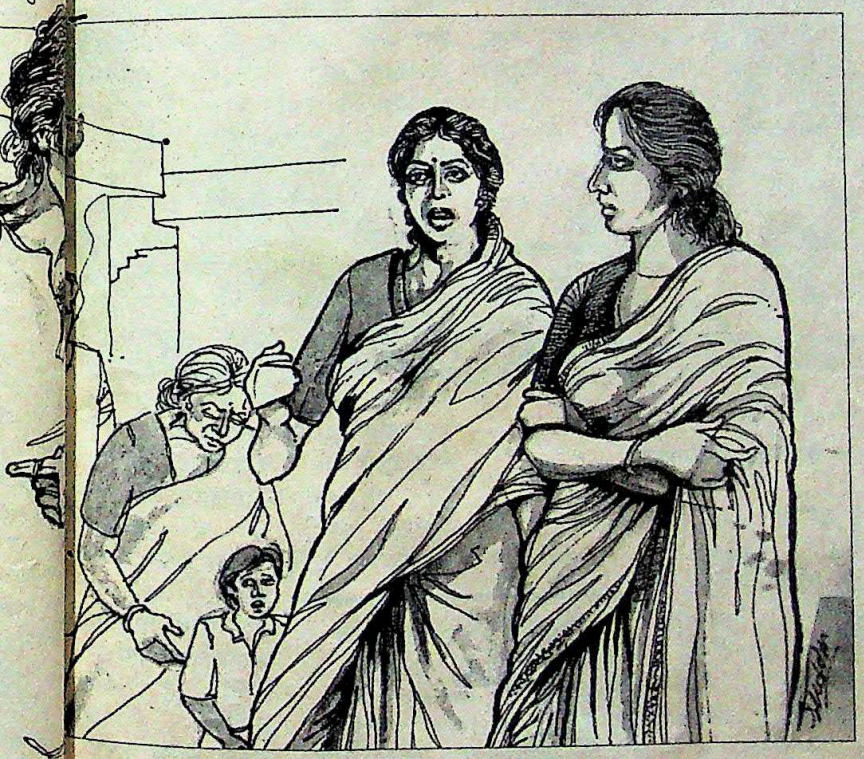

मझने वाले, अपने डण्डे से हांकने वाले. ये दी करते हैं या औरत की हत्या?

कुछ दिनों बाद मां की चिट्ठी आई. खा था, "चिंदी मायके आई थी. ससुराल सीढ़ियों से गिर गई थी. गर्भवती तो थी उसकी हालत बहुत गंभीर हो गई थी. छ दिन तो रही, उसका पति फिर घसीट ले गया."

पहले जिस चिंदी पर मैं तरस खाया ती थी आज उसकी बेबसी मुझसे बेहतर न समझ सकता था. पर अब उसका यह नौकरी सब उसके व्यक्तित्व को रहस्यमय-सा बना रहे थे.

"चाय ले आऊं मेमसाब," श्यामा ने मेरे अतीत की पोटली बांध दी.

अगले दिन मैं तोहफा लेकर चिंदी के घर जा पहुंची. चिंदी मेरे पास आकर बैठ गई. उसका बेटा भी मोहक हो गया था.

"क्या नाम रखा है इसका?"

"विशाल," चिंदी यों मुस्कराई मानो अपने जीवन में झेली संपूर्ण पुरुष संकीर्णता का कोई अचूक समाधान खोज लिया हो.

उसके पति की अनुपस्थिति मुझे कचोट रही थी. आखिर मुझसे रहा नहीं गया, "क्या राघव यहां नहीं है?"

"बताऊंगी, आपको सब कहूंगी सुरभि दी. आप तो जानती ही हैं मेरे घरवालों ने मुझे हमेशा अपनी पसंद का खूंटा दिया पर मैंने उसे हमेशा सहेजा ही, कभी तोड़ने की कोशिश नहीं की. शुरू से ही राघव को पीने, उड़ाने, घर परिवार की उपेक्षा की आदत थी. शुरू में मैंने समझाने का बहुत प्रयास किया पर हमारा समाज वो संस्कार ही कहां देता है कि पुरुष औरत की बात को महत्व दे? घर में अन्न के लाले थे. मां से आग्रह कर मैंने उद्योग केंद्र से कुछ काम लाना शुरू किया. घर पर कपड़ों की सिलाई भी की. इस तरह घर में आटा तो आने लगा पर शांति कहां से आती? राघव की मार-पीट, क्रूरता का जिक्र मैं जब कभी मायके में करती सब खामोश हो जाते. मुझे राघव के व्यवहार से उतना दुख नहीं हुआ, जितना अपने जन्मदाताओं के रवैए से, जो पीड़ित तो थे पर मेरी सहायता नहीं कर सकते थे क्योंकि समाज से डरते थे."

"ऐसा होता है चिंदी."

"पर क्यों होता है सुरभि दी? हमारे लिए अपनों का सुख महत्वपूर्ण है या निंदा?" चिंदी का चेहरा लाल हो गया. "उद्योग केंद्र की सिलाई प्रशिक्षिका हालांकि अविवाहित थी पर मेरे दर्द को समझती थी. एक दिन बुखार से तपते विशाल को अस्पताल ले जाने के बजाए जब उस दरिंदे ने उसे जमीन पर दे मारा क्योंकि उसे शराब के पैसे कम नहीं करने थे तो मेरा खून खौल उठा. जो व्यक्ति अपनी संतान तक के प्रति इतना संवेदनहीन है उससे मैं क्या अपेक्षा करती? मैंने उस मानसिक और शारीरिक शोषण की जिंदगी को त्यागने का फैसला कर लिया. मैंने उसे छोड़ दिया सुरभि दी. सिलाई प्रशिक्षिका ने मुझे आसरा दिया. काम मेरे पास था ही. मेहनत से यों भी मुझे गुरेज नहीं रहा. अब मैं संतुष्ट हूं, पूरी तरह."

मैं चिंदी को गौर से देख रही थी. ग्यारहवीं जमात तक पढ़ी यह लड़की इतनी जान कहां से पा गई?

"तुम अकेले खुश हो चिंदी," मेरा अहं उसके भीतर की किसी अनदेखी पीड़ा को खींचकर निकालना चाहता था. मैं उसके संतुष्ट जीवन के सभी आधारों को ठोक-पीटकर जांचना चाहती थी, शायद कुछ भरभराकर गिर जाए. भला मैं यह कैसे स्वीकारती जो मैं नहीं कर पाई वह चिंदी ने कर लिया?

"खुशी तो मृग मरीचिका है सुरभि दी, सबसे बड़ा है आत्म सम्मान. मैं जिल्लत की जिंदगी से मुक्ति पा गई हूं. अब मेरा उद्देश्य है कि मैं अपने बेटे को राघव जैसे पुरुषों जैसा छिछला न होने दूं. यों भी रिश्ते ढोने और घसीटने में अब मेरा विश्वास नहीं रहा. और फिर मैं आप जैसी हूं नहीं." चिंदी के शब्द मुझे गहराई तक झिंझोड़ गए. कैसा सत्य उभारा था चिंदी ने. सचमुच में मैं उसके जैसी कहां थी. मेरे लिए आधुनिकता महज घूमने-फिरने, फैशन और अपनी पसंद के विवाह से अधिक और क्या थी? क्या मैं अपनी तमाम आधुनिकताओं और डिग्रियों के बावजूद वह बन पाई जो चिंदी बन गई थी? यह कैसी विडंबना है! मेरा मन बार-बार इन्हीं सवालों में डूब-उतरा रहा था. क्या यह हमारी स्थितियों का फर्क है?

अचानक मुझे लगा कि चिंदी, चिंदी न होकर सचमुच दुर्गा हो गई है जबकि मेरा वजूद अपनी सुरभि में खोकर चिंदी-चिंदी हो चुका था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता संग्रह

सार्थक संवाद

परंपरा पर व्यंग्यात्मक दृष्टि

चार भागों में बंटी छियालीस कविताओं का विजयदेव नारायण साही का ज्ञानपीठ से प्रकाशित यह कविता संग्रह उनके कवि जीवन की विकास यात्रा जैसा है.

'संवाद तुमसे' उस 'तन्मय उन्माद' की सच्ची अभिव्यक्ति नहीं है, जिसकी 'प्रस्तुति' कंचनलता साही ने करनी चाही है. दरअसल अप्रकाशित और शेष कविताओं का संकलन हमेशा खतरनाक होता है क्योंकि स्वयं कवि के चुनाव और किसी अन्य के चुनाव में बहुत अंतर होता है. नतीजा यह कि जो एकसूत्रता साही के अन्य संग्रहों में है, वह इसमें नहीं. यदि किसी नए पाठक, जो साही को पहली बार पढ़ रहा हो, के हाथ यह संग्रह लग जाए तो 'साखी' जैसी साख बनना संभव नहीं.

संवाद तुमसे
कविता संग्रह
विजयदेव नारायण साही
भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
कुल पृष्ठ: 102
कीमत: 45 रु.

इसमें प्रमुखता है उन कविताओं की जिसका धरातल है—धरती-आकाश का भौतिक संसार और उस पर ताने-बाने बुने है भावनाओं के, संकल्पों-विकल्पों के, आह्लाद-विषाद के और वैचारिक द्वंद्व के. वातावरण से अर्थ का दोहन, उसी से अर्थ का प्रदीपन और फिर अंततः 'तन्मय उन्माद' प्राप्त करना हर रचनाकार का ध्येय होता है. 'इलाहाबादः आधी रात', 'रात में गांव', 'दोपहरः नदी स्नान' इस श्रेणी की अच्छी कविताएं हैं.

साही के प्रशंसक साहित्य जगत में बहुत अधिक नहीं हैं क्योंकि साही की कविताओं में अर्थ बिजली की तरह नहीं चमकता बल्कि सुबह के सूरज की तरह धीरे-धीरे रोशन होता है. 'एक बाप, एक मां और लड़कियां', 'कहां तक जाओगे', 'विषकन्या के नाम', 'कामयाब' ऐसी ही कविताएं हैं. इन्हें धीरे-धीरे और बार-बार पढ़ो तो अर्थ में निखार आता जाता है. अज्ञेय की तर्ज पर संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग करने वालों में साही काफी आगे हैं. बौद्धिक और विवेकमय अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग अधिकांश स्थानों पर सटीक है पर साथ ही कहीं-कहीं ध्वन्यात्मकता में बाधक भी. इसीलिए इनकी कविताओं को गद्य का यथार्थ और काव्य की संवेदनशील अभिरुचि का प्रस्तुतीकरण माना गया है. इस संग्रह की कविताओं में भी वे सफल हुए हैं ऐसे प्रस्तुतीकरण में.

तीन कविताएं लयबद्ध हैं, जैसे 'खामोश','धड़कनें', 'सावन की दोपहर (1) और (2). तीन ही कविताएं अच्छी हैं. 'सावन की दोपहर' तो छायावादी प्रकृति चित्रण की याद दिलाती है. 'खामोश धड़कनें' की इन पंक्तियों में अंदर के दर्द का सिलसिला, सहनशीलता और मजबूरी का सटीक चित्रण है—*दर्द से जैसे झुकी जाती हैं पलकें बार-बार/और रोने में भी पहले-सा मजा आता नहीं.*

यह संग्रह दो किस्म के पाठकों के लिए है जो साही की अप्रकाशित कविताओं का सकलन चाहते हैं, उनके लिए; जो साही की कविता यात्रा के पड़ाव के साथ-साथ नई कविता में रुचि रखते हों, उनके लिए.

—चित्तरंजन खेतान

कहानी संग्रह

यथार्थ के सूत्र

पर कथ्य में संकरापन

हिंदी कहानी के खास तरह के लोकतांत्रिक-बोध को हम तीन कहानीकारों के संयुक्त कथा-संकलन 'दिलावर खड़ा है' की कुल जमा पंद्रह कहानियों के माध्यम से रेखांकित कर सकते हैं. देवेंद्र कुमार, विजय किशोर मानव और प्रकाश मनु की लिखी इन कहानियों को पढ़कर समकालीन, लतियाये हुए जीवन के अनेक चित्र हमें देखने को मिलते हैं. संकलन की कुछेक कहानियों में अभावों का चीत्कार अधिक मुखर है तथा अभावों के चलते, नकली जीवन जीते चले जाने की थरथराहट भी है. वात्सल्य से रौद्र तक की यात्रा कराती ये कहानियां हमें देर तक और दूर तक व्यथित करती रहती हैं.

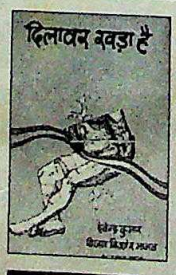

दिलावर खड़ा है
कहानी संग्रह
देवेंद्र कुमार, विजय मानव, प्रकाश मनु
मगध प्रकाशन, दिल्ली
कुल पृष्ठ: 60
कीमत: 134 रु.

इन तीनों कहानीकारों पर कुछेक अलग-अलग भी कही जा सकती है. कुमार की कहानियों में एक खास तरह सादगी तथा खदबदाहट मिलती है. कथ्यों को जिस तापक्रम में उठाया गया वहां शायद किसी शोर की जरूरत नहीं. समाज के लगभग 'अमंगल' हो पात्रों को वे अपनी कहानी में मुख्य देते हैं तथा बहुत ही सादगी से उन्हें सौंपते हैं. 'संबंध', 'दिलावर खड़ा है' 'चिड़िया' वास्तव में प्रभावपूर्ण कहा हैं. यदि देवेंद्र कुमार वातावरण की पर पाठक को चढ़ाकर कहानी की पार कराते हैं तो विजय किशोर घटनाओं के छोटे-मोटे पुंज को जो कहानी के साथ पाठक को आबद्ध कर हैं. मानव को कहानी के लिए घटनाओं धीरे-धीरे सुलगाना पड़ता है, चाहे देह मांग हो, रोजगार की, अभावों की फिर घनी मुसीबतों के बीच यक खिलखिला आया गुलाब हो— वे क को सदा संवेदनशील बिंदुओं में उल रखते हैं. यही सही है कि इन कहानि निर्णय जैसे निष्क्रिय दुमच्छल्लो को जोड़ा गया मगर अपने कथ्यों की अंति तक आते-आते ये कहानियां कुछ सं अवश्य हो जाती हैं. और यह बात प्र के स्तर पर मानव की कहानियों खटकती है.

प्रकाश मनु की कहानियां जीवन संताप की पाठक को यात्रा कराती आज की बहुआयामी शोषण की जुताई आज पहले दर्जे का आदमी क्या बन है— यह बात कहानीकार को परेशान करती है. ये कहानि मानवताद्रोह के कुचक्र को हमारे सा लाती हैं. मगर ज्ञात चीखों के च इनका कथ्य कम जाता है इसीलिए प्रभाव में ये 'अ हो उठती 'असहमति', 'अं उदास है' 'यात्रा' अपेक्षा दक्ष रचनाएं हैं.

सचेत पाठक या समीक्षक में बेह पढ़ने की भूख होती है. जब यह बेह अपने तमाम आरंभिक लक्षणों के मौजूद होती है तो उसकी भूख और बढ़ जाती है. इन कहानियों को पढ़ यही हर्ष और विषाद की मिश्रित स्थि उत्पन्न होती है.

—राजकुमार गौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Indian price range for world class office shirts has just been fixed...

Don't pay in Dollars

At Indian Rupees 150 to 275.

BLUECHIP

THE OFFICE SHIRT

Avenues HH 112091

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सस्तापन तो नहीं

एअरकंडीशंड सेठ स्टुडियो में लगे, फिल्म 'मीरा का मोहन' के सेट का वह नजारा सचमुच दिलकश था. दिलकश इसलिए कि जिन **अश्विनी भावे** ने स्व. राज कपूर का सपना कही जाने वाली फिल्म 'हिना' में जरा भी अंग प्रदर्शन करने से साफ इनकार कर दिया था, वे यहां नए हीरो दीपक के साथ ऐसी स्किन टाइट ड्रेस में प्रेम दृश्य कर रही थीं जो किसी भी लो-कट पहनावे को आसानी से मात देने के लिए काफी थी.

दबी जुबान में अश्विनी यह आरोप दोहरा चुकी हैं कि 'हिना' में उनकी प्रतिभा को जाया किया

अश्विनी: अपना अंदा

गया, उन्हें कुछ कर दिख अवसर ही नहीं दिए गए.

तो क्या अब अश्विनी प्रदर्शन न करने की नीति परित्याग कर चुकी हैं? मैंने कब कहा?" अ प्रतिकार करती हैं, "क देखिए—क्या कहीं से भी है? बेवजह गोलाइयों पर छंटी है? ज्यादा ऊंची या नीची है? ऐसी 'चीपनेस' मंजूर नहीं."

समझे आप? यह है अ का ग्लैमर प्रदर्शित कर अपना तरीका—समझौते सस्तेपन से दूर फिर भी रंग भरपूर!

मायूसियों पर मुलम्मा

फिल्मसिटी में आउटडोर शूटिंग करती **पल्लवी जोशी** मिलीं. 'मृगनयनी' को लेकर प्रशंसकों की प्रतिक्रिया के बारे में पूछने पर वे चहकीं, "हिंदुस्तान भर से तारीफ की चिट्ठियां आ रही हैं. जहां जाती हूं, लोग निन्नी-निन्नी

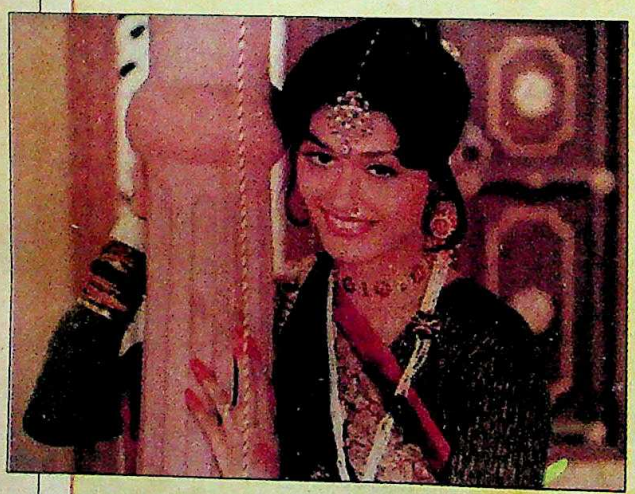

पल्लवी: सफल 'अभिनेत्री'

कहकर घेर लेते हैं. बड़ा संतोष मिल रहा है मुझे."

लेकिन पल्लवी वह भूल गईं जो वे आगे-पी को खुद बता चुकी हैं—'कब तक पुकारूं' से कमाई थी, 'मृगनयनी' ने धो दी. फैन नाराज है कि "मैंने ऐसा सीरियल लिया ही क्यों जिसमें मैं मिसकास्ट हूं."

जितनी फुरसत में पल्लवी अभी हैं, कभी नहीं थीं. लेकिन उनसे कभी भी मिलिए, मुस्कराहट ओढ़े बातचीत बस एक ही बात से शुरू करेंगी, "अभी-अभी शूटिंग से आ रही हूं."

भीगना अब नहीं भाता

उस नामी निर्माता को, जिसकी हर फिल्म का ना से ही शुरू होता है, इस बात का पता नहीं था कि पा लिए मशहूर अभिनेत्री **एकता** पानी के जिक्र पर उ पानी-पानी कर देंगी. लिहाजा, उसने अपनी नई फि प्रस्ताव रखने के साथ-साथ बात साफ कर दी, 'प भीगने और झरने में नहाने के बड़े लाजबाव आर्टिस्टि होंगे फिल्म में.'

निर्माता ने सही ही सोचा होगा कि जब हर दूसरी में एकता बेवजह भीगती-सीजती रहती हैं तो भिगा कलात्मक वजह सुनकर भला क्यों इनकार करेंगी? एकता ने श्लीलता और अश्लीलता पर ऐसा लेक्चर कि कि खुद प्रोड्यूसर पर घड़ों पानी पड़ गया.

एकता का एतराज हालांकि सही था—क्यों हर निर्माता उनके पास सिर्फ भीगने और देह दिखाने के ही प्रस्ताव लेकर आता है? लेकिन इतना पता तो एकता को खुद भी हो जाना चाहिए कि इस इंडस्ट्री में तौलिया और स्विमिंग सूट पहनकर सहज में प्रवेश कर लेने वाली अभिनेत्रियां फिर परदे पर इनसे अधिक कुछ पहन ही नहीं पातीं.

एकता: एतराज है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ल्पनालोक में

बात नाराज होने की थी या नहीं, इसका फैसला तो क ही करेंगे लेकिन **डिंपल** प्रस्ताव सुनकर जिस तरह रेक्टर को जलील करने की सीमा तक उतर आईं, उससे ता है कि वे यथार्थ में नहीं, कल्पनालोक में जी रही हैं. सिवाय 'जूनी' के, कोई खास बड़ी फिल्म डिंपल के पास नहीं. जिन नायकों के साथ उनकी जोड़ी बनाई जा सकती सभी उन्हीं की तरह निर्वासित से बैठे हैं. इन हालात में प्रस्ताव भला क्या बुरा था कि डिंपल करिश्मा की मां रोल कर लें?

पलः मोह टूटा नहीं

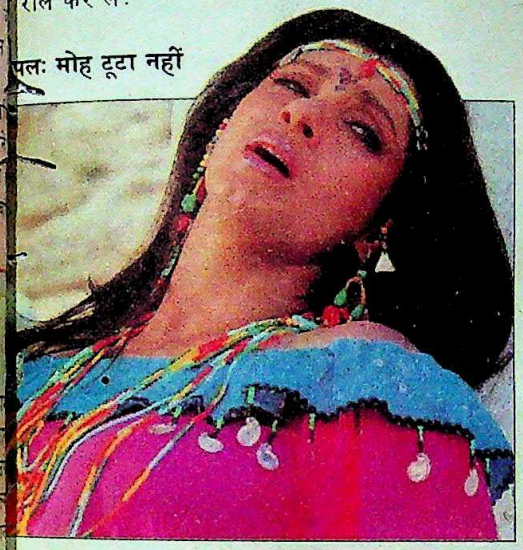

डिंपल का तर्क यह था कि सही रोल दिया जाए तो वे ब भी कई करिश्माओं को मात दे सकती हैं. लेकिन इस ल का जवाब उनके पास भी नहीं था कि दर्शक डिंपल की वेटियों की बात कैसे भूल जाएगा जो अब खुद हीरोइन ने की उम्र की हो चली हैं?

ले डूबे यजमान

पार्टी में इस दोस्ती पर कुछ ज्यादा ही उंगलियां उठ रही थीं. वैसे, अभी कुछ समय पहले तक लोग इन्हीं **वर्षा उसगांवकर** को 'लकी' बताते नहीं थक रहे थे क्योंकि मिठुन चक्रवर्ती जैसे इसी स्टार ने उन्हें अपने संरक्षण में ले रखा था.

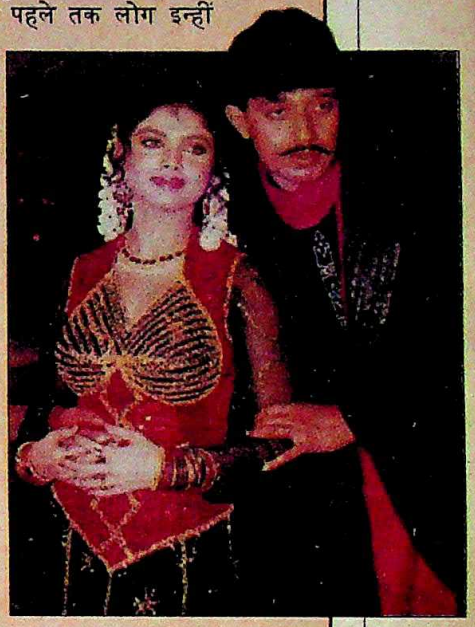

वर्षा और मिठुनः आक्षेप

बहरहाल, पार्टी में जैसे ही मिठुन चक्रवर्ती और वर्षा उसगांवकर हाथों में हाथ डाले प्रविष्ट हुए, चर्चाएं जैसे एक सवाल पर आकर अटक गईं—'कब टूटेगा यह साथ?' इधर, मिठुन कई दिन बाद किसी पार्टी में आए थे इसलिए जो गर्मजोशी उनके लिए होनी चाहिए थी, नदारद थी. जल्दी ही मिठुन को एहसास हो गया कि पार्टी में हवा सहज नहीं, भारी-भारी है. लोगों ने उन्हें सुनाकर तुरंत फब्ती कस दी—'आप डूबे बामणा, ले डूबे यजमान'

इसके बाद हालांकि मिठुन वहां ज्यादा देर नहीं ठहरे लेकिन पार्टी का यह स्वर बदला नहीं कि नई लड़कियों का कैरियर संवारने की कोशिशों में लगे रहने की जगह अगर मिठुन ने खुद के कैरियर पर ध्यान केंद्रित रखा होता तो आज 'सिल्वर जुबली ऑफ फ्लॉप्स' यानी 25 असफल फिल्में देने वाले हीरो का लेबल न लगा होता उन पर.

ार उतारने पर उतरे

अब यह बता पाना तो मुश्किल है कि यह नतीजा किसने काला—खुद **शक्ति कपूर** ने या उनकी बीवी शिवांगी ोल्हापुरे) ने. लेकिन इतना र है कि जितने भी तांत्रिक नुष्ठान किए गए, वे एक-दूसरे सहमति और सहयोग के ना संपन्न नहीं हो सकते थे. इन नुष्ठानों की वजह से शक्ति ाब से दूर रहे, मांसाहार से रहे लेकिन भस्म और भभूत मेकअप इतना रहता था कि पूरे हफ्ते वे घर से बाहर निकल सके. और घर से र निकलते ही प्रतिज्ञाएं भंग

तः तांत्रिक शक्ति पर भरोसा

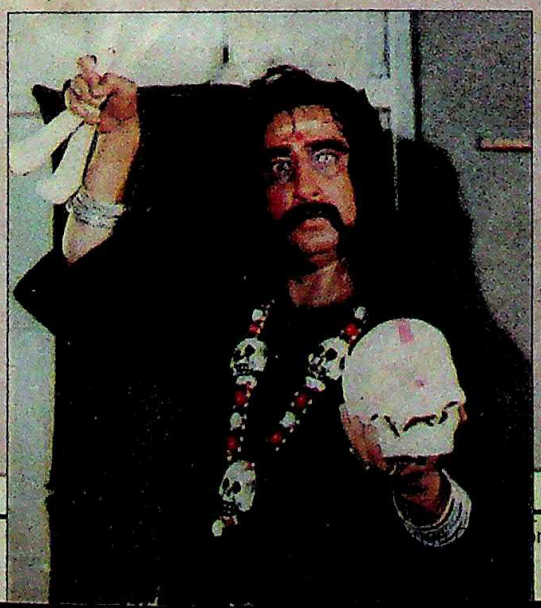

हो जाने का जो खतरा था, सो अलग.

कॉमिक खलनायकी छोड़ हीरो बनने की जिद पकड़ने के बाद से शक्ति के कैरियर का ग्राफ जिस तेजी से नीचे आया, उसमें नए कॉमेडियंस की सफलता का भी हाथ रहा है. लेकिन इस कड़वी सचाई को न तो शक्ति स्वीकार करने को तैयार थे, न शिवांगी. सचाई को स्वीकारने के बदले दोनों में से जाने किसने नतीजा यह निकाला कि कैरियर डगमगाने की असली वजह है बुरी नजर. इसके बाद ही शुरू हुई जादू-टोने की हफ्ते भर की कार्रवाई.

अपनी 'सुखी गृहस्थी' पर किसकी नजर लग जाने का शक था शिवांगी को? खबर है कि प्रेम विवाह करके अलग रह रही बहन पद्मिनी पर.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

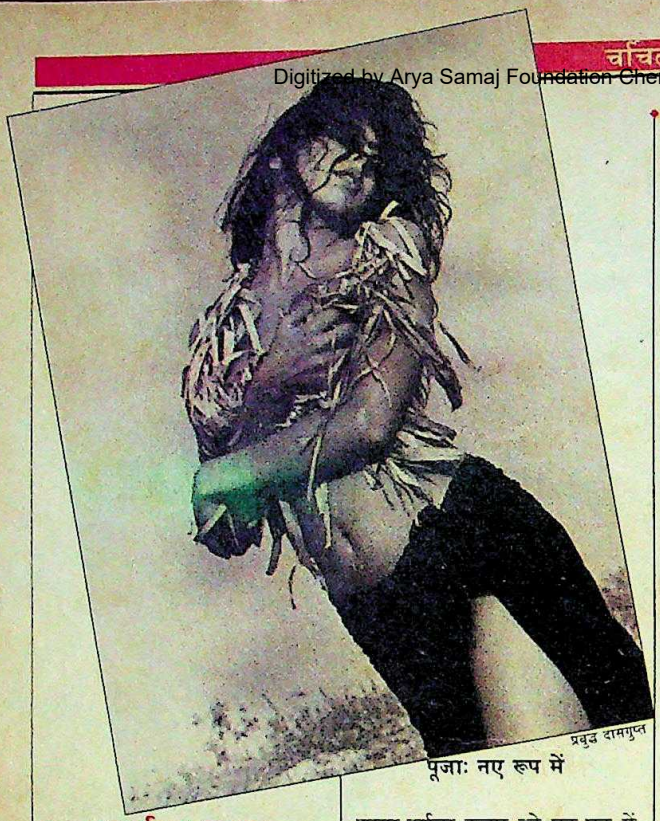

पूजा: नए रूप में

काया-दर्शना कन्या

◆ किसी हद को न मानने का जैसे संकल्प कर चुकी हैं **पूजा बेदी**. अब वे कामसूत्र को नया रूप देने जा रही हैं. उनकी फिल्म 'विषकन्या' अभी प्रदर्शित नहीं हुई है. इसलिए उन्होंने विज्ञापनों की दुनिया में कदम रख दिए हैं. उन्हें 'कामसूत्र कंडोम' के विज्ञापन के लिए अनुबंधित किया गया है. इन कंडोमों का विपणन जे.के. केमिकल्स कर रही है. यह इस काया-दर्शना कन्या को घर-घर में चर्चित तो कर ही देगा.

बांड, वह भी भावुक

◆ इन्हें जेम्स बांड का देसी सस्करण कहा जा सकता है. बैंकॉक में रसोइए का काम करने वाले लंबे, खूबसूरत **अक्षय कुमार** अब पाक कला से नाता तोड़ अभिनय कला से गांठ जोड रहे हैं. विदेश से मुंबइया फिल्मी दुनिया की ओर रुख करने वाले अक्षय को करोड़ में 'ब्लैक बेल्ट' प्राप्त है. वे राज सिप्पी की फिल्म 'मि. बांड' से फिल्मी सफर शुरू कर रहे हैं. उनका सामना तीन-तीन सुंदरियों—शीबा, डॉली और रुचिका से है. सिप्पी बताते हैं, "फिल्म में सब कुछ है. तमाशा, सेक्स और जनता के लिए भावुकता का मसाला भी." बांड और भावुक मिजाज? ऐसे बांड को देखकर बांड के रूप में विख्यात अभिनेता सीन कॉनरी और रोजर मूर तो चकराएंगे ही, इयान फ्लेमिंग भी कब्र में करवटें बदलना शुरू कर देंगे.

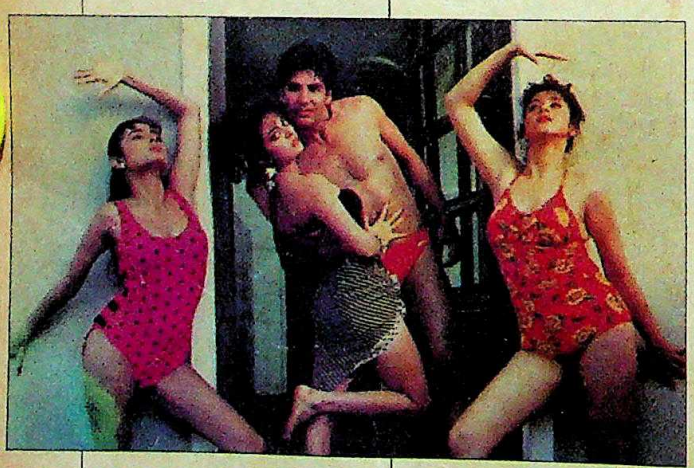

तीन सुंदरियों के साथ अक्षय

तू नहीं और सही

◆ टेनिस खिलाड़ी और हॉलीवुड के फिल्म निर्माता **अशोक अमृतराज** आखिरकार परिणय सूत्र में बंध ही गए. लेकिन उनकी दुलहन श्रीदेवी नहीं बल्कि **चित्रांजलि** हैं. मद्रास में हुई शादी में 'बेस्टमैन' बने उनके भाई विजय और मुग्ध दर्शक थे हॉलीवुड से आए लोग.

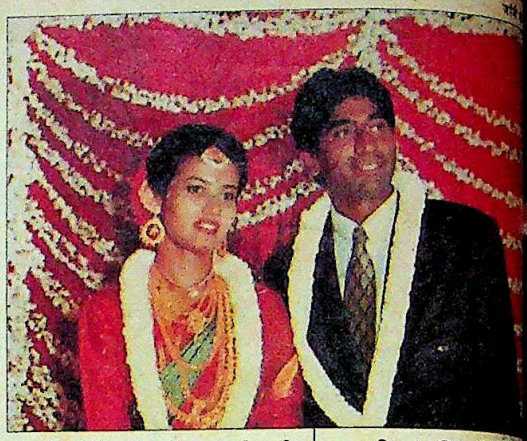

चित्रांजलि और अ

दूल्हे की टिप्पणी थी, 'म
पिता द्वारा तय की शादी

झूमने का मसाल

◆ बच्चे अब 12 व

वाज: बच्चों के

वाज की पॉप रॉक सं
'माइ डैडी इज बेस्ट
सकेंगे. वाज के गाने
(भालू) और बच्चों से
तक सबको पसंद आने
जरूर आएगी, रॉक ए
होने के बावजूद.

प्रेरणा की स्रोत

◆ पर्यावरण प्रेम के लिए प्रसिद्ध **मेनका गांधी** फिल्म प्रोड्यूसर के लिए भी आदर्श बन सकती हैं. रत्नम की फिल्म 'आयसम' मे मेनका और रजनी (सीरियल वाली) से मिलते-जुलते चरित्र होंगे. कहानी ऐसे केंद्रीय मंत्री के बारे में है, जो भ्रष्टाचार के

कार्टून: जयंतो

खिलाफ लड़ाई छेड़े
रत्नम बताते हैं, "मेन
प्रेरणा हैं." मेनका इस
लगती हैं, तभी शायद
करने को राजी हो गईं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

For the gracious people
W.D.&H.O.WILLS
GOLD FLAKE
HONEY DEW
Quality that's forever
Every genuine WILLS GOLD FLAKE cigarette bears the name W.D. & H.O. WILLS
A BRAND OWNED BY I.T.C. LTD. MADE IN INDIA.
CLARION C-GFK-16R2
STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

D—(C) 14/86

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AVAILABLE IN SELECTED CITIES

Rothmans

KING SIZE

WORLD LEADER

THE BEST TOBACCO MONEY CAN BUY

Made in India under licence by Godfrey Phillips (India) Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harid

Statutory Warning:
Cigarette smoking is injurious to healt

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ती दहशत, कलपती मजबूरी

नई दिल्ली के एक होटल से चार हीरा व्यापारियों के अपहरण ने पूरे देश में सनसनी फैला दी. इससे लोगों का ध्यान उत्तर भारत में तेजी से फैल रहे अपराध की उस नई शैली की ओर गया जिसकी दहशत लगातार बढ़ती जा रही है.

आवरण कथा 18

बागियों को बांधने की कार्रवाई

असम के प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन उल्फा के खिलाफ एक और सैनिक कार्रवाई शुरू हो गई है. 'आपरेशन राइनो' में लगे सैनिक उग्रवादियों की तलाश में भीषण जंगलों, बस्तियों का चप्पा-चप्पा छान रहे हैं लेकिन अभी बड़ी सफलता नहीं मिली है.

खास रपट 26

विदेशी आईने में भारत

बदलाव का दौर चला और पूरी दुनिया के राजनैतिक परिदृश्य में उलट-फेर हो गया. इसमें भारत काफी पीछे छूट गया. सर्वेक्षण से जाहिर हुआ कि विश्व में आज भी भारत की कोई अहमियत नहीं. इससे भारत के उत्कर्ष के मिथक भी टूट गए.

विशेष लेख 42

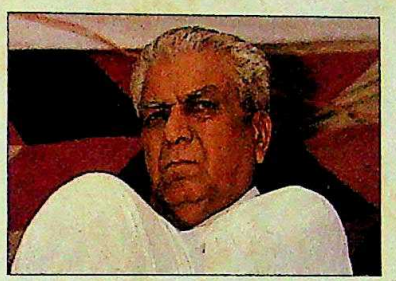

कुनबे की करतूततें

सत्ता से बेदखल होने के बाद जाट राजनीति के अलंबरदार देवीलाल ग्रामीण हितों का लबादा जरूर ओढ़े हुए हैं पर वास्तव में वे हरियाणा के असहाय ग्रामीणों की जमीन हथिया रहे हैं. ताऊ और उनका परिवार ऐसे ढेर सारे घोटालों में फंसा हुआ है.

खास रपट 50

चीतों की मांद में जीवन

उत्तरी श्रीलंका में जाफना एक ऐसा क्षेत्र है जहां मुक्ति चीतों की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं खड़कता. इस इलाके में किल्लतों के पहाड़ टूट रहे हैं और अपने कार्यकर्ताओं का मनोबल ऊंचा रखने के लिए एलटीटीई को काफी प्रयास करने पड़ रहे हैं.

खास रपट 68

बड़ी मुश्किल में है किधर जाए

विहिप की अगुआई वाले हिंदू उग्रवादियों और वाजपेयी व आडवाणी के उदार नेतृत्व के बीच भाजपा त्रिशंकु बन गई है. अब समस्या यह है कि अयोध्या के राम मंदिर के मुद्दे पर जोर दिया जाए या उदार कार्यक्रमों के जरिये पार्टी का आधार फैलाया जाए.

खास रपट 74

अगले पन्नों पर

कसौटी 7
तेवर 8
राजरंग 10
हिंदोस्तां हमारा 12
आवरण कथा
अपहरण की वारदातें:
बढ़ती दहशत, कलपती मजबूरी 18
खास रपट
कांग्रेस (इ):
जोड़-तोड़ का खेल शुरू 24
असम:
बागियों को बांधने की कार्रवाई 26
आजकल
दिल्ली: शर्म पर डाका 33
राजस्थान: साझेदार नाराज 36
गुजरात: बबाली ब्याह 37
सनद रहे 40
विशेष लेख
विदेशी आईने में भारत 42
जगबीती
जे.एफ. रिबेरो: मौत को चकमा 49
खास रपट
देवीलाल: कुनबे की करतूतें 50
व्यापार चक्र 56
कारोबार
इलेक्ट्रॉनिक उपभोक्ता सामान:
बहार के बाद पतझड़ 59
पास-पड़ोस
पाकिस्तान: शराफत से दूर सियासत . 65
खास रपट
जाफना:
चीतों की मांद में भयभीत जीवन 68
खास रपट
भारतीय जनता पार्टी:
बड़ी मुश्किल में है किधर जाए 74
कुछ अपनी, कुछ परायी 78
वर्ग पहेली 80
पड़ताल
राजस्थान: बाड़ ही खा गई खेत 85
सिनेमा 80
हामिद अली खां उर्फ अजीत:
बॉस की वापसी 96
किताबें 101
कहानी 102
खास रपट
रंगदारी: रकम ऐंठने के रंग 106
परदे के उस पार 110
चर्चित चेहरे 112

आवरण सज्जा: प्रणव वत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

THE PSYCHO-ANALYSIS OF

(Shouldn't you know what your skyba

A quality product from VIP.

Avenues BSB 76 91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

IS OF A SKYBAGS OWNER...

your Skybag's been saying about you?)

Man on the move, you hate being made to wait for your own luggage. You love the breezy portability of Skybags' entire range.

You exude a friendly elegance. But the quiet toughness does surface when provoked. You're glad Skybags' tear-resistant fabric has been specially designed for that underlying toughness.

You believe in subtle yet strong bonds that stand the test of time. You secretly admire the unyielding stitching that fortifies every item of the entire range of Skybags.

सभी पत्र-पत्रिकाओं के मिलने का एकमात्र ठिकाना
पत्रिका घर
बस स्टेण्ड,
ज्वालापुर

You might set your work pace by the latest Swiss quartz. But your heart is tuned to the chimes of old times.

VIP Skybags

Makes perfect business-travel sense.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Thapar Group

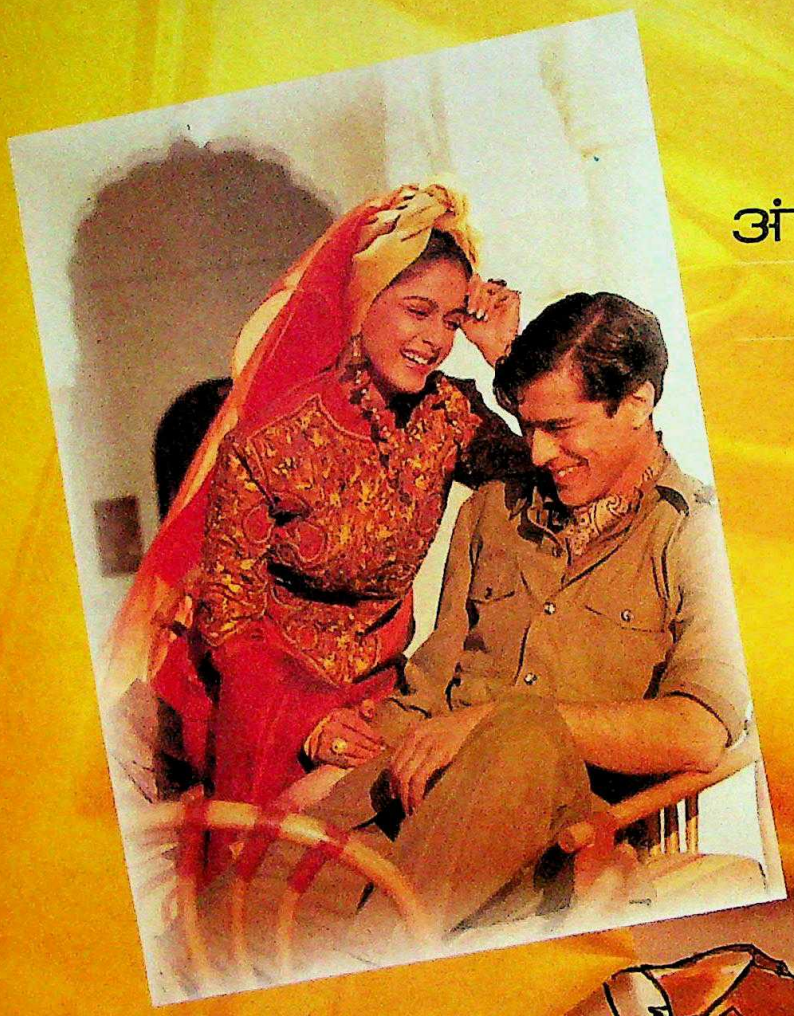

अंदाज़ हो तो
जे सी टी

JCT FABRICS

Contract JCT 24350 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सू टिं ग्स ● शा टिं ग्स ● ड्रे स मै टी रि य ल्स

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीति और पैसे का खेल

'घराने में घमासान' (आवरण कथा, 30 सितंबर) फिल्मी कहानी-सी लगी. राजनीति और पैसा मां-बेटे के पवित्रतम संबंध को भी कितना विषैला बना देते हैं, यह इस लेख से उजागर होता है.

हरिद्वार (उ.प्र.) **मदन सिंह**

तानाशाही मंजूर नहीं

'टूटता सपना, सिकुड़ती सल्तनत' (आवरण कथा, 15 सितंबर) पढ़ी. विद्रोह का जैसा मुकाबला येल्तसिन के नेतृत्व में सोवियत जनता ने किया उससे यह साफ हो गया है कि वह किसी भी स्थिति में तानाशाही व्यवस्था को स्वीकार नहीं करेगी. विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत को इसका विरोध करने के बदले पुरजोर समर्थन देना चाहिए.

जयपुर (राजस्थान) **हेमबारी**

■ सोवियत संघ में होने वाला बदलाव कोई नया नहीं है. इतिहास गवाह है कि इस देश में व्यवस्था के खिलाफ बगावत होती रही है और हर क्रांति के बाद एक नए जार का उदय होता रहा है. परंतु इस क्रांति के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि सोवियत संघ विखंडन की ओर तेजी से बढ़ चला है.

अलीगढ़ (उ.प्र.) **मुहम्मद तारिक**

■ रूस में साम्यवाद के शिकंजे को तोड़ने के लिए गोर्बाचेव ने जनतंत्र की आंधी का जो सहारा लिया है उससे फिलहाल तो अपयश ही हाथ लगेगा, मगर रूस की भावी पीढ़ियां उन जैसे जनतंत्र के प्रणेता को लेनिन व कार्ल मार्क्स की तरह ही याद करेंगी.

मावली (राज.) **बसंत त्रिपाठी**

■ सोवियत संघ में विद्रोह के बाद भारत सरकार ने आनन-फानन जो प्रतिक्रिया व्यक्त की, वह सोवियत जनता के साथ हमारी वर्षों की प्रतिष्ठा को चोट पहुंचाएगी.

पानीतोला (असम) **रमेश कुमार साहू**

■ सोवियत संघ में बदली हुई सत्ता का स्वागत करने का जो अदम्य उत्साह दिख रहा है उससे यही लगता है कि कट्टरपंथियों के दिन अब लद गए. साम्यवाद के प्रतीकों को नष्ट करने की जनता की आकुलता उनके भीतर पनप रही नफरत को ही दर्शाती है.

गया (बिहार) **वनश्री श्रीवास्तव**

■ आवरण कथा काफी समीचीन जान पड़ी. इसमें कोई शक नहीं कि बोरिस येल्तसिन आज नए नायक हैं. वे रूसी सल्तनत के निर्वाचित राष्ट्रपति हैं तथा एक लोकप्रिय नेता भी. परंतु उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि बदलती हुई आर्थिक-राजनैतिक व्यवस्था में एक शक्तिशाली मुकाम पर देश को ले जाने की क्षमता अभी सिर्फ गोर्बाचेव के पास ही है.

रांची (बिहार) **मृत्युंजय कुमार**

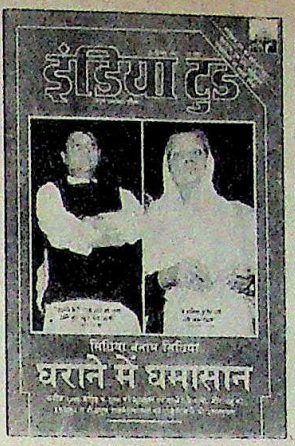

विजया राजे सिंधिया को अपने घराने की मर्यादा का खयाल रखते हुए बेटे से सुलह कर लेनी चाहिए.

आगरा (उ.प्र.) **वंदना मिश्र**

राजमाता से लेकर निम्न वर्ग की महिला तक हर सास सारा दोष बहू के ही मत्थे मढ़ती है.

रानीखेत (उ.प्र.) **रामेश्वर प्रसाद**

वर्ष: 5, अंक: 23,
1-15 अक्तूबर 1991

● संपादकीय कार्यालय: लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3315501-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ग्राहकी चंदा भेजें: इंडिया टुडे (हिंदी), पो बॉक्स 114, नई दिल्ली-110001 ● सर्कुलेशन कार्यालय: इंडिया टुडे, एफ-14, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3312078-3, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ● मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 23 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन: 2026132, 2029328, 2029435. टेलेक्स: 11-5273 THOM IN, तार: लिवमीडिया, मुंबई. ● क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय: के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001, फोन: 3323373, 3323578, 3321329, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 23 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477183, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 566448, 570037, 570083. टेलेक्स: 0845-5217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700018. फोन: 225398, 221922, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता.
● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अतिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित

एक विचार यह भी

'खालसा राज से कम मंजूर नहीं' तथा 'पर्दानशीनों का पराक्रम' (15 सितंबर) पढ़कर बुद्धि एवं हृदय के बीच द्वंद्व छिड़ गया. हृदय तो यही चाहता है कि भारत एक बना रहे. विभिन्न भाषाओं, रीति-रिवाजों, संस्कृतियों, धार्मिक विश्वासों तथा परंपराओं का रंगीन ताना-बाना बहुत मनोहारी लगता है. परंतु बुद्धि कहती है: सुंदर सपनों में कुछ नहीं रखा है. पूरी दुनिया में स्वतंत्रता, मौलिक अधिकार, आत्मनिर्णय और सार्वभौमिकता के नाम पर पृथकतावाद को ही प्रोत्साहन मिल रहा है. हजारों व्यक्तियों की हत्या, आतंकवाद, अव्यवस्था, घृणा, प्रतिशोध तथा शत्रुता से छुटकारा पाने और स्थायी क्षेत्रीय शांति एवं समृद्धि के लिए क्यों न घर के बंटवारे पर ही हम विचार आरंभ कर दें.

रोम (इटली) **डेनिस डैनियल**

■ 'पर्दानशीनों का पराक्रम' (15 सितंबर) पढ़ने से फिर यही साबित होता है कि घाटी में प्रशासन की जड़ें कितनी बुरी तरह कट गई हैं. और उग्रवादी अपनी बात किस गहराई तक आम लोगों में पहुंचा चुके हैं.

खरगौन (म.प्र.) **सुरेंद्र कुमार वर्मा**

■ लेख में नाहक ही कश्मीरी महिला उग्रवादियों को कश्मीर घाटी की बेटियां कहकर महिमामंडित करने का प्रयास किया गया है. आपने जो भाषा इस्तेमाल की है, उससे उनकी गैर-कानूनी और राष्ट्र विरोधी हरकतों में शौर्य और पराक्रम झलक आया है तो दूसरी तरफ सुरक्षा बल 'दोषी' और 'कसूरवार' शब्दों के करीब लगते हैं.

पटना (बिहार) **प्रियदर्शिनी**

■ आज कश्मीर में हमारे राजनैतिक आकाओं द्वारा क्षुद्र स्वार्थों के लिए बोई फसल लहलहा रही है. पानी सिर से ऊपर होने के बाद भी सरकार उग्रवादियों से समझौता करने में नहीं हिचकिचा रही. अपहरण उद्योग वहां सफलतापूर्वक चल रहा है.

खंडवा (म.प्र.) **संजय कुमार शर्मा**

■ निश्चित ही यह लड़ाई केंद्र की तथाकथित आर्थिक और सामाजिक भेदभाव की नीति के विरोध स्वरूप नहीं है. बल्कि यह इस्लामी भावनाओं को नियोजित रूप से भड़काए जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रक्रिया का ही परिणाम है.
उज्जैन (म.प्र.) उमेश गुप्ता

■ भारत के प्रति नफरत से भरी कश्मीर घाटी की बेटियां क्या कश्मीर घाटी की बेटियां कहलाने लायक हैं? आजादी का परचम आजादी का नहीं मातृभूमि को गुलाम बनाने का परचम है. इसका शीर्षक पर्दानशीनों का पराक्रम नहीं पर्दानशीनों का शर्मनाक कृत्य होना चाहिए था.
मालवा (म.प्र.) अशोक भंडारी

आखिर नींद टूटी

'बीते वैभव का बेशकीमती नमूना' (15 सितंबर) में यह जानकर राहत मिली कि गुजरात सरकार की नींद आखिरकार टूट गई. लेकिन न जाने कितनी ही प्राचीन धरोहरें उपेक्षा के अंधेरे की धूल फांक रही होंगी. पता नहीं इन सांस्कृतिक धरोहरों की सुरक्षा की तरफ किसी का ध्यान क्यों नहीं जाता.
जयपुर (राज.) नरेश धाकड़

वास्तविकता से दूर

■ 'आगे कुआं, पीछे खाई' (15 सितंबर) में लेखक ने जिस प्रकार उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार को कठघरे में खड़ा किया वह वास्तविकता से कोसों दूर है. यद्यपि भाजपा ने चुनावों में मंदिर मुद्दे पर विशेष जोर दिया था लेकिन और बातें भी मतदाताओं के सामने रखी थीं. लेखक उनसे कन्नी काट गए. प्रदेश में भाजपा सरकार ने कानून-व्यवस्था की स्थिति, आर्थिक पिछड़ेपन, उत्तरांचल मामला, किसानों की समस्या व माफिया गिरोहों से निबटने में अब तक तो बहुत ही अच्छा काम किया है.
सींगताम् (सिक्किम) शिव भगवान पुरोहित

■ मुख्यमंत्री का इंटरव्यू पढ़कर लगा कि कल्याण सिंह मंदिर बनाने के पक्ष में तो हैं परंतु कुर्सी का सुख प्राप्त कर लेने के बाद. आशा है मुख्यमंत्री उन लोगों की भावनाओं का ध्यान रखेंगे जिन्होंने कुर्सी उन्हें सौंपी है:
श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) संजीव चौहान

दोमुंही कट्टरता

'चंगुल से मुक्त' (15 सितंबर) पढ़ा. मस्जिद विवाद पर मुस्लिम संस्थाएं बवाल खड़ा कर देती हैं. शाहबानो प्रकरण में उन्हें शरीयत याद आई और सरकार पर चील की तरह झपट पड़े. लेकिन अमीना प्रकरण में किसी मुस्लिम संगठन ने प्रतिक्रिया तक व्यक्त करने की जरूरत नहीं समझी.
झांसी (उ.प्र.) सत्येंद्र चंदेल

■ बीते वैभव का बेशकीमती नमूना निश्चय ही पर्यटकों को आकर्षित करेगा. शुक्र है कि गुजरात सरकार को जूनागढ़ के अंधेरे कमरों में बंद दुर्लभ खजाने के महत्व का पता चला. यह विडंबना ही है कि विदेशों में करोड़ों रुपये खर्च करके संस्कृति

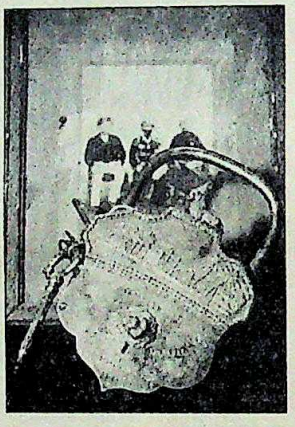

का प्रदर्शन करने वाली सरकार खुद अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को उचित सम्मान नहीं दे पाती है!
बरौनी थर्मल, (बिहार) छोटू सिंह

■ बहुत दुख की बात है कि ऐसा अनमोल खजाना धूल व मकड़ी के जालों लगे कमरों में बंद था और इसकी रखवाली सरकार की जगह एक बूढ़ा चौकीदार कर रहा था. देर से ही सही. सरकार जागी तो.
इंदौर (म.प्र.) अर्चना जैन

■ अमीना की कहानी हमारे देश में कई बार दोहराई गई है. परिस्थितियां अलग-अलग होती हैं. परंतु कहानी वही रहती है. सबसे ज्यादा आश्चर्य हुआ कि इस दुःखद घटना पर शहाबुद्दीन जैसे कट्टरपंथी या जामा मस्जिद के शाही इमाम एक शब्द नहीं बोले हैं जबकि ये लोग अपने आपको भारतीय मुस्लिम जगत का रक्षक और स्वयंभू नेता मानते हैं.
मुंगेर (बिहार) शैलेश कुमार 'सत्यं'

■ अमीना का सऊदी अरब के बूढ़े शेख से विवाह आर्थिक, सामाजिक और यौन शोषण का निकृष्टतम उदाहरण है. हिंदुस्तान के मुसलमानों के लिए यह गंभीर चिंतन का विषय है. वैसे हैदराबाद में लड़कियों की खरीदफरोख्त वर्षों से जारी है. 'अमीना प्रकरण तो संयोग से सुर्खियों में आ गया.
इंदौर (म.प्र.) डॉ. रेखा गांधी

अनछुई हकीकत

'आदमी बनते बनते' कहानी (15 सितंबर) दिल को छू गई. ऐसी अनछुई हकीकत हमारी ही योजना प्रणाली का परिणाम है. मीलों दूरदराज क्षेत्रों की सामाजिक और आर्थिक दुर्दशा और वहां की शोषण प्रवृत्ति योजना सर्वेक्षण के आंकड़ों में सम्मिलित नहीं होने से आज भी ग्राम प्रधान अशिक्षितों का ऐसा ही शोषण करते हैं.
बुरहानपुर (म.प्र.) लीलाधर देशमुख 'सचेत'

कौन-सा राज चाहिए

गुरबचन सिंह मनोचहल से मुलाकात (15 सितंबर) पढ़ी. आखिर वह किस खालसा राज की बात कर रहे हैं. उस खालसा राज की जिसके बारे में गुरु गोविंद सिंह ने कहा था, 'राज करेगा खालसा आकी (दुष्ट) रहे न कोई' या उस खालसा राज की, जिसमें निर्दोष लोगों को बसों और ट्रेनों से उतारकर भून दिया जाता है. वे हिंदू कट्टरवाद की बात करते हैं तो पंजाब में सिखों की धार्मिक भावनाएं भड़काना और गुरद्वारों में अलगावाद की राजनीति करना क्या सिख कट्टरवाद नहीं.
इलाहाबाद (उ.प्र.) तरुण भादिया

■ खालसा राज के लिए अब लड़ने की जरूरत ही नहीं रह गई है. मुल्क भले ही अब तक एक हो, हिंदू-सिख मानसिक तौर पर कब के अलग हो चुके हैं. विदेश में तो साफ देखा जा सकता है कि पंजाबी खुद को पंजाबी ही कहता है, भारतीय नहीं. विदेश बसे गैर-पंजाबियों को सिख अक्सर सुनाते रहते हैं कि हिंदुओं के लिए उनके गुरु ने कितने-कितने बलिदान दिए.
वैकू (न्यूजीलैंड) रोहित कुमार हैप्पी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेकसम्मत विधेयक

सभी रेखांकन: अजीत नैनन

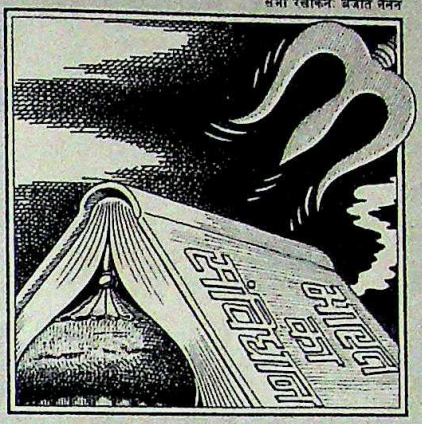

लोकसभा ने पूजा स्थलों से संबंधित विधेयक पास कर दिया. देर से ही सही यह एक अच्छा काम हुआ. इस विधेयक के अनुसार सभी पूजा स्थलों की प्रभावी स्थिति वही मानी जाएगी जो 15 अगस्त 1947 को थी. इस विधेयक के गहरे प्रतीकात्मक महत्व हैं. इसने इस तथ्य को फिर से याद दिलाया है कि 1947 से इस राष्ट्र ने आधुनिकता, धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक सहिष्णुता के रास्ते पर कदम बढ़ा लिया है.

अयोध्या विवाद को इस विधेयक के दायरे से अलग रखा गया है. यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है. इसका तकनीकी कारण यह है कि यह विवाद अदालत के विचाराधीन है. लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण कारण यथार्थपरक राजनीति से संबंधित है. इस विवाद पर जितना खून-खराबा हो चुका है उसके बाद भी इसे विधेयक में शामिल करना भाजपा-विहिप को एक और हिंसक आंदोलन शुरू करने का बहाना देने जैसा होता. इसके अलावा इससे इस विवाद को बातचीत के जरिए हल करने की भावी कोशिशों को धक्का लगता.

लेकिन इस विधेयक से यह भी नहीं होगा कि धार्मिक स्थलों की मिल्कियत से संबंधित तमाम आंदोलन स्वतः रुक जाएंगे. और न ही कांग्रेस इस विधेयक की वकालत करके अपनी श्रेष्ठता का दावा कर सकती है. आखिर इसी पार्टी ने विवादास्पद राम जन्मभूमि मंदिर का ताला 1986 में खुलवाया था. और नवंबर 1989 में शिलान्यास के दौरान इसका राजनैतिक लाभ उठाने की कोशिश की थी. बहरहाल, इस विधेयक के बाद अब भाजपा और बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के समझदार लोग अयोध्या मसले को अदालत के बाहर बातचीत से हल करने की कोशिश फिर शुरू कर सकते हैं.

वास्तव में लालकृष्ण आडवाणी ने पहले ही घोषणा की थी कि बाबरी कमेटी अगर अयोध्या में थोड़ी उदारता बरते तो उनकी पार्टी वाराणसी और मथुरा के पूजा स्थलों के लिए आंदोलन नहीं करेगी. परंतु विहिप के उग्रपंथी तत्व न केवल नए विधेयक की निंदा कर रहे हैं बल्कि दूसरे पूजा स्थलों के लिए नया आंदोलन शुरू करने की योजनाएं बना रहे हैं. आज जबकि देश आर्थिक बदहाली, राजनैतिक अस्थिरता, आतंकवाद, अराजकता जैसी स्थितियों से जूझ रहा है तब यह भाजपा नेतृत्व की जिम्मेदारी है कि वह देश को तोड़ने वाले कट्टरपंथी आंदोलनों की जगह राष्ट्रहित में संयम और समझदारी का परिचय दे.

पानी के लिए पराक्रम

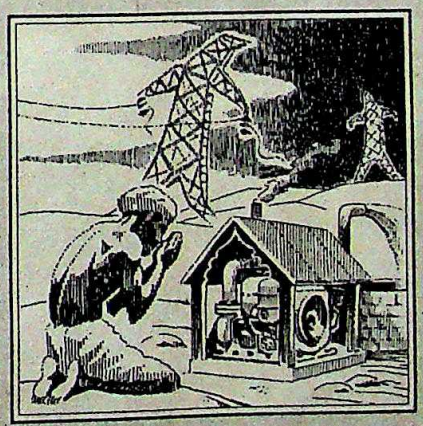

शानदार मानसून जबकि आखिरी दौर में है, देश लगातार तीसरे वर्ष रेकार्ड खरीफ फसल की उम्मीद कर सकता है. अच्छा मानसून न केवल फसल के लिए लाभदायी होता है बल्कि इसके दूरगामी फायदे भी होते हैं. यह मुद्रास्फीति को घटाता है और ग्रामीण क्षेत्रों की क्रय शक्ति को बढ़ाता है. ये क्षेत्र ही देश के औद्योगिक उत्पादों के लिए बेहतर बाजार बनते जा रहे हैं.

लेकिन अच्छे मानसून की एक खराबी यह है कि यह लापरवाही को बढ़ावा देता है. जब सूखा पड़ता है तो पत्र-पत्रिकाएं विशेषज्ञों के ऐसे लेखों से भरी रहती हैं जिनमें सिंचाई और बेहतर जल प्रबंध की जरूरतों का जिक्र होता है. लेकिन जैसे ही बरसात शुरू हो जाती है, ये तमाम बातें और सलाह भुला दिए जाते हैं. नतीजा यह होता है कि भारतीय कृषि व्यवस्था की बुनियादी समस्याओं पर से ध्यान हट जाता है.

कुछ जगहों पर अच्छे मानसून के कारण देश किसी तरह साल दर साल निकालता जाता है. लेकिन इनसे एक बात तो स्पष्ट है कि भारतीय कृषि व्यवस्था अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से उठने वाले बादलों पर कितनी निर्भर है. पिछले दो दशकों में पैदावारों में नाटकीय सुधार हुआ है. लेकिन इसके बावजूद आर्थिक आत्मनिर्भरता की स्थिति नहीं आई है. यह दो फसलों के बीच फसलें निकालने और नकदी फसल उगाने की व्यवस्था विकसित करके ही हासिल किया जा सकता है.

ऐसी फसलों के लिए भरपूर पानी बेहद जरूरी होता है. लेकिन कुछ क्षेत्रों को छोड़ कर, जहां नहरों की अच्छी सुविधा है, बाकी जगह सिंचाई की कोई पक्की व्यवस्था नहीं है. बिजली की कमी के कारण नलकूप नाकाम हो रहे हैं. वैसे एक विकल्प डीजल पंपों के रूप में उपलब्ध है लेकिन इनका उपयोग बढ़ाने की कोई बड़ी कोशिश नहीं हो रही.

सरकार जबकि अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण पर जोर दे रही है, बिजली की कमी के मद्देनजर डीजल पंपों के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की विशेष जरूरत है. इसके लिए कर्ज दिए जा सकते हैं, ग्रामीण सहकारी समितियों को छिड़काव वाली सिंचाई व्यवस्था लगाने के लिए कर्ज दिए जा सकते हैं. और कृषि सेवाएं तथा पंपों की मरम्मत आदि के काम में निजी कंपनियों को आगे आने का प्रोत्साहन दिया जा सकता है. इन सब के अलावा यह भी देखना होगा कि हरेक कृषि क्षेत्र को पूरे वर्ष डीजल की आपूर्ति होती रहे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

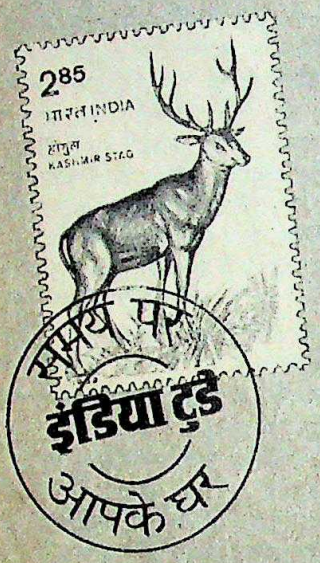

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर !

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए !

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य वार्षिक रु. 210/-
भुगतान का माध्यम-चैक/डिमांड ड्राफ्ट
दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास के चेक/डिमान्ड ड्राफ्ट एमआईसीआर वाले ही होना चाहिये।
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए15/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
दर व फोकश केवल भारत में लागू।
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें।
इंडिया टुडे (हिन्दी)
पोस्ट बॉक्स नं.- 114
नई दिल्ली- 110 001

इंडिया टुडे

MILESTONES/IT/120

रविंदर पूरी, इंडियन एक्सप्रेस

● उठापटक तो होती ही रहनी चाहिए. बिना इसके सियासत का क्या मजा? और फिर दलबदल तो मेरा शौक है. ■ **भजनलाल**, *नवभारत टाइम्स*

● अगर हम दूसरे विवादों को उठाना ही चाहेंगे तो क्या यह बिल (पूजा स्थल से संबंधित) हमें रोक लेगा? बिल में थोड़ी सजा ही तो है. हम उसे भुगत लेंगे. ■ **अटल बिहारी वाजपेयी**, *जनसत्ता*

● जद (जनता दल) नहीं, जिद टूटनी चाहिए. ■ **विश्वनाथ प्रताप सिंह**, *माया*

● पिछले कुछ बरस से कांग्रेस का लोगों से कोई नाता ही नहीं रह गया था. ■ **पी.वी. नरसिंहराव**, *नवभारत टाइम्स*

● इस सरकार के मंत्री बकवास करते हैं और अध्यक्ष जी आप सुनते रहते हैं. धन्य है यह सदन. ■ **राजेंद्र पारीक** (इंका विधायक), *राजस्थान विधानसभा में*

● मुझे राजनीति से घृणा थी. आज भी मैं इससे घृणा करता हूं. यह तो एक अफसर का दुर्व्यवहार था जो मुझे राजनीति में ले आया. बस तभी से इस कीचड़ में डोल रहा हूं. ■ **रामपूजन पटेल** (उ.प्र. जनता दल अध्यक्ष), *स्वतंत्र भारत*

● मैंने जो निश्चय कर लिया उसमें कभी पराजित नहीं हुआ. ■ **भैरों सिंह शेखावत**, *पंजाब केसरी*

● मुझे अपनी सरकार की स्थिरता की कोई चिंता नहीं है. किसमें हिम्मत है हमें गिराने की? ■ **लालू प्रसाद यादव**, *इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया*

● मुझे यह कहते हुए बहुत अच्छा नहीं लग रहा है पर आप चले जाइए गांवों में, कस्बों या छोटे शहरों में पत्रकार की 'इमेज' पुलिस वाली होती जा रही है. ■ **सुरेंद्र प्रताप सिंह** (कार्यकारी संपादक, नवभारत टाइम्स), *साप्ताहिक हिंदुस्तान*

● यह (मीडिया) तो मेरे खयाल से एक बड़ा राक्षस है इस जमाने का! किसी को तबाह करने पर तुल जाए तो कोई कुछ नहीं कर सकता. ■ **मकबूल फिदा हुसैन**, *धर्मयुग*

● जिसने आम आदमी बनकर जीवन को नहीं जिया है, सफलता का नशा उसी पर सवार होता है...पहली बार स्टार तो मैं बना नहीं हूं. जिस मोहल्ले में रहता था, स्टार ही तो था वहां का ! ■ **जैकी श्रॉफ**, *फिल्मफेयर*

● 22 साल की हो गई हूं. रोमांस के बारे में सोचा जा सकता है... लेकिन रोमांस के लिए भी समय चाहिए. वह ही तो मेरे पास नहीं है. ■ **पल्लवी जोशी**, *हिंदुस्तान*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

VIP BENZ

New VIP Benz steers a touch of German precision to men's underwear. You have the most comfortable stretchable fabric. And you have the most reliable imported rubber elastic. The rest is sheer styling. All perfect. All German.

VIP BENZ. Great mileage in comfort.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Avenues HH 810.8

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुस्ती का प्रकोप

● देश के मच्छरों को नौकरशाही की सुस्ती से सरोकार भले ही न हो मगर राज्यों के नगर निगम इससे झुंझलाए नजर आ रहे हैं. मच्छर मारने वाली धुंआ

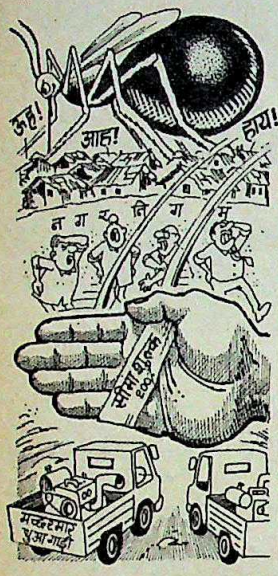

मशीन के आयात की अनुमति पर स्पष्टीकरण के लिए आवेदन अरसे से सरकारी दफ्तरों में धूल फांक रहा है. इस बीच मच्छरों की आबादी दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ती रही.

रिसर्च ऐंड डेवलपमेंट मद में खुले लाइसेंस के तहत आयात किया जाने वाला सामान आम तौर पर सीमा शुल्क से मुक्त होता है. नगरपालिकाएं इसी आधार पर सीमा शुल्क से छूट चाहती हैं. लेकिन केंद्र सरकार द्वारा आयात पर लगाए प्रतिबंधों से तो मामला अधर में ही लटक गया.

इस बीच जयपुर नगरपालिका अधिकारियों को एक चिंता और सता रही है. उन्होंने तो 200 फीसदी पड़ता राशि देकर या 55 फीसदी अधिक मूल्य पर आयात-निर्यात बांड लेकर भी धुंआ मशीन मंगाने का फैसला कर लिया था. लेकिन राज्यों के नगर निगमों की जो आर्थिक हालत है, उसे देखते हुए यह समाधान असंभव ही नजर आ रहा है.

लेकिन केंद्र की इस ढिलाई की वजह समझ में नहीं आती. सभी धुंआ मशीनों के आयात का खर्च विश्व स्वास्थ्य संगठन अपने मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के तहत उठाता है. इस दौरान मच्छर तेजी से फलते-फूलते जा रहे हैं, और कई राज्यों में लोग उनके प्रकोप से परेशान हैं.

हक की लड़ाई

● बीमार कंपनियों के जीवन-मरण का फैसला करने वाले औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण ब्यूरो (बीआईएफआर) का अपना अस्तित्व खतरे में पड़ गया है. इसे अपना दफ्तर भीकाजी कामा प्लेस छोड़ नोएडा में ले जाने का आदेश मिला है.

लेकिन बीआईएफआर नोएडा जाने को कतई राजी नहीं, क्योंकि नई दिल्ली हवाई अड्डे से दूरी बढ़ जाने से इसके वरिष्ठ अधिकारियों को असुविधा होगी, जिन्हें सुनवाई के लिए रोज अदालत आना पड़ता है. प्रतिनियुक्ति पर आए इसके 150 कर्मचारियों में से ज्यादातर अपने मूल संगठन में लौट जाएंगे. लिहाजा, ब्यूरो वही कर रहा है जो इसके स्पष्टवादी लेकिन अक्खड़ स्वभाव वाले अध्यक्ष आर.

सभी कार्टून: अजीत नैनन

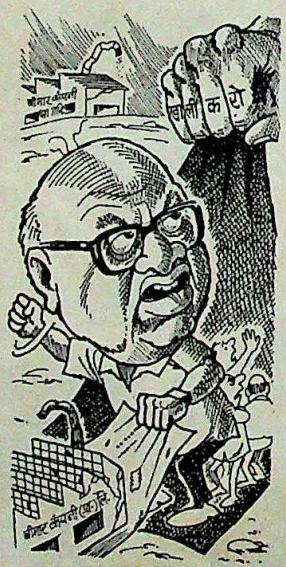

गणपति का पसंदीदा काम है— यानी अपने हक की लड़ाई.

तख्तापलट का असर

● मॉस्को में लोग भले ही साम्यवाद के प्रतीकों को ढहाने में जुटे हों लेकिन भारत में मामला एकदम अलग है.

सोवियत राष्ट्रपति मिखाइल

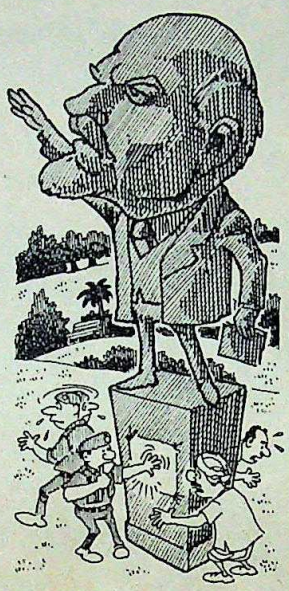

गोर्बाचेव ने पिछली भारत यात्रा के दौरान चाणक्यपुरी के नेहरू पार्क में लेनिन की विशाल प्रतिमा स्थापित की थी. तब उन्हें सपने में भी गुमान नहीं था कि चंद वर्षों में प्रतिमा के नीचे लेनिन के योगदान को दर्शाने वाला धातु का फलक एक संग्रहणीय वस्तु बन जाएगा. गोर्बाचेव का तख्ता पलटने की कोशिश के बाद किसी ने उस फलक के पेंच खोले और लेकर चलता बना. माली और चौकीदार घंटों चोर को तलाशते रहे. लेकिन कुछ हाथ नहीं लगा.

अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि चोरी की वजह गोर्बाचेव या लेनिन के प्रति प्रेम था या विशुद्ध व्यावसायिक बुद्धि, क्योंकि अब से कुछ वर्षों बाद यह फलक एक बहुमूल्य प्राचीन कलाकृति बन जाएगा. इस पर किसी ने चुटीली टिप्पणी की, "इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, लेनिन की प्रतिमा को संग्रहालय में पहुंचा देना चाहिए."

उलझन में उपाय

● जिसके सिर पर ताज हो उसको परेशानियां भी कम नहीं होतीं. प्रधानमंत्री बनने के बाद पी.वी. नरसिंह राव का पहली बार विदेश दौरे पर जाना, दिल्ली की दरबारी राजनीति से कुछ दिनों के लिए राहत पाने जैसा होना चाहिए था. लेकिन इसके उलट, उन्होंने जर्मनी के चार दिवसीय दौरे से लौटने के बाद ही चैन की सांस ली. अंदरूनी सूत्रों के मुताबिक इसकी वजह राव की यह दुविधा थी कि विदेश यात्रा के दौरान अपनी जिम्मेदारी किसे सौंपकर जाएं. उनकी गैर मौजूदगी में कोई महत्वपूर्ण घटना घट जाए तो उनके बाद नंबर दो कौन हो— अर्जुन सिंह, शरद पवार या माधवराव सिंधिया?

लेकिन अवकाश प्राप्त मगर

विश्वसनीय नौकरशाह पी.सी. अलेक्जेंडर ने ही उन्हें उबारा. उन्होंने किसी भी नेता पर नं. दो का तमगा न लगाने की सलाह दी—नेताओं की महत्वाकांक्षाओं पर अंकुश लगाए रखने का इससे कारगर तरीका और क्या हो सकता है. लेकिन यह समस्या तो फिर सिर उठा सकती है, क्योंकि राव अगले महीने श्रीलंका के दौरे पर जाने वाले हैं. राव लोगों को कब तक दुविधा में रखेंगे?

...और एक चुटकी

विदेशी हवा के शौकीन भारतीय विदेश विभाग के लोग युगोस्लाविया और सोवियत संघ की घटनाओं से कुछ खुश नजर आ रहे हैं. एक अधिकारी ने कहा, "आजाद देशों की संख्या में वृद्धि का मतलब है विदेश जाने के मौकों में इजाफा." मौकों का चाहे जैसे भी इस्तेमाल किया जाए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

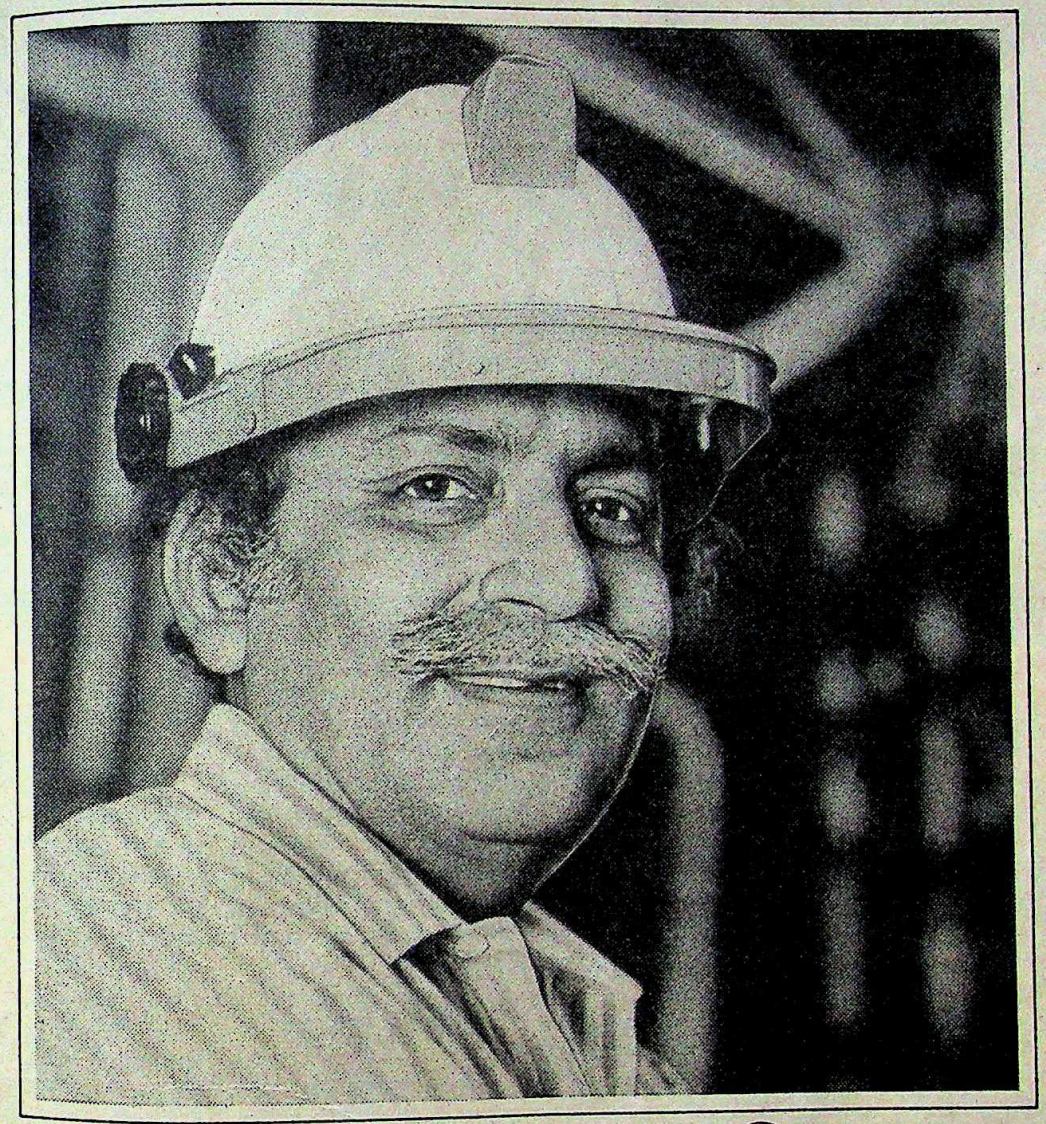

नागरिक डनलप

समस्याएँ आती हैं। राह रोकती हैं। आगे बढ़ने में बाधा डालती हैं। सृजनशील दिमाग समाधान खोजते हैं। प्रतिभा और अनुभव से नयी सर्जना होती है। नवीन दिगन्त खुल जाते हैं। इन नयी राहों का अग्रदूत है डनलप। अपनी शक्ति, सामर्थ्य, विज्ञान, आधुनिकतम तकनीक और डिज़ाइनों से, डनलप कोरे...अनगढ़े को सुन्दर साँचे में डालता है। सुविशाल उद्योगों से लेकर छोट-मोटे कारिगर—सब का साथ देता है। आधुनिक तकनीकों को काम में लाना ; खोज...प्रगति...उन्नति का यह सिलसिला लगातार जारी रखता है—डनलप।

डनलप रबर और अनुरूप धातुओं से बनी चीज़ों का सबसे बड़ा निर्माता है। कन्वेयर बेल्टिंग में एशिया की सबसे चौड़ी स्टील कॉर्ड बेल्टें, डनलप की ही बनी हुई हैं। आधुनिकतम वी बेल्ट ; कट-एज ऑटो बेल्ट ; ट्रान्समिशन बेल्टिंग ; हाई-टेक होज़ पाइप ; वाइब्रेशन आइसोलेटर ; तरह-तरह के गोंद ; अर्थमूवर की टायरें, फ़ोर्क लिफ्ट तथा कारखानों में इस्तेमाल की गई वाहनों के लिए और भी तरह-तरह के टायरों का निर्माण करता है—डनलप।

DUNLOP भारत की सदा आगे बढ़ाने का एक प्रण, एक समर्पण।

Campaign/DDL/265/2A /HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लोहार की

■ किसी कर्मचारी की होशियारी कब अधिकारियों के लिए सिरदर्द बन जाए, कहा नहीं जा सकता. मध्य प्रदेश के शाहजहानाबाद में हाल ही में पुलिस अधिकारियों ने अपने सब-इंस्पेक्टर को मुअत्तल करके ऐसी मुसीबत गले डाल ली जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी.

इन महोदय को ड्यूटी के दौरान दारू पीने के आरोप में मुअत्तल किया गया. अफसरों का यह फैसला इन साहब को रास नहीं आया और उन्होंने भी उन्हें सबक सिखाने का फैसला कर लिया. अपनी होशियारी पर मुग्ध अफसरों को तब होश आया जब

सभी कार्टून: अयंती

अगले दिन थाने का कामकाज ठप हो गया. पता चला कि मुअत्तल सब-इंस्पेक्टर अपने साथ उन अलमारियों की चाभियां भी ले गए हैं जिनमें ताजा केसों की फाइलें थीं.

सामान्य ज्ञान

■ दूरदर्शन की तर्ज पर इन दिनों क्विज और सामान्य ज्ञान से जुड़ी प्रतियोगिताओं का अच्छा-खासा फैशन चल निकला है. इन प्रतियोगिताओं में पहाड़ों और नदियों से लेकर देश-विदेश के महापुरुषों के बारे में सवाल रखा जाना स्वाभाविक ही है. हालांकि इन प्रतियोगिताओं का लक्ष्य नई पीढ़ी में सामान्य ज्ञान के प्रति रुचि पैदा करना होता है पर कई बार ये प्रतियोगिताएं अज्ञान प्रदर्शन का खेल बनकर रह जाती हैं. पिछले दिनों भंडारा जिले के एक कस्बे में कुछ ऐसा ही हुआ.

एक नवगठित युवा संस्था ने कुरहाडी में ऐसी ही सामान्य ज्ञान परीक्षा का आयोजन किया. बाद में आयोजक यह देखकर दंग रह गए कि मिथुन चक्रवर्ती और माधुरी दीक्षित जैसी हस्तियों के खानपान और दूसरी आदतों के बारे में हर बात की जानकारी रखने वाली पीढ़ी को अपने देश की अधिकांश महान हस्तियों के बारे में नाममात्र की जानकारी भी नहीं है. उदाहरण के लिए इस सवाल के जवाब में कि भीमसेन जोशी कौन हैं, केवल 10 फीसदी लोग ही सही जवाब दे पाए, बाकी में से 80 फीसदी का एक ही जवाब था: "वे मशहूर पहलवान हैं." इसी तरह 60 फीसदी ने सरदार पटेल के बजाए दारा सिंह को 'भारत का लौह पुरुष' बताया. और साहित्य के मामले तो हालत यह रही कि 70 फीसदी उत्तरदाताओं के हिसाब से मुंशी प्रेमचंद प्रसिद्ध 'बीड़ी व्यापारी' हैं—शायद इस वजह से कि भंडारा जिले में बीड़ी व्यापारियों को 'मुंशी' कहा जाता है.

सुनहरी दाढ़ी

■ चोर की दाढ़ी में तिनका की कहावत सुनी-सुनाई है. लेकिन यह किस्सा ऐसे सरदार जी का है जिन्होंने दाढ़ी में सोना छिपाने की कोशिश की. लेकिन अफसोस कि कस्टम विभाग के जासूसों ने उनकी चाल पकड़ ली. अब बेचारे सरदार जी हवालात की हवा खा रहे हैं.

पिछले दिनों ये साहब मद्रास में विमान से उतरकर कस्टम विभाग के काउंटर पर पहुंचे तो करीने से बंधी उनकी दाढ़ी ने अधिकारियों को बहुत प्रभावित किया. लेकिन उनके हाव-भाव में दिखने वाली हड़बड़ी ने एक अधिकारी को चौकन्ना कर दिया.

उन्हें रोककर जब तलाशी ली गई तो सारा माजरा साफ हो गया. करीने से बंधी दाढ़ी में लगभग एक लाख रु. की सोने की छोटी-छोटी डलियां और 500 रु. के 14 नोट बरामद हुए.

और चाभी खो जाए...

■ अक्सर ऐसे कर्मचारियों को इनाम मिलने की उम्मीद रहती है जो देर रात तक दफ्तर में बैठे रहते हैं. लेकिन इस कर्मचारी को दफ्तर में देर तक बैठने की सजा भुगतनी पड़ी.

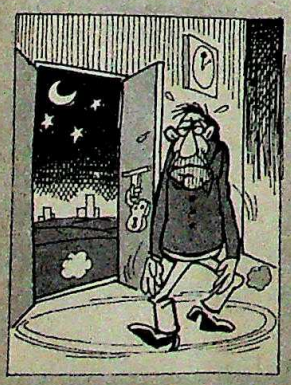

महाराष्ट्र सिंचाई विभाग के एक ड्राफ्ट्समैन ने एडवांस वेतन के लिए आवेदन दिया. अफसर इसे अस्वीकार कर खुद बाहर चले गए. ड्राफ्ट्समैन महोदय ने उन्हें मनाने के लिए उनके लौटने तक इंतजार का फैसला किया. शाम सात बजे तक न अफसर लौटे और न इन सज्जन ने अपनी कुर्सी छोड़ी तो तंग आकर चपरासी भी चलता बना. संकट तब शुरू हुआ जब पता चला कि दफ्तर के ताले की चाबी तो चपरासी के पास है. अब ड्राफ्ट्समैन को न सिर्फ रात भर बल्कि अगले दिन इतवार को भी वहीं रहना पड़ा. जले पर नमक तब आ गिरा जब चपरासी को बिना कारण दफ्तर में रोके रखने के जुर्म में उन्हें सोमवार को नोटिस जारी कर दिया गया.

मुस्तैद सिपाही

■ पिछले पखवाड़े आंध्र प्रदेश पुलिस के अधिकारियों ने अपने विभाग के मंत्री को खुश करने के लिए लाजवाब मुस्तैदी और समझदारी दिखाई. पर हाय री किस्मत! एक पुलिस कर्मचारी की कर्तव्यपरायणता ने ही बनी-बनाई योजना चौपट कर दी.

राज्य के गृह राज्यमंत्री डॉ. मैसूरा रेड्डी वारंगल जिले में होने वाले कुछ समारोहों के लिए निकले. रघुनाथपल्ली गांव में पुलिस अधिकारी यह देखकर परेशान हो गए कि नक्सली संगठन, पीपुल्स वार की चेतावनी के चलते समारोह के लिए कोई पुरोहित उपलब्ध नहीं था. आखिर एक सिपाही को पुरोहित के कपड़े पहनाए गए. समारोह में ज्योंही मंत्री महोदय पूजा और आशीर्वाद के लिए आकर खड़े हुए थे कि बेचारा 'पुरोहित' पुरोहिताई भूल बैठा और असलियत में आ गया. कर्मकांड की चीजें वहीं रखकर उसने फुर्ती से अटेंशन मुद्रा में मंत्री जी को सैल्यूट ठोक दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ डायल वाली बहुउपयोगी घड़ी। समय, दिन, दिनांक, महीना और चांद की कला दर्शाते यंत्र समूह। Rs.2419*

टाइटन की क्लासीक. बारीक पसन्द की पहचान.

ऐसी अनोखी घड़ियां भारत में पहले कभी नहीं बनीं। क्लासीक युरोपियन डिज़ाइन और सूक्ष्म तकनॉलजी का निराला संगम।

टाइटन की बहुउपयोगी घड़ियां। पूनम से अमावस्या तक चांद की हर तस्वीर सही दिखाने वाली मूनफ़ेज़ घड़ियों से लेकर एक ५ डायल वाली घड़ी तक, जो शानदार कैलेन्डर का काम दे।

ये जितनी जटिल हैं, उतनी ही लुभावनी और उनके रूप को निखराती है, १८ और २३ कैरेट गोल्ड प्लेटिंग की दोहरी परत और शानदार लेदर।

टाइटन की ४०० से भी ज़्यादा अन्तर्राष्ट्रीय क्वार्ट्ज घड़ियों के खज़ाने में सबसे बेहतरीन, यह बहुउपयोगी घड़ियां - सिर्फ रु.११२५ से रु. २५०० तक। हर घड़ी के साथ आपको मिलेगा टाटा के नाम का भरोसा और २ साल की गारण्टी।

नयी बहुउपयोगी क्लासीक घड़ियां। फ़र्क शान का। बारीक पहचान का।

Classique

Rs.2057* Rs.1573* Rs.1543*

TITAN
QUARTZ
The Changing Face Of Time

Ogilvy & Mather 3288

*दिखाई गई कीमतों में दिल्ली में लागू सभी कर शामिल हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपनी सबसे प्यारी चीज़ खोकर कितना दुखी था मैं!
तभी मेरी मुलाकात उससे हुई जिसके पास खोने के लिए
कुछ था ही नहीं..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

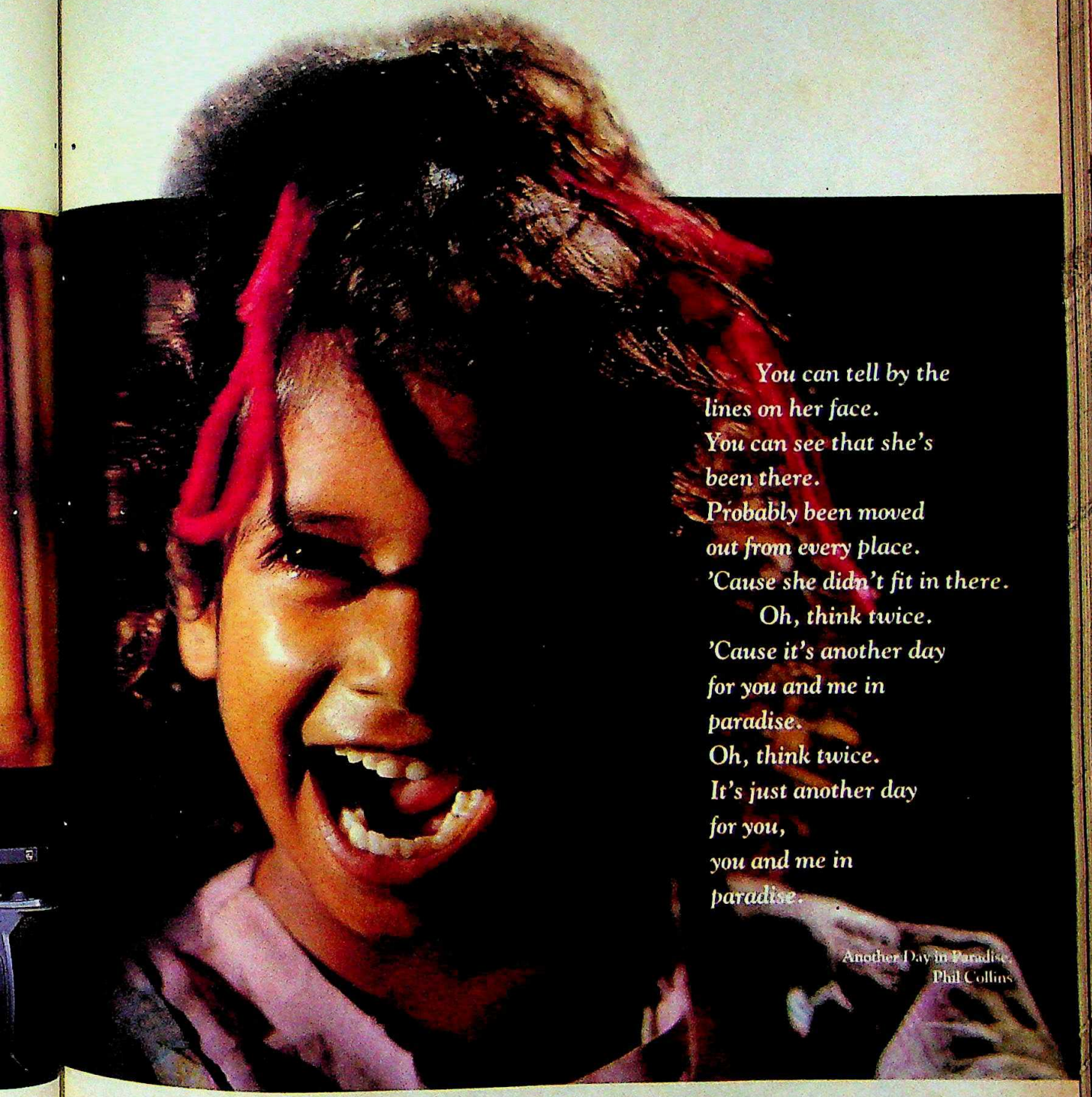

... हमें पास लाया संगीत. आज का संगीत. आपका अपना संगीत. आशा जगाता, गुनगुनाता, प्यार बांटता, बटोरता. खुशियाँ बिखेरता, समेटता वो संगीत जिसमें डूबकर जीते हैं आप. उसी में खो जाते हैं आप.

फ़िलिप्स यह बात जानता है कि दुनिया भर के युवा सभी एक से हैं. उनकी भाषाएं ज़रूर अलग अलग हैं मगर दिल की ज़ुबान, संगीत की ज़ुबान सभी समझते हैं.

फ़िलिप्स

पोर्टेबल स्टीरियो सिस्टम

दुनियाभर में गूंज रहा है फ़िलिप्स

CLARION/BP/448278 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DR 482 PORTABLE STEREO SYSTEM 32 W PMPO
• LED FOR 'POWER ON' • ONE-TOUCH RECORDING
• 2-BAND RADIO. Rs.2,195.*

DR 579 PORTABLE STEREO SYSTEM 40 W PMPO • 3-BAND EQUALISER
BAR DISPLAY • 2-WAY 4-SPEAKER SYSTEM • 3-BAND RADIO WITH FM. Rs.2,

DR 401 PORTABLE STEREO SYSTEM 24 W PMPO • ONE-TOUCH RECORDING
• LED FOR 'POWER ON' • 2-BAND RADIO. Rs.1,845.*

AW 7501 TURBO BASS GENERATOR 80 W PMPO • DUAL DECK • TURBO BASS
GENERATOR FOR EXTRA BASS REPRODUCTION • 3-AMPLIFIER 5-SPEAKER SYSTEM •
HIGH-SPEED DUBBING • CONTINUOUS PLAY • FM STEREO • LED FOR 'POWER ON' AND
FM STEREO • 3-BAND GRAPHIC EQUALISER. Rs.3,995.*

PHILIPS
SOUND
WORLD
CLASS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitiz

फ़िलिप्स

सृष्टि का अलबम '९७

CC-0. In Public Doma

LOCAL TAXES EXTRA

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरा व्यापारियों का अपहरण

चकमा देने का चमत्कारी कारनामा

—राहुल पाठक और अरुण कटियार

अपहरण की यह पूरी योजना इतनी लचर थी कि हैरत होती है कि यह सफल कैसे रही. बहरहाल, यह एक दुस्साहसिक कार्रवाई तो थी ही. रवि चौधरी की योजना में छोटी चूक भी बने-बनाए खेल को बिगाड़ सकती थी. लेकिन चतुराई, भाग्य और दुस्साहस का ऐसा मेल हुआ कि इस व्यक्ति ने 24 घंटे के भीतर ही बड़ी आसानी से चार हीरा व्यापारियों को नई दिल्ली के दो होटलों से अपहृत कर लिया.

चौधरी ने योजना पूरी होशियारी से बनाई थी. यहां तक कि पुलिस इसका ओर-छोर नहीं पा सकी है. पांच राज्यों की पुलिस, सीबीआई और इंटरपोल ने शिकार की तलाश में अपनी पूरी ताकत लगा दी है. इस रहस्यमय व्यक्ति की तलाश में पुलिस ने कलकत्ता में तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है. इनमें एक अपराजितो बसाक पर संदेह है.

अब तक उपलब्ध जानकारी के आधार पर जो तस्वीर बनती है, वह इस तरह है: रवि चौधरी ने देश के 30 बड़े हीरा व्यापारियों को पत्र लिखकर अपना परिचय एक इतालवी फर्म फेरुज्जी फिनांजिआरिया के स्थानीय प्रतिनिधि के रूप में दिया. इसके बाद लिखा कि कंपनी के प्रमुख अधिकारी सितंबर में स्थानीय 'खरीद शाखा' के उद्घाटन के लिए दिल्ली आ रहे हैं और वे व्यवसाय की दीर्घकालिक योजना के सिलसिले में उनसे बात करना पसंद करेंगे.

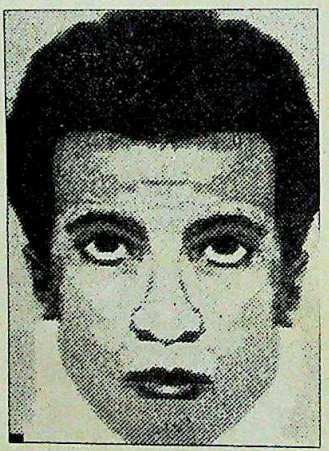

हीरा व्यापारियों ने इसका तुरंत जवाब भेजा. चौधरी ने यहां पहली बार चूक की. पहले उसने पत्र भेजा कि प्रमुख अधिकारी फेरुज्जी जूनियर 12 से 15 सितंबर के बीच दिल्ली में रहेंगे. फिर दूसरे पत्र में लिखा कि चूंकि प्रमुख अधिकारी नहीं आ सके इसलिए उनकी जगह फेरुज्जी जूनियर आ रहे हैं. लेकिन इस गलती पर किसी ने ध्यान नहीं दिया. 14 सितंबर तक चौधरी ने चार बड़े हीरा व्यापारियों—राजेश मेहता, मिलन पारिख, सौनक पारिख और गौतम मेहता—को राजी कर दिल्ली के दो होटलों में ठहरा दिया. व्यापारियों ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि फेरुज्जी फिनांजिआरिया नामक फर्म हीरों का कारोबार करती भी है या नहीं.

राजेश मेहता की कंपनी ने थोड़ी ही सावधानी बरती. उ एक सबंधी बताते हैं, "हमने इतालवी वाणिज्य दूत को फोन फेरुज्जी फिनांजिआरिया की बाबत पूछताछ की तो हमें मिला कि यह बड़ी नामी-गिरामी कंपनी है." लेकिन वे तहकीकात करना भूल गए कि उक्त कंपनी रासायनिक पदार्थों कारोबार करती है, हीरों का नहीं.

14 सितंबर की रात तक ये व्यापारी दिल्ली की ओर खिंचे आए. 1989-90 में 83.47 करोड़ रु. का हीरा निर्यात करने महिंद्रा ब्रदर्स ग्रुप के 28 वर्षीय मिलन पारिख पत्नी अर्चना और वर्षीय चचेरे भाई सौनक के साथ ताज मानसिंह होटल में उसी दिन 'ब्यूटीफुल डायमंड्स' के 26 वर्षीय राजेश मेहता वित्त प्रबंधक अनूप कुलकर्णी के साथ मानसिंह में आए. उनके समूह ने 1989-9 62.68 करोड़ रु. मूल्य का निर्यात गोयनका ट्रेडिंग कंपनी के 40 वर्षीय मेहता पहले ही ताज पैलेस होटल में आ चुके

योजना का पहला चरण बेहद कुशलता अंजाम देने के बाद चौधरी ने अगला कदम और चतुराई से बढ़ाया. चूंकि चारों व्यापारी का एक साथ अपहरण मुश्किल होता इस हरेक से अलग-अलग समय पर मुलाकात वक्त तय किया गया.

14 सितंबर की रात को गौतम मेहता किए गए. अगली सुबह दस बजे राजेश और कुलकर्णी किराए की मर्सिडीज कार वक्त पर चौधरी से मुलाकात के निकले और फिर नहीं लौटे. कार बाबूलाल नाम का ड्राइवर रहा था. यहां तक भी किसी को का आभास नहीं हुआ.

अगला निशाना गीतांजलि एक्सपोर्ट्स के मालिक मेहुल चोकसी थे. वे चौधरी की सबसे बड़ी उपलब्धि बन सकते थे पर वे बाल-बाल बच गए. भारत के सबसे बड़े हीरा व्यापारी चोकसी ने अपने प्रतिनिधि नेहा और जतिन को भेजना बेहतर समझा. चौधरी, वकानी दंपती से मिलने के लिए तैयार नहीं हुआ.

इसके बाद चौधरी ने बाकी शिकारों की तरफ दौड़ाई. दिन में 2 बजे उसने

चौधरी का कंप्यूटर चित्र और हीरा व्यापारियों को उसकी चिट्ठी

Ferruzzi Finanziaria

30th August, 1991

Dear Sirs,

We are pleased to introduce ourselves as one of the largest Italian Corporations in the world, ranking No. 85 worldwide with assets of over US$ 30.84 billions and annual sales of over US$ 13.97 billions with Gem & Jewellery sales amounting to US$ 150 millions.

Our Chief Executive is visiting Delhi next month to officially inaugurate the opening of our Buying Office here in New Delhi. During his short stay he wishes to meet some of the top exporters of Gems like you and to discuss long term business relations and to place our first sizable order.

Please quote your best F.O.B. prices based on Sight L/C for Diamonds in sizes +4 to -11 in grades Super Collection, Super Deluxe and Deluxe, Quantity 1000 Carats, Shipment October, 1991.

Thanking you, we remain,

Yours faithfully,
for FERRUZZI FINANZIARIA

R.CHOUDURY
Local Representative

THE OBEROI, SUITE # 516, DR. ZAKIR HUSSAIN MARG, NEW DELHI 110 003
Phone 363030 Telex: 031-07-22 Fax: (91) 11-363484

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

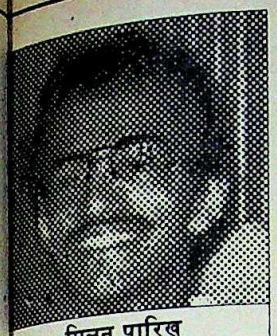
मिलन पारिख

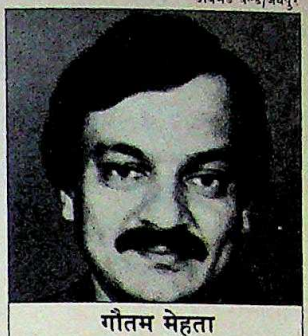
डायमंड वर्ल्ड/जयपुर
गौतम मेहता

डायमंड वर्ल्ड/जयपुर
राजेश मेहता

रवि चौधरी ने जाल फैलाया और हीरा व्यापारी उसमें फंस गए, बिना यह पता लगाए कि फेरुज्जी फिनांजिआरिया हीरो का कारोबार करती भी है या नहीं

रिवार के लोगों से फोन पर
ात की. इस बात की माफी
ांगते हुए कि फेरुज्जी नहीं
ा सके, चौधरी ने उन्हें
दिल्ली के पास ही नोएडा
स्थित हीरे तराशने का
ारखाना दिखा लाने के लिए
ामंत्रित किया. चौधरी,
ाजेश द्वारा किराए पर ली गई हरे रंग की मर्सिडीज गाड़ी पर
मिलन और सौनक को लेकर चलता बना. अर्चना, जो नोएडा नहीं
ई थी, अपहरण के नाटक की एकमात्र गवाह है.

रहस्यमय ढंग से चौधरी ने कुछ घंटे बाद अर्चना को फोन पर
ूचना दी कि मिलन और सौनक को लौटने में देर हो जाएगी,
सलिए वे हवाई जहाज के टिकट 16 सितंबर के लिए बुक करा लें.
चौधरी इतने पर ही नहीं रुका. शाम 6 बजे के करीब वह मुंबई
की एक हीरा कंपनी के वरिष्ठ अधिकारी भारत दोषी से बात करने होटल लौटा. शाम 7 बजे चौधरी को ओबेरॉय होटल में जाते हुए देखा गया. होटल ने उस पर तनिक संदेह नहीं किया क्योंकि उसने 78,000 रु. का बिल चुकाया हुआ था.

मगर खतरे की घंटी आखिर बज ही गई. रात 9.15 बजे अर्चना घबरा गई. उन्होंने मुंबई में अपने ससुर से बात की. रात के भोजन तक मिलन और सौनक को नदारद पाकर अर्चना का संदेह यकीन में बदल गया. 16 सितंबर को उन्होंने दोपहर 2 बजे दिल्ली के एक थाने में एफआईआर दर्ज करा दी.

इसके बाद अपराधी की तलाश शुरू की गई. पहला सुराग अगले दिन तब मिला जब ताज पैलेस होटल में हरी मर्सिडीज कार बरामद हुई. गाड़ी में उठापटक के निशान या कोई और संकेत नहीं मिले. उसमें केवल ड्राइवर का चश्मा पड़ा था. पुलिस को केवल एक चश्मदीद गवाह मिला जिसने बताया कि उसने कार को नोएडा की तरफ जाते देखा था. फिर 17 सितंबर को पुलिस ने आर.के. पुरम

हीरा उद्योग

सदमे और आतंक की छाया

देश का हीरा उद्योग बड़े पसोपेश में है. चार प्रमुख हीरा व्यापारियों के अपहरण ने इस पूरे हलके में खौफ की लहर फैला दी है. वैसे तो सामान्य समय में भी हीरा व्यापारी अपनी सुरक्षा के बारे में कोई कोताही नहीं बरतते. मुंबई में तो हीरा उद्योग के केंद्र पंचरत्न में सुरक्षा के आधुनिकतम उपकरण भी लगे हुए हैं. इनमें कई-कई तालों वाले फौलादी दरवाजे, क्लोज सर्किट टीवी कैमरे, जो हर आगंतुक की तस्वीर उतार लेते हैं, और समूची इमारत में बात कर सकने की सुविधाओं का जाल शामिल है.

ऐसे में अपहरण की घटना ने उनमें घोर असुरक्षा की भावना भर दी है. चारों अपहृत व्यापारी हीरा उद्योग के बड़े नाम हैं. दिलचस्प बात यह है कि इस उद्योग में शीर्ष पर केवल 32 व्यापारी रहे हैं और उनमें से तकरीबन सभी को रवि चौधरी ने पत्र लिखा था.

व्यापार के कायदे के अनुसार सभी व्यापारी इस मसले पर चुप्पी लगाए रहे. मसलन, एक व्यापारी ने चौधरी के पत्र में एक खामी देखी थी फिर भी उसने दूसरों को भी कुछ नहीं बताया. एक और व्यापारी मेहुल चोकसी ने एंटवर्प स्थित अपने कार्यालय से यह बात मालूम कर ली कि इटली की फेरुज्जी कंपनी हीरों का व्यापार नहीं करती. वे खुद चुप्पी मारकर बच गए. चोकसी के अनुसार, "हालांकि हमारे समुदाय में आपसी मेलजोल बहुत है पर हम व्यापार की बातें जाहिर नहीं करते."

उफान पर रहा हीरा उद्योग एकाएक बुरे दौर में पहुंच गया है. देश के 2,160 हीरा निर्यातकों के लिए 1989-90 का दौर काफी अच्छा था. इस साल यह उम्मीद थी कि वे 6,500 करोड़ रु. के लक्ष्य को पार कर लेंगे. पर चार प्रमुख व्यापारियों का अपहरण किए जाने की घटना ने सारा खेल चौपट कर दिया है. उल्लेखनीय है कि इन चारों व्यापारियों ने 198 करोड़ रु. मूल्य का निर्यात किया था. रत्न और आभूषण निर्यात प्रोत्साहन परिषद के अध्यक्ष कौशिक मेहता कहते हैं, "व्यापार की हालत ठीक नहीं और व्यावसायिक हलके में काफी तनाव है." व्यापारी सशंकित हैं कि यह काम भीतरी आदमी का हो सकता है, क्योंकि रवि चौधरी के पत्रों की भाषा भारतीय बाजार की रोजमर्रा की शब्दावली से अलग नहीं है. वैसे फिलहाल तो सभी को फिरौती की रकम मांगने वाले संदेश का इंतजार है.

पंचरत्न बाजार में छत पर लगा कैमरा: आतंक का माहौल

हेमंत गिठवा

Domain. Gurukul Kangri C... ar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलाके में एक कंटेसा कार बरामद की. हर्ट्ज़ कार रेंटल एजेंसी की इस कार को चौधरी ने जाली ड्राइविंग लाइसेंस दिखाकर किराए पर लिया था. होटल में भी उसने बिना किसी फोन नंबर के मुंबई के 'जॉली मेकर चैंबर्स' का पता लिखाया था.

चौधरी एक रहस्य ही है. उसका नाम रवि चौधरी ही है यह बात यकीन के साथ नहीं कही जा सकती. वह अच्छी अंग्रेजी बोलता है और पांच सितारा तहजीब उसे बखूबी आती है. बाकी की कहानी तो ओबेरॉय होटल में गुजरे उसके एक महीने और व्यापारियों के साथ लेन-देन की उसकी बातों पर ही आधारित है. उसे हीरा उद्योग और उसकी बारीकियों का पता था. पुलिस को सबसे अजीब सुराग यह मिला कि उसने कराची फोन किया था.

मामले की गंभीरता को देखते हुए 20 सितंबर को इसे सीबीआई के हवाले कर दिया गया. इंटरपोल चौधरी के बारे में जानका हासिल करने के वास्ते कराची में किए गए फोन की पड़ताल रहा है. दिल्ली पुलिस विभिन्न गिरोहों पर नजर रख रही है. दि पुलिस के आयुक्त अरुण भगत कहते हैं, "यह एक अनोखा मा है. पहली बार एक ठग ने अपहर्ताओं के किसी गिरोह के मिलकर काम किया है."

अजीबोगरीब बात यह है कि फिरौती की रकम के लिए तक कोई संदेश नहीं आया है. पर पुलिस आयुक्त को विश्वास मामला अपहरण का ही है, बदला भंजाने या लूट का नहीं रकम की मांग भी जल्दी ही की जाएगी. इस बीच कई ठग चौ के नाम की आड़ में कुछ कमा लेने की कोशिश में लग गए फिरौती की मांग करने वाले कई नकली संदेश पहुंच चुके हैं.

अपहरण

बढ़ती दहशत, कलपती मजबूरी

राजधानी और इसके आसपास के इलाकों में अपहर्ताओं के गिरोह सक्रिय पर प्रशासन असहा

—विजय क्रान्ति और ओम सराफ

जुर्म जो औरों के तो सिर चढ़कर बोलता है लेकिन शिकार को उफ भी नहीं करने देता. इसका दंश पाए घरवाले ही नहीं, रखवाले भी हाथ ही मलते रह जाते हैं. शिकार का अपहरण कर उसकी रिहाई के बदले अपनी झोली भरने का 'नायाब' तरीका अब बिहार, उत्तर प्रदेश या उग्रवाद ग्रस्त इलाकों तक ही सीमित नहीं. राजधानी और उससे सटे इलाकों में तो इसने भयानक रूप ले लिया है.

अपराध जगत के 'जीनियसों' ने आजकल आम-ओ-खास लोगों और सरकारों का जीना हराम कर रखा है. बगैर हींग, फिटकरी के चोखा रंग लाने वाला यह कारगर नुस्खा दिल्ली और पड़ोसी उत्तर प्रदेश के नौसिखुए से लेकर शातिर अपराधी धड़ल्ले से आजमा रहे हैं. लाखों रुपयों में वसूली जा रही फिरौतियों से अपराधियों के दिन फिर रहे हैं तो कश्मीर, पंजाब, असम और आंध्र प्रदेश के उग्रवादी राजनेताओं, उनके रिश्तेदारों या सरकारी अफसरों-कर्मचारियों को अगवा कर समूचे राज्यतंत्र को नतमस्तक होने के लिए विवश कर रहे हैं. और पुलिस, गुप्तचर एजेंसियों ही नहीं बल्कि समूची मशीनरी के सामने असहाय होकर यह सब होते देखने के अ कोई चारा नहीं है. राजधानी अपराध विज्ञान संस्थान के निदे ए.जे. बहादुर कहते हैं, "दुर्भाग्य इस अपराध को एक छोटा अप मानकर इस बारे में कोई गं अध्ययन नहीं किया गया. इसी से वह आवश्यक जानकारी एक उपलब्ध नहीं है जिसका इस्ते किया जा सके. इस समय हम में भटक रहे हैं. फिलहाल हमें अनुभव से ही सीखना होगा."

गाजियाबाद में गिरफ्तार कुछ अपहर्ता

प्रमोद पुष्करणा

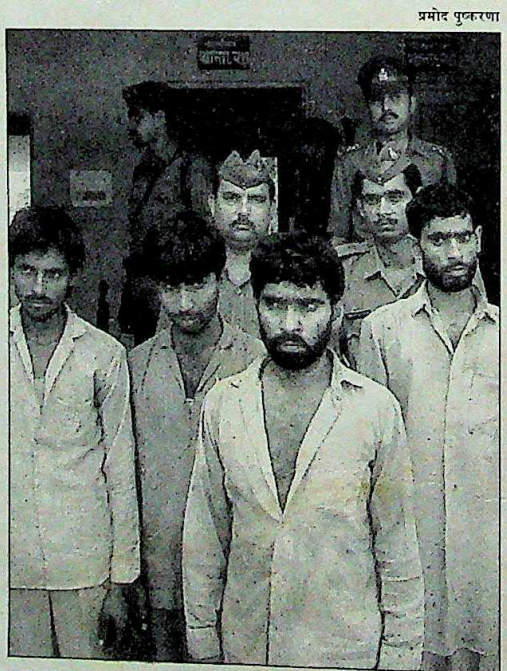

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पुलिस के बढ़ते दबाव के चलते अनेक अपहर्ताओं को धर दबोचा गया है

लेकिन नई दिल्ली के एक होटल से मुंबई के चार बड़े व्यापारियों के रहस्यमय ढंग से हो जाने की घटना (देखें पृष्ठ 1 इस इलाके में बढ़ रहीं अपहरण घटनाओं पर पुलिस और लोगों ध्यान केंद्रित कर दिया है. हाल दिल्ली पुलिस की अपराध शाख उपायुक्त आर. तिवारी का कहन "चार हीरा व्यापारियों के अप की खबरों को जिस तरह अखबा उछाला है उससे दिल्ली के नाग में गलतफहमी पैदा हुई है कि न अपहरणों का कोई नया सिलसि शुरू हो गया है." पर सिलसि निश्चय ही नया है. कुछ उदाहर

► इस साल 29 जुलाई को दिल्ल चावल व्यापारी जुगल कि अरोड़ा को हरियाणा से सटे अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरनैल मकवाना

"अपहर्ताओं को एक ही शिकार से इतना पैसा मिल जाता है जो किसी बड़ी डकैती में भी संभव नहीं"
आर. तिवारी
उपायुक्त (अपराध), दिल्ली

प्रमोद पुष्करणा

"अपहरण ऐसा धंधा बन गया है जिसमें 10 से 50 लाख रु. के बीच रकम बनाना मामूली बात है"
शैलजाकांत मिश्र
एसएसपी, गाजियाबाद.

क्षेत्र से उनकी कार और ड्राइवर समेत उठा लिया गया. उन्हें गाजियाबाद में छिपाए रखने के बाद परिवार से मोटी रकम लेकर ही छोड़ा गया.

▶ 20 जुलाई को कंझावला के ईंट भट्टा मालिक संदीप अग्रवाल को मोटर साइकिल पर जाते समय एक मारुति वैन में सवार गिरोह ने पकड़ लिया. कहा जाता है अग्रवाल परिवार ने दो किस्तों में 1,10,000 रु. नकद तथा सोने की दो चेन देकर अग्रवाल को छुड़ाया. इस मामले में अपहरण की योजना बनाने और उसके संचालन का काम मुजफ्फरनगर जेल में बंद एक गिरोह ने किया था.

▶ दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने पिछले साल के अंत में जगबीर सिंह उर्फ जग्गी के गिरोह के आठ सदस्यों को उस समय धर दबोचा जब वे पंजाबी बाग में अपहरण की अगली योजना तैयार कर रहे थे. यह गिरोह इससे पहले तीन अपहरण कर चुका था जिनमें पश्चिम विहार के प्रापर्टी डीलर दर्शनलाल से 1,75,000 रु., लोनी में ईंट भट्ठा मालिक प्रदीप चड्ढा से 10,00,000 रु. नकद और उनकी मारुति कार तथा कुतुंबगढ़ में भट्ठा मालिक राज सिंह से 13,00,000 रु. वसूल किए थे.

ये उन बेहिसाब अपहरण कांडों में से ऐसे-गिने चुने मामले हैं जो प्रकाश में आ चुके हैं. पुलिस रिकार्ड के अनुसार इस साल अगस्त के अंत तक राजधानी में अपहरण के 571 मामले दर्ज हो चुके थे. पिछले साल इनकी संख्या 879 और 1989 में 853 थी (देखें चार्ट).

वैसे, पुलिस थानों में दर्ज एक-चौथाई से लेकर एक-तिहाई मामले तो फर्जी होते हैं. बहुत-से मामले तो आपसी दुश्मनी के चलते, लड़की या लड़के के भाग जाने पर भी दर्ज कराए जाते हैं तो कई बार मकान मालिक और किराएदार के झगड़ों में भी 'अपहरण' के मामले सामने आते हैं.

पिछले हफ्ते उत्तर-पश्चिमी दिल्ली की शालीमार बाग बस्ती के 28 वर्षीय युवक अजय झा का अपहरण भी इसी के चलते हुआ. पुलिस में दर्ज रिपोर्ट के अनुसार झा का नया मकान मालिक रमेश पुराना उनसे घर खाली करवाना चाहता था.

निजी परेशानियों के चलते भी 'अपहरण' के मामले गढ़े जाते हैं. हाल ही में पूर्वी दिल्ली के सैनी एन्क्लेव में रहने वाले एक उद्यमी जैनेंद्र मित्तल के अपहरण का मामला दिलचस्प है. बताया जाता है कि 18 जुलाई को बैंक से पैसे निकलवाने के बाद वे अपनी कार में गाजियाबाद गए तो फिर लौटे ही नहीं. आशंका व्यक्त की गई कि उनका अपहरण कर लिया गया है. पर पुलिस जांच के दौरान पता चला कि मित्तल पर 30-40 लाख रु. की देनदारियां हो गई थीं. फिरौती की मांग न आने से पुलिस अब शक जताने लगी है कि कहीं कर्जा वापस मांगने वालों के डर से तो 'अपहरण' की खबर नहीं फैलाई गई.

पर मूलतः आर्थिक स्वरूप के इस अपराध का सामाजिक पहलू भी है. अपराध विज्ञान संस्थान में मनोविज्ञान विभाग के प्रमुख डॉ. जे. मोहंति का कहना है, "जिस समाज में सिर्फ पैसे को ही आदर देने की परंपरा बन गई हो और उसके कमाने के तरीके में अच्छे-बुरे का भेद खत्म होता जा रहा हो, इस तरह के अपराधों का पनपना स्वाभाविक ही है."

हाल ही में उत्तर प्रदेश की नई भाजपा सरकार द्वारा राज्य के पश्चिमी जिलों में अपराधी गिरोहों के खिलाफ शुरू किए गए जबरदस्त अभियान ने कई कुख्यात गिरोहों को दिल्ली में शरण लेने पर मजबूर कर दिया है. सतत दबाव बनाए रख उत्तर प्रदेश पुलिस ने इस इलाके में सक्रिय कम-से-कम 11 ऐसे कुख्यात अपराधियों को मार गिराया है जिनका मुख्य धंधा अपहरण करके पैसा ऐंठना था. पुलिस सूत्रों के अनुसार इन दिनों दिल्ली में जो गिरोह सक्रिय हैं उनमें उत्तर प्रदेश के महेंद्र फौजी, हरीश पंडित, मदन भैया और त्यागी गिरोह के कई गुटों के अलावा दिल्ली के कई छुटभैये अपराधी भी शामिल हैं. समझा जाता है कि इनमें महेंद्र फौजी गिरोह के पास एके-47 किस्म की राइफलें भी हैं.

हालांकि समूचे उत्तर प्रदेश में अपहरण की घटनाओं में इधर काफी तेजी आई है. सूत्रों के मुताबिक, राज्य के 63 प्रमुख शहरों में से 21 में हर हफ्ते औसतन तीन-चार अपहरण होते हैं. हमेशा की तरह डाकुओं का तो यह पुराना ही धंधा है और इसमें फिलहाल ददुआ का गिरोह सबसे अव्वल है. तराई में पिछले दो महीने में अपहरण के 12 से अधिक मामले दर्ज किए गए हैं.

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में तो तेजी से बदलती आर्थिक और राजनैतिक स्थिति की वजह से मेरठ, गाजियाबाद, बुलंदशहर, मुजफ्फरनगर, हापुड़, लोनी वगैरह में अपहरण की घटनाएं आम हो चली थीं. इन इलाकों में व्यापक औद्योगीकरण के चलते पैसे का लेन-देन बहुत बढ़ गया, जमीन की कीमतें आसमान छूने लगीं और नेताओं तथा अपराधियों के बीच सांठगांठ दिनोदिन मजबूत होती गई. इसलिए पिछले पांच साल में बलात् रकम ऐंठने का धंधा सबसे आसान बन गया. गाजियाबाद के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक शैलजाकांत मिश्र कहते हैं, "अपहरण एक ऐसा धंधा बन गया जिसमें 10 से 50 लाख रु. के बीच रकम बनाना मामूली बात है."

अपहरण से अभिशप्त क्षेत्र

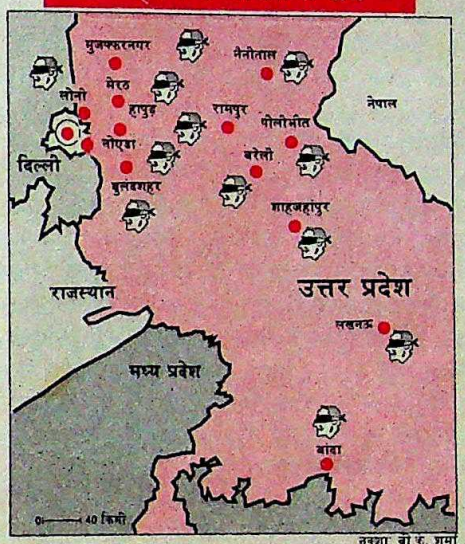

नक्शा: वी.के. शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्रवादी गिरोह

नया और कारगर अस्त्र

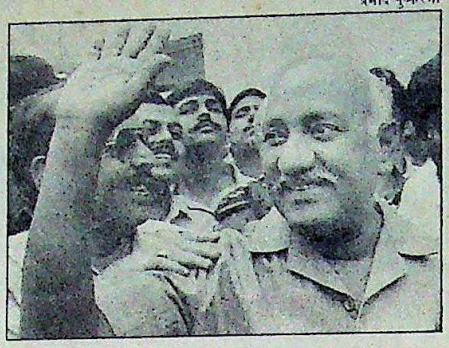
प्रमोद पुष्करणा

पिछले कुछ समय से कश्मीर, पंजाब, असम और आंध्र प्रदेश के उग्रवादियों के हाथों में अपहरण के रूप में हत्याओं और धमाकों से भी ज्यादा ताकतवर हथियार आ गया है. भारत में राजनैतिक रूप से चूंकि यह एक नया घटनाक्रम है इसलिए इसके प्रति कोई समग्र नीति अभी तक ईजाद नहीं हुई है. मसलन:

- कश्मीर में हर ऐसे मामले में उग्रवादियों के आगे घुटने टेक दिए गए. अब भी उसी नीति पर अमल चल रहा है.
- पंजाब में अपहरण के बदले पुलिस ने भी उग्रवादियों के परिवारों में से अपहरण किए और इस तरह संतुलन बना रहा.
- असम में बंधक बनाए गए लोगों की जीवन रक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए पहले उग्रवादियों को आम माफी दे दी गई. फिर एकदम विपरीत रवैया अपनाते हुए सैनिक कार्रवाई शुरू कर बंधकों को उनके भाग्य पर छोड़ दिया गया.

अपहरण के मामलों में सबसे ज्यादा दुस्साहस कश्मीरी उग्रवादियों ने दिखाया है. दुनिया में अपहरण की वारदातों में सरेअव्वल पाकिस्तान के कराची शहर की कलाश्निकोव संस्कृति से प्रेरणा पाकर उन्होंने दिसंबर 1987 में तत्कालीन केंद्रीय गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद की बेटी रुबाइया के अपहरण से इस सिलसिले की शुरुआत की. भारतीय तेल निगम के कार्यकारी निदेशक के. दुरैस्वामी के अपहरण ने तो प्रशासन की कमजोरी उघाड़कर रख दी.

रिहाई के बाद दुरैस्वामी

पंजाब के उग्रवादी भी अब अपने साथियों को छुड़ाने के लिए अफसरों के रिश्तेदारों को अगवा करना शुरू करने लगे हैं. पिछले महीने जब मध्य प्रदेश-महाराष्ट्र पुलिस ने अमृतसर जिले के एक गांव के निवासी और बब्बर खालसा गुट के उग्रवादी माधो सिंह को गिरफ्तार किया तो उग्रवादियों ने बदले में पंजाब के पुलिसकर्मियों के कुछ रिश्तेदारों को ही अगवा कर लिया. मकसद उस उग्रवादी की रिहाई का रास्ता साफ करना था.

लेकिन असम में कहानी उलटी है. अपने साथियों को छुड़ाने के लिए सरकारी अधिकारियों को अगवा करने का सिलसिला उल्फा ने 1 जुलाई को हितेश्वर सैकिया सरकार के पदारूढ़ होते ही शुरू किया. सैकिया को 14 में से छह बंधकों की रिहाई के बदले उल्फा के करीब 650 कार्यकर्ता छोड़ने पड़े.

जाहिर है, जब तक केंद्र कोई ठोस नीति नहीं अपनाता, उसे अपहरणों के आतंक से इसी तरह जूझते रहना होगा.

—कंवर संधू और हरिंदर बवेजा

अपहरण ऐसे अंजाम देते हैं

अपहरण अब सिर्फ बड़ी रकम के लिए ही नहीं होता. छोटे-मोटे रहजन और चोर भी इस धंधे में तेजी से उभरने लगे हैं. अपहरण में अक्सर तीन तरह के लोग होते हैं. पहले वर्ग में संगठित गिरोह हैं जिनका काम शिकार की शिनाख्त करना और फिरौती दे पाने की उसकी क्षमता को आंकना है. दूसरा वर्ग इस कार्रवाई को अंजाम देने वालों का है. वे शिकार को बलात् उठाकर बंदी बना लेते हैं. तीसरा वर्ग मध्यस्थों का है. समाज के ये तथाकथित प्रतिष्ठित लोग अक्सर दोहरी भूमिका निभाते हैं और दोनों तरफ से हिस्सा लेते हैं.

इनमें दूसरा वर्ग अमूमन भाड़े के अपराधियों का है जिन्हें एक तय रकम दी जाती है. मांगी फिरौती का मामूली हिस्सा ही उनके हाथ लगता है. लेकिन वे कभी घाटे में नहीं रहते.

सबसे अधिक रकम तीसरे वर्ग के लोगों के हाथ आती है. वे अपहृत व्यक्ति के परिवार को सलाह देते हैं कि जान जोखिम में है इसलिए फिरौती देने में ही बुद्धिमानी है. दूसरी तरफ वे अपहर्ताओं से रकम कुछ कम करने को कहते हैं और साथ में आश्वासन भी देते हैं कि पुलिस बीच में नहीं आएगी. अक्सर पुलिस ही मध्यस्थ की भूमिका अदा करती है.

आम तौर पर, अपहृत व्यक्ति पहले और दूसरे वर्ग के लोगों को नहीं जानते, इसलिए अपहर्ताओं की गिरफ्तारी के बाद भी पुलिस को मामला सुलझाने में दिक्कत पेश आती है. इसके अलावा राजनैतिक संरक्षण, अपराधियों की गतिशीलता, वाहनों की आसानी से उपलब्धता, संपन्नता और राजनीति के अपराधीकरण जैसे तत्वों ने भी अपहरण की अचानक बढ़ती घटनाओं में योगदान दिया है.

—अनिरुद्ध मित्र

मेरठ जिले में इस धंधे में नए लोगों के आने से पहले कई पुराने और ताकतवर गिरोहों का दबदबा था. इनमें त्यागी और गुर्जर गिरोह प्रमुख थे. त्यागी गिरोह का इतना खौफ था कि कई अपहरण की धमकी से ही रकम पहुंच जाती थी. मेरठ क्षेत्र के अपहरण के अपराधों के जनक गुमडी के बारे में वहां के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बृजलाल वर्मा बताते हैं, "वह जेल में बैठा राज करता था और उसके आदमी लोगों को उठा ले जाते थे."

इन पेशेवर गिरोहों की बात छोड़िए, सगे-संबंधी भी पैसे की लालच में अपहरण करने से नहीं हिचकिचाते. पिछली जुलाई में बुलंदशहर में चरण सिंह यादव ने अपने चार वर्षीय भतीजे जीतू उर्फ पप्पू का अपहरण कर लिया और उसके मजदूर पिता ब्रह्म से 50,000 रु. फिरौती मांगी. दरअसल, अपहरण के मामले में न गरीब-अमीर के बीच कोई भेदभाव नहीं किया जाता. पिछले गाजियाबाद में इस्माइल, कमरुद्दीन, इलियास और शम्सुद्दीन एक फल विक्रेता 20 वर्षीय रोहतास सिंह का अपहरण कर और फिरौती के रूप में 40,000 रु. मांगे.

वर्मा के अनुसार अपहरण की घटनाओं को रोक पाना आसान नहीं रहा. वे कहते हैं, "अपराध की दुनिया में आने वाला हर नौसिखुआ अपहरण से ही शुरुआत करता है. पुराने गिरोहों पर नजर रखना तो काफी आसान होता है क्योंकि उनके ठिकानों का पता होता है. पर उनका हम क्या करें जो कभी भी पुलिस रिकॉर्ड में नहीं आए."

अपहरण के क्षेत्र में सुनियोजित गिरोहों के उतरने से दिल्ली पुलिस भी अब चिंतित हो उठी है. उसके इरादों की एक झलक क्षेत्र के युवा पुलिस उपायुक्त बी.एस. बराड़ की टिप्पणी में देखी जा सकती है. उनका कहना है, "हम दिल्ली में संगठित अप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिरोहों को पनपने देने का जोखिम नहीं उठा सकते. अगर हम आज इस काम में चूक गए तो बाद में यह काम बहुत मुश्किल हो जाएगा. हो सकता है तब बात हाथ से निकल जाए.'' इसीलिए दिल्ली, उत्तर प्रदेश और हरियाणा के पुलिस संगठनों के बीच उच्चस्तरीय सहयोग समिति का गठन किया गया है.

अपहरण की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए दिल्ली पुलिस ने अपने अपहरण-निरोधक सेल को भी फिर से सक्रिय किया है जो अब तक केवल एक औपचारिक संगठन था. इस सेल को अपराधियों का रिकॉर्ड रखने, उनकी अपराध शैलियों का अध्ययन करने, अपहरण होने पर परिवार के साथ संपर्क साधने तथा अपहर्ताओं से 'बात और लात' से निबटने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित करने की योजना है. लेकिन जब तक विदेशों के तुजर्बे के आधार पर अपहरण की वारदातों का तुरंत सुराग लगाने, अपहर्ताओं से संपर्क साधकर, सौदेबाजी की बातचीत लंबी चलाकर उन्हें मनोवैज्ञानिक रूप से तोड़ने, उनके करीबी रिश्तेदारों का जवाबी अपहरण कर उन्हें समर्पण के लिए मजबूर करने या उन्हें गफलत में रखकर एक ही झपट्टे में उनकी गिरफ्तारी और अपहृत को छुड़ा लेने की पुख्ता तालीम नहीं दी जाती, कुछ नहीं हो सकता. यह काम उतना सरल नहीं है जितना ऊपर से दिखता है. बकौल एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, ''अपहर्ता अब एकदम नई और रिफाइंड शैली अपनाने लगे हैं.''

नाविका शेखर वर्मा

दिल्ली में अपहरण की घटनाएं

वर्ष	दर्ज मामले	रद्द किए गए मामले	वास्तविक मामले	सुलझे मामले	कितने फीसदी मामले सुलझे
1985	946	231	715	526	73.5
1986	826	394	432	271	62.7
1987	766	412	354	246	69.5
1988	737	341	396	266	67.2
1989	853	384	469	286	61.0
1990	879	311	568	291	51.2
1991 (30.8.91 तक)	571	169	402	182	45.3

जहां तक अपराधियों के लिए इस धंधे में सुभीते की बात है पुलिस अधिकारी और अपराधशास्त्री इस बात पर एकमत हैं कि डकैती, हत्या, लूट और चोरी जैसे दूसरे लगभग सभी अपराधों के मुकाबले यह सबसे आसान और सबसे ज्यादा 'उपजाऊ' अपराध है. तिवारी के शब्दों में, ''यह एक ऐसा अनूठा अपराध है जिसमें अपराधी को अपनी जान का जोखिम भी कम-से-कम रहता है, बैठे-बिठाए एक ही शिकार से इतना पैसा मिल सकता है जितना किसी बड़ी-से-बड़ी डकैती में भी संभव नहीं है. और सोने पर सुहागा यह कि पकड़ा गया शिकार खुद अपराधी की मदद करता है. ऐसे में पकड़े जाने पर 'अगर' सजा हो भी जाए तो ज्यादा से ज्यादा सात साल.''

शायद यही वजह है कि शातिर अपराधियों का बड़ा तबका अब इस अपराध की ओर रुख कर रहा है. इससे स्वाभाविक है कि नागरिकों और पुलिस के लिए समस्याएं भी बढ़ती जा रही हैं. ऐसे में जब तक पुलिस और दूसरी सुरक्षा एजेंसियां इस नुस्खे के कारगर होने का अपराधियों का मुगालता खत्म करने में कामयाब नहीं होतीं, अपहर्ताओं के आश्रयदाता नेताओं से रिश्ते नहीं तोड़तीं और अपेक्षित जन-सहयोग नहीं जुटातीं तब तक दहशत फैलाकर लोगों की मजबूरी भुनाने का क्रम शायद ही रुके.

—साथ में **अनिरुद्ध मित्र** गाजियाबाद से, **राहुल पाठक** नोएडा से और **दिलीप अवस्थी** लखनऊ से

असम

विछोह का दर्द, मुक्ति की पीड़ा

एम. दास

आगंतुकों का स्वागत करते हुए शैल तिवारी बिलकुल असहज दिखती हैं. असम सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग में आयुक्त एवं सचिव एस.के. तिवारी की पत्नी शैल पिछले करीब दो महीने से सदमे में हैं. उल्फा उग्रवादियों ने 1 जुलाई को उनके पति का अपहरण कर लिया था. गुवाहाटी के खानपाड़ा की आईएएस कॉलोनी के अपने बंगले में मित्रों-परिचितों के बीच बैठी शैल साहस का दिखावा करते हुए कहतीं हैं कि ''मुझे पूरा यकीन है कि मेरे पति को कुछ नहीं होगा.'' और अखबारों के जरिए शैल ने उल्फा से अपील की कि वह उनके पति को छोड़ दे, नहीं तो ''मेरा भी अपहरण कर ले.''

उनकी पड़ोसन रीता ठाकुर कहती हैं, ''ऐसे तो शैल पागल ही हो जाएगी.'' पति के बंधक बनाए जाने से पहले शैल को उल्फा के बारे में बहुत जानकारी नहीं थी. वैसे, वे अब भी कहती हैं, ''असल में उन लोगों के बारे में बहुत ज्यादा तो अब भी नहीं जानती लेकिन वे भी आखिर इनसान ही तो होंगे.''

शैल: उम्मीद नहीं छोड़ी

तिवारी के घर के उदास वातावरण के विपरीत एम.एम. दास और हरेश्वर शर्मा के घर आनंद और उल्लास छाया है. दरांग जिले के अतिरिक्त उपायुक्त दास और जिला उपायुक्त के विश्वस्त सहायक शर्मा का भी अपहरण उल्फा के उग्रवादियों ने उसी दिन किया था. लेकिन सौभाग्य से वे उन चंद बंधकों में से हैं जिन्हें बाद में रिहा कर दिया गया था.

लेकिन दास और शर्मा के परिवार अब भी उस दहशत से नहीं उबरे हैं जो उन्होंने दस दिनों में भुगती. शर्मा कहते हैं, ''यह अनुभव मैं जिंदगी भर नहीं भूल पाऊंगा.'' 50 वर्षीय दास अब भी रात को कई बार डर जाते हैं. उनकी पत्नी सरबनी अनजान लोगों से बहुत खौफ खाती हैं. अखबारवालों से भी वे गेट के सींखचों में से बात करती हैं. अक्सर उनका जवाब होता है, ''हमें माफ करिए. हम कुछ कहने के मूड में नहीं हैं.''

लेकिन छूटकर आने वाले बंधक उल्फा की मेजबानी के कायल हैं. शर्मा बताते हैं, ''उन लोगों ने हमारा बहुत खयाल रखा.'' उल्फा के लड़कों ने उन्हें असुविधा के लिए माफी मांगी. उनकी उम्र को देखते हुए वे उन्हें 'अंकल' कहकर पुकारते थे.

—**रुबेन बनर्जी**, गुवाहाटी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ)

जोड़-तोड़ का खेल शुरू

संसद के बजट सत्र का विश्वासपूर्वक सामना कर लेने के बाद अल्पमत वाली नरसिंह राव सरकार अब विपक्षी दलों के अंतर्द्वंद्व का फायदा उठाकर अपना संख्याबल बढ़ाने की फिराक में

—जफ़र आगा

कई संयोगों की वजह से कांग्रेस (इ) के दिन मौज-मस्ती में कट रहे हैं. उसने संसद के उस सत्र को भी पार कर लिया जिसे खतरनाक समझा जा रहा था.

पर अपनी सड़क छाप करतबबाजी से शासक दल ने किस्मत के इस फेर को सिरे चढ़ाने की तैयारी शुरू कर दी. संसद के परेशान कर देने वाले सत्र के खत्म होते ही कांग्रेस ने आयाराम गयाराम के व्यापारियों को मुस्तैद कर दिया ताकि उसकी सरकार जल्द से जल्द अल्पमत होने के अभिशाप से मुक्त हो सके.

शरद पवार, गुलाब नबी आजाद, राजेश पायलट, रंगराजन कुमारमंगलम, सीताराम केसरी और विद्याचरण शुक्ल जैसे मंत्रियों की एक अनौपचारिक टोली ने विपक्ष के कच्चे खिलाड़ियों को टोहना शुरू कर दिया. यह सोच-समझ, नाप-जोखकर तैयार की गई रणनीति थी जिसमें पी.वी. नरसिंह राव को निरपेक्ष बने रहना था. इसीलिए उन्होंने यह घोषणा भी की, "हम किसी पार्टी को तोड़ना नहीं चाहते."

पर जनता दल और समाजवादी जनता पार्टी (सजपा) के भीतर जो कुछ हो रहा था वह कांग्रेस को दखल का न्यौता देने के लिए काफी था. सजपा के कई नेता तीन दिन की अनौपचारिक बातचीत के लिए हिमाचल प्रदेश के चैल पहाड़ी विश्राम केंद्र पर मिले. बैठक में चंद्रशेखर, देवगौड़ा, यशवंत सिन्हा, दिग्विजय सिंह व कई अन्य नेता मौजूद थे. बैठक में इंका के साथ भावी रिश्तों पर भी बातचीत हुई. यहां तक कि उसके साथ विलय की संभावनाओं पर भी विचार किया गया.

पर इंका के दो गंभीर पूर्वाग्रहों की वजह से सारा मामला ठंडा पड़ गया. शासक दल देवीलाल और सुब्रह्मण्यम स्वामी को नहीं लेना चाहता. इंका के सामने दूसरी परेशानी खुद चंद्रशेखर को लेकर थी. डर है कि चंद्रशेखर आते ही पार्टी के आला पद के दावेदार बन जाएंगे.

पर सजपा जितना दे सकती है, इंका की जरूरत उससे कहीं ज्यादा है. बहुमत हासिल करने के लिए उसे कम-से-कम 20 सांसदों की जरूरत है. उसका मुख्य निशाना जनता दल के अजित सिंह हैं, जो पिछले तीन महीनों से विश्वनाथ प्रताप सिंह से उलझ रहे हैं. अजित सिंह के संपर्क में मंत्रियों का कहना है कि यह जाट नेता कांग्रेस से हाथ मिलाने को तैयार है पर 19 सांसद नहीं जुटा पा रहे जो फिलहाल

लेखा-जोखा

नरसिंह राव सरकार के 100 दिन

इस के लगभग चुनाव घोषणा पत्र से किए गए वादे

राजनैतिक

- स्थानीय निकायों को अधिकार देने वाला विधेयक फिर से लाना
  - नहीं हुआ
- सभी संप्रदायों वाला बल बनाना
  - बिना किए इसे दोहराया गया
- धर्मस्थलों की 15 अगस्त 1947 की स्थिति रखने वाला विधेयक लाना
  - विधेयक पारित
- पिछड़ी जाति विकास निगम का गठन करना
  - नहीं हुआ

कीमतें

इनकी कीमतों को 1990 के स्तर पर लाना

- डीजल, किरासन तेल, नमक
  - नहीं किया गया
- खाद्य तेल
  - कीमतें बढ़ीं
- साइकिल
  - वही कीमत बरकरार
- सूती साड़ी और धोती
  - नहीं किया गया

आर्थिक

- प्रत्यक्ष करों को स्थिर रखना
  - आयकर वही; कंपनी करों में वृद्धि
- सीमा शुल्क और उत्पाद कर स्थिर करना
  - सीमा शुल्क वही लेकिन उत्पाद कर में बढ़ोतरी
- पुर्नानिवेश पर मुनाफे से कर नहीं; निम्न और मध्यम आयवर्ग को मकान; वैकल्पिक ऊर्जा; स्कूलों को इमारत; पेयजल आपूर्ति
  - बजट में प्रस्तावित

राष्ट्रीय मसले

कश्मीरः कोई नई पहल नहीं हुई है; पंजाबः चुनाव 15 फरवरी 1992 तक टालने से स्थिति भ्रामक हो गई है; असमः उल्फा से बातचीत और कड़ाई के बीच झूलने की स्थिति बन गई है; सांप्रदायिकता की स्थितिः बड़े दंगे नहीं हुए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दल को तोड़ने के लिए जरूरी है.

उनके मंत्री जब शिकार तलाश रहे थे तो प्रधानमंत्री इस कोशिश में फूंक-फूंककर कदम रख रहे थे कि विपक्ष से कोई मनमुटाव न हो जाए क्योंकि पूरे बजट सत्र में उन्हें इसकी जरूरत थी. नरसिंह राव का कहना है, "हम आम राय और मुद्दों पर आधारित राजनीति का नया रास्ता तैयार करना चाहते हैं." विपक्ष की मजबूरियों को देखते हुए यह बहुत अच्छी रणनीति है. अजित सिंह और सजपा के खेमे एक न एक दिन टूटेंगे ही और तब पलड़ा इंका की तरफ कुछ झुक ही जाएगा.

इस बीच कांग्रेस में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया जारी है. इंका समिति के सूत्रों का कहना है कि कुछ राज्यों की इकाइयां, खास तौर पर हिंदी राज्यों की इकाइयां जल्दी ही पुनर्गठित होंगी. नरसिंह राव ऐसे लोगों को तलाश रहे हैं जो अपने ही बूते पर पार्टी को चला सकें.

आशंका के विपरीत बजट सत्र के अंत तक इंका में ज्यादा विश्वास दिखाई देने लगा. राजीव के बाद के पहले सौ दिन पार्टी के लिए बिना किसी संकट के ही गुजर गए. नरसिंह राव ने खुद को सभी घटकों से ऊपर एक नेता के रूप में स्थापित कर लिया.

लेकिन दूसरे स्तर के नेताओं में पहले नंबर पर आने की होड़ जारी रही. पवार और सिंधिया ने हाथ मिलाए और सत्ता का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गए, जबकि दूसरी तरफ संजय गांधी के पुराने जंबाजों ने ताल ठोकनी शुरू कर दी. गुलाम नबी आजाद, जगदीश टाइटलर, तारिक अनवर व अन्य कई लोगों ने हाल ही में युवा सांसदों की दो दिन की एक सेमिनार की. मकसद—सांसदों में अपने समर्थक जुटाना.

इस सबसे नरसिंह राव की स्थिति निश्चित रूप से मजबूत हुई. वे सभी गुटों के कार्यक्रमों में गए और किसी ने भी उन्हें चुनौती नहीं माना. कल तक जिसे नेता नहीं माना जाता था वह आज नेता बन चुका है. प्रधानमंत्री की रणनीतिविहीनता, महत्वकांक्षाविहीनता उनके लिए तुरुप का पत्ता साबित हुई है. राजीव के फूहड़ वफादार भी इस बूढ़े सिपहसालार के ईदगिर्द जमा होने लगे हैं.

चार्ट: प्रबल मंडल

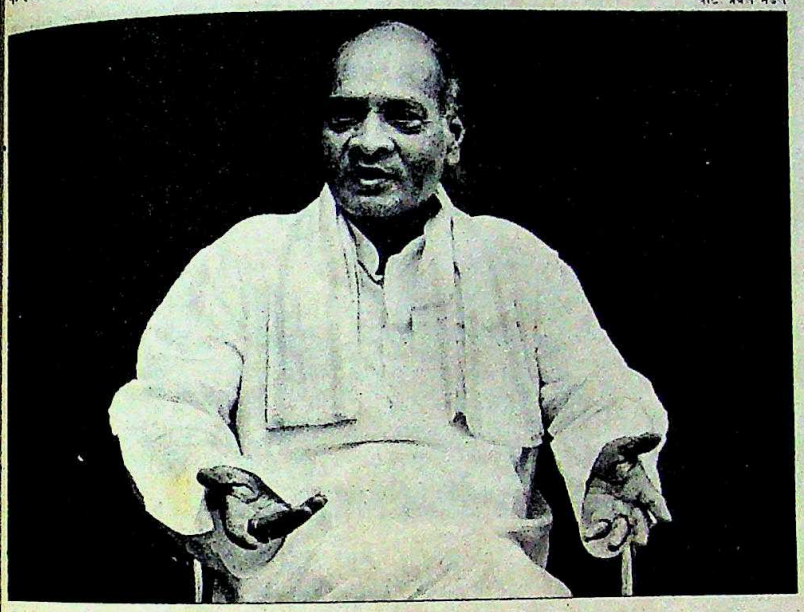

अर्थव्यवस्था

■ नई औद्योगिक नीति, विदेश व्यापार कानूनों में संशोधन वगैरह के साथ धूम-धड़ाके भरी शुरुआत. लेकिन बीमार उद्योगों के लिए नीति घोषित नहीं हुई. एकाधिकार व प्रतिबंधित व्यापार कानून नहीं हटाया गया. सरकारी खर्च में कटौती नहीं की गई जो कि वित्तीय अव्यवस्था के लिए मुख्य रूप से जिम्मेवार है. विदेशी मुद्रा की कमी बरकरार है. विदेशी कर्ज का बोझ भी बढ़ने का अंदेशा है. रुपये के अवमूल्यन से मुद्रास्फीति काफी बढ़ गई है और इसका कुप्रभाव सुधारों पर पड़ सकता है.

विदेशी मामले

■ दुनिया भर में तेजी से आए बदलाव के बावजूद कमजोर विदेशमंत्री माधव सिंह सोलंकी के बने रहने और प्रधानमंत्री नरसिंह राव के घरेलू मामलों में फंसे होने से विदेशी मामलों पर कम ही ध्यान दिया गया. अगस्त में सोवियत संघ में हुए मिखाइल गोबाचेव के तख्तापलट पर हड़बड़ी में व्यक्त की गई प्रतिक्रिया पर काफी मच पिटी. पडोसी देशों से रिश्ते सुधारने की दिशा में पहल का अभाव रहा. एकमात्र महत्वपूर्ण बदलाव: अमेरिका से रिश्तों में गरमाहट और अनेक देशों से आर्थिक संबंध सुधरने के आसार.

प्रतिरक्षा

■ रक्षामंत्री शरद पवार के पुराने सौदों को ही निबटाने में व्यस्त रहने से नए सौदे नहीं हुए, खासकर तेजी से टूटते सोवियत संघ से. अब योजना यह बनाई गई है कि निजी क्षेत्र को शामिल करके निर्यात 600 करोड़ रु. तक बढ़ाया जाए. प्रतिरक्षा बजट में तात्कालिक कटौती से चिंता व्यक्त की जा रही है. असम में सेना फिर से तैनात की गई है और कश्मीर में उसकी तैनाती बनी हुई है. समान रैंक-समान पेंशन की मांग उठने पर इसके लिए कमेटी बनाई गई. लेकिन इसे महज टरकाने वाला काम माना जा रहा है.

कुल जमा हासिल क्या हुआ

■ आर्थिक मोर्चे पर उदारीकरण और अन्य अनुकूल संकेत मिले परंतु आसमान छूती हुई महंगाई और बीमार चल रहे उद्योगों के बारे में कोई खास पहल नहीं की गई. पंजाब और कश्मीर जैसी राष्ट्रीय समस्याएं और भी बिगड़ गईं. विभिन्न विपक्षी पार्टियों से न उलझने के चलते नरसिंह राव की अल्पमत सरकार का काम शांतिपूर्ण ढंग से चला. लेकिन चूंकि उनकी ही अपनी पार्टी के लोग जोर-शोर से करिश्माई विकल्प तलाश रहे हैं, इसलिए नरसिंह राव के सामने परेशानियां भी आ रही हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: वेंकट

असम

बागियों को बांधने की कठिन कार्रवाई

ऑपरेशन राइनो की सफलता पर ही राज्य और मुख्यमंत्री सैकिया का हित जुड़ा है, लेकिन फिलहाल स्थिति अस्पष्ट

—फरजंद अहमद, गुवाहाटी में

असम की राजधानी गुवाहाटी के सरकारी हलकों में यह अफवाह कई दिनों से उड़ रही थी कि प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन 'उल्फा' के खिलाफ जल्दी ही सैनिक कार्रवाई होने वाली है. इसके बावजूद 15 सितंबर को तड़के असम-अरुणाचल प्रदेश सीमा के घने जंगलों से 'ऑपरेशन राइनो' जब अचानक तेजी से शुरू हुआ तो लोग चकित रह गए. इस अभियान के नतीजे पर ही उस शख्स का राजनैतिक भविष्य टिका हुआ है जिसने इसका आदेश दिया है. वह शख्स हैं मुख्यमंत्री हितेश्वर सैकिया, जो पिछले ढाई महीने से उल्फा उग्रवादियों से समझौते की कोशिश कर रहे थे. सैकिया ने कहा, "कोई विकल्प नहीं बचा था. उल्फा को हथियार डालना ही होगा."

यह कठिन अभियान है, लेकिन सेना सभी बाधाओं को दूर करके आगे बढ़ रही है. सेना ने अरुणाचल प्रदेश के लोहित जिले में नामसाई के छिटपुट आबादी वाले आरक्षित जंगलों में, जहां उल्फा ने कई शिविर बनाए थे, अड्डा जमाया. अरुणाचल प्रदेश के तेजू में तैनात माउंटेन डिवीजन और 13वीं पंजाब रेजिमेंट के जवानों ने सभी दिशाओं से धावा बोल दिया और इलाके को घेर लिया.

दलदली जमीन के कारण आगे बढ़ना कठिन था. सो, अंधेरे में सेना की तीन टुकड़ियों को विमान से उतारा गया. हथियारबंद कमांडो ने जीपों और ट्रकों के साथ निकास के सभी रास्तों को बंद कर दिया और सूरज की पहली किरण फूटने के साथ ही ऑपरेशन क्लाउडबर्स्ट शुरू हो गया. उल्फा शिविरों को, जिन्हें इस साल 20 अप्रैल को सैन्य कार्रवाई निलंबित होने के बाद लगाया गया था, योजनाबद्ध तरीके से खोजा गया और नष्ट किया गया.

सेना द्वारा उल्फा कार्यकर्ताओं की खोज: चुनौती भरा काम

उल्फा कार्यकर्ताओं को अपनी मनचाही जगह यानी राज्य में वापस लाने की सेना की रणनीति सफल रही क्योंकि सीमा पार असमी आबादी छिटपुट थी, उग्रवादियों से सहानुभूति रखने वाली. ऑपरेशन क्लाउडबर्स्ट छह घंटे में खत्म हो गया. इसके तुरंत बाद ऑपरेशन राइनो शुरू हो गया.

कुछ वरिष्ठ अधिकारी पहले की सैन्य कार्रवाइयों को बंद करने के समय को लेकर भी दुखी थे. मिसाल के तौर पर ब्रिगेडियर जनरल स्टाफ वी.के. श्रीवास्तव का कहना है कि ऑपरेशन बजरंग को असमय रोक दिया गया. वे कहते हैं, "अगर और दो महीने तक यह कार्रवाई चली होती तो उल्फा का सफाया हो जाता. लेकिन हमने वह मौका खो दिया." और उल्फा ने फि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द को संगठित कर लिया. किन सैकिया जब मझदारी से उग्रवादियों को टाने की कोशिश कर रहे , सेना चुपचाप बैठी हुई हीं थी. वह ऑपरेशन जरंग की खामियों को ढूंढ़ ही थी और उन्हें दूर कर ही थी. जैसा कि जनरल-फसर-इन कमांडिंग (जीओसी) अजय सिंह कहते हैं, "इस बार हमने ज्यादा समझदारी से काम लिया." और उन्हें मझदारी से काम लेने की जरूरत भी थी. 'सेंटिनेल' के संपादक डी.एन बेजबरुआ के अनुसार, ऑपरेशन बजरंग के दौरान सैनिकों ने ऐसा व्यवहार किया मानो वे किसी विदेशी सेना के जवान हों लेकिन अब सेना की जनसंपर्क इकाई बहुत सावधानी से काम कर रही है. इस बार उन्हें असमी आचार-विचार और भाषा का प्रशिक्षण दिया गया. एक युवा कप्तान कहते हैं, "अब हम किसी गांव पर छापा मारते हैं तो इस बात की हर संभव सावधानी बरतते हैं कि लोगों की भावनाएं आहत न हों." इस बार सेना भी ऑपरेशन बजरंग के मुकाबले ज्यादा तैनात की गई है. सेना के चार डिवीजनों और अर्धसैनिक बलों की चार कंपनियों को तैनात करके असम को सशस्त्र निगरानी के हवाले कर दिया गया है.

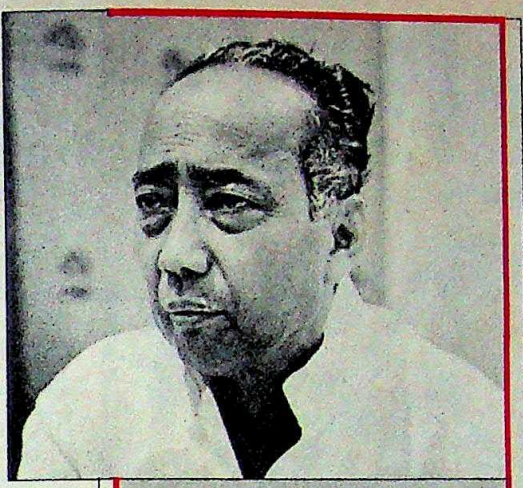

"मैं बंधकों को खोने के लिए तैयार हूं. आखिरकार इससे देश की अखंडता और राज्य के लोगों का भविष्य जुड़ा है"

हितेश्वर सैकिया
मुख्यमंत्री

लेकिन लोगों की चिंताएं उनकी बातचीत में साफ देखी जा सकती हैं. तिनसुकिया के एक युवा व्यवसायी कहते हैं, "हम उल्फा के खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं कर सकते हैं. सेना आती है और चली जाती है, लेकिन ये लड़के तो यहीं रहेंगे." कुछ स्थानीय लोग तो खुलेआम उल्फा का समर्थन करते हैं और असम के साथ केंद्र के 'उपनिवेश जैसे व्यवहार' पर क्रुद्ध हैं. शिवसागर के बाहरी इलाके गौरीसागर के एक युवा जौहरी जीवन कर्माकर कहते हैं, "उल्फा की जड़ें गांव-गांव में हैं. सेना समाज से कैसे लड़ेगी?"

लेकिन सेना का दावा है कि उसे जनता का पूरा समर्थन मिल रहा है. मगर नतीजे कुछ और ही कहानी कहते हैं. हालांकि सेना के खिलाफ आक्रोश नहीं दिखाई पड़ रहा है, लेकिन सेना के गुप्तचर सिर्फ 12 शिविरों और 250 समर्थकों तथा और कार्यकर्ताओं का ही पता लगा पाए हैं. दूसरी तरफ उल्फा छह लोगों को लंबे समय तक बंधक बनाए रखने में सफल रही है. पिछले पखवाड़े ओएनजीसी के सुपरिन्टेंडिंग इंजीनियर बी.पी. श्रीवास्तव को बचाने की सेना की कोशिश का नतीजा उनकी मौत के रूप में सामने आया.

दरअसल, सेना की तैनाती के नाटक में बंधकों के भाग्य को भुला दिया गया. आईएएस अफसर एस.के. तिवारी ने अपनी रिहाई के लिए राज्य के मुख्य सचिव एच.एन. दास को जो चिट्ठी लिखी है, वह बहुत ही मार्मिक है. उन्होंने लिखा, "मैंने अभी तक ऐसा कुछ भी नहीं सुना है जो मुझे इस भयावह हताशा में उम्मीद की कोई किरण दिखा सके. मुझे लगता है कि सरकार को मेरी कोई चिंता नहीं है." सैकिया का कहना है कि वे नहीं झुकेंगे, मुट्ठी भर लड़के लोकप्रिय सरकार को नहीं झुका सकते. उनके फैसले कठोर लेकिन

उल्फा के विरुद्ध किस सैनिक अभियान से क्या हासिल हुआ?

ऑपरेशन बजरंग: 27 नवंबर 1990 को राष्ट्रपति शासन लागू होने के साथ ही शुरू किए गए इस अभियान में 15 उल्फा कार्यकर्ता मारे गए. 2,800 लोगों को आतंकवादी होने के शक में गिरफ्तार किया गया. 1,208 हथियार और 5 करोड़ रु. बरामद हुए. उल्फा की जवाबी कार्रवाई में 58 मरे. लेकिन 1 मार्च 1991 को उसने युद्ध विराम की घोषणा की, अपनी गलतियों के लिए माफी मांगी और चुनाव शांतिपूर्वक हो जाने दिए. 20 अप्रैल को अभियान रोक दिया गया.

ऑपरेशन ब्लूप्रिंट: हितेश्वर सैकिया ने 30 जून को राज्य की कमान संभाली. नजरबंद उल्फा कार्यकर्ताओं को आम माफी दी. उल्फा फिर सक्रिय हुई. उसने 14 अधिकारियों का अपहरण किया. सेना को तैयार रहने का आदेश. ऑपरेशन ब्लूप्रिंट के तहत उल्फा गतिविधियों पर सेना की निगरानी. फुर्ती से हमला बोलने की योजना बनी और अरुणाचल में बनाए जा रहे शिविरों पर निगरानी.

ऑपरेशन क्लाउडबर्स्ट: यह अभियान 15 सितंबर को शुरू हुआ. इसी दिन ऑपरेशन राइनो का आदेश जारी. कमांडर ब्रिगेडियर एच. भास्कर के अनुसार सेना ने पहले थल और नदी के रास्ते बंद किए. फिर कमांडो सैनिकों को जंगलों में उतारा. कोपटली अड्डे से बड़े नेताओं के नाम वाले दस्तावेज, विस्फोटक और आग्नेय हथियार बरामद. इसी अड्डे से उल्फा में नए रंगरूटों की भर्ती की जाती है. छह व्यक्ति गिरफ्तार. स्थानीय लोगों ने बताया कि उल्फा का शीर्ष नेता परेश बरुआ दो हफ्ते पहले ही यहां आया था.

ऑपरेशन राइनो: सीमा क्षेत्रों सहित पूरे राज्य में यह अभियान शुरू. इसका मकसद उल्फा को समझौते की मेज तक लाना है. सेना की चार डिवीजनें अर्धसैनिक बलों की 270 कंपनियों के सहयोग से कार्रवाई करती हैं. दावा किया गया कि पहली बार सेना और नागरिक प्रशासन मिलकर कार्रवाई करते हैं और उल्फा से हमदर्दी रखने वाले लोगों की सूची बनाने की कोशिश. पहले हफ्ते में 258 लोग गिरफ्तार. 12 शिविरों पर छापा. वरिष्ठ नेता अब भी फरार. लेकिन इस बार सेना चूकने को तैयार नहीं.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुविचारित हैं, "मैं बंधकों को खोने के लिए तैयार हूं. आखिरकार, इससे देश की अखंडता और राज्य की दो करोड़ जनता का भविष्य जुड़ा है."

सैकिया और अजय सिंह भले ही यह मानें कि सेना की कार्रवाई से उग्रवादी समझौता वार्ता के लिए राजी हो जाएंगे, राज्य की विपक्षी पार्टियां यह नहीं मानतीं. असम गण परिषद और नूतन असम गण परिषद ने सेना बुलाने के कदम की कड़ी आलोचना की है. पूर्व मुख्यमंत्री प्रफुल्ल कुमार महंत कहते हैं कि सेना की वापसी जनता की इच्छा का अनादर है क्योंकि जनता ने सैकिया को समस्या के समाधान के लिए चुना है. कभी उनके दाहिने हाथ रहे और अब उनके कट्टर विरोधी भृगु कुमार फुकन इस कदम के लिए समय के चुनाव की आलोचना करते हैं. उनका कहना है कि सरकार ने यह कदम ऐसे समय में उठाया जब विपक्ष सरकार से हर तरह का सहयोग करने को तैयार था.

पकड़े जा रहे नागरिक

विपक्ष के आरोप में दम है क्योंकि घटनाओं की जिस श्रृंखला के बाद ऑपरेशन राइनो शुरू हुआ उसमें कुछ खामी दिखती है. ऑपरेशन शुरू होने के कुछ दिन पहले विधानसभा के अध्यक्ष जीवकांत गोगोई ने बंधकों के मुद्दे पर सभी पार्टियों की एक गुप्त बैठक बुलाई. इसके बाद उल्फा ने भी बंधकों को, और सरकार ने सभी उल्फा बंदियों को रिहा करने की अपील की गई. उल्फा ने एच.एन. दास को एक चिट्ठी भेजकर कहा कि सभी बंधकों की मौत के लिए सरकार जिम्मेवार होगी. उसी रात ऑपरेशन राइनो शुरू हो गया.

विडंबना तो यह कि सेना की मौजूदगी से जिन लोगों को सबसे ज्यादा फायदा होगा, वे ही आश्वस्त नहीं दिखते हैं. पिछले पखवाड़े ओएनजीसी के 40 अधिकारियों ने राज्य छोड़ दिया और बाकी राज्य छोड़ने के लिए तैयार बैठे थे. और जहां तक उस शख्स का सवाल है जो हवा का रुख मोड़ सकता था और राज्य को नई दिशा दे सकता था, उसके लिए ऑपरेशन राइनो असम को बगावत की आग में झुलसने से बचाने की आखिरी कोशिश है.

उल्फा

विदेशी संबंध

दरअसल, उल्फा से निबटने के लिए हितेश्वर सैकिया ऐसे ही किसी हथियार की तलाश में थे. राज्य विधानसभा में 9 सितंबर को सैकिया ने कहा कि उल्फा के चीन, बांग्लादेश और पाकिस्तान से संबंध हैं. यह भी कि उल्फा के 'मुख्य कमांडर' परेश बरुआ ने चीन में प्रशिक्षण शिविर कायम किया है जबकि इसके अध्यक्ष अरविंदो राजखोवा बांग्लादेश में शिविर स्थापित करने के लिए अप्रैल में वहां गए थे.

सैकिया का यह रहस्योद्घाटन उल्फा के 'कार्रवाई कमांडर' मनोज हजारिका और नगालैंड नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल (खापलांग गुट) के संपर्ककर्ता भास्कर बरुआ की 22 अगस्त की गिरफ्तारी के बाद उनसे मिली सूचनाओं पर आधारित था. जोरहाट में राजखोवा की 'डायरी' से पता चलता है कि उसने बांग्लादेश में पनाहगाह बनाने के लिए दौरा किया, चीन यात्रा की तैयारी की और पाकिस्तान से मदद तथा ब्रिटेन से समर्थन पाने के तरीकों को जांचा.

नॉर्थ-ईस्ट टाइम्स

उल्फा प्रमुख राजखोवा (बाएं से दूसरे) कार्यकर्ताओं के साथ ढाका में

उल्फा के 'उप मुख्य कमांडर' नरेन डेका सैकिया के आरोपों का खंडन करते हैं.

उल्फा के संपर्क सूत्र एंड्रयू गिरि से भी पुलिस ने यह उगलवा लिया. ढाका में राजखोवा की तस्वीर की बरामदगी से मामला पक्का हो गया. हालांकि लेकिन म्यानमार की कांचीन घाटी में नगालैंड सोशलिस्ट काउंसिल की मदद के साथ जन्मे संगठन का विदेशी संपर्क होना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं होनी चाहिए.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहत एक नजर की

मॉर्टन

बच्चे मॉर्टन के स्वाद पर मोहित और बड़े हैं कायल इसकी शुद्धता के। वर्षों से पूरे परिवार का मनपसंद है मॉर्टन।

चॉकलेट व कोकोनट कूकीज, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक मजेदार स्वादों में उपलब्ध।

और अब केसर बाइट। केसर का कमाल जिसका स्वाद बेमिसाल।

MORTON
SWEETS

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री।
पो० आ० मढ़ौरा-८४१४१८, जिला— सारन, बिहार

CC/M-2/90 HIN.

चेतावनी :
MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर ऑपर गौगेज सूगर एंड इन्डस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापार-चिह्न है। किसी भी प्रकार से व्यापार-चिह्न अधिकारों का उलंघन अभियोजनीय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Ar... Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Winter musings

The water sparkles like champagne. A silver cobweb dances in the sunlight. Rust has been here. And gold and brown, weave a tapestry as far as eye can see.

Presenting Gold Line. The finest Merino wool blended with premium polyester fibres. The new line of winter suitings from Siyaram's.

GOLD Line™

Siyaram's®

™ Trade Mark. ® Regd Trade Mark of Siyaram Silk Mills Ltd, Bombay-11

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HE SMART GENERATION RADI

AMAZER

RADIALS FOR MARUTI

ENGINEERED TO THE POINT OF EXCELLENCE.

CONTROL TO THE POINT OF PERFECTION.

STYLING TO THE POINT OF ART.

Fit them and feel the difference in **Mileage**, **Safety**, **Comfort** and **Style.**

APOLLO TYR

CC-0. In Public Domain. Gu ngri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंकर गुहा नियोगी

लाल सितारे का अस्त

नियोगी की रहस्यमय हत्या से मजदूर आंदोलन को धक्का

अपने जीवन काल में किंवदंती बन चुके छत्तीसगढ़ के मजदूर नेता शंकर गुहा नियोगी की 27 सितंबर की रात को हत्या के कुछ घंटे पहले ही प्रमुख संवाददाता ***नरेंद्र कुमार सिंह*** *से उनकी मुलाकात हुई थी. एक अंतरंग ब्यौरा:*

नियोगी उस रात खाना ठीक से नहीं खा पाए थे. बड़े होटलों की चकाचौंध के वे अभ्यस्त नहीं थे. अपने मुड़े-तुड़े कुर्ते-पाजामे, टूटी हुई चप्पलों, बिखरे बाल और दाढ़ी की बढ़ी हुई खूंटियों के कारण गलीचे, झाड़-फानूस, छुरी-कांटा, नैपकीन, फिंगर बाउल और सूट-टाई में लैस खाना परोसने वाले कर्मचारियों से उनका कोई मेल नहीं बैठता था. डाइनिंग हाल में दूसरी मेजों पर बैठे भद्रजन, खासकर कीमती साड़ियों में लिपटी खूबसूरत महिलाएं हमें घूरकर देख रही थीं.

पास की मेज पर बैठे लोग खदानों के बारे में बातचीत कर रहे थे. "मैं वर्ग शत्रुओं से घिरा हूं," नियोगी ने कहा. पर नियोगी के वर्ग मित्र भी कोई खास मददगार साबित नहीं हुए. बेयरा रोटी देर से ला रहा था और अगली रोटी के लिए हमें काफी इंतजार करना पड़ता था. नियोगी बोले, "यही सब तो बड़े होटलों का झंझट है."

रायपुर के जिस होटल में मैं रुका था वहां 27 सितंबर की रात को नियोगी को खाने पर मैंने बुलाया था. रात लगभग नौ बजे वे जन स्वतंत्रता संगठन (पी.यू.सी.एल.) के संगठन सचिव राजेंद्र सायल के साथ आए. लगभग ढाई घंटे तक हम विभिन्न विषयों पर बात करते रहे.

रात साढ़े ग्यारह बजे उन्होंने मुझसे विदा ली. और तड़के सुबह पांच बजे राजेंद्र सायल का फोन आया. उन्होंने

देशबंधु/लोधी ऋतुराज

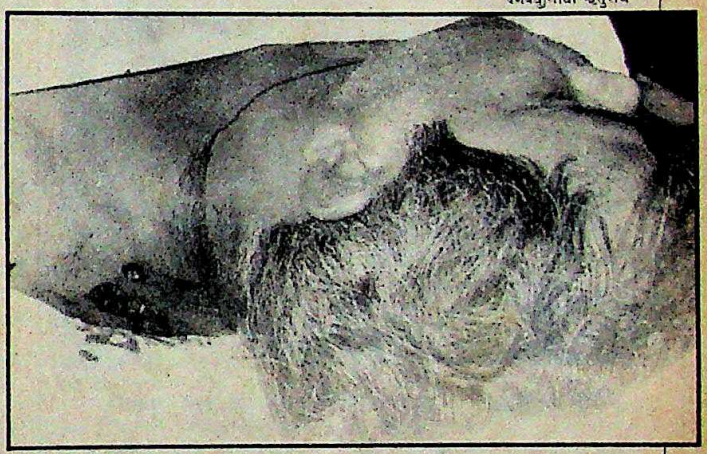

नियोगी का शव, कंधे पर गोलियों के निशान; शव-यात्रा (नीचे)

उनके निधन से सबसे ज्यादा आघात पहुंचा है देश में नव-वामपंथी आंदोलन को, जो परिवर्तन का एक खांटी देसी रास्ता चुनने में लगा था

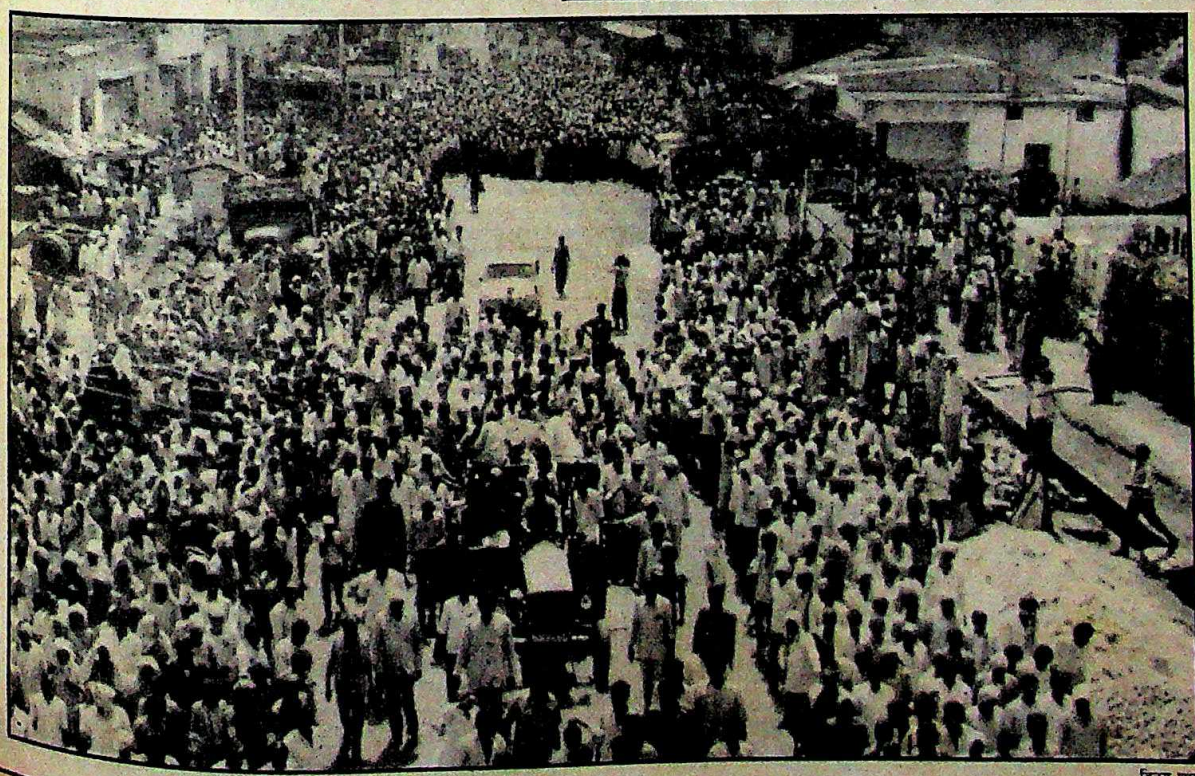

विनय शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसारभर में एक ही प्रेशर कुकर जो कि दि म्यूज़ियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट न्यू यॉर्क में प्रदर्शित

१९९१ कॉर्पोरेट आरक्षित

हॉकिन्स फ़्यूचुराः संसार का सबसे आकर्षक प्रेशर कुकर.

सुडौल बनावट, खांचे में बिठाए सुगढ़ हैंडल, ढक्कन और बॉडी ऐसे जुड़े कि जोड़ जैसे हो ही नहीं. चिकने साटन जैसी आधुनिक सिलेटी चमक.

माइक्रोवेव से भी ४६% जल्दी पकाए. अनोखा, सुरक्षादायक ढक्कन-आधुनिक जेट हवाई जहाज़ के दरवाज़े की तरह अंदर के दबाव से बंद होनेवाला. अत्यंत स्वादिष्ट, स्वास्थ्यवर्धक भोजन पकाए.

हॉकिन्स फ़्यूचुराः दि म्यूज़ियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट, न्यू यॉर्क के डिज़ाइन स्टोर में प्रदर्शित एकमात्र प्रेशर कुकर. डिज़ाइन, निर्माण तथा मार्केटिंग हॉकिन्स कुकर्स लिमिटेड द्वारा. २९ देशों में.

जिसके लिए हॉकिन्स फ़्यूचुरा को २९ देशों में सराहा जाता है डिज़ाइन और निर्माण की वही उत्कृष्टता ज्यादा किफ़ायती हॉकिन्स यूनिवर्सल प्रेशर कुकरों की श्रेणी में भी इस्तेमाल होती है. वह हॉकिन्स चुनिए जो आपकी ज़रूरतों के लिए सबसे अच्छा हो.

हॉकिन्स फ़्यूचुराः ५ लिटर, रु. ९५०; ७ लिटर, रु. ११००. हॉकिन्स यूनिवर्सल प्रेशर कुकरों की श्रेणी आठ साइज़ों में-२ लिटर (रु. ३२५) से १२ लिटर (रु. ८२५) तक. सेपरेटरों के बिना मॉडलों के सभी करों सहित अधिकतम मूल्य.

संसार का सर्वोत्तम लीजिए. हॉकिन्स लीजिए.

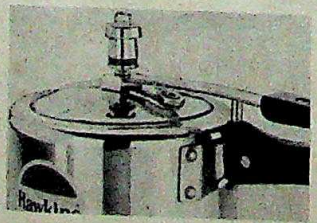

हॉकिन्स यूनिवर्सल

हॉकिन्स फ़्यूचुरा

इन विक्रेताओं के पास उपलब्ध किसी भी मदद के लिए यहां लिखें: हॉकिन्स, विभाग क्र. ६२, पी. ओ. बॉक्स ६४८१, बम्बई-१६.

हॉकिन्स फ़्यूचुरा डीलर्स

आंध्र प्रदेश

गुंटूरः मेन रोडः मट्टपल्ली संबामूर्ति, अरुंडल पेट ☐ **हैदराबादः आबिद्सः** अंजली इलेक्ट्रॉनिक्स, नामपल्ली स्टेशन रोड ● **आबिद रोडः** विशाल होम अप्लायेंसेज, मेट्रो इस्टेट ● **नामपल्ली स्टेशनः** स्टील पैलेस ● **नारायणगुडाः** सिटी एम्पोरियम, पुलिस क्वॉर्टर्स के पास ● **सुल्तानबाज़ारः** बलीराम खियाराम, सब्ज़ी मार्केट के पास ● एवरशाइन स्टील पैलेस, सब्ज़ी बाज़ार ● गॉडविल स्टील स्टोर्स, सब्जीबाज़ार के पास ☐ **काकीनाडाः मेन रोडः** गुप्ता एम्पोरियम, सूर्यराव पेट ☐ **सिकंदराबादः आर. पी. रोडः** ट्रेजर आयरन वर्क्स, बाटा के सामने ● साकीनाला स्टील पैलेस, बाटा के सामने ☐ **विशाखापट्टनमः मेन रोडः** बॉम्बे गैस लाइट स्टोर्स

अरुणाचल प्रदेश

नाहर लागूनः ए. पी. को. ऑप. मार्केटिंग सप्लाई फ़ेडरेशन लि.

असम

विश्वनाथ चारअलीः पभई रोडः उदयशंकर स्टोर्स ☐ **डिब्रूगढ़ः एच.एस. रोडः** वर्मा क्रॉकरी स्टोर्स ● **न्यू मार्केटः** एस. दत्ता एंड कंपनी ☐ **डीफूः मेन रोडः** ज्योत्स्ना स्टोर्स ☐ **गौहाटीः फ़ैन्सी बाज़ारः** आर. चंपकलाल एंड कं. ● श्याम मेटल स्टोर्स, एस. आर. सी. बी. रोड ● **लखटॉकियाः** सी. एम. स्टोर्स ☐ **जोरहाटः गरालीः** आर्ट हाउस ☐ **कोकराझारः मेन रोडः** लक्ष्मी नारायण स्टोर्स ☐ **मंगलदाईः एल.एन.बी. रोडः** इलेक्ट्रिक स्टोर्स ☐ **नलबाड़ीः एन.टी. रोडः** मारूति इलेक्ट्रॉनिक्स ☐ **नौगांवः** डाकघर न्यू चैतन्य स्टोर्स ☐ **शिवसागरः मारवाड़ी पट्टीः** हनुमानबख्श प्रदीपकुमार ● **टैंपल रोडः** ए. रहमान एंड कं. ☐ **सिलचरः हॉस्पिटल रोडः** रविप्रकाश आनंद एंड कं. ☐ **तिनसुकियाः डेली बाज़ारः** नज़ीर अहमद एंड सन्स ● **जी.एन.बी. रोडः** रविप्रकाश आनंद एंड कं.

बिहार

बरौनीः बरौनी चौकः सिन्हा एंड कं., रेलवे गेट के पास ☐ **जमशेदपुरः साकची बाज़ारः** कुकर हाउस, 25 ओल्ड आलू लाइन, पान मार्केट ● नीलकमल स्टील सेंटर, 24 ओल्ड आलू लाइन, पान मार्केट ☐ **लहरिया सरायः बाकरगंजः** दयाल क्रॉकरी हाउस ☐ **मोतीहारीः मेन रोडः** स्टील कॉर्नर ☐ **मुज़फ़्फ़रपुरः सरैयागंजः** किचनकिंग ☐ **पटनाः बोरिंग रोडः** एच. सी. एंटरप्राइजेस, नेपाली कोठी ● **मुरादपुरः** स्टील कॉर्नर, बांकीपुर पोस्टआफिस के सामने ● **न्यू मार्केटः** क्रॉकरी कं. ☐ **रांचीः मेन रोडः** कैलाश क्रॉकरी हाउस

चंडीगढ़

चंडीगढ़ः सेक्टर 15 डीः इंडियन क्रॉकरी हाउस, दुकान नं. 45 ● **सेक्टर 17 ईः** जगतसिंह एंड कं., एस सी एफ़ 32 ● कृष्णा क्रॉकरी स्टोर, एस सी एफ़ 32 ● **सेक्टर 26ः** अग्रवाल डिस्ट्रिब्यूटर्स, शो रूम नं. 30 शो रूम नं. 30

गोआ

मडगांवः 10 न्यू मार्केटः दीनानाथ डी. सडेकर, पोस्ट बॉक्स नं. 331

गुजरात

अहमदाबादः तीन दरवाजाः अकबरअली कादरभाई, 1822 तीन दरवाजा गांधी रोड ● बॉम्बे नॉवेल्टी स्टोर्स, 1839/1 तीन दरवाजा गांधी रोड ☐ **बड़ौदाः एम. जी. रोडः** पोपटलाल कृष्णलाल कंसारा, कंसारा बाज़ार एम. जी. रोड ☐ **सूरतः बारानपुरीः** कंसारा ठाकुरदास नगीनदास मोदी, रेशमवाला बिल्डिंग, भागल ● **बुंदेलावाड़ः** शाह ठाकुरदास जीवनराम, बुंदेलावाड़ भागल

हरियाणा

अंबाला कैंटः सौदागर बाज़ारः जगतसिंह एंड सन्स ☐ **एन आई टी फ़रीदाबादः** मार्केट नं. १ कृष्णलाल संजीवकुमार, दुकान नं. 116 ☐ **हिसारः मोतीचौकः** केवलकृष्ण इंदरसैन ☐ **जगाधरीः मनोहर नगरः** ओ.पी. मैटल इंडस्ट्रीज ☐ **पानीपतः हलवाई हट्टा बाज़ारः** न्यू जैन बर्तन भंडार ● **मेन बाज़ारः** मनोहरसिंह घरीमल ☐ **रोहतकः रेलवे रोडः** प्रकाश क्रॉकरी हाउस ☐ **सिरसाः रोड़ी बाज़ारः** अग्रवाल बर्तन भंडार

हिमाचल प्रदेश

कांगड़ाः मेन बाज़ारः गुप्ता सुइंग मशीन ☐ **कुल्लूः अखाड़ा बाज़ारः** विगसन जनरल स्टोर ☐ **नगरौटा भगवांः निचला बाज़ारः** धर्मपाल एड सन्स ☐ **शिमलाः अंडा बाज़ारः** बंगाल क्रॉकरी हाउस ● **मालरोडः** राधामल बिशनदास, दुकान नं. 76

जम्मू कश्मीर

जम्मूः न्यू मार्केटः लड्डूमल देसराज जैन, रघुनाथ बाज़ार

कर्नाटक

बेंगलोरः ब्रिगेड रोडः लिबर्टी एजेंसीज ● पॉट्स एंड पैन्स, 11 कर्जन कॉम्प्लेक्स ● **चिकपेटः** राजा एंड कं., 802 ● रश्मि स्टील्स, 340 ● **रिचर्ड्स स्क्वेयरः** एडम्स एंड कंपनी, 19 शिवाजी नगर ☐ **बेलगांवः मारूति गलीः** गिंडे रेडियो सेल्स एंड सर्विस, 1586 ☐ **चिकमंगलूरः रत्नागिरि रोडः** मल्टी एंटरप्राइजेज, पो. बॉ. नं. 8, ☐ **हरिहरः शिमोगा रोडः** अशोक इलेक्ट्रिकल्स ☐ **मैसूरः सयाजी रोडः** मेहता भंडार, कामधेनु ☐ **सिरसीः सी. पी. बाज़ारः** जयश्री इलेक्ट्रिक हाउस ☐ **उडिपीः अंबलपाड़ीः** प्रकाश इलेक्ट्रिक कं.

केरल

अलेप्पीः मुल्लकलः भीमा स्टेनलेस स्टील एंड इंडस्ट्रीज ☐ **अलवईः कैथलिक सेंटरः** वायरलेस

(अगले पृष्ठ पर जारी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉ कि न्स फ़्यू चु रा डी ल र्स

□ **कालीकट:** मुथलाकुलम: ब्राइट मेटल्स □ **कन्नानूर: एस. एन. पार्क रोड:** गृहलक्ष्मी □ **एणाकुलम: ब्रॉडवे:** एंथनी फ्रांसिस एंड सन्स ● **टी डी रोड (नॉर्थ):** प्रॉडक्ट एंड सर्विसेज □ **मंजेरी:** मेन रोड: कोरंबइल फ्रैन्सी एंड फ्राइबर्स, सेंट्रल बाज़ार □ **मुवट्टुपुझा: न्यू बाज़ार:** मिनी स्टोर्स □ **पालघाट: जी. बी. रोड:** स्टील पैलेस □ **पट्टांबी: मेन रोड:** वीरमणि इंटरफ़र्न, वीरमणि बिल्डिंग □ **त्रिचूर: एम. जी. रोड:** मॉडर्न होम इक्विपमेंट्स, ओवरब्रिज के पास ● **पोस्ट ऑफिस रोड:** स्टीलालयम, हैड पोस्ट ऑफ़िस के पास ● **राउंडसाउथ:** केरल लैदर कंपनी, हॉस्पिटल के पास

मध्यप्रदेश

भिलाई: कैंप नं. 2: गार्गी जनरल स्टोर, बी-14 सर्कुलर मार्केट □ **भोपाल: रौशनपुरा नाका:** दरवेश बर्तन भंडार □ **डबरा: कमला मार्केट:** आधुनिक किचनवेयर □ **दमोह: सिनेमा रोड:** अजंता ट्रेडर्स □ **इंदौर: जवाहर मार्ग:** कुकर हाउस, दुकान नं. 370 ● **राम लक्ष्मण बाज़ार:** एन. आर. इलेक्ट्रॉनिक, दुकान नं. 23 □ **जबलपुर: गोल बाज़ार:** आशीर्वाद एसोसिएट्स, 212 दत्ता मंदिर □ **कोरबा: मेन रोड:** गणेश स्टील एम्पोरियम □ **रायपुर: सदर बाज़ार:** एम एस ट्रेडर्स

महाराष्ट्र

अहमदनगर: एम. जी. रोड: के.टी. रसाने, दुकान नं. 2554, न्यू क्लॉथ मार्केट ● **शहाजी रोड:** सुरेख संगम □ **बंबई दक्षिण: दादर:** धीरज सेल्स कार्पोरेशन, भवानीशंकर रोड ● किचन पैलेस, कबूतरखाना ● **फ्राउंटेन:** अकबरअलीज, वी. एन. रोड ● **कालबादेवी रोड:** रतिलाल मोहनलाल, 46 कंसारा चाल ● **लोहारचाल:** एशियाटिक इलेक्ट्रिक ट्रेडिंग कं., 46-48 विठ्ठल सयाना बिल्डिंग ● **चेंबूर:** अकबरअलीज, सायन ट्रांबे रोड ● नटराज एम्पोरियम, स्टेशन रोड ● सिल्वर सेंटर, 3 लक्ष्मी मार्केट □ **डोंबिवली :** पंकज स्टील एंड नॉवेल्टी, पातुरकर बिल्डिंग, रेलवे स्टेशन रोड ● पराग स्टील एंड नॉवेल्टीज, कैनरा बैंक के पास □ **कल्याण: बाज़ार पेठ:** प्रभात एप्लायेंसेज, विष्णु मंदिर के सामने □ **मध्यवर्ती उपनगर: सायन :** कनि एक्सक्लूसिव एम्पोरियम, 5 शिवमहल ● श्री मुरगन स्टील हाउस, 11/39 मैरी लैंड कॉर्नर ● **ठाणे:** गोल्डन स्टील एंड एलायेंसेज, गोखले रोड, नौपाड़ा ● हेम शॉपिंग सेंटर, गोखले रोड, नौपाड़ा ● **वाशी:** श्रीकृष्ण स्टील एम्पोरियम, सैक्टर 17, आनंद सागर, दुकान 10 ए प्लॉट नं. 39 □ **पश्चिमी उपनगर: बांद्रा:** शाज़ान, तल मंजिल, ज़ैवी हाउस ● **बोरीवली:** प्रमाणिक सेंटर, एस. वी. रोड ● **माहीम:** अरुणोदय स्टोर्स, एल. जे. रोड, सिटीलाइट सिनेमा के सामने ● **सांताक्रुज:** अकबरअलीज, एस. वी. रोड ● **विलेपार्ले:** मनसुख डिस्ट्रिब्यूटर्स, श्यामकमल 'सी', अग्रवाल मार्केट ● मुरुगन एप्लायेंसेज, श्यामकमल 'सी', अग्रवाल मार्केट □ **नागपुर: इतवारी:** बरेअली मुहम्मद अली, भंडारा रोड ● **सीताबर्डी:** एम. एस. पांडे एंड सन्स, वेरायटी स्क्वेयर के पास □ **नासिक: 84 भांडी बाज़ार:** प्रकाश रामदास काले ● **शालीमार बिल्डिंग:** विजय ट्रेडिंग कं., शिवाजी रोड □ **पिंपरी: स्टेशन रोड:** राजकुमार एंटरप्राइजेज, आर्य समाज के पास □ **पुणे: रविवार पेठ:** मेहता ब्रदर्स, फूलवाला चौक □ **सांगली: मेन रोड:** श्री अमेय स्टील सेंटर, करमरकर बिल्डिंग

मणिपुर

सिंगजमाई (इम्फाल) : चिंगमाखौंग: न्यू वेराइटी □ **इम्फाल: महात्मा गांधी एवेन्यू:** मणिपुर बिल्डर्स ● पाओना **बाज़ार:** पासा एंटरप्राइजेज ● **थंगल बाज़ार:** रूपक एजेंसीज ● सुदर्शन्स्

मेघालय

शिलांग: बाउरी मेंशन: वी.के. घई एंड कं.

मिज़ोरम

ऐज़ल: बड़ा बाज़ार: बी. सी. डे एंड सन्स

नागालैंड

दीमापुर: चर्च रोड: पॉटरीज़ एम्पोरियम

नेपाल

काठमांडू: थमेल: मालू ट्रेडिंग, 16/78

ओडिसा

बरहामपुर: भापुर बाज़ार: सिल्ला गोपालम एंड सन्स ● **वन वे ट्रैफ़िक रोड:** जे. के. एंटरप्राइजर्स □ **भुवनेश्वर: अशोकनगर:** टी. कृष्णपात्र, 169 वापूजी नगर □ **कटक: डोलमुंडई: इंडियन इंडस्ट्रीज,** मैहताब रोड ● **तिनकोनिया बगीचा:** सुनीता □ **ढेंकानाल: कंचन बाज़ार:** ब्यूटी हाउस □ **जसीपुर: मेन रोड:** जनता एजेंसीज □ **क्योंझर: न्यू मार्केट:** श्री दुर्गा एजेंसीज □ **राउरकेला: मेन रोड:** चंदूलाल गुप्ता ● **सेक्टर 5:** प्रेस्टिज, दुकान नं. 1

पंजाब

अमृतसर: हॉल बाज़ार: हरबंस क्रॉकरी स्टोर ● रघुवीर सिंह कटारिया एंड सन्स ● **प्रताप बाज़ार:** पुरी बैटरी स्टोर □ **भटिंडा: धोबी बाज़ार:** गोयल बर्तन स्टोर ● **गांधी मार्केट:** कंचन क्रॉकरी हाउस ● सुभाष एंड कं. □ **गुरदासपुर: हनुमान चौक:** केदारनाथ एंड सन्स □ **होशियारपुर: जालंधर रोड:** बंसल क्रॉकरी हाउस, क्लॉक टावर के पास □ **जालंधर सिटी: बाज़ार शेखां:** खरबंदा शॉपिंग सेंटर ● **चौक रैनक बाज़ार:** गिफ़्ट सेंटर ● **जी. टी. रोड:** जे. ओमप्रकाश एंड सन्स, सिविल अस्पताल के सामने ● **रैनक बाज़ार:** बहल सन्स □ **कोटकपुरा: रेलवे रोड:** आहूजा गिफ़्ट हाउस □ **लुधियाना: चौड़ा बाज़ार:** जैन सन्स ● **साबन बाज़ार:** जैन क्रॉकरी हाउस □ **मोगा: बाग गली:** क्रॉकरी पैलेस ● **मेन बाज़ार:** नंदकिशोर अग्रवाल एंड सन्स □ **नवांशहर: रेलवे रोड:** हरासिंह जसवंत सिंह आनंद □ **पठानकोट: मेन बाज़ार:** सिंगला गिफ़्ट हाउस □ **फगवाड़ा: लोहामंडी रोड:** ए. के. ट्रेडर्स □ **रायकोट: चौक मेन बाज़ार:** ओसल मेटल स्टोर □ **सामना मंडी: मेन बाज़ार:** मोहनलाल सुदर्शनकुमार

राजस्थान

भरतपुर: नीम-का-गेट: किशोरी श्याम बृजेशकुमार □ **चित्तौड़गढ़: मीरानगर:** आपकी दुकान, कलेक्टरी चौराहे के पास □ **जयपुर: नेहरू बाज़ार:** अशोका डिपार्टमेंटल स्टोर, मयूर सिनेमा के पास ● **राजा पार्क:** लॉंगलाइफ डिपार्टमेंटल स्टोर, 372 गली नं. 1 ● **त्रियोलिया बाज़ार:** बाबूलाल तर्सेनकुमार जैन ● महावीर जनरल स्टोर, 215 □ **खेतड़ी नगर: सुभाष मार्केट:** अमर ज्योति फ्रैन्सी स्टोर, 38 □ **सीकर: नेहरू मार्ग:** सीकर बर्तन भंडार, नेहरू मार्ग स्टेशन रोड □ **उदयपुर: बापू बाज़ार:** शाह लक्ष्मीलाल प्रकाश चंदर जैन, दुकान नं. 108 ● **ज़ीनीरत चौक:** नरेंद्र ट्रेडिंग कं., 132 भामाशाह मार्ग

तमिलनाडु

मद्रास: टी नगर: रत्ना मेटल्स, 55 रंगनाथन स्ट्रीट, मांबलम रेलवे स्टेशन के पास ● रत्ना स्टोर्स, 47 शिवा कॉम्प्लेक्स पांडी बाज़ार ● शबरी डिस्ट्रिब्यूटर्स, 17 रामनाथन स्ट्रीट □ **मदुरै: अम्मान सन्निधि:** एस. संतोष नाडार कॉर्पोरेशन, 3 ● **बुलियन बाज़ार:** आनंद स्टोर्स, 42 साउथ अवानी मूला स्ट्रीट ● **ईस्ट गेट:** एस. चेलय्या नाडार एंड संस, 267 कामराजार सलाई □ **त्रिची: मदुरै रोड:** श्री लक्ष्मी मार्केटिंग, 2 श्री कॉम्प्लेक्स, 21 मदुरै रोड ● **मलई वसल के पास:** मंगल एंटरप्राजेज, 24/2 एन. एस. बी. रोड

उत्तर प्रदेश

आगरा:, जौहरी बाज़ार: दादा ग्लास एंड क्रॉकरीज □ **अलीगढ़: रेलवे रोड:** गुलाटी स्टोर्स, न्यू मार्केट ● जयभारत क्रॉकरी हाउस □ **इलाहाबाद: बिजलीघर के पास:** नॉवेल्टी हाउस, 6 सी कमला नेहरू मार्ग ● **विवेकानंद मार्ग:** डायमंड टी सेल्स, चमेली धर्मशाला के सामने □ **अनपढ़ा बाज़ार:** मोती रेडियो सेंटर □ **बड़ौत: नया बाज़ार:** अभय जनरल स्टोर □ **बुलंदशहर: अंसारी रोड:** कंसल क्रॉकरी स्टोर □ **देहरादून: पल्टन बाज़ार:** सचदेवा स्टोर्स, 52 जामा मस्जिद के सामने ● सुशील एंड कंपनी, दुकान नं. 95 ● वेदप्रकाश गोयल, दुकान नं. 120 □ **इटावा: तहसील चौराहा:** उपहार केंद्र, पहली मंजिल □ **गाज़ियाबाद: चौपला मंदिर:** अर्जता इलेक्ट्रिक स्टोर, 9 शांति मार्केट ● **दिल्ली गेट:** गुप्ता गैस लाइट हाउस, दुकान नं. 90 □ **गाज़ीपुर: गांधी रोड:** आदर्श बर्तन स्टोर □ **गोंडा: उतरौला रोड:** पारस स्टील एम्पोरियम, राजा रघुराम मार्केट □ **गोरखपुर: सिनेमा रोड:** गणेशीलाल एंड सन्स ● **टाउनहॉल:** विजय एजेंसीज, दुकान नं. 16-17 □ **हल्द्वानी: बरेली रोड:** सरदार क्रॉकरी हाउस, सिंधी स्वीट्स के पास ● **कारखाना बाज़ार:** बॉम्बे क्रॉकरी हाउस □ **हापुड़: रेलवे रोड:** क्रॉकरी सेंटर, गांधी भवन □ **हरिद्वार: मोती बाज़ार:** ओमप्रकाश चेलाराम □ **जौनपुर: हरलालका रोड:** ग्लास स्टोर्स □ **ज्वालापुर: मेन बाज़ार:** न्यू विमल मेटल्स □ **कानपुर: बिरहाना रोड:** एम. के. ट्रेडर्स, 58/45 ● सुप्रीम-रेडियो एंड इलेक्ट्रिक कार्पोरेशन, दुकान नं. 26/49 ● **गुमटी नं. 5:** ईश इलेक्ट्रिकल्स, 118/2 कोशलपुरी, जयहिंद सिनेमा के सामने ● **हर्ष नगर:** एम. के. एजेंसीज, दुकान नं. 111/2, पहली मंजिल, बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने ● **नवीन मार्केट:** कुमार फ्रैन्सी स्टोर्स, दुकान नं. 114 □ **लखनऊ: अमीनाबाद:** इंदरचंद जैन ● रामसरन एंड कंपनी ● **नज़ीराबाद:** चमनलाल अग्रवाल एंड सन्स, द्वारा कन्हैयालाल प्रागदास, दुकान नं. 7 □ **मेरठ: पान दरीबां:** मॉडर्न लाइट हाउस, 222 खैर नगर बाज़ार □ **मुरादाबाद: बाज़ार गंज:** क्रॉकरी एम्पोरियम, कोतवाली के सामने ● **चौमुखा पुल:** प्रेम क्रॉकरीज़, अमरोहा गेट □ **मुज़फ़्फ़र नगर: कोर्ट रोड:** पुरी डिपार्टमेंटल स्टोर्स □ **ऋषिकेश: क्षेत्र रोड:** मोतीराम रमाकांत □ **रूड़की: सिविल लाइन्स:** मुण्डाबाद हाउस □ **रुद्रपुर: भगतसिंह चौक:** इंडिया इंडस्ट्रीज ● **मेन मार्केट:** बिहारी लाल मनोजकुमार, दुकान नं. जी-13 ● **पांच मंदिर रोड:** सोमदत्त एंड सन्स □ **सहारनपुर: नेहरू मार्केट:** निहालचंद हरबंसलाल, दुकान नं. 14 □ **शामली: बड़ा बाज़ार:** सुशीलकुमार एंड सन्स □ **सुल्तानपुर: शाहगंज चौक:** एस. आर. स्टील एम्पोरियम, लाला सूरजलाल मार्केट □ **उन्नाव: शाहगंज:** न्यू हरीशचंद्र गुप्ता एंड सन्स, 72/73 □ **वाराणसी: बांस फाटक:** गिरधरदास एंड सन्स ● **लहुराबीर:** यू. पी. ग्लास स्टोर्स, दुकान नं. सी 26/10 बी, स्टेट बैंक के सामने ● **नीची बाग:** रसोई घर, बाटा शू कंपनी के पास

पश्चिम बंगाल

अलीपुरद्वार: न्यू टाउन: बसंती इलेक्ट्रिक स्टोर्स □ **आसनसोल: बैस्टिन बाज़ार:** साहा स्टील हाउस, 19 लेटन स्ट्रीट ● 103 जी टी रोड: ईगल ग्लास हाउस □ **बशीरहाट: नूतन बाज़ार:** सुरलिपि, टाउन हॉल के पास □ **बेलडांगा: बेलडांगा बाज़ार:** रेडियोघर □ **बोइंची: बोइंची रेलगेट:** सोनातारी □ **बोलपुर: श्रीनिकेतन रोड:** आनंद स्टोर □ **बर्दवान: पुलिस स्टेशन के पास:** प्रयोजिनी, 497 बी. सी. रोड ● **बी. सी. रोड:** विक्टरी स्टोर्स, दुकान नं. 31 □ **कलकत्ता: बागड़ी मार्केट:** श्याम ब्रदर्स, सी-23 बागड़ी मार्केट ● **बेहाला:** न्यू बेहाला स्टील हाउस, 400/1 डी. एच. रोड ● **भवानीपुर:** अमीता स्टोर्स, 144 ए. ए. टी. मुखर्जी रोड ● **चांदनी चौक:** क्रॉकरी सेंटर, दुकान नं 41 बी ● नाग एंड सन्स, 6 चांदनी चौक स्ट्रीट ● **कॉलेज स्ट्रीट:** दत्ता ब्रदर्स, 41/42 कॉलेज मार्केट स्ट्रीट ● **गोलपार्क:** टी. आर. इलेक्ट्रिक कं., कोला विला, 23/37 गरियाहाट रोड ● **लेक मार्केट:** श्री दुर्गा स्टोर्स ● 8 लेनिन सारिणी: रसाइल इलेक्ट्रिक ● 11 **एम. जी. रोड:** तारकनाथ स्टोर्स, 151/ए. बी. बी. गांगुली स्ट्रीट ● **नेताजी रोड:** घोष एंड घोष, बी-65 न्यू मार्केट ● **ओल्ड चाइना बाज़ार:** अमरनाथ कुंडू एंड ब्रदर्स, दुकान नं. 14/3, ● लैप हाउस प्रा.लि. 23 केनिंग स्ट्रीट ● एस. एल. कुंडू एंड कं., दुकान नं. 206 ● सतगौरीदास एंड कं., दुकान नं. 196 ● **पोस्ता:** नंदी स्टोर्स, 50 कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट ● 85 **आर. बी. एवेन्यू:** नेपाल शंकर एंड कं. ● **स्यालदा:** लक्ष्मीनारायण बासनालय, 133 एच, ए. जी. सी. बोस रोड □ **चकदाह: बोनोग्राम रोड (बस स्टेशन):** बासन बिपानी □ **चिंसुरा: खड़ुआबाज़ार:** महादेव कुंडू एंड कं. □ **चित्तरंजन: अमलादही मार्केट:** मॉडर्न स्टील फर्नीचर (यूनिवर्सल), ए/1 आर-3 □ **कूचबिहार: बी. एस. रोड:** दास ब्रदर्स ● **जापानी पट्टी:** सत्यनारायण मैटल स्टोर्स ● **एन. एन. रोड:** तोलाराम डालिमचंद □ **दार्जिलिंग: हिलकार्ट रोड:** हिंद स्टोर्स, चौक बाज़ार □ **धनियाखाली: धनियाखाली बाज़ार:** कोहिनूर स्टील फर्नीचर □ **दिनहाटा: चौराहाट:** वैद्यनाथ साहा एंड ब्रदर्स □ **दुर्गा चौक: दुर्गाचौक कॉलोनी:** प्रतीक □ **दुर्गापुर: बेनाचिट्टी:** दीप्ति ● **हटोला रोड:** रुज ब्रदर्स, स्टेशन बाज़ार ● **ममरा बाज़ार:** संसार, चटर्जी मार्केट □ **फुलिया: फुलिया बाज़ार:** न्यू कात्यायनी स्टोर्स, द्वारा संतोषकुमार पॉल □ **घाटल: कुट्टी बाज़ार:** तेजस पात्र □ **हावड़ा: वैष्णवपाड़ा बाज़ार:** प्रयोजिनी, 44/1 चंद्रकुमार बनर्जी लेन □ **जलपाई गुड़ी: दिन बाज़ार:** प्रसादी राम प्रभु दयाल ● **मर्केंट रोड:** मित्रा ब्रदर्स □ **कृष्णानगर:** गौरी सोना पट्टी: नादिया बासनालय, बिश्वंभर रॉय रोड □ **मालदा:** 3/49 **डी. सी. आर. मार्केट:** वेराइटी स्टोर्स ● **एन. एस. रोड:** रेडियो साइन □ **मिदनापुर: बड़ा बाज़ार:** ट्रंक हाउस ● **बीबीगंज:** छाबड़ी एंटरप्राइजेज □ **शांतिपुर: पब्लिक लाइब्रेरी के सामने:** साहा इलेक्ट्रिक, 33/ए एन. एस. रोड □ **सिलिगुड़ी: आलू पट्टी: डे ब्रदर्स** ● **बिधान रोड:** नार्थ बंगाल स्टोर्स ● स्टेनलेस हाउस, ए-93 (आर) ● **हिलकार्ट रोड:** माहेश्वरी मेटल स्टोर्स □ **सिमुराली: स्टेशन बाज़ार:** कुंडू बासनालय □ **उलूबेरिया: उलूबेरिया बाज़ार:** रक्षित स्टील स्टोर्स, उलूबेरिया स्कूल के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताया कि भिलाई में नियोगी के छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के दफ्तर से खबर आई है कि रात को नियोगी को किसी ने सोए में ही गोली मार दी है. नियोगी अब नहीं रहे.

अभी तक जितने प्रमाण सामने आए हैं उनसे पता चलता है कि यह हत्या सुनियोजित षड्यंत्र का परिणाम थी. उस रात होटल से खाना खाकर नियोगी रायपुर में सायल के घर गए. वहां से लगभग एक बजे वे भिलाई में अपने घर के लिए रवाना हुए. अपने मकान में निचली मंजिल के एक कमरे में वे खिड़की के पास सोते थे. हत्यारे ने नींद में सोए नियोगी के माथे के पीछे देसी कट्टे से खुली खिड़की से फायर किया. उस घर में वे केवल यूनियन के ड्राइवर बहलराम के साथ रहते थे. चीख सुनकर बहल कमरे में आया. बाद में नजदीक ही यूनियन के दफ्तर से भी मदद के लिए लोग पहुंचे. लेकिन अस्पताल पहुंचने के पहले ही एंबुलेंस में नियोगी ने अंतिम सांस ली.

प्रभात पंजियार

यह हत्या किसी पेशेवर अपराधी का काम लगता है. अपनी हत्या के महज चार घंटे पहले नियोगी ने मुझसे कहा था कि उनको मारने के लिए स्थानीय उद्योगपतियों ने किराए पर बाहर से गुंडे मंगाए हैं. वे अक्सर कहा करते थे कि पहले उनके सिर की कीमत पांच लाख रुपए थी पर हाल में पचास लाख में सौदा हुआ है. उन्होंने मुझसे कहा, "पता चला है कि मुझे मारने के लिए सिपलेक्स और केडिया वालों ने किराए पर गुंडे लाए हैं." वास्तव में इसके पहले एक शुभचिंतक ने नियोगी के नाम से दो धमकी भरे पत्र भेजे थे जिनमें इस बात की जानकारी दी गई थी कि भिलाई के उद्योगपतियों की एक गुप्त बैठक में उनकी हत्या की साजिश रची गई थी. ये दोनों पत्र दल्ली-राजहरा पुलिस थाने में जमा करा दिए गए थे. लेकिन पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की.

नियोगी का मुख्य कार्यक्षेत्र दल्ली-राजहरा का खदान क्षेत्र था. पर पिछले कुछ वर्षों में खदान मजदूरों के अलावा उन्होंने दूसरे मजदूरों को भी संगठित करने की कोशिश की थी. राजनांद गांव के कपड़ा मिल मजदूरों के बीच पैठने के बाद पिछले साल वे दुर्ग-भिलाई के औद्योगिक क्षेत्र में आए थे.

उनके प्रयासों से दल्ली-राजहरा के मजदूरों की दैनिक आमदनी चार रु. से बढ़कर 74 रु. हो गई. पर उन्होंने लड़ाई को तनख्वाह, बोनस तक ही सीमित नहीं रखा. निरक्षता, नशाखोरी आदि पर भी ध्यान दिया और मजदूर आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई

उन्होंने स्थानीय उद्योगपतियों की नींद हराम कर रखी थी. पिछले नौ माह से सिपलेक्स और केडिया ग्रुप के कारखानों में चल रही 2,000 मजदूरों की हड़ताल से पता चलता है कि सफलता उनके कदम चूमने ही वाली थी.

मुख्यमंत्री पटवा ने उनकी हत्या की निंदा करते हुए हत्या का सुराग देने वाले को 25,000 रुपए का इनाम देने की घोषणा की है. इस पर सायल की प्रतिक्रिया थी, "यह इनाम तो पटवा को ही मिलना चाहिए क्योंकि नियोगी ने उनसे मिलकर इस साजिश की चर्चा की थी." अपनी हत्या के एक सप्ताह पूर्व नियोगी ने भोपाल में पटवा से मुलाकात कर उद्योगपतियों की प्राइवेट सेना के बारे में जानकारी दी थी. छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा ने हत्याकांड के सी.बी.आई. जांच की मांग है.

हत्या के दूसरे दिन भिलाई के उद्योगपति अपने-अपने घरों में बंद रहे. किले की तरह सुरक्षित अपने आलीशान घर में केडिया ने कहा: "यह हत्या चिंता

नियोगी (बाएं); और उनका शोकसंतप्त परिवार

उन्होंने लड़ाई को तनख्वाह, बोनस तक ही सीमित नहीं रखा. निरक्षता, नशाखोरी आदि पर भी ध्यान दिया और संघर्ष में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई

का विषय है. इस क्षेत्र में पहली दफा इस किस्म की घटना हुई है."

हत्या की खबर फैलते ही छत्तीसगढ़ के कोने-कोने से मजदूर भिलाई पहुंचने लगे. इलाके में ज्यादातर खदान और औद्योगिक प्रतिष्ठान उस दिन बंद रहे. भोपाल समेत कई जगहों पर विरोध रैलियां निकलीं. पर उनके निधन से सबसे ज्यादा आघात पहुंचा है देश में नव-वामपंथी आंदोलन को, जो मार्क्सवाद की भूल-भूलैया से जूझते हुए परिवर्तन का एक खांटी देसी रास्ता चुनने में लगा था.

उनकी मृत्यु के बाद पूरे इलाके में एक रिक्तता आ गई है. तनाव बना हुआ है. मजदूर आंदोलन किस तरफ कब करवट ले ले और एक छोटी सी चिनगारी कब दावानल का रूप ले ले कहना मुश्किल है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषा में अंग्रेज़ी के इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटानिका की तरह एक अनूठा सारगर्भित ग्रंथ

हिन्दी विश्वकोश

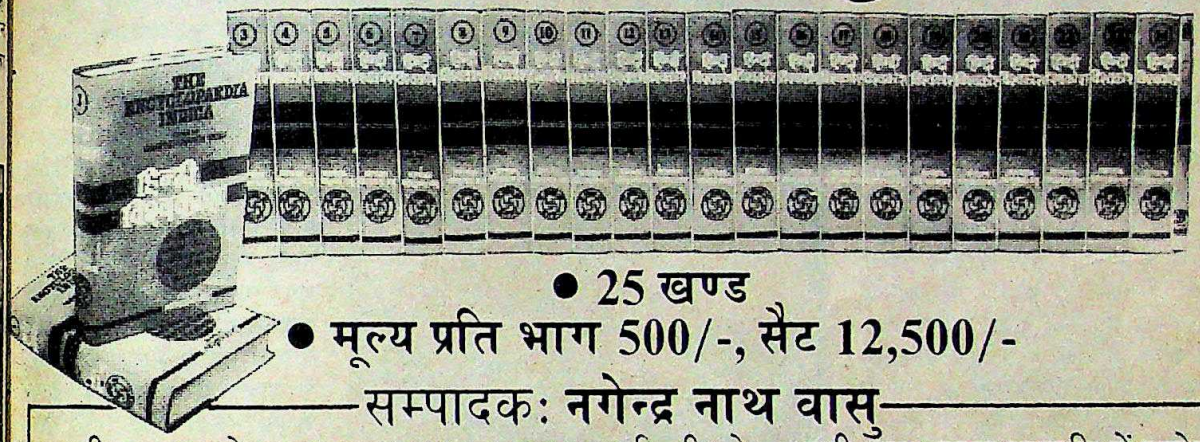

- 25 खण्ड
- मूल्य प्रति भाग 500/-, सैट 12,500/-

सम्पादक: **नगेन्द्र नाथ वासु**

हमारी सरकार केन्द्र व राज्य स्तर पर राष्ट्र भाषा हिन्दी को सरकारी काम-काज इत्यादि में प्रयोग के लिए प्रयत्न कर रही है। इसीलिये प्रतिदिन विभिन्न विषयों व शब्दों को विस्तृत रूप से समझ पाने के लिए हिन्दी भाषा में इन्साईक्लोपीडिया की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। हमने हिन्दी विश्वकोश, जो कि अंग्रेजी भाषा के इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटानिका की तरह पूर्णतः सारगर्भित है, का प्रकाशन करके हिन्दी भाषा-भाषियों के स्वप्न को साकार करने का प्रयास किया है।

इस 25 खण्डिय ग्रंथ में भाषा एवं व्याकरण के अतिरिक्त भारत से सम्बन्धित कोई भी विषय अछूता नहीं रहा है।

यह ग्रंथ उन सभी के लिए उपयोगी है जो न केवल हिन्दी विभागों में एवं गैर-हिन्दी विभागों में हैं, बल्कि उन सभी बुद्धिजीवियों के लिए भी, जो हिन्दी भाषा के गहन अध्ययन में संलग्न हैं।

TRENDS/2107/91

- पुनःमुद्रित • 1,62,040 प्रविष्टियां
- 18,527 पृष्ठ • 260 चित्र
- 156 चार्ट • 93 रेखाचित्र

"इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटानिका की टक्कर का हिन्दी में यह ज्ञान-कोष है।" —पाटलिपुत्र

"विश्वकोष सर्वथा संग्रहणीय है।" —सरस्वती

यह कूपन भेजें और
1500/- रुपये बचाएं

☐ आप केवल 11250/- रुपये अग्रिम भेज कर पूरा सैट प्राप्त कर सकते हैं। (1250/- रुपए की छूट तथा 250/- रुपये डाक खर्च हम देंगे।)

☐ खंड अलग-अलग वी.पी.पी. द्वारा या अग्रिम राशि भेज कर बिना डाक खर्च मंगवाये जा सकते हैं।

☐ सरकारी संस्थान, कॉलेज, स्कूल, पुस्तकालय आदि अपना आदेश बिना अग्रिम राशि के भेज सकते हैं।

सूची पत्र एवं व्यापारिक पूछताछ के लिए सम्पर्क करें:

डी.के. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि.

1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002 फोन: 3261465, 3278368

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

साझेदार नाराज

लेकिन मुख्यमंत्री शेखावत की चतुराई से संकट आखिर टल गया

राजस्थान की भाजपा सरकार की किस्मत बड़ी नाजुक डोर से बंधी हुई है. पिछले पखवाड़े सत्ता में उसके सहयोगी जनता दल (दिग्विजय) ने यह डोर लगभग काट ही डाली थी. नाराज दिग्विजय गुट ने पांच नगर विकास न्यासों के अध्यक्ष पद पर भाजपा के आदमियों को बिठाए जाने के बाद सरकार गिराने की धमकी दे डाली. यह धमकी निश्चय ही दमदार थी क्योंकि 200 सदस्यों के सदन में 85 सदस्यों वाली भाजपा दिग्विजय गुट के 25 सदस्यों पर पूरी तरह निर्भर करती है. दिग्विजय गुट के नेता और पशुपालन राज्यमंत्री देवी सिंह भाटी की इस्तीफे की धमकी से संकट और गहरा गया. मुख्यमंत्री भैरो सिंह शेखावत कलकत्ता

भवान सिंह

में थे और नाराज गुट ने राज्य सचिव में सभी सरकारी कामकाज तड़ बहिष्कार कर रखा था.

लेकिन मुख्यमंत्री ने समय रहते कर संकट टाल दिया. शेखावत थोड़ा को तैयार हो गए और नाराज विधा को सत्ता में भागीदारी की पेशकश की ही स्पष्टवादी मुख्यमंत्री ने यह भी कर दिया कि वे समझौता एक हद ही करेंगे और अगर नौबत आई नए चुनाव कराने से भी नहीं हिच पर उन्होंने इस बात से इनकार कि उन्होंने खुद विधानसभा भंग की कोई धमकी दी थी.

इस तरह शेखावत ने चतुराई परिचय देकर दिग्विजय गुट की नाकाम कर दी. उन्हें बखूबी पत कि दिग्विजय गुट के पास सरकार समर्थन देने के सिवा और कोई नहीं. और जनता दल (दिग्वि अगर राज्य सरकार को गिराने कोशिश करेगा तो यह उसकी सि खुदकशी ही होगी. अपने बूते चु में कामयाबी न पाने की हाल कारण उसका सफाया हो सक इसलिए मुख्यमंत्री ने भाटी

दिग्विजय सिंह से गले मिलते भैरो सिंह शेखावतः दोस्ती का

प्रदेश कांग्रेस (इ)

नए समीकरण

राजस्थान के वयोवृद्ध कांग्रेसी नेता हरिदेव जोशी अपने सहयोगी शिवचरण माथुर के घर खाना खाने क्यों नहीं गए? उनका कहना है, "उस प्रकार का खाना मैं नहीं खाता."

'उस प्रकार' को उन्होंने कुछ इस तरह से कहा कि संवाददाताओं के ठहाके हॉल में काफी देर तक गूंजते रहे. जोशी उस राजनैतिक डिनर की चर्चा कर रहे थे जो पिछले पखवाड़े माथुर ने केंद्रीय संचारमंत्री राजेश पायलट के सम्मान में दिया किया था. वैसे, माथुर इस बात से इनकार करते हैं कि उस डिनर का कोई खास मकसद था. उन्होंने 'इंडिया टुडे' को बताया, "विधानसभा चल रही थी, सो वैसे ही कुछ लोगों को मैंने बुला लिया था."

पर विधानसभा सत्र के दौरान इस डिनर से प्रदेश कांग्रेस में बदलते समीकरणों की एक झलक मिलती है. जोशी को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष परसराम मदेरणा सहित पुराने कांग्रेसियों का समर्थन भी प्राप्त है. केंद्रीय कपड़ामंत्री

हरिदेव जोशी

शिवचरण माथुर

नाथूराम मिर्धा

अशोक गहलोत भी इसी गुट के हैं.

दूसरे गुट के नेता हैं माथुर. हालांकि वे खुद खफा हैं कि उन्हें केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल नहीं किया गया है पर उन्हें पायलट के साथ मिलकर नया समीकरण खोला है. यह नया समीकरण है.

इस त्रिकोण का तीसरे कोण नाथूराम मिर्धा, जिन्हें उनके समर्थक कहते हैं. लोकसभा चुनाव के थोड़ा

कांग्रेस में लौटे बाबा भी इस बात नाखुश हैं कि दिल्ली में उन्हें मंत्री की नहीं मिली. वे माथुर के करीब तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात

बवाली ब्याह

चौधरी की दूसरी शादी विवादास्पद

वे यह तो जानते थे कि उनके पांव मजबूत आधार पर नहीं टिके हैं लेकिन उन्हें इतनी जल्दी जमीन खिसक जाने का आभास नहीं था. गुजरात के 50 वर्षीय पूर्व मुख्यमंत्री अमर सिंह चौधरी ने 40 वर्षीय इंका नेता निशा गामेती से पांच वर्ष से चले आ रहे प्रेम संबंधों को विवाह में बदल दिया तो गजराबेन और उनके बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी से उन्होंने मुंह फेर लिया है. वे कहते हैं, "निशा से शादी करके मैंने साहस का परिचय दिया है. मैं उन लोगों में से नहीं, जो अवैध संबंध बनाए रखते हैं."

लेकिन भाजपा की महिला शाखा ने गजराबेन तक संदेश पहुंचाया कि यदि वे अपने कानूनी अधिकारों की लड़ाई लड़ें तो वे उनका साथ देंगी. और गजराबेन ने पिछले पखवाड़े कहा कि "यह शादी मुझे और मेरे बेटों को मंजूर नहीं." उन्होंने अभी यह तय नहीं किया है कि इस शादी को अदालत में चुनौती दें या नहीं.

निशा हर तरह के कानूनी बंधन से मुक्त हैं. 80 के दशक के मध्य में जब चौधरी से उनकी मुलाकात हुई तब वे शादीशुदा और दो बच्चों की मां थी. पिछले वर्ष चौधरी से शादी करने का रास्ता साफ करने के लिए

सनत झावेरी ऐंड क.

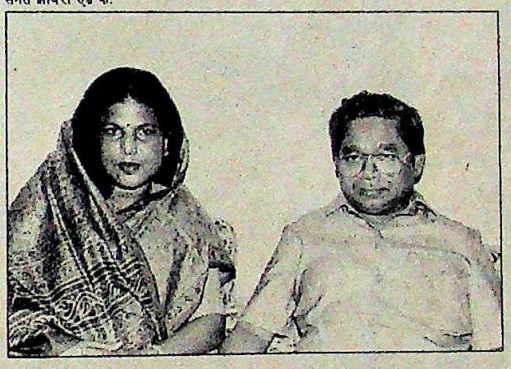

अपनी दूसरी पत्नी निशा (बाएं) के साथ चौधरी; और गजराबेन

राजनैतिक हलकों में छोटा-मोटा तूफान ही उठ खड़ा हुआ क्योंकि चौधरी ने अपनी पहली पत्नी गजराबेन से वैवाहिक संबंध विच्छेद नहीं किया. विपक्षी नेताओं ने चौधरी की भर्त्सना करने और मौके का राजनैतिक फायदा उठाने में देर नहीं लगाई. चौधरी के विरोधी कांग्रेसजनों ने भी गजराबेन और उनके तीन बच्चों के समर्थन में आवाज बुलंद की. माधव सिंह सोलंकी गुट की कोकिलाबेन व्यास का कहना था, "चौधरी ने जो कुछ किया, वह सार्वजनिक जीवन के नैतिक मूल्यों पर कुठाराघात है. उन्हें तो जात बाहर कर दिया जाना चाहिए."

विपक्षी नेतागण चौधरी की शादी से राजनैतिक लाभ उठाने की कोशिश कर रहे हैं

एक वनवासी इंका नेता की बेटी निशा से विशेष विवाह अधिनियम के तहत विवाह करने वाले चौधरी इस तथ्य की आड़ ले रहे हैं कि "वनवासी हिंदू विधि मानने को बाध्य नहीं." वे इस आरोप का खंडन करते हैं कि उन्होंने पति से तलाक ले लिया. इस विवाह को लेकर उन पर जो कीचड़ उछाला जा रहा है, उससे वे बहुत विचलित हैं. वे कहती हैं, "चौधरी साहब ने शादी करके मुझे सामाजिक प्रतिष्ठा दी है यदि वे चाहते तो हम लुके-छिपे यह संबंध जारी रख सकते थे. ये तथाकथित महिला संगठन क्या तभी खुश रहते?" सामाजिक कार्यकर्ता सूर्यकांत पारीख कहते हैं, "दूसरी शादी को सार्वजनिक करने के साहस के लिए चौधरी को बधाई दी जानी चाहिए."

प्रदेश इंका अध्यक्ष नटवरलाल शाह सारी आलोचनाओं को दरकिनार करते हुए कहते हैं, यह चौधरी का निजी मामला है और इसका पार्टी की छवि पर कोई असर नहीं पड़ेगा." लेकिन उनकी अपनी राजनैतिक हैसियत प्रभावित होगी या नहीं यह एक अलग मुद्दा है.

—उदय माहूरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटाक्ष: अजात जनन

सनद रहे

प्रस्तावः केंद्रीय स्वास्थ्यमंत्री **माखनलाल फोतेदार** पंचायत से लेकर संसद तक में किसी भी निर्वाचन से भरे जाने वाले पद के लिए योग्यताओं में दो संतानों की सीमा को भी शामिल कराना चाहते हैं. उनके मुताबिक जनसंख्या वृद्धि की समस्या आम उपायों से हल होने के काबिल नहीं रह गई है.

उद्घाटनः नागरिक उड्डयनमंत्री माधवराव सिंधिया के हाथों अत्याधुनिक कंप्यूटर शुरू हो गया. इसका काम है इंडियन एअरलाइंस का टिकट लेते वक्त अपना फोन नंबर दर्ज कराने वाले यात्रियों को विलंबित उड़ानों की सूचना देना. कंप्यूटर तीन बार नंबर मिलाएगा और यात्री के फोन की घंटी आठ बार बजेगी.

क्षमा याचनाः अमेरिकी पत्रिका 'फॉर्चून' ने **हिंदुजा बंधुओं** के बारे में अपमानजनक बयान छापने के लिए उनसे माफी मांगी है. 23 सितंबर के अंक में इसने स्पष्ट किया है कि विश्व के चोटी के 75 अरबपतियों की इसकी सूची में शामिल हिंदुजा पर दलाली लेने का आरोप नहीं लगा है.

शिकायत दर्जः नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र के दो निर्दलीय उम्मीदवारों ने **सोनिया गांधी** और **राजेश खन्ना** के खिलाफ नई दिल्ली सिटी कोर्ट में शिकायत की है कि खन्ना ने मतदाताओं को प्रभावित किया. उनकी आपत्ति है कि एक दैनिक में छपी तस्वीर में खन्ना सोनिया को इंका का चुनाव चिह्न दिखा रहे हैं.

निधनः प्रख्यात फिल्म और रंगमंच अभिनेत्री **दुर्गा खोटे** का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया. वे 86 वर्ष की थीं. 1929 में एक मूक फिल्म में तीन मिनट की भूमिका से उन्होंने अभिनय क्षेत्र में कदम रखा था. 1932 में मराठी फिल्म 'अयोध्याचा राजा' के बाद वे स्टार बन गई थीं. उन्होंने अनेक हिंदी फिल्मों में काम किया. उन्हें 1986 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया.

अपहरणः संसदीय कार्यमंत्री गुलाब नबी आजाद के साले **तस्सदुक अहमद देव** का अपहरण उनके श्रीनगर स्थित निवास से कर लिया गया. उग्रवादी संगठन अल उमर मुजाहिदीन ने इसकी जिम्मेवारी ली है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब समय हो फ़र्नीचर की पॉलिश का— लाइए टचवुड.

फ़र्नीचर बोल नहीं सकते तो क्या हुआ.
एक बार देखते ही पता चल जाता है किसे
पॉलिश की ज़रूरत है, किसे नहीं.
और फिर उस खूबसूरत फ़र्नीचर की भी
क्या शान जो बेजान सा पड़ा रहे!
इसलिए अगली बार जब आप अपने घर में
पेन्ट करवाएं तब फ़र्नीचर को भी ज़रूर
पॉलिश करवाएं—टचवुड से.

टचवुड को लगाना इतना आसान है कि
इसके लिए किसी पॉलिश वाले को बुलाने
की ज़रूरत नहीं पड़ती. आपका पेन्टर ही
इसे ब्रश से लगा सकता है.

जानते हैं, टचवुड लगा फ़र्नीचर सालों
साल नए जैसा कैसे बना रहता है?
वो इसलिए क्योंकि इसमें है पॉलीयूरिथेन
जो फ़र्नीचर को मज़बूती देता है,
दाग-धब्बों, निशान और खरोचों से बचाए
रखता है. अब चाहे उसपर गरम-गरम
चाय गिरे या कोई फूलदान रगड़ खाए.
टचवुड लगे फ़र्नीचर को ज़रा भी डर नहीं!!

टचवुड की ग्लॉस फ़िनिश के चमकीले
रूप को तो लाखों में पहचाना जा सकता है.
पर अगर आप चमकीली फ़िनिश के
शौकीन नहीं हैं तो इस्तेमाल करिए इसकी
मैट फ़िनिश. अब टचवुड आपका है.
आप चाहें तो मैट और ग्लॉस फ़िनिश को
मिलाकर भी अपनी पसन्द का रूप तैयार
कर सकते हैं. तो फ़र्नीचर की बात मानकर,
[illegible] लाइए – टचवुड.

[illegible]वस्था में भारत अब हाशिए [illegible]
[illegible]या है. न यह यूरोप का हिस्सा है, और न
विकासशील एशिया का. न ही इसके
[illegible]स वह क्रय शक्ति है जो उत्तरी अमेरिका पास
है. यह तो बस हिंद
महासागर में कहीं तैर
भर रहा है"

जिम मैक्सवेल,
अध्यक्ष,
बिजनेस इंटरनेशनल,
सिंगापुर

अपने पेन्टर से लगवाइए.

फ़र्नीचर में जान डाल दे, खूबसूरती [illegible]

Ogilvy&Mather 8149/HIN Rev

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी आईने में भारत की छवि

—राज चेंगप्पा

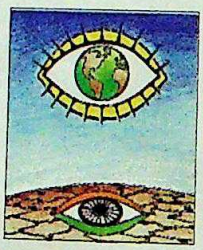

भारत हमेशा ही आत्ममुग्ध-सा रहा है. वह विश्व राजनीति में भी खुद को काफी महत्वपूर्ण मानता रहा है. वर्षों से यह देश तीसरी दुनिया का वैचारिक और नैतिक प्रवक्ता होने का दंभ पालता रहा है और यह अपने देशवासियों को इस भ्रम में डालने की कोशिश करता रहा है कि हम तो बिलकुल आत्मनिर्भर और खांटी गुटनिरपेक्ष रहे हैं.

इन भ्रमों को तब भी बनाए रखने की कोशिश की गई जब सरकार ने विदेशी पूंजी निवेश के लिए अर्थव्यवस्था के द्वार खोले और विश्व निर्यात बाजार में मजबूती से कदम रखने का फैसला किया.

लेकिन इन सारे भ्रमों, इस आत्मविश्वास की पोल 15 बड़े देशों के लोगों से 'इंडिया टुडे' की बातचीत से खुलती नजर आई . विदेश में भारत की छवि क्या है इसकी झलक इन वार्ताओं से मिलती है.

अधिकांश देशों में यहां के बहुचर्चित आर्थिक उदारीकरण के अभियान के प्रति कोई खास उत्साह नहीं है. और इसे तीसरी दुनिया का अगुआ देश नहीं बल्कि आम गरीब देश माना जाता है. कुल मिलाकर इसकी छवि ऐसे राष्ट्र की है जो दुनिया में हो रहे बदलावों से कदम मिला कर नहीं चल रहा.

सबसे चिंतनीय तो यह है कि कई देशों को इससे कोई मतलब नहीं है कि भारत का क्या होता है. अमेरिका में प्रतिष्ठित मैसेचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी में अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र के निदेशक माइरन वीनर कहते हैं, "फिलहाल भारत महत्वपूर्ण देश नहीं माना जाता."

सचाई यह भी है कि पिछले कुछ समय से दुनिया लगातार तेजी से बदल रही है. कुछ ही देश इस तेजी के साथ कदम मिला रहे हैं. खाड़ी युद्ध, पूर्वी यूरोप में साम्यवाद का अंत, जर्मनी का एकीकरण, यूगोस्लाविया में गृहयुद्ध और सोवियत संघ का बिखराव—ये सब तेज घटनाक्रम के ही उदाहरण हैं. इन घटनाओं ने विश्व का ध्यान खींचा है और इन्होंने इस उपमहाद्वीप को विश्व की सामूहिक चेतना से गायब कर दिया है. फिर भी, जैसा कि भारत में पूर्व ऑस्ट्रेलियाई उच्चायुक्त तथा सिडनी में रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर एशिया ऐंड पैसिफिक के निदेशक टिम मैक्डॉनल्ड कहते हैं, "विश्व के नई सत्ता समीकरणों में भारत का कोई स्थान नहीं था."

हाल की अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के प्रति भारत के रुख की भी काफी आलोचना हुई है. खाड़ी युद्ध के प्रति इसके रुख को ढुलमुल से लेकर

अमेरिका

"विश्व अर्थव्यवस्था के अखाड़े में तो भारत अदना-सा खिलाड़ी है. इसमें अपनी जगह बनाने के लिए इसे निश्चित ही बहुत मेहनत करनी पड़ेगी"

माइरन वीनर, निदेशक,
अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र, एमआईटी

"पिछले सौ दिनों से भारत जिस तरह की बातें कर रहा है, उसी के अनुरूप उसे काम करना होगा"

जेम्स क्लार्क, उपाध्यक्ष,
एटी ऐंड टी, न्यू जर्सी

"यहां भारत में किसी को फोन कर पाना ही इतना मुश्किल है. भारत तो बस लिखा-पढ़ी और आंकड़ेबाजी में ही माहिर नजर आता है"

रॉबर्ट ओ. हिर्ल्स
निदेशक, मर्क, पेंसिलवानिया

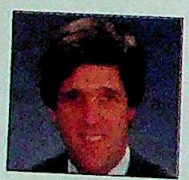

"शीत युद्ध के बाद की विश्व व्यवस्था को रूप देने में [illegible] योग्यताओं में दो सैनिक शक्ति के

की सीमा को भी शामिल कराना चाहते हैं. उनके अ[illegible] मुताबिक जनसंख्या वृद्धि की समस्या आम उपायों से हल होने के काबिल नहीं रह गई है.

उद्घाटनः नागरिक उड्डयनमंत्री माधवराव सिंधिया के हाथों अत्याधुनिक कंप्यूटर शुरू हो गया. इसका काम है इंडियन एअरलाइंस का टिकट लेते वक्त अपना फोन नंबर दर्ज कराने वाले यात्रियों को विलंबित उड़ानों की सूचना देना. कंप्यूटर तीन बार नंबर मिलाएगा और यात्री के फोन की घंटी आठ बार बजेगी.

शिकायत
निर्दलीय
राजेश ख
में शिकार
खन्ना ने
प्रभावित
आपत्ति है
में छपी त
सोनिया
चुनाव चि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यरतापूर्ण तक कहा गया. पूर्वी यूरोप की घटनाओं का वह मूक दर्शक बना
ा. सोवियत संघ के मामले में तो वह आगा-पीछा ही करता रहा.
इसकी एक वजह तो यह है कि कई दशकों से देश में बौद्धिक और
ढ़ातिक जड़ता का माहौल बना हुआ है. अतीत में जरूर इसने विश्व का
ान अपनी ओर खींचा था. पहले आधुनिक युग में उपनिवेशवाद के
लाफ सबसे बड़ा अभियान छेड़कर और फिर 50 के दशक में गुट निरपेक्ष
ों के नेता के रूप में उभरकर विश्व बिरादरी में इसने अपनी धाक जमाई
. इसके बाद देश में दूरदृष्टि वाले नेताओं का जैसे अकाल ही पड़ गया
र देश कुछ पुराने पड़ गए आदर्शों से चिपका रहा. 70 के दशक तक आते-
ते सोवियत खेमे के प्रति इसके स्पष्ट झुकाव की वजह से इसके गुट
रपेक्ष रुख को आडंबर भर माना जाने लगा. जब विश्व बाजार व्यवस्था
सक्रियता विकास की अनिवार्य शर्त बन गई तब भी वह अपने में ही
मटा रहा. 80 के दशक में आकर राजीव गांधी के नेतृत्व में इसने अपनी
वि आगे बढ़ने वाले देश की बनाई और यह क्षेत्रीय महाशक्ति के रूप में
भरा.

परंतु पिछले तीन साल में अंदरूनी उथलपुथल की वजह इसे फिर झटका
गा. इस दौरान लगातार तीन अल्पमत सरकारों, कानून-व्यवस्था की
गड़ती हालत, हिंदू कट्टरतावादी आंदोलनों का उभार, एक और नेता की
त्या, अदूरदर्शी प्रधानमंत्रियों का गद्दीनशीन होना जैसी घटनाएं होती रहीं.
तीजा यह हुआ कि विश्व में भारत की साख पर भारी ग्रहण लगा.

हिंसा, दंगे और भ्रष्टाचार इसका स्थायी स्वभाव है

आज दुनिया भारत के बारे में जो कुछ देखती है वह सीएनएन के
ारणों के जरिए ही. और इनमें दंगे, हिंसा और अस्थिर सरकारों की
सवीरें ही मुख्य होती हैं. जैसा कि एक जानकार कहते हैं, "इससे इसकी
वि 'स्थायी तौर पर संकटग्रस्त देश' की ही उभरती है. कोलंबिया में भी
गों की यही धारणा है. बोगोटा में कोलंबियाई कांग्रेस के सदस्य तथा
हर के मेयर पद के उम्मीदवार एनरिक पेनालोसा कहते हैं, "वह
जनैतिक हिंसा और भ्रष्टाचार की प्रचुरता वाला देश लगता है. मुझे तो
र है कि देश को एकजुट रखने के लिए भविष्य में सैनिक तख्तापलट हो
कता है." ज्यादातर लोगों के लिए तो यह कोई आदिम देश लगता है.

आर्थिक और राजनैतिक रूप से अपने ही घरौंदे में सिमटे रहने के कारण
ारत की छवि वही सदियों पुरानी बनी हुई है. मसलन, जापान में आज भी

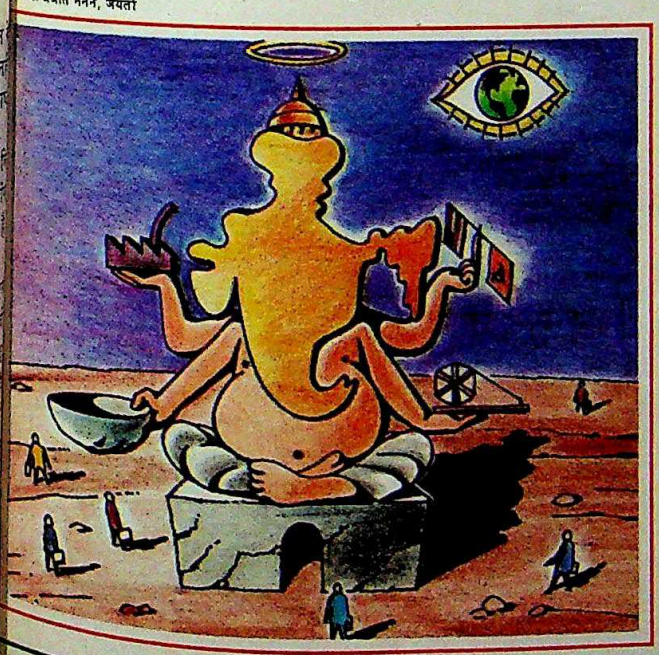

रेखांकन: बजीत नैनन, जयंतो

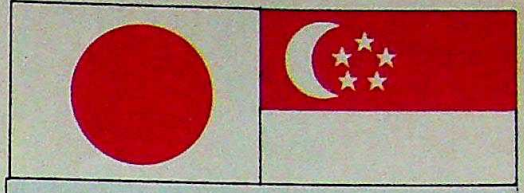

जापान

"भारतीय राजनीति घड़ी के पेंडुलम की तरह है. इसमें छोटे-बड़े हिचकोले तो आते हैं लेकिन बड़े बदलाव नहीं. लोकतंत्र वहां सदा बना रहेगा"

हिरोशी मात्सुमोतो, सहायक प्रबंध निदेशक, इंटरनेशनल हाउस, तोक्यो

"भारत में प्रगति की रफ्तार सतत तो रही है लेकिन निश्चित ही तेज नहीं"

तोकेओ फुकुई, निदेशक, होंडा, तोक्यो

"भारत को इस ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए कि खरीदार क्या चाहते हैं, न कि इस पर कि वह उन्हें क्या बेचना चाहता है"

टी. यामौनिचि, वरिष्ठ सलाहकार, ओकुरा कंपनी, तोक्यो

"भारत में हाल के आर्थिक सुधारों की ठीक से व्याख्या नहीं की गई है"

एस. शिराहामा, अध्यक्ष, जापान विदेश व्यापार संगठन

सिंगापुर

"विश्व व्यवस्था में भारत अब हाशिए में चला गया है. न यह यूरोप का हिस्सा है, और न ही विकासशील एशिया का. न ही इसके पास वह क्रय शक्ति है जो उत्तरी अमेरिका पास है. यह तो बस हिंद महासागर में कहीं तैर भर रहा है"

जिम मैक्सवेल, अध्यक्ष, बिजनेस इंटरनेशनल, सिंगापुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

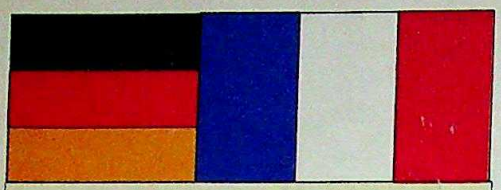

जर्मनी

"कड़ी प्रतिस्पर्धा तो हर हाल में आएगी लेकिन वह देश यदि अभी पीछे हट गया तो उसके लिए बहुत नुकसानदेह होगा"

वॉल्केर जंग, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, सीमेंस, म्युनिख

"यदि भारत में लोकतंत्र का पतन होता है, तो इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ेगा"

गिजेला बॉन, मुख्य संपादक, इंडो-एशिया जर्मन ब्रॉडकास्टिंग, बॉन

"मैं ब्राजील में बने जूते तो खरीद लूंगी पर भारत के जूते कभी नहीं खरीदूंगी. भारत विपणन का मामला अच्छी तरह नहीं संभाल सकता"

पेट्रा स्प्रिक, गृहिणी, बॉन

फ्रांस

"यहां भारत की छवि क्या है इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता क्योंकि यहां इसे कोई जानता नहीं. यह अनभिज्ञता हैरान करने वाली है"

वियोलेट ग्राफ, स्कूल ऑफ एडवांस स्टडीज, पेरिस

भारत को 'शोरबा, हाथी और बुद्ध' का देश ही माना जाता है. सिंड औद्योगिक संबंध अधिकारी सूसन एंसवर्थ की तरह अनेक लोगों के लि भारी आबादी और गरीबी तथा बीमारी से पीड़ित देश है.

इसकी एक और छवि भी सर्वव्यापी है. वह एक ऐसे देश की है जो शक्तिशाली अफसरशाही की जकड़न में बंधा है जो हर नई पहल को न कर देती है. बड़े उद्योगपतियों के कान तो प्रधानमंत्रियों से उदारीक वादे सुनते-सुनते पक गए हैं. सिंगापुर की बड़ी सलाहकार संस्था 'वि इंटरनेशनल' के प्रमुख जिम मैक्सवेल कहते हैं, "हम अभी भूले नहीं नई नीतियों पर अमल उसी पुरानी अफसरशाही को करना है."

उद्योगों के लिए कोई बड़ा सौदा नहीं

दरअसल भारत में हो रहे परिवर्तनों को उद्योगपति कनखियों से ही रहे हैं. उन्हें लगता है कि उनके लिए मैदान अभी पूरा खुला नहीं है. तो में बड़ी जापानी व्यापार कंपनी 'ओकुरा' के वरिष्ठ सलाहकार यामौनिचि कहते हैं, "कोई दौड़कर नहीं जाने वाला. सभी लोग पूरी त के उभरने का इंतजार कर रहे हैं."

अनेक उद्योगपतियों से बातचीत से पता चला कि वे भारत के 'बहुचर्चित विरोधी तेवर' के चलते आशंकित हैं. उनका कहना है कि में कदम रखते ही समस्या खड़ी होने लगती है, चाहे सीमा अधिकारियों से बकझक हो या संरचनात्मक असुविधाओं का मामला अफसरशाही से निबटने के लिए टनों कागजों पर पत्र व्यवहार हो. अधिकांश विदेशी उद्योगपतियों के लिए भारत अंधकारपूर्ण देश है.

अधिकतर लोगों की यही मान्यता है कि भारत प्रशांत क्षेत्र के दे मुकाबले काफी पिछड़ गया है. इसका मुख्य कारण यह है कि भारत ने के दूसरे भागों में आए बदलावों से अपने को जबरन दूर रखा. अमे और जापान जैसे उन्नत राष्ट्रों ने भी यह बात जल्दी ही भांप ली थी आर्थिक रूप से अलग-थलग रहकर नहीं चल सकते लेकिन भारत ने गलती की और आज वह तकनीकी विकास के क्षेत्र में काफी पिछड़ गया

निवेशकर्ता उदाहरण देते हैं कि इंडोनेशिया और मलेशिया में व्य करना कितना सरल है. पर भारत में देरी और दिक्कतों का ही सा करना पड़ता है. आम तौर पर सरकार बदलने के साथ ही नीतियों का ताश के पत्तों की तरह बिखर जाया करता है.

भारत की तरह के ही देश हैं चीन और ब्राजील. लेकिन दोनों ही

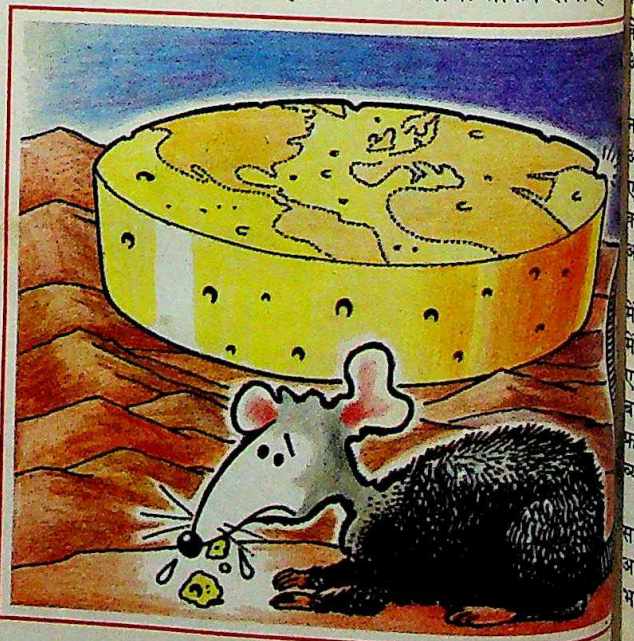

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक सफल साबित हुए हैं. पेइचिंग में पुराने नेता मूलभूत बदलाव से
ले डरते हों, पर चीन विश्व बाजार खासकर अमेरिका में अपना माल
चने के मामले में भारत से कहीं अधिक कामयाब रहा है. इसकी काफी
छ वजह तो विश्व में भारत की छवि है.

सचाई यही है कि निर्यातक के रूप में भारत की कोई छवि है ही नहीं, या
फिर प्रतिकूल है. संसार भर में 'मेड इन इंडिया' का ठप्पा किसी को
आकर्षित नहीं करता. इस ठप्पे वाले माल को आमतौर पर घटिया माल
माना जाता है. सिंगापुर के दैनिक अखबारों में भारतीय कंपनियों द्वारा
सप्लाई किए गए केबल तारों या इस्पात की खराब दशा को लेकर खबरें
छपती ही रहती हैं. विश्व बाजार में भारत का हिस्सा केवल 0.4 फीसदी है.

ज्यादातर लोग इस बात से हैरान हैं कि विशाल प्राकृतिक संपदा और
कुशल श्रमिकों के होते हुए भी भारत एक निर्धन राष्ट्र क्यों है. पेरिस की
प्रसिद्ध विमान कंपनी, दसॉल्ट इलेक्ट्रॉनिक्स के उप निदेशक मिशेल गॉशर के
अनुसार, भारत को एशिया में काफी पहले ही शीर्ष पर पहुंच जाना चाहिए
था. भारत में विभिन्न क्षेत्रों पर कड़े सरकारी नियंत्रण को काफी हद तक
इसके लिए जिम्मेदार माना जाता है. यही कारण है कि भारत के उद्यमी
हमेशा ही घुटन का अनुभव करते रहे हैं. हाल के आर्थिक बदलावों ने इस
दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तनों की उम्मीद जगाई है.

आंकड़ेबाजी, लफ्फाजी और कोरे वादों की दास्तां

दूसरी कई तरह की बातें भी मशहूर रही हैं. धनोपार्जन के बारे में हिंदू
धर्म के मितव्ययिता के सिद्धांत ने भी काफी अहित किया है. इसके अनुसार
धन के पीछे भागना पाप समझा जाता है. यह धारणा भी प्रचलित है कि
भारतीय लोग अभी उपनिवेशवाद की गिरफ्त से मानसिक तौर पर मुक्त
नहीं हो पाए हैं.

लेकिन तस्वीर का एक और भी पहलू है. भारत को हमेशा बहस में
उलझे समाज के रूप में भी जाना जाता है. यह कहा जाता है कि यहां
आंकड़ेबाजी और लफ्फाजी ही चलती रहती है. यह देश किसी भी योजना
पर ठीक से काम नहीं कर सकता.

इन तमाम बातों के बावजूद, ऐसा नहीं लगता कि विदेशी निवेशकर्ता
भारत से बहुत समय तक दूर रह पाएंगे. अधिकतर तो भारत में उपभोक्ता
संस्कृति और मध्य वर्ग के विस्तार तथा घरेलू बाजार की बढ़ती मांगों पर
नजरें टिकाए बैठे हैं. वैसे, पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ की तुलना में भारत
के पास वित्तीय संस्थानों और बाजार की अधिक बेहतर व्यवस्था मौजूद है.
और कर्ज भुगतान के मामले में इसकी छवि काफी अच्छी रही है.

एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि निवेशकर्ता राजनैतिक अस्थिरता से
नहीं डरते. उन्हें बस इतना यकीन होना चाहिए कि सत्ता परिवर्तन से
आर्थिक फैसले प्रभावित नहीं होंगे. अमेरिका की प्रसिद्ध टेलीकॉम कंपनी,
एटी ऐंड टी के उपाध्यक्ष जेम्स ई. क्लार्क के शब्दों में, "हम नहीं चाहते कि
कोई नया नीति नियंता आकर यह कहे कि उदारता की बातें बकवास हैं
और साझा कंपनियां बंद होनी चाहिए."

दूसरे कई देश और कारणों से भी निवेश करेंगे. भारत को दक्षिण एशिया
में एक ऐसे उत्पादन केंद्र के रूप में देखा जाता है जिसके माध्यम से भविष्य
में अफ्रीका के बाजारों तक सामान पहुंचाया जा सकता है. जर्मनी अभी
एकीकरण की समस्याओं से उबरा नहीं है, पर वह भारत के साथ संबंध
बढ़ाने के लिए काफी सचेष्ट है. जापानी भी इसी विचार को मानते हैं.
फ्रांसीसी तो काफी पहले से भारत को दक्षिण एशिया में अपना प्रमुख
व्यापारिक सहयोगी बनाने की कोशिश करते रहे हैं.

'ऐड इंडिया' और अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) जैसे संगठन भी
सकारात्मक संकेत देने लगे हैं. पिछले सप्ताह विश्व बैंक द्वारा पेरिस में
आयोजित 'ऐड इंडिया कंसोर्टियम' से 6.7 अरब डॉलर का कर्ज लेने में
भारत को कोई मुश्किल नहीं हुई.

विदेशी सहायता तो मिल रही है, पर निजी निवेशकर्ताओं का सहयोग

ब्रिटेन

"प्रत्येक क्षेत्र से सरकारी नियंत्रण हटाने की कोशिश खतरनाक साबित होगी"

टेरेंस बायर्स, अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, स्कूल फॉर ओरियंटल स्टडीज, लंदन

"आर्थिक शक्ति बनने के लिए नौकरशाही के जंजाल से छुटकारा पाना होगा"

अर्नेस्ट मान, एफएओ सलाहकार, लंदन

सोवियत संघ

"भारत को हम नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत मानते हैं"

माशा फिलितोवा, मॉस्को की छात्रा

"लोकतंत्र के नाते भारत अलगाववादी गतिविधियों को सहने में अधिक सक्षम है"

एरिक कोमारोव, प्राध्यापक, इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज, मॉस्को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

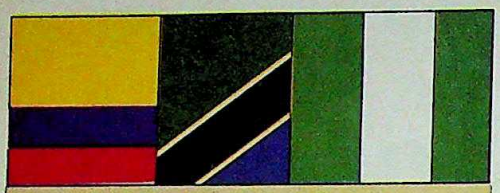

तीसरी दुनिया के देश

"आप लोगों में दूरदर्शिता है. इसकी झलक आपकी योजनाओं में मिलती है. भारत जरूर तरक्की करेगा"

एन.सी. माकोंबे, अध्यक्ष, जिंबाब्वे की संसद

"भारतीयों में अपार संभावनाएं हैं, और कारण से नहीं अपने दमखम के कारण"

एडवर्ड लोबास्सा, प्रथम उपाध्यक्ष, तंजानिया

"विदेशों में भारतीय वस्तुओं की बड़ी कद्र है. हम बहुत-सी मशीनें और पुर्जे यहां से मंगवाते हैं"

ओला एदेफेमिवा, भारत में नाइजीरिया के उच्चायुक्त

"अब तक भारत ने जो अर्जित किया है, उसे कायम रखने के लिए अब भी सावधानी से आर्थिक नीति बनाने की जरूरत है"

एनरिक पेनालोसा, कोलंबिया में बोगोटा के महापौर पद के प्रत्याशी

"गुटनिरपेक्ष आंदोलन का प्रवक्ता होने की भारत की भूमिका महत्वहीन हो गई है"

बोलिवर लेमॉनियर, प्राध्यापक, साओ पाओलो राजनैतिक और आर्थिक अध्ययन संस्थान, ब्राजील

पाने में भारत को अभी भी काफी प्रयास करने की जरूरत है. इसके पहले कुछ उन विदेशी परियोजनाओं का निबटारा करने की जरूरत है कई वर्षों से सरकार के पास विचाराधीन हैं. साथ ही मुद्रास्फीति को रखना और कानून एवं व्यवस्था की स्थिति ठीक रखना जरूरी है.

नई विश्व व्यवस्था में आर्थिक मामलों में भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि कई मायनों में बाधक सिद्ध होगी. समूचा विश्व सत्ता केंद्रों में बंट रहा है. पहले किसी भी राष्ट्र की छवि राजनै सांस्कृतिक और नैतिक आधार पर बना करती थी, पर अब महत्व इस का है कि कोई देश अपने आर्थिक स्वरूप को किस तरह पेश करता है

यह सब भारत के लिए अच्छी खबर नहीं है. विश्व स्तर पर भारत आर्थिक छवि अभी नगण्य है. महाशक्तियों वाले दौर से बाहर आ चुके में भारत अब तीसरी दुनिया पर अपना नैतिक रौब नहीं गांठ सक सोवियत संघ का विघटन वैसे भी भारत के लिए अच्छा संकेत नहीं है

क्षेत्रीय महाशक्ति वाली भारत की छवि भी अब धूमिल होती जा रही हिंद महासागर के उस पार की अंतरराष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित क की इसकी हैसियत न के बराबर रह गई है. विकासशील देशों की निगाह भारत का दर्जा अभी ऊंचा है. दक्षिण अमेरिकी और अफ्रीकी देश तो अब मानते हैं कि भारत भविष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है.

परमाणु हथियार के मुद्दे पर भारत के अड़ियल रवैये और बौद्धिक स अधिकार को मंजूर न करने के फैसले को ताकतवर पश्चिमी देशों के द्विपक्षीय संबंधों में एक बड़ी बाधा के रूप में देखा जा रहा है.

फिर भी ऐसा नहीं है कि उम्मीद बची ही न हो. विदेश नीति विश्ले को भारत-अमेरिका संबंधों के घनिष्ठ होने की संभावना नजर आ रही यदि जर्मनी और जापान वैकल्पिक शक्ति के रूप में उभरते हैं, तब भारत के लिए काफी संभावनाएं हैं.

विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि भारतीय विदेश नीति ढुलमुल रही विदेशों के साथ संबंध सुधारने की कभी गंभीर कोशिश नहीं की गई. हमारा विदेश मंत्रालय जोड़-तोड़ की कला में माहिर है. राजनयिकों भारत की छवि सुधारने के काम को गंभीरता से लेना होगा.

कुल मिलाकर भारतीय विदेश नीति की छवि खराब हुई है. महत्व अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की मौजूदगी जरूरी नहीं समझी जाती.

धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र की मजबूत भावना की कद्र

सारी खामियों के बावजूद कुछ खूबियां ऐसी हैं, जो भारत की छवि चमक देती हैं. अमेरिका, दक्षिण अमेरिका, आस्ट्रेलिया, यूरोप और अ के ज्यादातर विशेषज्ञों का कहना है कि भारत में लोकतंत्र जीवंत रह और यह यहां हमेशा जीवित रहेगा. वाशिंगटन में डेमोक्रेटिक पा महत्वपूर्ण नेता सीनेटर जॉन केरी का कहना है, "भारत में अरसे से च रहा गुटवाद न तो अनोखा है, न ही असामान्य. मुझे पूरा यकीन है ज्यादातर भारतीयों के मन में लोकतांत्रिक संस्थाओं और मूल्यों के लि भी आदर है."

राजीव गांधी की हत्या से दुनिया स्तब्ध जरूर रह गई थी. लेकिन सुव्यवस्थित तरीके से सत्ता परिवर्तन हुआ उसे भारत की लोकत ताकत का एक उज्जवल उदाहरण माना जा रहा है. वैसे, राजीव के किसी भारतीय नेता में विदेशियों की खास दिलचस्पी नहीं रह गई है भी कहा जाता है कि भारत में अब पंडित नेहरू जैसे करिश्माई व्यक्ति वाला नेता नहीं है जो देश को नेतृत्व दे सके. अलबत्ता सोनिया गांधी प्रधानमंत्री बनाने की कोशिशों का जरूर मजाक उड़ाया गया और 'राजनैतिक अपरिपक्वता का नमूना' माना गया.

हाल के चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की सफलता के बावजूद की धर्मनिरपेक्ष छवि बरकरार है. हिंदू कट्टरवाद का उदय इस कट्टरवाद की तरह खतरनाक नहीं माना जा रहा. पंजाब और कश्मीर घटनाओं को इतना गंभीर नहीं समझा जाता कि देश के लिए घातक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

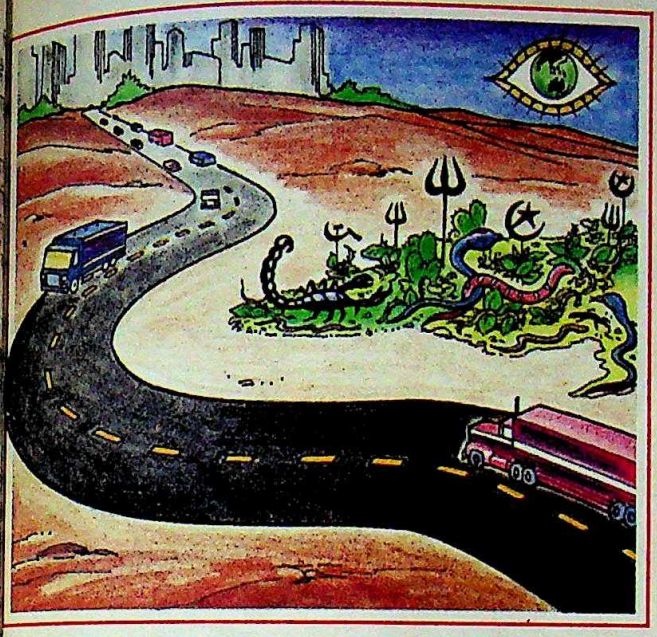

परंतु पड़ोसी देश पाकिस्तान को डर है कि भारत में धर्म निरपेक्षता स्थायी नहीं रह सकती है. इस्लामाबाद में कायदे आजम यूनिवर्सिटी के अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर परवेज इकबाल चीमा कहते हैं, "भारत की आबादी का एक बड़ा भाग कट्टर हिंदू है. कश्मीर समस्या और बाबरी मस्जिद मुद्दे ने ऐसी धारणाओं को मजबूत ही किया है." यह भी हैरानी की बात है कि हवाई जहाज से सिर्फ तीन घंटे दूर होते हुए भी गिने-चुने पाकिस्तानी ही भारत में हो रहे आर्थिक सुधारों से वाकिफ हैं.

भारत के पक्ष में दूसरी बड़ी बात इसका वह सांस्कृतिक आत्मविश्वास है, जो इसके अत्यंत प्राचीन इतिहास की देन है. इसका परंपरागत रहस्यवाद और अध्यात्मवाद नित नए लोगों को आकर्षित करता रहा है. पिछले वर्ष तो यहां की दुकानों पर इन नियमों से संबंधित कई किताबें उपलब्ध थीं. मॉस्कोवासी इसके नवीनतम प्रशंसक हैं. मॉस्को की कई गलियां 'हरे कृष्ण' की धुन पर नाचते युवाओं और चिन्मयानंद और मां निर्मला देवी के चित्र लटकाए भक्तों से भरी देखी जा सकती हैं.

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह कि पिछले तीन महीने भारतीय विदेश नीति के नियंताओं के लिए बहुत सबक सिखाने वाले रहे. यह देख कि अब तक बनाई नीतियों का अपेक्षित परिणाम नहीं मिल रहा, सरकार ने खुद आगे बढ़कर यह जिम्मा उठाने की ठानी. पिछले हफ्ते वाणिज्य राज्यमंत्री पी. चिदंबरम अमेरिका में बड़े व्यापारियों को यह कहकर रिझाने की कोशिश में थे कि "अब हमें बहुराष्ट्रीय या विदेशी निवेशकों से डर नहीं लगता."

इसके अलावा विदेश मंत्रालय अपने दूतावासों को बंधे-बधाए राजनैतिक कर्मों से मुक्त करने की कोशिश कर रहा है ताकि वे आर्थिक राजदूत की भूमिका भी निभा सकें. और प्रधानमंत्री नरसिंह राव खुद भी सुरक्षा संधियों की जगह आर्थिक गठबंधनों की तरफ बढ़ने की बातें ज्यादा करते हैं.

भारत की छवि सुधारना एक लंबी और जटिल प्रक्रिया है. और राहत की बात यह है कि इस दिशा में काम शुरू हो चुका है.

—लंदन से **अरुण चाको** और **अमृत ढिल्लों**, न्यूयॉर्क से **अमृत काकरिया**, मॉस्को से **शेखर गुप्ता**, इस्लामाबाद से **कंवर संधू**, कोलंबो से **अमरनाथ के. मेनन**, पेरिस से **स्युतनिक किलंबी**, तोक्यो से **अशोक राय**, सिंगापुर से **सलिल त्रिपाठी**, सिडनी से **नीना बधवार**, कोलंबिया से **एड्रियाने मोरेनो**, दुबई से **लेखा राय**, कनाडा से **सतींद्र बिंद्रा**, हांगकांग से **बीना जंग** और नई दिल्ली से **शेफाली भीमाल** की रिपोर्टों के साथ

पड़ोसी देश

"निचले स्तर पर भारत पाकिस्तान से भी ज्यादा भ्रष्ट माना जाता है. लेकिन ऊंचे स्तर पर भ्रष्टाचार में भारत पाकिस्तान के आगे फीका पड़ जाता है"

हमीद हारून, कराची के 'डॉन' अखबार समूह के उप-मुख्य अधिकारी

"राष्ट्रीय भावनाओं की कद्र नहीं की जाती तो वर्तमान हालात के चलते भारत को अपनी अखंडता कायम रखना मुश्किल होगा"

ले. जन. एस. जेड. ए. जैदी
अध्यक्ष, सामरिक अध्ययन संस्थान, इस्लामाबाद

"हम दुनिया में सबसे ज्यादा झगड़ालू हैं. अपने रिश्तों के बारे में हमें नए सिरे से सोचना चाहिए"

लतीफ अहमद खां
प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, कराची

"भारत इस क्षेत्र को आर्थिक महाशक्ति बनाने में मददगार हो सकता है"

नीलन तिरुचेलवम, निदेशक, सेंटर फॉर एथनिक स्टडीज, कोलंबो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Take the world in your stride

NASTY • NUOVO LOOK • TREND SETTER • MATCH MAKER SATINS • HI FASHIONS SUITINGS

dines

THE CHOICE OF LEADING FASHION HOUSES. INTERNATIO

Exclusive Showrooms: **AHMEDABAD:** Apurva & Co. • **BARODA:** Shahco Traders • **SURAT:** Shri Dinesh Textile Traders • **AJMER:** V
• **BEAWAR:** G. Navin Textiles • **JAIPUR:** Sheel Son • **JODHPUR:** Jhankar Sons.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूलियो फ्रांसिस रिबेरो

मौत को फिर चकमा

पर भारत सरकार का रवैया उनकी तरफ उदासीनता का रहा

एक गुमनाम अस्पताल में दाखिल एक अति गोपनीय मरीज, तीन जगहों पर सुरक्षा जांच और डॉक्टरी लबादे में होने के बावजूद खतरनाक दिखते व्यक्ति, जो मरीज के साथ-साथ आगंतुकों पर भी कड़ी नजर रखे हुए हैं. पूरा दृश्य किसी जासूसी फिल्म जैसा.

बहरहाल, डॉक्टरी लबादे से लैस ये लोग दरअसल रोमानिया के आतंकवाद विरोधी दस्ते के निष्ठुर कमांडो हैं, जिन्हें खाली हाथ भी किसी की जान लेने के लिए प्रशिक्षित किया गया है. और मरीज हैं— पंजाब तथा मुंबई के पूर्व पुलिस प्रमुख जूलियो फ्रांसिस रिबेरो, जो इस समय रोमानिया में भारत के राजदूत हैं. पिछले महीने एक हमले में गोली से घायल होने के बाद वे यहां इलाज करा रहे हैं.

62 वर्षीय रिबेरो दूसरी बार सौभाग्यशाली सिद्ध हुए हैं. अक्तूबर 1986 में जालंधर में हुए एक हमले में वे बच निकले थे. इस बार एके-47 राइफल से निकली 7.62 मिमी की गोली ने उनकी जांघ को वेध दिया है. वे कहते हैं, "मैं खुशकिस्मत निकला."

फिर वे हमले की तफसील बताने लगते हैं. वे और उनकी पत्नी मेल्बा रोज की तरह बूलवर्ड एविएटोरिलोर पर शाम की सैर को निकले थे कि एक रिनॉल्ट कार ने उनका रास्ता रोका. दो लोग, जो लगते तो भारतीय थे पर बिना दाढ़ी और पगड़ी के थे, निकलकर उन पर गोलियां बरसाने लगे. दो दूसरे व्यक्ति कार में ही बैठे रहे. रिबेरो याद करते हैं, "मैं सचमुच तेजी से भागा. भले ही मैं 62 का हूं पर जान पर बनी हो तो कुछ नहीं सूझता." बहरहाल, पनाह लेने के लिए एक घर में घुसते-घुसते भी एक गोली उन्हें चीरती निकल गई.

रोमानिया के दो कमांडो उनसे करीब 100 मीटर पीछे थे. उन्होंने कार में बैठे सहअपराधियों में से एक को मार दिया और दूसरे को घायल करने के बाद एक हमलावर को भी पकड़ लिया. चौथा व्यक्ति भाग निकला.

सबसे खतरनाक बात यह है कि हमलावर अपने निशाने के इतना करीब आ पाए, हालांकि स्थानीय अधिकारियों को हमले से तीन हफ्ते पहले स्पष्ट संकेत मिले थे कि हथियारबंद सिख उग्रवादी देश में दाखिल हो चुके हैं.

जांचकर्ता बिखरे तारों को जोड़ने की कोशिश में व्यस्त हैं. उनकी सहायता के लिए भारतीय खुफिया ब्यूरो का एक वरिष्ठ अधिकारी भी अब बुखारेस्ट में है. तीन मृतक और गिरफ्तार किए लोगों के नाम शुरू में राकेश कुमार, गुरमेल सिंह और सुरजीत सिंह बताए गए थे. भाग निकले चौथे व्यक्ति के पास संदीप सिंह नाम से पासपोर्ट का होना भी बताया गया था. लेकिन सभी पासपोर्ट फर्जी निकले.

भवान सिंह

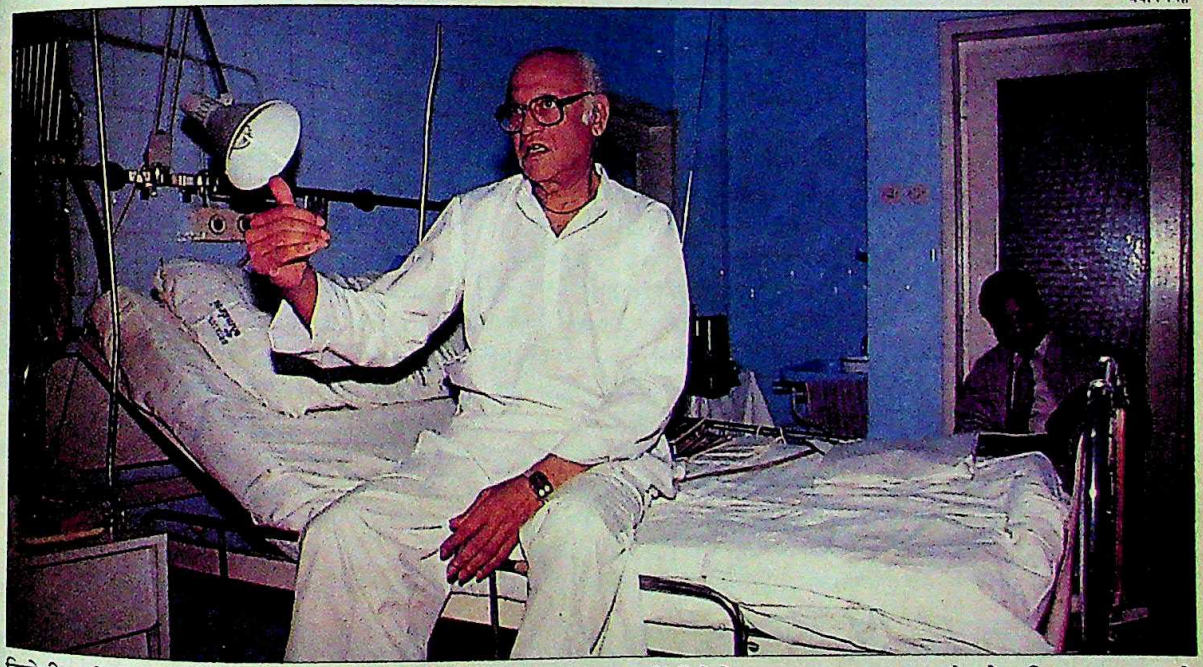

बुखारेस्ट के अस्पताल में रिबेरो

इस घटना ने रोमानिया सरकार को काफी परेशान कर दिया है. रोमानियाई विदेश मंत्रालय में एशियाई मामलों के निदेशक बेलेरियू ट्यूडोर कहते हैं, "हम तानाशाही से लोकतंत्र की ओर संक्रमण के कठिन दौर से गुजर रहे हैं. दुनिया भले ही यह माने कि इस देश में आतंकवाद सफल हो सकता है, लेकिन हम यह कतई नहीं चाहते."

हैरानी की बात यह कि सरकार ने विदेश मंत्रालय के किसी वरिष्ठ अधिकारी को बुखारेस्ट भेजना भी मुनासिब नहीं समझा. साउथ ब्लॉक के अफसरशाहों के लिए रिबेरो एक भूले-बिसरे नायक भर हैं, हालांकि उन्होंने देश के लिए कई बार अपनी जान खतरे में डाली.

—शेखर गुप्ता, बुखारेस्ट में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

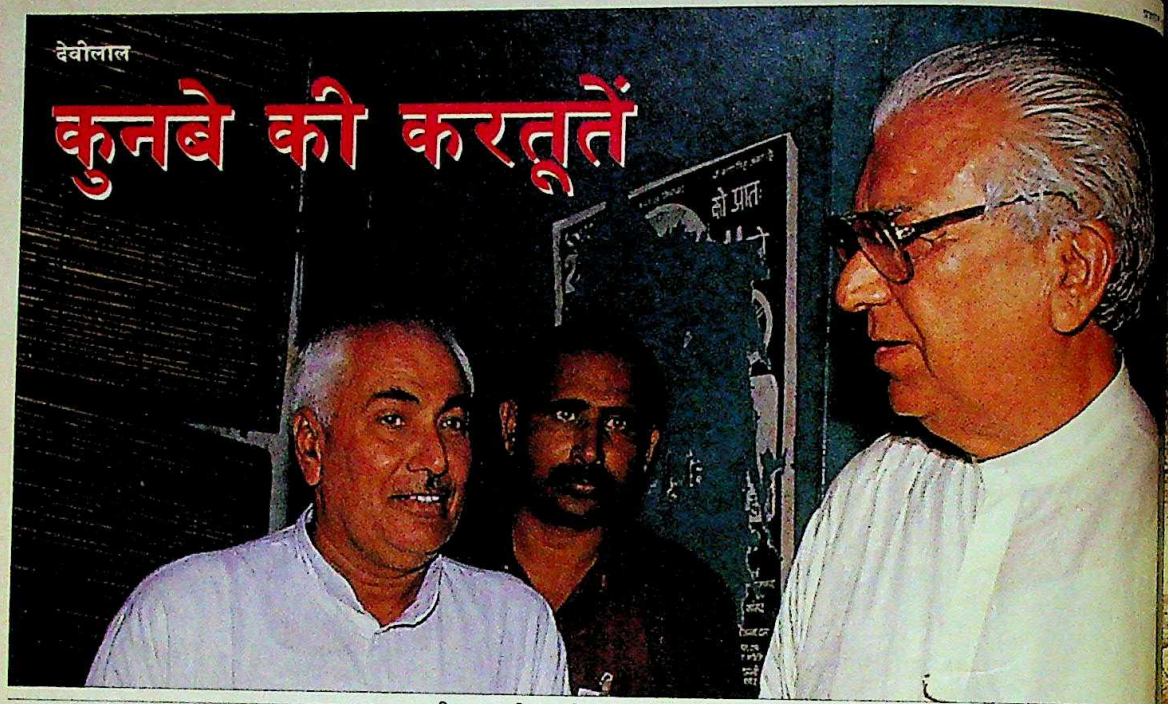

देवीलाल

कुनबे की करतूतें

—हरिंदर बवेजा

चौटाला, देवीलालः खेल बिगड़ा

राजनीति के खेल बनाने-बिगाड़ने वाले का ही खेल बिगड़ गया है. देश भर की कौन कहे अब ताऊ की हरियाणा में ही नहीं चलती. देवीलाल और उनके कुनबे के चार साल के राज ने हरियाणा के लोगों में आतंक ही पैदा किया है.

खास तौर से उनके जिले, सिरसा के लोग तो उन्हें और उनके बेटे ओम प्रकाश चौटाला को गुस्से और हिकारत के भाव से याद करते हैं. किसानों के बल से सत्ता में आते ही ताऊ और उनके कुनबे ने सबसे पहले किसानों को ही चपत लगाई. उनकी जमीन उनकी आखों के सामने ही चली गई. और यह सब किया चौटाला के बेटों, अभय सिंह और अजय सिंह ने, जो गावों में खुली जीपों पर जाते और अपने आदमियों से किसानों की पैदावार उठा ले जाने को कहते थे. जो लोग उनका विरोध करने की हिम्मत दिखाते, उनके सिंचाई के साधन काट दिए जाते या फिर उन्हें पुलिस का जुल्म सहना होता.

देवीलाल का पुश्तैनी गांव, चौटाला आज भी ताऊ-चौटाला राज की ज्यादतियों का मूक गवाह है. घर-बार छोड़ पड़ोस के गंगानगर जिले (राजस्थान) में चले गए अधिकांश परिवार अब अपने बरबाद पड़े घरों को लौटने लगे हैं. इनमें से हरिराम ने, जो जमीन हथियाने की सिंह की धमकी के चलते चार साल भाग गया था, लौटने पर पाया कि बना उसका मकान तोड़ डाला गया है और व्यक्ति, ओम प्रकाश इस पूरे दौ गांव से भागा ही रहा क्योंकि, बकौल उसके, "मैं फिर से थाने में बुलाए जा बचना चाहता था जहां उलटे टांगकर तरह पिटाई हुई थी."

वैसे, अब चौटाला परिवार का राज नहीं रहा पर गांव में उसका खौफ बना

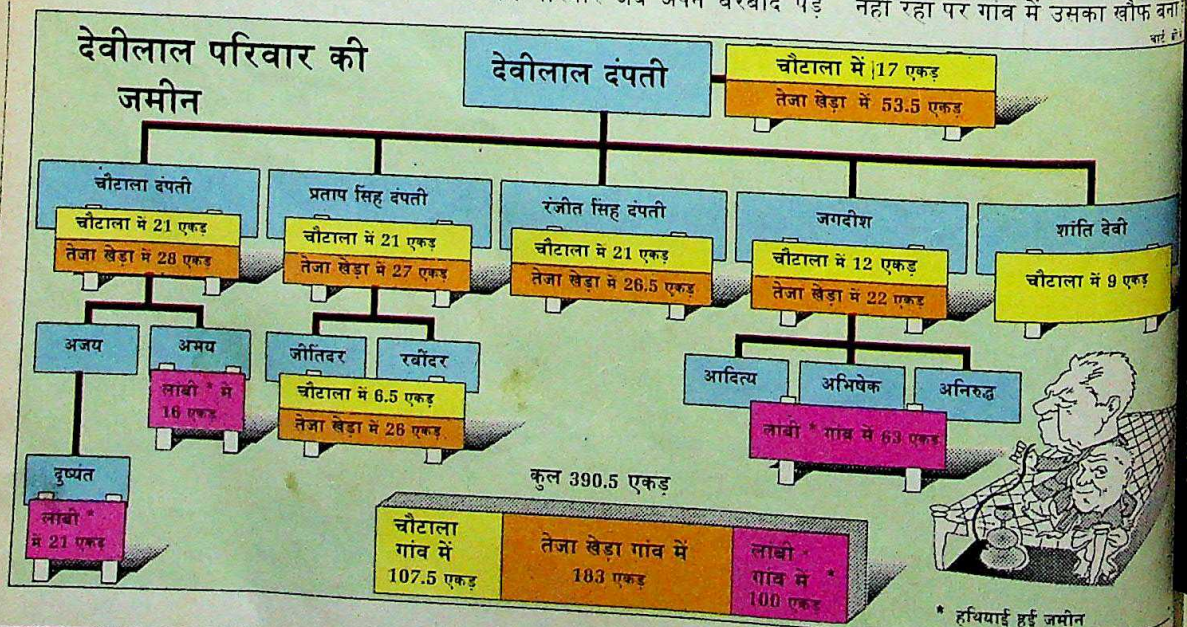

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: शरद सक्सेना

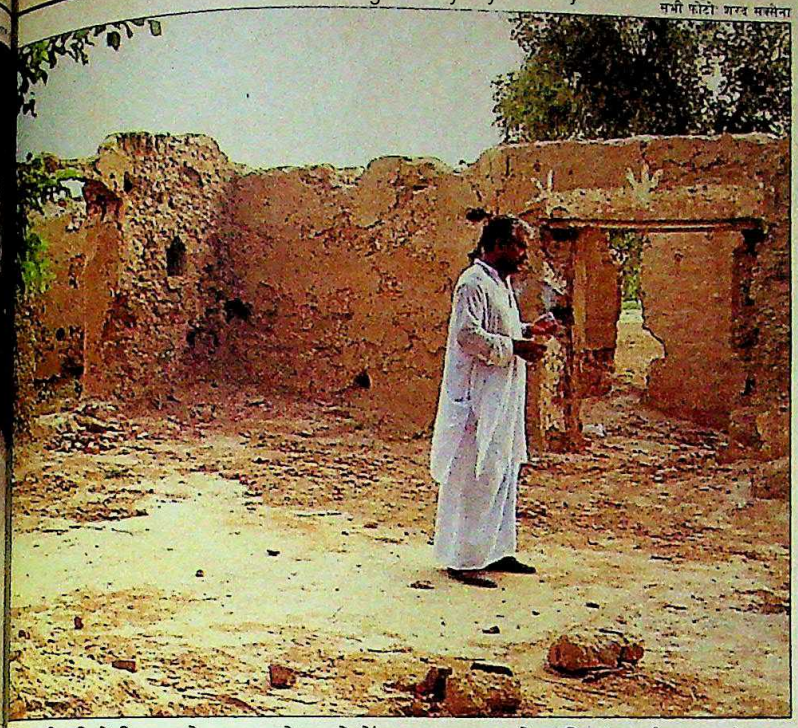

"ताऊ के कुनबे ने मेरा घर बरबाद किया क्योंकि मैंने उन्हें अपनी जमीन नहीं हथियाने दी"

हरिराम
चौटाला गांव का निवासी

है. अभी भी देवीलाल के बाग अनेक लोगों की जमीन से लगते हैं. और अभय सिंह अपने हथियारबंद समर्थकों के साथ दनदनाते फिरते हैं. चौटाला और तेजा खेड़ा गांवों में 290 एकड़ बढ़िया भूमि, चौटाला में दो हवेलियां, सिरसा में अनाज की दुकान और डबवाली में कोठी होने के बाद भी देवीलाल परिवार की भूख अभी मिटी नहीं है. पूरे राज्य में इस परिवार की अनेक धांधलियों की चर्चा है. 'इंडिया टुडे' की जांच-पड़ताल में भी जमीन हड़पने के कुछ स्पष्ट उदाहरण मिले.

जबरन बेदखलियां: चौटाला से 45 किमी दूर लांबी गांव का किशना राम और 15 दूसरे काश्तकार सोनीपत में रहने वाले पोखर दास की 137 एकड़ जमीन जोतते थे. 1950 में पोखर दास ने इन लोगों को अपनी जमीन एक-तिहाई हिस्सा बटाई पर दी. लेकिन 1989 में अभय और अजय गांव में आए और कहा कि उन्होंने यह जमीन पोखर दास के बेटे रिजू राम से खरीद ली है. बटाईदारों को यह जमीन खाली करनी होगी. इसमें से 35 एकड़ जमीन पर रतिराम खेती करते थे. अब उनके कब्जे में मात्र 12 एकड़ जमीन रह गई है. वे कहते हैं, "उनके सामने हम क्या कर सकते हैं. शिकायत करते तो किसको, सरकार तो उनकी ही थी." तत्कालीन मुख्यमंत्री देवीलाल के पोतों को पता नहीं था या फिर उन्हें परवाह नहीं थी कि वे पंजाब बटाईदारी संरक्षण कानून का उल्लंघन कर रहे हैं. इस कानून के अनुसार बटाईदार से तभी जमीन ली जा सकती है जब वह बटाई न दे या जब वह जमीन का सही उपयोग न कर रहा हो, किसी और को दे चुका हो या उस पर निर्माण करा रहा हो.

इस प्रकार देवीलाल का परिवार अब लांबी की इस 100 एकड़ उपजाऊ जमीन पर काबिज हो चुका है जिसे उसने एकदम माटी के मोल खरीदा है और जो परिवार के अनेक लोगों के नाम है. बटाईदारों का मुंह बंद करने के लिए चौटाला परिवार ने 137 एकड़ में से 37 एकड़ जमीन उन्हें लौटा दी. बाकी के लिए 2.78 लाख रु. का भुगतान कर दिया. इस जमीन में 21 एकड़ चौटाला के चार वर्षीय पोते दुष्यंत कुमार के नाम है. 15.54 लाख रु. की यह जमीन

तेजा खेड़ा में बच्चों के लिए स्विमिंग पूल और लांबी में गैरकानूनी फार्महाउस: अपार संपत्ति

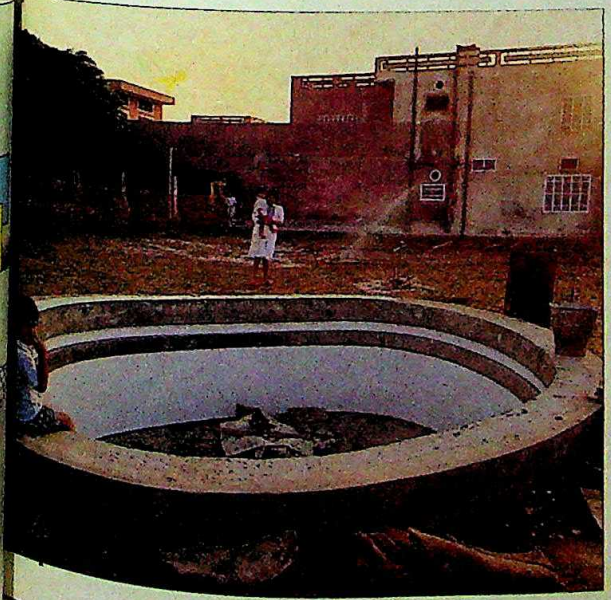

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्र 1.61 लाख रु. में खरीदी गई. यह जिला उपायुक्त द्वारा तय न्यूनतम मूल्य वाले दिशा निर्देश का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन था.

देवीलाल के अन्य पोतों—आदित्य, अभिषेक और अनिरुद्ध का भविष्य भी मुश्किल में नहीं गुजरेगा. लांबी की 63 एकड़ जमीन उनके नाम मात्र 4.72 लाख रु. में ली गई है जबकि उपायुक्त द्वारा तय मूल्य से यह करीब 22 लाख रु. की होनी चाहिए थी. शेष 16 एकड़ जमीन अभय के नाम है. मात्र 1.56 लाख रु. में खरीदी गई यह जमीन 5.58 लाख रु. की है.

लेकिन चौटाला लांबी में अपनी कोई जमीन होने से इनकार करते हैं. वे कहते हैं, "हमारा फार्महाउस तेजा खेड़ा में है. आप किस जमीन की बात कर रही हैं?"

खुल्लमखुल्ला गैरकानूनी कामः सिरसा से 40 किमी दूर ऐलनाबाद के बीचोबीच जगह में, जो पहले सरकारी दवाखाने का हिस्सा था, 125 अर्द्धनिर्मित दुकानें हैं जो देवीलाल के कुनबे की हैं. अदालत ने इनके निर्माण पर रोक नहीं लगाई होती तो इन्हें दो-दो लाख रु. में बेच दिया जाता. हुआ यह कि ऐलनाबाद ब्लॉक समिति ने अदालत में मामला दायर किया कि यह जमीन स्वास्थ्य विभाग की नहीं, उसकी है. स्वास्थ्य विभाग के लोग अदालत में आए नहीं और ब्लॉक समिति के पक्ष में एकतरफा फैसला हो गया. तभी एक स्थानीय व्यापारी डी.डी. गोलशा के परिवार के लोगों ने अदालत में दावा किया कि यह जमीन उनकी है. इसी परिवार ने 1920 में यह जमीन पंचायत को दान कर दी थी.

ब्लॉक समिति का कोई आदमी अदालत में हाजिर नहीं हुआ और एकपक्षीय फैसला सुना दिया गया. इस प्रकार यह जमीन गोलशा परिवार के पास आ गई जिसने तुरंत इसे देवीलाल परिवार के हाथ बेच

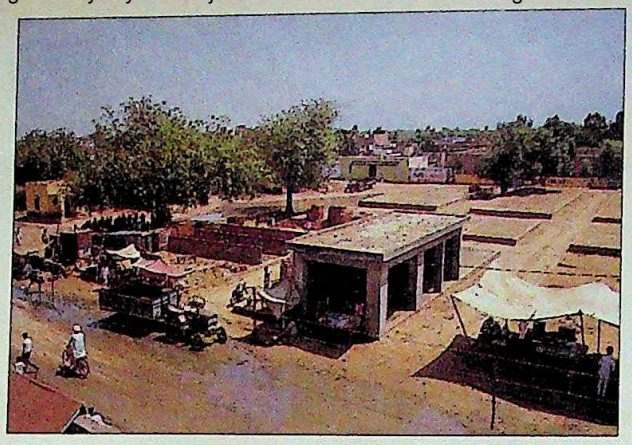

विधाराधीन मामले

सुप्रिया कांडः चौटाला की पुत्रवधू और अभय सिंह की पत्नी सुप्रिया की मृत्यु 11 नवंबर 1988 को गोली लगने से हुई. देवीलाल का दावा था कि सूटकेस खोलते समय उससे अपने पर ही गोली दग गई मगर भजनलाल ने इसे हत्या करार दिया. सीबीआई ने अब कुछ सवाल तैयार किए हैं. जैसे, गोली पिस्तौल से चली थी या रिवॉल्वर से? सुप्रिया के पिता ने इसे रिवॉल्वर बताया था जबकि अभय के भाई अजय ने इसे पिस्तौल. फिर, सुप्रिया सूटकेस में क्या रख रही थी? उसके पिता कहते हैं वह पति के लिए कपड़े रख रही थी. अभय के मुताबिक सलवार-कमीजें थीं. और वह हथियार किसका था? अजय के अनुसार देवीलाल का, जबकि रणजीत सिंह इसे अजय का बताते हैं.

महम हत्याकांडः सीबीआई हेराफेरी और हिंसा की जांच कर रही है जिसके बाद उस उपचुनाव को, जिसमें चौटाला भी उम्मीदवार थे, रद्द कर दिया गया.

लांबी का गोलीकांडः 1 अगस्त को गुरजीत सिंह ने चौटाला के बड़े बेटे अजय सिंह पर हत्या के प्रयास का आरोप लगाते हुए डबवाली थाने में एफआईआर दर्ज कराई. उनके मुताबिक, अजय ने अपने लांबी फॉर्महाउस के निकट उन पर और उनके दो साथियों पर हमला कर उन्हें पीटा. उनका कहना है कि अजय ने पानी का रास्ता बदल दिया था ताकि पास के खेतों में पानी न लग सके. अजय ने अग्रिम जमानत करा ली है पर वे बड़ी मुसीबत में फंसने वाले है, क्योंकि उन्होंने भी शिकायत दर्ज कराई है जिसमें तीनों व्यक्तियों को बंद करने की बात मानी है.

ऐलनाबाद की विवादास्पद दुकानें

दिया. यह जमीन देवीलाल की बेटी के देवर विजय खोड़, देवीलाल की बहन के नाती संदीप कुमार और चौटाला के करीबी दोस्त जसवंत सिंह के बेटे संजयपाल सिंह के नाम है. 75 लाख रु. मूल्य की यह जमीन उन्हें मात्र 2.5 लाख रु. में पड़ी. अब भजनलाल सरकार ने विजय खोड़ पर स्टांप शुल्क की चोरी का आरोप लगाया है. लेकिन चौटाला कहते हैं, "हमारे रिश्तेदार धनी जमींदार हैं. हमें कानून में तोड़-मरोड़ करने की जरूरत नहीं है."

सत्ता के सुखः सत्ता में जब देवीलाल थे तब बहुत ज्यादा प्रतिबंधों को हटाने की बात की थी. इसका भरपूर फायदा भी उन्होंने खुद ही उठाया. उदाहरण के लिए, तेजा खेड़ा फार्महाउस का स्विमिंग पूल राष्ट्रपति शासन की घोषणा से भले ही अधूरा रह गया लेकिन परिवार ने इस फार्महाउस को नहर से जोडने का काम पूरा करा लिया था. देवीलाल के मुख्यमंत्री बनने के तुरंत बाद जून 1987 में राज्य का सिंचाई विभाग उनकी सेवा में लग गया. लगभग 25 क्यूसेक पानी की क्षमता वाली इस जोड़ नहर पर राज्य के सिंचाई विभाग ने 12.5 लाख रुपए खर्च किए बताए जाते हैं.

कभी जननायक माने जाने वाले देवीलाल खुद अपने ही कुनबे की करतूतों के चलते आज निपट अकेले हैं. भजनलाल की 'कृपादृष्टि' अपनी ओर मुड़ते देख चौटाला यूरोप रवाना हो गए हैं. पर भजनलाल उनके पीछे पड़े हुए हैं. वे कहते हैं, "चौटाला और उसके बेटों की करतूतें प्रॉपर्टी डीलरों जैसी हैं." और लगता है देवीलाल के कुनबे को अपने किए की सजा भुगतने का समय आ गया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

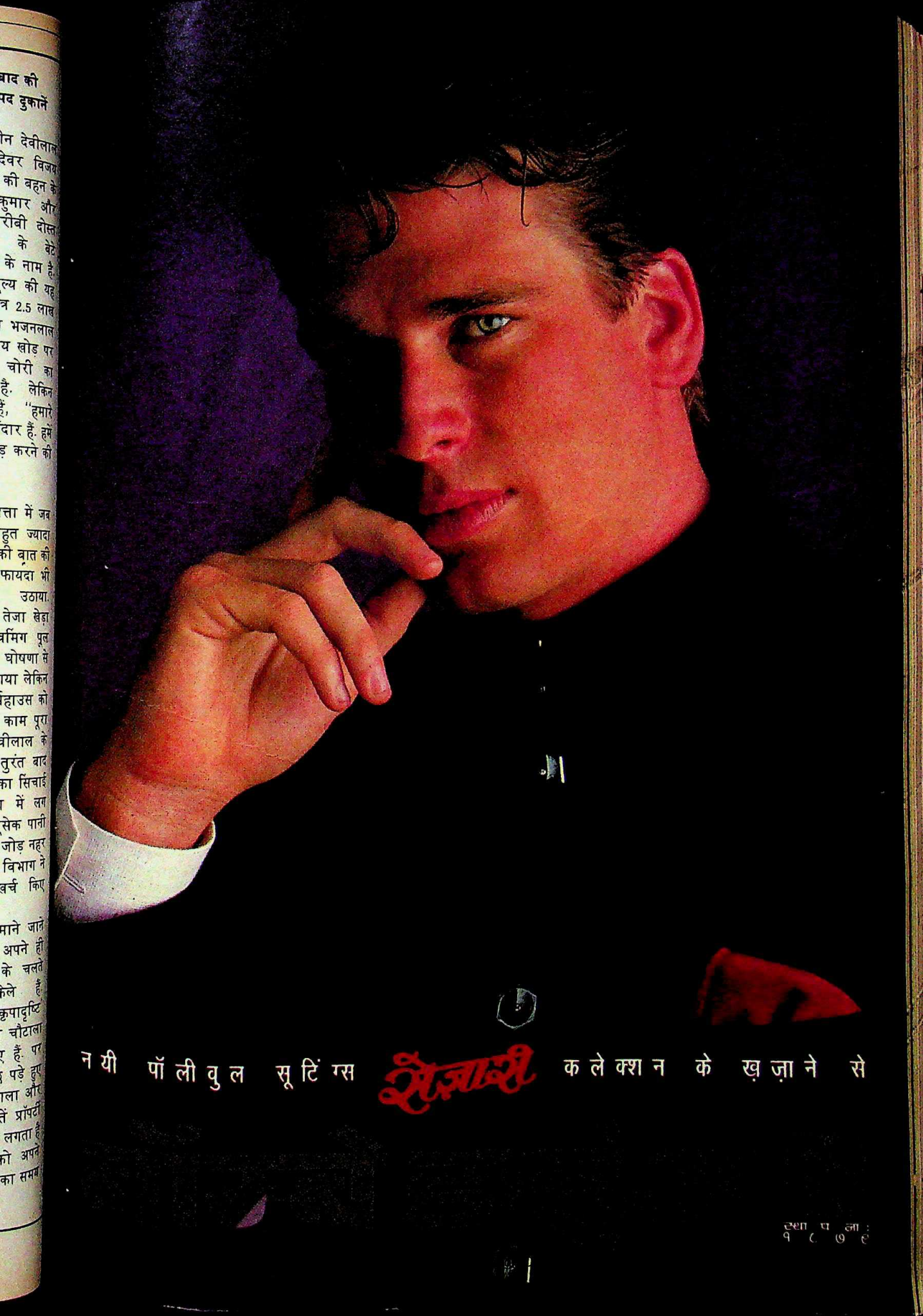
नयी पॉलीवुल सूटिंग्स
सज्जाद
कलेक्शन के ख़ज़ाने से

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र.

दावों का कष्टहीन निपटान।
कल्पना या सच्चाई ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आप बीमे का दावा कर रहे हैं? दावा करने समय आप बहुत परेशान होते हैं तथा आप सी और समस्या का सामना नहीं करना चाहते। तु फिर भी हममें से अधिकतर को ऐसे नाजुक य में भी अनेक समस्याओं का सामना करना ता है। लेकिन अगर सावधानी बरती जाए तो ये कष्ट नहीं उठाने पड़ेंगे।

ा करने के लिए कौन से प्रारंभिक कदम ाएँ?

सबसे पहले अपनी पॉलिसी जारी करने वाले र्यालय से संपर्क करें। उन्हें पूरी हकीकत से वगत कराएं। कोई भी तथ्य न छिपाएं, क्योंकि द में इससे समस्या उत्पन्न हो सकती है। संबद्ध धिकारियों के पास रिपोर्ट दर्ज करें। इस बात का ा ध्यान रखें कि क्षतिग्रस्त संपत्ति की स्थिति न दली जाए।

के बाद ?

आपको दावा फॉर्म भरना होगा। अगर आप हें तो इसके लिए ओरिएण्टल प्रतिनिधि की द ले सकते हैं। वह आपकी सहायता और र्गदर्शन के लिए तत्पर होगा। फॉर्म में पूरा वरण – पॉलिसी नंबर, घोषणा/प्रमाणपत्र ख्या, दुर्घटना का विवरण, जोखिम की स्थिति, आदि – एकदम सही-सही भरें। अपने नुकसान का अनुमान भी बताएं।

इन औपचारिकताओं के बाद ओरिएण्टल आपके नुकसान का मूल्यांकन करने के लिए एक सर्वेक्षक भेजेगा। उसको पूरा सहयोग दें और यह सुनिश्चित करें कि उससे कोई विवरण छूट न जाए।

अगर आपकी संपत्ति को नुकसान तृतीय पक्ष (थर्ड पार्टी) की गलती से पहुँचा है तो ओरिएण्टल भरपाई के लिए उसके खिलाफ कार्यवाही करना चाहेगा। अतः कृपया ऐसी परिस्थितियों में भरपाई के अधिकारों की सुरक्षा भी सुनिश्चित करें।

आपका दावा निपटाने में कितना समय लगता है ?

अगर आपने सारी औपचारिकताएं पूरी कर ली हैं तथा सभी संबद्ध जानकारी उपलब्ध करा दी है तो आपका दावा कम से कम संभव समय में निपटा दिया जाएगा।

अगर फिर भी आपको कोई समस्या पेश आए तो कृपया किसी भी उच्च अधिकारी से संपर्क करें। ओरिएण्टल के 'ग्राहक शिकायत केन्द्र' वास्तव में 'हेल्पलाइन सेंटर'(सहायता केन्द्र) हैं जो आपकी मदद के लिए हमेशा तत्पर हैं।

आइए, देखभाल और सहयोग की भावना से और करीब आएं।

उ.

सच्चाईः
सही समझ
और
नियमों-शर्तों
का पूरा पालन
करने से।

ओरिएण्टल इंश्योरेंस

ग्राहकों से सौजन्य –
ओरिएण्टल की विशिष्ट परम्परा

ग्राहक शिकायत केन्द्र HELP Line

Advertising/OIC/004/B Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफवाह भर उड़ी

वित्त मंत्रालय के हलकों में अफवाह थी कि भारतीय औद्योगिक विकास बैंक के अध्यक्ष एस.एस. नाडकर्णी भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर बनाए जाएंगे. और मौजूदा गवर्नर एस. वेंकिटरमणन सुपर अफसर के रूप में वित्त मंत्रालय में जा रहे हैं ताकि उदारीकरण और अंतरराष्ट्रीय वित्त एजेंसियों से तालमेल बिठाने का काम उनकी देखरेख में हो. यदि ऐसा हुआ तो भारतीय औद्योगिक ऋण एवं निवेश निगम के अध्यक्ष एन. वागुल या तो रिजर्व बैंक में चले जाएंगे या फिर औद्योगिक विकास बैंक के अध्यक्ष पद संभालेंगे. अब लगता है कि वित्तमंत्री ने विचार छोड़ दिया है. यदि वेंकिटरमणन वित्त मंत्रालय में जाते भी हैं तो, जैसा कि वित्तमंत्री ने स्पष्ट कर दिया है. साफ-सुथरे रिकॉर्ड वाले अफसर को ही रिजर्व बैंक का गवर्नर बनाया जाएगा.

मफतलाल का मामला

मफतलाल समूह भी विस्तार में लगा हुआ है. समूह की कंपनी पोलियोलेफिंस इंडस्ट्रीज लि. गुजरात के भरूच जिले में 98.5 करोड़ रु. की अनुमानित लागत से सालाना 6,000 टन रबर रसायन और 5,000 टन सहायक उत्पादन की क्षमता वाला संयंत्र लगाने की सोच रही है. शुरू में अखिल भारतीय लघु सिलिका निर्माता संघ को आशंका थी कि कंपनी रबर उद्योग के इस्तेमाल में आने वाली अवक्षेपणित सिलिका का भी उत्पादन कर सकती है. कंपनी के इस आश्वासन के बाद मामला सुलट गया कि वह इसका उत्पादन नहीं करेगी. समूह गुजरात के सूरत जिले में स्थित अपनी नवीन फ्लूओराइन इंडस्ट्रीज कंपनी में 9.2 करोड़ रु. की अनुमानित लागत से विस्तार की अन्य योजनाएं भी बना रहा है.

औपचारिक मंजूरी का इंतजार

रेफ्रिजरेटर, डीप फ्रीजर और कंप्रेसर बनाने वाली छाबरिया समूह की एक साल पुरानी कंपनी मेथर डर्बी (इंडिया) लि. में सब कुछ व्यवस्थित दिखता है. उसे सिद्धांत रूप में 13 करोड़ रु. मूल्य की वस्तुएं आयात करने की मंजूरी भी मिल चुकी है. लेकिन वे परियोजना के शुरू होने या बाजार में उसका माल आने के बारे में पक्के तौर पर कुछ नहीं कहते. पर वे यह जरूर कहते हैं कि कंपनी सबसे पहले डीप फ्रीजर बनाएगी. इसके बाद रेफ्रिजरेटरों का निर्माण शुरू होगा.

साफ निर्देश

सर्वोच्च न्यायालय ने अपने एक फैसले में रेमंड्स सिंथेटिक्स से कहा है कि वह अपने अक्तूबर 1990 के शेयर इश्यू का 2.6 करोड़ रु. का ब्याज जमा कर दे. इससे कंपनी मामलों के विभाग का रिफंड और ब्याज की अदायगी में देर करने वाली कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई करने का हौसला बढ़ गया है. सूची में यूबी पेट्रोकेमिकल्स का नाम सबसे ऊपर है जिसने 1989 में 10 करोड़ रु. के पब्लिक इश्यू के आबंटन को अंतिम रूप 27 नवंबर 1989 को दिया और चार लाख असफल आवेदकों को दिसंबर के आखिर तक उनकी रकम मिली. बाकी पांच लाख आवेदकों को जनवरी के पहले हफ्ते में रकम वापस की गई. प्रक्रिया 5 दिसंबर तक पूरी हो जानी चाहिए थी और अब इन आवेदकों को 4 से 15 प्रतिशत सालाना ब्याज की दर से ब्याज देना होगा. विभाग ने यूबी के साथ दूसरी कंपनियों को भी जल्दी ही ऐसा कारण बताओ नोटिस भेजा है.

कृपा कायम है कर्जदारों की

साप्ताहिक 'न्यूज इंडिया' (न्यूयॉर्क की पत्रिका) में छपी इस खबर से कि सिटी बैंक इस वर्ष के शुरू में भारत को 23 करोड़ डॉलर का कर्ज देने से पीछे हट गया, भारत में दिलचस्पी रखने वालों को झटका लगा है. यह खबर परेशान करने वाली तो है ही, लेकिन जब तक दूसरे व्यावसायिक बैंक पीछे नहीं हटते, भारत को कर्ज मिलने में शायद कठिनाई नहीं होगी. हालांकि सिटी बैंक एक प्रमुख बैंक है, लेकिन भारत के प्रमुख कर्जदाताओं की सूची में उसका नाम नहीं है. एएनजेड ग्रिंडलेज बैंक इस सूची में सबसे ऊपर है. इसके नीचे इंडस्ट्रियल बैंक ऑफ जापान, बैंक पेरिबस, बैंक नेशनल द पेरिस और सान्वा बैंक ऑफ जापान और बैंक ऑफ तोक्यो के नाम हैं. फिलहाल ये सभी प्रमुख बैंक भारत को कर्ज देने के लिए उत्सुक हैं.

चार्ट: की के शर्मा

भारत के लिए व्यापारिक पूंजी का बंदोबस्त करने वाले बड़े बैंक

बैंक	करोड़ डॉलर में
एएनजेड ग्रिंडलेज	$ 50
इंडस्ट्रियल बैंक ऑफ जापान	$ 32.72
बैंक पेरिबस	$ 31.58
बैंक नेशनल द पेरिस	$ 31.58
सान्वा बैंक	$ 27.92
बैंक ऑफ तोक्यो	$ 21.86
इस्टीट्यूटो बैंकारियो सन पॉलो दी तोरिनो	$ 15
भारतीय स्टेट बैंक	$ 11.89
बर्कलेज बैंक	$ 11.67
निप्पन क्रेडिट बैंक	$ 10

स्रोतः यूरोमनी नोवेंबर

दवा क्षेत्र में दायरा बढ़ाएंगे

रैनबक्सी लैबोरेटरीज लि. दवाओं के क्षेत्र में अपना दायरा बढ़ाने की योजना बना रही है. वह 36 करोड़ रु. की अनुमानित लागत से गाजियाबाद जिले के नोएडा में एक नई फैक्टरी लगाएगी जिसमें 28 जीवन रक्षक दवाओं का निर्माण होगा. इस फैक्टरी में डायग्नोस्टिक किट, एमोक्सिसिलीन ट्राइहाड्रेट, क्लोक्सासिलीन सोडियम आदि का निर्माण होगा जिस पर 2.7 करोड़ रु. की अतिरिक्त लागत आएगी. कंपनी की विस्तार योजनाओं में मध्य प्रदेश के देवास संयंत्र में जिनसेंग के आसव, विटामिनों और खनिजों से बनने वाले कैप्सूल की उत्पादन क्षमता 425 किग्रा सालाना से बढ़ाकर 3,400 किग्रा करना शामिल है. रैनबक्सी ने पंजाब के रोपड़ जिले में अपने एसएएस नगर संयंत्र में बड़े पैमाने पर सभी तरह के सिफालोस्पोरिन के उत्पादन की मंजूरी भी ले ली है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िन्दगी को बिठाएं सर आँखों पर!

रेमण्ड

सूटिंग के लिए सर्वोत्कृष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

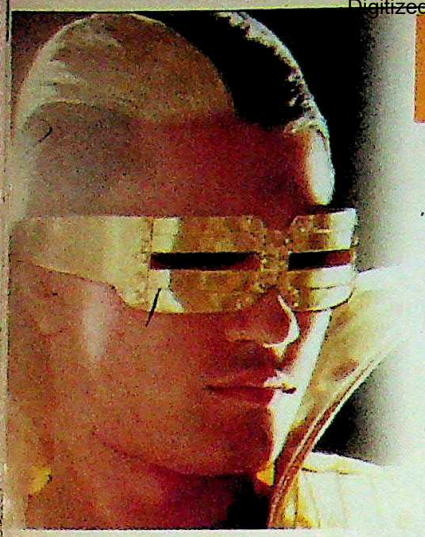

पफ़

एक में अनेक!

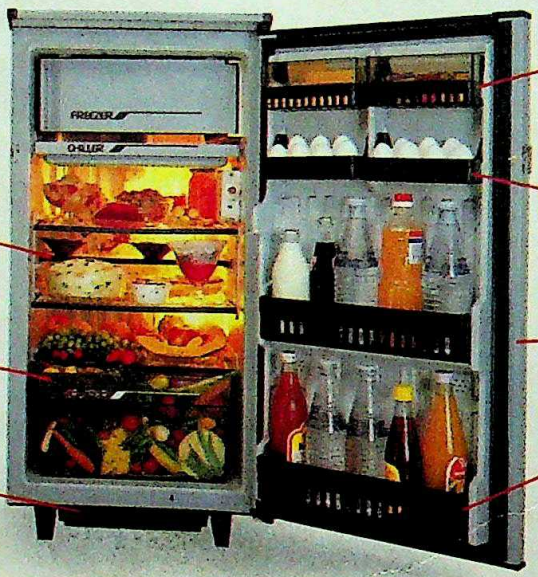

जगह बनानेवाले रूममेकर शेल्फ़
3 पूरे और एक आधा शेल्फ़. सभी को ऊपर नीचे सरका कर मनचाही जगह बना सकते हैं.

ईज़ीस्टोर सब्ज़ी ट्रे
सबसे बड़ी सब्ज़ी ट्रे. छोटी- मोटी चीज़ों के लिए एक सेपरेटर ट्रे भी.

सुविधाजनक ओवरफ़्लो ट्रे

जुड़वां मक्खनदानी
मक्खन व चीज़ रखिए. एक खाना हटाकर नीचे के खाने में रखिए दूध की बोतलें.

हटाए जा सकनेवाले अंडों के लिए जुड़वां रैक
14 अंडे रखिए. चाहे इसे हटाकर छोटी बोतलें रखिए

पसंद आपकी– चाहे बाईं तरफ़ खुलनेवाला दरवाज़ा लें या दायीं तरफ़ खुलनेवाला.

ज़्यादा बड़ी बोतलों के लिए रैक
10 बड़ी बोतलें रखिए या 14 कोल्ड ड्रिंक बोतले.
किसी भी 165 लीटर रेफ़्रिजरेटर से ज़्यादा जगह.

गोदरेज कोल्ड गोल्ड. सचमुच निराला रेफ़्रिजरेटर. बस, ज़रूरत मुताबिक शेल्फ़ ऊपर-नीचे करें और **मनपंसद डिज़ाइन का रेफ़्रिजरेटर** तैयार!

पफ़ की चमत्कारी शक्ति वाले कोल्ड गोल्ड में है **अनोखी सुविधा– ऑटोमेटिक डिफ़्रॉस्ट के साथ पानी अपने आप निकल जाए.**

मेल खाते 7 आकर्षक रंगों में उपलब्ध. बेहतरीन टिकाऊ एपॉक्सी पाउडर कोटेड फ़िनिश के साथ!

घर ज़रूरत के अनुसार सही आकार का कोल्ड गोल्ड लीजिए– 165 लीटर, 230 लीटर डबल डोर या पर्याप्त बड़ा 300 लीटर.

Godrej®

COLD GOLD
एक में अनेक रेफ़्रिजरेटर

Puf सहित

HTA 2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलेक्ट्रॉनिक उपभोक्ता सामान

बहार के बाद पतझड़

टेलीविजन, वीडियो कैसेट प्लेयर तथा रेकॉर्डर और वीडियो खेल उपकरणों के निर्माण की गति मंद पड़ी लेकिन ऑडियो उपकरणों का बाजार सरगर्म

—सुरजीत दासगुप्त

चार्ट: बी के शर्मा

ऑडियो उद्योग का उत्पादन

संख्या लाख में	1985-86	86-87	87-88	88-89	89-90	90-91
रेडियो	75	75	80	80	85	100
मोनो कैसेट रिकॉर्डर	9	12	14	15	18	20
मोनो रेडियो रिकॉर्डर	8	11	12	12	17	20
स्टीरियो ऑडियो रिकॉर्डर	4	5	6	8	9	12

रिमोट कंट्रोल हाथ में लीजिए. बटन दबाइए और 'पिक्चर-इन-पिक्चर' यानी दो तस्वीरें साथ-साथ देखिए. आप टीवी स्क्रीन को दो भागों में बांटकर अलग-अलग चैनलों को एक ही समय में देख सकते हैं. ऊब गए हों तो 'सराउंड-साउंड हाई-फाई सिस्टम' चलाकर तेज-झन्नाटेदार संगीत की धुन पर थिरकिए !

3,200 करोड़ रु. के मनोरंजन प्रधान इलेक्ट्रॉनिक उद्योग के पिछले पांच साल बेहद व्यस्त रहे हैं. सपनों के नए सौदागर मैदान में उतर आए और स्थापित निर्माताओं ने अपनी इकाइयों का विस्तार कर लिया. उपभोक्ताओं के रुझान को देखते हुए कंपनियों ने नए मॉडलों की भरमार कर दी और नए बाजारों में पैठ की. इसके साथ ही आकर्षक छूट और टीवी, रेडियो तथा पत्र-पत्रिकाओं में

सोनू मीरचंदानी, *प्रबंध निदेशक, ओनिडा सवाक लिमिटेड*

"यह इस उद्योग का निर्णायक दौर है जिसमें उम्दा क्वालिटी वाले कुछ ही निर्माता टिक पाएंगे"

प्रशांत पंजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेश भट्ट

"लाभ की गुंजाइश पर बढ़ते दबावों के चलते ब्रांडों का ध्रुवीकरण हो गया है"

टी.पी.जी. नांबियार, *प्रबंध निदेशक, वीपीएल इंडिया लिमिटेड*

विज्ञापनों का धुंआधार दौर शुरू हुआ.

लेकिन अब मधुमास के दिन खत्म हो गए लगते हैं. टेलीविजन, ऑडियो उपकरण, वीडियो कैसेट रेकॉर्डर और अन्य संबंधित उपकरणों का मनोरंजन प्रधान इलेक्ट्रॉनिक उद्योग अब बुरे दौर से गुजर रहा है. ओनिडा टेलीविजन के निर्माता ओनिडा सवाक लिमिटेड के प्रबंध निदेशक सोनू मीरचंदानी कहते हैं, "यह इस उद्योग का निर्णायक दौर है. इसके बाद केवल वही निर्माता टिक पाएंगे जिनकी साख और माल उम्दा होगा."

मीरचंदानी की बात में वजन है. 1985-86 और 1988-89 के दौरान कारोबार में 40 फीसदी की सालाना बढ़त के बाद उद्योग में 1989-90 के दौरान महज 7 फीसदी बढ़त हुई. उसके अगले साल कुल कारोबार 2,965 करोड़ रु. से बढ़कर केवल 3,175 करोड़ रु. तक ही पहुंच सका.

निर्माताओं को जैसे एकदम से इस सचाई का एहसास हो गया है कि इलेक्ट्रॉनिक उपकरण नहीं बिक रहे. उपभोक्ता प्रयोग में आने वाले इलेक्ट्रॉनिक सामान में टेलीविजन का हिस्सा 60 फीसदी से भी अधिक है और उसकी बिक्री से ही नए दौर का संकेत मिल जाता है. पिछले दो वर्षों में रंगीन टेलीविजन सेटों का उत्पादन 12 लाख पर अटका रहा है. और 'ब्लैक ऐंड व्हाइट' टीवी सेटों का उत्पादन 1989 और 1990 के दौरान 40 लाख से घटकर 36 लाख पर आ गया. यही कारण है कि कई इकाइयां बंद हो गईं.

मनोरंजन प्रधान इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे वीडियो, नवीनतम कंपैक्ट डिस्क और बच्चों के वीडियो गेम्स के हालात भी अच्छे नहीं हैं. वीसीआर पर 17 फीसदी उत्पाद शुल्क बढ़ाए जाने से उत्पादक इस वर्ष बिक्री में 20 फीसदी की कमी की आशंका व्यक्त कर रहे हैं. विदेशी मुद्रा नियमन कानूनों के कारण कई कंपनियों को घाटा उठाना पड़ रहा है. वीडियो गेम्स उद्योग में शीर्ष पर रही कंपनी समुराइ इलेक्ट्रॉनिक्स के महाप्रबंधक बी.एल. मल्होत्रा अफसोस से कहते हैं, "सरकार स्वदेशीकरण के मामले में उदासीन है. सीमा शुल्क 90 फीसदी से 150 फीसदी तक लगता है. इस तरह उत्पादित वस्तु महंगी हो जाती है."

इसी तरह इलेक्ट्रॉनिक पुर्जों के उद्योग को भी धक्का लगा है. सरकार ने आठवीं योजना में इस उद्योग के लिए 3,000 करोड़ रु. के निवेश का प्रावधान किया पर इस उद्योग का अंदाजा है कि निवेश 1,000 करोड़ रु. से अधिक नहीं हो सकेगा. उदाहरण के लिए टेलीविजन की रंगीन पिक्चर ट्यूबों के लिए कुल 17.50 लाख की उत्पादन क्षमता का लक्ष्य निर्धारित है, पर उत्पादन इससे बहुत कम हो पाता है. पुर्जे तैयार करने वाले दूसरे उद्योग भी क्षमता से कम उत्पादन कर रहे हैं. ऑडियो मैग्नेटिक हेड के तीन निर्माताओं को अपनी इकाइयां इसीलिए बंद करनी पड़ीं कि वे कमोबेश इतनी ही कीमत पर बाजार में उपलब्ध आयातित मैग्नेटिक हेड के सामने नहीं टिक पाए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SONY
अब सोनी वीएचएस डायल करें!

अब नए वी एच एस वीडियो कैसेट रिकॉर्डर्स में सोनी आप के लिए लेकर आए हैं एक नई अनुपम सुविधा: ड्यूअल मोड शटल रिंग। ताकि वीडियो चलाना अत्यन्त सरल हो जाए। अलग-अलग बटन दबाने का अब झंझट ही नहीं, केवल सोनी के नए शटल रिंग को घुमाएं और टेप को मनचाही स्थिति में ले आएं: प्ले, फॉरवर्ड या रिवर्स धीमी स्पीड, सामान्य स्पीड,

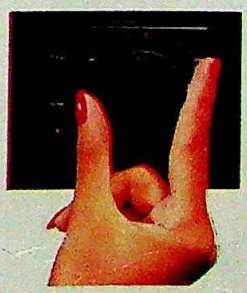

डबल स्पीड, क्यू/रिव्यू, एफ़ आर पिक्चर सर्च... आश्चर्यजनक! जी हाँ! लेकिन साथ ही उतना सरल भी! यही नहीं, सोनी के इन दोनों वी सी आर में ऐसी और भी अनेक नवीनतम सुविधाएं हैं, जिनकी आपको सोनी जैसी विख्यात कम्पनी से उम्मीद रहती है। इसलिए आज ही अपने लिए ये वी सी आर ले आएं और स्वयं ही देख लें कि हर कोई सोनी वी एच एस का इतना दीवाना क्यों है!

VHS

नए आधुनिकतम ''ड्यूअल मोड शटल'' रिंग के साथ

SLV-X 50

●2-सिस्टम (PAL/MESECAM) ●एक सेकेंड से भी कम समय में स्क्रीन पर पिक्चर के लिए 'सुपर ऐक्सेस मैकेनिज़म' ●साफ़ स्टिल और स्लो मोशन के लिए DA Pro 4 ●HQ ●यूनी कमांडर (SLV-X 50 और ब्लैक ट्रीनीट्रॉन दोनों को कंट्रोल करता है) ●1 माह/ 8 इवन्ट टाइमर ●ऑटो मेनू ●डिजिटल ऑटो ट्रैकिंग ● FR पिक्चर सर्च ●हाई स्पीड रिवाइंड ●ऑटो हेड क्लीनर ●ऑटो वोल्ट

SLV-X 30

●2-सिस्टम (PAL/MESECAM) ●ड्यूअल मोड शटल रिंग ●सुपर ऐक्सेस मैकेनिज़म और हाई स्पीड रिवाइंड ●पिक्चर क्वालिटी में सुधार के लिए टर्बो पिक्चर ●डिजिटल ऑटो ट्रैकिंग ●ऑटो मेनू ● 1 माह/ 8 इवन्ट टाइमर ● स्टिल और स्लो मोशन ●FR पिक्चर सर्च ●ऑटो हेड क्लीनर ●ऑटो वोल्ट ● HQ ●यूनी कमांडर (SLV-X30 और ब्लैक ट्रीनीट्रॉन, दोनों को कंट्रोल करें)

VHS वीडियो कैसेट टेप.
नए और बेहतर हाई रिज़ोल्यूशन वाले ''वाई वैक्स'' टेप
E-180V 180 मिनट की अवधि।
E-120V 120 मिनट की अवधि।

SAY YES TO SONY VHS

SONY SERVICE

भारत में सोनी अधिकृत सर्विस केन्द्र: ओलिम्पिया सर्विस सेंटर 55 -ए, सिद्धार्थ चैम्बर्स, आज़ाद अपार्टमेंट्स के बगल में, हौज़ ख़ास, नई दिल्ली-110016 फोन: 6864947 ● ओलिम्पिया सर्विस सेंटर, अरूण चैम्बर्स, ग्राउंड फ्लोर, एस-22/23, तिलक रोड, [illegible] ● ओलिम्पिया सर्विस सेंटर, 6, सी, मिडलटन स्ट्रीट, कलकत्ता-700071, फोन-296601, 297545 ● स्टीरियो विज़न, 846 ए, माउंट रोड इंडिया सिल्क हाउस के बगल में, मद्रास 600002 फोन- 835444,835489 ● टेलीविडियो सर्विसेज़ 108, ई और एफ, शाहाज़ाद बिल्डिंग्स, जे. सी. रोड, बंगलौर-560002 फोन-220164 ● माबूद इलेक्ट्रानिक्स, 5-8-602, दुकान नं. 8, मुबारक बाज़ार, आबिद रोड, हैदराबाद- 500029 फोन- 233131 ● बायोनिक्स वारियर बिल्डिंग, एम. जी. रोड इर्नाकुलम, कोचिन- 682016 फोन- 369422

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ

ओनिडा टी वी से ईर्षा न कीजिए. खरीद लीजिए.

ओनिडा २१

पड़ोसियों की जले जान. आपकी बढ़े शान.

Avenues.O.627 91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ वर्ष पहले सरकार ने बड़ा मनोहारी खाका खींचा था. सरकार का अनुमान था कि 1990-91 में देश में 55 लाख 'ब्लैक ऐंड व्हाइट' और 20 लाख रंगीन टेलीविजन का निर्माण होगा. देश में चार लाख वीसीआर तैयार होने की भी उम्मीद थी. ये पूर्वानुमान सही क्यों नहीं निकले? टेक्सला कंपनी समूह के प्रमुख कार्यकारी अध्यक्ष ए.एन. सहगल इसकी वजह बताते हैं, "विदेशी मुद्रा की तंगी, जिसकी वजह से इलेक्ट्रॉनिक सामान के आयात में 15 फीसदी कटौती करनी पड़ी. 200 फीसदी मार्जिन मनी की शर्त और भारी करों ने रही-सही कमी पूरी कर दी."

लेकिन सबसे घातक प्रहार सरकार की कराधान नीति ने ही किया. इलेक्ट्रॉनिक सामान चूंकि विलासिता की सामग्री समझा जाता है इसलिए 1982 से 1989 के बीच रंगीन टीवी के उत्पाद शुल्क में 280 फीसदी वृद्धि हुई है. 'ब्लैक ऐंड व्हाइट' टीवी सेटों को भी नहीं बख्शा गया. पिछले सात वर्षों में इनके उत्पाद शुल्क में 65 फीसदी की वृद्धि हुई. इसके अलावा इस वर्ष के बजट में वीसीआर पर शुल्क भी 17 फीसदी बढ़ा दिया गया. फलते-फूलते ऑडियो कैसेट उद्योग को भी चपत लगी. इस वर्ष टेप पर विशेष शुल्क दोगुना कर दिया गया.

सरकार में कुछ लोगों ने देर से ही सही इन संभावनाओं को पहचाना है और वे कंपनियों से उत्पादन का घरेलू आधार बढ़ाने का आग्रह कर रहे हैं ताकि निर्यात बाजार में भी पांव पसारे जा सकें. इलेक्ट्रॉनिक विभाग कुछ प्रस्ताव तैयार कर रहा है जिनमें ये प्रमुख हैं—

- कंप्पैक्ट डिस्क प्लेयर तैयार करने के लिए निर्माताओं को लाइसेंस देना. लेकिन इसकी शर्त: जितना वे आयात करेंगे, उससे दोगुनी विदेशी मुद्रा आयात के जरिए सरकार को देंगे.
- विदेशी निवेशकों को हार्डवेयर तकनीक इकाई स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करना, जहां से घरेलू बाजार तक उनकी पहुंच उत्पाद की कीमत के आधार पर हो सकेगी.
- निर्यात पर 'रैप लाइसेंस' 40 फीसदी से बढ़ाकर 60 फीसदी करने का प्रस्ताव.
- बड़े औद्योगिक घरानों को इलेक्ट्रॉनिक निर्यात के लिए प्रोत्साहित करना.
- दुर्लभ मुद्रा वाले देशों में निर्यात के लिए अंतरराष्ट्रीय गुणवत्ता नियंत्रण पत्र देना.
- रेडियो बनाने के लिए अब तक बेहद कम इस्तेमाल की गई फ्रीक्वेंसी मॉड्यूलेशन तकनीक के व्यवसायीकरण को बढ़ावा देना.

लेकिन अंतरराष्ट्रीय बाजार में टिकने के लिए भारतीय कंपनियों को इतने प्रोत्साहन ही काफी नहीं हैं. एक वजह तो यह कि कंपनियां अब तकनीक में पूंजी निवेश की कोशिशें नहीं कर रहीं. मात्शुशिता जैसी जापानी कंपनियों ने कुल कारोबार का 7.5 फीसदी तकनीक में निवेश किया है, जबकि हमारी कंपनियां एक प्रतिशत से भी कम. नतीजतन देसी और विदेशी उत्पाद की तकनीक में अंतर बढ़ता जा रहा है. मसलन, विदेशी कंपनियां जहां एकदम छोटे या लिक्विड क्रिस्टल तकनीक पर बड़े परदे वाले टीवी बना रही हैं, भारत में उसी पुराने आकार के टीवी बन रहे हैं.

इलेक्ट्रॉनिक उद्योग हालांकि भारी संकट में है, लेकिन हतोत्साहित नहीं होना चाहिए क्योंकि अवमूल्यन ने भारतीय इलेक्ट्रॉनिक उद्योग को अंतराष्ट्रीय बाजार में प्रतियोगी बना दिया है. इलेक्ट्रॉनिक विभाग के सचिव एन. विट्ठल कहते हैं, "हमें अंतरराष्ट्रीय बाजार में अपनी पहचान जरूर बनानी है." यह हो जाए तो इस उद्योग का भविष्य इतना धूमिल नहीं होना चाहिए.

हेमन पिटवा

"विकासशील देशों को शुल्क प्राथमिकता मिलती है. रुपए के अवमूल्यन से निर्यात और फायदेमंद हो गया है."

जे.आर. मूलचंदानी, *प्रबंध निदेशक, बुश*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

STRAIGHT FROM THE HEART

A RANGE OF EMOTIONS FROM GWALIOR SUITING

GRASIM
GWALIOR SUITING
IN A CLASS OF ITS OWN
A PRODUCT OF GRASIM INDUSTRIES LTD

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

नवाज शरीफ विरोधी सभा में बोलते हुए जमात के सदर काज़ी हुसैन अहमदः दोस्त हुए दुश्मन

पाकिस्तान

शराफत से दूर सियासत

नवाज शरीफ की मुल्क को आधुनिक बनाने की मंशाओं को कट्टरपंथियों का पलीता

पाकिस्तान के राजनैतिक रंगमंच पर हताश और बेचैन पात्रों की भीड़ हफ्ते दर हफ्ते बढ़ती ही जा रही है. इन पात्रों में शासक दल इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद (इजइ) के गठजोड़ को तोड़ने के लिए जोड़-तोड़ करने वाले नेता, दबंग राष्ट्रपति गुलाम इस्हाक खां हैं, पंजाब के प्रभावशाली इजइ सांसदों को समेटता सहकारिता कर्ज का भारी घोटाला है, सिंध और पंजाब के हिस्से में शहरी आतंकवाद की संस्कृति है और साथ ही हैं पाकिस्तानी पीपुल्स पार्टी की नेता बेनज़ीर भुट्टो, जो शासक दल को एकदम ही उखाड़ फेंकने पर आमादा हैं. और पूरे चक्रवात के केंद्र में हैं प्रधानमंत्री नवाज शरीफ जो इन विवादों के चक्रव्यूह को, और प्रतिद्वंद्विता तथा हिंसा के दौर को पार करना चाहते हैं.

शरीफ पाकिस्तान को एक आधुनिक इस्लामी देश बनाने के वादे पर साल भर पहले जबरदस्त जनसमर्थन पाकर सत्ता में आए थे. सत्ता में आते ही उन्होंने उदार और बाजारोन्मुख आर्थिक नीतियों की जो घोषणा की वह इसी योजना का आधुनिकता वाला पहलू था. उधर, सहयोगी अनुदार मुस्लिम पार्टियों—जमाते इस्लामी और जमाते उलेमा-ए-इस्लामी—को खुश रखने के लिए शरीयत बिल लाया गया था. लेकिन उत्साह बहुत दिन बना नहीं रहा. आप्रवासी पाकिस्तानियों के मसलों के मंत्री इजाजुल हक कहते हैं, "सबसे पहले तो खाड़ी में जंग छिड़ गई. फिर शरीयत कानून और संविधान के 12 वें संशोधन को लेकर विवाद छिड़ा जो काफी समय तक खिंचा."

शरद सक्सेना

"हां, कुछ तनाव जरूर हैं...लेकिन मैं इससे घबराने वाले नहीं. सबको साथ लेकर चलूंगा और इन पर फतह हासिल कर लूंगा"
नवाज शरीफ, प्रधानमंत्री

यह सही है कि सब कुछ शरीफ के सोच के मुताबिक नहीं चल रहा है और फिर हर ओर से आफत ही आ गई. शासक दल और अपनी लोकप्रियता में गिरावट से शरीफ घबरा गए हैं.

पिछले महीने जब जमाते उलेमा-ए-इस्लामी ने सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया और जमाते इस्लामी भी उग्र स्वर में बोलने लगी तो शरीफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवान सिंह

भवान सिंह

कमजोर पड़ते जा रहे नवाज शरीफ ने गुलाम इस्हाक खां, मुहम्मद खां जुनेजो और सिंध के मुख्यमंत्री जाम सादिक अली के दामाद और बेटों को मंत्री बनाकर अपनी ताकत बढ़ानी चाही है

ने अपने मंत्रिमंडल में अपूर्व विस्तार किया ताकि उनके दोस्त और दुश्मन शांत पड़ जाएं. जमाते उलेमा के समर्थन वापस लेने से सरकार नहीं गिरेगी पर यह इस बात का संकेत है कि अन्य सहयोगी पार्टियां भी साथ छोड़ सकती हैं.

अब मंत्रियों की संख्या 49 हो गई है और यह पाकिस्तान का अब तक का सबसे बड़ा मंत्रिमंडल हो गया है. मंत्रिमंडल के विस्तार ने विपक्ष को शरीफ पर फिजूलखर्ची का आरोप लगाने का मसाला दे दिया.

शरीफ ने राष्ट्रपति इस्हाक खां, सिंध के मुख्यमंत्री जाम सादिक जैसे क्षेत्रीय नेताओं और पूर्व प्रधानमंत्री मुहम्मद खां जुनेजो के रिश्तेदारों को मंत्री बनाकर अपनी आलोचना का और पक्का बंदोबस्त कर लिया. नए कैबिनेट मंत्रियों में राष्ट्रपति के दामाद अनवर सैफुल्ला खां और पश्चिमोत्तर प्रांत के एक प्रभावशाली जमींदार खानदान के मुहम्मद असलम खां खट्टक भी हैं. अन्य नए मंत्री हैं सादिक के पुत्र माशूक और जुनेजो के पुत्र असद. बेनज़ीर कहती हैं, "खां, सादिक और आतंकवादियों का एहसान चुकाने के लिए ही मंत्रिमंडल को बड़ा किया गया है."

प्रशांत पंजियार

"सरकार पर खतरे का सवाल ही नहीं उठता. बेनज़ीर और उनकी पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का दिमाग एकदम खराब हो गया है"

शुजात हुसैन, गृहमंत्री

स्वाभाविक है कि इस स्थिति में पूरा विपक्ष लोगों की नाराजगी को सरकार की तरफ मोड़ने में लगा है. 11 सितंबर को पीपुल्स डेमोक्रेटिक एलायंस की कराची में हुई रैली जबरदस्त कामयाब रही. इस मौके का फायदा उठाकर बेनज़ीर ने सरकार को जी भर कर कोसा और उस पर मुल्क को बरबादी के कगार पर लाने का इलजाम लगाया. सरकार पर दबाव बढ़ाने के लिए विपक्ष ने हाल में ही चुनाव में धांधली के अपने आरोप से संबंधित श्वेतपत्र जारी किया है और सरकार के कुछ पुराने सहयोगियों ने भी इसका समर्थन किया है. शरीफ इस नए खतरे के बारे में कहते हैं, "इन आरोपों पर किसी को यकीन नहीं है."

लेकिन प्रधानमंत्री खामोश भी नहीं बैठे हैं. वे बहुत सावधानी से बेनज़ीर के खिलाफ दांव चल रहे हैं. उनका नवीनतम हमला यह है कि बेनज़ीर ने पाकिस्तान के एटमी प्रोग्राम की खुफिया जानकारियां कुछ विदेशी पत्रकारों को दी थीं. और शरीफ के सादिक जैसे वफादारों ने तुरंत शोर मचाया कि बेनज़ीर के खिलाफ देशद्रोह का मामला चलाना चाहिए. और चालाक शरीफ ने, जो विपक्ष से मेलमिलाप की बात करते हैं, कहा, "इस मसले पर गौर किया जाएगा."

शरीफ के लिए सबसे मुश्किल काम सिंध और पंजाब के दूरदराज के इलाकों में फैलती कलाश्निकोव संस्कृति से निबटना है. उन्होंने इसके मद्देनजर पुलिस और अदालतों को विशेष अधिकार देने के लिए संविधान में 12वां संशोधन कराया. पर इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा. इस नई संस्कृति के फैलने का एक प्रमाण तो मोहाजिर कौमी मूवमेंट और जमाते उलेमा-ए-इस्लामी के बीच बढ़ती झड़पें हैं. जमाते उलेमा के उपाध्यक्ष प्रो. गफूर अहमद का दावा है कि शरीफ के सत्ता में आने के बाद जमात के 10 बड़े नेता मोहाजिर कौमी मूवमेंट के लोगों के हाथों मारे गए हैं.

शरीफ को राजनैतिक रूप से अक्षम बताने के साथ ही विपक्ष उन्हें वित्तीय घोटालों में भी फंसाना चाहता है. प्रधानमंत्री के परिवार की मिल्कियत वाले इत्तेफाक समूह के उद्योग पर ऐसी सहकारी वित्तीय संस्थाओं से भारी कर्ज लेने का आरोप है जिन पर काले धन का कारोबार करने और बैंकिंग कानूनों का उल्लंघन करने का संदेह है. गृहमंत्री शुजात हुसैन की चौधरी समूह की एक कंपनी पर भी पैसे के घोटाले का मामला दायर किया गया है. शरीफ इस घोटाले में अपने परिवार के शामिल होने का खंडन करते हैं और उल्टे बेनज़ीर पर आरोप लगाते हैं.

शरीफ को सेना को भी शांत करना है जिसका अब तक राजनीति में काफी दखल रहा है. उन्होंने महत्वाकांक्षी सेना प्रमुख मिर्जा असलम बेग से मुक्ति पाकर अपना कुछ बोझ हल्का किया है. उन्हें समय से अवकाश दिला दिया गया. पर पाकिस्तान की राजनीति में सेना का दखल हमेशा से रहा है. सेना के जनरलों की ताकत कम करते हुए और पूरे जोश से उभरे विपक्ष के हमलों को झेलते हुए शरीफ को अपना काम करना होगा और अपनी राजनैतिक ताकत भी बढ़ानी होगी. यह बहुत मुश्किल काम है. पर संसदीय लोकतंत्र का नेतृत्व करना इसी को तो कहते हैं.

—कंवर संधू, इस्लामाबाद से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Kingfisher presents the makings of a champion.

From Kingfisher, a video tape on the men behind the scenes of the most thrilling moments on turf. The men who make champions. The men who ride champions. And the champions themselves.

Kingfisher presents
'Horsepower'.

The story of the Indian thoroughbred . A tape every horse racing enthusiast or sports fan would consider a collector's item.

KINGFISHER
PRESENTS
HORSEPOWER
THE STORY OF THE INDIAN THOROUGHBRED
TASTE THE EXCITEMENT

O R D E R F O R M

Yes, I would like to order Kingfisher's cassette 'Horsepower', for Rs.175/- (taxes, packing and forwarding included).

I herewith enclose a DD/MO payable in Bangalore (only Bangalore cheques accepted) to: Kingfisher 'Horsepower', C/o *ONE-TO-ONE Communications Pvt. Ltd., No. 3, President Chambers, 8, Richmond Road, Bangalore- 560 025. Ph: 217788.

Name..... Add.....

..... Pin..... Tel.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब मृत तमिल चीतों को दफनाया जा रहा है. इसके समारोह ऐसे आयोजित किए जाते हैं ताकि युद्ध का उन्माद लोगों में व्याप्त हो

सभी फोटो: श्याम टेकवानी

जाफना: चीतों की मां में

—अमरनाथ के. मेनन

जाफना शहर की नींद तड़के सूरज की किरण फूटते ही खुल जाती है. इतने वर्षों में यहां के लोग बंदूकों के धूम-धड़ाके में जीने के आदी हो चुके हैं. अंधियारा घिरते ही उत्तरी श्रीलंका का यह शहर भी आतंक में डूब जाता है. अक्सर गायब रहने वाली बिजली इस बला को और विकराल बना देती है. दिन की रोशनी रहते तक ही सारे काम निबटा लेने होते हैं. पता नहीं कल क्या हो जाए!

लड़ाई के अभ्यस्त हो चुके इस शहर के लिए पिछला साल बहुत मुश्किलों भरा था. इसके बदसूरत जख्म अभी भी साफ दिखते हैं. श्रीलंका सरकार ने यहां जरूरी चीजों की आपूर्ति रोक दी और सेना की बमबारी बढ़ गई. नतीजतन, भारी बरबादी हुई. बस पड़ावों की छतरियां गायब हो गईं, पेट्रोल पंप राख हो गए और जरूरी चीजों की कीमतें आसमान छूने लगीं. जैसे, एक साबुन 65 रु. का मिलता है जो कोलंबो में इसकी कीमत का आठ गुना है. लोगों को यह जले पर नमक जैसा लगता है. स्कूल अध्यापक टी.एन. पंचाक्षरम कहते हैं, "अब मैं अंगवस्त्रम नहीं खरीदता और अतिरिक्त पैसे न होने तथा बिजली न रहने से चाहकर भी काफी कुछ नहीं पढ़ पाता." लेकिन वे किसी तरह जी रहे हैं.

अनेक दूसरे लोगों की तरह उन्हें भी किसी तरह जीना ही है. तमिल चीतों (एलटीटीई) के आतंक के चलते उन्हें ऐसा करना ही होता है. जिन लोगों को तमिल चीतों का कोपभाजन होना पड़ा वे भी संभलकर बात करते हैं. अवकाशप्राप्त स्कूल अध्यापक बालकृष्ण का दूसरा बेटा, जो ईलम पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट का सदस्य था, तमिल चीतों के हाथ मारा गया. लेकिन वे अब कहते हैं, "तमिल चीतों को दूसरे संगठनों की तुलना में तमिलभाषी इलाके के लोगों की अधिक चिंता है. अगर सरकार यह समझ जाए तो मुझे प्रति माह 2,000 रु. की जगह 6,000 रु. नहीं खर्च करने पड़ें."

अगर जाफना का जीवन मुश्किल हो गया है तो यहां पहुंचना कम मुश्किल नहीं है. वावुनिया से, जो सबसे उत्तर में स्थित है और भी श्रीलंका सेना के नियंत्रण वाला शहर है, जाफना पहुंचने का एकमात्र तरीका एकदम भरी हुई नौका पर सवार होकर जाना है, वह भी आधी रात को. वहां का सीधा और छोटा रास्ता एक संकरे दर्रे से गुजरता है जो जाफना की लड़ाई का महत्वपूर्ण ठिकाना है और सेना के नियंत्रण में है. यहां होकर आने जाने की मनाही है. इसलिए पूनेरिन तक सड़क से जाकर वहां पहुंचना ही श्रेयस्कर है. वहां इंतजार में रात का वक्त काटने के लिए 'कॉफी' और 'पायसम' मिलता है. कोई किसी से बात नहीं करता.

अचानक जैतूनी हरे रंग की पजेरो गाड़ी पास आती है. इसकी हेडलाइट की तेज रोशनी हर आदमी की आंख चौंधिया देती है. इसके पीछे नारियल के पत्तों से ढका इसुजु वैन जुड़ा है. मल्लातिवु के जंगलों में चल रही लड़ाई में घायल हुए सात सैनिक नीचे लेटे थे. उनके शरीर से तेजी से खून बह रहा था. उनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामकाज ठप है. लोग जैसे-तैसे जी रहे हैं. कुछ किराए पर साइकिल चलाते हैं तो कुछ किरासिन तेल और पेट्रोल बेचते हैं

में भयभीत जीवन

मां-मां' चिल्ला रहा था. नौका समुद्रताल के दूसरी तरफ थी और जेरो का चालक उसे बुलाने के लिए विशेष संकेत करता है.

और अंततः जब आप जाफना पहुंचते हैं तो एलटीटीई के तिकार एंटन बालासिंघम और पीपुल्स फ्रंट ऑफ लिबरेशन इगर्स के सचिव योगरत्नम योगी मल्लातिवु के जंगलों में जाने की क्त मनाही करते हैं, जहां अभी भी लड़ाई जारी है.

दरअसल सनसनीखेज खबरें ने वाले अखबारों के शीर्षक हों ा वायस ऑफ टाइगर्स रेडियो प्रसारण, हर कहीं तमिल ीतों की 'छाप' दिखाई देती है. गठन के दफ्तरों की दीवारों र इसके प्रमुख प्रभाकरन की स्वीर लगी है. वायस ऑफ ाइगर्स उनकी बातें प्रसारित रता है. इलाके की कुछ ऊंची मारतों पर लाउडस्पीकर लगे जो इस रेडियो के प्रसारणों ो ऊंची आवाज में प्रसारित रते हैं. प्रभाकरन कभीकभार ी सबके सामने आते हैं. तमिल ीते लॉकेट में उनकी तसवीर लगाए घूमते हैं. यह सारा शोर तमिल हितों के लिए मचाया जाता है. स्कूली बच्चों को भी अनिवार्य रूप से एलटीटीई के बारे में पढ़ना होता है. बच्चे झुंडों में जाफना अस्पताल आकर रक्तदान करते हैं और लड़कियां मृत जवानों के लिए शोक गीत गाती हैं.

दरअसल यहां मौत एक सार्वजनिक आयोजन का कारण बनता है. प्रभाकरन के अनुसार 15 सितंबर के बाद की कार्रवाई में मारे गए सभी तमिल चीतों को एक विशेष श्मशान में दफनाया जाएगा. हो सकता है कि लकड़ी की कमी से भी ऐसा हो रहा हो. पर अधिक संभावना यही है कि मृतकों को शहीद बताने और उनके स्मारक बना कर उन्हें गौरवान्वित करने के लिए यह किया जा रहा हो.

पुनेरिन जेटी: आधी रात में आवागमन का निर्देश

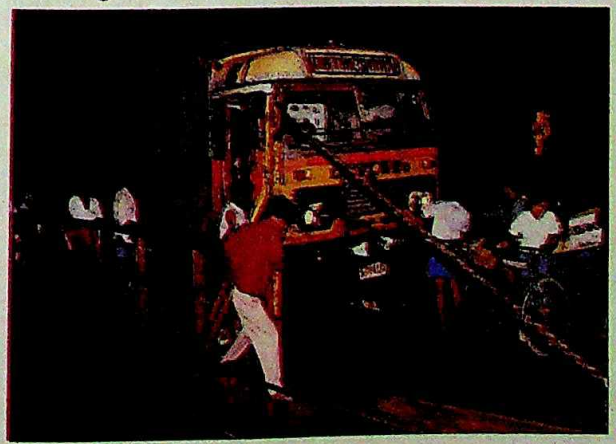

यह सारा कुछ जंग की तैयारी का ही हिस्सा है. प्रभाकरन के गृह नगर वेल्वेत्तितुरै और प्वाइंट पेड्रो जैसे लड़ाई के लिए महत्वपूर्ण शहरों और अधिकांश इमारतों में तहखाने बने हैं. यहां महंगाई

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भी अधिक है. इसी कारण यहां के 3,000 सरकारी कर्मचारियों के लिए आने वाले वेतन का स्वागत ही होता है. वेतनों में कुछ कटौती होती है. पर यह पैसा रेड क्रॉस के जहाज से आता है. तमिल चीते इस पर रोक नहीं लगाते पर उन्होंने कर वसूली करीब-करीब रोक ही दी है. फिर सरकार ने भी वेतनों में कटौतियां की और यहां अब 15 करोड़ रु. की जगह 10 करोड़ रु. आ रहा है. ऐसा सेना की कार्रवाई के बाद हुआ है. कई बार यह रकम 7 करोड़ रु. ही रखी जाती है जिससे एलटीटीई के खजाने में ज्यादा धन न जाए. वैसे वह इस पैसे पर अश्रित नहीं है.

इस संगठन ने सारे सरकारी वाहन जब्त कर लिए हैं. हाल यह हो गई है कि जाफना में तैनात श्रीलंका प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी भी मजबूरी में साइकिल से दफ्तर आते हैं. प्रां की अर्थव्यवस्था में सुधार के प्रति निराशा जताते हुए रिलीफ सर्विसेज के प्रोजेक्ट डायरेक्टर सी. पथमंथन कहते हैं, "सरकार को सिर्फ डाक टिकटों की बिक्री वाला राजस्व मिल रहा है. बैंकों से पैसे निकालने की ऐसी होड़ है कि नकदी के संकट हो

एंटन बालासिंघम

'हमारी ताकत के मद्देनजर भारत रुख बदले'

उत्तरी श्रीलंका में मुक्ति चीतों के गढ़ कोंडाविल में यात्री तो विरले ही नजर आते हैं. बमबारी से ध्वस्त इस शहर में पिछले पखवाड़े प्रमुख संवाददाता ***अमरनाथ के. मेनन*** *ने एलटीटीई के विचारक एंटन बालासिंघम से बातचीत की. बालासिंघम ने जाफना में एलटीटीई की भूमिका की तो तफसील से चर्चा की पर राजीव हत्याकांड से इसके जुड़े होने के सवाल को बड़ी सफाई से टाल गए. उनका कहना था कि "जिन लोगों को एलटीटीई के कार्यकर्ता बताया जा रहा है" उन्हें वे जानते तक नहीं. कुछ अंश:*

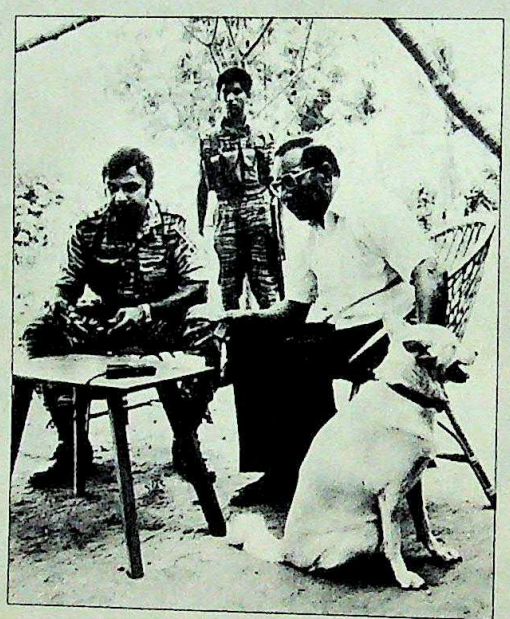

योगी और बालासिंघम: "हथियार चाहिए"

● ***राजीव की हत्या के बाद भारत की घटनाओं से एलटीटीई को क्या धक्का पहुंचा है?***

तमिलनाडु में हमारे समर्थकों को पकड़ा क्यों जा रहा है?

● ***आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया.***

हमारी छवि बुरी तरह खराब की गई है. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी. लेकिन हमारे वैध उद्देश्यों और सांस्कृतिक संबंधों के चलते तमिलनाडु में लोग हमसे सहानुभूति रखते हैं. अगर जयललिता इन संबंधों को तोड़ने की कोशिश करती हैं तो उसका उलटा असर होगा. हम एक प्रमुख राजनैतिक-सामरिक ताकत हैं इसलिए भारत को अपना रुख बदल लेना चाहिए.

● ***खबर है कि आप लोगों ने भारत में नक्सलवादियों और दूसरे संगठनों को हथियार बेचे हैं.***

यह सरासर बकवास है.

● ***आप गोला-बारूद कैसे हासिल करते हैं?***

झड़पों में. श्रीलंका में भारत पर अंकुश लगाने के लिए चीन हथियार भेज रहा है. वे हमारे पास पहुंच जाते हैं.

● ***एलटीटीई के मजबूत और कमजोर पक्ष क्या-क्या हैं?***

हमने श्रीलंकाई सेना को जाफना फोर्ट, थनकुलम और कोक्कुविल खदेड़ दिया है. काफी बड़ा इलाका हमारे नियंत्रण में है. राजनैतिक तौर पर तो हम सुलह वार्ता के पक्ष में हैं लेकिन श्रीलंका (सरकार) ने बातचीत में प्रभाकरन की मौजूदगी का अड़ंगा लगा दिया है.

● ***क्या आपकी लड़ाई की क्षमता बढ़ी है?***

हां, एलीफैंट दर्रे की लड़ाई में नियमित युद्ध लड़ने की हमारी क्षमता का पता चलता है. खुले और मैदानी इलाके में 5 किमी आगे बढ़ने के लिए 10,000 श्रीलंकाई सैनिकों को नौसेना और वायु सेना की मदद से 24 दिन लग गए.

● ***क्या आपको जनसमर्थन हासिल है?***

हमें जन समर्थन बढ़ रहा है. कठिनाइयां तो लोगों की जिंदगी का हिस्सा बन गई हैं. आर्थिक पाबंदियों ने उन्हें एहसास करा दिया कि कोलंबो उन्हें श्रीलंकाई नागरिक नहीं मानता.

● ***कार्यकर्ता कैसे चुनते हैं?***

भर्ती करने के बाद उन्हें छह माह का राजनैतिक और सैनिक प्रशिक्षण दिया जाता है. गले में सायनाइड की गोली उद्देश्य के प्रति उनके समर्पण और बलिदान की भावना की द्योतक है.

● ***रंगरूटों में आप जज्बा कैसे भरते हैं?***

हमारी सेना के कमांडर आगे आकर उदाहरण पेश करते हैं. हमारा बड़े दुश्मन से लड़ रहा एक छोटा सा राष्ट्र है.

● ***एलटीटीई नियंत्रित इलाकों के प्रशासन में आपकी क्या भूमिका है?***

हमने इसे खत्म नहीं किया है. हमारी अपनी व्यवस्था है और हम कर भी वसूलते हैं. अदालत न होने से पार्टी ही कानून और व्यवस्था पर नजर रखती है.

● ***पैसा कहां से आता है?***

लोग ही हमें चंदा देते हैं. तमिल आप्रवासियों से भी पैसे मिलते हैं. चूंकि बैंक एकमुश्त 1,000 रु. से ज्यादा निकालने की मंजूरी नहीं देते इसलिए विदेशी मुद्रा के विनिमय की हमारी अपनी गुप्त व्यवस्था है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

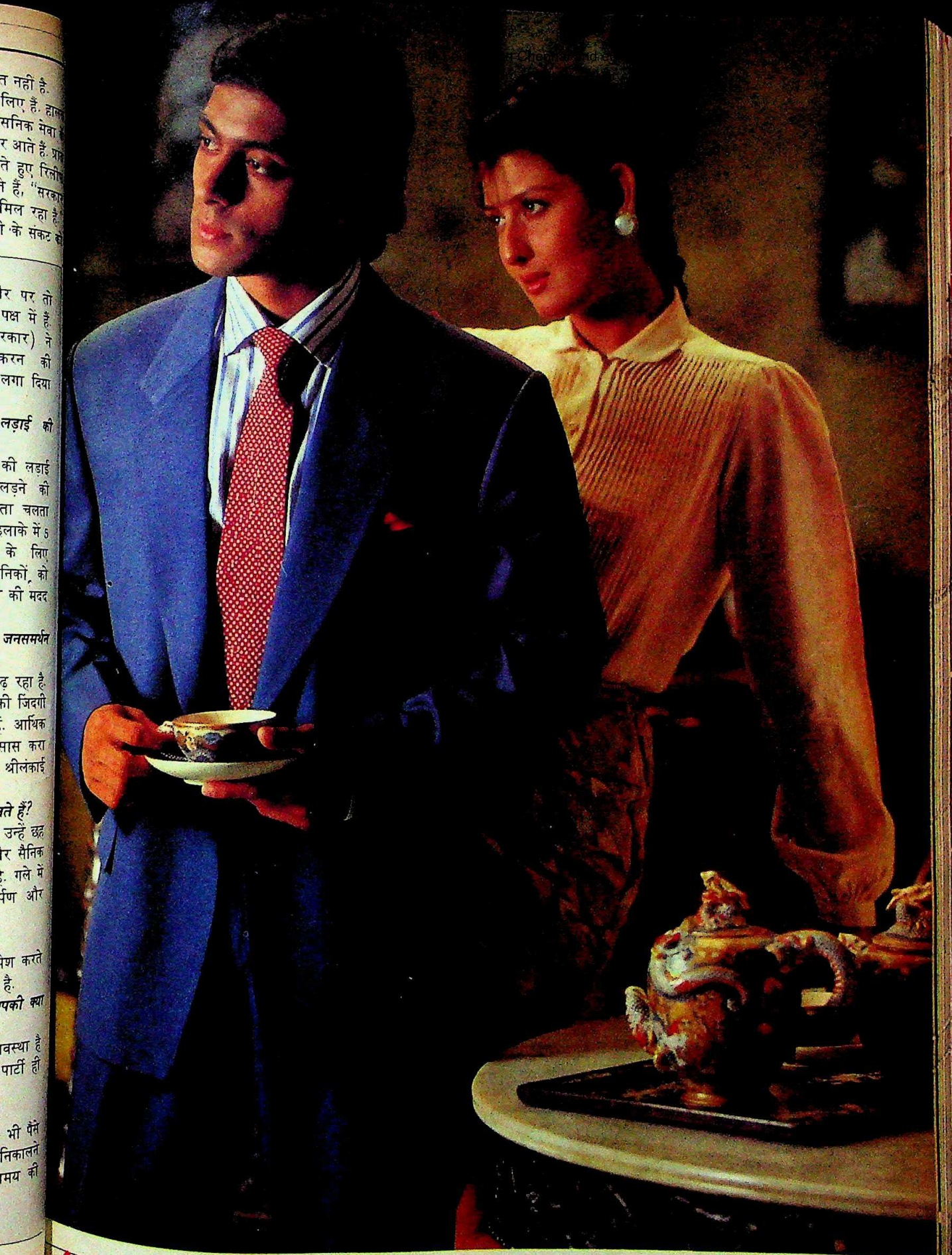

Look no further...

GRAVIERA SUITING

A Unit of Grasim Industries Ltd.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

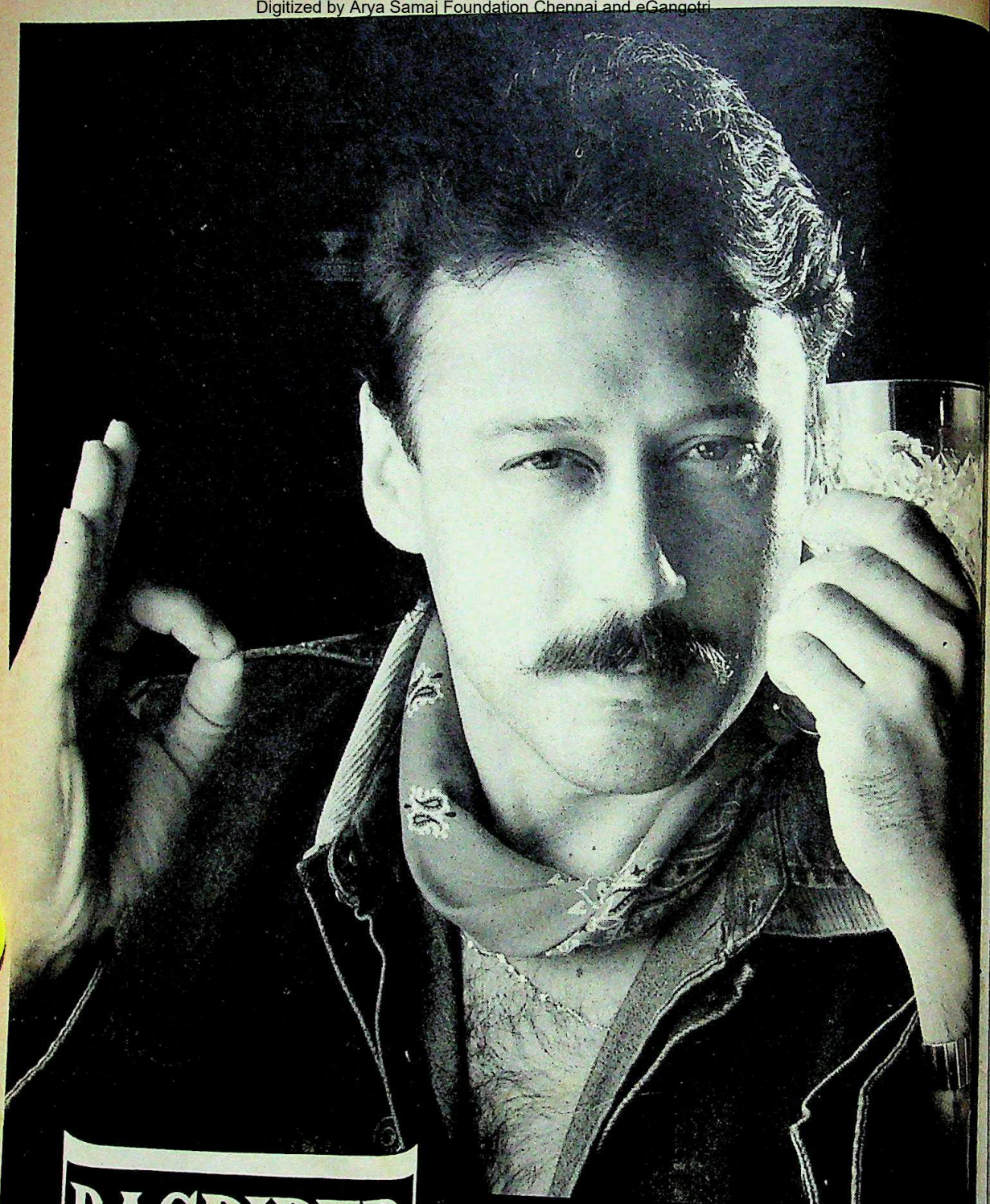

BAGPIPER

Club Soda

बैगपाइपर–जवां शाम का जवां रंग.

जैकी श्रॉफ

everest/88/HL/351hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान में रखते हुए जाफना के बैंक अब हफ्ते में 1000 रु. से अधिक पैसा नहीं देते. लेकिन इससे तमिल चीतों को कोई चिंता नहीं है. उनका पैसा विदेशी मुद्रा को बदलकर आता है. स्थानीय स्तर पर भी काफी पैसा जुटा लिया जाता है. तमिल ईलम के अनुसंधान संगठन के इंजीनियर एम. किंग्सले के अनुसार तमिल चीते प्रांत के 77 लाख ताड़ के पेड़ों को पूरी तरह अपने नियंत्रण में लेने की सोच रहे हैं जिससे इसकी ताड़ी, चीनी, खांड, शराब और ईंधन से कमाई हो. वे कहते हैं, "हमारे नेता प्रभाकरन ने ताड़ को राष्ट्रीय वृक्ष घोषित किया है."

अगर जाफना पहुंचना खर्चीला है तो वहां से बाहर आना भी. यहां का एक नौजवान कहता है, "तमिल चीतों की अनुमति के बिना यहां से उड़कर जाना भी संभव नहीं है." 100 रु. के साथ अर्जी देनी होती है जिस पर स्थानीय गारंटर के दस्तखत होने चाहिए. जाने की अनुमति मिलने पर उस आदमी को राष्ट्रीय रक्षा कोष में दो स्वर्ण मुद्राएं देनी पड़ती हैं. अगर पूरा परिवार जा रहा हो तो संपत्ति के सारे कागजात एलटीटीई को सौंपने पड़ते हैं. कोलंबो में काम कर रही एक महिला की जमीन जायदाद उन्होंने इसी तरह हड़प ली. वे कहती हैं, "यहां जीवन अंधे युग के जीवन जैसा है."

यहां रह गए लोग किसी भी तरह का काम तलाशते हैं. खेतों में काम नहीं रह गया है, सो वे साइकिल से माल ढोने का काम करते हैं. जाफना और वावुनिया के बीच हफ्ते में एक बार चक्कर लगाकर कम-से-कम 2000 लोग हर दौरे पर 4000 रु. से अधिक कमा लेते हैं. दूसरे लोग 750 मिली वाली बोतल में भरे किरासन तेल को 200 रु. और मिलावटी पेट्रोल को 2000 रु.प्रति लीटर के भाव से बेचते हैं. और अच्छी कमाई कर लेते हैं.

लेकिन लगता है कि अब एलटीटीई के प्रति आकर्षण मंद पड़ रहा है. लूट-खसोट और जमीन हथियाने का काम सरकार से लड़ाई के नाम पर लंबे समय तक नहीं चल सकता. अनेक लोग भारतीय शांति सेना वाले 'स्वर्णिम दिनों' की याद करने की भी हिम्मत दिखता हैं उनके लिए बरबादी के इस लंबे सफर से कोई भी चीज बेहतर ही होगी. लेकिन ऐसा लगता नहीं कि उनके प्रांत को मुक्ति मिलने वाली है, कम-से-कम तुरंत तो नहीं ही.

राजनीति

महाभियोग का भूत

राष्ट्रपति रणसिंघे प्रेमदास पर से खतरा अभी टला नहीं है. महाभियोग का भूत अभी भी उनके सिर पर मंडरा रहा है. इससे राष्ट्रपति पद उनसे छिन सकता है और उनके राजनैतिक जीवन का अंत हो सकता है. 24 सितंबर से शुरू हुए संसद सत्र का सामना भी उन्हें करना है जिसमें महाभियोग भी आएगा. इसे पिछले महीने विपक्षी श्रीलंका फ्रीडम पार्टी ने पेश किया था. और शासक यूनाइटेड नेशनल पार्टी (यूएनपी) के विक्षुब्धों ने भी उसे समर्थन दिया था. विक्षुब्धों का नेतृत्व पूर्व मंत्री ललित अतुलतमुदली और गामिनी दिसानायके कर रहे हैं. राष्ट्रपति पर भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और संविधान का उल्लंघन करने के आरोप हैं.

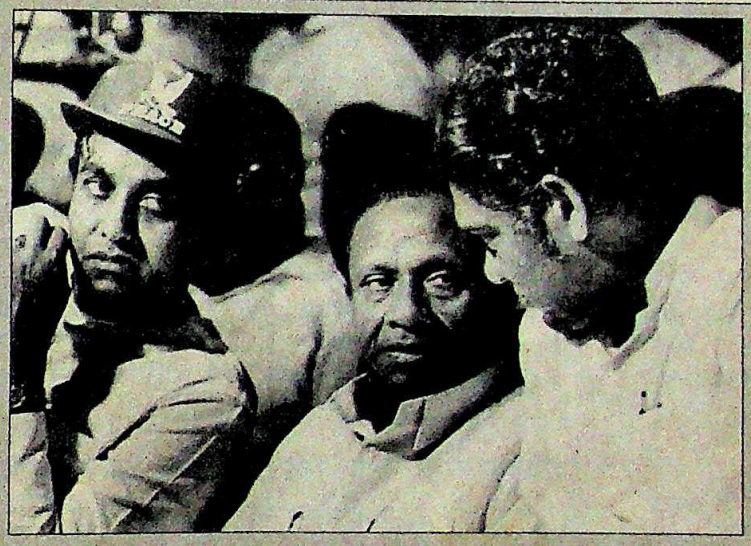

गामिनी, प्रेमदास और अतुलतमुदली: प्रमुख पात्र

जब महाभियोग की प्रक्रिया शुरू हुई तो राष्ट्रपति ने गजब की फुर्ती से जवाबी कार्रवाई की. उन्होंने सेना के प्रमुखों से संविधान के प्रति निष्ठा व्यक्त कराई, पार्टी सांसदों को प्रधानमंत्री से मिलने और उनके प्रति समर्थन व्यक्त करने का निर्देश दिया तथा अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए संसद का अधिवेशन 24 सितंबर तक स्थगित कर दिया.

प्रेमदास की प्रतिद्वंद्वी—फ्रीडम पार्टी—की सिरिमावो भंडारनायके और यूएनपी के विक्षुब्ध उन्हें राष्ट्रपति पद से हटाने के लिए कमर कसे हुए हैं. अतुलतमुदली ने राष्ट्रपति पर एलटीटीई को हथियार देने का आरोप लगाया. जब आरोपों से वे एकदम घिर गए तो उन्होंने कबूल किया कि 1989 में जब तमिल नेशनल आर्मी (टीएनए) उत्तर-पश्चिमी इलाके में मुसलमानों को मार रही थी तो उसके खिलाफ कार्रवाई में सेना ने एलटीटीई की मदद ली थी.

इस बीच, प्रेमदास महाभियोग अभियान को कमजोर करने के लिए भी चालाकी भरी कोशिशें कर रहे हैं. अपने विरोधियों के हमले के जवाब में उन्होंने महाधिवक्ता सुनील डी' सिल्वा से यह संवैधानिक राय जाहिर करा दी है कि संसद अध्यक्ष द्वारा महाभियोग को सदन के रिकार्ड बुक में दर्ज न करने से यह खुद-ब-खुद गिर जाएगा.

बहरहाल, विपक्ष हर कीमत पर प्रेमदास को राष्ट्रपति पद से हटाने की ठाने हुए हैं. वह संसदीय प्रणाली लाने की बहस वाला दांव भी चल रहा है. भंडारनायके कहती हैं, "जब यह अभियान समाप्त हो जाएगा तो हम राष्ट्रपति की कुर्सी पर यह चिप्पी लगाकर संग्रहालय में भेज देंगे कि इस सिंहासन का प्रयोग महाराज प्रेमदास करते थे." लेकिन प्रेमदास ने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली हैं. वे भले ही अभी कमजोर स्थिति में हों लेकिन लड़े बिना मैदान छोड़ने वाले नहीं.

—अमरनाथ के. मेनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय जनता पार्टी

बड़ी मुश्किल में है किधर जा

उत्तर और दक्षिण भारत में कट्टर हिंदूवादियों का समर्थन बनाए रखते हुए दूसरे समुदायों में अपनी लोकप्रियता बढ़ाने और पार्टी की मध्यमार्गी छवि बनाए रखने के लोभ से उलझन की

—इंद्रजीत बधवार और जफर आगा

भारतीय जनता पार्टी इन दिनों जितनी उलझन में है उतनी उलझन में पहले कभी नहीं रही. कट्टर हिंदूवादी तो आज भी इसके साथ हैं ही पर इसे चिंता दूसरे लोगों की भी है. इसलिए यह उलझन में है कि क्या यह मध्यमार्गी पार्टी की लोकप्रिय छवि के लिए उस सुरक्षा का बलिदान कर दे जो उसे अपने कार्यकर्ताओं की बदौलत हासिल है. इस सवाल का जवाब तलाशने में शायद भाजपा को अपनी छवि पर फिर से सोचने को मजबूर होना पड़े.

और यह पार्टी अपने विचारकों के इस दावे को भी झुठला सकती है कि एक बार यह केंद्रीय मंच पर स्थापित हो जाती है तो इसका राष्ट्रीय नेतृत्व, जो मूलतः उदारवादी है, इसके कट्टर समर्थकों के बहुमत पर हावी हो जाएगा. दलील यह है कि भाजपा जब भी राजनीति की मुख्य धारा से कटी है, अपने कट्टरपंथी कार्यकर्ताओं की गिरफ्त में फंस जाती रही है. लेकिन एक बार राष्ट्रीय मंच पर कदम रखते ही उस पर नेताओं का नियंत्रण पुख्ता हो जाता है और समझदार तत्वों का पलड़ा भारी हो जाता है. हालांकि मौजूदा माहौल में इस सिद्धांत के मुंह की खाने की संभावना अधिक दिखती है. पार्टी का जनाधार व्यापक करने की उम्मीद में भाजपा के नेतागण नरम रुख अख्तियार करते हैं पर विहिप और आरएसएस के तेवर उन्हें ले डूबने को आमादा दिखते हैं. कट्टरवादी दबावों को काबू करने में नाकाम रही भाजपा की छवि संकीर्णवादी ही बनती जा रही है. हाल ही में पारित हुए पूजास्थल विधेयक पर उसके रवैये से पार्टी की यह छवि पुख्ता हुई है क्योंकि उसके समर्थकों के इतर समुदाय इसे नापसंद करते हैं.

पार्टी के नए सांसदों का जुझारू व भी उसकी नई पहचान के लिए मद नहीं साबित हो रहा है. इसके अलावा प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश में सरकारों के निराशाजनक कामकाज वजह से भी उसे कोई मदद नहीं मिल है. प्रशासनिक नाकामियों, अ भ्रष्टाचार, अति केंद्रीकरण अल्पसंख्यकों का विश्वास न हासिल पाने की वजह से इन सरकारों ने पार्ट इस लुभावने नारे को मखौल बना दि चुनाव के समय प्रचारित किया गया "सबको परखा, हमको परखें."

इन दबावों के मद्देनजर वह दि नहीं लगता जब इसके कार्यकर्ता इसे कट्टर हिंदू नारों पर जोर फिर से बढ़ाने की मांग करेंगे. राम जन्मभूमि

भाजपा नेता नरम रुख अख्तियार करते हैं पर आरएसएस और विहिप के तेवर चढ़े हुए हैं

कार्टून: अजित नैनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर विहिप की सक्रियता, मथुरा तथा
शी के मंदिरों पर भी आंदोलन छेड़ने की
किंयों की वजह से अगली सर्दियों में
फी गरमागरमी रहने और सांप्रदायिक
साद भड़कने की संभावना है.

धार्मिक स्थलों के विधेयक पर लोकसभा
स्वीकृति चिनगारी का काम कर सकती
पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण
डवाणी ने इसे 'अनुचित और
ावश्यक' बताया, तो विहिप के अध्यक्ष
ोक सिंघल ने चेतावनी दी— "विधेयक
स लो या चुनौती का सामना करो."
जपा और विहिप इस विधेयक के विरोध
एकमत हैं. लेकिन उन्होंने अभी इसकी
नीति नहीं बनाई है. फिलहाल, भाजपा
ुरा में कृष्ण जन्मभूमि और काशी के
श्वनाथ मंदिर के लिए नए अभियान को
कने की भरसक कोशिश कर रही है.
डवाणी कहते हैं, "भाजपा ने अयोध्या के
ावा किसी अन्य धर्मस्थल की बात नहीं
ाई है."

परंतु विहिप राम जन्मभूमि आंदोलन से
ान हटाने के लिए इन दो विवादास्पद
मलों को सुलगाने की पूरी कोशिश कर
ती है. इस बीच अगले संसदीय
चुनावों में राम मंदिर के निर्माण का
दा न पूरा करने के लिए भाजपा की
चाई हो सकती है. इसलिए लगता है कि
हिप मंदिर निर्माण की तिथि 19 नवंबर
तय करेगी. लेकिन यह निर्माण
लान्यास स्थल पर ही होगा जो
वादास्पद स्थल से काफी दूर है. यह समय
टने का ही एक तरीका लगता है.

इसकी वजह यह है कि भाजपा के
ावी वादों और उत्तर प्रदेश में इसकी
रकार बनने के बावजूद अयोध्या में राम
दिर निर्माण की दिशा में अभी कुछ नहीं
ा है. आडवाणी कहते हैं कि वे तनाव या
सी तरह के झगड़े की नौबत आए बिना
दिर बनाना पसंद करेंगे. भाजपा
हासचिव गोविंदाचार्य कहते हैं, "इतिहास
दिर के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की गवाही

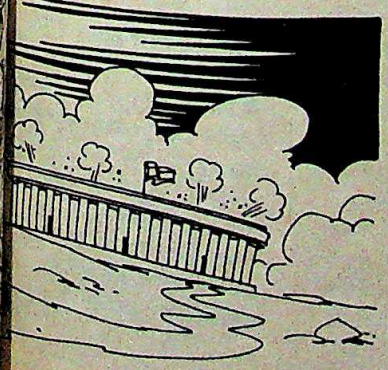

संसद में

अनुशासन को अलविदा

संसद का माहौल इन दिनों गरम रहने लगा है. अराजकता, घूंसेबाजी और हाथापाई रोजमर्रा की बातें हो गई हैं. जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों के पास संयम नाम की चीज दिख ही नहीं रही है. 10 वीं लोकसभा में इस तरह के माहौल के लिए आमतौर पर भाजपा जिम्मेवार है जिसे अपने कार्यकर्ताओं के अनुशासन पर गर्व हुआ करता था. पार्टी का महानतम घोषित गुण आज बड़ी खामी बन गया है.

कार्टूनः अजीत नैनन

भाजपा के सांसद, खासकर पहली बार निर्वाचित सांसद अपनी पार्टी की तेजतर्रार सांसद उमा भारती के नक्शे-कदम पर चलते हुए विरोधी पार्टियों के सदस्यों के खिलाफ विषवमन करते रहे हैं. यही नहीं, वे सदन में मार-पीट पर भी उतर आते रहे हैं. मसलन:

- अगस्त के शुरू में भाजपा सदस्य अपने को 'राष्ट्र विरोधी' कहे जाने पर पर्यटनमंत्री माधवराव सिंधिया से माफी की मांग करते हुए लोकसभा के अध्यक्ष की कुर्सी तक पहुंच गए.
- दूसरे दिन कार्यकर्ताओं ने सिंधिया के निवास में घुसने की कोशिश की.
- उसी महीने लगभग 15 भाजपा कार्यकर्ताओं ने जनता दल सांसद सैयद शहाबुद्दीन के यह कहने पर कि स्वामी "बकवास की बात कर रहा है," उन्हें घेर लिया. यहां स्वामी का मतलब स्वामी चिन्मयानंद से है जो उस समय धर्मस्थल विधेयक पर बोल रहे थे.
- और 9 सितंबर को भाजपा सदस्यों ने भगवान राम के बारे में जनता दल सांसद रामशंकर शास्त्री की कथित अपमानजनक टिप्पणी पर उन्हें सबक सिखाने की धमकी दी.

भाजपा के इस अमर्यादित रवैये से वयोवृद्ध सांसद स्तब्ध हैं. कई वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने तो अपने सहयोगियों से इन हरकतों के कारण किनारा कर लिया है. आडवाणी मानते भी हैं, "हम कुछ मौकों पर कुछ नए सदस्यों के लड़ाकू तेवर को दबाने में विफल रहे हैं." जोधपुर के मृदुभाषी सांसद जसवंत सिंह सफाई देते हैं कि सदस्यों को कई "चीजों को समझने में समय लगेगा."

लेकिन भगवा बिग्रेड का लड़ाकू वर्ग इससे असहमत है. उनमें से कुछ "आंख के बदले आंख" की नीति अपनाए जाने के पक्ष में हैं. राजस्थान के पूर्व मुख्य न्यायाधीश गुमानमल लोढ़ा पूछते हैं, "एक सदस्य हनुमान का मजाक उड़ाते हैं, दूसरे सदस्य भगवान राम के बारे में अपमानजनक बातें करते हैं. यदि हम भी मुहम्मद पैगंबर के बारे में इन्हीं शब्दों में बात करें तो उन्हें कैसा लगेगा?"

विडंबना तो यह है कि कई प्रतिभाशाली सांसदों के होने के बावजूद 10 वीं लोकसभा का पहला सत्र विश्वास प्रस्ताव पर अटल बिहारी वाजपेयी के विद्वतापूर्ण भाषण या पंजाब में चुनाव टालने पर जसवंत सिंह के तीखे हमले के कारण नहीं याद किया जाएगा बल्कि भगवा बिग्रेड के जय श्रीराम के उद्घोष और अराजकता के लिए याद किया जाएगा.

—जावेद एम. अंसारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देगा. हमने हमेशा कहा है कि मंदिर निर्माण में हम सहयोगी की भूमिका ही निभाएंगे.''

भाजपा के वरिष्ठ नेता अब सुलह-सफाई के उपाय को भी आजमाने पर तत्पर दिखते हैं जिस पर पहले उन्हें विचार भी करना गवारा नहीं था. मसलन, अटल बिहारी वाजपेयी ने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के प्रमुख सदस्य मौलाना अली मियां की सेवाएं प्राप्त करने की कोशिश की हैं. लेकिन ये मृदुभाषी प्रमुख मुस्लिम नेता अभी समर्थन नहीं जुटा पाए हैं. इसलिए भाजपा विवादित स्थल के पास जमीन खरीदने के लिए विहिप पर आश्रित रही है. उत्तर प्रदेश सरकार एक अध्यादेश के जरिए इस जमीन का अधिग्रहण कर

भाजपा सरकारें मुश्किलों का पहाड़

कल्याण सिंह

उत्तर प्रदेश

समस्या	परिणाम
• मुख्यमंत्री और उनके मंत्रियों तथा अधिकारियों के बीच पर्याप्त संपर्क नहीं.	• फाइलें पड़ी रहती हैं; मंत्रियों में नाराजगी; कल्याण सिंह की लोकप्रियता घटी.
• कल्याण सिंह की शह पर अधिकारी अपनी चलाते हैं.	• संबद्ध मंत्री की जानकारी के बिना फैसले.
• केंद्रीय सेवाओं में आरक्षण के लिए फिर से अध्यादेश लाना	• छात्र एक और आरक्षण विरोधी आंदोलन की तैयारी में
• मुसलमानों में असुरक्षा का भाव बढ़ा.	• सांप्रदायिक आग के भड़कने का अंदेशा.

सुंदरलाल पटवा

मध्य प्रदेश

समस्या	परिणाम
• पार्टी के प्रांतीय नेता और मंत्री पटवा की नेतृत्व शैली से नाराज.	• भाजपा के लोगों द्वारा सरकार की आलोचना, इंका के आरोपों पर चुप्पी.
• राजमाता सिंधिया की अध्यक्षता में 'सुपर कैबिनेट' का गठन.	• पटवा के पर कटे; अब मंत्रालयों के फैसले सुपर कैबिनेट की हरी झंडी के बाद होते हैं.
• आडवाणी और सिंधिया जैसे राष्ट्रीय नेता पटवा को खुलेआम शासन चलाने में अक्षम बता रहे हैं.	• पटवा की हैसियत घटी और उनकी सरकार की विश्वसनीयता घटी.
• चुनाव में पराजय के बाद लोगों को खुश करने के उपाय नहीं.	• पटवा सरकार की छवि घूमिल बनी हुई है.

भैरो सिंह शेखावत

राजस्थान

समस्या	परिणाम
• पार्टी और सरकार पर शेखावत का पूर्ण नियंत्रण; अधिकांश मंत्रियों की कोई हैसियत नहीं	• सत्ता का केंद्रीकरण; महत्वपूर्ण फैसलों में देरी.
• मुख्यमंत्री पर काम का बोझ ज्यादा. उन्हें सरकार और पार्टी के छोटे काम भी देखने पड़ते हैं.	• भष्टाचार और सांप्रदायिक दंगों जैसी समस्या से निबटने की फुरसत नहीं; ग्रामीण विकास कार्यक्रमों की सुध नहीं.
• भाजपा सरकार जनता दल (दि.) के समर्थन पर टिकी है जिसने हाल में ही समर्थन वापस लेने की धमकी दी थी.	• मुख्यमंत्री सरकार बचाने के लिए असंतुष्टों को शांत करने में व्यस्त. प्रशासनिक कामकाज पर बुरा असर.

सकती है. उसकी आस कुछ मुस्लिम के इस बयान से बलवती हुई है बाबरी मस्जिद को अयोध्या से 1.5 दूर मुसलमान बहुल नक्खा गांव स्थानांतरित करने को तैयार हो जाए

इसके बाद ही भाजपा-विहिप 'वादे पूरा करने' के लिए ज्यादा से फायदा उठा सकेंगी. और जब सरकार बाकी विपक्ष अधिग्रहण का विरोध कर तो ये दोनों उन्हें हिंदू विरोधी करार सिंहल का हाल का बयान इसी ओर करता है, ''देश को यह निर्णय करना कि यहां मुस्लिम लॉबी की चलेगी या संतों की राय मानी जाएगी.'' सिंहल हैं कि यह विधेयक इंका मुस्लिम लीग नेता बनातवाला के बीच सौदे का नतीजा है कि कां

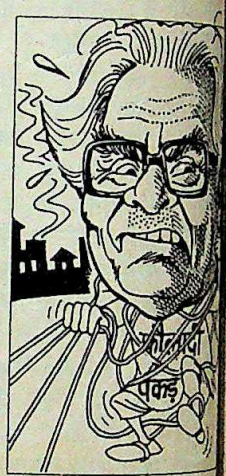

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धानसभा चुनावों में इंका को लीग का र्थन हासिल करने के लिए यह विधेयक ना होगा. आडवाणी भी यही बात कहते ते हैं, छद्म धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध जपा के अभियान को इस विधेयक से श्चित रूप से शह मिलेगी." लेकिन इतना कर ही उन्हें संतोष नहीं हुआ इसलिए ो कहते हैं, "क्योंकि यह अशांति को ावा देता है." भाजपा उपाध्यक्ष केवल रतन मल्काणी कहते हैं, "हम देश में स्थिरता के पक्षधर हैं."

इसलिए विश्व हिंदू परिषद भी अक्तूबर के शुरू में इस विधेयक पर जनजागरण अभियान चलाने की सोच रही है. लेकिन राम मंत्र इसे और वोट दिला पाए या नहीं, विहिप भगवान कृष्ण का आह्वान भी जल्दी ही करेगी. आशा है, यात्राएं चल पड़ेंगी. धर्माचार्यों को आगे लाया जाएगा और मंदिर हिंदू 'पुनर्जागरण' के केंद्र बन जाएंगे.

लेकिन इस बार पार्टी शायद बेदाग न बच पाए. सांप्रदायिकता के विरोध में राजनैतिक ताकतों का व्यापक साझा मंच बनाए जाने की भी उम्मीद कम नहीं है. तब भाजपा की एकला चलो छवि समझदारी भरी नहीं होगी. इसीलिए भाजपा के ये सुनहरी दिन भी उसके लिए पूरा सुकून देने वाले नहीं दिख रहे हैं.

नवाबगंज

आतंकित होकर छोड़ा घरबार

बरेली की नवाबगंज तहसील में सांप्रदायिक उन्माद चरम पर पहुंच गया है. राज्य में भाजपा सरकार बनने के बाद ही इस तहसील के कई हिंदू बहुल गांवों से मुसलमानों का पलायन शुरू हो गया.

यह सिलसिला अभी जारी है. पलायन 15 जून को डांडिया फैजुल्ला गांव के अली अहमद की हत्या के बाद शुरू हुआ. उस दिन नवाबगंज विधानसभा क्षेत्र के लिए मतदान होने वाला था. मुसलमान हिंसा भड़काने के लिए भाजपा उम्मीदवार भागवत शरण को दोषी मानते हैं.

हालांकि चुनाव तो स्थगित हो गया पर सांप्रदायिक लपटें बुझ नहीं पाईं. कम-से-कम 150 मुसलमान परिवार पड़ोस के सैंथल और टांडा गांवों में जा बसे हैं. लेकिन अधिकारी, जैसी कि उनकी आदत है, इस संख्या को कम करके बताते हैं. उनके मुताबिक जून की हिंसा के बाद 91 परिवार भागे. हां, वे यह बताना नहीं भूलते कि 38 परिवार लौट भी चुके हैं.

दरअसल, झगड़ा मुसलमानों और कुर्मियों के बीच है. हालांकि कुर्मी बहुल गांवों में मुसलमानों की संख्या बहुत कम भी नहीं है. नवाबगंज क्षेत्र में 40 फीसदी गंगवार (पिछड़ी जाति कुर्मी) और 25 फीसदी मुसलमान हैं. लेकिन मुसलमान आम तौर पर खेतिहर मजदूर हैं जबकि गंगवार भूमिपति. गंगवारों के साथ भाजपा की ताकत भी जुड़ी हुई है.

इस राजनैतिक लड़ाई में मुसलमान पक्षपात की शिकायत करते हैं. उनका कहना है कि राज्य में भाजपा की सरकार होने से जिला प्रशासन उनकी प्रथम सूचना रिपोर्टों को नजरअंदाज कर देता है. जिलाधीश डी.डी. वर्मा इसका खंडन करते हैं. वे कहते हैं, "मैं खुद इन इलाकों का दो बार दौरा कर चुका हूं. हमने ऐसी व्यवस्था कर दी है कि मुसलमानों की हर शिकायत पर तुरंत कार्रवाई शुरू की जाए." टांडा गांव के, जो मुसलमानों का पनाहगाह बन गया है, 34 वर्षीय पत्रकार अजीज कुरैशी के मुताबिक भाजपा सरकार आने के बाद कुर्मियों ने सात मुसलमानों की हत्या की है. पुलिस ने अभी तक इन मामलों में कुछ नहीं किया.

कुर्मी इसका दोष बरेली संसदीय क्षेत्र के इंका उम्मीदवार अकबर अहमद 'डंपी' पर डालते हैं. उनके मुताबिक डंपी ने मुसलमान वोट हासिल करने के लिए सांप्रदायिक विभाजन भड़काया. लांबा खेड़ा गांव से 15 मुसलमान परिवारों का पलायन हुआ है. वहां के मुक्त प्रसाद गंगवार कहते हैं, "डंपी के यहां कदम रखने के पहले तक यहां हिंदू मुसलमानों में पूरा सौहार्द था. आखिरकार आबिदा अहमद जैसी मुसलमान प्रतिनिधि को भी हमने ही चुना. लेकिन डंपी ने प्रचार के दौरान नफरत भड़काई."

आर.के. गुप्ता

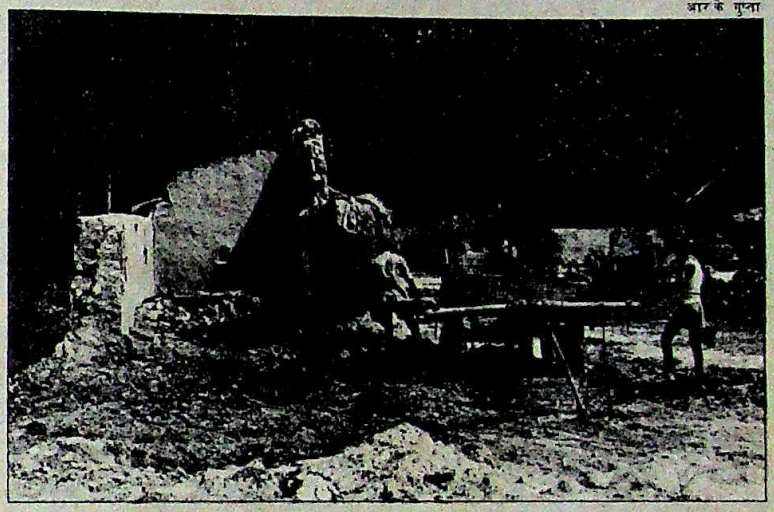

तहस-नहस का नजाराः सांप्रदायिकता का कहर

मुसलमान हिंसा भड़काने के लिए भाजपा उम्मीदवार को दोषी मानते हैं

इस बीच मुसलमानों की दुर्दशा जारी है. जिलाधीश वर्मा कहते हैं, "डर खत्म करने के लिए स्थिति में सुधार करने की जरूरत है. जब तक हम लोगों में भरोसा बहाल नहीं कर लेते तब तक किसी को जबरन लौट आने को नहीं कहते." फिलहाल तो ऐसी कोई घटना नहीं हुई. दरअसल, ग्रेम गांव के पास बांध पर अब्दुल करीम की हत्या के बाद मुसलमानों ने बांध की सड़क पर रात में आना-जाना बंद कर दिया है. मुसलमानों का डर भी निर्मूल नहीं है. वजह: बांध के पास एक दीवार पर यह धमकी लिखी है कि "यहां आठ बजे के बाद आना मना है, वरना मौत पीछा करेगी."

— बिलीप अवस्थी, नवाबगंज में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो मुल्कों की मुश्किलें

सच पूछिए तो हम इस्लामाबाद से अच्छे-खासे बोर हो चुके हैं. दौरे का जब तीसरा हफ्ता चढ़ जाता है तो पांव पटकने लगते हैं. दिमाग का तापमान बढ़ जाता है और उसका असर हमारी शादीशुदा ज़िंदगी पर पड़ता है. बात-बात पर मियां पर चिल्ला उठते हैं. दिल्ली में ज्यादा वक्त गुजारते हैं. दिल्ली तो भई दिल्ली है. यहां की खाक, धूल और मारुती गाड़ियों से निकला धुआं तक याद आता है. बकौल शायर, "छूटती नहीं है मुंह से यह जालिम लगी हुई."

तो साहब हमने अबकी बार हिम्मत करके अपने शौहर को नोटिस दे दिया. या तो वे इस्लामाबाद छोड़ दें या फिर हमें. अबकी बार उन्होंने दिल्ली फोन करके हमें बताया कि अब हम लाहौर में रहेंगे. हम बड़े खुश हुए और लाहौर आ गए. यहां घर ढूंढ़ रहे हैं. किराया इस्लामाबाद से कुछ कम है. इस पर हमारे एक दोस्त ने बड़ी मजेदार बात कही. बोले, "बेफिक्र रहो, लाहौर में जायदाद के दाम अभी नहीं बढ़ेंगे. ऐसा सिर्फ उस हाल में होगा जब हिंदुस्तान से दोस्ती हो जाएगी और यहां बनिए आकर कारोबार करेंगे." हम उनकी राय से काफी हद तक सहमत हैं. सोच रहे हैं, कोई छोटा-मोटा घर खरीद ही लें. जिस दिन हिंदुस्तान और पाकिस्तान का साझा बाजार होगा तो घर बैठे-बैठे हमारी चांदी हो जाएगी. कहते हैं कि उम्मीद पर दुनिया कायम है.

अबकी लाहौर जाना था. सोचा, सड़क से सरहद पार करते हैं. शान-ए-पंजाब में दिल्ली से अमृतसर गए. वहां सरहद तक 100 रु. की टैक्सी की और 300 रु. से कम में लाहौर पहुंच गए.

सड़क से सरहद पार करने में अजीब-सा लगा. चंद कदम चलकर दूसरा मुल्क. दोनों तरफ एक जैसी शक्लें. इधर भी पंजाबी जुबान, उधर भी. अमृतसर में स्वर्ण मंदिर में जियारत की और लाहौर जाते वक्त मियां मीर के मज़ार पर माथा टेका. वही मियां मीर जिन्होंने स्वर्ण मंदिर का नींव पत्थर रखा था. न जाने यह सियासी नफरतें कब मिटेंगी.

वैसे, हमसे कोई पूछे तो हम इन दो

रेखांकन: जयंतो

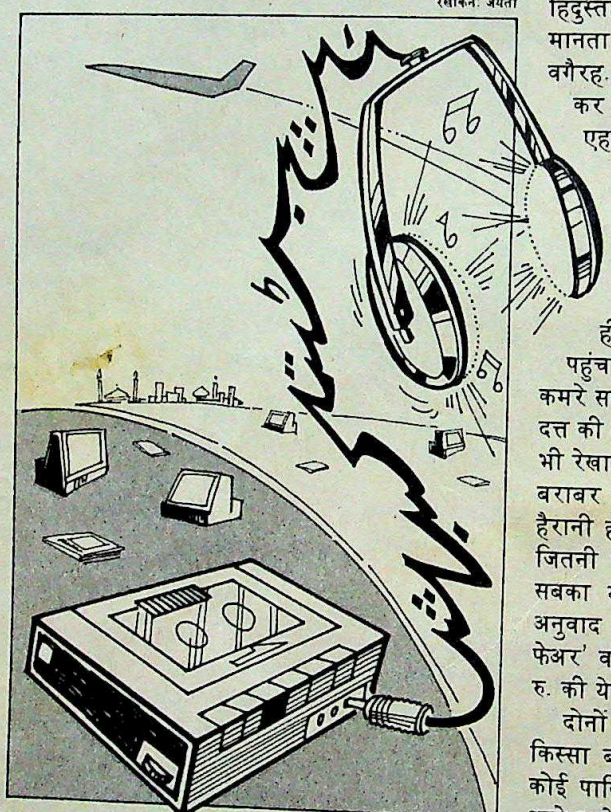

"भारत-पाक सरहद के दोनों तरफ एक-सी शक्लें. इधर भी पंजाबी जबान, उधर भी. पर न जाने यह सियासी नफरतें आखिर कब मिटेंगी?"

■ ■

मुल्कों में दोस्ती का हल बता सकते हैं. हिंदुस्तान अगर अमिताभ बच्चन और लता मंगेशकर को कुछ अरसे तक पाकिस्तान भेज दे तो लोग कश्मीर का मसला तक भूल जाएंगे. हमें वे इमरान खां और मेहदी हसन भेज दें. फिर देखिए कैसी लड़ाई, कौन सी लड़ाई?

पिछले माह का किस्सा सुनाएं. हम चार दिन की छुट्टी के लिए नथिया गली चले गए. यह मरी की पहाड़ियों से ऊंची पहाड़ी है. 15 अगस्त हमने वहीं मनाया. 14 और 15 अगस्त की शाम को होटल में जश्ने आजादी मना रहे लड़के-लड़कियां जमा थे. गाने-बजाने का प्रोग्राम चल रहा था. हैरानी हुई कि सारे के सारे हिंदुस्तानी फिल्मों के गाने थे. 'दिल है कि मानता नहीं', 'ओए, ओए', 'जुम्मा चुम्मा' वगैरह. सोचा कि सियासी लीडर कुछ भी कर लें, इन नग़मों का, इन साज और एहसासात का हम बंटवारा नहीं करेंगे. जितने यहां के टीवी सीरियल हमारे मुल्क में शौक से देखते हैं उतना ही जुनून यहां हिंदी फिल्मों का है. फिल्म हिंदुस्तान में रिलीज होने से पहले ही यहां वीडियो पर दुबई के जरिए पहुंच जाती है. जवान लड़कियों के कमरे सलमान खां, आमिर खां और संजय दत्त की तस्वीरों से भरे हुए हैं. यहां के मर्द भी रेखा और श्रीदेवी की निजी जिंदगी में बराबर की दिलचस्पी रखते हैं. आपको हैरानी होगी कि हिंदुस्तान में अंग्रेजी की जितनी मशहूर फिल्मी पत्रिकाएं हैं, उन सबका यहां बड़ी खूबसूरती से उर्दू में अनुवाद होता है. 'स्टार डस्ट', 'फिल्म फेअर' वगैरह कराची में छपते हैं. 30-40 रु. की ये पत्रिकाएं खूब बिकती हैं.

दोनों मुल्कों में यह रिपोर्ट लिखाने का किस्सा बहुत बुरा है. हम यहां आएं हैं कोई पाकिस्तानी हिंदुस्तान जाए तो उसे आते-जाते पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करानी पड़ती है. हमारी दोस्त का एक नौकर हिंदुस्तान गया. उसके रिश्तेदार मद्रास के करीब किसी गांव में रहते थे. हमने उनसे कहा, "भई रिपोर्ट करवाना मत भूलना. खैर, वह जब वापस आया तो बड़ा दुखी था. बोला साहब मैं अपने गांव गया, थाने ढूंढ़ा और बताया कि मैं 'रिपोर्ट' करने आया हूं तो पुलिसवाले मुझसे पूछे जाएं कि किस चीज की रिपोर्ट करने आए हो? मैंने बताया कि मैं पाकिस्तान से आया हूं वे बोले, "तो मैं क्या करूं?" और मुझे भगा दिया. जब दिल्ली गया तो वहां जिस समय पुलिस ने डांटा कि रिपोर्ट क्यों नहीं की. हवालात में बंद करने की धमकी दी और फिर बड़ी मुश्किलों से छोड़ा. तो साहब, यह है दो मुल्कों की एक कहानी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माईक्रो ओवन से 53% अधिक जल्दी पकाता है

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

उत्तर प्रदेश

☐ **इलाहाबाद: चौक:** गुरु प्रसाद हीरा लाल, नॉवल्टी हाऊस 6-C, कमला नेहरू रोड, पावर हाऊस के पास, एस. नसीम अहमद एण्ड कं० गुप्ता ब्रदर्स लाल डिग्गी चौक ● **ठठेरी बाजार:** राजा राम अनन्त प्रसाद, लक्ष्मी बर्तन गृह ● **सिविल लाईन्स:** अल्का इंटरप्राइसिस, खन्ना भाई ● **कटरा:** जेन ट्रेडिंग कं०, ☐ **आगरा: कोरट बाजार:** आगरा बर्तन भण्डार, आहूजा बर्तन भण्डार, अग्रवाल बर्तन भण्डार, स्टील हाउस, मानसिंह मोहन लाल, सी०के० बर्तन भण्डार, दौलत मार्केटउ जौहरी बाजार, गुप्ता ग्लास स्टोर, सुभाष बाजार. ☐ **अलीगढ़: महावीरगंज:** सी०एस० गुप्ता एण्ड कं०, जय दीपक बर्तन भण्डार, लीलाधर बाबूलाल, हजारी लाल किशोरी लाल, दीपक बर्तन भण्डार, रेलवे रोड़. ☐ **अमरपारा:** मोती रेडिओ सेन्टर. ☐ **बहराइच:** श्याम लाल एण्ड संस, चौक. ☐ **बलिया:** विजय गन हाउस, स्टेशन रोड. ☐ **बांदा:** बंगाल क्रोकरी हाउस, गुसाई गंज. ☐ **बस्ती:** सुशील कुमार बर्तन मर्चेंट, मंगल बाजार. ☐ **बरेली:** दुआ ब्रदर्स, नीनीताल रोड, मिगलानी कोकरीज, हास्पीटल रोड. संजय स्टील इम्पोरियम, 722 शिवाजी मार्ग. ☐ **देहरादून: पटेल बाजार:** सुशील एण्ड कं०, सत्य प्रकाश एण्ड कं०, कैपिटल स्टोर्स, दाता राम विनोद कुमार, धामवाला. सेठी लाल सुरेश चन्द, पीपल मंडी. ☐ **फैजाबाद:** अग्रवाल क्रोकरी हाउस, देहली दरवाजा, मोहम्मद यासीन एण्ड संस, चौक. हरी बर्तन स्टोर्स, रकाब गंज. ☐ **फर्रुखाबाद:** राज ग्लास एण्ड क्रोकरी स्टोर्स, नेहरू मार्केट. ● **फोहाई रोड:** सालिग राम भोला नाथ, जय प्रकाश नारायण वेद प्रकाश. ☐ **गोरखपुर: जमकल भवन:** श्री गणेश इंटरप्राइसिस, मॉडर्न क्रोकरी म्यूजियम. ● **टाउन हाल:** विजय एजेंसी, किचन म्यूजियम. ● **रेती चौक:** फैन्सी बर्तन स्टोर्स, नारायण बर्तन स्टोर्स, स्टील वाला, सीता राम श्याम लाल, गणेशी लाल एण्ड संस, सिनेमा रोड. ● **माया बाजार:** अमर क्रोकरी सेन्टर. ● **गोरख नाथ रोड:** मोती स्टील हाउस. ☐ **गोंडा: उतरौली रोड:** पारस स्टील इम्पोरियम. ☐ **हरिद्वार: मोती बाजार:** ओम प्रकाश चेला राम. ☐ **हलद्वानी:** सरदार क्रोकरी हाउस, बरेली रोड. प्रेम सिंह बर्तन वाला, बर्तन बाजार. ☐ **हापुड़: रेलवे रोड:** क्रोकरी सेन्टर. ☐ **हरदोई: रेलवे गंज:** श्याम लाल एण्ड संस, काशी राम बनवारी लाल. ☐ **झाँसी: सर्राफा बाजार:** काशी राम मैथिली शरण, संतोष पात्र गृह, बॉम्बे स्टील इम्पोरियम, लक्ष्मी स्टील सेन्टर, सिपरी. ☐ **जौनपुर: हर लाल का रोड:** ग्लास स्टोर्स. ● **औनंव गंज:** भारत ग्लास स्टोर्स. ☐ **कानपुर: हटिया:** गोपी लाल गुप्ता, स्टील हाउस. ● **मेस्टन रोड:** एस.एम. रशीद एण्ड संस, मोहम्मद हनीफ मोहम्मद अनीस, एशिया लाइट हाउस, नफीस क्रोकरी हाउस, जौहरी क्रोकरी हाउस, कुमार फैन्सी स्टोर्स, नवीन मार्केट. ● **हुता गंज:** रस्तोगी स्टील सेन्टर, कृष्ण कुमार उमेश चन्द, भुसा टोली, प्रसीन बर्तन भण्डार, गुमटी नं० 5. ☐ **लखनऊ: नजीराबाद:** कन्हैया लाल प्राग दास. ● **अमीनाबाद:** इन्द्र चन्द जैन, बांके लाल राम सरन, संसार एजेंसी. ● **याहया गंज:** कन्हैया लाल प्राग दास, अजीत प्रसाद अरविंद कुमार. ☐ **लखीमपुर खीरी:** अंबर लाल राधे श्याम, मेन बाजार. ☐ **मेरठ: सदर बाजार:** कृष्णा क्रोकरीज, सुरेश चन्द नरेश चन्द, सोना इलैक्ट्रिक एजेंसी, शकुन बर्तन भण्डार, बेगम पुल. ☐ **मुजफ्फर नगर:** मित्तल इंटरप्राइसिस, भगत सिंह रोड. ☐ **मुरादाबाद:** नवीन ग्लास एजेंसी, कटरा पुरानजट बाजार गंज. ☐ **नजीबाबाद:** श्याम लाल एण्ड संस, चौक. ☐ **नौतनवाँ:** लक्ष्मी बिसाता भण्डार. ☐ **रामपुर: मेस्टन गंज:** अग्रवाल क्रोकरी हाउस, **सफदरगंज:** सलैक्शन इम्पोरियम. ☐ **राय बरेली:** गुप्ता ट्रेडर्स, कैपर गंज, राज बंधु मिलन सिनेमा रोड, राधे श्याम घनश्याम दास गुप्ता, मालखाना. ☐ **रूपईडिहा:** रामदूत स्टोर्स, श्री राम स्टोर्स. ☐ **सहारनपुर: नेहरु मार्केट:** निहाल चंद हरबंस लाल, कृपाल सिंह प्रीतम सिंह, जसवंत राय नरेन्द्र कुमार, सर्राफा बाजार, लक्ष्मी मार्केट. ☐ **शाहजहांपुर:** सहगल क्रोकरीज, सदर बाजार, सहगल गिफ्ट सेन्टर, गोविंद गंज. ☐ **शामली:** सुगन चंद सोहन लाल, बड़ा बाजार. ☐ **सुल्तानपुर:** एस.आर. स्टील इम्पोरियम, शाह गंज, दसरथ लाल एण्ड संस, चौक. ☐ **वाराणासी: बाँस फाटक:** गिरधर दास एण्ड संस, स्टेनलैस स्टील सेन्टर, मित्तल ट्रेडर्स. ● **दास मंडी:** भारत ग्लास स्टोर्स, एस.एम. अयूब एण्ड संस, आइडियल ग्लास हाउस, महादेव प्रसाद हरी राम, सी.के.62/30 काशी पुरा, इब्राहिम रसूलजी, सराय हड़हा, मोहन लाल किशन चंद, विश्वनाथ गली. ☐ **कलकत्ता:** कृष्णा ट्रेडिंग कं०, पी-11, चितपुर स्पर. ☐ **भुवनेश्वर:** जी.पी. सर्विस, 28, बापूजी नगर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-41

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवा तुर्क
मित्रों पर शेर
दफ्तर में तोड़-फोड़
ड्राफ्ट से 'छुड़ा' लिया
मत कहिए, सुनिए
धरना शुरू कर देंगे
समस्या मेरी नहीं
इजाजत नहीं
सब कुछ दांव पर
कोई सुंदर नहीं लगी
बहुत मौतें देख लीं
छोटे कमरे में शुरू
ढेर निमंत्रण
मैं बम चाहता हूं
देश छोड़ भाग गया
घर से निकाल दिया
बाहर से मदद
आज नए नायक हैं
भाई से नाराज
सरेआम पीटा
दोस्त की मूर्ति
ब्यूरो के प्रमुख
दम-खम के साथ
खूबी है तनाव
बस एक शर्त
एकाएक बरी

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-41, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
20 अक्तूबर 1991
उत्तर के लिए देखें:
1-15 नवंबर 1991 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 15 सितंबर 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुन: होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु. दिए जाएंगे.**
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

सवारी कर
मुखपत्र है
साल बरबाद
कु मा र म ग ल म
अधूरी कहानी है
नांदेड़ में
तीखा कुछ नहीं
'क्रां
गु आफत मोल ली ह श त राव के प्रिय ति
र ज र्ष कैफे में खोजा क्ति रा का
गाज गिरा दी
सीमा जान निकाल देगी
द्वा ना द बांधने वाला नहीं मू आ
रौ रा र्द मे मा 'प्रो दा त्म
म न मो ह न सि ह जा फे मो सं
बात में कुछ दम
क जू रे खुले बदन वाले ता काने उस्ताद स द घ
सिं मुख्य वजह घाटे की र ड्डी शि र र्ष'
दुनिया ठहरी नहीं रहेगी
इं ह सा प व न दी वा न
दि ह नु मं त रा व स अब संसद में गांव
रा हु ल ब जा ज स न' पा
हिट लिस्ट में थे
जी नु रू ल ह स न वे सहमत थे स
संरक्षक हैं बचाव के लिए लों गो वा ल
म धु क र गु प्ता म म ता ब न र्जी

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-39 का हल

पुरस्कार विजेता

यज्ञदत्त शर्मा
गांव-पुर, जिला-भिवानी
(हरियाणा)-125032

शिवरत्न गुप्ता
'गोमती कुंज'
डी-33 सरस्वती मार्ग
बनी पार्क, जयपुर
(राजस्थान)

रमेशचंद्र गुप्ता
प्लाट सं. 53 एमआईजी
निकट आरटीओ
रामघाट रोड
अलीगढ़-202001
(उ.प्र.)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं
विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन कहता है कि मर्द रोमैन्टिक नहीं होते?"

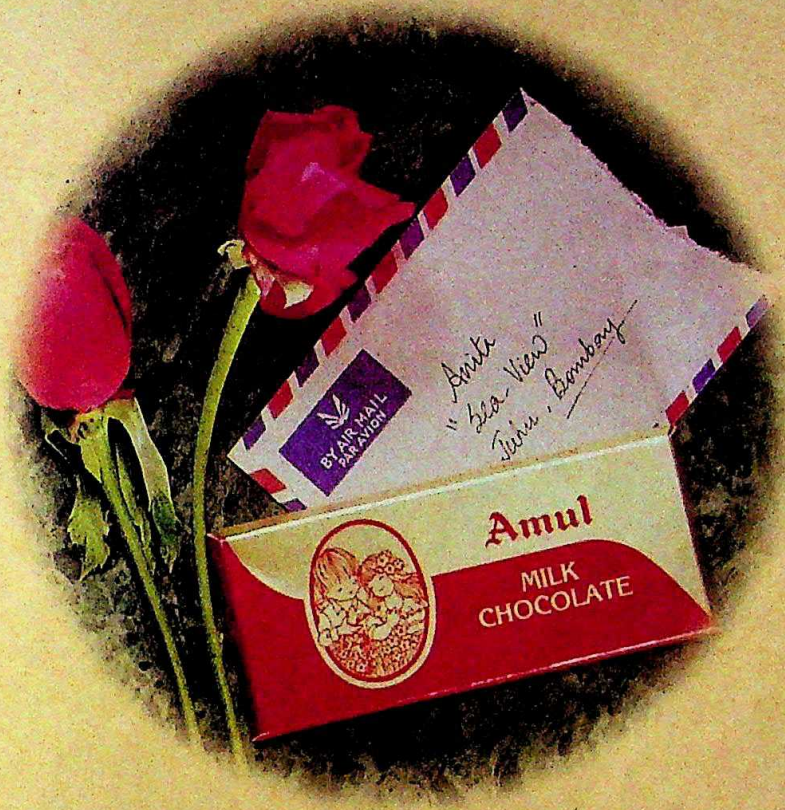

"सरोज पता है संदीप ने मुझे क्या भेजा है.
लिफ़ाफ़े में ख़त नहीं बस एक अमूल चॉकलेट.
पहले तो मेरी समझ में कुछ नहीं आया.

फिर मुझे याद आया...अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट.

और मैं खुशी से झूम उठी."

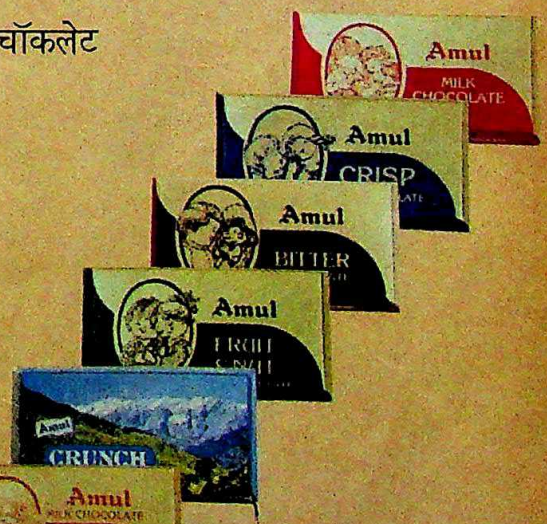

अमूल चॉकलेट

प्यार की मीठी भेंट

६ स्वादिष्ट चॉकलेट
अमूल मिल्क चॉकलेट, अमूल क्रिस्प, अमूल बिटर,
अमूल फ्रूट एण्ड नट, अमूल क्रंच, अमूल ऑरेंज.

वितरक—
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फेडरेशन लिमिटेड,
आणंद ३८८ ००१.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म्यूज़िक टुडे

की नई पेशकश

ऋतु संगीत

ए-91021
बिस्मिल्लाह खान *(शहनाई)*
राग हमीर बहार
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग बसंत बहार

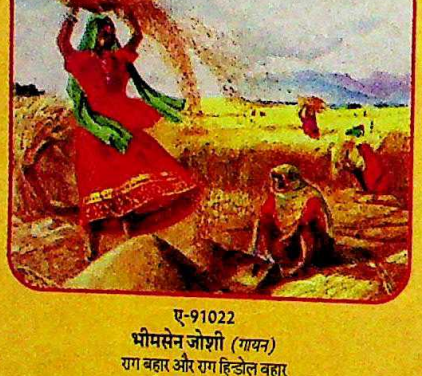

ए-91022
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग बहार और राग हिन्डोल बहार
रवि शंकर *(सितार)*
राग सिन्दुरा और राग मिश्रा काफी

ए-91023
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग बसंत
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग बसंती केदार और राग बसंती कान्हरा

Basant Baha

भारतीय शास्त्रीय संगीत के सुर सागर में ऐसे अनेक
जो ऋतुओं के बदलते मिज़ाज से भलीभांति परि
यह श्रृंखला पेश करती है – दो सबसे हसीन, मोहक
ऋतुओं का एक बेहतरीन
बसंत बहार बसंत के सदाबहार रंगों, उमंगों और
परिपूर्ण है। राग बहार की सुरीली और लहराती तानों से
यूं खिल उठता है जैसे बसंत आने पर फुलवारी

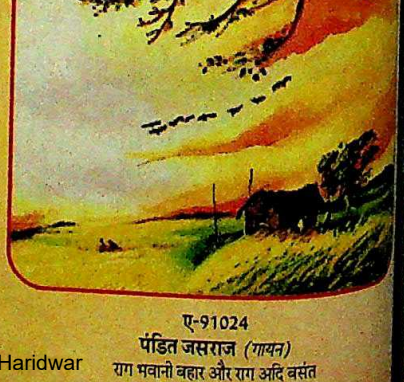

ए-91024
पंडित जसराज *(गायन)*
राग भवानी बहार और राग अदि बसंत
हरिप्रसाद चौरसिया *(बांसुरी)*
राग शहाना बहार और पहाड़ी धुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए-91025
रवि शंकर *(सितार)*
राग मियाँ की मल्हार
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग रामदासी मल्हार

ए-91026
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग मेघ
पंडित जसराज *(गायन)*
राग कुलिया मल्हार

MEGH MALHAR

ए-91027
हरिप्रसाद चौरसिया *(बाँसुरी)*
राग मधु मल्हार
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग मियाँ की मल्हार

ए-91028
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग देस मल्हार
विलायत खान *(सितार)*
राग मेघ मल्हार और बहार

मल्हार में सावन की रिमझिम पिया-मिलन की चाह और
है के गीतों की गूंज है। राग मल्हार के खनकते सुर
ते बादलों और उनका सीना चीरती बिजली की चमकती
ार का आइना बन जाते हैं।

संगीत ... इस श्रृंखला के हर राग को हमारे समय के
न कलाकारों ने बड़ी लगन और साधना से
या-संवारा है। एक घंटे के इन ऑडियो कैसेटों की
डिजीटल रिकार्डिंग सुनकर आप रसविभोर हो जाएंगे।

कैसेट रु. 50 (कर सहित)। पैकिंग एवं वितरण शुल्क के रूप में रु. 15 अतिरिक्त। ऑर्डर कम से कम 4 कैसेटों के लिए हों तथा आगे भी 4 के गुणक में हों।

कृपया ध्यान दें

दिल्ली से बाहर के चैकों पर रु. 15 अधिक जोड़ें।
मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली से भेजे गए चैक/ड्राफ्ट का एम आई सी आर होना ज़रूरी है।
कैसेट डाक अथवा कूरियर द्वारा भेजे जाएंगे।
कृपया ऑर्डर के बाद डिलीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक प्रतीक्षा करें।
उपहार भेजने के लिए संलग्न ऑर्डर-फार्म का प्रयोग करें।
अपने चैक/ड्राफ्ट और अन्य भुगतान 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर इस पते पर भेजें — म्यूज़िक टुडे, पो. बा. 29, नई दिल्ली-110001।
डाकघर ऑफर और कीमतें केवल भारत में लागू होंगी।
ऑर्डर फार्म के न होने पर कृपया अपना नाम और पता भुगतान के साथ डाक द्वारा म्यूज़िक टुडे को भेज दें।

मेल-ऑर्डर फार्म

कोड सं.	कैसेटों की संख्या
ए 91021	
ए 91022	
ए 91023	
ए 91024	
ए 91025	
ए 91026	
ए 91027	
ए 91028	

हाँ, मैं 'म्यूज़िक टुडे' कैसेट रु. 50/- प्रति कैसेट के दर पर दिए हुए विवरण अनुसार खरीदना चाहता/चाहती हूँ। (ऑर्डर कम से कम 4 कैसेटों के लिए हों तथा आगे भी 4 के गुणक में हों। कृपया पैकिंग अथवा वितरण शुल्क के रूप में रु. 15/- अतिरिक्त भेजें तथा दिल्ली से बाहर वाले चैक पर रु. 15/- अतिरिक्त जोड़ें।)

अपने लिए ☐ उपहार के लिए ☐

म्यूज़िक टुडे को देय रु. _____ का क्रास किया गया चैक एवं डिमांड ड्राफ्ट संलग्न है।

ऑर्डर किए गये कुल कैसेटों की संख्या _____

कुल देय राशि रु. _____

मेरा नाम _____

पता _____

_____ पिन _____ फोन _____

उपहार पाने वाले का नाम _____

पता _____

_____ पिन _____

MUSIC TODAY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

What's so great about my room? It's maha–cool! I share it with Madonna, Snoopy, comics, junk & zappy colours. See my walls? Horizon Blue. Rose Neyron. Julia Green. Special Brick. Radiant Superlac's Super shades. Real neat. Check it out!

My favourite place in the world... My room

A dream made true by Superlac Acrylic Emulsion

Shalimar Paints

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

बाड़ ही खा गई खेत

नेताओं और अधिकारियों ने सरकारी जमीन हथियाई

-नरेंद्र कुमार सिंह, जयपुर में

राजस्थान में राजनेताओं, वरिष्ठ आईएएस, आईपीएस अफसरों या उनके बाल-बच्चों और राज्य सरकार के कर्मचारियों पर आरोप है कि उन्होंने ज्यादातर शहरों से सटी बड़ी कीमती जमीन फिर से झोली भरी करने के नाम पर हथिया ली है. राजस्थान के शायद सबसे बड़े भूमि घोटाले की लगातार चल रही पड़ताल से यह तथ्य सामने आता है कि 1986 के बाद के चार वर्षों में इस योजना के अंतर्गत आवंटित की गई 38,000 हेक्टेयर (एक हेक्टेयर में 4 बीघा जमीन होती है) में से 80 प्रतिशत जमीन, जिसकी कीमत करीब 200 करोड़ रु. आंकी गई है, या तो नियमों को ताक पर रखकर दे दी गई या उसका दुरुपयोग हुआ. जांच करने वाले को सबसे ज्यादा ताज्जुब इस बात का है कि इस घोटाले में बड़ी संख्या में मुलाजिम शामिल हैं. हालांकि अभी तक इस बारे में स्थिति पूरी तरह स्पष्ट नहीं हुई है कि इस जमीन का कितना हिस्सा अधिकारियों को गया और कितना राजनेताओं को पर शुरुआती सूची में राज्य के अफसर ही छाए नजर आते हैं.

उम्मीद है कि जिन 24,981 लोगों को जमीन दी गई है उनमें से आधे का आबंटन जल्दी ही रद्द हो जाएगा. मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत कहते हैं, "यह खुली लूट है. ये लोग तो ठगों और पिंडारियों से भी बुरे हैं. जिन अधिकारियों ने कानून का उल्लंघन किया है उनके खिलाफ मैं कार्रवाई करूंगा."

लूट की अनोखी मिसाल

हथियाई गई जमीन: 30,400 हेक्टेयर (1,21,600 बीघा)

कीमत: 200 करोड़ रु.

जमीन पाने वाले: नेता, आईएएस, आईपीएस, और प्रदेश प्रशासकीय सेवा के अधिकारी

नियमों का उल्लंघन:
- मकसद वनीकरण था जबकि 98 प्रतिशत मामलों में पौधे ही नहीं रोपे गए.
- आधी से अधिक जमीन गरीबों को दी जानी थी.
- सरकारी कर्मचारियों ने जरूरी मंजूरी नहीं ली.
- अधिकांश प्लॉट शहर के मास्टर प्लान के इलाके में या नदी के कछार में हैं.

मौजूदा स्थिति:
- 4,183 आबंटन रद्द, 9,588 पर कार्रवाई.
- जुलाई 1990 में योजना ठप.

एक प्लॉट में हाल में रोपे गए पौधे: आबंटन रद्द होने से बचने का उपाय

जमीन का आबंटन राजस्थान भू राजस्व कानून 1986 (बंजर जमीन पर निजी वनरोपण) के तहत किया गया. व्यक्तियों को एक से पांच हेक्टेयर तक जमीन दी गई है. यह जमीन 25 वर्षों के लिए मुफ्त दी गई है और पट्टे की इस अवधि को बढ़ाया जा सकता है. जमीन पाने वालों से अपेक्षा की जाती है कि वे इस पर वन विभाग द्वारा सुझाए पेड़-झाड़ियां और घास लगाएंगे. इसमें से आधी जमीन हरिजनों और भूमिहीनों को दी जानी थी.

लेकिन जयपुर प्रशासन ने पाया है कि न सिर्फ 50 फीसदी आरक्षण को ही ताक पर रखा गया बल्कि 30 फीसदी मामलों में तय दो वर्ष की अवधि में एक भी पेड़ नहीं लगा. वन लगाने के नाम पर अनेक लोगों ने खेती योग्य जमीन हथिया ली या फिर बंजर जमीन को नकदी फसल उगाने लायक बनाया या वहां फार्म हाउस बनाने में लग गए. नियमों के अनुसार शहर के मास्टर प्लान में आने वाले इलाकों या शहरी सीमा से 5 किमी के दायरे में जमीन नहीं दी जा सकती. लेकिन जयपुर में अधिकांश आबंटित जमीन ऐसे ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेकअप में छुपाने से क्या लाभ, साफ़ी से इलाज कीजिए।

आप मेकअप से अपने चेहरे के कील मुंहासे और फोड़े-फुन्सियां केवल छुपा ही सकते हैं, किन्तु साफ़ी इन रोगों को जड़ से दूर करती है। यह रक्त की सभी ख़राबियों का एक भरोसेमंद इलाज है।

साफ़ी 24 आवश्यक जड़ी-बूटियों तथा रक्त-शोधक तत्त्वों का अनोखा मिश्रण है। जो आपकी त्वचा पर दाग-धब्बों, फफूंदी और कीटाणु के कुप्रभावों को फैलने से रोकती है। यह पूर्ण रूप से हानिरहित है। साफ़ी रक्त के विकारों को दूर कर के आपकी त्वचा को साफ़ सुथरा और कोमल बनाती है।

साफ़ी और भी कई व्याधियों से सुरक्षित रहने का एकमात्र साधन है, जैसे कि –

- त्वचा का फटना
- गर्मी के दाने और खुजली
- नकसीर
- बद्धकोष्ट
- खसरा
- पेशाब में जलन
- सामान्य थकावट, आदि

साफ़ी ऋतु परिवर्तन के दिनों में उत्पन्न होने वाले रोगों से बचाव में भी अति लाभदायक है

पचास वर्ष से भी अधिक समय से एक विश्वसनीय रक्त शोधक।

हमदर्द

साफ़ी

त्वचा निखारने का एक सरल साधन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

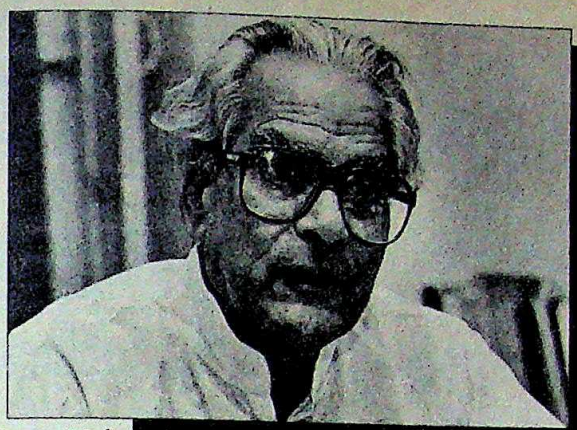

"यह सरासर लूट है. जमीन हथियाने वाले लोग ठगों और पिंडारियों से भी बड़े अपराधी हैं"

भैरों सिंह शेखावत
मुख्यमंत्री

में है और हजारों बीघा
र जमीन यूं ही पड़ी है.
यही हाल दूसरी जगहों
भी है. राज्य में आबंटित
25,000 प्लॉटों में आधे
अधिक तीन जिलों—
पुर, उदयपुर और
पुर—में ही आबंटित
गए जहां जमीन की
मत ऊंची है.

स्वाभाविक रूप से ऐसी
जना में खेतिहर मजदूरों,
जनों, वनवासियों और
नीय गांववासियों को प्राथमिकता देने
बात थी. कम-से-कम आधी जमीन तो
हें दी ही जानी चाहिए थी. लेकिन
पुर जिले में जमीन पाने वाले 2,473
गों की सूची से पता लगता है कि इसमें
दातर 'बाहरी' लोग ही हैं. इस सूची
मुख लोगों में नौ आईएएस अधिकारी,
आईपीएस अधिकारी, प्रदेश
ासकीय और पुलिस सेवाओं के दो-दो
न लोग, कई राजनेता, उनकी पत्नियां
र एक मंत्री के बेटे का नाम भी है.

और सबसे गड़बड़ बात तो यह है कि
बंटन समिति के अनेक सदस्यों ने खुद
अपने रिश्तेदारों की सिफारिश की थी.
पुर के तत्कालीन एसडीओ जे.सी.
हंती ने जो सूची मंजूर की उसमें सबसे
र उनका अपना ही नाम था. उन्हें
मिर तहसील में 10 बीघा
ीन मिली जिस पर आज
भी पेड़ नहीं दिखता.
ी तरह भाजपा की
ायक उजाला अरोड़ा ने
बीघे के दो प्लॉट अपने
के नाम कर दिए. इससे
गंभीर मामला तो
पुर के तत्कालीन
ाधीश जे.एन.आर. गौड़
है. उन्होंने 35 बीघे के
ी सात प्लॉट अपने तीन
और दो दूसरे
तेदारों के नाम कर दिए.
दरअसल, अधिकांश
हरी' लोगों ने आवेदन
में अपना पूरा नाम या
नहीं भरा. एक और
ाधड़ी यह की गई कि
होंने अपनी पत्नियों के
ों से जमीन ली और
का पहला नाम ही
ता. मसलन, मार्च 1989
जयपुर तहसील में 10
ा जमीन किसी
गोविंदराम की बेटी उमा को दी गई. बाद में पता चला कि वे एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी पुरुषोत्तम अग्रवाल की पत्नी हैं.

लेकिन नियमों का खुला उल्लंघन तो सरकारी कर्मचारियों को जमीन देने में किया गया. इस मामले में अनिवार्य सरकारी मंजूरी नहीं ली गई.

अधिकारियों ने अपने बचाव के लिए स्थानीय विधायकों और नेताओं को अच्छी जमीन मुहैया कराई. शेखावत सरकार में आबकारी मंत्री विद्या पाठक के पति, भाजपा नेता आर.के. पाठक और बेटे विजय के नाम बस्ती तहसील में 10 बीघे जमीन है. बस्ती तहसील में ही सितंबर 1988 में तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर की पत्नी सुशीला के नाम 5 बीघे जमीन आबंटित की गई.

पिछले साल जुलाई में भाजपा सरकार ने इस योजना के तहत आबंटन पर रोक लगाई और जांच का आदेश दिया. अब शेखावत के आदेश पर पिछले पखवाड़े तक कुल 4,183 आबंटनों को रद्द कर दिया गया है और 9,588 अन्य आबंटनों के खिलाफ कार्रवाई शुरू की गई है.

घोटाले में शामिल अधिकारी अब आतंकित हैं. राजस्व विभाग के उपसचिव के.के. साभिकी के बेटे राजीव के नाम चार बीघे जमीन आबंटित है. उनसे संपर्क करने की कोशिश की गई तो पता चला कि वे दौरे पर निकलने वाले हैं. उन्होंने कहा, "मैं आपको एकदम आश्वस्त कर सकता हूं कि कोई अनियमितता नहीं हुई है."

अगर राजस्व विभाग का वरिष्ठ अधिकारी ही ऐसा रुख अख्तियार करता है तो इस मामले में न्याय की गुंजाइश कम ही दिखती है. मसलन, इस घोटाले के सरगना कहे जाने वाले मोहंती अब बारा में कलेक्टर हैं. क्या वे अपने जिले में इस घोटाले की निष्पक्ष जांच करा पाएंगे?

इसी तरह, आई.सी. श्रीवास्तव जब जयपुर के आयुक्त थे तब उनकी पत्नी अर्चना के नाम 10 बीघे जमीन आबंटित की गई थी. वहां के तहसीलदार ने उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं की. वहां से उनके जाने के बाद ही जांच की जा सकी. सो, जब बाड़ ही खेत खाने लगे तो और किस पर भरोसा किया जाए?

जमीन हड़पने वाले

आबंटी	संबंध	जमीन*
आर.के. पाठक और विजय पाठक	आबकारी मंत्री के पति और पुत्र	10
धर्मेंद्र, अनीता, प्रभात, अशोक और मंजुला	जयपुर के पूर्व कलेक्टर के बेटे और रिश्तेदार	35
यशोमित्र	भाजपा के विधायक के बेटे	25
अर्चना श्रीवास्तव	सचिव की पत्नी	10
उमा अग्रवाल	आईएएस अधिकारी की पत्नी	10
शांतनु कुमार, प्रमिला और अरविंद	डीआईजी, उनकी पत्नी व पुत्र	5 9
राजीव साभिकी	उपसचिव के पुत्र	4
कमला	अतिरिक्त एसपी की पत्नी	10
पीयूष अग्रवाल	आईएएस अधिकारी के रिश्तेदार	10
सौरभ	एसपी के बेटे	10
जे.सी. मोहंती	बारा के कलेक्टर	10
नीता अग्रवाल	आईएएस अधिकारी के पत्नी	10

* बीघे में (राजस्थान में 1 हेक्टेयर = 4 बीघा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KYOCERA

याशिका के सरल कम्पैक्ट कैमरे

क्योंकि आपको चाहिये सुन्दर फ़ोटो, झंझट बिना, तकलीफ़ बिना!

J - मिनी

सुन्दर और लाजवाब,
याशिका का नया कम्पैक्ट कैमरा।
पूरा ऑटोमैटिक साथ बिल्ट इन फ़्लैश,
विशेष 32mm लैन्स, और अनेक खूबियाँ।

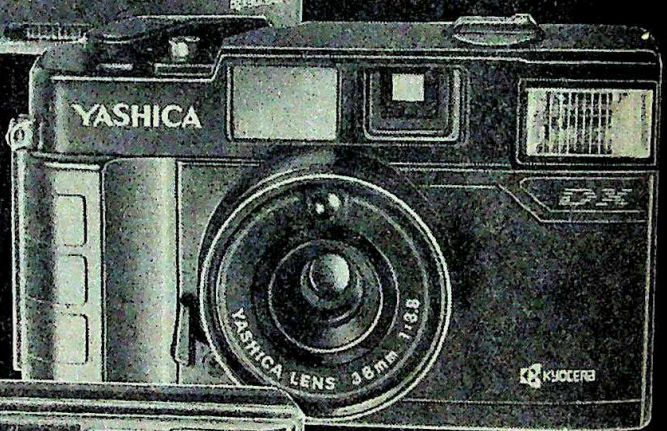

MF-2 सूपर W/सेल्फ टाइमर

क्वालिटी याशिका की, मगर दाम वाजबी।
35mm फ़ारमैट। बड़ा, प्रकाशित व्यूफ़ाइन्डर,
बिल्ट इन फ़्लैश, आसान लोडिंग।
"टॉप आई" Cds सेन्सर की मदद से
हर फ़ोटो सुन्दर।

AFJ2

आधुनिक टेक्नॉलोजी। पूरा ऑटोमैटिक।
बिल्ट इन फ़्लैश, और अनेक खूबीयाँ।
हर तरह की फोटोग्राफी के लिये आदर्श।
कहीं भी, कभी भी।

बस, कहिये "स्मायल प्लीज़"... और दबाइये बटन!

कैमरा हो-तो

याशिका YASHICA

KYOCERA CORPORATION. Optical Equipment Division, 27-8, 6-chome Jingumae, Shibuya-ku, Tokyo 150. Japan
"YASHICA" is a trademark of KYOCERA CORPORATION.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एथलेटिक्स

चुक जाते हैं उम्मीदें जगाकर

एशियाई ट्रैक ऐंड फील्ड स्पर्धा की तैयारी से भारतीय एथलीटों की कमजोरियां उजागर

बात कोई ज्यादा पुरानी नहीं है जब भारतीय एथलेटिक्स का मैदान सितारों की चमक से चकाचौंध हो रहा था. बहादुर प्रसाद और पी.टी. उषा सफलता के कीर्तिमान स्थापित कर रहे थे. दोनों 21 वर्ष की आयु में लक्ष्यां बटोरीं. इन दोनों प्रगति का स्वाभाविक स्ता तय किया होता आज वे एशिया के र्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड से कहीं पर की कायदान चढ़ होते.

लेकिन बहादुर प्रसाद न 1990 में 1500 टर की दौड़ में काला अपना सर्वश्रेष्ठ मय दोहराने के लिए ब भी संघर्ष कर रहे हैं. या लॉस एंजिलिस में काला समय फिर भी तय नहीं कर पाईं र अंततः उन्हें संन्यास ना पड़ा.

क्वालालंपुर में होने ली एशियाई ट्रैक ऐंड ल्ड प्रतियोगिता के ट्रायल्स के लिए छले पखवाड़े चोटी के भारतीय एथलीट जधानी में जमा हुए तो सिर्फ बहादुर ही ालीफाई कर पाए. एथलेटिक्स जगत अपनी दशकों पुरानी प्रशिक्षण नीति पर दोबारा गौर करने के लिए मजबूर होना पड़ा.

एक और निराशाजनक पहलू भी है. शुरू में बड़ी उम्मीदें जगाने वाले जूनियर खिलाड़ी छोटी स्पर्धाओं से बड़ी स्पर्धा तक पहुंचने में ही नाकारा क्यों हो जाते हैं.

पिछड़ती प्रतिभाएं

भवान सिंह

जेनिया एर्टन (19): सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनः 100 मी. में 11.87 से.; एशियाई रिकॉर्डः 11.22 से.; 12 से. से ऊपर का ही समय निकाल रही हैं.

प्रमोद पुष्करणा

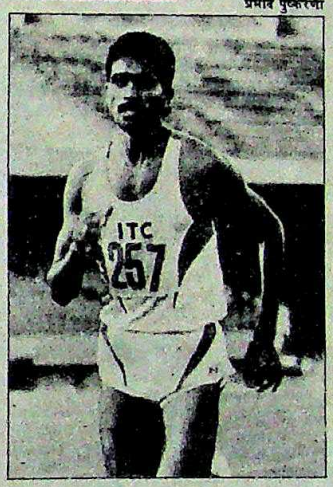

बहादुर प्रसाद (24): सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनः 1500 मी. में 3:41.98; एशियाई रिकॉर्ड 3:43.90; प्रतिस्पर्धा में पिछड़ रहे हैं.

विशेषज्ञों की राय में इन दोनों सवालों का जवाब शायद यह हो सकता है: एथलीट के खेल जीवन के महत्वपूर्ण पड़ावों पर नहीं मिलने वाला प्रोत्साहन और जरूरी सुविधाओं का अभाव ओलंपिक में मैराथन धावक रहे और अब खेल विश्लेषक रंजीत भाटिया की राय में एक और कारण है— "कक्षा 12 का फेर." शैक्षणिक उपलब्धियों की प्रतिद्वंद्विता ज्यादा से ज्यादा गलाकाटू होते जाने से अभिभावकों में एक नई प्रवृत्ति पनप रही है. वे नहीं चाहते कि जिस आयु में उनके बच्चों को पढ़ाई-लिखाई में नाम कमाना चाहिए उसमें वे अपना सारा समय एथलेटिक्स के प्रशिक्षण में गुजार दें.

भाटिया कहते हैं, "प्रतिभाएं तो तेजी से उभर रही हैं लेकिन लगता है जैसे किसी को उनकी तरफ ध्यान देने की फुरसत ही नहीं है." कटक में हुई पिछली अंतरराष्ट्रीय जूनियर स्पर्धा में 42 रिकॉर्ड बनाए गए. इस साल हुई दोनों क्षेत्रीय स्पर्धाओं में 400 से भी ज्यादा प्रतियोगी आए.

विशेषज्ञ अब भारत में दिए जाने वाले प्रशिक्षण की शैली पर ही सवाल उठाने लगे हैं. लगता है तत्कालीन पूर्वी जर्मनी से नकल की गई प्रशिक्षण शिविर चलाने की शैली दोषपूर्ण है. इससे खेल प्रशिक्षण रोजमर्रा के जीवन से कट जाता है और हम जैसे खुले समाज में

चार्टः बी.के. शर्मा

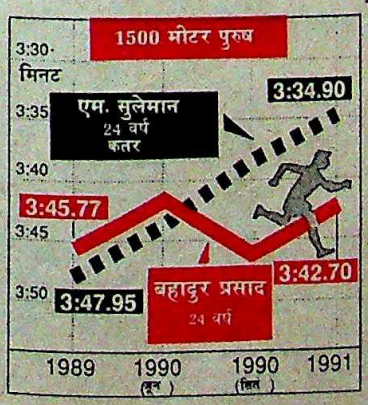

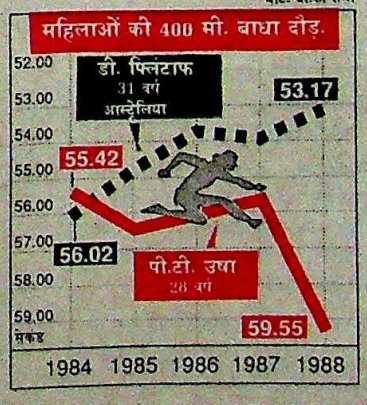

पी.टी. उषा 1984 के ओलंपिक में डेब्बी से दो जगह आगे थीं लेकिन आज वे उनसे पिछड़ गईं. जबकि उनसे तीन वर्ष बड़ी डेब्बी ने 1988 के सिओल एशियाड में उषा को 6 सेकंड से पछाड़कर स्वर्ण पदक जीत लिया था

हादुर प्रसाद ने 1989 नई दिल्ली में हुई शियाई ट्रैक ऐंड ल्ड मीट में अपनी उम्र के कतर के लेमान को 2 से. से छाड़ा था लेकिन उससे 8 से. पिछड़ हे हैं जबकि सुलेमान रव में अपना स्थान ना चुका है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे बचपन से ही सिखाया गया है

एसबीआई म्यूचुअल फ़ंड -
वादों से बेहतर फायदे

- एमआरआईएस - 89 द्वारा 12% वार्षिक लाभ का आश्वासन दिया गया था, जबकि वास्तव में योजना के प्रथम व द्वितीय वर्ष के लिए 13.5% और 14% लाभ दिया गया.
- एमआरआईएस - 87 द्वारा 12% वार्षिक लाभ का आश्वासन दिया गया था, जबकि वास्तव में योजना के प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष में 13.5%, 14% और 16% लाभ दिया गया. तथा 6.9.91 तक लाभांश परचात 46% की पूंजी वृद्धि भी.
- ऑफ शोर फ़ंड 200 मिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक.
- 7 लाख से अधिक खुशहाल निवेशकर्त्ताओं की सेवा में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ातें कम, काम ज़्यादा' खुशी की बात है सबीआई म्यूचुअल फ़ंड को भी इसी सिद्धांत पर विश्वास है."

"कोरे वादों पर मुझे कतई यकीन नहीं. मुझे तो पसन्द है एसबीआईएमएफ का तरीका - पहले काम फिर दावे. इनकी पहली योजनाओं ने अपने निवेशकर्त्ताओं को हमेशा वादे से बढ़कर मुनाफे दिए. तभी तो, मैंने निश्चिन्त होकर किया है इनकी नयी योजना में निवेश. क्योंकि मुझे तो ऐसा निवेश चाहिए जो बिना जोखिम बढ़ता जाए!"

एसबीआईएमएफ की नई निराली 'बातें कम, काम ज़्यादा' योजना

+++ मैग्नम ट्रिपल प्लस

संचयी वृद्धि योजना

- केवल 90 महीनों में ही आपका निवेश तीन गुना हो जाए. तीसरे वर्ष के बाद से आकर्षक कीमत पर पुनः खरीद सुविधा.
- योजना के अंत में अतिरिक्त पूंजीगत लाभ की अदायगी संभव.
- स्टॉक एक्सचेंज की सूची में शामिल.
- अंकित मूल्य/पुनः खरीद कीमत के 75% तक ऋण.
- कर-नियोजन लाभ.
- न्यूनतम निवेश राशि : रु. 1,000/-.

योजना 9 सितम्बर से 31 अक्तूबर' 91 तक खुली रहेगी!

"यही है मेरा अपना म्यूचुअल फ़ंड!"

SBI MUTUAL FUND

ट्रस्टी : एस बी आई कैपिटल मार्केट्स लि.,
202, मेकर टावर्स 'ई', 20 वीं मंज़िल, कफ़ परेड, बम्बई-400 005.

म्यूचुअल फ़ंड और सिक्योरिटी निवेश बाजार के ज़ोखिम से प्रभावित होते रहते हैं. पिछली कार्यकुशलता आवश्यक रूप से भावी परिणामों की सूचक नहीं है. दर्शाये गये लाभ केवल सूचनात्मक हैं, जो कि फंड की निवेश नीति पर आधारित है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिलाड़ी को बाहरी जीवन से जो प्रेरणा मिल सकती है उस पर बंदिश लग जाती है. यही नहीं, जैसा कि एथलेटिक्स के राष्ट्रीय प्रशिक्षक जोगिंदर सिंह सैनी कहते हैं, "लंबे समय तक चलने वाले शिविर एथलीटों को प्रशिक्षण की लत लगा देते हैं." इसके अलावा प्रदर्शन का दिन जैसे-जैसे नजदीक आता जाता है, प्रशिक्षण की लंबी अवधि से उकताए खिलाड़ी को घर की याद सताने लगती है. और वे जैसे निस्तेज हो जाते हैं.

अभी चल रही व्यवस्था में जूनियर खिलाड़ी आसानी से सीनियर स्तर तक नहीं पहुंचता. बढ़िया प्रदर्शन करने वाले जूनियर एथलीट को उसका राज्य तब तक मदद देता रहता है जब तक कि वह जीतता रहता है. लेकिन बड़ी स्पर्धा में पहुंचने के बाद कामयाबी के झंडे गाड़ने में उसे कुछ समय लगता है. यही वह मौका है जहां खिलाड़ी को अधिकतम मदद और प्रोत्साहन मिलना चाहिए लेकिन बहुत कम मिलता है. मिसाल के तौर पर दिल्ली के दिलीप सिन्हा को ही लीजिए. 70 के दशक की शुरुआत में उन्हें मध्यम दूरी का संभावनाओं भरा धावक माना जाता था. लेकिन पुरुषों के वर्ग में पहुंचने के बाद वे दो साल तक करिश्मा नहीं दिखा सके और अंततः चुक गए.

इस विधा में पैसे का बोलबाला होने के बावजूद अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा के अनुभव की कमी की पुरानी समस्या बरकरार है. स्थानीय खिलाड़ियों से काफी आगे चल रही नाचप्पा जैसी खिलाड़ी के लिए अंतरराष्ट्रीय अवसर मिलना बहुत मायने रखता है. एशियाई चैंपियन कतर की फर्राटा दौड़ टीम के प्रशिक्षक ली इवांस कहते हैं, "प्रतियोगी एथलेटिक्स का मतलब है साल भर में 20 से 25 स्पर्धाओं में दौड़ना." अपर्याप्त अवसर मिलने के कारण गर्दिश में जाने वाले खिलाड़ियों के दो सबसे बढ़िया उदाहरण हैं—उषा और बहादुर. बहादुर में तो अभी भी अच्छी संभावनाएं हैं लेकिन आज जबकि उन्हें यूरोपीय और एशियाई सर्किट में सक्रिय रहना चाहिए, वे भारत में ही घुट रहे हैं. यहां उनकी टक्कर का कोई नहीं है. वे कड़वाहट भरे लहजे में कहते हैं, "यहां मुझे अकेले ही दौड़ना पड़ता है. मेरे बाद जिस खिलाड़ी का नंबर होता है वह मुझसे 40 मीटर पीछे होता है." भाटिया की राय में, "भारतीय प्रशिक्षण में प्रतियोगिता के अनुभव की कोई जगह ही नहीं है."

विडंबना देखिए कि खेल को प्रोत्साहन देने के लिए उठाए गए कदमों से खेल का अहित ही हो सकता है. खिलाड़ियों को नौकरी देने वाले कई मालिकों की शिकायत है कि एथलीट को जैसे ही नौकरी मिलती है, खेल में उसकी प्रेरणा खत्म हो जाती है. जैसे मद्रास की सांद्रा थॉमस ने 1981 की राष्ट्रीय स्तर की स्कूली प्रतियोगिता में 100 मीटर बाधा दौड़ जीती थी. लेकिन उनके बाद में सुनने में आया कि वे एअर में परिचारिका हो गई हैं. नौकरी कारण उनके पास समय ही नहीं और शायद आगे तालीम लेने की भी नहीं रही.

एमेच्योर एथलेटिक्स फेडरेशन इंडिया (एएएफआई) का कहना है पिछले साल आईटीसी के साथ मि शुरू की गई उसकी योजना परिस्थितियों में काफी बदलाव सकता है. इस योजना के तह

उम्मीद की किरणें ?

प्रमोद पुष्करणा

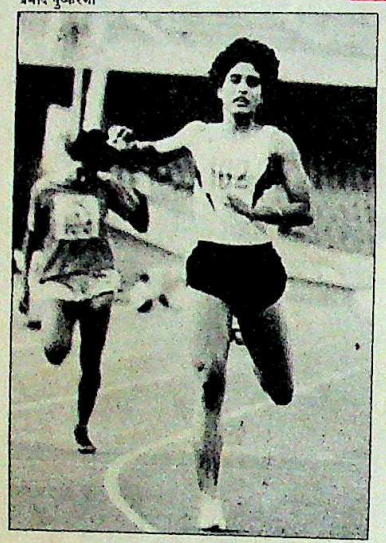

रचिता पांडे (17): सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन: 200 मी में 24.3 से.; एशियाई रेकार्ड: 22.62 से.; 100, 200 मीटर में श्रेष्ठ और 400 मी. में स्वर्ण की दावेदार.

प्रवीण फर्नांडीस (21): सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन: लंबी कूद में 7.83 मी.; एशियाई रिकॉर्ड: 8.23 मी; उम्मीद है कि 8 मी. तक कूदेंगे. तकनीक में सुधार की जरूरत.

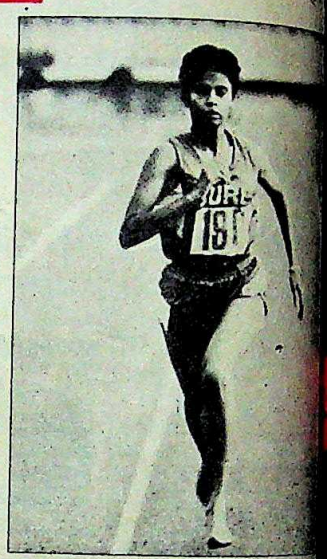

पूनम सिंह (17): सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन मी. में 4:30; एशियाई रिकॉर्ड : 4 ठीक प्रशिक्षण से 5 वर्षों में यह पाटने की संभावना.

साल समग्र प्रशिक्षण के लि प्रतिभावान जूनियर एथलीटों का किया जाएगा. इसमें उनके खान-पा भी खास ध्यान दिया जाएगा. एएए के अध्यक्ष सुरेश कलमाडी कहते हैं 1998 के एशियाई खेलों को ध्या रखकर तैयारी कर रहे हैं."

एक बार फिर भारत में ज संभावनाओं वाले जूनियर खिलाड़ि फौज खड़ी दिखाई दे रही है. ले पदक विजेताओं की सूची में अपन लिखाएंगे या अपने पूर्ववर्तियों की पीढ़ियों की तरह उल्का की चमककर अदृश्य हो जाएंगे, इस ब फैसला सिर्फ एक ही तथ्य से होग यह कि एथलेटिक्स के माई-बाप ले 82 के एशियाड के बाद के घटिया त क्या सबक सीखा है.

—आलोक तिवारी, असीम हांडा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

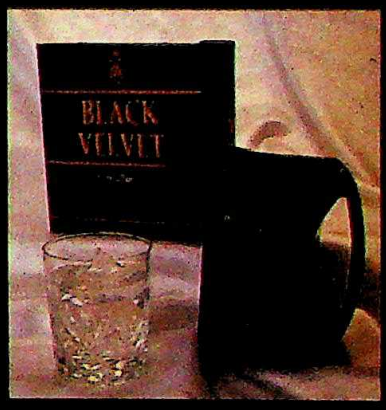

Soda jug bubbling with the spirit of good cheer.

BLACK VELVET

Soda Jug

Available at select outlets only

The best things in life are black!

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्ताद स्की रिज़ॉर्ट

स्विटज़रलैंड

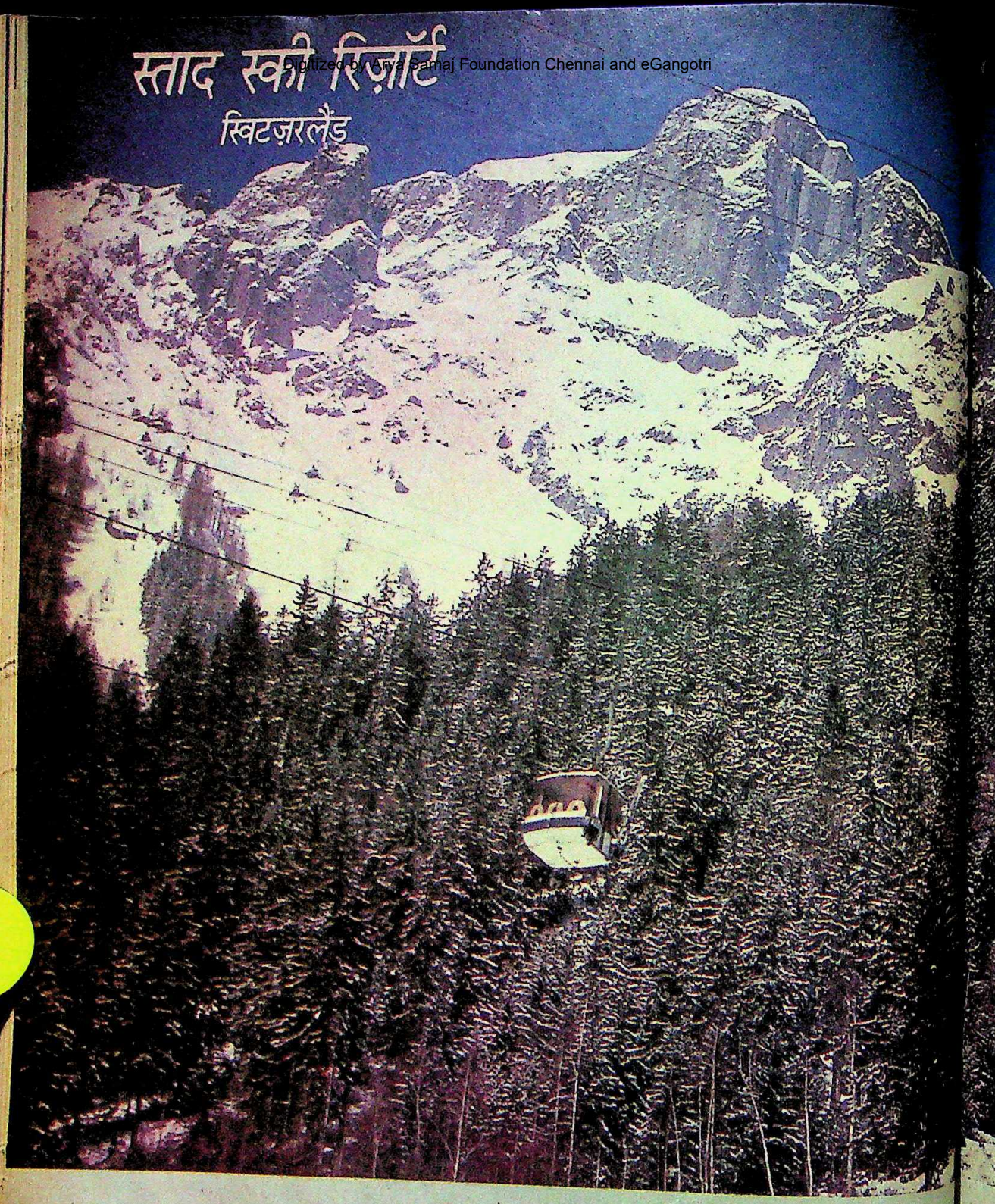

बर्फ पर स्कीज़ की सरसराहट, बड़ी निपुणता से की 'क्रिस्टी' का मनमोहक अंदाज़, नीला आकाश। कोनियेक और जलती आग की अनूठी गर्माहट।

और आप हर तरह निश्चिंत हैं, रंग में हैं... दिग्जैम के साथ।

दिग्जैम यूरोप और विश्व के कई अन्य भागों को बड़ी मात्रा में सूटिंग्स निर्यात करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by

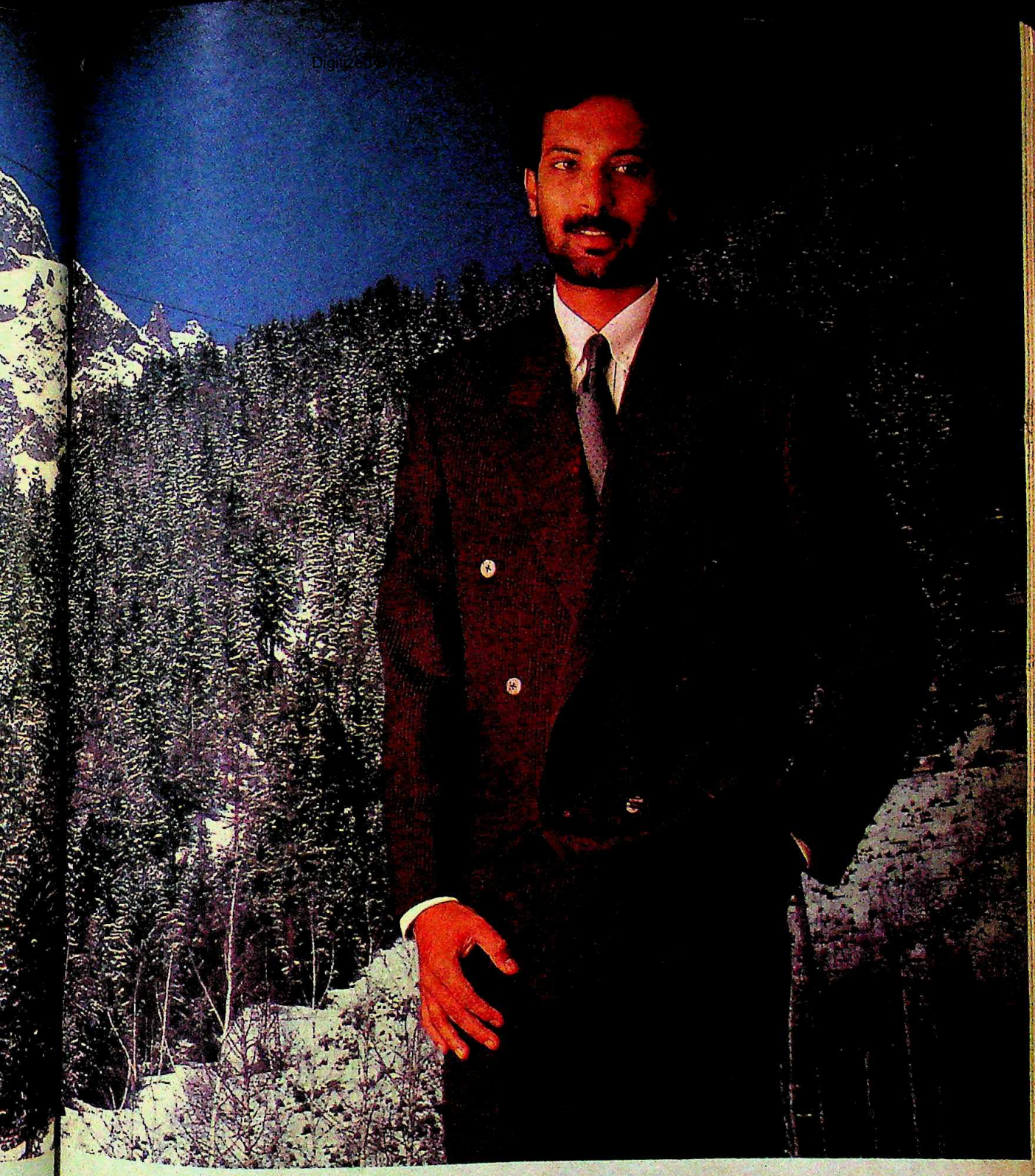

और

DIGJAM

फैशन के कदरदानों की पहली पसंद

वी एक्स एल इंडिया लि. का उत्पाद

SUMANGAL और अन्य प्रमुख स्टोर्स में उपलब्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

F.B. Advertising/DIG/009/VIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेमंत पिठवा

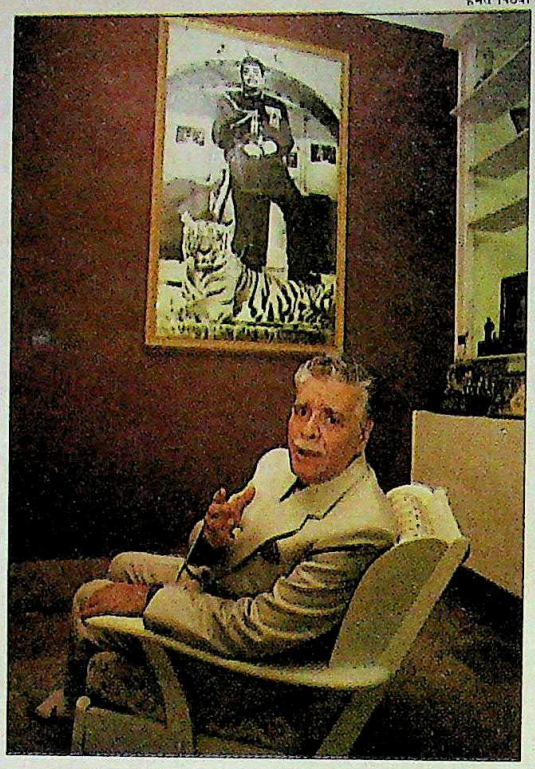

हामिद अली खां उर्फ अजीत

बॉस की वापसी

खलनायकी का अनूठा अंदाज बदस्तूर कायम

अपने बारे में चालू चुटकुले उन्होंने कभी नहीं सुने. वे यह भी समझ नहीं पाते कि आखिर केचअप के विज्ञापन में 'लिली डोंट बी सिली' जैसे चालू वाक्यों का क्या मतलब है. उन्हें तो तब भी आश्चर्य होता है जब सड़कछाप लोग उन्हें देखकर 'मोना डार्लिंग...' वाला डॉयलाग बोलने लगते हैं जो उन्होंने किसी फिल्म में बोला था. जाहिर है, हामिद अली खां उर्फ अजीत वक्त की रफ्तार के साथ आगे नहीं बढ़ पाए. उन्हें पता नहीं कि वे एक मिथक बन चुके हैं.

अजीत एक मिथक के रूप में सबसे ज्यादा चर्चित उस दौरान हुए जब वे बीच में सिनेमा से कोसों दूर हो गए थे. कुछ ने समझा कि वे अब जीवित नहीं तो कुछ ने उनकी गंभीर बीमारी का अंदाजा लगाया.

खलनायकी की दुनिया का यह मंजा हुआ अदाकार अपने सात वर्षों के स्वैच्छिक वनवास के बाद अभी-अभी वापस लौटा है. क्या फिर से अभिनय की कसक उसे खींच लाई? शायद. वैसे वापसी भी वनवास जैसी ही गुपचुप है. जी हां, 'बॉस' फिर परदे पर नजर आने वाले हैं. अजीत इन दिनों सलीम अख्तर की फिल्म 'पुलिस अफसर' में काम कर रहे हैं.

वैसे तो वे 70 वर्ष के हो चुके हैं परंतु चुस्ती में कमी नहीं दिखती. आज भी वे उतने ही चुस्त दिखते हैं जितने 1984 में दिखते थे जब वे हैदराबाद स्थित अपने फॉर्महाउस (उनके चाहने वाले एक गुप्त अड्डे की कल्पना करने लग सकते हैं) में चुपचाप सिमट गए थे.

लेकिन अब वे कैमरे के सामने गरदन उठाने से कतराने लगे हैं— शायद झुर्रियों के कारण. इस बीच खलनायकी की दुनिया भी काफी बदल चुकी है. उनके जमाने के प्रेम चोपड़ा और प्राण जैसे खलनायक अब वहां नहीं हैं. इस मैदान में अब अमरीश पुरी और अनुपम खेर जैसे चरित्र अभिनेता जम गए हैं. मराठी और दक्षिण भारतीय फिल्मों के खलनायक आ गए हैं. यह बताए जाने पर कि वे एक यादगार हस्ती हैं तो वे सोचने लगते हैं कि आखिर क्यों? उनके शब्दों में, "लोग शायद मेरे संवाद सुनना चाहते थे और जब उन्हें मायूसी मिली तो उन्होंने खुद ही ऐसी तस्वीर बना ली." लेकिन इस बात पर वे खुश नहीं दिखते कि उनके इन संवादों को हंसी-मजाक में लिया जाता है. उनके तेवर

अजीतः वही आन-बान

में रत्ती भर भी बदलाव
आया है.

उस भूले-बिसरे अजीत का
चेहरा आज भी कुछेक लोगों
याद है. वह फूले नथुने और अं
बरसाती आंखों का खलनाय
वाला चेहरा ही है. पर
खलनायक तो बहुत बाद में
इसके पहले तक वे नायक ही
करते थे.

उन्होंने तकरीबन 87 फि
में मुख्य भूमिका नि
मधुबाला जैसी हीरोइनों त
साथ काम किया. हीरो अजीत
यह धंधा ठीकठाक ही चल
था कि एक दिन अभिनेता
कुमार ने कहा कि हीरो
भूमिका अब हमेशा ही
मिलती रह सकती. सो,
चरित्र भूमिकाएं भी शुरू कर
चाहिए. सलाह अच्छी थी
चरित्र अभिनेता बनने
में अजीत 'दुश्चरित्र अभि
बन गए. गूंजती आवाज वाला
अभिनेता जल्द ही 'बुरे लोगों
दुनिया' का सरदार बन गया.

फिल्म 'जंजीर' से
खलनायकी चर्चित हुई. फि
'कालीचरण', 'यादों
बारात'—उनके पास फिल्मों का तां
लग गया. और इस तरह खलना
अजीत ने नायक अजीत को काफी
छोड़ दिया.

अब अजीत फिर से 'शैतान बॉस'
भूमिका में उतर पड़े हैं. उनके अनु
"मैं कभी भी भले बुजुर्ग की भूमिका
कर सकता. ऐसे चरित्र इतने बेचारे
के होते हैं कि मुझे यह भूमिका
नहीं सकती." उनके हिसाब से सद
अमरापुरकर और गुलशन ग्रोवर
चेलों की भूमिका कर सकते हैं. और
डार्लिंग? "उसका अभी तक शॉट ही

रेखांकन: अजीत नैनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

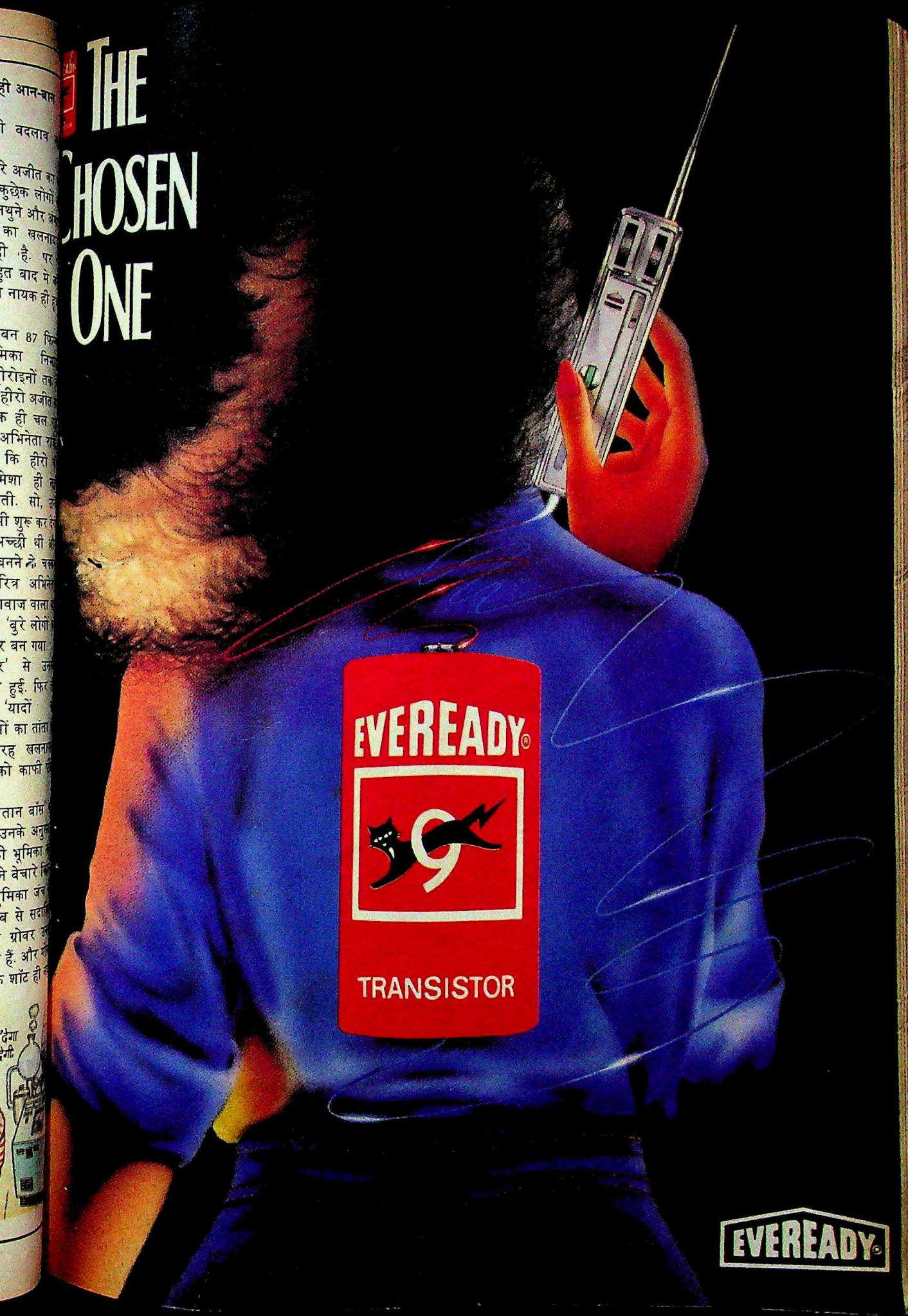
THE
CHOSEN
ONE
EVEREADY®
TRANSISTOR
EVEREADY®

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचमुच बेजोड़

Amul COMFY

बनियान • ड्रावर
अंडरवियर

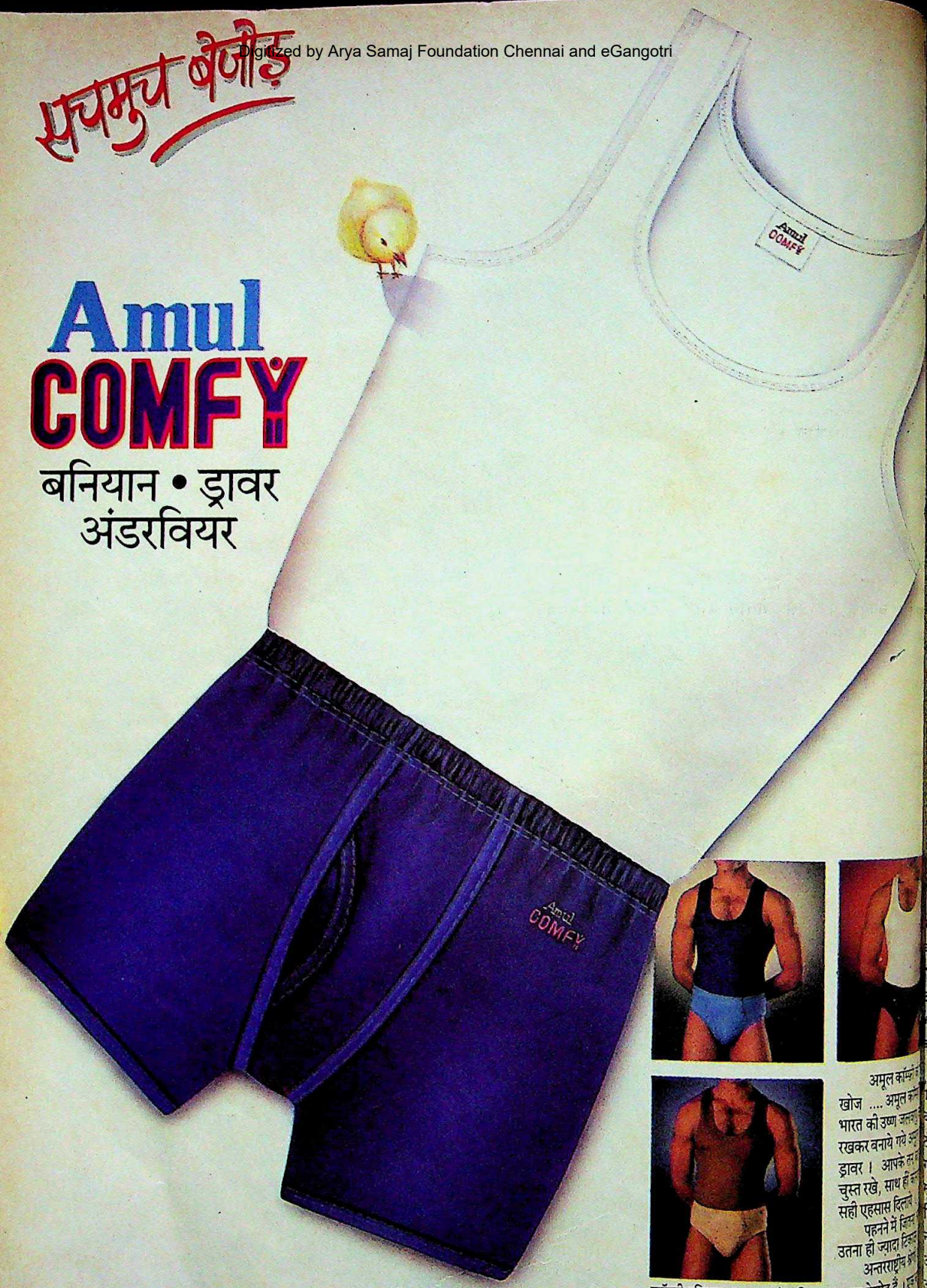

अमूल कॉम्फ़ी
खोज .... अमूल कॉम्फ़ी
भारत की उष्ण जलवायु
रखकर बनाये गये अमूल
ड्रावर। आपके तन
चुस्त रखे, साथ ही
सही एहसास दिलाये
पहनने में जितना
उतना ही ज़्यादा टिकाऊ
अन्तरराष्ट्रीय श्रेणी
कॉम्फ़ी बनियान, ड्रावर व अंडरवियर सचमुच बेजोड़ हैं। एक
देखिए — फिर तो आपको दूसरा कोई जँचेगा ही नहीं।

अमूल कॉम्फ़ी

बनियान • ड्रावर • अंडरवियर

निर्माता जे. जी. इन्डस्ट्रीज़, तिरुपुर • कलकत्ता

STUAD/JG/2/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया है."

उनके अनुसार सब कुछ अपनी जगह पर ही है और पुराने किस्म की खलनायकी का जमाना वापस आ गया है—"मुझे इस नए दौर की दोहरे चरित्र वाली भूमिकाएं बिल्कुल नापसंद हैं." उन्हें तो कुछ बंदूकधारी, एक सुंदर कन्या और कुछ कड़कते हुए संवाद चाहिए. और फिर दिखिए अजीत का रंग.

फिर नायक कोई भी हो—अमिताभ बच्चन, धर्मेंद्र या शत्रुघ्न सिन्हा—अजीत की सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ता और न ही अजीत के चाहने वालों पर. वैसे अजीत अपने जमाने के तमाम बड़े हीरों-हीरोइनों के साथ काम कर चुके हैं—उनकी गरदनें दबोच चुके हैं, उनसे पिट चुके हैं पर इस 'शैतान बॉस' को सबसे ज्यादा प्रभावित किया अभिनेता धर्मेंद्र के व्यक्तित्व ने. वैसे, दिवंगत बलराज साहनी को भी वे बड़े सम्मान से याद करते हैं.

उनके अनुसार, "विलेन में भी कुछ मर्दानगी होनी चाहिए." अपने बारे में उनका पसंदीदा वाक्य 'कालीचरण' फिल्म से है, "सारा शहर मुझे लॉयन के नाम से जानता है." और अब वापस अपनी जगह आकर 'लॉयन' (अजीत द्वारा एक विशेष अंदाज में कहा गया शब्द) को महसूस होता है कि उसने क्या कुछ खोया है. उनका पठानी जोश एक क्षण के लिए उभर आता है, "मैं अपमानित महसूस करने के बाद चला गया था. अब वापस इसलिए आया हूं क्योंकि मेरे बेटे ने मुझे अपमानित किया."

..उन्होंने फिल्मी दुनिया क्यों छोड़ी? 1984 की बात है. फिल्मी दुनिया में 38 वर्ष गुजार चुकने के बाद अजीत एक सुबह ठीक 10 बजे शूटिंग के लिए हाजिर हो गए. चेहरे पर नकली दाढ़ी और आंखों में सुनवार रोब के साथ वे मिनटों में शॉट के लिए तैयार हो गए. पर फिल्म का नौजवान हीरो शाम 4.30 बजे तक नहीं आया. उनके शब्दों में, "मेरे पास खुद ही अपना चेहरा देखते रहने के सिवा कोई काम नहीं था और तब मैंने तय किया कि मैं अब यह सब और बर्दाश्त नहीं करूंगा." लिहाजा, उन्होंने फिल्मी दुनिया से ही विदा ले ली.

और उनके इस वनवास से उनकी बीमारी और बुरे अंत के बारे में तरह-तरह की कहानियां मशहूर हो गईं. लोगों के मन से उनकी स्मृति धूमिल होती चली गई और वे मिथक बन गए. वैसे, छात्रों ने ही उनकी शैली अपनाई. अजीत की तरह भौंहें तानकर वे उनकी ही शैली में डॉयलाग बोलने लगे, "इसको लिक्विड ऑक्सीजन में डाल दो. लिक्विड इसे जीने नहीं देगा, ऑक्सीजन इसे मरने नहीं देगा." उनके कुछ चर्चित डॉयलाग में यह भी लोगों की जुबान पर चढ़ा कि "इसको हैमलेट प्वायजन पिला दो. थोड़ी देर में 'टू बी' से 'नॉट टू बी' हो जाएगा."

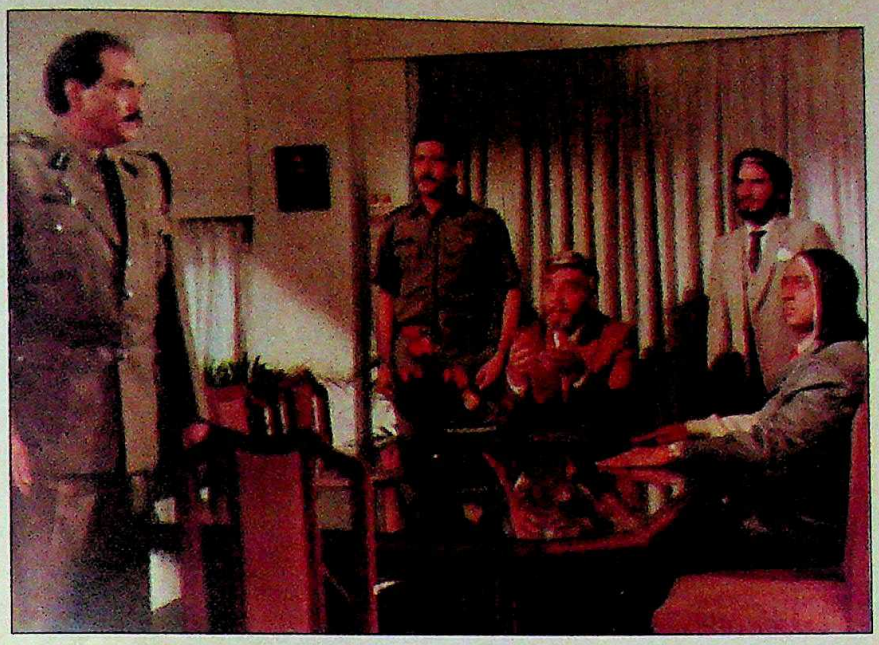

'पुलिस अफसर' में अजीतः बॉस का दरबार

संवाद लेखकों ने खास तौर पर उनके लिए डॉयलाग लिखे. लेकिन जरूरत पड़ने पर अजीत ने भी डॉयलाग बनाए. अपने बनाए एक डॉयलाग को याद करके तो वे आज भी रोमांचित हो उठते हैं, "जब ऊंट पहाड़ के नीचे आता है तभी बेचारे को भी अपनी ऊंचाई का एहसास होता है."

धीरे-धीरे इस तरह के छोटे-छोटे वाक्यों का चलन जोर पकड़ता गया और हर तरह के मौकों पर अजीत के अंदाज में इन्हें दोहराया जाने लगा. फिर कैसेटों और विज्ञापनों का दौर आया और अजीत इस सबसे अनभिज्ञ हैदराबाद में पड़े रहे.

अजीत का कहना है कि जिस दिन उनके बेटे ने उनके साथ बदसलूकी की, उसी दिन उन्होंने खुद को कमरे में बंद कर रिवॉल्वर निकाल ली. लेकिन तभी किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी. अजीत के अनुसार, "मुझे अपने आप पर शर्म आई." जिस घटना ने उन्हें जिंदगी को ही खत्म करने के खयाल को जन्म दिया था, उसी ने उनकी वापसी को बल दिया.

लेकिन अब वे फिल्मों का चुनाव सोच-समझकर करेंगे. फिलहाल उनके पास केवल एक फिल्म है. वे बताते हैं, "किसी ने मुझसे कहा कि उसके पास 'तू मेरा बाप मैं तेरा बाप' फिल्म में बिलकुल मेरे लायक रोल है." अजीत की भौंहें तिरस्कारपूर्ण मुस्कराहट के साथ तन जाती हैं. फिर कैमरामैन की ओर देखकर उनके होंठ बोल पड़ते हैं, "मेरी स्माइल जालिम है न रॉबर्ट." —राहुल पाठक

जानदार जुमले

- "इसको हैमलेट प्वायजन पिला दो. थोड़ी ही देर में 'टू बी' से 'नॉट टू बी' हो जाएगा."
- "इसको वार्निश पिला दो. मर भी जाएगा, फिनिश भी अच्छी आएगी."
- "इसको माइक्रोप्रोसेसर में डाल दो. बाईट बाई बाईट मर जाएगा."
- एक दृश्यः लॉयन अपने बेडरूम में है और मोना डालिंग सोफे पर. फोन की घंटी बजती है. लॉयन के एक आदमी की आवाज, "बॉस, नया इंस्पेक्टर आ गया है." लॉयन, "दाना डाल दो."
  आदमी, "वो रिश्वत नहीं लेता."
  लॉयन, "गोली से उड़ा दो."
  (फिर, मोना की तरफ घूमकर): "सॉरी डॉल. बिजनेस कॉल."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

MAESTRO'S CHOICE

म्यूज़िक टुडे

द्वारा प्रस्तुत

हिन्दुस्तानी वादन

ए 91001
बिस्मिल्लाह ख़ान *(शहनाई)*
राग रागेश्वरी/राग शिवरंजनी

ए 91003
रवि शंकर *(सितार)*
राग आसा भैरव/राग कौसी कान्हरा और मिश्र ग़ारा धुन

ए 91008
हरिप्रसाद चौरसिया *(बांसुरी)*
राग ललित/राग भूपाली

ए 91009
राम नारायण *(सारंगी)*
राग मारवा/मिश्र देस और मिश्र भैरवी

ए 91010
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग भूपाल तोड़ी/राग कीरवाणी

ए 91012
असद अली ख़ान *(रुद्र वीणा)*
राग आसावरी/राग मालकौस

ए 91013
अल्ला रक्खा और ज़ाकिर हुसैन *(तबला)*
मत्त ताल/जय ताल और पश्तो

ए 91018
इमरत ख़ान *(सुरबहार)*
राग मियां की मल्हार/राग श्यामकल्याण

ए 91019
अमजद अली ख़ान *(सरोद)*
राग कमलश्री/राग दुर्गा

ए 91020
एन राजम *(वायलिन)*
राग बागेश्री कान्हरा/झिन्झोटी और राग भैरवी

हिन्दुस्तानी गायन

ए 91002
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग शुक्ल बिलावल/राग रईसा कान्हरा और राग आडंबरी केदार

ए 91004
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग रामकली/राग शुद्ध कल्याण

ए 91005
गंगूबाई हंगल *(गायन)*
राग बिहाग/राग बागेश्री

ए 91006
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग अहीर भैरव/राग संपूर्ण मालकौस

ए 91007
पंडित जसराज *(गायन)*
राग बैरागी भैरव/राग दरबारी कान्हरा

ए 91011
ज़हीरूद्दीन और वसीफुद्दीन डागर
राग ललित/राग कम्बोझी

कर्नाटक वादन

सी 91014
वी दुरैस्वामी आयंगर *(वीणा)*
वैंकटासैल विहार; चिंतैया, [illegible]
रागमलिका तानम; तिल्लाना

सी 91017
टी एन कृष्णन *(वायलिन)*
महा गणपतिम; मारि वेरे; रघुवंश
सुधा/सारसाक्षा; पारूलन्ना [illegible]
रमणै तरूवय

कर्नाटक गायन

सी 91015
एम बालमुरली कृष्ण *(गायन)*
नीदैया रादा; वेगमय/बृहदीस्वरा; ओंकार; [illegible]

सी 91016
महाराजापुरम संथानम *(गायन)*
संकरी समकुरू; राम नीनू नापिना; [illegible]
तनाई/पदासनाति मुनिजना; एही अन्[illegible]
शनमुखम भाजा

आपको आनन्दित करने के लिए — ऑडियो कैसेट

मूल्य

प्रति कैसेट रु. 50 (कर सहित)। पैकिंग एवं वितरण शुल्क के रूप में रु. 15 अतिरिक्त। ऑर्डर कम से कम 4 कैसेटों के लिए हों तथा आगे भी 4 के गुणक में हों।

कृपया ध्यान दें

- दिल्ली से बाहर के चैकों पर रु. 15 अधिक जोड़ें।
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली से भेजे गए चैक/ड्राफ्ट का एम आई सी आर होना ज़रूरी है।
- कैसेट डाक अथवा कूरियर द्वारा भेजे जाएंगे।
- कृपया ऑर्डर के बाद डिलीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक प्रतीक्षा करें।
- उपहार भेजने के लिए संलग्न ऑर्डर-फार्म का प्रयोग करें।
- अपने चैक/ड्राफ्ट और अन्य भुगतान 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर इस पते पर भेजें :— म्यूज़िक टुडे, पो. बा. 29, नई दिल्ली-110001।
- उपरोक्त ऑफर और कीमतें केवल भारत में लागू होंगी।
- ऑर्डर फार्म के न होने पर कृपया अपना नाम और पता भुगतान के साथ डाक द्वारा म्यूज़िक टुडे को भेज दें।

MUSIC TODAY

मेल-ऑर्डर फार्म

कोड सं.	कैसेटों की संख्या
ए 91001	_____
ए 91002	_____
ए 91003	_____
ए 91004	_____
ए 91005	_____
ए 91006	_____
ए 91007	_____
ए 91008	_____
ए 91009	_____
ए 91010	_____
ए 91011	_____
ए 91012	_____
ए 91013	_____
सी 91014	_____
सी 91015	_____
सी 91016	_____
सी 91017	_____
ए 91018	_____
ए 91019	_____
ए 91020	_____

हाँ, मैं 'म्यूज़िक टुडे' कैसेट रु. 50/- प्रति कैसेट के दर पर दिए हुए विकल्प [illegible] चाहता/चाहती हूँ। (ऑर्डर कम से कम 4 कैसेटों के लिए हों तथा आगे भी [illegible] कृपया पैकिंग अथवा वितरण शुल्क के रूप में रु. 15/- अतिरिक्त भेजें तथा [illegible] चैक पर रु. 15/- अतिरिक्त जोड़ें।)

अपने लिए ☐ उपहार के लिए ☐

म्यूज़िक टुडे को देय रु. _____ का क्रास किया गया चैक एवं डिमांड [illegible]

ऑर्डर किए गये कुल कैसेटों की संख्या _____

कुल देय राशि रु. _____

मेरा नाम _____

पता _____

_____ पिन _____ फोन _____

उपहार पाने वाले का नाम _____

पता _____

_____ पिन _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

डीलरशिप में इच्छुक वितरक, संपर्क करें म्यूज़िक टुडे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ानिक गल्प

कठिन ज्ञान की कुंजी

राठी की अनमोल निधि अब हिंदी में भी प्रकाशित हुई

अनंत अंतरिक्ष की किसी आकाश-गंगा में स्थित जीव सृष्टि वाले, ्वी से दोगुने आकार के किसी अति ्रत ग्रह के स्वामी 'महामहिम स्नार्फ ॉफ कार्फ' पृथ्वीवासी अपने त्र मॅन्ड्रेक द मैजिशियन और रे मानवों से मिलने धरती आन पहुंचे हैं! मॅन्ड्रेक की ीन चित्रकथा के पाठक इस रिकल्पना को देख दांतों तले ली दबा लेते हैं. लेकिन हरिए! ली फॉक की ऐसी ल्पना करने से कई बरस पहले पने देश के अग्रणी वैज्ञानिक ॉ. जयंत विष्णु नारलीकर ने ी परिकल्पना पर 'प्रेषित' म का वैज्ञानिक उपन्यास ख दिया था और वह भी मराठी में!

बहुत कम लोगों को पता होगा कि राठी में वैज्ञानिक कहानियां, उपन्यास रसों से लिखे जा रहे हैं. डॉ. नारलीकर इस परंपरा के पुरोधा हैं. लेकिन राठीभाषी वैज्ञानिक ही नहीं, दूसरे क भी विज्ञान कथाएं लिखने में मतरी महसूस नहीं करते. लेकिन हिंदी तो विज्ञान विषयक लेखन भूले से भी ने को नहीं मिलता. सिर्फ 'भोगा हुआ ार्थ' लिखने वालों को ी परिकल्पनाएं शायद म आदमी के हक में न ती हों!

ऐसे में भारतीय ज्ञानपीठ उत्तर प्रदेश सरकार की या निधि के सहयोग से दी में वैज्ञानिक गल्पमाला पने का प्रयास निश्चय ही ंसनीय है. पहले चरण की नों पुस्तकें मराठी वैज्ञानिक प भंडार के मोती हैं. 'यक्षोपहार' में डॉ. रलीकर की बारह कथाएं हैं. 'संभवामि ी युगे' को जाने-माने मराठी विज्ञान क लक्ष्मण लोंढे और इंजीनियरिंग लेज के प्राध्यापक चिंतामणि देशमुख ने लकर लिखा है. डॉ. दत्तप्रसाद भोलकर की 'विज्ञानेश्वरी' मराठी पत्र ाणूस' में धारावाहिक छपी मनोरंजक ज्ञान चर्चाओं का संकलन है.

डॉ. नारलीकर मूलतः खगोलविद् हैं इसलिए उनकी ज्यादातर परिकल्पनाएं अंतरिक्ष से संबंधित हैं. लेकिन नीरस नहीं हैं. उलटे, एक बार शुरू करने के बाद उन्हें

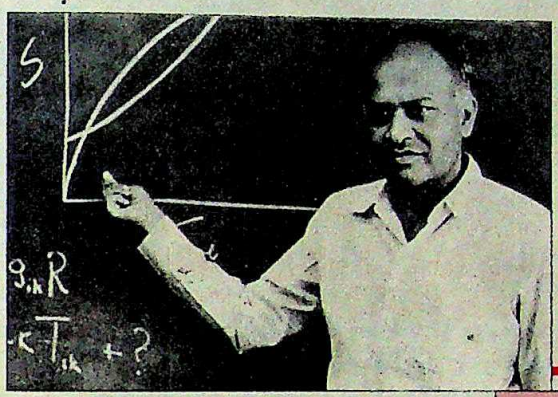

अधूरा नहीं छोड़ा जा सकता. उनकी कहानियां पढ़कर जाना जा सकता है कि फ्रेड हॉयल के तर्क के अनुसार पृथ्वी पर हिम प्रलय कैसे आ सकती है, किसी बड़े तारे में विस्फोट होने पर विश्व किरणों (कॉस्मिक रेज) की बौछार से ओजोन की परत नष्ट हो सकती है, मैटर और एंटीमैटर क्या है, मैक्सवेल का विद्युत चुंबकीय सिद्धांत, डायसन का गोला, डॉप्लर इफेक्ट क्या है और कोई खास

धूमकेतु पृथ्वी के निकट से गुजरने पर जानलेवा वायरस कैसे छोड़ सकता है.

'संभवामि युगे युगे' भी ठोस वैज्ञानिक सिद्धांतों पर आधारित रोचक उपन्यास है लेकिन डॉ. नारलीकर का मशहूर उपन्यास 'प्रेषित' भी इसी थीम पर आधारित था. वैज्ञानिकों का मानना है कि किसी विकसित परग्रह से यदि कोई संदेश आएगा तो वह निश्चित फ्रीक्वेंसी वाली 21 सेंटीमीटर की मोनोक्रोमैटिक वेव पर ही आ सकता है. वैज्ञानिक भी अंतरिक्ष में इसी लहर पर संदेश भेजते हैं. संदेश भेजने का माध्यम यदि यह लहर है तो उसकी कूट भाषा बाइनरी पद्धति है यानी 0 और 1 इन दो संख्याओं के जरिए ही सारी बात कहना. हमारे कंप्यूटर इसी प्रणाली से गणना करते हैं. 'संभवामि...' और 'प्रेषित' में ये दोनों ही तथ्य समान है. सिर्फ कथावस्तु भिन्न है. फिर भी लोंढे और देशमुख एक नई बात तो कहते ही हैं.

'विज्ञानेश्वरी' में विज्ञान के सामान्य से लेकर गूढ़तम सिद्धांत पाठकों से सीधे संवाद कायम करते हुए कथा शैली में लिखे गए हैं. कई बरस पहले सोवियत संघ के मीर पब्लिशर्स ने 'साइंस फ़ॉर एवरीवन' शीर्षक से विज्ञान की हर शाखा पर पुस्तक श्रृंखला निकाली थी जो पढ़ने की रुचि नहीं जगाती थी. लेकिन डॉ. दाभोलकर ने साबित कर दिया है कि कठिन विज्ञान को सरलता

> **"विज्ञान जनजीवन को अंध श्रद्धाओं से उबारेगा. इसे लोगों तक पहुंचाना जरूरी है..."**
>
> —डॉ. जयंत विष्णु नारलीकर

से भी आत्मसात कराया जा सकता है. सबसे बड़ी बात यह कि डॉ. दाभोलकर और डॉ. नारलीकर दोनों ही अंध श्रद्धाओं से बचने के लिए बार-बार चेताते हैं.

तीनों ही पुस्तकों का अनुवाद हिंदी जानने वाले मराठीभाषियों ने किया है लेकिन 'बहोत खून', 'मुष्किल', 'कल्पकता' और 'अगतिकता' जैसे मराठी ढंग से बोले जाने वाले या मराठी शब्दों की भरमार है. हालांकि तीनों का संपादन हिंदी के वरिष्ठ पत्रकार मोरेश्वर तपस्वी ने किया है पर संभव है कुछ त्रुटियों पर उनकी नजर न पड़ी हो. ज्ञानपीठ दूसरी भारतीय भाषाओं में लिखे वैज्ञानिक गल्प को भी हिंदी में प्रकाशित करेगा, ऐसी आशा की जानी चाहिए.

—जगदीश उपासने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोर

इलियास अहमद गद्दी उर्दू के कथाकार हैं. मूल रूप में उर्दू में लिखी गई उनकी इस कहानी में भारतीय पुलिस व्यवस्था में फैले भ्रष्टाचार, अपराधियों के साथ उसकी मिलीभगत और आम आदमी के प्रति निपट उपेक्षा और निरंकुश व्यवहार का एक रोचक नक्शा खींचा गया है. रूपांतर: डॉ. खुर्शीद आलम

अंधेरे में वह साया उसके बग़ल में आकर बैठ गया.

"माचिस होगी यार, तुम्हारे पास?"

उसकी घनिष्ठता से चिढ़ने के बावजूद उसने जेब से माचिस निकालकर बढ़ा दी. दूसरे आदमी ने जेब से एक मुड़ा-तुड़ा सिगरेट सुलगाया. तिली की रोशनी में दोनों ने एक-दूसरे का चेहरा देखा. सिगरेट का लंबा कश खींचकर वह आदमी बोला, "आज कुछ हाथ नहीं लगा. लगता है तुम्हारा भी हिसाब खाली है."

दूसरा आदमी चौंका, "क्या मतलब...?"

वह हंसा, "मतलब यार तुम समझते हो."

"तुम मुझे क्या समझते हो?"

वह फिर मुस्कराया, "वही जो तुम हो."

"मैं क्या हूं...?" उसने ऊंची आवाज़ में डांटकर पूछा.

"वही जो मैं हूं... मगर यार आजकल बहुत मंदा है. अजीब-अजीब तालों का आविष्कार हो गया है. अब जरा चौक की दुकानों को देखो. सबमें इंटरलॉक लगा है. सामने तुम्हें सिर्फ एक छेद दिखेगा."

दूसरा आदमी उठने लगा, "तुम क्या मुझे अपनी तरह चोर समझते हो...?" पहले ने उसको पकड़कर बिठा लिया, "तुम यार झूठ-मूठ नाराज़ हो गए, अगर चोर नहीं होगे तो डाकू होगे."

वह भन्नाया हुआ बोला, "मैं चोर-डाकू नहीं, एक शरीफ आदमी हूं."

वह आदमी बड़े जोर से हंसा, "शरीफ आदमी... हा हा शरीफ... मैं पूछ सकता हूं कि आप जैसा शरीफ आदमी आधी रात को इस सुनसान सड़क पर क्या कर रहा है?"

"देखो भाई! मैं बहुत परेशान हूं."

"परेशानी का कारण?"

"परेशान इसलिए हूं कि मेरी पत्नी एक पार्टी में गई है, अभी तक नहीं लौटी."

"अकेली गई है?"

"नहीं मैं भी साथ था मगर मुझे एक जरूरी काम पड़ गया तो मैं उसको छोड़कर चला आया."

"तो इसमें परेशानी की क्या बात है. वह किसी घर ही में होगी. जंगल में तो होगी नहीं कि उसको शेर खा जाएगा."

"मगर ज़माना खराब है! अगर आखिरी बस निकल गई तो... बड़ी जिद्दी है, डरता हूं कहीं पैदल ही न चल पड़े."

किसी ने टॉर्च की रोशनी उन पर फेंकी.

"कौन हो तुम लोग और यहां अंधेरे में क्या कर रहे हो?" वह हवलदार था. नजदीक आया और दूसरे आदमी को देखकर चौंक गया.

"अच्छा तो तुम हो. कब बाहर आए?"

"बाहर आए तो हवलदार जी कोई महीना भर हो गया."

"यहां क्या कर रहे हो?"

"जी, यहां...जी आराम कर रहा हूं."

"हरामजादे, ठीक से बात कर. यह डंडा देखते हो."

"कहा तो आराम कर रहा था."

"तुम साले"...हवलदार ने उसको कॉलर से पकड़कर उठा लिया, "यह आराम की जगह है?"

वह आदमी अब नहीं डरा. किस्मत में तो दो ही जगहें आराम लिए हैं—एक तो वह ससुराल का

हवलदार साब! आपकी किस्मत में तो दो ही जगहें हैं आराम करने के लिए. एक तो वह ससुराल का बरामदा और दूसरी बाप की सड़क.

और दूसरी यह बाप की सड़क."

हवलदार अचानक दूसरे आदमी की तरफ मुड़ा, "यह कौन है—तुम्हारा क्या है?"

"माफ कीजिएगा," वह आदमी अकड़ कर उठ खड़ा हुआ—"मैं इसका कुछ नहीं हूं, मैं तो इसे जानता तक नहीं हूं."

हवलदार बोला, "और इसके आधी रात को, इस पुल पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुल तुम्हें पता चलेगा कि प्रेसवाले से उलझने से क्या होता है."

हवलदार ने गाली दी, डंडा घुमाते हुए बोला, "इसे देखते हो."

ती मां का हाल सुना रहे थे...?"
लदार साहब गाली मत दीजिए,"
डर से सिटपिटा कर जल्दी से बोल
मैं तो एक मुश्किल में पड़ गया हूं."
मुश्किल क्या है, ज़रा मैं भी सुनूं."
बोला, "इसकी बीवी..."
गई है," हवलदार ने वाक्य पूरा
शंसा भरी निगाहों से उस आदमी
फ देखा फिर अपनी बात जारी
"अगर तुम्हारी बीवी भाग गई है तो
रे में बैठकर रोने से क्या होगा?
ने में रिपोर्ट लिखानी चाहिए."
आदमी घबराकर बोला, "मेरी
गी नहीं है. पार्टी में गई थी. अभी
टी नहीं है."
क्यों मरे जा रहे हो? पार्टी में गई
ट आएगी."
वह... जी अब देखिए ना, रात बीत
अब तक उसको वापस आ जाना
था."
हंसा. बोला, "तुम यार बेकार
हो रहे हो. जाओ जाकर आराम से
ओ. मुद्दू उसको मेजबान खुद ही
गाड़ी से छोड़ जाएगा."
उसी समय सड़क पर एक और
उपस्थित हुआ. बहुत दुबला-पतला,
में मोटे शीशे की ऐनक, बगल में
का या शायद अखबार का एक
इन्हें देखकर तेज-तेज कदम रखते
ने निकल जाना चाहा.
वलदार की गरजदार
सुनाई दी, "कौन

आदमी रुक गया.
ा बात है महाशय,
ीज से बात कीजिए,"
दमी ने अपने से तीन
दार आवाज में कहा.
दार तिलमिलाया,
इस डर से कि पता नहीं
की का चमचा हो.
रमी से बोला, "कौन
कहां से आ रहे हो?"
अखबार में काम
है."
नी रात को कहां से
हो?"
र से... हमारा काम
को होता है."
प्रसन्न होकर बोला,
तो हमारा भी रात को
."
दार ने उसको डांटा,
हरामजादे मुंह बंद

अखबारवाला बोला, "वैसे आज कुछ ज्यादा ही देर हो गई है. असल में मुझे हीरपुर कोतवाली भी जाना पड़ गया था. एक बहुत ही सनसनीखेज वारदात हो गई है आज."

"क्या वारदात हो गई है?" हवलदार ने उत्सुकता से पूछा.

"मर्डर..." नहीं—रेप का केस था," अखबारवाला लापरवाही से बोला, "आजकल रेप के केस आम हो गए हैं."

"यह अपनी तरह का अजीब केस था. रिक्शा पर जाती हुई अकेली औरत को तीन गुंडों ने छुरे की नोक पर उतार लिया."

"वह औरत अकेली थी?" उस आदमी ने घबराकर पूछा.

"जी हां, अकेली थी."

वह आदमी और भी घबराकर जल्दी-जल्दी पूछने लगा, "वह औरत कैसी थी? क्या बहुत सुंदर थी? क्या उसने हरे रंग की साड़ी और उसी रंग का ब्लाउज़ पहना रखा था? उसके माथे पर चोट का निशान था?"

अखबारवाला धीरे से बोला, "मैंने उस औरत को नहीं देखा, क्योंकि मैं जिस समय थाने पहुंचा, उस समय औरत को डॉक्टरी जांच के लिए भेजा जा चुका था."

वह आदमी रुककर बोला. "नाम...? नाम तो मालूम होगा आपको..."

"अभी नाम को पुलिस ने गुप्त रखने को कहा है."

"ओह..." वह आदमी बेचैन-सा हो गया—"देखिए उसके बारे में कुछ और बताइए. उसकी उम्र, उसका हुलिया. थानेवालों से आपकी बात तो हुई होगी."

हवलदार ने उसको डांटा, "इतने उतावले क्यों हो रहे हो. रेप ही तो हुआ है, कोई मर्डर तो नहीं हुआ."

"रेप...! ओह गॉड..." उस आदमी ने अपना सिर पकड़ लिया.

"तो मैं जाऊं...?" अखबारवाले ने अवसर का लाभ उठाना चाहा. मगर हवलदार भी एक ही काइंया था.

"हां जाइए, मगर अपने घर नहीं, थाने..."

"थाने...? आखिर क्यों... मैंने कौन-सा जुर्म किया है?"

हवलदार बेरुखी से बोला, "यह सब वहीं पूछना." फिर उन दोनों की तरफ मुड़ा, "और तुम लोग भी चलो."

प्रेसवाले को गुस्सा आ गया, "देखिए हवलदार, आपको कल पता चलेगा कि किसी प्रेसवाले से उलझने का परिणाम क्या होता है?"

हवलदार ने एक भद्दी-सी गाली दी और अपना डंडा घुमाया, "इसको देखते हो?"

और तीनों चुपचाप चलने लगे.

हवलदार ने थाने के बाहर के हॉल में तीनों को रोककर बड़े बाबू को जगाया और सारी स्थिति की सूचना दी. बड़े बाबू वैसे ही बनियान पहने बाहर आए. तीनों पर एक उचटती-सी निगाह डाली और फिर अंदर चले गए. हवलदार थोड़ी देर में बाहर आकर चोर से बोला, चल बे तुझे ही ठिकाने लगाने को बुला रहे हैं पहले."

प्रेसवाला बोला, "ठहरो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले मुझे बात करनी है बड़े बाबू से."

"तुम दोनों यहां बैठे रहो. चुपचाप," हवलदार ने बेरुखी से उन्हें डांट दिया.

चोर को देखकर बड़े बाबू मुस्कराए, "कहिए, लोटन बाबू कब बाहर आए?"

"हुजूर. महीना हो गया."

"क्या रहे हो इलाके में?"

"जी मैं... जी काम की तलाश में हूं."

"वाह बेटा. आधी रात को काम ढूंढ़ने निकले थे?"

चोर ढिठाई से बोला, "अब हूजूर आप से तो झूठ नहीं बोल सकता."

"सच-सच बता जेब में कितना माल है?"

उसने दो-तीन जेबों की तलाशी ली, बीस रुपए का एक नोट निकाला और मेज पर रख दिया.

"साले, इतने में तो छूटोगे नहीं."

चोर ने फिर इधर-उधर जेबों में हाथ डाले और दस का एक नोट निकालकर मेज पर रख दिया, "और नहीं है हुजूर..."

"और नहीं है...?"

"हवलदार, जरा इस साले को झाड़ो, कहता है और नहीं है."

हवलदार ने उसकी जेबें देखीं, कमर टटोली, "कुछ नहीं है सरकार."

बड़े बाबू ने नोटों को फाइल के नीचे सरका दिया.

वह जैसे ही बाहर निकला, अखबारवाला तेजी से अंदर घुस गया. "साहब, यह बड़ी ज्यादती है. आखिर लॉ ऐंड आर्डर..."

"आप लॉ ऐंड ऑर्डर का मतलब जानते हैं? आधी रात को सड़कों पर घूमना."

"देखिए, मैं अखबार में काम करता हूं और आप जानते हैं कि अखबार का काम रात ही को होता है."

बड़े बाबू ने उसे बड़ी ठंडी आंखों से देखा, "अखबारवाले तो आप समझिए कि देश के सबसे बड़े ब्लैक-मेलर होते हैं. किसी की कमजोरी पकड़ी या किसी का मामला फंसाया और काम बन गया."

अखबारवाला अंदर से सहम गया. अभी हीरपुर थाने के रेप केस में पकड़े गए एक लड़के का नाम न छापने के लिए चार-सौ रुपए दिए थे उसके बूढ़े बाप ने.

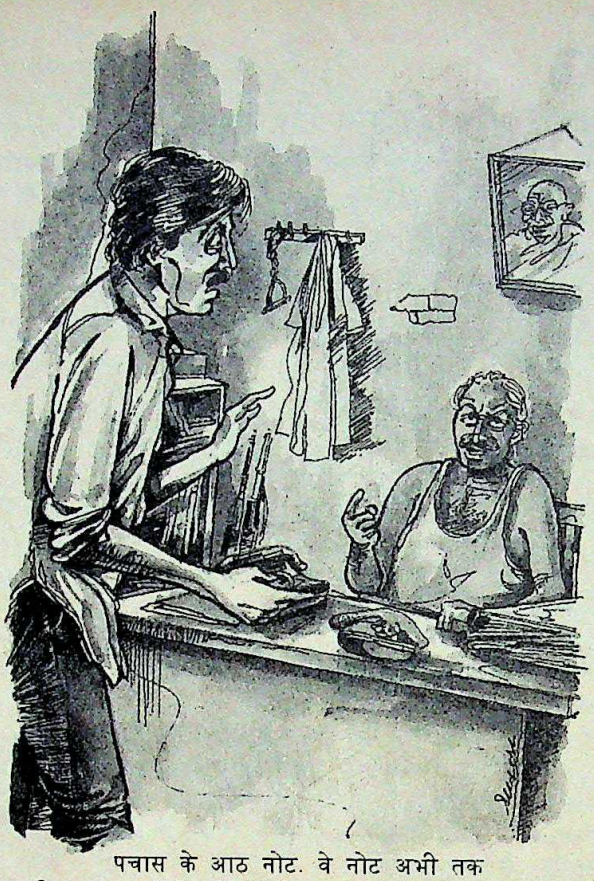

पचास के आठ नोट. वे नोट अभी तक उसकी जेब में पड़े थे. वह नरमी से बोला, "देखिए, यह बहस करने का समय नहीं है, मुझे जाने दीजिए. मेरी बीवी, बच्चे परेशान होंगे.

बड़े बाबू भी उसी नरमी से बोले, "देखिए आपको तो पता ही होगा कि आजकल अपराध उन्मूलन अभियान चल

बड़े बाबू ने उसे सिर से पांव तक देखकर पूछा, "तुम अपनी बीवी से पेशा करवाते हो?" वह सिर से पांव तक कांप उठा.

रहा है मैं आपको रात भर हवालात में रखूंगा. सुबह आप लोगों का चालान कर दिया जाएगा. स्पष्ट है आप निर्दोष हैं तो अदालत से तुरंत छूट जाएंगे." अखबार-वाले का मुंह सूख गया. वह अंदर से टूट चुका था. अतः उसने अपनी जेब में हाथ डालकर टटोलते हुए पचास का नोट निकाला और टेबल पर रख दिया.

"अब तो जाने दीजि

बड़ा बाबू अंदर ही मुस्कराया—"इतने में होगा. हम लोग चार हैं. आप खुद सोचकर आप तो हमारी ही आदमी हैं."

विवश होकर उसने एक पचास का नोट कर टेबल पर रख दिया उस पर कोई रोक नहीं

जब वह आदमी बर तो एकदम से घबरा हालांकि चोर ने इशारे से नोट पकड़ बात उसको बता दी थी पहुंचकर वह इतना गया कि उसके मुंह से भी नहीं निकली. बड़े उसे सिर से पांव तक पूछा, "तुम अपनी बी पेशा करवाते हो..?"

वह सिर से पांव गया—"क्या कह रहे

"ज्यादा मत बनो अपनी बीवी के साथ गए थे?"

"जी—जी हां."

"फिर उसको अकेले छोड़ का मतलब जानते हो?"

"मुझे एक बहुत जरूरी काम

"काम के बच्चे! तुम सारी को उल्लू समझते हो?"

अब उसकी आवाज ने एकदम छोड़ दिया. उसने घबराकर जेब डाला और पूरी जेब उलट दी 211 रु. थे, "देखिए हुजूर, मेरी को समझिए. मेरी बीवी के साथ है. अब मुझे जाने दीजिए."

बड़े बाबू ने बहुत आराम फाइल के नीचे सरकाए और देने के अंदाज में बोले, "वह जिसका रेप हुआ है वह तुम्हारी नहीं है. उसका नाम कमरुन्निसा है देर पहले फोन आया था."

वह कोई जवाब देने के बदले थाने से बाहर निकल आया. पसीने ब-तर निकलकर उसने देखा, अखबारनवीस दोनों एक बंद ओटे पर बैठे थे. वह सब चलने हुए. चोर बोला, "जरा ठहरो, को सलाम कर आऊं." वह बेधड़क घुसा मगर तुरंत ही बाहर निक और तेज आवाज में बोला, लोगों से लिए रुपए आपस में बां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THE COLTS MAN

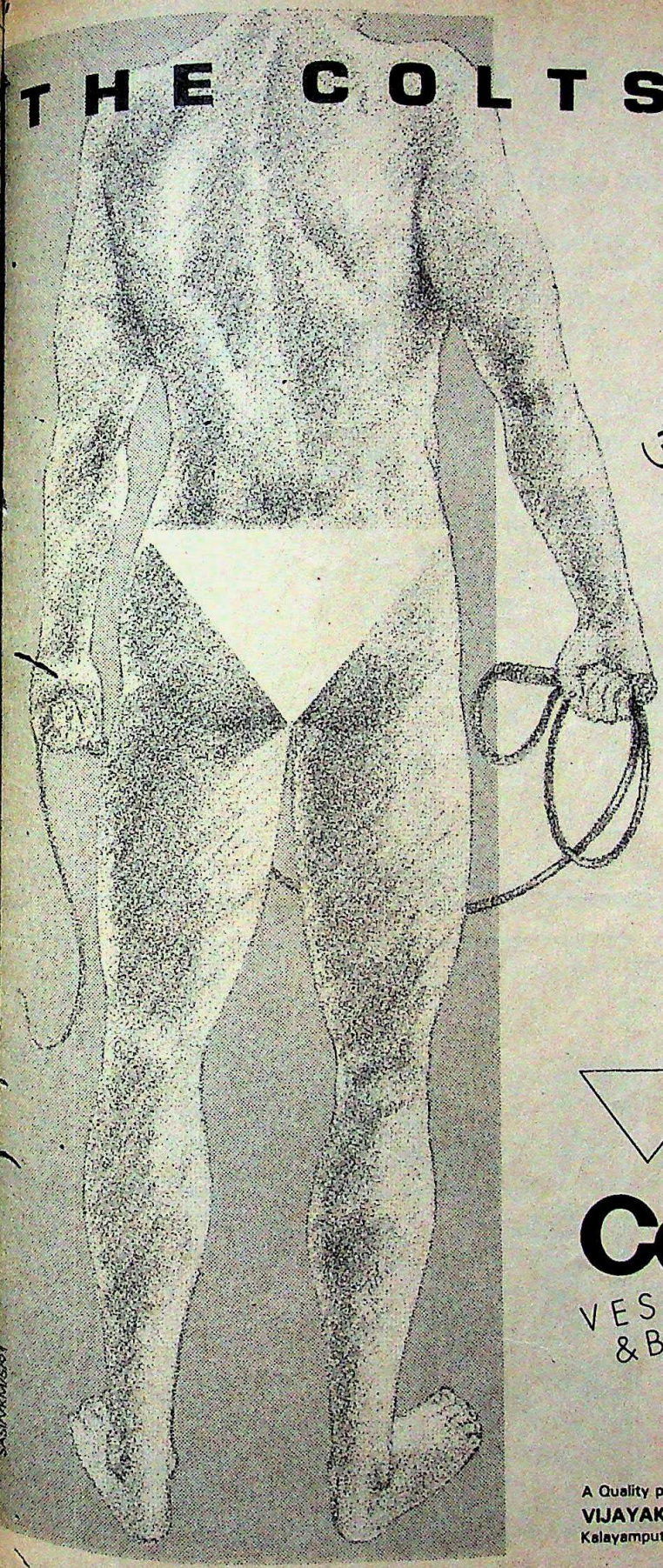

अपनी मर्दानी चाहत
को पहने वह
शान से.

Colts
VESTS
& BRIEFS

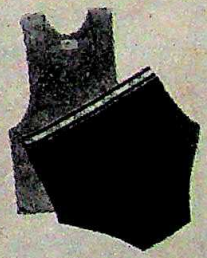

अंतरंग साथी

A Quality product from :
VIJAYAKUMAR MILLS LTD
Kalayamputhur Post, Palani, Tamil Nadu - 624 615.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगदारी

रकम ऐंठने के रंग

व्यापारिक और औद्योगिक संस्थान बरबादी के कगार पर

—फरज़ंद अहमद और परवीन चोपड़ा

"हलो, तृष्णा इंटरप्राइजेज."

"क्या मैनेजर बोल रहे हैं?"

"हां."

"कल घर जाते समय 60,000 रु. तैयार रखना. मेरा आदमी लेने आएगा."

"लेकिन क्यों...किसलिए...तुम कौन हो?"

"तुम्हारा शुभचिंतक, पड़ोसी रंगदार!"

बिहार में टेलीफोन पर इस तरह की धमकियों का सिलसिला अब दिनोदिन जोर पकड़ता जा रहा है. व्यापारिक संस्थानों को ऐसी चिट्ठियां मिलना भी आम हो गया है जिनमें पैसे का तकाजा किया जाता है. और पैसे का भुगतान किसी बैंक में लगी आटोमेटिक टेलर मशीन से भी जल्दी हो जाता है. बही-खातों में ऐसी रकम का कोई जिक्र नहीं होता. इसे सामान्य भाषा में 'रंगदारी टैक्स' कहा जाता है. यह वह कर है जिसे वसूलने का हक हर रंगदार को होता है. स्थानीय गुंडों अथवा राजनैतिक नेताओं के लठैतों या अपराधी गिरोहों के सरगनाओं को स्थानीय भाषा में रंगदार ही कहते हैं.

रंगदारी के नाम पर धन ऐंठने का सिलसिला इस कदर जोर पकड़ गया है कि पिछले पखवाड़े राज्य के कई भागों में पहले से ही खस्ताहाल व्यापारिक और औद्योगिक संस्थान बंद होने के कगार पहुंच गए. रांची के कोकर औद्योगिक में 3 करोड़ रु. की लागत वाली रबड़ कंपनी लिमिटेड इस नए कर को सह न सकी. उसने अपना पश्चिम बंगाल के पुरुलिया तथा के बालासोर में ले जाने का फैसला लिया. यह कंपनी सुप्रसिद्ध वाटरप्रूफ लि. की सहायक है. इसी छोटानागपुर क्षेत्र में करीब 50 औ इकाइयों ने तंग आकर अपना का समेट लिया है. और भी बहुत जल्द कूच क की स्थिति में पहुंच पूर्णिया स्थित राज्य सबसे बड़ी अनाज पटसन मंडी गुलाब कई व्यापारियों ने का बंद कर पश्चिम सीमा पर रंगदारी मुक्त में जाने का फैसला लिया है. करीब एक महीना पहले जिले के पूर्वी भाग का अपराधग्रस्त मोकामा बाजार रंगदारों की और फैलते आतंक के विरोध सप्ताह बंद रहा.

इस बात का कोई सरकारी तो उपलब्ध नहीं, पर स्वतंत्र सू दावा है कि रंगदारों की औसतन आय 10 लाख रु. है. 'टैक्स' के चलन का सबसे ज्यादा पूर्णिया, रांची, पटना (ग्रा

भुगतान न करने वाले छाबड़ा (दाएं), और बिहार रबड़ कंपनी: रंग में भंग

आज ठीक दुकान बन्द करने के बाद
अपनी दुकान के सटर के पास
50000 रु रख देना मेरा आदमी
पुलीस को खबर कर दीखा
कोशीस मत करना नहीं
बुरा होगा=
नासि

सभी फोटो कृष्ण

दहशत में पलायन

- रांची की 3 करोड़ रु. की लागत वाली बिहार रबड़ कंपनी पश्चिम. बंगाल के पुरुलिया जा रही है.
- पूर्णिया के गुलाब बाग की अनाज तथा पटसन मंडी के करीब 30 व्यापारियों का पलायन का फैसला. दो व्यापारी पहले ही बाहर जा चुके हैं.
- छोटानागपुर में करीब 50 इकाइयां रंगदारी से आजिज आकर बंद. बाकी भी भागने की ताक में.
- रांची के पेट्रोल विक्रेता संघ की सुरक्षा के अभाव में सभी पेट्रोल पंप बंद करने की धमकी.
- पटना जिले के मोकामा बाजार में रंगदारों की बढ़ती मांगों के विरोध में एक सप्ताह की हड़ताल.

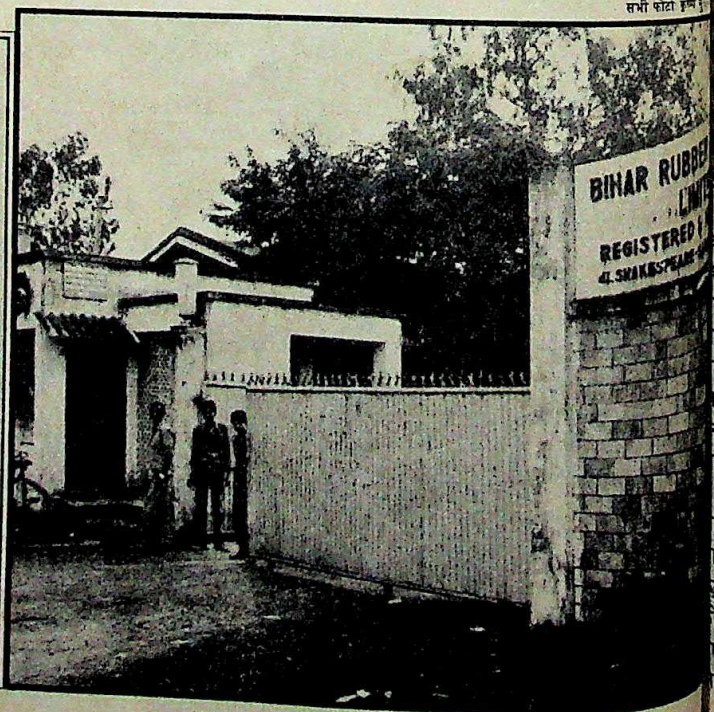

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद, किशनगंज, मधेपुरा, गया और मुजफ्फरपुर जिलों पर पड़ा है.

राज्य के कई औद्योगिक क्षेत्रों से उद्योगपतियों, उद्यमियों के पलायन की प्रवृत्ति से जाहिर होता है कि अनुकूल और अनुकूल बुनियादी सुविधाओं के अभाव में पहले से ही बीमार राज्य का व्यापार और उद्योग अपनी अंतिम सांसें गिन रहा है.

इस प्रवृत्ति को रोकने के समुचित उपायों की तलाश में बिहार चैंबर ऑफ कॉमर्स (बीसीसी) ने हाल ही में सभी राजनैतिक पार्टियों के नेताओं, प्रमुख

कार्यकर्ता को इस घटना के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया. बाद में उसे रिहा कर दिया गया और उसकी विजय यात्रा निकाली गई. इस घटना के तुरंत बाद ही कुछ युवाओं ने 'पृथक झारखंड' कार्यकर्ता के रूप में औद्योगिक इकाइयों के पास जाकर एके-47 राइफलों की खरीद के लिए 1.5 लाख रु. की मांग की. आदेश न मानने की सूरत में उनकी इकाइयों पर बमबारी और प्रबंधकीय स्टाफ के परिवारजनों का अपहरण करने की चेतावनी दी गई. एक अन्य घटना में, कुछ युवाओं ने एक तेल मिल के प्रबंधक को

प्रशासन को सौंपने का फैसला कर लिया.

18 जाने-माने रंगदारों की गिरफ्तारी का दावा करने वाले रांची के उपायुक्त सुधीर प्रसाद दूसरे रंगदारों को पकड़ पाने में अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं क्योंकि बिहार अपराध नियंत्रण कानून पेशेवर मुजरिमों को सजा देने तक ही सीमित है. पर सचाई शायद यह है कि कई अपराधी इसलिए बचे रह गए हैं क्योंकि वे पृथक झारखंड राज्य के लिए आंदोलन कर रहे संगठनों से जुड़े हैं. उनमें से कई झामुमो से जुड़े हैं जो लालू सरकार को समर्थन दे रहा है. इसके अलावा, संघ का आरोप है

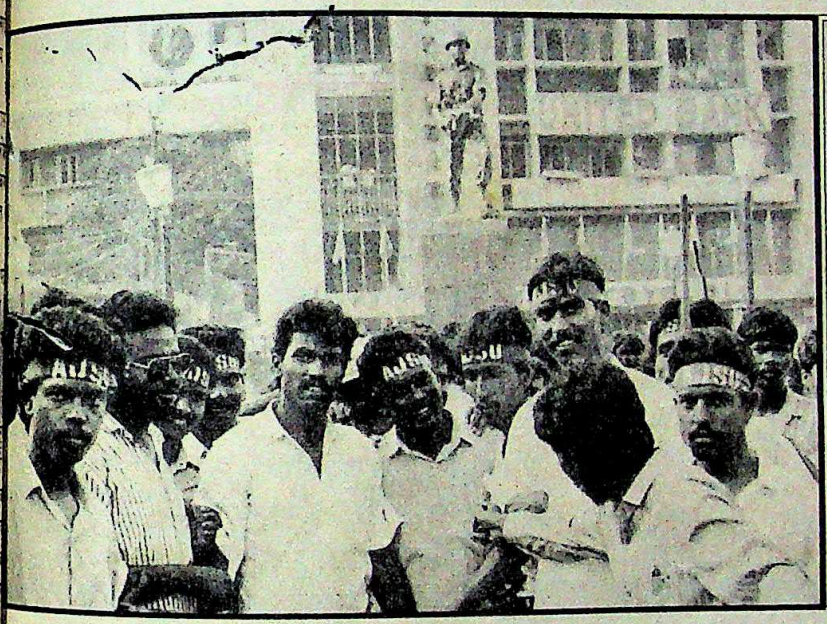

राज्य के कई हिस्सों में रंगदार समानांतर प्रशासन चलाते हैं और वे अपने शिकार को इतना आतंकित कर देते हैं कि वह आवाज उठाने की हिम्मत तक नहीं कर पाता. एफआईआर भी दर्ज नहीं कराए जाते

पारियों और बुद्धिजीवियों की एक
क बुलाई. लेकिन बैठक के दौरान कहीं
'रंगदार' शब्द का जिक्र तक न
ए जाने से यह साफ हो गया कि
य और लाचारी की मानसिकता
द हद तक हावी हो चुकी है.

वैसे तो बिहार में अपराध संगठित
रूप ग्रहण कर चुका है और रंगदारी
ी शृंखला का नवीनतम रूपांतर है.
वसे चिंताजनक बात तो यह है कि इस
पराध को प्रभावशाली नेताओं का
रक्षण मिला है. संभवत: यही कारण है
क सत्ताधारी पार्टी ने बैठक में भाग नहीं
या और पुलिस विभाग अपना हिस्सा
कर आंखें मूंद लिया करता है.

छोटानागपुर में बिहार रबड़ कंपनी के
थ हाल में जो घटित हुआ, उससे यही
त पुख्ता हुई कि रंगदार ही अंतिम
सला करने लगे हैं. कंपनी के एकाउंटेंट
ी छुरा मारकर वे 91,000 रु. छीन ले
ए. जो वह बैंक से लेकर आ रहा था.
ारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के एक

झारखंड समर्थक कार्यकर्ता और सूरज सिंह की नोटिस (नीचे): बढ़ता मनोबल

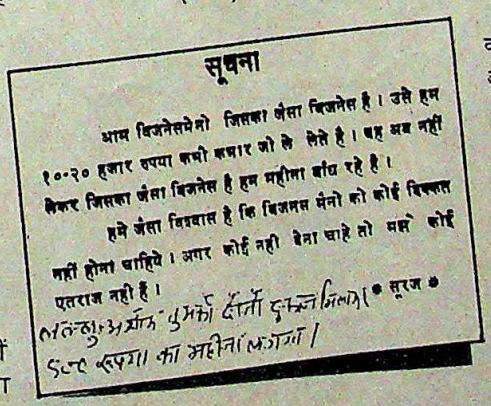

सूचना

आप बिजनेसमैन हो जिसका जैसा बिजनेस है। उसे हम १०-२० हजार रुपया कभी बजार जो ले लेते है। वह अब नहीं लेकर जिसका जैसा बिजनेस है हम महीना बाँध रहे है।

हमे जैसा विश्वास है कि बिजनस मैनो को कोई दिक्कत नहीं होना चाहिये। अगर कोई नही देना चाहे तो मुझे कोई एतराज नही है।

मारुति अर्टिका गुमकी [illegible] सूरज सिंह
5000 रुपया का महीना भेजना।

धमकाकर 50,000 रु. नकद की मांग की. तत्काल रकम न मिलने पर मिल में तोड़-फोड़ की गई तथा तीन कर्मचारियों को मारा-पीटा गया. नतीजतन, क्षेत्र के लघु उद्योगपतियों ने लघु उद्योग संघ के सदस्यों ने पिछले पखवाड़े सुरक्षा नहीं मिलने की स्थिति अपनी इकाइयों की चाबियां

कि लूट का एक हिस्सा पुलिस की जेबें गरम कर रहा है.

इस सिलसिले में सबसे चौंकाने वाला पहलू यह है कि कई बार पुलिस आंखें मूंदने की जगह खुलकर अपराधियों से सहयोग करती है. मसलन, खगड़िया के एक छोटे व्यापारी मोहनलाल अग्रवाल को गोगरी थाने में बुलाकर उससे 20,000 रु. की मांग इसलिए की गई क्योंकि वह काफी लाभ कमा रहा था. अग्रवाल ने जब सफाई दी कि उसका व्यापार मंदा है तो उसे जेल में ठूंस दिया गया.

रंगदारों की गिद्ध दृष्टि छोटी औद्योगिक इकाइयों तक ही सीमित नहीं है. वे व्यापारियों को भी अपना निशाना बना रहे हैं. मसलन, रांची के न्यू बैटरी सेंटर के मालिक ओम प्रकाश छाबड़ा को ही लें. एक दिन सुबह-सुबह उन्हें एक चिट्ठी मिली कि वे अगले दिन शाम को अपनी दुकान के बाहर 50,000 रु. दे दें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने इसकी अनदेखी कर दी पर अगला निर्देश तुरंत आ धमका. कारपोरेशन के एक सदस्य की मदद से उन्होंने कुख्यात रंगदारों से संपर्क साधा पर किसी ने भी चिट्ठी भेजने की बात स्वीकार नहीं की. अगले चिट्ठी में उन्हें खबरदार किया गया कि वे इस मामले में और भागमभाग न करें. पर ओमप्रकाश ने अपनी वसीयत लिखकर पुलिस स्टेशन का रुख किया.

लेकिन ऐसे लोग कम हैं और रंगदार अपने काम को पूरी महारत के साथ अंजाम देते हैं. उनकी नीति यह होती है कि पहले शिकार को पूरी तरह से डरा दिया जाए ताकि वह हो-हल्ला करने की हिम्मत न कर सके. पुलिस भी हर बार यही तर्क देती है. पुलिस के अनुसार प्राथमिकी रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए कोई सामने नहीं आता और वह ठोस सबूत के बिना अदालत में जाकर अपना मखौल नहीं उड़वाना चाहती.

इस बीच, रंगदारों की चांदी हो गई है. बिहार के कई भागों में वे समानांतर प्रशासन चला रहे हैं. मसलन, पूर्णिया में एक स्थानीय विधायक कुछ गुंडों के दम पर अपने मन की कर रहे हैं. अपराधियों के खिलाफ संघर्ष कर रहे माकपा के विधायक अजीत सरकार के अनुसार अपराधी से राजनीतिक बने लोगों का आतंक इतना व्यापक है कि कोई भी व्यापारी पुलिस के पास जाने से कतराता है.

मोकामा बाजार में कुख्यात अपराधी सूरज सिंह का हौसला तो इतना बुलंद है कि उसने रंगदारी टैक्स को 'स्वैच्छिक' बना डाला है. उसने व्यापारियों को एक छपा हुआ पर्चा भेजा कि कभी-कभी टैक्स देने की जगह वे अपने कुल कारोबार का एक हिस्सा स्वैच्छिक रूप से समय पर देते रहा करें. इसी तरह पूर्णिया में स्थानीय बस स्टैंड से निकलने वाली प्रत्येक बस को हर यात्रा से पहले 150 रु. का टैक्स देना पड़ता है.

यही नहीं, रंगदारी अक्सर जिंसों में भी वसूल की जाने लगी है. छोटानागपुर में पेट्रोल पंपों द्वारा प्रत्येक दिन बेचे जाने वाले पेट्रोल का कम-से-कम 5 फीसदी हिस्सा रंगदारों की गाड़ियों में भरा जाता है. राष्ट्रीय राजमार्ग से लगे इलाकों में तो गाड़ियां ही छीन ली जाती हैं और पिस्तौल की नोंक पर उनसे बिक्री दस्तावेज पर दस्तखत करवा लिए जाते हैं. अकेले पटना में छह डॉक्टर अपनी मारुति वैन खो चुके हैं. ऐसे ही एक मामले की छानबीन के बाद पुलिस ने परिवहन विभाग के कुछ अधिकारियों, और दूसरे मामले में एक नेता की धरपकड़ की.

अपराधियों की सांठगांठ अत्यंत व्यापक है. बीसीसी के महासचिव के.पी.एस. केसरी के अनुसार, "राजनैतिक नेता चुनाव जीतने के लिए गुडों का इस्तेमाल करते हैं; विधायक के नाते सरकार का समर्थन करते हैं जो बदले में उनके सुख-दुख का खयाल रखती है. और फिर विधायकों को यह ध्यान रखना पड़ता है कि गुंडों पर आंच न आए."

माफिया के साये में रहने वाले धनबाद से ही रंगदारी प्रथा की शुरुआत हुई थी. कोयले के राष्ट्रीयकरण के बाद निजी कोयला खदान मालिकों के कई गुंडों ने ट्रेड यूनियन और राजनैतिक क्षेत्रों में कदम फैलाए. पर अपने इलाकों में पक[illegible] रखने के लिए उन लोगों ने रंग[illegible] फौज खड़ी की जिसका काम कोय[illegible] वाले ट्रकों से 'टैक्स' वसूलना था. [illegible] रंगदारों ने ट्रकों को पुलिस और दू[illegible] से पूरी सुरक्षा दी.

लेकिन माफिया नेताओं पर [illegible] शिकंजा कसने के बाद रंगदार कु[illegible] के लिए शांत हो गए पर दूसरी ज[illegible] यह बीमारी आग की तरह फैल ग[illegible] रंगदार तो आज सम्मानित लोगों [illegible] जाते हैं और उन्हें राज्य की त[illegible] सुरक्षाकर्मी भी मिले हुए हैं. यह बात [illegible] है कि उन सुरक्षाकर्मियों को [illegible] के काम में लगाया जा[illegible] धनबाद के [illegible] अफजल अमानुल्ला[illegible] खोजबीन के बाद [illegible] पता चला.

मगर सबसे दुख[illegible] यह है कि मुख्यमंत्री [illegible] प्रसाद यादव भी [illegible] अज्ञात कारणों से [illegible] खिलाफ को[illegible] उठाने से कतरा [illegible] एक मामले में [illegible] रंगदारी से बचा[illegible] गुहार लेकर आए [illegible] बिहार के वाणिज्य [illegible] उद्योग संघों [illegible] प्रतिनिधियों के ज्ञा[illegible] उन्होंने टुकड़े-टुकड़े [illegible] दिया. मुख्यमंत्री [illegible] दलील यह थी कि [illegible] से अधिकतर उद्यमि[illegible] सरकार से जमीन और [illegible] लेकर उनका दुरुपयोग [illegible] और अपने लिए सुविधा [illegible] सामान खरीद डाले. अब [illegible] वापसी के लिए उठाए जाने [illegible] कदमों के डर से वे प्रदेश [illegible] की योजना बना रहे हैं.

इस तरह की बेरुखी को [illegible] हुए व्यापार और उद्योग [illegible] संबद्ध लोगों के लिए [illegible] कोई और रास्ता नहीं [illegible] रंगदारी अब शायद तभी [illegible] होगी जब इसकी अति [illegible] जाएगी. ऐसी अति का भी [illegible] नियम है. रंगदारी का [illegible] जितना बढ़ेगा दूसरे राज्यों [illegible] ओर पलायन में उतनी ही [illegible] होगी और फिर वे लोग [illegible] रह जाएंगे जिनसे अपराधी [illegible] वसूल कर सकेंगे.

रंगदारी जिंसों में भी वसूल की जाने लगी है. राजमार्ग से लगे इलाकों में गाड़ियां छीन ली जाती हैं और पिस्तौल की नोंक पर बिक्री दस्तावेज पर दस्तखत कराए जाते हैं

कृष्ण मुरारी किशन

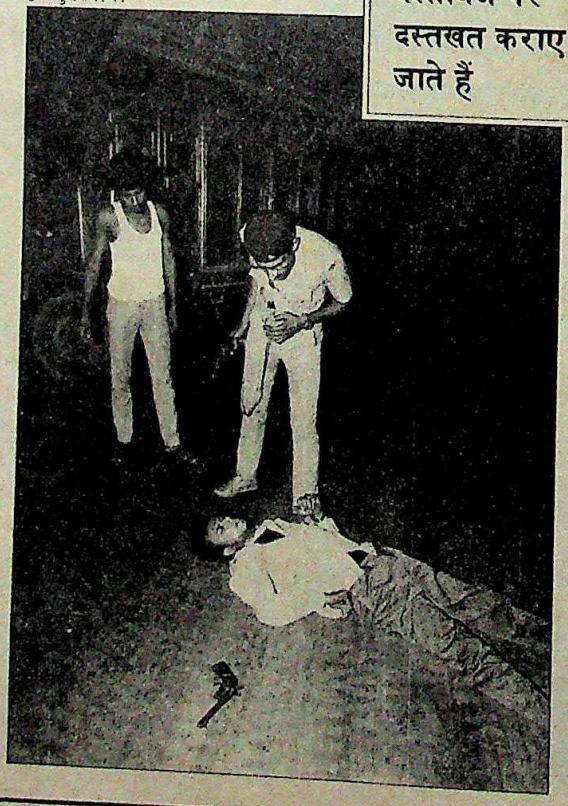

ट्रक से रंगदारी वसूल करने वाला पुलिस गोली का शिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके घर का नया रंग एक बरसात भी झेल सका?

आपके सपनों का घर।

एक-एक ईंट करके कितने प्यार से इसे बनवाया और नये रंगों से सजाया था...

कभी सोचा भी न था कि सिर्फ एक बरसात में सारे सपने धुल जायेंगे।

मगर अब, आप अपने घर को बरसात से सुरक्षित रख सकते हैं – **जे पी गोल्ड पेन्ट्स** के प्रयोग से।

जे पी गोल्ड पेन्ट्स पेश करते हैं उत्कृष्ट पेन्ट की एक नयी, सम्पूर्ण रेंज। आपकी पेन्ट सम्बन्धी हर ज़रूरत पूरी करने के लिए।

इसमें घर की बाहरी दीवारों पर लगने वाले, मौसम से बेअसर, उच्च क्वॉलिटी के पेन्ट हैं, जो धूप और बरसात से दीवारों को सुरक्षित रखते हैं। साथ में घर के अन्दर की दीवारों पर लगने वाले 'वॉशेबल' पेन्ट भी। जिनके प्रयोग से दीवारों पर लगे दाग-धब्बे पल भर में पानी से साफ हो जाएँ।

यानी आपका घर, बाहर और भीतर से सालों-साल सुन्दर और आकर्षक बना रहे।

साथ ही पुरानी सतह की मरम्मत के लिए विशेष उत्पादों की एक बेहतरीन रेंज। जिसमें गीले धब्बे, दीवारों में दरार और उखड़ते पेन्ट जैसी शिकायतों को दूर करने के अनेक उपाय हैं।

अपनी दीवारों को दीजिए, एक सुनहरा स्पर्श।

अगली बार जब आपको पेन्ट सम्बन्धी कोई ज़रूरत हो, तो बस एक नाम याद रखिए **जे पी गोल्ड पेन्ट्स**। एक जीवन-भर का भरोसा।

Jaypee Gold Paints

प्रधान कार्यालय : 'जे ए' हाउस, 63, बसंत लोक, वसंत विहार, नई दिल्ली- 110057. फ़ोन: 609440

सीमेंट पेन्ट : गोल्डसेम सुप्रीम, गोल्डसेम **टेक्सचर्ड पेन्ट :** गोल्डटेक्स मैट, सुप्रीम एलिगेन्स **एक्रिलिक डाई डिस्टेम्पर:** सुपर एक्रिल **एक्रिलिक डिस्टेम्पर :** स्ट्रोक्स **सतह मरम्मत के लिए :** वाटरटाईट, मास्टर प्राइमर, मास्टर प्रोकोट, मास्टर पैच, मास्टर क्रीट, मास्टर मिक्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां बनने का प्रस्ताव

किसी सेट पर वे कई दिन बाद दिखीं. और दिखीं भी तो गुस्से में उबलती हुई. **रूपा गांगुली** ने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा प्रस्ताव उनके सामने आ सकता है—शादी से पहले मां! बाप रे, इस इंडस्ट्री को आखिर हो क्या गया है?

दरअसल ताजगी का असर एक लहर बनकर छाया हुआ है इन दिनों. 16-18 साल की बालाएं, बला का विश्वास लेकर चली ही आ रही हैं. इनकी वजह से ऐसी हर हीरोइन घर बैठने पर मजबूर है जिसने समय पर शादी कर ली होती तो बच्चों

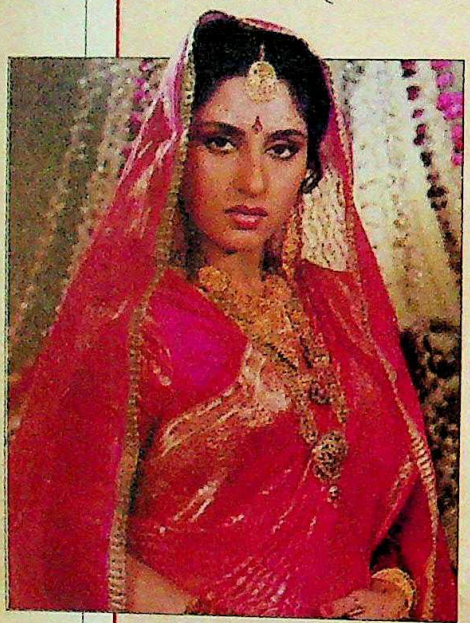

रूपा: घर बसाने का ख्याल

को स्कूल भेज रही होती अब तक. और रूपा तो इंडस्ट्री में उतरी हीं पांच-पांच पतियों की पत्नी—द्रौपदी बनकर. द्रौपदी हुए भी उन्हें तीन साल होने को आए. इसीलिए आर. के. स्टुडियो में लगे इस सेट पर उनसे मिलने आए निर्माता ने बेहिचक पूछ लिया, "मां बनने को तैयार हैं आप?"

रूपा सन्नाटे में आ गईं. लेकिन इस वाकये ने रूपा के सोचने का ढंग ही बदल डाला है. इंडस्ट्री उन्हें मां बना दे, इसके पहले ही विवाह करके घर बसा लेने की शुभचिंतकों की राय से अब इनकार नहीं रहा उन्हें.

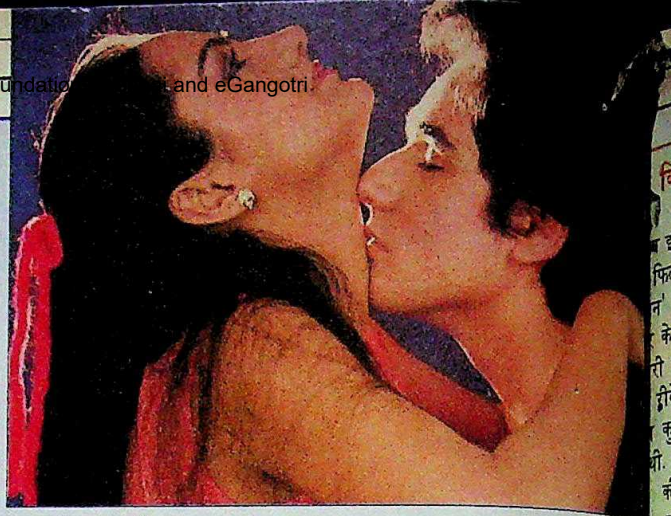

अपनी-अपनी मजबूरी

रूबीना और राजीव: फिर

फिल्मकारों के बच्चों को हीरो या हीरोइन लेकर फिल्म बनाने का जो रहा है, उसके नतीजे अच्छे हैं. सलमान से शुरू हुए इस दूसरे दौर में रवीना माला सिन्हा सभी की बेटियां सराही जा रही हैं. तब भला रंजीता ही रहतीं? पर जरा ठहरिए—व्यर्थ की शंकाएं न कीजिए. भला रंजीता की बेटी हीरो हीरोइन की उम्र का कैसे हो सकता है? उनकी तरफ से आई बहन, **रूबीना निज्जर** जो एक बार पहले भी भाग्य आजमा चुकी हैं.

उनके साथ इस बार फिर हीरो लेने का प्रस्ताव है निर्देशक रवि टंडन **राजीव** को, जो इन दिनों सहायक निर्देशक के तौर पर काम कर रहे हैं रहा है कि 'क्लोज' पोजों से भरपूर फोटो सेशन के पीछे उन्हीं की योजना मुताबिक, 'जबसे बहन रवीना टंडन हीरोइन के तौर पर सफल हुई है, घर कद्र कम हो गई है.' वैसे, 'एक तू और एक मैं' फिल्म में इसी जोड़ी—रूबीना और राजीव टंडन—को असफलता का मुंह देखना पड़ा था.

'कागजी नायिका' का बड़बोलापन

नटराज स्टुडियो के कूड़े-कबाड़ के भाग्य उस दिन अनायास खुल हिंदुस्तान की 'पेपर एक्ट्रेस' **पूजा बेदी** ने उसे अपनी आरामगाह बना लिया. सेट पर शॉट देकर वे बाहर निकलीं तो बैठने को यही जगह पसंद आई उन्हें.

पूजा के इस सौंदर्यबोध पर मुग्ध फोटोग्राफरों ने जा घेरा उन्हें. अपनी कुछ छिपाती, कुछ दिखाती, कुछ झलकाती ड्रेस की वजह से सकुचाने-लजाने का जितना ही अभिनय किया उन्होंने, उतनी ही जिद बढ़ी फोटोग्राफरों की कि वे खड़ी हो जाएं. आखिर उनकी अनावृत्त टांगों को कैमरे में कैद करने का लालच वे कैसे छोड़े देते?

पूजा भी समझ गई थीं कि इस फोटो सेशन के साथ ही सवाल-जवाब का वह सिलसिला जरूर शुरू होगा जो 'विषकन्या' में उनकी कमजोर एक्टिंग और भरपूर नग्नता पर आकर अटकेगा. इसलिए उन्होंने तुरंत निर्माता सोलिला परिदा के खिलाफ विषवमन प्रारंभ कर दिया. लोग धीरे-धीरे खिसक गए.

पूजा: एक्सपोजर के बहाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी का, काम किसी का

इस फिल्म के एक के बाद एक चार-पांच शो हो गए तब थोड़ा संदेह हुआ. फिल्म 'प्रोफेसर की दिवंगत संजीव के अभिनय से सजी फिल्म है, इसकी लीलें बनने के बाद ही कुमार की मृत्यु हो गई. तब से इसे पूरी की निर्माता कांत की सभी कोशिशें ही जाती रही हैं. फिर अचानक ये शो होने लगे? बताया है कि **पद्मिनी** पूरे चार साल के पारिवारिक जीवन व गई हैं. इसलिए ने यह कोशिश की है बड़े प्रोड्यूसर 'प्रोफेसर शन' किसी भी बहाने उन्हें उनकी की फिर याद आए. लिए उनके खर्च पर इसके शो पर शो कराए जा रहे हैं. क्यों? है न तरकीब ? नाम बेचारे संजीव कुमार का और काम बने पद्मिनी का!

पद्मिनीः वापसी की तैयारी

अपना-अपना आकलन

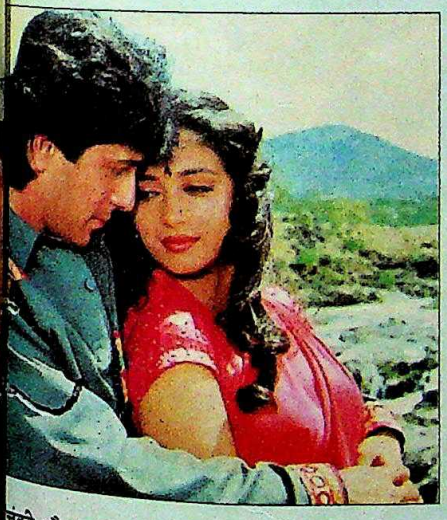

चंकी और माधुरीः अब कॉमेडी का इंतजार

फिल्म 'अपराधी' की उस शूटिंग पर **चंकी पांडे** काफी उत्साहित थे, यह शूटिंग हो रही थी मुंबई से कुछ दूर, रेती बंदर के पास. प्रेसवाले आजकल चंकी से उतना ही दूर रहना पसंद करते हैं जितना सलमान खां प्रेसवालों से. आज चूंकि निर्माता-निर्देशक के. रविशंकर का निमंत्रण था, प्रेस और चंकी का आमाना-सामना हो ही गया, और चंकी ने खुशी का राज खोल डाला, "इस फिल्म में मैं कॉमेडी कर रहा हूं." को चंकी से निजात मिली तो हंसी से दोहरे हुए जा रहे अनिल कपूर (हीरो) के पास चले आए. "सुना आपने, ये अब कॉमेडी करेंगे! अब इन्हें कौन जब ये सीरियस रोमांटिक एक्टिंग करते हैं, दर्शक तो तभी इन्हें देख हंसी से हुआ जाता है. वरना क्या वजह थी कि माधुरी दीक्षित जैसी स्टार एक्ट्रेस के काम करने के बावजूद इनकी लुटिया डूबती ही गई, कहीं पार नहीं लग रही." तो चंकी की कॉमेडी देखने का इंतजार करना ही पड़ेगा!

धर्मराज का अधर्म

बड़ी-बड़ी मूंछें लगाए, दादागीरी की टी. शर्ट पहने गले में रूमाल फटकारते, जींसधारी **गजेंद्र चौहान** को चांदीवली आउटडोर स्टुडियो में मारामारी की तैयारी करते देखा तो एकाएक पहचान में नहीं आए. अति लोकप्रिय सीरियल 'महाभारत' के महाप्रतापी धर्मराज युधिष्ठिर! न्यायप्रिय राजा का अन्यायप्रियता की हद तक पतन!

"दरअसल 'महाभारत' की इमेज ने मेरा बड़ा नुकसान कर डाला," गजेंद्र ने बताया, "जिसे देखो वही मुझे मेहनती टीचर या ईमानदार अफसर किस्म का हीरो बनाने चला आ रहा था? एक तो आज-

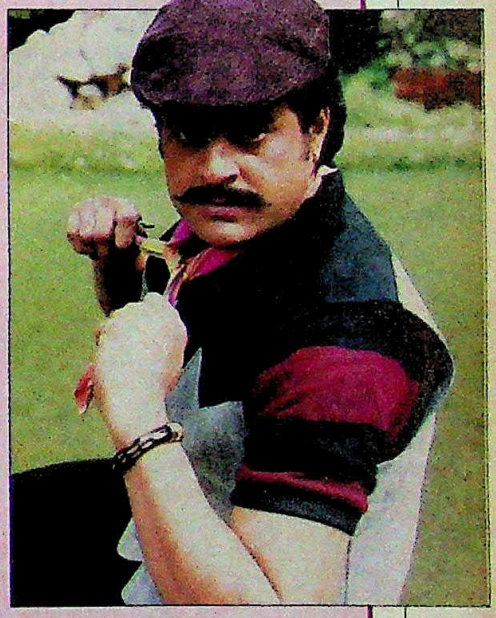

गजेंद्रः अंगूर खट्टे हैं!

कल ऐसी फिल्में बनती ही कितनी हैं, इनके चलने के मौके ही क्या होते हैं? इसलिए मैंने इनसे तौबा करके खलनायक बन जाना बेहतर समझा."

लेकिन इसे धर्मराज का सत्य वचन न समझें तो ही बेहतर. सचाई यह है कि पहले भी गजेंद्र खलनायक बनने के लिए हाथ-पैर मार रहे थे. लेकिन युधिष्ठिर की भूमिका मिलने पर हीरो बनने की तमन्ना जग गई. मगर यह पूरी न हुई तो वापस खलनायकी के मैदान में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेड़ पर भगवान

◆ जी हां, मुंबई के मूर्तिकार विजय मातवकर ने गणेश चतुर्थी महोत्सव के लिए 21,111 केलों को सजाकर अनोखे **गणपति** की कल्पना को साकार कर दिखाया. इस महत् मूर्ति को पूरा करने में 36 दिन लगे और इसके दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा

गणपतिः केले के झाड़ पर

हेमंत पिठवा

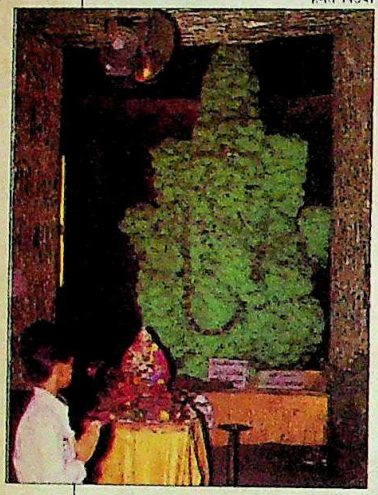

रहा. उत्तर प्रदेश से लाए गए केले 15 दिनों तक तरोताजा बने रहे. गणेश की वह छवि भक्तों की स्मृति में अंकित रहेगी. भले ही दूसरे भूल जाएं.

अनपेक्षित ब्याह

◆ यह जोड़ी राम मिलाई नहीं लगती. आकर्षक और राजवंश से संबद्ध नेत्री तेलुगु देशम से इंका तक की खाक छान चुकी हैं. और

उमा और शर्माः नई जोड़ी

संपादक का शौक

◆ **'दि इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया'** के संपादक **प्रीतीश नंदी** दोपहर बाद गायब कहां हो जाते हैं. अब तरह-तरह की अटकलों के बाद पता चला है कि बात कुछ ऐसी-वैसी नहीं थी. संपादक महोदय तो बस अपने घर के चीनी मिट्टी के बर्तनों पर अपने दस्तखत उतार रहे थे. घर की सुंदर क्रॉकरी पर अपने दस्तखतों की कल्पना अजीब लग सकती है पर प्रीतीश के अनुसार यह तो बस स्वांतः सुखाय कला है. प्रसिद्ध संपादक और चाय के परम शौकीन प्रीतीश की क्या यही सच्ची पसंद है?

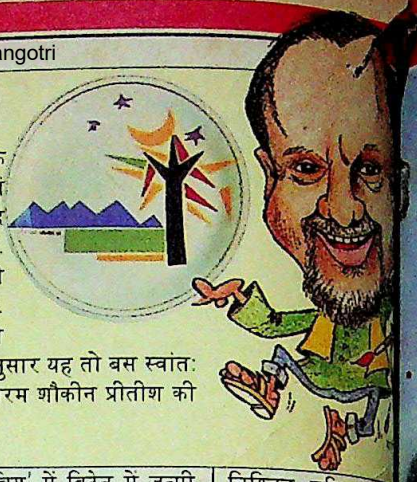

महाशय तो 'न्यू दिल्ली टाइम्स' और कई दूरदर्शन प्रस्तुतियों के लिए प्रसिद्ध हैं. इसीलिए उम्र के तीसरे दशक के उत्तरार्द्ध में जब **उमा गजपति राजू** और **रमेश शर्मा** की जोड़ी ने फेरे पूरे किए तो लोगों को सहसा यकीन नहीं हुआ. गुड़गांव स्थित अपने फार्महाउस में आराम फरमा रहीं उमा का कहना है, "एक काबिल फिल्म निर्देशक के हाथों में जीवन सौंपना अच्छा अनुभव है." पर शर्मा को उमा का उपनाम बदलने का कोई झंझट नहीं रहेगा. शर्मा के अनुसार, "हम दोनों ही जाने-पहचाने हैं."

लौट आई जलपरी

◆ जलपरी की वापसी हो गई है. एक बार फिर वे फिल्म ससार में डुबकी मारने के लिए तैयार हैं. सुंदर काया और नीली आंखों वाली **नफीसा अली** ने फिल्म 'जुनून' से अपना सफर शुरू किया था. पर बीच में ही प्रसिद्ध पोलो खिलाड़ी 'पिकल्स' सोढी के साथ हुई शादी ने जीवन का रुख बदल दिया. अब वे जे.पी. दत्ता की फिल्म 'क्षत्रिय' में ब्रिटेन में जन्मी ऐसी महिला की भूमिका में हैं, जो स्वयं को भारत की परिस्थितियों

नफीसाः जलपरी लौटी

के अनुरूप ढालती है. फिल्म में नायक बने हैं विनोद खन्ना. दत्ता कहते हैं, "मेरे दिमाग में एक

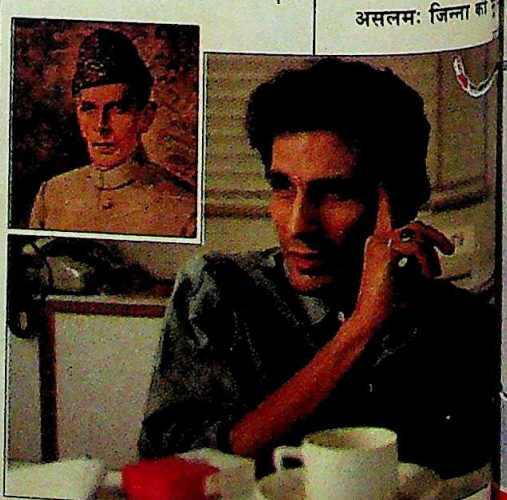

निश्चित चरित्र बना नफीसा ने उसे पर्द हालांकि उन्हें नहीं था."

जिन्ना जाग उठे

◆ एटनबरो की फिल्म जिन्ना बने एलिक मुखाकृति ने जिन्ना निराश किया था. चरित्र को एक पेश करने के निर्देशक माग्रैट उठाया है. दो की लागत वाली फिल्म 'जिन्ना इनकरप्टिबल' पाकिस्तान सरकार वरदहस्त रखा है. समाचार संपादक और प्रसिद्ध अभिनेता-निर्देशक निवासी 40 वर्षीय **असलम** मुख्य भूमिका हैं. असलम के अनुसार, लोग एटनबरो के कलाक और हम भारत में भी तो क्या ही अच्छा हो

असलमः जिन्ना की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

31 अक्तूबर 1991 11 रुपए

इंडिया टुडे

टीवी: दमकते सितारों की नई पौध
उपचुनाव: बड़े दलों के ऊंचे दांव
पाक अधिकृत कश्मीर: तनी हुई तलवारें

पल्लवी जोशी

मांजरेकर, कपिल, अजहर और सचिन

क्रिकेट

फिर धूम-धड़ाके की तैयारी

आगामी अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों के रोमांचक दौर में भारतीय क्रिकेट [illegible]यों को अपने करिश्माई बल्लेबाजों से बड़ी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AVAILABLE AT SELECTED OUTLETS

Rothmans

KING SIZE

WORLD LEADER

THE BEST TOBACCO MONEY CAN BUY

Made in India under licence by Godfrey Phillips (India) Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Hari

Statutory Warning.
Cigarette smoking is injurious to he

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

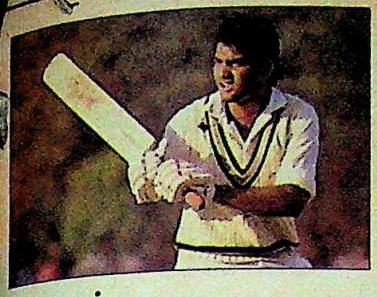

फिर धूम-धड़ाके की तैयारी

इस हफ्ते से क्रिकेट के मौसम का रोमांचक दौर शुरू होने जा रहा है. शारजाह कप के लिए मुकाबले, भारत-पाकिस्तान के बीच एकदिवसीय मैच, भारतीय टीम का आस्ट्रेलियाई दौरा और विश्व कप. भारत की बल्लेबाजी पर एक नजर.

आवरण कथा 52

जंग के लिए तनी तलवारें

पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर में स्थिति विस्फोटक है. सीमा पार जाने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है. उन्हें वहां के शिविरों में उग्रवादी बनाया जा रहा है. शरणार्थियों को भारतीय सेना के अत्याचारों से पीड़ित कहा जाता है.

विशेष लेख.....36

बड़े दलों के ऊंचे दांव

आम चुनाव के बाद पांच महीने से भी कम समय में देश 16 नवबर को फिर उपचुनावों का सामना करने जा रहा है. 16 लोकसभा और 58 विधानसभा सीटें दांव पर लगी होने से सभी दल अपनी स्थिति मजबूत करने में जुट गए हैं

खास रपट.....80

दमकते सितारों की नई जमात

अब टेलीविजन कलाकारों का दौर आ पहुंचा है. पंकज कपूर, नीना गुप्ता, अनीता कंवर जैसे अभिनेता-अभिनेत्रियां फिल्मी सितारों जितने ही लोकप्रिय हो रहे हैं. इन ज्यादातर कलाकारों ने यह जगह हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत की है.

टीवी.....72

रूप नया, पहचान पुरानी

देश भर में फैले ढाबे अब सड़कछाप सस्ते रेस्तरां भर नहीं रह गए हैं. आधुनिक सुविधाओं से लैस इन दुकानों पर मध्यम वर्ग के लोग और छोटे व्यापारी भी आने लगे हैं और इन ढाबों में भोजन की विविधता भी बढ़ती जा रही है.

विशेष लेख.....46

दफन हुए सपनों के अवशेष

बिहार में छोटानागपुर की मनोरम पहाड़ियों पर एंग्लो-इंडियन समुदाय के लिए मैकलुस्कीगंज बसाया गया. लेकिन यह सपना बिखर गया है. और यहां के निवासी अतीत की यादों के सहारे छोटे-मोटे काम कर अपना गुजर-बसर कर रहे हैं.

छाया-लेख.....88

अगले पन्नों पर

कसौटी 7
तेवर 8
राजरंग 10
हिंदोस्तां हमारा 12
खास रपट
भारतीय जनता पार्टी:
दक्षिण में दबदबे की हसरत 17
मदरसे: मजबूरी का नाम तालीम 20
भोपाल गैस कांड:
फैसला...और फासला 22
आजकल
नौकरशाही: अर्थपूर्ण अदला-बदली 25
देवीलाल: नींद से जागे 26
हरियाणा: बड़ी बगावत के बगूले 27
आरक्षण: बेआवाज सियासी मार 28
विशेष लेख
पाक अधिकृत कश्मीर:
जंग के लिए तनी तलवारें 36
ढाबे: रूप नया, पहचान पुरानी 46
आवरण कथा
क्रिकेट:
फिर धूम-धड़ाके की तैयारी 52
जीवन शैली
देसी शराब: थैलीबंद सुरूर 64
कारोबार
पटाखा उद्योग:
पूरब में भी पौ-बारह 65
व्यापार चक्र 68
टीवी
धारावाहिक:
दमकते सितारों की नई जमात 72
विशेष लेख
नंदमूरि तारक रामराव:
दो नावों की सवारी 78
खास रपट
उपचुनाव: बड़े दलों के ऊंचे दांव 80
अपहरण का नाटक:
अनुत्तरित प्रश्नों की भूलभुलैया 84
अपराध
रोमानियाई राजनयिक:
बदले में अपहरण 86
समाचार जगत
रामनाथ गोयनका:
उम्र बीती लड़ते-लड़ते 87
छाया-लेख
मैकलुस्कीगंज:
दफन हुए सपनों के अवशेष 88
स्वास्थ्य
गठिया निवारण:
रक्तपान से रोग दूर 101
कहानी 104
किताबें 108
परदे के उस पार 110
चर्चित चेहरे 112

आवरण: प्रशांत पंजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THE PSYCHO-ANALYSOR

(Shouldn't you know what y ybag

Man on the move, you hate being made to wait for your own luggage. You love the breezy portability of Skybags' entire range.

You exude a friendly elegance. But the quiet toughness does surface when provoked. You're glad Skybags' tear-resistant fabric has been specially designed for that underlying toughness.

Truly a man of the world, you fully appreciate Skybags' dependable zip, and the security of its multi-safe locks.

A quality produ

Avenues BSB 92 91

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

YS OF A SKYBAGS OWNER...

(What yybag's been saying about you?)

You believe in subtle yet strong bonds that stand the test of time. You secretly admire the unyielding stitching that fortifies every item of the entire range of Skybags.

There's no saying how far you might look for your kind of art. The sky is the limit.

V.I.P. Skybags

Makes perfect business-travel sense.

EVEREADY
TRANSISTOR
THE CHOSEN ONE
EVEREADY®
TRANSISTOR

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब

'बढ़ती दहशत, कलपती मजबूरी' (आवरण कथा, 15 अक्तूबर) समाज में बढ़ती हिंसक प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब है. दरअसल, जब व्यक्तिवाद और भौतिकवाद की संस्कृति पनपती है, अच्छे संस्कार और अध्यात्मवाद से समाज दूर होते जाते हैं, तब ऐसी ही दहशत फैलनी स्वाभाविक है.

बहलगंज (उ.प्र.) — प्रमोद कुमार ओझा

महज नाटक

'घराने में घमासान' (आवरण कथा, 30 सितंबर) से ऐसा लगा जैसे एक सफल नाटक का मंचन हो रहा है, जो जीवंत भी है.

बिलासपुर (म.प्र.) — श्याम गुप्ता

■ लेख पढ़कर आश्चर्य हुआ कि आप भी उसे किसी स्टंट फिल्म की तरह की बयानबाजी न मानकर सच मान रहे हैं. असल में तो यह एक तरह का नाटक है जो मां-बेटा अपनी अकूत जायदाद बचाने के लिए खेल रहे हैं.

कन्नौज (म.प्र.) — मनीष अग्रवाल

■ मां अपने बेटे को बड़ी मुश्किल से पाल-पोसकर बड़ा करती है, इस आशा से कि बड़ा होकर सहारा बनेगा. ऐसी आशा तो नहीं ही करती कि वह उसका प्रतिद्वंद्वी बन जाएगा.

मद्रास (तमिलनाडु) — मेरूलाल जैन

■ 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों का साथ देकर अपने राज्य को बचाने वाला सिंधिया परिवार जिस संपत्ति का मालिक है वह उस काल की प्रजा से इकट्ठी की गई संपत्ति ही है. यदि उस संपत्ति का एक भाग विजयाराजे सिंधिया ने सामाजिक हित के लिए किसी संस्था को दान कर दिया तो उस पर माधवराव सिंधिया को इतना होहल्ला नहीं मचाना चाहिए था.

रुद्रपुर (उ.प्र.) — पी. गंगवार

■ दोनों के वरिष्ठ नेता जब सारी सीमाओं को लांघकर ऐसी तीखी और बेहूदा टिप्पणियां करते हैं तो यही कहा जाएगा कि दोनों को लेकर ऐसे झगड़े मां-बेटे को शोभा नहीं देते.

अकोला (महाराष्ट्र) — अक्षय खंडोर

■ यदि इसी तरह घराने में युद्ध होता रहा तो देश की हालत क्या होगी. यह जो अपने ही घर की आग नहीं बुझा पा रहा वह देश की रक्षा के लिए क्या करेगा?

जालंधर (पंजाब) — सुशील मदान

■ मां-बेटे की यह शत्रुता और वैमनस्य संपूर्ण मानव जाति पर कलंक है. विवादों का निपटारा आपसी शत्रुता त्यागकर बातचीत से ही संभव है.

सारण (बिहार) — नंद किशोर

घातक उपेक्षा

'उम्रदराजों की बढ़ती उपेक्षा' (30 सितंबर) में आपने बुजुर्गों के जीवन के बारे में जो भी तथ्य दिए, दिल को छू लेने वाले थे. मृत्यु दर का घटना तो सुखद अनुभव है लेकिन जन्म दर का बढ़ना गंभीर बात है.

सिरसा (हरियाणा) — सुशील खेमका

■ उम्रदराजों की उपेक्षा समाज के लिए घातक सिद्ध हो सकती है. यह सही है कि बुजुर्ग समय के साथ समाज में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार अपने आपको ढाल नहीं पाते हैं, लेकिन उन्हें एकदम अलग-थलग नहीं समझना चाहिए, बल्कि उन्हें इज्जत मिलनी चाहिए.

बुरहानपुर (म.प्र.) — सुनील बरोले

■ पश्चिम की नकल पर वृद्धाश्रम बनाना उचित प्रतीत नहीं होता. युवा वर्ग को सोचना चाहिए कि आखिर उन्हें भी एक न एक दिन इसी अवस्था में आना है. तब हम ऐसी परिपाटी क्यों डालें कि हमारी संतान भी हमें भविष्य में घर से निकाल दे.

गंगधार (राज.) — गणेश कुमार निगम

दिल पर नचाइए

'कुछ अपनी, कुछ परायी' (30 सितंबर) में सादिया जी की मियां को उंगली पर नचाने की बात तो मियां से ज्यादती है. उनके पाकिस्तानवासी मियां न तो मोहताज हैं और न उनके पैसों पर पलते हैं. यह तो बौद्धिक अत्याचार हुआ. सादिया जी! उन्हें दिल पर नचाइए.

फतेहपुर (उ.प्र.) — विक्रम सिंह

■ सादिया जी, आप अपने मियां को उंगलियों पर नचाएं इससे हमें कोई मतलब नहीं. लेकिन औरों को यह नसीहत न दें.

रामपुर (उ.प्र.) — राम हिंद

■ एक ओर तो लेखिका पहली शादी के टूटने पर किसी के टुकड़ों पर पलना नहीं चाहतीं, क्योंकि वह खुद्दारी से जीना चाहती हैं. वहीं वह दूसरी शादी पर मियां को उंगलियों पर नचाने का गौरव भी हासिल करना चाहती हैं.

खंडवा (म.प्र.) — आर. सी. राठौर

अनदेखी ठीक नहीं

'बुढ़ापे में वनवास का सदमा' (30

अपहरणों का यह सिलसिला कुछ हिंदी फिल्मों की देन है तो कुछ सरकार की घुटने टेकने की नीतियों का. जब तक अपहर्ताओं को कड़ी सजा नहीं दी जाती, और पुलिस तंत्र चुस्त नहीं किया जाता इस आतंक पर काबू पाना मुश्किल होगा.

नैनीताल (उ.प्र.) — देवेंद्र सिंह

वर्ष: 5, अंक: 24,
16-31 अक्तूबर 1991

● संपादकीय कार्यालय: लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3315801-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. चाहकी चंदा भेजें: इंडिया टुडे (हिंदी), पो बॉक्स 114, नई दिल्ली-110001
● सर्कुलेशन कार्यालय: इंडिया टुडे, एफ-14, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8. टेलेक्स: 31-62634 INTO IN. तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ● मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435. टेलेक्स: 11-5373 THOM IN. तार: लिवमीडिया, मुंबई
● क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय: के-9, कनाट सर्कल, नई दिल्ली 110001, फोन: 3325376, 3323576, 3321323, 3321273. टेलेक्स: 31-62124 THOM IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188. टेलेक्स 041-6177 INTO IN. तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089. टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016. फोन: 225396, 221922. टेलेक्स: 21-7138 INTO IN. तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता
● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितंबर) पढ़ा. भारतीय संस्कृति व मानवता के कारण इन लोगों से सहानुभूति होना सहज है पर इनके कार्यक्षेत्रों में बड़ी संख्या में मजबूर वनवासियों का धर्मांतरण अनदेखा करना भी न्यायसंगत नहीं है.

रायपुर (म.प्र.) **डॉ. जयेश कावड़िया**

■ कितने अफसोस की बात है कि फादर लुई, व गैटर दंपती जैसे विदेशियों को देश से निकाल दिया गया है जबकि वे अपनी मातृभूमि छोड़कर हमारे देश में आए व आराम से रहने की जगह उन्होंने यहां समाज सेवा की. वह भी वनवासियों को शिक्षा देने जैसी. उनके महान कार्यों के लिए यदि कोई पुरस्कार नहीं दिया जा सकता तो कम-से-कम उन्हें भारत की नागरिकता दी ही जानी चाहिए.

लखनऊ (उ.प्र.) **सरोज अधिकारी**

यह सच नहीं

हिंदोस्तां हमारा में 'तू डाल-डाल' (30 सितंबर) पढ़कर अफसोस हुआ, क्योंकि खबर असलियत से कोसों दूर है. महंगाई को देखते हुए, पांच साल बाद गांव के नाइयों ने थोड़े ही रेट बढ़ाए हैं, और न ही गांव का कोई दुकानदार या चायवाला हमसे दोगुने दाम वसूल कर रहा है. यह सब तो हमे बदनाम करने की साजिश है.

अध्यक्ष, नाई समाज, कोशीथल (राज.) **शिवलाल नाई**

सबक लें

'बिखराव और बदलाव' (30 सितंबर) में आंखों देखा हाल और परिस्थितियों का सचित्र वर्णन काबिलेतारीफ है. जिस तरह से केवल नेताओं की मनमानी के चलते आज शक्तिशाली सोवियत संघ टूट रहा है उससे हिंदुस्तान के नेताओं को सबक लेना चाहिए कि अवाम की अंतरात्मा का दमन और निरंकुशता क्या गुल खिला सकते हैं.

भदोही (उ.प्र.) **प्रवीण श्रीवास्तव**

■ इतनी अधिक सैद्धांतिक विभिन्नताएं व परिवर्तित स्थितियां हैं कि लगता है मानो अशांत सोवियत संघ एक सुनहरे भविष्य का दरवाजा खटखटा रहा हो. इसका श्रेय सोवियत जनता को ही है.

रतनपुर (म.प्र.) **बालकृष्ण मिश्र**

असंगत तुलना

'वह बहुरि अकेला आदमी' (30 सितंबर) पढ़ा. व्यंग्यविधा में शरद जोशी की हरिशंकर परसाई से तुलना ही असंगत है क्योंकि शरद जोशी तो खुद परसाई से प्रभावित होकर इस क्षेत्र में आए थे.

बिलासपुर (म.प्र.) **सुनीत टोडेजा**

■ लेख में निश्चय ही शरद जोशी के व्यक्तित्व का सुंदर चित्रण है. पर यह स्पष्ट करें कि लेखक का हरिशंकर परसाई के 'चुकने' से क्या अभिप्राय है.

राजहरा (म.प्र.) **राजेश जैन**

स्वागतयोग्य प्रयास

'वंचितों के लिए वरदान' (30 सितंबर) पढ़ा. चिकित्सा के इस नए आयाम का स्वागत होना चाहिए. खामियों को दूर करके यदि इस जीवन रेखा को गति दी जाए तो वास्तव में यह योजना हाथों की जीवन रेखा को लंबी और गाढ़ी कर सकती है.

पौड़ी-गढ़वाल (उ.प्र.) **प्रकाश कुमार श्रीवास्तव**

भूमिका का संकट

'भूमिका की तलाश में' (30 सितंबर) पढ़ा. विपक्ष की सभी पार्टियों के नेता इंका को खोखला करने के पीछे पड़े हैं. भाजपा ने भी बहुत प्रयत्न किए पर उसका प्रभाव अभी तक सामने नहीं आया है. इंका का भी भरोसा नहीं कि कब सत्ता से हट जाए.

अकोला (महाराष्ट्र) **विनोद कुमार भोतांचे**

क्या उम्मीद करें

■ अंतर्कथा 'आस अभी बाकी' (30 सितंबर) पढ़कर विश्वास में बढ़ोतरी हुई कि हर काले बादल में भी चांदी-सी चमकती तार होती है. हमारे सभी नेताओं को टकराव की राजनीति छोड़ कश्मीर समस्या को सुलझाने के लिए नई वास्तविकताओं के आधार पर बातचीत की पहलकदमी करनी चाहिए. सभी को राष्ट्रीय धारा में लाने के लिए कश्मीर में सभी ग्रुपों, व्यक्तियों, राजनैतिक पार्टियों से बातचीत करने और पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्ण महासंघ बनाने का प्रस्ताव रखते हुए 'बची हुई आस' को भारतीय राष्ट्र निर्माण व समूचे संसार की मानवता के हित में बदलना चाहिए. यही आज दुनिया का संदेश है.

कठुआ **आई.डी. खजूरिया**

झूठा दंभ

'एक और कीर्तिमान' (30 सितंबर) से पता लगा कि किस प्रकार एक हरिजन नेता का दंभ भरने वाले ये महाशय उन्हीं लोगों के कल्याण कोषों में से विलासिता का सामान लेकर उसका दुरुपयोग करते हैं.

नरसिंहपुर (म.प्र.) **आशीष गुप्ता**

■ वृद्धावस्था को कभी हमारे देश में समझदारी का पर्याय माना जाता था. लेकिन दुर्भाग्य से अब वृद्धों और युवा वर्ग के बीच खाई बढ़ रही है. वृद्ध परिवार समाज पर बोझ बनते जा रहे हैं जबकि उनके अनुभव से हमें सीख लेनी चाहिए.

बांसवाड़ा (राज.) **बुधुलाल बामनिया**

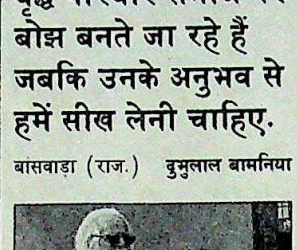

■ हमारे पूर्वजों ने वानप्रस्थ एवं संन्यास की व्यवस्था इसी तथ्य के मद्देनजर की थी कि युवाओं व वृद्धों में मतभेद और टकराव न हो पाए.

दिल्ली **निवेदिता सिन्हा**

■ भारतीय समाज की इस ज्वलंत समस्या के लिए पाश्चात्य उपभोक्ता संस्कृति, सीमित परिवार की अवधारणा व कुलांचे मारकर बढ़ती महंगाई ही दोषी है.

विदिशा (म.प्र.) **प्रदीप मालचंद्र गवांदे**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंडल मामले का मौलिक प्रश्न

सभी रेखांकन अजीत नैनन

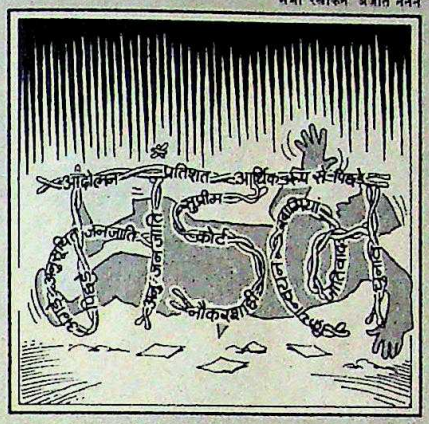

सरकार ने मंडल की गाय को चारा देकर फिर खड़ा कर दिया है. उसका इरादा शायद नवंबर में होने वाले उपचुनाव में इस गाय को दुहने का है. इस बार प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव की सरकार ने आरक्षण का नया फार्मूला दिया है जिसके तहत अगड़ी जातियों के आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को सरकारी नौकरियों में 10 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रस्ताव है. राजनैतिक प्रेक्षकों ने इसे नरसिंह राव की राजनैतिक बाजीगरी का एक और नमूना माना है. इस तरह उन्होंने राष्ट्रीय मोर्चे के एक सूत्री चुनावी कार्यक्रम को तो फीका किया ही है, अगड़ी जातियों के भाजपा समर्थक हिंदुओं को भी बहलाने की कोशिश की है. और तो और, कुछ मंडल विरोधियों ने इसे आखिरी समाधान के रूप में स्वीकार भी कर लिया है.

शायद इसी वजह से इस बार मंडल विरोधी छात्र आंदोलनों के तेवर कुछ फीके हैं. लेकिन यह तथ्य अपनी जगह कायम है कि जाति को राजनैतिक स्वार्थ साधने का साधन बनाया जा रहा है, जबकि सर्वोच्च न्यायालय इस फार्मूले की संवैधानिक वैधता पर विचार कर रहा है. न्यायालय ने इस मुद्दे पर आगे सुनवाई एक महीने के लिए टाल करके इस विवाद को भड़कने से रोका है.

लेकिन असली मुद्दा यह नहीं है. असली मुद्दा है योग्यता की जगह जाति को तरजीह देने का. और इस मुद्दे को यों ही टाला नहीं जा सकता. आर्थिक आधार पर आरक्षण देने का फार्मूला एक अलग विवाद को जन्म दे सकता है. आमदनी का स्तर या गरीबी की रेखा के बारे में फैसला करना भारी मुसीबत का काम साबित हो सकता है. यहां तक कि सरकार को भी अभी पता नहीं है कि इसका लाभ परिवारों को दिया जाएगा या व्यक्तियों को.

और मौलिक सवाल यह है कि मंडल रिपोर्ट को लागू करने का फैसला कितना वैध था. सर्वोच्च न्यायालय इस सवाल पर भी विचार कर रहा है. यह रिपोर्ट जिन आंकड़ों पर आधारित है, उनकी पहले ही काफी आलोचना हो चुकी है. बिना किसी उपयुक्त जनगणना के आंकड़ों के आधार पर रिपोर्ट में कुछ जातियों को पिछड़ी घोषित किया गया है. इसलिए अब बेहतर यही होगा कि सर्वोच्च न्यायालय पहले यह पड़ताल करे कि मंडल आयोग ने अपनी ही कार्यशर्तों का उल्लंघन तो नहीं किया. इस आयोग को सबसे पहले तो यह तय करना था कि अनुभवजन्य प्रमाणों के आधार पर आरक्षण कितना उपयुक्त होगा.

स्वागतयोग्य संशोधन

एमआरटीपी कानून यानी एकाधिकार और प्रतिबंधित व्यापारों के कानून में संशोधन के लिए सरकार ने जो नया अध्यादेश जारी किया है वह सही है. इससे उद्योगों को लालफीताशाही से मुक्त होकर विस्तार करने की सुविधा मिलेगी और दूसरी ओर उपभोक्ताओं के हितों को नई सुरक्षा भी दी जाएगी. अब कुछ अपवादों को छोड़कर नया उद्योग शुरू करने, उद्योग का विस्तार करने, विलय करने या निदेशकों की नियुक्ति करने के लिए पहले मंजूरी लेने की जरूरत नहीं रह जाएगी. लेकिन बाजार में मनमानी करने या उपभोक्ताओं को धोखा देने की छूट नहीं दी जाएगी.

एमआरटीपी आयोग को अब और अधिकार दिए गए हैं. आयोग को अब सार्वजनिक क्षेत्र पर निगरानी रखने का अधिकार दिया गया है. इसके अलावा वह जागीरों के व्यापार में धांधलियों की भी खबर लेगा और नए शेयर जारी करने वाली कंपनियों के झूठे दावों की भी जांच करेगा.

भवन निर्माण की गतिविधियां बड़े व्यापार का रूप लेती जा रही हैं. इसके साथ ही भवन निर्माताओं के खिलाफ उपभोक्ताओं की शिकायतें बढ़ती जा रही हैं. इन शिकायतों की देखभाल करने के लिए कोई कानूनी संस्था नहीं थी. भवन निर्माण एमआरटीपी कानून के दायरे में आता है या नहीं यह भी अस्पष्ट था. अब नए संशोधन से उपभोक्ताओं के लिए नया मंच बन गया है जहां वे शिकायतें पेश कर सकते हैं.

ऐसे भी उदाहरण आते रहे कि कंपनियों ने अपने नए शेयरों के लिए निवेशकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से झूठे दावे किए. आयोग उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं कर पाता था क्योंकि एमआरटीपी कानून उन शेयरों पर लागू नहीं होता जो अस्तित्व में नहीं हैं. अब कोई कंपनी भ्रामक विज्ञापन करती है तो उसे नया विज्ञापन जारी करने का आदेश दिया जा सकता है.

आयोग को और ज्यादा असरदार बनाने के लिए उसे विभिन्न अपराधों के लिए 50 लाख रुपए तक का जुर्माना ठोंकने का अधिकार दिया गया है. सरकार को अब आयोग के उन पंचाटों को मजबूत करने पर ध्यान देना चाहिए जो उपभोक्ताओं की शिकायतों की जांच करेंगे. उद्योगों और उपभोक्ताओं दोनों के लिए बेहतर यही होगा कि सुनवाइयां तेजी से हों. नई व्यवस्था की विश्वसनीयता और उपभोक्ताओं द्वारा इसे मान्यता तभी मिल सकती है जब शिकायतों का जल्दी निबटारा हो.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मच्छर, कॉकरोच
व अन्य कीट-पतंगों को
दूर भगाएं
आसानीसे
पल भर मे!

सुरक्षित
आसान
असरदार

ORBIT
खुशबूदार स्प्रे
AVAILABLE AT ALL LEADING STORES
Manufactured by:
ORBIT AEROSOL
Y-45, Okhla Industrial Area, Phase II,
New Delhi-110 020. Ph: 637596, 6831556

सुधीर तैलंग, हिंदुस्तान टाइम्स

● आरक्षण की 50 प्रतिशत की लक्ष्मण रेखा पार की गई तो जातिवाद का रावण संविधान रूपी सीता का अपहरण कर लेगा. ■ **वसंत साठे,** टेलीग्राफ

● साठे जी महान बुद्धिजीवी हैं, प्रकांड पंडित हैं. हम तो अनपढ़ हैं इसलिए इस क्या कह सकते हैं. ■ **सीताराम केसरी,** जनसत्ता

● जब भी गद्दी खाली होगी, मैं इसके लिए दावेदार हूं. आप महीने के भीतर चमत्कार देखिए.

■ **के. एच. पाटिल** (कर्नाटक के असंतुष्ट कांग्रेसी नेता), *नवभारत टाइम्स*

● कुछ नाकारा लोगों ने जनता दल के शीर्ष पदों पर कब्जा कर रखा है, जो संगठन को मजबूत करने की जगह उसे कमजोर कर रहे हैं.

■ **अजित सिंह,** *स्वतंत्र भारत*

● शरद पवार के समर्थक अगले महीने उनके स्वागत और अभिनंदन के लिए जिस ढंग से तैयारी कर रहे हैं उसे विध्वंसक माना जाना चाहिए.

■ **अब्दुल रहमान अंतुले,** *आ*

● ऐसा अस्पताल! कितनी बदबू है! इस तरह के अस्पतालों को बंद कर देना चाहिए. ■ **माखनलाल फोतेदार** (बिहार के अस्पताल का निरीक्षण करने के बाद), *हिंदुस्तान*

● हमारे मंत्री पाक-साफ हैं. हमारी नीयत साफ है.

■ **कल्याण सिंह** (उ.प्र. के मुख्यमंत्री), *स्वतंत्र भारत*

● वित्त निगम ही वित्त के लिए मोहताज है. दूसरे निगमों की क्या बात की जाए.

■ **अवध बिहारी चौधरी** (बिहार वित्त निगम के नए अध्यक्ष), *आ*

● यदि पुलिस परगट सिंह के खोए रुपयों का पता नहीं लगा सकी तो मैं अपने वेतन से रुपयों का भुगतान करूंगी. ■ **ममता बनर्जी** (केंद्रीय खेलमंत्री), *आ*

● मैं खुद तो अभी हारा नहीं हूं. फिर मेरी टीम कैसे हार मान लेगी.

■ **बालकिशन सिंह** (भारतीय हॉकी टीम के प्रशिक्षक), *संडे ऑब्जर्वर*

● मैं फिल्में तभी छोड़ूंगा जब मुझे काम मिलना बंद हो जाएगा, मेरी स्टार वैल्यू नहीं रहेगी. ■ **अमिताभ बच्चन,** *दैनिक हिंदुस्तान*

● भई इस इंडस्ट्री में लोग दोहरी जिंदगी जीते हैं जो मैं नहीं जी सकती. इसलिए मेरे कामों की चर्चा ज्यादा होती है. ■ **पूजा बेदी,** *दैनिक जागरण*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोई में आपका साथी

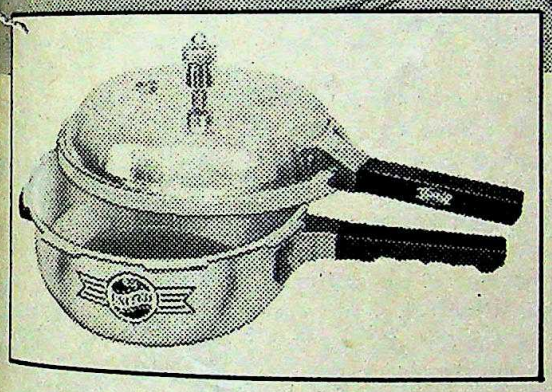

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

गुजरात

अहमदाबाद: मै० फैन्सी नावल्टी स्टोर्स, 1811/2, थ्री गेट, मै० अब्दुल कादिर मो० हुसैन, 1812, थ्री गेट, ● मै० अकबर कादिर भाई, 1822, थ्री गेट, □ बड़ौदा: मै० मोती लाल लाल कन्साड़ा, एम०जी० रोड, ● मै० श्रीजी मेटल ...की मुखने पोल, बजवाड़ा, □ बल्सर: मै० ...दयाराम बलभ राम एण्ड कं०, राम जी स्ट्रीट, ● मै० ...मन फर्नीचर्स, C/o. ए०एस० मैमन, मोटा ताइवाड, □ ...नगर: मै० धर्मेन्द्रा वासन भंडार, एम जी रोड, ● मै० ए ...गृह वस्तु भंडार, वोरा बाजार, महालक्ष्मी मंदिर के सामने, □ गोदरा: मै० महावीर मेटल का०, पुराने बस स्टोप के पास, □ नवसारी: मै० पुष्पांजली स्टेनलेस स्टील मार्ट, 12 सत्या ...मार्किट, दूधिया तालाब, ● मै० दीपक वासन भंडार, ...371 पटवा स्ट्रीट मोटा बाजार, ● मै० नीतिन वासन भंडार, ...शौपिंग सेन्टर दूधिया तालाब, ● मै० शक्ति वासन भंडार, ...रोड दूधिया तलाब, □ नडीआड: मै० चारभुजा वासन ...भंडार, अहमदाबाद बाजार, □ सूरत: मै० अरीहंत स्टील ...एम्पोरियम, छोटा बाजार मैन रोड, ● मै० ठक्कर बदर्स, 5/569 ...चकला, हरीपुरा, ● मै० ठाकुर दास जीवा राम एण्ड ...3/4227, बुन्देलवाड भागल, ● मै० संगीता स्टील सेन्टर, ...A, बाल कृष्ण शौपिंग सेन्टर, कालापीठ, ● मै० कनसारा ...दास नगीन दास मोदी, रेशम वाली बिल्डिंग, बरानपुरी ...मैन रोड,

राजस्थान

□ अलवर: मै० जुनेजा बदर्स, 1 वीर चौक, होप सर्कस, ● मै० भारत बर्तन भंडार, बाजाजा बाजार, □ अजमेर: मै० गोर्वधन लाईट हाउस, मदर गेट, □ चित्तौड़गढ़: मै० आप की दुकान, मीरा मार्किट, कालीकोठरी चोवारा, ● मै० सुरेश स्टील एम्पोरियम, 26 नेहरू बाजार, ● मै० चारभुजा बर्तन भंडार, 6 नेहरू मार्किट, □ जयपुर: मै० महावीर जनरल स्टोर्स, 215 तरीपोलिया बाजार, ● मै० जैन स्टील सेन्टर, 141 तरीपोलिया बाजार, ● मै० जगदीश जनरल स्टोर्स, तरीपोलिया बाजार, □ जोधपुर: मै० सुपर स्टील सेंटर, तरीपोलिया रोड, ● मै० एवन ट्रेडर्स, सोजाती गेट के अन्दर, □ कोटा: मै० गोस्वामी बदर्स, भारतेन्दू भवन, लादपुरा, ● मै० नारायण जनरल स्टोर्स, रामपुरा बाजार, □ नाथवाड़ा: मै० कंसारा तारा चन्द शंकर लाल, दिल्ली बाजार, □ उदयपुर: मै० लाल चन्द छग्गन लाल चौधरी, घंटा घर, ● मै० राजेश मैटल्स, गली भंगवाली, सुरज पोल, उदयपुर

हरियाणा

□ अम्बाला सिटी: मै० दीवान चन्द मनोहर लाल, कोतवाली बाजार, ● मै० सचदेवा बर्तन भंडार, पटेल रोड, ● मै० संजीव ब्यर हाउस, केसरा बाजार, □ बल्लबगढ़: मै० जींदल मेटल हाउस, मेन बाजार, □ चण्डीगढ़: मै० अग्रवाल डिस्ट्रीबुटर्स, शो रूम नं० 30, सेक्टर-26, मध्या मार्ग, ● □ फरीदाबाद: मै० मोहन स्टोर्स, मेन बाजार, ● मै० न्यू लाईट हाउस, मार्किट नं० 1, एनआईटी, ● मै० कृष्ण लाल संजीव कुमार, दुकान नं० 116, मार्किट नं० 1, एनआईटी, □ हाँसी: मै० प्रशोत्तम लाल एण्ड सन्स, सदर बाजार, □ जाखल मण्डी: मै० शिव दत्त राय कमल चन्द, अनाज मंडी, □ हिसार: मै० क्रोकरी पैलेस, मोती बाजार, □ जगाधरी: मै० सेठी मेटल स्टोर्स, रेलवे रोड, □ जींद: मै० केदार नाथ पवन कुमार, मेन बाजार, □ कालका: मै० रल्ला राम द्वारका दास, चादनी चौक, ● मै० बेनी प्रसाद परदूमन कुमार, बस स्टैण्ड, गांधी चौक, □ कैथल: मै० सरस्वती बर्तन भण्डार, नरवारिया बिल्डिंग, ● मै० राम प्रकाश रामेश कुमार, तलाई बाजार □ कुरुक्षेत्र: मै० सरस्वती बर्तन भण्डार, मोती चौक, थानेसर, ● मै० कुमार बर्तन स्टोरज़, कृष्णा गेट, □ पानीपत: मै० मोहन सिंह धारी मल, मेन बाज़ार, ● मै० जैन बर्तन भण्डार, मेन बाज़ार, ● मै० जिया लाल जैन दास, हलवाई हाटा, मेन बाज़ार, □ रोहतक: मै० श्याम लाल आदेश कुमार जैन, रेलवे रोड़ □ रिवाड़ी: मै० शमा बर्तन भण्डार, किला रोड, ● बलदेव सहाय हेमराज सैनी, गोकल बाज़ार.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानूनी पंजे से दूर

● गुनाहों की दुनिया में दाऊद इब्राहिम का सिक्का मुंबई से दुबई तक चलता है. लेकिन फिलहाल तो यही लगता है कि कानून के लंबे हाथ उसका बाल भी बांका

नहीं कर सकते. दुबई स्थित भारतीय दूतावास ने हाल ही में इब्राहिम के पासपोर्ट को पांच और वर्षों के लिए वैध करार दे दिया है. और ऐसा करते समय भारतीय दूतावास ने नई दिल्ली में राजस्व गुप्तचर विभाग के मुख्यालय की राय लेने की भी कोई जहमत नहीं उठाई.

उसने यह कोशिश की होती तो उसे पता चलता कि दुबई से माफिया गतिविधियों का संचालन करने वाले इब्राहिम के खिलाफ कई आपराधिक मामले दर्ज हैं. सोने की तस्करी के कई मामलों में शामिल होने के कारण उसकी गिरफ्तारी के आदेश तीन बार जारी किए गए हैं. उसे 1984 में 112 दूसरे अपराधियों के साथ हिरासत में लिया गया था पर वह जमानत पर निकल गया. 1986 में वह देश से फरार हो गया. उसके बाद उसकी तुरंत गिरफ्तारी के लिए 'रेड अलर्ट' के आदेश दिए गए थे. लेकिन लगता है दुबई स्थित भारतीय दूतावास इन सबसे अनजान बना रहा है.

अब चूंकि उसे देशनिकाले का खतरा नहीं रह गया है इसलिए वह बेरोकटोक एक-दिवसीय क्रिकेट मैचों का आनंद फिल्मी सितारों के बीच बैठकर उठा सकता है. और यह सब वह कम-से-कम पांच वर्षों तक तो कर ही सकता है.

हल्ला मचता रहे

● राज्यसभा के शायद सबसे वजनी शरीर वाले सदस्य विश्वजीत पृथ्वीजीत सिंह का राजनैतिक वजन भले घट गया हो, उनका नाम अभी भी सुर्खियों में आ ही जाता है. लोगों के जेहन में बने रहने के लिए वे मुंबई के दैनिक 'फ्री प्रेस जर्नल' में साप्ताहिक स्तंभ लिखने लगे हैं. दून स्कूल के छात्र रह चुके विश्वजीत का राजनैतिक जीवन सोनिया गांधी के पल्लू से बंधा हुआ है. राजनीति में सोनिया के प्रवेश की अनिश्चितता उनके लिए घातक सिद्ध हो रही है. इसीलिए उन्होंने मणिशंकर अय्यर जैसे पुराने दिग्गजों वाला रास्ता चुनने में ही अपनी भलाई समझी. हुल्लड़ ब्रिगेड के इस पुराने सदस्य के लिए अपनी उपस्थिति का एहसास कराना जरूरी तो है ही, भले ही

सभी कार्टून: अजीत नैनन

इसके लिए 'फ्री प्रेस जर्नल' जैसे अखबार का सहारा लेना पड़े.

ओटन लगे कपास

● महाराज फिर ऊंची उड़ान भरने लगे हैं. पिछले पखवाड़े नागरिक उड्डयनमंत्री माधवराव सिंधिया चालक की कुर्सी पर जमकर बैठ गए. नहीं, नहीं, यह

कुर्सी इंका वाली नहीं थी. यह तो दिल्ली से गोवा और फिर वापस दिल्ली की उड़ान भर रहे विमान के चालक की कुर्सी थी. इस उड़ान में सारे नियमों को ताक पर धर दिया गया. दरअसल, सिंधिया ट्रैवल एजेंटों के एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए गोवा गए थे. उनके साथ पत्रकारों की एक टोली भी थी. गौरतलब बात यह है कि सिंधिया के पास निजी विमानों को उड़ाने का लाइसेंस भर है, पर उसके आधार पर वे बड़े व्यावसायिक विमानों को नहीं उड़ा सकते.

विमान को उड़ाते और उतारते वक्त उन्होंने अकेले ही विमान की कमान संभाली. रनवे पर दौड़ता विमान बस एक बार उनके हाथ से निकलता लगा. और तब उन्होंने घबराकर ब्रेक का धड़ाधड़ इस्तेमाल किया. शायद उन्हें एहसास हो गया था कि नई गतिविधि उनके पद जिम्मेदारियों से मेल नहीं खाती.

मातहत की मेहरबानी

● हवाई अड्डे की ओर जा वाली सड़क पर कारें एक-एक फर्राटे से गुजरती रहीं. अपनी खराब हो गई कार से उतरकर असहाय यात्री मदद मांगता रहा मगर किसी ने उसके इशारों पर रुकना तो क्या, शायद उसकी ओर देखने की तकलीफ तक नहीं की. इसी बीच एक स्कूटर सवार उधर से गुजरता दिखा. उसे भी उन्होंने हाथ दिखाया. अंततः दोपहर सवार को उन पर दया आ गई.

वह बुजुर्ग यात्री हाथ में ब्रीफकेस थामे स्कूटर पर चढ़ पड़ा. हवाई जहाज पकड़ पाने की उम्मीद कम हो चली थी, इसलिए स्कूटर सवार ने यात्री को एअरबस टर्मिनल तक पहुंचाने की पेशकश की. जब यात्री ने इनकार किया तो स्कूटर सवार ने उसे अधिकार पत्र दिया जिसकी मदद

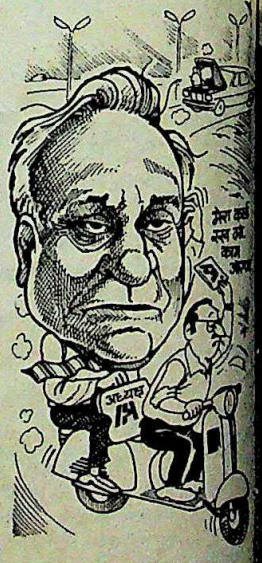

से बेरोकटोक विमान तक जाया जा सकता था. स्कूटर सवार इंडियन एअरलाइंस के एक सुपरिंटेंडेंट इंजीनियर थे. जाहिर है कि यात्री उनके कारण समय पर हवाई जहाज तक पहुंच सका.

अगले ही दिन यात्री ने उस मददगार इंजीनियर को एक धन्यवाद पत्र भेजा. पत्र पर दस्तखत इंडियन एअरलाइंस के अध्यक्ष एअर मार्शल एस. एस. रामदास का था.

...और एक चुटकी

सरकार की तमाम मान-मनौवलों के बावजूद आप्रवासी भारतीय मातृभूमि को अपने धन से धन्य करने को उत्सुक नहीं नजर आते. इस पर एक प्रमुख अर्थशास्त्री ने टिप्पणी की—"आप्रवासी भारतीय यानी अविश्वसनीय भारतीय!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

VIP
BENZ

New VIP Benz steers a touch of German precision to men's underwear. You have the most comfortable stretchable fabric. And you have the most reliable imported rubber elastic. The rest is sheer styling. All perfect. All German.

VIP BENZ. Great mileage in comfort.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहाने का पुण्य

■ किसी को समुद्र के गहरे पानी में उतरे बिना सिर्फ बावड़ी में नहाते समय ही मोती हाथ लग जाएं तो इसके लिए उसकी किस्मत को सराहा जाना चाहिए या फिर नहाने की आदत को.

पिछले पखवाड़े अगरतला के एक व्यापारी की किस्मत कुछ इसी तरह खुल गई. सुबह-सुबह वे स्थानीय बावड़ी में नहाने के लिए गए जहां पानी में उतरने पर उनके हाथ से कोई अजीब चीज आ टकराई. हाथ पानी से बाहर निकालकर देखा तो यह एक सीप थी. सीप को खोलते ही उसमें से एक चमकता हुआ मोती उनके हाथ में आ गिरा. बाद में यह

सभी कार्टून: अयतो

खबर दूसरे लोगों तक पहुंची और दोपहर तक देखते-देखते बावड़ी में नहाने वालों का मेला जुट गया. लेकिन ये लोग वहां स्नान करने नहीं बल्कि मोती वाले सीप ढूंढ़ने आए थे.

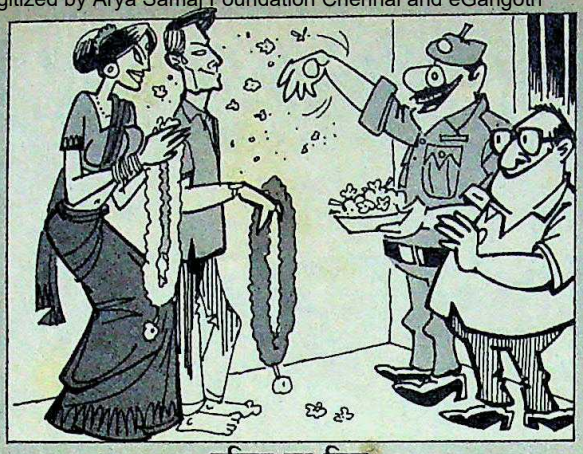

पुलिस का दिल

■ अक्सर देखा जाता है कि किसी थाने में तैनात किसी एक कर्मचारी की करतूतों से पुलिस के सारे प्रचार अभियान पर पानी फिर जाता है. लेकिन ऐसे पुलिस कर्मचारियों की भी कमी नहीं है जो अपने-अपने स्तर पर रचनात्मक फैसले करके लोगों का दिल जीतने में लगे हुए हैं.

वाकया आंध्र प्रदेश के मछलीपत्तनम का है जहां की एक बस्ती में अलग-अलग बिरादरी वाले एक युवक और युवती में प्रेम हो गया. प्यार की पींगें एक साल तक चढ़ीं और उसके बाद दोनों ने हमेशा के लिए एक-दूसरे का हो जाने का फैसला कर लिया. लेकिन अपने घर के लोगों को मना पाना उनके लिए बहुत मुश्किल था. इसलिए दोनों ने कहीं भाग जाने का फैसला कर लिया. इधर, ये दोनों भागे और उधर लड़की के पिता ने गुस्से में आकर लड़के के खिलाफ थाने में रपट लिखा दी कि उसने लड़की का अपहरण कर लिया है. थाने के इंचार्ज इंस्पेक्टर ने रपट तो दर्ज कर ली पर उसे इसकी सचाई पर संदेह था. अब पुलिस हरकत में आई और दो-तीन दिन के भीतर ही विजयवाड़ा में लड़के-लड़की को ढूंढ़ निकाला गया. वापस लाकर इंस्पेक्टर ने दोनों के साथ विस्तार से बातचीत की तो मामला साफ हो गया. दोनों अपनी मर्जी से भागे थे और शादी करना चाहते थे. अब इंस्पेक्टर ने अपना एक नया रूप दिखाया और दोनों से सहानुभूति रखने वाले उनके कुछ मित्रों को बुलाकर थाने में ही दोनों का विवाह करा दिया गया. मजे की बात है कि सूचना मिलते ही राज्य के सूचना राज्यमंत्री भी जोड़ी को आशीर्वाद देने दौड़े चले आए.

अनोखी प्रतियोगिता

■ गोवा के नागरिकों ने सड़कों की मरम्मत कराने का नायाब जवाब ढूंढ़ा है. वहां की एक ट्रांसपोर्ट कंपनी ने सड़क के गड्ढों से अपनी गाड़ियों को होने वाले नुकसान से तंग आकर एक प्रतियोगिता का आयोजन कर डाला. प्रतियोगिता में स्थानीय नागरिकों को शहर की सड़कों के गड्ढे गिनकर उनकी सही संख्या बतानी थी. प्रतियोगिता से कहीं ज्यादा आकर्षक उसका प्रचार रहा जिससे डरकर अधिकारियों को अपनी फुर्ती दिखानी ही पड़ी. प्रतियोगिता पूरी होने के पहले ही उन्होंने शहर की भीतरी सड़कों की मरम्मत कर डाली. लेकिन

बड़ी सड़कों तक उनके पहुंचने से पहले ही प्रतियोगिता पूरी हो गई और सड़कों में गड्ढों की सही संख्या बताने वाले एक भाग्यशाली युवक को 150 रु. का नकद इनाम भी मिल गया.

सपनों का रईस

■ यह किस्सा ऐसे होनहार तमिल युवक का है जिसने रातोरात लखपति बनने का फैसला कर लिया. पिछले पखवाड़े उसने तमिल फिल्मों की मशहूर बाल कलाकार शामली

को एक चिट्ठी भेजी. खुद को एलटीटीई का सदस्य बताते हुए उसने लिखा कि तुम्हें खत्म करने के लिए मुझे 50 हजार रु. दिए गए हैं. लेकिन अगर तुम मुझे एक लाख रु. दो तो मैं तुम्हारी जगह उस व्यक्ति को खत्म कर दूंगा जो तुम्हें मारना चाहता है. उसने उस जगह के बारे में भी लिख दिया जहां शामली के पिता को पैसे पहुंचाने थे.

तय स्थान पर ठीक समय पर एक कार आकर रुकी. उसमें से एक हाथ निकला जिसने एक ब्रीफकेस को बाहर रखा और कार चली गई. थोड़ी ही देर में एक युवक आया और ब्रीफकेस उठाकर चलता बना. लेकिन आसपास छिपे पुलिसवालों ने उसे धर दबोचा. अब वह सींखचों से मुक्ति के सपने देख रहा है.

दारू की नदियां

■ कहते हैं भारत में कभी दूध-घी की नदियां बहती थीं. मद्रास के नागरिकों को भी पिछले पखवाड़े अजीब सुख से दो-चार होने का मौका मिला. उन्होंने दूध-घी की नदियां तो नहीं, दारू की नदी बहती जरूर देखी.

माउंट रोड पुलिस ने एक ट्रक की तलाशी में दारू की 40 हजार थैलियां बरामद कीं. अब सवाल उठा कि इन्हें नष्ट कैसे किया जाए. इससे पहले एक बार ऐसी थैलियों को दरिया में बहा दिया गया था. लेकिन कुछ होशियार लोगों ने दूर जाकर उन्हें जाल में पकड़ लिया और बाजार में बेच दिया. लिहाजा, इस बार अचूक इलाज ढूंढ़ा गया. सड़क पर कुछ पुलिसवालों को बिठा दिया गया जो थैलियां फेंकते रहे और आने-जाने वाली गाड़ियां उन्हें रौंदती रहीं. ज्यों ही कोई थैली किसी गाड़ी के पहिए के नीचे आकर फटती, किनारे खड़े कुछ लोग तालियां बजाते और बेचारे मदिरा प्रेमी अपने दिल पर हाथ रखकर रह जाते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

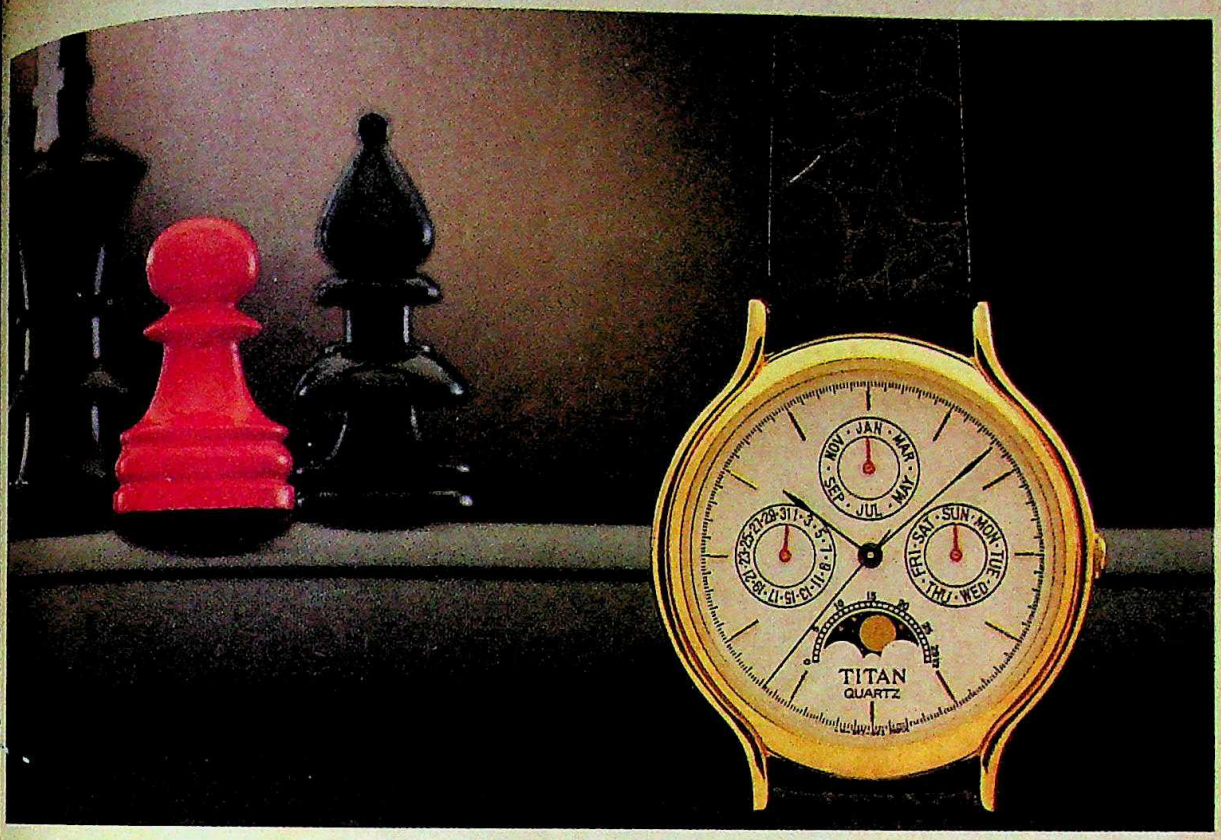

५ डायल वाली बहुउपयोगी घड़ी। समय, दिन, दिनांक, महीना और चांद की कला दर्शाते यंत्र समूह। Rs.2419*

टाइटन की क्लासीक. बारीक पसन्द की पहचान.

ऐसी अनोखी घड़ियां भारत में पहले कभी नहीं बनीं। क्लासीक युरोपियन डिज़ाइन और सूक्ष्म तकनॉलजी का निराला संगम।

टाइटन की बहुउपयोगी घड़ियां। पूनम से अमावस्या तक चांद की हर तस्वीर सही दिखाने वाली मूनफ़ेज़ घड़ियों से लेकर एक ५ डायल वाली घड़ी तक, जो शानदार कैलेन्डर का काम दे।

ये जितनी जटिल हैं, उतनी ही लुभावनी और उनके रूप को निखराती है, १८ और २३ कैरेट गोल्ड प्लेटिंग की दोहरी परत और शानदार लेदर।

टाइटन की ४०० से भी ज़्यादा अन्तर्राष्ट्रीय क्वार्ट्ज घड़ियों के खज़ाने में सबसे बेहतरीन, यह बहुउपयोगी घड़ियां - सिर्फ रु.११२५ से रु. २५०० तक। हर घड़ी के साथ आपको मिलेगा टाटा के नाम का भरोसा और २ साल की गारण्टी।

नयी बहुउपयोगी क्लासीक घड़ियां। फ़र्क शान का। बारीक पहचान का।

Classique

Rs.2057* Rs.1573* Rs.1543*

TITAN
QUARTZ
The Changing Face Of Time

*दिखाई गई कीमतों में दिल्ली में लागू सभी कर शामिल हैं।

Ogilvy & Mather 3288

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठता की पहचान करना।
और उसे उसी शानदार ढंग से
पेश करना। मानो खरा सोना।
यही तो है मर्दों की असली शान।

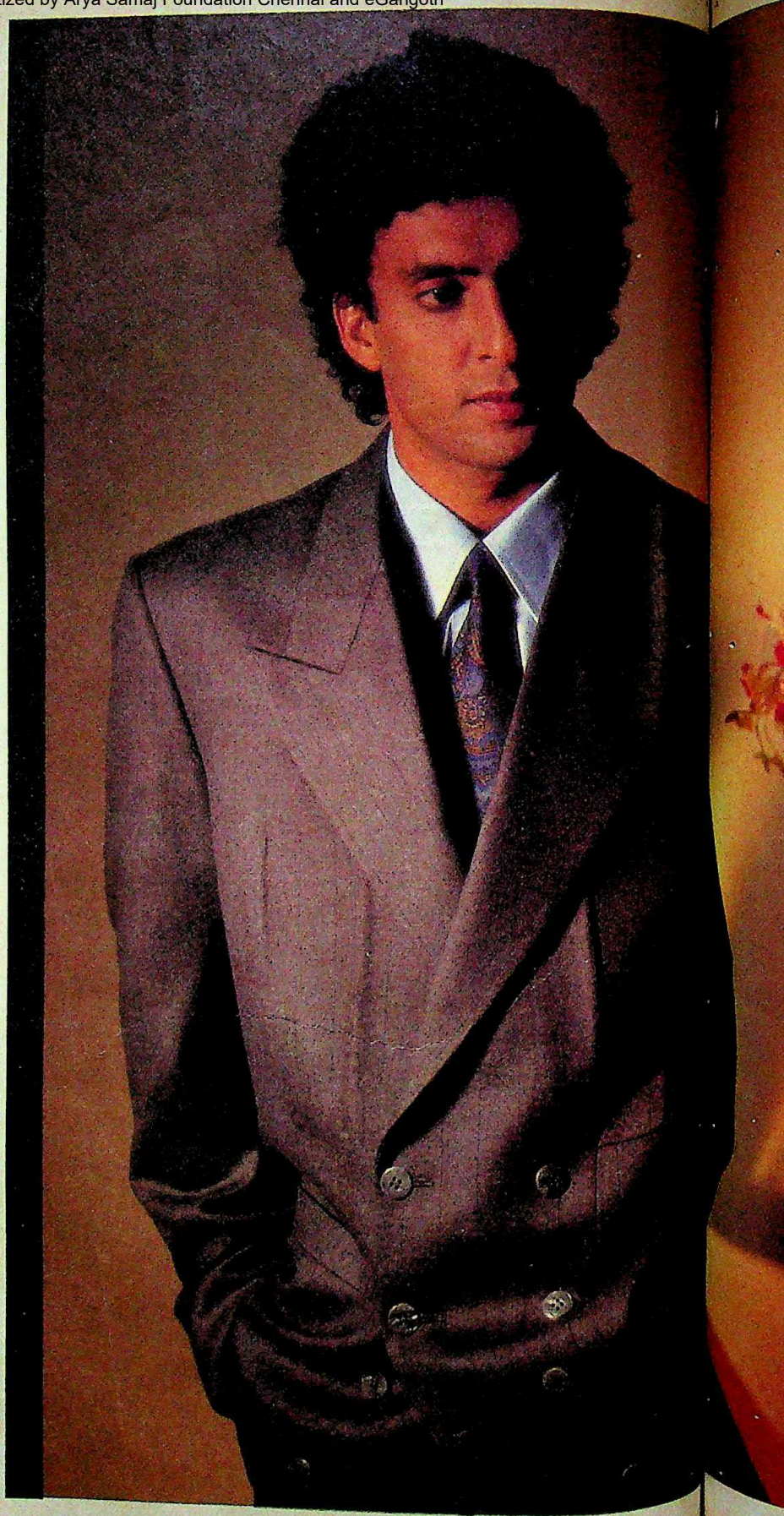

Woolmark
(वूलमार्क)
PURE NEW WOOL
INTERNATIONAL SYMBOL OF PURE NEW WOOL

आराम और शान के लिए
असली ऊनी सूटिंग्स

SUMANGAL और अन्य प्रमुख स्टोर्स में उपलब्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

OCM

SOLID GOLD

बेहतरीन सुपरफाइन
सूटलेंथ्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वी एक्स एल इंडिया लि. का उत्पाद।

F.S. Advertising/OCM/002/Hin.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Take the world in your stride

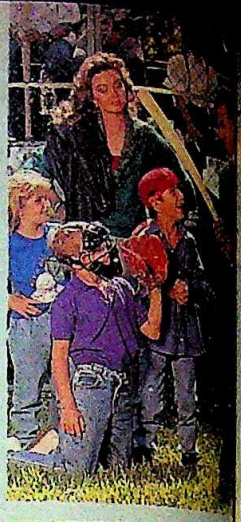

YNASTY • NUOVO LOOK • TREND SETTER • MATCH MAKER SATINS • HI FASHIONS SUITINGS

Woolmark

PURE NEW WOOL

HI-COMFORT WOOL

dines

THE CHOICE OF LEADING FASHION HOUSES INTERNATIONAL

AUTHORISED DEALERS: CALCUTTA: B. P. TRADERS • J. S. MOHAMMEDALI • SHREYANS • JAMSHEDPUR: PARADISE FABRICS • [illegible] CENTRE • RANCHI: KASHMIR VASTRALAYA • R. C. PRAMANIK & CO. • VED TEXTILES • VIJAYKUMAR & BROS.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: शंकर

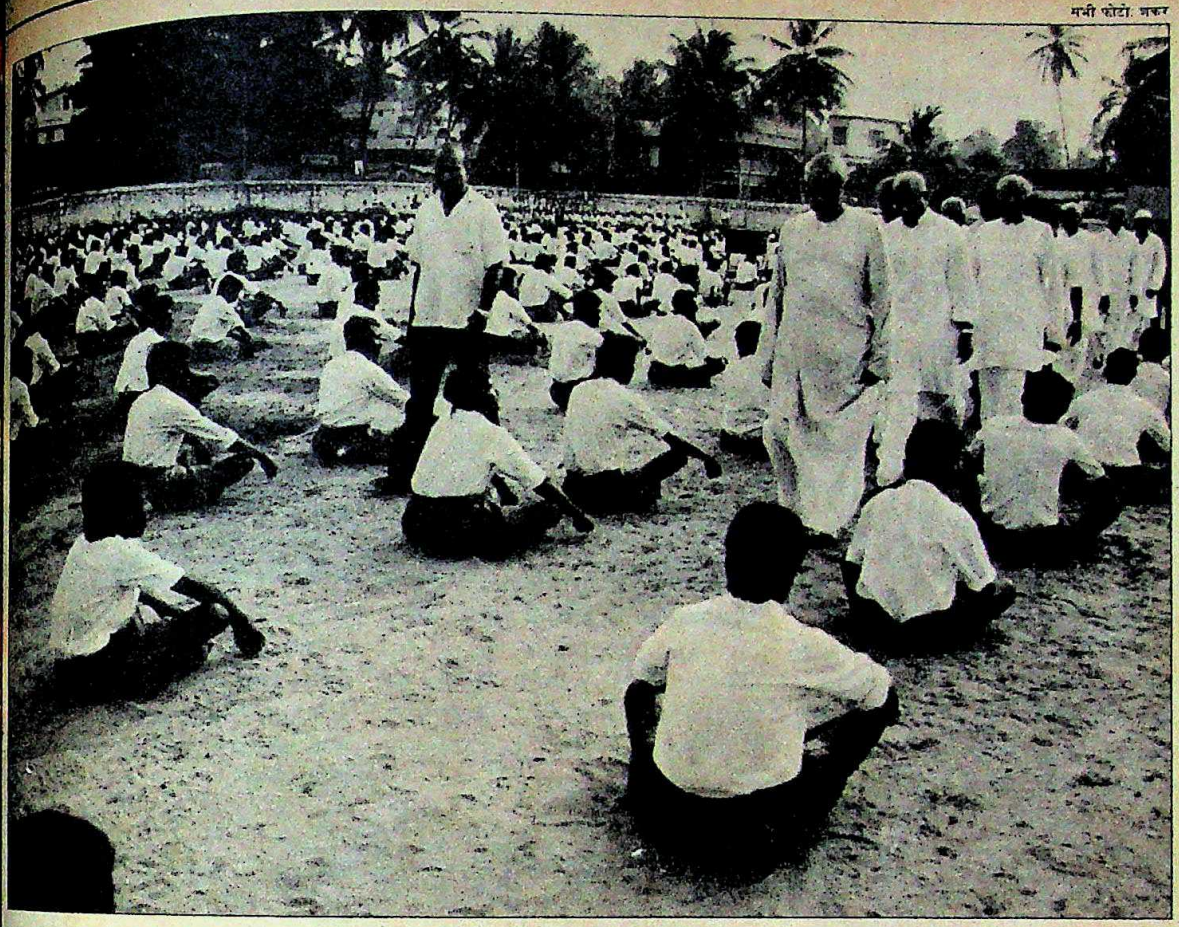

भारतीय जनता पार्टी

दक्षिण में दबदबे की हसरत

दक्षिण भारत में कांग्रेस का गढ़ माने जाने वाले चार राज्यों आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में भगवा पताका फहराने के लिए पार्टी ने न केवल रणनीति बनाई बल्कि कमर भी कसी

—आनंद विश्वनाथन

उत्तर भारत के कई हिस्सों में चुनावी पताका फहराने के बाद भाजपा अब चारों दक्षिणी राज्यों—आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु—में भी भगवा पताका फहराने का इंतजार कर रही है. दरअसल, वह इंतजार कम, तैयारी ज्यादा कर रही है.

इन राज्यों में जड़ें जमाने की रफ्तार जानबूझकर धीमी रखी गई है. वैसे भी दीर्घकालिक रणनीति भाजपा की अपनी विशिष्ट शैली रही है. पार्टी उपाध्यक्ष सुंदर सिंह भंडारी कहते भी हैं, "हम खुद को लोगों पर थोपना नहीं चाहते. फैसला लोगों को ही करना है." भाजपा सबसे पहले तमिलनाडु और केरल में भगवा लहर फैलाने जा रही है. पिछले पखवाड़े राष्ट्रीय कार्यकारिणी की दो दिवसीय बैठक के लिए तिरुवनंतपुरम का चुना जाना बेवजह नहीं है. जैसा कि लोकसभा में विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी कहते हैं, "हम उन्हीं क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं जहां हमारी स्थिति कमजोर है. यही वजह है कि हमने बंगलूर के बजाए तिरुवनंतपुरम को चुना."

दरअसल, इस बैठक में हाल के चुनावों में दक्षिणी राज्यों में पार्टी की विफलता का गहन विश्लेषण किया गया. सबसे ज्यादा जोर दीर्घकालिक जीत के लिए रणनीति को धारदार बनाने पर था.

पार्टी इस निष्कर्ष पर पहुंची कि उसने उत्तरी भारत में हिंदुत्व का जो चोला पहना था, उसे उतार फेंकना होगा. दक्षिण में प्रभाव बढ़ाने के लिए यह जरूरी है. वहां अलग किस्म की नीति भी अपनानी होगी. सो, दक्षिण में हिंदू पुनरुत्थान के स्वर्ण युग के बजाए राष्ट्रीय शासन के स्वप्न पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है. जैसा कि आंध्र प्रदेश भाजपा अध्यक्ष और दक्षिण भारत में पार्टी की रणनीति गढ़ने वाले वेंकैया नायडू कहते हैं, "सवाल यह है कि भविष्य में हमारी ही सरकार बनेगी, यह बात लोगों में कैसे मान्य बनाएं?"

जाहिर है, यह मुश्किल काम है. पार्टी ने पिछले चुनावों में देश भर में भले ही 117 सीटें जीतीं लेकिन कर्नाटक में उसे महज चार सीटें और आंध्र प्रदेश में एक सीट ही मिली. वाजपेयी संकेत करते हैं, "जिन राज्यों में हमारी स्थिति कमजोर है, वहां अधिक से अधिक सीटें जीतने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए हमें भरसक कोशिश करनी होगी.'' नायडू ने इसके लिए पार्टी महासचिव प्रमोद महाजन के साथ मिलकर एक तितरफा कार्य योजना बनाई है:

- पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी दक्षिणी राज्यों की समस्याओं से संबंधित प्रस्ताव पारित करेगी.
- आडवाणी, वाजपेयी, विजयाराजे सिंधिया और दूसरे वरिष्ठ नेता हर माह चारों राज्यों का दौरा करेंगे.
- भाजपा सांसद दक्षिण के अहम मुद्दों को संसद में उठाएंगे.

लेकिन दक्षिण की अपनी समर नीति में भाजपा हर राज्य के लिए अलग तरीके अपनाएगी. राज्य इकाइयों ने अपनी चुनावी खामियों को पहले ही तलाश लिया है (देखें बॉक्स) और उन्हें दूर करने की कोशिश कर रही हैं.

पार्टी के निराशाजनक लेखे-जोखे में कर्नाटक एकमात्र ऐसा दक्षिणी राज्य है जो उसकी उम्मीद को बनाए हुए है. वहां पार्टी का मनोबल ऊंचा है. मंगलूर से पार्टी सांसद वी. धनंजय कुमार कहते हैं, ''यदि आडवाणी और वाजपेयी राज्य का नियमित रूप से दौरा करें तो हम दो साल के भीतर विधानसभा में पूर्ण बहुमत हासिल कर सकते हैं.''

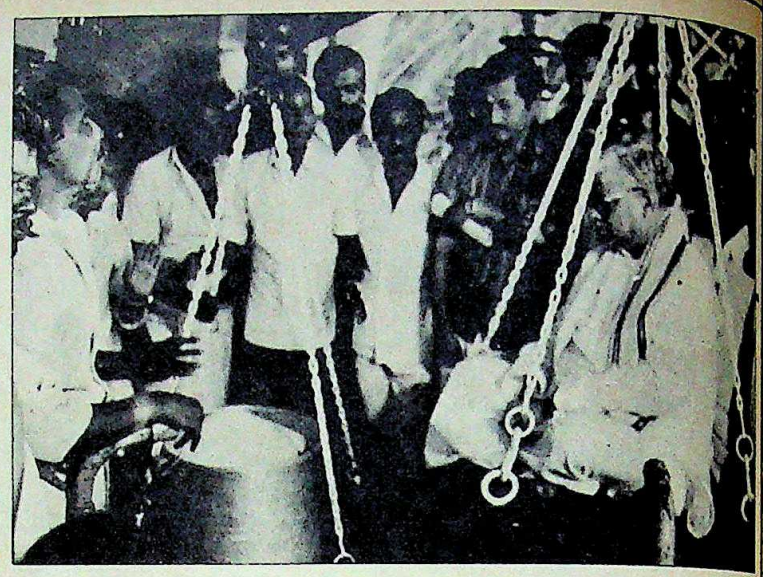

तिरुवनंतपुरम के मंदिर में अध्यक्ष जोशी

लेकिन दक्षिण इतनी आसानी से भाजपा की झोली में आने वाला नहीं है. इसके लिए उसे इन राज्यों में ठोस अभियान चलाना होगा. यही नहीं, उसे हिंदी और हिंदू रक्षक की अपनी छवि भी धोनी होगी.

पार्टी का लेखा-जोखा

पिछले चुनाव में भाजपा के प्रदर्शन और उसकी नई रणनीति पर एक नजर

कर्नाटक

वोट का प्रतिशत	1989	1991	बढ़ोतरी
	2.6	28.8	+26.2

फायदे वाली बातें: राम मंत्र, किसानों का समर्थन, इंका और जनता दल से लोगों का मोहभंग.

नई रणनीति: 'कर्नाटक बचाओ' अभियान, बंगारप्पा के खिलाफ मुहिम, आडवाणी और वाजपेयी जैसे नेताओं का नियमित दौरा.

लोकसभा में सदस्य: चार

आंध्र प्रदेश

वोट का प्रतिशत	1989	1991	बढ़ोतरी
	2.1	8.8	+6.7

खराब प्रदर्शन की वजहें: सहानुभूति लहर, साधनों की कमी, निचले स्तर पर कार्यकर्ताओं का अभाव.

नई रणनीति: गांवों और महिलाओं तक पहुंचना, 65 पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की भर्ती, 'आंध्रनाडु बचाओ' अभियान.

लोकसभा में सदस्य: एक

तमिलनाडु

वोट का प्रतिशत	1989	1991	बढ़ोतरी
	0.2	1.4	+1.2

खराब प्रदर्शन की वजहें: सहानुभूति लहर, द्रमुक विरोधी भावना, इंका और अन्ना द्रमुक की ताकत.

नई रणनीति: एलटीटीई का मुद्दा भी जयललिता की पहल के कारण छिना, आंदोलन और गांवों में इकाइयां बनाने की योजना.

लोकसभा में सदस्य: कोई नहीं

केरल

वोट का प्रतिशत	1989	1991	बढ़ोतरी
	4.2	4.7	+0.5

खराब प्रदर्शन की वजहें: इंका से गुप्त समझौता, साधनों की कमी, सहानुभूति लहर.

नई रणनीति: इंका को मुसलमान समर्थक बताना, करुणाकरन की 'पोल खोलना', असंतुष्ट कम्युनिस्टों को फुसलाना.

लोकसभा में सदस्य: कोई नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KYOCERA

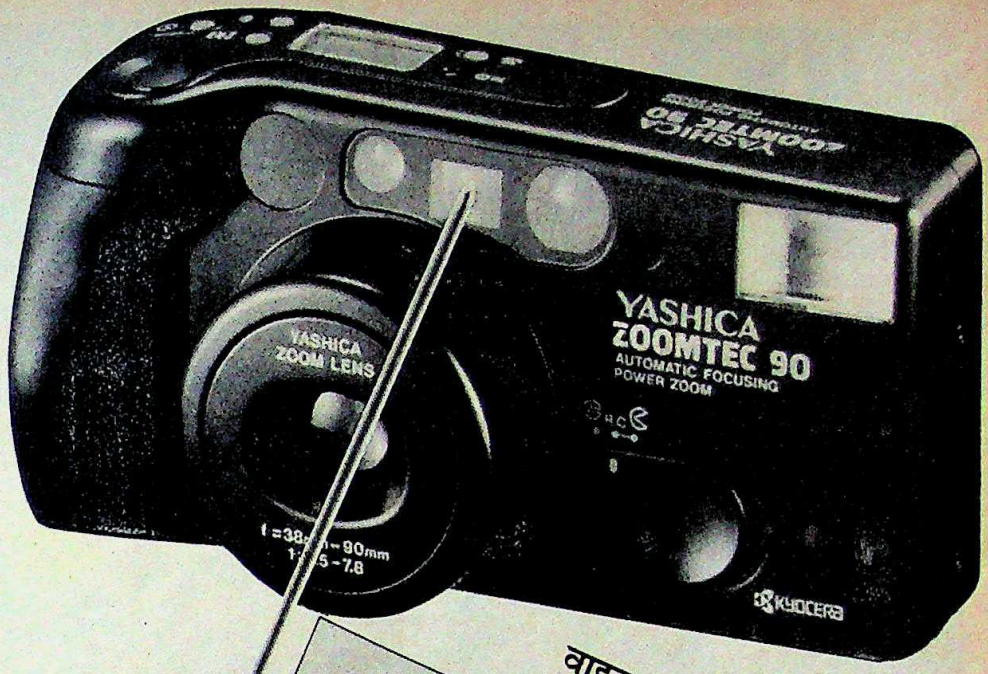

वाइड एन्गल। स्टैंडर्ड।
क्लोज़ अप। मॅकरो क्लोज़ अप।

नया
याशिका ज़ूमटैक 90

ॲक्शन सीन हो या मुन्नी बिटिया की सालगिरह। अब आधुनिक इन्फ्रा रेड वायरलेस रिमोट कन्ट्रोल से शूट करें।
नया याशिका ज़ूमटैक 90 कॉम्पॅक्ट 35mm ज़ूम कैमेरा।
इलेक्ट्रोनिक कन्ट्रोल स्टैप्लेस ज़ूम।
वाइड एन्गल (38mm) से टैलिफोटो (90mm) तक,
जैसे चाहे चित्र को फ्रेम करे।
कंटीन्युअस ऑटो फ़ोकस से चित्र हमेशा साफ़।
साथ मॅकरो मोड जिस के सहयोग से आप 50 cms की नज़दीकी से भी चित्र खींच सकते है। याशिका ज़ूमटैक 90 में ये सब सुविधाए। और अगर चाहे तो रिमोट कन्ट्रोल भी।

ज़ूमटैक 90 के अलावा, ज़ूमटैक 80 और ज़ूमटैक 60 भी उपलब्ध।

कैमेरे के आगे से।
कैमेरे के पीछे से।
रिमोट कन्ट्रोल के सहयोग से।

कैमरा हो-तो
याशिका YASHICA

KYOCERA CORPORATION. Optical Equipment Division, 27-8, 6-chome Jingumae, Shibuya-ku, Tokyo 150, Japan.
"YASHICA" is a trademark of KYOCERA CORRORATION.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

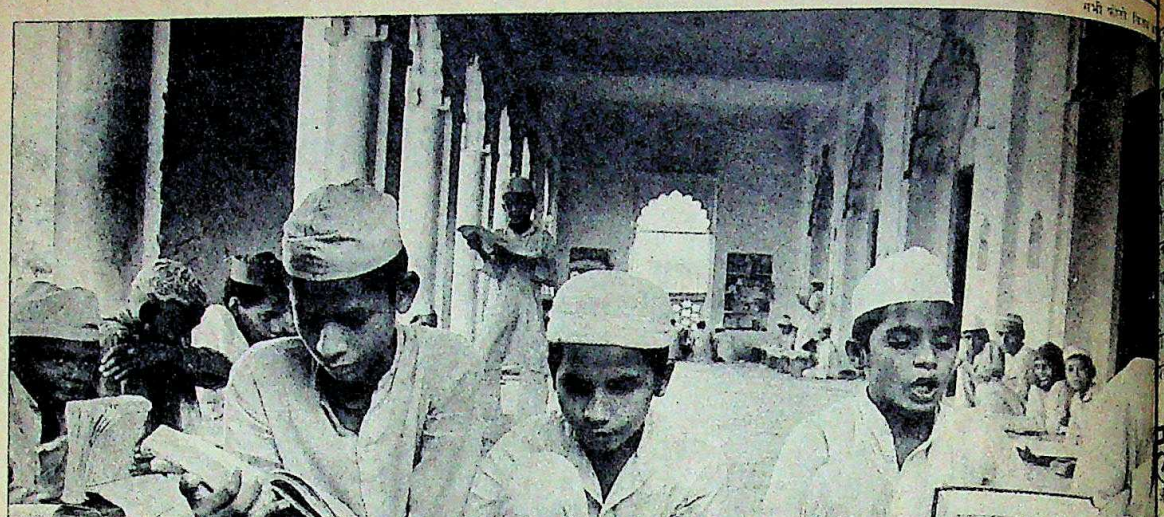

एक मदरसे में [illegible] पाते बच्चे

मदरसे

मजबूरी का नाम तालीम

गरीबी और अभावों से त्रस्त मां-बाप दूर-दूर से अपने बच्चों को इसलिए पढ़ने भेजते हैं क्योंकि मजहबी तालीम के साथ रहने-खाने का भी इंतजाम हो जाता है

—**विजय क्रान्ति,** हापुड़, पिपलेहड़ा और खिजरा में

गाजियाबाद जिले के मसूरी थाने में पिछले पखवाड़े लाए गए आठ नन्हें मेहमान वहां लाए जाने वाले दूसरे लोगों से बहुत अलग थे. सहमे हुए चेहरे, फटे हुए मैले कपड़े, नंगे पांव और उदास आंखों वाले बिहार के इन बच्चों में से कुछ ने अपनी आंखों से देखा था कि किस तरह मदरसे के कुछ मौलवियों ने उनके हमवतन एक मासूम छात्र को पीट-पीटकर मार डाला था (देखें बॉक्स).

ये बच्चे निकटवर्ती खिजरा गांव में चलने वाले मदरसे के छात्र हैं जहां वे हिफ्ज़ (कुरान कंठस्थ करने) की पढ़ाई के लिए बिहार के अलग-अलग इलाकों से आए हुए हैं. पांच से ग्यारह साल की उम्र के उन जैसे सैकड़ों बच्चे हर साल बिहार, पश्चिम बंगाल और दूसरे कई राज्यों से पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मदरसों में आते हैं. कुछ को तो उनके परिवार दीनी तालीम से लगाव की वजह से इतनी दूर भेजते हैं. लेकिन अधिकांश लोगों के लिए इतना ही लालच काफी होता है कि गरीबी और अभावों से त्रस्त घर से दूर उन बच्चों को ऐसे किसी मदरसे में रहने, धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ भरपेट भोजन भी मिल जाएगा.

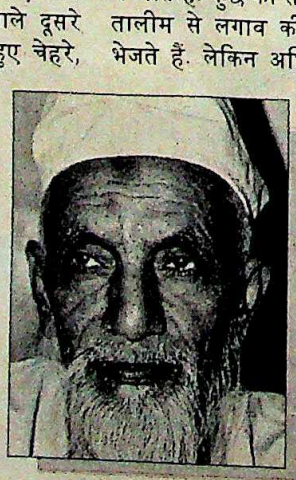

"तालीम और रहने-खाने का खर्च ज़कात और खैरात से ही चलता है"
नाज़िर हुसैन
मोहतमिम, इंतजामिया कमेटी, जामिया अरबिया

केवल गाजियाबाद जिले में ही ऐसे मदरसों की संख्या 30 के आसपास है. इसके अलावा सहारनपुर, मुजफ्फरनगर और मेरठ जिलों में भी ऐसे मदरसों की संख्या अच्छी-खासी है. इनमें से लगभग सभी मदरसे देवबंद के धार्मिक शिक्षा संस्थान दारुल-उलूम से जुड़े हुए हैं. ये मदरसों में आम तौर पर हिफ्ज़ और अरबी-फारसी की शिक्षा दी जाती है जबकि कुछ मदरसों में मौलवियत के साथ खादिम-उल-इस्लाम तक की पढ़ाया जाता है. इसके बाद आलिम और मुफ्ती स्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...शिक्षा के लिए छात्रों को देवबंद जाना ...ता है. हाल ही में हापुड़ के जामिया ...बिया में भी मौलवियत और मुफ्ती तक ...शिक्षा की व्यवस्था कर दी गई है.

...लगभग सभी मदरसे मुस्लिम बहुल ...में हैं. इन्हीं गांवों से ज़कात (दान) के ...पर मिलने वाले फसल के 'चालीसवें', ...नी के गोश्त, ईद के बकरों की खालों ...निजी तौर पर दी जाने वाली खैरात ...रोसे ही इन मदरसों में बच्चों के लिए ...जन आदि और मौलवियों के वेतन की ...स्था होती है.

हापुड़ के जामिया अरबिया की इंतज़ामिया कमेटी के मोहतमिम (अध्यक्ष) नाज़िर हुसैन (70) बताते हैं कि ...शाखाओं के माध्यम से लगभग 1,800 ...चों को शिक्षा देने वाले इस मदरसे का ...लाना बजट 18 लाख रु. है. वे कहते हैं, ...हमें इसके लिए कहीं हाथ नहीं पसारने ...ते. अल्ला के हुक्म से लोग खुद आकर दे ...ते हैं."

गांवों में चलने वाले मदरसों में भी ...छले कुछ बरस से छात्रों की संख्या में ...द्धि हो रही है. लेकिन स्थानीय ग्राम सभाओं या फिर गैर-पेशेवर प्रबंध के मार्फत तालीम देने के कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं. इन मदरसों में मिलने वाली तालीम यहां के बच्चों को वह संतुलित व्यक्तित्व नहीं दे पा रही जो उन्हें बाद के जीवन में अपने पैरों पर खड़ा होने की ताकत दे सके.

ऐसे तीन मदरसों में लगभग 50 बच्चों के साथ अलग-अलग बातचीत में देखा गया कि दो चार छात्रों को छोड़ बाकी बच्चों को स्थानीय 'फैज़ल' अखबार के अलावा किसी दूसरे अखबार का नाम भी नहीं पता था. साल भर मदरसे में पढ़ने के बाद 13 और 16 साल की उम्र के बच्चे कुरान की आयतें तो सुरीले स्वर में मुंहजबानी सुना सकते हैं. लेकिन अपने घर चिट्ठी लिखने लायक हिंदी या उर्दू नहीं सीख पाते.

दीनी तालीम और सामान्य स्कूलों के बीच पढ़ाई के इस जबर्दस्त अंतर को कम करने के बारे में मुस्लिम समाज में पिछले कुछ समय से अच्छी-खासी बहस चल रही है. कई मदरसों ने अपने यहां की पढ़ाई में विज्ञान, गणित, हिंदी और सामाजिक ज्ञान जैसे विषयों को शामिल करना शुरू भी कर दिया है. लेकिन दीनी तालीम और दुनियादारी की शिक्षा के बीच मौजूदा खाई को अगर कम नहीं किया जाता तो ये मदरसे साधनहीन बच्चों को खैरात बांटने के केंद्र मात्र बनकर रह जाएंगे. इसका सबसे बड़ा नुकसान दीनी तालीम को ही होगा. बदलते हुए समाज में इस आध्यात्मिक शिक्षा के प्रति आकर्षण घटने के खतरे बढ़ेंगे.

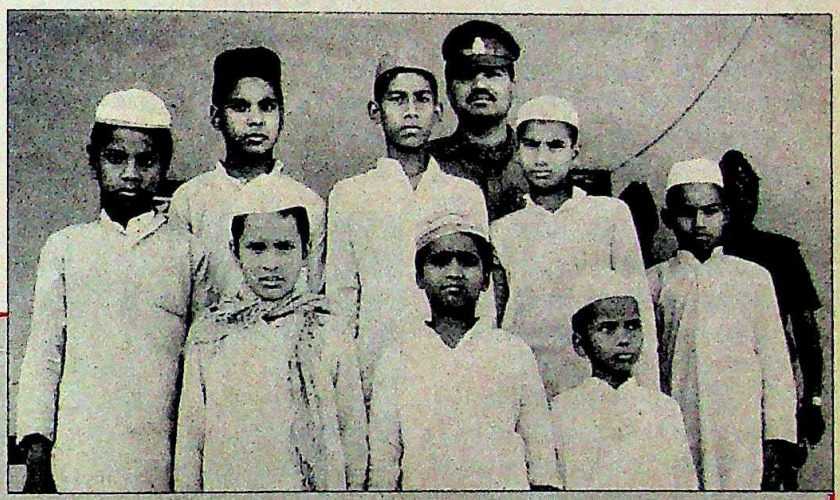

मसूरी थाने में बरामद कुछ बच्चे; और खिजरा का मदरसा

मदरसा कांड

परदेस में हत्या

अट्ठारह सितंबर की सुबह खिजरा गांव के बाहर बने मदरसे किफायत-उल-उलूम (ज्ञान केंद्र) के लिए खासी मनहूसियत भरी सिद्ध हुई. आसपास के गांवों और बिहार के कुछ इलाकों से वहां दीनी तालीम (धार्मिक शिक्षा) लेने आए बच्चों में से एक, 18 वर्षीय खलील की अपने अध्यापकों के हाथों पिटाई में मृत्यु हो गई.

23 सितंबर को स्थानीय मसूरी थाने ने खलील की हत्या का मामला दर्ज कर मदरसे के अध्यापक और स्थानीय जामा मस्जिद के इमाम अजमत कारी समेत चार लोगों को गिरफ्तार करके वहां से गायब हुए 15 बिहारी बच्चों को खोजने का अभियान शुरू किया.

मसूरी थाने के प्रभारी चंद्रधर गौड़ ने अजमत कारी के इकबालिया बयान और बाद में ढूंढ़कर लाए गए कुछ बच्चों से मिले विवरण के आधार पर 'इंडिया टुडे' को बताया कि अजमत की 5 वर्षीया बेटी के साथ अश्लील हरकत करने के आरोप में खलील पिटाई की गई. लेकिन पिटाई में उसे कोई ऐसी चोट लगी कि उसने वहीं दम तोड़ दिया. अगली रात लाश को गांव के निकट बहती गंग नहर में चुपचाप बहा दिया गया.

पुलिस ने विशेष कानूनी प्रावधान का प्रयोग करते हुए मजिस्ट्रेट के सामने चश्मदीद गवाह बच्चों के बयान दर्ज करा लिए. लेकिन तब एक नई समस्या आ खड़ी हुई जब खिजरा ग्राम सभा और पड़ोस के पिपलेहड़ा गांव के मदरसे ने भी इन बिहारी बच्चों को अपने यहां रखने में असमर्थता दिखा दी. और सबसे बड़ी बात तो यह है कि खलील की मौत के तीन सप्ताह बाद भी बिहार में उसके परिवारवालों को न तो इसकी खबर भेजी जा सकी थी और न ही कोई उसके लिए रोने खिजरा पहुंचा था.

—विजय क्रान्ति, खिजरा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोपाल गैस कांड

फैसला... और फासला

अदालत ने तो फैसला सुना दिया मगर मुआवजा अब भी फासले पर

—नरेंद्र कुमार सिंह

इस समय भोपाल एक मृग-मरीचिका के फेर में भटक रहा है. लाशों के ढेर पर बैठे इस शहर में एक ही चर्चा होती है—गैस कांड के मुआवजे की रकम की. पूरा शहर दो हिस्सों में बंट गया है—एक जिनको पैसे मिल रहे हैं, दूसरे वे जिनको पैसे नहीं मिल रहे हैं.

पैसों की खनक पिछले पखवाड़े फिर सुनाई पड़ी जब उच्चतम न्यायालय ने मुआवजे के मसले पर अपना फैसला सुनाया. गैसपीड़ितों को 47 करोड़ डॉलर मुआवजा देने के लिए 1989 में सरकार और यूनियन कारबाइड के बीच हुए समझौते की वैधता को अदालत ने बरकरार रखा. इससे अर्धजीवित गैसपीड़ितों की आंख में उम्मीद की एक किरण चमकी. हर्जाना मांगने वाले आसमान से सोना बरसने का इंतजार कर रहे हैं.

वैसे, यह इंतजार पिछले सात साल से हो रहा है—तीन दिसंबर 1984 से ही, जब यूनियन कारबाइड के कीटनाशक कारखाने से रिसी मिथाइल आइसो साइनेट (मिक) जहरीली गैस से झीलों और हरी-भरी वादियों के इस खूबसूरत शहर पर कहर बरपा हुआ था. तब से यह मामला कानून की पेचीदा भूलभुलैया में फंसा हुआ है (देखें तालिका). 17 दिसंबर 1987 को जब भोपाल जिला अदालत ने 350 करोड़ रुपए की अंतरिम राहत देने का हुक्म दिया था, तब से कई दफा लगा कि मुआवजा अब मिला, तब मिला, पर मिक के जहर से खोखले होते लोग अपनी ही अर्थी ढोने पर मजबूर होते रहे.

तिल-तिलकर मरते गैसपीड़ितों की दयनीय हालत को आंकड़े बयान नहीं कर सकते पर उनसे भयावहता का थोड़ा अंदाज जरूर लगता है. जब गैस रिसी तो मृतक संख्या 1,800 थी. आज गैस के असर से मरने वालों की तादाद 3,928 है. मतलब, पिछले सात साल में दो हजार से ज्यादा लोग मुआवजे का इंतजार करते-करते परलोक सिधार गए.

सरकारी चिकित्सा जांच के मुताबिक कम-से-कम दस हजार लोग ऐसे हैं जो गैस के असर से कभी उबर नहीं पाएंगे. इनमें से ज्यादातर कारबाइड कारखाने के इर्द-गिर्द बसी झुग्गी-झोंपड़ियों और गंदी बस्तियों में रहने वाले ऐसे लोग हैं जिनकी रोजी-रोटी मेहनत-मजदूरी से चलती थी.

जाहिर है, इनकी जरूरत है तत्काल मुआवजा. उसके अभाव में छह साल उन्होंने कैसे काटे होंगे इसका आसानी से अंदाज लगाया जा सकता है. 27 वर्षीय कैलाश पंवार ने चार साल विभिन्न अस्पतालों के पलंगों पर गुजारने के बाद 1989 में आत्मदाह कर लिया. उसकी पत्नी सुशीला ने कहा, "गैस ने हमारा खाता-पीता घर उजाड़ दिया."

पिछले साल गैसपीड़ितों की मुसीबतें थोड़ी कम हुईं जब जनता दल सरकार ने उन्हें दो सौ रुपए प्रतिमाह की अंतरिम राहत देनी चालू की. जिन परिवारों में गैस से मौतें हुईं उन्हें 750 रुपए प्रतिमाह की अंतरिम राहत दी जा रही है. गैस राहत के काम पर सरकार अब तक लगभग 200 करोड़ रुपए खर्च कर चुकी है.

पर जाहिर है यह रकम हर्जाने की भरपाई नहीं कर सकती—खासकर ऐसे परिवारों में जिनके सदस्य कमाने-खाने से लाचार हो गए हों. मामला सात साल खिंच चुका है. और जैसा कि पिछले पखवाड़े अपने फैसले में मुख्य न्यायाधीश रंग[illegible] मिश्र ने कहा कि मुकदमेबाजी आगे च[illegible] तो कम-से-कम बीस साल और ल[illegible] उन्होंने कहा, "अंदाज है कि सन 2010 [illegible] यानी हादसे के 26 साल बाद मुकदमे [illegible] फैसला हो पाता."

इसलिए 'यथार्थवादी दृष्टिकोण' अप[illegible] हुए उच्चतम न्यायालय ने 47 करोड़ डॉ[illegible] मुआवजे के समझौते पर पुनर्विचार करने [illegible] इनकार कर दिया. पर साथ ही न्यायमूर्ति [illegible] कहा कि हर्जाने की रकम में कोई कमी [illegible] तो उसे पूरा करने का दायित्व सरकार [illegible]

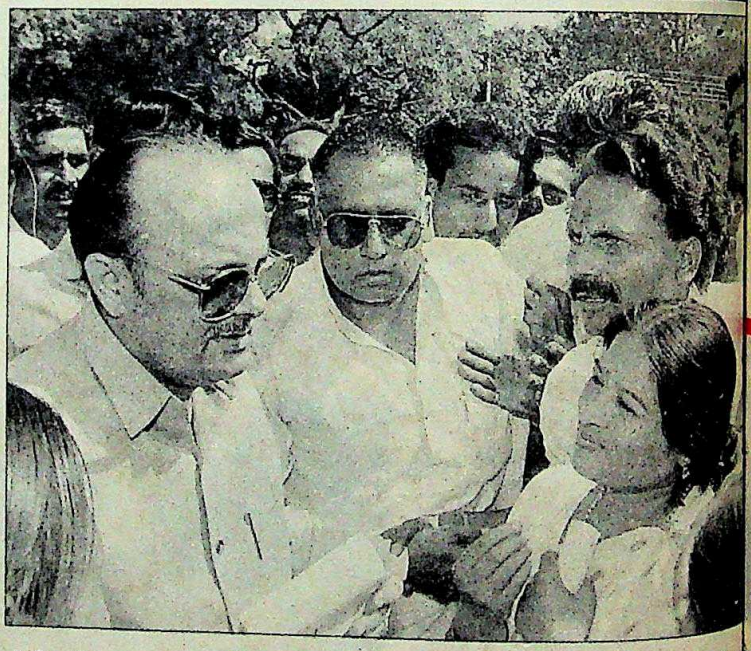

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

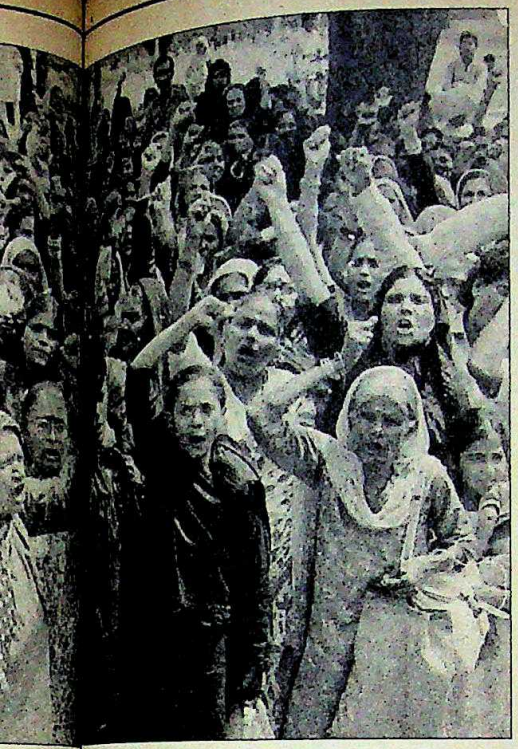

गैसपीड़ित महिलाओं का प्रदर्शन; अर्जुन सिंह को ज्ञापन

"हत्यारे को क्या इसलिए छोड़ देना चाहिए कि उसने हर्जाना दे दिया है?"

अब्दुल जब्बार खां
अध्यक्ष, गैसपीड़ित महिला उद्योग संगठन

"आपराधिक मामला जारी रखने का निर्णय जन-भावना के अनुरूप है"

आलोक प्रताप सिंह
अध्यक्ष, जहरीली गैस कांड संघर्ष मोर्चा

हादसे के लिए कथित रूप से जिम्मेदार कारबाइड के आला अफसरों पर फौजदारी मुकदमा फिर से चालू होगा.

ढाई साल पहले तत्कालीन कांग्रेस सरकार और कारबाइड के बीच हुए समझौते की एक शर्त यह थी कि मुआवजे की एवज में सरकार सारे आपराधिक प्रकरण वापस ले लेगी. इसकी काफी थू-थू हुई थी. गैसपीड़ित महिला उद्योग संगठन के अब्दुल जब्बार खां ने कहा, "हत्यारे को क्या महज इसलिए छोड़ देना चाहिए कि उसने हर्जाने की रकम अदा कर दी है?" जनता दल जब सत्ता में आया तो उसकी सरकार ने भी फौजदारी मुकदमे वापस लेने का विरोध किया था.

फौजदारी मामला फिर से चलाने से गैसपीड़ितों के जलते दिलों को ठंडक पहुंचेगी. जहरीली गैस कांड संघर्ष मोर्चा के आलोक प्रताप सिंह ने कहा, "कारबाइड पर आपराधिक प्रकरणों को जारी रखने का निर्णय जन-भावनाओं के अनुरूप है. अब मुआवजे की कानूनी लड़ाई का अंत होना चाहिए."

पर क्या अंत इतनी आसानी से होगा? क्या अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी फौजदारी के मुकदमे में भारत आएगी? उसने पहले ही इस फैसले को 'दुर्भाग्यपूर्ण' बताया है. उसके वकील फली नरीमन ने कहा, "यूनियन कारबाइड कार्पोरेशन (यूसीसी) पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा क्योंकि वह भारतीय अदालतों के दायरे में नहीं है." वैसे, जहां तक मुआवजे की रकम की अदायगी का सवाल है उसमें कोई अड़चन नहीं होनी चाहिए क्योंकि कारबाइड ने पिछले समझौते के वक्त ही 47 करोड़ डॉलर की रकम उच्चतम न्यायालय में जमा करा दी थी.

इस बीच, भोपाल में सवाल उठ रहा है कि कितने पैसे मिलेंगे, और कब तक मिलेंगे. मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने क्योंकि गैसपीड़ितों के मुकदमा लड़ने अधिकार उसने अपने हाथ में ले लिया मिश्र ने कहा, "मुआवजे की राशि कहां जाती है, इसका दावेदारों के लिए कोई महत्व नहीं है." उन्होंने कहा कि फैसला देते वक्त अदालत ने इस उक्ति को ध्यान रखा है कि "जीवन तर्क नहीं, एक तथ्य है."

गैसपीड़ितों के इक्का-दुक्का संगठनों को छोड़कर, जिनका मानना है कि मुआवजे की रकम नाकाफी है, इस फैसले की चौतरफा तारीफ हुई है. खासकर इस आदेश की कि

घटनाक्रम: सात साल का सफर

- **2/3 दिसंबर 1984 :** यूनियन कारबाइड के भोपाल कारखाने से जहरीली गैस रिसी.
- **7 दिसंबर 1984 :** अमेरिकी वकीलों ने वहां अदालतों में अरबों रु. हर्जाने का मुकदमा किया.
- **20 फरवरी 1985 :** अमेरिकी अदालत में मुआवजे के लिए भारत सरकार द्वारा मुकदमा.
- **8 अप्रैल 1985:** गैसपीड़ितों के दावों का निबटारा करने के लिए अध्यादेश जारी.
- **19 अप्रैल 1985:** कारबाइड द्वारा 50 लाख डॉलर की अंतरिम राहत.
- **12 मई 1986:** अमेरिकी अदालत ने दावे का निबटारा करने से इनकार किया; कारबाइड को भारतीय अदालत का हुक्म मानने का आदेश.
- **5 सितंबर 1986 :** भोपाल की जिला अदालत में कारबाइड के खिलाफ 3,900 करोड़ रुपए के हर्जाने का सरकारी दावा
- **17 दिसंबर 1987 :** भोपाल जिला अदालत द्वारा कारबाइड को 350 करोड़ रुपए की अंतरिम राहत देने का आदेश.
- **18 जनवरी 1988:** कारबाइड फैसले के खिलाफ अपील.
- **4 अप्रैल 1988 :** मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा घटना की जिम्मेदारी कारबाइड पर; 250 करोड़ का अंतरिम हर्जाना देने का आदेश.
- **8 सितंबर 1988:** फैसले के खिलाफ उच्चतम न्यायालय में कारबाइड की अपील.
- **14 फरवरी 1989 :** सरकार और कारबाइड के बीच उच्चतम न्यायालय में 47 करोड़ डॉलर का समझौता; पर स्वयंसेवी संस्थाओं ने चुनौती दी.
- **13 मार्च 1990 :** उच्चतम न्यायालय ने प्रतिमाह 200 रुपए अंतरिम राहत देने की स्वीकृति दी.
- **3 अक्तूबर 1991 :** उच्चतम न्यायालय द्वारा समझौता जायज करार; साथ ही विनाश के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ फौजदारी मुकदमा चलाने के आदेश.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका हिसाब कुछ इस तरह से लगाया था:

मृत्यु के लिए—दो लाख रुपए; पूरी तरह से स्थायी अपंगता के लिए—दो लाख रुपए; आंशिक स्थायी अपंगता के लिए—एक लाख रुपए; अस्थायी अपंगता के लिए—50,000 रुपए.

अभी तक हुई मेडिकल जांच में गैस से 3,928 मौतें प्रमाणित होने के अलावा, 2038 मामले विशेषज्ञ बोर्ड के सामने लंबित हैं. पर बीमार लोगों में दो लाख और एक लाख रुपए के हर्जाने की पात्रता रखने वालों की तादाद केवल 10,132 है. लगभग 17,000 लोगों को 50,000 रु. मिलने की पात्रता है. मेडिकल जांच में 1.70 लाख लोग ऐसे पाए गए जिनको गैस लगी तो थी पर जो अब स्वस्थ हो चुके हैं. उन्हें कम रकम मिलेगी.

पर यह रकम इतनी जल्दी मिलने वाली नहीं. भोपाल गैस रिसाव दुर्घटना (दावों का निबटारा) अधिनियम 1985 के तहत एक दावा-कमिश्नर हर दावेदार को गुण-दोष के आधार पर मिलने वाली रकम का फैसला करेगा. इसके लिए मध्य प्रदेश सरकार शहर के सभी 56 वार्डों में विशेष अदालतों की स्थापना करेगी, जो दावा-कमिश्नर की तरफ से छह लाख दावों का निबटारा करेंगी. महीने में ज्यादा से ज्यादा 20,000 केस निबटाए जा सकेंगे—अर्थात सभी मामलों का फैसला होने में लगभग तीन साल लगेंगे.

फैसले के मुख्य बिंदु

- 47 करोड़ डॉलर का पुराना समझौता जायज.
- कारबाइड के अफसरों के खिलाफ फौजदारी मुकदमा फिर चलेगा.
- मुआवजे की धनराशि में कमी पड़ने पर उसे पूरा करने का दायित्व सरकार का.
- कारबाइड को भोपाल में 500 बिस्तरों वाला अस्पताल खोलने का आदेश.
- गैसपीड़ितों को आठ वर्षों तक मुफ्त चिकित्सा सुविधा.
- गैस के दुष्प्रभाव का भविष्य में शिकार होने वालों के लिए बीमा योजना.

यूनियन कारबाइड

अफसर कटघरे में

उच्चतम न्यायालय के पिछले पखवाड़े के फैसले का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है यूनियन कारबाइड के अफसरों पर फौजदारी मुकदमा फिर से चलाने का आदेश. सीबीआई भोपाल कांड के जांच की फाइल फिर खोलेगी. साथ ही हादसे की जिम्मेदारी के मुजरिमों के खिलाफ दायर फौजदारी मुकदमा, जो ढाई साल से ठंडे बस्ते में पड़ा था, फिर से चालू होगा.

सीबीआई ने भोपाल की जिला अदालत में 1987 में यूनियन कारबाइड और उसके अफसरों के खिलाफ एक मुकदमा दायर किया था. तीन साल की जांच-पड़ताल के बाद पेश किए गए आरोप पत्र में एक दर्जन अपराधी बनाए गए थे.

मुजरिमों की लिस्ट में सबसे ऊपर हैं, अमेरिकी कंपनी के तत्कालीन अध्यक्ष वारेन एंडरसन, जो अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं. दूसरे प्रमुख मुजरिम हैं प्रमुख उद्योगपति और भारतीय कंपनी के तत्कालीन अध्यक्ष केशव महिंद्रा, जो अब कारबाइड छोड़ चुके हैं. अन्य अभियुक्त हैं: भारतीय कंपनी के प्रबंध निदेशक विजय गोखले, भूतपूर्व उपाध्यक्ष किशोर कामदार, भोपाल कारखाने के मैनेजर जे. मुकुंद और इसी कारखाने के आर.बी. रायचौधरी, एस. पी. चौधरी, के.बी. शेट्टी और शकील कुरैशी.

नमम भोजानी

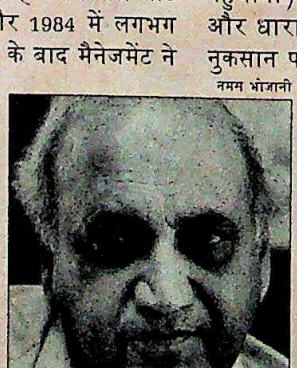

प्रमुख मुजरिमों में हैं अमेरिकी कंपनी के तत्कालीन अध्यक्ष वारेन एंडरसन, और भारतीय कंपनी के तत्कालीन अध्यक्ष केशव महिंद्रा

इन सब पर आरोप है कि इनकी लापरवाही से दुर्घटना हुई. सीबीआई का कहना है कि उसने ऐसे प्रमाण इकट्ठे किए हैं जिनसे साबित होता है कि अभियुक्तों को मालूम था कि भोपाल कीटनाशक कारखाने की डिजाइन में कई भयंकर खामियां हैं. कारखाना घाटे में चल रहा था और 1984 में लगभग पांच करोड़ के घाटे के बाद मैनेजमेंट ने इसे बंद करने का निर्णय ले लिया था. इसलिए इसे चलाने में घातक लापरवाही बरती जा रही थी, जिसके बारे में तीनों कंपनियों को और इन नौ अफसरों को जानकारी थी.

भोपाल अदालत में लंबित मुकदमे में इन सबको भारतीय दंड विधान की धारा-304 (मानव वध), धारा-326 (खतरनाक तरीकों द्वारा घातक चोट पहुंचाना), धारा-324 (चोट पहुंचाना) और धारा 429 (जानवरों को मारकर नुकसान पहुंचाना) का आरोपी बनाया गया है. दोषी पाए जाने पर उन्हें उम्रकैद तक की सजा हो सकती है.

भारतीय कंपनी और यहां के लोगों पर मुकदमा चलाना तो आसान होगा पर अमेरिकी और हांगकांग की बहुराष्ट्रीय कंपनियों को और वारेन एंडरसन को सजा दे पाना टेढ़ी खीर होगी. पिछली दफा यूसीसी और यूनियन कारबाइड (ईस्टर्न) के अफसरों ने भोपाल की अदालत में पेश होने से इनकार कर दिया था.

अगर इस दफा भी ये विदेशी कंपनियां इस फौजदारी मुकदमे में भारतीय अदालत के सामने पेश होने से इनकार कर दें तो एक ही रास्ता बचता है—मामला फिर अमेरिका ले जाने का. जाहिर है, अपराध की तुलना में दंड आसान नहीं.

—नरेंद्र कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरशाही

अर्थपूर्ण अदला-बदली

नरसिंह राव परंपरा तोड़कर मंत्रालयों में खुलेपन के पक्ष में

इसे क्रांतिकारी कदम तो नहीं माना जा सकता लेकिन पिछले पखवाड़े नौकरशाही में किया गया फेरबदल उस दिशा का संकेत जरूर देता है, जिस ओर प्रधानमंत्री नरसिंह राव देश को ले जाना चाहते हैं. इससे यह तो स्पष्ट हो ही गया कि प्रधानमंत्री ने घरेलू और आर्थिक मामलों पर ठोस और स्पष्ट नीतियां बना रखी हैं और वे इन्हें अपनी कुर्सी की कीमत पर भी लागू करने को कटिबद्ध हैं.

फेरबदल से दूसरा बड़ा संकेत यह मिला कि राव महत्वपूर्ण मंत्रियों को ज्यादा अधिकार देना चाहते हैं. मंत्री अपनी पसंद के नौकरशाह चुन सकते हैं, बशर्ते उनके चयन का औचित्य साबित कर सकें और नौकरशाह नई नीतियों के प्रति प्रतिबद्ध हों. जैसा कि वाणिज्य राज्यमंत्री पी. चिदंबरम बताते हैं, "अब हमारी राय ली जा रही है."

इसी तरह गृहमंत्री एस.बी. चव्हाण की राय भी मानी गई. नए गृह सचिव एम. सी. गोडबोले महाराष्ट्र के हैं. व्यय सचिव के.पी. गीताकृष्णन को एस.पी. शुक्ल की जगह वित्त और राजस्व सचिव बनाया गया है. वाणिज्य सचिव मोंटेक सिंह अहलूवालिया, जो विश्व बैंक और प्रधानमंत्री कार्यालय में रह चुके हैं, अब वित्त मंत्रालय में आर्थिक मामलों के सचिव होंगे. खाद्य प्रसंस्करण सचिव के. बी. आर. नायर व्यय सचिव होंगे.

उच्च स्तर पर की गई ये नियुक्तियां अब तक की परंपरा में बदलाव की द्योतक हैं. अन्यथा आम तौर पर कैबिनेट सचिव प्रधानमंत्री से परामर्श कर ये फैसले करता था, पर मंत्रियों से राय नहीं ली जाती थी. मकसद था—अत्यधिक निर्भरता से बचना. लेकिन घरेलू और आर्थिक नीतियों में आए आमूल परिवर्तनों की वजह से इस बार परंपरा का पालन नहीं किया गया. प्रत्येक मंत्री को न सिर्फ अपना निजी सचिव बल्कि महत्वपूर्ण मंत्रालयों के मंत्रियों को वरिष्ठ अधिकारी चुनने की भी आजादी दी गई. लेकिन उन्हें प्रधानमंत्री के सामने साबित करना होगा कि उसकी उन्हें जरूरत है और उसके चयन में उनके किसी तरह के राजनैतिक और निजी हित नहीं जुड़े हैं.

नरसिंह राव मंत्रियों को पसंदीदा नौकरशाह चुनने का अधिकार देना चाहते हैं, बशर्ते वे चयन का औचित्य साबित कर सकें

(ऊपर से) गीताकृष्णन; माधव गोडबोले; अहलूवालिया

इसीलिए वित्तमंत्री मनमोहन सिंह को वित्त मंत्रालय में लंबा अनुभव रखने वाले गीताकृष्णन को सचिव बनाने की अनुमति दी गई. कृष्णन पहले भी मनमोहन सिंह के साथ काम कर चुके हैं और उनके विश्वसनीय माने जाते हैं. वित्तमंत्री के नए आर्थिक कार्यक्रमों के प्रति भी वे प्रतिबद्ध समझे जाते हैं. असल में इस फेरबदल से पहले भी मनमोहन सिंह कुछ फाइलें गीताकृष्णन के पास भेजते रहे हैं, जबकि कायदे से उन्हें वित्त सचिव शुक्ल के पास भेजा जाना चाहिए था. ऐसा महसूस किया गया कि शुक्ल का रूढ़िवादी और अड़ियल रवैया नए आर्थिक कार्यक्रमों के अनुकूल नहीं था.

वित्त संबंधी मंत्रालयों में इतने बदलावों का औचित्य भी है. वित्त और राजस्व को एक ही सचिव के अधीन रखना नितांत व्यावहारिक कदम है. पहले भी ऐसा होता रहा है. इसी तरह आर्थिक मामलों के सचिव के रूप में अहलूवालिया की नियुक्ति पर भी उंगलियां नहीं उठाई जा सकतीं. सामान्य दिशा-निर्देश देने के अलावा अपने पुराने मंत्रालय—वाणिज्य और नई आर्थिक नीतियों के परस्पर हितों के टकरावों का भी वे निबटारा करेंगे. वे अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों से संबंधित मामले भी देखेंगे.

लेकिन नरसिंह राव के स्पष्ट दृष्टिकोण और फैसले लेने की क्षमता के सब कायल नहीं हैं. एक वरिष्ठ नौकरशाह कहते हैं, "असल में ज्यादा बदलाव आया ही नहीं है. पहले जितना भ्रम अब भी बना हुआ है खासकर आर्थिक मंत्रालयों में कार्य वितरण के मामले में."

इसके अलावा, संकटग्रस्त जम्मू और कश्मीर में भी परिवर्तन अपरिहार्य हो चले हैं. राज्यपाल गिरीशचंद्र सक्सेना की कुर्सी भी सुरक्षित नहीं कही जा सकती. हालांकि उसे बचाने के लिए वे तगड़ी मोर्चेबंदी कर रहे हैं. लेकिन यह हकीकत छिपी नहीं है कि केंद्र सरकार उनसे खुश नहीं है. उनकी जगह शायद कश्मीर के पूर्व राज्यपाल जनरल के. वी. कृष्णराव को लाया जाएगा. सक्सेना के तीनों सलाहकारों—बी. जे. हीरजी, वरिंदर प्रकाश और वेद मरवाह को भी वापस बुलाया जाएगा. वित्त आयुक्त अशोक जेतली को वी.के. कपूर की जगह राज्य का नया प्रमुख सचिव बनाने पर विचार चल रहा है. पुलिस महानिदेशक जे. एन. सक्सेना का भी तबादला किया जाएगा. उच्च स्तर पर इतना व्यापक फेरबदल कितना कारगर साबित होगा, यह अब भी बहस का विषय है.

—अरुण चाको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीलाल

नींद से जागे

राज्य में वापसी की छटपटाहट

पिछले तीन माह से उनींदे पड़े ताऊ अचानक अपनी चारपाई से उठकर जैसे चल पड़े हैं. वे राजनीति की चहलपहल में शरीक होने लगे हैं. पूर्व उप-प्रधानमंत्री देवीलाल के इस तरह हरकत में आ जाने से उन्हें जानने वाले लोग भौचक हैं और आतंकित भी.

शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे से मुंबई में अप्रत्याशित रूप से भेंट करके उन्होंने सनसनी फैला दी. फिर उन्होंने हरियाणा की इंका सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ 'हरियाणा बचाओ' अभियान छेड़ने का फैसला करके मुख्यमंत्री भजनलाल की नींद हराम कर दी. इसके अलावा उन्होंने समाजवादी जनता पार्टी (सजपा) के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देकर क्षेत्रीय पार्टी बनाने का शोशा छोड़ा और चंद्रशेखर खेमे में खलबली मचा दी. वे कहते हैं, "पता नहीं मैं किस पार्टी का अध्यक्ष हूं. पहले हम जनता दल (स) में थे, फिर हम सजपा में हो गए और सुब्रमण्यम स्वामी कहता है कि उसकी जनता पार्टी अभी भी कायम है."

यानी ताऊ ने हरियाणा में अपनी वापसी की रणनीति का खाका बना लिया है. उम्मीद है कि 1 नवंबर को वे जींद में नई पार्टी की घोषणा करेंगे और इसके साथ ही 'हरियाणा बचाओ' आंदोलन का सूत्रपात करेंगे.

उनके सहयोगियों के मुताबिक व्यक्तिगत बातचीत में वे स्वीकार करते हैं कि उन्हें राज्य की बागडोर बेटे ओमप्रकाश चौटाला के हाथ कभी नहीं देनी चाहिए थी. यहीं से उनके राजनैतिक पतन की शुरुआत हुई थी. दरअसल देवीलाल ने राज्य के सजपा विधायकों की एक बैठक बुलाई और इसमें राज्य में पार्टी के चुनावी प्रदर्शन पर विचार किया गया. देवीलाल ने विधायकों को अपनी बात खुलकर कहने को प्रेरित किया. बैठक में इन विधायकों ने कहा कि वे अपने बेटों को राजनीति से दूर ही रखें. देवीलाल ने इन विधायकों से वादा किया कि हुकुम सिंह को प्रदेश सजपा अध्यक्ष बना देंगे. दूसरे दिन इन विधायकों को पता चला कि हुकुम सिंह को अध्यक्ष तो बनाया गया मगर पूरे अधिकार नहीं दिए गए.

इस बीच ताऊ इंका के कुछ असंतुष्ट जाट विधायकों को फुसलाने की कोशिश में भी हैं. हाल ही में उन्होंने प्रदेश इंका अध्यक्ष बीरेंद्र सिंह से भेंट की और अपने प्रबल प्रतिद्वंद्वी बंसीलाल को भी संदेश भेजा. ताऊ कहते हैं, "राजनीति में सामाजिक संबंध भी जरूरी होते हैं."

भजनलाल सरकार से लोगों की नाराजगी को भी देवीलाल खूब भुना रहे हैं. छोटे बेटे रंजीत सिंह के साथ वे पुलिस अत्याचार के ताजा शिकार बहादुरगढ़ के वराही गांव गए.

राज्य में कानून-व्यवस्था की बिगड़ती हालत और पुलिस विद्रोह को भी वे भुनाने के प्रयास में हैं. देवीलाल ने हिकारत से कहा, "भजनलाल कोई सरकार थोड़ी न चला रहा है."

वैसे; देवीलाल का दावा है कि सिर्फ वे ही देश को बचा सकते हैं. वे कहते हैं, "इंका अल्पमत में आ गई है, भाजपा बनियों की पार्टी है, और कम्युनिस्ट अगर रूस में नहीं बच सके तो इस देश में भला उनका क्या भविष्य हो सकता है?"

ऐसी ही सोच ने शायद उन्हें बाल ठाकरे से मिलने को प्रेरित किया. दोनों नेताओं ने किसानों और औद्योगिक मजदूरों का मोर्चा बनाने और साथ-साथ जनसभाएं करने का फैसला किया. देवीलाल को यह यकीन भी है कि हरियाणा बचाओ आंदोलन का नारा 'इज्जत बचाओ' 80 के दशक के मध्य के 'न्याय युद्ध' वाले नारे की तरह ही कारगर होगा. मगर अब फर्क सिर्फ इतना है कि लोग आंदोलन के मूड में नहीं हैं. जैसा कि उनकी पार्टी के एक विधायक ने कहा, "हरियाणा की इज्जत को असली बट्टा तो चौटाला-देवीलाल के राज में ही लगा. अब वे गांवों में जाकर किस मुंह से कह सकते हैं कि वे उनके रक्षक हैं?" इसके अलावा 'न्याय युद्ध' को मुकाम तक पहुंचाने वाले उनके तमाम साथी भी अब प्रतिद्वंद्वी पार्टियों में जा चुके हैं. ताऊ का साथ उन्होंने उनके धृतराष्ट्री पुत्रमोह के कारण ही छोड़ा.

प्रभात पंजियार

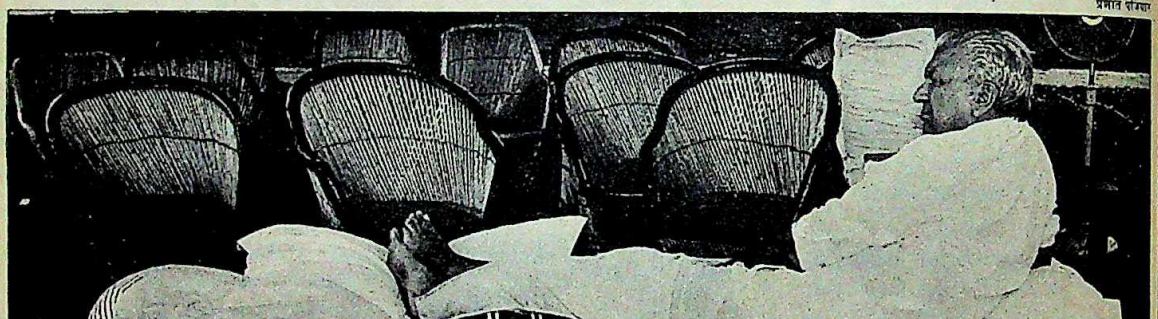

देवीलालः
आलस छोड़ने का समय

वैसे, देवीलाल की वापसी की राह में बड़ा रोड़ा चौटाला ही बनेंगे. उनके साथियों का कहना है कि ताऊ डरे हुए हैं अगर चौटाला मुकर जाते हैं तो देवीलाल न नई पार्टी बना सकेंगे, न ही कहीं से विधानसभा का चुनाव लड़ सकेंगे. और तब उनके सब किए कराए पर पानी फिर जाएगा. देवीलाल को अब यह एहसास हो जाना चाहिए कि हरियाणावासियों के लिए—जिन पर उनकी आस लगी है—अब वे ताऊ नहीं रह गए बल्कि सिर्फ चौटाला के बाप भर रह गए हैं.

—**हरिवर बवेजा,** और **अरुण कटियार,** मुंबई में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा

बड़ी बगावत के बगूले

पुलिसवाले अपनी जायज मांगों के लिए सड़कों पर उतरे

भजनलाल सरकार पिछले पखवाड़े विद्रोह के झटकों से झनझना उठी. 27,000 जवानों वाली हरियाणा पुलिस ने हफ्ते भर हड़ताल कर दी और पूरी राज्य व्यवस्था ठप हो गई.

हरियाणा पुलिस संगठन की मांगें हैं—राशन का पैसा, पोशाक भत्ता, मकान और विशेष अनुग्रह राशि. वैसे, सरकार ने 27,000 जवानों वाले इस बल की ये मांगें मान ली हैं पर पुलिसवाले संतुष्ट नहीं हैं. वे अपने मूल वेतन में बढ़ोतरी और अपनी यूनियन—हरियाणा पुलिस संगठन को मान्यता देने की मांग भी कर रहे हैं.

लेकिन यह तथ्य कि एक अपंजीकृत यूनियन भी बहुमत का समर्थन जुटाकर अपने वरिष्ठ अफसरों के खिलाफ बगावत कर सकती है, अपने आप में काफी गंभीर है. और इस बगावत के लिए भी सरकार ही दोषी दिखाई देती है. 1978 में बना यह संगठन अभी तक उन्हीं मांगों पर आंदोलन चला रहा है जिन मांगों को लेकर उसका जन्म हुआ था. वैसे राज्य में 1979 में भी इन्हीं मांगों को लेकर लगभग बगावत की स्थिति पैदा हुई थी. राज्य का पुलिस बल, जैसा कि उसने इस वक्त दिखाया है, इस समय तलवार की धार पर खड़ा है और हार मानने को कतई तैयार नहीं है.

राज्य के पुलिस महानिदेशक कल्याण रुद्र दावा करते हैं कि सिपाही काम पर लौट आए हैं. लेकिन भजनलाल द्वारा संगठन की कुछ मांगों पर रजामंदी जताने के दो दिन बाद भी रोहतक पुलिस लाइन के सिपाही आंदोलन पर ही थे. हालांकि बड़ी संख्या में गिरफ्तारियां हुईं और विद्रोह दबाने के लिए सीआरपी की छह कंपनियां बुलाई गईं पर संगठन अड़ा हुआ है. पुलिस लाइन पर धरना दे रहे आंदोलनकारियों को जब वहां से भगाया गया तो वे शहर के छोटूराम पार्क में जमा हो गए. उनका आरोप था कि उन्हें पुलिस लाइन में घुसने ही नहीं दिया जा रहा. संगठन के रोहतक जिला सचिव बलवीर सिंह यादव कहते हैं, "हमें अपनी नौकरी की परवाह नहीं. सरकार हमें उग्रवाद का रास्ता चुनने पर मजबूर कर रही है."

आंदोलनकारी पुलिसवालों की बगावत का पूर्वाभास तो होने ही लगा था. वे राजनैतिक आकाओं और अपने वरिष्ठ अफसरों से अरसे से जूझ रहे थे. उनका आरोप था कि उनसे 'घरेलू नौकरों' जैसा बर्ताव किया जाता है. उनमें से कई राजनैतिक नियुक्तियों से खास तौर से खफा थे. पुलिस महानिदेशक ने इसे स्वीकार भी किया. उन्होंने बताया कि ऐसे पांच आईपीएस अधिकारियों का पता भी लगाया जा चुका है जो पुलिसकर्मियों का दुरुपयोग करते रहे हैं. वे उन्हें सब्जी खरीदने और बच्चों को स्कूल से लाने तक के काम सौंप देते थे.

अरसे से खदबदाता यह गुस्सा लावा बनकर फूट पड़ा. पुलिसवाले थानों को खाली छोड़कर सड़कों पर उतर आए. भजनलाल की तीन महीने पुरानी सरकार का यह पहला बड़ा संकट था जिसे बड़ी संख्या में गिरफ्तारियां और पुलिसवालों की बरखास्तगी करके फिलहाल तो शांत कर दिया गया. पर भविष्य में शायद यह संभव नहीं हो सकेगा क्योंकि पुलिस बल में अब ऐसे बहुत से लोग हैं जो गिरफ्तार नेताओं की जगह लेने को तैयार हैं.

समस्या बनी हुई है इसलिए यह गुस्सा किसी भी समय भड़क सकता है. हैरत की बात तो यह है कि खुद मुख्यमंत्री भजनलाल और पुलिस महानिदेशक भी मानते हैं कि पुलिसवालों की मांगें जायज हैं. पर इन मांगों को सिरे चढ़ाने के लिए उन्होंने अभी तक कुछ नहीं किया. हां, भजनलाल ने यह आरोप जरूर लगाया कि बंसीलाल और देवीलाल जैसे विपक्षी नेता आग को भड़का रहे हैं. लेकिन आरोप लगाने से ही बात नहीं बनती. बगावत से सख्ती से निपटने के साथ यह भी जरूरी है कि पुलिसवालों की जायज मांगों को पूरा करने के लिए ठोस कदम उठाए जाएं.

—हरिंदर बवेजा

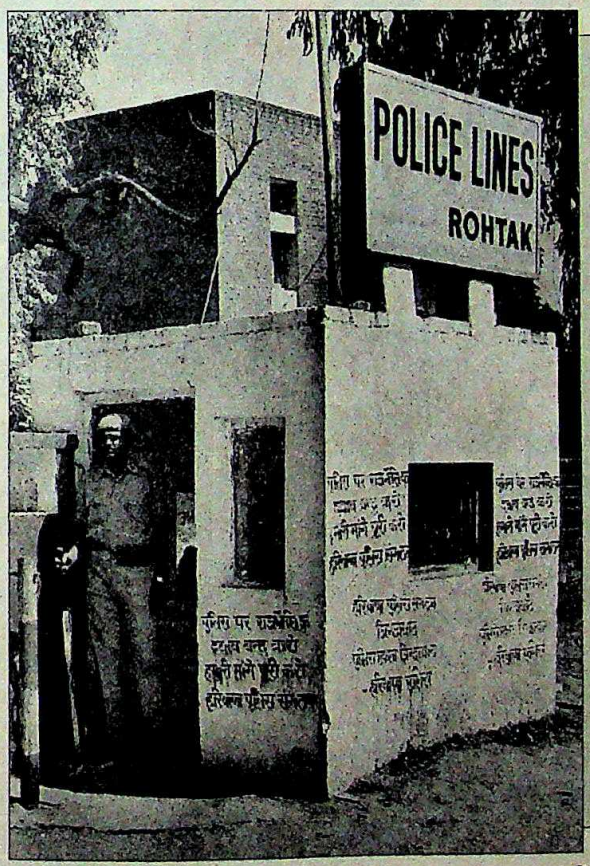

भजनलाल; और (बाएं) धरने पर पुलिसवाले: जंग छिड़ी

भजनलाल पुलिसवालों की मांगों को तो जायज मानते हैं लेकिन उनकी पूर्ति के लिए अब तक कुछ न किए जाने से पुलिस में गुस्सा बढ़ रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरक्षण

बेआवाज सियासी मार

नरसिंह राव सरकार के फैसले से मंडल मसीहा हतप्रभ

एक बार तो लगा कि मंडल का दैत्य हिंसा और तबाही का वही दौर लाकर रहेगा क्योंकि जनता दल ने इसे फिर से भुनाने की कोशिशें शुरू कर दी थीं. लेकिन कहीं-कहीं विरोध प्रदर्शनों के बाद यह बवंडर शांत हो गया क्योंकि इस बार इसे राजनैतिक शह हासिल नहीं थी. इसका श्रेय प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंह राव की राजनैतिक सूझबूझ को है, जिन्होंने सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर पिछड़े लोगों के लिए नौकरियों में आर्थिक आधार पर आरक्षण की घोषणा कर जनता दल के हाथ से उसका तुरुप का पत्ता छीन लिया.

मध्य नवंबर में उप चुनावों के मद्देनजर इंका का यह फैसला वोटों की राजनीति से प्रेरित दिखता है. इस चाल से इंका ने जनता दल को तो बचाव की मुद्रा में ला ही दिया, मंडल विरोधी आंदोलन की हवा निकालने के लिए आरक्षण के क्रियान्वयन को जानबूझकर जटिल बना दिया. सुप्रीम कोर्ट का यह आदेश कि सरकार पहले आर्थिक आधार की व्याख्या करे, यही साबित करता है कि प्रशासनिक सेवाओं में आरक्षण लागू करने में अभी देर लगेगी. इसके अलावा सरकार मुख्यमंत्रियों से परामर्श करेगी और पिछड़ी और अगड़ी जातियों में गरीबों की पहचान के लिए पैनल गठित करेगी. इसके बाद शायद सर्वदलीय बैठक बुलाई जाएगी. और उसके बाद सुप्रीम कोर्ट आरक्षण कोटा 50 फीसदी की संवैधानिक सीमा से अधिक हो सकता है या नहीं, इसका फैसला करने के लिए नई पीठ बनाएगा.

फिलहाल तो इंका आगामी रण चुनावों में वोटों की फसल काटने की तैयारी में है. खासकर उत्तर प्रदेश और बिहार के उन सात निर्वाचन क्षेत्रों में जहां जनता दल का दबदबा है. सो, हैरत की बात नहीं कि जनता दल नेता इंका सरकार की कार्रवाई की आलोचना कर रहे हैं. वी.पी. सिंह कहते हैं, "सरकार पिछड़े गरीबों को प्राथमिकता देने के नाम पर पिछड़ी जातियों को बांट क्यों रही है?"

नरसिंह राव ने पिछड़ी जातियों के लिए सरकारी नौकरियों में आर्थिक आधार पर आरक्षण की घोषणा कर जनता दल के हाथ से उसका तुरुप का पत्ता छीन लिया

पिछड़ों का समर्थन हाथ से फिसलता देख लालू यादव केंद्र सरकार के इस कदम को असंवैधानिक करार देते हैं. लेकिन आरक्षण की नई नीति से लाभान्वित होने वाली जातियां इसे उचित ठहराती लगती हैं. उनका मानना है कि यादव सरकार के शासन के दौरान यादव, कुर्मी, बनिया और कोइरी जाति के लोगों को जरूरत से ज्यादा बढ़ावा दिया गया. वी.पी. सरकार ने जब मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू की, उसके बाद बिहार में लालू सरकार ने भी पहले की आरक्षण व्यवस्था के बदले मंडल आयोग के अनुरूप व्यवस्था लागू करने का आदेश जारी किया था. उसके पहले वहां पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण की दोहरी व्यवस्था थी जिसमें पिछड़ी और अति पिछड़ी जैसे दो वर्ग बनाए गए थे. यह व्यवस्था कर्पूरी फार्मूले के नाम से जानी जाती है. लेकिन लालू यादव ने दबंग जातियों का दबदबा बनाने के लिए उसे बदल दिया था.

उधर, भारतीय जनता पार्टी भी इस मुद्दे पर पसोपेश में है. पहले, उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह सरकार ने पिछड़ी जातियों के लिए 27 फीसदी आरक्षण को जारी रखा. पर बाद में उसे होश आया और पिछले पखवाड़े उसने घोषणा की कि आरक्षण के लिए जारी किया उसका अध्यादेश अब इलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसला आने तक स्थगित रहेगा. जाहिर है, वह पिछड़ी जातियों में अपनी साख बनाए रखना तो चाहती ही है पर उसे पिछले वर्ष भड़की आग का डर भी साल रहा है.

लेकिन उत्तर प्रदेश के छात्र इससे आश्वस्त नहीं. इलाहाबाद, गोरखपुर, लखनऊ, कानपुर, आगरा और मेरठ में छात्रों ने रास्ता रोका. पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और कर्नाटक में भी छात्रों के प्रदर्शन की घटनाएं हुईं. नई दिल्ली में पिछले वर्ष के मंडल विरोधी आंदोलन के नायक राजीव गोस्वामी ने आत्मदाह के खिलाफ आवाज उठाई. इस तरह किसी तगड़ी राजनैतिक शह के बिना मंडल आंदोलन ऐसा शेर बन गया है जिसके न दांत हैं, न नाखून.

—जफर आगा

दिल्ली में आरक्षण विरोधी प्रदर्शन करते नौजवान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

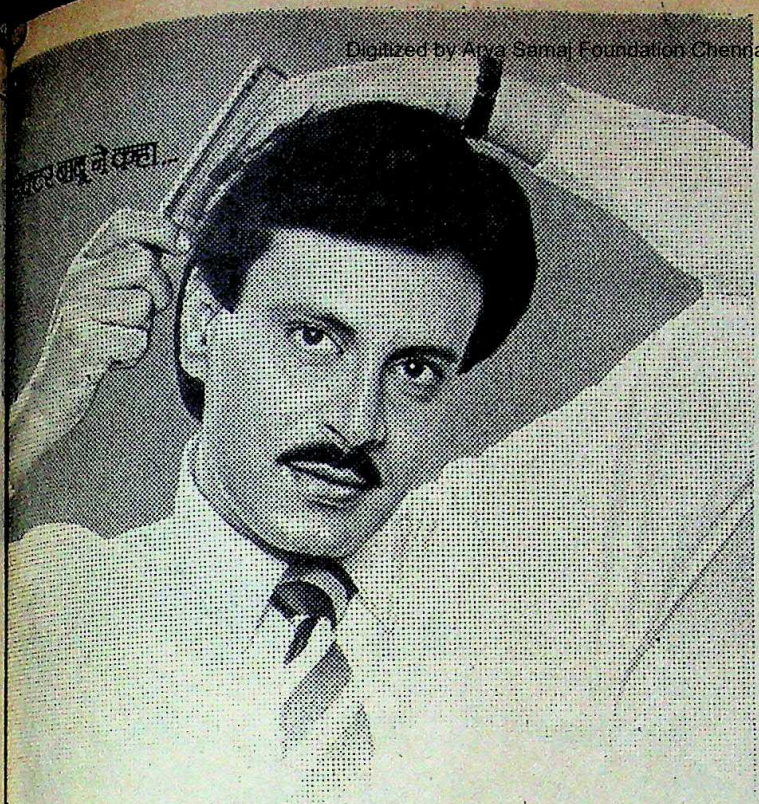

बालों का झड़ना रोकने और
रूसी को खत्म करने के लिए
और कुछ इस्तेमाल न कर केवल
केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र इस्तेमाल कीजिए।

इस्तेमाल करके देखा है, सचमुच उपकारी है।"

केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र रोज सुबह स्नान से एक घंटा आगे और रात में सोने से पहले पूरे माथे पर अंगुली से अच्छी तरह लगाइये। बाल सुन्दर और स्वस्थ रहेंगे।

केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र में है— ● केराटिन : बालों का मूल उपादान (१) ● बायोटिन : बालों का झड़ना रोकता है (२) ● पेन्थेनॉल : बालों के नष्ट टिसू में प्राण संचार करता है। (३) ● निकोटिनिक एसिड : औषधि को सोखने में मदद करता है (४) ● रेसॉर्सिनॉल : रूसी को खत्म करता है (५) ● हाइयेलकिल : रूसी के संक्रमण को रोकता है (५)

रेफरेन्स : (१) विन्डहॉल्ज़ एम मेर्क इन्डेक्स १० वां संस्करण पृ. ७६०, १९८३, (२) सेटेल, ई ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक इण्डस्ट्री १२१, ३४, १९७७, (३) ड्रिस्कॉल, डब्लू. आर. ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक इण्डस्ट्री, ११६, ४२, १९७५, (४) क्रोज़, जे.सी.एवं अन्यान्य, फार्म प्रिन्सिपल्स ऑफ मेडिकल प्रैक्टिस पृ० ९५६,१९६५, (५) वेड . ए मार्टिनडेल एक्सट फर्माको पृ. ५०२,३२,१९८२

बालों का झड़ना रोकने और रूसी को खत्म करने के लिए एक प्रमाणित वैज्ञानिक तरीका।

* यह शृंगार सामग्री नहीं है।

Dey's®
दे'ज मेडिकल
की संभाल, आपका भरोसा

TS McCann/DMHV/390/HK

गुजरात

अड्डे पर धावा

गुरद्वारे के अधिग्रहण का सवाल

पंजाब में हाथ झुलसने के बाद सरकार अब कोई जोखिम मोल नहीं ले रही है. कच्छ सीमा से पाकिस्तान जाने वाले उग्रवादियों के खिलाफ पुलिस ने जबर्दस्त अभियान छेड़ दिया है.

पुलिस का पहला निशाना लखपत किले के पास स्थित एक प्राचीन गुरद्वारा बना. खुफिया एजेंसियों को संदेह है कि यह उग्रवादियों का अड्डा है. पिछले दो महीनों में पुलिस ने सीमा पर रहने वाले लोगों के

योगेश मत्री

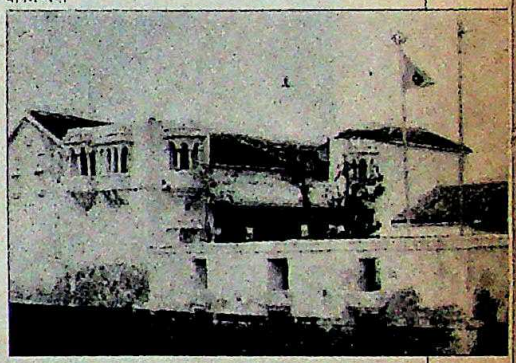

विवादास्पद गुरद्वारा

पास से 120 गैर-लाइसेंसी हथियार भी जब्त किए हैं. गुरु नानक की पहली गद्दी माने जाने वाले इस गुरद्वारे पर कब्जे के लिए लड़ाई चल रही है. लड़ाई में उदासी पंथ के कुछ सदस्य, राज्य सरकार और भुज स्थित सैनिक अड्डे के सिख अधिकारियों के साथ स्थानीय सिख शामिल हैं. कच्छ के पुलिस प्रमुख पी.के. झा कहते हैं, "यह सबके हित में होगा कि सरकार इसका अधिग्रहण कर ले."

फिलहाल सिख सरकार की आशंकाओं को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं. भुज की श्री गुरु सिंह सभा के अध्यक्ष हरनाम सिंह दिगवा कहते हैं, "सरकार को गुरद्वारे के दुरुपयोग की गलत जानकारी मिली है." उधर पुलिस इसके अधिग्रहण के लिए स्थानीय निवासियों से जूझ रही है, जब कि दिगवा ने भरोसा दिया है कि वे सब "इसे पंजाब के संदिग्ध तत्वों का अड्डा नहीं बनने देंगे." इस बीच, गुरु नानक की विरासत विवाद का विषय बनी हुई है.

—उदय माहूरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एसबीआई एम एफ - जैसे असली अनमोल रत्न

एसबीआई म्यूचुअल फ़ंड -
वादों से बेहतर फायदे

- एमआरआईएस - 87 द्वारा 12% वार्षिक लाभ का आश्वासन दिया गया था, जबकि वास्तव में योजना के प्रथम, द्वितीय और तृतीय वर्ष में 13.5%, 14% और 16% लाभ दिया गया. तथा 6.9.91 तक लाभांश पश्चात 46% की पूंजी वृद्धि भी.
- एमआरआईएस - 89 द्वारा 12% वार्षिक लाभ का आश्वासन दिया गया था, जबकि वास्तव में योजना के प्रथम व द्वितीय वर्ष के लिए 13.5% और 14% लाभ दिया गया.
- ऑफ शोर फ़ंड 200 मिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक.
- 7 लाख से अधिक खुशहाल निवेशकर्त्ताओं की सेवा में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितना टटोलो, जितना परखो उतना ही ज़्यादा शानदार नज़र आए."

"झिलमिलाते हीरों में जो बात, वही है एसबीआई म्यूचुअल फ़ंड योजनाओं के साथ. जिस पहलू से देखो, उसी से नज़र आए ज़्यादा आकर्षक, ज़्यादा मोहक. इसकी पिछली योजनाओं ने निवेशकर्त्ताओं को किए गये वादे से भी बढ़कर मुनाफे का भुगतान किया. मुझे और चाहिए क्या! मुझे तो पूरा यकीन है कि नयी योजना भी अपने निवेशकर्त्ताओंको तेज रफ़्तार से शानदार मुनाफ़ा प्रदान करेगी. यही तो है इसकी अनूठी खूबी – जोखिम कम और वृद्धि भरपूर."

एसबीआईएमएफ की एक नई-निराली शानदार योजना

मैग्नम एक्सप्रेस

तेज़ी से बढ़ती वृद्धि निधि

- इक्विटी निवेश के ज़रिए तेज रफ़्तार से संचयी वृद्धि.
- अदायगी 5 वर्ष पश्चात.
- हर तरह से कोशिश की जाएगी कि आपकी पूंजी केवल 60 महीनों में दुगुनी से भी ज्यादा हो जाए.
- 12 महीनों के बाद, स्टॉक एक्सचेंज सूची में शामिल.
- अंकित मूल्य के 75% तक ऋण सुविधा.
- कर-नियोजन लाभ.
- न्यूनतम निवेश राशि : रु. 1,000/-.

योजना 9 सितम्बर से 31 अक्तूबर' 91 तक खुली रहेगी!

"यही है मेरा अपना म्यूचुअल फ़ंड!"

SBI MUTUAL FUND

ट्रस्टी : एस बी आई कैपिटल मार्केट्स लि.,
202, मेकर टावर्स 'ई', 20 वीं मंज़िल, कफ़ परेड, बम्बई-400 005.

म्यूचुअल फ़ंड और सिक्योरिटी निवेश बाजार के ज़ोखिम से प्रभावित होते रहते हैं. पिछली कार्यकुशलता आवश्यक रूप से भावी परिणामों की सूचक नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटाक्ष: अजीत नैनन

सनद रहे

अध्यक्ष बना: भारत संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद का अध्यक्ष बन गया है. भारत का प्रतिनिधित्व **चिन्मय आर. गरेखां** करेंगे. भारत ऐसे समय में सुरक्षा परिषद का अध्यक्ष बना है जब कई महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर विचार होना है. इनमें संयुक्त राष्ट्र के महासचिव का चुनाव सबसे महत्वपूर्ण है.

प्रतिबंध के लिए प्रस्ताव: बिस्कुट, नूडल्स, और चाइनीज फूड में स्वाद बढ़ाने वाले **'अजीनो मोटो'** पर प्रतिबंध का प्रस्ताव है. उपभोक्ता संगठन अध्ययनों का हवाला देते हैं कि 'चाइनीज साल्ट' यानी मोनोसोडियम ग्लूकोमेट 12 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को मानसिक क्षति पहुंचाता है.

पुरस्कार जीता: मेधा पाटकर की अगुआई में **'नर्मदा बचाओ आंदोलन'** ने तीन अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ 'राइट लाइवलीहुड एवार्ड' जीता है. पारिस्थितिकी संरक्षण में यह पुरस्कार नोबल पुरस्कार के समकक्ष समझा जाता है. स्वीडिश-जर्मन लेखक जैकब वॉन उएक्सकुल द्वारा स्थापित किए इस पुरस्कार की राशि 1,70,000 डॉलर (44.2 लाख रु.) है.

मुकदमा दायर: गजराबेन चौधरी ने पति अमर सिंह चौधरी की दूसरी शादी को चुनौती दी है. गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री की पत्नी ने पति और उनकी 'दूसरी पत्नी' निशा को इसमें प्रतिवादी बनाया है.

रिकॉर्ड बना: ज्योति बसु ने सबसे लंबी अवधि तक पश्चिम बंगाल का मुख्यमंत्री बने रहकर नया कीर्तिमान बनाया है. इस साल अक्तूबर में उन्होंने मुख्यमंत्री के रूप में 14 वर्ष पूरे कर लिए. अब तक यह गौरव राज्य के दूसरे मुख्यमंत्री डॉ. विधानचंद्र रॉय को हासिल था.

पुनः हासिल: भारतीय रिजर्व बैंक ने इस जुलाई में विदेशी मुद्रा संकट के दौरान बैंक ऑफ इंग्लैंड और बैंक ऑफ जापान की गिरवी रखे सोने को छुड़ा लिया है. लेकिन सोना विदेश से वापस नहीं लाया जाएगा क्योंकि बैंक इस पर मिल रहे ब्याज से हाथ नहीं धोना चाहता, वह भी विदेशी मुद्रा में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशिष्ट व्यक्ति की विशेषता

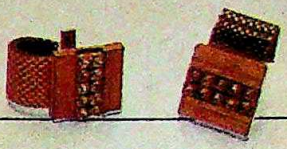

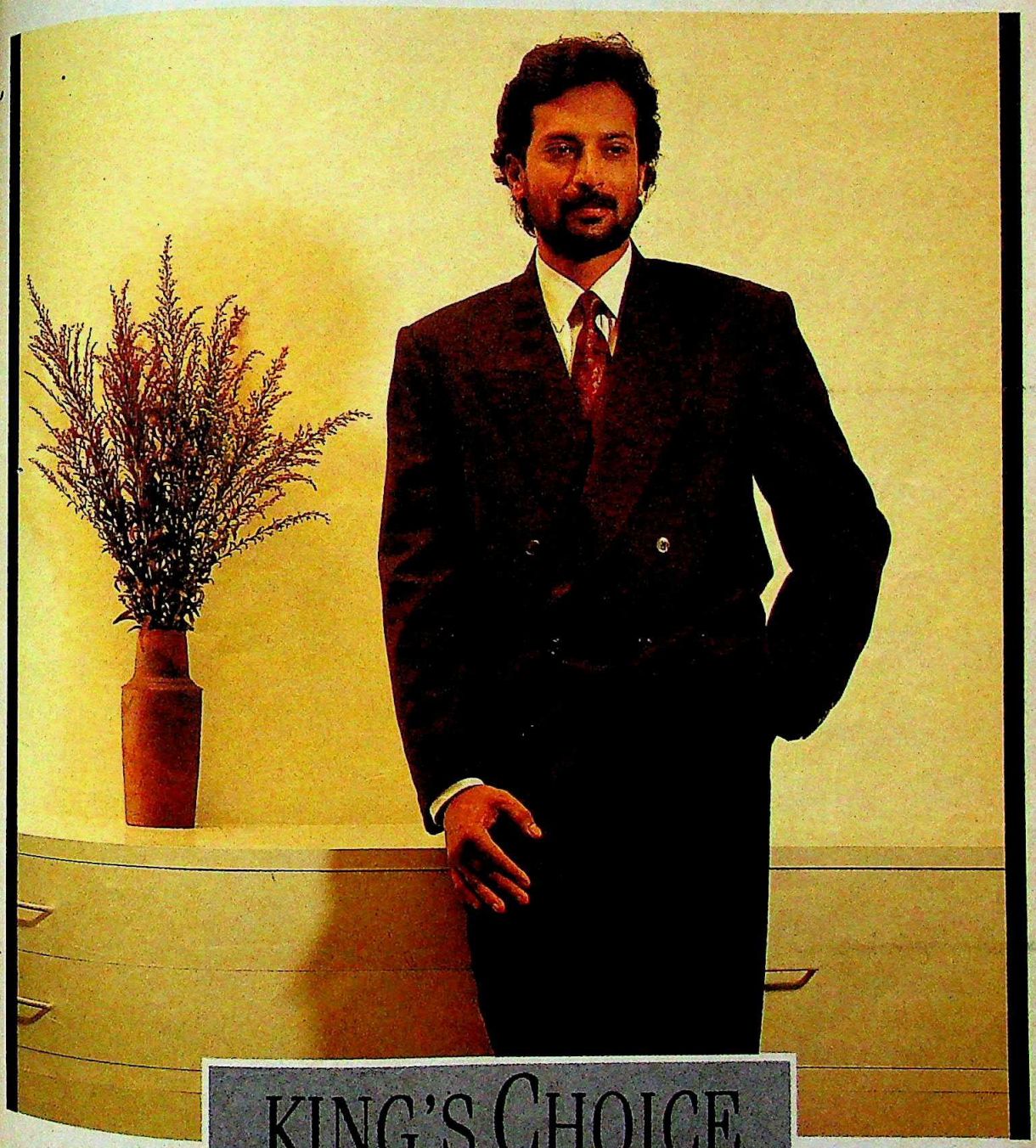

KING'S CHOICE

बेहतरीन सुपरफ़ाइन सूटलेंथ्स

DIGJAM

वी एक्स एल इंडिया लि. का उत्पाद

Woolmark (वूलमार्क)
PURE NEW WOOL
INTERNATIONAL SYMBOL OF PURE NEW WOOL

आराम और शान के लिए
शुद्ध ऊनी सूटिंग्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

SUMANGAL और अन्य प्रमुख स्टोर्स में उपलब्ध

म्यूज़िक टुडे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की नई पेशकश

ऋतु संगीत

ए-91021
बिस्मिल्लाह खान *(शहनाई)*
राग हमीर बहार
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग बसंत बहार

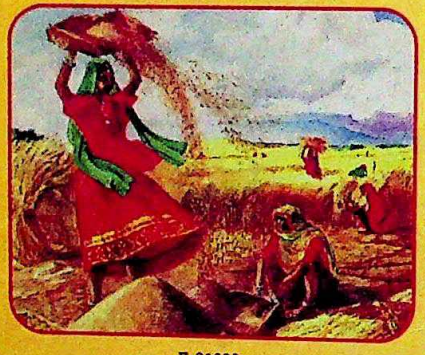

ए-91022
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग बहार और राग हिन्डोल बहार
रवि शंकर *(सितार)*
राग सिन्दुरा और राग मिश्रा काफी

ए-91023
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग बसंत
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग बसंती केदार और राग बसंती कान्हा

Basant Baha

भारतीय शास्त्रीय संगीत के सुर सागर में ऐसे अनेक
जो ऋतुओं के बदलते मिज़ाज से भलीभांति परिचि
यह श्रृंखला पेश करती है – दो सबसे हसीन, मोहक और
ऋतुओं का एक बेहतरीन उ
बसंत बहार बसंत के सदाबहार रंगों, उमंगों और ता
परिपूर्ण है। राग बहार की सुरीली और लहराती तानों से त
यूं खिल उठता है जैसे बसंत आने पर फुलवारी के

ए-91024
पंडित जसराज *(गायन)*
राग भवानी बहार और राग अदि बसंत
हरिप्रसाद चौरसिया *(बांसुरी)*
राग शहाना बहार और पहाड़ी धुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

ए-91025
रवि शंकर *(सितार)*
राग मियाँ की मल्हार
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग रामदासी मल्हार

ए-91026
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग मेघ
पंडित जसराज *(गायन)*
राग धूलिया मल्हार

MEGH MALHAR

ए-91027
हरिप्रसाद चौरसिया *(बाँसुरी)*
राग मधु मल्हार
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग मियाँ की मल्हार

ऐसे अनेक
मल्हार में सावन की रिमझिम पिया-मिलन की चाह और
हे के गीतों की गूंज है। राग मल्हार के खनकते सुर
ते बादलों और उनका सीना चीरती बिजली की चमकती
वार का आइना बन जाते हैं।
संगीत ... इस श्रृंखला के हर राग को हमारे समय के
न कलाकारों ने बड़ी लगन और साधना से
या-संवारा है। एक घंटे के इन ऑडियो कैसेटों की
डिजीटल रिकार्डिंग सुनकर आप रसविभोर हो जाएंगे।

ए-91028
किशोरी आमोनकर *(गायन)*
राग मेघ मल्हार
बिस्मिल्लाह खान *(शहनाई)*
मिश्र मेघ की मल्हार और मेघ

...ूल्य
...की कैसेट रु. 50 (कर सहित)। पैकिंग एवं वितरण शुल्क के रूप में रु. 15
...किंग। ऑर्डर कम से कम 4 कैसेटों के लिए हों तथा आगे भी 4 के गुणक में हों।

कृपया ध्यान दें

- दिल्ली से बाहर के चैकों पर रु. 15 अधिक जोड़ें।
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली से भेजे गए चैक/ड्राफ्ट का एम ...ों में अदा होना ज़रूरी है।
- कैसेट डाक अथवा कूरियर द्वारा भेजे जाएंगे।
- कृपया ऑर्डर के बाद डिलीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक ...तीक्षा करें।
- ...ुगतान भेजने के लिए संलग्न ऑर्डर-फार्म का प्रयोग करें।
- अपने चैक/ड्राफ्ट और अन्य भुगतान 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर इस पते पर भेजें :— म्यूज़िक टुडे, पो. बा. 29, नई दिल्ली-110001।
- प्रत्येक अंक की कीमतें केवल भारत में लागू होंगी।
- ऑर्डर फार्म के न होने पर कृपया अपना नाम और पता भुगतान के साथ डाक द्वारा म्यूज़िक टुडे को भेज दें।

...गिए में इसका विमर्श, संपर्क करें म्यूज़िक टुडे

मेल-ऑर्डर फार्म

कोड सं.	कैसेटों की संख्या
ए 91021	
ए 91022	
ए 91023	
ए 91024	
ए 91025	
ए 91026	
ए 91027	
ए 91028	

हाँ, मैं 'म्यूज़िक टुडे' कैसेट रु. 50/- प्रति कैसेट के दर पर दिए हुए विवरण अनुसार खरीदना चाहता/चाहती हूँ। (ऑर्डर कम से कम 4 कैसेटों के लिए हों तथा आगे भी 4 के गुणक में हों। कृपया पैकिंग अथवा वितरण शुल्क के रूप में रु. 15/- अतिरिक्त भेजें तथा दिल्ली से बाहर वाले चैक पर रु. 15/- अतिरिक्त जोड़ें।)

अपने लिए ☐ उपहार के लिए ☐

म्यूज़िक टुडे को देय रु. _____ का क्रास किया गया चैक एवं डिमांड ड्राफ्ट संलग्न है।

ऑर्डर किए गये कुल कैसेटों की संख्या _____

कुल देय राशि रु. _____

मेरा नाम _____

पता _____

_____ पिन _____ फोन _____

उपहार पाने वाले का नाम _____

पता _____

_____ पिन _____

MUSIC TODAY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाक अधिकृत कश्मीर

जंग के लिए तनी तलवारें

सीमा के उस पार कश्मीरी उग्रवादियों का दिल खोलकर स्वागत, और भारत विरोधी प्रचार को ताकत देने वाले प्रशिक्षण तथा शरणार्थी शिविरों की भरमार

—कंवर संधू, पाक अधिकृत कश्मीर में

पिछले 10 महीने से पाक अधिकृत कश्मीर की राजधानी मुजफ्फराबाद के रारू अंबोर शिविर में बैठे 13 वर्षीय मुतवल्ली का बचपन तभी खत्म हो गया जब पिछले वर्ष भारतीय सेना ने उसे कुछ दिनों के लिए नजरबंद कर लिया. वह मुहाजिरों की उस नई नस्ल में से है, जो पिछले वर्ष पाक प्रशिक्षित उग्रवादियों की घुसपैठ को रोकने के लिए भारतीय सेना की गतिविधियां तेज होने के बाद यहां आई.

अधिकृत कश्मीर में आजादी की आवाज इतनी बुलंद कभी नहीं हुई थी. मुजफ्फराबाद की दीवारें ऐसे पोस्टरों से अटी पड़ी हैं, जिन पर लिखा है—"न गुरिल्ला जंग, न कौमी जंग, अल जेहाद, अल जेहाद." कश्मीरी उग्रवादियों को बेधड़क समर्थन भी साफ देखा जा सकता है. हिजबुल मुजाहिदीन के दफ्तर के सामने दर्जनों हथियारबंद उग्रवादी देखे जा सकते हैं. उनमें एक मुहम्मद अशरफ लाया अपना परिचय 'डिफेंस कमांडर' के रूप में देता है. वह साफगोई से हमें बताता है, "मैंने कई गद्दारों को मौत के घाट उतारा है." उसका कहना है कि हिजबुल का अगला निशाना जम्मू-कश्मीर के अलावा दूसरे इलाके होंगे.

मुजफ्फराबाद में ही एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी के दफ्तर के आगे बढ़िया पोशाक पहने एक व्यक्ति बैठा है. वह नवगठित उग्रवादी संगठन 'सदाए अल्ला ओ अकबर' का मुखिया आमिर खां है. यह उसका असली नाम नहीं है. लेकिन वह उन 12 मजिस्ट्रेटों में से है, जिन्हें जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल जगमोहन ने बरखास्त किया था. फोटो खिंचाने के लिए वह राजी नहीं होता. कहता है, "मैं आपसे आपके देश में ही मुलाकात करूंगा."

कई मुहाजिरों का कहना है कि वे आजादी के समर्थन में प्रद करने पर बार-बार गिरफ्तार किए जाने की वजह से ही यहां हैं. लेकिन इनमें से कम-से-कम 75 लोगों ने कबूल किया कि उग्रवादी गतिविधियों में शामिल थे. ज्यादातर शरणार्थी हाल पिछले वर्ष ही आ गए थे लेकिन यह सिलसिला अभी जारी है सितंबर को कुपवाड़ा के करनाह गांव के 14 लोग मुजफ्फराबाद 25 किमी दूर करका पटका में स्थापित नए शिविर में चले ग वन विभाग के कर्मचारी रहे बशीर भट्ट जैसे कुछ लोगों की छोड़ने का अफसोस जरूर है. लेकिन उसका कहना है, "पिछले साल तो बर्दाश्त से बाहर थे. जगमोहन के कारनामों से लगा सरकार को हमारी जमीन की ही जरूरत है, हमारी नहीं."

लेकिन उन्हें लगता है कि यहां उनकी जरूरत है. इन लोगों लिए यहां सात नए शिविर बनाए गए हैं. उड़ी की एकदम सीध हाथियां का शिविर सबसे नया है, जिसमें 70 परिवार रहने आए वास्तविक नियंत्रण रेखा पर कैंथावाली गांव के तकरीबन सारे निवासी इस पार आ गए हैं. मुस्लिम कांफ्रेंस सरकार की बदौ उन्हें पानी, बिजली, स्कूल और नमाज के लिए जगह भी मिली सरकार इन्हें खर्च के लिए हर रोज 12 रु. देती है. यह रकम भुग दी गई एकमुश्त रकम के अलावा है. इससे सरकारी कोष पर माह 22 लाख रु. का अतिरिक्त बोझ पड़ा है. कश्मीर लिबरे सेल के सचिव रशीद मलिक का कहना है कि लोगों को सीमा पार कर यहां के लिए प्रोत्साहित नहीं

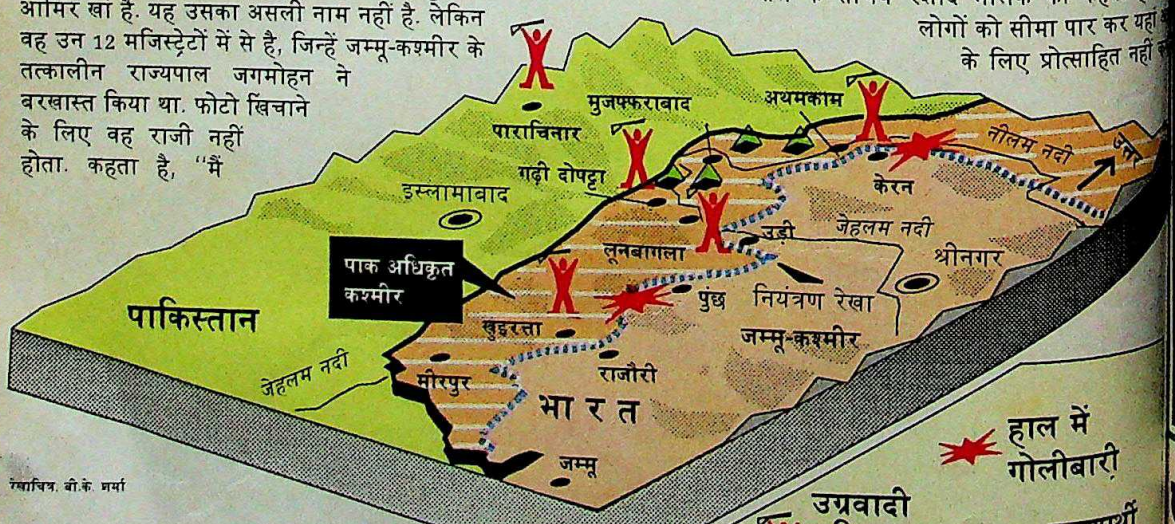

रेखाचित्र: बी.के. शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

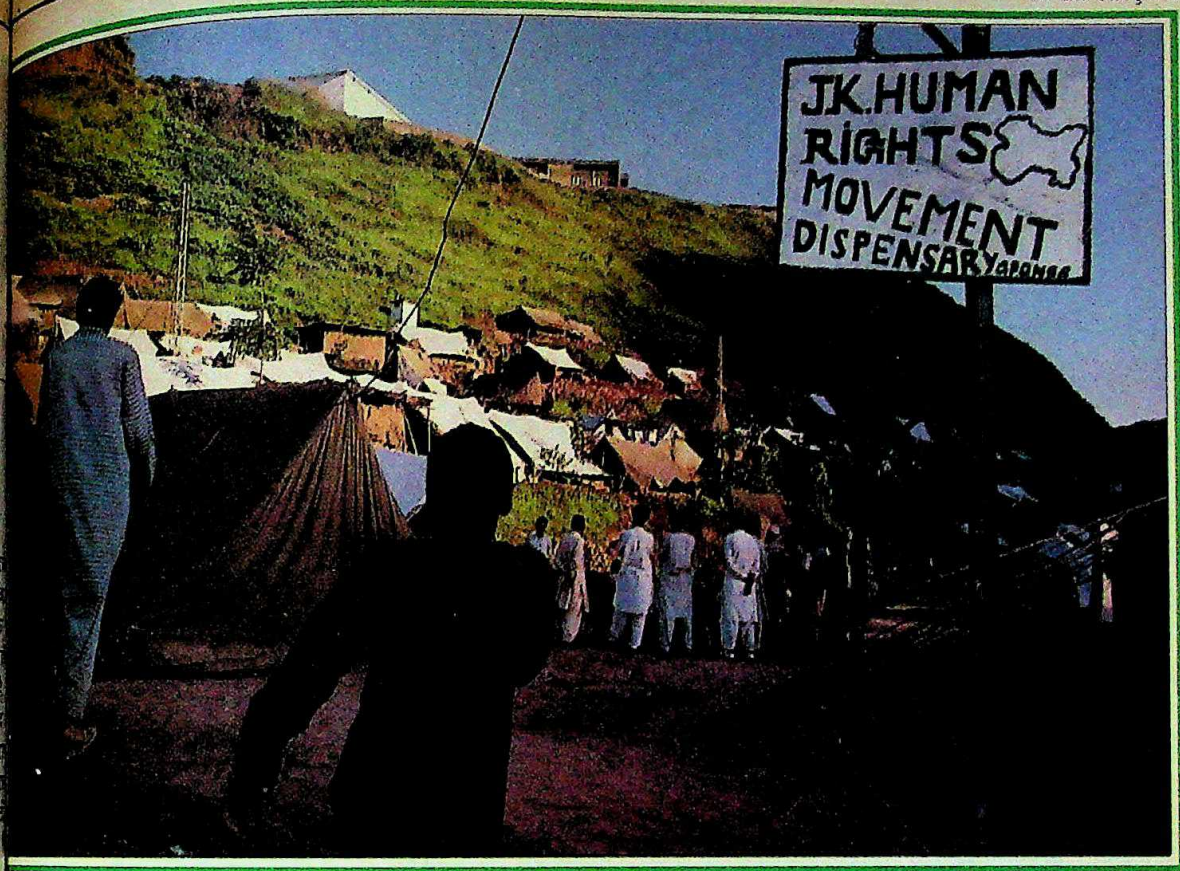

पिछले वर्ष भारतीय सेना की गतिविधियां तेज होने के बाद यहां शरणार्थियों की आमद बढ़ती गई और उन्हें बसाने के लिए कई शिविर लगाए गए

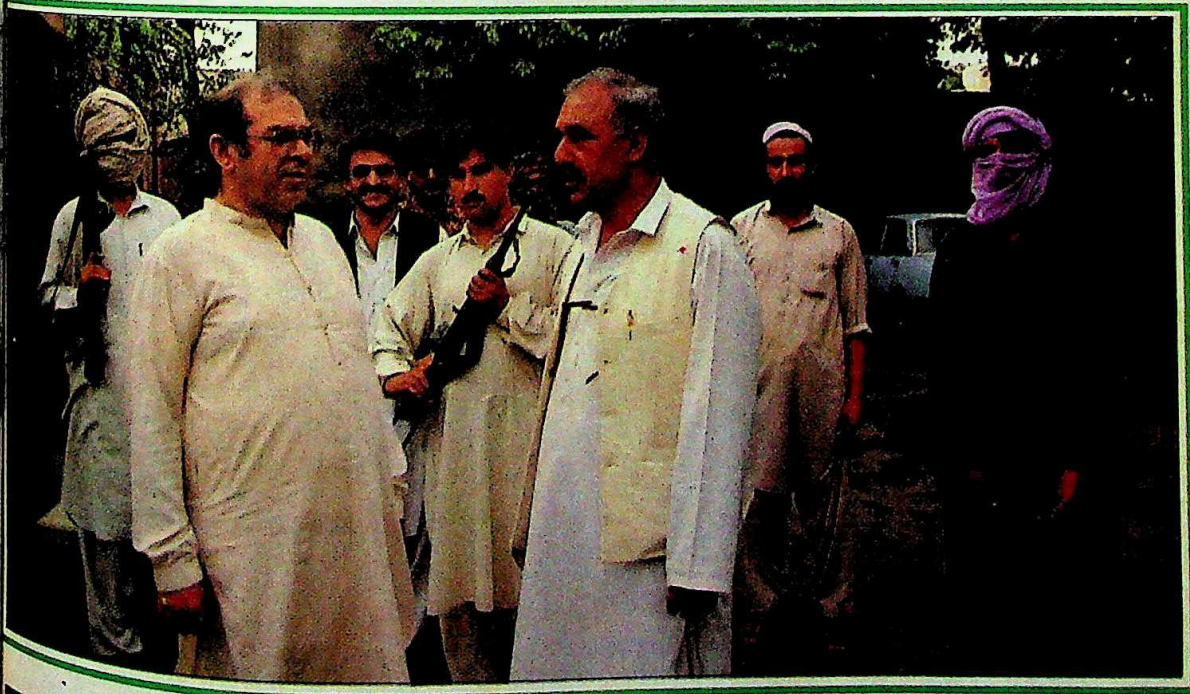

फारूक हैदर, जिन्होंने जेकेएलएफ की हथियारबंद शाखा के रशीद हसरत से मिलकर अमानुल्ला खां से संबंध तोड़ लिए, रावलपिंडी में खुलेआम एक उग्रवादी मुख्यालय चलाते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

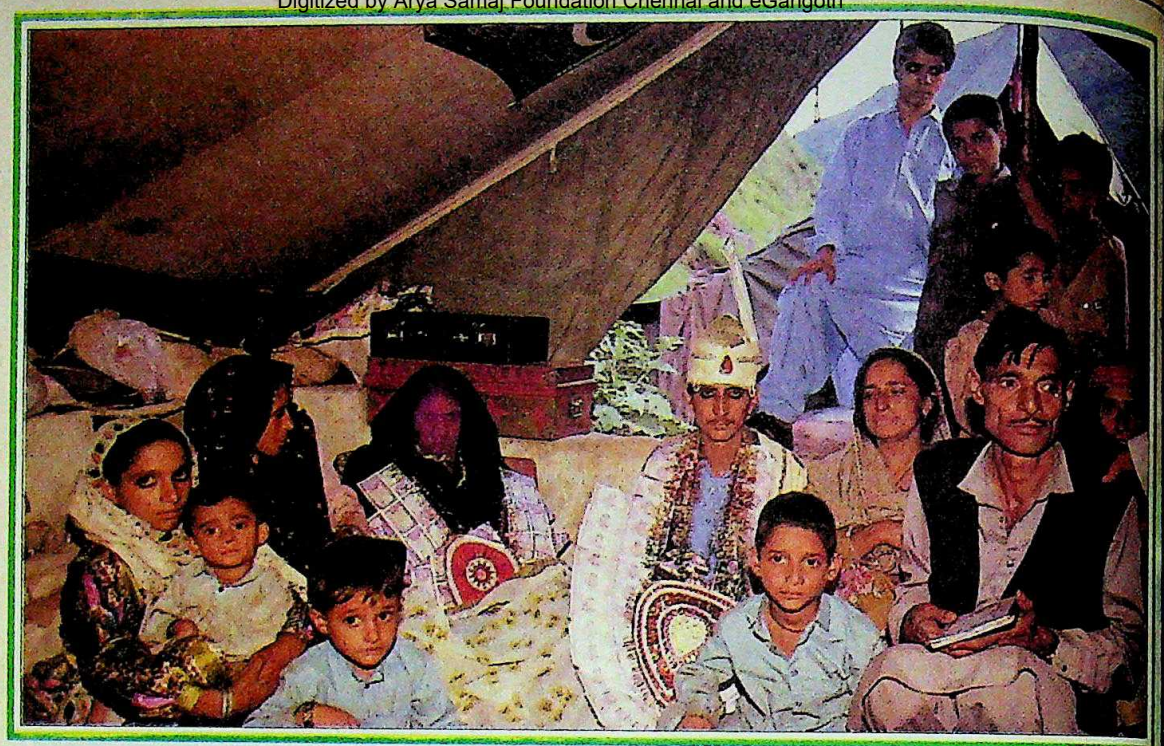

अधिकृत कश्मीर के अंबोर शिविर में आबिद हुसैन शाह और नजीर फातिमा की शादी हुई मगर ज्यादातर रिश्तेदार भारत में थे इसलिए खुशी कम ही रही

लेकिन उनकी करनी इसके एकदम विपरीत नजर आती है.

इन शिविरों में निराशा जरूर व्याप्त है लेकिन इतनी नहीं कि जीवन की गति थम जाए. मसलन, अंबोर शिविर में 17 वर्षीय आबिद हुसैन शाह की शादी 16 वर्षीया नजीर फातिमा से हुई है. दोनों की सगाई एक वर्ष पहले बारामुला में हुई थी. आबिद के अब्बा कहते हैं कि इस शादी की खुशी आधी ही रह गई "क्योंकि ज्यादातर रिश्तेदार भारतीय कश्मीर में ही हैं."

भारत में बिताए दिनों की कुछ हसीन यादें भी उनके पास हैं लेकिन जल्द ही उस पर कड़वाहट तारी हो जाती है. अंबोर शिविर की ही 35 वर्षीया बीबी मरियम पूछती हैं, "मैं वापस क्यों जाऊं?" वह बताती है कि कैंथावाली से उसे भारतीय सेना की वजह से भागना पड़ा. और सेना पर उसके आरोप: पति को मारा-पीटा गया और भारतीय सैनिकों ने हफ्ते भर उससे बलात्कार किया.

लेकिन वास्तविक नियंत्रण रेखा पर भारतीय और पाकिस्तानी सेना के बीच गोलीबारी की बढ़ती वारदातें यदि कोई संकेत देती हैं तो यही कि यह सिलसिला कुछ दिन और चलेगा. इस लंबी लड़ाई के चिन्ह भी अब देखे जा सकते हैं. अथमकाम जैसे शहर के कुछ हिस्से तो मलबे के ढेर भर रह गए हैं. अथमकाम के किसान मीर गुल बहार बताते हैं, "ज्यादातर परिवारों को आए दिन की गोलीबारी की वजह से ही घर-बार छोड़ जाना पड़ा. यहां तक कि तहसील मुख्यालय भी कुंडल शाही ले जाना पड़ा." लेकिन पाकिस्तान सरकार लड़ाई के इन घावों पर लीपापोती कर रही है.

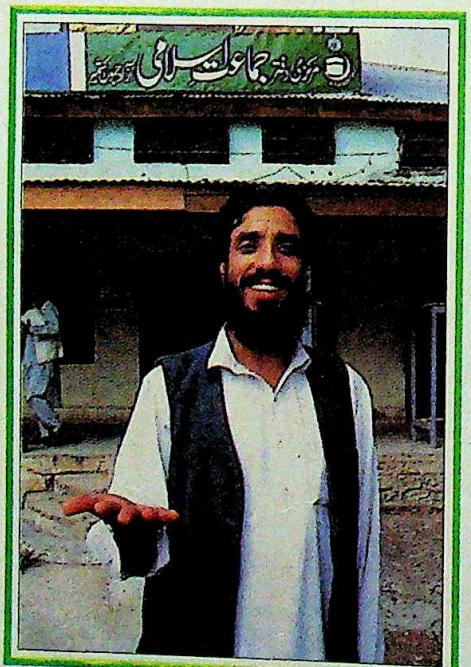

भारत को इस समय हिजबुल मुजाहिदीन के डिफेंस कमांडर मुहम्मद अशरफ लाया की सबसे ज्यादा तलाश है. उसने शान से अपनी फोटो खिंचवाई

इन शरणार्थियों से हमदर्दी जरूर जगती है लेकिन उनकी कई किस्सा बयानियां पैसा और हमदर्दी बटोरने की मनगढ़ंत कहानियां ही लगती हैं. 40 वर्षीय फजलुर्रहमान लोन की व्यथा सबसे अधिक अविश्वसनीय लगती है. कुपवाड़ा के सूदपुरा गांव के इस पूर्व निवासी का कहना है कि भारतीय सेना उसे नमाज अदा करने से रोकना चाहती थी. "जब मैं नहीं माना तो उन्होंने कसाइयों वाले छुरे से मेरी टांग काट दी." पाकिस्तान और आजाद कश्मीर में ऐसे दावे ही हकीकत माने जाते हैं.

असलियत तो कई परतों के नीचे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ingfisher presents the makings of a champion.

From Kingfisher, a video tape on the men behind the scenes of the most thrilling moments on turf. The men who make champions. The men who ride champions. And the champions themselves.

Kingfisher presents
'Horsepower'.

The story of the Indian thoroughbred . A tape every horse racing enthusiast or sports fan would consider a collector's item.

Ogilvy & Mather 3266

KINGFISHER PRESENTS
HORSEPOWER
STORY OF THE INDIAN THOROUGHBRED
TASTE THE EXCITEMENT

O R D E R F O R M

Yes, I would like to order Kingfisher's cassette 'Horsepower', for Rs.175/- (taxes, packing and forwarding included).
I herewith enclose a DD/MO payable in Bangalore (only Bangalore cheques accepted) to: Kingfisher 'Horsepower', C/o *ONE-TO-ONE Communications Pvt. Ltd., No. 3, President Chambers, 8, Richmond Road, Bangalore- 560 025. Ph: 217788.

Name..... Add.....

.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Pin..... Tel.....

* Note: The cassette will be hand-delivered in Bangalore & couriered elsewhere • Please allow lead-time of 2-4 weeks for delivery • Offer/rates valid in India only • Send your form to the indicated (*) address.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिपी मिलेगी. पाकिस्तान की खुफिया सेवा आईएसआई की चौकस निगाहें तो हमें पहली परत तक ही झांकने की इजाजत देती हैं. 'आजाद कश्मीर' के प्रधानमंत्री अब्दुल कयूम खां हमें भारतीय गोलीबारी से हुआ नुकसान दिखाने को उत्सुक हैं लेकिन आईएसआई इसके लिए राजी नहीं हो रही. इस हिचकिचाहट की वजह हमें बाद में पता चली और वह यह कि अथमकाम के रास्ते में दो उग्रवादी प्रशिक्षण शिविर हैं.

दरअसल, चकोठी की तरफ जाते हुए पूरी जेहलम घाटी के साथ-साथ गढ़ी और दोपट्टा गांव के बीच का पूरा इलाका ही उग्रवाद का गढ़ है. रावलपिंडी के एक अखबार के दफ्तर में जब हमें गढ़ी गांव के कुछ लोग मिले तो इन प्रशिक्षण शिविरों की जानकारी हमें मिली. आईएसआई के इन शिविरों में चार गुटों—हिजबुल मुजाहिदीन, जेकेएलएफ, मुस्लिम जांबाज फोर्स और मुस्लिम स्टुडेंट्स फेडरेशनं—के 800 सदस्य प्रशिक्षण पा रहे हैं.

गढ़ी-दोपट्टा के आगे लूनबागला में जमात-ए-इस्लामी द्वारा चलाया जा रहा एक और शिविर है. सूत्रों का कहना है कि भ्रामक प्रचार की सामग्री यहीं तैयार की जाती है. घाटी से लाए गए फोटो और वीडियो फिल्मों के रावलपिंडी के एक फोटोग्राफर की मदद से दूसरे फोटोग्राफ के साथ मिलाकर नई फोटो तैयार की जाती है. घाटी में सेना की कथित ज्यादतियों से संबंधित प्रचार सामग्री अलगाववाद की आग में घी का काम कर रही है.

लेकिन असली काम उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत में होता है. आईएसआई और मुजाहिदीन उग्रवादियों को हथियार चलाने का प्रशिक्षण देने के लिए टोएटा और पजेरो जीपों में पाराचिनार ले जाते हैं और लड़ाई के मैदान में उतारने के लिए उन्हें पेशावर और अफगानिस्तान ले जाया जाता है. सरकारी अधिकारी निजी बातचीत में इन शिविरों के अस्तित्व की बात कबूल करते हैं. पर जमात के सहायक महासचिव साविर कमर जैसे दूसरे लोगों का सवाल है, "आजाद कश्मीर में शिविर लगाने में आखिर बुराई क्या है? यह भी कश्मीर का हिस्सा है."

अधिकृत कश्मीर में कई लोगों को

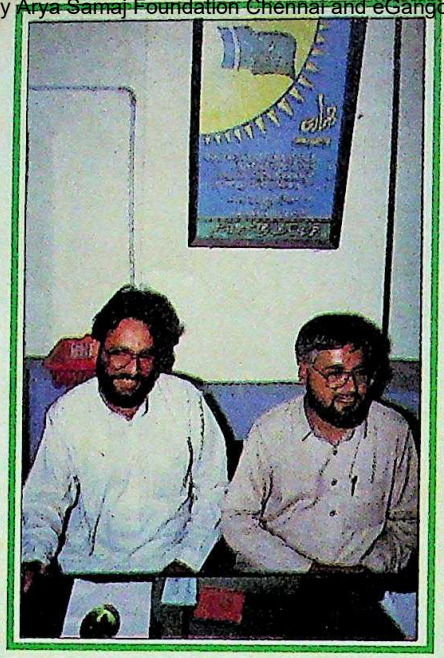

जमात के नेता तलवार के जोर पर कश्मीर पर कब्जा करना चाहते हैं. मगर कुछ लोग युद्ध से बचने की वकालत करते हैं

जेकेएलएफ

बढ़ती निराशा

जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) जम्मू-कश्मीर में, जहां कट्टरपंथी समूहों का बोलबाला है, तो अप्रासंगिक हो ही गया है, पाकिस्तान में भी उसकी जड़ें कमजोर हो गई हैं.

'आजाद कश्मीर' में मुस्लिम कांफ्रेंस सरकार से बेहतर बर्ताव की उम्मीद करने वाले जेकेएलएफ के कार्यकर्ता उसके सौतेले व्यवहार से अपमानित महसूस कर रहे हैं. उनकी कुंठा जून में उस समय फूटी जब उन्होंने मुजफ्फराबाद में मुस्लिम कांफ्रेंस के एक कार्यकर्ता के नए खुले रेस्तरां पर हमला कर दिया. अगली रात को गढ़ी-दोपट्टा प्रशिक्षण शिविर में मुस्लिम कांफ्रेंस की युवक शाखा के 25 तंबुओं को जला दिया गया. इस आगजनी के लिए जेकेएलएफ के असंतुष्ट कार्यकर्ताओं के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की गई.

रावलपिंडी में भी स्थिति ठीक नहीं है. जेकेएलएफ के बड़े नेताओं को जान से मार देने की धमकी मिली हुई है. इसके प्रमुख अमानुल्ला खां एक गुमनाम-से रेस्तरां में मिलने को राजी हुए. उन्होंने स्पष्ट कहा, "मैं एक दर्जन मोर्चों पर लड़ रहा हूं. उनमें एक 'रा' भी है." उन्होंने कहा कि पाकिस्तान के मुंह मोड़ लेने से हथियार जुटाना मुश्किल हो गया है.

जेकेएलएफ की पांतों में निराशा छा जाने के कारण घाटी में कार्यकर्ताओं का मनोबल भी गिर गया है. लेकिन खां बिना किसी हताशा के कहते हैं, "हमने बहुत तकलीफें उठाई हैं. लेकिन हमारी लड़ाई जारी है." जम्मू-कश्मीर में अंतरिम सरकार की घोषणा के बाद खां से अलग हो जाने वाले फारूक हैदर की बात पर विश्वास किया जाए तो वे पहले से ही सिख उग्रवादियों के संपर्क में हैं. ऐसे संकेत हैं कि खां भी दूसरे स्रोत तलाश रहे हैं ताकि पाकिस्तानी मदद बंद हो जाने पर वहां से सहायता मिल सके.

कंवर संधू, रावलपिंडी में

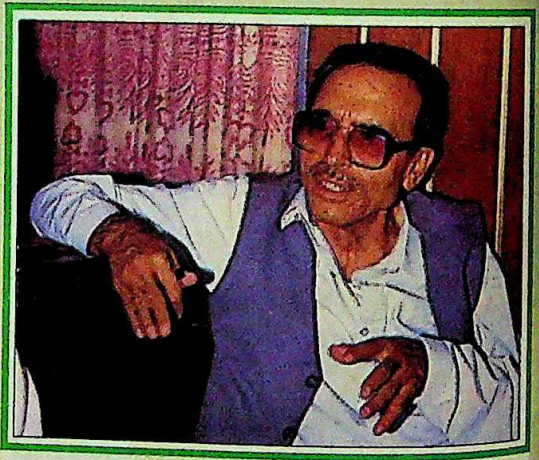

"मैं एक दर्जन मोर्चों पर लड़ रहा हूं. उनमें से एक 'रॉ' भी है"

अमानुल्ला खां, जेकेएलएफ का मुखिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

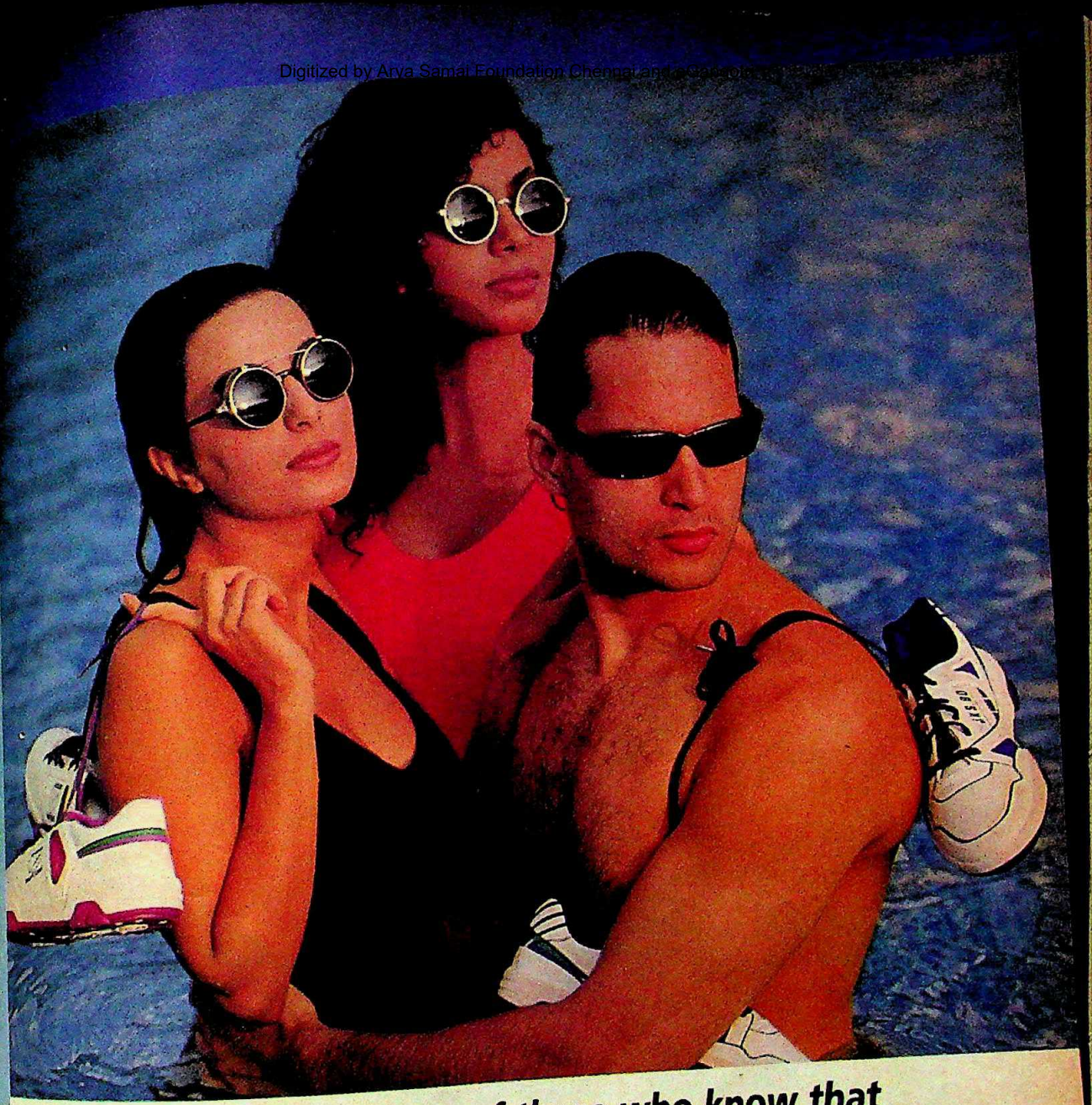

The official shoe of those who know that depending on the Company, three need not be a crowd.

Club
SHOES

SHOES FOR HARD LIVING, FUN LOVING PEOPLE- Club FROM PARAGON FOOTWEAR (P) LTD.

Available in all leading shops countrywide.

Paragon Footwear Pvt. Ltd. A 53 MIDC Industrial Area, Marol, Andheri (E), Bombay 400 093. Tel: 6344917 Fax: 91-22-6328421

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

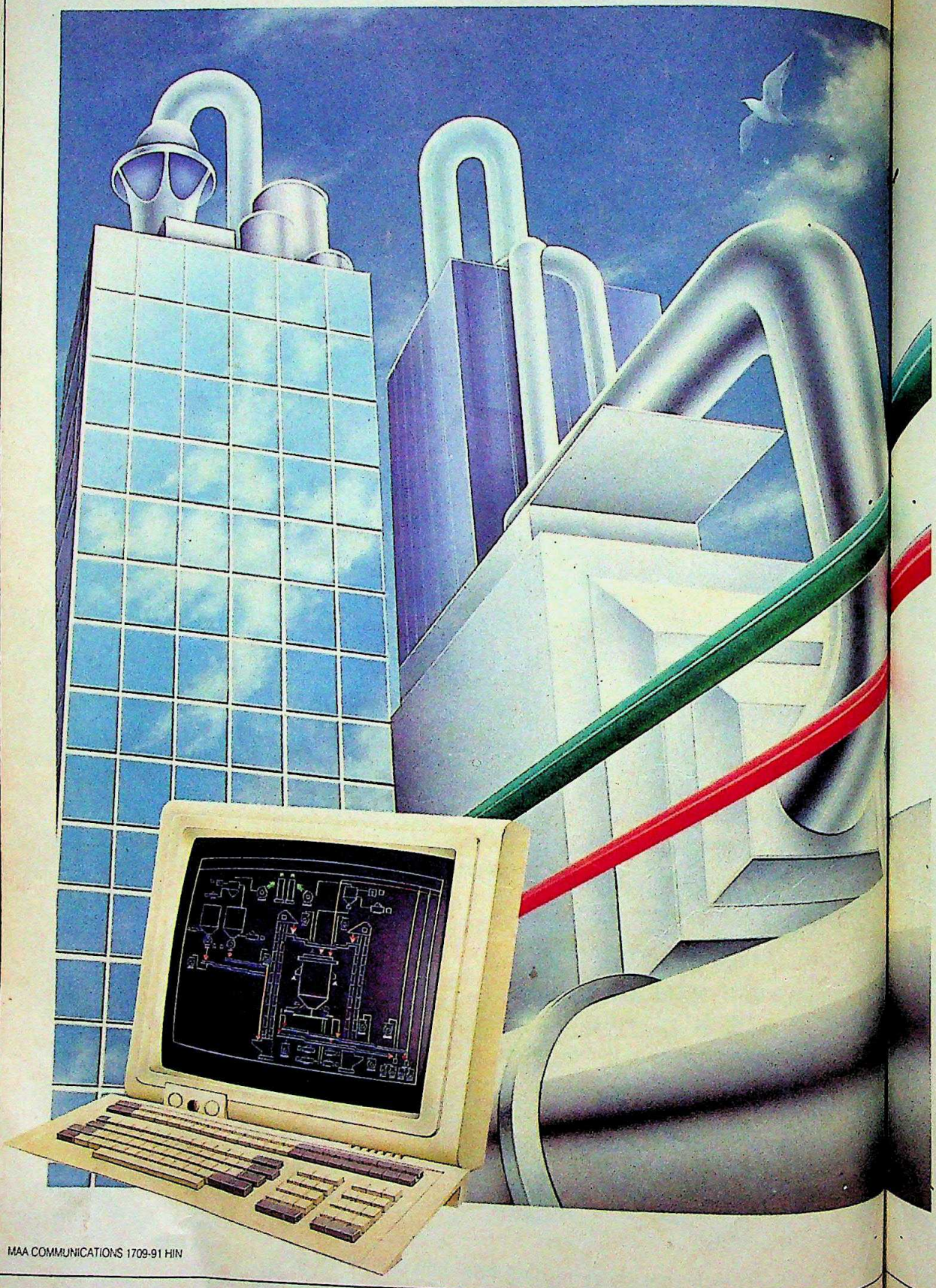

MAA COMMUNICATIONS 1709-91 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कारखाना लगे जैसे सोने की खान है ।

इस कॉम्पलेक्स में कहीं ३०० लोग ५० लाख टन सीमेन्ट बना रहे हैं।

ABB की औद्योगिक सहायक प्रणालियां, उत्पादन व उत्पादकता को ऐसे स्तर तक बढ़ाने में कार्यरत हैं जिसका अब तक अनुमान नहीं किया गया।

पाश्चात्य देशों में (भारत में भी) ABB की स्वचलन प्रणालियों द्वारा चलने वाले संयंत्र, मानव त्रुटियों को लगभग पूर्ण रूप से दूर करते हैं ।

ABB अपने विस्तृत तकनीकी संसाधन अब भारत को प्रस्तुत करती है ।

ABB, भारत के लिए कोई अजनबी नहीं है । देश के आधुनिकतम सबस्टेशन और संयंत्र (सीमेन्ट, चीनी और स्टील), ABB द्वारा ही स्वचालित किए गए हैं । उदाहरण के लिए, जेपी रेवा सीमेन्ट लि. तीस प्रक्रिया स्वचलन प्रणालियों का उपयोग करती है ; और टाटा इलेक्ट्रिक कम्पनीज़ लि. में हैं, बारह ।

ABB ने बल्लारपुर इन्डस्ट्रीज़ को उनंचास डीसी ड्राइव्स सप्लाई किए हैं और इन्डियन एल्यूमिनियम को अड़तीस । ABB आर्क और इन्डक्शन फर्नेस ४०० से अधिक ग्राहकों की सेवा में हैं । इसके अलावा चीनी के मिलों में औद्योगिक स्टीम टर्बाइन और कारखानों व फार्मों में लाखों की संख्या में एसी मोटर भी पाए जाएंगे ।

यही सबूत है कि ABB की औद्योगिक प्रणालियां एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी, ऐसे समय में जब भारत अपनी औद्योगिक शक्ति को आनेवाली शताब्दी की ओर प्रेरित कर रहा है ।

इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग में विश्व अग्रणी

- विद्युत्-शक्ति उत्पादन
- विद्युत्-शक्ति संचरण
- विद्युत् -शक्ति वितरण
- औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक्स
- औद्योगिक उपकरण व प्रणालियां
- परिवहन
- पर्यावरण प्रणालियां

असेया ब्राउन बोवेरी लिमिटेड
संचार विभाग
सोना टावर्स,
७१, मिल्लर रोड,
बैंगलूर-५६० ०५२.

ABB
ASEA BROWN BOVERI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

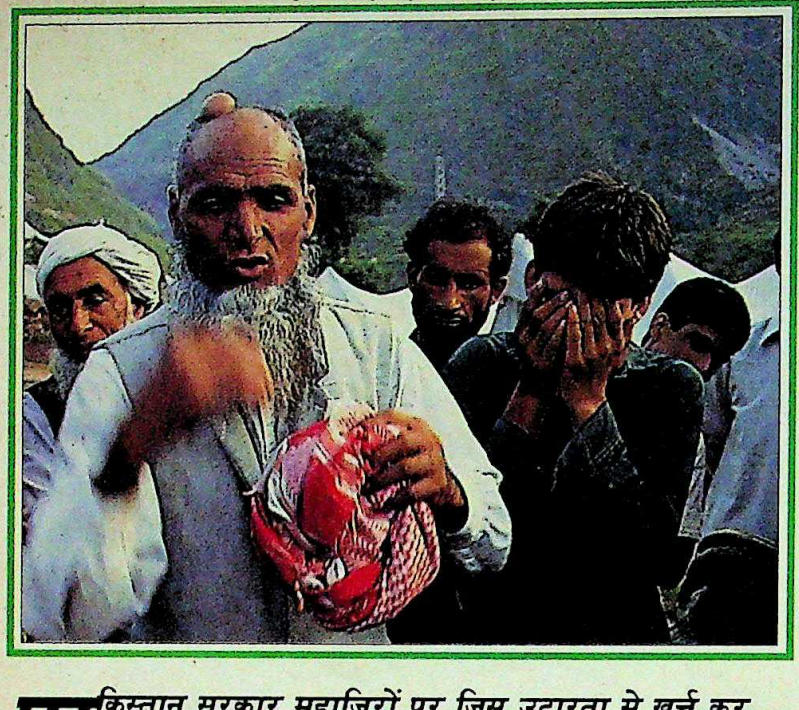

पाकिस्तान सरकार मुहाजिरों पर जिस उदारता से खर्च कर रही है उससे उन्हें लगता है कि उनकी बड़ी पूछ हो रही है

उम्मीद है कि भारतीय सेना की ज्यादतियां घाटी के मुसलमानों में विद्रोह को जन्म देंगी. जमात अब भी तलवार के बल पर कश्मीर लेने में यकीन रखती है. लेकिन यहां के बाकी लोग भारत के साथ युद्ध को टालना चाहते हैं. सरदार कयूम को भी युद्ध की संभावना बहुत कम लगती है.

अधिकृत कश्मीर में कुछ दूसरे लोगों का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय जनमत भारत सरकार को संयुक्त राष्ट्र का रायशुमारी प्रस्ताव मानने के लिए विवश कर देगा. लेकिन अब पाकिस्तान में रायशुमारी कराने की तोतारटंत सहसा बंद हो गई है. यहां प्रधानमंत्री नवाज शरीफ भी संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों के आगे जाकर द्विपक्षीय वार्ता की संभावना से इनकार नहीं करते. वे कहते हैं, "बातचीत की मेज पर आने वाले नए सुझावों पर भी विचार किया जाना चाहिए." इस विषैले युद्ध से दो देशों की खाई इतनी चौड़ी हो चुकी है कि अब उसके पाटे जाने की संभावना नजर नहीं आती. ■

राजनीति

धांधली पर धमाल

कथित 'आजाद कश्मीर' के पूर्व प्रधानमंत्री राजा मुमताज राठौड़ के चित्र वाले पोस्टरों से पाक अधिकृत कश्मीर की राजधानी मुजफ्फराबाद की दीवारें अटी पड़ी हैं. पिछली जुलाई में राठौड़ ने जब पाक अधिकृत कश्मीर के असेंबली चुनावों में धांधली के आरोप लगाते हुए पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के खिलाफ जंग की धमकी दी थी तो तूफान खड़ा हो गया था. तीन महीने पहले पाकिस्तान सरकार द्वारा उनकी बरखास्तगी से जो संकट पैदा हुआ, वह अभी तक खत्म नहीं हुआ है.

वैसे, राठौड़ के उत्तराधिकारी सरदार अब्दुल कयूम खां की जोड़-तोड़ के कारण पाक अधिकृत कश्मीर में अमन है. इन सबके बावजूद, असेंबली चुनावों के तीन महीने बाद भी सभी नौ विपक्षी सदस्यों ने शपथ ग्रहण नहीं की है.

पाक अधिकृत कश्मीर की एकजुटता की दीवार में और भी दरारें हैं. यहां की पीपुल्स नेशनल पार्टी (पीएनपी), जिसके मुखिया कुरबान अली खां हैं, पाकिस्तान में कश्मीर के विलय के खिलाफ है. वजह: पाक अधिकृत कश्मीर में पंजाबियों का बोलबाला है. मीरपुर में जम्मू-कश्मीर लिबरेशन लीग के साथ-साथ पीएनपी भी लोकप्रिय है. उधर, गिलगिट, हुंजा, जालकोट, चित्राल, दिर और बुंजी वाले उत्तरी इलाकों में पाकिस्तान सरकार का प्रत्यक्ष शासन है और उस पर कानूनी लड़ाई चल रही है. यहां तक कि मुस्लिम कांफ्रेंस ने भी मांग की है कि इस क्षेत्र का, जहां अक्सर सांप्रदायिक झड़पें हुआ करती हैं, पाक अधिकृत कश्मीर में विलय कर दिया जाए. लेकिन नवाज शरीफ असंतोष की बात को दरकिनार कर देते हैं. वे पूछते हैं, "भारत के उलट क्या हमने आजाद कश्मीर में शांतिपूर्ण चुनाव नहीं करवाए?" लेकिन आजादी की मांग करने वाले क्षेत्र में होने वाले संघर्षों का जितना सावधानी से आकलन किया जाता है उतना किसी और संघर्ष का नहीं.

—कंवर संधू, मुजफ्फराबाद में

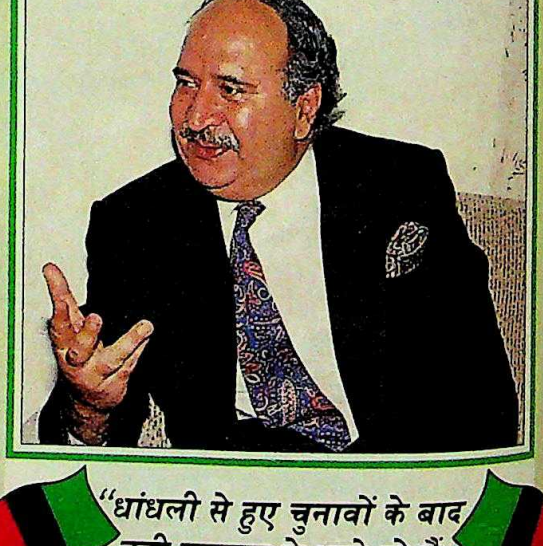

"धांधली से हुए चुनावों के बाद बनी सरकार के आगे तो मैं घुटने हरगिज नहीं टेकूंगा"

मुमताज राठौड़, *'आजाद कश्मीर' के पूर्व प्रधानमंत्री*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुवार था जामनी।

उसने छेड़ना शुरु किया।

अभी-नहीं। कभी-नहीं।

आज-नहीं। फिर-सही। मुझे उकसाती रही।

उस हद तक जहां से कोई वापसी नहीं।

होगा अभी, यहीं। और जामनी ही।

तुम बड़े वो हो, उसने कहा। और जीत मेरी रही।

बहाने-घरे-रहे, जीत-मेरी-रही-जामनी। काफ़ी देर बाद वह धरती पर उतरी।

KOHINOOR
fiesta

ल्यूब्रिकेटेड रंगीन कॉन्डोम

उत्पादन

MAA COMMUNICATIONS 1594 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढाबे

रूप नया, पहचान पुरानी

देश भर में फैले ढाबे अब सड़कछाप रेस्तरां भर नहीं रह गए हैं. आधुनिक सुविधाओं से लैस इन दुकानों पर अब मध्यम वर्ग के लोगों और छोटे व्यापारियों की भीड़ भी जुटने लगी है

—तरुण जे. तेजपाल

हरियाणा में अंबाला बस अड्डे के पास एक लंबे-चौड़े विज्ञापन बोर्ड पर काकातुआ का बहुरंगी चित्र बना हुआ नजर आता है. और इसके नीचे लिखा है, "वैसे तो आप मुझसे कहीं भी मिल सकते हैं. पर मेरा स्वाद लेना हो तो 'डीलक्स' में पधारिए." और इस 'डीलक्स' ढाबे में लगी भीड़ और यहां शोरबे में डूबी उंगलियां चटकारते लोगों को देख लगता है कि विज्ञापन सचमुच सफल है.

यह सिर्फ इसी शहर की बात नहीं है. 'डीलक्स' जैसे ढाबे आज देश भर में अच्छी कमाई कर रहे हैं. ये अब ट्रक ड्राइवरों को सस्ता और स्वादिष्ट भोजन मुहैया कराने वाले सड़कछाप रेस्तरां भर नहीं रह गए हैं. इनकी साजसज्जा आधुनिक होती जा रही है. लगातार होड़ बढ़ने और उपभोक्तावादी रुझानों के चलते हर राजमार्ग पर पाए जाने वाले ये ढाबे अब फूस के छप्परों की जगह ईंटों और टाइलों से बनने लगे हैं.

अभी कुछ साल पहले तक देश भर में ढाबे जरूरत के मुताबिक कुछ-कुछ जोड़-जाड़कर बना लिए जाते थे. ये महज एक सराय जैसे होते थे जिसमें कुछ चारपाइयां, लकड़ी के पट्टे और एल्यूमिनियम के सस्ते बरतन हुआ करते थे. और इनके ग्राहक सिर्फ ट्रक वाले ही हुआ करते थे जो कम पैसे में ही भोजन चाहते थे.

लेकिन अब लगभग हर जगह पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार और अन्य राज्यों से हरे-भरे खेतों, मैदानों तथा पहाड़ियों के बीच गुजरते राजमार्गों पर बने हजारों ढाबे अधिक सुविधा, अच्छे भोजन और संचार सुविधाओं से लैसे होते जा रहे हैं. अब ढाबों में फ्रिज, गैस के [illegible] टीवी, वीडियो, एसटीडी सहित [illegible] सुविधाएं और सामान लाने के अपने [illegible] होते हैं. जयपुर-जबलपुर राजमार्ग 12 [illegible] बने 'माना ढाबा' के मालिक किशोर [illegible] बताते हैं, "हमें पानी ठंडा करने के [illegible] कूलर खरीदना पड़ा क्योंकि अब [illegible] ड्राइवर भी ठंडा पानी ही मांगते हैं."

ढाबों में आने वाले नए ग्राहकों [illegible] मध्यमवर्गीय बाबू या उद्योगपति होते हैं [illegible] अब पूड़ी बांधकर यात्रा पर नहीं निक[illegible] यही नहीं, ये मध्यमवर्गीय लोग अब [illegible] परिवार के साथ बाहर भोजन का म[illegible] लेने के भी आदी हो गए हैं. इनके लिए [illegible] उनकी जेब के माफिक पड़ते हैं. नागपु[illegible] पास 'पहलवान दा ढाबा' में भोजन [illegible] धनी व्यापारी जगदीश उफवाला कहते [illegible] "मैं अक्सर अपने परिवार के साथ [illegible] आता हूं. यहां [illegible] होती जा रही [illegible] ये सब सुध[illegible] नतीजा हैं. उफ[illegible] यह धंधा काफ[illegible] और कई ढाबो[illegible] मुनाफा होता [illegible] राजमार्ग के कि[illegible] पर भी पड़ा है [illegible] लोग ढाबा मा[illegible] जमीन किराए [illegible] दे या बेच देते [illegible] अब वे खुद ही [illegible] हाथ आजमाना [illegible] सहीगढ़-जालंध[illegible] पर दो साल [illegible] चलाने वाले [illegible] यह कहते हैं, [illegible] में तो मेरी अ[illegible] थी. 750 वर्ग ग[illegible] पर बने ढाबे से [illegible] तीन एकड़ ज[illegible] कमाई से तं[illegible] ज्यादा कमा ले[illegible] दो साल [illegible] पंजाब से लौटे [illegible] सिंह ने [illegible] लुधियाना राज[illegible] नगर ढाबा' [illegible] प्लेट की [illegible] चिकन जैसे वि[illegible] लेकिन वे ढाबे [illegible] अनुसार सजाने [illegible] इसलिए अगले [illegible] हैं, जबकि कुस[illegible]

फ. प्रभाकर राव

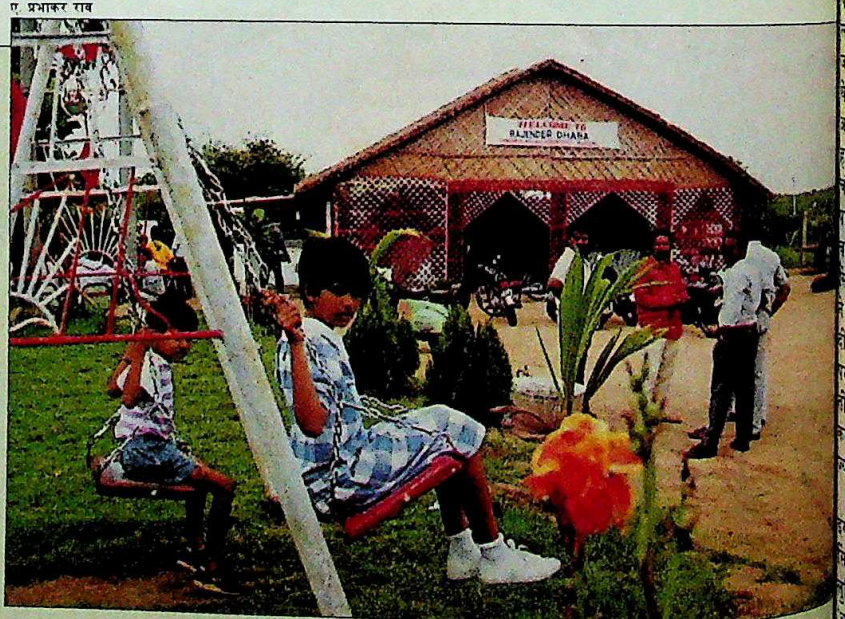

राजेंद्र ढाबा

यह करीम नगर राजमार्ग पर हैदराबाद से 28 किमी दूर स्थित है. झूलों, लॉन और शराब की दुकान ने इसे विशिष्ट बना दिया है. यह ग्राहकों से अमूमन भरा रहता है. वायु सेना में तकनीशियन रहे इसके मालिक गुरदेव सिंह परमार छुट्टी के दिनों को छोड़ रोजाना लगभग 250 लोगों के खाने की व्यवस्था करते हैं. चिकन 50 रु. में मिलता है. 10 मिनट में ही मेज सज जाती है. कमाई रोजाना 2,000 से 3,000 रु. है. इसके अलावा गुरदेव अपने 2.4 एकड़ के फॉर्म में धान उगाते हैं और मवेशी भी पालते हैं. वे कहते हैं, "मैं शहर से सिर्फ मसाले खरीदता हूं."

—अमरनाथ के. मेनन

"यहां सस्ते में ही दावत निबट जाती है. नए बजट की वजह से शहर के वातानुकूलित बार और रेस्तरां में शराब और खाना इतना महंगा हो गया है कि जेब जवाब देने लगती है"

शिवशक्ति त्रिपाठी, *निर्माण ठेकेदार*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

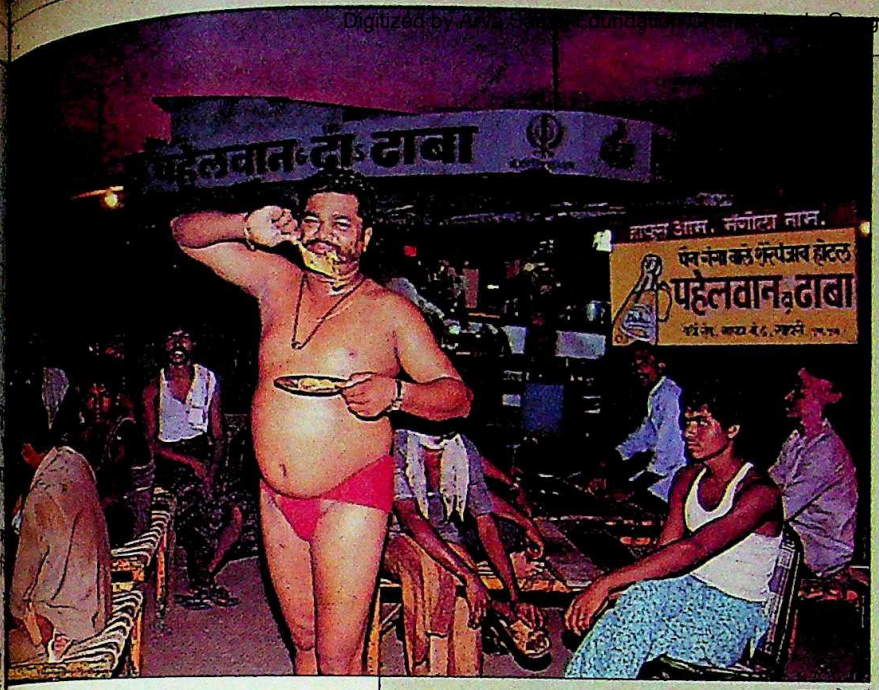

नमन भोजानी

आता हूं. यहां हर साल सुविधाएं बेहतर ही होती जा रही हैं."

ये सब सुधार बढ़ती प्रतिस्पर्धा का ही नतीजा हैं. उफवाला जैसे ग्राहकों के बढ़ने से यह धंधा काफी कमाऊ होता जा रहा है और कई ढाबों को तो हर रोज हजारों का मुनाफा होता है. इस बदलाव का असर राजमार्ग के किनारे की जमीन के मालिकों पर भी पड़ा है. पहले ये लोग ढाबा मालिकों को जमीन किराए पर दे देते थे या बेच देते थे. लेकिन अब वे खुद ही इस धंधे में हाथ आजमाना चाहते हैं. खड़ीगढ़-जालंधर मार्ग पर दो साल से ढाबा चलाने वाले हरजीत सिंह कहते हैं, "इस धंधे ने तो मेरी आंखें खोल दीं. 750 वर्ग गज जमीन पर बने ढाबे से मैं अपनी तीन एकड़ जमीन की कमाई से तीन गुना ज्यादा कमा लेता हूं."

दो साल पहले ही अमरीका से लौटे अमरीक सिंह ने जालंधर-लुधियाना राजमार्ग पर 'अमर ढाबा' खोला है. इसमें बगीचे, टायलेट की सुविधाओं के साथ चिली-चिकन जैसे विशेष व्यंजन भी मिलते हैं. लेकिन वे ढाबे को ग्राहकों की सुविधा के अनुसार सजाने के प्रति भी जागरूक हैं. इसलिए अगले हिस्से में तो चारपाइयां पड़ी हैं, जबकि कुर्सी मेज पिछवाड़े में हैं. वे

"प्रतिद्वंद्विता बढ़ने से आधुनिकीकरण जरूरी हो गया है. मैं अब एसटीडी फोन लगवाना चाहता हूं जहां से आप बाहर भी फोन कर सकें"

जोगा सिंह, *ढाबा मालिक*

आर.सी साहू

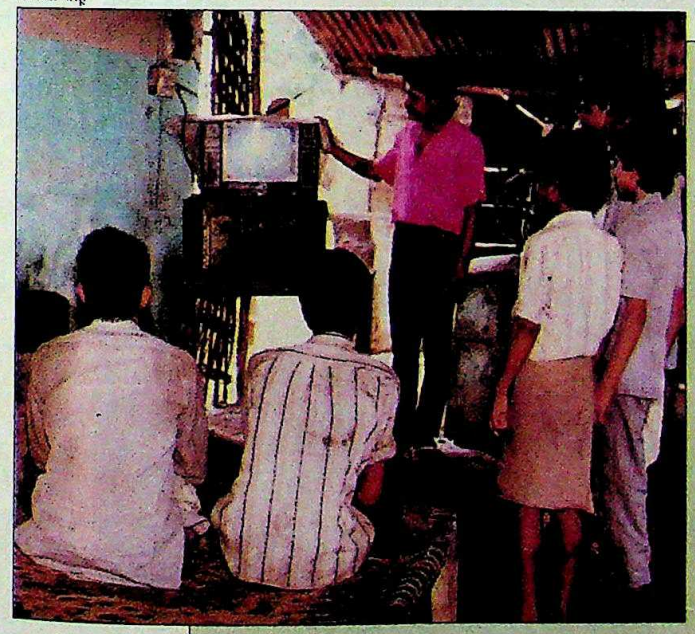

"अब तो ट्रक ड्राइवर फ्रिज, टीवी, एसटीडी जैसी ज्यादा से ज्यादा सुविधाओं की मांग करते हैं"

दर्शन सिंह, *ढाबा मालिक*

पहलवान दा ढाबा

पंद्रह साल पहले करनाल के एक पहलवान ने नागपुर आकर राजमार्ग 7 पर एक ढाबा खोल लिया. हरि सिंह पहलवान नाम के इस जाट सिख ने पहले चाय बेचनी शुरू की. पर धंधा बढ़ता देख उसने जल्दी ही मटन और चिकन भी बेचना शुरू कर दिया. पांच साल पहले उसके बेटों—शाम और जोगा—ने ढाबे को आधुनिक बनाना शुरू किया. आज इसमें तीन फ्रिज, एक टीवी, एक डीप फ्रिज, एक जेनरेटर और एक वीडियो सेट है. इसके ग्राहकों में मध्यम वर्ग के लोग शामिल हैं. रोजाना 1,500 से 3,000 रु. की कमाई होती है. और यहां का बटर चिकन मशहूर है. दारा सिंह और धर्मेंद्र जैसी हस्तियां इस ढाबे में खा चुकी हैं.

—ग्रॉडफ्रे परेरा

विंध्याचल ढाबा

विंध्याचल के निर्जन जंगलों में यदि आधुनिक सुविधाओं से लैस विंध्याचल जैसे ढाबे न होते और खुदा-न-खास्ता आपकी कार खराब हो जाती तो न जाने आप कैसी-कैसी मुश्किल में फंस जाते. लेकिन अब आप कार छोड़कर ढाबे में चले जाइए, मदद के लिए फोन करिए और तब खाना खाइए. भोपाल-नागपुर राजमार्ग पर स्थित विंध्याचल ढाबे में एसटीडी, फ्रिज, टीवी और डेजर्ट कूलर जैसी सुविधाएं हैं. यहां का चना मसाला और खीर मशहूर है और 10 रु. में भरपेट भोजन मिलता है. भीड़-भाड़ वाले दिन में यहां 1,000-1,500 लोग खाना खाते हैं.

—नरेंद्र कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहूजा ढाबा

दिल्ली-चंडीगढ़ राजमार्ग पर स्थित मुरथल के आहूजा ढाबे में संगमरमरी टेबल, एक बगीचा और एक महिला शौचालय है. दो दशक पहले यहां चारपाइयां बिछती थीं और एक रसोइया था. आज यहां आठ रसोइये और 12 वेटर हैं. बकौल मालिक, "हम एक साथ 150 लोगों को खिला सकते हैं." चार आदमियों के खाने पर लगभग 50 रु. लगते हैं. ढाबे में एक फ्रिज और इलेक्ट्रॉनिक्स दुकान है. मालिक के.एल. आहूजा भोजों की व्यवस्था करते हैं, कार वाले ग्राहकों को भी पटाते हैं. —हरिंदर बवेजा

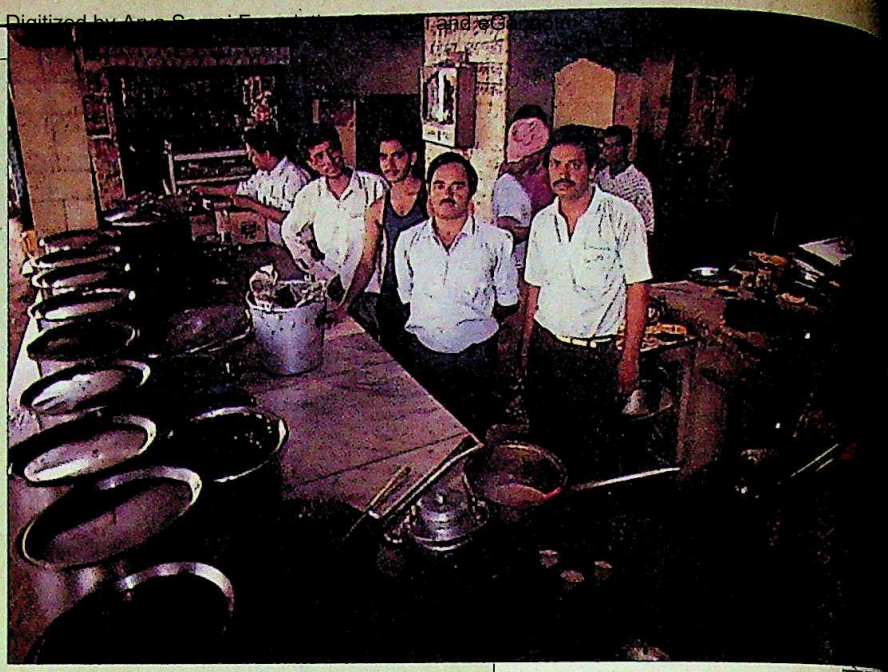

प्रमोद पुष्करणा

"ग्राहकों की मांगें बढ़ती जा रही हैं—वे ढाबे में कदम रखते ही ठंडी शराब की मांग करने लगते हैं"

अशोक कुमार, *मालिक का भतीजा*

जमींदार ढाबा

लुधियाना के पास एक डेयरी मालिक नत्था सिंह ने अपने दूध के इस्तेमाल के लिए 1984 में एक ढाबा खोला. पिछले साल वे इसे लुधियाना-दिल्ली मार्ग पर साहनेवाल ले आए. आज उनका ढाबा मशहूर हो गया है. यहां की लस्सी विशिष्ट मानी जाती है. लगभग 230 लिटर लस्सी रोज बिकती है और यह एक विशाल इलेक्ट्रिक मशीन से मथी जाती है. रोजाना करीब 6,000 रु. की कमाई वाले इस ढाबे में 125 लोगों के बैठने की जगह है, फिर भी लाइन लगी रहती है. यहां लुधियाना के लोग भी आते हैं. —कंवर संधू

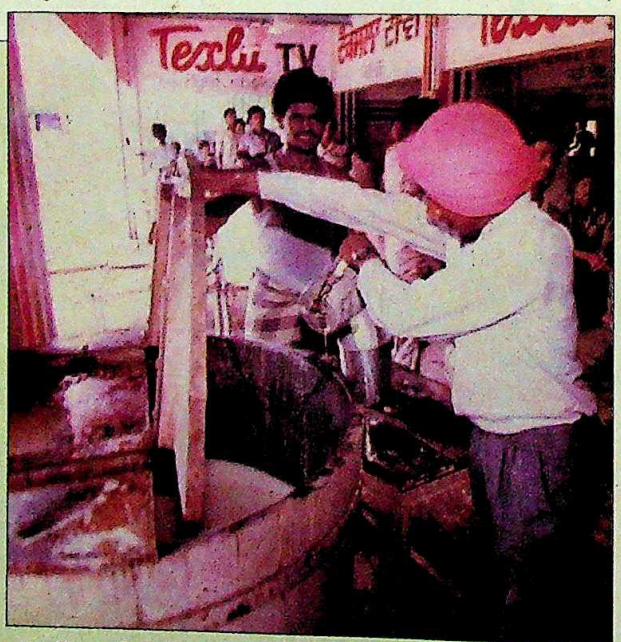

प्रमोद पुष्करणा

"लस्सी और मक्खन का प्रचलन बढ़ना शुभ परिवर्तन है. हमारे बच्चे भी अपने पसंदीदा नूडल्स की जगह अब उन्हें पसंद करने लगे हैं"

डॉ. महेश कुमार, *एक ग्राहक*

बताते हैं, "आज पंजाब गंवई और शहरी संस्कृतियों का विचित्र मिश्रण बन गया है. हमें दोनों तरह की जरूरतें पूरी करनी पड़ती हैं."

पंजाब के लिए जो सच है, वही बाकी देश के लिए भी सच है. यानी ढाबे अब गांव-शहर की मिश्रित संस्कृति के वाहक बनते जा रहे हैं. ढाबों में खाने वाले लोग बेहतर सुविधाओं के प्रति लालायित तो हैं पर वे वह पुराना ग्रामीण माहौल भी चाहते हैं. कई और मामलों में ये ढाबे अपना पुराना रंग-रूप बनाए हुए हैं. मसलन, तड़का दाल और मखनी चिकन अभी भी लोकप्रिय व्यंजन हैं. आज भी ढाबे चौबिसों घंटे चलते हैं. अभी भी इनमें पंजाबियों खासकर सिखों की ही भीड़ रहती है, और ये जी भरकर भोजन आज भी कुछ दस रुपयों में देते हैं.

यही वजह है कि ढाबे चलाने वाले अब लुभावने साइनबोर्ड, सुंदर साजसज्जा और वृक्षों पर रंग-बिरंगी बत्तियां तो लगा रहे हैं पर वे अपनी पुरानी पहचान, पुराने रंग-ढंग अभी नहीं बदल रहे हैं. महाराष्ट्र के एक ढाबे के मालिक शाम सिंह कहते हैं, "देखिए शहर में तो ढाबा खोला नहीं जा सकता. ढाबा तो राजमार्ग पर ही बन सकता है. दरअसल, वहीं उसका असली जादू उभरता है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

खोज ,फर्क का

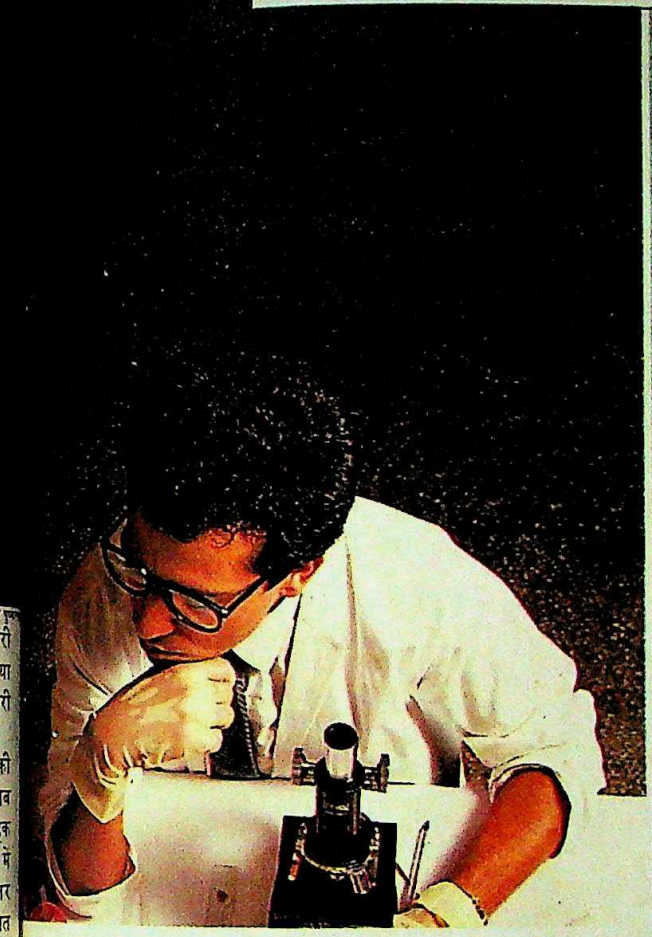

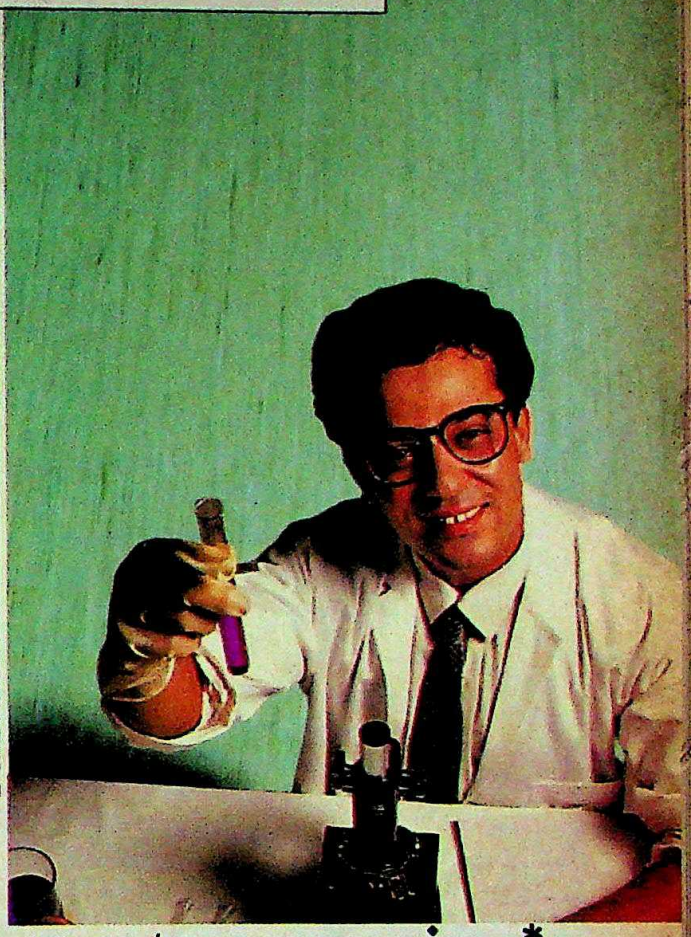

1360/-रुपए का अंतर*

फर्श चाहिए, जिससे कमरा साफ दिखे। पुख्ता और न टूटनेवाला।

बरसों तक लोगों की लगातार आवाजाही झेल सकने वाला, स्वस्थ और

खुशनुमा माहौल के लिये शोख रंगों वाला, न्यूनतम् जोड़ों के साथ

चंद घंटे में बिछाया जा सकने वाला बरसों साथ देने वाला,

जर्मन तक्नोलाजी से बना, ज़रा ढूँढिये तो इन तमाम खूबियों वाला फर्श!

WONDERFLOOR

VINYL FLOORING

वंडरफ्लोर । आज ही लीजिए।

और फर्क खुद आजमाइये।

टाइलों में भी उपलब्ध

*रु 123.50 प्रति वर्ग मीटर (रु. 11.50 प्रति वर्ग फुट)
इसमें एक्साइज़ ड्यूटी शामिल है। अन्य टैक्स और लगाने का खर्च अलग।

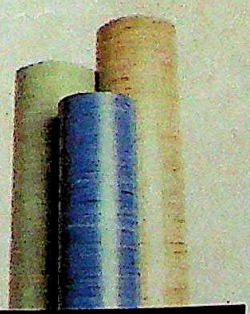

PREMIER VINYL
FLOORING LTD
IN TECHNICAL COLLABORATION WITH BERLAN GERMANY
EXCELLENCE THROUGH INNOVATION & QUALITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Sales Offices:
New Delhi: C-4, Commercial Centre, Safdarjung Dev. Area, Ph.: 6864190, 6851226, 661087. **Ahmedabad:** C/o Media, Opp. Sardar Patel Stadium, Navrangpura, Ph.: 443515, 440887
Bangalore: 190/1, 4th floor, Kota Shopping Complex, Brigade Rd., Ph.: 571178. **Bombay:** 328, Kaliandas Udyog Bhawan, Behind Century Bazar, Worli, Ph.: 4300289, 4228839.
Bhubaneshwar: C/o Cofoam Agencies, Unit III, 113 Station Square, Ph.: 408795. **Calcutta:** 3rd Floor, No. 3, Netaji Subhash Rd., Ph.: 281702, 281703. **Chandigarh:** H.No. 1074, Sector 19B,
Ph. 43462. **Cochin:** XL/1534, Devi Nivas, Shenoy Road, Kaloor, Ph. 346920, 346104. **Coimbatore:** 37, 5th Street, Shri Sai Baba Colony, Ph.: 36361, 36935. **Guwahati:** C/o Enkay Corporatio
Jain House, Opp. Goenka Automobiles, G.S. Road, Dispur, Ph.: 60989. **Hyderabad:** Emerald Complex, 3rd Floor, Sarojini Devi Road, Secunderabad, Ph.: 844804. **Lucknow:** 20, Rana Pratap
Marg, Ph. 234318. **Madras:** 62, A-7, Murali Anand Flats, Alamelumangapuram, Mylapore, Ph.: 6413272, 478479. **Patna:** Shiva Dham, Kadam Kuan, Nala Road, Ph.: 59342. **Pune:** C/o Jayesh
Bldg. 11/4, Karve Road, Ph.: 330540, 341999.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

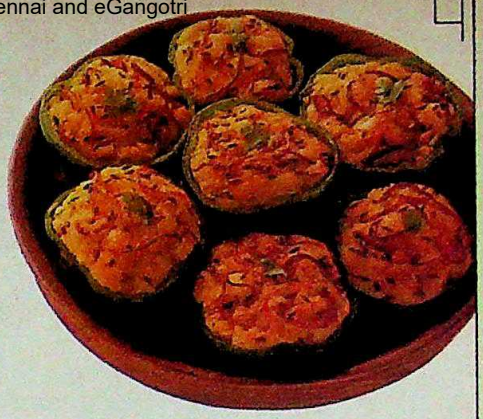

मेड इन जापान और मेड इन जर्मनी के बाद, अब है तैयारी स्वदेशी स्वाद की.

जी हाँ, न तो यह ब्रॉन है न ही मित्सुबिशी या नेशनल है. न तो यह बेक, ग्रिल, व्हीप या रोस्ट करती है, न ही यह दूसरे हाइ-टेक कार्य करती है. मिल्सेंट घरेलू आटा-चक्की तो घर पर पकाये खाने को बढ़िया प्रोटीनयुक्त ज़ायका देती है. ताज़ा, घर पर पिसा शुद्ध व स्वादिष्ट आटा और सुगंधयुक्त मसाले. सब घर पर तैयार पल भर में.

लेकिन घर पर बने ही क्यों? क्यों न बाज़ार में आटा पिसवा लिया जाए. और पैकेट बंद मसाले ले लिये जाएं.

पहले तो स्वाद. बाज़ार की आटा-चक्की में आटा पिसते हुए गर्म हो जाता है और अपना स्वाद खो देता है. या यह मिलावट वाला होता है. यही बात मसालों के साथ है. घर पर मिल्सेंट होने से आपको इनके शुद्ध व ताज़ा होने का तो विश्वास है, और स्वाद बेमिसाल.

आज ही अपने नज़दीकी मिल्सेंट डीलर से सम्पर्क करें. अब बढ़िया, स्वादिष्ट, घर पर तैयार खाना आप ही के इन्तज़ार में है.

क इंजीनियरिंग वर्क्स
उद्योगनगर, आनन्द 388 121, (गुजरात).

मिल्सेंट
घरेलू आटा चक्की

Mudra:A:MIL:5888 Hin.
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिकेट

फिर धूम-धड़ाके की तैयारियां

आगामी अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों के रोमांचक दौर में भारतीय क्रिकेट प्रेमियों को युवा और प्रतिभाशाली बल्लेबाजों से धनी भारतीय टीम से धाक जमाने की उम्मीद

—राज चेंगप्पा

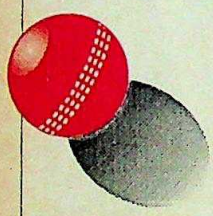

क्रिकेट के दीवानों के लिए अगले पांच महीने बेहद सनसनीखेज, धूम-धड़ाके के महीने होंगे. शारजाह की गरम रेत से इस खेल का बुखार जो चढ़ना शुरू होगा वह विश्व कप के बाद ही उतरेगा.

और इन पांच महीनों में कुल मिलाकर दो करोड़ रु. की पुरस्कार राशि का वारा-न्यारा हो जाएगा. यह राशि अपने आप में एक रिकॉर्ड ही है. इस बीच टेलीविजन प्रसारण के अधिकार, मैदान पर लगने वाले बोर्डों से लेकर खिलाड़ियों की जेबों पर छपने वाले 'लोगो' के ठेकों पर दस्तखत किए जा रहे हैं. इनसे तो यही लगता है कि इस दौरान विज्ञापनबाजी पर खर्च भी एक रिकॉर्ड ही होगा. सार यह कि तामझाम भारी-भरकम होगा और मजा लाजवाब.

क्रिकेट का सबसे बड़ा महोत्सव इसी हफ्ते शारजाह में शुरू हो रहा है जहां उपमहाद्वीप के सितारे जगमगाते दिखेंगे. और इन्हें देखने वालों में वे लोग शामिल होंगे जो स्क्वायर कट की बारीकियों से ज्यादा हीरों की किस्मों

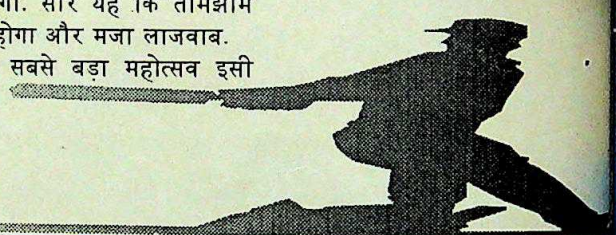

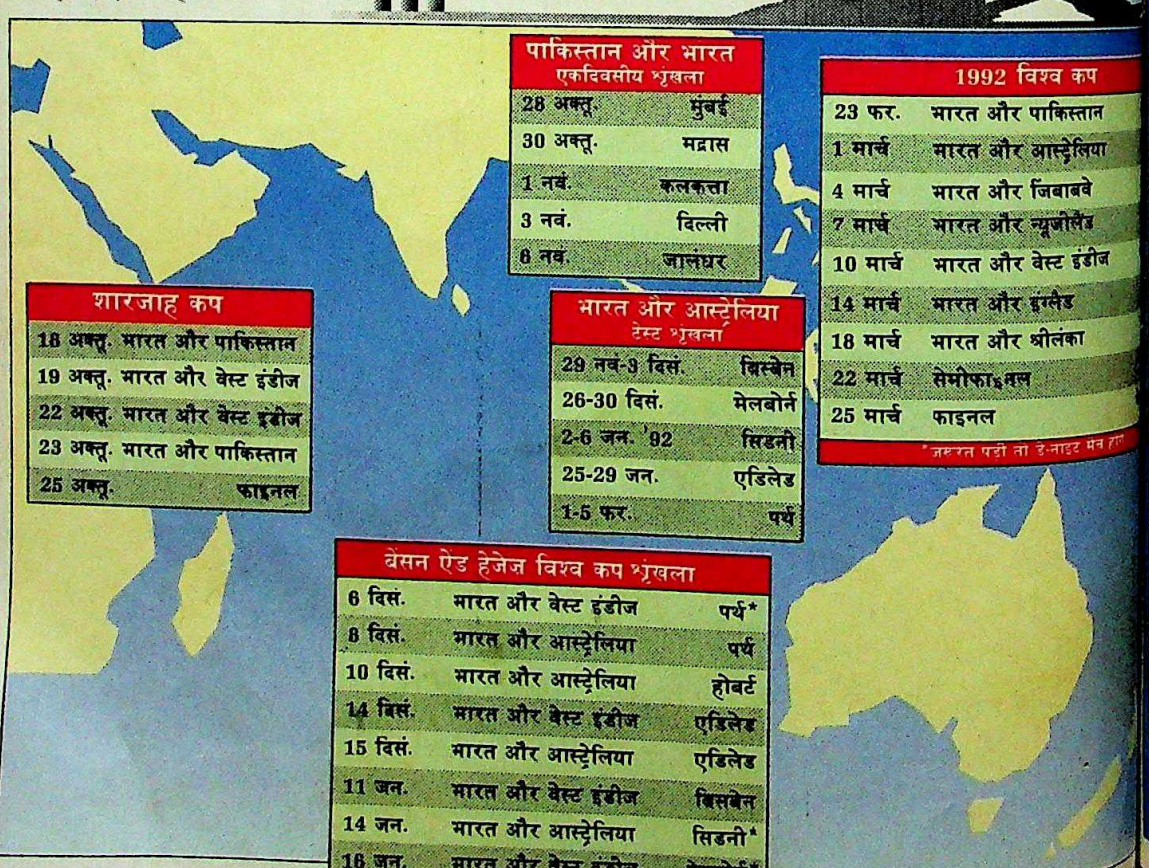

शारजाह कप

18 अक्तू.	भारत और पाकिस्तान
19 अक्तू.	भारत और वेस्ट इंडीज
22 अक्तू.	भारत और वेस्ट इंडीज
23 अक्तू.	भारत और पाकिस्तान
25 अक्तू.	फाइनल

पाकिस्तान और भारत
एकदिवसीय शृंखला

28 अक्तू.	मुंबई
30 अक्तू.	मद्रास
1 नवं.	कलकत्ता
3 नवं.	दिल्ली
6 नवं.	जालंधर

भारत और आस्ट्रेलिया
टेस्ट शृंखला

29 नवं-3 दिसं.	ब्रिस्बेन
26-30 दिसं.	मेलबोर्न
2-6 जन. '92	सिडनी
25-29 जन.	एडिलेड
1-5 फर.	पर्थ

1992 विश्व कप

23 फर.	भारत और पाकिस्तान
1 मार्च	भारत और आस्ट्रेलिया
4 मार्च	भारत और जिंबाबवे
7 मार्च	भारत और न्यूजीलैंड
10 मार्च	भारत और वेस्ट इंडीज
14 मार्च	भारत और इंग्लैंड
18 मार्च	भारत और श्रीलंका
22 मार्च	सेमीफाइनल
25 मार्च	फाइनल

*जरूरत पड़ी तो डे-नाइट मैच होंगे

बेंसन ऐंड हेजेज विश्व कप शृंखला

6 दिसं.	भारत और वेस्ट इंडीज	पर्थ*
8 दिसं.	भारत और आस्ट्रेलिया	पर्थ
10 दिसं.	भारत और आस्ट्रेलिया	होबर्ट
14 दिसं.	भारत और वेस्ट इंडीज	एडिलेड
15 दिसं.	भारत और आस्ट्रेलिया	एडिलेड
11 जन.	भारत और वेस्ट इंडीज	ब्रिसबेन
14 जन.	भारत और आस्ट्रेलिया	सिडनी*
16 जन.	भारत और वेस्ट इंडीज	मेलबोर्न*

*जरूरत पड़ी तो डे-नाइट मैच होंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय टीम बल्लेबाजी के लिहाज से इस समय विश्व की शायद सबसे मजबूत टीम है. प्रमुख बल्लेबाजों के काफी अच्छे फॉर्म में होने से आवश्यक रन जुटाने में विशेष कठिनाई नहीं होनी चाहिए

18 वर्षीय सचिन तेंडुलकर क्रिकेट की दुनिया में जगमगाते सितारे की तरह उभरे हैं

32 वर्षीय कपिल देव की गेंदबाजी की धार बरकरार है और वे धुआंधार बल्लेबाजी के लिए भी कमर कसे हुए हैं

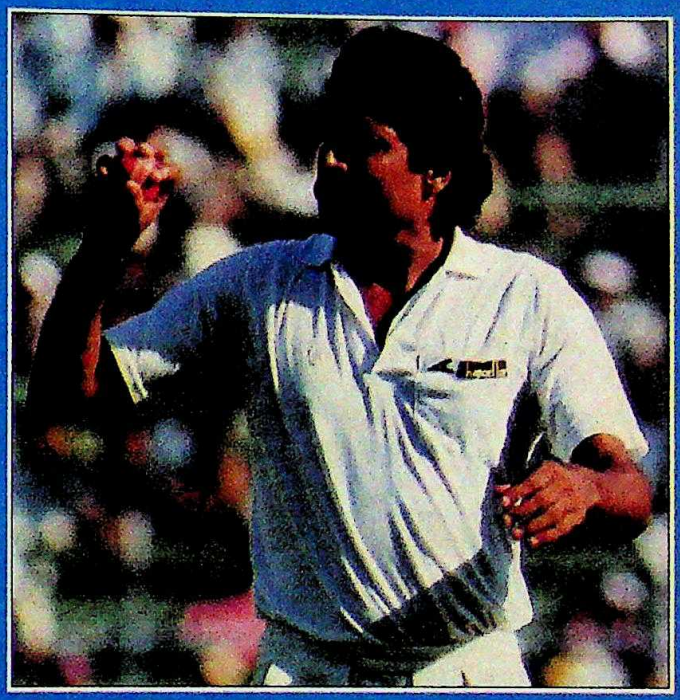

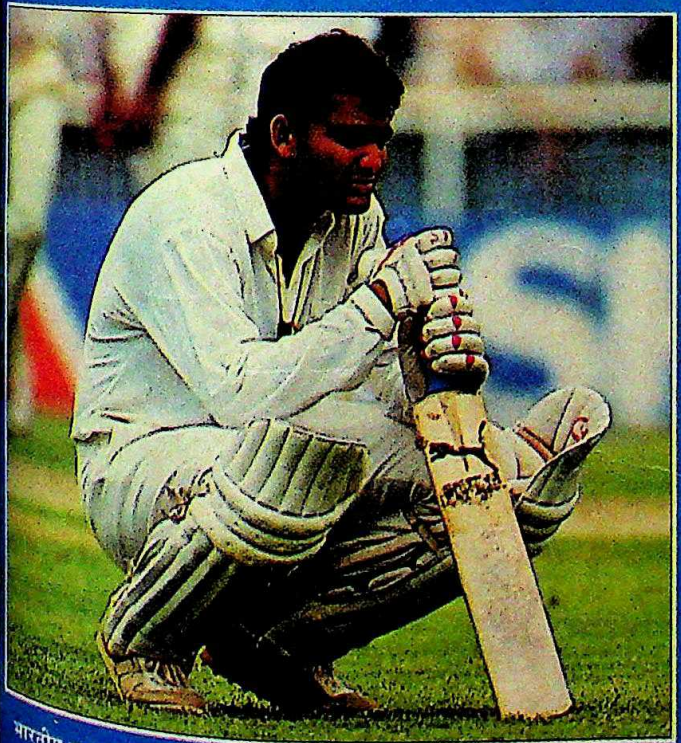

भारतीय कप्तान 28 वर्षीय मुहम्मद अजहरुद्दीन ने हाल के इंग्लैंड के काउंटी मैचों में अत्यंत सफल प्रदर्शन किया है

25 वर्षीय संजय मांजरेकर भारत के सर्वाधिक कुशल बल्लेबाजों में से हैं

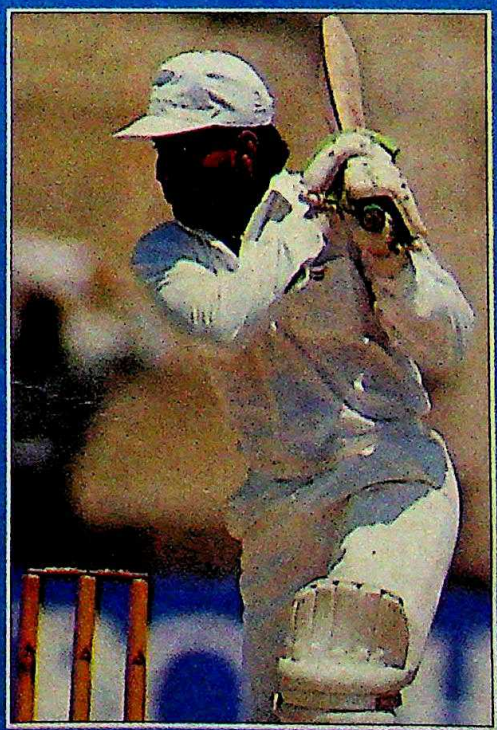

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमें कुछ अच्छे गेंदबाजों की सख्त जरूरत है जो विपक्षी बल्लेबाजों के विकेट चटका सकें. एकदिवसीय मैचों में भले ही ऐसे गेंदबाजों की जरूरत उतनी न हो पर टेस्ट मैचों के लिए तो ये निहायत जरूरी हैं"

— **अब्बास अली बेग,** *आस्ट्रेलियाई दौरे पर जाने वाली भारतीय टीम के मैनेजर*

बारे में ज्यादा जानते हैं. इन लोगों के सामने मैदान पर जंग छिड़ी होगी भारत, पाकिस्तान और वेस्ट इंडीज के बीच अपना-अपना रुतबा साबित करने की.

परंतु असली जंग तो इसके तुरंत बाद तब शुरू होगी, जब इस उपमहाद्वीप के दो पुराने प्रतिद्वंद्वी पांच एकदिवसीय मैचों की शृंखला में गुत्थमगुत्था होंगे. इसके बाद नवंबर के मध्य में भारतीय टीम आस्ट्रेलिया चली जाएगी. वहां वह पांच टेस्ट मैच तो खेलेगी ही, इनके बीच में बेंसन ऐंड हेजेज एकदिवसीय विश्व शृंखला में आस्ट्रेलिया और वेस्ट इंडीज से भी टक्कर लेगी.

आस्ट्रेलिया दौरे के लिए भारतीय टीम के मैनेजर अब्बास अली बेग मानते हैं कि "वास्तव में यह विश्व कप के लिए रियाज है." चार साल में एक बार होने वाला विश्व कप फरवरी में शुरू होगा जिसमें सात राष्ट्र विश्व विजेता के खिताब के लिए आस्ट्रेलिया की उछाल लेने वाली पिचों पर एक-दूसरे से टक्कर लेंगे.

पर इस विश्व कप से कई और चीजें भी होंगी. पिछले एक दशक से क्रिकेट की दुनिया पर छाए कई खिलाड़ी इसके बाद संन्यास लेने की स्थिति में होंगे. कीर्तिमानों की किताबों में बार-बार अपने नाम दर्ज कराने वाले इमरान खां, कपिल देव, डेसमंड हेंस, इयान बॉथम आगे विश्व कप में शायद नहीं खेल पाएंगे.

भारत के लिए भी क्रिकेट का यह दौर एक तरह का रिकॉर्ड होगा. इस दौर के 150 दिन खत्म होते-होते भारतीय टीम चार प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों के कुल 61 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैचों में से 25 मैच खेलेगी.

भारतीय टीम के कप्तान रह चुके 'टाइगर' पटौदी का कहना है कि एक-दिवसीय मैचों का यह खजाना इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि "लगभग सभी प्रमुख टीमें समान रूप से संतुलित हैं." आस्ट्रेलिया की टीम सबसे संतुलित है लेकिन अपराजेय नहीं. विवियन रिचर्ड्स, गॉर्डन ग्रीनिज और माल्कम मार्शल जैसे धुरंधरों के चले जाने के बाद वेस्ट इंडीज की टीम कुछ कमजोर हुई है पर उसके पास घातक तेज गेंदबाजों की कोई कमी नहीं. नए कप्तान रिचर्डसन की अगुआई वाली इस टीम को कम नहीं आंकना चाहिए.

बाकी टीमों का खेल कुछ पहेलीनुमा रहा है. फिलहाल तो इंग्लैंड ही सबसे ऊपर है क्योंकि हाल ही में उसने एकदिवसीय मैचों में वेस्ट इंडीज को परास्त किया है पर उसकी समस्या यह है कि अभी तक कोई सवा सेर नहीं मिला है. पाकिस्तान के पास हर तरह की प्रतिभा है पर इसके ज्यादातर धुरंधर खिलाड़ी बुढ़ाने लगे हैं.

इस सीजन के प्रति क्रिकेट के भारतीय दीवानों की दिलचस्पी इसलिए ज्यादा है कि इस समय भारतीय बल्लेबाजी का क्रम शायद दुनिया में सबसे मजबूत है. कुछ समय में पाकिस्तान की क्रिकेट चयन समिति के अध्यक्ष जावेद बर्की इसकी तारीफ में कह रहे हैं, "आपके बल्लेबाज तो बस लाजवाब हैं."

सुनील गावसकर की विदाई से खाली हुई जगह अभी भरी नहीं है पर भारत के पास अब चार सलामी बल्लेबाज हैं—रवि शास्त्री, नवजोत सिंह सिद्धू, डब्लू. वी. रामन और मनोज प्रभाकर. ये लड़खड़ा

दिल्ली के फिटनेस कैंप में भारतीय टीम के संभावित खिलाड़ी: बेमानी कसरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनौतियों के चेहरे

भारत की प्रतिद्वंद्वी बड़ी टीमें मजबूत मगर आस्ट्रेलिया के अलावा बाकी सभी कई अहम क्षेत्रों में समस्या से ग्रस्त

पाकिस्तान

खतरनाक खिलाड़ी

इमरान खां, कप्तान | वकार यूनुस, तेज गेंदबाज | सलीम मलिक, बल्लेबाज

मजबूत पक्ष
- कुल मिलाकर सभी तरह के खिलाड़ियों की अच्छी टीम.
- तेज गेंदबाजों की सटीक और घातक गेंदबाजी.
- मध्य क्रम में आक्रामक बल्लेबाज.

कमजोर पक्ष
- प्रमुख खिलाड़ी नाकाम रहे तो बल्लेबाजी में बिखराव.
- बढ़ती उम्र के कारण इमरान की गेंदबाजी पहले जैसी नहीं.
- कई खिलाड़ियों की फिटनेस पर संदेह.

आस्ट्रेलिया

खतरनाक खिलाड़ी

डीन जोंस, बल्लेबाज | एम. ह्यूज, तेज गेंदबाज | एलन बॉर्डर, कप्तान

मजबूत पक्ष
- ठोस और बेहद संतुलित टीम.
- चतुर और तेज कप्तान.
- प्रमुख खिलाड़ी पूरे फॉर्म में.
- नतीजे दिखाने वाले तेज गेंदबाज.

कमजोर पक्ष
- कुछ गेंदबाजों की फिटनेस पर संदेह.
- मध्यक्रम के बल्लेबाजों में आत्मविश्वास की थोड़ी कमी.

वेस्ट इंडीज

मजबूत पक्ष
- निरंतर अच्छी लाइन पर गेंदबाजी करने वाले अच्छे तेज गेंदबाज.
- प्रतिभावान युवा खिलाड़ियों की टीम.

कमजोर पक्ष
- प्रमुख खिलाड़ियों की विदाई से नुकसान.
- बल्लेबाजी में पहले जैसी मजबूती नहीं.
- अनुभवहीन और कच्चे खिलाड़ियों की टीम.
- टीम को फिर से संवारने में वर्षों लगेंगे.

खतरनाक खिलाड़ी

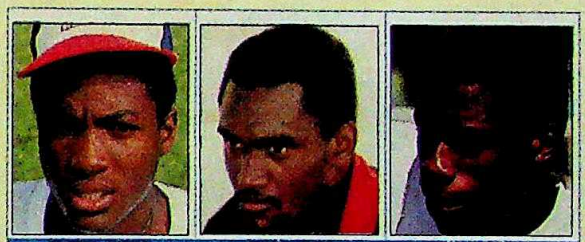

ब्रायन लारा, बल्लेबाज | कार्ल हूपर, ऑल राउंडर | सों. एब्रोज, तेज गेंदबाज

इंग्लैंड

मजबूत पक्ष
- कुल मिलाकर पूरी तरह दक्ष टीम.
- गूच और स्मिथ की बल्लेबाजी पूरे फॉर्म में.

कमजोर पक्ष
- उभरते खिलाड़ियों का कमजोर प्रदर्शन.
- विपक्षी टीम को आउट करने में अक्षम गेंदबाज.
- फील्डिंग कमजोर, फिटनेस की समस्या.
- टीम को संवारने में समय लगेगा.

खतरनाक खिलाड़ी

ग्राहम गूच, कप्तान | रॉबिन स्मिथ, बल्लेबाज | पी. डीफ्रिटस, तेज गेंदबाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लगभग सभी प्रमुख टीमों का स्तर अब एक जैसा ही है. किसी टीम को आसानी से परास्त कर पाना किसी के लिए संभव नहीं दिखता. इसलिए आगामी अंतरराष्ट्रीय मैच देखने लायक होंगे"

—मंसूर अली खां पटौदी, *भारतीय टीम के पूर्व कप्तान*

गए तो मध्य क्रम में मुहम्मद अजहरुद्दीन, संजय मांजरेकर व सचिन तेंडुलकर जैसे जोरदार खिलाड़ी हैं. और इन सबके ऊपर कपिल देव जैसे अदम्य खिलाड़ी हैं.

दरअसल, कप्तान अजहरुद्दीन के नेतृत्व में भारतीय टीम ने अच्छी साख भी बना ली है. हालांकि बदकिस्मती से वह इंग्लैंड से पिछली शृंखला 1-0 से हार गई थी पर आतिशी बल्लेबाजी के लिए इसने ख्याति बना ही ली है. टेक्साको में दोनों एकदिवसीय मैच और कप जीतकर इसने अंग्रेजों को भी हैरत में डाल दिया था.

क्रिकेट के ज्यादातर पंडित अब इस भारतीय टीम को बहुत मजबूत मानते हैं. वेस्ट इंडीज के टीम मैनेजर डेरिक मरे के अनुसार, "एकदिवसीय मैचों में हर कोई भारतीय टीम पर गहरी नजर रखेगा. इसमें अच्छे बल्लेबाज हैं और जोरदार क्षेत्ररक्षक भी. यह युवा भी है और चुस्त-दुरुस्त भी."

आस्ट्रेलियाई टीम को प्रशिक्षण दे रहे सिडनी के धुरंधर बॉब सिंपसन का कहना है कि "यहां लोग भारतीय टीम के दौरे का इंतजार कर रहे हैं. इसे मजबूत माना जा रहा है. और भारत तो हमारे खिलाफ अच्छा खेलता ही है."

पर कमजोर पक्ष है गेंदबाजी का. टीम में न तो वास्तव में तेज गेंदबाज हैं और न स्पिनर. कपिल बुढ़ा रहे हैं और उन जगह लेने वाला कोई नहीं दिख रहा प्रभाकर, चेतन शर्मा या नई खोज श्रीनाथ अपने बेहतरीन फॉर्म में हैं.

और तो और, भारत को आस्ट्रेलिया दौरा तो शायद ढंग के किसी स्पिनर बिना ही करना पड़ेगा. 80 के दशक उभरे मनिंदर सिंह, नरेंद्र हीरवाणी, शिवरामकृष्णन और अरशद अयूब चु खो चुके हैं. उनकी जगह लेने वाले अनि कुंबले और वेंकटपति राजू जैसे विक अभी पके नहीं हैं. भारतीय स्पिन का गुजरे जमाने की बात हो गया है.

अब्बास अली बेग को भी लगता है

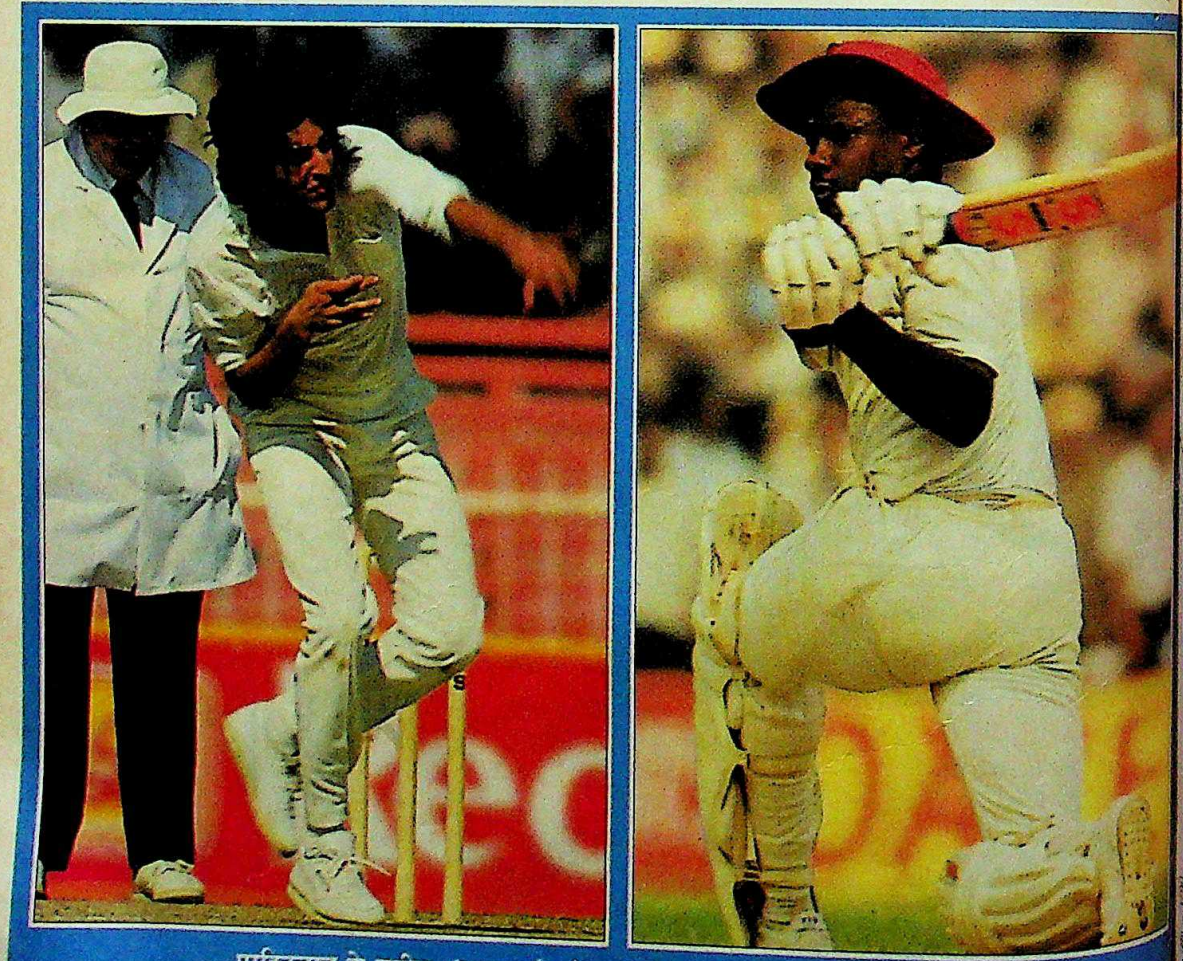

पाकिस्तान के वसीम अकरम और वेस्ट इंडीज के रिची रिचर्डसन: पूरे फॉर्म में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation C

रिलैक्सॉन... नये दिन के बढ़ते कदम

उमड़ती खुशियाँ ... प्यार भरी मुस्कान ... सुन्दर, मस्ती भरा जीवन ... क्योंकि साथ है रिलैक्सॉन।
रबराइज्ड कॉयर मैट्रेसों की दुनिया में पहला नाम—रिलैक्सॉन।
आकर्षणीय। आरामदायक। शरीर को दे मज़बूत सहारा।
मन को रखे स्वस्थ। रिलैक्सॉन। किफ़ायती दाम, ज़िन्दगी भर आराम। एक प्यार भरा सहारा, हर कदम—रिलैक्सॉन।

RILAXON

आपके आराम के लिए

मैट्रेस • कुशन • तकिया

श्री दिग्विजय सिमेन्ट कॉ. लि. कोयर और फेल्ट डिविजन
१४ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-७०० ००१

ISI 8391-1977

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारक गेंदबाजी का अभाव भारतीय टीम के प्रदर्शन को खराब कर सकता है. उनका कहना है, "हम ढेर सारा स्कोर खड़ा करने में तो कामयाब हो सकते हैं पर हमारे पास ऐसे गेंदबाज नहीं हैं जो प्रतिद्वंद्वी टीम को आउट कर सकें." एकदिवसीय मैचों में शायद गेंदबाजी महत्वपूर्ण नहीं होती पर टेस्ट मैचों में अगर भारतीय गेंदबाज अच्छे साबित नहीं हुए तो भारत शायद ही कोई मैच जीत पाए.

दो और बातें समस्या खड़ी कर सकती हैं. विकेटकीपर का फैसला अभी भी नहीं हुआ है. टीम में वापसी की सैयद किरमानी की कोशिश बेकार हो गई है. अब किरण मोरे और वैकल्पिक विकेटकीपर चंद्रकांत पंडित से काम चलाना होगा. दोनों पर भरोसा नहीं जमता.

फिर, टीम का क्षेत्ररक्षण भी संदेहास्पद है. कवर में अजहरुद्दीन, शॉर्ट लेग में मांजरेकर और गली में तेंडुलकर के रूप में बीच मैदान का क्षेत्ररक्षण तो मजबूत दिखता है. लेकिन रामन और सिद्धू जैसों में न तो उतनी तेजी है और न ही गेंद को सटीक निशाने पर थ्रो करने की वैसी प्रतिभा जो श्रीकांत और मदनलाल में थी. एकदिवसीय मैचों में यह कमजोरी कहर ढा सकती है.

वैसे, विश्व कप में अभी देरी है. इसलिए भारत इन खामियों को दूर करने की सोच सकता है. भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष माधवराव सिंधिया का कहना है, "अगला उत्तेजना भरा सीजन हमें नई प्रतिभाएं खोजने का अवसर देगा." शारजाह कप और पाकिस्तानी दौरे के लिए भारतीय टीम के मैनेजर अशोक मांकड मानते हैं कि भारतीय टीम को प्रशिक्षण और प्रयोग करने का मौका मिलेगा.

लेकिन भारतीय टीम का चुनाव जिस तरह से हुआ है, उससे नहीं लगता कि बोर्ड ने बहुत अच्छा काम किया. प्रतियोगिता से एक हफ्ते पहले टीम की घोषणा करने की जगह उसने नई दिल्ली में 22 खिलाड़ियों का एक चार दिवसीय फिटनेस शिविर लगाया. इससे भड़ककर पूर्व कप्तान अजित वाडेकर ने कहा, "माराडोना को भी चार दिन में फिट नहीं किया जा सकता." और चयनकर्ताओं ने पहेली को यह कहकर और भी उलझा दिया कि जो खिलाड़ी इस शिविर में नहीं लिए गए हैं उन्हें भी टीम में शामिल किया जा सकता है.

पटौदी को चयन प्रक्रिया में कई पेंच दिखाई देते हैं. 22 खिलाड़ियों की सूची कई नए नाम हैं. पर हैरत की बात दिलीप वेंगसरकर को न शामिल किया जाना. इस सीजन में घरेलू मैचों में वेंगसरकर का खेल अच्छा रहा था. चयनकर्ताओं ने उन्हें यह कहकर हटा दिया कि "वे टेस्ट मैचों के लिए ही बेहतर हैं."

टीम में नहीं शामिल किए जाने वाले दूसरे व्यक्ति हैं धमाकेदार सलामी बल्लेबाज के. श्रीकांत, जो दो साल पहले कप्तानी से हटने के बाद अब अच्छा नहीं खेल रहे. चयनकर्ताओं का कहना है कि उनका खेल हमेशा अच्छा नहीं होता. चयन समिति के अध्यक्ष नरेन तम्हाणे के अनुसार, "हमने युवा और अनुभवी खिलाड़ियों का संतुलित चयन किया है. और उनके प्रदर्शन, सेहत, प्रतिस्पर्धा में टिकने की क्षमता का खयाल रखा गया है. हमने यथासंभव बेहतर टीम चुनने की कोशिश की है."

एकदिवसीय मैचों की बहुतायत का उलटा असर टेस्ट मैचों पर पड़ सकता है. इन दो तरह के खेलों के अनुरूप अपने को ढालने में खिलाड़ियों को मुश्किल हो सकती है. वाडेकर का कहना है, "बहुत सारी प्रतियोगिताएं एक साथ ही होंगी. टेस्ट क्रिकेट और विश्व कप दोनों की चुनौतियों के लिए मानसिक रूप से तैयार होने में हमारे खिलाड़ियों को मुश्किल हो सकती है."

सिंधिया स्वीकार करते हैं कि बोर्ड को दिवालिया होने से बचाने के लिए पाकिस्तान के दौरे का कार्यक्रम बीच में घुसाना पड़ा. पिछले साल क्रिकेट बहुत कम खेला गया इसलिए बोर्ड एक करोड़ रु. के घाटे में चल रहा है. इसकी हालत इतनी खराब हो गई है कि खिलाड़ियों के लिए अलग से कोष बनाने की बात होने लगी है. पाकिस्तानी दौरे से उसे 30 लाख रु. का अतिरिक्त राजस्व मिल जाएगा और घाटा लगभग शून्य पर पहुंच जाएगा.

पर समस्या सिर्फ भारतीय टीम के साथ ही नहीं है. हरफनमौला मानी जाने वाली पाकिस्तानी टीम भी समस्याओं से ग्रस्त है. इमरान और जावेद मियांदाद जैसे प्रमुख खिलाड़ियों का जमाना अब लद रहा है. वर्तमान टीम अब सलीम मलिक, रमीज राजा और एजाज अहमद पर ही ज्यादा निर्भर है. ये अगर अच्छी बल्लेबाजी करें तो गेंदबाजों की तरफ से किसी भी आक्रमण को धज्जियां उड़ा सकते हैं.

लेकिन तेज गेंदबाजी के मामले में पाकिस्तान अभी भी सबसे ऊपर है. इमरान के ही स्तर के वकार यूनुस आज दुनिया के सबसे घातक गेंदबाज हैं. वसीम अकरम भी

अजहरुद्दीन

'जीतना आसान नहीं'

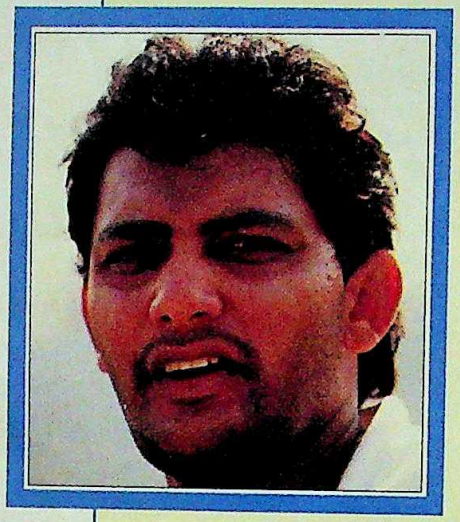

भारतीय कप्तान, 28 वर्षीय मुहम्मद अजहरुद्दीन से एसोसिएट एडीटर ***राज चेंगप्पा*** *की बातचीत के कुछ अंश:*

- ***आने वाला सीजन:***

बहुत कठिन होगा और लंबा चलेगा. हमारे लिए जीतना आसान नहीं.

- ***टीम का जायजा:***

हमारी बल्लेबाजी बेहतर है. लेकिन समय के साथ हमें अच्छे, खासकर तेज गेंदबाज भी मिलेंगे. फिलहाल मुझे नहीं लगता कि गेंदबाजी में हमें कोई बड़ी समस्या होने वाली है.

- ***भारतीय क्षेत्ररक्षण:***

हमारी फील्डिंग में काफी सुधार हुआ है. हमारे लड़के इसमें खूब तेज हैं और एकदिवसीय मैचों में तो फील्डिंग का बहुत महत्व होता है. इसलिए हमें इसका फायदा होगा.

- ***प्रतिद्वंद्वी टीमें:***

मजबूती के हिसाब से पहला स्थान आस्ट्रेलिया का है. उसके बाद पाकिस्तान, वेस्ट इंडीज और फिर इंग्लैंड का नाम आता है. अपनी जमीन पर खेलने के कारण आस्ट्रेलिया की टीम का हाथ ऊपर रहेगा. पर एकदिवसीय मैचों में तो कोई भी पक्ष जीत सकता है.

- ***अपना प्रदर्शन:***

अब तो मैं ठीक खेल रहा हूं. अपने खेल से मैं संतुष्ट हूं.

- ***कप्तानी:***

मुझ पर इसका कोई दबाव नहीं पड़ा है. कम-से-कम मैं तो यही सोचता हूं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Park Avenue
by RAYMONDS

Style. For every moment of your life.

Park Avenue presents The Trouser Collection. Adorn them with Park Avenue leather belts. Available in black, brown, tan and grey. Fitted with stylish buckles. You can also pick up a Park Avenue leather wallet on your way out.

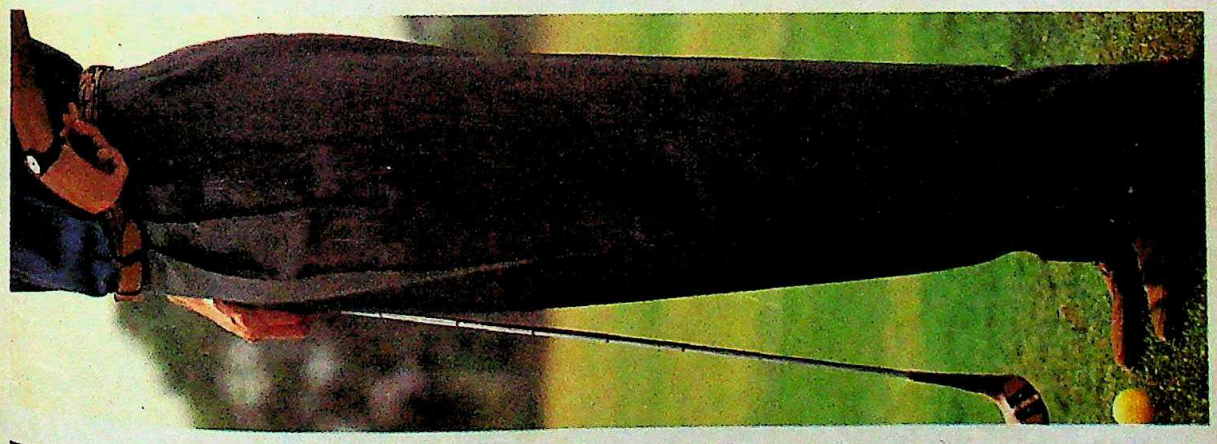

LINTAS PA 181 2416

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लोग भारतीय टीम के आस्ट्रेलिया दौरे का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. भारतीय यहां लोकप्रिय रहे हैं और उन्हें तगड़ी टक्कर देने वाला माना जा है. वैसे भी हमारे खिलाफ वे हमेशा ही अच्छा खेलते हैं"

—बॉब सिंपसन, *आस्ट्रेलियाई कोच*

इतने ही खतरनाक हो सकते हैं. उनकी गेंदबाजी में गहराई भी है. पहला बदलाव अकीब जावेद के रूप में होगा. इमरान रिजर्व में रहेंगे. चयनकर्ताओं के मुखिया बर्की का कहना है कि "हमारी बल्लेबाजी कमजोर है. पर हम इसकी कमी गेंदबाजी से पूरा करेंगे. इतना होने पर भी हमें बहुत उम्मीद नहीं है."

हालांकि शारजाह कप के लिए पाकिस्तानी टीम को ही सबसे तगड़ा दावेदार माना जा रहा है. दर्शकों से उसे भरपूर समर्थन तो मिलेगा ही शारजाह की धीमी विकेट पर उसके गेंदबाज सबसे ज्यादा कामयाब भी रहेंगे. और जैसा कि बर्की ने बताया कि पाकिस्तान ने 'जीतने की आदत' जैसी विकसित कर ली है इसलिए इसे हरा पाना बहुत मुश्किल है. वे कहते हैं, "औसत के हिसाब से तो भारत की जीत ही होनी चाहिए, पर मैं अभी भी पाकि पर दांव लगाऊंगा."

जिस टीम पर कोई भी दांव नहीं चाहेगा वह है वेस्ट इंडीज के खिलाड़ियों की प्रतिभाशाली टीम. रिचर्ड मार्शल और हेंस जैसे धुरंधरों की विदा बाद टीम मैनेजर मरे कहते हैं, "उ जगह को रातोरात भरना तो मुश्कि

छक्के छुड़ा देने वाले छह

—शेखर गुप्ता

आगामी रोमांचक क्रिकेट सीजन में जो छह भारतीय खिलाड़ी खबरों में होंगे, उनका जायजा कुछ इस तरह लिया जा सकता है.

कपिल देव को ही लें. वेस्ट इंडीज वाले कहा करते थे कि अगर गिब्स नहीं, तो सोबर्स तो प्रतिद्वंद्वी टीम के दांत खट्टे कर ही देंगे. इसी तर्ज पर कहा जा सकता है कि कपिल की गेंद से बच गए तो बच गए, बल्ले से तो नहीं बच पाओगे.

पाकिस्तानी गेंदबाज सरफराज़ नवाज़ ने एक दफा मुझसे कपिल की वंशावली का जिक्र किया था. सरफराज़ का कहना था कि कपिल के पूर्वज साहिवाल (पाकिस्तान) के रहने वाले थे. यह जगह सांडों के लिए मशहूर रही है. सरफराज की चुटकी थी कि, "वहां से ज्यादा बुलंद सांड और कहीं नहीं होते." 32 की उम्र में उनकी नजरें अब रिचर्ड हेडली के 431 टेस्ट विकेटों का रिकॉर्ड तोड़ने पर होंगी.

इस बड़ी उम्र में दमखम नौजवानों-सा

रवि शास्त्री के खेल जीवन की त्रासदी यह है कि वह शाबाशियों से ज्यादा सवालों के दायरे में रही है. वे दाएं हाथ से बल्लेबाजी करते हैं और बाएं हाथ से स्पिन गेंदें फेंकते हैं. शास्त्री की समस्या महिलाओं को लेकर रही है. अमृता सिंह और माधुरी दीक्षित जैसी फिल्मी हस्तियों व टेनिस खिलाड़ी गेब्रिएला सबातिनी के साथ भी उनके किस्से मशहूर रहे हैं. शास्त्री ने एक बार बिफरकर मुझसे कहा था कि, "इस तरह की खबरों का मैं क्या करूं?" शास्त्री अब शादीशुदा हैं और इस बात से बखूबी परिचित हैं कि आगामी सीजन या तो खेल से उनकी विदाई कराएगा या फिर वे कप्तान पद की दावेदारी में अव्वल होंगे. 6 फुट 3 इंच लंबे शास्त्री ने यह सपना 17 वर्ष की उम्र में ही देखा था, पर उसे गावसकर भक्त कहकर नकार दिया गया था.

अपनी छवि से निजात पाना होगा

भारतीय क्रिकेट की मराठा रेजीमेंट के नए रंगरूट हैं सचिन तेंडुलकर. उन जैसी प्रतिभा को ही किसी गेंदबाज की सराहना मिल सकती है कि—"ये छोकरे को देखना तुम. ये ऐसा वैसा बल्लेबाज नहीं बनेगा. गावसकर या जेड (जहीर अब्बास) जैसा. इससे गेंदबाज भागेंगे." यह कहने वाले गेंदबाज थे अब्दुल कादिर जिनके एक ओवर में सचिन ने चार छक्के लगाए थे. मात्र 18 वर्ष की उम्र में सचिन ऊंचा वेतन,

'छोकरे' को गेंद का जार भी कर लेना चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...के लिए हमें काफी मेहनत करनी होगी.'' ...कि कप्तानी के लिए हेंस एक सहज ...द होने पर चयनकर्ताओं ने नौजवान ...र्डसन को आजमाना ही बेहतर समझा. ...टीम में युवा खिलाड़ियों की एक अच्छी ...ात है जिसमें ब्रायन लारा जैसे धाकड़ ...लेबाज हैं. लंबी गैर-मौजूदगी के बाद ...न सिमंस लौट आए हैं. और गेंदबाजों में ...ान विशप की पीठ की चोट पूरी तरह ...क हो गई है. बारबडोस के गेंदबाज ...शिंगयुक्त एंडी कमिंस में भी काफी ...भावनाएं हैं. पर टीम को पुराना रुतबा ...पस करने में कुछ वक्त लगेगा.

इंग्लैंड की प्रतिभाशाली टीम में भी कई ...मस्याएं हैं. कप्तान ग्राहम गूच अपराजेय ...हैं तो रॉबिन स्मिथ काफी मजबूत. ...लेबाजी का क्रम फिर भी संदेहास्पद है. ...हिक और माइक एथॉर्टन के कुछ अच्छे ...कॉर्ड डिस्क के नायाब संग्रह, ढेर सारे रुपए ...और रन बटोर चुके हैं. मगर बहुत ही सौम्य ...स्वभाव है उनका. मैंने एक बार उन्हें ...सियालकोट में वसीम अकरम से यह कहते ...सुना था कि, "आपको कोई कैसे मारेगा. ...आप तो इतनी अच्छी बॉलिंग करते हैं." ...आगे उनका खेल इस पर निर्भर करेगा कि वे ...सुनील गावसकर के इस सुझाव को कितनी ...गंभीरता से लेते हैं कि "गेंद के पीछे मत ...भागो. उसे आने दो."

किरण 'जॉकी' मोरे के भविष्य पर खतरे ...के बादल मंडरा रहे हैं. पर वे अकेले दोषी ...नहीं. भारतीय गेंदबाजी के कारण दुनिया के ...किसी भी विकेटकीपर के मुकाबले किरण ...मोरे को दोगुने समय तक विकेट के पीछे झुके रहना पड़ता है.

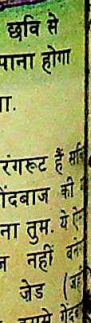

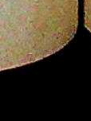

एकदिवसीय मिजाज रखना जरूरी

प्रदर्शनों के बावजूद उनमें स्थिरता नहीं है. टीम की सबसे बड़ी समस्या है गेंदबाजी. हाल की शृंखला में इयान बाथम को वापस बुलाना पड़ा था जिससे कुछ फर्क भी पड़ा था. टीम मैनेजर मिकी स्टेवर्ट के शब्दों में, "हम टीम को पुनर्गठित करने की कोशिश कर रहे हैं."

पर आस्ट्रेलियाई यह काम पहले ही कर चुके हैं. पिछले कुछ साल में कुछ अच्छे खिलाड़ियों की नाकामियों के बावजूद वे अभी भी उन्हें टीम में रखे हुए हैं. कप्तान एलन बॉर्डर चतुराई से इसकी कप्तानी संभाले हुए हैं. बल्लेबाजी के क्रम में डीन जोंस, डेविड बून और ज्योफ मार्श बेहतरीन हैं. ब्रूस रोड चुस्त-दुरुस्त हैं, रेक मैक्डरमॉट की मारक क्षमता बनी हुई है, और मर्व ह्यूज हमेशा की तरह ही धारदार हैं. सारे आस्ट्रेलियाई गेंदबाज अपने पूरे फॉर्म में हैं. सिपसन के शब्दों में, "हम ज्यादा मजबूत होंगे." और घरेलू मैदान पर आस्ट्रेलिया को हराना टेढ़ी खीर साबित होगा.

पर यह सब तो कागजी जोड़-घटाव है. खेल शुरू होने पर यह कहना मुश्किल होगा कि कौन जीतेगा. एकदिवसीय मैचों के लिए काफी चुस्ती-फुर्ती की जरूरत होती है. इतनी कि जरा-सी चूक से बल्लेबाज मैच गंवा सकता है. एक करिश्माई कैच या रन आउट या जोखिम भरा स्ट्रोक बाजी पलट दे सकता है. जाहिर है ऐसे मुकाबले दिल की धड़कनें बढ़ा देते हैं, रोमांच पैदा कर देते हैं. अगले पांच महीने बस इन्हीं सबके लिए तैयार रहिए. ■

जॉकी के कई प्रतिद्वंद्वी, कई समस्याएं

को उनका बल्ला बड़ी बेरहमी से अपना निशाना बनाता है—पर स्लिप में कैच की नौबत शायद ही कभी आती है. शास्त्रीय पद्धति से खेलने वाले संजय किसी से अपनी तुलना पसंद नहीं करते, यहां तक कि अपने प्रसिद्ध पिता विजय से भी नहीं. उनका कहना है कि वे किसी की नकल नहीं हैं. संजय टेस्ट मैचों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त खिलाड़ी हैं, पर वे एकदिवसीय मैचों में भी जौहर दिखाने की चाह रखते हैं. वैसे उन्हें तेज-तेज दौड़कर एक-एक रन बटोरने की कला में महारत पानी होगी.

कपिल की तरह ही अजहरुद्दीन भी शराब, तंबाकू, औरतों की संगति और मैदान में बचाव का रास्ते ढूंढ़ने से दूर रहते हैं. कुछ लोग उनकी तुलना गुडप्पा विश्वनाथ से करते हैं. अजहर की कलाई भी जादू की तरह पलक झपकते ही रन बटोरना जानती हैं. कुछ आलोचक अजहर के खेल में ज़हीर अब्बास की झलक भी देखते हैं. उनका कवर ड्राइव खास तौर पर चर्चित रहता है. लेकिन उनकी मौलिकता बनी रहती है. स्क्वायर ड्राइव की उनकी मुद्रा बेहद आकर्षक होती है जिस पर प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी भी ताली बजाने लगता है. मगर उस खिलाड़ी की मुसीबत अजहर तुरंत तब बढ़ा देते हैं जब वे गेंद को पैड पर लेकर खास अंदाज में स्वीप मार बैठते हैं.

कभी धूम-धड़ाका तो कभी मंदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Only the Ver

1992 INDIA TODAY DIARIES

COMPANION
Code: 102

POCKET DIARY
Code : 104

SLIMLINE DIARY
Code : 103

The 1992 India Today Diary set expresses an elegance associated with people who demand the very best. Attractively produced, each diary is characterised by gold leaf embossing, gilt edged pages and handy ribbon markers.* Adding style to substance – an excellence that comes with a distinct personality.

*** Except for Pocket Diary.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

est for you

ia Today
rbook 1992

effective time manager, the
a Today Yearbook is much
e than just a desk diary. It is a
fully selected compendium of
rmation compiled in sections.
diary section is laid out in an
-to-read format.

mpanion

new Companion diary is
ect for either carrying in your
fcase or for use as a desk
y. It has Airline Maps, City
les, Indian Missions abroad,
STD Codes, International
e ... and more.

YEAR
Code

mline and Pocket Diaries

mpact and convenient, these
ies are designed to carry all
information you need on your

e your selection and send in your order today.

person. Its pages are packed with important features, including sections on hotels and essential ISD/STD codes.

Personalise these elegant diaries

Whether you order the diaries as a set or as singles. For yourself or as a gift for someone, personalise them with gold leaf embossing of upto three initials or company logo at a nominal charge.

The richness of leather. Discover its elegance. Limited Edition Premium Diaries

The 1992 India Today Diary set also comes in premium rich brown leather. Each diary is meticulously hand crafted and impeccably finished. A handsome leather book-mark accompanies the Yearbook.

POCKET DIARY
Code : 204

COMPANION
Code : 201

YEAR BOOK
Code : 201

SLIMLINE DIARY
Code : 203

ORDER FORM 1992

Sr. No.	Product Details	Size	Price (Rs)	Quantity Ordered	Total Amount (Rs)
01	India Today Yearbook 1992 (Regular)	20.9 x 27.9 cm	295	.....	.....
02	India Today Companion (Regular)	12.7 x 19.1 cm	150	.....	.....
03	India Today Slimline Diary (Regular)	8.2 x 17.1 cm	75	.....	.....
04	India Today Pocket Diary (Regular)	7.6 x 12.0 cm	49	.....	.....
01	India Today Yearbook 1992 (Leather)	20.9 x 27.9 cm	550	.....	.....
02	India Today Companion (Leather)	12.7 x 19.1 cm	270	.....	.....
03	India Today Slimline Diary (Leather)	8.2 x 17.1 cm	165	.....	.....
04	India Today Pocket Diary (Leather)	7.6 x 12.0 cm	115	.....	.....

otal

ges for gold embossing of initials @ Rs. 10/- per diary (maximum three initials) — Rs .....
mpany logo embossing (not exceeding 6 Sq. Cms.) @ Rs. 10/- per diary — Rs .....
dd Rs. 15 for non Delhi cheques. — Rs .....
d Total — Rs .....
Rs .....

closed is my crossed Cheque/DD No ..... dated ..... for Rs. ..... (add Rs. 15 for non Delhi
yment payable to Living Media India Ltd.

me : .....
dress : .....
.....
..... Pin .....

tributors interested in dealership, please write to Living Media India Ltd.

An ideal gift for the New Year

Please note :

- Cheques/drafts payable at Bombay, Madras, Calcutta and Delhi must be MICR only.
- Diaries will be home delivered by Registered Post/ Courier. Please allow 6-8 weeks lead-time towards processing.
- For gift instructions, please give recipient's name and address alongwith details for embossing initials on a separate sheet.
- Minimum order for gold embossing company logo is 25 diaries. Logo artwork or positive to be supplied.
- If the order form has been used, mail your order alongwith remittance to Living Media India Ltd.
- **Offer and rates valid in India only.**

Remittance should be drawn in favour of Living Media India Ltd. and mailed alongwith your name, address and the completed order form to Living Media India Ltd., P B No. 29, New Delhi 110 001.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देसी शराब

थैलीबंद सुरूर

पीने वालों का बदलता अंदाज

अप्सरा, मस्ती, दिलरुबा, दिलदार, गुलाब—इसके एक नहीं, अनेक नाम हैं. उत्तर प्रदेश के विभिन्न इलाकों में अलग-अलग ब्रांड नाम से छोटी थैलियों (पाउच) में बिकती इस देसी शराब ने सुरूर चाहने वालों के पीने का अंदाज ही बदल डाला है. शराब और बोतल का साथ मानो अब छूटने लगा है. दो सौ मिलीलिटर की थैली में स्ट्रा लगाकर चाहे तो इसकी चुस्कियां लीजिए या परंपरागत तरीके से गिलास में डालकर पी जाइए. और बड़ी बात यह कि इसे आसानी से जेब में डालकर कहीं भी ले जाया जा सकता है.

इसके चलते अब देसी शराब के ठेकों पर बोतलें अंटी में खोंसकर निकलते व्यक्तियों की संख्या पहले जितनी नहीं रह गई है. थैलीबंद शराब की बिक्री से मानो एक अलग तरह की 'थैली संस्कृति' उभरने लगी है. कबाड़ियों को भी अब बोतलों के लाले पड़ने लगे हैं.

मसालेदार शराब को दूध की तरह ही पोलीथिन की थैलियों में बेचने का सिलसिला राज्य में करीब तीन साल पहले शुरू हुआ. इससे न सिर्फ देसी शराब की ढुलाई में आसानी हो गई बल्कि ठेकों की बिक्री भी बढ़ गई. गाजियाबाद जिला आबकारी कार्यालय के एक अधिकारी ने कहा भी, "अब करीब 25-30 फीसदी देसी शराब थैलियों में बिकने लगी है." इससे शराब की कुल बिक्री भी बढ़ी है.

देसी शराब के ठेकों पर जुटती भीड़ इसी ओर संकेत करती है. गाजियाबाद में ही घंटाघर के ठेके पर शाम ढलने के बाद तीन-चार घंटे तक करीब 150-200 लोगों की भीड़ हरदम लगी रहती है. यहां जाम से जाम तो टकराते ही हैं, थैली से थैली टकराने का प्रचलन भी बढ़ रहा है. दिल्ली की सीमा पर स्थित महाराजपुर के ठेके पर तो यह क्रम दिन में ही शुरू हो जाता है और आधी रात तक सैकड़ों थैलियां बिक चुकी होती हैं. इस ठेके के युवा प्रबंधक राजेंद्र कुमार कहते हैं, "थैलीबंद शराब का प्रचलन दिनोदिन बढ़ रहा है. हम तो रोजाना 500 से अधिक थैलियां बेच लेते हैं." नोएडा के सेक्टर 15 में नया बांस के ठेके पर भी यही हालत है.

मोदीनगर, मेरठ, सिंभावली, बाजपुर, नवाबगंज सरीखे अनेक डिस्टिलरियां में थैलियों में भरी जाती यह शराब (12 रु. से 14 रु. प्रति 200 मिलीलिटर थैली) गरीब और मध्यम वर्ग के नशे के शौकीन उन नौजवानों में लोकप्रिय है जो पूरी बोतल (करीब 48 रु.) खरीदने में असमर्थ हैं. घंटाघर के ठेके में सेल्समैन बलबीर कुमार कहते भी हैं, "कम दाम और आसानी से जेब में डालकर ले जाने लायक होने के कारण बहुत-से लड़के इसे ही खरीदते हैं."

थैली वाली और बोतलबंद देशी शराब दोनों की एक जैसी डिग्री होने के बावजूद हालांकि उनमें बहुत फर्क नहीं दिखता पर कई लोग थैली वाली क्वालिटी को ही बढ़िया मानते हैं. गाजियाबाद में हिम साइकिल फैक्टरी में कैंटीन मालिक, दिल्ली निवासी, 30 वर्षीय राजेश कुमार का कहना है, "मुझे तो पाउच में भरी 'अप्सरा' ही भाती है. बोतल वाली के मुकाबले यह अधिक सुरूर देती है."

पर हर कोई राजेश की राय से सहमत नहीं है. 32 वर्षीय कैलाश शर्मा कई साल से देसी शराब का सेवन करते आ रहे हैं. सामने मेज पर बोतल और एक हाथ में गिलास तथा दूसरे से सलाद का टुकड़ा मुंह में डालते हुए वे कहते हैं, "अजी! थैली तो पैसे कम होने पर मजबूरी में ही पसंद आती है. वरना इसकी दारू में ज्यादा बदबू होती है और फिर इससे पेट की शिकायत भी होने लगती है." उनकी बात में कुछ कदर वजन भी हो सकता है. वजह: पोलीथिन थैली की एक बड़ी खामी यह है कि अगर यह निम्नस्तरीय हो तो इसके कुछ रासायनिक तत्व इसमें पड़ी सामग्री में घुलमिल जाते हैं.

इसके बावजूद थैलीबंद शराब का प्रचलन दूरदराज तक के इलाकों में बढ़ा है. नैनीताल जिले के रामनगर और काशीपुर सरीखे कस्बों और इनके आसपास के गांवों में भी इसके अनेक खरीदार हो गए हैं. काशीपुर के पास एक फार्महाउस चला रहे 40 वर्षीय बलजीत सिंह कहते हैं, "शुरू में हम थैली वाली शराब के प्रति आशंकित थे पर अब इसके आदी हो चले हैं. एक तो यह आसानी

से ले जाने लायक है और दूसरे इसमें मिलावट का खतरा नहीं है." नोएडा निवासी और फरीदाबाद की एक फैक्टरी में काम कर रहे 35 वर्षीय जयंत भी उनकी इस बात से सहमत हैं.

जाहिर है, प्लास्टिक क्रांति देसी शराब की पैकिंग को भी प्रभावित करके पीने वालों की शैली में बदलाव ला रही है. पर काबिलेगौर है कि अंग्रेजी शराब उद्योग ने इस ओर रुख नहीं किया है. —ओम सप्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटाखा उद्योग

पूरब में भी पौ-बारह

कलकत्ता के आसपास के कुछ गांव भी इस उद्योग के मामले में छुपे रुस्तम साबित हो रहे

—सौमित्र विश्वास

पटाखा उद्योग यानी शिवकाशी. दक्षिणी तमिलनाडु का यह शहर काफी लंबे समय से भारत भर में बेचे जाने वाले उम्दा पटाखों का पर्याय बना हुआ है.

कलकत्ता के आसपास के कुछ गांव भी इसी तरह के उद्योग में लगभग उतने ही समय से लगे हुए हैं लेकिन इसके बारे में लोगों को ज्यादा जानकारी नहीं है. सालाना लगभग 10 करोड़ रु. के कारोबार वाला यह उद्योग करीब 2,000 गरीब परिवारों को रोजगार मुहैया कराता है. ये परिवार फसल का मौसम न होने पर पटाखे बनाने का काम करते हैं. कलकत्ता से 25 किमी दक्षिण में स्थित बलरामपुर गांव के हिंदुस्तान फायर वर्क्स लिमिटेड में माझीदार, 30 वर्षीय प्रियलाल दास कहते हैं, "शिवकाशी की तरह हमारे पास मनोहारी पटाखे बनाने वाले दक्ष कारीगर नहीं हैं. फिर भी हमारा माल उनसे उन्नीस तो कतई नहीं है."

यह व्यवसाय मुख्य रूप से दक्षिण 24 परगना जिले के बजबज-महेशतल्ला इलाके में केंद्रित है. बलरामपुर इसी क्षेत्र में पड़ता है. यहां राज्य की 29 पंजीकृत फैक्टरियों में से 18 फैक्टरियां स्थित हैं. बाकी हुगली, हावड़ा और नदिया जिलों में हैं. यह व्यवसाय कुटीर उद्योग जैसा है और कलकत्ता के थोक विक्रेता या स्थानीय फैक्टरी मालिक ठेके पर काम करवाते हैं.

इस क्षेत्र में यह उद्योग लगभग 100 साल पुराना है. इसकी शुरुआत बंगाल के जमींदारों ने की. उनमें से ज्यादातर त्यौहारों, खासकर काली पूजा में इस्तेमाल के लिए घर पर पटाखे बनवाया करते थे. जमींदारों के साथ धीरे-धीरे यह प्रथा भी खत्म हो गई और बंगाल में पटाखों के कारोबार ने कभी जोर नहीं पकड़ा. लेकिन शिवकाशी क्षेत्र में कई गुना संगठित होने के कारण यह उद्योग काफी फला-फूला. राज्य में छोटे निर्माता पटाखे बनाते रहे. लेकिन अभी 20 साल ही हुए जब बंगाल के निर्माताओं ने बाजार में शिवकाशी के माल से टक्कर लेनी शुरू की. और कई जगह तो जमींदारों के वंशजों ने ही इस प्रथा को जारी रखा. मसलन, शेख मजहर अली को ही लें. बलरामपुर फैक्टरी के बगल के प्लॉट में इंडिया फायर वर्क्स चलाने वाले 60 वर्षीय अली जमींदार परिवार के हैं. इस परिवार के पास कभी 100 एकड़ जमीन थी. उन्होंने शौकिया पटाखे बनाने शुरू किए और अब दो एकड़ के प्लॉट में फैली इलाके की सबसे पुरानी और बड़ी फैक्टरी चलाते हैं.

एक फैक्टरी के भीतर का दृश्य

सभी फोटो गौतम रॉय

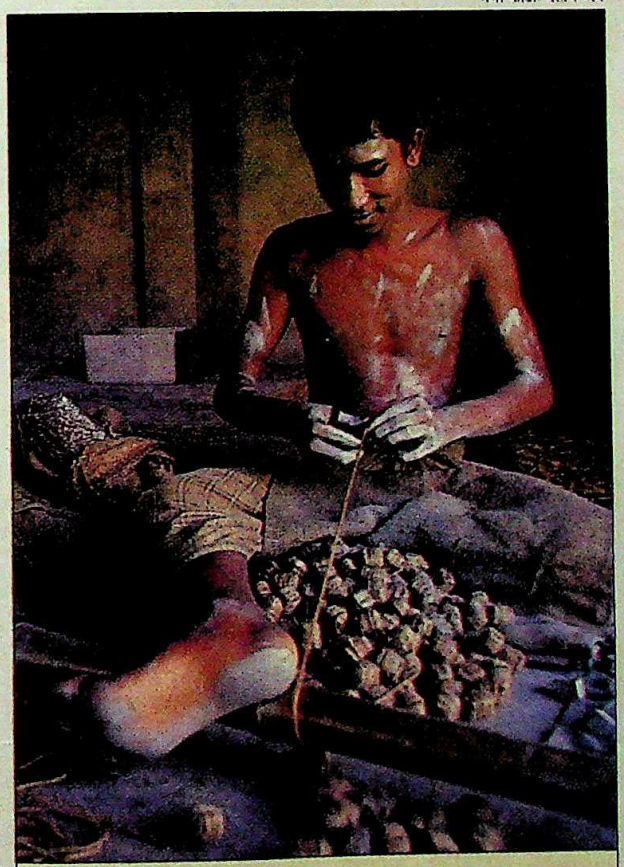

सालाना लगभग 10 करोड़ रु. के कारोबार वाला यह उद्योग करीब 2,000 गरीब परिवारों को रोजगार मुहैया कराता है

बहरहाल, फुलझड़ियां, अनार और चॉकलेट बम बनाने वाली फैक्टरियों ने राज्य में इस व्यवसाय में अपनी जड़ें जमा ली हैं. बंगाल के पटाखा उद्योग ने अपने दक्षिण भारत के प्रतिद्वंद्वी को दो वजहों से पछाड़ दिया है. एक तो यहां के पटाखे सस्ते हैं. मसलन, 100 बमों का डिब्बा थोक बाजार में 65 रु. में बिकता है जबकि शिवकाशी में बने बमों के एक डिब्बे की कीमत 170 से 180 रु. के बीच है.

दूसरी वजह यह है कि गुणवत्ता में कोई खास फर्क न होने के कारण कई निर्माता स्थानीय माल को 'शिवकाशी में निर्मित' का फर्जी लेबल लगाकर बेच देते हैं. अधिकारियों का कहना है कि वे इस गैरकानूनी काम को रोकने में असमर्थ हैं.

यही नहीं, इस व्यवसाय की दूसरी गैरकानूनी बातों को भी रोकने में वे असमर्थ हैं. मिसाल के तौर पर, सरकारी अधिकारियों का कहना है कि पटाखा निर्माण वाले क्षेत्रों में कुकुरमुत्ते की तरह बिना लाइसेंस वाली फैक्टरियां उग आई हैं और उनकी संख्या लाइसेंसधारी फैक्टरियों की संख्या से लगभग दोगुनी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

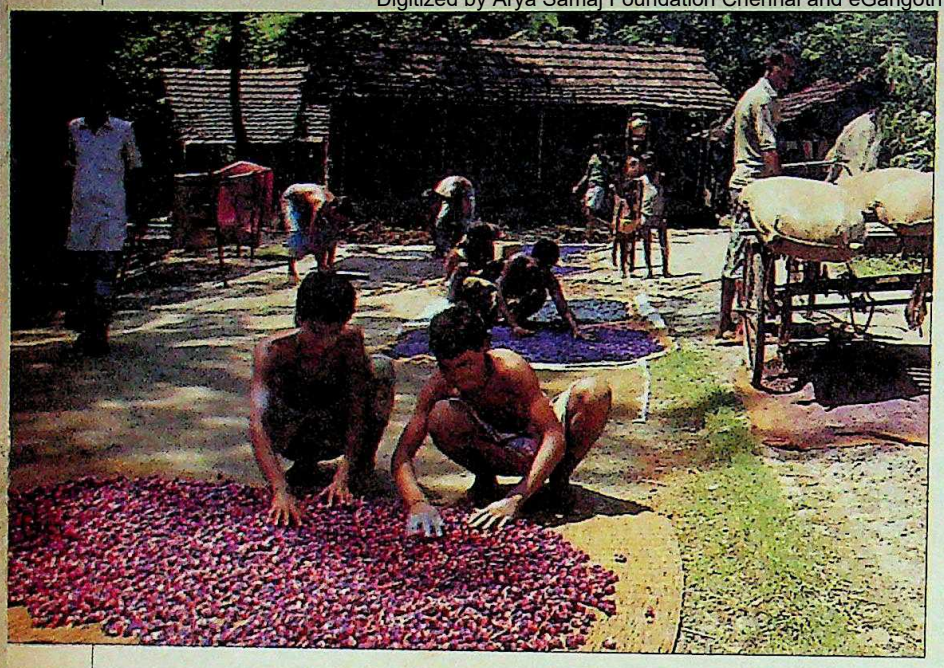

बलरामपुर गांव के मजदूर

ज्यादातर काम चूंकि ठेके पर परिवारों से कराया जाता है, इसलिए यह पता लगाना मुश्किल है कि पटाखों का निर्माण कौन कर रहा है.

लाइसेंसधारी फैक्टरियों के साथ भी एक समस्या है. सिर्फ छह फैक्टरियों को अपने परिसर में 15 किलो से अधिक विस्फोटक पदार्थ (गनपाउडर) रखने की इजाजत है लेकिन ज्यादातर कंपनियां इससे अधिक भी रखती हैं. घरों और फैक्टरियों में आग बुझाने का भी कोई बंदोबस्त नहीं है.

पटाखे बनाने वाले मजदूर आम तौर पर गनपाउडर से, जो चारकोल, गंधक और बेरियम नाइट्रेट का मिश्रण है, सने रहते हैं. यह त्वचा के लिए नुकसानदेह तो है ही, इससे सांस की कई तरह की बीमारियां भी हो जाती हैं. पिछले साल केंद्र सरकार के पूर्वी क्षेत्र के विस्फोटकों के उप प्रमुख एन.जी. कुंडू ने हालात का जायजा लेने के लिए गांवों और कलकत्ता के कैनिंग स्ट्रीट थोक बाजार का गुप्त दौरा भी किया था. पर एक साल बाद भी हालत वैसी ही है. कुंडू कहते हैं, "स्थिति से मैं एकदम नाखुश हूं."

ऐसी स्थिति की वजह यह है कि फैक्टरी मालिक कम मजदूरी पर ज्यादा से ज्यादा काम कराते हैं और उनके संबंध भी बड़े-बड़े लोगों से हैं. शेख अली इसकी सबसे बढ़िया मिसाल हैं. वे सत्ताधारी माकपा से जुड़े हैं और स्थानीय पंचायत के नेता हैं. उनकी फैक्टरी में काम करने वाली 50 वर्षीया सहर बानू दिन भर में 144 चॉकलेट बम बनाकर मात्र डेढ़ रु. कमाती हैं. उनका बेटा 17 वर्षीय शफीक 1,000 बम बनाकर 12 रु. रोज कमाता है. थोड़ी ज्यादा कमाई के लिए वह फैक्टरी की ड्यूटी खत्म होने के बाद भी काम करता है. पश्चिम बंगाल में न्यूनतम मजदूरी 22.84 रु. प्रतिदिन है.

बलरामपुर के बगल के गांव नंदरमापुर में भी सात और आठ साल के बच्चे बम के खोल में बारूद भरते देखे जा सकते हैं. कभी-कभी तो ये 1,000 खोलों में बारूद भरते हैं और इसके बदले उन्हें मात्र दो रु. मिलते हैं. ये बच्चे उन परिवारों के हैं जो खेतिहर मजदूर के रूप में काम करते हैं और जब बुआई और फसल कटाई के बीच के समय में जीविका का कोई माध्यम नहीं होता तो इस तरह का खतरनाक काम करने लगते हैं.

यही स्थिति शिवकाशी की भी है. अंतर सिर्फ यह है कि बंगाल में पटाखा फैक्टरियों के मालिक मजदूरी कम देते हैं और मुनाफा ज्यादा कमाते हैं. थोक विक्रेता और निर्माता अपनी आय नहीं बताते हैं लेकिन इसका अंदाज इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि वे 1,000 चॉकलेट बम बनाने के लिए औसतन 12 रु. रोज देते हैं. कच्चे माल की कीमत 100 रु. होती है. लेकिन बाजार में इतने ही चॉकलेट बमों का थोक मूल्य 650 रु. है. यही राज्य के पटाखा उद्योग की सीमा है. कलकत्ता की कैनिंग स्ट्रीट में पटाखों के थोक विक्रेता विनोद कुमार नरूला कहते हैं, "पश्चिम बंगाल से शिवकाशी को कभी खतरा नहीं रहा है लेकिन यहां और शिवकाशी की कीमतों में जमीन-आसमान का अंतर है." और चूंकि एक पखवाड़े में दीवाली आने वाली है, सो कमाई का यही मौका है.

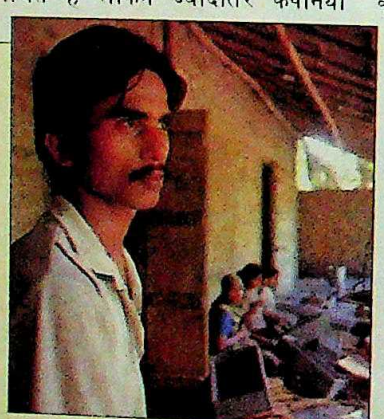

"हमारे पास मनोहारी पटाखे बनाने वाले शिवकाशी जैसे दक्ष कारीगर नहीं हैं. पर माल उनसे उन्नीस नहीं"

प्रियलाल दास

बलरामपुर के फैक्टरी मालिक

"पश्चिम बंगाल से शिवकाशी को कभी खतरा नहीं रहा लेकिन दोनों की कीमतों में भारी अंतर है"

विनोद नरूला

कलकत्ता के थोक विक्रेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एक्जिक्यूटिव क्लब' ही जाने एक एक्जिक्यूटिव का अंदाज़

जीत का एहसास मुकाबले के बाद !

मुकाबले से आये जोश, हौसलें हो बुलंद।
और कामयाबी लगे हाथ, यही तो है
सही वक्त पर सही पसन्द !

Executive Club

उत्कृष्ट कट ग्लास कलेक्शन *

सही पसन्द

* कॉकटेल और फ्रूट जूस के लिए बेजोड़
केवल चुनी हुई दुकानों में उपलब्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देर आयद, दुरुस्त आयद

कई वर्षों तक बातचीत चलाने और मामला लटकाने के बाद भारत सरकार ने जर्मनी की कार और मोटरसाइकिल बनाने वाली धुरंधर कंपनी बीएमडब्ल्यू और एस्कॉर्ट्स लिमिटेड के गठजोड़ को आखिर हरी झंडी दिखा ही दी. भारतीय अधिकारियों ने तो इस पर चुप्पी साध रखी है पर जर्मनी के व्यापार अधिकारियों ने इसकी पुष्टि की है. परियोजना में एस्कॉर्ट्स को 75 करोड़ रु. की लागत लगानी होगी. फिलहाल दोनों कंपनियां हिस्सेदारी पर बातचीत कर रही हैं. बीएमडब्ल्यू के गठजोड़ से कंपनी ज्यादा क्षमता वाली मोटरसाइकिलें बना सकेगी. यह तो शुरुआत है. और बाद में? अधिकारियों का कहना है कि यह गठजोड़ कारों के निर्माण तक जा सकता है. कहा जाता है कि पिछले महीने प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव की जर्मनी यात्रा के बाद मामला आगे बढ़ा.

अमेरिकी आदर्श

विदेशी मुद्रा को देश में लाने की योजनाएं बना रही भारत सरकार को अमेरिका के ताजा कदमों से राहत मिल सकती है. नई योजना आप्रवासी अधिनियम 1990 का एक हिस्सा है जो अक्तूबर के आरंभ से लागू हो जाएगी. इसके तहत अमेरिका हर साल 10,000 स्थायी निवासी वीसा देगा. पर ये वीसा उन्हीं को दिए जाएंगे जो वहां के उद्योगों में कम-से-कम 10 करोड़ डॉलर का निवेश करने को सहमत होंगे और रोजगार के कम-से-कम दस अवसर मुहैया कराएंगे. भारत सरकार भी ऐसी ही एक योजना पर विचार कर रही है जिसमे आप्रवासी भारतीय दोहरी नागरिकता रख सकेगा. इसके तहत कई प्रस्ताव हैं जिसमें आप्रवासी भारतीयों और विदेशियों को संपत्ति खरीदकर भारत में आवास विकास की इजाजत दी जाएगी.

दिन अब फिर रहे

सैमटेल कलर के 1990-91 के अलेखाकृत नतीजों में 2.88 करोड़ रु. का फायदा दिखाया गया है जबकि पिछले साल इसे 5.9 करोड़ रु. का नुकसान हुआ था. इसका कारोबार भी 103 करोड़ रु. से बढ़कर 141.41 करोड़ रु. हो गया है. हालांकि इसके सबसे बड़े खरीदार सोवियत संघ ने जुलाई से सितंबर 1990 के बीच इससे एक भी पिक्चर ट्यूब नहीं खरीदी और कंपनी के कारखाने में श्रमिक समस्या भी रही. पर अब सैमटेल ने सोवियत संघ से दो लाख ट्यूबों का नया सौदा हासिल कर लिया है. लगता है कंपनी के दिन फिर रहे हैं.

आ गई अक्ल ठिकाने

केंद्रीय वाणिज्यमंत्री पी. चिदंबरम और कपड़ामंत्री अशोक गहलोत महंगाई विरोधी मोर्चे में शामिल हो गए हैं. इन दोनों का कहना है कि सूती रेशा निर्यात करने के चक्कर में उत्पादकों ने हथकरघा क्षेत्र की अनदेखी की. नतीजा यह है कि किल्लत से कीमतें बढ़ रही हैं. चिदंबरम ने पिछले महीने मिल मालिकों से कहा कि वे कीमतों को बजट-पूर्व स्तर पर ले आएं. इसका असर न हुआ तो कपड़ा मंत्रालय ने सूती रेशे के निर्यात पर रोक लगा दी. उद्योग की अक्ल ठिकाने आ गई और कीमतें बजट-पूर्व स्तर पर रखने पर राजी हो गया. कीमत 4 से 5 रु. प्रति किलो तक कम हो गई. यह व्यवस्था उत्तर भारत कपड़ा निर्यातक संघ और दक्षिण भारत मिल्स संघ ने की है. कीमतों की यह कमी इस साल 30 नवंबर तक जारी रहेगी. अब देखना यह है कि सरकार निर्यात रोकने के फैसले को बदलती है या नहीं.

कर्ज जो डूब जाता

अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम (आईएफसी) की ताजा सालाना रपट में कुछ दिलचस्प तुलनाएं हैं जिसे वाशिंगटन डी.सी. की इस साहूकार संस्था के कुल जमा उधार

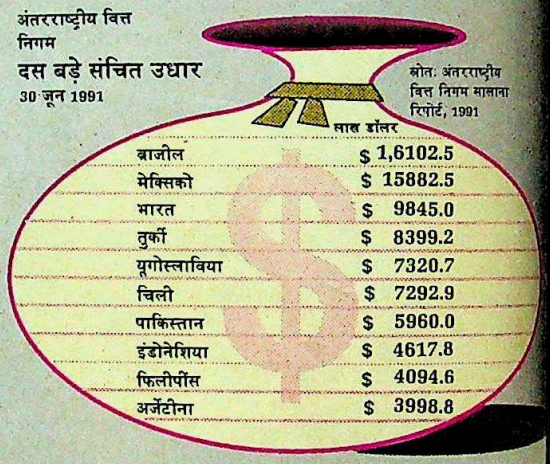

विवरण हैं. इस सूची में सबसे ऊपर है ब्राजील जिसे 1.6 अरब डॉलर दिए गए हैं. खुद आईएफसी और व्यापार संघों के जरिए दी जा रही यह रकम 67 कंपनियों को मिलेगी. मैक्सिको का नंबर दूसरा और भारत का तीसरा है जिसकी 55 कंपनियों को 9,845 लाख डॉलर दिए गए हैं. पाकिस्तान नौवें नंबर पर है जिसकी तीस कंपनियों को 4094.6 लाख डॉलर का उधार दिया गया है. और इंडोनेशिया की 25 कंपनियों ने 40 करोड़ का कर्ज लिया है. फेहरिस्त के 10 अगुआ देशों में मैक्सिको, तुर्की और इंडोनेशिया की अर्थव्यवस्था ही फायदे में चल रही है. बाकी में अर्थव्यवस्था घाटे में चल रही है.

राहत की सांस

भारतीय सॉफ्टवेयर निर्यातक अब शायद चैन की सांस ले सकेंगे. अमेरिकी आप्रवासन सूत्रों के मुताबिक अमेरिकी प्रशासन सिंपसन मज्जोली कानून पर फिर से विचार कर रहा है. व्यवसाय के लिए आने वाले विदेशियों को इस कानून के तहत ही अमेरिका में प्रवेश मिलता है. फिलहाल भारतीय सॉफ्टवेयर व्यवसायियों को अमेरिका में काम शुरू करने के पहले व्यवसाय वीसा की जगह वर्क परमिट लेना पड़ता है जो बहुत मुश्किल से मिलता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Indian price range for world class office shirts has just been fixed...

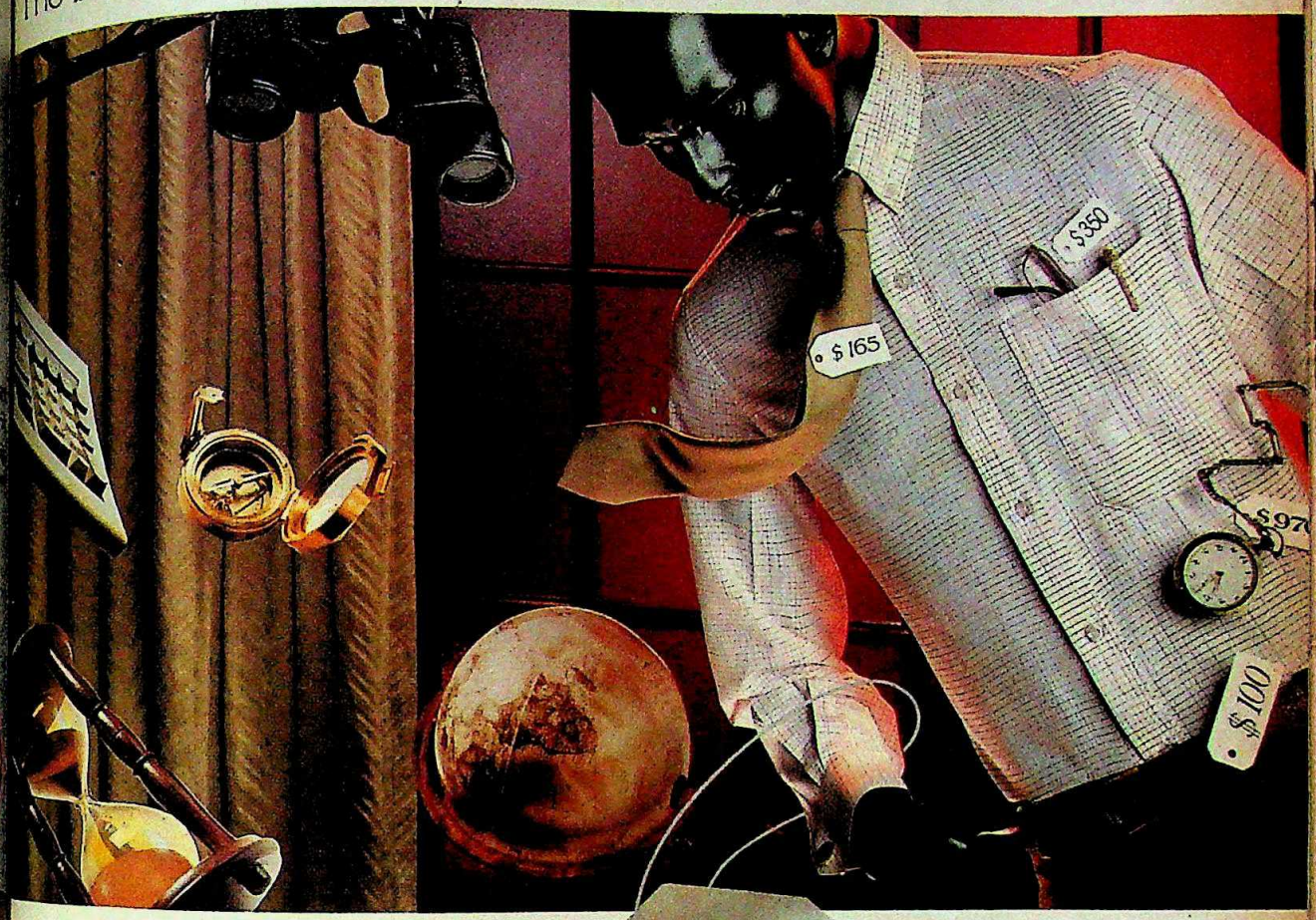

Don't pay in Dollars

At Indian Rupees 150 to 275.

BLUE CHIP

THE OFFICE SHIRT

Avenues HH 16991

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे कलर टी.वी. के दिखावे तो आपने देखे!

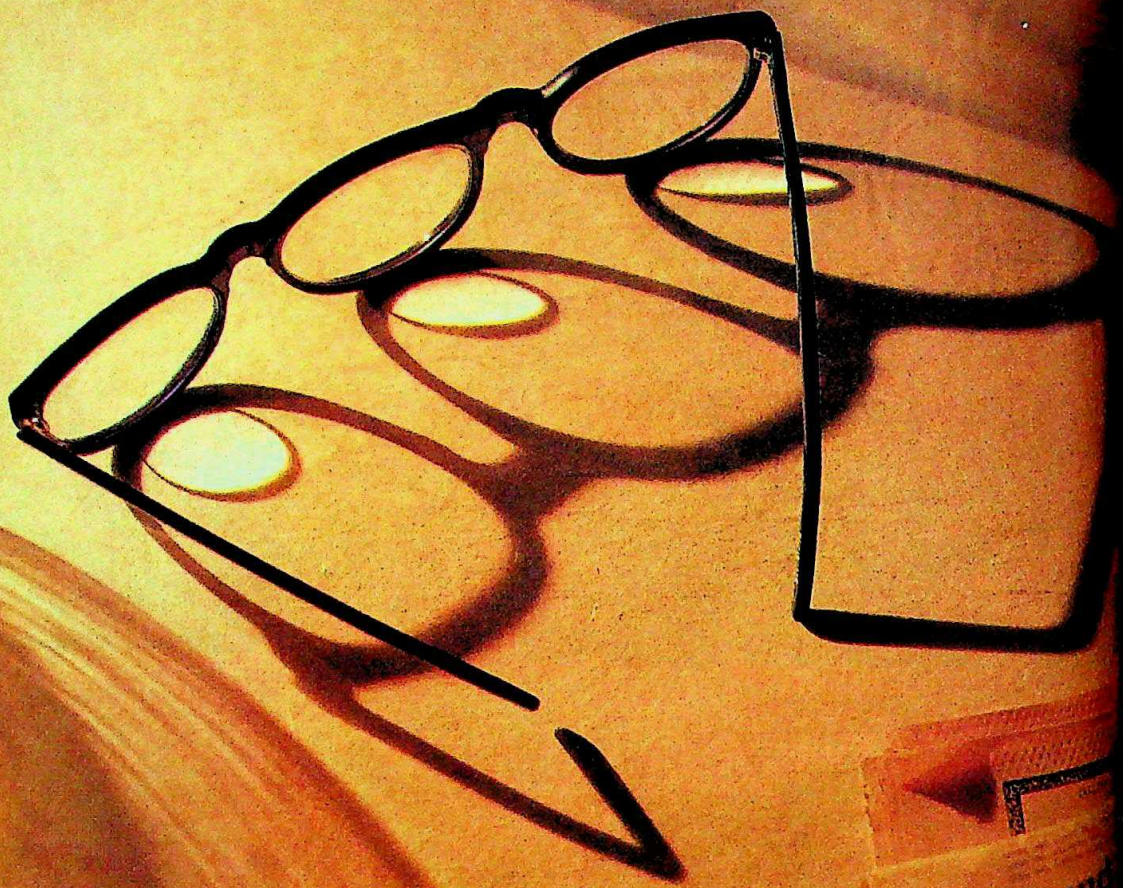

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अब देखिए अपट्रॉन!

...र एक कलर टी. वी. में साफ तस्वीर और आवाज़ ...दा चाहिए क्या? आपको ऐसे कई कलर टी. वी. ...जो आपको लुभाने के लिए ढेर सारी बेज़रूरत ...का दिखावा करते हैं. ऐसी चीज़ें न तो आसानी ...समझ में आती हैं और न अक्सर इस्तेमाल होती ...जिससे आपका सरदर्द ही बढ़ता है. क्या आपको ...सचमुच ज़रूरत है? क्या आप इन हाथी के दिखावटी दाँतों के लिए ज़्यादा पैसे देने को तैयार हैं?

या फिर आपको चाहिए आपकी ज़रूरतों की कसौटी पर खरा उतरा एक 'सम्पूर्ण' कलर टी.वी. यानि कि अपट्रॉन हाई रिज़्योल्यूशनवाली शानदार तस्वीर ड्युअल स्पीकर जिसमें निकलती है बुलन्द और मधुर आवाज़ और आपके लिए बिल्कुल मुनासिब दाम.

उत्तम तस्वीर
उत्तम आवाज़
और सही दाम

UPTRON

काम दिखाए, दिखावा नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारावाहिक

दमकते सितारों की नई जमात

अनेक टीवी कलाकार अभिनय की गहराई, विविधता और लोकप्रियता में सिनेमा कलाकारों से बीस साबित हो रहे

—वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू, मुंबई में

वह दौर याद करें जब लोग-बाग टीवी सेट के परदे पर गाजर चबाते नए कलाकार जासूस 'करमचंद' को बड़े ध्यान से देखा करते थे. उसका नाम तो याद नहीं आता था पर यह जरूर याद था कि उसकी नाक पर एक बड़ा तिल है. और धारावाहिक 'खानदान' की तुनकमिजाज सुंदरी केतकी के नखरों और साजिशों को भी आप नहीं भूले होंगे. या यह भी याद ही होगा कि 'नुक्कड़' के बड़बोले गुरु के असली नाम की फिक्र किए बिना उसकी बातें सुना करते थे.

लेकिन अब रात 9 बजे लोग 'फटीचर' की भूमिका में पंकज कपूर को देखने की प्रतीक्षा करते हैं. 'करमचंद' को अपनी पहचान मिल गई है. मोहिनी अदाओं वाली केतकी को अब 15 से भी अधिक धारावाहिकों की अभिनेत्री नीना गुप्ता के नाम से जाना जाता है. गुरु की अब बिल्लौरी आंखों वाले दिलीप धवन के नाम से पहचान है. और वे एक रोल से दूसरे का जामा बदलते-बदलते छोटे परदे के

सभी फोटो: शरद सक्सेना

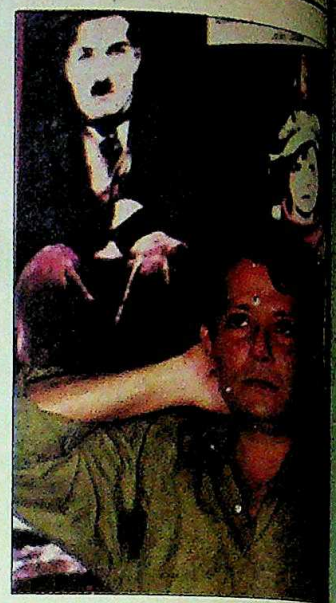

(सबसे ऊपर) पंकज कपूर; दिल धवन; और (बाएं) नीना गुप्ता: लो की जुबान पर चढ़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाहीं

ओनिडा टी वी से ईर्षा न कीजिए. खरीद लीजिए.

ओनिडा २१

पड़ोसियों की जले जान. आपकी बढ़े शान.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

शाहरुखः युवाओं के पसंदीदा

निर्विवाद गुरु बन चले हैं.''

धारावाहिकों के कई मंजे कलाकारों ने आधा दर्जन से अधिक मशहूर धारावाहिकों में अपनी प्रतिभा सिद्ध की है. निर्माताओं-निर्देशकों के बीच उनकी पूछ अब फिल्मी सितारों की तरह ही होने लगी है. कई तो एक-एक प्रकरण के लिए 20,000 रु. तक मांगने लगे हैं.

जाहिर है, अच्छी भूमिकाएं और मुंहमांगी रकम इसलिए मिल रही है क्योंकि इन कलाकारों में दर्शकों को बांधे रखने की क्षमता है. इनमें से कई कलाकार वैसे तो फिल्मों में भी आ चुके हैं पर उन्हें दूरदर्शन की देन ही समझा जाता है. इनमें प्रमुख नाम दिलीप धवन, पंकज कपूर, नीना गुप्ता, अनीता कंवर, पल्लवी जोशी, रमा विज और कविता चौधरी के माने जाते हैं.

दिलचस्प बात यह है कि कई टीवी कलाकार तो अब सिनेमा कलाकारों से अभिनय की गहराई, विविधता और लोकप्रियता में बीस साबित हो रहे हैं. 36 वर्षीय दिलीप धवन को ही लें. टीवी के परदे पर सबसे ज्यादा दिखने वाले दिलीप अब तक 10 से भी अधिक लोकप्रिय धारावाहिकों में काम कर चुके हैं. पुणे स्थित फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई) के स्नातक दिलीप किसी भी भूमिका में उतरने से पहले तीन बुनियादी बातों पर गौर करते हैं: चरित्र की पृष्ठभूमि क्या है; चरित्र की वर्तमान स्थिति क्या है; दृश्य की मांग क्या है. भूमिका वे इसी से समझते हैं.

दिलीप का पहला प्रमुख धारावाहिक 'नुक्कड़' रातोरात लोगों की जुबान पर चढ़ गया और उन पर एकदम से 'गुरु' का ठप्पा जड दिया गया. दिलीप ने इसके पहले फिल्मों में काम किया था पर उनकी प्रतिभा को दूरदर्शन से ही ख्याति मिली. 'संकल्प' में वे गांव के उजड्ड, उग्र नौजवान की भूमिका में थे, तो 'पुकार' में एक 'आजाद खयाल' शहरी पति. दोनों ही धारावाहिकों की लोकप्रियता करीब आठ करोड़ दर्शकों तक पहुंच गई. पर दिलीप पर इस लोकप्रियता का कुछ खास असर नहीं पड़ा है. जींस की पैंट, टी-शर्ट, उलझे हुए बाल और दो दिन की बढ़ी हुई दाढ़ी उनकी खास पहचान बन चुकी है.

लेकिन नीना गुप्ता के लटके-झटके उनसे ठीक विपरीत हैं. वे अपने काम के बारे में गर्वोन्नत भाव से कहती हैं, ''मेरे काम के बारे में दूसरों को बात करने दीजिए.''

'खानदान' और 'कबीर' के बाद श्याम बेनेगल की 'यात्रा' की दोहरी भूमिका में उन्होंने जानदार अभिनय किया. अब 'मंझधार' में वे वृद्धा विधवा के पात्र के साथ न्याय कर रही हैं. 15 से अधिक धारावाहिकों में अभिनय कर चुकीं नीना छोटे परदे की सर्वाधिक लोकप्रिय कलाकारों में हैं. प्रत्येक प्रकरण के वे 10,000 रु. के करीब लेती हैं. नीना और दूसरी अभिनेत्रियों से होड़ करने वालों में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की स्नातक अनीता कंवर (देखें बॉक्स) का नाम भी आता है.

अभिनेताओं में सर्वाधिक चर्चित नाम पंकज कपूर का है. पंकज ने केवल चार धारावाहिकों में काम किया है पर उनका नवीनतम धारावाहिक 'फटीचर' प्रायोजित कार्यक्रमों में 10 करोड़ की दर्शक संख्या के साथ शीर्ष पर है. उनकी फीस भी सर्वाधिक—प्रति प्रकरण 22,000 रु. है. एक बार में वे एक धारावाहिक में काम करते हैं. हाल में ही उन्होंने 'उपन्यास' में काम करना स्वीकार किया है, जो तीन पीढ़ियों की दास्तान है.

मुंबई के सुनसान इलाके यारी रोड पर अपने फ्लैट के बैठकखाने में पंकज अपनी फीस के बारे में खुलासा करते हैं, ''कई अभिनेता कम पैसे लेकर अनेक धारावाहिकों में काम करते हैं. मैं तो ढेर भूमिकाएं ठुकराकर एक में काम करने के लिए पैसे लेता हूं.'' वे इस शर्त पर 'करमचंद' बनने के लिए तैयार हो गए कि जासूस को 'एंटी-हीरो' के रूप में पेश किया जाएगा. उसके बाद से उन्होंने इस बात का खयाल रखा है कि उन पर किसी रोल विशेष का ठप्पा न लग जाए. 'लाइफलाइन' में वे डॉक्टर बने थे और 'कब तक पुकारूं' में नट.

एक और एनएसडी स्नातक, अजीत वाच्छानी ने थिएटर छोड़ा क्योंकि ''टेलीविजन में पैसा

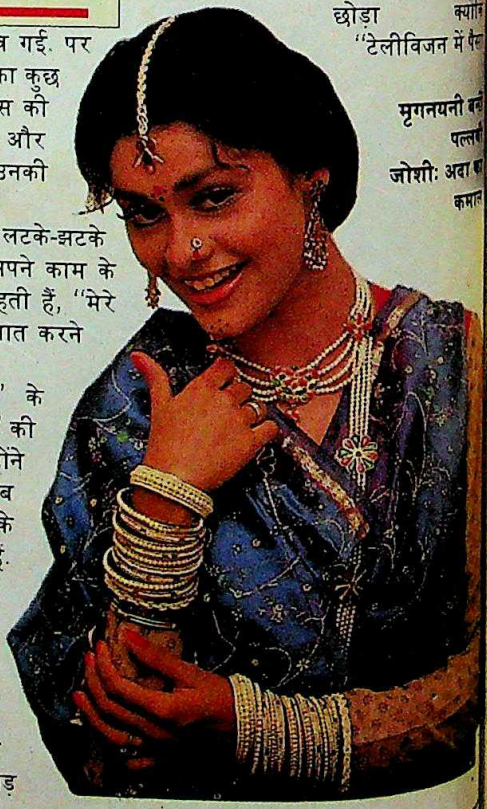

मृगनयनी बनी पल्लवी जोशीः अदा का कमाल

उभरते कलाकार

इन कलाकारों को लेकर बनाए गए धारावाहिकों की लोकप्रियता नापने के लिए आईएमआरबी ने 1986 के बाद के ऐसे धारावाहिकों का प्रमुख समय में दिखाए गए दूसरे सभी धारावाहिकों से तुलनात्मक अध्ययन किया. इसके लिए नौ महानगरों के करीब 3,100 वयस्क लोगों की राय ली गई. नतीजाः ''चुनींदा कलाकारों वाले धारावाहिकों के दर्शक रात 9 बजे के दूसरे सभी धारावाहिकों से 15 फीसदी ज्यादा होते हैं.'' विज्ञापन एजेंसियों द्वारा किए गए अध्ययनों के अनुसार रात 9 बजे की दर्शक संख्या 40 फीसदी होती है लेकिन अच्छे कलाकारों की मौजूदगी इसे 52 फीसदी तक पहुंचा सकती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानदार! मज़ेदार!

टेस्टी गुटखा

महफिल की यही जान,
टेस्टी गुटखा लाए हर चेहरे पर मुस्कान.
स्वाद जानदार, अनुभव मज़ेदार.
टेस्टी गुटखा...अब खूब जमेगी महफिल.

जेपी उत्पादन

संवैधानिक चेतावनी : तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. थिएटर ने केवल रोटी दी पर यहां तो मक्खन भी मिला.'' अजीत ने एक ही समय में एक सिंधी पति, एक 60 वर्षीय कलुषित-हृदय प्रोफेसर और एक लेखक की भूमिका में उतरकर अपनी पहचान बना ली. 'फटीचर' में अजीत की भूमिका सराही गई और अब वे रमेश सिप्पी के 'बंधन' में 90 वर्ष के बूढ़े का किरदार निभा रहे हैं. अजीत के पास 25 फिल्में हैं.

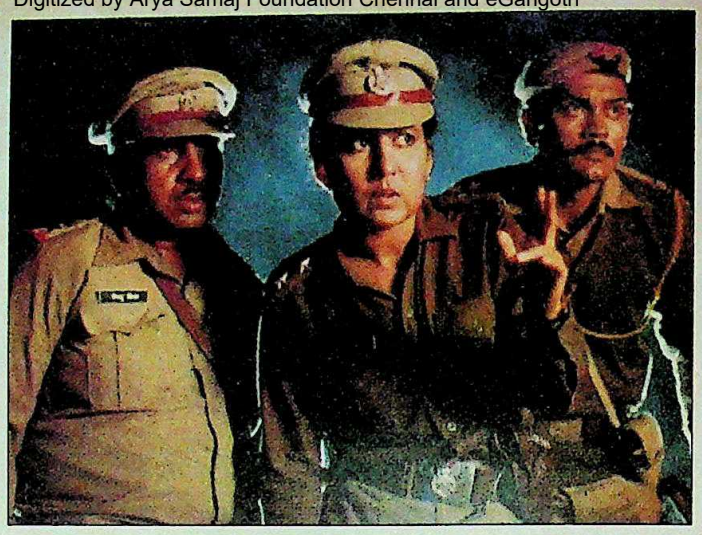

नौजवानों में लोकप्रिय, 27 वर्षीय शाहरुख खां और 22 वर्षीया पल्लवी जोशी के अनुसार दूरदर्शन फिल्मों की सीढ़ी है. पल्लवी के पास छह फिल्में हैं और शाहरुख चार में काम कर रहे हैं. पर दोनों ही छोटे परदे से जुड़े रहना चाहते हैं. पल्लवी 'मृगनयनी' में 15वीं शताब्दी की वनवासी रानी के रूप में काफी लोकप्रिय हुई हैं. 12 से भी अधिक धारावाहिकों में पल्लवी के अभिनय को सराहा गया है. 'मृगनयनी' के निर्देशक अमोल पालेकर कहते हैं, ''उसमें भीतरी सौंदर्य काफी है. वह कैलेंडर सुंदरी नहीं है. जब वह हंसती है तो दूसरों को

'उड़ान' में कविता: घर-घर में पहचान

खुश कर देती है.''

शाहरुख ने मात्र चार धारावाहिकों में काम करके अपनी जगह बनाई है. 'फौजी' और 'सर्कस' के नायक शाहरुख के अनुसार, ''मैं छोटे परदे पर लौट आऊंगा क्योंकि मुझे इससे जो प्रसिद्धि मिली है, उसका कर्ज तो चुकाना ही पड़ेगा.''

इसी तरह की वापसी किट्टू गिडवाणी की हुई है. टीवी पर शानदार शुरुआत के तुरंत बाद किट्टू ने फिल्मों में हाथ-पांव मारने की कोशिश की.

एनएसडी स्नातक, निर्देशिका अभिनेत्री कविता चौधरी ने भी यही बात सिद्ध की है. 'उड़ान' और 'उड़ान-दो' में एक महिला पुलिस अफसर की कहानी के ज़रिए कविता ने घर-घर में पहचान बनाई है. उनके शब्दों में ''दूरदर्शन एक सशक्त माध्यम है और घरों में पैठ बनाने का एक आसान रास्ता भी.''

प्रमुख समय में एक सप्ताह में केवल 12 धारावाहिक दिखाए जाते हैं. जाहिर है इनके कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका बहुत कम ही मिल पाता है. दूसरे, कम बजट के कारण इन्हें पैसा भी कम मिल पाता है. इन तमाम सीमाओं के बावजूद इन कलाकारों ने सितारों-सी चमक हासिल की है. फिल्म निर्माता अमित खन्ना कहते हैं, ''रात 9 बजे अगर तीन धारावाहिकों के प्रसारण की सुविधा हो तो इन सितारों की चमक न जाने कितनी बढ़ जाए.'' दूरदर्शन अभी अंतरराष्ट्रीय स्तर के कलाकार तो नहीं पैदा पाया है पर प्रतिभाओं को देखकर लगता है यह कमी भी पूरी हो जाएगी.

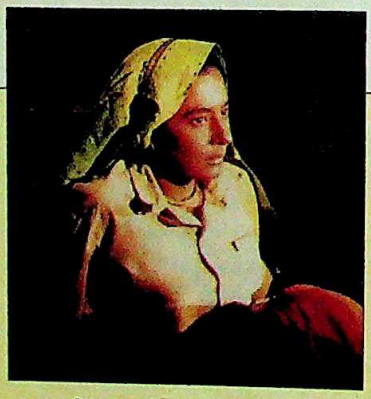

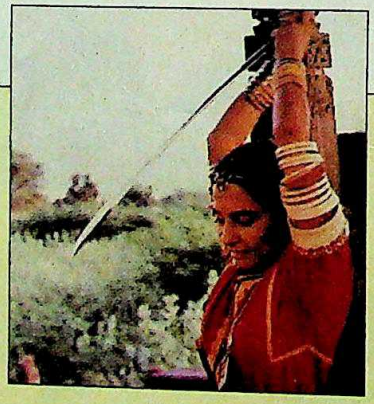

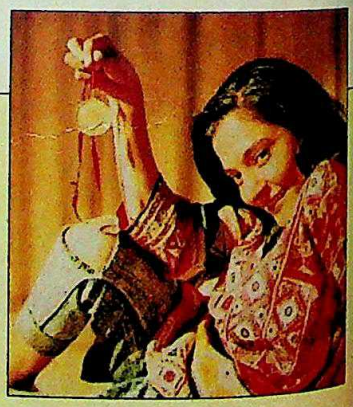

अनीता कंवर

बेजोड़ प्रतिभा

अनीता छोटे परदे की संभवतः सबसे प्रतिभासंपन्न कलाकार हैं. 'पुकार' के नौ प्रकरणों में उन्होंने छह किरदार निभाए, शहरी-ग्रामीण, युवा-वृद्ध. सभी में उनका काम बेजोड़ रहा.

लेकिन एनएसडी की इस अविवाहिता स्नातक के लिए यही काफी नहीं था. उनके अनुसार, ''किसी भी रोल को और बेहतर करने का वक्त नहीं था.'' 'पुकार' के हर प्रकरण के लिए 15,000 रु. लिए. व्यावसायिक सफलता के बावजूद वे मानती हैं कि इस माध्यम को बहुत गंभीरता से नहीं लिया जाता. ''मैं नहीं चाहती लोग मेरे अभिनय को फोन पर बात करते या भोजन करते हुए देखें.'' उनका झुकाव फिल्मों की ओर है, जो उन्हें 'अमरत्व' दे सकता है. उन्हें निर्देशकों की पसंदीदा अभिनेत्री माना जाता है. अमोल पालेकर कहते हैं, ''अनीता निर्देशक के सोच के मुताबिक ढलकर अभिनय में डूब जाती हैं.'' सह-कलाकारों ने उन्हें अपनी भूमिकाओं में कुछ 'ज्यादा ही डूबा' पाया है पर दर्शकों को कोई शिकायत नहीं है.

'पुकार' में कई भूमिकाओं में अनीता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त* उपहार
अधिक बचत
इंडिया टुडे की ओर से

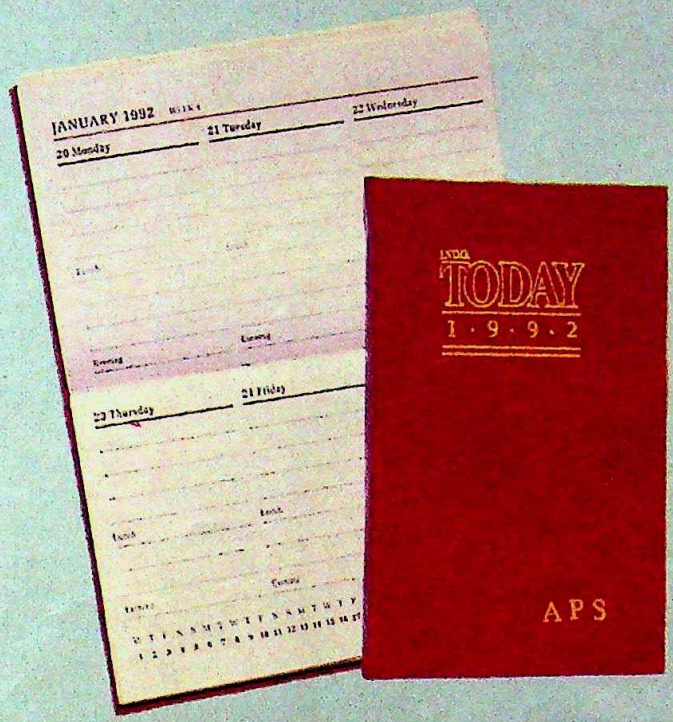

इंडिया टुडे की प्रति का मूल्य भले ही 11 रुपए हो गया है पर आप अपनी प्रति अभी भी 9 रुपए में पा सकते हैं। अभी से ग्राहक बनकर 2 रुपए प्रति बचाएं। और साथ में आपको मिले 49 रु. मूल्य की इंडिया टुडे पॉकेट डायरी बिल्कुल मुफ्त*।

इस विशेष पेशकश के लिए आपको देने होंगे :

इंडिया टुडे के वार्षिक ग्राहकी शुल्क के लिए 210 रु. और मुफ्त पॉकेट डायरी का प्रबंध और प्रेषण खर्च 15 रु.*।

इंडिया टुडे का ग्राहक बनने और मुफ्त* पॉकेट डायरी पाने के लिए आज ही रकम के साथ-साथ निम्नलिखित आर्डर फार्म भी डाक से रवाना करें।

ऑर्डर फार्म

हां। मैं विशेष उपहार पेशकश का लाभ उठाना चाहूंगा/गी। मैं (किसी एक खाने में निशान लगाएं)

☐ नया/नई ग्राहक हूं। कृपया इंडिया टुडे की मेरी वार्षिक ग्राहकी शुरू कर 1992 की मेरी मुफ्त* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी भेजें।

☐ वर्तमान ग्राहक हूं।** कृपया अगले साल तक इंडिया टुडे के लिए मेरी ग्राहकी का नवीकरण कर 1992 की मेरी मुफ्त* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी भेजें।

लिविंग मीडिया इंडिया लि. को देय मेरा ..... रु. का चेक/डीडी संख्या ..... दिनांक ..... संलग्न है।

नाम .....

पता .....

.....

..... पिन .....

ग्राहक संख्या ..... (केवल वर्तमान ग्राहकों के लिए जो ग्राहकी के नवीकरण के इच्छुक हैं।)

कृपया ध्यान दें :

* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी का प्रबंध और प्रेषण खर्च अतिरिक्त 15 रु. प्रति।

** इस पेशकश के तहत ग्राहकी का नवीकरण कराने के इच्छुक वर्तमान ग्राहक अपना नाम और पता वही लिखें जो इंडिया टुडे की आपकी प्रति पर लगाए गए बाहरी कव्हर के लेबल पर चिपका होता है।

– राशि लिविंग मीडिया इंडिया लि. को देय रेखांकित चेक/डीडी द्वारा ही भेजें।

– यह पेशकश 31 दिसंबर 1991 तक उपलब्ध।

– दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता और मद्रास से भेजे गए चेक/ड्राफ्ट एम आई सी आर ही होने चाहिए।

– यह पेशकश और दरें भारत में ही लागू होंगी।

– ऑर्डर पूरा करने के लिए कृपया 6-8 हफ्तों का समय दें।

– ऑर्डर फार्म न होने पर ऑर्डर कृपया नाम, पते और भुगतान के साथ निम्नलिखित पते पर भेजें :

इंडिया टुडे (हिंदी)
पोस्ट बॉक्स नं. 114, नई दिल्ली-110 001.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदमूरि तारक रामराव

दो नावों की सवारी

राजनीति और फिल्मों के बीच झूलने की कशमकश के चलते तेलुगु देशम के प्रमुख राष्ट्रीय मोर्चा से दूर हटते लग रहे

—अमरनाथ के. मेनन

राजनीति के मंच और फिल्म के सुनहले परदे के बीच नंदमूरि तारक रामराव की दौड़-भाग इतनी तेज रही है कि वे शायद भूल गए कि उनकी असली भूमिका क्या है. नतीजा यह है कि तेलुगु देशम के ये घुटे हुए नेता दो नावों की सवारी करने की कोशिश में कहीं के नहीं रहे हैं.

हाल ही में उन्होंने नांदयाल लोकसभा सीट पर उपचुनाव में प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव का समर्थन करने का फैसला करके यह सीट लगभग उनके सामने परोस दी है. जाहिर है राष्ट्रीय मोर्चा के उनके सहयोगियों को इससे परेशान होना ही था. परंतु रामराव इससे बेफिक्र हैं. वे गर्व से कहते हैं, "मैं भी उन्हीं की तरह तेलुगु हूं. फिर, वे प्रधानमंत्री बनने वाले पहले दक्षिण भारतीय हैं."

और तो और, राष्ट्रीय मोर्चे की सभी पार्टियां जबकि इंका की आरक्षण नीति पर छाती पीट रही हैं, रामराव ने इंकाई फार्मूले का समर्थन करते हुए सबको हैरान कर दिया है.

लेकिन लगता है कि रामराव की फिल्मी महत्वाकांक्षाएं एक बार फिर उनकी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं पर हावी हो रही हैं. जैसे ही उनकी नई फिल्म 'सम्राट अशोक' के लिए कैमरा पहियों पर चढ़ा, रामराव अपने ताजा अतीत को जैसे भूलने लग पड़े. वैसे, अपने राजनैतिक कैरियर को तो उन्होंने तभी ताक पर रख दिया था जब दो साल पहले वे मुख्यमंत्री की कुर्सी से हटे थे और उनकी फिल्म 'ब्रह्मऋषि विश्वामित्र' भी नाकाम रही. 'सम्राट अशोक' के जरिए वे शायद इसी नाकामी के कलंक को बॉक्स ऑफिस पर धो डालना चाहते हैं.

पर एक दुविधा भी है. उनकी पार्टी ने विधानसभा के हंगामाखेज बजट सत्र में काफी जोरदार भूमिका निभाई और मुख्यमंत्री एन. जनार्दन रेड्डी को भ्रष्टाचार के आरोपों से खासा परेशान किया. यहां तक कि तेलुगु देशम ने रेड्डी को कई कथित निहित स्वार्थों वाले आदेश वापस लेने पर मजबूर कर दिया. दरअसल, जनवरी में हैदराबाद के एक संवाददाता सम्मेलन में रामराव ने कहा था कि "कोई भी सरकार स्थिर नहीं दिख रही है. इसलिए मैं राजनीति में ही व्यस्त रहूंगा और फिल्मों को समय नहीं दे पाऊंगा." पर अब शायद उन्होंने अपना विचार बदल लिया है.

कार्टून: अजीत नैनन और मनोजित दत्ता

नांदयाल उपचुनाव संबंधी उनके फैसले से उनके बारे में यह कहा जाने लगा है कि वे इंका के हाथों बिक गए हैं. तेलुगु देशम के एक असंतुष्ट विधायक का कहना है, "कुछ सौदेबाजी हुई है. नांदयाल से बाहर रहने के एवज में उनके परिवार के सिनेमाघरों की आगजनी के लिए उन्हें भारी मुआवजा दिया गया है." वरिष्ठ इंका नेता जी.वी. सुधाकर राव इससे सहमत हैं, "अगर रामराव और उनका दल संसद में तेलुगु प्रधानमंत्री का समर्थन करता है तो उनकी देशभक्ति और भावनाएं फिर उजागर हो जाएंगी."

लेकिन उनकी पार्टी के लोग उन पर दोहरी नीति अपनाने का आरोप लगा रहे हैं, खासकर उस समय से जब उन्होंने अपने विधायकों से यह कहा कि वे मुख्यमंत्री द्वारा दी जा रही जमीन के लोभ से दूर रहें. लेकिन रामराव को अपने व्यक्तित्व के जादू पर काफी भरोसा है. उन्हें लगता है कि इस जादू के आगे उनकी राजनैतिक गलतियां फीकी पड़ जाएंगी. संभवतः इसीलिए उन्होंने पार्टी के रोजमर्रा के कामकाज पर ध्यान देना बिलकुल ही कम कर दिया है. अपने मुख्यमंत्रित्वकाल में वे जितने पार्टी कार्यकर्ताओं से मिला करते थे उसके मुकाबले अब बहुत कम लोगों से मिलते हैं. पार्टी के संगठन का कामकाज उनके दामाद और पार्टी महासचिव एन. चंद्रबाबू नायडू के जिम्मे है. नायडू क्षमायाचना के स्वर में कहते हैं, "तेलुगु देशम को मजबूत करने के लिए हम लोग त्याग करने के साथ-साथ काफी वक्त भी दे रहे हैं." लेकिन राज्य के राजस्वमंत्री डी.एल. रवींद्र रेड्डी के अनुसार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामराव घोर अराजनैतिक व्यक्ति हैं. उन्होंने सहकारिता ऋण व्यवस्था को तहस-नहस करके वाहवाही लूटने वाली योजनाओं पर कई वित्तीय संस्थाओं से खर्च करवाकर राज्य की अर्थव्यवस्था को बेहाल कर दिया है.''

लेकिन व्यक्तिवाद के भरोसे चलने वाली पार्टी में नेता के खिलाफ बोलने की हिम्मत कोई कैसे कर सकता है. किसी ने ऐसा दुस्साहस किया भी तो रामराव ने उसका कद छोटा करने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ी. पार्टी के पूर्व महासचिव पी. उपेंद्र के साथ ऐसा ही हुआ था जब उन्हें संसदीय पार्टी के नेता पद से एकाएक हटा दिया गया (देखें बॉक्स). भाई-भतीजावाद में भी रामराव सभी से एक-सा बर्ताव नहीं करते. राजनैतिक परामर्श के लिए वे अपने दामादों—नायडू या डी. वेंकटेश्वर राव पर निर्भर हैं. तेलुगु देशम के पूर्व सांसद बेजवाड़ा पी. रेड्डी कहते हैं, "पार्टी के महत्वपूर्ण नेताओं का इस्तेमाल करके उन्हें पायदानों की तरह खारिज कर दिया जाता है.''

लेकिन इस तरह का असंतोष हमेशा नहीं रहा है. 1982 में जब 60 वर्षीय रामराव ने राजनीति में उतरने की घोषणा की थी तब इंका ने उन्हें मजाक का विषय माना था. मगर 1983 के चुनावों में जब उनकी पार्टी ने जयघोष किया तो हंसने की बारी उनकी थी.

उसके बाद लचर प्रशासनिक व्यवस्था और राजनैतिक दूरदर्शिता की कमी के बावजूद उनकी पार्टी के अच्छे दिन कायम रहे. पर 1989 में इंका के कमर कसने के बाद उनके सारे मंसूबे धराशायी हो गए. पिछले वर्ष के चुनावों में पार्टी की स्थिति कुछ बेहतर हुई, जिसका मूल कारण वर्तमान शासन के प्रति लोगों का असंतोष था.

लेकिन रामराव जनता के असंतोष को वोटों में नहीं बदल पाए हैं. राज्यसभा की सदस्य और क्षुब्ध सहयोगी रेणुका चौधरी कहती हैं, "पार्टी में महिलाएं अलग-थलग पड़ गई हैं, हालांकि मुख्य रूप से वे ही उनकी चुनावी शक्ति हैं.'' रेणुका का यह मानना है कि अगर रामराव समय पर नहीं चेत जाते तो दूसरी पार्टियां, खासकर भाजपा बाजी मार ले जाएगी. और फिर उनके सनकी निर्णयों के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय मोर्चा के दूसरे घटक—जनता दल, भाकपा और माकपा—उनसे दूर जा सकते हैं. इस संदर्भ में पिछले महीने दी गई उनकी यह धमकी, कि वे केसरिया वस्त्र पहनना छोड़ देंगे क्योंकि वे पापियों के बीच महात्मा लगने लगे हैं, हास-परिहास के प्रति उनके लगाव को ही दर्शाती है. इससे यही लगता है कि वे उस शख्स के समान हैं जो जीवन भर के लिए प्रधान बनने की जगह एक दिन के लिए राजा बनना ज्यादा पसंद करता हो. जाहिर है, 35 वर्षों का फिल्मी लटके-झटकों का असर नौ वर्षों के राजनैतिक रंग पर भारी पड़ रहा है. ■

तेलुगु देशम

अपनों को तरजीह

नंदमूरि तारक रामराव के लिए अपना परिवार पहले नंबर पर आता है. मगर तेलुगु देशम संसदीय पार्टी के नेता पी. उपेंद्र को यह बात कुछ देर से समझ आई. रामराव ने अपने दामाद डी. वेंकटेश्वर राव के लोकसभा सदस्य बनते ही उपेंद्र को उक्त पद से हटा दिया. मगर इसकी कोई औपचारिक घोषणा नहीं की गई.

औपचारिक रूप से तो तीन बार सांसद चुने गए बी. विजय कुमार राजू ही लोकसभा में पार्टी के नेता हैं और पूर्व नीति-नियंता मिंटे पद्मनाभन राज्यसभा में पार्टी के नेता हैं. पर राज्यसभा का यह पद उपेंद्र को देने की बात उठी थी जिसे उन्होंने ठुकरा दिया. दोनों नेता एक-दूसरे को फूटी आखों नहीं सुहाते. वेंकटेश्वर राव को इसका पूरा फायदा मिलता है.

पार्टी महासचिव पद पर एन. चंद्रबाबू नायडू को बिठाकर रामराव ने सभी प्रमुख जगहों पर अपने भरोसे के रिश्तेदारों को जमा दिया है. राष्ट्रीय मोर्चा के पूर्व महासचिव उपेंद्र कभी पार्टी में नंबर दो माने जाने लगे थे. उनकी पकड़ जैसे-जैसे मजबूत होती गई, उनके प्रति रामराव की नापसंदगी भी बढ़ती गई. राष्ट्रीय मंच पर हावी होने की रामराव की कोशिश भी नाकाम रही और जब केंद्र के साथ-साथ आंध्र प्रदेश में भी मोर्चा के घटक कमजोर पड़ते गए तो रामराव को इंका-विरोधी खेमे की सार्थकता पर संदेह हो गया.

रामराव और उपेंद्र किसी मतभेद की बात से इनकार करते हैं. लेकिन रामराव या पार्टी के सदस्य किसी भी मसले पर उपेंद्र की राय नहीं लेते. उपेंद्र की मंशा फिलहाल जाहिर नहीं है. पर यह बात काबिलेगौर है कि वे पार्टी के विक्षुब्ध सांसदों और विधायकों के संपर्क में हैं और इस हेलमेल का कुछ फल सामने आ सकता है.

—अमरनाथ के. मेनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपचुनाव

बड़े दलों के ऊंचे दांव

लोकसभा की 16 और विधानसभाओं की 58 सीटों पर भिड़ने के लिए पार्टियों ने कमर कसी

नक्शा: बी.के. शर्मा

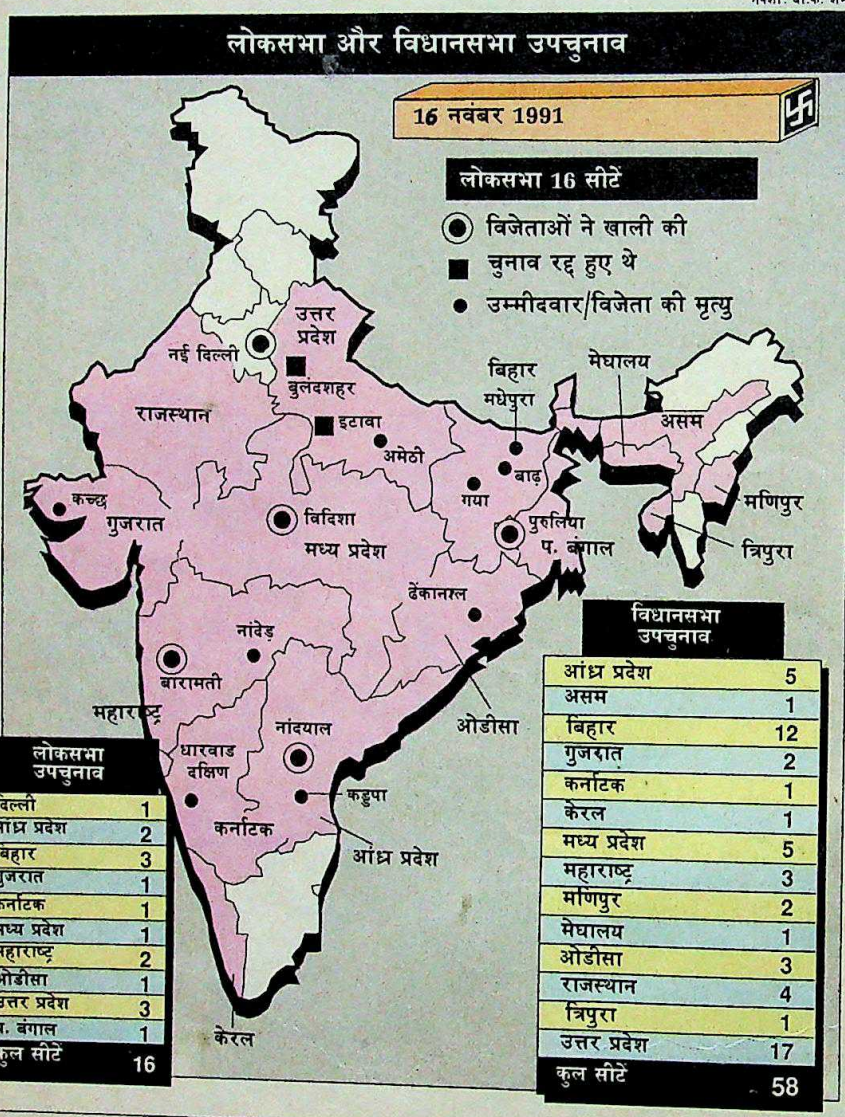

—जफर आगा और जावेद एम. अंसारी

आम चुनावों के पांच महीने बाद ही देश चुनावों के एक और दौर के लिए तैयार हो रहा है. 16 नवंबर को होने वाले उपचुनाव देश भर में फिर राजनैतिक सरगर्मी पैदा कर देंगे. लोकसभा की 16 और विधानसभाओं की 58 सीटों के लिए ये उपचुनाव मिनी आम चुनाव जैसे ही हैं. इसके दायरे में एक केंद्र शासित प्रदेश के साथ-साथ 15 राज्य भी आएंगे.

जाहिर है, सभी प्रमुख राजनैतिक पार्टियों के ऊंचे दांव लगे हैं. केंद्र में अल्पमत की सरकार उबरने के लिए कृतसंकल्प इसलिए उसकी कोशिश ज्यादा ज्यादा लोकसभा सीटों पर होने की होगी. जबकि प्रमुख पार्टी भाजपा 'इंका के विकल्प' के अपने दावे को करने की कोशिश करेगी. दूसरी राष्ट्रीय मोर्चा-वामपंथी पिछड़ी जातियों और मुस्लिम वोटों पर अपनी पकड़ बनाए का जीतोड़ प्रयास करेगा.

ये उपचुनाव नाटकीयता धुंआधार प्रचार से भी भरे प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह रक्षामंत्री शरद पवार और शर्मा (सोनिया गांधी के इस कारण) जैसी राजनैतिक हस्ती राजेश खन्ना और शत्रुघ्न सिन्हा फिल्मी कलाकार इस उप चुनाव चटख रंग देंगे. अपनी-अपनी पक्ष में जनादेश जुटाने के नरसिंह राव, लालकृष्ण आडवाणी अटल बिहारी वाजपेयी विश्वनाथ प्रताप सिंह चुनावों में लग जाएंगे.

लेकिन मतदाता क्या सोचते है, यह कोई भी निश्चित नहीं बता सकता. राजनैतिक मुद्दों को अपने पक्ष में मोड़ने अपनी रणनीति तैयार करने गई हैं. इंका तो स्थायित्व पुराने नारे का ही सहारा ले भाजपा को भगवान राम के भी कुछ सोचना पड़ेगा. राष्ट्रीय खासकर जनता दल मंडल और अपने पुराने नारे पर ही कायम रहने भी स्पष्ट लग रहा है कि सभी पार्टियां 100 दिनों के भीतर ही घटाने के इंका के पिछले चुनावी लेकर उसकी खबर लेंगी.

चूंकि उपचुनाव कई राज्यों में एक हो रहे हैं और उनमें राष्ट्रीय के स्थानीय मसलों का भी जोर लिहाजा परिणामों के बारे में भविष्यवाणी कर पाना असंभव है.

लोकसभा में स्थिति

कांग्रेस (इ)	227
भाजपा	119
जनता दल	56
माकपा	35
भाकपा	13
तेलुगु देशम	13
अन्ना द्रमुक	11
अन्य	36
कुल	510*

*33 खाली सीटों को छोड़कर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति और संप्रदाय के नाम पर चलने सभी तरह के नारे खूब उठेंगे. बिहार जाति की तरह चुनावी मैदान में जाति वाला रहेगा. उधर, उत्तर प्रदेश, प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और

गुजरात जैसे राज्यों में हिंदुत्व बनाम धर्मनिरपेक्षता का सवाल जोर पकड़ेगा. दक्षिण में इंका प्रचार करेगी कि उसी ने देश को दक्षिण से पहला प्रधानमंत्री दिया है.

उपचुनाव इस बात का ठोस प्रमाण देंगे कि लोग केंद्र में इंका सरकार को किस नजरिए से देखते हैं. साथ ही, यह बात भी सामने आएगी कि पिछले चुनावों के दौरान उठे मंडल और मंदिर जैसे मुद्दों की प्रासंगिकता कहां तक बनी हुई है. ■

जो र दा र तै या रि यां

मकसद	रणनीति	गठजोड़	प्रचार महारथी
(इ) पार्टी के लिए ज्यादा से ज्यादा सीटें हासिल करना ही महत्वपूर्ण. आठ से दस सीटें पर जोर. नर्रसिंह रार पवार, अमेठी के वार को जिताना पहला तब भी लोकसभा में बहुमत 30 सदस्यों की कमी. द बद तथा सजपा के असंतुष्ट को फुसलाने के लिए स्थिति में होगी.	स्थिरता के नारे को फिर भुनाना. नर्रसिंह राव सरकार के 100 दिनों की उपलब्धियों को प्रचारित करना. जैसा कि अर्जुन सिंह कहते हैं, "हमने देश को जातीय और सांप्रदायिक अराजकता से उबारा है." नई आरक्षण नीति के जरिए पिछड़ी जातियों पर जादू चलाना. भूमि सुधारों के प्रयासों से दलितों और धर्मस्थल कानून का हवाला देकर मुसलमानों का भरोसा जीतना.	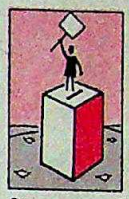 'एकला चलो' की नीति पर चलेगी. महाराष्ट्र में लोकसभा की दो और विधानसभा की तीन सीटों पर भाजपा को मात देने के लिए जनता दल से गुपचुप समझौता संभव. गुजरात में पहले की तरह सजपा का साथ मिलेगा. आंध्र प्रदेश में नांदयाल से प्रधानमंत्री नर्रसिंह राव के खिलाफ तेलुगु देशम शायद न लड़े. जैसा कि रामराव तेलुगु गौरव के सम्मान के लिए कह रहे हैं.	नर्रसिंह राव हर लोकसभा क्षेत्र में जाएंगे. दक्षिण के राज्यों में उनके अलावा केरल के मुख्यमंत्री करुणाकरन प्रचार करेंगे. महाराष्ट्र और गुजरात में शरद पवार और हिंदी क्षेत्र में नारायण दत्त तिवारी, अर्जुन सिंह, माधवराव सिंधिया और गुलाब नबी आजाद जिम्मा संभालेंगे.
प्रमुख विपक्षी दल के रूप में दायरा बढ़ाना. मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में अपनी बढ़त बनाए आडवाणी और ों द्वारा छोड़ी सीटें फिर ाध्वी ऋतंभरा को र अमेठी भी हथियाने की . अच्छा प्रदर्शन न कर ी आशंका से उपचुनाव को त्वपूर्ण बताना.	अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण शुरू न करा पाने के कारण राजनीति और धर्म का विचित्र घालमेल करने की कोशिश. धर्मस्थल विधेयक के बहाने बाकी पार्टियों को हिंदू विरोधी करार देना. महंगाई का मुद्दा उछालना. कश्मीर, पंजाब, असम की समस्याओं को प्रचार का केंद्रबिंदु बनाकर खुद को 'कांग्रेस के एकमात्र विकल्प' के रूप में पेश करने का प्रयास.	महाराष्ट्र में शिवसेना के अलावा किसी से नहीं. शिवसेना की ताकत का सहारा जरूरी. यह गठजोड़ इसलिए कायम क्योंकि इसके टूटने से इंका को फायदा होगा. वैसे, ठाकरे और देवीलाल करीब आ रहे हैं और ठाकरे ने बारामती से उम्मीदवार की घोषणा कर दी. उनके बेटे को 'बाघ अभयारण्य' के लिए जमीन मिलना पवार से उनके संबंधों का संकेत.	आडवाणी, वाजपेयी और मुरली मनोहर जोशी की त्रिमूर्ति मुख्य होगी. लेकिन उमा भारती और साध्वी ऋतंभरा प्रमुख क्षेत्रों का दौरा करेंगी. भाजपा शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्री अपने राज्यों में मोर्चा संभालेंगे.
मोर्चा उत्तर भारत में पिछड़ी जातियों व मुसलमानों पर पकड़ बनाए रखने की कोशिश. उत्तर प्रदेश पर ोर लेकिन बी.पी. और क्षेत्रों में बंटा हुआ. हर से ही आशा. अमेठी, में नहीं. बिहार में लालू के की परीक्षा. गया, बाढ़ से आशा.	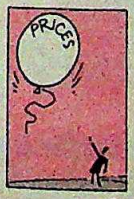 मंडल के मुद्दे को ही नर्रसिंह राव ने फीका किया पर आरक्षण नीति का श्रेय लेने की कोशिश. महंगाई, अवमूल्यन और उदारीकरण जैसी 'जन-विरोधी' नीतियों के लिए इंका की आलोचना की. उत्तर प्रदेश में भाजपा की काट के लिए जनता दल-सजपा गठजोड़ को धर्मनिरपेक्ष बताना. भाजपा सरकार की बदले की कार्रवाइयों की आलोचना.	उत्तर प्रदेश में सजपा से सहयोग संभव क्योंकि पिछली बार अलग-अलग लड़ने से मुसलमान और पिछड़ी जातियों का वोट बंटा. महाराष्ट्र और गुजरात में भाजपा-शिवसेना गठजोड़ को मात देने के लिए जनता दल इंका के साथ तालमेल कर सकता है. लेकिन दूसरे राज्यों में राष्ट्रीय मोर्चा-वाम मोर्चा साथ-साथ चलेगा.	हमेशा की तरह वी.पी. सिंह ही मुख्य होंगे. लालू यादव, रामविलास पासवान और रामराव प्रमुख क्षेत्रों का दौरा करेंगे. अजित सिंह जाट क्षेत्र में ही केंद्रित रहेंगे और बीजू पटनायक ओडीसा में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

वादों की परख

इंका, जद पैर जमाने के फेर में

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह तकरीबन हर जगह दोहराते नहीं थकते कि "हमें पूरे पांच साल के लिए जनादेश मिला है." लेकिन राज्य से लोकसभा की तीन और विधानसभा की 16 सीटों के लिए नवंबर में हो रहे उपचुनाव सत्तारूढ़ भाजपा की कसौटी साबित होने जा रहे हैं. पिछले जून के चुनाव में हतबल हुई इंका अपनी खोई प्रतिष्ठा हासिल करने को बेताब है तो दोफाड़ होने के बाद अल्पसंख्यकों तथा कुछ हद तक पिछड़ों के वोटों तक सिमटकर रह गया जनता दल अपना आधार बढ़ाने का यह सुनहरा मौका चूकना नहीं चाहता.

पिछले आम चुनाव में भाजपा को मुख्यतः राम जन्मभूमि आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने और मंडल मुद्दे के खिलाफ अगड़ी जातियों में हुई एकजुटता के कारण 33 फीसदी वोट मिल गए थे. नतीजतन, लोकसभा की 85 में 50 और विधानसभा की 404 में से 211 सीटें उसे मिलीं.

पर मंदिर निर्माण के मुद्दे पर पार्टी का ढुलमुल रवैया ही उसके लिए घातक साबित होने जा रहा है. लगता है भाजपा अबकी बार वोटों की वैसी फसल नहीं काट सकती. कल्याण सिंह सरकार ने राज्य की सरकारी नौकरियों में पिछड़ों को 27 प्रतिशत आरक्षण देने की बाबत पिछली यादव सरकार का जारी किया अध्यादेश मियाद बीतने पर फिर लागू करके भी आफत मोल ले ली है. इससे मंदिर निर्माण की समर्थक और आरक्षण विरोधी अगड़ी जातियां नाखुश दिखती हैं.

भाजपा भले ही 'हमें फिर परखें' कहने की स्थिति में नहीं है पर इंका की भी अपनी समस्याएं हैं. केंद्रीय और राज्य स्तर पर नेतृत्व और संगठन के मामले में पार्टी कमजोर है. फिर विभिन्न धड़ों में सिर फुटौवल भी जारी है. फिर भी इंका भाजपा से खफा मुसलमानों और अगड़ों में से खासकर ब्राह्मणों के वोट फिर पाने की उम्मीद कर सकती है. केंद्र सरकार की नौकरियों में पिछड़ों के आरक्षण के फैसले से उसने जनता दल से मंडल मुद्दे का तुरुप भी छीन लिया है.

जनता दल और समाजवादी जनता पार्टी अभी इसी उधेड़बुन में हैं कि उन्हें अलग-अलग चुनाव लड़ना चाहिए या एक होकर. हालांकि जद के राज्य अध्यक्ष कैलाशनाथ सिंह यादव कहते हैं, "यदि

कल्याण सिंह: परीक्षा की घड़ी

उपचुनाव सत्तारूढ़ भाजपा के लिए कसौटी साबित होने जा रहे हैं तो इंका के लिए खोई प्रतिष्ठा हासिल करने का मौका और जद के लिए आधार बढ़ाने का अवसर

मुलायम सिंह यादव: अनिश्चय में

मुलायम सिंह का बड़बोलापन न [illegible] हम चाहेंगे कि दोनों दलों में [illegible] जाए." हालांकि इन दोनों का अल्पसंख्यकों और पिछड़ों में खासा प्रभाव है पर अनिर्णय की स्थिति बने रहने से वे राज्य की राजनीति में शायद ही विकल्प के रूप में पेश कर पाएं.

वैसे, ये दोनों पार्टियां यह [illegible] पाल सकती है कि उपचुनाव ज्यादातर लोकसभाई और विधानसभा सीटें गैर-भाजपाई इलाके में पड़ती हैं. लोकसभा की सीटों में राजीव गांधी की सजाई-संवारी हुई अमेठी और मुलायम सिंह का दुर्ग इटावा प्रमुख हैं. तीसरी है बुलंदशहर है. मेरठ में कानूनी अड़चन के कारण चुनाव नहीं हो रहा.

अमेठी अभी भी राजीव गांधी का है. उनकी मृत्यु के बाद इलाके के [illegible] सोनिया को उम्मीदवारी के लिए [illegible] उनके पास अब तक 30 प्रतिनिधि [illegible] भेज चुके. राज्य इंका ने भी [illegible] उनके नाम की सिफारिश की. पर [illegible] न हुईं. अब सतीश शर्मा यहां से [illegible] उम्मीदवार बनाए गए हैं.

इटावा में पिछड़ी जातियों के [illegible] फीसदी मतदाता (जिनमें यादव [illegible] प्रतिशत हैं) होने से मुलायम सिंह [illegible] भले ही मजबूत दिखती हो लेकिन [illegible] लड़ाई में इंका उन्हें लोहे के चने [illegible] सकती है. वजहः अगड़ी जातियां [illegible] यादव पिछड़ी जातियां इंका के [illegible] सकतीं है. इसी क्षेत्र की जसवंत [illegible] विधानसभा सीट भी मुलायम [illegible] लिए वाटरलू साबित हो सकती [illegible] बुलंदशहर से इंका के इम्तियाज [illegible] खां को सीधी टक्कर देने के लिए [illegible] दल और सजपा में बातचीत चल [illegible]

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की दु[illegible] लोकसभा सीट पर जाटों के [illegible] फीसदी में से 2 से 3 फीसदी वोट [illegible] उधर होने पर जनता दल भाजपा [illegible] टक्कर में आ सकता है, बशर्ते [illegible] मुसलमानों के पूरे 19 फीसदी वोट [illegible] मिलें. लेकिन इंका की कोई हस्ती [illegible] उतरे तो तस्वीर दूसरी [illegible] हो सकती है.

कुल मिलाकर [illegible] भाजपा के लिए [illegible] आसान नहीं है [illegible] बताएंगे कि क्या [illegible] को जून में [illegible] पूरे पांच [illegible] के लिए [illegible] मिला था.

—[illegible]

उत्तर प्रदेश — 1991 आम चुनाव के परिणाम

कुल सीटें 85	इंका	जद	भाजपा	झामुमो
वोटों का प्रतिशत	18.1	21.6	32.8	8.3
वोटो का रुझान	-13.7	-14.3	+25.2	-1.6
सीटें मिलीं	5	22	50	0

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किले में दरार

के लिए जीत आसान नहीं

पिछले आम चुनाव में वाममोर्चा-राष्ट्रीय मोर्चा गठबंधन की जीत में पूर्ण भूमिका निभाने वाले लालू प्रसाद का किला आगामी उपचुनावों में दिखता है. खासकर पिछड़ों और नुमानों में तो उनकी लोकप्रियता घटी जनता दल भी भीतरी गुटबंदी से ार पड़ता जा रहा है. इसके अलावा, नौकरशाही ने चुनावी नतीजों की हेराफेरी में उनकी मदद की थी, वह लालू की जरूरत से ज्यादा 'दखलंदाजी' वह से उनके खिलाफ हो गई है.

ताकि लोकसभा के तीनों निर्वाचन —मधेपुरा, बाढ़ और गया—में पिछड़ों ाहुल्य है लेकिन इन सीटों में टिके जनता दल के लिए मुश्किल होगा. निर्वाचन क्षेत्र को ही लें. उपचुनावों की ा होते ही सारी पार्टियों की निगाहें क्षेत्र की ओर लग गईं. कुर्मी नेता कुमार मई के आम चुनाव में यहां से दल प्रत्याशी थे पर एक निर्दलीय रवार की हत्या हो जाने से इस सीट नाव स्थगित हो गया था. उन्होंने में भारी मतों से यह सीट जीती थी.

हालात बदल गए हैं. का कहना है कि आम चुनाव से पहले ने जो मंडल लहर थी, उसने दो कट्टर जातियों—कुर्मी यादव को साथ ला था. लेकिन बाद में ों ने महसूस किया कि के मुख्यमंत्री बनने के राजनीति और प्रशासन का ही 'यादवीकरण' ा है. इधर, लालू की पयत है कि नीतीश ने निर्वाचन क्षेत्र के लिए भी नहीं किया. इसके वे राज्य की ीति में आने की ग की महत्वाकांक्षा से रे हुए हैं.

किन लालू के लिए ामभा की 12 सीटों के ज्यादा अहमियत है. इनमें से 3 सीटें जनता दल के पास, 3 झारखंड मुक्ति मोर्चे (झामुमो) और 2 भाजपा के पास थीं. 325 सीटों वाली विधानसभा में फिलहाल उनकी पार्टी के पास 122 सीटें हैं. उनकी अल्पमत सरकार झामुमो (15), माकपा (22), भाकपा (6) और 31 निर्दलीय सदस्यों के समर्थन की बैसाखी पर टिकी है.

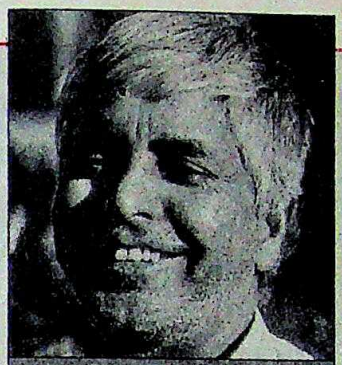

लालू यादव

लालू यादव के दिनोदिन कमजोर होते किले के मुकाबले इंका इस बार अपनी स्थिति सुधारने की कोशिश कर रही है तो भाजपा राम लहर का ही असर मान रही

सीताराम केसरी

जगन्नाथ मिश्र

पार्टी सूत्रों का कहना है कि लालू सरकार को समर्थन दे रहे वामपंथी और क्षेत्रीय दल यादव के शासन करने के तौर-तरीके से नाखुश हैं. भाकपा का आरोप है कि लालू सरकार अपने वादे पूरे करने में असफल रही है और राज्य पूरी तरह अपराधी तत्वों की गिरफ्त में है, जो समांतर प्रशासन चला रहे हैं. इस तरह, वामपंथी खेमे का मूड धीरे-धीरे लालू सरकार के खिलाफ होता जा रहा है.

प्रशासकीय अधिकारी भी लालू से नाराज हैं. पिछले पखवाड़े आईएएस अधिकारियों ने एक बैठक कर यादव के रवैए पर नाराजगी जाहिर भी की.

उधर, पिछले आम चुनाव में बुरी तरह मात खाने वाली इंका इस बार अपनी स्थिति सुधारने के लिए कमर कस रही है. हालात का जायजा लेने और चुनावी रणनीति तय करने के लिए पिछले पखवाड़े हुई बैठक में केंद्रीय नेताओं—गुलाम नबी आजाद और विट्ठल नरहरि गाडगिल ने पार्टी कार्यकर्ताओं से तीनों लोकसभा और 12 विधानसभा सीटें जीतने के लिए 'करो या मरो' का आह्वान किया.

वैसे, इस आह्वान के असरकारी होने की संभावना कम ही है, क्योंकि जगन्नाथ मिश्र और सीताराम केसरी की अगुआई में पार्टी जातीय आधार पर बंटी हुई है. लेकिन मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने की केंद्र सरकार की घोषणा से पार्टी की चुनावी संभावनाएं सुधरी हैं, विशेषकर उन पिछड़ी जातियों में जो 'पिछड़ों में अगड़ों' को ही बढ़ावा देने के लिए लालू के रवैए से हताश हो चली थीं.

पर भाजपा अभी भी यहां के जनमानस पर राम लहर का असर मानकर चल रही है. कुर्मी बहुल क्षेत्र बाढ़ से उसने इस बार भी एक बड़े कुर्मी नेता को मैदान में उतारने का फैसला किया है, क्योंकि उस लगता है कि पिछली बार उसके उम्मीदवार का स्थानीय आधार नहीं था.

बहरहाल, 16 नवंबर को होने वाले ये उपचुनाव पिछड़ी जातियों में दरार का प्रतीक तो हैं ही, बिहार में लालू यादव और जनता दल की लोकप्रियता की परीक्षा भी साबित होंगे. —फरजंद अहमद

बिहार — 1991 आम चुनाव के परिणाम

कुल सीटें 54

	इंका	जद	भाजपा	समता
वोटों का प्रतिशत	22.9	33.0	17.5	5.2
वोटों का रुझान	- 5.2	- 4.7	+ 5.8	+ 2.0
सीटें मिलीं	2	28	5	6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपहरण का नाटक

अनुत्तरित प्रश्नों की भूलभुलैया

मुंबई के चार हीरा व्यापारी जिस आसानी से छूटे और उनके एक निर्यात प्रबंधक को सीबीआई ने जिस ढंग से हिरासत में लिया उससे इस रहस्यमय नाटक की गुत्थियां और उलझ गई

सभी फोटो: अरुण जेतली/हिंदुस्तान टाइम्स

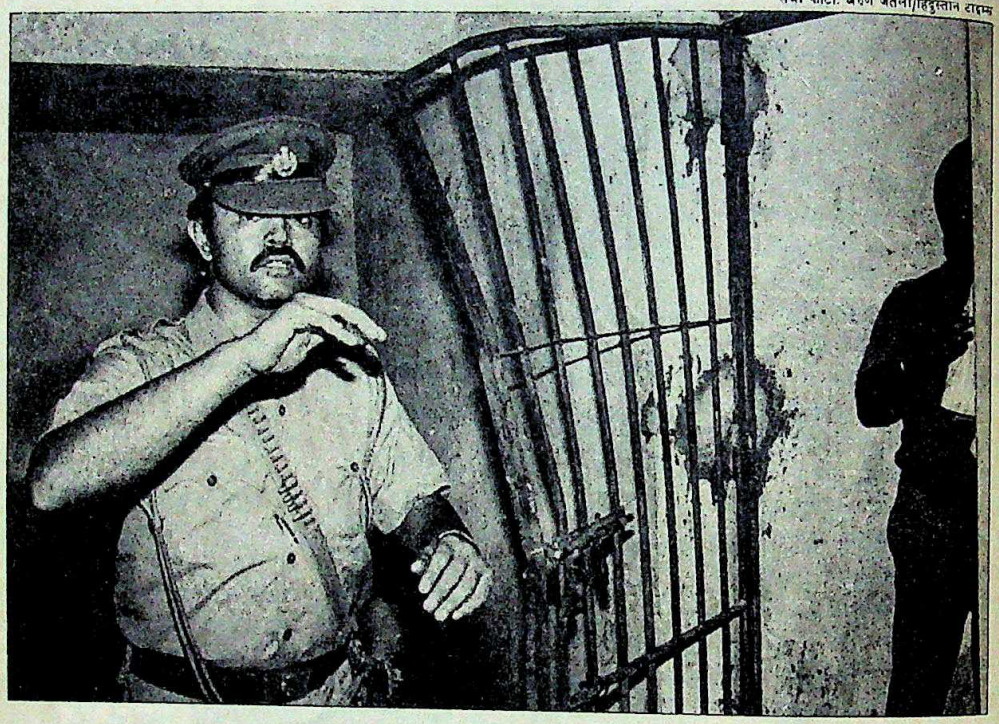

—राहुल पाठक

चार हीरा व्यापारियों के अपहरण की कुछ गुत्थियां सुलझ चुकी हैं, फिर भी साजिश का समूचा खाका दिन प्रति दिन उलझता प्रतीत हो रहा है. 14 और 15 सितंबर को नई दिल्ली के पांच सितारा होटलों से अपहृत मुंबई के ये व्यापारी अपने-अपने घर सुरक्षित लौट चुके हैं. और अब गुत्थियां सुलझाने में सीबीआई अकेली ही जुटी दिखती है.

पिछले पखवाड़े पांच लोग और ड्राइवर बाबूलाल दक्षिण दिल्ली इलाके के उस मकान से किसी तरह निकल भागे जहां उन्हें कैद करके रखा गया था. लेकिन इनमें से एक हीरा व्यापारी की फर्म के निर्यात प्रबंधक अनुपम कुलकर्णी की बाद में हुई गिरफ्तारी ने मामले को और पेचीदा बना दिया है.

अत्यंत चालाकी से बनाई गई योजना के अनुसार गौतम मेहता, मिलन और सौनक पारिख, राजेश मेहता तथा कुलकर्णी सहित ड्राइवर बाबूलाल को सुखदेव विहार के उस बंगले में ले जाया गया, जहां वे बंदी बना लिए गए थे. इसके बाद पुलिस, सीबीआई और इंटरपोल ने

कुछ चुभते सवाल

- **किसी की नजर में आए बिना क्या कुलकर्णी दो दिनों तक गुम हो सकता था? और बाबूलाल चुप क्यों रहा?**
- **क्या हीरा व्यापारियों को बिना फिरौती लिए छोड़ा जा सकता था?**
- **व्यापारी अब कुलकर्णी को बचाने की अदालती लड़ाई में इतनी सहायता क्यों दे रहे हैं?**
- **क्या व्यापारियों ने 'हवाला' के जरिए फिरौती की रकम अदा की?**
- **अगर आरोप सही हैं, तो कुलकर्णी चौधरी के लिए काम कर रहा था या हीरा व्यापारियों के लिए?**

■ अपहृत व्यापारियों ने ग्रिल मोहन मुक्ति पाई : आसानी से रिहाई

उनकी खोज के लिए जमीन-आसमान कर दिया पर वे थाने के बिलकुल तहखाने में ही कैद रहे.

3 अक्तूबर को पड़ोस के लोगों निढाल और भयभीत छह लोगों तहखाने से निकलते देखा पर अपहरण साजिश को अंजाम देने वाला रवि चौ नदारद था. सीबीआई ने तत्काल अपहृत व्यक्तियों से पूछताछ की. उनसे मिले जवाब पर किसी को यकीन न हो सका.

व्यापारियों की रिहाई जिस तरह उससे फिरौती के बारे में संदेह ह स्वाभाविक है क्योंकि रिहाई से एक पहले ही निगरानी कर रहे पांचों पहरे गायब हो गए थे. यह बात भी चौं वाली है कि षड्यंत्र पर 2 लाख रु अधिक के खर्च के बाद चौधरी ने इतनी आसानी से जाने दिया होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुपम कुलकर्णी

घर का भेदी

तीस वर्षीय अनुपम कुलकर्णी से ऐसे अपराध की आशा नहीं की जा सकती—जिसका आरोप सीबीआई उस पर लगा रही है. मुंबई के भीड़भाड़ वाले दादर इलाके में एक कमरे के मकान में रहने वाले कुलकर्णी ने मध्यम वर्ग की जिंदगी जी है.

उसके पड़ोसी इस बात को नहीं मानते कि वह रवि चौधरी के षड्यंत्र में शामिल था. कुलकर्णी के मकान मालिक, शिवसेना नेता सुधीर जोशी भी उसे निर्दोष करार देते हैं, "मैंने उसे हमेशा ही शांत और मितभाषी पाया है. वह इस तरह के काम में शरीक नहीं हो सकता." लेकिन उसके पिता जयंत कुलकर्णी कहते हैं, "अनुपम महत्वाकांक्षी रहा है. उसने कारोबार शुरू करने के लिए 1989 में सिंगापुर की एक पार्टी से भी भेंट की थी."

विज्ञान का स्नातक, कुलकर्णी 'ब्यूटीफुल डायमंड्स' के लिए डेढ़ वर्षों से काम कर रहा था. कंपनी को उस पर विश्वास था और उसे कई महत्वपूर्ण काम सौंपे जाते थे. शायद इसीलिए कंपनी उसके बचाव की कोशिश कर रही है. कंपनी के काम से वह सिंगापुर की यात्रा कर चुका है. और कहा जाता है कि चौधरी से उसका संपर्क इस नाटक के शुरू होने के समय हुआ.

ऐसे में 4 अक्तूबर को कुलकर्णी की गिरफ्तारी के बाद मिले संकेतों ने मामले को काफी उलझाकर रख दिया है. पहली बात तो यह कि गिरफ्तारी ही काफी चुपचुप रही. सीबीआई के अनुसार वह इसका ढोल पीटकर जांच में कोई बाधा नहीं आने देना चाहती थी. नई दिल्ली में अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश की अदालत में सीबीआई के अधिकारियों ने यह कहकर सनसनी फैला दी कि अपहरण के तीन दिन बाद कुलकर्णी दो दिन के लिए सिंगापुर गया था. जिस समय बाकी अपहृत लोग तहखाने में दिन गिन रहे थे, उसने गौतम मेहता के नाम पर यात्रा की और संभवतः उनके अंतरराष्ट्रीय क्रेडिट कार्ड का उपयोग करके छह लाख रु. से अधिक की रकम खर्च की. यह काम काफी अपहृत लोगों की नजर में आए बिना कैसे किया गया, इस बात के मद्देनजर मामले का उलझाव और बढ़ जाता है. सीबीआई के वकील ने यह दलील दी कि सिंगापुर से इस बात के ठोस सबूत मिल रहे हैं कि कुलकर्णी ने फर्जी पासपोर्ट के सहारे यात्रा की. लेकिन नई दिल्ली स्थित सिंगापुर उच्चायोग इस बात पर कायम है कि 16 से 19 सितंबर तक गौतम मेहता नामक किसी व्यक्ति को वीसा नहीं दिया गया.

फिरौती वाले पहलू की भी जांच की जा रही है. लेकिन मुश्किल यह है कि फिरौती की रकम अगर दी भी गई होगी तो व्यापारी वर्ग खुलकर जानकारी देने से कतराएगा. रिहाई के अगले दिन आयोजित संवाददाता सम्मेलन में व्यापारियों के संबंधी भी दावा कर रहे थे कि वे रिहाई से अचंभे में हैं. मिलन के पिता कवीन पारिख ने कहा, "हमें भी हैरानी है कि उन्हें छोड़ कैसे दिया गया. लेकिन सचाई यही है कि हमने फिरौती के नाम पर एक पैसा भी नहीं दिया. क्योंकि कोई रकम मांगी ही नहीं गई." उलझाव

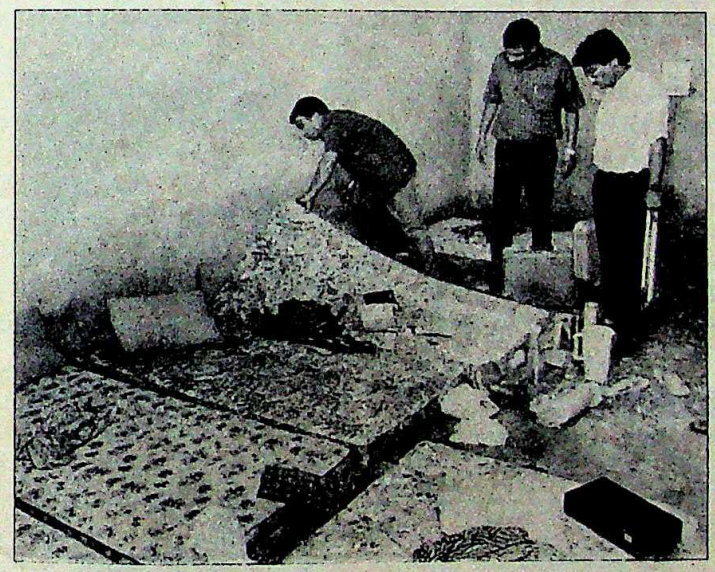

अपहृतों की कैद वाला तहखाना

इस बात से पैदा होता है कि शायद अपहर्ता गिरोह के कुछ सदस्यों को विदेश में पकड़ लिया गया था. व्यापारियों के अनुसार, अपहर्ताओं ने उनसे कहा था कि उनके आदमियों को छोड़ दिए जाने पर उन्हें भी रिहा कर दिया जाएगा.

अपहरण का घटनाक्रम पत्र-पत्रिकाओं में छपे घटनाक्रम से अलग नहीं है. सबसे पहले गौतम मेहता का अपहरण किया गया. चौधरी उन्हें 14 सितंबर की रात को गृह कहकर सुखदेव विहार ले गया कि वह उन्हें फेरुज्जी फिनांजिआरिया कंपनी के 'चीफ एक्जीक्यूटिव' फेरुज्जी जूनियर से मिलवाएगा. वहां पहुंचते ही पांच हथियारबंद पहरेदार मेहता को तहखाने में ले गए. राजेश मेहता, कुलकर्णी और ड्राइवर बाबूलाल को अगली सुबह उसी जगह ले जाया गया. फिर मिलन और सौनक पारिख की बारी आई. जांच एजेंसियां शुरू में तो यही मानती रहीं कि अपहृत व्यापारियों को उत्तर प्रदेश में ही कहीं रखा गया है. राज्य भर में करीब 60 जगहों पर छापे मारे गए. यह मानकर चला गया कि कोई 'सिरफिरा' ही व्यापारियों को नई दिल्ली में रखेगा. लेकिन हुआ ठीक उलटा. सुखदेव विहार का वह मकान नसीर खां नामक व्यक्ति ने किराए पर लिया था जिसका हुलिया चौधरी से काफी मिलता-जुलता था. उसने छह महीने के अग्रिम किराए के तौर पर 1.38 लाख रु. दे डाले. उसके बाद मकान के तहखाने को पूरी तरह बदल दिया गया—सारे रोशनदान बंद कर दिए गए और लोहे के ग्रिल लगाकर अलग-अलग कक्ष बनाए गए. अपहृत व्यापारियों का कहना है कि उन्होंने फिर कभी चौधरी को नहीं देखा. 2 अक्तूबर को पहरेदारों ने सूचना दी कि "विदेश में उनके आदमी छोड़ दिए गए हैं." व्यापारियों को यह बताया गया कि अगले दिन उन्हें छोड़ दिया जाएगा. उसके बाद पहरेदार गायब हो गए. घंटों विचार करने के बाद छहों व्यक्ति कैदखाने के ग्रिल को मोड़ने में कामयाब रहे. आजाद तो सभी हुए पर उनमें से एक के लिए वह आनंद क्षणिक रहा. ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोमानियाई राजनयिक

बदले में अपहरण

लंदन के सिख उग्रवादी संगठन का हाथ होने का संदेह

भारतीय विदेश मंत्रालय में आज कई चेहरे शर्म से लाल हो गए होंगे. भारत में रोमानिया के प्रभारी राजदूत लिवियू रादू को करीब दो महीने से राजनयिक भाषा में झिड़कियां दी जा रही थीं. रोमानिया में भारतीय राजदूत जूलियो रिबेरो को अगस्त में सिख उग्रवादियों के हमले से रोमानिया की सुरक्षा एजेंसियां नहीं बचा पाई थीं.

लेकिन पिछले सप्ताह नई दिल्ली में जब रादू का अपहरण हो गया तो भारतीय अधिकारियों के लिए शर्मिंदा होने की बारी थी. पुलिस को संदेह है कि रादू का अपहरण रोमानिया में रिबेरो पर हमले के दौरान सिख उग्रवादियों की हत्या का बदला सधाने के लिए किया गया है. यह अपहरण शायद उसी का बदला है.

रिबेरो पर हमले के बाद रोमानियाई राजनयिकों की सुरक्षा बढ़ा दी गई थी. रोमानियाई दूतावास पर और रादू के जोर बाग स्थित निवास पर छह-छह सिपाही तैनात किए गए. यह खास तौर से कहा गया कि रादू को निजी गार्ड नहीं दिया जाए. रादू कार खुद चलाते थे.

अपहर्ताओं की सफेद मारुति कार और रादू की काली डासिया कार सुंदर नगर इलाके से पुलिस ने बरामद कर ली है. रादू इसी रास्ते से रोज वसंत विहार स्थित अपने दफ्तर जाते थे. 9 अक्तूबर की सुबह 8 बजकर 5 मिनट पर जब वे अपने निवास से निकले तब अपहर्ता इंतजार कर रहे थे. रादू जब जोर बाग मार्किट लेन की तरफ मुड़कर लोदी रोड की ओर बढ़े तभी करीब 100 गज दूर सफेद मारुती कार हरकत में आई और वह रादू की कार की बाईं तरफ से आगे बढ़ी. रादू के परिचित फ्रांसीसी राजनयिक की कार उनसे पीछे ही थी.

जोर बाग के निवासियों ने जोर बाग मार्किट लेन और लोदी रोड के मोड़ पर सुरक्षा के लिए एक बैरियर लगा रखा है. यह बैरियर रादू के लिए नुकसानदेह साबित हुआ. जैसे ही यह बैरियर नीचे आया, मारुति, डासिया और फ्रांसीसी राजनयिक की कार रुक गई. चश्मदीदों का कहना है कि मारुति से पांच आदमी निकले. उनमें से एक बैरियर के पास खड़ा रहा और बाकी दो रादू की कार की ओर बढ़े. एक आदमी पगड़ी पहने हुए था और एके-47 लिए हुए था. दूसरे के हाथ में पिस्तौल थी. दोनों आदमी रादू की कार में जबरन घुस गए. अतिरिक्त पुलिस आयुक्त निखिल कुमार के अनुसार एक आदमी ने रादू को बंदूक दिखाई और इसकी नोंक पर दोनों व्यक्ति उनकी कार में जो घुसे. इसके तुरंत बाद ही [illegible] को उठा लिया गया ताकि डासिया मारुति आगे बढ़ सकें.

लेकिन पुलिस को अपहरण की सूचना करीब डेढ़ घंटे बाद नौ बजकर पांच मिनट पर मिली. यह सूचना [illegible] है. इंडियन मंत्रालय के माध्यम से आई. तलाश का काम साढ़े दस बजे तभी शुरू हो पाया। एक चश्मदीद ने यह खबर दी कि रादू की कार का पीछा करने वाली मारुति [illegible] हुआ. वे 87 नंबर डीडीडी-4747 [illegible] बाद में पुलिस ने पाया [illegible] नंबर फर्जी है.

रादू: सुरक्षा में चूक

चूक कबूल करते [illegible] निखिल कुमार कहते [illegible] "बारदात के दो घंटे [illegible] सड़कें जाम करके [illegible] पड़ताल करने का [illegible] फायदा नहीं था." [illegible] मंत्रालय, पुलिस मुख्यालय और विदेश मंत्रालय [illegible] कई बैठकें हुईं. दोपहर [illegible] पड़ोसी राज्यों को [illegible] भेजा गया कि दोनों [illegible] की खोजबीन की जाए.

इस बीच रादू [illegible] अपहरण करने का [illegible] करने वाले उग्र [illegible] संगठन खालिस्तान [illegible] लिबरेशन फ़ोर्स ने [illegible] बने रादू का एक [illegible] जारी किया है और [illegible] की है कि जनरल [illegible] हत्याकांड के अभियुक्त [illegible] तथा रोमानिया में [illegible] बनाए गए सिख उग्रवादियों [illegible] को रिहा किया जाए.

दूसरी ओर रादू [illegible] पत्नी ने भारत सरकार [illegible] चेतावनी दी है कि [illegible] उनके पति को रिहा [illegible] कराया तो वे 15 अक्तूबर [illegible] से अनशन पर [illegible] जाएंगी. —राहुल

चार्ट: बी.के. शर्मा

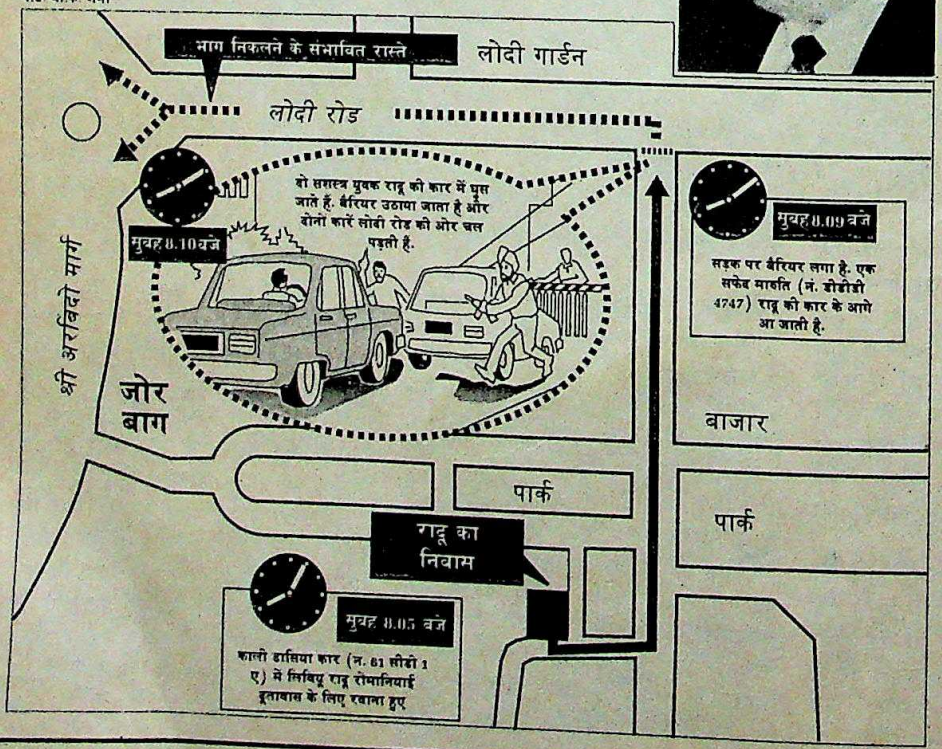

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामनाथ गोयनका

उम्र बीती लड़ते-लड़ते

एशियाई अखबारों की दलदली जमीन में भारत की जमीन पेक्षाकृत पुख्ता है. यहां सत्ता में बैठे लोगों के तमाम हमलों के बावजूद प्रेस की आजादी का परचम लहराता रहा है. इसका श्रेय कुछ हस्तियों को ही दिया जाएगा जो प्रेस की आजादी के लिए हरदम लड़ती रहीं. ऐसी ही हस्तियों में एक चमचमाता नाम रामनाथ गोयनका का है. इंडियन एक्सप्रेस प्रकाशन समूह के अध्यक्ष रामनाथ गोयनका का निधन 5 अक्तूबर 1991 को हुआ. वे 87 वर्ष के थे. उनकी दिलेरी ने प्रेस की आजादी के झंडे को कभी झुकने नहीं दिया.

गोयनका की जिंदगी के शुरुआती वर्ष ऐसे नहीं थे कि अखबारी दुनिया के किसी बेताज बादशाह के बनने की उम्मीद की जाती. 18 अप्रैल 1904 को बिहार में मारवाड़ी परिवार में जन्मे गोयनका काशी विद्यापीठ से शिक्षा हासिल करके कलकत्ता चले आए और पुश्तैनी व्यापार में लग गए. पर कुछ कर दिखाने को बेताब गोयनका जल्द ही मद्रास पहुंचे और 1932 में इंडियन एक्सप्रेस से उन्होंने अखबार की दुनिया में कदम रखा.

आजादी के आंदोलन के दौरान गोयनका कांग्रेस में शामिल होकर महात्मा गांधी के अनुयायी हो गए. सूट छोड़कर खादी अपना ली और एक ऐसे प्रकाशन समूह की नींव रखी जिसका मकसद ही था सत्ता की अवज्ञा. पर उनका एक पैर व्यवस्था के भीतर भी रहा. वे मद्रास विधान परिषद के सदस्य रहे, भले ही ब्रिटिश सरकार द्वारा मनोनीत हों या कांग्रेस पार्टी द्वारा. वे कहते थे, "मेरा अखबार कांग्रेसी अखबार के तौर पर पैदा हुआ लेकिन मैंने इसे कभी पार्टी लाइन पर नहीं चलाया."

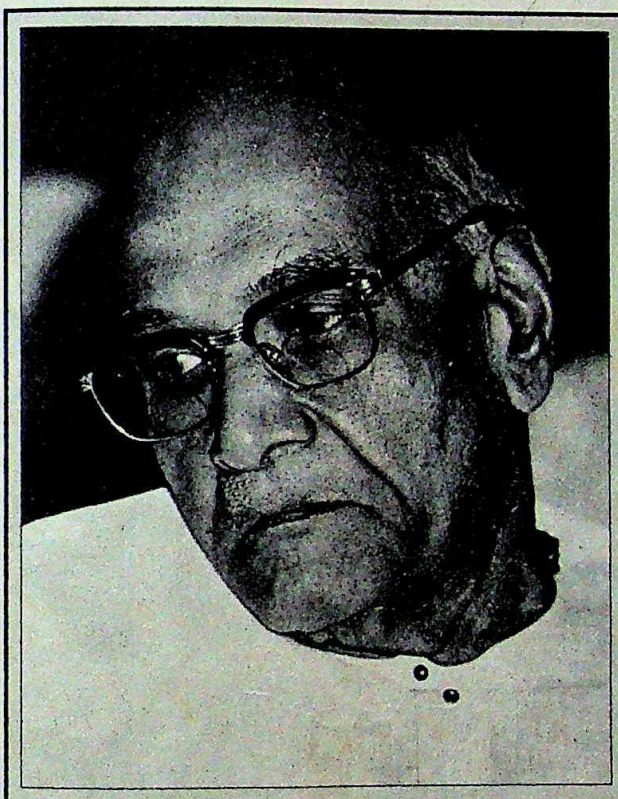

रामनाथ गोयनका
1904-1991

उनकी जिंदगी के सबसे बेहतर दिन वे थे जब 1975 में इंदिरा गांधी की सरकार ने इमर्जेंसी लगाई. गोयनका उन कुछ समाचारपत्र प्रकाशकों में से थे जिन्होंने कभी हथियार नहीं डाले. और 1977 में जब चुनाव की घोषणा हुई तो मुंबई में इंडियन एक्सप्रेस की इमारत में बना उनका पेंटहाउस राजनैतिक गतिविधियों का केंद्र बन गया. जनता पार्टी के नेता रोजमर्रा की रणनीति बनाने के लिए अक्सर वहां जमा होने लगे.

आपातकाल के बाद भी गोयनका का जेहादी उत्साह कई अभियान चलाता रहा— कभी इंदिरा गांधी और उनके बेटे संजय गांधी के खिलाफ तो कभी महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री अब्दुल रहमान अंतुले के खिलाफ. रिलायंस इंडस्ट्रीज और इसके सर्वेसर्वा धीरूभाई अंबानी, अमिताभ बच्चन, उनके भाई अजिताभ बच्चन, और अंततः राजीव गांधी, किसी को भी उन्होंने नहीं बख्शा. और बाद में बोफोर्स घोटाले पर उनके अखबार ने हल्ला बोला. इसी दौरान इंडियन एक्सप्रेस समूह का आकार भी काफी तेजी से बढ़ गया. अंग्रेजी दैनिक के 14 संस्करणों व भारतीय भाषाओं के कई प्रकाशनों के जरिए वह पूरे देश पर छा गया.

गतिशील व्यक्तित्व के धनी इस योद्धा में कई तरह के अंतर्विरोध भी थे. वे उस तरह के अखबार मालिक नहीं थे जो एक स्थायी, पेशेवर संगठन खड़ा कर पाते. हालांकि वे लोकतंत्र के लिए लड़े पर उनकी निजी शैली तानाशाही वाली थी. इसी वजह से अक्सर कई वरिष्ठ संपादक उनसे दूर ही रहते थे.

उनके बेटे भगवान दास की अकाल मृत्यु के बाद यह सवाल अनुत्तरित रहा कि एक्सप्रेस समूह का वारिस कौन होगा. इस साल के शुरू में गोयनका ने अपनी बड़ी बेटी के बेटे विवेक को अपने पुत्र और वारिस की हैसियत से गोद ले लिया था. इससे उनकी बहू सरोज गोयनका व दो अन्य नातियों—संयुक्त प्रबंध निदेशक मनोज संथालिया व उनके भाई अनिल की महत्वाकांक्षाओं को चोट पहुंची. इस बीच, पारिवारिक कलह की अटकलें लगाई जाने लगीं. पर गोयनका के निधन से कुछ पहले ही निदेशक मंडल की बैठक से यह अंदाज मिला कि सब कुछ शांति से निबट जाएगा. बैठक में सरोज के प्रस्ताव पर विवेक को अंग्रेजी व दूसरी भाषाओं के सभी संस्करणों का प्रबंध निदेशक बना दिया गया था.

नई पीढ़ी ने बागडोर संभाल ली है. इसलिए अब जरा भी संदेह नहीं है कि गोयनका का निधन भारत के सबसे ताकतवर प्रकाशन समूह के इतिहास का महत्वपूर्ण मोड़ साबित होगा. —एम. रहमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने ही समुदाय से तिरस्कृत 'किटी मेम साहब' अब फल बेचकर गुजारा करती हैं. वे उस अभागे सपने की जीती-जागती अवशेष हैं जिसका नाम मैकलुस्कीगंज है

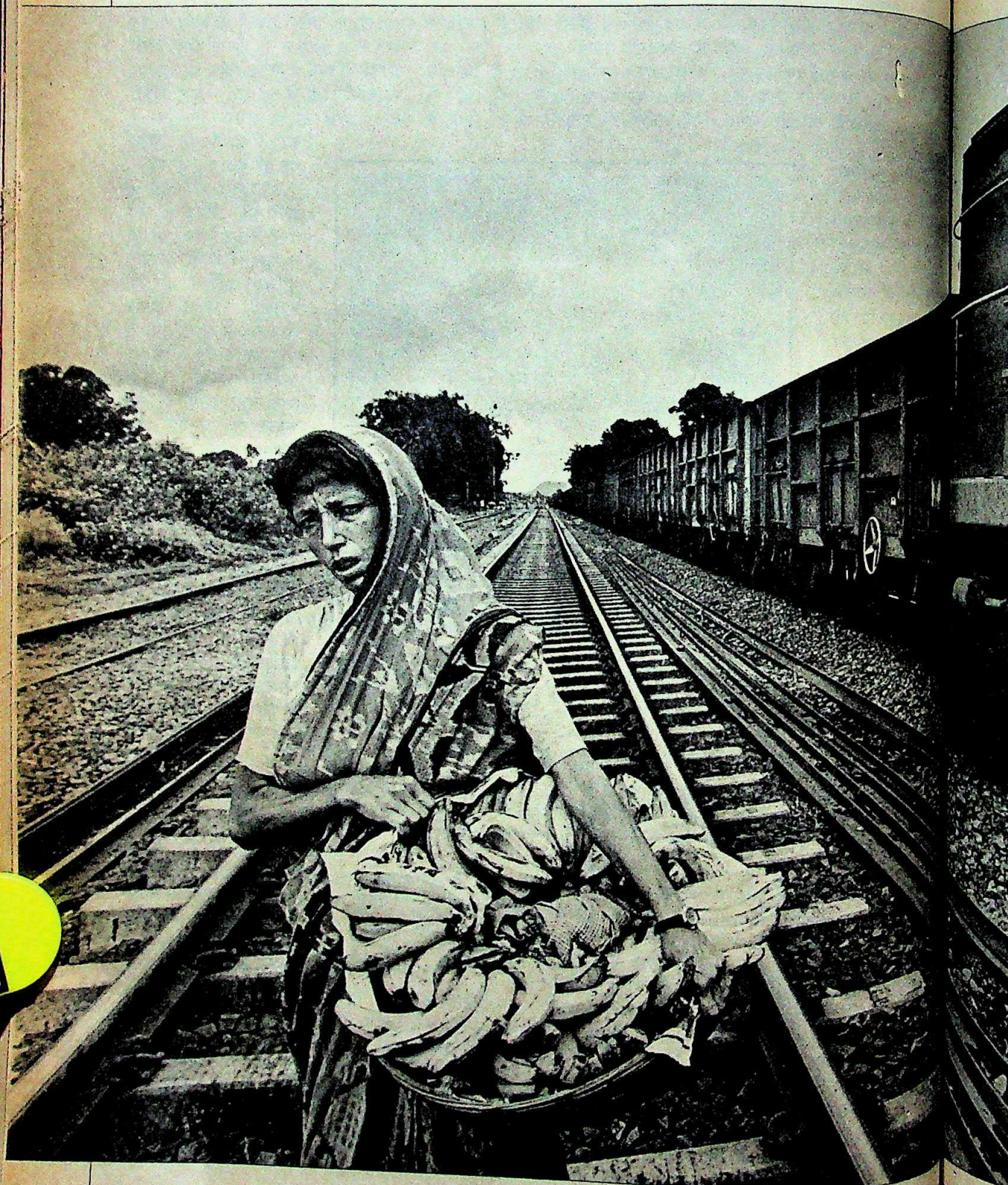

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेलयात्रियों को फल बेचकर गुजारा करने वाली किटी; और (नीचे दाएं) इवान विक्टर: अतीत के बंदी

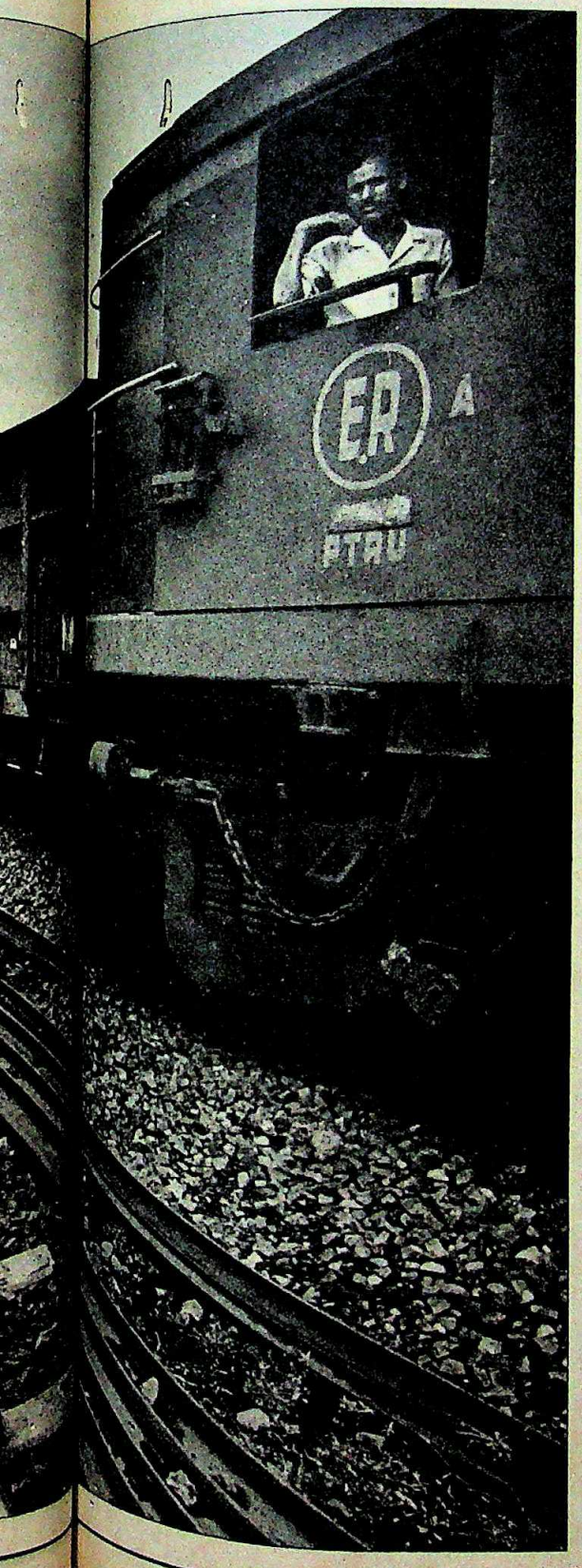

मैकलुस्कीगंज

दफन हुए सपनों के अवशेष

भारत में एंग्लो-इंडियन समाज को बिंदास, मस्त लोगों का समुदाय माना जाता रहा है. लेकिन वर्णसंकर होने की नियति ने उनके लिए पहचान का संकट खड़ा कर दिया. इसी से उबरने के लिए इस समुदाय ने छोटानागपुर की पहाड़ियों पर मैकलुस्कीगंज बसाया और इसे अपना होमलैंड जैसा बनाने का सपना देखा. यह सपना आज बिखरकर रह गया है.

—दिलीप बॉब और फरजंद अहमद

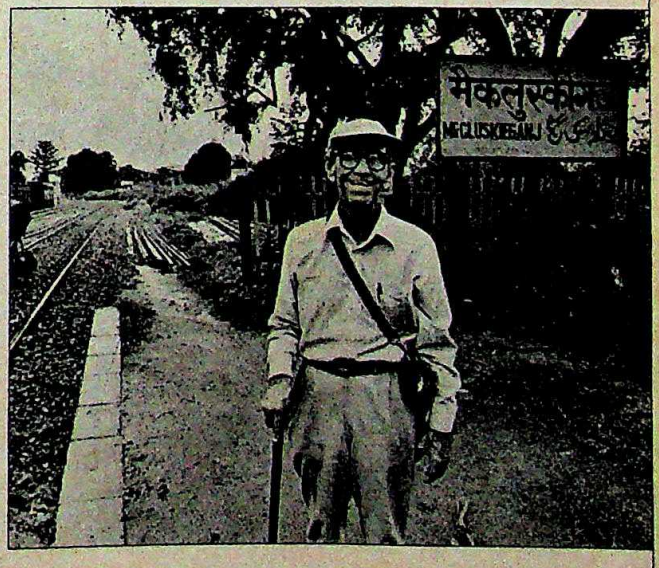

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही वह जगह है जहां एक सपने की मौत हुई बल्कि कई सपने यहां दफन हुए. इन्हें यहां की कब्रगाह में कतार से खड़े कब्र के पत्थरों के रूप में आज भी देखा जा सकता है. ये मौन शिलाएं उस सुंदर, सुनहरी महास्वप्न की कथा कहती हैं जो उतना ही जीवंत और हंगामाखेज था जितना इनके नीचे दफन हुए लोगों का इतिहास रहा है. अब तो शायद यह कब्रगाह भी गैरजरूरी हो गई है. अब एकाध स्वप्न ही दफन होने को बाकी है.

यहां बसने के लिए सबसे पहले आने वाले बाशिंदे लगभग आधी सदी पहले आए थे. लेकिन इतना समय गुजर जाने के बाद आज भी यह जगह कोयला ढोने वाली उन रेलगाड़ियों का पड़ाव भर ही है जो यहां से पड़ोस की कोयला खदानों में आया-जाया करती हैं. आज भी कलकत्ता से रेलगाड़ी में बैठकर इस निर्जन स्टेशन तक पहुंचना मुमकिन है. धचके खाती गाड़ी रुकती है तो धुएं के गुबार के बीच एक आश्चर्यजनक दृश्य उभरता है. धूल में लिपटी, फटेहाल एक औरत दिखती है जिसका रंग गोरा और आंखें नीली हैं. इस वनवासी क्षेत्र में यह दृश्य विस्मय में डाल देता है. नंगे पांव और चीथड़ा साड़ी में लिपटी यह महिला फल बेचकर गुजारा करती है. उसका नाम किटी टेक्ज़ेरा है. वह उस अभागे सपने की जीती-जागती अवशेष है जिसका नाम मैकलुस्कीगंज है.

ये एंग्लो-इंडियन पूरी तरह न भारतीय हैं, न ब्रिटिश बल्कि

अपने सुनसान बंगले के दरवाजे पर मेरी;
और (नीचे बाएं) कब्रगाह: कई हसरतें दफन

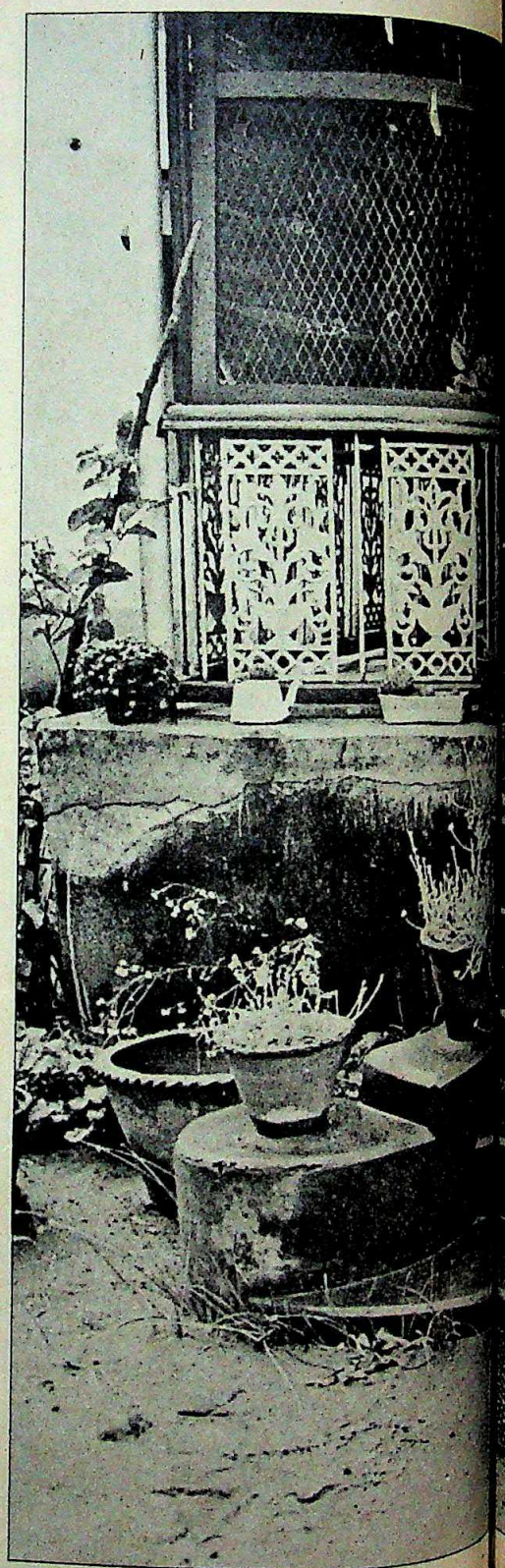

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब जो यहां बच गए हैं वे अतीत के बंदी हैं. जैसे मेरी मॉरिस. इनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है पर वे यहीं रहना चाहती हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूडी बीमार मां डोरोथी (नीचे बाएं) की सेवा और कुत्तों के खंडहरों की देखभाल में अपना समय बिताती हैं

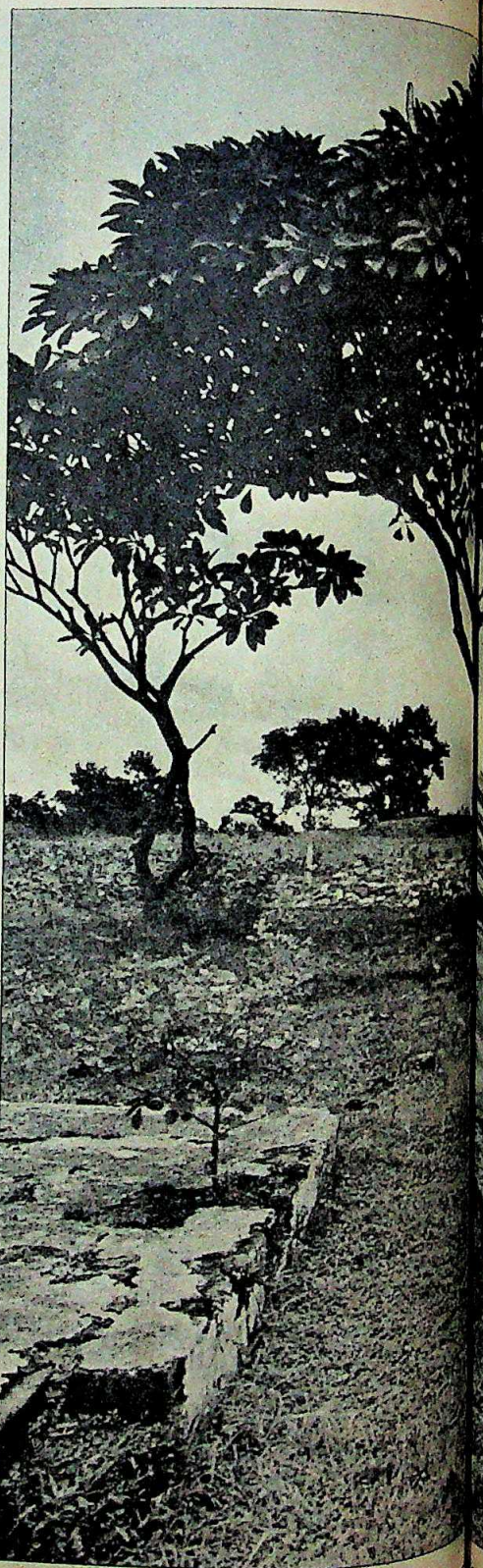

दोनों ओर से उन्हें अवमानना ही मिली. उनकी नियति का नियमन उनके अंग्रेज आकाओं ने किया और मुख्यत: वे देश भर में फैली रेलवे कॉलोनियों में सिमटे रहे. पहचान के इसी संकट की उपज है मैकलुस्कीगंज जिसे एंग्लो-इंडियन लोगों ने अपना घर बनाने के मकसद से चुना. इसके संस्थापक आयरिश और भारतीय मां-बाप की संतान टिमोथी मैकलुस्की थे. 1936 तक लगभग 400 एंग्लो-इंडियन परिवारों ने मैकलुस्कीगंज में अपनी जमा पूंजी लगाई.

छोटानागपुर की पहाड़ियों में 1,500 फुट की ऊंचाई पर स्थित यह जगह आदर्श शरणस्थली लगती है. मैकलुस्की ने जो 20,000 एकड़ जमीन पट्टे पर ली वह बेहद उपजाऊ थी. लेकिन आज मैकलुस्कीगंज में बमुश्किल 15 एंग्लो-एडियन परिवार ही रह गए हैं. दरअसल, वे कहीं जा नहीं सकते. यह अभिशप्त जीवन जीने की विवशता की सबसे ताजा और सटीक प्रतीक हैं 35 वर्षीया किटी टेक्ज़ेरा. उन्हें स्थानीय लोग किटी मेमसाहब कहते हैं. वे कहती हैं. "मैकलुस्कीगंज की तरह मेरा भी कोई भविष्य नहीं है."

किटी के पिता सेना में अफसर थे. वे ही उन्हें लेकर मैकलुस्कीगंज आए और 11 एकड़ जमीन छोड़ गए. इस तरह वे उन्हें एक 'घर' से बांध गए जो बहुत पहले ही नष्टप्राय हो चला था. मगर उनके समुदाय के लोगों ने उन्हें पथभ्रष्ट बताकर तिरस्कृत कर दिया है. अब वे एक वनवासी के साथ रहती हैं.

लेकिन मैकलुस्कीगंज की त्रासदी की वास्तविक वजह कुछ और ही है. अपना घर बनाने की उत्कंठा, भावावेग और प्रेरणा के अभाव में बहुत-से एंग्लो-इंडियन (अनुमानित आबादी: 50,000) यहां नहीं आए. और जो लोग बसे भी, वे भी शहरी जीवन और शहरी नौकरी की खातिर यहां से निकलने लगे. युवा पीढ़ी ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और कनाडा जा बसी. थोड़े ही समय में मैकलुस्कीगंज अवकाश प्राप्त लोगों की शरणस्थली भर रह गया.

ढहते बंगले, बेतरतीब उग आए झाड़-झंखाड़ वाले बगीचे और निर्जन घर मानो इसी तथ्य को पुख्ता करते हैं. अब जो यहां बच

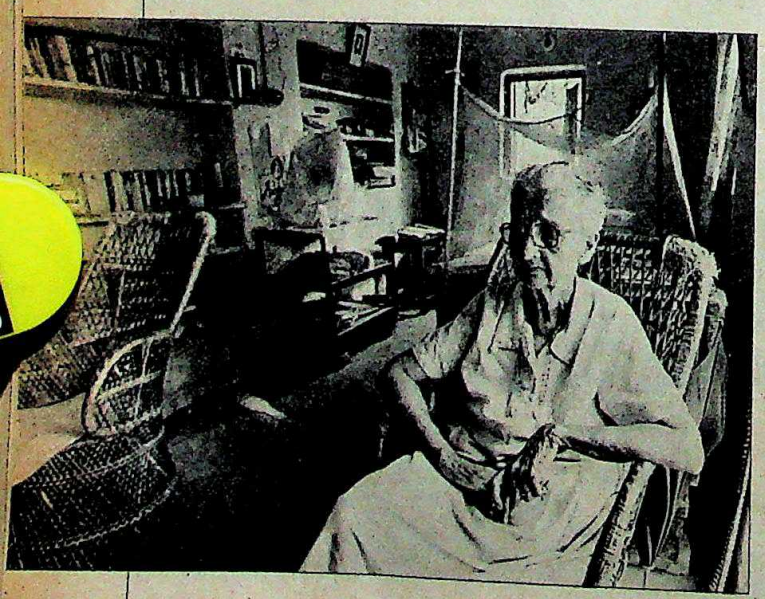

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीब विंडबना से त्रस्त है जूडी गोम्स का जीवन. पति कलकत्ता में काम करते हैं पर उन्हें अपनी मां की सेवा के लिए अतीत का हिस्सा बनती इस जगह रहना पड़ता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख-चैन में गुजरे दिनों की याद करते पॉटर; और (नीचे बाएं) खुदाई करने वाले विशाल यंत्र की प्रेत-छाया

गए हैं, वे अतीत के बंदी हैं. जैसे मेरी मॉरिस. इस वृद्ध महिला की देखभाल करने वाला कोई नहीं है. उनके मुताबिक 'स्थानीय लोगों' पर भरोसा नहीं किया जा सकता. लेकिन यहां से जाने की उनकी कोई योजना नहीं है. वे कहती हैं, "मैं कहां जाऊंगी?"

लेकिन इस सवाल का जवाब शायद मेरी के घर से थोड़ी ही दूर रहने वाले पूर्व आबकारी सहायक आयुक्त एच.ई. क्रिस्टेंसन के पास है. क्रिस्टेंसन परिवार गोवा जाने की तैयारी कर रहा है. श्रीमती क्रिस्टेंसन कहती हैं, "यहां बचा ही क्या है!"

इस निराशा की वजह भी है. यहां पहले पहल बसे अधिकांश लोगों को खेती-बाड़ी का कोई ज्ञान नहीं था और उनमें उद्योग-धंधा शुरू करने का माद्दा भी नहीं था. आमदनी के अतिरिक्त स्रोत के अभाव में वे धीरे-धीरे अपनी जमीन-जायदाद बेचने लगे और टूटे सपने से नाता तोड़कर संभावना वाली जगहों के लिए चल दिए.

पुराने लोग तो अपना जीवन काट ले गए. लेकिन असली त्रासदी तो उन युवा लोगों की है जो अपने मां-बाप के साथ मैकलुस्कीगंज से ही बंधे रहे. मसलन, मैकलुस्कीगंज की जानी-मानी हस्ती 73 वर्षीया डोरोथी थिपथोर्पे की 35 वर्षीया बेटी जूडी गोम्स को ही लें. जूडी की जिंदगी भी मैकलुस्कीगंज की अजीब विडंबना से ग्रस्त है. उनके पति कलकत्ता में काम करते हैं लेकिन उन्हें अपनी बीमार मां की देखभाल के लिए यहीं रहना पड़ता है.

वास्तविक मैकलुस्कीगंज तो अपनी मौत—और त्रासद मौत—मर चुका है. अब नई रेलवे साइडिंग के निर्माण के चलते उस मूल सपने—उसके प्राकृतिक सौंदर्य का बचा-खुचा भी नष्ट होने को है. लेकिन एंग्लो-इंडियन समुदाय के लिए मैकलुस्कीगंज किसी बड़ी त्रासदी का प्रतीक है—अपना घर स्थापित करने का अनोखा मौका उनके अपने ही इतिहास और अपनी ही प्रवृत्तियों के चलते खो गया.

मैकलुस्कीगंज में सूर्य अस्त हो रहा है. क्रिस्टेंसन परिवार के बच्चे टेपरिकार्डर चालू कर देते हैं. और इससे गूंजती धुन के साथ एक विस्मृत संसार जैसे फिर से करवट बदलने लगता है.

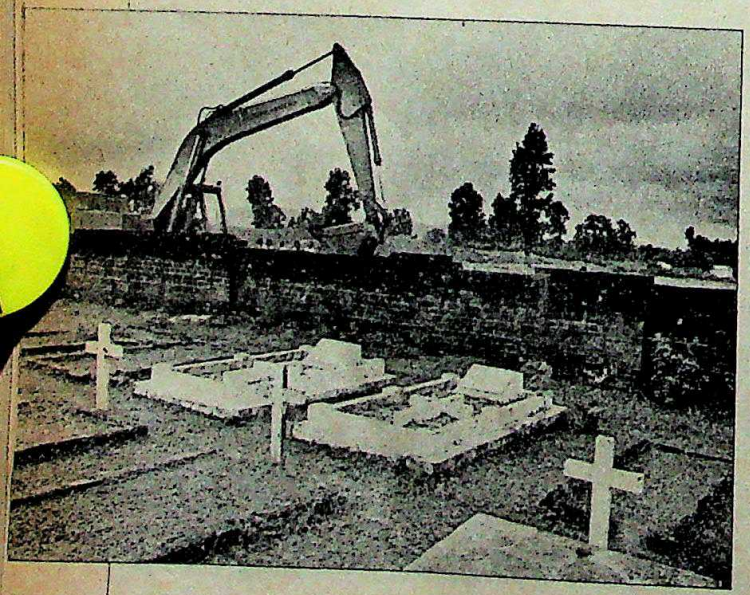

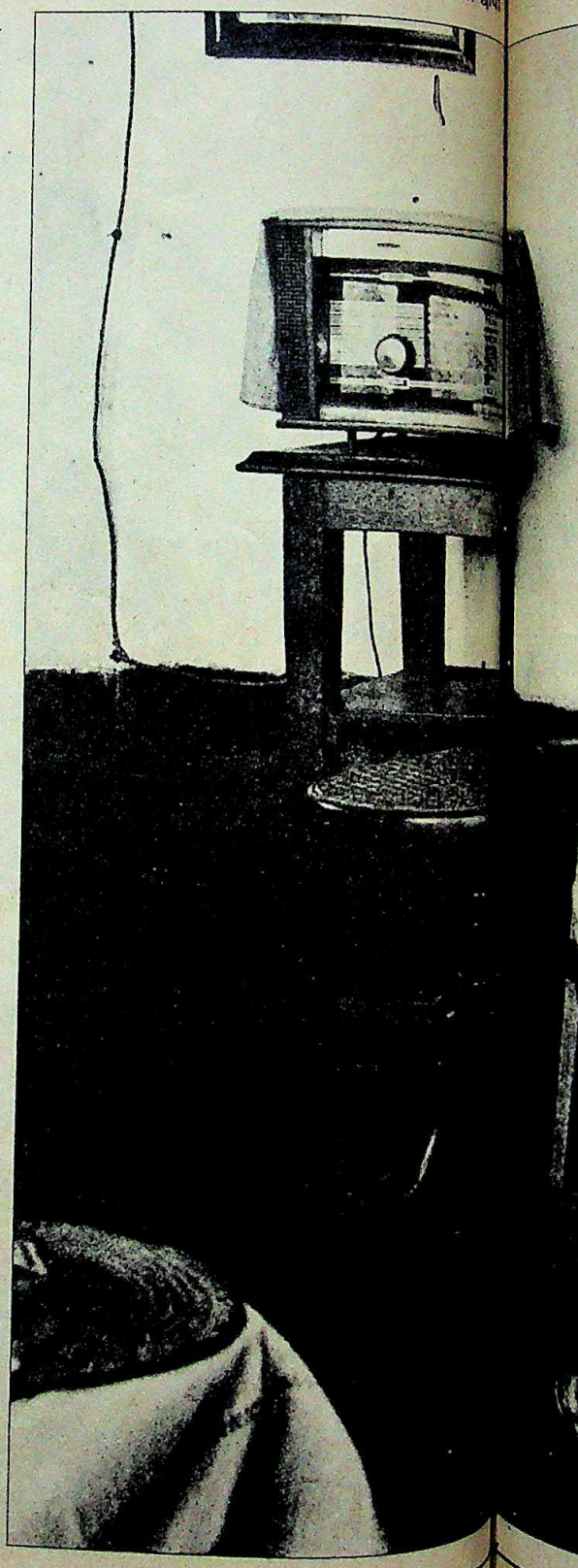

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना शेष जीवन मैकलुस्कीगंज के पुराने दस्तावेज जमा करने और पढ़ने में बिताते हैं स्टेनले पॉटर. मगर आंख की तकलीफ ने उन्हें रेडियो का मोहताज बना दिया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-42

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई को मात | बड़ा संतोष | युवा प्रमुख
उम्मीदें जगा दी हैं | 'हां' कह दी | तीखी चिट्ठी लिखी
उज्जैन स्थित | अकेले ही सामना | वहां कोई नहीं जानता
भौतिकी के हैं | मेरी प्रेरणा | 'ट्रायल' पर
हार मानने वाली नहीं | तो मिलें बंद | मगर अब अलग | कानों में घंटी | मुझे जांच करनी है
मुट्ठी गरम की | रेट दोगुने
उमर भी सकते हैं | लाश नदी में | यह सलामत है | 54 साल बाद क्यों
सीधी का गांव | तमिल लेखिका | घर से प्रेम

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-42, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि
5 नवंबर 1991
उत्तर के लिए देखें:
16-30 नवंबर 1991 का अंक

► यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 30 सितंबर 1991 के अंक पर आधारित है.

► वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.

► तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.

► तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.

► वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.

► मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.

► सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500** रु. दिए जाएंगे.

► लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

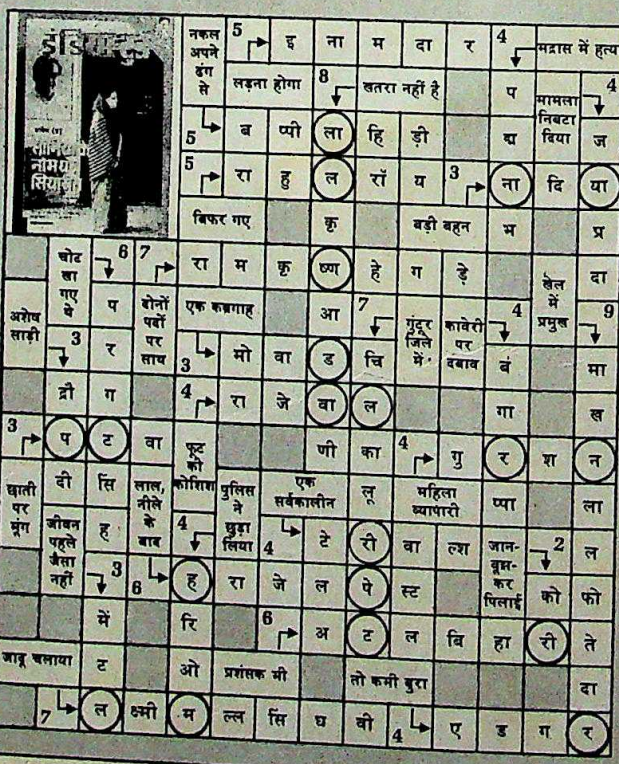

इंडिया टुडे
वर्ग पहेली-40 का हल

पुरस्कार विजेता

सै. बाकर हुसैन
618, हैमिल्टन रोड
कश्मीरी गेट,
दिल्ली-110006

स्मिता कुमारी
द्वारा-सुरेशचंद्र गुप्ता
इलेक्ट्रिक सप्लाई डिवीजन
जमुई (बिहार)
811307

जी.के. श्रीवास्तव
इंडियन ओवरसीज बैंक
धमेडा कीरत
बुलंदशहर-203001 (उ.प्र.)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने प्रतिस्पर्धियों से हम अंतरिक्ष में लगभग 35,887 कि.मि. आगे हैं ।

हर रोज जब ४ करोड़ घरों में टीवी कार्यक्रमों का आनंद उठाया जाता है, उस समय ई सी आई एल का तंत्रज्ञान काम कर रहा होता है ।

टीवी संकेतों को पृथ्वी से उपग्रह तक और वहा से वापस पृथ्वी पर भेजने में मदद करके ।

यही तंत्रज्ञान आपके घर में भी पहुँचता है । सबसे आधुनिक किस्म के रंगीन टीवी सेटों के रूप में ।

ईसी टीवी लेजेंड ।

एकमात्र टीवी जो व्यक्तिगत कंप्यूटरों के लिए रंगीन मॉनीटर की तरह इस्तेमाल किए जाने का विकल्प प्रस्तुत करता है ।

ईसी टीवी जो मल्टीसिस्टम विकल्प प्रस्तुत करता है । ताकी आप पैल/सिकैम दोनो तरह के कार्यक्रम देख सकें ।

ईसी टीवी जो रिकॉर्डिंग की सुविधावाले वीसीपी पर आपको कार्यक्रम रिकार्ड करने दें ।

ईसी टीवी जिन्हें 'निद्रा' या कार्यक्रम की स्थिती प्रदर्शित करने के लिए 'प्रोग्राम' किया जा सकता है ।

ईसी टीवी जिनके मॉड्युलर डिजाइन के कारण सर्विसिंग का काम जल्दी व आसानी से हो ।

ईसी टीवी जो ९० वोल्ट जितने कम और २९० वोल्ट जितने अधिक वोल्टेज पर भी काम करें ।

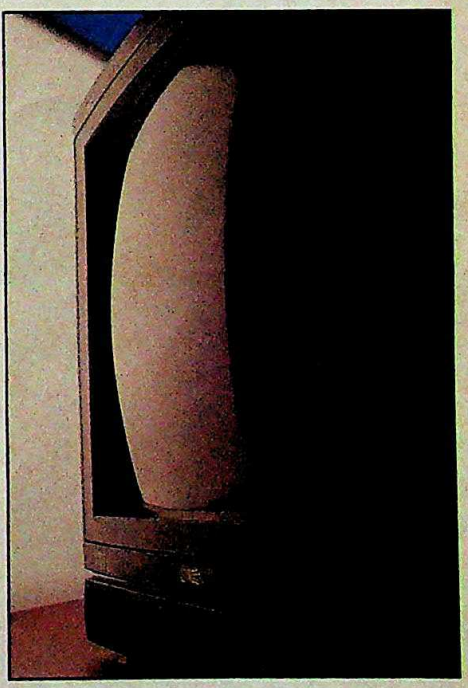

ई सी आई एल का तंत्रज्ञान टीवी संकेतों को पृथ्वीसे उपग्रह तथा वापस भेजने में मदद करता है ताकी भारत में ४ करोड़ से भी अधिक घरों में लोग टीवी कार्यक्रमों का आनंद उठा सकें ।

उन्नत गुणो से सज्जित है । जैसे कि टीवी मे लगे, फुल स्क्वेयर ट्यूब; ऑन-स्क्रीन डिस्पले;फुल आटो सर्च; फुल फंक्शन रिमोट...

ईसी टीवी लेजेंड अपने नजदीक के ईसी टीवी शोरूम या ईसी टीवी विक्रेता के यहा पधार कर टीवी का प्रदर्शन देख लिजिए ।

आपको स्पष्ट मालूम हो जाएगा कि प्रतिस्पर्धियों से ३५,८८७ कि.मी. आगे होने का अर्थ क्या होता है ।

ECTV

ECTV लेजेंड

भारत में टीवी देखने में सहायक तकनीक का अनुभव लीजिये ।

ईसी टीवी रंगीन तथा ब्लैक एंड व्हाइट मॉडलों की विस्तृत श्रेनी में उपलब्ध है । वाजिब कीमतों पर ।

इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लि. । (भारत सरकार-परमाणु ऊर्जा विभाग का एक उद्यम) हैदराबाद 500 762.

R K SWAMY/BBDO EC 582 91 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

If this one tile can stop you in your tracks,
imagine what a whole floor can do

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Marble Magic from Spartek. A series of the most exotic marble finishes. Captured in the finest of ceramic tiles. In a range of 14 seductive shades, some of which even natural marble can't match. Marble Magic from Spartek. Lay it on your floor. It'll look even better than what you imagined.

MARBLE MAGIC FROM SPARTEK

What the best dressed homes wear

SCL MM PI 2738

For residential and light traffic applications only.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब अपने घर की शान बढ़ाइए
दुनिया-भर की पसंद कॉएरब® डोरमैट लाइए

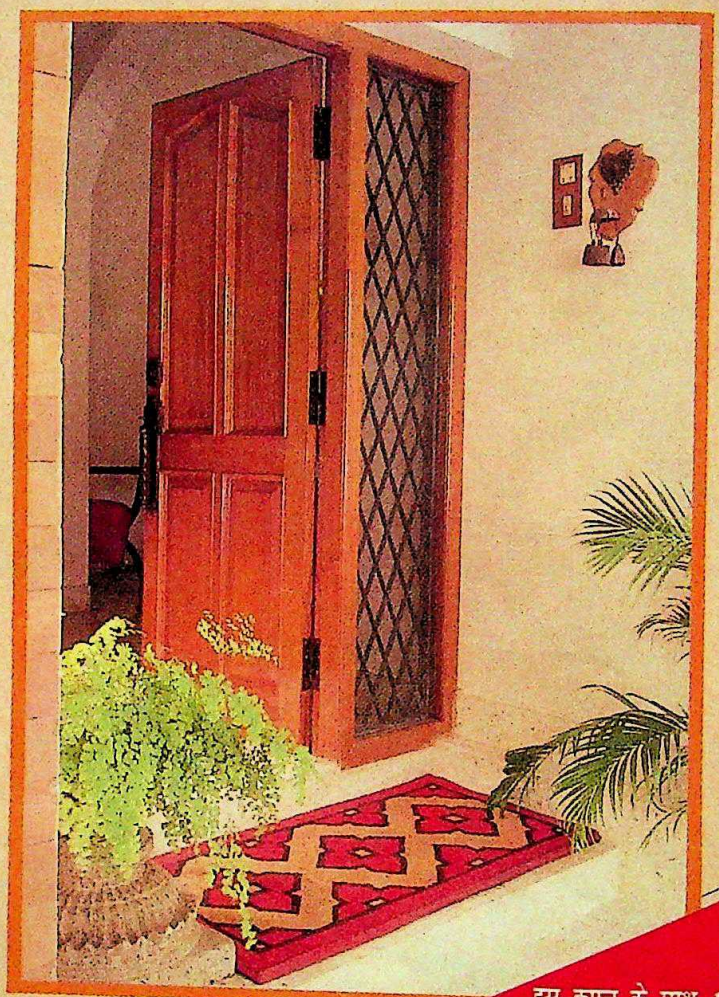

विशेष
दीवाली ऑफर
इस कूपन के साथ 1/- रू. कि छूट.

आप अपनी दहलीज़ पर रखे फटे-पुराने पायदान से परेशान तो होते होंगे, क्योंकि वह दाग – धब्बे छोड़ता है, फिसलता है और धूल जमा करता है.

हिम्मत मत हारिए. पेश हैं दुनिया-भर की पसंद का कॉएरब® डोरमैट. अब आपको कॉएर के आम पायदानों से जूझने की जरूरत नहीं.

खास डिज़ाइन किए गए कॉएरब® डोरमैटों में कितनी ही विशेषताएं है :

★ विशेष रबड़-बैक फ़िनिश ताकि चिकने-से-चिकने फ़र्श पर भी फिसले नहीं.
★ धूल-गंदगी से धसकता नहीं.
★ चलता भी खूब है.
★ ब्रश से आसानी से साफ हो जाता है.
★ बेहतर फ़िनिश मतलब असम किनारे भी नहीं.
★ साल-दर-साल अपनी शान बनाए रखता है.
★ कितने ही आकर्षक डिज़ाइनों व बनावटों में से चुनें.

तो अगली बार कोई भी पायदान मत उठा लाएं पीछे कॉएरब® का लेबल देखकर ही खरीदें.

कृपया कूपन अपने नजदीकी कॉएरब विक्रेता को दें और छूट का फ़ायदा उठाएं

इंडियन कॉएर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी,
पो.बॉ. नं. 17, एलेप्पी 688 001.
केरल, भारत.

coiRuB
NON-SLIP
EXPORT QUALITY
Indian Coir Mfg. Co.
P.B. 17, ALAPPUZHA-688 001

कॉएरब ऐसा फ़िनिश जिसके काम में शान है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग निवारण

रक्तपान से रोग दूर

इलाहाबाद के बहुचर्चित डॉक्टर का विवादास्पद प्रयोग

गमले के एक कटोरे में एक नींबू निचोड़िए. उसमें 100 ग्राम शुद्ध शहद मिलाइए. फिर उसमें बूंद-बूंद करके लगभग 50 से 100 सीसी ताजा खून मिलाइए और इन सबको तांबे के एक चम्मच से मिलाइए.

यह कोई फ्रैंकुला के नाश्ते की चटनी नहीं है बल्कि यह एक अनोखा नुस्खा है जिसे इलाहाबाद के डिग्रीधारी डॉक्टर आर.सी. गुप्ता ने गठिया जैसी लाइलाज बीमारियों के लिए सुझाया है. हालांकि इसे वैज्ञानिक मान्यता नहीं मिली है लेकिन रोगी इसका धड़ाधड़ इस्तेमाल कर रहे हैं. 26 रोगी हफ्ते में दो बार अपना खून पीते हुए पांच हफ्ते का कोर्स पहले ही पूरा कर चुके हैं.

61 वर्षीय डॉ. गुप्ता कोई नीम-हकीम नहीं हैं. दरअसल, उन्होंने विकलांग सर्जरी में मास्टर डिग्री ली हुई है और वे इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज के विकलांग विज्ञान विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं. उन्हें 14 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुके हैं जिनमें 1989 का डॉ. बी.सी. रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल है.

फिर भी चिकित्सा के तमाम नियमों को वे नहीं मानते हैं. रूढ़ियों का विरोधी यह डॉक्टर पिछले साल अगस्त में उस समय चर्चा में आया जब उसने अपने एक सहयोगी डॉ. रौतेला को खून से सराबोर कलेजा खाने को दिया. इसे खाने के बाद रौतेला एक पखवाड़े तक अस्पताल में भर्ती रहे. उधर, इस घटना से खौफ खाए मेडिकल कॉलेज के छात्रों ने हड़ताल कर दी. गुप्ता को सेवानिवृत्त होने के मात्र दो दिन पहले निलंबित कर दिया गया. लेकिन गुप्ता को इसका कोई मलाल नहीं है. वे अपना प्रयोग जारी रखे हुए हैं. पिछले साल जुलाई में उन्होंने अपनी रक्त चिकित्सा परियोजना में शोध के लिए भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद से मदद मांगी थी लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं आया है फिर भी उनके रोगी उनसे रक्त चिकित्सा करवा रहे हैं. मसलन, प्रतापगढ़ की 17 वर्षीया छात्रा काकुल जुबेरी का दावा है कि गुप्ता से पांच हफ्ते तक इलाज करवाकर वह गठिया से छुटकारा पा गई. विडंबना है कि काकुल के पिता खुद डॉक्टर हैं. डॉ. गुप्ता गर्व से कहते हैं, "उसके पिता इतने प्रभावित हुए कि इस चिकित्सा के लिए दूसरे रोगियों को मेरे पास भेजने लगे."

सभी फोटो: आर.के. गुप्ता

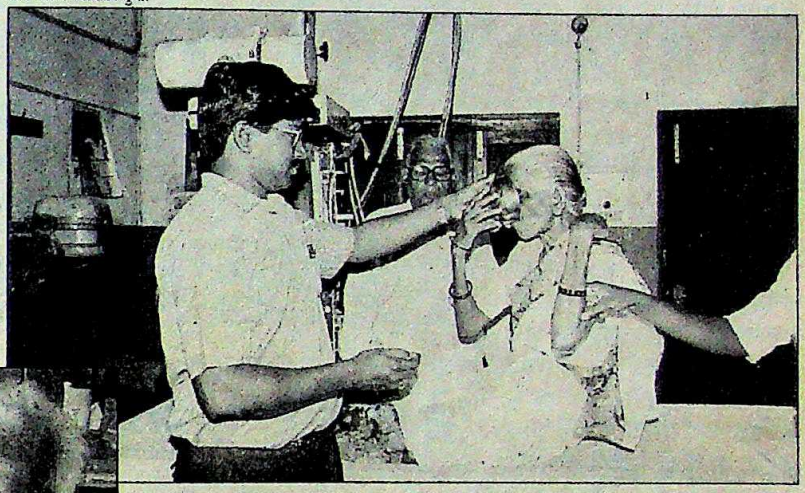

मरीज को दी जा रही खुराक: अनोखा नुस्खा

"अपना खून पीने से शरीर में कुछ ऐसे रसों का निर्माण होता है जो गठिया पैदा करने वाली कोशिकाओं का मुकाबला करते हैं"

डॉ. आर.सी. गुप्ता

26 वर्षीय छोटे प्रसाद भी इतने ही प्रभावित हैं. वे विकलांग हैं और वर्षों तक कॉर्टिकॉस्टेरायड्स पर पड़े रहे. उनका दावा है कि रक्त चिकित्सा की चार खुराकों के बाद ही उनमें सुधार होने लगा. वे कहते हैं, "मैं पिछले 10 वर्षों से बीमार हूं. यह पहला मौका है कि इलाज से मुझे लाभ हो रहा है."

मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ की 39 वर्षीया शशि वर्मा को तो इस चिकित्सा ने नया जीवन ही दिया है. डॉ. गुप्ता से तीन बार इलाज कराने के बाद इतना असर हुआ कि अब वे दिन में छह से आठ की जगह एक या दो दर्दनाशक गोली ही लेती हैं.

लेकिन अपना ही खून पीने के लिए सभी मरीज राजी नहीं होते. कानपुर के गठिया के एक पुराने मरीज कहते हैं, "मैं जोड़ों के दर्द से मर जाना पसंद करूंगा लेकिन ऐसा वीभत्स काम नहीं करूंगा."

लेकिन इस इलाज को वैज्ञानिकों ने अपनी सहमति नहीं दी है. डॉ. गुप्ता का कहना है कि अपना खून पीने से शरीर में कुछ ऐसे रसों का निर्माण होता है, जो यह बीमारी पैदा करने वाली कोशिकाओं का मुकाबला करते हैं. मुंबई के हिंदुजा अस्पताल में वरिष्ठ गठिया रोग विशेषज्ञ डॉ. वी. आर. जोशी कहते हैं, "अब से पहले मैंने इस बारे में कभी नहीं सुना था. अपना खून खुद पीने की मान्यता चिकित्सा जगत में कहीं भी नहीं मिली है."

लखनऊ के किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वी. डी. वर्मा इस चिकित्सा के कट्टर विरोधी हैं. वे कहते हैं, "गठिया के रोगी को इस तरह रक्त पिलाना नितांत बेहूदा काम लगता है."

जो भी हो, डॉ. गुप्ता यह काम पैसे के लिए हरगिज नहीं कर रहे. तीन हफ्तों के परामर्श के लिए उनकी फीस सिर्फ 50 रु. है. उनके नर्सिंग होम के एक कमरे का किराया 40 से 60 रु. तक है. समस्या यह है कि कोई भी उन पर पैसे बनाने का आरोप नहीं लगा रहा है. शंकाएं इसके चिकित्सकीय पहलू पर ही हैं.

—**दिलीप अवस्थी**, इलाहाबाद में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

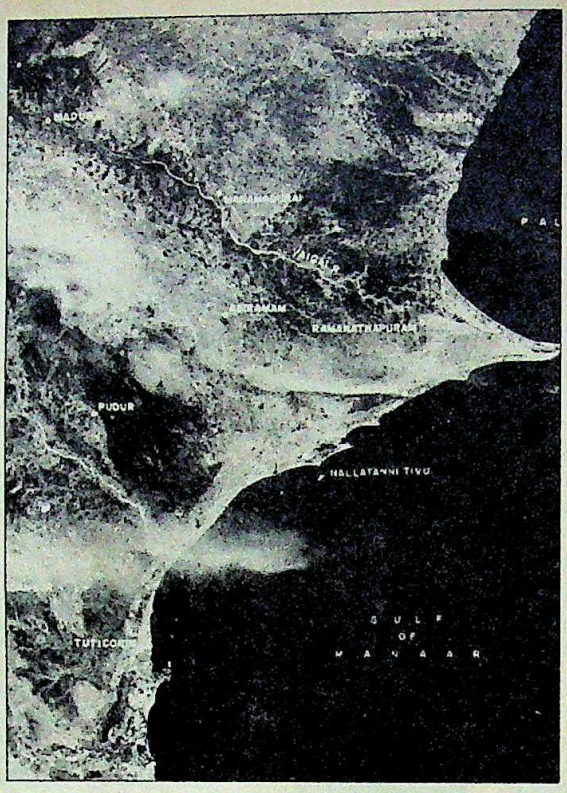

आईआरएस-1बी

देश पर अचूक नजर

भू और जल संसाधनों के अधिकतम इस्तेमाल में मदद

यह कपड़े धोने की घरेलू मशीन जितना बड़ा है और फिएट कार जितना भारी. इसकी भारी-भरकम छत्तेदार सौर पट्टिकाएं किसी प्रागैतिहासिक पक्षी के पंखों सरीखी लगती हैं. मगर 985 किलोग्राम के एल्युमिनियम वाले तथा समुद्री नीले रंग और सुनहरी नक्काशी वाले इस यंत्र में सबसे महत्वपूर्ण दो अति सूक्ष्म कैमरे हैं जो अपनी गिद्ध दृष्टि से देश पर नजर रखते हैं. उनसे भेजी गई तस्वीरें अब उस सूचना क्रांति का मुख्य आधार बनती जा रही हैं जो जंगलों के नक्शे बनाने से लेकर शहरों के डिजाइन तैयार करने में नागर योजनाकारों को मदद देने तक भारतीय जनजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है.

पिछले पखवाड़े भारतीय दूर संवेदी उपग्रह आईआरएस-1बी नामक इस उच्च तकनीक वाले बक्से को देश के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने पूरी तरह चालू घोषित कर दिया. देश के 102 करोड़ रु. के दूर संवेदी कार्यक्रम के लिए यह एक बहुत बड़ा मोड़ है. इससे सरकारी एजेंसियां देश के जमीनी और जल संसाधनों के अधिकतम इस्तेमाल का खाका तैयार कर सकेंगी.

1988 में भेजे गए आईआरएस-1ए का कार्यकाल अब खत्म होने को है इसलिए भारतीय अंतरिक्ष शोध संस्थान (इसरो) चाहता था कि अगला उपग्रह भी सही समय पर काम शुरू करे ताकि कार्यक्रम को कोई नुकसान न पहुंचे. पिछले तीन साल में 1ए देश के ऊपर 55 बार गुजरा और उसने 3.5 लाख उच्च गुणवत्ता वाली तस्वीरें भेजीं. आईआरएस-1ए की तस्वीरों का कई क्षेत्रों में इस्तेमाल हुआ.

- कृषि मंत्रालय को प्रमुख खाद्यानों की बुवाई और उपज के आंकड़े जुटाने में मदद मिली.
- ब्रह्मपुत्र और गंगा जैसी नदियों में बाढ़ की भविष्यवाणी की जा सकी.
- देश के भूगर्भ जल स्रोतों का नक्शा

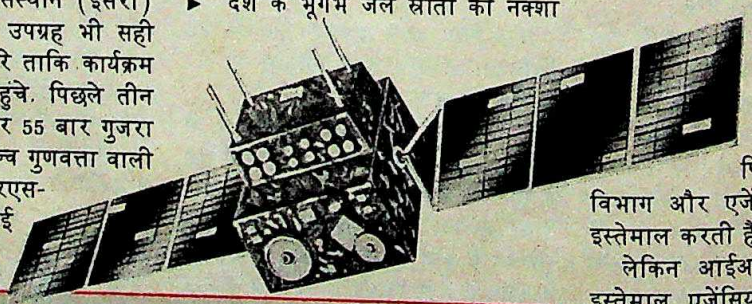

क्या हैं उपलब्धियां

- **15 करोड़ रु. की लागत से बना नया उपग्रह आईआरएस-1बी मुख्यतः 1ए का विकल्प ही होगा. पर यह हूबहू वैसा ही नहीं होगा. इसमें कैमरा नियंत्रण व्यवस्था सूक्ष्म है और गलतियों की संभावना काफी कम हो गई है.**
- **देश के 102 करोड़ रु. के दूरसंवेदी कार्यक्रम के लिए यह एक बहुत बड़ा मोड़ है. इससे देश के जमीनी और जल संसाधनों के अधिकतम इस्तेमाल का खाका तैयार करने में मदद मिलेगी.**

उपग्रह 1बी की पहली

तैयार किया गया. तस्वीर
आधार पर ही गांवों में
लाख कुएं खोदे गए.

- तेल उत्खनन की
प्राप्त हुई.
- तापीय छवियों के
पश्चिमी तट के मछुआरे
मछलियों के झुंडों का
लगाकर उन्हें पकड़ने में
मिली.

15 करोड़ की लागत से
नया उपग्रह मुख्यतः
विकल्प ही होगा. पर यह
वैसा नहीं है. इसरो
वैज्ञानिकों ने कैमरा नि
व्यवस्था को और सूक्ष्म
दिया है और गलतियों
संभावनाओं को काफी कम
दिया है. इसरो के
प्रोफेसर यू.आर. राव कहते
"हमारा उपग्रह लैंडसैट
मुकाबले का है. और कुछ
तो उससे भी बेहतर है."

कई वर्षों में इसरो ने
नियंत्रण, आंकड़े जुटाने
उनकी व्याख्या करने की
और आधुनिकतम
तैयार की है. बंगलूर का
स्थित अंतरिक्ष यान नि
कक्ष इसकी मुख्य धुरी है. उपग्र
उड़ान का रास्ता तैयार करने के
इसरो ने देश भर में स्टेशन बनाए हैं
दुनिया भर की कई अंतरिक्ष एजेंसियां
मदद भी ली जाती है. आंकड़े
विश्लेषण का
महत्वपूर्ण
हैदराबाद के
में राष्ट्रीय दूर
एजेंसी में होत
फिर केंद्र सरकार
विभाग और एजेंसियां इन आंकड़ों
इस्तेमाल करती हैं.

लेकिन आईआरएस के आंकड़े
इस्तेमाल एजेंसियां करें, शुरू में
काफी दिक्कतें आईं. नई दिल्ली में
जल आयोग के सदस्य डॉ. एम.एस
कहते हैं, "हमें अब आंकड़ों के अधि
इस्तेमाल का तरीका खोजना होगा.

इस बीच इसरो दूसरी पीढ़ी का
असरदार दूर संवेदी उपग्रह बनाने
तैयारी में जुटा है. बकौल प्रोफेसर
"हमें सूचनाओं को समग्र रूप में
अभूतपूर्व मदद मिलेगी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

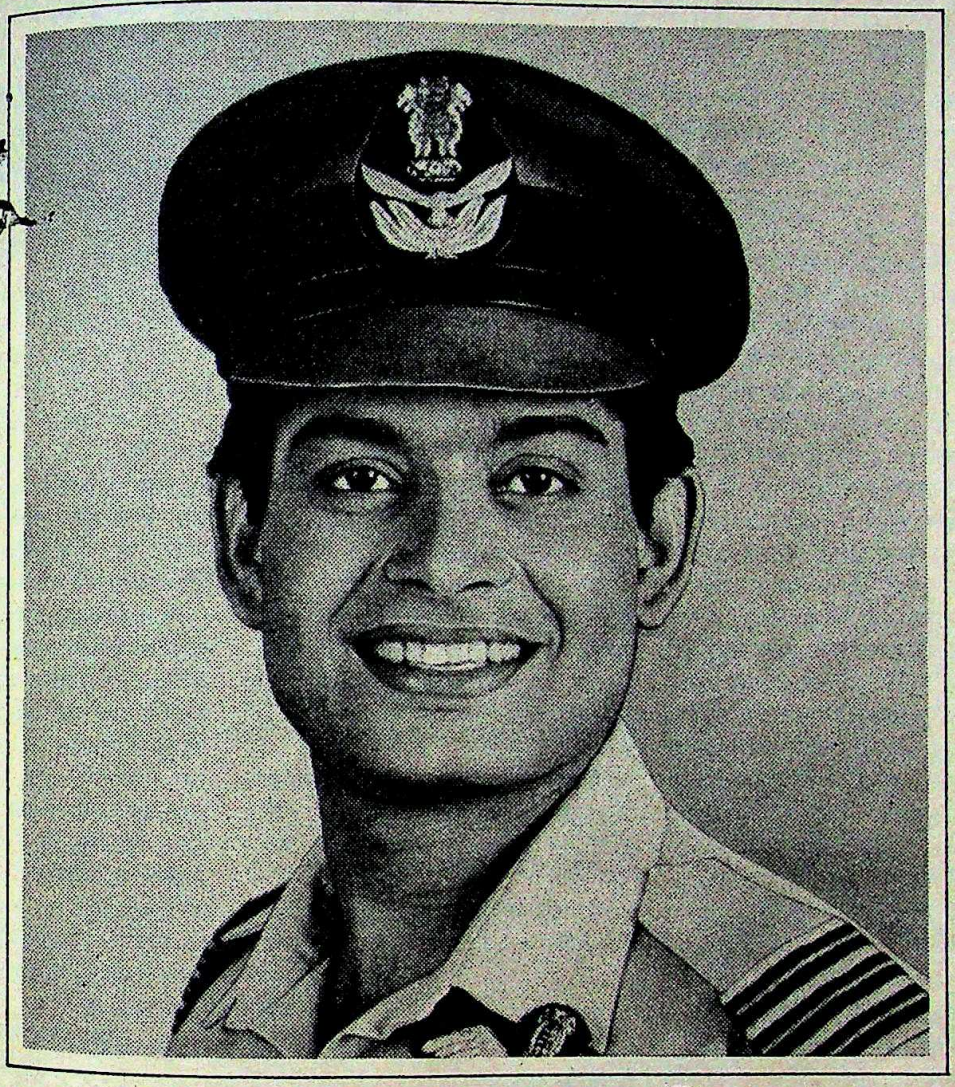

नागरिक डनलप

...गति। अनेक जाति-धर्म-संस्कृति और उद्योगों का संगम स्थल। बरसों से डनलप की सींची हुई यह धरती आज नयी-नयी औद्योगिक ...ीज़ों की फ़सल उगा रही है। सिर्फ़ सड़कों और कारखानों में ही नहीं, गाँवों में भी। देश को इस तरह निरन्तर प्रगति की ओर ले जाने का ...ण है डनलप का। अपनी कार्यकुशलता, क्वॉलिटी और कलाकौशल से डनलप भारत को एक नयी दिशा की ओर अग्रसर कर रहा है। ...दिन... हर पल...।

...डनलप—ट्रैक्टर, टिलर, साइकिल, रिक्शे, जीप, ट्रक और बसों के लिए टायर बनाता है। पम्प तथा मिलों के लिए वी बेल्ट का निर्माण करता है। स्पाइरल ...नफोर्सड पी वी सी कृषि-कार्य के होज़ सबसे पहले डनलप ने ही बनाये थे। यह तकनीक छोटे-छोटे उद्योगों के आज भी काम आते हैं। भारत की रक्षा ...वाहिनी के लिए कई एक आवश्यक चीज़ों का निर्माण करता है डनलप। जैसे—टैंक टायर, ऐन्टी वाइब्रेशन माउन्टिंग, अति आवश्यक होज़... आदि। ...डनलप भारत के रक्षा विमानों के लिए टायर बनानेवाली एकमात्र कम्पनी है।

DUNLOP भारत को सदा आगे बढ़ाने का एक प्रण, एक समर्पण।

...DL/765/SA/HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन का सपना

डॉ. भगवती शरण मिश्र

डॉ. भगवती शरण मिश्र उन लेखकों में से हैं जिनका लेखन विघटनशील मूल्यों की नए सिरे से स्थापना को समर्पित है. 'पहला सूरज', 'पवन-पुत्र', 'पुरुषोत्तम' और 'एक और अहल्या' जैसे उपन्यासों के लेखक डॉ. मिश्र पेशे से आईएएस अधिकारी हैं. उनकी इस कहानी में नई जीवन शैली के तले रौंदी जा रही मानवीय आकांक्षाओं और अपेक्षाओं का चित्रण है.

वे कई दिनों से बाहर निकलने का कार्यक्रम बना रहे थे—दिनों क्या महीनों से. जब से रेलवे की नौकरी से निवृत्त हुए थे, मन रह-रहकर कचोटता था. सर्विस में थे तो जब जहां चाहा चल दिया. देश के इस कोने से उस कोने तक की दूरी 'सिल्वर पास' पर एयर कंडीशंड कोच में आराम से काट दी. कभी दिल्ली से सीधे रामेश्वरम तक की, तो कभी अमृतसर से गुवाहाटी और डिब्रूगढ़ की. क्या अच्छे थे वे दिन! गोवा और दमन-दीव के क्षेत्रों में जहां रेलवे लाइन की बगल की आंखों को बांधती हरितिमा मन को अंदर तक हरा कर जाती, वहीं राजस्थानी प्रदेशों—बीकानेर और जोधपुर से गुजरते समय दूर-दूर तक विस्तृत सफेद रेत की शोभा उनके मन की शुष्कता को भी अद्भुत आर्द्रता से भर देती.

काश! वे दिन फिर लौट आते. वे एक आह भरकर सोचते. कई बार अपने होल्ड-ऑल को बांधते-खोलते, बड़े से सूटकेस में पुराने-नए कपड़े—धूमिल पड़ी कमीजें, काले कोट और वेस्ट-कोट, लाल-पीली तथा चेकदार टाइयां, जीन की बदरंग पैंटें—करीने से सजाते और फिर बाहर कर देते. 'पास' उनके पास अभी भी था. रेलवे में जिंदगी खपा दी तो जाते-जाते रेल मंत्रालय ने ग्रेच्युटी और प्रॉविडेंट फंड के पैसों के अलावा उन्हें उनका 'पास' भी थमा दिया. पास का रंग-रूप भले ही बदल गया था पर उसके बल पर वे अभी भी वातानुकूलित डिब्बों में ही सफर करने को पूर्ण स्वतंत्र थे. उसी तरह देश को इस छोर से उस छोर तक नाप सकते थे.

पर मन था कि जाने-जाने को होकर भी अंतिम घड़ी में किसी बूढ़े घोड़े की तरह धप से बैठ जाता था.

पता नहीं बूढ़ा होता तन मन का साथ छोड़ रहा था या अभी तक युवा-सा प्रतीत होता मन ही तन का साथ देने से कतरा रहा था.

था कुछ जो मन की अतल गहराइयों में जा बैठा था—नित्य ही बैठता जा रहा था. क्या था यह? भय? शायद हां. अकेली यात्रा का भय.

रेलवे में वे सुरक्षा (सुरक्षा) के सर्वोच्च पदाधिकारी थे. जहां के डिब्बों में सुरक्षाकर्मियों का दल आ बैठता.

तब वे पूरी तरह सुरक्षित करते थे.

आज पूरी तरह असुरक्षित. साथ रेलवे सुरक्षा दल की कोई चलती थी. कोई आदेशपाल चपरासी भी सामान को चढ़ाने-उतारने को

क्या विडंबना है कि जब उन्हें कोई आवश्यकता नहीं थी, वे ऑल और सूटकेस दोनों को हाथ में टांगे प्लेटफार्म से सटे रेलवे किसी स्पोर्ट्समैन-सी चुस्ती से चढ़ उस समय तो आधा दर्जन चपरासी साथ होते और आज जब वे काया को भी डिब्बे के अंदर असमर्थ थे, सहायक के नाम पर कोई नहीं था.

जीवन भर साथ डोलने वाली सहचरी ने भी कुछ वर्ष पूर्व ही दिया था.

पर जीवन भर की आदत चाहने, नहीं चाहने चली जाती है. सर्प के केंचुल की की अनदेखी लिपटी ही

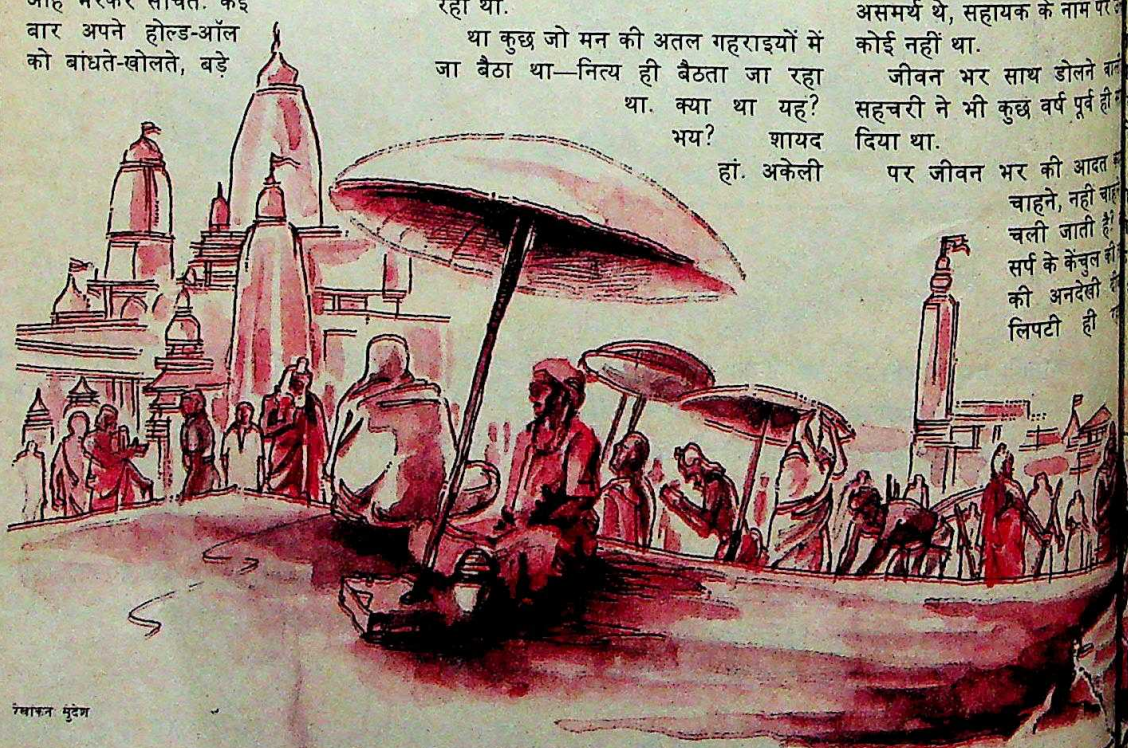

रेखांकन: सुदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

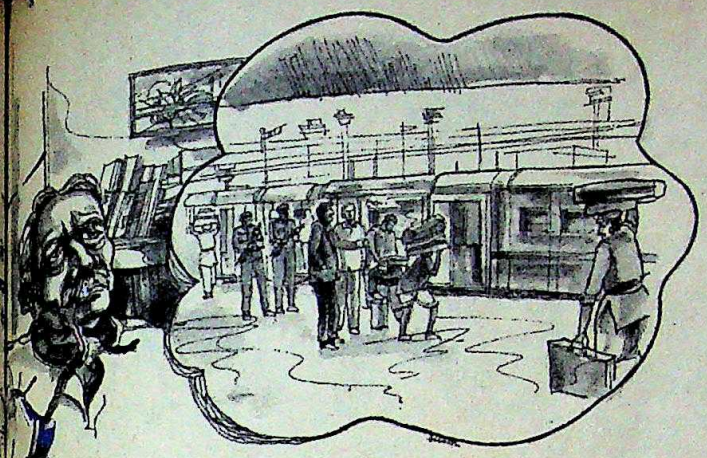

सफर ही सफर किए, चलते ही रहे तो आज न चल पाने की ा कितनी त्रासद लग रही है.

अधिक शरीर का ही है. मन को पूर्वता के सिवा और क्या है? टांगों को मन अब भी बैसाखी सहारा देना चाहता था. अवसाद ात्मविश्वास के अभाव की गहरी में उतरते जाते रुग्ण-से मस्तिष्क को भी उल्लास, साहस और विश्वास बल प्रदान करना चाहता पर सब अंतिम क्षणों में शरीर श्लथ हो आता. शॉल' खुल जाता, अटैची के कपड़े सतह पर बिखर जाते.

इस बार? इस बार तो यात्रा ही थी.

नहीं यह बढ़ती उम्र का तकादा था , पर मन इधर देवी-देवताओं और ओर कुछ अधिक ही खिंचने लगा जिसने जीवन भर कभी-कभार ही देवी-देवता के चरणों में सिर रोपा राह किनारे के हर खंड के सामने झुकाने को ा.

ता नहीं यह बढ़ती उम्र का तकादा था या क्या, पर मन इधर देवी-देवताओं और तीर्थों की ओर कुछ अधिक ही खिंचने लगा था. जिसने जीवन भर कभी-कभार ही किसी देवी-देवता के चरणों में सिर रोपा हो, आज राह किनारे के हर पाषाण खंड के सामने मस्तक झुकाने को बाध्य था

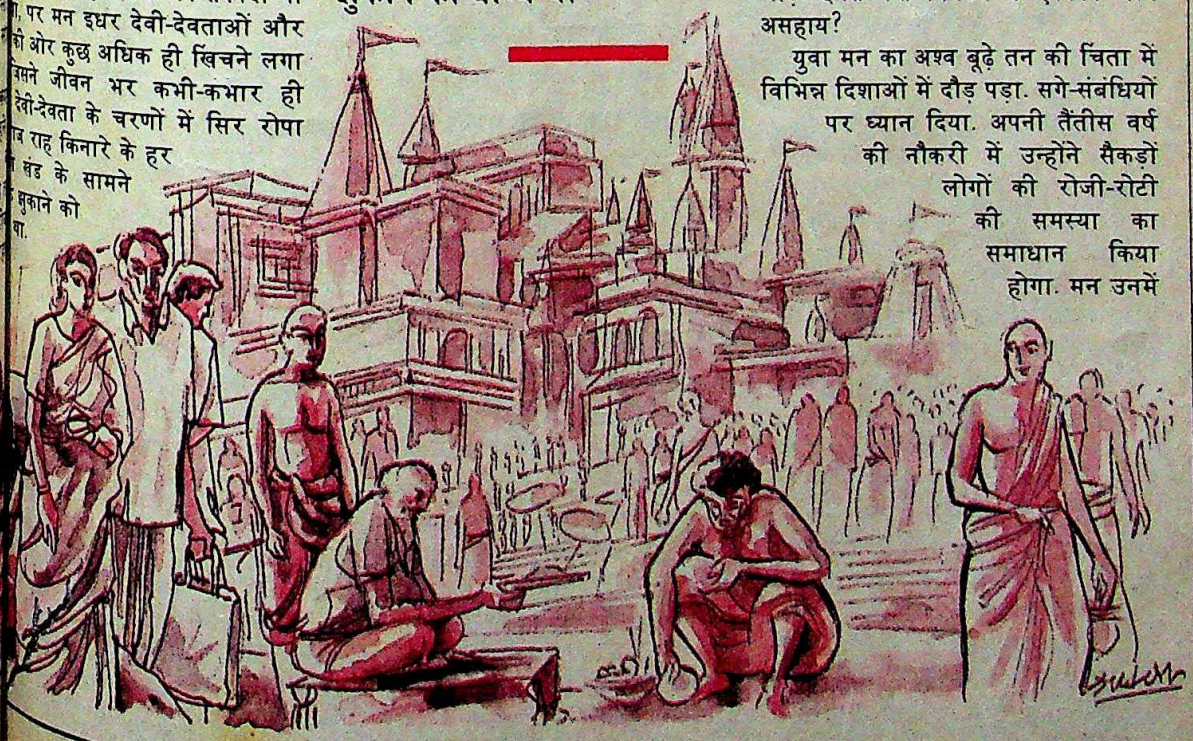

ऐसे में वे कैसे इस अवसर को छोड़ते? यह अवसर तो वर्षों में एक बार आता है और उनके जीवन के जो वर्ष शेष थे उनमें वह दोबारा आने से रहा.

नहीं, वे नासिक के कुंभ मेले को नहीं छोड़ सकते थे. अमृत-कुंभ के इस अवसर पर अमृत-सदृश ही तीर्थ-जल से अपने को पवित्र करना ही था. कौन जानता है कि नौकरी-चाकरी के पेशेवाले से जीवन में कौन-कौन से दोष पाप बन जाते हैं—कब किसी निर्दोष को अनजाने निलंबित कर दिया, कब किसी बेबस चतुर्थवर्गीय कर्मचारी का अकारण वेतन कटवा दिया, कब मृत्यु शैया पर पड़ी किसी बूढ़ी मां को, उसके तार भिजवाने पर भी, उसके एकमात्र बेटे को छुट्टी देने से इनकार कर दिया.

जो हो, इस सारे जाने-अनजाने अपराधों को नासिक के कुंभ में ही डुबाकर निश्चिंत हो जाना था. स्वर्ग या नरक होते हैं कि नहीं, वे नहीं जानते पर अगर वे होते हैं तो पहले से सिंहद्वार में प्रवेश और दूसरे से मुक्ति का यही अवसर था.

उन्हें नासिक जाना ही था.

पर कैसे?

मन कितना भी ललकारे पर क्या इस जर्जर, कांपती काया को वे उसके गंतव्य तक पहुंचा पाएंगे? कांपती टांगों और कमान बनती कमर की बात को वे भूल भी जाएं तो गाड़ियों की भीड़-भाड़! धक्कम-धक्का! प्लेटफार्मों पर मधुमक्खियों की तरह छाए लोग? विशेषकर इस अमृत कुंभ के अवसर पर समुद्र के ज्वार-सी उफनती भीड़. इनसे कैसे निबटेंगे वे एकाकी और असहाय?

युवा मन का अश्व बूढ़े तन की चिंता में विभिन्न दिशाओं में दौड़ पड़ा. सगे-संबंधियों पर ध्यान दिया. अपनी तैंतीस वर्ष की नौकरी में उन्होंने सैकड़ों लोगों की रोजी-रोटी की समस्या का समाधान किया होगा. मन उनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भी कुछ लोगों की सूची बना लाया.

सबको तार से नासिक चलने का निमंत्रण दिया गया—निःशुल्क यात्रा का. इनमें से कोई तो आएगा निभाने—अब भी उनका 'एयर कंडीशंड' का पास एक सहायक को साथ ले जाने की इजाजत देता था.

जवाब की प्रतीक्षा में सप्ताह नहीं पखवाड़ा व्यतीत हो गया. किसी ने स्वीकृति नहीं भेजी तो नहीं भेजी, किसी ने अस्वीकृति का एक पोस्टकार्ड भी नहीं डाला. कौन जाए एक बूढ़े खूसट पर पंद्रह पैसे भी चौपट करने, भले ही इसी खूसट की बात पर उनकी जवान लड़कियों के हाथ पीले हो गए हों और जिनके यहां कोयले का टूटा चूल्हा भी भोजन बनाने को नसीब नहीं था, उनके यहां 'कूकिंग गैस' के दो-दो सिलिंडर पड़े रहते हों.

कोई नहीं आया.

मन अब लाख 'क्रेन' बनकर तन को उठाए वह उठने से रहा.

नासिक की यात्रा अब नहीं होगी क्या? ये सारे पाप शरीर से चिपके ही चिता पर चढ़ बैठेंगे? शरीर तो जल जाएगा पर उनका शास्त्रों का अल्पज्ञान भी यह बताने को पर्याप्त था कि ये अयाचित संगी चिता की आग में भी नहीं जलते. उनको समाप्त करने में गंगा अथवा नर्मदा या प्रयाग के संगम का शीतल जल ही समर्थ था.

तो नहीं जाना होगा नासिक? तभी दिमाग में बिजली-सी कौंधी. अपने वार्द्धक्य पर अफसोस भी हुआ. बुढ़ापे में इस तरह बुद्धि कुंठित क्यों हो जाती है? दूर की चीज तो बूढ़ी आंखों को दिखाई पड़ती है पर समीप की नहीं. यही हालत मस्तिष्क की भी ही जाती है क्या?

वे झुंझलाए. फिर प्रसन्न भी हुए. निराशा के अंधकार को आशा का प्रकाश न जाने कब पी गया.

कांपती टांगें भी किसी जादू के बल पर स्थिर हो गईं.

अब नासिक की यात्रा को कोई नहीं टाल सकता था. उनका एकमात्र पुत्र जो था! नासिक के ही सरकारी मुद्रणालय में, एक उच्च पदस्थ अधिकारी. उसकी नौकरी भी उन्होंने ही लगाई थी. अब तो बहुत बड़ा अफसर हो गया था. बड़ी-सी कोठी थी. सरकारी और स्वयं के वाहन थे. प्यारी-सी बीवी थी. फूल-से दो बच्चे थे. उसी को बुलाते हैं. यात्रा का संकट भी टल जाएगा और ठहरने की सुविधा भी उपलब्ध हो जाएगी.

इधर वह बहुत दिनों से आया भी नहीं. काम ही इतना दायित्व का है, कहीं आने-जाने की भी छुट्टी कहां मिल पाती होगी बेचारे को?

उसी दिन, उसी क्षण उन्होंने चिन्मय के नाम तार ठोंक दिया—शीघ्र आओ. कुंभ, स्नान की इच्छा है. तार एक्सप्रेस था. चार दिन में ही एक्सप्रेस तार आ पहुंचा. मन उनका बांसों उछल पड़ा. अंदर-बाहर, चंडीगढ़ के 'गुलाब गार्डन' की तरह गमक उठा. गोवा की वादियों की हरितिमा और जोधपुर की रेत का श्वेत सौंदर्य आंखों के सामने पुनः साकार हो गया.

आखिर अपना अपना ही होता है. अपने बेटे ने पंद्रह रुपए का एक्सप्रेस तार ही दे मारा. वे तार के बंद लिफाफे को उलटते-पलटते रहे. कल्पना में 'होल्ड-ऑल' फिर बंध गया. अटैची में नई-पुरानी कमीजें और टाइयां फिर सज गईं

आखिर अपना अपना ही होता है और पराया पराया. किसी ने पंद्रह पैसे का पोस्टकार्ड डालना भी आवश्यक नहीं समझा और अपने बेटे ने पंद्रह रुपए का एक्सप्रेस तार ही दे मारा.

वे देर तक तार के बंद लिफाफे को हाथ में उलटते-पलटते रहे. कल्पना में 'होल्ड-ऑल' फिर बंध गया. 'अटैची' में नई-पुरानी कमीजें और टाइयां सज गईं.

अब बेटे के पहुंचते ही एक दिन [illegible] किए बिना ही नासिक के लिए चल [illegible] जो कुछ घर-परिवार की बातें [illegible] होंगी, राह में ही कर लेंगे. यहां और [illegible] बैठा है उससे बातें करने को? पूरा [illegible] भांय-भांय करता है. मन ही मन [illegible] लिया, कुंभ-स्नान के पश्चात् चिन्म [illegible] यहां कम-से-कम एक माह तो [illegible] बिताएंगे. तनहाई का दुःख उन्होंने [illegible] झेला है. तनाव में ब्लड-प्रेशर का [illegible] बढ़ता ही गया है. बेटा, पतोहू और [illegible] के साथ एक माह भी रह लेंगे तो [illegible] दिनों के लिए तरो-ताजा हो जाएंगे.

नहीं, उन पर वह बहुत भार [illegible] बनेंगे. क्या हुआ जो वे उनके अपने [illegible] उनकी भी तो प्राइवेसी है. महान [illegible] समय है. सबको बजट के अनुसार [illegible] होता है. हां, एक महीने का समय [illegible] होगा. तब तक शायद किसी डॉक्टर [illegible] कोई इंजेक्शन आदि लगवाकर [illegible] उनकी कांपती टांगें भी दुरुस्त [illegible] यहां तो रिटायर्ड आदमी को डॉक्टर [illegible] कंपाउंडर भी घास नहीं डालता. पैसा [illegible] रुपया भी इतना पर्याप्त नहीं कि [illegible] से दिखला लें.

तार को उलटते-पलटते ही बेटा [illegible] पहुंचे. 'होल्ड-ऑल' और बी [illegible] अटैची पर एक दृष्टि डाली.

इसी समय मन हुआ तार [illegible] पढ़ने का. लिफाफे को फाड़ फेंका [illegible] शब्दों के अंग्रेजी तार को पढ़ने में [illegible] समय नहीं लगा—सॉरी, नो एकोमो [illegible] खेद है, घर में पर्याप्त जगह नहीं.

उनकी टांगें जोर से कांपीं [illegible] वहीं जमीन पर बैठ गए. छत से [illegible] छिपकली ठीक उसी समय उनके [illegible] ऑल' पर आ गिरी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अगर आपको ये वाकिया बढ़ाया-चढ़ाया सा लगे...

तो शायद आपने अब तक 'फ्रेंची' पहना ही नहीं!

वी आइ पी फ्रेंची. छोटा-सा बढ़िया जांघिया... चुस्त-दुरुस्त और मर्दाना ताकत से सराबोर. सारी दुनिया में इसकी मर्दानगी ने तहलका मचा रखा है और हमारे शहरों में भी इसी की धाक है, बोलबाला है! सचमुच एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय स्टाइल, एक ऐसा अंदाज़ जो वी आइ पी लाये हैं ख़ास आपके लिए!

VIP

फ्रेंची

जांबाज़ मर्दों के मनपसंद

Avenues HH 10/4 90

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी संग्रह

नई चेतना

बेबाकी और औरत की अलंबरदारी

शहर के नाम
कहानी संग्रह
मृदुला गर्ग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
कुल पृष्ठ: 120; कीमत: 45 रु.

मृदुला गर्ग ने 'कितनी कैदें' जैसी कहानी के साथ हिंदी कथा-लेखन में अपनी पहचान बनाई थी. यह पहचान कई मायने में अन्य महिला हस्ताक्षरों से अलग भी थी. 'वह मैं ही थी' जैसी कहानी उनकी इस पहचान को और गहरा करती है. यह कहानी भी इस संग्रह में शामिल है. लेकिन एकदम अलग कहानी है यह, बेबाकी में भी और औरत का अलंबरदार होने में भी. औरत की अलंबरदारी संग्रह की 'बाहरी जन' और 'तीन किलो की छोरी' जैसी कहानियों में भी है, पर बेबाकी में 'वह मैं ही थी' की अपनी विशिष्टता है. मर्यादा में रहते हुए लेखिका अपनी बात पूरी तरह कह जाती हैं और अपना असर भरपूर छोड़ती हैं. साथ ही देश में हुए अटपटे विकास पर भी बहुत कुछ कह जाती हैं. "सुना मरघट के डोम ने ही आंखें बंद की उसकी. बच्चा उसी के साथ जला. अटका जो पड़ा था बीच में. न पूरा बाहर न पूरा अंदर. कोई लेडी डॉक्टर होती तो बाहर खींचकर देख लेती, मरा है या जिंदा."

यह कहानी है बिहार के एक धुर कस्बे की, "जहां डॉक्टर नहीं हैं, चिकित्सा की सुविधाएं नहीं हैं, जहां हर बीमारी का इलाज एस्पिरीन की गोली या तुलसी का काढ़ा है." इसीलिए तो इस कहानी की उमा बच्चा जनते-जनते मर जाती है. दाई तो केवल इतना ही कहती है, "मेरा काम खत्म हुआ. मुझे इनाम दो. मैं जाऊं. अब किसी डॉक्टर को बुलाओ. खून गिरना बंद नहीं हो रहा. ताप चढ़ रहा है. यह काम मेरा नहीं, डॉक्टर का है."

मृदुला गर्ग

मुझे इनाम दो! वाकई, इस देश में जैसे कि सभी इनाम पाने को ललक रहे हैं. देश के साथ क्या बीत रहा है, इसकी किसी को चिंता नहीं. देश, समाज और व्यक्ति के दर्द की अलग-अलग छानबीन करते हुए भी उसे समग्रता में देखना, उस पर मर्यादित कटाक्ष करना और उसकी गंभीरता का एहसास कराते चलना ही मृदुला गर्ग की मानो खासियत है.

दरअसल, संग्रह की कहानियां कई तरह का स्वाद देती हैं. 'शहर के नाम' पूर्वी और पश्चिमी संस्कृति को आमने-सामने लाती है. कहानी की मुख्य पात्र कहती है, "बप्पा, यहां के पादरी कहते हैं मैं नन बन जाऊं, तब मुझे प्यार बांटने से कोई नहीं रोकेगा. मेरे प्यार के गलत अर्थ भी नहीं लगाए जाएंगे." कहानी के शुरू में ही यह पात्र कहती है, "कौन से प्यार की बात कर रहे हैं ये लोग, मैं सोचती रह जाती थी. शायद औरत-आदमी के बीच प्यार की बात. मेरे लिए प्यार का मतलब था देना. खुद को देना. नहीं, नहीं, जिस्म हरगिज नहीं."

एक तरह से ये कहानियां नई चेतना की कहानियां हैं जो अपनी पूरी सूझबूझ के साथ लिखी गई हैं. लेखिका का मंतव्य हर कहानी में स्पष्ट होता है. उसने अपने मंतव्य को अपनी भूमिका में तथा संग्रह के अंत में 'मृदुला गर्ग से दिनेश द्विवेदी का साक्षात्कार' में और स्पष्ट किया है.

> **"कौन-से प्यार की बात कर रहे हैं ये लोग, मैं सोचती. शायद औरत आदमी के बीच प्यार की बात. मेरे लिए प्यार का मतलब था देना. नहीं, नहीं, जिस्म हरगिज नहीं."**
> इसी संग्रह से

हां, इस संग्रह में एक बात जरूर खटकने वाली है. क्या हिंदी की अपनी कोई वर्तनी नहीं? क्या मानकीकरण हमसे अब भी पहले की तरह कोसों दूर है? शायद हां, वरना 'ऊंचाई' 'ऊंचायी' और 'पढ़ाई' 'पढ़ायी' न बन जाता.

—श्रवण कुमार

कहानी संग्रह

शहर की व

उखड़े हुए लोगों का दर्द

पिता जी चुप रहते हैं
कहानी संग्रह
ज्ञानप्रकाश विवेक
कुल पृष्ठ: 128; कीमत: 40

ज्ञानप्रका... ताजा कह... 'पिता जी चु... में शहरी ... तनाव, आप... और तेजी से ... मूल्यों को ... बनाकर लिखी ... कहानियां हैं. इन कहानियों के पात्र ... दिल्ली महानगर में ही नहीं, ... अपनी खुद की कोई संस्कृति नहीं ... किसी भी महानगर में, जिनकी ... विशिष्ट संस्कृति है, देखे जा सक... संग्रह की आवरण कहानी 'पिता ... रहते हैं' में शहरी, मध्यमवर्गीय ... मानसिक वेदना को बखूबी उकेरा ...

'मौत' इस संग्रह की शायद ... अच्छी कहानी है. 'दादा जी' की मृ... जाने के बाद घर के सदस्य और ... जो प्रतिक्रियाएं व्यक्त करते हैं ... शहरियों के दिन-प्रतिदिन निष्ठुर हो... परिचायक है. पड़ोसियों को लगता ... बूढ़े ने अलस्सुबह मृत्यु की गोद में ... उनके रोजमर्रा के जीवन में बेमतलब ... हस्तक्षेप किया है. दूसरी तरफ दादा ... पोतों को लगता है कि बूढ़े ने ठीक ... एकदिवसीय क्रिकेट मैच देखने का म... किरकिरा कर दिया है. क्या इसी ... उसे मरना था?

तो ये हैं शहर की विडंबनाएं. यह ... कुछ यंत्रवत चलता है. मातमपुर्सी में ... हो तो चेहरे पर छद्म गंभीरता ओ... लोग चले आते हैं, दुर्घटना हो तो किसी ... पास इतनी फुर्सत नहीं कि घायल ... अस्पताल में पहुंचा दे. लोग अपने-अ... काम में ही मशगूल रहते हैं. परि... बिखरते चले जाते हैं, पति-पत्नी में ... का दायरा बड़ा होता जाता है, बूढ़े ... बाप बोझ बनते जा रहे हैं. और भी ... विडंबनाएं हैं जो संग्रह की कहानियों ... दर्शायी गई हैं. सच कहा ... कहानियां शहरी जीवन का दर्पण ...

—अ.ला.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

से जोत जगाते चलो
की गंगा बहाते चलो

एवरेडी टॉर्च
आपके प्रियजनों के लिये अनमोल उपहार

EVEREADY®

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपिका: हींग लगे न फिटकरी, रंग आए चोखा

जनता की सेवा में

माता सीता, **दीपिका चिकलिया** महिलाओं की महंगाई विरोधी रैली के लिए लालकृष्ण आडवाणी के साथ मुंबई आईं तो प्रोड्यूसरों से ऐसे मिलीं जैसे एहसान कर रही हों उन पर. यहां तक कि स्वघोषित तुलसीदास रामानंद सागर तक को अर्जी भेजनी पड़ी मुलाकात के पहले...

भारतीय जनता पार्टी का वह लेखक, जिसकी लिखी स्पीचों को धुआंदार पेश करके पार्टी नेता वाहवाही लूट ले जाते हैं, यहां सिर पीट कर रह गया. सीता की इमेज के अनुरूप भावनापूर्ण, हृदयस्पर्शी जो भाषण उसने दीपिका को रटाया था, रैली को संबोधित करने खड़ी होते ही वे उसे भूल गईं. घबराहट में वे नारे लगवाने लगीं. आखिर श्रोताओं ने विद्रोह कर दिया, 'अब आप भी तो कुछ बोलिए....'

बमुश्किल उन्होंने यही कहा कि वे फिल्में छोड़कर सारा समय जनता की सेवा में लगाना चाहती हैं. जागरूक श्रोताओं ने सिर्फ एक चेतावनी के साथ उन्हें बख्श दिया, 'अगली बार डायलॉग जरा ठीक से याद करके आने का.'

सचमुच गजब तमाशा

'गजब तमाशा' के सेट पर असली तमाशा तब शुरू हुआ जब हीरोइन **अनु अग्रवाल** ने महंगी ड्रेस को 'घटिया' कहकर पहनने से इनकार कर दिया. निर्माता-निर्देशक रंजीत की मान-मनौवल भी बेकार गई. अनु ने उस ड्रेस को अपनी मर्जी के मुताबिक बदलवाकर छोड़ा.

दरअसल, अनु की सारी कोशिश थी श्रीमती रंजीत को नीचा दिखाने की जो इस फिल्म की ड्रेस डिजाइनर हैं. वे पहले नायिका थीं. अनजाने में (या जानबूझकर?) वे इसी सेट पर कुछ पत्रकारों को सांवली, साधारण अनु अग्रवाल व राहुल राय को अपनी फिल्म में लेने की खास वजह बता बैठीं—"कहानी नौकर-नौकरानी की है. हर किसी को ऐसा रोल सूट नहीं कर सकता..."

अनु और राहुल: शान पर बट्टा

सबक सिखाने के लि

'दौलत की जंग' की आउटडोर
आमिर खां हीरोइन जूही चाव
जिस तरह गूढ़ मंत्रणा में डूबे हु
विस्मयकारी था. जूही के साथ
कर चुकने के बावजूद इन दोनों
प्यार पहले कभी देखा नहीं गया
दाल में कुछ काला नजर आने
जिस तरह इश्क नहीं छिपता
छिपाए नहीं छिपता.
श्रीदेवी के साथ एक

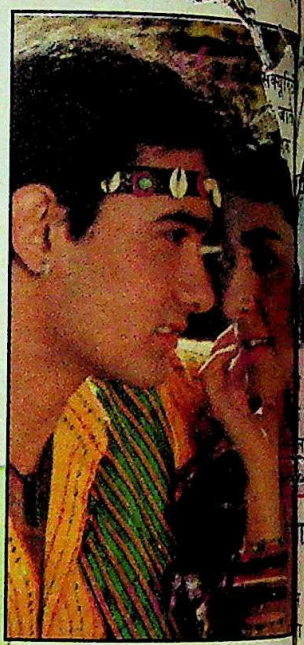

आमिर और जूही: दिखा देंगे ह

साइन करनी शुरू की हैं, आमि
पर सांप लोट गया है.

सलमान श्रीदेवी की जोड़ी ब
सह गए. लेकिन 'साजन' हिट हो
जब एक नए प्रपोजल में माधुरी
अपना हीरो 'दिल' वाले आ
'साजन' वाले सलमान में से कि
चुन लेने के लिए कहा गया, और
मतदान सलमान के पक्ष में कर
आमिर से कतई बर्दाश्त नहीं
और शांत माने जाने वाले आमि
दिन जो कहर सलमान के
किया, उसे देख सभी उन्हें 'एंग्री
इमेज के लिए सही वारिस
इसीलिए माधुरी को थोड़ा 'सबक
के लिए आमिर ने जूही के साथ
बढ़ा ली है.

पर यह 'क्लोजनेस' कहीं कोई
तो नहीं खिला देगी जैसा
अक्सर दिखाया जाता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ट उगलने की बेवकूफी

भानुप्रियाः शेखी में मारी गईं

भानुप्रिया पर एक नृत्य फिल्माया जा रहा था श्रीदेवी जैसी यह अभिनेत्री हिंदी फिल्मों में फिर धाक जमाने की कोशिश कर रही हैं. 'मधुर गीत-संगीत और मोहक नृत्यों के दौर ने मन में नई आशाएं जगा दी हैं....'

यहां तक तो ठीक. पर आज जिस उम्र की हीरोइनें पसंद की जा रही हैं उसे पार किए तो अरसा हो गया भानु को तब? "नृत्य हर कमी को पूरा कर देगा," भानु का जवाब. हीरो कौन है? "पहले नृत्यों वाला हिस्सा पूरा करके डिस्ट्रीब्यूटरों को दिखा दिया जाएगा, फिर वे जिसे ...ने लेंगे." और डायरेक्टर? "जो सबसे बढ़िया कहानी सुझाएगा." प्रोड्यूसर की ...में इसी वक्त इतनी करारी डांट पड़ी भानु को कि उनकी बोलती बंद हो गई. ठेठ ...में जो कुछ कहा गया, उसका आशय यही था कि बेवकूफ लड़की, तुझे किसने ...यह सब सीक्रेट उगल देने को!

...ा का जादू

अनीताः अभी तो मैं जवान हूं!

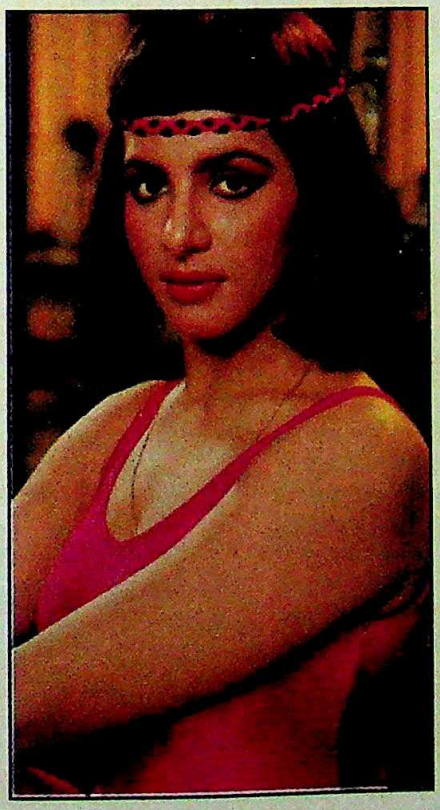

...शाम अनीता राज उस पांच ...होटल के हेल्थ क्लब में जानबूझ ...ई थी या सिर्फ एक सुखद संयोग ...हां नई-नई आई लड़कियां और ...घरों की लाडलियां कसरत के ...मुक्त देह प्रदर्शन के लिए आया ...हैं. यहां की शामें फिल्म उद्योग के ...हो चले निर्माता-निर्देशकों से ...र रहती हैं.

...र है कि अनीता ने इस हेल्थ ...की सदस्यता के लिए अर्जी दी है. ...की वजह वह प्रस्ताव बताया जाता ...एक बड़े निर्माता ने उन्हें हाल में ...या. यह रोल है 'मृगनयनी' की ...जगलों में पली बढ़ी आदिवासी ...का, जिसके शरीर सौष्ठव पर ...होकर विज्ञापन जगत का एक ...छायाकार उसे मॉडल बनाने ...ले आता है.

...त्व के बावजूद अनीता राज ने ...ने के जरिए काया का जो जादू ...रचा है और सचमुच उनसे उनकी ...लीन, तमाम नौजवान अभिनेत्रियों ...ई है. कहीं उसी से तो कहानी ...क्रिया नहीं आया निर्माता को!

...कुछ ज्यादा ही कड़वा सच

अब इस बुढ़ापे में हो रही छीछालेदर से बड़े परेशान हैं धर्मेंद्र, वरना पार्टी में यों बिना दो-चार पेग अंदर किए बंदूक उठा लेने की बात न करने लगते.

बड़े ही सहयोगी सितारे की इमेज बड़ी मेहनत से बनाई थी उन्होंने. पर अब उनके निर्माता इस बात का खंडन करने लगे हैं कि

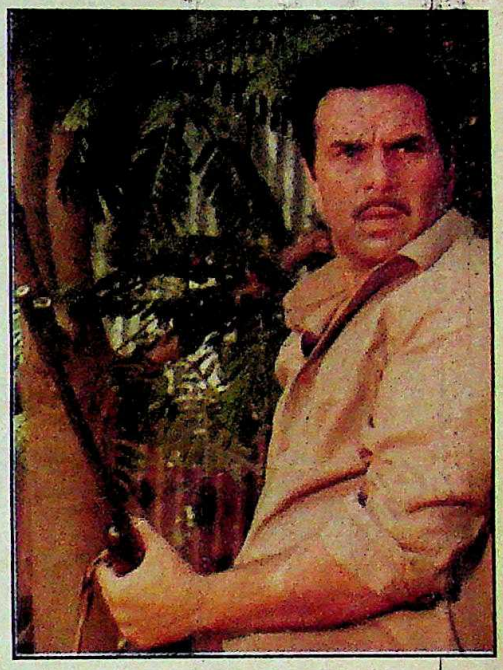

धर्मेंद्रः खबरदार!

धर्मेंद्र ने कभी किसी को परेशान नहीं किया. यह चर्चा अब आरोप के स्वर में होती है. इस पार्टी में, जो एक फिल्म खत्म होने, दूसरी शुरू होने और साथ में निर्माता का जन्मदिन मनाने के लिए शानदार होटल में दी गई थी, किसी उत्पात की आशंका कम थी क्योंकि सबका ध्यान नाच-गाने ने मोह रखा था. तभी धर्मेंद्र के एक प्रशंसक ने उठकर अपने प्रिय सितारे की तारीफ में शेरोशायरी शुरू कर दी जिसका हर शेर 'शेरदिल' से शुरू होकर 'शेरदिल' पर ही खत्म होता था.

बस इसी ने किसी को याद दिला दिया यह आरोप कि इसी नाम की फिल्म के निर्माता से धर्मेंद्र ने अपने मेहनताने से डेढ़ गुना पैसा वसूला. पूरा पैसा पाने के बाद भी डबिंग महीनों पूरी नहीं कराई— वगैरह-वगैरह. सुनकर धर्मेंद्र इतने भन्नाए कि आरोप लगाने वाले को गोली से उड़ा देने की धमकी देने लगे. लेकिन बीती बात पर इतना गुस्सा क्यों? सच कुछ ज्यादा ही कड़वा लगा क्या?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभोद पुष्करणा

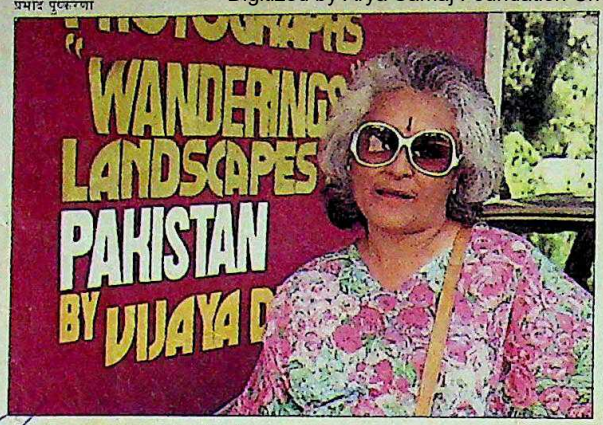

◆ विजया दीक्षित: रिश्तों को मजबूती

◆ जया बच्चन: परदे पर वापसी

हेमन्त पिटवा

◆ संकल्प दोसा: मेज पर, जेब पर भारी

◆ रोल्स रॉयस सिल्वर स्पिरिट: कीमत का कीर्तिमान

कैमरे की कूटनीति

◆ इस्लामाबाद में भारतीय उच्चायुक्त मणि दीक्षित का काम दूभर तो है ही. पर अब उन्हें ऐसी शख्सियत से राजनयिक मदद मिल रही है जिनसे ऐसी कोई उम्मीद नहीं थी. ये हैं उनकी बीवी **विजया दीक्षित.** पिछले पखवाड़े उन्होंने इस्लामाबाद में 'वांडरिंग' (घुमक्कड़ी) विषय पर अपने छायाचित्रों की प्रदर्शनी लगाई. मकसद: दोनों देशों के रिश्तों को बेहतर बनाना. उन्होंने कहा भी, "पाकिस्तान को जैसा मैंने देखा, यह उसकी एक झलक है." कहा जा सकता है कि यह रिश्तों की मजबूती की झलक देती है.

गुड्डी अब बा बनेगी

◆ 'गुड्डी' यानी **जया बच्चन** अब उम्रदराज औरत की भूमिका में आएंगी. वे अशोक पटेल के नाटक 'बा रिटायर थाइ छी' पर आधारित फिल्म में काम करेंगी. मुंबई में इस नाटक के 325 हाउसफुल शो हुए हैं. वे इसमें टेलीविजन कलाकार शफी इनामदार के निर्देशन में काम करेंगी. जया का कहना है, "मैंने नाटक देखा और शफी इनामदार से कहा कि वे इस पर पटकथा लिखें. मुझे पसंद आई तो मैं इसमें काम करूंगी." अब अमिताभ भी मानेंगे कि राजनीति का आकर्षण सबको नहीं लुभाता.

महा मसाला दोसा

◆ अहमदाबाद के एक रेस्तरां ने 8 फुट का **'संकल्प दोसा'** तैयार किया है. पर प्लेट पर वह जितना बड़ा दिखता है उतना ही वह जेब पर भारी पड़ता है. इसकी कीमत भी भारी-भरकम 201 रु. है और इसे बनाने में तीन रसोइए लगते हैं. इस दोसे को दो बेयरे ट्रॉली में रखकर लाते हैं. संगमरमर मेज पर आठ से दस लोग साथ बैठकर इसे खा सकते हैं. रेस्तरां के मालिक गोयनका कहते हैं, "अब 8 फुट का दोसा बनाने की कोशिश कर रहा हूं. इसकी कीमत 1,000 रुपए."

बंदूक छोड़ कलम

◆ **अब पता चल गया है कि अपनी बंदूकें खूंटी पर टांग देने के बाद खलनायक कहां जाते हैं. वे कलम उठाते हैं और कैमरे के पीछे चले जाते हैं. कम-से-कम डैनी डेंजोंग्पा तो यही कर रहे हैं. उन्होंने नेपाली फिल्म 'साइनो' की पटकथा लिखी. इसने रजत जयंती मनाई है और इसके गीतों ने भी इस हिमालयी देश में बिक्री के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं. और अब हिंदी में भी यही होने जा रहा है.**

कार्टून: जयंती

दाम में दमदार

◆ दरअसल, **'रोल्स सिल्वर स्पिरिट'** (1982 में जैसी सिर्फ चार कारें ही इ में हैं. पिछले पखवाड़े व्यापार निगम की नीलामी 53,21,111 रु. में बिकी शौकीन विजय माल्या ने रोल्स जितने में खरीदी कीमत उससे दोगुनी है देश में बिकी यह अब सबसे महंगी कार है. इस डिजाइन वाली कार को मशहूर कार व्यापारी बागला ने, जिन्होंने राष्ट्रपति भवन से 31 कैडिलैक खरीदी थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

MAESTRO'S CHOICE

म्यूज़िक टुडे

द्वारा प्रस्तुत

ुस्तानी वादन

ए 91001
अल्लाह ख़ान *(शहनाई)*
राग रागेश्वरी/राग शिवरंजनी

ए 91003
रवि शंकर *(सितार)*
आसा भैरव/राग कौसी कान्हरा और
मिश्र धारा धुन

ए 91008
हरिप्रसाद चौरसिया *(बांसुरी)*
राग ललित/राग भूपाली

ए 91009
राम नारायण *(सारंगी)*
ाता/मिश्र देस और मिश्र भैरवी

ए 91010
शिव कुमार शर्मा *(संतूर)*
राग भूपाल तोड़ी/राग कीरवाणी

ए 91012
असद अली ख़ान *(रुद्र वीणा)*
राग आसावरी/राग मालकौस

ए 91013
ा रक्खा और ज़ाकिर हुसैन *(तबला)*
पत ताल/जय ताल और पञ्चो

ए 91018
इमरत ख़ान *(सुरबहार)*
राग मियां की मल्हार/राग श्यामकल्याण

ए 91019
अमजद अली ख़ान *(सरोद)*
राग कमलश्री/राग दुर्गा

ए 91020
एन राजम *(वायलिन)*
राग बागेश्री कान्हरा/झिंझोटी और राग भैरवी

हिन्दुस्तानी गायन

ए 91002
मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)*
राग शुक्ल बिलावल/राग रईसा कान्हरा और
राग आडंबरी केदार

ए 91004
भीमसेन जोशी *(गायन)*
राग रामकली/राग शुद्ध कल्याण

ए 91005
गंगूबाई हंगल *(गायन)*
राग बिहाग/राग बागेश्री

ए 91006
किशोरी अमोनकर *(गायन)*
राग अहीर भैरव/राग संपूर्ण मालकौस

ए 91007
पंडित जसराज *(गायन)*
राग बैरागी भैरव/राग दरबारी कान्हरा

ए 91011
ज़हीरूद्दीन और वसीफ़ुद्दीन डागर *(ध्रुपद)*
राग ललित/राग कम्बोझी

कर्नाटक वादन

सी 91014
वी दुरैस्वामी आयंगर *(वीणा)*
वैंकटासैल विहार; चिंतैया मकंदा/घन
रागमलिका तानम; तिल्लाना

सी 91017
टी एन कृष्णन *(वायलिन)*
महा गणपतिम; मारि वेरे; रघुवमसा
सुधा/सारसाक्षा; पारूलन्नो माता;
रमणै तरूवय

कर्नाटक गायन

सी 91015
एम बालमुरली कृष्ण *(गायन)*
नीदैया रदा; वेगमय/बृहदीश्वरा; ओंकारा; तिल्लाना

सी 91016
महाराजापुरम संथानम *(गायन)*
संकरी समकरू; राम नीनू नाधिन्ना; हिमगिरि
तनई/पदासनाति मुनिजना; एही अन्नपूर्णे;
शनमुखम भाजा

आपको आनन्दित करने के लिए — ऑडियो कैसेट

. 50 (कर सहित)। पैकिंग एवं वितरण शुल्क के रूप में रु. 15
ऑर्डर कम से कम 4 कैसेटों के लिए हों तथा आगे भी 4 के गुणक में हों।

ध्यान दें

के चार्ज के चैक्स पर रु. 15 अधिक जोड़ें।
कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली से भेजे गए चैक/ड्राफ्ट का एम
ा होना ज़रूरी है।
अथवा कूरियर द्वारा भेजे जाएंगे।
ऑर्डर के बाद डिलीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक
को।
करने के लिए पैलगम ऑर्डर-फार्म का प्रयोग करें।
अन्य भुगतान 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर इस पते पर
टुडे, पो. बा. 29, नई दिल्ली-110001।
और कीमतें केवल भारत में लागू होंगी।
के न होने पर कृपया अपना नाम और पता
के साथ डाक द्वारा म्यूज़िक टुडे को भेज दें।

MUSIC TODAY

मेल-ऑर्डर फार्म

कोड सं.	कैसेटों की संख्या
ए 91001	
ए 91002	
ए 91003	
ए 91004	
ए 91005	
ए 91006	
ए 91007	
ए 91008	
ए 91009	
ए 91010	
ए 91011	
ए 91012	
ए 91013	
सी 91014	
सी 91015	
सी 91016	
सी 91017	
ए 91018	
ए 91019	
ए 91020	

हाँ, मैं 'म्यूज़िक टुडे' कैसेट रु. 50/- प्रति कैसेट के दर पर दिए हुए विवरण अनुसार खरीदना चाहता/चाहती हूँ। (ऑर्डर कम से कम 4 कैसेटों के लिए हों तथा आगे भी 4 के गुणक में हों। कृपया पैकिंग अथवा वितरण शुल्क के रूप में रु. 15/- अतिरिक्त भेजें तथा दिल्ली से बाहर वाले चैक पर रु. 15/- अतिरिक्त जोड़ें।)

अपने लिए ☐ उपहार के लिए ☐

म्यूज़िक टुडे को देय रु. _____ का क्रास किया गया चैक एवं डिमांड ड्राफ्ट संलग्न है।

ऑर्डर किए गये कुल कैसेटों की संख्या _____

कुल देय राशि रु. _____

मेरा नाम _____

पता _____

_____ पिन _____ फ़ोन _____

उपहार पाने वाले का नाम _____

पता _____

_____ पिन _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

डीलरशिप में इच्छुक वितरक, संपर्क करें म्युज़िक टुडे

REGISTRATION NO. H.H. 45823/86
REGISTERED No. L NW FBD 46/87
D—(C) 14/86

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

For the gracious people

Quality that's forever

Every genuine
WILLS GOLD FLAKE
cigarette bears the name
W.D. & H.O. WILLS

A BRAND
BY I.T.C.
MADE

CLARION C-GFK-16R2

STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

30 नवंबर 1991 11 रुपए

इंडिया टुडे

एस.बी. चव्हाण: घर की नहीं फिकर

गुरा कांड: लापरवाही का जहर

भूकंप क्षेत्र: आहत को नहीं राहत

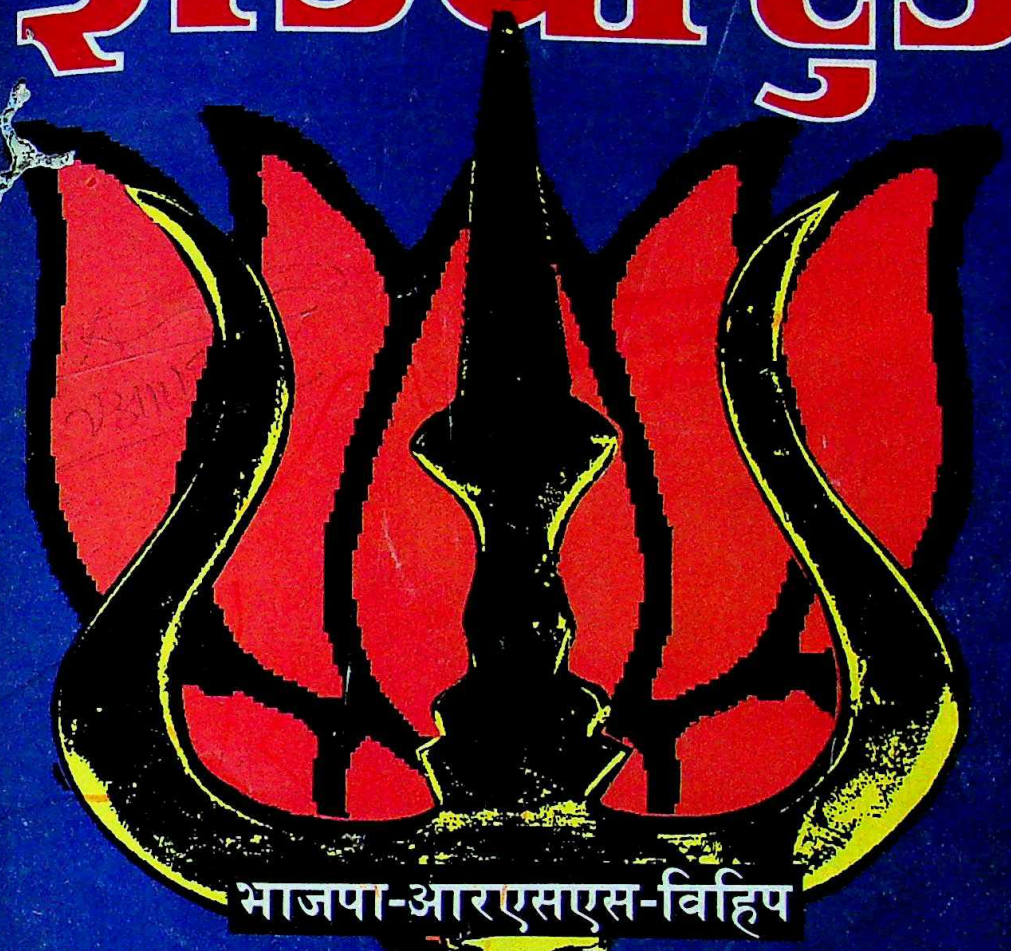

भाजपा-आरएसएस-विहिप

बिगड़ते रिश्ते

एक समय चुनावों में भारी सफलता दिलाने वाला मंदिर मसला इस हिंदूवादी गठजोड़ में भावी रणनीति को लेकर तनाव तथा फूट पैदा कर रहा है

बालासाहब देवरस
आरएसएस

लालकृष्ण आडवाणी
भाजपा

अशोक सिंघल
विहिप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AVAILABLE AT SELECTED CIT

Rothmans

KING SIZE

WORLD LEADER

THE BEST TOBACCO MONEY CAN BUY

Made in India under licence by Godfrey Phillips (India) Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Hari

Statutory Warning:
Cigarette smoking is injurious to he

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार पत्रिका का मुख्य उद्देश्य खबरों को सामने लाना और उन्हें सही परिप्रेक्ष्य में रखना होता है. पर कई बार हम ऐसी अलग तरह की कथाओं पर भी काम करते हैं जो आनंद के साथ-साथ संतुष्टि भी देती है. तिरुवनंतपुरम के हमारे संवाददाता **आनंद विश्वनाथन** ने जब पूर्वी केरल के जड़ुक्की के नरकट काटने वालों पर ऐसी ही एक कथा प्रकाशित करने का सुझाव दिया तो हममें से किसी को भी अंदाज नहीं था कि यह कथा इतनी मजेदार और रंगारंग होगी.

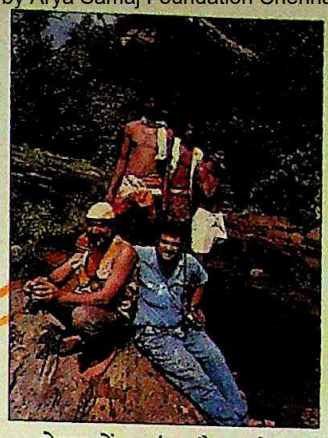

केरल में आनंद और प्रमोद

नरकट काटकर जीविका के साधन जुटाने वालों के कठिन परंतु अनूठे जीवन के विभिन्न पहलुओं को देखने-समझने, चित्र उतारने में आनंद और प्रमुख छायाकार **प्रमोद पुष्करणा** के पांच दिन गुजारे. जीप, नौका और डोंगी से यात्राएं करने के अलावा पूरे-पूरे दिन उन्होंने दुर्गम और फिसलन भरे रास्ते पर पैदल चलने में गुजारे. पहाड़ की चढ़ाई आरामतलबी वाले शहरी जीवन जीने के आदी इन दोनों पत्रकारों की अग्निपरीक्षा ही लेती रही. 84 किलो वजन वाले, दमे के मरीज आनंद के लिए तो यह चढ़ाई बहुत ही मुश्किल थी. और एक दिन ऊपर चढ़ने पर उन्होंने जब पाया कि वे अपना इनहेलर नीचे ही छोड़ आए हैं, तो वे एकदम बेचैन हो गए. लेकिन उन्होंने प्रमोद की सलाह पर 14 किमी की चढ़ाई बिना इनहेलर के चढ़ ली तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि आठ वर्षों में पहली बार वे इस तरह बिना इनहेलर के रहे.

अद्भुत प्राकृतिक छटा वाले इन स्थानों में उनके लिए मुश्किल के मौके भी आए. उफनती पहाड़ी नदी को पार करते हुए प्रमोद का पांव एक चट्टान पर से फिसला और फिर चौकन्ने वनवासियों ने उन्हें बाहर निकाला. बिना मांझी की नौका पर से फोटो खींचते समय भी वे एक बार गिरे और बड़ी मुश्किल से तैरकर किनारे तक पहुंचे. उन्होंने नरकट काटने वालों के साथ केले और उबले कसावा का भोजन किया, पेड़ पर बने मचानों में उनके साथ वक्त गुजारा. यात्रा पूरी करने के बाद दोनों के पैरों में छाले आ गए और देह का हर जोड़ दर्द करने लगा. लेकिन जैसा कि आनंद कहते हैं, "ये आनंद और काम के पांच दिन थे. और हमने इस कठिन जीवन का भी मजा लिया. सामान्य किस्म की और राजनैतिक खबरों का पीछा करने के बनिस्बत यह अपनी तरह का अनूठा अनुभव था."

उ/उ० पुरी

इस पखवाड़े

बिगड़ते रिश्ते

अयोध्या की ताजा घटनाओं से भाजपा-विहिप-संघ परिवार में फूट के आसार दिखने लगे हैं जिसे आरएसएस पाटने में जुटा है. भाजपा की वर्तमान स्थिति और भविष्य की योजनाओं पर नजर.

आवरण कथा 18

मदद को तरसे भाग्यहीन

उत्तरकाशी के भूकंप पीड़ितों को अभी राहत नहीं मिल पाई है. राहत कार्य मजाक बनकर रह गए हैं. सिर पर छत नहीं, तिस पर सामने खड़ा सर्दी का मौसम उनकी मुसीबतों में इजाफा ही करेगा.

खास रपट 83

जन्नत का भरपूर भोग

आतंकवाद की आग में सुलगती कश्मीर की सुंदर वादियों में जाना असंभव हो जाने से अब फिल्म निर्माताओं ने ऊटी की ओर रुख किया. कारोबार उफान पर है मगर व्यावसायीकरण के साये लंबे होने लगे हैं.

सिनेमा 91

अगले पन्नों पर

ऊटी 7
तेवर 10
राजरंग 11
आवरण कथा
भाजपा-आरएसएस-विहिप:
बिगड़ते रिश्ते 18
खास रपट:
भूकंप क्षेत्र: लापरवाही का जहर 28
श्रद्धांजलि: वेंकटके विचारता शेर 32
हरिजन थाने: दिखाने के दांत 38
आजकल 40
खास रपट
एस.बी. चव्हाण: घर की नहीं फिकर 45
छाया-लेख 52
खास रपट
बारामती: मराठा मतसबदारी 61
खेलकूद
क्रिकेट: चयन में चूक 80
खास रपट
भूकंप क्षेत्र: मदद को तरसे भाग्यहीन 83
अंतरंग 90
कहानी 98
परदे के उस पार 102
चर्चित चेहरे 104

आवरण: प्रणब दत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

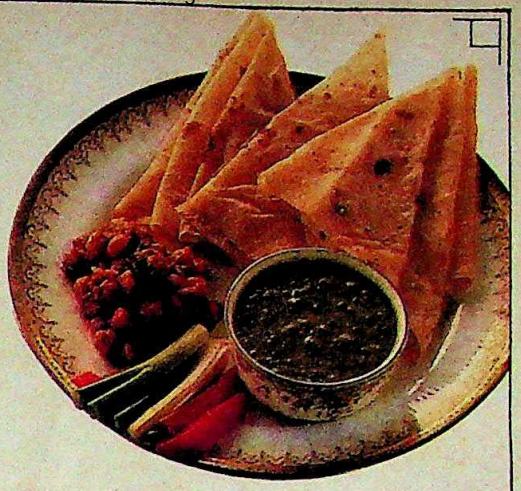

यह बढ़िया चिकन सिंगापुरी नहीं बनायेगी, पर आपके लखनवी परांठे में चार चाँद ज़रूर लगा देगी.

मील्सेंट घरेलू आटा-चक्की. स्वाद-पारखी और विशिष्ट रसोइयों के लिये, जिन्हें भारतीय खाना भी उतना ही बढ़िया जायकेदार चाहिये जितना कि चाइनीज़ या फ्रेंच. यह आधुनिक सुविधाजनक उपकरण पश्चिम या जापान में नहीं, बल्कि हमारे देश में ही बना है. बेजोड़ भारतीय स्वाद और ज़रूरतों के लिये.

ताज़ा, शुद्ध, पौष्टिक आटा और सुगंधयुक्त मसाले. सब पलभर में घर पर तैयार. करी, राज कचौरी, रूमाली रोटी, लखनवी परांठे वगैरह के लिये. ताज़ी व मिलावट रहित सामग्री से भारतीय रसोई में फिर से स्वाद आ गया है. अब बाज़ार की आटा चक्की का आधा बेक हुआ आटा नहीं, न ही मिलावट से भरपूर मसाले.

अब है शुद्ध, ताज़ा, घर पर तैयार मसालों का स्वाद. जाइये मील्सेंट ले आइये. ताज़ा सामग्री आपके चिकन सिंगापुरी को भी चार चाँद लगा सकती है.

इंजीनियरिंग वर्क्स,
उद्योगनगर, आनन्द-388 121, (गुजरात).

मील्सेंट
घरेलू आटा चक्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Mudra:A:MIL:5890 Hin.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त* उपहार अधिक बचत

इंडिया टुडे की ओर से

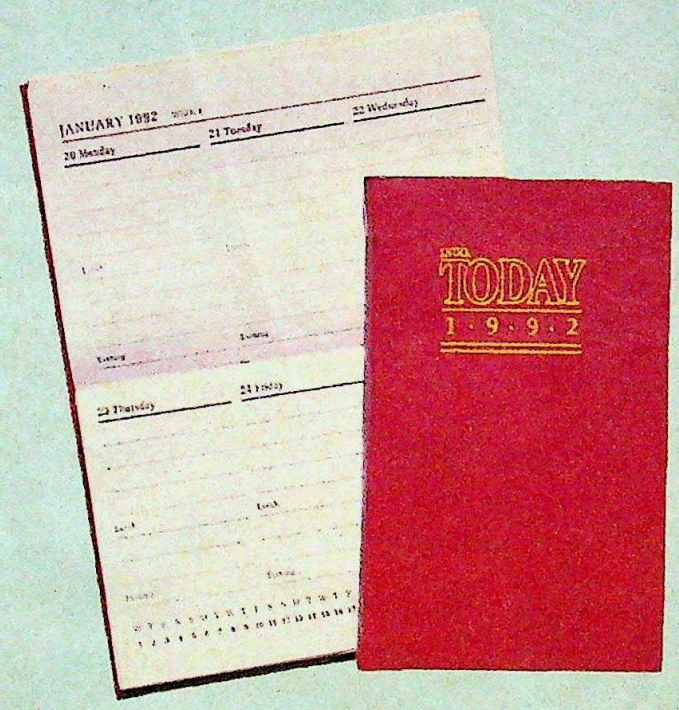

इंडिया टुडे की प्रति का मूल्य भले ही 11 रुपए हो गया है पर आप अपनी प्रति अभी भी 9 रुपए में पा सकते हैं। अभी से ग्राहक बनकर 2 रुपए प्रति बचाएं। और साथ में आपको मिले 49 रु. मूल्य की इंडिया टुडे पॉकेट डायरी बिल्कुल मुफ्त*।

इस विशेष पेशकश के लिए आपको देने होंगे :

इंडिया टुडे के वार्षिक ग्राहकी शुल्क के लिए 210 रु. और मुफ्त पॉकेट डायरी का प्रबंध और प्रेषण खर्च 15 रु.*।

इंडिया टुडे का ग्राहक बनने और मुफ्त* पॉकेट डायरी पाने के लिए आज ही रकम के साथ-साथ निम्नलिखित आर्डर फार्म भी डाक से रवाना करें।

ऑर्डर फार्म

हां। मैं विशेष उपहार पेशकश का लाभ उठाना चाहूंगा/गी। मैं (किसी एक खाने में निशान लगाएं)

☐ नया/नई ग्राहक हूं। कृपया इंडिया टुडे की मेरी वार्षिक ग्राहकी शुरू कर 1992 की मेरी मुफ्त* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी भेजें।

☐ वर्तमान ग्राहक हूं।** कृपया अगले साल तक इंडिया टुडे के लिए मेरी ग्राहकी का नवीकरण कर 1992 की मेरी मुफ्त* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी भेजें।

लिविंग मीडिया इंडिया लि. को देय मेरा ..... रु. का चेक/डीडी संख्या ..... दिनांक ..... संलग्न है।

नाम .....

पता .....

..... पिन .....

ग्राहक संख्या ..... (केवल पेशे वर्तमान ग्राहकों के लिए जो ग्राहकी के नवीकरण के इच्छुक हैं।

कृपया ध्यान दें :

* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी का प्रबंध और प्रेषण खर्च अतिरिक्त 15 रु. प्रति।

** इस पेशकश के तहत ग्राहकी का नवीकरण कराने के इच्छुक वर्तमान ग्राहक अपना नाम और पता वहीं लिखें जो इंडिया टुडे की आपकी प्रति पर लगाए गए बाहरी कव्हर के लेबल पर चिपका होता है।

– राशि लिविंग मीडिया इंडिया लि. को देय रेखांकित चेक/डीडी द्वारा ही भेजें।

– यह पेशकश 31 दिसंबर 1991 तक उपलब्ध।

– दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता और मद्रास में भेजे गए चेक/ड्राफ्ट एम आई सी आर ही होने चाहिए।

– यह पेशकश और दरें भारत में ही लागू होंगी।

– ऑर्डर पूरा करने के लिए कृपया 6-8 हफ्तों का समय दें।

– ऑर्डर फार्म न होने पर ऑर्डर कृपया नाम, पते और भुगतान के साथ निम्नलिखित पते पर भेजें :

इंडिया टुडे (हिंदी)
पोस्ट बॉक्स नं. 114, नई दिल्ली-110 001.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदलाव का आईना

'तन बोले, मन डोले' (आवरण कथा, 15 नवंबर) फिल्मों के बदले परिदृश्य का आईना ही थी. जब समाज में हिंसा और यौन मुक्तता बढ़ती जा रही हैं, तो हिंदी फिल्में भला पीछे क्यों रहें?

कलकत्ता (प. बंगाल) — शैलेश तिवारी

कमजोरियां तो भूल गए

'फिर धूम-धड़ाके की तैयारी' (आवरण कथा, 31 अक्तूबर) में भारत के कमजोर पक्ष की तरफ ध्यान नहीं दिलाया गया है. मसलन, अनुपयोगी खिलाड़ी को जबरदस्ती ढोना, नए गेंदबाजों को नियमित मौका न देना, लापरवाह और कमजोर क्षेत्ररक्षण, गेंदबाजी में सुस्ती, संकट के समय संघर्षहीनता, जिसकी वजह से भारत जीत सकने वाला मैच हमेशा अपने प्रतिद्वंद्वी को थमा देता है. शारजाह कप के अंतिम लीग मैच में मात्र 4 रन की हार इसी आलस्य व विवेकहीनता का परिणाम है.

मोतिहारी (बिहार) — राजीव रंजन प्रकाश

■ आपके विश्लेषण से ऐसा लगा कि करिश्माई भारतीय बल्लेबाज विपरीत परिस्थितियों में भी खेल का पांसा पलट सकते हैं परंतु शारजाह में अच्छे शुरुआती प्रदर्शन के बावजूद अंतिम दोनों मैचों में भारतीय बल्लेबाजी से लगा कि अनुकूल परिस्थिति के समाप्त होते ही भारतीय टीम के संघर्ष करने की क्षमता भी खत्म हो गई है. भारतीय क्रिकेटरों के साथ एक दुर्भाग्य और भी जुड़ा हुआ है कि पाकिस्तान के साथ किसी भी मैच में वे मनोवैज्ञानिक दबाव में आकर अपनी स्वाभाविक प्रतिभा का प्रदर्शन नहीं कर पाते.

फर्रुखाबाद (उ.प्र.) — अनुभव तिवारी

प्रशंसनीय नीति

'मंडल मामले का मौलिक प्रश्न' (कसौटी, 31 अक्तूबर) तार्किक लगा. इसमें कोई शक नहीं कि आरक्षण की कोई भी व्यवस्था योग्यता को नकारकर योग्य व्यक्तियों को अपमानित करती है और योग्यता को तरजीह न देने वाला समाज पतनोन्मुख हो जाता है. लेकिन यह भी कटु सत्य ही है कि वोट-बैंक की गरज से कोई भी दल इस व्यवस्था के उन्मूलन से संबंधित बातों से परहेज करता है. इसलिए संशोधित आरक्षण नीति प्रशंसनीय है.

मनहीपुर (बिहार) — नलिन कुमार

कड़वी सचाई

'मजबूरी का नाम तालीम' (31 अक्तूबर) एक भयावह कड़वी सचाई से परिचय करा गया. मुस्लिम समाज की अशिक्षा और गरीबी के चलते कट्टरपंथी अपनी जेबें भर रहे हैं. यह बिलकुल सही है कि केवल आध्यात्मिक शिक्षा की घुट्टी न पिलाकर ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा से ही इस समुदाय की अशिक्षा दूर हो सकती है.

मोदीनगर (उ.प्र.) — आशुतोष कुमार

■ दीनी तालीम के नाम पर मुसलमान नेता और मौलवी क्या मासूम बच्चों का शोषण कर उन्हें पथ भ्रष्ट नहीं कर रहे? मुंह-जबानी कुरान की आयतें रट लेने से क्या बच्चे अपनी जिंदगी को किसी योग्य बना सकते हैं?

पौड़ी गढ़वाल (उ.प्र.) — प्रकाश कुमार श्रीवास्तव

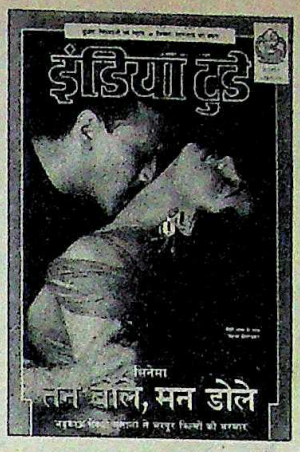

सेक्सी फिल्मों का यह दौर भी अस्थायी ही साबित होगा, जिस तरह हिंसा और मारधाड़ की फिल्में दर्शकों को ज्यादा दिन नहीं लुभा पाईं उसी तरह इन फिल्मों से भी दर्शक जल्द ही ऊब जाएंगे. सेंसर को भी ऐसे दृश्य पास करते समय थोड़ी कड़ाई बरतनी चाहिए.

जौनपुर (उ.प्र.) — राजित यादव

जनसहयोग जरूरी

'जंग के लिए तनी तलवार' (31 अक्तूबर) से पाकिस्तानियों के बुलंद हौसले और कश्मीर की स्थिति का विवरण मिला. आतंकवाद रोकने के लिए उठाए गए सभी कदम—मसलन, मैत्री-वार्ताएं, सैनिक शासन आदि असफल हो चुके हैं. बिना जनसहयोग के आतंकवाद और पाकिस्तान के बढ़ते कदम नहीं रोके जा सकते. सरकार को जनसहयोग तभी मिल सकता है जब जनता सुरक्षा का अनुभव करे. सैनिक शासन और मैत्री-वार्ताओं से असुरक्षित, गरीब बेरोजगार लोगों को क्या मिला? जबकि पाकिस्तान उन्हें रोजगार भी देता है, पैसा भी और रोटी भी. तो फिर वे आतंकवादी क्यों न बनें? यह सवाल तीखा जरूर है मगर इसका हल ढूंढे बगैर हम इन समस्याओं से निजात नहीं पा सकते.

बुलंदशहर (उ.प्र.) — मिनी भारद्वाज

■ आपने आतंकवादियों की कायरता को शौर्य का जामा न पहनाकर एक सराहनीय काम किया है, तथा भारतीय सेना को बदनाम करने के लिए उन पर लगाए आरोपों को अविश्वसनीय कहकर कई लोगों के शक को दूर किया है.

मुजफ्फरपुर (बिहार) — निर्मय रंजन

भविष्य से खिलवाड़

'बेआवाज सियासी मार' (31 अक्तूबर) में आरक्षण पर टिप्पणी पढ़ने पर लगा कि किस तरह ये सत्तासीन नेता सवर्ण छात्रों के भविष्य व जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं. आरक्षण को ये नेता राजनैतिक मुद्दा बनाने में अपना व्यक्तिगत फायदा देखते हैं. वे यह नहीं सोचते कि वर्षों का समय व अत्यधिक पूंजी खर्च एवं मेहनत कर डिग्री पाने वाले ये छात्र मजबूर होकर क्या करेंगे.

आगरा (उ.प्र.) — कुलदीप जैसवाल

वर्ष: 6, अंक: 2,
16-30 नवंबर 1991

● संपादकीय कार्यालय: लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3315801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ग्राहकी चंदा भेजें: इंडिया टुडे (हिंदी), पो बाक्स 114, नई दिल्ली-110001
● सर्कुलेशन कार्यालय: इंडिया टुडे, एफ-14, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ● मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन: 2026152, 2029328, 2029435, टेलेक्स, 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, मुंबई. ● क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय: के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273, टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016. फोन: 225398, 221822, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता
● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.
● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित फैसला दें

'फैसला और फासला' (31 अक्तूबर) पढ़ा. भोपाल गैस कांड फैसले को लागू करते समय यह जरूर ध्यान में रखा जाना चाहिए कि वास्तविक गैसपीड़ितों की पहचान कर उन्हें उचित, युक्तिसंगत मुआवजा मिले. क्योंकि 2 दिसंबर 1984 की रात ऐसे भी लोग भोपाल में ठहरे होंगे जिनके पास इसका कोई दस्तावेजी सबूत नहीं होगा.

विदिशा (म.प्र.) **प्रदीप भालचंद्र गवांदे**

चित्रण बदलावों का

कहानी 'दिन का सपना' (31 अक्तूबर) आज के भौतिकतावादी युग में संबंधों में आए बदलाव का सही चित्रण प्रस्तुत करती है. इससे यही साबित होता है कि कमोबेश लोग अपने कर्तव्यों से विमुख होते जा रहे हैं.

पटना (बिहार) **राजेश प्रियदर्शी**

आराम ही करें तो अच्छा

'नींद से जागे' (31 अक्तूबर) देवीलाल को इतनी फजीहत के बाद अब आराम ही करना चाहिए क्योंकि जिस व्यक्ति को पुत्र मोह के आगे कुछ नहीं दिखता वह देश का भला नहीं कर सकता. हरियाणा की जनता ने उन्हें चुनावी मैदान में शिकस्त देकर सही जगह पहुंचा दिया है.

उज्जैन (म.प्र.) **संदीप कुलश्रेष्ठ**

स्टिक के तेवर दिखाएं

'तेवर' (31 अक्तूबर) में भारतीय हॉकी टीम के प्रशिक्षक बालकिशन सिंह का कथन पढ़ा. ऑकलैंड में फ्रांस जैसी टीम से भी ड्रा करने के बाद इसके खोखलेपन का एहसास उन्हें हो ही गया होगा. इपोह में अजलान शाह कप जीत लेने मात्र से ही भारतीय टीम एशिया की सर्वश्रेष्ठ टीम नहीं बन जाती. पाकिस्तान की हॉकी का स्तर अब भी हमसे बहुत ऊंचा है. बालकिशन जी को चाहिए कि ऐसे तेवर न दिखाकर भारतीय खिलाड़ियों को हॉकी स्टिक से तेवर दिखाने के लिए मेहनत कराएं.

मुरादाबाद (उ.प्र.) **श्याम बहादुर श्रेष्ठ**

क्षेत्रीयता का प्रदर्शन

'दो नावों की सवारी' (31 अक्तूबर) रामराव की संकीर्ण मानसिकता से परिचय करा गया. उनका यह कथन कि नरसिंह राव को इसलिए जिताना चाहिए क्योंकि वे दक्षिण से पहले प्रधानमंत्री हैं, उन्हें क्षेत्रीयता और भाषायी राजनीति करने वाले नेताओं की पांत का नेता ही साबित करता है. यदि रामराव यह कहते कि देश कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा है और केंद्र में स्थायी सरकार के लिए श्री राव को जिताएं तो वे देश के लिए प्रतिबद्ध नागरिक की मानसिकता दर्शा पाते.

इलाहाबाद (उ.प्र.) **राकेश सिंह**

मैकलुस्कीगंज के इन समाज से कटे, बेसहारा लोगों की व्यथा दिल को छू गई. समाज की मुख्य धारा से अलग-थलग पड़ने और वक्त के साथ खुद को न बदल पाने का यही अंजाम होता है. अब भी वक्त है, यदि नई पीढ़ी के लोग व्यापक समाज से जुड़ जाएं तो उनका भविष्य सुधर सकता है.

रांची (बिहार) **सुशील तिवारी**

एंग्लोइंडियन समुदाय के ये लोग अलग-थलग पड़ने के लिए खुद भी जिम्मेदार हैं. इन्होंने भारतीय समाज में रहते हुए भी अपने व्यवहार, बोलचाल व जीवन शैली में अंग्रेजियत को ही अपनाया, जो दूरस्थता का कारण बना. भारतीय परिवेश से जुड़ने के लिए इन्हें खुद को बहुत बदलना होगा.

लखनऊ (उ.प्र.) **हेमेंद्र प्रताप सिंह**

ये क्यों छूटे?

'दमकते सितारों की नई जमात' (31 अक्तूबर) में रमा विज की चर्चा छूट जाना अखरा. मैं समझता हूं कि रमा विज ही एकमात्र अभिनेत्री है जिसने शायद सबसे अधिक धारावाहिक तथा टेलीफिल्मों में काम किया है. यूं तो दूरदर्शन ने मनोहर सिंह, एस. एम. जहीर, राजेंद्र गुप्त, रघुवीर यादव, पवन मल्होत्रा जैसे प्रतिभावान कलाकार दिए हैं पर इनकी क्षमता का पूरा-पूरा उपयोग न तो दूरदर्शन कर पा रहा है और न ही फिल्मवाले.

सलुवा (प. बंगाल) **श्याम कुमार राय**

सचाई से दूर

'अनुशासन को अलविदा' (15 अक्तूबर) में भाजपा सदस्यों के संसदीय व्यवहार के बारे में जो तथ्य पेश किए हैं वे सचाई से मीलों दूर हैं. भाजपा सदस्यों ने 'देशद्रोही' प्रकरण में जो व्यवहार किया वह अपने अध्यक्ष की अनुमति से किया था. अतः इसे आप अनुशासनहीनता नहीं कह सकते. अन्याय करने वाला अन्याय सहने वाले से ज्यादा दोषी होता है. रही अनुशासन की बात तो आज भी अखिल भारतीय दलों में भाजपा सबसे ज्यादा अनुशासित है.

सींगताम (सिक्किम) **शिव भगवान पुरोहित**

दरकता अक्स

'विदेशी आईने में भारत की छवि' (31 अक्तूबर) पढ़कर भारत का अक्स दरकता नजर आया. यह भी आश्चर्य का ही विषय है कि प्रमुख औद्योगिक देशों में भी भारत की गिनती नहीं. जापान, जिसे अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध में तबाह ही कर दिया था, आज अग्रणी औद्योगिक देश है, फिर हम इतनी गौरवशाली विरासत लिए प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर होकर पिछड़े क्यों.

रायपुर (म.प्र.) **नरेंद्र परमार**

भूल सुधार

'फिर धूम-धड़ाके की तैयारी' (आवरण कथा, 31 अक्तूबर) में किसी दूसरे की तस्वीर के नीचे बॉब सिपसन लिख दिया गया था. भूल के लिए खेद है.

संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्न को न जगाएं

सभी रेखांकन: अजीत नैनन

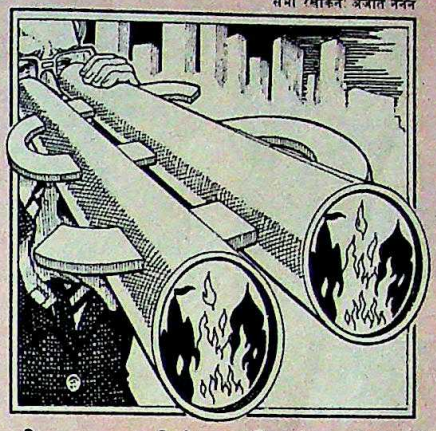

अयोध्या में पिछले दिनों जो कुछ हुआ वह बोतल में बंद जिन्न को बोतल से बाहर निकालने का प्रयास ही माना जाएगा. इस तरह के प्रयास के नतीजे जाहिर है खतरनाक होंगे. अयोध्या में पिछले वर्ष भी यही सब कुछ हुआ था. तब पुलिस ने कारसेवकों पर गोली चलाई थी और अब कारसेवकों ने वहां गए जांच दल पर हमला किया. इसके बाद जो अफरातफरी मची है उससे उजागर होता है कि भारतीय राजनीति का किस खतरनाक हद तक पतन हो गया है. आज यह न केवल धर्म की धुरी पर घूमती नजर आ रही है बल्कि कानून के रक्षकों और भक्षकों के बीच का अंतर भी धुंधलाता जा रहा है.

इसके नतीजे दूरगामी हो सकते हैं. ऐसे समय में जबकि भारत दुनिया में अपनी साख जमाने और विदेशी पूंजी को आकर्षित करने की कोशिशें कर रहा है, इस तरह की चालबाजियां महंगी पड़ सकती हैं. भारत वैसे भी सुस्ती और लालफीताशाही के लिए बदनाम रहा है. ऊपर से अगर मंदिर-मस्जिद के झगड़े, लाठी-गोली का माहौल रहेगा तो पूंजी लगाने वाले विदेशी महाजन और भी बिदकेंगे. निवेशकों के लिए तो स्थायित्व का माहौल चाहिए.

केंद्र और राज्यों में शासन चलाने वालों को ये तथ्य समझ लेने चाहिए. उन्हें यह पक्की व्यवस्था करनी होगी कि अयोध्या की हाल की घटनाएं कोई स्थायी चीज नहीं है. यह बहाने पेश करके नहीं, सीधी साफ कार्रवाई करके सिद्ध किया जा सकता है.

लेकिन यही चीज हमारे नेतागण करने को तैयार नहीं हैं. वोट की राजनीति के कारण वे हर मुद्दे पर दुविधा में पड़े रहते हैं और वोट के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं. जाहिर है इससे स्थिति और बिगड़ती जाती है. और चुनावी गणित बदलता रहता है इसलिए नीतियों के मामले में भी अनिश्चितता रहती है.

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार के लिए तो उलझन और भी गहरी है. उदार शासन के मानदंडों की मांग है कि वह उन तमाम चीजों की निंदा करे जिन्हें वह पहले बढ़ावा देती रही. उन मानदंडों की मांग यह भी है कि वह हिंदुत्व के वाहकों पर अंकुश लगाए. इसके लिए उसे अगर ताकत चाहिए तो वह बीते युग के राजाओं को याद करे जो परिवार, जाति, वंश और कुल आदि के बंधनों से खुद को मुक्त करके राज किया करते थे.

इरादे नेक होने चाहिए

जयंतो

देश की राजधानी में एक आयुर्वेदिक आसव का लेबल लगाकर बेचा जा रहा जहरीला नशा हलक के नीचे उतारकर 200 से ज्यादा लोगों का जान से हाथ धो बैठना विचलित तो करता है लेकिन अनहोनी नहीं लगता. जैसे हालात हैं, उनकी यह स्वाभाविक परिणति ही है. दीपावली जैसे त्यौहार को भी मयनोशी के आलम में डुबो देने का चलन जब आलीशान हवेलियों से लेकर झुग्गियों तक में पसर जाए तो मौत के सौदागर सबसे ज्यादा चांदी काटेंगे ही.

अब यह बात कोई दबी-ढंकी नहीं रह गई है कि ऐसे तमाम तरह के अनैतिक, जानलेवा लेकिन पैसाकमाऊ पेशों को प्रशासन तंत्र, स्थानीय छुटभैए नेताओं और उनके जरिए कई कथित बड़े नेताओं का सरमाया हासिल रहता है. कानून बनाने और लागू करने वाले क्या जानते नहीं कि मृत्यु के व्यापारियों ने आयुर्वेद के आसव, सुरा और अरिष्ट को अपने धंधे के सबसे सुरक्षित माध्यम के बतौर अर्सा पहले ही अपना लिया था. बावजूद इसके, आयुर्वेदिक दवाएं न तो मानकीकृत की जाती हैं, न बिक्री से पहले प्रयोगशाला में कसौटी पर कसी जाती हैं. और तो और, उनकी खरीद के लिए पंजीकृत वैद्य-हकीम का पर्चा भी जरूरी नहीं समझा जाता.

आखिर ऐसे हादसों को लापरवाही से हुई मौतें कब तक माना जाता रहेगा? जानबूझकर की गई सामूहिक हत्या से ये क्या कम हैं? नरमेध करने वाले इतने सस्ते में क्यों छूटें? उनके वास्ते तख्ते पर झूलने की तजवीज क्यों नहीं सोची जानी चाहिए? किसी एक थानेदार की मुअत्तली करके संबद्ध इलाके के सभी जिम्मेदार पुलिस और आबकारी अधिकारियों को क्यों बरख्श दिया जाना चाहिए? और यदि आतंकवादी अपराधों की सुनवाई के लिए विशेष अदालतें बन सकती हैं तो ऐसे मामलों के लिए क्यों नहीं बन सकतीं? सभी आयुर्वेदिक दवाओं के केंद्रीय स्तर पर मानकीकरण की प्रक्रिया तो तुरंत शुरू की ही जानी चाहिए. प्राणघाती नशे के विरुद्ध माहौल बनाने के लिए खास तौर पर गांवों, कस्बों, झुग्गी बस्तियों में लोक शिक्षण के कार्यक्रम गंभीरतापूर्वक चलाने भी जरूरी हैं. राजस्व उगाही के लिए नए स्रोत खोजकर ही नशाबंदी को अमली जामा पहनाया जा सकता है. पर मूल बात यह है कि इस सबके लिए दृढ़ इच्छा-शक्ति और नीयत साफ होनी चाहिए. बगैर उसके इस नासूर को फैलने से रोकना मुश्किल ही दिखता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक डनलप।
भारत को सदा आगे बढ़ाने का
एक प्रण, एक समर्पण।

Campaign/DIL/265/5A /HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय सड़कों पर। भारतीय कारखानों में। भारत के खेतों में। धरती हो या आकाश—डनलप हमेशा भारत को राह दिखाता रहा है। सुख में... दुख में... एक सच्चे भारतवासी की तरह साथ निभाता रहा है। डनलप को नाज़ है अपने उन लाखों... करोड़ों साथियों पर, जो उसे आगे बढ़ाते हैं। डनलप को गर्व है उन सारे मित्रों पर जो डनलप के विभिन्न कारखानों और दफ्तरों में नयी आशाओं का सृजन करते हैं ; जो देश भर में डनलप की चीज़ें पहुँचाते हैं। इन्हीं भारतीय साथियों के साथ डनलप सम्पूर्ण भारतीय हो उठता है। एक भारतीय नाम। भारतीय नागरिक। भारतीय कम्पनी—डनलप।

सन् 1990-91 के दौरान डनलप ने लगभग 200 करोड़ रुपये कर व ड्यूटी के रूप में दिये। अपने सालाना टर्नोवर—600 करोड़ रुपयों से भी 10% अधिक विदेशी मुद्राओं का अर्जन किया ; 9,500 से भी ज़्यादा लोग डनलप के अपने कारखानों तथा दफ्तरों में काम करते हैं—साथ ही लाखों और लोग भी किसी न किसी रूप में डनलप से रोज़गार पाते हैं। डनलप ने तरह-तरह की टायर और ट्यूबों की सबसे बड़ी श्रृंखला का निर्माण तो किया ही। रबर और अनुरूप धातुओं से बनी डनलप की चीज़ें विभिन्न उद्योगों, वाहनों, कृषि कार्य तथा रक्षा के क्षेत्र में लगातार इस्तेमाल की जाती हैं। साथ ही डनलप एक सच्चे नागरिक का कर्तव्य भी निभाता रहा है। उत्सव और पूजाओं में भीड़ सम्भालना, ट्रैफिक कन्ट्रोल आदि ; तथा खेलकूद और सांस्कृतिक उत्सवों को बढ़ावा देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

DUNLOP

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य वार्षिक रु. 210/-
भुगतान का माध्यम-चैक/डिमांड ड्राफ्ट
दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास के चैक/डिमान्ड ड्राफ्ट एमआईसीआर वाले ही होना चाहिये।
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए15/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
दर व फेांकश केवल भारत में लागू
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें।
इंडिया टुडे (हिन्दी)
पोस्ट बॉक्स नं.- 114
नई दिल्ली- 110 001

इंडिया टुडे

MILESTONES/IT/120

रविशंकर, बिजनेस एंड पॉलिटिकल कार्टूनिस्ट

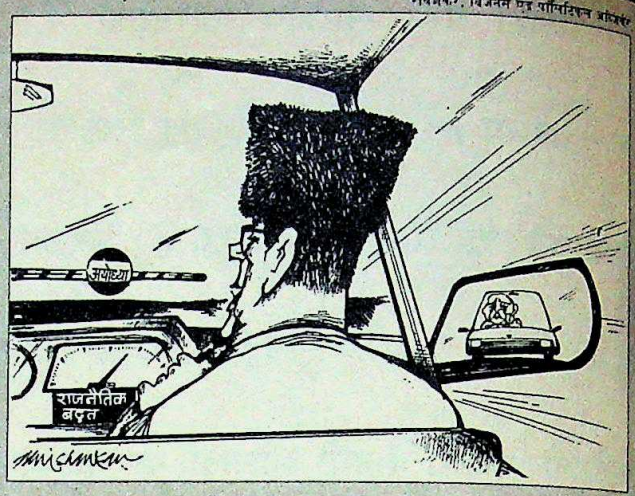

● अगर तू जाट है तो यहां तलवार लेकर नहीं, हल लेकर आना चाहिए था.
■ **देवीलाल** (राष्ट्रीय एकता परिषद की बैठक में तलवार लेकर जाने की कोशिश करते सिमरनजीत सिंह मान से)

● मंदिर नहीं बनेगा तो पर्यटन का विकास कैसे होगा?
■ **कल्याण सिंह** (उ.प्र. के मुख्यमंत्री), *जनसत्ता*

● भूमि अधिग्रहण की बात ब्रेन वाशिंग है.
■ भानपुरा पीठ के **जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी दिव्यानंद**, *नई दुनिया*

● एक बार तो हम लोग धोखा खा गए. अब दोबारा अपना लड़का कार सेवा के लिए नहीं भेजेंगे.
■ **राम आसरे** (मृत कारसेवक राजेंद्र के पिता), *माया*

● यह सरकार पांच साल तो क्या दस साल भी नहीं जाती.
■ **भजनलाल**, *दैनिक ट्रिब्यून*

● बिहार के मुख्यमंत्री अर्थव्यवस्था के संबंध में क्या जानते होंगे? वह तो आईएमएफ का फुल फॉर्म भी नहीं जानते होंगे, उसकी स्पेलिंग लिखना तो दूर रहा.
■ **मुरली मनोहर जोशी** (भाजपा अध्यक्ष), *हिंदुस्तान*

● रामजीवन (बिहार के कृषिमंत्री) में भी राम है और बलराम में भी राम है आप दूरभाष पर सीधा संपर्क करें. राम की आवाज राम जरूर सुनेगा. पैसे की जितनी आवश्यकता होगी, प्रबंध कराऊंगा.
■ **बलराम जाखड़**, *हिंदुस्तान*

● कार्यकर्ताओं का उत्पीड़न बंद करो वरना मैं दिल्ली छोड़कर इटावा में मोर्चा जमा लूंगा.
■ **चंद्रशेखर**, *दैनिक जागरण*

● हिंदुस्तान का बजट अब हिंदुस्तान के शासन का बजट बन गया है, हिंदुस्तान के विकास का बजट नहीं.
■ **एम.जे. अकबर**, *धर्मयुग*

● मुश्किल यह है कि मैं इन दिग्गजों को सही मौके पर नहीं हरा पाता.
■ **विश्वनाथन आनंद**, *टाइम्स ऑफ इंडिया*

● मैं आज भी वैसा ही महसूस करता हूं जैसा 40 वर्ष पहले करता था. मैं अपनी उम्र के बारे में सोचता ही नहीं. मेरे पास पीछे मुड़कर देखने का वक्त ही नहीं है.
■ **देव आनंद**, *स्क्रीन*

● मैंने जो किया है वह अगर मेरी बेटी करती तो मैं उसे चांटा मार बैठती.
■ **अमृता सिंह**, *सू*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल टूट गए

● सरकार में कोई बड़ा उलटफेर प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव ने भले न किया हो लेकिन छोटे-मोटे बदलाव के जरिए एक कोशिश-सी जारी है.

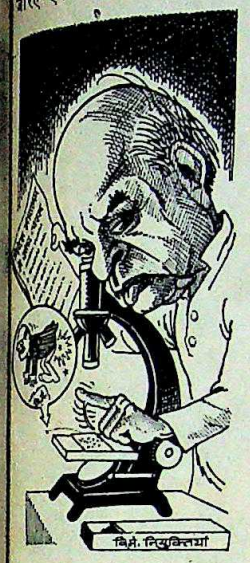

और उनकी नजर से विदेश मंत्रालय भी नहीं बच पाया है जो अपनी खास अहमियत रखता है.

नरसिंह राव एक जमाने में इसकी बागडोर भी संभाल चुके हैं. सो, परिवर्तन का संकेत उन्होंने तभी दे दिया था जब राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों के सम्मेलन में भाग लेने के लिए हरारे जाते समय वे विदेश सचिव मुचकुंद दुबे की जगह पाकिस्तान में भारतीय उच्चायुक्त जे.एन. दीक्षित को साथ ले गए थे. इससे यह स्पष्ट हो गया कि नवंबर में रिटायर होने वाले दुबे की जगह दीक्षित ही विदेश सचिव बनेंगे.

असल में नरसिंह राव पड़ोसी देशों में ऐसे राजदूतों की नियुक्ति चाहते हैं जो योग्य हों और प्रचार आदि से दूर रहते हों. शायद इसीलिए सैनफ्रांसिस्को में वाणिज्य दूत एस.के. लांबा को कार्यकाल पूरा होने से पहले ही इस्लामाबाद भेजा जाएगा. पुष्कर जौहरी अब राका नहीं, थिंपू भेजे जा सकते हैं. पश्चिमी देशों में वे ऐसे लोगों को भेजना चाहते हैं, जो भारत की छवि आर्थिक क्षमता वाले देश की पेश कर सकें.

इस बीच पसंदीदा तबादलों के लिए सिफारिश और दबाव का नजाना लदता दिख रहा है. नतीजा यह कि पसंदीदा स्थानों में तबादले की आस बांधे बैठे कई अधिकारियों के दिल टूट गए हैं.

खुली मुट्ठी

● भारत-पाकिस्तान संबंधों में मधुरता लाने के लिए हाल ही में आयोजित संगोष्ठी में संभव है थोड़ी-बहुत सफलता मिली हो. लेकिन भारतीय पक्ष के भीतर ही सौहार्द नहीं दिख रहा था.

राम जेठमलानी का मानना था कि भारतीय समाज शुरू से ही सहिष्णु रहा है. आखिरकार, पांडव भी तो एक ही पत्नी रखने को राजी हो गए थे. उनकी इतनी टिप्पणी पत्रकार मृणाल पांडे को बौखलाने के लिए काफी थी. उन्होंने महाभारत के एक पात्र का हवाला दिया कि "यदि शास्त्र भी ऐसी इजाजत देते हैं, तो वे भी गलत हैं." इससे जेठमलानी के सहिष्णुता वाले तर्क की धज्जियां उड़ गईं. और यह भी साबित हो ही गया कि भारत-पाक मैत्री भले ही संभावना की परिधि में हो

सभी कार्टून: अंजीत नैनन

लेकिन भारतीयों में सौहार्द पनपाना उससे कहीं मुश्किल है.

उलटी पड़ी

● यहां तो भूमिकाएं बदली नजर आ रही हैं. मादक द्रव्य नियंत्रण ब्यूरो (एनसीबी) सवालों के घेरे में है. इसके दो उपनिदेशक, तीन सहायक निदेशक

और सात जांच अधिकारियों पर सीबीआई के मामले चल रहे हैं. एनसीबी के इन सभी अधिकारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले तब के ही हैं जब वे ब्यूरो में नहीं आए थे. यह भी एक रहस्य ही है कि इन भ्रष्ट अधिकारियों का तबादला कानून लागू करने वाली एजेंसी में किस तरह हुआ.

एनसीबी पर निगरानी रखने वाला वित्त विभाग का एक प्रभाग इन नियुक्तियों में घोटाले के लिए अधिकारियों को दोषी मानता है, जबकि कुछ अन्य अधिकारी इसमें मादक दवाओं के व्यापारियों का हाथ बताते हैं क्योंकि अंततः सबसे ज्यादा लाभ उन्हीं को होता है.

मादक पदार्थों के नियंत्रण के लिए राष्ट्र संघ के 2 करोड़ डॉलर के अनुदान पर चलने वाला एनसीबी मादक दवाओं की समस्या और इसकी लत छुड़ाने जैसे विषयों पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आदि करके ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेता है.

उगते सूरज की जै

● राजनैतिक निष्ठा कितनी अवसरवादी और अस्थायी होती है, इसकी एक और मिसाल सोनिया गांधी द्वारा दिवंगत पति के चुनाव क्षेत्र अमेठी से न लड़ने का फैसला करने के बाद देखने को मिली. इंका के राज्यसभा सांसद द्वय रत्नाकर पांडेय और एस.एस. अहलूवालिया ने इसका नजारा पेश किया. वे 'सोनिया लाओ, राव हटाओ अभियान' के हरावल दस्ते की अगुआई कर रहे थे.

लेकिन सोनिया के फैसले के बाद दोनों की निष्ठा रातोरात ऐसी बदली कि अब ये दोनों सांसद राव के घर और दफ्तर के गिर्द ही चक्कर काटते नजर आते हैं. इसका पुरस्कार भी मिला. अहलूवालिया मेघालय में प्रेक्षक बनाकर भेजे गए.

और इन दोनों की नजर में

राव सहसा ही महान नेता बन गए हैं. हाल ही में पांडेय ने टिप्पणी की, "राजीव जी के बाद राव जी ही ऐसे नेता हैं जो देश को अच्छी तरह चला सकते हैं. इसके लिए हम उनका समर्थन करते हैं." इस बदली निष्ठा की वजह भी साफ है. इन दोनों सज्जनों का राज्यसभा का कार्यकाल जल्द ही खत्म होने जा रहा है. उन्हें दुबारा मनोनीत करने का फैसला भी तो आखिर 'राव जी' ही करेंगे न.

...और एक चुटकी

लोग भूकंप से जान गंवाएं या और किसी विपदा के कारण, दूरदर्शन राष्ट्रपति के संवेदना संदेश के साथ उनका मुस्कराता हुआ फोटो ही दिखाता है. वजह: अपनी संवेदना व्यक्त करने का दूरदर्शन का तरीका यही है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाबी झपट्टा

■ उत्तरी दिल्ली की गुलाबी बाग कॉलोनी में एक महिला सड़क पर चली जा रही थी कि पीछे से एक दुपहिया स्कूटर पर सवार तीन युवकों में से एक ने उसके गले की सोने की चेन झपटने की कोशिश की. अचानक हमले ने उस महिला को भौंचक्का कर दिया.

लेकिन इससे पहले कि वे लोग रफूचक्कर हो पाते, महिला ने एक जवाबी झपट्टा मारा और पीछे बैठे युवक की कमीज का कॉलर पकड़ लिया. युवक नीचे आ गिरा लेकिन उसके दोनों साथी भाग निकले. अपने हाथ में आए शिकार को पकडे रखने के

सभी कार्टून: जयंतो

लिए जब महिला को और कुछ नहीं सूझा तो वह उसके ऊपर बैठ गई और थप्पड़-घूंसों से तब तक उसकी सेवा करती रही जब तक राह चलते लोगों ने आकर उसे काबू में नहीं ले लिया.

नया ब्रह्मास्त्र

■ नौकरी में तबादले के बारे में चलने वाले प्रभाव और धांधलियों का आलम यह है कि अपनी मर्जी वाले स्थान या सीट पर तबादला कराने के लिए कई बार लोगों को नई नौकरी लेने से भी ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है. इस 'मेहनत' में राजनैतिक प्रभाव और रिश्वत से लेकर अफसरों की मक्खनबाजी तक हर चीज 'जायज' मानी जाने लगी है. लेकिन पिछले दिनों मध्य प्रदेश सरकार के एक कर्मचारी ने एक नए अस्त्र का इस्तेमाल करके सबको हैरान कर दिया.

हैरान होने वाले सबसे पहले व्यक्ति राज्य के मुख्यमंत्री थे जिन्हें झाबुआ में तैनात एक कर्मचारी के टेलीग्राम ने परेशानी में डाल दिया. कर्मचारी ने अपने इस तार में अल्टीमेटम पेश करते हुए लिखा था कि अगर उसके तबादले के आदेश वापस न लिए गए तो वह और उसकी पत्नी आत्मदाह कर लेंगे और इसकी जिम्मेदारी मुख्यमंत्री पर रहेगी. तबादलों के सवाल पर पहले से ही अपने विरोधियों से मिलने वाली लानत-मलामत से परेशान बेचारे मुख्यमंत्री इस नए हमले के लिए तैयार नहीं थे. सो, एक नए संकट से बचने के लिए उन्होंने तुरंत मामले की जांच कराई. पता चला कि उक्त कर्मचारी लिवर की बीमारी से ग्रस्त है और अपना तबादला रुकवाने की सारी कोशिशें करके हार चुका है. मुख्यमंत्री के लिए अपने कर्मचारी को आत्मदाह से रोकने और अपनी इज्जत बढ़वाने का भला इससे बेहतर मौका और क्या हो सकता था? देखते-देखते राज्य सचिवालय से फाइलें दौड़ीं और पीड़ित कर्मचारी का तबादला रोक दिया गया.

भूतिया गाड़ी

■ पिछले पखवाड़े आंध्र प्रदेश के रेखनी रेलवे स्टेशन पर एक मालगाड़ी के ड्राइवर ने अपनी चुस्ती की टंकी भरने के लिए चाय की दुकान की शरण ली लेकिन उसे पता नहीं था कि वह मुसीबत में फंसने जा रहा है.

अचानक वह यह देखकर दंग रह गया कि उसकी रेलगाड़ी खुद-ब-खुद चलने लगी है. उस तक वह गाड़ी तक पहुंचता वह इतनी तेज हो चुकी थी कि उस पर चढ़ पाना असंभव हो गया. घबराहट में वह स्टेशन मास्टर के कमरे की ओर भागा. वहां से आगे के सभी स्टेशनों को चौकस कर दिया गया, रेलवे क्रासिंग बंद

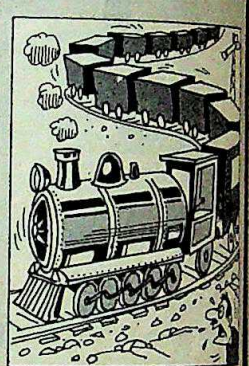

कर दिए गए और पटरी एकदम खाली छोड़ दी गई. आखिरकार लगभग डेढ़ सौ किलोमीटर दौड़ लगाने के बाद इंजन की भाप खत्म हुई और रेलगाड़ी रुक गई.

बड़प्पन की हद

■ हरियाणा ने देश की राजनैतिक संस्कृति को दलबदल और कर्जा-माफी जैसे बेजोड़ नुस्खे बख्शे हैं. साठ साल से ऊपर की उम्र वाले नागरिकों को वृद्धावस्था पेंशन देने की योजना

भी इसी लिस्ट में शामिल होती हुई दिख रही है.

राज्य में ऐसे गांवों की कमी नहीं है जहां 40-45 साल की 'लुगाइयों' ने भी खुद को साठ साल से ऊपर बताकर पूरे जनसंख्या संतुलन को उलटा लटका दिया है. पिछले दिनों पेंशन के लिए सर्टिफिकेट जारी करने वाले एक अफसर को यह देखकर हैरानी हुई कि एक गांव में छोटी लड़कियों और युवतियों को छोड़ बाकी सभी महिलाएं 'साठ से ऊपर' की हैं. पुरुषों के माथे की लकीरों और बालों के पकेपन की जांच की शैली में जब इस अधिकारी ने महिला प्रार्थियों को घूंघट में झांकने की कोशिश की तो बेचारे को गाली-गलौज और डंडे-जूती की धमकियां सुनने को मिलीं.

राम की लीला

■ दशहरे को हर साल बुराई पर सचाई की जीत और पाप पर पुण्य के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है. लेकिन बुराई और पाप के प्रतीकों को मारने के मामले में अगर सचाई और पुण्य के मुकाबले शरारती लोग बाजी मार ले जाएं तो कैसा रहे. इस बार दशहरे के मौके पर जयपुर के निकट महापुरा गांव में कुछ ऐसा ही हुआ.

हर साल की तरह इस बार भी धूमधाम से रामलीला खेली गई और चंदा बटोरकर रावण और उसके सहयोगियों के ऊंचे-ऊंचे पुतले खड़े किए गए. निश्चित समय पर गांव के चक्कर काटने के बाद जब रामचंद्र जी की सवारी मैदान में पहुंची तो वे यह देखकर दंग रह गए कि उनसे पहले ही किसी ने रावण का दाह संस्कार कर डाला है. खैर, खानापूरी करने के लिए पहले तो रावण का वध किया गया और फिर कुंभकर्ण और मेघनाद के पुतलों को जलाकर रामलीला संपन्न हुई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LIKE THE WARMTH IN YOUR HEART

TERENE / WOOL WORSTED FROM GWALIOR SUITING

GRASIM GWALIOR SUITING IN A CLASS OF ITS OWN A PRODUCT OF GRASIM INDUSTRIES LTD

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ न बा की

सुनहरी कोठी, टोंक

सिंह अभयारण्य,

भव्यता और वैभव ही राजस्थान का दूसरा नाम है. ■ राजस्थान की धरती पर छुट्टियाँ बिताने का अर्थ है, इस राजसी आन-बान से सीधा साक्षात्कार. ■ दूर-दूर तक शांत रानी पद्मिनी की वह झील जिसके किनारों पर खड़े हो मन सहर्ष ही श्रद्धायुक्त हो उठता है. कहते हैं इसी झील में रानी का प्रतिबिंब मात्र देख अलाउद्दीन खिलज़ी इस तरह सम्मोहित हुआ कि परिणाम था, वह भयावह युद्ध. ■ रंगों का उत्सव और उल्लास का मेला घूमर नृत्य, इसकी झूम भरी ताल और लय पर घूम-घूम कर घूमर करती हुई युवती को देख कौन-सा मन होगा जो थिरकने न लगेगा. ■ और हल्दी-घाटी जिसका विवरण सुन कर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं. कौन भुला पायेगा युद्धाश्व चेतक की स्वामिभक्ति को, जो अपने स्वामी को घायल देख उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के लिए युद्धभूमि से हवा की तरह छू-मन्तर हो गया. ■ रणथम्भौर में आत्मविस्मृति के ये क्षण जब आदिम सौन्दर्य के बीच अपनी पूरी राजसी आन-बान-शान के साथ सिंह आलस भरी अंगड़ाई लेते नज़र आते हैं. ■ अदभुत् मीनाकारी के काम में अभिव्यक्ति पाती कला और कारीगरी का बेजोड़ तालमेल जिसमें पीढ़ियाँ दर पीढ़ियाँ अपनी पारंगता

VISIT INDIA TOURISM YEAR 1991

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शान

सिंह अभयारण्य, रणथंभौर

का परिचय देती रही हैं. ■ राजस्थान, जिसके रंगों में जीवन छलकता है. ■ विविधता छलकती है. ■ आइए, खो जाएं राजस्थान की संस्कृति के ऐसे जीवंत व अनंत इतिहास में, वर्तमान जिसका अभिन्न अंग बन गया है.

आइए, राजस्थान चलें

- **मत्स्य भ्रमण :** जयपुर-सरिस्का-अलवर-डींग-भरतपुर-जयपुर
- **रेगिस्तान भ्रमण :** जयपुर-अजमेर-जोधपुर-ओसियन-जैसलमेर-बाड़मेर-बीकानेर
- **शेखावटी भ्रमण :** जयपुर-सीकर-नवलगढ़-माड़वा-झुंझनू-फतेहपुर-जयपुर
- **'प्रोजेक्ट टाइगर' भ्रमण :** जयपुर-टोंक-रणथम्भौर-जयपुर
- **मेवाड़-हड़ौती भ्रमण :** उदयपुर-चित्तौड़गढ़, मैनाल-बूंदी-कोटा-झालावाड़
- **मेवाड़-माऊन्ट आबू भ्रमण :** उदयपुर-कुंभलगढ़-राणकपुर-माऊन्ट आबू-सिरोही

राजस्थान
इतिहास और वर्तमान,
यहां जैसा कहीं नहीं.

पर्यटन, कला और संस्कृति विभाग
राजस्थान सरकार

दूरभाष : जयपुर 70180, दिल्ली 3322332, बम्बई 2044162, अहमदाबाद 490127, कलकत्ता 279051

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

But for Modern–the suiting t

For him, who savours life's challenges. And creates memorable moments

out of them. Modern Suitings. Contemporary classics. In rich, exciting colours.

Modern Suitings Ltd.

AMADEUS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

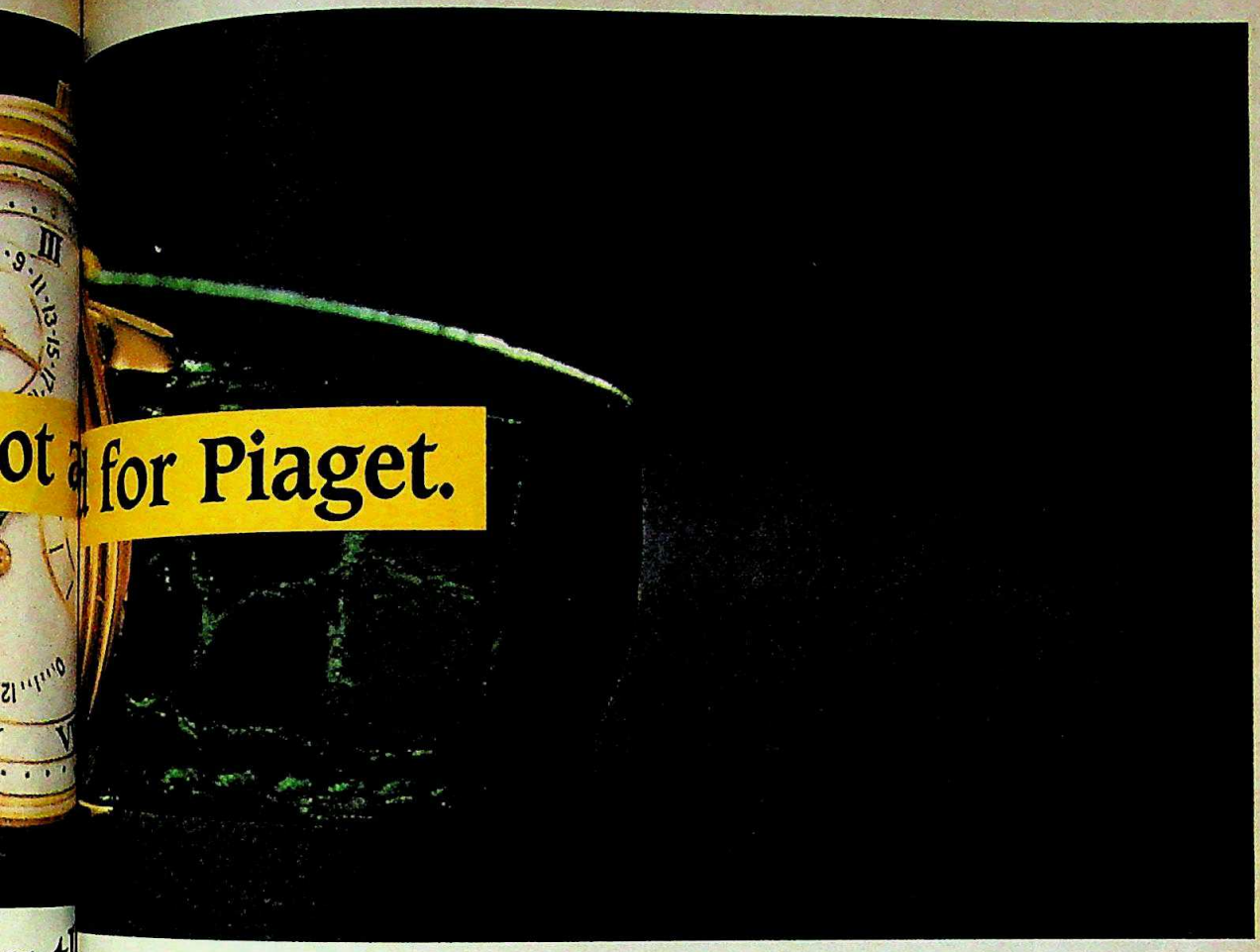

marks the man of the times.

Fascinating weaves of Poly/Wool and other exciting blends. Simply, the very best for the man who has it all.

FOREVER MODERN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Megacorp/484/91

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाजपा-रास्वसंघ-विहिप

लिगड़ते रिश्ते

—दिलीप अवस्थी और शाहनाज अंकलेसरिया अय्यर

राजनैतिक हलकों में आज सबके जेहन में कुछ-कुछ इस तरह के सवाल उमड़-घुमड़ रहे हैं—भारतीय जनता पार्टी आखिर चाहती क्या है? बाबरी मस्जिद का ढहाया जाना? अपनी छवि एक जिम्मेदार मध्यमार्गी पार्टी वाली बनाना या अपनी पहचान हिंदुत्व के कथित सड़कछाप रक्षकों वाली बनाना? राष्ट्रीय विपक्ष की हैसियत पाना? मेलजोल के कमल खिलाना या आक्रामकता के त्रिशूल भांजना? पूरे संघ परिवार—जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (रास्वसंघ), भाजपा और विश्व हिंदू परिषद (विहिप) हैं—के इर्दगिर्द जो रहस्यमय गोपनीयता होती है उसके चलते यह अनुमान लगा पाना मुश्किल होता है कि यह परिवार क्या चाहता है. केवल इतना साफ दिखता है कि यह परिवार क्या नहीं चाहता है. यह नहीं चाहता कि देश भर में बेहद अनुशासित और एकजुट दिखने वाले इस परिवार के बीच उभरती दरारें सामने उजागर हों.

लेकिन बजरंग दल के अति उत्साही कार्यकर्ताओं ने [illegible] महीने के अंतिम दिनों में जिस तरह बाबरी मस्जिद परिसर [illegible] घुसपैठ और तोड़फोड़ की, उसके बाद ये दरारें जगजाहिर [illegible] लगीं. संघ परिवार के वरिष्ठ नेताओं और संगठनकर्ताओं के [illegible] की कुछ गुटों ने जिस तरह अवहेलना की, उससे उनके [illegible] आंदोलन का मखौल ही उड़ता दिखा.

नवंबर 1989 में शिलान्यास के बाद से इस आंदोलन ने पार्टी [illegible] खूब फायदा पहुंचाया. लोकसभा में इसकी सीटों की संख्या [illegible] बढ़कर 86 पर पहुंच गई. और पिछले मध्यावधि चुनाव से [illegible] कार सेवा के बाद तो जैसे छप्पर ही फट गया. भाजपा [illegible] लोकसभा में 119 सीटें हासिल हो गईं और उत्तर प्रदेश में तो [illegible] ही मिल गई. लेकिन अयोध्या में हुई ताजा घटनाओं ने पार्टी [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ी नीति और दिशा पर कुछ आत्मविश्लेषण करने को मजबूर ...र दिया. पुराना जादू फिर नहीं दोहराया जा सका. पार्टी अब ...नून को बददुआएं देने की स्थिति में नहीं रह गई बल्कि व्यवस्था ...ही एक अंग बन गई है. उसे केंद्र में और अपने शासन वाले चार ...ों में एक उत्तरदायी पार्टी की भूमिका निभाने की जवाबदेही है ...कानून और संविधान की रक्षा करती हो. इस नई भूमिका ने ...उन कार्यकर्ताओं के सामने संघर्ष की मुद्रा में खड़ा कर दिया है ...हें उसने राम मंदिर आंदोलन के नाम पर एकजुट किया था.

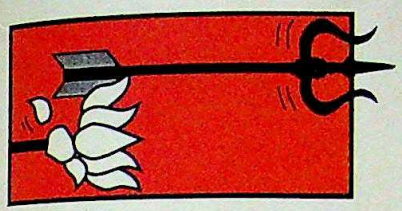

संकट

गरमपंथियों ने पहल छीन ली

...त्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कल्याण सिंह अयोध्या पर ताजा ...हमले को बुरा सपना मानकर भूलना चाहेंगे. कारसेवकों की ...ाई से न सिर्फ उनकी अनुभवहीन सरकार की साख को धक्का ...ा बल्कि रास्वसंघ-विहिप-भाजपा के 'एक दूजे के लिए' वाले ...ों पर कुछ बदनुमा धब्बे भी लग गए.

...कल्याण सिंह 18 से 31 अक्तूबर तक दो पाटन के बीच फंसे हुए ...इसकी वजह यह थी कि विहिप और बजरंग दल की अधीर सेना ...संतुष्ट लेकिन नियंत्रण में रखते हुए मस्जिद को बचाने के अपने ...संवैधानिक वादों को पूरा करना दूसरों से कहीं ज्यादा उनकी ...म्मेदारी थी. और शायद इसका एहसास भी उन्हें था ही कि इस ...म्मेदारी से मुकरना उनकी सरकार के लिए भारी पड़ सकता है. ...मुख्यमंत्री ने राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद परिसर की 2.77 ...ड़ जमीन के अधिग्रहण के लिए बगैर किसी गुल-गपाड़े के ...चानक अधिसूचना जारी करके शायद सोचा कि वे राजनैतिक ...चतुराई दिखा रहे हैं. स्पष्ट रूप से उनका इरादा विहिप और ...जरंग दल के कार्यकर्ताओं की इस उग्र आलोचना को शांत करना ...कि उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार राम मंदिर निर्माण की ...दिशा में कोई कदम नही उठा रही है. अधिग्रहण की अधिसूचना से ...हिंदुओं की आलोचना की धार अस्थायी रूप से कुंद हो गई और ...मंदिर आंदोलन के नेतृत्व के लिए परिवार में चलने वाली स्पर्धा में ...गरमपंथियों को मिली बढ़त में कुछ कमी आई. राष्ट्रीय मंच पर ...हिंदुत्व के बढ़ते असर का सीधा संबंध मंदिर निर्माण के अभियान में ...उनके द्वारा पैदा की गई गरमी से है. इसलिए इस मुद्दे पर भाजपा ...की सहयोगी संगठन के हाथों भी दरकिनार होने का ...खतरा वह नहीं उठा सकती.

...आंदोलन का नेतृत्व फिर हथियाने के लिए विहिप के ...गरमपंथियों ने फिर हल्ला बोला. 40 दिवसीय बजरंग ...दल की अपनी मूल योजना को त्यागकर इन ...गरमपंथियों ने राज्य बजरंग दल के मुखिया तथा फैजाबाद ...भाजपा सांसद विनय कटियार के नेतृत्व में ...विवादास्पद परिसर में घुसकर और कुछ पुराने मंदिरों के ...आसपास के छोटे कमरों को गिराकर मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के ...हाथों से पहल छीन ली. उन्होंने प्रचार किया कि सरकार ...राम मंदिर निर्माण में आने वाली रुकावटों को दूर करने के लिए ...आसपास की जमीन का अधिग्रहण किया है. जैसा कि राम जन्मभूमि मुक्ति

जरा-सा भी भटकाव हमारे लिए परेशानी पैदा करता है. सीमाएं लांघने वाले बाहर से प्रेरणा पा रहे हैं''

लालकृष्ण आडवाणी, *भाजपा*

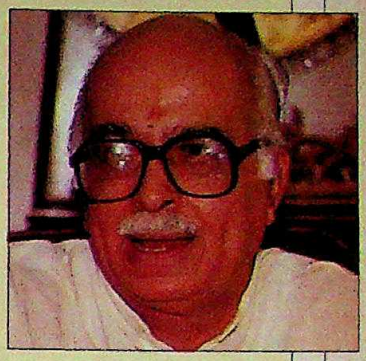

एक ही नुस्खे से दोबारा राजनैतिक आंदोलन नहीं उठ सकता''

जसवंत सिंह, *भाजपा*

हमारा धैर्य चुक रहा है. हमसे सहानुभूति रखने वाली सरकार कारसेवकों की गिरफ्तारी का आदेश कैसे दे सकती है?''

महंत परमहंस, *विहिप*

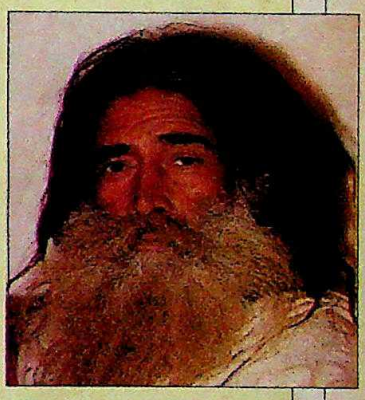

पताका फहराना एक दुर्घटना थी. ऐसे बड़े आंदोलन में गलतियों तो हो ही सकती हैं''

सुंदर सिंह भंडारी, *भाजपा*

अब भाजपा कदम वापस नहीं खींच सकती. सरकार बचाने के लिए हम समझौता नहीं करेंगे''

आचार्य धर्मेंद्र, *बजरंग दल*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति के सचिव महेश नारायण सिंह बताते हैं, "हम उम्मीद करते हैं कि सरकार जमीन का अधिग्रहण करने के बाद उसे नए मंदिर के निर्माण के लिए हमें सौंप देगी."

बंटा हुआ हिंदू परिवार

उग्र और उदार का संघर्ष

लेकिन यह कार्रवाई अपेक्षित नतीजे नहीं दे पाई. अधिग्रहण की कल्याण सिंह की कार्रवाई का मकसद जमीन विहिप को सौंपना नहीं बल्कि मसले को फिलहाल टाल देने का था. मंदिरों को तोड़ने से विहिप में झगड़े शुरू हो गए और वी.पी. सिंह सरीखे कट्टर भाजपा विरोधी नेताओं ने उसका राजनैतिक लाभ उठाना शुरू कर दिया. विश्वनाथ प्रताप सिंह ने खुलेआम कहना शुरू कर दिया कि मंदिरों को तोड़ा जाना हिंदुत्व आंदोलन की धौंसबाजी का सबूत है.

बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी ने भी बगैर देर किए अधिग्रहण अधिसूचना को हाईकोर्ट में चुनौती दे डाली. हाईकोर्ट ने अंतरिम आदेश देकर किसी भी समूह को अधिग्रहीत जमीन देने पर रोक लगा दी. अदालत ने इस पर कोई नया निर्माण करने की भी मनाही कर दी. इससे भाजपा और विहिप नेतृत्व दोनों को झटका लगा और उन्होंने अपने कदम पीछे खींच लिए. अब वे कहने लगे कि मंदिर तो बनेगा लेकिन फिलहाल निर्माण में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करना जरूरी है. विहिप उपाध्यक्ष आचार्य गिरिराज किशोर, विनय कटियार, राम जन्मभूमि मुक्ति समिति के अध्यक्ष महंत अवैद्यनाथ ने कारसेवकों से अपील करनी शुरू कर दी कि 30 अक्तूबर को 'शौर्य दिवस' कार्यक्रम में वे संयम बरतें.

लेकिन कारसेवकों ने इसका विरोध किया. बांदा के अधिक कारसेवकों के जत्थे ने विवादास्पद स्थल से लौटने से इनकार कर दिया. कारसेवक 32 वर्षीय संतोष मिश्र ने नेतृत्व के खिलाफ असंतोष इस तरह व्यक्त किया, "राज्य में जब विरोधी सरकार थी तो उन्होंने हमसे बाबरी मस्जिद पर धावा बोलने को कहा था. अब राज्य में अपनी सरकार है, वे हमें वापस रहने को कह रहे हैं."

दूसरे दिन नेतृत्व के हाथ से कमान खिसक गई. कारसेवकों ने एक गुंबद पर एक छोटी सी पताका फहरा दी और बाहरी दीवार के कुछ हिस्से में तोड़फोड़ की. आखिरकार 300 कारसेवक गिरफ्तार कर लिए गए. कुछ विहिप नेताओं ने अपने 500 कार्यकर्ताओं को अयोध्या से बाहर करने के लिए बसों में बैठाया तो विरोध और उग्र रूप धारण कर लिया. इस बीच कल्याण सिंह और कटियार के खिलाफ 'लड़के' नारे लगाते रहे.

राम जन्मभूमि मुक्ति समिति के उपाध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास, जन्मभूमि न्यास के अध्यक्ष महंत रामचंद्र परमहंस, महंत अवैद्यनाथ सहित कुछ धर्माचार्यों ने आगे की कार्य निश्चित करने के लिए अलग से बैठक की. इसमें विहिप और रास्वसंघ का कोई भी नेता मौजूद नहीं था. बैठक के बाद परमहंस ने कहा, "हम सब संत हैं. राजनीति या राजनीतिकों पेचीदगियों को हम नहीं जानते. हम तथाकथित बाधाओं के की दो महीने तक प्रतीक्षा करेंगे. फिर हम रामभक्तों के साथ

वैधानिक स्थिति

उलझन बरकरार

उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार इस जीत पर फूली नहीं समा सकती. उसने अयोध्या में विवादित धर्मस्थल के आसपास जो जमीन अधिग्रहीत की है उसे हाईकोर्ट ने सही ठहराया है. लेकिन अदालत ने इस जमीन पर किसी स्थायी निर्माण की इजाजत नहीं दी है. मुहम्मद हाशिम सहित कुछ और लोगों की याचिका पर 25 अक्तूबर को हाईकोर्ट ने जो यह अंतरिम आदेश जारी किया उससे एक मायने में नाटकीय बदलाव आया है. प्लॉट नं. 159, 160, 171, 172 के मंसूबा अधिग्रहण से विवादित क्षेत्र सिकुड़कर सिर्फ धर्मस्थल की बाहरी चारदीवारी के भीतर के 0.73 एकड़ भर रह गया है.

अगस्त 1989 में हाईकोर्ट के तीन न्यायाधीशों की विशेष पीठ ने जब राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद के मामले में यथास्थिति बनाए रखने का फैसला सुनाया था तब धर्मस्थल के गिर्द कंटीले तारों से घिरा 3.5 एकड़ का पूरा क्षेत्र ही विवादास्पद माना गया था. इस पूरे क्षेत्र में विहिप के शिलान्यास स्थल समेत जमीन के 23 टुकड़े हैं जिनकी मालगुजारी अलग-अलग है.

मजेदार बात यह है कि फैसला हफ्ते भर की कानूनी बहस के बाद ही सुना दिया गया था. बहस में हिस्सा लेने वाले राज

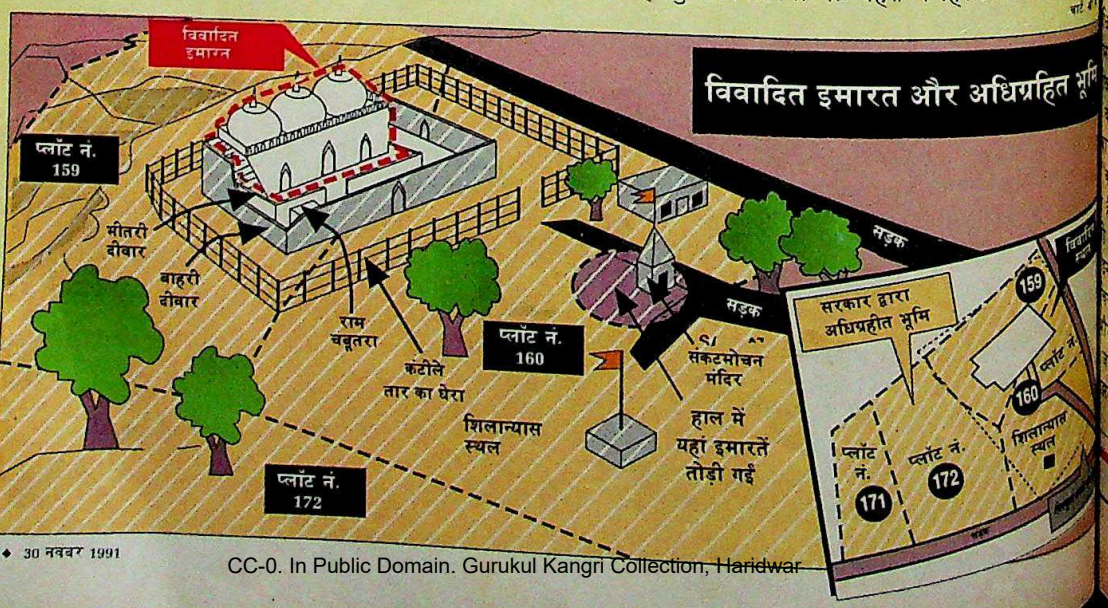

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय मंच पर विहिप के बढ़ते असर का संबंध मंदिर अभियान में उसके द्वारा पैदा की गई गरमी से है. इस मुद्दे पर भाजपा के हाथों दरकिनार होने का जोखिम वह नहीं उठा सकती

विमल भौमाली

(बाएं) सिंघल; (दाएं) कटियार; और
अयोध्या में कारसेवक: चुनौती देते उग्रपंथी

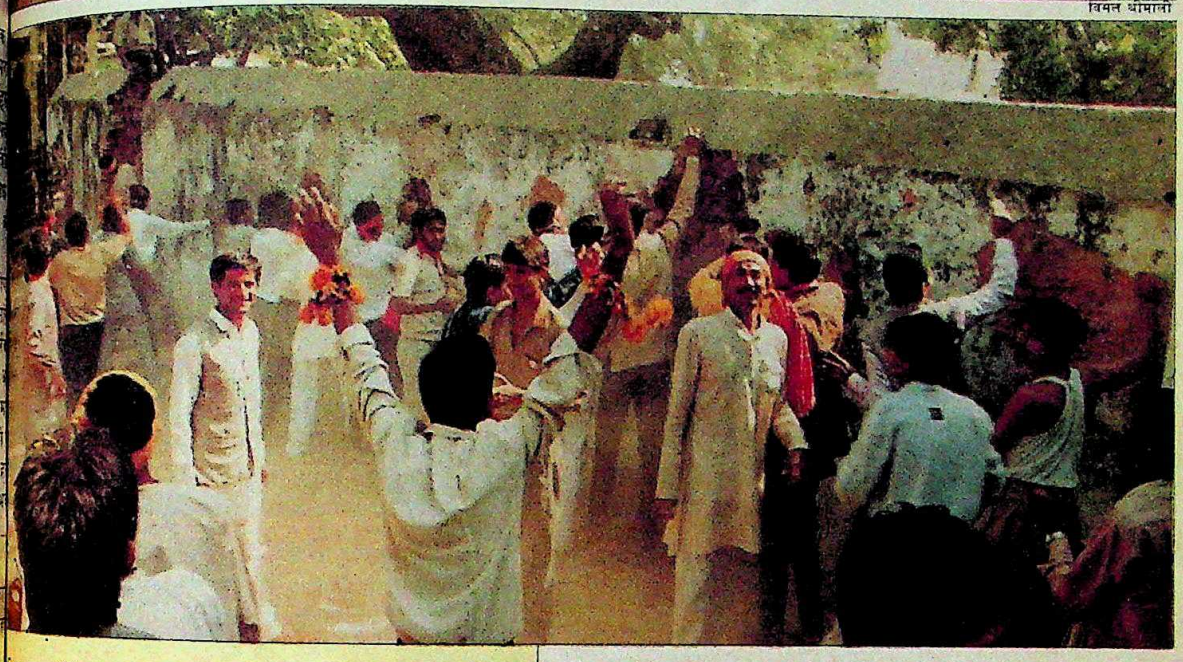

प्रवक्ता वीरेंद्र कुमार चौधरी और सुन्नी वक्फ बोर्ड के
ह अब्दुल मन्नान तथा जफरयाब जिलानी थे. मन्नान और
ो दोनों बाबरी मस्जिद कमेटी के नेता भी हैं. राज्य
र ने अपने जवाब में कहा कि अयोध्या में 18 नवंबर से शुरू
वाले छह हफ्ते के कार्तिक मेले के दौरान तीर्थयात्रियों और
ों की सुविधा के लिए जमीन का तुरंत अधिग्रहण जरूरी हो
ा. वक्फ बोर्ड ने इस पर एतराज उठाया. उन्होंने इस ओर
ध्यान दिलाया कि सरकार ने धर्मस्थल के गिर्द 2.77 एकड़
ा अधिग्रहण करने की अधिसूचना जारी की है जबकि इससे
ड़ा मुख्य मामला अभी विशेष अदालत में विचाराधीन है.
जपा सरकार अंतरिम आदेश को बदलवाने के लिए इसकी
ा कर रही है. स्थायी निर्माण पर पाबंदी से संबंधित आदेश
ह अदालत से स्पष्टीकरण हासिल करने के बारे में भी
र कर रही है. राज्य के राजस्वमंत्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी का तर्क
है. किसी भी भवन की औसत आयु 50 साल के करीब ही
है. तो, आप उसे स्थायी कैसे कह सकते हैं?"
ुका दायर की है. अदालत ने राज्य सरकार को नोटिस भेजा
र इस महीने के अंत में मामले की सुनवाई करना तय किया
ब तक अदालत अंतिम फैसला नहीं सुना देती, कानूनी
ति बनी रहेगी.

—दिलीप अवस्थी

में जबरदस्ती प्रवेश करेंगे और उसे गिरा देंगे. यदि यह सरकार मुलायम सिंह की तरह कार्रवाई करना चाहती है तो करे."

कारसेवकों की कार्रवाई से भाजपा और विहिप के नरमंपथी नेता अंधेरे में तीर चलाने पर विवश हो गए. इन नेताओं ने इन वारदातों की हकीकत का भी खंडन करने की कोशिश की. कुछ ने तो यहां तक कहा कि वे कारसेवक उनके नहीं थे. उत्तर प्रदेश के राजस्वमंत्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी सरीखे दूसरे नेताओं ने दो कदम और आगे बढ़कर कहा कि मस्जिद को नुकसान पहुंचाने वाले लोग वी.पी. सिंह के आदमी हैं. लखनऊ में गृह विभाग ने जब यह प्रेस बयान जारी किया कि 31 अक्तूबर की घटना के लिए गिरफ्तार लोग कारसेवक ही थे, ऐसे नेताओं की परेशानी और भी बढ़ गई. पर कुछ उनके जैसे नहीं निकले. 2 नवंबर को कटियार और खजुराहो से भाजपा की सांसद उमा भारती ने कारसेवकों की कार्रवाई की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की.

अब हमले को झेलने की बारी उत्तर प्रदेश सरकार की थी. महंतों ने गिरफ्तारियों के लिए इसे जी भरकर कोसा. महंत परमहंस ने कहा, "हमारा धैर्य अब चुक रहा है. हमसे सहानुभूति रखने वाली सरकार उन कारसेवकों की गिरफ्तारी का आदेश कैसे दे सकती है जिन्होंने जन्मभूमि पर सिर्फ पताका फहराई?" महंत वासुदेवाचार्य तो और भी उग्र थे, "सरकार ने कारसेवकों की फहराई पताका उतार दी. परंतु हम फिर जल्दी ही वहां पताका फहराएंगे." लेकिन इससे मंदिर आंदोलन के नुकसान की क्षतिपूर्ति नहीं हुई. कल्याण सिंह सरकार, विहिप नेताओं, महंतों और बजरंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम मंदिर निर्माण में तेजी तो लाओ लेकिन कल्याण सिंह सरकार पर दबाव डालने की चाल मत चलो: यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नई रणनीति थी जिस पर भाजपा और विहिप सहमत थे

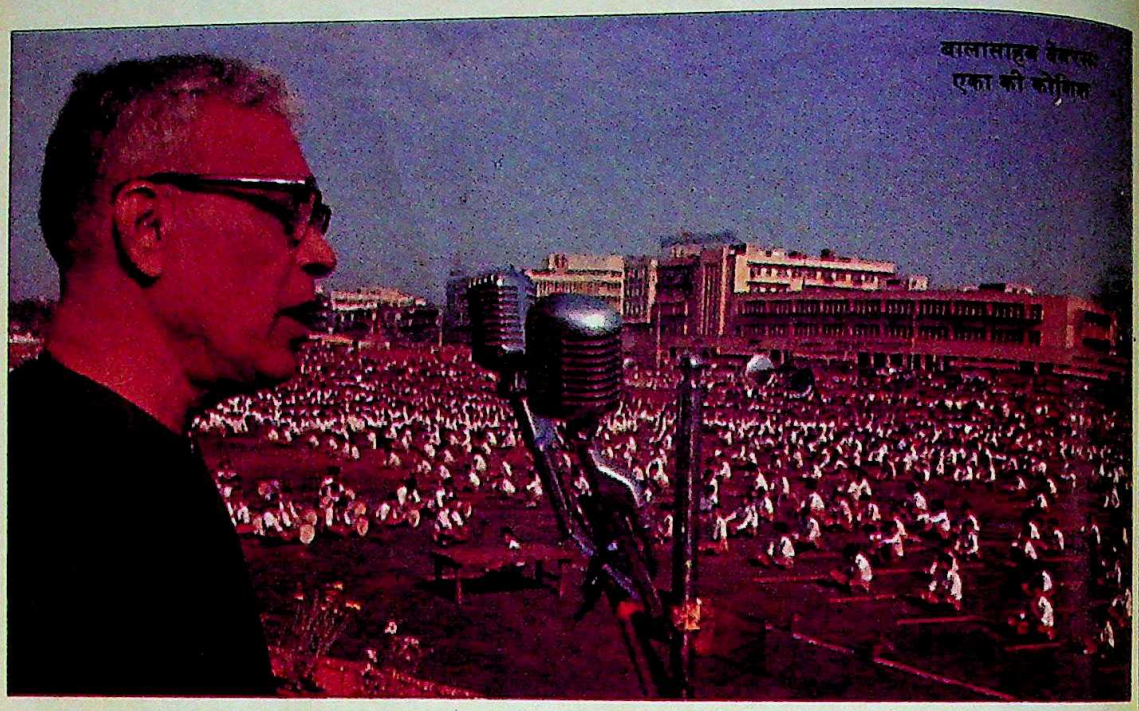

दल कार्यकर्ताओं में मतभेद बना रहा. भाजपा सरकार और उससे सहानुभूति रखने वाले विहिप के लोग, खासकर रास्वसंघ लॉबी, पहली बार असहाय और असंगठित दिखी.

दिलजमाई

मुखिया की मध्यस्थता

जैसी कि उम्मीद थी नेताओं के झगड़े सुलझाने के लिए रास्वसंघ नेतृत्व सक्रिय हो गया. पिछले पखवाड़े कलकत्ता में अपनी अखिल भारतीय कार्यसमिति की बैठक में उसने भाजपा और विहिप के वरिष्ठ नेताओं को बुलाया. विषय सूची में मुख्य मुद्दा था: अयोध्या और उससे जुड़ी घटनाएं.

यह काफी अहम बैठक थी जिसमें संघ के सरसंघचालक बालासाहब देवरस और सरकार्यवाह एच.वी. शेषाद्रि सहित संगठन के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया. भाजपा अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी ने भी विशेष आमंत्रित के रूप में रास्वसंघ और विहिप अधिकारियों की बैठकों के दो सत्रों में भाग लिया. बंद कमरे की चारदिवसीय बैठक में भाजपा उपाध्यक्ष सुंदर सिंह भंडारी और अशोक सिंघल ने भी भाग लिया. सिंघल ने गर्जना की, "अदालतें लोगों की आस्था को न तो बदल सकती हैं और न ही उसका फैसला कर सकती हैं." उन्होंने बाद में 'इंडिया टुडे' से कहा, "चूंकि रास्वसंघ हमारे परिवार का अंग है, इसलिए हमने देवरस को अयोध्या की रिपोर्ट दी. जब तक कार सेवा या शिला पूजन जैसा विशाल कार्यक्रम न हो, हम सामान्यत: रास्वसंघ की मदद नहीं लेते. फिलहाल हमें उसके सहयोग की जरूरत नहीं है. अगली बार मंदिर निर्माण के समय हमें उसकी जरूरत पड़ेगी."

हालांकि सिंघल ने घोषणा की कि "भाजपा-विहिप-रास्वसंघ के गठजोड़ को तोड़ा नहीं जा सकता" लेकिन दरारें स्पष्ट दिख रही थीं. कारसेवकों के व्यवहार पर तो खास तौर पर मतभेद थे. सिंघल ने जोर देकर कहा कि कारसेवकों ने कोई ज्यादती नहीं की. उन्होंने कहा, "किसी मंदिर के कंगूरे पर झंडे फहराना महत्वपूर्ण बात नहीं है." लेकिन भंडारी इससे सहमत नहीं हैं, "वह एक दुर्घटना थी. इस तरह के बड़े आंदोलन में मानवीय गलती की हमेशा संभावना रहती है. हम एहतियात बरत रहे हैं."

विहिप का कहना था कि भाजपा सरकार को केंद्र की प्रतिकूल प्रतिक्रिया के डर से इस मुद्दे पर नरम रुख अपनाने की जरूरत नहीं है. सिंघल ने घोषणा की, "मुझे पूरा भरोसा है कि उत्तर प्रदेश सरकार को बरखास्त नहीं किया जाएगा. हम अयोध्या से संबंधित सभी पक्षों को पूरा मौका देने के इच्छुक हैं. यदि वे वास्तविकताओं को स्वीकार नहीं करेंगे तो हमें कानून लाने की प्रक्रिया शुरू करनी पड़ेगी."

जोशी ने उत्तर प्रदेश सरकार की समस्याओं से संबंधित जो तर्क दिए, उससे देवरस और दूसरे रास्वसंघ अधिकारी सहमत हो गए. सो, अंत में रास्वसंघ ने जो रणनीति बनाई उससे भाजपा और विहिप ने सहमति जताई. रणनीति है: अयोध्या में मंदिर निर्माण की दिशा में तेजी लाओ. लेकिन ज्यादा दबाव डालकर कल्याण सिंह सरकार की जड़ें कमजोर मत करो.

रास्वसंघ-विहिप-भाजपा त्रिगुट ने यह फैसला भी किया कि निर्विवादित स्थल पर निर्माण जारी रहना चाहिए. सूत्रों के मुताबिक विहिप के इस मुद्दे को लोगों के बीच ले जाने पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहमति हुई कि मंदिर को गिराकर मस्जिद बनाई गई है.
लेकिन संघ ने जो मेल कराया था वह कामचलाऊ है: कोई भी बड़ी और स्पष्ट कार्ययोजना नहीं तय की गई; सिर्फ तात्कालिक रूप से विवाद रोकने भर का उपाय हुआ.

नई रणनीति

मतभेद ढको, आधार मजबूत करो

सर्वसम्मत और स्पष्ट नीति न होने से, फिलहाल मामले को शांत भर करने का हथकंडा अपनाया जा रहा है. संघ के आशीर्वाद से भाजपा के नरमपंथी अपने कार्यकर्ताओं को यह समझाने में लगे हैं कि त्रिशूल भले ही जानदार हथियार है पर उसे तत्काल भांजने की जरूरत नहीं है. इसके कई कारण हैं.

प्रदेश में अपनी सरकार होने और तत्काल दूसरा कोई बड़ा लाभ न दिखने के चलते वे अयोध्या में हुई घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं चाहते. ऐसा होने से भाजपा पर एक ऐसी पार्टी होने का ठप्पा लग जाता जिसका अपने कार्यकर्ताओं पर नियंत्रण नहीं है. राष्ट्रीय स्तर पर हिंदुत्व के प्रचार के खिलाफ राजनैतिक आम सहमति को देखते हुए भाजपा को लगता है कि उसे अभी अपना चुनावी आधार ही बढ़ाते जाना चाहिए.

और फिर, मंदिर निर्माण कराने से सरकार अपनी बरखास्तगी को खुद बुलावा देती और तुरंत चुनाव होने का बुरा असर पड़ता. इसके अलावा, पूरा देश यह मानता लग रहा है कि अर्थव्यवस्था को उबारने के लिए अभी राजनैतिक शांति का दौर जरूरी है. पार्टी के विचारक आर्थिक उदार नीतियों से प्रतिबद्ध हैं. वे इंका से सहयोग वाले रुख को बदलने के पक्ष में भी नहीं हैं. प्रधानमंत्री नरसिंह राव विवाद नहीं चाहते. इस बारे में आडवाणी की पुष्टि के बाद अब वे भाजपा के नेताओं के बचने के लिए जो रास्ता सुझाएंगे उस पर विचार तो जरूर होगा.

उत्तर प्रदेश सरकार मस्जिद के आसपास की जमीन अधिग्रहण करने में चाहे जो भी प्रयास कर ले, उसे मालूम है कि मस्जिद वाली जगह मंदिर बनवाने के बाद ही उन्हें सफल माना जाएगा. इसका मतलब होगा मस्जिद को गिराना या पार्टी नेताओं के बकौल उसे दूसरी जगह ले जाना.

निजी बातचीत में पार्टी के वरिष्ठ नेता कहते हैं कि वे जोर-जबरदस्ती से भी मस्जिद हथियाने के पक्ष में हैं. अगर कोई चारा न हुआ तो उत्तर प्रदेश सरकार मस्जिद वाली जमीन का भी अधिग्रहण करेगी जिससे राष्ट्रपति या सुप्रीम कोर्ट द्वारा स्थगन आदेश जारी करने की नौबत आ सकती है. तब, जैसा कि पार्टी

राष्ट्रीय पार्टियां

चौतरफा दबाव

अब राष्ट्रीय एकता परिषद के प्रस्ताव पर भाजपा चाहे जो कहे, उसके राजनैतिक प्रतिद्वंद्वी इस तथ्य से फायदा उठाएंगे कि भाजपा ने अयोध्या मसले पर इलाहाबाद उच्च न्यायालय का फैसला मानने का वादा किया था. माकपा पोलितब्यूरो के सदस्य हरकिशन सिंह सुरजीत कहते हैं, "अगर अब वे अदालत के फैसले के खिलाफ जाएंगे तो एक जिम्मेदार विपक्ष के रूप में अपनी विश्वसनीयता खो देंगे."

भाजपा के खिलाफ अभियान पहले ही शुरू हो चुका है. 31 अक्तूबर को अयोध्या में जो कुछ हुआ उसके लिए यही कहा जा रहा है कि बजरंग दल के लड़कों पर भाजपा का नियंत्रण नहीं रहा. जाने-माने समाजवादी मधु लिमये कहते हैं, "अयोध्या जैसे भावनात्मक आंदोलनों में उग्रपंथियों के आगे आ जाने की संभावना रहती ही है."

भाजपा से मोर्चा लेने के लिए धर्मनिरपेक्ष ताकतों को संगठित करने की बात पहले ही शुरू हो चुकी है. हाल ही में गठित आठ लोगों के गुट के सदस्य एम.जे. अकबर, सुरेश कलमाडी और सुबोधकांत ऐसे ही मोर्चे की बात करते हैं. अकबर कहते हैं, "अब साझा कोशिशों से ही भाजपा को हाशिए पर धकेला जा सकता है."

लेकिन भाजपा विरोधी मोर्चे में कई गंभीर समस्याएं भी हैं. प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव आम सहमति वाले रुख को

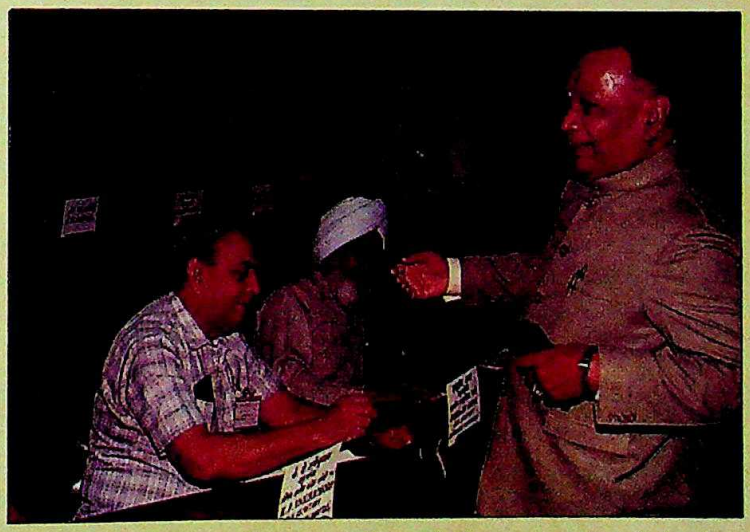

राष्ट्रीय एकता परिषद की बैठक: पहल हथियाने के दांव

छोड़ने के मूड में बिलकुल नहीं हैं. एक वरिष्ठ केंद्रीय मंत्री बताते हैं, "हम जनभावना के प्रति बहुत सजग हैं, जो आज देश में किसी तरह का राजनैतिक टकराव नहीं चाहती." अगर भाजपा विरोधी मोर्चे में शामिल होने से इंका इनकार कर देती है तो इसके कारगर होने में संदेह ही है.

लेकिन राष्ट्रीय मोर्चा और वामपंथी पार्टियां भाजपा को पटखनी देना चाहेंगी. दरअसल, दबाव डालने की उनकी नीति ने ही राष्ट्रीय एकता परिषद की बैठक में भाजपा को झुकने के लिए मजबूर कर दिया. इस दबाव का कुछ असर भी दिखता है. लेकिन इतना तय है कि 31 अक्तूबर जैसी एक भी गलती भाजपा का खेल बिगाड़ सकती है.

—जफर आगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फर्क खुद महसूस कीजिए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

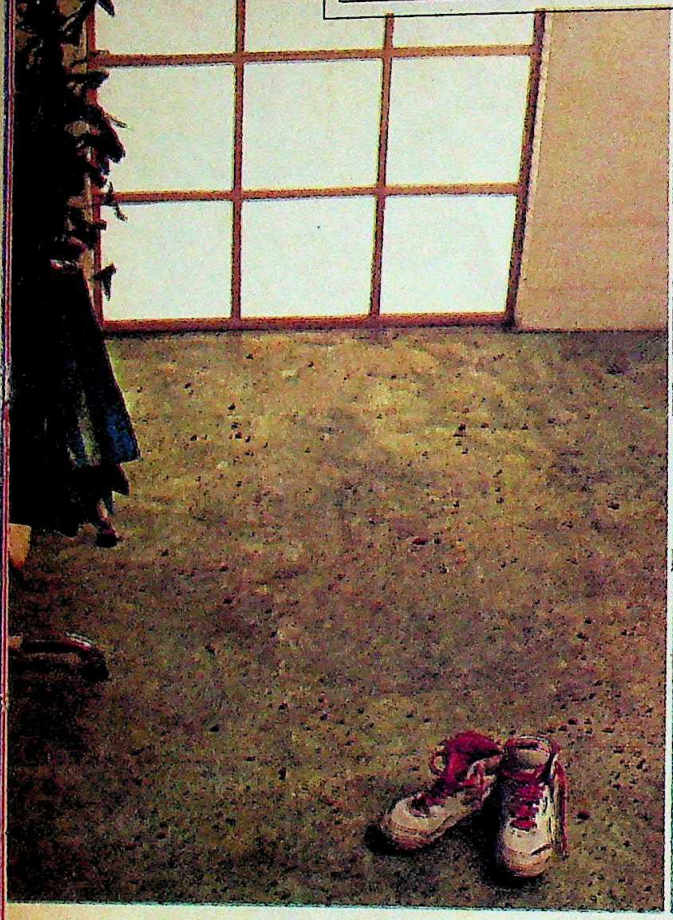

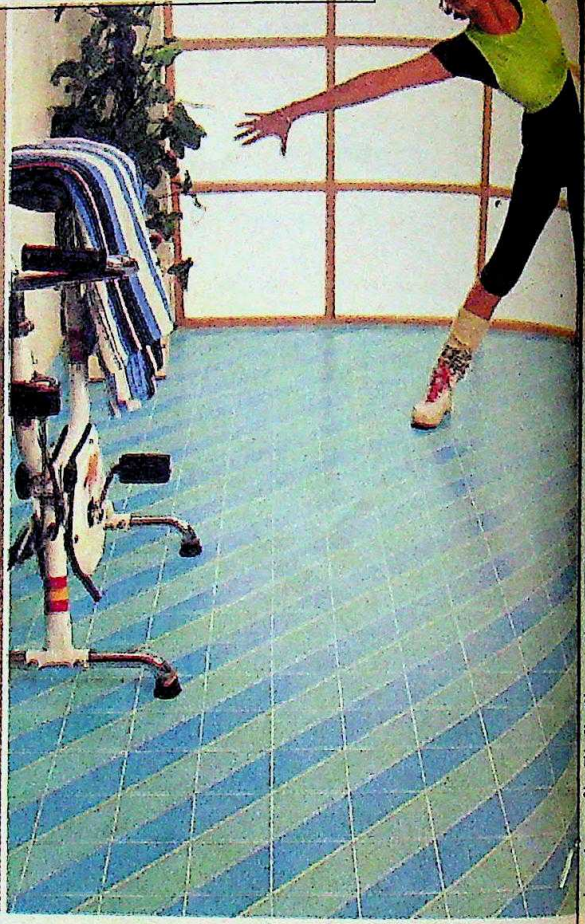

रु. 980/- का फ़र्क*

आपका रहन-सहन और सुंदर हो जाएगा बस एक फ़्लोर सजा लेने से। वंडरफ़्लोर के आकर्षक रंगों और मनमोहक डिज़ाइनों की **कीमत बहुत कम** है लेकिन इनसे आपके घर की सजावट **बहुत बेहतर** हो जाएगी। **जल्दी** लगे, **आसानी** से साफ़ हो – घर में **सफ़ाई और स्वास्थ्य** का वातावरण रहे। जर्मन टेक्नालॉजी का भरोसा, साथ में प्रीमियर का विश्वास!

वंडरफ़्लोर लगाने का फैसला कर डालिए, **आज ही!**

WONDERFLOOR
VINYL FLOORING

और बेहतर फ़र्क खुद महसूस कीजिए

*रु.87.55 प्रति वर्ग मीटर
इसमें एक्साइज़ ड्यूटी शामिल है। अन्य टैक्स और लगाने का खर्च अलग।

PREMIER VINYL
FLOORING LTD
IN TECHNICAL COLLABORATION WITH DEGULAN GERMANY
EXCELLENCE THROUGH INNOVATION & QUALITY

Sales Offices:
New Delhi: C-4, Commercial Centre, Safdarjung Dev. Area, Ph.: 6864190, 6851226, 661087. **Ahmedabad:** C/o Media, Opp. Sardar Patel Stadium, Navrangpura, Ph.: 443515, 440887. **Bangalore:** 190/1, 4th floor, Kota Shopping Complex, Brigade Rd., Ph.: 571178. **Bombay:** 328, Kaliandas Udyog Bhawan, Behind Century Bazar, Worli, Ph.: 4300289, 4228839. **Bhubaneshwar:** C/o Cofoam Agencies, Unit III, 113 Station Square, Ph.: 408795. **Calcutta:** 3rd Floor, No. 3, Netaji Subhash Rd., Ph.: 281702, 281703. **Chandigarh:** H.No. 1074, Sector ... Ph.: 43482. **Cochin:** XL/1534, Devi Nivas, Shenoy Road, Kaloor. Ph: 346920, 346104. **Coimbatore:** Kanga Street, Shri Sai Baba Colony, Ph.: 36361, 36935. **Guwahati:** C/o Enkay Corporation, Jain House, Opp. Goenka Automobiles, G.S. Road, Dispur, Ph.: 60989. **Hyderabad:** Emerald Complex, 3rd Floor, Sarojini Devi Road, Secunderabad, Ph.: 844804. **Lucknow:** 20, Rana Pratap Marg, Ph.: 234318. **Madras:** 62, A-7, Murali Anand Flats, Alamelumangapuram, Mylapore, Ph.: 6413272, 478479. **Patna:** Shiva Dham, Kadam Kuan, Nala Road, Ph.: 59342. **Pune:** C/o ... & Bros. 11/4, Karve Road Ph.: 330540, 341999.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाजपा का 'हमको परखें' का वादा महंगा साबित हो रहा है. उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश में उसकी सरकारें निकम्मेपन, घोटाले और भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरी हैं

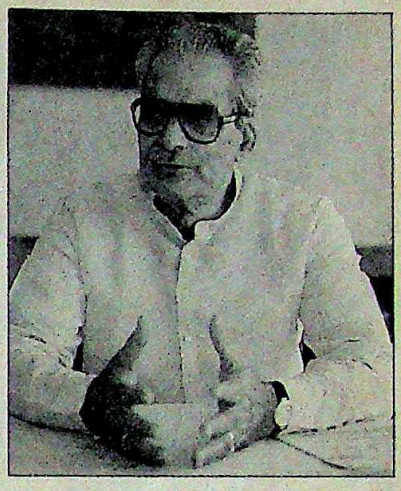

पटवा, कल्याण सिंह और शेखावतः आशाओं पर पानी

के एक बड़े नेता कहते हैं, "मामले का फैसला सड़कों पर होगा."

मगर पार्टी नेताओं का मानना है कि अगर विहिप और बजरंग दल ने बल प्रयोग किया भी तो अयोध्या में ज्यादा खून-खराबा नहीं होगा. उनका कहना है कि भाजपा सरकार के हाथ में पुलिस और प्रशासन होने के चलते मुसलमान घरों से बाहर नहीं निकलेंगे.

देरी पर दारोमदार

कानून के पालन पर ही आस

बहरहाल, अगर उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार बची भी रह जाती है तो भाजपा की राष्ट्रीय छवि पर असर पड़ेगा ही, उसके अलावा राजस्थान, मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में भी इसकी प्रतिक्रिया होगी. पार्टी नेतृत्व के उदारवादी लोग ऐसी स्थिति में क्या करेंगे यह साफ नहीं है. 1990 में पार्टी को पूरी तरह रामभक्ति मय बनाने से रोकने वाले ये लोग कहने ही लगे हैं कि चार राज्यों में सरकारें चला रही राष्ट्रीय पार्टी को 'कानून के राज की अवधारणा' का उल्लंघन नहीं करने दिया जा सकता. पार्टी के एक वरिष्ठ नेता कहते भी हैं, "भाजपा देश की सबसे बड़ी अदालत के फैसले के खिलाफ आचरण करे, यह सवाल ही नहीं उठता. अदालत का आदेश या विहिप की इच्छा में से किसी को चुनना पड़ा तो भाजपा को विहिप का साथ छोड़ना पड़ेगा."

और अगर भाजपा उत्तर भारत की चुनावी जीत वाले आधार को अन्यत्र फैलाना चाहती है तो उसे मालूम है कि वह यह काम मस्जिद तोड़ने के नारे के सहारे पूरा नहीं कर सकती. वह भले ही मान रही हो कि अयोध्या मसले पर केंद्र की दखलंदाजी से उसे उत्तर प्रदेश में राजनैतिक लाभ हो जाएगा पर उसे यह भी मालूम है कि इस प्रक्रिया में उसकी राष्ट्रीय छवि बिगड़ेगी और अन्य प्रदेशों में उसे नुकसान होगा. इस पूरे जोड़-तोड़ में सबसे अधिक महत्व हिंदू मतदाता के मिजाज का है.. वह मस्जिद गिराकर मंदिर बनाने के सवाल को कितना महत्वपूर्ण मानता है? मस्जिद गिराने पर जो हिंसा फूटेगी उसके प्रति उसका नजरिया क्या होता है?

अभी ही पार्टी अयोध्या की घटनाओं से, जिसे आडवाणी 'दुर्भाग्यिपूर्ण' मानते हैं, खुद को अलग करने को लेकर परेशान है. बकौल आडवाणी, "जरा-सा भी भटकाव हमारे लिए परेशानी पैदा करता है. जो लोग सीमाएं लांघकर जा रहे हैं, वे बाहर से प्रेरणा पा रहे हैं." भाजपा के अन्य नेताओं का कहना है कि 'गरम दिमाग वाले शिव सैनिकों' को मस्जिद तोड़ने के लिए लाया गया था.

अब भाजपा की आस अदालती प्रक्रिया में लगने वाली पारंपरिक देरी पर ही लगी है. पार्टी के एक बड़े नेता कहते हैं, "दो साल तो क्या मामला पांच साल भी खिंच सकता है इसलिए संकट कहां है?"

जहां तक विहिप का सवाल है, उसका मानना है कि लोगों को कानूनी बातों की परवाह नहीं है. उसके नेताओं ने राम मंदिर निर्माण का अपना स्पष्ट लक्ष्य बना रखा है. मंदिर निर्माण के रास्ते में आने वाली कानूनी बाध्यताओं को निबटाने की जिम्मेदारी उन्होंने भाजपा पर डाल रखी है.

पर संघ से जुड़े विहिप नेता निजी बातचीत में मानते हैं कि संगठन के अंदर उनकी स्थिति मुश्किल हो गई है. अभी तक संघ ने अपने तीन अनुषांगिक संगठनों के बीच वैचारिक मतभेद को कड़ाई से दबाए रखा है. लेकिन अनेक वर्षों में ऐसा पहली बार हो रहा है कि जुनूनी लोगों के बीच संघ और विहिप की प्रतिष्ठा कम हो रही है. एक तरफ दोनों ने मंदिर निर्माण के प्रति अपनी पूरी निष्ठा व्यक्त की है और दूसरी तरफ उन्हें अब उत्तर प्रदेश और अन्य स्थानों पर भाजपा को हो सकने वाले नुकसान की भी चिंताएं घेरने लगी हैं.

उत्तर प्रदेश की गरमागरमी के बाद मामले के ठंडा पड़ने का संकेत राजस्थान जैसे राज्यों में बहुत साफ दिख रहा है. अब वहां पार्टी दफ्तर में फोन करने पर 'जय श्रीराम' की जगह 'हेलो' का जवाब मिलता है. मध्य प्रदेश में तो मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा इस साल दिवाली पर राम कार्ड भेजना भूल गए. आम सभाओं में भी उन्होंने 'जय श्रीराम' का नारा लगाना बंद कर दिया है. पटवा "कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की तारीफ करते हैं, तो राजस्थान के मुख्यमंत्री भैरों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाजपा को अपनी सबसे बड़ी कमजोरी यानी एक व्यापक राष्ट्रीय नजरिया और निष्पक्ष नीतियां प्रस्तुत करने में अपनी असमर्थता को दूर करना होगा

वाजपेयी, जोशी और आडवाणी संकट में त्रिमूर्ति

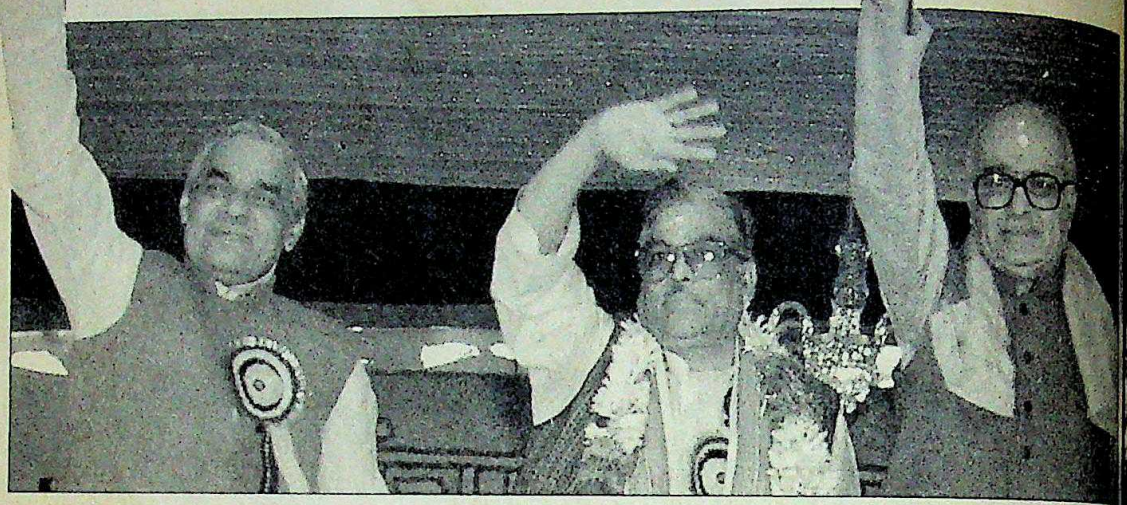

सिंह शेखावत कहते हैं, "हम मंदिर निर्माण के प्रति वचनबद्ध हैं. पर इस पवित्र स्थल में घुसने वालों के खिलाफ कार्रवाई करनी पड़ी क्योंकि उन्होंने विहिप के निर्देशों का उल्लंघन किया था."

बढ़ती टीस

विश्वसनीयता का संकट

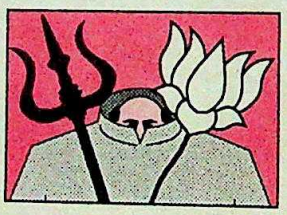

इस बात में संदेह नहीं कि अभी अयोध्या मसले को पृष्ठभूमि में धकेलने की सचेष्ट कोशिशें चल रही हैं. साथ ही राष्ट्रीय छवि बनाने का प्रयास भी हो रहा है. राजस्थान भाजपा के अध्यक्ष रामदास अग्रवाल कहते हैं, "लोगों ने उम्मीद लगा ली थी कि मंदिर रातोरात बन जाएगा. हम उनसे कह रहे हैं कि इसमें कुछ समय लगेगा और उन्हें हमारी निष्ठा में भरोसा है."

हाल के उपचुनाव के दौरान भाजपा के अभियान से भी यह चीज झलकती है. जोशी, आडवाणी, वाजपेयी और अन्य नेता जरूर 'मंदिर वहीं बनाएंगे' का नारा लगाते रहे पर वे पहले की तरह भीड़ से भी यह नारा नहीं लगवाते थे. इन नेताओं ने अधिकांश समय कश्मीर, असम और आर्थिक उदारीकरण के मसलों पर जोर दिया जो इस बात का संकेत है कि पार्टी के लिए अब मंदिर निर्माण एकमात्र मसला नहीं रह गया है.

लेकिन भाजपा की रणनीति में मंदिर ब्रह्मास्त्र नहीं है तो और क्या है? इससे भी महत्वपूर्ण सवाल यह है कि रणनीतियों और कार्ययोजनाओं के आगे भाजपा का भविष्य क्या है? यह सवाल एक राष्ट्रीय नजरिया पेश करने में भाजपा की असमर्थता को, जो शायद उसकी मुख्य कमजोरी है, उजागर कर देता है. अभी तक पक्षपात रहित, संकीर्णता से परे वाले विचारों और नीतियों के आधार पर जन समर्थन जुटाने का काम इसने नहीं किया है.

बदतर तो यह कि जिन राज्यों में यह सत्ता में आई वहां भी बढ़िया प्रशासन न देकर इसने अपनी इस कमी में और इजाफा ही किया है. मध्य प्रदेश में सुंदरलाल पटवा सरकार की हालत खराब है और उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह अनुपयुक्त साबित हुए हैं. भाजपा सांसद जसवंत सिंह मानते हैं, "राम बढ़िया सरकार चलाने का विकल्प नहीं बन सकते."

साथ ही भाजपा में आपसी विवाद न होने और मेल-मिलाप रहने वाली ख्याति भी अब पुराने जमाने की चीज बन गई है. अयोध्या की हाल की घटनाओं ने सत्ता का स्वाद चखने वाले हिंदुत्ववादी परिवार के झगड़े भी उजागर किए हैं. अभी तो संघ ने जोड़ बैठा दी पर सत्ता में बने रहने से इस 'दवा' का भी असर कम होता ही जाएगा. मसलन, कल्याण सिंह विहिप के गरमपंथियों से कोई विवाद मोल नहीं ले सकते क्योंकि खुद उनकी अपनी फौज ही अभी अस्त-व्यस्त है. लखनऊ में हर कोई जानता है कि स्वास्थ्यमंत्री दिनेश जौहरी कल्याण सिंह के खिलाफ असंतुष्टों को संगठित कर रहे हैं और विधानसभा अध्यक्ष केसरी नाथ त्रिपाठी और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष कलराज मिश्र नेतृत्व झपट लेने की ताक में हैं. वे कल्याण सिंह के खिलाफ विधायकों की नाराजगी को गोलबंद करने में लगे हैं.

लेकिन अगर भाजपा विचारों के मामले में ऐसी ही शून्यता बनाए रही, तो यह दिखावटी मामला कब तक चलेगा? और फिर वह कितने समय तक विहिप पर लगाम लगाए रख सकती है. संघ की पृष्ठभूमि वाले भाजपा के अनेक कार्यकर्ता मंदिर मसले पर विहिप के साथ हो चुके हैं. उनके लिए भाजपा का सत्ता में आना नहीं, मंदिर निर्माण में अपनी भागीदारी गौरव की चीज है. राजस्थान में बजरंग दल के भगवाधारी प्रमुख आचार्य धर्मेंद्र कहते हैं, "अब भाजपा कदम वापस नहीं खींच सकती. हम सरकार बचाने के लिए मंदिर के मसले पर उसे समझौता करने की अनुमति नहीं देंगे." शेखावत भी मानते हैं, "मंदिर की दिशा में हम काफी आगे तक बढ़ चुके हैं."

यह सचमुच एक विडंबना है कि जिस एक मुद्दे ने हिंदुत्व की तीनों ताकतों—राष्ट्रसंघ-भाजपा-विहिप को एकजुट किया और भारी सफलता दिलाई, वही उनकी आगे की प्रगति में बाधक बन गया है और इस गठबंधन की वैचारिक शून्यता को एकदम स्पष्ट तौर से उजागर कर रहा है. पर परिणाम भूलकर बाघ की सवारी करने का यही नतीजा होगा ही.

—साथ में नरेंद्र कुमार सिंह और सौमिक बिश्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माईक्रो ओवन से 53% अधिक जल्दी पकाता है

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

हरियाणा

□ अम्बाला सीटी दीवान चन्द मनोहर लाल जैन, बिसाती बाज़ार, शक्तेदा बर्तन भंडार, पटेल रोड, सैनिक स्टोर हाउस, कचेरा बाज़ार। □ **बल्लभगढ़** मुकुन्द लाल, घंटा घर। □ **चंडीगढ़** अग्रवाल ट्रेडर्स, रो रूम नं० 30 सेक्टर 26, मध्य मार्ग। □ **हांसी** हरूम, मार्किट नं० 1 एनआईटी. किशन लाल, मुकेश कुमार। □ **हिसार** क्रोकरी पैलेस, मोती बाज़ार। □ **झज्जर** दत्त एण्ड सन्स, सदर बाज़ार, □ **जाखल** मनोहारी स्टोर्स, रेलवे रोड, माल चन्द एण्डसन्स, चौक बाज़ार। □ **जींद** केदार नाथ पवन कुमार, सदर बाज़ार। □ **कालका** राला राम द्वारका प्रसाद, चौक, देनी प्रसाद प्रादुमन कुमार, बस स्टेन्ड कालका। □ **कैथल** सरस्वती बर्तन भंडार, कपड़ा फिटिंग, राम प्रकाश रमेश कुमार, तलाई रोड। □ **कुरुक्षेत्र** सरस्वती बर्तन भंडार, मोती बाज़ार। □ **करनाल** सरदार बर्तन स्टोर्स, फव्वारा चौक, मैन बाज़ार। □ **पानीपत** मोहन सिंह ओम प्रकाश, मोती चौक, जैन बर्तन भंडार, मैन बाज़ार, □ **रोहतक** मदन लाल हैप्पी राज सैनी, गोकल बाज़ार। □ **सोनीपत** मदन लाल बांदेश कुमार, जैन, रेलवे रोड, सदर बाज़ार, किला रोड। □ **यमुना नगर** जैन बर्तन स्टोर, पुरानी सब्जी मंडी।

गुजरात

□ **अहमदबाद** फेन्सी नावल्टी स्टोर, 1811/2 थ्री गेटस, अब्दुल कादिर मो०. हुसैन 1812, थ्री गेटस, अकबर अली कादिर भाई, 1822 थ्री गेटस, भारत बर्तन भंडार, 7 पुराना 'जी' बार्ड, कुबेर नगर। □ **बरोदा** शिरजी मेटल कॉरपोरेशन, ठोनीवी मुकतेने पोल, बजवाड़ा, मोती लाल छोटे लाल कसारा, एम०जी० रोड। □ **बुलसर** कंसारा दया राम बल्लभ राम एण्ड कम्पनी, रामजी स्ट्रीट, भगवान दास दया राम, एम०जी० रोड। □ **भावनगर** अतुल ग्रह वस्तु भंडार, वोरा बाज़ार, महालक्ष्मी मंदिर के सामने, नागर ग्लासवेयर मार्ट, वोरा बाज़ार। □ **गोधरा** महावीर मेटल कॉरपोरेशन, पुराना बस स्टैंड के सामने। □ **नावसारी** पुशपानजली स्टेन्लेस स्टील मार्ट, 12 सत्या नारायण मार्किट दुधीया तलाब, दीपक बासन भंडार, 4/371 पटवा स्ट्रीट मोटा बाज़ार के पास, नीतिन बासन भंडार, 56 शापिंग सेन्टर दुधीया तलाब, विजय स्टेन्लेस स्टील मार्ट, 7 गांधी मार्किट मेन रोड दुधीया तलाब। □ **नडीयाड** चारभुजा बासन भंडार, अहमदाबादी बाजार। □ **सुरत** ठक्कुर दास जीवा राम एण्ड सन्त, 3/4227 बुन्देलवाद भागल, संगीता स्टील सेन्टर, 21 ए बालकिशान शापिन्ग सेन्टर ब्रालीपिठ, अरीहन्त स्टील इम्पोरियम, छोटा बाज़ार, मेन रोड मोटा मन्दिर के पास, अनिल स्टील इम्पोरियम, छोटा बाज़ार, दीप सेल्स, 10/483 नगर फालिया, पानी-नी-भीत।

राजस्थान

□ **अलवर** जुनेजा ब्रदर्स, । वीर चौक होप सर्कस, भारत बर्तन भंडार, बजाजा बाज़ार। □ **अजमेर** गोवरधन लाईट हाउस, मदर गेट। □ **भीलवाडा** राठी मेटल ट्रेडिंग कम्पनी, भवादा स्ट्रीट, छोगा लाल कल्याण मल, गुल मन्डी, कबरा मेटल्स, गुल मन्डी, अरीहन्त मेटल्स, गुल मन्डी, राम विलास साहू राम लोहाटी, बड़ा मंदिर के पास, शबक ब्रदर्स एण्ड कम्पनी, भोपाल गंज। □ **बिआवर** ओसवाल जनरल स्टोर, पाली बाज़ार। □ **बीकानेर** अब्दुल कय्युम अबदुल नासिर घजी अबदुल गनी ठठेरा, कसेरा बाज़ार। □ **बनवारा** मथुर मेटल्स, क्रोकरी मार्किट, घर सुख केन्द्र, न्यू क्लोथ मार्किट। □ **चित्तौड़गढ़** सुरेश स्टील इम्पोरियम, 26 नेहरू बाज़ार, चारभुजा बासन भंडार, 6 नेहरू बाज़ार। □ **डूंगरपुर** वासस एण्ड कम्पनी, मेन रोड। □ **जयपुर** महावीर जनरल स्टोर, 215 तरीपोलिया बाज़ार, जगदीश जनरल स्टोर, 208 तरीपोलिया बाज़ार, जैन स्टील सेन्टर, 141 तरीपोलिया। □ **जोधपुर** एवन ट्रेडर्स, सोजाती गेट के अन्दर, सुपर स्टील सेन्टर, तरीपोलिया रोड, जीनेन्द्र क्रोकरी हाऊस, सराफ बाज़ार, सीवींग इन स्टाईल, 7 नई सड़क, आरती स्टील सेंटर, आई०बी० रोड, सरदार पुरा। □ **बारबेर** पुरशोत्तम दास बंसीधर, स्टेशन रोड। □ **कोटा** गोस्वामी ब्रदर्स, भारतेन्दु भवन, लाडपुरा, नारायण जनरल स्टोर, रामपुरा बाज़ार। □ **नाथद्वारा** कंसारा तारा चन्द शंकर लाल, दिल्ली बाज़ार। □ **नागौर** एच० दाउदजी मोहम्मद, अब्दुल, बर्तन बाज़ार। □ **उदयपुर** लाल चन्द छगन लाल चौधरी, घंटा घर, राजेश मैटलस, गली मांदवाली, सूरज पोल के अन्दर, श्रीगंगानगर स्टेशन हिन्द बर्तन भंडार, 18 स्वामी दयानंद मार्ग।

मध्यप्रदेश

□ **बिलासपुर** रूप जनरल स्टोर्स, गोला बाज़ार, राम एण्ड श्याम मेटल स्टोर्स, गोल बाज़ार, सुन्दर एल्मीनियम स्टोर्स, सनीचरी बाज़ार, लक्ष्मी स्टील भंडार, सदर बाज़ार। □ **भोपाल** राम चन्द ग्लास स्टोरस, बैरागढ़, लक्की सेन्टर, लालघाटी प्रेस रोड, मद्रास स्टील हाउस पुराना कब्बार खाना। □ **रायपुर** बीम्बे टॉयेज़ सेन्टर, बन्जारी रोड, मन मोहन चन्द जैन सदर बाज़ार, सुराना ब्रदर्स, पोस्ट बाक्स नं० 27/59 मालवीया रोड, अभीनव ट्रेडर्स, 19 अशोक मार्किट, नया पारा, जे०एम० डागा मेटल मार्किट, बुढ़ापुरा, सुरेश ब्रदर्स, पोस्ट बाक्स नं० 53 मालवीया रोड, इन्दिरा गीफ्ट हाउस, 4/5 शादानी मार्किट, बन्जारी रोड। □ **ग्वालियर** स्टील पेलेस, जमुना लाल मार्किट, सराफ़ा बाज़ार, श्रीकिशन प्रभु दयाल अग्रवाल, सराफ़ा बाज़ार, लशकर, राजू क्रॉकरी हाउस, बाऊद मार्किट, दौलत गंज। □ **इन्दौर** बम्बई इलेक्ट्रिक हाउस, 6/5 खतीपुरा, एम०जी० रोड, राम चन्द गोविन्द राम, 2 कसेरा बाज़ार, चौएच राम एण्ड सन्स, केसरा बाज़ार, घनश्याम ब्रदर्स, 31 श्री महावीर मार्ग, पीपली बाज़ार, कुक्कर हाउस 370 जवाहर मार्ग पीप्ली बाज़ार चौराहा। □ **जबलपुर** सिटीजन सेन्टर, 24-25 आर्शीवाद मार्किट, गंजीपुरा चौक नेशनल स्टोर्स, जवाहर गंज, परफेक्ट ट्रेडर्स, कोतवाली बाज़ार, नारायण ब्रदर्स, 631 खटीक मौहल्ला, सराफ़ा बाज़ार। पांडा मेटल्स सराफ़ा बाज़ार, श्री राम गोपाल राधे श्याम अग्रवाल मेन रोड। □ **रतलाम** हकीमुद्दीन एण्ड सन्स, शानक चौक, जय किशन रघुनाथ, 54 कचेरा बाज़ार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरा कांड

लापरवाही का जहर

दिल्ली में कथित आयुर्वेदिक सुरा से करीब 200 लोगों की मौत हुई, 100 लोगों ने दृष्टि गंवाई

जहरीली सुरा से मरने वालों के शोकसंतप्त परिवारजन

—रमेश मेनन और विजय क्रान्ति

सभी चार्ट: बी.के. शर्मा

इसे दिल्ली का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि इस बार फिर दीवाली काली ही रही. फर्क बस यही था कि पिछले साल मंडल का आतंक था और इस बार जहरीली शराब ने हाहाकार मचाया. उत्तर-पश्चिमी दिल्ली की गरीब बस्तियों में लगभग दो सौ लोग मौत के व्यापारियों के लालच की बलि चढ़ गए. कम-से-कम सौ लोग हमेशा के लिए अंधे हो गए.

हालांकि इससे पहले भी दिल्ली में जहरीली शराब से मौत की कई छोटी-बड़ी घटनाएं हो चुकी हैं पर इस बार न केवल मरने वालों की संख्या चौंकाने वाली थी बल्कि इस बार यह कहर गैरकानूनी शराब की जगह 'कर्पूर आसव' नाम से कानूनी तौर पर बिकने वाली आयुर्वेदिक 'सुरा' ने ढाया. बाद में पता चला कि उत्तर प्रदेश के मुरादनगर की 'करनाल फार्मेसी' में बनी कर्पूर आसव की ये बोतलें दिल्ली के जहांगीरपुरी, हैदरपुर आजादपुर, शालीमार बाग, और अशोक विहार जैसी बस्तियों में पंसारियों और पानवालों से चोरी-छिपे खरीदी गई थीं. दीवाली पर होने वाली भारी मांग को देखते हुए 'सुरा' बनाने वालों ने रेक्टिफाइड स्पिरिट के अलावा जहरीले मिथाइलेटेड स्पिरिट में खुशबू मसाला मिलाकर बोतलें भर डाली थीं.

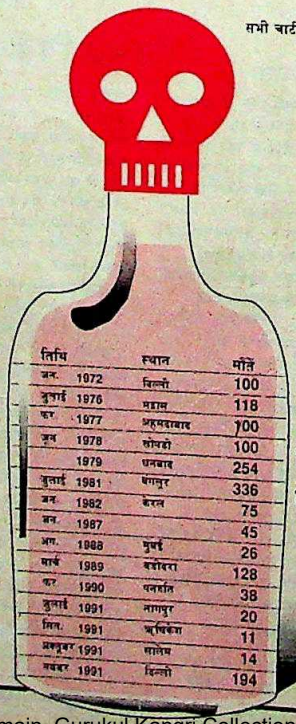

जहरीली शराब से मौतें

तिथि	स्थान	मौतें
जन. 1972	दिल्ली	100
जुलाई 1976	मद्रास	118
फर. 1977	अहमदाबाद	100
जून 1978	सोनपती	100
1979	धनबाद	254
जुलाई 1981	बंगलूर	336
जन. 1982	केरल	75
जन. 1987		45
अग. 1988	मुंबई	26
मार्च 1989	बड़ौदरा	128
फर. 1990	पनवेल	38
जुलाई 1991	नागपुर	20
सित. 1991	ऋषिकेश	11
अक्तूबर 1991	सोलन	14
नवंबर 1991	दिल्ली	194

दुर्घटना के बाद सरकार की नींद खुली और पुलिस ने दिल्ली और उत्तर प्रदेश में जगह-जगह छापे मारकर गैरकानूनी तरीके से बेची जा रही सुरा की हजारों बोतलें बरामद की और कई लोगों को गिरफ्तार भी किया. फिर प्रशासन और उत्तर प्रदेश सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू राव अस्पताल के शवगृह में सुरा कांड के शिकारों के शव

सरा निभाते हुए जांच आयोग भी ट दिया. एक सदस्यीय इस जांच ोग के अध्यक्ष हैं दिल्ली हाईकोट के सेवानिवृत्त न्यायाशीश जगदीश चंद्र. आयोग इस हादसे के लिए जिम्मेदार लोगों की पहचान करेगा और ऐसे उपाय सुझाएगा कि आगे ऐसे हादसे न हों. लेकिन सैकड़ों गरीब परिवार तो बरबाद हो ही चुके थे.

मरने वालों में अधिकांश दिहाड़ी मजदूर, रिक्शा चालक और छोटे-मोटे धंधे वाले लोग थे. जो बच गए उनके लिए जीवन अर्थहीन होकर रह गया. मिथाइल अल्कोहल के कारण अंधे हो गए आजादपुर के मजदूर राम मेहर का कराहते हुए कहना था, "मेरी तो पूरी दुनिया ही अंधेरी हो गई."

उधर हिंदू राव अस्पताल में मरीजों की भरमार के कारण एक नया अस्थायी वार्ड बना दिया गया लेकिन ठसाठस भरी लाशों के बाद भी शव कक्ष छोटा पड़ गया. शालीमार बाग और केवल दिल्ली के श्मशानों में चार दिन तक लाशें जलाने के सिलसिले, भीड़ की नाराजगी और थकावट के कारण परेशान अधिकारी भी भाग खड़े हुए. पूरी दिल्ली के लिए यह एक अभूतपूर्व सदमा था. इस दुखद कांड ने आयुर्वेदिक दवाएं बनाने के नाम पर दारू के अवैध व्यापार की तरफ लोगों और सरकार का ध्यान केंद्रित कर दिया है. केंद्रीय गृह राज्यमंत्री एम.एम. जेकब अब कह रहे हैं कि सरकार को इस धंधे को जड़ से मिटाने पर विचार करना होगा. उत्तर प्रदेश में भी सरकार ने बदनामी से बचने के लिए घोषणा कर दी कि भविष्य में आयुर्वेदिक दवाओं में 12 प्रतिशत से अधिक अल्कोहल की इजाजत नहीं दी जाएगी. लेकिन इस सवाल का जवाब किसी के पास नहीं था कि आयुर्वेद के नियमों को ताक पर रखते हुए 12 प्रतिशत वाले प्राकृतिक खमीर की जगह 90 प्रतिशत वाले रेक्टिफाइड स्पिरिट के इस्तेमाल की इजाजत क्यों दी गई? (देखें बॉक्स).

पेंचीदा कानूनों की आड़ में दवा के नाम पर दारू का धंधा करने वालों को मिली कानूनी सुरक्षा पर अतिरिक्त पुलिस आयुक्त पी. आर. एस. ब्रार का सवाल था, "हम गैरकानूनी शराब वालों के खिलाफ तो कार्रवाई कर सकते हैं. पर कानूनी तौर पर दारू से भरी हुई हर बोतल की जांच हम कैसे कर सकते हैं?"

पुलिस के बाद राजनैतिक दल और सामाजिक संगठन ही बचते हैं जो इन मुद्दों पर आवाज उठा सकते हैं. कुछ साल पहले गढ़वाल और कुमाऊं में कुछ युवा संगठनों ने सुरा बेचने वाली दुकानों का घेराव किया था और दुकानदारों को अपनी बोतलें खुद फोड़ने पर मजबूर किया था. लेकिन दिल्ली में इतना बड़ा कांड हो जाने के बाद भी किसी सामाजिक संगठन ने मुंह तक नहीं खोला. हां, भाजपा के नेता मदनलाल खुराना ने यह धमकी जरूर जारी कर दी कि उनकी पार्टी भोपाल गैस कांड की तरह सुप्रीम कोर्ट में जनहित का मुकदमा दायर करेगी.

इस त्रासदी ने दिल्ली में शराब बिक्री व्यवस्था की उन कमजोरियों को भी उजागर कर दिया है जिनकी वजह से सुरा की धड़ल्ले से बिक्री होती है और जहरीली सुरा बनाने वालों को लोगों की जान से खेलने की छूट मिलती है: सुरा की जोरदार बिक्री के दो मुख्य कारण उसका सस्ता होना तथा हर मौके पर हर जगह उपलब्ध होना है. दिल्ली में सबसे सस्ती अंग्रेजी शराब का 'अद्धा' 45 रु. का और देसी शराब का 19 रु. का (अगर मिल जाए तो) है जबकि सुरा का पव्वा 8 रु. और अद्धा

कानूनी पहलू

आबकारी कानून और सुरा से संबंधित कुछ मोटे तथ्य इस प्रकार हैं:

- केवल लाइसेंसधारी डिस्टिलरियों को ही इथाइल अल्कोहल बनाने की इजाजत है. लेकिन आयुर्वेदिक दवा कंपनियों को दवा बनाने के लिए खमीर उठाने की पूरी छूट है. इस विधि से अल्कोहल अनुपात 12 प्रतिशत से ऊपर नहीं जा सकता.
- आयुर्वेदिक भेषज समिति (एपीसी) की मेहरबानी से उन आयुर्वेदिक कंपनियों को भी कम कीमत (7.50 रु. प्रति लीटर) पर रेक्टिफाइड स्पिरिट उपलब्ध जो खमीर उठाकर प्रसन्न (चावल की कच्ची शराब) आदि न बना सकती हों. कर्पूर आसव को इसी आधार पर 12 प्रतिशत की जगह 90 प्रतिशत अल्कोहल इस्तेमाल की छूट मिली.
- 1987 के बाद दिल्ली में अल्कोहल वाली सुरा और आसव के उत्पादन पर पूरा प्रतिबंध. लाइसेंसधारी केमिस्टों को दूसरे प्रांतों से आई सुरा और आसव आदि वैद्य के नुस्खे पर बेचने की छूट.
- 1986 में सुप्रीम कोर्ट के फैसले और दिल्ली हाईकोर्ट के स्थगन आदेश के बाद 12 कंपनियों को दिल्ली में मृत संजीवनी सुरा, मृत संजीवनी सुधा और मृत संजीवनी के आयात, बिक्री और भंडारण की पाबंदियों से मुक्ति, यह स्थगन अभी भी लागू है.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

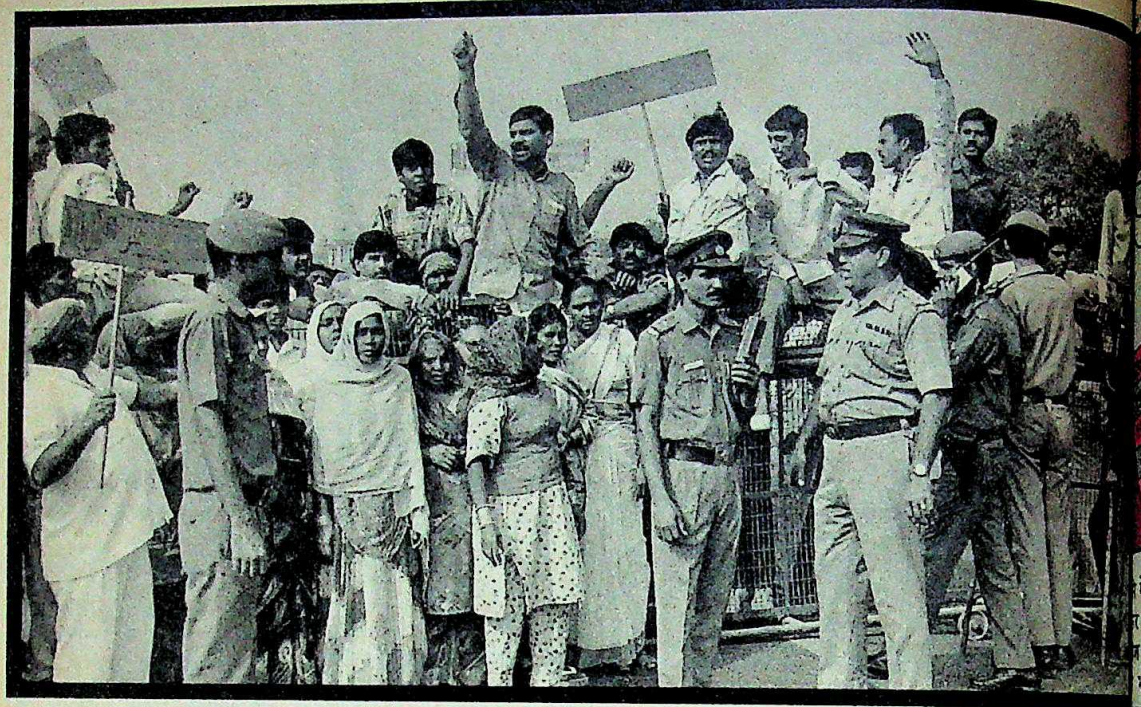

सुरा कांड के खिलाफ बोट क्लब पर रैलीः कौन सुनेगा फरियाद

13 से 15 रु. में मिल जाता है. यह स्पष्ट हो चुका है कि सुरा पीने वाले लगभग सभी लोग उस वर्ग के हैं जो मूल रूप से देसी शराब पीने वाले हैं. लेकिन देसी शराब के उपलब्ध होने की हालत यह है कि जहां एक ओर दिल्ली में अंग्रेजी शराब और बीयर की 120 दुकानें और 110 बार हैं, वहां पूरे शहर में देसी शराब के केवल 10 ठेके हैं. इनमें से कई ठेके एक दूसरे से 10 किलोमीटर से ज्यादा की दूरी पर हैं.

नतीजा यह होता है कि सामान्य दिनों में भी शाम के समय किसी ठेके पर सैकड़ों ग्राहकों की भीड़ होना सामान्य बात है जबकि दीवाली और होली के आसपास के दिनों में यह संख्या हजार से ऊपर चली जाती है. एक वरिष्ठ आबकारी अधिकारी बताते हैं, "पिछले साल होली के मौके पर का लाइसें कुछ शराब ठेकों पर दंगा होने और लूट की नौबत आते-आते बची. आखिरी क्षणों में हमें इन ठेकों पर पुलिस की सुरक्षा में एक अतिरिक्त शराब भिजवानी पड़ी."

कानून को ठेंगा

आयुर्वेद के मूल ग्रंथ 'भेषज्य रत्नावली' के अनुसार कर्पूर आसव का एक 'अद्धा' चार व्यक्तियों के परिवार को साल भर के लिए जुलाब और पेचिश से निजात दिलाने के लिए काफी है.

इस 'दवा' को तैयार करने के लिए चावल के प्रसन्न (सुरा), काफूर, छोटी इलायची, मोथा, सोंठ, अजवाइन और काली मिर्च की निश्चित मात्राएं लेकर उन्हें एक महीने तक बंद घड़े में खमीरा होने दिया जाता है. इस तरह तैयार रस को छानकर बनाई गई दवा की 5 से 15 बूंदें ही पेट की बीमारियों के लिए काफी हैं. इसमें अल्कोहल 12 फीसदी से ऊपर नहीं हो सकता.

स्वास्थ्य मंत्रालय की आयुर्वेदिक भेषज समिति ने छूट दे रखी है कि चावल का प्रसन्न न होने की हालत में कंपनियां रेक्टिफाइड स्पिरिट (90 प्रतिशत अल्कोहल) इस्तेमाल कर सकती है. कर्पूर आसव निर्माताओं ने इसका फायदा उठाया.

व्यावसायिक कंपनियों के मैदान में आ जाने से पैकिंग और विज्ञापन भले ही आकर्षक हो गए हों पर इस बात की कोई गारंटी नहीं रही कि दवा बनाते समय उनसे जुड़े नियम का सही-सही पालन किया जाता है. केंद्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान परिषद के डॉ. विवेकानंद पांडेय कहते हैं, "सरकारी एजेंसियां आंख मूंदकर उन सब पर विश्वास कर लेती हैं जो ये कंपनियां कहती हैं."

नियमों के अस्पष्ट होने का हाल यह है कि परिषद ने पिछले 20 साल में जोर करके 415 प्रमुख आयुर्वेदिक दवाओं के बारे में जो मानक तैयार किए हैं उन्हें खुद मंत्रालय ने मान्यता नहीं दी है. ऐसे में दवा कंपनियों को अपने 'अनुभव' पर आधारित 'अनुभूत योग' के प्रावधान का इस्तेमाल करते हुए मनमाने तरीके से दवा बनाने की कानूनी छूट मिली हुई है.

—विजय मोहन

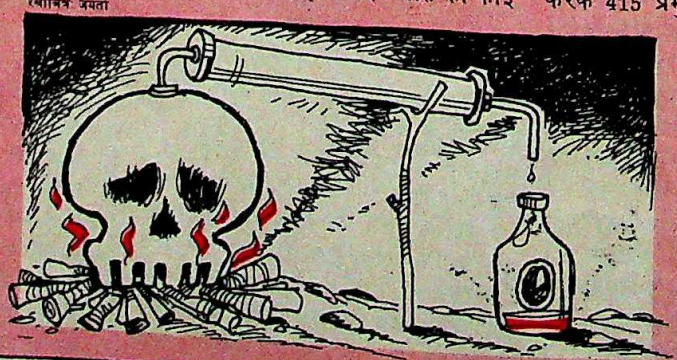

इलस्ट्रेशन: जयंतो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

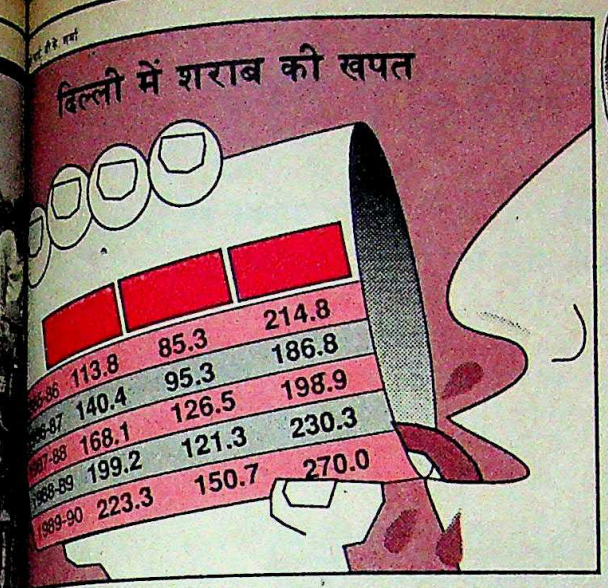

दिल्ली में शराब: आबकारी से आय

1985-86	51.61	46.60	1.12
1986-87	67.16	44.95	1.19
1987-88	82.63	48.01	0.78
1988-89	101.92	56.68	0.80
1989-90	120.00	65.30	0.84

में अगर पड़ोस के केमिस्ट, पनवाड़ी या
पंसारी की दुकान पर आधे दाम में
दोगुना बढ़ाने वाली सुरा मिल जाए
भला कोई ठेके पर धक्के खाने क्यों
गा?

त्योहार के मौकों पर सुरा की बिक्री
बोतलों में होती है, जबकि दवा
ने वाली कंपनियों का रेक्टिफाइड
स्पिरिट का लाइसेंस इससे बहुत कम होता
है. उदाहरण के लिए करनाल फार्मेसी का
आखिरी धंधे से वार्षिक कोटा 4,000 लिटर का है.
की सुरक्षा में किए यह कोटा कई कंपनियों को इसकी
वानी पड़ी थी में गैरकानूनी माल तैयार करने का
सम्मानित रास्ता उपलब्ध कराता है. इस हालत में सुरा बनाने वालों को गैरकानूनी तरीके से अल्कोहल खरीदने में भी नुकसान नहीं होता.

लेकिन इस तरह खरीदी गई स्पिरिट में अगर मिथाइलेटेड स्पिरिट का भी मेल जुड़ जाए तो कागजी प्रयोगशाला और फर्जी वैज्ञानिकों के बूते पर चलने वाली इन 'फार्मेसियों' के ग्राहकों का बस भगवान ही मालिक होता है. इस तरह की आपाधापी वाले बाजार में अगर कुछ चालू दुकानदार भी वापस आने वाली खाली बोतलों में अपने घर पर तैयार सुरा भर दें तो पीने वालों की जान को खतरे में सिर्फ सत्यानाश और सवा सत्यानाश के बीच का ही फर्क रहता है.

हालांकि इस भयानक दुर्घटना के बाद केंद्र सरकार ने आयुर्वेद और आबकारी संबंधी नियमों को कड़ा करने का इदारा जताया है और दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश की सरकारों ने भी जांच आयोग बिठा दिए हैं. लेकिन अगर पिछले इतिहास से कोई सबक मिलता है तो यही कि यह श्मशान-वैराग्य चिताओं की आग के साथ ही ठंडा पड़ जाएगा. लोग और सरकारें अगले कांड तक फिर से कान में तेल डाले रहेंगे.

दारू तेरे रूप अनेक

कार्टून: जयंतो

पाबंदियों ने मनपसंद लालपरी से रिश्ता बनाए रखने के कई तरीके ईजाद कर लिए हैं. कुछ उदाहरण:

मिथाइलेटेड स्पिरिट: पीने वाले इसमें फिटकरी और कुछ अन्य रसायन मिलाकर या फिर इसे नए सिरे से डिस्टिल करके दारू बनाते हैं, पर उसमें जहर बचा रहता है.

सुरा और आसव: सरकारी नीतियों और आयुर्वेद की मेहरबानी से मृत संजीवनी सुरा, कर्पूर आसव, मृगमद आसव और द्राक्षासव जैसे नामों की आड़ में अंग्रेजी और 'देसी' के मुकाबले दोगुनी ताकत वाली (89 फीसदी अल्कोहल वाली) सस्ती दारू मिल जाए, और वह भी आसपास ही, तो भला क्या कहना.

कफ-सिरप: अल्कोहल के भारी अनुपात (70 फीसदी से ऊपर) ने कोडीन्डिल (मे ऐंड बेकर) जैसी दवाओं की लोकप्रियता के झंडे भारत के अलावा पाकिस्तान में भी गाड़ दिए हैं.

एरोमैटिक स्पिरिट: अदरक जैसी जड़ियों के सत तो पेट की बीमारियों के लिए तैयार किए गए, पर कफ-मिक्सचर मिलाकर भी लोग टुन्न होते हैं.

वार्निश और फ्रेंच पालिश: छनी हुई वार्निश, पालिश भी चलती है.

यू-डी-कोलोन: भारत में ऐसे कुछ मामले भी पकड़े गए हैं जिनमें निर्माता कंपनी ने एक ही लेबल की आड़ में दो तरह के कोलोन बेचे. एक कोलोन प्रेमियों के लिए जड़ियों वाला और दूसरा सुरा प्रेमियों के लिए शुद्ध अल्कोहल.

पुदीन हरा: 30 मिली की शीशी से सिर्फ साढ़े नौ रु. में 'बड़ा पेग' बनाने वालों पर अंकुश लगाने के लिए डाबर को हाल ही में दवा का अल्कोहल 79 फीसदी से कम करना पड़ा.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवसेना

बेखटके विचरता शेर

सुर्खियों में रहने के कारनामों के चलते बाल ठाकरे ने एक बार फिर साबित कर दिखाया कि महाराष्ट्र में भाजपा नहीं, उनकी पार्टी हिंदू हितों की अगुआ है

—एम. रहमान

बाल ठाकरे, यानी शिवसेना के करिश्माई और विवादास्पद प्रमुख, शांत बैठने वाले जीव नहीं हैं. पत्र-पत्रिकाओं के लोग यह हिसाब लगा ही रहे थे कि लोकप्रियता के मामले में भाजपा शिवसेना से आगे पहुंच गई है या नहीं, तभी ठाकरे ने पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के भारत दौरे के खिलाफ जेहाद छेड़ दिया. और जब उनके कार्यकर्त्ताओं ने मुंबई में वानखेड़े स्टेडियम की पिच खोद डाली तो 25 साल पुरानी यह पार्टी फिर सुर्खियों में आ गई.

शिवाजी पार्क की एक विशाल सभा में 65 वर्षीय 'हिंदू हृदय सम्राट' ने घोषणा की थी कि अगर पाकिस्तानी टीम वानखेड़े स्टेडियम में खेली तो पूरे स्टेडियम को फूंक डाला जाएगा. संयोग से लगभग इसी दौरान रक्षामंत्री शरद पवार ने, जिन्हें ठाकरे का करीबी भी माना जाता है, धमकी दी कि पंजाब में आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए पाकिस्तान को सबक सिखाया जाएगा. अनेक लोगों को अचरज हुआ कि क्या दोनों ने आपसी मशविरे के बाद तो ऐसी घोषणा नहीं की.

पाकिस्तान ने दौरा रद्द कर दिया तो ठाकरे ने एक और रैली आयोजित की जो पार्टी की जीत पर थी. इसमें पाक उग्रवादी का एक बड़ा पुतला जलाया गया. इस आयोजन से स्पष्ट हो गया कि उग्र राष्ट्रवादी संगठन के रूप में खुद को पेश करने की दौड़ में शिवसेना ने भाजपा से बाजी मार ली है. और जब आरोप लगाया गया कि भाजपा के हाथ से निचले स्तर पर भी पहल छीन लेने के उद्देश्य से शिवसेना ने यह सब किया तो ठाकरे ने जवाब दिया, "मैं हमेशा से गरमपंथी रहा हूं. मैंने पाकिस्तान का सवाल इसलिए उठाया क्योंकि यह राष्ट्रीय महत्व का था, इसलिए नहीं कि कुछ करना ही चाहिए."

हेमंत पिठवा

पाकिस्तानी उग्रवादी का पुतला जलाती शिवसेना की युवा शाखा

भाजपा शिवसेना प्रमुख के उत्तेजक तेवरों से परेशान भले ही हो पर भीड़ खींचने की उनकी क्षमता के चलते वह उनके साथ गठबंधन जारी रखने को मजबूर भी है

शिवसेना के इसी तेवर के चलते भाजपा के कुछ नेता भी इसके साथ महाराष्ट्र में चुनावी तालमेल के खिलाफ हैं. पिछले महीने ही भाजपा सांसद जसवंत सिंह ने इस तालमेल पर अपनी खुली नाराजगी जताई थी. लेकिन महाराष्ट्र में इंका का मुकाबला करने के लिए भाजपा को शिवसेना से गठबंधन करने की मजबूरी थी क्योंकि यहां वह शिव सेना से कमजोर है. ठाकरे की लोकप्रियता का लाभ यद्यपि भाजपा को मिला लेकिन सेना के लोगों के उलटे-सीधे कामों से उसे परेशानी भी हुई.

पिछले पखवाड़े मराठी सांध्य दैनिक 'महानगर' के दफ्तर पर हमला करके सेना ने भाजपा के लिए एक और परेशानी खड़ी की. इस अखबार ने ठाकरे के पाक विरोधी अभियान की आलोचना की थी. फिर जब इस हमले का पत्रकारों ने विरोध किया तो चार पत्रकारों की बुरी तरह पिटाई कर दी गई. ठाकरे ने कहा कि यह हमला उनके सैनिकों ने नहीं किया. भाजपा ने इस हमले की निंदा तो की पर यह भी कहती रही कि इसमें शिव सेना के शामिल होने का प्रमाण नहीं है.

ठाकरे मानते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

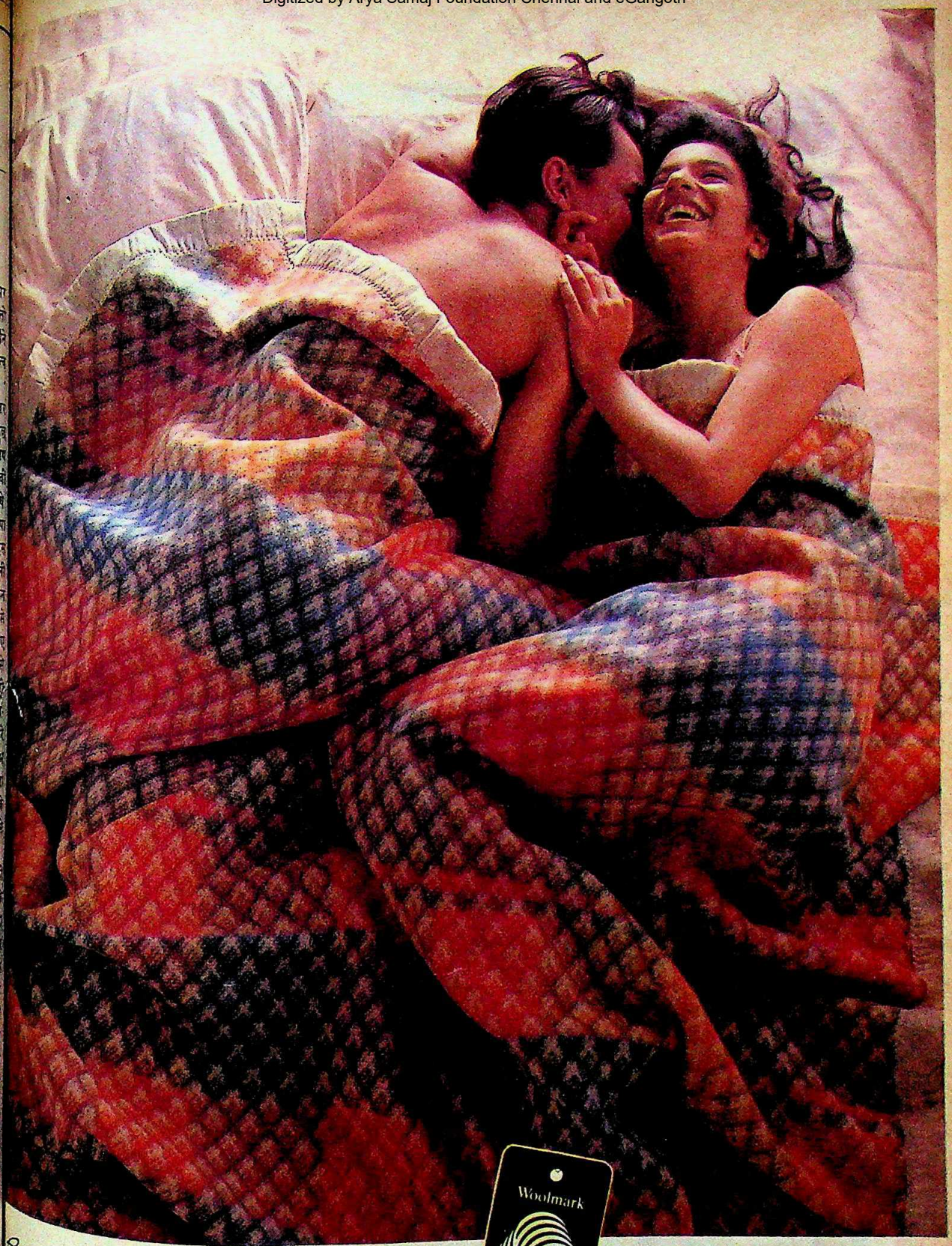

ज़िन्दगी को बिठाएं सर आँखों पर!

रेमण्ड
ब्लॅंकेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

MAA COMMUNICATIONS 1721-91 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब भारत की मांग २००,००० मेगावाट तक पहुंचेगी, तब यह बिजली आएगी कहां से ?

चित्र में जो विशाल गाँव आप देख रहे हैं, वह है भारत। और अग्रभाग में है, उत्तर दिल्ली ।

इस तरह की सभ्यता के लिए जितनी विद्युत्- शक्ति आवश्यक है, वह है एक चका-चौंध करने वाली २००,००० मेगावाट। यह आएगी कहां से ?

ABB ही एक ऐसा स्त्रोत है जिसे लगभग हर विकसित और विकासशील देश पहचानता है ।

उदाहरण के लिए ब्रज़ील ने, एमेज़ॉन पर संसार की सबसे बड़ी हाइड्रो-इलेक्ट्रिक परियोजना का काम ABB को ही सौंपा है ।

इसी तरह के निवेदन लैटिन अमरीका, अफ्रीका और एशिया से भी प्राप्त हुए हैं ।

अन्ता, राजस्थान में, ABB ने ४३० मेगावाट के 'कम्बाइन्ड साइकल' पावर संयंत्र की स्थापना की है जिसमें तीन गैस टरबाइनें हैं । प्रत्येक टरबाइन ९८ मेगावाट की है । इस संयंत्र में, अतिरिक्त विद्युत्-शक्ति उत्पादन हेतु वेस्ट हीट रिकवरी प्रणाली भी है ।

तालचेर, उडीसा में स्थापित होने वाले पावर संयंत्र में दो ५०० मेगावाट के स्टीम टरबाइन जेनरेटर होंगे । विंध्याचल, मध्य प्रदेश तथा रिहन्द, उत्तर प्रदेश में ABB ने ऐसी एचवीडीसी प्रणालियां भी स्थापित की हैं जो भारत में अपनी किस्म की पहली हैं । इसके अलावा ABB ने, भारत भर में मीडियम व एक्सट्रा हाई वोल्टेज सर्किट ब्रेकर, कैपेसिटर बैंक, SCADA और रीले सुरक्षा प्रणालियां, विशाल संख्या में सप्लाइ किए हैं ।

यह तो सिर्फ़ शुरुआत है ।

और इस बात का सबूत भी, कि जब भारत २१ वीं शताब्दी के लिए तैयारी कर रहा है तो संसार की सबसे विशाल और आधुनिक इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग कम्पनी, क्या कुछ कर दिखा सकती है।

इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग में विश्व अग्रणी

- विद्युत्-शक्ति उत्पादन
- विद्युत्-शक्ति संचरण
- विद्युत् -शक्ति वितरण
- औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक्स
- औद्योगिक उपकरण व प्रणालियां
- परिवहन
- पर्यावरण प्रणालियां

असेया ब्राउन बोवेरी लिमिटेड
संचार विभाग
सोना टावर्स,
७१, मिल्लर रोड,
बैंगलूर-५६० ०५२.

ABB
ASEA BROWN BOVERI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NASTY • NUOVO LOOK • TREND SETTER • MATCH MAKER SATINS • HI FASHIONS SUITINGS

dines

THE CHOICE OF LEADING FASHION HOUSES. INTERNATIO

UTHORISED DEALERS: **LUDHIANA:** B.K. SONS • LIBAS • F.C. SONS • CHEAP cloth Kangri Collection, Haridwar
ALKOT HOUSE • **SIMLA:** RAJPAL BROS. • TANDON CLOTH HOUSE • **KARNAL:** BOMBAY SILK STORES • **ALWAR:** FANCY CLOTH HOUSE • **SIKAR:** M
TORES.

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाजपा-शिवसेना गठजोड़ को खतरा नहीं है. उन्होंने कहा, "हमारे बीच कुछ मतभेद भले हों पर कोई गंभीर समस्या नहीं है." लेकिन अब यह मतभेद हर जगह दिखने लगा है. मुंबई विश्वविद्यालय में छात्र संघ के चुनाव के पहले विद्यार्थी परिषद के लड़कों को भारतीय विद्यार्थी सेना के लोगों ने पीटा, जिसका नेतृत्व ठाकरे के भतीजे राज ठाकरे करते हैं. झगड़े का लाभ उठाते हुए इंका से जुड़े छात्र संगठन ने चुनाव जीत लिया. औरंगाबाद में एक ही दिन दोनों पार्टियों ने महंगाई के सवाल पर अलग-अलग रैलियां आयोजित कीं.

लेकिन इस बात में संदेह नहीं कि गठबंधन में शिवसेना ही अधिक ताकतवर है. विधान भवन में ठाकरे के लोगों की ही चलती है. विधानसभा में मनोहर जोशी विपक्ष के नेता हैं, तो विधान परिषद में प्रमोद नवलकर. मुंबई का महापौर पद भी सेना के पास है. सेना के मजदूर संगठन भारतीय कामगार सेना की ताकत बढ़ती जा रही है. अस्सी के दशक में मिल मजदूरों की ऐतिहासिक हड़ताल की असफलता के बाद से उसकी लोकप्रियता ज्यादा तेजी से बढ़ी है. और पूर्व महापौर सुधीर जोशी के नेतृत्व में सक्रिय 200 'स्थानीय लोक अधिकार समितियां' सेना के लोकप्रिय नारे—महाराष्ट्र में महाराष्ट्रियों को रोजगार—को लागू कर रही हैं.

अपने उग्र भाषणों से, जिनमें जगह-जगह हास्य-व्यंग का पुट होता है, बाल ठाकरे ही अभी सबसे ज्यादा प्रभावी नजर आते हैं. और संगठन पर उनका असर इतना जबरदस्त है कि बड़े से बड़ा विवाद भी उनकी एक धमकी से खत्म हो जाता है. छगन भुजबल और मनोहर जोशी का झगड़ा उनको निष्कासित करने की एक धमकी से ही निबट गया. ऐसे में सेना के महत्वाकांक्षी नेताओं को भी चुपचाप राज ठाकरे को नेता और संभावित उत्तराधिकारी के रूप में उभरते देखना पड़ रहा है.

ठाकरे का असर और उनके सैनिकों का आतंक इतना अधिक है कि जिस किसी के खिलाफ इस सेना के सर्वेसर्वा कुछ बोल बैठते हैं वह अपनी सफाई पेश करने के लिए उनके बांद्रा स्थित निवास पर पहुंच जाता है. पिछले पखवाड़े जब उन्होंने शिवाजी पार्क रैली में एक पाकिस्तानी लड़की को हीरोइन बनाने के लिए देव आनंद की आलोचना की तो वे अपनी सफाई देने के लिए उनके घर गए. इसके कुछ समय बाद ही पाकिस्तानी क्रिकेटर से हिंदी सिनेमा में हीरो बने मोहसिन खां की कार पर हमला हुआ. बाद में उन्हें हिंदी फिल्मों में काम जारी रखने के लिए ठाकरे से अनुमति लेनी पड़ी.

साफ है कि भाजपा के नेतागण ठाकरे के तेवरों से भले ही कसमसाते रहें पर उनका साथ जीवन-मरण तक निभाने के लिए उसने फैसला कर रखा है, बशर्ते कि यह साथ खुद-ब-खुद न टूट जाए. ■

हेमंत पिठवा

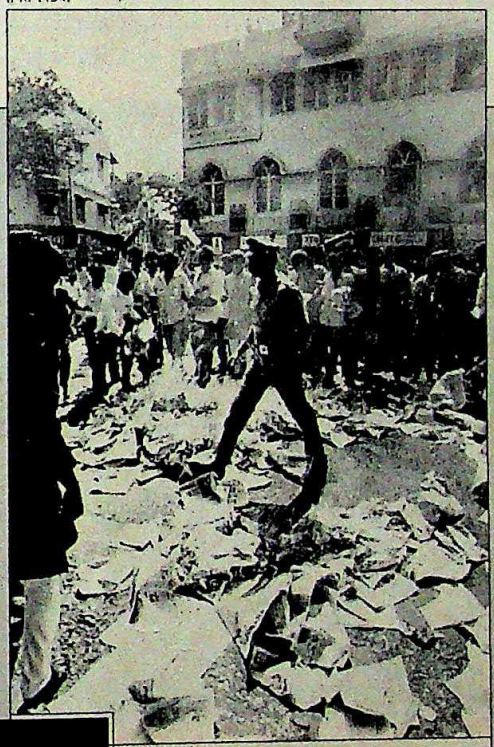

'महानगर' की प्रतियां जलाते हुए शिवसेना कार्यकर्ता; (इनसेट) वागले

'महानगर'-शिवसेना

'केंचुए' और 'शेर' की जंग

मराठी सांध्य दैनिक 'महानगर' के संपादक निखिल वागले ने इमरजेंसी में कॉलेज छोड़कर जेपी आंदोलन में हिस्सा लिया था. और हाल में अपने अखबार के खिलाफ शिवसेना के हमलों के जवाब में 'महानगर' में 'हम संघर्ष करेंगे' की घोषणा करके उन्होंने अपना वही रुख दिखाया.

लेकिन 32 वर्षीय वागले को अचानक मिली इस ख्याति की कीमत भी चुकानी पड़ रही है. भारत-पाकिस्तान क्रिकेट शृंखला के खिलाफ ठाकरे के अभियान की उनकी आलोचना के तुरंत बाद बदमाशों के एक गिरोह ने 'महानगर' के दफ्तर में तोड़-फोड़ की, और दो उप-संपादकों को घायल कर दिया. कुछ दिन बाद चार पत्रकारों की बुरी तरह पिटाई की गई.

ठाकरे ने खंडन किया कि हमला शिव सैनिकों ने किया था पर इस अखबार से उनकी नाराजगी छिपी नहीं है. इसकी प्रतियां सार्वजनिक तौर पर जलाई गईं और विक्रेताओं को इसे न बेचने को कहा गया. ठाकरे ने कहा कि यह अखबार तो 'केंचुआ' भर है जिसे नमक डालकर मारा जा सकता है. इस पर वागले कहते हैं, "हमारा पाठक मुख्य रूप से उसी इलाके का है जहां सेना का अधिक असर है. ठाकरे नहीं चाहते कि उनकी पोल उनके ही शिष्यों के सामने खुले."

पिछले साल जनवरी में वागले द्वारा शुरू यह अखबार स्वतंत्र सोच वाला है. इसने कभी ठाकरे के तौर-तरीकों की आलोचना में कोताही नहीं की. लेकिन ठाकरे इसे अपना चरित्रहनन मानते हैं.

इन सबकी परवाह न करते हुए वागले कहते हैं कि 'महानगर' सेना के अभियान के दुष्प्रभाव से उबर गया है और फिर से लगभग पहले जितना ही बिकने लगा है. इसकी 1.08 लाख प्रतियां छपती हैं. पर वागले के 'केंचुए' और 'शेर' की लड़ाई की तो यह शुरुआत भर है.

—एम. रहमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन थाने

दिखाने के दांत

लालू सरकार के दावों के बावजूद हालात बुरे

—फरजंद अहमद

हरिजनों पर अत्याचार के लिए कुख्यात बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने पिछले माह नई दिल्ली में बड़ी शान से घोषणा की कि राज्य में इस तरह की वारदातों पर काफी हद तक काबू पा लिया गया है. लेकिन अगर वे अपनी पीठ खुद ही ठोंकना बंद करके असलियत को देखें तो स्थिति उलटी नजर आएगी.

अपराधियों की गिरफ्त में रहने वाले शहर गया में अगर वे आने का कष्ट करें तो उन्हें धूल-कालिख भरे मोटर-पुर्जों के ढेर के बीच एक छोटी तख्ती नजर आएगी कि 'हरिजन थाना' इधर है. 'हरिजन हितैषी' लालू सरकार द्वारा विशेष रूप से बनवाया गया यह रामपुर हरिजन थाना असल में किसी भी आम थाने जैसा ही है.

'हरिजन थाना कहां है?' इस सवाल पर रामपुर थाने का एक सिपाही बताता है, "इस कमरे में हैं?" यह पूछने पर कि 'इस एक कमरे में पूरा थाना है?' वह जवाब देता है, "सर, यह कमरा टाउन थाना के इंस्पेक्टर साहब का है. हरिजन थाना एक आलमारी में चलता है और कोई मामला आता है तो इसी मेज पर दरोगा साहब भी बैठ जाते हैं." 'हरिजन थाना के दरोगा जी कहां हैं?' "एस.पी. साहब ने दरोगा जी को सस्पेंड कर दिया है. अभी तो कोई दरोगा नहीं है."

यह एक अधिकारी, एक आलमारी वाला हरिजन थाना तीन जिलों—गया, औरंगाबाद और नवादा—के लिए है. गरीब हरिजनों पर जमींदारों के अत्याचार के लिए कुख्यात इन तीन जिलों का अकेला थाना होने के कारण तो यहां शिकायतों की बाढ़ होनी चाहिए पर ऐसा है नहीं. पिछले साल यहां सिर्फ 11 शिकायतें आई थीं और इस साल सिर्फ दो.

गया से 20 किमी पूरब में जहानाबाद जिले के टेहटा में एक हरिजन पुलिस चौकी है. बार-बार हरिजन नरसंहार के लिए पूरे देश में बदनाम इस जिले की चौकी मुख्य सड़क पर ही है. पिछले पखवाड़े इसके सामने खून से सराबोर एक आदमी कराह रहा था और अनेक हरिजन औरतें चौकी पर मौजूद सिपाही से मामला दर्ज करने को कह रही थीं. यह आदमी पास के गांव का दुकानदार था और नशे में उसने इन औरतों से छेड़छाड़ की थी. इन औरतों ने उसकी पिटाई कर दी थी. हवलदार रामबचन तिवारी ने मामला दर्ज नहीं किया. उनका कहना था, "यह हरिजन थाना नहीं है."

उत्तर बिहार के वैशाली जिले के हाजीपुर में भी एक हरिजन थाना है जिसके अधीन नौ जिले हैं. जिलाधिकारी रामजीत प्रसाद इस थाने का हाल देखने पहुंचे तो पाया कि इसके अधिकांश हिस्से को पुलिस के लोगों ने अपने घर और रसोई में [illegible] दिया है. इसमें न फोन है, न गाड़ी, न [illegible] और सुविधा.

राज्य में ये कुल 11 हरिजन थाने [illegible] पहले जनता पार्टी सरकार ने बड़े [illegible] शराबे के साथ बनाए थे. लेकिन आज [illegible] दयनीय अवस्था में हैं. जयप्रकाश आंदोलन से जुड़े लोगों के सामाजिक संगठन, मुक्ति संघर्ष वाहिनी के कार्यकर्ता [illegible] कहते हैं, "ये थाने असल में कागजी [illegible] भर बनकर रह गए हैं." वामपंथी [illegible] पीपुल्स फ्रंट (आईपीएफ) के प्रदेश [illegible]

सभी फोटो: कृष्ण मुरारी किशन

टेहटा में हरिजन थाने के सामने बेहाल लोग

तालिका: अशोक गुप्ता

ज्यादतियों के विवरण

वर्ष	हत्या	बला-त्कार	संगीन मारपीट	आगजनी	कुल संख्या
1988	71	77	89	129	902
1989	63	60	96	92	779
1990	49	68	62	50	656
1991 (जून तक)	15	25	15	23	179

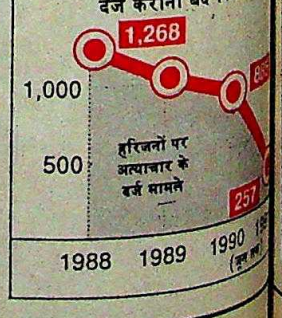

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...देव यादव इन थानों को 'फरेब' और ...मंत्री के दावों को लोगों की आंखों में ...झोंकना बताते हैं. वे बताते हैं कि लालू ...के मुख्यमंत्री बनने के बाद से हरिजन ...हार की 25 घटनाएं हो चुकी हैं जिनमें ...से अधिक हरिजनों समेत गरीब वर्ग के ...लोगों की हत्या हुई है.

वे बताते हैं कि इन नरसंहारों के सभी ...अभियुक्त छुट्टा घूम रहे हैं. आईपीएफ ...तिसखोरा नरसंहार का षड्यंत्र रचने का ...जिस कांग्रेसी नेता रामलखन सिंह ...पर लगाया था, उन्हें जनता दल में ...शामिल कर लिया गया है. उनके बदनाम ...प्रकाश चंद्र को जनता दल की तरफ से ...विधान परिषद में भेजा गया है.

1977 की जनता पार्टी सरकार बनने के ...बाद से बढ़े हरिजन उत्पीड़न के बाद तीन ...हरिजन थानों का गठन किया गया था. बाद ...में जगन्नाथ मिश्र सरकार ने आठ और थाने ...बना दिए. पर असलियत में ये थाने मामला ...दर्ज भर करने की हैसियत वाले ही हैं. ये ...ऐसे मामलों को कार्रवाई के लिए 'ऊपर' भेज देते हैं. लेकिन यहां दर्ज होने वाले अधिकांश मामले जमीन विवाद से संबंधित होते हैं. जहानाबाद की करौना हरिजन चौकी के सामने बैठे हरिजन रवींद्र प्रसाद कहते हैं कि चौकी में 'सलामी' न देने के चलते उनका मामला दर्ज नहीं हुआ है. उन्हें जमींदार उनकी जमीन से बेदखल करने की धमकी 1988 से दे रहा है.

पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र कहते हैं, "जनता दल शासन के पिछले 18 महीनों में हरिजनों की सुरक्षा पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है. हरिजन थाने तो बस ढांचा मात्र रह गए हैं. इनका गठन यह सोचकर किया गया था कि इससे हरिजनों को लगेगा कि उनके लिए भी पुलिस है."

जहानाबाद में आईपीएफ नेता वसीम अहमद कहते हैं कि हाल में ही टेहटा हरिजन थाने का लोगों ने घेराव किया था क्योंकि इसके दरोगा ने खुद ही एक हरिजन रिक्शावाले की पिटाई की थी. जुलाई में अरवल के निकट मेहदियां में कुछ जमींदारों ने हरिजनों के घर जला दिए थे तब उनकी रिपोर्ट भी नहीं दर्ज की गई.

लालू यादव आज दावा कर रहे हैं कि हरिजन उत्पीड़न के मामले घटे हैं उसकी वजह शायद यही है. बिहार सरकार मानती है कि हरिजन थानों की चुस्ती के चलते ही हरिजनों के खिलाफ अत्याचार के मामले कम हो रहे हैं (देखें सरकारी चार्ट). हरिजन सेल के डीआईजी वारिस हयात खां के अनुसार यह व्यवस्था इतनी प्रभावी साबित हुई है कि सरकार ने और 14 हरिजन थाने खोलने का फैसला किया है. पुराने और इन नए थानों के मामलों को निबटाने के लिए सरकार सभी जिलों में विशेष अदालतें बनाएगी. खां का दावा है कि हरिजन सेल हर महीने अपने काम की समीक्षा करता है, हरिजनों के उत्पीड़न वाले विशेष इलाकों की पहचान करता है और उपयुक्त कार्रवाई करता है. वे कहते हैं कि 1988 में हरिजनों के खिलाफ अत्याचार के 1268 मामले दर्ज किए गए थे जबकि इस साल जून तक सिर्फ 257 मामले ही दर्ज हुए. उनका मानना है कि प्रशासनिक चुस्ती से तो यह कमी आ गई है पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति सुधारने में उनका सेल कुछ नहीं कर सकता.

विधान परिषद में इंका के नेता कमलनाथ सिंह ठाकुर कहते हैं कि ये थाने हरिजनों को सुरक्षा भले न दे रहे हों पर एक मतलब तो पूरा कर ही रहे हैं. वह यह कि कुछ जमींदारों के उकसावे पर पुलिस उनके प्रतिद्वंद्वी जमींदारों को झूठे मामलों में फंसा देती है. गांव में किसी से वैर निकालने के लिए जमींदार अपने हरिजन मजदूर से ऐसे मामले दर्ज करा देते हैं. ऐसे मामले में जमानत भी मुश्किल से होती है.

हरिजनों को विशेष सुरक्षा देने के उद्देश्य से शुरू की गई यह योजना एक अन्य कारण से भी बेमानी हो गई है. इन थानों में पुलिस के वे अधिकारी या जवान ही भेजे जाते हैं जिन्हें या तो निकम्मा मान लिया जाता है या जो अपने बॉस की कुदृष्टि के शिकार हो जाते हैं. उनके लिए इन थानों में नियुक्ति 'सजा' है. हरिजन सेल के डीआईजी भी मानते हैं कि ऐसी भावना तो है पर यह सचाई नहीं है. ऐसी भावना से ऐसे लोगों के मन में जिम्मेवारी के प्रति उपेक्षा का भाव पैदा होता है. फिर साधनों का अभाव उनके हाथ बांध देता है.

स्थिति यह है कि सरकार एक तरफ हरिजनों के खिलाफ अत्याचार कम होने का दावा करती है और नए थाने खोलने की योजना बना रही है, दूसरी तरफ 14 साल पुराना यह प्रयोग अपनी विश्वसनीयता और उपयोगिता खोता जा रहा है. ■

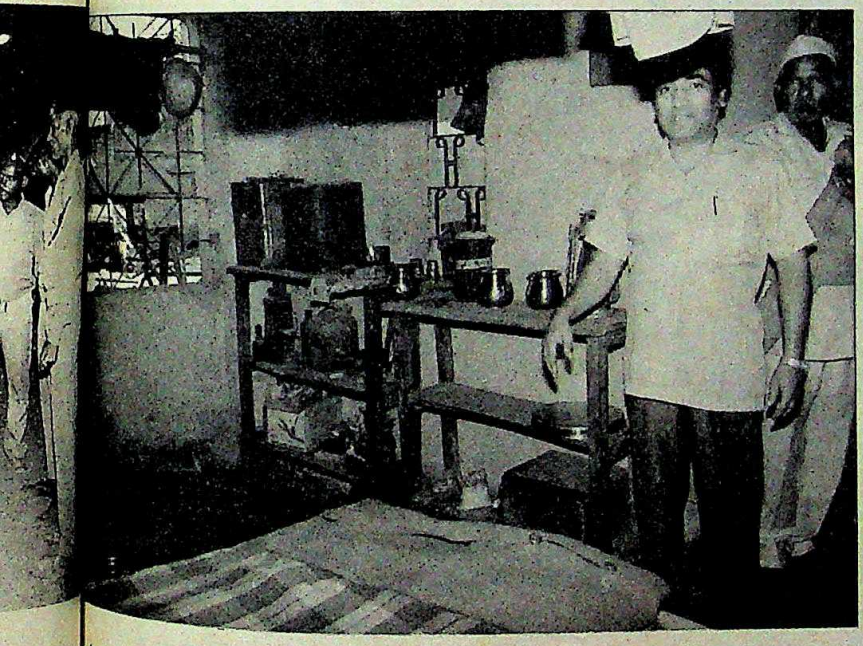

'बांके सिपैहा' का कमरा नहीं, यह हरिजन थाना है

प्रशासनिक चुस्ती के कारण हरिजन अत्याचार के मामलों में तो कमी आई है पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तो हम नहीं सुधार सकते"

वारिस हयात खां
हरिजन सेल के डीआईजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब

सेवा पर संघर्ष

फिर क्षुद्र राजनीति का खेल

लगता है स्वर्णमंदिर में इतिहास खुद को दोहरा रहा है. 29 अक्तूबर को श्रद्धालु एक बार फिर अकाल तखत की कार सेवा के लिए मंदिर परिसर में आ जुटे. उन्हें पता भी नहीं चला कि मंदिर के गिर्द चलने वाली क्षुद्र राजनीति का एक और अध्याय पंजाब के दुखद इतिहास में जुड़ रहा है.

अकाल तखत के पुनर्निर्माण से तल्ख यादों की कई कड़ियां ताजा हो जाती हैं जिनसे न तो नेताओं और केंद्र ने, न ही उग्रवादियों ने कोई सबक लिया है. इस बार भी उग्रवादी संगठन अपनी हैसियत और साख बढ़ाने की होड़ में इस धार्मिक पीठ का उपयोग कर रहे हैं.

सबसे पहले दमदमी टकसाल के प्रमुख, बाबा ठाकर सिंह ने सिखों का आह्वान किया कि वे केंद्र द्वारा दूषित अकाल तखत की पवित्रता बहाल करने के लिए स्वर्णमंदिर में जुटें. इसके तुरंत बाद शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अकाल तखत के पुनर्निर्माण पर अपना अधिकार जताया. फिर, उग्रवादी संगठन बब्बर खालसा भी यह धमकी देते हुए मैदान में कूद पड़ा कि दमदमी टकसाल को कार सेवा की इजाजत दी गई तो खून-खराबा हो सकता है. लेकिन पंथक कमेटी (सोहन सिंह) ने टकराव टालने की अपील की.

आखिरकार, प्रबंधक कमेटी बाबा ठाकर सिंह समेत पांच संतों को कार सेवा की अगुआई सौंपने पर राजी हुई और टकराव टल गया. तब प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष बलदेव सिंह सिबिया ने लोगों को भरोसा दिलाया कि ये संत कमेटी का ही प्रतिनिधित्व करेंगे और उसकी देखरेख में काम करेंगे. उसके बाद उन्हें अध्यक्ष पद से हटा दिया गया. उन्होंने यह दावा भी किया था कि सुबह नौ बजे से शाम पांच बजे तक ही कार सेवा चलेगी और परिसर में किसी कार सेवक को रात बिताने की इजाजत नहीं होगी. दमदमी टकसाल इस बात पर राजी हो गई.

लेकिन काम शुरू होने के बाद किसी संदेह की गुंजाइश नहीं रह गई कि कार सेवा दमदमी टकसाल ही कर रही थी. दूसरे चार संत कहीं नजर नहीं आए. पहले ही दिन आचार संहिता का उल्लंघन हुआ. विभिन्न नेताओं के समर्थक हथियार लेकर परिसर में दाखिल हुए. दमदमी टकसाल के मुख्य प्रवक्ता मोहकम सिंह का कहना था कि रात में न रुकने की शर्त भी अपरिहार्य नहीं है. उन्होंने कहा कि 1986 के सरबत खालसा ने उन्हें जो काम सौंपा था उसी को फिर शुरू कर रहे हैं. उस समय, तत्कालीन गृहमंत्री बूटा सिंह की देखरेख में जल्दबाजी में बनाए गए अकाल तखत को जमींदोज कर दिया गया था. तब भी कमान उग्रवादियों के हाथ थी.

बाद में 1988 में पहल हथियाने के लिए केंद्र की इंका सरकार ने अकाल तखत के तत्कालीन जत्थेदार जसबीर सिंह रोडे को रिहा कर दिया था और परिसर में उग्रवादियों को इस आशा में जुटने दिया था कि रोडे विभिन्न उग्रवादी गुटों को बातचीत की मेज तक लाने में सफल होंगे. इसके विपरीत उग्रवादियों ने परिसर को अपनी पनाहगाह बना डाला. आखिरकार, उग्रवादियों को बाहर करने के लिए केंद्र ने एनएसजी के कमांडो भेजे.

इस समय भी खुफिया एजेंसियां दमदमी टकसाल को बढ़ावा देकर आग से खेल रही हैं. यह खुला रहस्य है कि जबरन धन उगाही के मामलों में लिप्त मोहकम को पकड़ा गया तो फिरोजपुर के एसएसपी को उसे छोड़ देने को कहा गया.

फिलहाल दमदमी टकसाल बढ़त लिए हुए दिखती है. कार सेवा में अहम भूमिका के लिए इसे ताकत, सम्मान और पैसा हासिल हो रहा है. दरअसल यही उसका मुख्य मकसद है, न कि अकाल तखत का पुनर्निर्माण. पहले दिन तो 8,000 श्रद्धालु उसके आह्वान पर जुटे, पर बाद में थोड़े ही रह गए क्योंकि अकाल तखत की इमारत लगभग बन चुकी है. संगमरमर की शिलाएं लगाने के लिए दरअसल अब वहां राजमिस्त्री भी आ गए हैं.

उधर, खुफिया एजेंसियां दमदमी टकसाल को सिख जनता में सम्मान दिलाने के लिए उसे तरजीह दे रही हैं ताकि राज्य में 25 फरवरी को संभावित चुनावों में वह काम आ सके. टकसाल रद्द हुए पिछले चुनाव में भी हिस्सा ले रही थी.

लेकिन प्रतिद्वंद्वी उग्रवादी गुट दमदमी टकसाल को जनता में पैठ नहीं बनाने देंगे. और टकसाल उन्हें परिसर में दाखिल होने या उसका उपयोग करने से रोक नहीं पाएगी. इसके अलावा शायद दमदमी टकसाल भी भिंडरांवाले के नक्शेकदम पर बाद में पलट जाए.

बहरहाल, इस बार उग्रवादियों के लिए मंदिर परिसर को पनाहगाह बना लेना आसान नहीं होगा. ऑपरेशन ब्लैक थंडर के बाद सरकार ने परिक्रमा के गिर्द बने कमरों के दरवाजे निकाल दिए हैं. लेकिन जैसा कि पंजाब के बुजुर्ग भाकपा नेता सतपाल डांग कहते हैं, "यह कोई असंभव काम नहीं है."

इसके अलावा, पुनर्निर्माण की कोई नियत तिथि नहीं है और काम किस रफ्तार से हो, इसकी सुई तो उग्रवादियों के हाथ ही है. केंद्रीय एजेंसियों को अब यह दांव उलटा पड़ सकता है और केंद्र की भी यह शायद आखिरी नाकामी नहीं होगी.

—**हरिंदर बावेजा**, अमृतसर और चंडीगढ़ से

अकाल तखत में पुनर्निर्माण कार्य

प्रमोद पुष्करणा

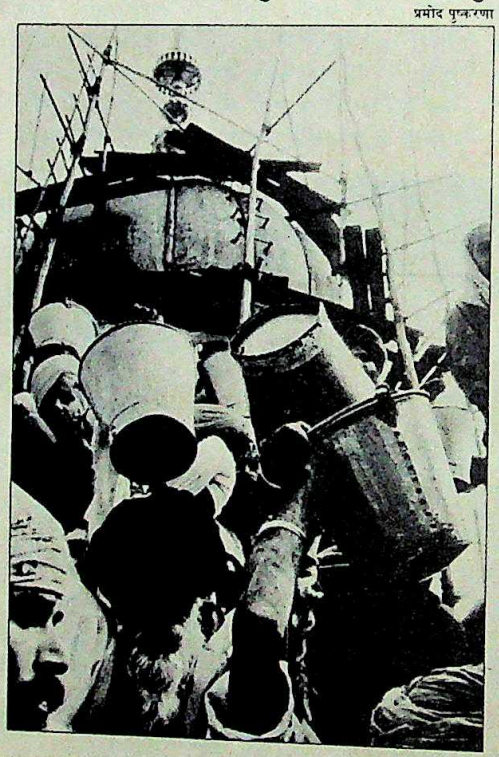

अकाल तखत की कार सेवा के बहाने उग्रवादी गुट ताकत, सम्मान और पैसा बढ़ाने की जुगत में हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

आक्रामक रवैया

हड़ताली इंजीनियरों और सरकार दोनों का रुख अड़ियल

यह राज्य में सरकारी कर्मचारियों के एक वर्ग की अब तक की सबसे लंबी हड़ताल है. आठ हजार इंजीनियरों ने, जिनमें मुख्य इंजीनियर स्तर तक के अधिकारी शामिल हैं, पिछले तीन महीने से काम बंद कर रखा है. और अब लगता है कि यह देश की भी सबसे लंबी हड़ताल बनने की राह पर चल पड़ी है क्योंकि राज्य सरकार ने बिहार अभियंत्रण सेवा संघ (बीईएसए) के साथ पखवाड़े सड़कों पर उतर आए. उन्होंने ऐसी तख्तियां उठा रखी थीं जिन पर हथकड़ी का चित्र बना था. बीईएसए के एक प्रतिनिधि ने कहा, "हम आत्मसम्मान की लड़ाई लड़ रहे हैं."

इंजीनियरों की मुख्य मांगें हैं—भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) अधिकारियों के समकक्ष वेतन व सुविधाएं, उन्नति में गतिरोध को रोकने के लिए समयबद्ध प्रोन्नति और कैरियर में सबके साथ न्याय. उनका कहना है कि ये मांगें इसलिए पूरी नहीं की गईं क्योंकि आईएएस लॉबी उन्हें अपना अधीनस्थ बनाए रखने के लिए कमर कसे हुए है और सरकार पूरी तरह उनके दबाव में है. इसके सबूत के तौर पर वे बताते हैं कि निर्माण संबंधित विभागों में इंजीनियरों को सचिव नियुक्त करने की उनकी मांग मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने 7 अक्तूबर को मान ली थी, लेकिन मुख्य सचिव अरुण पाठक ने इसे नामंजूर कर दिया. एक सरकारी प्रवक्ता इसकी कैफियत देते हैं, "इंजीनियरों को यह समझ लेना चाहिए कि सभी सेवाओं की अपनी सीमाएं और शर्तें होती हैं. और बीईएसए की मांगें मंजूर करने से पूरा प्रशासनिक ढांचा गड़बड़ा जाएगा."

बीईएसए की दूसरी चिंता कैरियर में ठहराव की है. 1966 और 1968 के बाद इंजीनियरों की प्रोन्नति रुकी हुई है. बीईएसए ने समयबद्ध वेतनमान का सुझाव दिया था जिससे सरकारी कोष पर 1.40

इन्द्र मुरारी किशन

कोई समझौता करने के बदले आक्रामक रुख अपना लिया है. इससे इंजीनियरों के आंदोलन ने और भी उग्र रूप अख्तियार कर लिया.

सरकार ने बीईएसए के दो पदाधिकारियों को मुअत्तल कर दिया. दूसरी तरफ पुलिस ने हमला करने के आरोप में दो दूसरे पदाधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें हथकड़ी पहनाकर अपमानित किया. इससे हड़ताली इंजीनियर भड़क उठे और पिछले

पटना में इंजीनियरों की भूख हड़ताल: मांग पर अटल

इंजीनियरों की मांग चाहे जितनी जायज हो, कीमत राज्य को पैसे और विकास कार्यों से अदा करनी पड़ रही है

करोड़ रु. का अतिरिक्त भार पड़ेगा. लेकिन सरकार का कहना है कि यह रकम 200 करोड़ रु. के करीब बैठेगी क्योंकि दूसरे विभागों के लोग ऐसी ही मांग कर बैठेंगे. मुख्यमंत्री के एक सहायक कहते हैं, "पैसे की तंगी की वजह से सरकार को कर्मचारियों को वेतन देने में ही दिक्कतें आ रही हैं. ये मांगें मान लेने से तो बोझ और बढ़ जाएगा."

इसी तरह, बीईएसए का कहना है कि इंजीनियरों के कम-से-कम 800 पद खाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़े हैं. इनमें इंजीनियर-इन-चीफ के चार, चीफ इंजीनियर के 19, सुपरिंटेंडिंग इंजीनियर के 36, एक्जीक्यूटिव इंजीनियर के 240 और सहायक इंजीनियर के 500 पद शामिल हैं. इन पदों को इसलिए रिक्त छोड़ा हुआ है क्योंकि सत्ता के दलालों ने इनकी कीमत तय की हुई है.

सरकारी सूत्रों का कहना है कि ये समस्याएं इसलिए खड़ी हुई, क्योंकि सार्वजनिक निर्माण विभागों में कर्मचारी जरूरत से ज्यादा हैं. इससे सरकारी कोष पर खर्च बहुत बढ़ जाता है, लेकिन विकास कार्य नहीं हो पाता. जल संसाधनमंत्री जगतानंद सिंह उदाहरण देते हैं कि सिंचाई विभाग की व्यय योजना पिछले साल 400 करोड़ रु. (25 फीसदी) थी. लेकिन इस वर्ष यह खर्च घटाकर 145 करोड़ रु. कर दिया गया, और दफ्तरी खर्च अब भी 100 करोड़ रु. ही है, यानी 68 फीसदी. ऐसी अनोखी मिसाल दुनिया के और किसी भी देश में नहीं मिलती.

सचिवालय सूत्रों के अनुसार बीईएसए की जिस मांग से सरकार बौखला उठी है वह है—डॉक्टरों की तरह 'निजी प्रैक्टिस' करने की इजाजत तथा 10 वर्ष की नौकरी के बाद स्वैच्छिक रिटायरमेंट और वेतन का 50 फीसदी पेंशन. राज्य के एक वरिष्ठ मंत्री कहते हैं, "इस मांग से इंजीनियरों, निजी भवन निर्माताओं और ठेकेदारों के गठबंधन की ही पुष्टि होती है."

बहरहाल, इंजीनियरों की मांग चाहे जितनी जायज हो, कीमत राज्य को ही पैसे और विकास कार्यों दोनों के लिहाज से अदा करनी पड़ रही है. बीईएसए के महासचिव रवींद्र कुमार सिन्हा राज्य के घाटे को 3,000 करोड़ रु. आंकते हैं. इसका नतीजा यह हुआ कि नहरों में पानी न छोड़े जाने से खरीफ और अब रबी की फसल को भारी नुकसान हुआ है, बारिश और बाढ़ के कारण क्षतिग्रस्त बांधों और नहरों की मरम्मत अभी तक नहीं हो पाई है, सुवर्णरेखा और गंगा पुल परियोजनाओं का काम धीमा हो गया है.

जगतानंद सिंह राज्य को हुए घाटे का तो खंडन करते हैं पर वे बीईएसए के नेताओं पर माफिया सरगनाओं की बोली बोलने का आरोप लगाते हैं और कहते हैं कि वे अपनी 'नाजायज' मांगों के लिए बिहार में विकास अवरुद्ध करके 'गौरवान्वित' हो रहे हैं.

उधर, मुख्यमंत्री लालू यादव भी इंजीनियरों की लंबी हड़ताल को नजरअंदाज कर रहे हैं. सो, लगता है कि उनमें और सरकार में सुलह की संभावना और कम हो गई है.

—फरजंद अहमद

तस्कर वीरप्पन

खूनी मुहिम

जांच अधिकारी की हत्या

चंदन की लकड़ियों के कुख्यात तस्कर वीरप्पन को धर-दबोचने की मुहिम तब खौफनाक मोड़ पर पहुंच गई जब उसके पीछे लगे अधिकारी की हत्या वीरप्पन के गांव गोपीनाथम के निकट कर दी गई.

क्षेत्रीय वन अधिकारी और वीरप्पन को पकड़ने के लिए कर्नाटक सरकार द्वारा गठित कार्यदल के नेता पी. श्रीनिबास का गोलियों से बिंधा शरीर मैसूर के नजदीक इंदीगणथा में पाया गया. उनका सिर धड़ से अलग पड़ा हुआ था और शरीर बुरी तरह जला हुआ था. पुलिस का कहना है कि वीरप्पन ने झांसा देकर श्रीनिवास को यह यकीन दिला दिया कि वह समर्पण कर देगा. इसी यकीन के साथ 18 महीने तक गोपीनाथम में डेरा डाले रहने वाले श्रीनिवास जब वीरप्पन के अड्डे पर गए तो एकदम निहत्थे थे. उन्हें भरोसा था कि वीरप्पन जरूर हथियार डाल देगा.

पिछले वर्ष 9 अप्रैल को वीरप्पन गिरोह द्वारा चार पुलिसकर्मियों की हत्या के शुबहे के बाद गठित कार्यदल की कार्रवाई शुरू में ही शिथिल पड़ गई क्योंकि अधिकारियों की शिकायत थी कि कोल्लगल के जंगलों में यही अभियान चला रहे तमिलनाडु के अधिकारियों के साथ उनका तालमेल नहीं हो पा रहा. यह सहयोग बहुत जरूरी है, क्योंकि वीरप्पन कर्नाटक और तमिलनाडु सीमा के दोनों ओर ही सक्रिय रहा है. वह चंदन की लकड़ी और हाथी दांत के अवैध व्यापार के जरिए करोड़ों रु. बटोर बैठा है. उसके गिरोह ने अधिकारियों और सूचना पहुंचाने वालों को मिलाकर 20 लोगों की कथित तौर पर हत्या की है.

श्रीनिवास की हत्या से वीरप्पन को पकड़ने के अभियान को गहरा धक्का लगा है. वनवासियों और ग्रामीणों के लिए चिकित्सा शिविर लगवाकर इस अधिकारी ने लोगों का भरोसा तो जीता ही था, पिछले एक वर्ष से सूचना पहुंचाने वालों का जाल भी फैला लिया था. वन उप-संरक्षक बी. के. सिंह, जिनके अधीन पहले कोल्लगल वन था, कहते हैं, "श्रीनिवास ने गोपीनाथम में सड़कें बनवाईं, एक मंदिर बनवाया. वे वहां के लोगों के साथ वालीबॉल खेलते थे. वे इन ग्रामीणों को वीरप्पन के खिलाफ करने में सफल हो गए थे." लेकिन उन्हें सबसे बड़ी सफलता गोपीनाथम से वीरप्पन को दी जाने वाली खाद्य सामग्री की आपूर्ति बंद करने में मिली थी.

वीरप्पन (दाएं); और उसकी तलाश में लगे पुलिसवाले

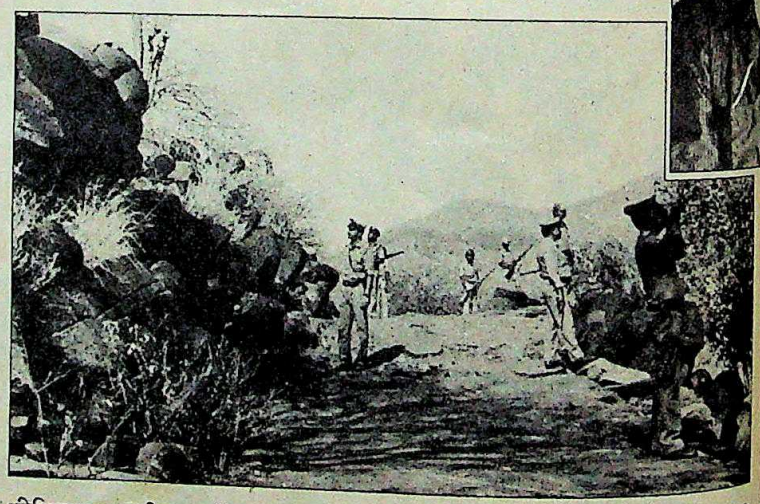

श्रीनिवास की हत्या की खबर जैसे ही वन और पुलिस अधिकारियों तक पहुंची, उन्होंने हड़बड़ाए से कोल्लगल के जंगलों की तरफ कूच किया. बहरहाल, कर्नाटक सरकार ने वीरप्पन को पकड़ने की कोशिशों से पीछे न हटने का फैसला किया है. राज्य के गृहमंत्री धर्म सिंह कहते हैं, "हम अपने प्रयास जारी रखेंगे." अब यह तो वक्त ही बताएगा कि उनके इस संकल्प से वीरप्पन को कुछ फर्क पड़ता है या नहीं.

—सरिता राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्र प्रदेश

झगड़ा जारी

निजाम की जमीन पर सरकारी नजर

हैदराबाद के निजाम के वंशज मुकर्रम जाह और सरकार के बीच ठनी हुई है. झगड़े की जड़ है—हैदराबाद की सीमा पर 300 एकड़ जमीन, जिस पर चिरान पैलेस है.

पिछले महीने आंध्र प्रदेश सरकार ने 25 अक्तूबर को जारी एक आदेश के सहारे इस जमीन पर आनन-फानन में कब्जा करने की कोशिश की, ताकि राज्य के स्थापना दिवस 1 नवंबर को मुख्यमंत्री जर्नादन रेड्डी इस स्थान पर प्रस्तावित डेक्कन नेशनल पार्क की आधारशिला रख सकें.

जाह और सरकार के बीच झड़पें जारी रही हैं. पहली बार 1981 में जाह ने सरकार से अपील की थी कि उनकी जमीन को शहरी भूमि हदबंदी कानून के दायरे से बाहर रखा जाए. इस कानून में यह छूट है कि 'वैहद तंगहाली' और 'सार्वजनिक हित' के मद्देनजर सरकार जमीन विशेष का अधिग्रहण रोक सकती है. इसी आधार पर

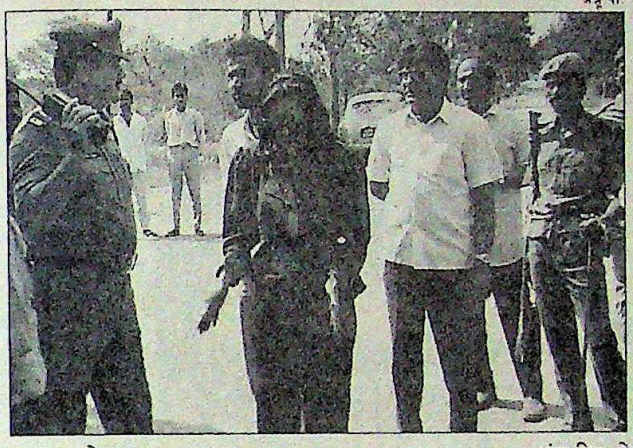

चिरान पैलेस में पुलिस

जाह ने छूट मांगी, जो 1983 में ठुकरा दी गई थी.

इस वर्ष मार्च में जाह ने दोबारा अपील की. 12 दिसंबर 1984 को तत्कालीन मुख्यमंत्री एन. भास्कर राव ने उक्त रियायत देने का फैसला इसलिए किया था कि जाह यह जमीन एक आप्रवासी भारतीय को बेचने पर राजी थे. यह आप्रवासी भारतीय वहां एक कॉलोनी बनाता जिससे सरकार को आमदनी होती.

लेकिन अधिकारियों का दावा है कि चिरान पैलेस संरक्षित संपत्ति के वैधानिक दायरे में नहीं है इसके अलावा, जाह किसी 'तंगहाली' में भी नहीं हैं बल्कि उनकी 20 लाख वर्ग मीटर जमीन शहरी भूमि हदबंदी सीमा से ज्यादा है. सचाई यह है कि जाह अपनी जमीन को बेचकर आयकर चुकता करना चाहते हैं, जो 20 करोड़ रु. से अधिक है.

इस बीच हाईकोर्ट की खंडपीठ ने चिरान पैलेस वाले क्षेत्र को राज्य सरकार को सौंपने का आदेश दिया है, लेकिन अंतिम फैसले से पहले वहां कोई निर्माण करने या कोई पेड़ गिराने से मनाही की है. अंतिम फैसला 24 नवंबर से शुरू होने वाली सुनवाई के बाद ही होगा.

—अमरनाथ के. मेनन

PHILIPS

एक उपाय जो वी.सी.आर.का 'हेड' बचाए

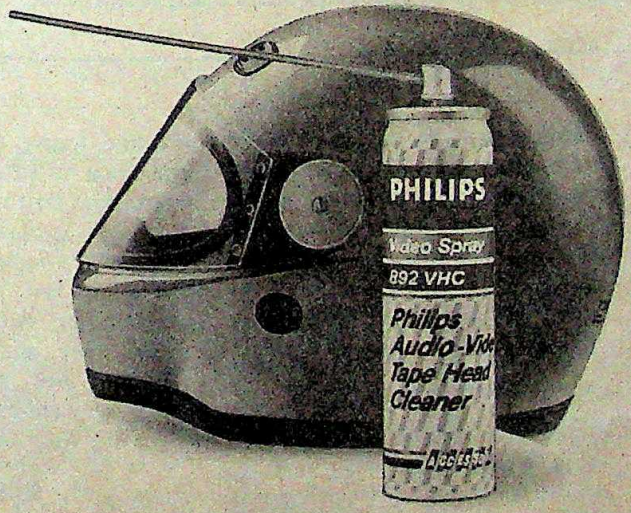

फिलिप्स वीडियो हेड क्लीनर.
जल्दी तेज़ असरकारक, पुर्जों को नुकसान न पहुँचाने वाला द्रव.
मैग्नेटिक टेप के कारण आपके वी.सी.आर या वी.सी.पी के हेड पर जमा होने वाले हानिकारक ऑक्साइड, धूल-गंदगी को प्रभावशाली ढंग से हटाने का सर्वोत्तम तरीका यही है.
यह धातु व प्लास्टिक के पुर्ज़ों को ज़रा भी नुकसान नहीं पहुँचाता - अंतर्राष्ट्रीय फ़ार्मूले से तैयार एकमात्र वीडियो हेड क्लीनर.
सर्वोत्तम परिणामों के लिए हफ़्ते में एक बार ज़रूर इस्तेमाल करें.
जब आपके वी.सी.आर के हेड व अन्य प्लास्टिक पुर्ज़ों को नुकसान का ज़ोखिम हो तो भला घटिया ब्रांडों को क्यों आज़माया जाए?

PHILIPS
AUDIO-VIDEO HEAD CLEANER
ACCESSORIES

क्योंकि 'हेड' बदलने से 'हेड' बचाना है आसान.

CLARION/B/P/441/124 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

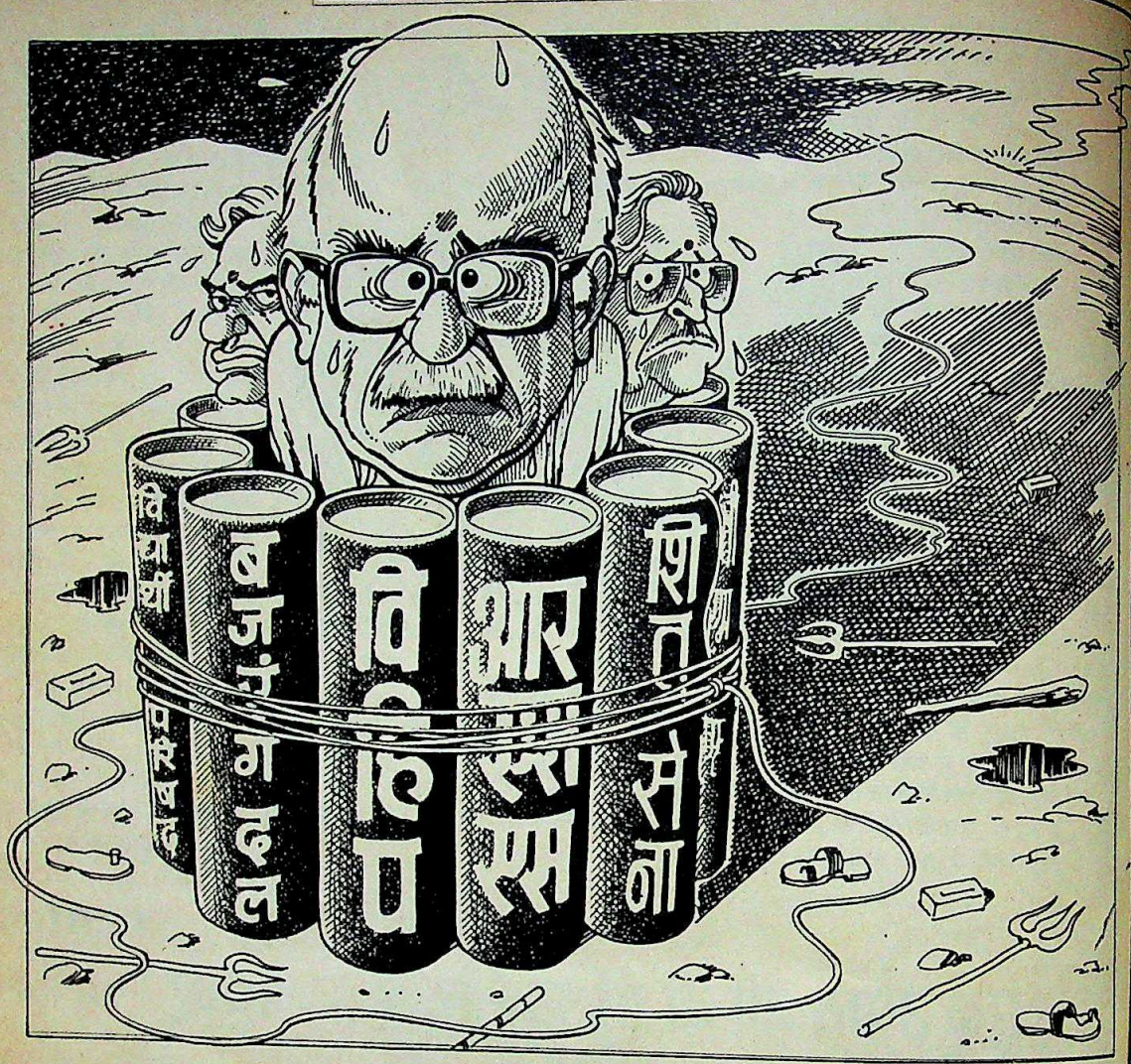

सनद रहे

नियुक्तः के.पी.एस. गिल को दूसरी बार पंजाब पुलिस का महानिदेशक नियुक्त किया गया है. वे फिलहाल सीआरपी के महानिदेशक हैं. गिल एक सख्त पुलिस अधिकारी माने जाते हैं, और उन्हें उग्रवाद से लड़ने में अनुभवी माना जाता है. उनकी नियुक्ति से राज्य में पुलिस का मनोबल बढ़ सकता है जो आतंकवाद से त्रस्त है.

निधनः संयुक्त राष्ट्र में भारत के पूर्व स्थायी प्रतिनिधि 75 वर्षीय **रिखी जयपाल** का. 1977-78 में उन्होंने सुरक्षा परिषद में काम किया और 1978 में दक्षिणी रोडेशिया पर सुरक्षा परिषद की समिति के अध्यक्ष भी रहे. संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव ने कहा, "उन्हें इज्जत के साथ याद किया जाता रहेगा."

निर्वाचितः 35 वर्षीय **डॉ. अशोक कुमार,** ब्रिटिश हाउस ऑफ कामंस के उपचुनाव में. इस तरह चुनाव जीतने वाले वे पहले एशियाई हैं. उनकी जीत इस अर्थ में भी महत्वपूर्ण है कि वे ब्रिटेन की श्वेत आबादी वाले क्षेत्र से जीते हैं. 'ब्रिटिश स्टील' में शोध वैज्ञानिक डॉ. अशोक लेबर पार्टी के दूसरे एशियाई सांसद कीथ वाज के साथ यह स्थान लेंगे.

नियुक्तः 56 वर्षीय **जे.एन. दीक्षित** नए विदेश सचिव. वे वर्तमान विदेश सचिव मुचकुंद दुबे का स्थान ले रहे हैं. दीक्षित फिलहाल पाकिस्तान में भारत के उच्चायुक्त हैं. इससे पहले वे अफगानिस्तान में राजदूत, और बांग्लादेश तथा श्रीलंका में भारत के उच्चायुक्त रह चुके हैं.

सम्मानितः सुप्रसिद्ध कन्नड लेखक **विनायक कृष्ण गोकक** को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. 1970 से 1984 के बीच साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें सम्मानित किया गया है. उन्होंने कविता, उपन्यास नाटक आदि लिखे. इनमें प्रमुख हैं 'नव्य कवितेगलु', 'द्यावा पृथ्वी' और 'भारत सिंधु रश्मि' आदि.

अपहृतः आकाशवाणी के लेह केंद्र के निदेशक **बशीर आरिफ** का अपहरण कर लिया गया. अपेक्षाकृत नए आतंकवादी गुट 'लश्कर-ए-अजा' ने यह काम किया है. उनका अपहरण श्रीनगर के गांदरबल से किया गया जहां वे अपने भाई से मिलने गए थे. उसके बाद से वे लापता हैं और उनकी तलाश जारी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस. वी. चव्हाण

घर की नहीं फिकर

पंजाब, कश्मीर असम जैसी देश की ज्वलंत समस्याओं पर केंद्रीय गृहमंत्री के बेफिक्री भरे रुख से मंत्रालय के आला अधिकारी तक सकते में

—हरिंदर बवेजा

नॉर्थ ब्लॉक के एक झक्की अधिकारी उन्हें अपने में खोया हुआ गृहमंत्री कहते हैं. वजह: पंजाब में हत्याओं के लिए वे पाकिस्तान को दोषी ठहराते हैं; कश्मीर में अपहरणों के पीछे वे पाकिस्तान का हाथ देखते हैं; और उनके विचार से राजीव गांधी की हत्या इसलिए की गई क्योंकि वे तीसरी दुनिया में एक प्रमुख राजनैतिक नेता के रूप में उभर रहे थे और "कुछ देश, जिन्हें महाशक्ति के रूप में कभी चुनौती ही नहीं दी गई, इससे कुपित हो उठे."

क्या केंद्रीय गृहमंत्री को स्पष्ट नीतियां नहीं बनानी चाहिए? केंद्रीय मंत्रिमंडल के सबसे महत्वपूर्ण मंत्रालय के मुखिया एस.वी. चव्हाण सिर्फ लफ्फाजी को ही पर्याप्त मानते दिखते हैं.

खानापूरी के लिए मुखिया

कामकाज में घातक बेफिक्री

जिस बेफिक्री के साथ चव्हाण अपना संवेदनशील मंत्रालय संभाल रहे हैं, उससे उनके अधिकारी हक्के-बक्के हैं. एक वरिष्ठ नौकरशाह कहते हैं, "हम मान चुके हैं गृहमंत्री पद पर नियुक्ति राजनैतिक खानापूरी के लिए ही की जाती है. लेकिन पिछले वर्षों में गृह मंत्रालय इतना दिग्भ्रमित कभी नहीं रहा." वे बताते हैं कि आर.के. भार्गव जब सचिव थे तो उन्हें कभी-कभी मंत्री के कार्यक्रमों की जानकारी ही नहीं दी जाती थी. अधिकारियों का कहना है कि मंत्री उनमें से किसी को शायद ही कभी खास तौर पर

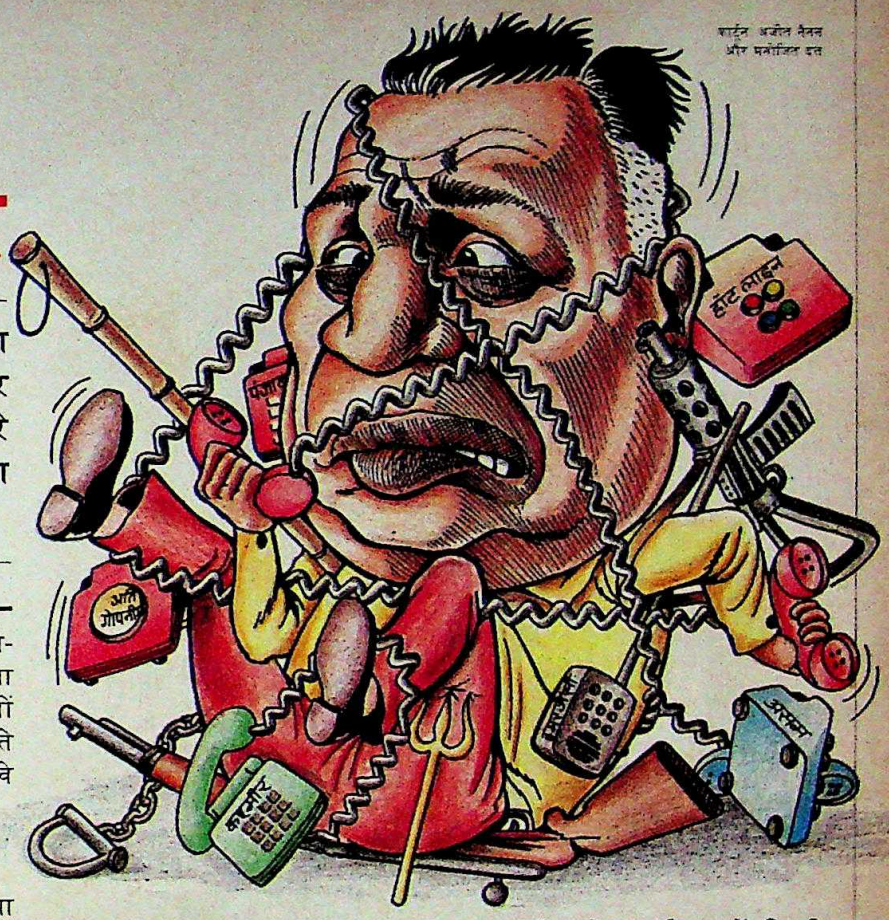

कार्टून अजीत नैनन और मनोजित दत्त

बुलाते हैं. वे सिर्फ चाहते हैं कि 'कागजात' उनके सामने रख दिए जाएं. खुफिया विभाग के एक अधिकारी कहते हैं, "उनके मंत्री होने का एहसास ही नहीं होता."

भटकाव ही भटकाव

उलटी दिशा में घोड़े

वरिष्ठ नौकरशाहों का कहना है कि वे सलाह-मशविरा भी नहीं करते. सरकार को सत्ता में आए हुए चार महीने हो गए हैं लेकिन राजनैतिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने कश्मीर की स्थिति का एक बार भी जायजा नहीं लिया. और न ही उसने पंजाब समस्या पर विचार-विमर्श के लिए सर्वदलीय बैठक बुलाने के बारे में सोचा. जहां तक असम का सवाल है, वे कहते हैं, "जब असम में सेना मौजूद है, तो मेरे वहां जाने की क्या तुक है?"

चव्हाण ने अभी तक जिस एकमात्र अशांत क्षेत्र का दौरा किया है वह श्रीनगर है. घाटी का यह दो दिन का दौरा भी उनके लिए परेशानी का सबब बन गया. गृहमंत्री के साथ पत्नी, बेटे और बहू के अलावा राजेश खन्ना को देखकर अधिकारी और पत्रकार अवाक रह गए. तथ्यों का पता लगाने वाले इस मिशन में फिल्मी सितारे राजेश खन्ना क्या कर रहे थे? जवाब ढूंढ़ने की कोशिश करते चव्हाण ने कहा, "वे कांग्रेसी हैं." सवाल दोहराने पर वे बुदबुदाए, "राजेश खन्ना एक मित्र की हैसियत से आए हैं." यह भी बताया जाता है कि गृहमंत्री अपने परिवार को वैष्णो देवी ले जाने वाले थे.

उनका परिवार उनके मंत्रालय से ज्यादा महत्वपूर्ण दिखता है. राजेश खन्ना और चव्हाण का परिवार नौका बिहार के लिए श्रीनगर की डल झील जाने की योजना बना रहे थे तो गृहमंत्री बातचीत के लिए आतंकवादियों से अपील कर रहे थे. यह सब उस समय हो रहा था जब आतंकवादी 18 लोगों को बंधक बनाए हुए थे. भारतीय तेल निगम के निदेशक के. दुरैस्वामी के बदले नौ आतंकवादियों की रिहाई, जिनमें कुलपति मुशीर-उल-हक और एचएमटी के महाप्रबंधक एन.एल. खेड़ा की हत्या का आरोपी जावेद शाला भी था, के कारण वरिष्ठ अधिकारी उन्हें सबसे बदतर गृहमंत्रियों में गिनने लगे हैं.

चव्हाण ने संसद में यह घोषणा करके भारी भूल की कि सरकार शाला को छोड़ने की इच्छुक है. इसी गलती को राज्य प्रशासन अभी सुधारने में लगा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल भी आज भी कल भी

...दृश्य!... पहाड़... सुंदर वादियाँ... रम्य ...स्थल... या फिर सागर का चहकता ...तट... हर सैलानी परिवार इन स्थानों पर कभी न कभी गया होगा. और ...आश्चर्य की बात सबका हमसफ़र वही वी.आइ.पी.! परिवार-दर-परिवार, ...पीढ़ी-दर-पीढ़ी जब कभी लगेज की बात आई, वी.आइ.पी. ने साथ निभाया. ...वी.आइ.पी. ने जो विश्वास जगाया वो हरदम कायम रहा. वी.आइ.पी. को टिकाऊ ...बनाने के लिए बहुत कुछ किया गया है. जैसे, सुदृढ़ खोल को सहारा देनेवाला ...धातु का फ्रेम उसे इतना मज़बूत बनाए कि वो सफ़र की हर मुश्किल ...झेलकर ले पाए. इतना ही नहीं, वी.आइ.पी. में मिलती ...बेजोड़ खूबियां. जैसे, मल्टी सेफ़ लॉकिंग सिस्टम, ...सूटकेस उल्टा न खुलने की व्यवस्था और सॉफ़्ट ...पकड़वाले हैंडल... छोटी-छोटी बातें जो सफ़र को और ...भी सुविधाजनक बनाएं - छुट्टी -दर-छुट्टी... ...साल-दर-साल.

और अब हॉलिडे लाइन - छुट्टियों की मौज-मस्ती में हमसफ़र. आपके परिवार की हर आवश्यकता को पूरी करने के लिए खास बैग. ट्रैवेलाइट - सैलानियों का ख़ूबसूरत हमसफ़र - आपके सफ़र को शानदार बनाए. टाइटन में मज़बूती के लिए है दोहरा फ्रेम. और टॉपलाइन में - जगह-ही-जगह – छुट्टियों के दौरान आकस्मिक ख़रीदी सभी चीज़ों को रखने के लिए. ये तीनों सूटकेस अलग-अलग साइज़ों और तरह-तरह के मनमोहक रंगों में मिलते हैं. अब जब भी आप छुट्टियों का मज़ा लेना चाहें, मज़बूत - टिकाऊ वी.आइ.पी. को ही अपना हमसफ़र बनाएं.

है प्पी हॉलिडे लाइन - वी.आइ.पी. के तीन हमसफ़र
ख़ूबियों में एक से एक बढ़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे जहां आतंकवादियों का मनोबल बढ़ा, वहीं गृहमंत्री सिर्फ वादों से अफसरों की हौसलाअफजाई करते रहे. दिल्ली लौटने के पहले उन्होंने कहा, "हम अपहरणों पर जल्दी ही एक राष्ट्रीय नीति घोषित करेंगे." और "हम कश्मीर पर एक कार्ययोजना की घोषणा करेंगे." लेकिन पांच हफ्ते बीत जाने के बाद भी दोनों में से किसी की घोषणा नहीं हुई. कश्मीर प्रशासन के नौकरशाहों को इससे जरा भी ताज्जुब नहीं हुआ है. एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "मुफ्ती मुहम्मद सईद बहुत आत्मनिष्ठ थे लेकिन उन्हें चीजों की समझ थी." चव्हाण ने दरअसल "क्या आप बेकसूरों की हत्या की निंदा करते हैं?" सरीखे सीधे-से सवाल पर यह जवाब देकर अधिकारियों को उलझन में डाल दिया कि "मैं परिस्थितियों पर गौर करूंगा." दरअसल, वे जब भी मुंह खोलते हैं, कोई-न-कोई गलती कर बैठते हैं.

पंजाब प्रशासन तो अभी तक नहीं समझ पाया है कि असली गृहमंत्री कौन है: एस.बी. चव्हाण या राजेश पायलट. पायलट ने चव्हाण को कश्मीर के राज्यपाल के साथ एक मिनट भी अकेला नहीं छोड़ा. यही नहीं, उन्होंने अमृतसर का दौरा भी कर डाला. कश्मीर के बारे में चव्हाण की कोई नीति ही नहीं है जबकि पायलट अपने मित्र फारूक अब्दुल्ला को सत्ता में वापस लाना चाहते हैं. मुफ्ती और जॉर्ज फर्नांडीस की तरह ये दोनों भी उलटी दिशाओं में घोड़े दौड़ा रहे हैं.

नुकसानों से बेखबर

नौकरशाहों वाले अंदाज

पंजाब के मामले में चव्हाण का एकमात्र योगदान, यदि इसे योगदान कहा जा सके तो, और छह महीने के लिए राष्ट्रपति शासन बढ़ाना है. अब वे कहते हैं कि वहां हर हालत में 25 फरवरी तक चुनाव करवा दिए जाएंगे, भले ही सेना बुलानी पड़े. 'इंडिया टुडे' को दिए इंटरव्यू में उन्होंने इसे गृहमंत्री के रूप में अपनी उपलब्धियों में गिनाया. हालांकि चव्हाण ने पंजाब में चुनाव स्थगित करवा दिया लेकिन इससे हुए नुकसान से वे बेखबर हैं. उग्रवादियों ने अब वहां हमला करना शुरू कर दिया है जहां सबसे ज्यादा चोट पहुंचती है—यानी पुलिस और उनके परिवारों पर.

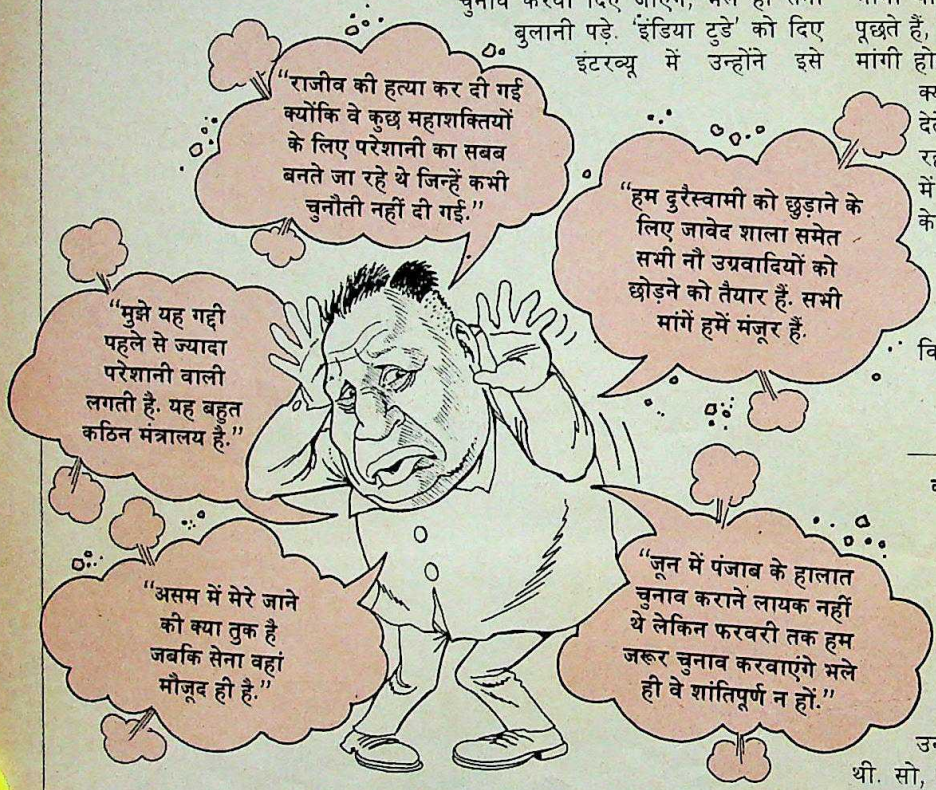

बूटा सिंह, मुफ्ती और सुबोधकांत के मातहत यदि गृह मंत्रालय आग बुझाने वाली मशीन भर रह गया था तो फिलहाल वह यह भी नहीं है. यह काम राज्यपालों पर छोड़ दिया गया है. पंजाब में चुनाव के बारे में चव्हाण कहते हैं, "इससे पीछे नहीं हटा जाएगा." लेकिन गृह मंत्रालय जन प्रतिनिधित्व कानून में प्रस्तावित संशोधन को पास कराने की फिराक में है जिसका मकसद अलगाववादी तत्वों को चुनाव में भाग लेने से रोकना है.

आतंकवादियों को बातचीत में शामिल करने की कोई कोशिश नहीं हुई है, और न ही गृह मंत्रालय उन्हें विधानसभा चुनाव में जीतते हुए देखना चाहता है. चव्हाण ने असम में हितेश्वर सैकिया को 500 उल्फा आतंकवादियों की रिहाई की अनुमति देकर पहले ही अपने हाथ झुलसा लिए हैं. उल्फा की गतिविधियों पर अंकुश के लिए आखिरकार उन्हें सेना भेजनी पड़ी. लेकिन उन्होंने यह कहते हुए दूसरे के मत्थे दोष मढ़ने की कोशिश की कि सैकिया ने मदद मांगी थी. गृह मंत्रालय के एक अधिकारी पूछते हैं, "यदि सैकिया ने केंद्र की मदद न मांगी होती तो उन्होंने क्या किया होता. क्या वे असम को जलता हुआ छोड़ देते?" इसी अधिकारी ने यह भी रहस्योद्घाटन किया कि कई वर्षों में यह पहला मौका है कि मंत्रालय के अधिकारी शाम 6.30 बजे तक घर चले जाते हैं. लगता है 'नौकरशाही प्रवृत्ति वाले गृहमंत्री' देर तक काम करने में विश्वास नहीं करते.

वफादारी काम आई

कामकाज से कई सवाल उठे

सवाल उठ सकता है कि नरसिंह राव ने चव्हाण को ही क्यों चुना? दरअसल उन्होंने सोच-समझकर गोटी चली, क्योंकि संभावित प्रधानमंत्रियों से भरी पार्टी के नेतृत्व के लिए उन्हें चव्हाण की वफादारी चाहिए थी. सो, अर्जुन सिंह या शरद पवार की जगह किसी वफादार और बेपरवाह व्यक्ति को गृहमंत्री की कुर्सी पर बैठाना ज्यादा निरापद था.

बहरहाल, इन बातों के संदर्भ में अपना बचाव करते हुए गृहमंत्री चव्हाण कहते हैं, "मुझे विरासत में जो समस्याएं मिली हैं उन्हें दुरुस्त करने में समय लगेगा." लेकिन यह शायद उनकी तीक्ष्ण बुद्धि का ही कमाल है कि वे उन मसलों में फंसने से बचते रहे हैं जिनके बारे में वे जानते हैं कि आसानी से हल नहीं किए जा सकते. उनके साथ काम करने वाले वरिष्ठ नौकरशाहों का कहना है कि उन्हें अपने हितों की उपेक्षा का दोषी नहीं ठहराया जा सकता. गृहमंत्री शायद इस बात में यकीन रखते हैं कि विफल करार दिए जाने से बेहतर है मूर्ख करार दिया जाना.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जब संसार की 97% मोटरें स्टील रेडियल टायरों पर चलती हैं, तो आप पीछे क्यों रहें?

सब रेडियल टायर एक जैसे नहीं होते।

यदि आपको अपनी मोटर के लिये सर्वोत्तम रेडियल चाहिये, तो देखिये, ट्रेड के नीचे क्या है।

स्टील? साधारण कपड़ा या फ़ाइबर ग्लास?

कपड़ा या फ़ाइबर ग्लास स्टील का मुकाबला कभी नहीं कर सकते।

केवल स्टील बेल्टेड रेडियल आपकी मोटर की क्षमता बढ़ाते हैं। यह ईंधन अधिक बचाते हैं, ज़्यादा माइलेज देते हैं एवं हर प्रकार की सड़कों पर बेहतर पकड़ रखते हैं।

तभी तो संसार की 97% मोटरें स्टील बेल्टेड रेडियल टायरों पर चलती हैं।

फिर आपकी मोटर क्यों न उठाए स्टील का फ़ायदा। ब्रेक लगाते समय, मोड़ते समय या गीली सड़कों पर मोटर चलाते समय, स्टील रेडियल टायरों की मज़बूती और सुरक्षा का मुकाबला नहीं।

लीजिए, अन्तर्राष्ट्रीय-स्तर के स्टील रेडियल टायर।

केवल जे के द्वारा निर्मित।

यही है असली रेडियल।

असली रेडियल के बारे में अधिक जानकारी के लिए, इस पते पर लिखें: श्री एस. वी. श्रीनिवासन, रेडियल क्लब,
जे.के.इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड,
3, बहादुर शाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली-110002

असली रेडियल
जेके स्टील रेडियल

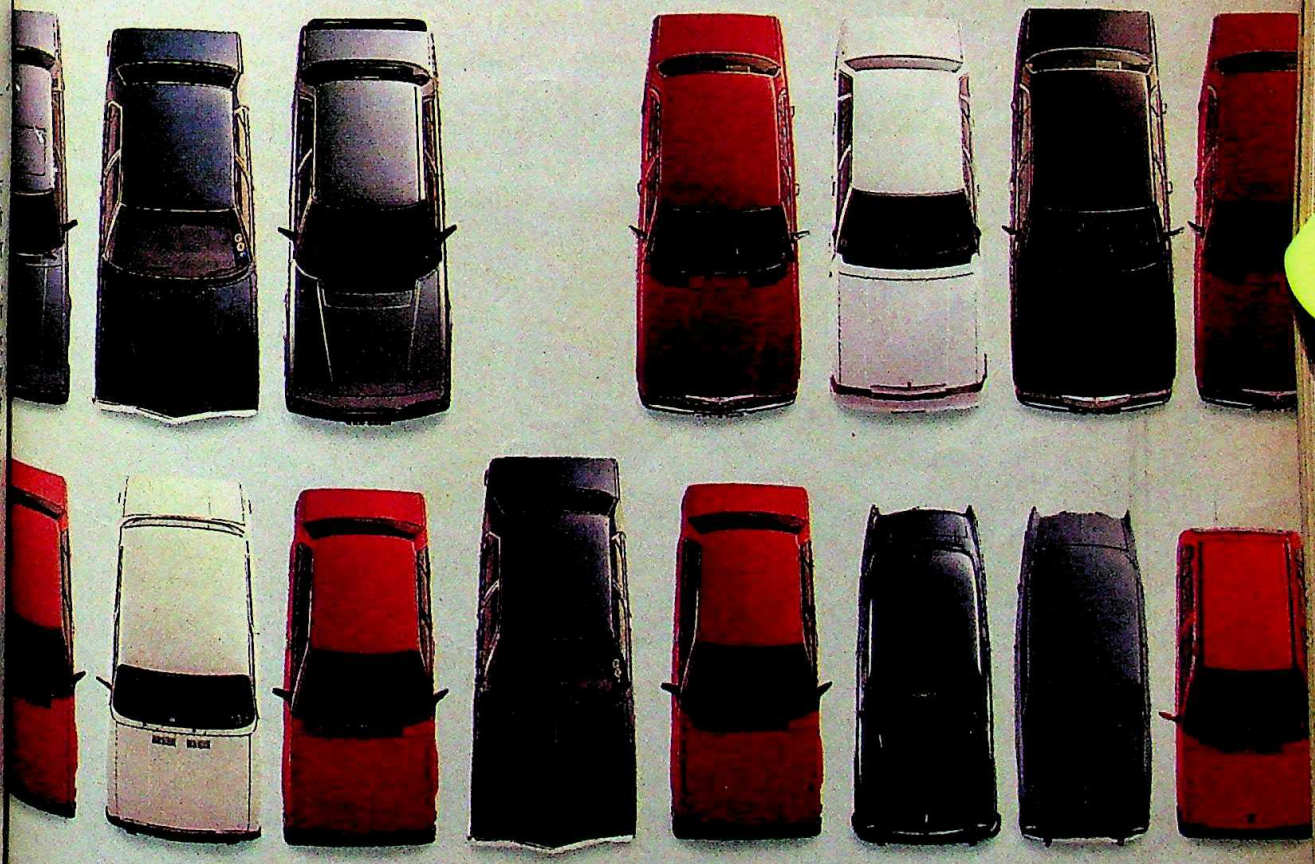

जेकेटायर

Sista's-JK/611-91/HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शानदार · शक्ति

अपनाइये एल.एम.एल. वैस्पा T5-ES का एयरोडायनामिक अन्दाज़.

इसकी सीट को बनाया गया है ख़ास आपके आराम के लिए. स्टीयरिंग-हैंडल

का डिज़ाइन ऐसा कि आप जितना भी चलाएं थकान महसूस ही न हो. 8 बी.एच.पी. की शक्ति, जो जाग उठे सिर्फ बटन दबाते ही,

बेमिसाल रफ़्तार के लिए. कुशल इंजीनियरिंग से बना सस्पेंशन, जिससे यूं लगे जैसे आप हों हवा पर

दो मॉडल, एल.एम.एल. वैस्पा NV और एल.एम.एल. वैस्पा T5, आकर्षक रंगों में. इनमें इलेक्ट्रिक स्टार्ट वाला मॉडल भी मिलता है.

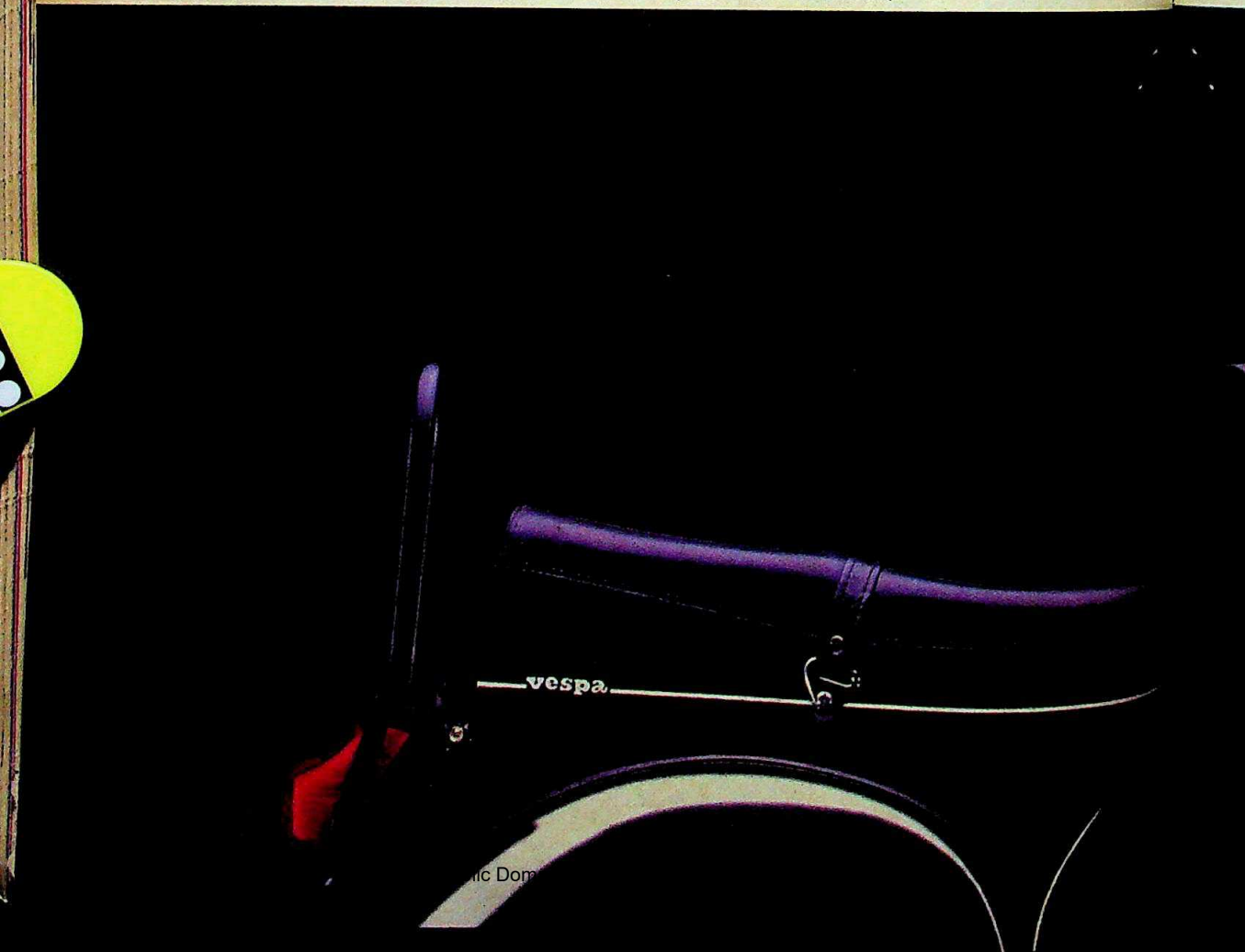

Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाली · कार्यकुशल

सवार. संतुलन एकदम सही. डगमगाने का सवाल ही नहीं. और भरोसेमन्द ब्रेक. जब लगाएं, वहीं रुकें. तुरन्त, बिना फिसले.

यही सब विशेषताएं तो बनाती हैं इसे एक बेहतरीन स्कूटर.

अब लुत्फ़ उठाइये एक बेहतरीन सवारी का. शान से!

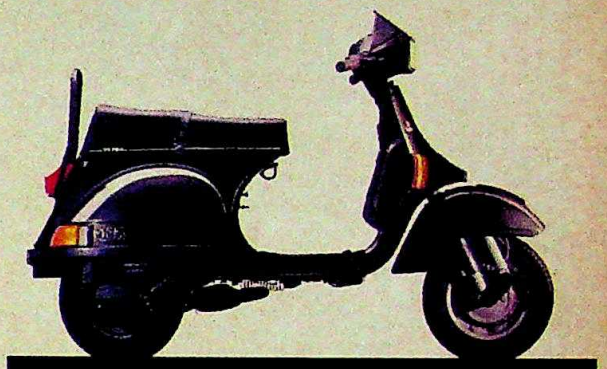

हर सफ़र, शान से!

ULKA-14718 HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

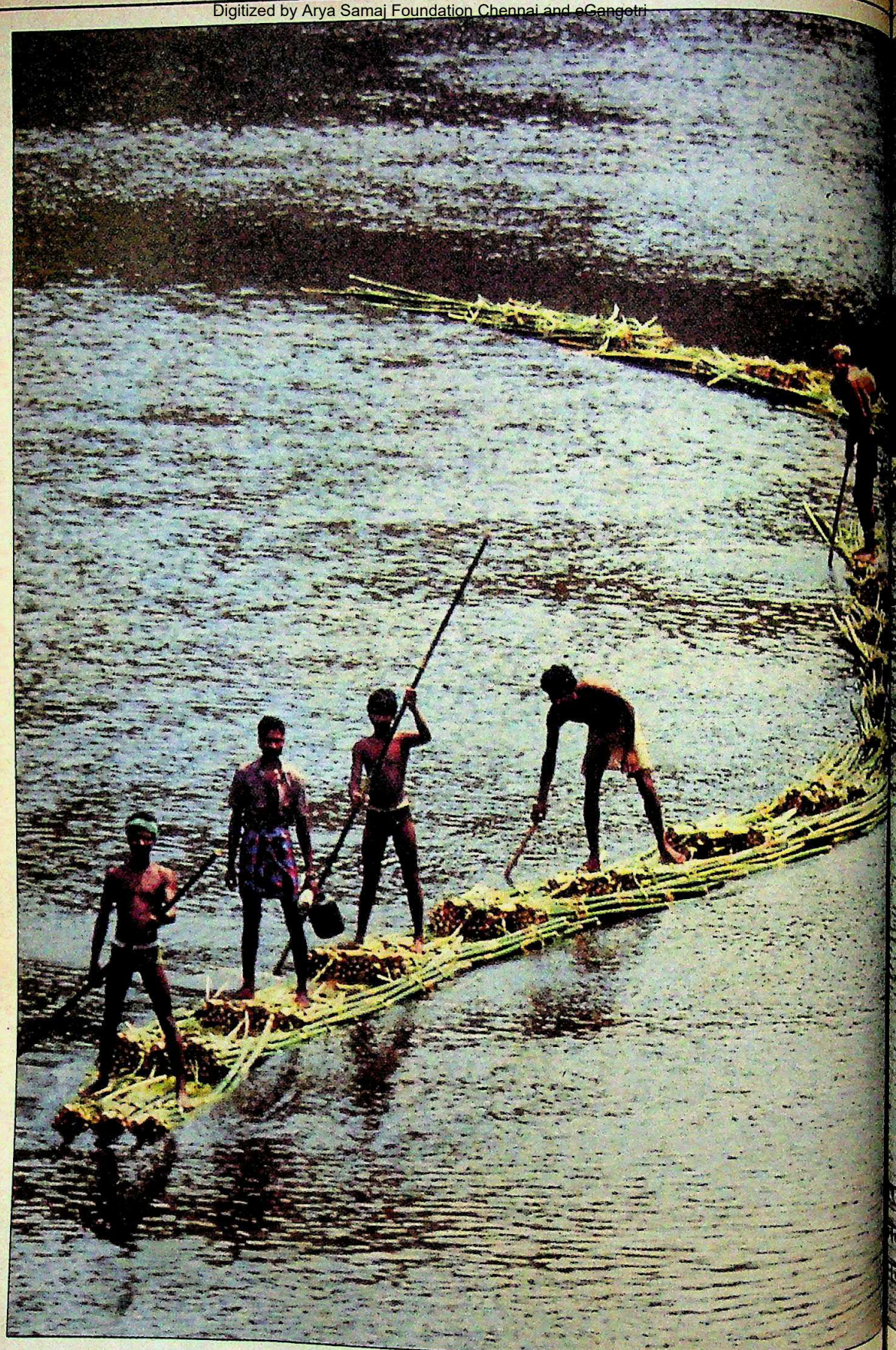

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

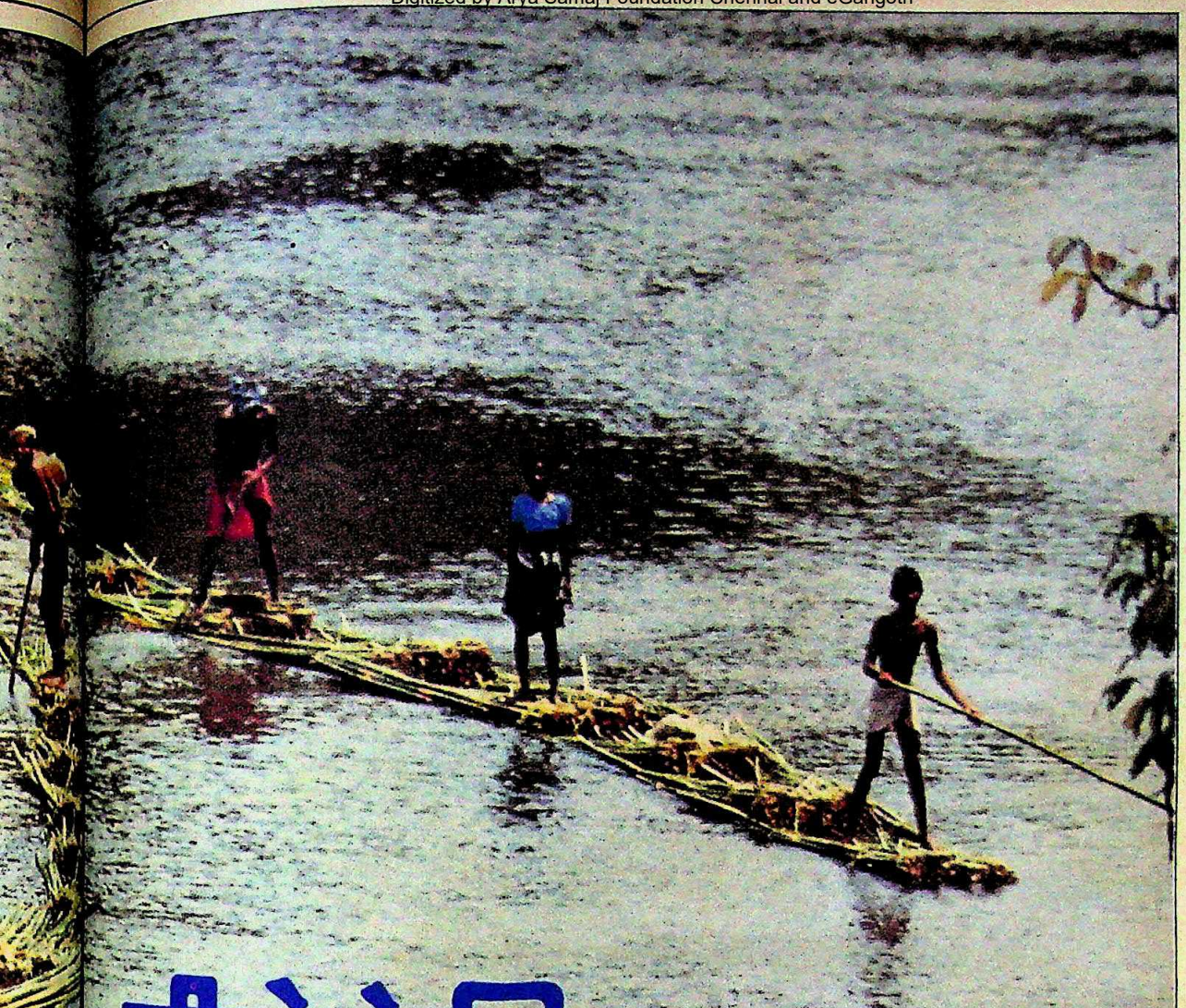

जीने के लिए जैविक भरी जद्दोजहद

...ल के इडुक्की जिले में पेरियार नदी के किनारे के कुछ गांवों में बांस और नरकट ...कर किसी तरह जीवन गुजारते लोगों की दास्तान प्रस्तुत कर रहे हैं संवाददाता ...द विश्वनाथन और वरिष्ठ छायाकार प्रमोद पुष्करणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोज सुबह 6 बजे 28 वर्षीया सुखरा और उनकी 25 वर्षीया बहन अमीना पूर्वी केरल के इडुक्की जिले में पेरियार नदी के किनारे अपने गांव कुट्टमपुझा से रवाना हो जाती हैं. पांच घंटे में करीब 12 किलोमीटर का घने जंगल का पहाड़ी सफर पैदल तय करने के बाद वे तमिलनाडु की सीमा पर स्थित मलकपाड़ा के नजदीक नरगथोडु पहुंचती हैं. यहां वे नरकट काटने आती हैं. 30 नरकटों के गट्ठर के वे 25 रु. पाती हैं. लौटते समय भारी बोझ के बावजूद वे ज्यादा तेजी से ढलान पर उतरती हैं. पर यह यात्रा जोखिम भरी भी है. एक भी कदम गलत पड़ा तो दिन भर का सारा किया-धरा बिगड़ सकता है. फिर भी रास्ते में जब दूसरी औरतें मिलती जाती हैं तो घंटों का पैदल सफर बातों में कट जाता है.

सूरज ढलते ही दूसरे परंपरागत काम—खाना बनाना, बरतन धोना, बच्चों की देखरेख शुरू हो जाती है. सुखरा कहती हैं, "हमारे भाग्य में यही है. हम कैसे शिकायत कर सकती हैं?"

इन महिलाओं की जिंदगी में भी उतना ही अंधेरा है जितना उस जंगल में जहां से वे 'ईता' (नरकट) लाती हैं. उनकी जिंदगी पर बाहरी दुनिया के बदलावों का भी असर नहीं होता. ठीक यही हाल उस जंगल में रोशनी का भी है. सागवान और शीशम की घनी छाया को भेदकर सूरज की रोशनी नीचे नहीं आ पाती. पानी बरसकर पूरे जंगल में सीलन भर देता है और घास-पात में कीड़ों का साम्राज्य होता है. इनमें रहने वाले सांपों पर पैर पड़ने से खतरा है; तो

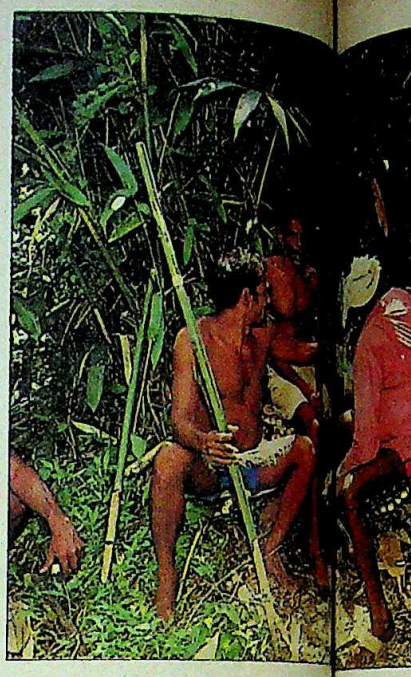

घने जंगलों के अकेलेपन में [illegible] ही बड़ा

घने जंगल और दलदली इलाकों में बांस और नरकट काटते हुए अक्सर जंगली जानवरों और सांपों का भय बना रहता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

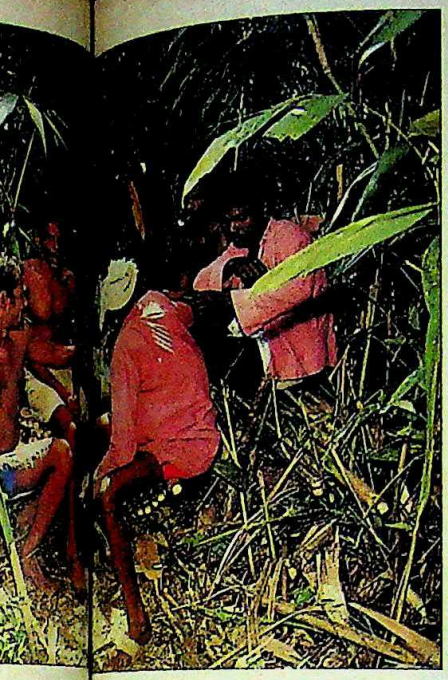

अकेलेपन में
ाग ही बड़ा संबल

जंगली हाथियों के पैरों के नीचे आ जाने का भी. 25 वर्षों से नरकट काटने वाली 40 वर्षीया कुंजु कहती हैं, "रोज जब मैं जंगल में जाती हूं तो भरोसा नहीं होता कि आज लौट ही आऊंगी."

नरकट काटने वालियों का ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने का लोभ समझ में भी आता है. कमाई के लिए उन्हें अमूमन घर से हफ्ता-हफ्ता दूर रहना होता है. जैसे केरल की ईदमलयार पनबिजली परियोजना के चारों ओर सबसे अच्छे किस्म के नरकटों का जंगल है. 1970 में इसके काफी बड़े हिस्से के डूब क्षेत्र में आ जाने के बावजूद अभी भी यहां से टनों नरकट निकाला जा सकता है. यहां अधिक से अधिक ईदमलयार बिजलीघर तक मोटर से पहुंचा जा सकता है. आगे इस्ताप्पन की नौका से जाना पड़ता है. 52 वर्षीय इस्ताप्पन नरकट काटने वालों और नरकट को अपनी नाव से 52 किमी दूर कप्पायम में पहुंचाते हैं, जो राज्य के 89 संग्रह केंद्रों में से एक है.

जैसे-जैसे नावें आगे बढ़ती हैं, पानी के विशाल हरे विस्तार पर भूरे रंग के नरकटों की उलटी प्रतिछाया इस जंगल के आकार को दोगुना करके बताती है. जलाशय के किनारे बनी छोटी-छोटी झोंपड़ियों की प्रतिछाया भी पानी में दिखती है. और इन्हीं झोंपड़ियों में नरकट काटने वाले रहा करते हैं, जो वदायत्तूपाड़ा के उनके घर से 30 किमी दूर है. पौ फटते ही वे झुंड बनाकर निकलते हैं. नरकट काटते हुए भी उनके कान इससे निकलने वाली आवाजों की

चाहे घर हो या जंगल हो, महिलाओं को कहीं भी काम से फुरसत नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

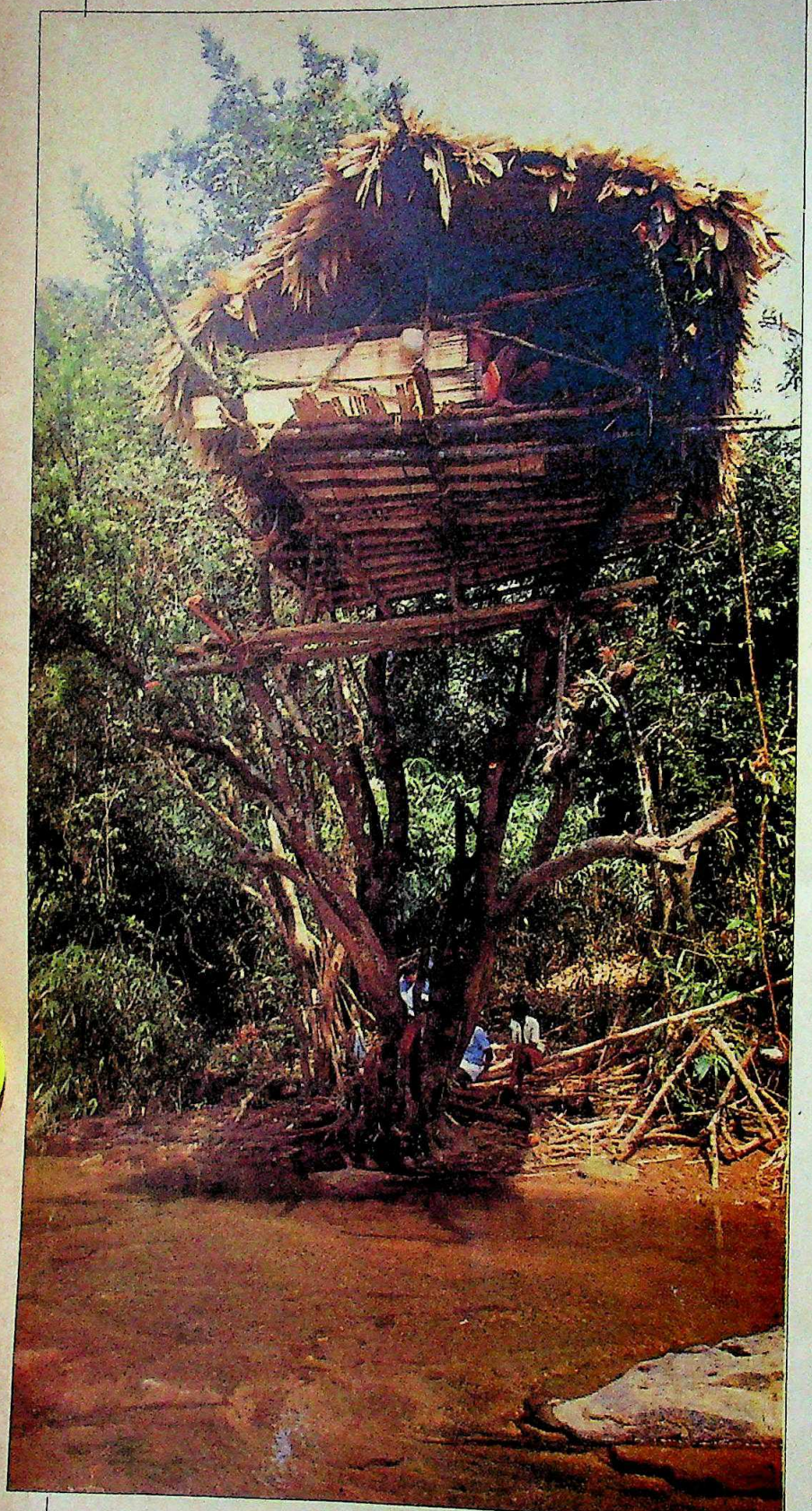

खूंखार जंगली हाथियों के डर से पेड़ों पर बने घर

तरफ लगे रहते हैं. 36 वर्षीय
कहते हैं, "यह आवाज हमारे
लिए संगीत है." लेकिन उनके
कोई रस भरा संगीत नहीं है.
अधिकांश को दिन में कई-कई
अपना खून चुसवाना पड़ता
इसकी 'दवा' भी वे रखते हैं.
पानी या दियासलाई इसका
फिर, नरकंट के पत्तों में लिपटे
भूनकर वे खा भी लेते हैं और
ताजा पानी मिल ही जाता है.

कप्पायम के निकट के
पाड़ा में रहने वालों का
ईदमलयार जलाशय के पास रहने
की तुलना में कम मुश्किल है. यह
वालों में 34 वर्षीय जॉय और उ
वर्षीया बीवी, ओमना भी हैं, जो
साल तिरुवनंतपुरम से यहां आ
रोज सुबह जंगल में जाते हैं. तीन
तक नरकटों का बोझ बना,
लादकर किनारे लाते हैं. ओमना
हैं, "जीवन मुश्किलों भरा जरूर
हमारे पास काम तो है."

बचे समय में 37 वर्षीया रा
26 वर्षीय थंगम्मा जैसे जोड़े कु
सकते हैं. थालिपाड़ा में सिर्फ उ
झोंपड़ी में रेडियो है. सभ्यता की
धारा से गुम हो गए इन लोगों
यही एकमात्र जुड़ाव रह गया है
कहते हैं, "जब सब लोग रेडियो
गिर्द जुटते हैं तो हमें आनंद आ
फिर मैं और मेरी बीवी देर रा
फिल्मी गीत सुनते रहते हैं."

अडिमाली, नरगथोडु और कु
भी नरकट काटने वाले अपने प
साथ रहते हैं. लेकिन वे मचानों
हैं और एक-एक मचान पर ती
परिवार तक. बांस, नरकट,
ऊपर लगने वाले छिलकों-पत्तों
मचान, छत और बिछावन—प्र
तदात्मय स्थापित करते दिखते हैं
हाथियों के हमलों का खतरा
होता. नरगथोडु के हर दंपती ने
के चलाए जा रहे परिवार नियो
उपायों को अपनाया है. 30
प्रकाश कहते हैं, "हमारे पास
समय बचा रहता है कि अक्सर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टोकरियां आदि बुनकर भी आमदनी हो जाती है

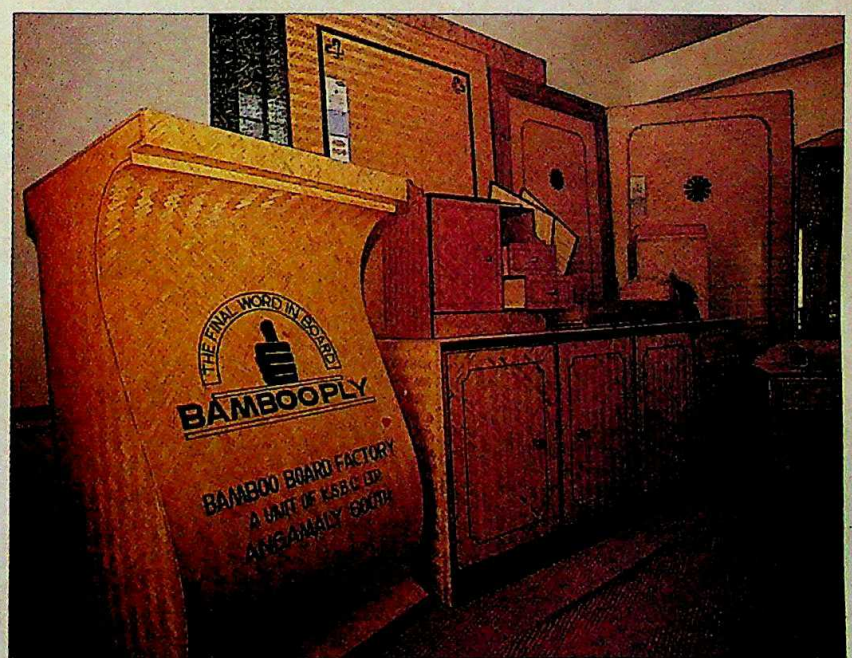

बांस और नरकट से तैयार माल दूर-दूर तक पहुंचता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

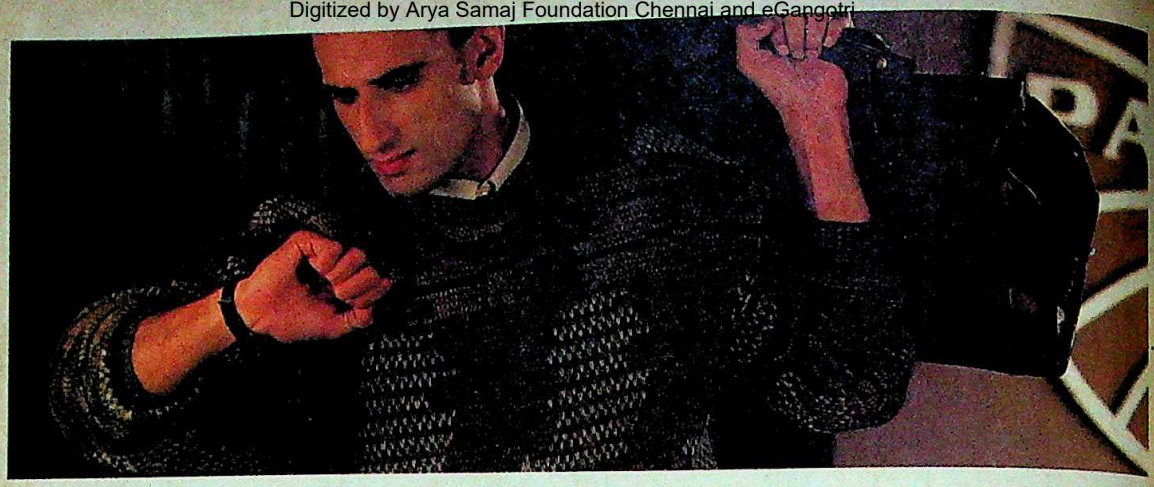

Park Avenue
by Raymond's

Style. For every moment of your life.

Park Avenue presents The Knitwear Collection. Winterwear in Woolmark certified pure wool, Angora, Mohair, Lambswool and Acrowool. With enough styles, colours and designs to please you.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LINTAS PA 203 2434

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

If this one tile can stop you in your tracks, imagine what a whole floor can do

Marble Magic from Spartek. A series of the most exotic marble finishes. Captured in the finest of ceramic tiles. In a range of 14 seductive shades, some of which even natural marble can't match. Marble Magic from Spartek. Lay it on your floor. It'll look even better than what you imagined.

MARBLE MAGIC
FROM
SPARTEK

What the best dressed homes

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

For residential and light traffic ap

SCL MM PI 2720

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मभी फोटो हेमत पिटवा

बारामती

मराठा मनसबदारी

पवार परिवार का प्रभाव बढ़ने से यह शहर भी समृद्ध हुआ

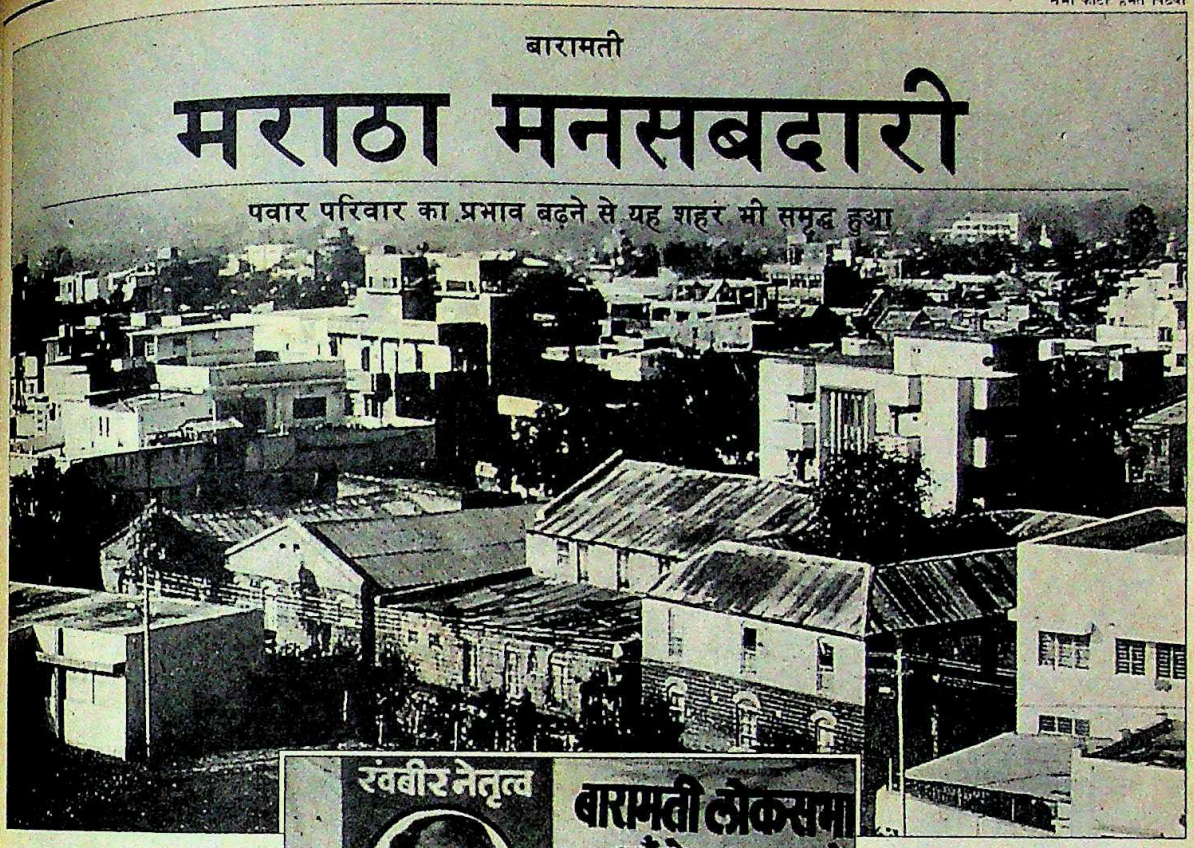

–एम. रहमान, बारामती में

बारामती में पिछले दो दशक से पवार परिवार की तूती बोलती रही है. पुणे से मुश्किल 100 किमी दक्षिण-पूर्व स्थित यह छोटा शहर एक शताब्दी से कुछ समय पहले भयानक अकाल का शिकार हो गया था. लेकिन पवार परिवार के उभरने के साथ ही यहां सहकारी चीनी मिलें, कुटीर उद्योगों और अंगूर की खेती का तेजी से विकास हुआ और यह दक्षिणी महाराष्ट्र के समृद्ध चीनी क्षेत्र से जुड़ता चला गया.

इसके सबसे होनहार बेटे 51 वर्षीय शरद गोविंदराव पवार जैसे-जैसे सत्ता-सोपानों को पार करते गए, वैसे-वैसे राज्य के राजनैतिक और आर्थिक नक्शे में इस शहर का महत्व भी बढ़ता गया. अब जबकि रक्षामंत्री और प्रधानमंत्री पद के सशक्त दावेदार पवार अपने इस गृह क्षेत्र से भारी बहुमत के साथ लोकसभा में आने की उम्मीद कर रहे हैं, किसी समय का पड़ा बंजर क्षेत्र अपने इतिहास में एक और नए मोड़ पर पहुंच गया है.

बड़े उद्योगपतियों पर पवार के प्रभाव के कारण बारामती आज प्रमुख औद्योगिक केंद्र के रूप में भी विकसित होता जा रहा है. यह बगल के पुणे में पहले से ही विकसित पिंपरी-चिंचवड औद्योगिक क्षेत्र से होड़ ले सकता है. महत्वाकांक्षी योजनाएं सिर्फ पवार के ही गृह तालुका के लिए नहीं हैं बल्कि निर्वाचन क्षेत्र के दूसरे पांच तालुकों के लिए भी हैं. महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम के पांच बड़े और दो छोटे औद्योगिक क्षेत्रों पर तेजी से काम हो रहा है. केंद्र ने भी दो नई चीनी मिलें लगाने की मंजूरी दे दी है. क्षेत्र के बाकी सूखाग्रस्त गांवों को पानी मुहैया कराने के लिए एक बड़ी सिंचाई परियोजना भी तैयार की जा रही है.

पवार और बारामती शहर: एक-दूजे के लिए

बारामती में बड़ी-बड़ी कंपनियां निवेश कर रही हैं (देखें बॉक्स). और निवेश की रकम है: 700 करोड़ रु. इसमें छोटी फैक्टरियां शामिल नहीं हैं. बारामती में महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम के 2,200 एकड़ क्षेत्र में विशालकाय इस्पात संयंत्र के साथ-साथ छोटी कंपनियां भी कुकुरमुत्ते की तरह उग रही हैं जिनमें प्लास्टिक पेंसिल से लेकर खाद्य तेल तक का उत्पादन होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीत पवार के राज्य में मंत्री बनने से घराने का सियासी रुतबा और बढ़ा, व्यापार-धंधे में भी आज वह अग्रणी है

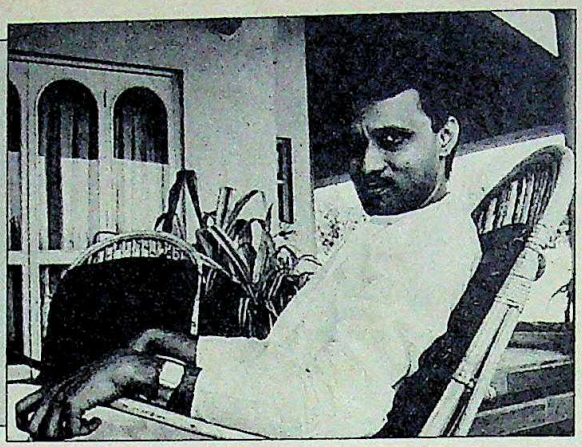

अजीतः छप्परतोड़ सफलता

इस तरह की 150 कंपनियां लगाने की योजना है और इससे स्थानीय प्रभावशाली लोग उद्यमियों में बदल रहे हैं.

रक्षामंत्री के भतीजे और राजनैतिक उत्तराधिकारी 32 वर्षीय अजीत पवार उनमें से एक हैं. वे 3.5 करोड़ रु. की लागत से बारामती सॉल्वेंट एक्स्ट्रैक्शंस संयंत्र लगा रहे हैं जिसमें सूरजमुखी के तेल का उत्पादन होगा. अजीत पिछले जून में बारामती लोकसभा सीट जीतकर सुर्खियों में आ गए थे. बदले में उन्होंने अपने चाचा के रक्षामंत्री बनने पर यह सीट खाली कर दी. अजीत को जल्दी ही इसका पुरस्कार भी मिल गया. उन्हें राज्य में मंत्री बना दिया गया. अब चाचा और भतीजा एक-दूसरे की सीट से चुनाव लड़कर संसद और विधानसभा में बारामती का प्रतिनिधित्व करेंगे.

किसी भी दृष्टि से देखें, बारामती के पवार परिवार की कहानी अनूठी है. पवार के पिता गोविंदराव चीनी सहकारी मिल में प्रबंध निदेशक थे. लेकिन, जैसा कि जनता दल के नेता संभाजी काकडे आरोप लगाते हैं, उन्हें भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण नौकरी से हाथ धोना पड़ा. उनकी पहली पत्नी से पांडुरंग हुए जो बारामती के पास 20 एकड़ के फार्म में रहते हैं. लेकिन उनकी दूसरी पत्नी शारदाबाई महत्वाकांक्षी थीं. उन्होंने 1938 में समाज के सारे बंधनों को तोड़कर स्थानीय नगरपालिका कार्य समिति का चुनाव लड़ा और जीत गईं. वे अपने सात बेटों और चार बेटियों की प्रेरणा का स्रोत रहीं.

दो बेटों ने राजनैतिक महत्वाकांक्षा पाल रखी थी. सबसे बड़े बेटे वसंत, जो वकील थे, शेतकरी कामगार पक्ष की प्रमुख हस्ती थे. लेकिन जमीन के झगड़े में वे मारे गए और मां की महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने की जिम्मेदारी छठे बेटे शरद पर आ पड़ी. मिलनसार, युवा पवार युवक कांग्रेस में शामिल हो गए और उन्होंने पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज से बीकॉम की डिग्री हासिल की. शरद के बड़े भाई दिनकर 'अप्पासाहेब', जिन्होंने खुद भी इस क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, कहते हैं, "शरद तब यशवंतराव बलवंतराव चव्हाण के संपर्क में आए और चव्हाण ने उनके राजनैतिक जीवन को निखार दिया. लेकिन जो चीज उन्हें अपने गुरु से अलग करती है वह है उनका दुस्साहस. वे खतरा मोल लेने से नहीं डरते."

पवार में वे सारे गुण थे जो किसी ताकतवर व्यक्ति के संरक्षण में फलने-फूलने के लिए चाहिए. वे 1967 में बारामती से विधानसभा के लिए पहली बार चुने गए और जल्दी ही मंत्री बन गए. मुख्यमंत्री पद हथियाने के लिए 1977 में वे इंका से अलग हो गए और विपक्षी नेता के रूप में अपना राजनैतिक आधार बढ़ाते रहे. 1986 में फिर इंका में शामिल हो गए और तीन वर्षों में फिर मुख्यमंत्री बन गए. राजीव गांधी के शासनकाल में उन्हें अपदस्थ करने की कोशिश की गई लेकिन वे जमे रहे. आज वे महाराष्ट्र के अग्रणी नेता और बारामती के वस्तुतः राजा हैं. पवार परिवार दिन-प्रतिदिन ताकतवर ही होता जा रहा है. परिवार पूरी तरह से एकजुट है और हर दिवाली को सभी सदस्य, चाहे वे कहीं भी हों, काटेवाड़ी स्थित परिवार के फार्महाउस में जुटते ही हैं. काटेवाड़ी बारामती से 10 किमी दूर है. अजीत के अनुसार, परिवार के पास बारामती में कुल मिलाकर 100 एकड़ खेत, कुछ पॉल्ट्री फार्म, एक फाउंड्री और शराब तथा खाद्य तेल कंपनियों के शेयर हैं.

बड़ी कंपनियां

महिंद्रा ऐंड महिंद्रा
एल.एम. थापर समूह
आर.पी. गोयनका
टी.वी.एस. सुंदरम
ओरके
कल्याणी स्टील
प्रताप स्टील
मोदी घराना
बूट्स इंडिया
एस.एम. डाइकेम
इस्पात
सुल्जर इंडिया
किर्लोस्कर समूह

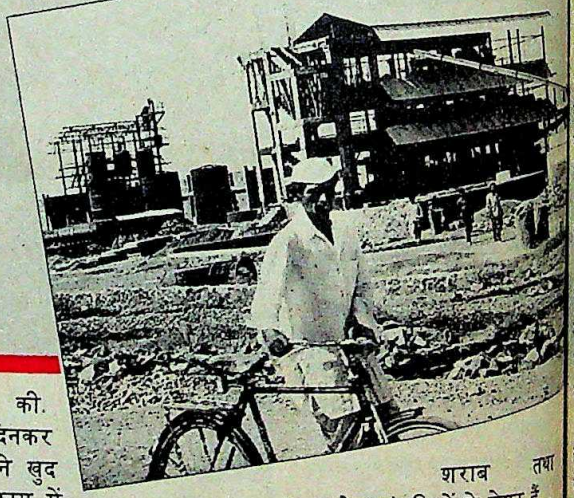

यदि पवार ने राजनैतिक ताकत और पैसे के लिए बारामती छोड़ा, तो उनके दूसरे भाई भी उनके संरक्षण या बिना संरक्षण के फले-फूले हैं. परिवार की तीसरी पीढ़ी के सदस्यों ने व्यवसाय या कृषि में कैरियर बनाने के लिए अपने को राजनीति से अलग रखा है. और पवार की एकमात्र बेटी सुप्रिया अपने पति के साथ अमेरिका में रहती हैं. उनके पति 'ओटिस' कंपनी में अधिकारी हैं.

पवार परिवार अपने उत्थान के लिए जितना मां शारदाबाई के मजबूत इरादों का ऋणी है, उतना ही बेटे शरद की राजनैतिक सफलता का भी. इस हद तक कि पूरा क्षेत्र परिवार की जेब में है. ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनिक भास्कर

बाप-बेटे के दांव

नतीजतन ग्वालियर में एक ही नाम से दो अखबारों का प्रकाशन

इस पारिवारिक कलह में दांव बहुत ऊंचे लगे हुए हैं. भावावेग, नाटकीयता, अदालती मामले और राजनीति से प्रेरित चालबाजियों का यह चक्कर पिता और पुत्र के बीच चल रहा है. इन दोनों ने राज्य के सबसे बड़े हिंदी दैनिक 'दैनिक भास्कर' पर कब्जे के लिए तलवारें तान ली हैं. अखबार का मुख्यालय ग्वालियर में है. हाल ही में यह लड़ाई शायद अनजाने रूप से तब और भी पेचीदा हो गई जब ग्वालियर से एक ही नाम के दो अखबार एक साथ निकलने लगे.

प्रेस एवं पंजीयन अपीली बोर्ड ने पिछले महीने यह नाम अखबार के संस्थापक 68 वर्षीय द्वारका प्रसाद अग्रवाल को सौंप दिया था. लेकिन जब उनके 46 वर्षीय बेटे रमेशचंद्र अग्रवाल ने, जो अखबार के वास्तविक कर्ताधर्ता हैं, अदालत में इसके खिलाफ स्थगन आदेश ले लिया, तो द्वारका प्रसाद ने दूसरे 'भास्कर' का प्रकाशन शुरू कर दिया. द्वारका प्रसाद कहते हैं, "प्रशासन जब बोर्ड के फैसले को लागू करने और मेरे बेटे द्वारा अवैध तरीके से अखबार के प्रकाशन पर रोक लगाने में अपने को विफल पा रहा तो मैंने अखबार शुरू कर दिया."

प्रशासन ने सिर्फ इतना किया कि एक ही रजिस्ट्रेशन नंबर और प्रकाशन कंपनी के नाम के साथ दो अखबारों के प्रकाशन के खिलाफ पुलिस में मामला दर्ज कर दिया है. पुलिस अब यह खोज कर रही है कि इस प्रकाशन से प्रेस एवं पुस्तक पंजीकरण अधिनियम 1867 का उल्लंघन होता है या नहीं.

यह सारी लड़ाई दरअसल छह संस्करणों और 2 लाख प्रसार संख्या वाले 'दैनिक भास्कर' के उत्तराधिकार पर रमेशचंद्र की दो अविवाहित सौतेली बहनों—25 वर्षीया हेमलता और 22 वर्षीया अनुराधा—के दावे को लेकर है. द्वारका प्रसाद चूंकि पक्षाघात से पीड़ित हैं, इसलिए हेमलता उनकी तरफ से पैरवी करती हैं. द्वारका प्रसाद अफसोस से कहते हैं, "मैंने पिछले जन्म में जरूर बुरे कर्म किए होंगे. तभी अपने बेटे के हाथों मुझे इतना जलील होना पड़ रहा है." भोपाल में एक संवाददाता सम्मेलन में हेमलता भी फूट पड़ीं, "मेरे भाई ने तो पिता को छोड़ दिया है. मैं भी उनका साथ न दूं तो उनकी देखभाल कौन करेगा."

दोनों पक्ष एक-दूसरे पर राजनैतिक संबंधों के दुरुपयोग का आरोप लगा रहे हैं. रमेशचंद्र पहले इंका समर्थक थे. अब वे सत्ताधारी भाजपा के करीब हैं. और उनके पिता का आरोप है कि इसी के चलते प्रशासन उनका पक्ष ले रहा है.

यह बात अलग है कि खुद द्वारका प्रसाद भी इससे पहले राजनैतिक मुहिम चला चुके हैं. अर्जुन सिंह 1988 में मुख्यमंत्री बने थे तो 'भास्कर' से खासे नाराज थे. इस पत्र ने जब उनके खिलाफ राज्य इंका में उनके विरोधियों को बढ़ावा देने का अभियान शुरू किया तो अर्जुन सिंह ने सीधी कार्रवाई की. पारिवारिक झगड़े में शांति भंग होने के अंदेशे का बहाना लेकर पुलिस ने 17 अप्रैल की मध्य रात्रि में ग्वालियर कार्यालय के सभी कर्मचारियों को बाहर करके दफ्तर को ताला लगा दिया. अगले दिन इस अखबार की सारी संपत्ति जब्त कर ली गई.

इसके बाद कई दिन तक ग्वालियर संस्करण प्रकाशित नहीं हो पाया. रमेशचंद्र ने यहां से 120 किमी दूर झांसी संस्करण के प्रेस में अखबार छपवाया. तभी ग्वालियर संस्करण फिर शुरू हुआ. बाद में अदालती आदेश के जरिए उन्होंने प्रेस और अखबार के दफ्तर पर फिर कब्जा कर लिया.

रमेश तल्खी से कहते हैं, "वे हमारी साख मिटाने पर तुले हैं." उनका यह भी मानना है कि 'नकली' अखबार छापने के लिए मुकर्रर सजा 2,000 रु. जुर्माना या छह महीने की कैद बहुत कम है. वे प्रतिद्वंद्वी को सबक सिखाने के उद्देश्य से 'भास्कर' के जबलपुर संस्करण को मात देने के लिए वहां से संस्करण शुरू करना चाहते हैं. जबलपुर संस्करण के कर्ताधर्ता उनके चाचा बी.डी. अग्रवाल हैं जो पारिवारिक लड़ाई में उनके खिलाफ हो गए हैं. उनका आरोप है कि रमेश समूचे भास्कर प्रकाशन साम्राज्य को हड़पने की कोशिश कर रहे हैं. वे कहते हैं, "अखबार जब मुनाफा देने लगा तो मुझे निकाल बाहर कर दिया गया."

यह लड़ाई दोनों ही पक्षों को बहुत महंगी पड़ रही है. मूल संस्करण के पृष्ठों की संख्या आठ से बढ़ाकर 12 करनी पड़ी. और द्वारका प्रसाद द्वारा शुरू किए गए संस्करण को विज्ञापन नहीं मिल रहे. नतीजतन, महज एक हजार कापियां छापने के लिए उन्हें प्रतिदिन 4,000 रु. खर्च करने पड़ रहे हैं. कर्मचारी भी उनके पास बहुत कम रह गए हैं.

'भास्कर' अकेला अखबार नहीं है जिसका बंटवारा हुआ हो. इस वर्ष के शुरू में 'नई दुनिया' का भी विभाजन हो चुका है, जिसमें एक साझेदार को अखबार का इंदौर संस्करण मिला, तो दूसरे को भोपाल संस्करण. राज्य में अखबारी साम्राज्य के बंटवारे को लेकर चलने वाली लड़ाइयां ज्यादातर पारिवारिक ही हैं. मगर अग्रवाल परिवार के लिए तो यह लड़ाई काफी लंबी, कड़वी और महंगी साबित हो रही है. —नरेंद्र कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपचुनाव के अभियंानकर्ता

अपनी-अपनी अदाएं

जितनी सीटें दांव पर थीं, उनसे भी ज्यादा बड़े मुद्दे दांव पर थे. 'इंडिया टुडे' ने प्रमुख अभियानकर्ताओं की प्रचार रणनीति और जन प्रतिक्रियाओं का जायजा लिया

पी.वी. नरसिंह राव

बुजुर्गियत की गरिमा

वायु सेना के एमआई-8 हेलिकॉप्टर की खिड़कियों से झांकने पर लगा कि सभा स्थल पर बहुत ही कम लोग आए हैं. सफेद धोती-कुर्ता पहने और हेलिकॉप्टर में सामने बैठे प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव को उनके निजी सचिव आर. के. खांडेकर ने बताया कि उपस्थित भीड़ करीब दो हजार लोगों की है. राव का चेहरा हमेशा की तरह अबोधगम्य रहा. कर्नाटक के धारवाड़ जिले में 9 नवंबर को हुई हावेरी की इस चुनाव सभा से ही उन्होंने खुद अपने और अपनी पार्टी के लिए बेहद महत्वपूर्ण बन गए ताजा उपचुनावों के प्रचार अभियान की शुरुआत की. उन्हें पहली बार इंका के नए जनाधार वाले नेता के रूप में पेश किया जा रहा था. पार्टी को उम्मीद थी कि वे सबसे अधिक वोट आकर्षित करने वाले पार्टी नेता के रूप में नेहरू-गांधी परिवार की जगह ले लेंगे.

राव अपने को ऐसे बुजुर्ग नेता के रूप में पेश करना चाहते थे जिसने अपने पद की गरिमा बनाए रखी है

राव ने उपचुनावों में प्रचार न करने की प्रधानमंत्रियों की परंपरा भी तोड़ी. इसलिए कि कई बातें दांव पर लगी थीं. इंका अगर इस उपचुनाव में 15 में से अधिकांश लोकसभा सीटें जीत लेती है तो वह निचले सदन में साधारण बहुमत पाने के करीब पहुंच जाएगी. और यह इस बात का संकेत भी होगा कि मतदाता सरकार के अब तक के कामकाज से संतुष्ट हैं.

राव जैसे ही हेलिकॉप्टर से उतरे, यह साफ हो गया कि उनकी शैली दिवंगत राजीव गांधी से एकदम अलग है. 20 फुट ऊंचे मंच पर वे राजीव की तरह धड़धड़ाते हुए नहीं बल्कि सधे कदमों से चढ़े. भीड़ का अभिवादन भी उन्होंने चेहरे पर बिना कोई मुस्कान लाए किया. लोगों से घुलने-मिलने, महिलाओं की ओर माला फेंकने की राजीव वाली अदाएं भी नदारद थीं.

और राव ने जैसे ही बोलना शुरू किया यह साफ हो गया कि वे अपनी कैसी छवि पेश करना चाहते हैं. वे जानते थे कि उनमें राजीव जैसा उ करिश्मा व उत्तराधिकार नहीं है. अपनी उम्र को ध्यान में रख वे अपने को एक ऐसे बुजुर्ग राजनेता के रूप में प्रस्तुत करना थे जो परिपक्वता के साथ देश का शासन चला सकता है. अपने पद की गरिमा बनाए रखी है, और लोगों को सरल भ बताना चाहते थे कि उन्होंने देश के लिए क्या किया है.

संयम एवं आत्मविश्वास से हिंदी बोलने की उनकी क्षमता शैली काबिलेतारीफ थी. जैसे-जैसे उनके भाषण में गरमी उनका लहजा बातचीत का हो गया. उनके भाषण के दौरान

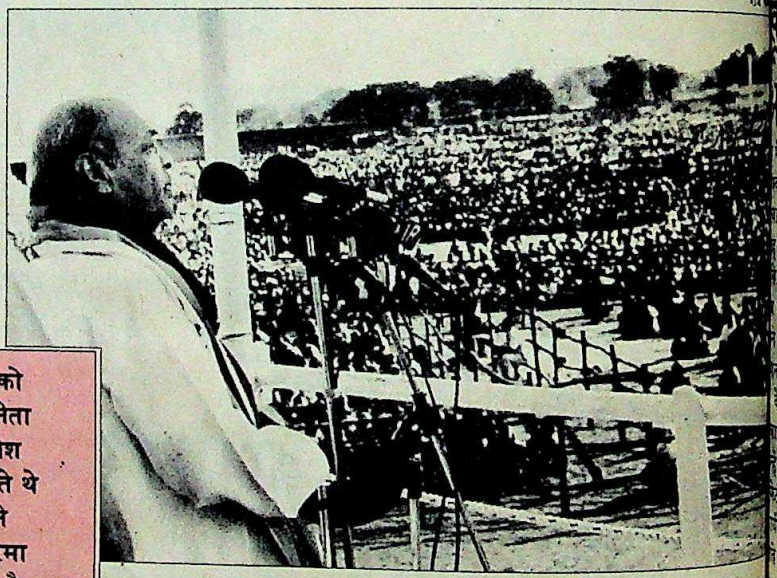

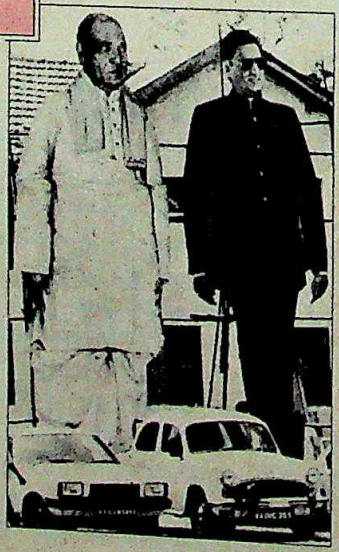

हंसे भी व तालियां भी बजीं. अपनी आ नीतियों का ब्यौरा देते हुए एक मौके उन्होंने कहा, "मैंने लाइसेंसिंग को पूरी त खत्म कर दिया है. मैंने दरवाजे पूरी तरह दिए. मैने बोल्ट-वोल्ट भी फेंक दिए." इस शुरू में बहुत कम दिखने वाली भीड़ धीरे बढ़ने लगी और 7,000 तक पहुंच ज्यादातर लोगों ने यह सोचा था प्रधानमंत्री देर से आएंगे. वे जब बोलने लगा कि जनता से उनका अच्छा रिश्ता गया है. सभा में आए खेतिहर मजदूर माधव ने कहा, "वे अच्छे, बुजुर्ग आदमी हैं जिन पर हम भरोसा कर सकते हैं जिनकी इज्जत कर सकते हैं."

अगला पड़ाव महाराष्ट्र के औरंगाबाद में नांदेड़ था. इस चुनाव क्षेत्र में चार सिख आबादी है और खुफिया रिपोर्टों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि आतंकवादी इस इलाके में सक्रिय हैं. दरअसल विशेष दल के अधिकारियों ने प्रधानमंत्री को इस क्षेत्र में न जाने की दी थी. लेकिन संदेहों को उन्होंने दरकिनार कर दिया. वहां की प्रतिक्रिया उत्साहजनक थी. करीब 30 हजार लोग आए स्थानीय पुलिस ने बताया कि यह उतनी ही भीड़ थी जितनी के लिए जुटी थी. यहां राव ने बुलेटप्रूफ जैकेट या शीशे का नहीं लिया. लेकिन दो अंगरक्षक उनके अगल-बगल खड़े थे. जब तक राव रफ्तार पकड़ चुके थे. इस सभा में उन्होंने कहा, सीटों की जरूरत मुझे दूसरी पार्टियों की तुलना में कहीं ज्यादा अगर भाजपा को या जनता दल को कुछ और सीटें मिल जाती तो उन्हें क्या फर्क पड़ेगा. लेकिन अगर ये इंका को मिलती हैं तो सरकार का यह झमेला खत्म हो जाएगा और देश ज्यादा हो जाएगा." फिर उन्होंने कहा, "लोग कहते हैं कि राजीव इंदिरा जी ने उपचुनावों में प्रचार नहीं किया. लेकिन उन्हें 15 की वैसी जरूरत नहीं थी जैसी आज मुझे है."

जैसा कि राव ने उस शाम को बाद में वायुसेना के विशेष विमान बोइंग 737 में 'इंडिया टुडे' से कहा, "मेरा काम लोगों को यह बताना है कि बहुमत के लिए हमें इन 15 सीटों की जरूरत है. और मेरा मानना है कि वे इस बात को समझते हैं और इंका से सहानुभूति रखते हैं." अपने भाषणों में उन्होंने मंडल या मंदिर मुद्दे का कहीं कोई जिक्र तक नहीं किया. उनका तर्क था. "मेरा मानना है कि ये मुद्दे सुलझने की दिशा में हैं और चुनावों में मतदाताओं को लुभाने के लिए विभाजनकारी कारक के रूप में इनका इस्तेमाल नहीं होना चाहिए." इसके अलावा अधिकांश समय वे अपनी सरकार की आर्थिक नीतियों और उपलब्धियों पर बोले मगर महंगाई के सवाल से कन्नी काटते रहे.

जाहिर है, वे अपनी पार्टी के लिए चतुर प्रचारक बन गए हैं. वे जानते हैं कि किस बात पर कब जोर देना है, कब राजीव का नाम लेना है, कब नहीं. और ऐसा करते हुए वे न तो सड़कछाप नेता लगते हैं, न भीड़ से तालियां बजवा लेने वाले बाजीगर. वे अपने को कांग्रेस (इ) के निर्विवाद नेता के रूप में पेश करने की अपनी कोशिश में भी लगभग सफल रहे.

—राज चेंगप्पा

नाथ प्रताप सिंह

टा गाड़कर बैठ गए

मेठी के मतदाता अगर यह मान बैठे कि इस सीट के लिए उपचुनाव 'कैप्टन' और 'राजा' के बीच अहं की लड़ाई दान बन गया है तो यह उनकी गलती नहीं थी. पूर्व प्रधानमंत्री नाथ प्रताप सिंह ने यहां जिस तरह खूंटा गाड़ दिया उससे इंका सतीश शर्मा मुश्किल में पड़ गए. और तो और, वी.पी. की तेजी से खुद जनता दल के प्रत्याशी राम सिंह भी परेशान राजा साहब ने बाकी में चुनाव अभियान शुरू से पहले ही अमेठी में खेमा गाड़ दिया था. खुद एक अथक रहे हैं. और इसमें भी मजा भी आता है. में उन्होंने थकाऊ क्रम रखा. मगर सुबह ही वे धूल भरे रास्तों निकल पड़ते. उनकी देहातों में जाती और वे 20 से 25 तक सभाएं जो देर रात तक सुबह ही वे अपने योगियों के साथ रणनीति करते. उनके पास पॉकेट डायरी में आंकड़े और वाही दर्ज होते. वे इस चुनाव को कितना महत्व दे रहे थे यह इसी से था कि चुनाव अभियान की पूरी जिम्मेदारी खुद ओढ़ ली थी. प्रचार प्रबंधक और मुख्य कर्ता से लेकर रणनीति नियंता तक. राजमोहन प्रकाश आंबेडकर और चंद्रजीत यादव को होने तक इस क्षेत्र में ही रहने को कहा गया. चुनाव कार्यक्रम का पालन न करने वाले जनता दल के वरिष्ठ नेताओं से उन्होंने नाराजगी भी जताई. अपने एक सहयोगी को निर्देश दिया, "लालू, शरद, रामविलास और मुफ्ती से संपर्क करो और उनसे दो दिन यहां गुजारने को कहो."

लेकिन वी.पी. सिंह के लिए राह एकदम सुगम नहीं रही. फैजाबाद जाते हुए उनकी गिरफ्तारी से उनके अभियान को बल मिला लेकिन बिहार का उनका दौरा फीका रहा. वे जनता दल प्रत्याशी नीतीश कुमार के साथ एक चुनाव सभा को संबोधित करने बाढ़ पहुंचे तो लोगों का एक समूह, जिसमें अधिकांश युवा थे, पहली कतार से उछल-कूद मचाने लगा. उन्होंने वी.पी. सिंह विरोधी नारे लगाए और काले झंडे लहराए.

आर.के. गुप्ता

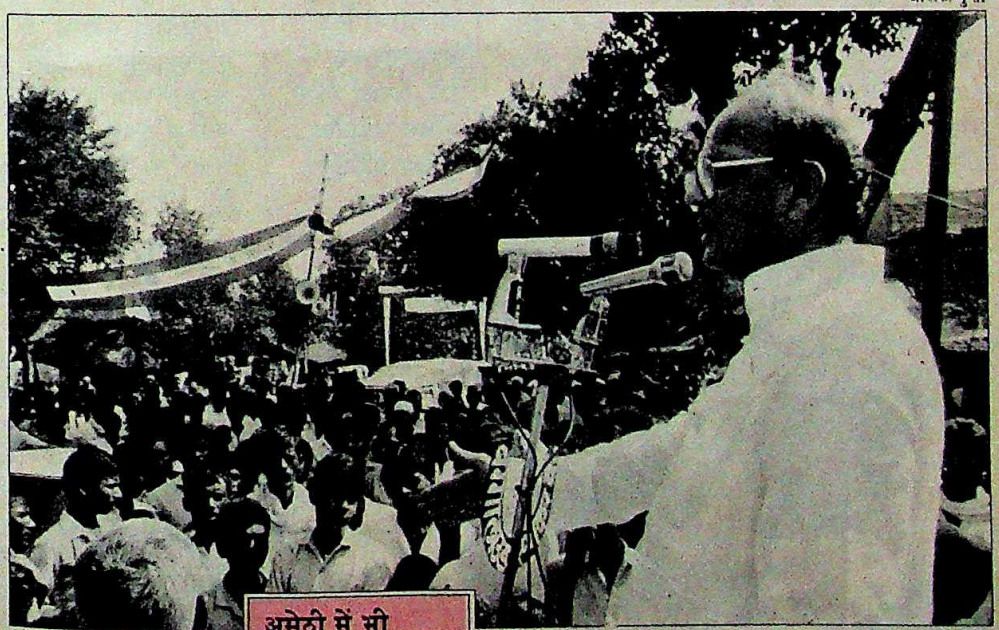

अमेठी में भी राजा का बहुत करिश्मा नहीं दिख रहा था. पर वे इस सबसे बेफिक्र से लग रहे थे

अमेठी में भी राजा का बहुत करिश्मा नहीं दिख रहा था. न पहले वाला जन उत्साह दिखा और न ही उनके साथ पहले की तरह जीपों में सवार समर्थक घूमते नजर आए. लेकिन वी.पी. सिंह इस सबसे बेफिक्र दिखे. उनका कहना था, "हमने जानबूझकर बहुत तामझाम नहीं किया. असली बात यह है कि मतदाताओं तक अपना संदेश पहुंचे." वे लोगों को यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझाते फिर रहे थे कि इस चुनाव में दिल्ली या लखनऊ की सरकार का फैसला तो नहीं होगा मगर वे सोच-समझकर वोट डालें तो सत्ता में बैठे लोगों के होश ठिकाने आ जाएंगे. वे इंका और भाजपा दोनों को सबक सिखाने की अपील लोगों से करते. लेकिन मार्के की बात यह है कि सामाजिक न्याय के अपने नारे को वे नहीं उछाल रहे थे और न ही वे राजीव या उनके परिवार पर कोई टिप्पणी कर रहे थे. महंगाई, सांप्रदायिकता, खाद पर रियायत आदि मुद्दों पर ही वे जोर देते रहे. मतदाताओं को उन्होंने याद दिलाया कि सतीश शर्मा उन लोगों में हैं जिन्होंने खाद पर रियायत खत्म करने का समर्थन किया था. ठेठ अवधी में भाषण देकर कई जगह उन्होंने अच्छी पैठ बनाई. मसलन—"मामला साफ है. जे स्वीमिंग पूल मा नहात हो, शर्मा के वोट दे दई. और जे पोखरा में या कुआं पर ऊ सब राम सिंह का."

इस तरह उन्होंने मतदाताओं की नब्ज पर हाथ टिकाए रखा. उन्हें एहसास था कि मुकाबला कठिन है मगर उन्होंने कहा, "उम्मीद इस बात से बंधती है कि लोगों में अपनी बात कहने की प्रबल इच्छा देख रहा हूं." फैसला जो भी हो, राजा के लिए दांव ऊंचे हैं. अगर वे सफल हो जाते हैं तो फिर उनकी धाक जम जाएगी और अगर उनका उम्मीदवार दूसरे नंबर पर रहा तो वे यह साबित कर देंगे कि हिंदी क्षेत्र में उनका जादू अभी कायम है और फिलहाल उनकी अनदेखी नहीं की जा सकती.

—जावेद एम. अंसारी, अमेठी से

लालकृष्ण आडवाणी

न वो लहर, न वो तेवर

महज एक साल पहले उनकी रथयात्रा ने पूरे देश को झकझोर दिया था. लालकृष्ण आडवाणी का राम रथ जैसे किसी प्रतिशोधी सेना का नेतृत्व करता दिख रहा था. उनके लिए जो आदर था वह विस्मय में डालने वाला था. युवा और वृद्ध, ग्रामीण और शहरी, धनी और गरीब एक-दूसरे को पीछे धकेलते उनके पांव छूने और आशीर्वाद लेने आगे बढ़ते नजर आते थे. इस रथयात्रा से जो धार्मिक भावना उभरी उसने चुनाव में भाजपा को लोकसभा की 119 सीटें और उत्तर प्रदेश में सत्ता दिला दी.

लेकिन पिछले हफ्ते आडवाणी जब उपचुनाव के प्रचार के सिलसिले में बिहार में गया पहुंचे तो माहौल पहले वाला नहीं था. वह भगवा लहर कहीं नजर नहीं आ रही थी. आडवाणी खुद भी बदले हुए लगे—अधिक मानवीय, अधिक सांसारिक और अधिक मिलनसार. वे गंभीर राजनेता के रूप में ही बरताव करते नजर आए. आसमानी रंग की मारुति-1000 से वे जहां भी गए भगवा लहराते और 'जय श्रीराम' का नारा लगाते युवक कहीं नहीं दिखे.

आडवाणी खुद भी बदले हुए लगे. उनका रवैया अधिक मानवीय, अधिक सांसारिक और अधिक मिलनसार था

आडवाणी का लहजा एवं तेवर भी साफ तौर पर बदला हुआ था. मुस्लिम बहुल शेरघाटी, टेकारी और भाजपा के गढ़ गया में उन्होंने लोगों से कहा, उन्हें बिखरती पार्टियों और भाजपा में से एक को चुनना है क्योंकि भविष्य उसी का है. जनता दल नेताओं के ही बयानों का—मसलन "यह दल तो पूरी तरह बीमार है," या "जनता दल एक बुद्धिहीन प्रयोग था"—भी उन्होंने बखूबी इस्तेमाल किया. अयोध्या अब मुख्य विषय नहीं रहा. अब वे श्रोताओं से वहां मंदिर बनाने का संकल्प नहीं जाहिर करवाते. पिछली बार के विपरीत इस बार वे कहते हैं, "अयोध्या धार्मिक मुद्दा नहीं है. यह मुसलमानों के खिलाफ नहीं है. यह एकता, सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है."

आडवाणी को सुनने जुटी भीड़ का चरित्र भी अलग दिखा. राम रथयात्रा के बाद गया की यह उनकी पहली यात्रा थी लेकिन भीड़ शांत एवं सम्मानपूर्ण खामोशी लिए थी. पिछले साल जब आडवाणी का रथ आया था, पूरा शहर और आसपास के गांव सड़कों पर उतर आए थे.

रणनीति साफ है: पार्टी को उदार एवं अनुशासित संगठन के रूप में पेश करना, न कि उत्तेजना फैलाने वाले संगठन के रूप में. मकसद भाजपा इतने वोट पा सके कि पार्टी उपचुनावों को जनमत संग्रह बता सके. आडवाणी कहते हैं, "इस चुनाव के नतीजों से सरकार नहीं बदलेगी. लेकिन उस दिशा का संकेत मिलेगा जिधर जनता देश को ले जाना चाहती है." वे केंद्र सरकार को दिहाड़ी मजदूर जैसा बताते.

कृष्ण मुरारी किशन

दरअसल, आडवाणी संभावित मध्यावधि चुनाव या अगले आम चुनाव के लिए जमीन तैयार कर रहे थे. अल्पसंख्यकों को भरोसा, परिपक्वता, स्पष्ट चिंतन का इजहार और सबसे ऊपर विनयशीलता का प्रदर्शन—ये सभी उसी दिशा में बढ़ने के परिश्रमपूर्ण प्रयास हैं. यही कारण है कि जब भीड़ नारे लगाती है कि 'अगला प्रधानमंत्री—लालकृष्ण आडवाणी' तो यह सुनने के आदी हो चुके आडवाणी इस पर आधा मुस्करा भर देते हैं.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अटका फैसला

नॉर्थ ब्लॉक में इन दिनों जोड़-तोड़ की जबरदस्त कोशिशें चल रही हैं. अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि कई औद्योगिक घराने राजस्व सचिव के पद पर अपने-अपने उम्मीदवार को बैठाने की जुगत भिड़ा रहे हैं. इस पद का कार्यभार पहली बार वित्त सचिव को अतिरिक्त कार्यभार के बतौर सौंपा गया है. नए पद पर नियुक्ति से पहले वित्त सचिव के.पी. गीताकृष्णन राजस्व विभाग के सर्वेसर्वा थे. आईएएस और आईआरएस के कुछ अधिकारी गीताकृष्णन को दोहरा कार्यभार सौंपे जाने से खफा हैं. प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली, मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति के पास राजस्व सचिव पद के लिए तीन नामों की सिफारिश की फाइलें पड़ी हैं. अभी तक कोई फैसला नहीं हो पाया है.

तेल की धार

अनेक लोग जानते हैं कि खजूर के तेल के मामले में मलेशिया का दुनिया में पहला स्थान है. वह करीब 60 फीसदी तेल पैदा करता है. पिछले साल इसने 2 अरब डॉलर का तेल निर्यात किया. हां, इस कारोबार में हिंदुस्तानी कंपनियों की भूमिका को अधिक लोग नहीं जानते. मलेशिया की 37 तेल परिशोधन कंपनियों में से 3 ही भारतीय हैं पर 1990 में उन्होंने यहां एक-तिहाई तेल परिशोधित किया. इन कंपनियों के कर्ताधर्ता हैं आदित्य विक्रम और सुदर्शन कुमार बिड़ला. इससे विदेश में भारतीय कंपनियों द्वारा संयुक्त उद्यम लगाने के लिए अच्छी जमीन तैयार हुई है. नतीजतन, विदेशी मुद्रा की कमाई होगी और देसी कंपनियां अंतरराष्ट्रीय कंपनियों से जुड़ेगी.

विपणन का नजरिया

अरविंद मिल्स के प्रबंध निदेशक संजय लालभाई ने विपणन को हमेशा एक नए नजरिए से देखा है. अब वे सर्दियों में एअरकंडीशनर बेचना चाहते हैं. उनकी कंपनी एमट्रेक्स एंबिएंस प्रा.लि., हिताची की तकनीक से बने एअरकंडीशनर को बेचने का अभियान 18 नवंबर से शुरू कर रही है. कंपनियों से आग्रह किया जा रहा है कि वे अपने ही कर्मचारियों के हाथ अपना पुराना एअरकंडीशनर पांच साल के मूल्य ह्रास को ध्यान में रखकर 7,500 रु. में बेच दें. फिर वे एमट्रेक्स का नया शिजुका मॉडल खरीदें और वारंटी होने के चलते इस नई मशीन के रखरखाव का खर्च भी बचाएं. कीमत करीब 38,000 रु. होगी.

मंडली खाली

जल्दी ही औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड के कर्ताधर्ता लोगों की मंडली खाली होने जा रही है. इसके नौ सदस्यों में छह का कार्यकाल अगले साल पूरा हो रहा है. अध्यक्ष आर. गणपति का कार्यकाल जनवरी में खत्म हो रहा है. सरकारी सूत्रों का कहना है कि उनकी फिर से नियुक्ति निश्चित नहीं है. उनके बाद वरिष्ठता में एम.एस. नारायणन का नंबर आता है पर उनको भी फिर से नियुक्ति मिलने के आसार नहीं दिखते. अगले साल अन्य चार सदस्य भी अवकाश ग्रहण करेंगे. साथ ही बोर्ड के अधिकांश 30 कर्मचारियों की पांच साल की प्रतिनियुक्ति भी खत्म हो रही है, जो यहां विभिन्न मंत्रालयों से आए हैं. और फिर, वित्त मंत्रालय ने बोर्ड की नियुक्ति के नियम नए नहीं किए हैं जिसके लिए औद्योगिक कंपनियां (विशेष प्रावधान) कानून, 1985 में संशोधन की जरूरत होगी.

सूद के फायदे

अधिकांश अर्थशास्त्रियों का मानना है कि सूद की दर के मामले में असल मतलब वास्तविक दर का ही है. वास्तविक दर सूद की घोषित दर में से मुद्रास्फीति की दर निकालने से मिलती है. इसके लिए मुद्रास्फीति की दर पांच से दस वर्ष के आधार पर तय की जाती है. इस पैमाने से भारत में

चार्ट: बी.के. शर्मा

	सूद की घोषित दर	मुद्रास्फीति की दर	सूद की वास्तविक दर
हांगकांग	9.0%	7.1%	1.9%
अमेरिका	8.0	4.0	4.0
ब्रिटेन	10.5	6.1	4.4
आस्ट्रेलिया	13.5	7.8	5.7
जापान	7.0	1.3	5.7
सिंगापुर	7.3	1.5	5.8
मलेशिया	7.3	1.5	5.8
थाईलैंड	15.5	3.2	12.3
भारत	20.0	7.7	12.3
दक्षिण कोरिया	18.9	5.0	13.9

स्रोत: 'वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट, 1991 फार ईस्टर्न इकॉनॉमिक रिव्यू

सूद की दर अमेरिका और ब्रिटेन जैसे अमीर देशों की तुलना में काफी अधिक है. दक्षिण-पूर्व एशिया में भी कोई इसके बराबर नहीं है. अपवाद सिर्फ दक्षिण कोरिया है. सूद की दरें कम होने के कारण उनकी उत्पादन प्रणाली भारी पूंजी निवेश वाली है. और भारत के नीति निर्धारकों को भी यह ध्यान में रखना चाहिए.

सबक पड़ोसी से

पड़ोसी पाकिस्तान से सबक लेने के लिए यह शायद उपयुक्त समय है. निजीकरण के दूसरे दौर में वहां 3 अरब डॉलर (करीब 7,800 करोड़ रु.) मूल्य की सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को निजी क्षेत्र में दिया जा रहा है और श्रमिक समस्या से निबटने के लिए एक विशेष योजना चलाई जा रही है. इन कंपनियों के मुनाफे से सरकार एक कोष बनाएगी. जो कर्मचारी इस्तीफा दे देगा उसे इस कोष से उसकी नौकरी के बचे बाकी प्रत्येक वर्ष के लिए पांच-पांच महीने के वेतन के बराबर वेतन एक साथ दे दिया जाएगा. कर्मचारी की छंटनी के पहले कम-से-कम एक वर्ष रोजगार की गारंटी होगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

नाजुक दौर

हालांकि मौजूदा रुख उत्साह का

नए संवत 2048 के मुहूर्त पर शेयर बाजार ने शुभ संकेत ही दिए. दिवाली के दिन, 5 नवंबर को इस मौके पर जो कारोबार हुआ उसमें बाजार का रुख एकदम दिवाली के रॉकेटों की तरह ऊर्ध्वगामी ही लगा. मुंबई शेयर बाजार का संवेदनशील सूचकांक रिकार्ड 1917.96 अंक पर पहुंचा. तीन दिन बाद यह 7.16 अंक गिरा पर बाजार के उत्साह में कमी नहीं दिखी. इकॉनॉमिक टाइम्स सूचकांक भी नवंबर महीने के पहले हफ्ते में चार अंक तक चढ़ गया.

अभी बाजार बहुत ही नाजुक दौर में है. सभी प्रमुख शेयर 3 नवंबर को समाप्त पखवाड़े में चढ़े (देखें सूची) लेकिन अब जल्दी ही कंपनियों के कारोबार की छमाही रिपोर्टें आने लगेंगी और फिर मौजूदा रुख का कोई खास मतलब नहीं रह जाएगा. बाजार में एक तरफ तो सरकार की तरफ से आर्थिक सुधार जारी रखने के निश्चय के चलते उम्मीदें दिखती हैं, तो दूसरी ओर ऋण और आयात की पाबंदियों से उद्योग जगत की परेशानी के चलते आशंकाएं भी. जुलाई तक के जो आंकड़े मौजूद हैं उनसे इस अंदेशे की पुष्टि होती है. वर्ष में पहली बार औद्योगिक उत्पादन और निर्माण सूचकांकों में गिरावट आई है. अनेक कंपनियों ने अपनी विस्तार योजनाओं को टालने की बात शुरू कर दी है. यही प्रवृत्ति मजबूत हुई तो बाजार भी झटके खाएगा.

अब बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि सरकार विदेशी मुद्रा के भंडार को बढ़ाने और मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने में कितनी सफल रहती है. इससे ही मौजूदा सख्ती में ढील होगी. आयात और विदेशी मुद्रा की उपलब्धता बढ़ेगी. वित्तमंत्री मनमोहन सिंह और रिजर्व बैंक के गवर्नर आर. वेंकिटरमनन ने संकेत दिया है कि स्थिति सुधरने पर कुछ ढील मिलेगी. बाजार के लिए एक और अच्छी खबर यह है कि काला धन निकालने की सरकारी योजना सफल होती लग रही है क्योंकि जायदाद का बाजार अभी भी मंदा ही है. माना जा रहा है कि 10,000 करोड़ रु. का काला धन बाहर आएगा पर अभी इस पर बहुत लोगों को भरोसा नहीं है.

ऐसे में घूम-फिरकर बात फिर उद्योग जगत पर ही आ जाती है. चार दशकों की उठापटक को यह बरदाश्त कर चुका है. मौजूदा उदारता वाले माहौल में इसके फलने-फूलने के मौके बेहतर हैं. और बाजार अभी इसी शुभ खबर पर टिका है. यही उत्साह 1991 में ही मुंबई शेयर बाजार के संवेदनशील सूचकांक को 2000 अंक के ऊपर पहुंचा सकता है.

चार्ट: बी.के. शर्मा

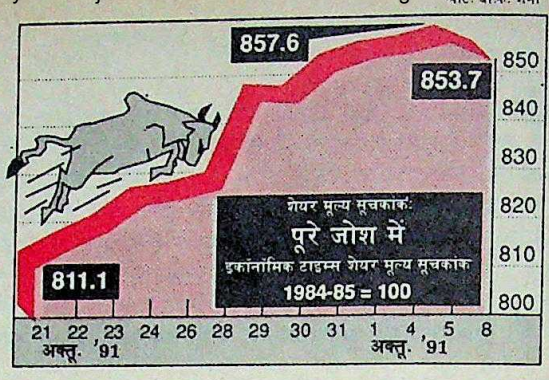

जमा स्टॉक

	1991 ऊंचा	1991 नीचा	1991 बंद 8.11.91	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	174.00	105.00	130.00	1.50+
एसो.सीमेंट	3900.00	1300.00	3535.00	370.00+
एशियन पेंट्स	325.00	215.00	307.50	48.50+
एटलस कोप्को	118.75	42.00	102.50	7.50+
बजाज ऑटो	780.00	350.00	355.00	7.50–
बड़ोदा रेयॉन	1000.00	400.00	700.00	30.00–
बाटा इंडिया	125.00	72.00	125.00	27.00+
बल्लारपुर	310.00	228.00	290.00	–
बिरला जूट	404.00	168.00	390.00	17.00+
ब्लो प्लास्ट	210.00	40.00	107.50	7.50+
बांबे डाइंग	375.00	150.00	355.00	10.00+
ब्रिटा.इंडिया	200.00	112.00	190.00	7.00–
ब्रुक बांड	172.00	116.00	139.00	2.00+
कैडबरी इंडिया	200.00	132.50	181.25	5.00+
कैस्ट्रोल इंडिया	540.00	162.50	518.75	58.75+
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	9050.00	3625.00	6910.00	1160.0+
कोलगेट पामो.	425.00	250.00	412.50	13.75+
सायनामिड.	182.50	76.25	162.50	–
डीसीएम	312.50	123.00	298.00	16.00+
डनलप	111.00	46.50	80.00	–
ईआई होटल्स	107.50	35.00	95.00	5.00–
एस्कार्ट्स	172.00	127.00	162.00	5.50+
फिनो. केबल्स	400.00	140.00	285.00	22.50+
गरवारे नाइलोन	44.00	27.00	35.00	2.00+
जी.ई. शिपिंग	111.50	25.00	101.50	11.00+
गुज.स्टेट फर्टि.	340.00	150.00	332.50	67.50+
ग्रासिम इंडिया	347.50	187.50	341.25	21.25+
गुज.अंबुजा	317.50	90.00	285.00	12.50+
हिंदु.एल्यू.	367.50	200.00	305.00	7.50–
हिंदु.सीबा	2100.00	650.00	1925.00	25.00–
हिंदुस्तान लीवर	180.00	132.50	145.00	1.25–
हिंदुस्तान मोटर्स	48.50	18.80	33.00	–
हेक्स्ट	4250.00	2400.00	3500.00	100.00
आईसीआई	86.00	30.00	78.50	4.50+
इंडियन आर्गेनिक	80.00	30.00	56.50	1.00–
इंडियन रेयॉन	269.00	104.50	247.00	12.50+
इंगरसॉल-रैंड	385.00	240.00	365.00	25.00+
आईटीसी	396.00	99.00	396.00	65.00+
जे.के.सिंथेटिक्स	74.00	27.00	55.50	7.50+
काइनेटिक इंजी.	225.00	145.00	165.00	–
किर्लो. क्युमिंस	217.50	95.00	208.75	42.50+
केएसबी पंप्स	310.00	160.00	255.00	10.00+
लार्सन ऐंड टुब्रो	163.75	90.00	130.00	8.50+
लिप्टन	187.50	57.50	180.00	22.50+
लोहिया-मशीन्स	42.50	21.00	30.00	1.00–
महिंद्रा-महिंद्रा	115.00	57.50	82.50	10.00+
मास्टरशेयर्स	42.50	20.00	26.50	1.50+
मोटर इंडस्ट्रीज	1900.00	675.00	1875.00	250.00+
मुकुंद लिमि.	215.00	117.50	173.75	7.50+
नेशनल आर्गे.	1950.00	925.00	1540.00	140.00+
नेस्ले इंडिया	201.00	111.25	198.00	13.00+
निरलॉन	41.25	16.00	26.00	4.00+
ओरके सिल्क मि.	40.00	17.50	33.50	5.00+
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	145.00	53.00	145.00	29.00+
प्रीमियर ऑटो	69.00	30.00	49.50	–
रेमंड	212.50	110.00	189.00	10.00+
रिक्ट कॉलमैन	375.00	205.00	253.00	6.00+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	206.00	91.25	167.50	9.00+
सीमेंस इंडिया	255.00	112.50	235.00	30.50+
शॉ वैलेस	185.00	77.00	154.00	9.00+
श्रीराम फाइबर्स	79.00	33.00	70.00	6.00+
एसकेएफ बेय.	3000.00	1650.00	2675.00	75.00+
स्पिक	104.00	33.00	99.50	21.50+
टाटा स्टील	255.00	170.00	235.00	20.50+
टेल्को	347.50	142.50	332.50	18.75+
टाइटन वाचेस	105.00	58.00	100.00	8.50+
वाम ऑर्गेनिक	410.00	102.50	387.50	76.25+
वीडियोकॉन	380.00	133.75	280.00	27.50+
वोल्टास	145.00	92.50	127.50	7.50+
विमको	48.50	16.00	47.50	9.50+

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	20.3646	20.1547
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	225.4690	222.7100
बहरीन	दीनार	1	69.2598	67.3383
बांग्लादेश	टका	100	71.3470	70.1764
कनाडा	डालर	1	23.2702	23.0348
डेनमार्क	क्रोना	1	4.0913	4.0511
मिस्र	पौंड	1	8.0128	7.8151
फ्रांस	फ्रैंक	1	4.7170	4.5977
जर्मनी	मार्क	1	16.1031	15.6984
हांगकांग	डालर	1	3.3539	3.3211
इंडोनेशिया	रुपिया	100	1.3192	1.2999
ईरान	रियाल	100	–	–
इटली	लीरा	100	2.1259	2.0682
जापान	येन	100	20.3666	19.8887
केन्या	शिलिंग	1	0.8995	0.8881
कुवैत	दीनार	1	–	–
मलेशिया	डालर	1	9.4973	9.4029
मारीशस	रुपया	1	1.6317	1.6058
नेपाल	रुपया	1	0.6070	0.6056
हालैंड	गिल्डर	1	14.0850	13.9412
पाकिस्तान	रुपया	1	1.0629	1.0420
सिंगापुर	डालर	1	15.4964	15.3374
स्पेन	पेसो	1	0.2520	0.2484
श्रीलंका	रुपया	1	0.6190	0.6181
स्वीडन	क्रोना	1	4.3525	4.3068
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	18.0594	17.8721
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1189	0.1118
थाईलैंड	बहत्त	100	103.1353	100.1548
ब्रिटेन	पौंड	1	45.9559	45.8204
अमेरिका	डालर	1	26.0417	25.7808
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	7.0929	7.0203
सोवियत संघ	रूबल	1	29.9379	29.9358

स्रोत: बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 4.11.91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट्टी को छूती हुई,
झूम उठीं उसकी सख्त उंगलियां.
महक उठा इक जीवन नया.
विधाताने भी, रचा संसार सुनहरा,
मिलाते हुए भाग्य हमारा तुम्हारा.
जो चाहा वो पाया, खुशियों का खज़ाना.
न रही कोई चाहत, न कोई तमन्ना.

SIYARAM SUITINGS

COME HOME TO

THE PREMIUM SUITING BLENDS

Siyaram's

*Regd. Trade Mark of Siyaram Silk Mills Ltd., Bombay-11

PERCEPT

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Only the Ver

1992 INDIA TODAY DIARIES

COMPANION
Code: 102

POCKET DIARY
Code : 104

SLIMLINE DIARY
Code : 103

The 1992 India Today Diary set expresses an elegance associated with people who demand the very best. Attractively produced, each diary is characterised by gold leaf embossing, gilt edged pages and handy ribbon markers.* Adding style to substance – an excellence that comes with a distinct personality.

*** Except for Pocket Diary.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...est for you

...a Today ...rbook 1992

...ective time manager, the ...Today Yearbook is much ...than just a desk diary. It is a ...fully selected compendium of ...mation compiled in sections. ...diary section is laid out in an ...-to-read format.

...panion

...new Companion diary is ...ct for either carrying in your ...ase or for use as a desk ...y. It has Airline Maps, City ...es, Indian Missions abroad, ...STD Codes, International ...e ... and more.

YEA... Cod...

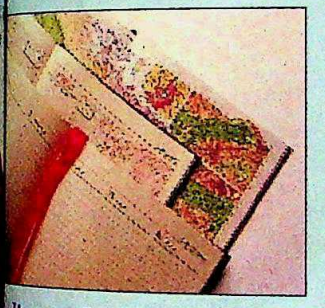

...line and Pocket Diaries

...pact and convenient, these ...es are designed to carry all ...information you need on your person. Its pages are packed with important features, including sections on hotels and essential ISD/STD codes.

Personalise these elegant diaries

Whether you order the diaries as a set or as singles. For yourself or as a gift for someone, personalise them with gold leaf embossing of upto three initials or company logo at a nominal charge.

The richness of leather. Discover its elegance.

Limited Edition Premium Diaries

The 1992 India Today Diary set also comes in premium rich brown leather. Each diary is meticulously hand crafted and impeccably finished. A handsome leather book-mark accompanies the Yearbook.

POCKET DIARY
Code : 204

COMPANION
Code : 202

YEAR BOOK
Code : 201

SLIMLINE DIARY
Code : 203

...e your selection and send in your order today.

ORDER FORM 1992

...	Product Details	Size	Price (Rs)	Quantity Ordered	Total Amount (Rs)
...	India Today Yearbook 1992 (Regular)	20.9 x 27.9 cm	295	.....	.....
...	India Today Companion (Regular)	12.7 x 19.1 cm	150	.....	.....
...	India Today Slimline Diary (Regular)	8.2 x 17.1 cm	75	.....	.....
...	India Today Pocket Diary (Regular)	7.6 x 12.0 cm	49	.....	.....
...	India Today Yearbook 1992 (Leather)	20.9 x 27.9 cm	550	.....	.....
...	India Today Companion (Leather)	12.7 x 19.1 cm	270	.....	.....
...	India Today Slimline Diary (Leather)	8.2 x 17.1 cm	165	.....	.....
...	India Today Pocket Diary (Leather)	7.6 x 12.0 cm	115	.....	.....

...Total

...for gold embossing of initials @ Rs. 10/- per diary (maximum three initials) Rs .....
...company logo embossing (not exceeding 6 Sq. Cms.) @ Rs. 10/- per diary Rs .....
...Add Rs. 15 for non Delhi cheques. Rs .....
...Total Rs .....
Rs .....

...ed in my crossed Cheque/DD No ..... dated ..... for Rs. ..... (add Rs. 15 for non Delhi ...payable to Living Media India Ltd.

...

...

Pin

An ideal gift for the New Year

Please note :

- Cheques/drafts payable at Bombay, Madras, Calcutta and Delhi must be MICR only.
- Diaries will be home delivered by Registered Post/ Courier. Please allow 6-8 weeks lead-time towards processing.
- For gift instructions, please give recipient's name and address alongwith details for embossing initials on a separate sheet.
- Minimum order for gold embossing company logo is 25 diaries. Logo artwork or positive to be supplied.
- If the order form has been used, mail your order alongwith remittance to Living Media India Ltd.
- **Offer and rates valid in India only.**

Remittance should be drawn in favour of Living Media India Ltd. and mailed alongwith your name, address and the completed order form to Living Media India Ltd., P B No. 29, New Delhi 110 001.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

...ributors interested in dealership, please write to Living Media India Ltd.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानदार! मज़ेदार!

टेस्टी गुटखा

महफिल की यही जान,
टेस्टी गुटखा लाए हर चेहरे पर मुस्कान.
स्वाद जानदार, अनुभव मज़ेदार.
टेस्टी गुटखा...अब खूब जमेगी महफिल.

जेपी उत्पादन

संवैधानिक चेतावनी : तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

INTERFACE/J.P./05A/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-44

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिना हताशा के | ब्रेक धड़ाधड़ | देन में प्रमुख | पसंद आई तो काम | करनी इसके विपरीत | मोहिनी अदाओं वाले | 14 वर्ष पूरे | कर दिखाने को बेताब | शहर से सिर्फ मसाले | हमेशा की तरह मुख्य | तमिल बाल कलाकार | उम्दा का पर्याय | वे बिक गए | करारी डांट पड़ी | कोशिश नीचा दिखाने की | इतने ही बेतरतीब | दो लाख का सौदा | बार-बार नाम दर्ज | देर से समझ | बैंक में रह चुके | दूसरे का नाम नहीं | कंपनी के चीफ | बुलंद सांड और नहीं | अब आदी हो चले | भुज की सभा के | कोई दबाव नहीं

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-44, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
5 दिसंबर 1991
उत्तर के लिए देखें:
16-31 दिसंबर 1991 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 31 अक्तूबर 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुन: होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु. दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-42 का हल

पुरस्कार विजेता

अभिषेक
सुपुत्र-गिरीश कुमार
444/14 कोठियात
पुलिस लाइन रोड
बुलंदशहर (उ.प्र.)

श्रीमती उषा गुप्ता
989 मॉडल टाउन,
यमुनानगर (हरियाणा)

राजेंद्र प्रसाद शर्मा
सुपुत्र-पूरणमल शर्मा
ख-10 प्रताप नगर
हाउसिंग बोर्ड,
अलवर (राज.)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय सेना

समता की प्रतिष्ठा

पांच साल पुरानी व्यवस्था असंतोष से चरमराई

एक अभिनव योजना चलने लायक होने से पहले ही दम तोड़ गई. सेना में मेजर जनरल और उससे ऊपर पदों वाले अधिकारियों को दो श्रेणियों में बांटने की नई योजना ने वहां भारी नाराजगी पैदा कर दी थी. 'कमांड' तथा 'प्रशासनिक' वाले इस विभाजन से अधिकारियों में आपसी ईर्ष्या फैली और साथ ही अनुशासनहीनता की समस्या भी उठती लगी.

और अब सेना अपनी पांच साल पुरानी इस नीति को बदलने की तैयारी

इस नीति का मकसद महत्वपूर्ण कमांड पदों पर अफसर को ज्यादा अरसे तक बनाए रखना था पर यह चला नहीं

कर रही है. 'इंडिया टुडे' से विशेष भेंट में सेनाध्यक्ष जनरल एस.एफ. रॉड्रिग्स ने कहा, "इसकी जगह वरिष्ठ अधिकारियों की योग्यता और उनके कामकाज के मूल्यांकन वाली प्रणाली लाई जा रही है. यह मूल्यांकन विशेष समिति करेगी."

जनरल रॉड्रिग्स का यह कदम हैरानी भरा नहीं है क्योंकि उन्होंने मौजूदा प्रणाली को कभी सही नहीं माना था. जनरल के.वी. कृष्णराव के दिमाग की उपज यह योजना जनरल अरुण वैद्य के कार्यकाल में तैयार हुई और जनरल के. सुंदरजी ने इसे लागू करने की घोषणा की थी. 'कमांड' के लिए अलग श्रेणी बनाने के पीछे मंशा यह थी कि ब्रिगेडियर और इससे ऊपर दर्जे के अधिकारियों को महत्वपूर्ण कमांड वाले पदों पर पर्याप्त लंबा कार्यकाल देना. तरक्की के मामले में उन्हें अपने साथ के अधिकारियों से न सिर्फ अधिक मौके मिले बल्कि उनके अवकाशग्रहण की अवधि भी एक साल बढ़ा दी गई थी.

लेकिन यह दवा मर्ज से भी ज्यादा जानलेवा साबित हुई. पिछले दो वर्षों के अंदर ही मेजर जनरल या उससे ऊपर दर्जे के छह अधिकारी प्रोन्नति या समय पूर्व

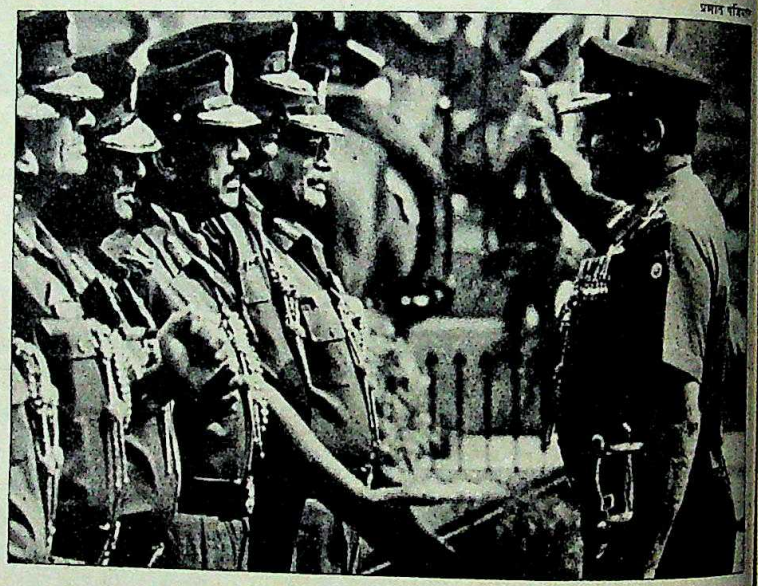

जनरल रॉड्रिग्स: नई व्यवस्था के पक्षधर

रिटायर कर दिए जाने' के मामले को लेकर सामान्य अदालतों में पहुंचे, जो सेना के रिकॉर्ड के हिसाब से बहुत ही असामान्य बात है. अदालत ने सेना के निर्णय को ही सही माना. पर इतने मामले होने का ही मतलब था कि यह व्यवस्था नुकसान देने लगी है.

यह व्यवस्था सेना के अपने मूल स्वभाव को भी रास नहीं आ रही थी. हाल में सेवानिवृत हुए एक अधिकारी ने कहा भी, "सेना में हमें कमांड के लिए ही अधिकारी दर्जे में नियुक्ति मिलती है. फिर, यह चुनाव बहुत मुश्किल हो जाता है कि कौन व्यक्ति कमांड के लायक है और कौन दफ्तर के काम के." नतीजतन, ऊंचे प्रशासनिक पदों पर भी ऐसे अधिकारी पहुंच गए हैं जिन्हें 'फील्ड' का बहुत कम अनुभव हासिल है. उधर, फील्ड वाले ऊंचे पदों पर बिना प्रशासनिक अनुभव वाले लोग पहुंच गए हैं.

जनरल रॉड्रिग्स कहते हैं, "अगर हमें लगता है कि कोई अधिकारी (प्रशासनिक श्रेणी के) किसी खास पद पर बेहतर ढंग से काम कर सकता हो तो उसकी सेवा को एक साल कम करने की सजा क्यों दी जाए? और फिर दूसरी धारा में गए अधिकारी से उसे जूनियर करने की भी कोई तुक नहीं है."

पैसे का मोल घटने से भी नजरिए में बदलाव आया है. जैसा कि सेना प्रमुख कहते हैं, "आप देखेंगे कि हमारे लोग बड़ी शान से पेश आएंगे. पर उनके कालर या कलाईबंद घिसे-फटे दिखेंगे और जूते भी चमकते नहीं होंगे क्योंकि इनके लिए उनके पास पर्याप्त पैसा नहीं होता. ऐसे में अवकाश पाने जा रहा अधिकारी सोचता है कि एक और साल नौकरी के लिए क्यों न अदालत की शरण ली जाए."

लेकिन इस प्रणाली पर रोक लगाने की प्रक्रिया—जो जनरल वी.एन. शर्मा के कार्यकाल में शुरू हुई—कुछ वक्त लेगी. सेना पर इसका क्या असर हुआ है, इसके मूल्यांकन में कुछ वक्त लगेगा. सेना को अभी असली चिंता अपने अनुशासन पर पड़ने वाले इसके कुप्रभाव की है. इसी के चलते जज एडवोकेट जनरल, मे. जनरल ए.सी. मंगला ने पांच महीने पहले सुप्रीम कोर्ट से दरख्वास्त की थी कि वह सेना के लोगों से जुड़े मामलों को जल्दी निबटाए. सुप्रीम कोर्ट ने जल्दी ही ऐसा निर्देश हाईकोर्टों को दिया. उम्मीद है कि इस प्रणाली को खत्म करने के सेना के कदम से अधिकारियों की नाराजगी कम होगी और अदालती मामले भी.

—अरुण शौरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

KYOCERA

याशिका के सरल कम्पैक्ट कैमरे

क्योंकि आपको चाहिये सुन्दर फ़ोटो, झंझट बिना, तकलीफ़ बिना!

J - मिनी

सुन्दर और लाजवाब,
याशिका का नया कम्पैक्ट कैमरा।
पूरा ऑटोमैटिक साथ बिल्ट इन फ़्लैश,
विशेष 32mm लैन्स, और अनेक खूबीयाँ।

MF-2 सूपर W/सेल्फ टाइमर

क्वालिटी याशिका की, मगर दाम वाजबी।
35mm फ़ारमैट। बड़ा, प्रकाशित व्यूफ़ाइन्डर,
बिल्ट इन फ़्लैश, आसान लोडिंग।
"टॉप आई" Cds सेन्सर की मदद से
हर फोटो सुन्दर।

AFJ2

आधुनिक टेक्नॉलोजी। पूरा ऑटोमैटिक।
बिल्ट इन फ़्लैश, और अनेक खूबीयाँ।
हर तरह की फोटोग्राफी के लिये आदर्श।
कहीं भी, कभी भी।

बस, कहिये "स्मायल प्लीज़"... और दबाइये बटन!

कैमरा हो-तो

याशिका YASHICA

KYOCERA CORPORATION. Optical Equipment Division, 27-8, 6-chome Jingumae, Shibuya-ku, Tokyo 150, Japan
"YASHICA" is a trademark of KYOCERA CORPORATION.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षेस

शिखर पर संकट

सम्मेलन की विफलता के बाद अब भारत-निंदा का जोर

एक शिखर सम्मेलन की विफलता, और भारत के खिलाफ अमर्यादित आरोपबाजी का दौर शुरू. और एक क्षेत्रीय गुट अस्थायी रूप से छिन्न-भिन्न. कोलंबो से पिछले दिनों कुल मिलाकर यही संदेश मिला. वहां सड़कों के किनारे लगे निस्तेज झंडे इस बात के द्योतक हैं कि दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस) का भविष्य कितना धूमिल है.

वैसे भी, संगठन का प्रतिनिधित्व करने वाले सात राष्ट्र प्रमुखों की सालाना बैठक से कोई ज्यादा उम्मीद नहीं की गई थी. 1985 में अस्तित्व में आने के बाद से ही 'दक्षेस' परस्पर विरोधी नेताओं के समूह जैसा रहा है जो अपना वर्चस्व दिखाने पर जोर देते रहे हैं. इस वजह से व्यापार, उद्योग, ऊर्जा, वित्त जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे दब गए हैं जबकि छोटे-मोटे मुद्दे ही अभी तक विषय-सूची में हावी रहे हैं.

शिखर बैठक एक तकनीकी मुद्दे के कारण नहीं हो पाई. वह यह कि भूटान नरेश ने अपने देश में अशांति की वजह से आखिरी क्षणों में भाग लेने में असमर्थता व्यक्त कर दी. श्रीलंका ने भूटान से अपना प्रतिनिधि भेजने का अनुरोध किया. लेकिन भारत ने कहा कि शिखर बैठक में सभी राज्य प्रमुखों की मौजूदगी अनिवार्य है. इसलिए आम राय के सिद्धांत के तहत बैठक को रद्द करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचा था.

कोलंबो का कहना है कि भूटान नरेश जिग्मे सिंघे वांगचुक का भाग न लेने का फैसला श्रीलंका को परेशान करने के लिए नई दिल्ली में रचे गए षड्यंत्र का हिस्सा है. इस्लामाबाद ने कोलंबो के इस विचार का समर्थन किया है. श्रीलंका का यह भी कहना है कि दो शिखर बैठकें ऐसी ही परिस्थितियों में हुई थीं.

विदेश राज्यमंत्री एडुआर्डो फलेरो, जो बैठक रद्द होने के समय कोलंबो में ही थे, कहते हैं, "बैठक की तैयारी में हमने भी काफी समय और ऊर्जा खर्च की. यहां तक कि प्रधानमंत्री नरसिंह राव राष्ट्रपति प्रेमदास के अनुरोध पर वहां ज्यादा समय तक ठहरने के लिए राजी हो गए थे. 'दक्षेस' हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है."

भारत का मानना है कि पिछली बैठकों और इस बैठक की परिस्थितियों में तुलना नहीं की जा सकती. काठमांडो बैठक के लिए जनरल जिया ने प्रधानमंत्री जुनेजो को मनोनीत किया था. माले बैठक में प्रेमदास ने प्रधानमंत्री को अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजा था. तकनीकी दृष्टि से दोनों ही नेता सरकार के प्रमुख थे. लेकिन जहां तक भूटान का मामला है, वहां के नरेश ही सर्वेसर्वा हैं.

विवाद का दूसरा मुद्दा यह है कि नई दिल्ली ने थिंपू को डराया-धमकाया है या नहीं. साउथ ब्लॉक ऐसी किसी भी बात से इनकार करता है. यह बात भी अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है कि भूटान फिलहाल एक गंभीर आतंकवादी समस्या का सामना कर रहा है.

यह बात भी सही है कि प्रेमदास की हेकड़ी और बार-बार की भारत-निंदा से साउथ ब्लॉक की भौंहें तनी हुई हैं. लेकिन यह बात असंभव दिखती है कि नई दिल्ली ने अपनी नाराजगी प्रकट करने के लिए दक्षेस शिखर बैठक जैसी महत्वपूर्ण चीज में टांग अड़ाई होगी. सात देशों में सबसे प्रमुख देश होने के कारण भारत को ही ज्यादा नुकसान होना है. कोलंबो में निस्संदेह सुरक्षा का खतरा था और भारतीय खुफिया एजेंसियों ने नरसिंह राव को वहां न जाने की सलाह दी थी. लेकिन राव ने उनकी सलाह नहीं मानी और भारत सरकार ने उनकी यात्रा के लिए सुरक्षा के व्यापक बंदोबस्त किए थे. यह विश्वास करना कि नई दिल्ली महज प्रेमदास को परेशान करने के लिए इतना बड़ा कदम उठाएगी, कोलंबो की नीयत में खोट ही दर्शाता है.

सबक स्पष्ट है: इस तरह की कूटनीतिक बाधाओं को दूर करने के लिए मूल चार्टर की खामियों को दूर करने की जरूरत है इसलिए भी कि प्रस्तावित नई आर्थिक पहल शुरू ही होने वाली है. आखिरकार दक्षेस की असली चुनौती भी तो वही है शिखर बैठकों के अनुभव से सीख लेकर मतभेदों को दूर करना चाहिए, न कि मुद्दे की लड़ाई में आंदोलन को ही कमजोर बना देना चाहिए.

—विनीत बाली

रेखांकन: अजीत नैनन

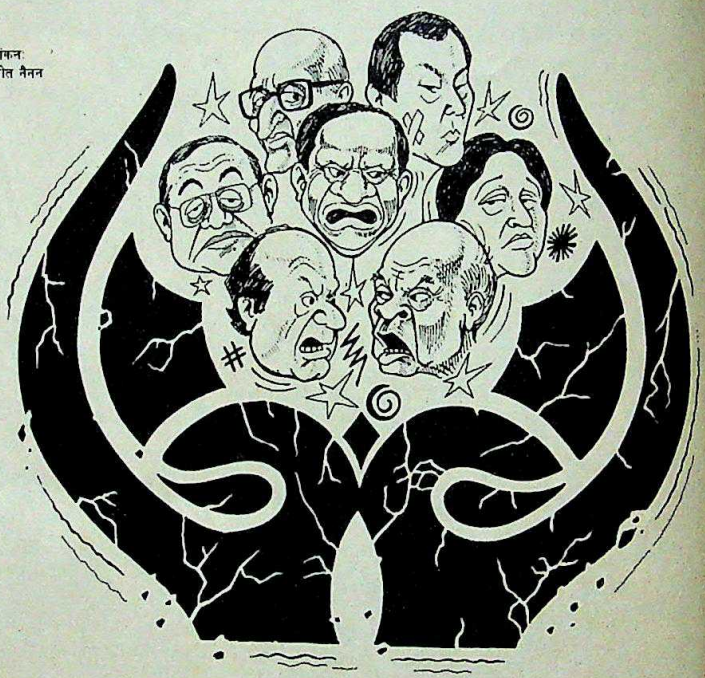

दक्षेस उन परस्पर विरोधी नेताओं का समूह बन गया है जो अपना वर्चस्व दिखाने पर जोर देते रहे हैं और इससे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रगति अवरुद्ध होती रही है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपा जैसा कोई नहीं

इस्मत आपा के बारे में हम क्या कहें. उनकी रचनाओं पर कुछ कहना छोटा मुंह, बड़ी बात होगी. उनको हम बचपन से घर में आते-जाते देखते रहे. वे उन चंद साहित्यकारों में से थीं, जिनसे मिलकर दुख नहीं होता था क्योंकि उनके कहने और करने में अंतर नहीं होता था.

आपा बातचीत में एकदम पटाखा थीं. उनके जुमले उनकी किताबों की तरह सबको हैरत में डाल देते थे. उर्दू के मुहावरे और गालियां हर समय उनके मुंह से झरती थीं. जैसे 'कम्बख्त, मुंहियारी, रंडी, नामुराद, ज़लील, कुतिया, चुड़ैल इत्यादि. हर घड़ी उन्होंने समाज से लड़ाई की. वे एक नंगी तलवार की तरह रहतीं. इस्मत चुगताई की कहानी 'लिहाफ' ने तो समाज में तहलका ही मचा दिया था. यह दो औरतों के बीच शारीरिक संबंध के विषय पर आधारित अफसाना था. उन्होंने यह अपने कॉलेज के दिनों में लिखा था. उस समय अमेरिका तक में ऐसी कहानियां सुलमसुल्ला नहीं लिखी जाती थीं. ऐसी आश्चर्यजनक बातें लिखने पर इस्मत आपा की काफी जिंदगी कोर्ट-कचहरी और जेल की धमकियों में बीती.

रिश्तों का उनको लिहाज न था. अब्बा को धमकी दे दी कि अगर वे उनको स्कूल न भेजेंगे तो घर से भाग जाएंगी. शादी उससे की, जिससे घरवालों ने मना किया. इस्मत आपा थीं बहुत भारी-भरकम. एक बार उनको अपने मियां पर प्यार आया तो एक टांग उनके पेट पर रख दी. मियां ने पूछा, "इस्मत, आदमी का दम धीरे-धीरे निकलना अच्छा है या एकदम से." जवाब मिला, "कम्बख्त एकदम से निकल जाए तो अच्छा है." मियां बोले, "तो फिर इस्मत, दूसरी टांग भी रख दो."

आपा की बेटी सीमा एअर होस्टेस रह चुकी हैं. उस जमाने में यह काम अच्छी नजर से नहीं देखा जाता था. सीमा के बारे में लोग जब उनको उड़ती अफवाहें सुनाते तो हंसकर कहतीं, "क्या हुआ, हरामी बच्चा पाल लेंगे." एक और किस्सा भी है. हम इस्मत आपा के पास बैठे हुए थे. एक तवायफ उनको बता रही थी, "मैंने शादी करने का फैसला कर लिया. शरीफ जिंदगी बिताऊंगी और कपड़े सीकर पैसा कमाऊंगी." आपा ने उसको बहुत झाड़ पिलाई, "क्यों सी-सी कर आंखें फोड़ना चाहती है. जा आराम से पेशा कर, शादी करेगी तो तेरा मर्द जीवन भर रंडी के ताने देगा."

पिछली बार जब आपा पाकिस्तान गईं तो हंगामा खड़ा कर दिया. एक साक्षात्कार में कह दिया, "अगले जन्म में मैं हरिजन पैदा होना चाहती हूं." जब पूछा गया, "क्यों?" तो कह दिया, "भई अब तो हरिजनों का ही राज आएगा. हम भी फिर मजे करेंगे."

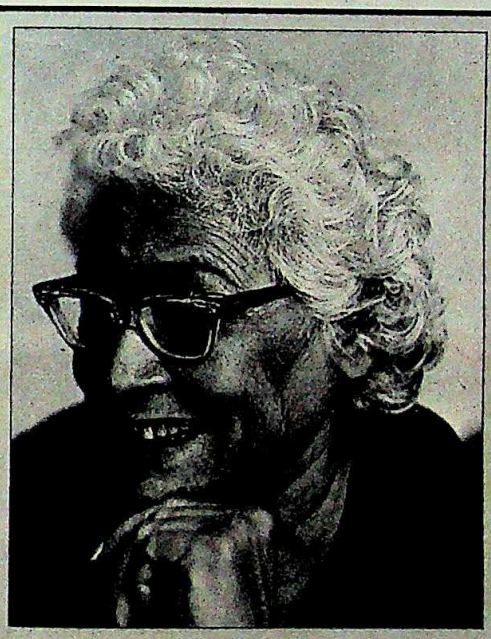

इस्मत आपा उन साहित्यकारों में थीं जिनसे मिलकर दुख नहीं होता था क्योंकि उनके कहने और करने में अंतर न था

आपा किसी को किसी काम के लिए इनकार नहीं कर सकती थीं. जब शशि कपूर ने उनको अपनी फिल्म 'जुनून' में काम करने के लिए कहा तो मान गईं. बड़ा अच्छा रोल किया. हमने जब उनकी तारीफ की तो बोलीं, "भई, मैं तो एक्टिंग नहीं कर रही थी. जेनिफर कपूर को देखकर सिर्फ रिएक्ट कर रही थी."

उन्होंने बहुत-सी यादगार फिल्में भी लिखीं. वो मुंबई में स्कूल इंस्पेक्टर की नौकरी कर रही थीं. अब तक आपा अफसाने लिखा करती थीं. जब फिल्में लिखनी शुरू कीं तो काफी पैसे मिल गए. फिर यह नौकरी छोड़ दी और बस लिखने बैठ गईं. उनकी पहली फिल्म 1942 में के. आसिफ के लिए 'छेड़छाड़' थी.

हमारे करीबियों में आपा ही एकमात्र ऐसी लेखिका थीं जो अपने लेख के पैसे लेते हुए चिढ़ जातीं. हाल में जब मध्य प्रदेश सरकार ने एक लाख रु. का पुरस्कार दिया तो परेशान हो गईं. हमसे यही कहती गईं, "इस कम्बख्त पैसे का मैं क्या करूं." बाद में इसे उन्होंने अपने नौकरों, विधवाओं में बांट दिया.

हमारी पत्रिका 'बानो' में इस्मत चुगताई हर महीने सवाल-जवाब के दो पन्ने लिखा करती थीं. कुछ महीने पहले इसके पैसे भी उन्होंने लेने बंद कर दिए. और हमें यह रकम अच्छे प्रश्न करने वालों में बांटनी पड़ी. ये खत वे बड़े प्रेम से पढ़तीं और हमसे अक्सर कहतीं, "अब मैं घर में ही रहती हूं. इन खतों के जरिए मेरा दुनिया से रिश्ता बना रहता है." बस वे इस बात पर परेशान रहतीं कि लोग मुहब्बत और नफरत जैसी बेकार बातों से आगे क्यों नहीं बढ़ते.

हम आखिरी बार उनसे अपने पति के साथ मिलने गए थे. पतिदेव ने जब उनकी लिखी किताब पर उनका हस्ताक्षर मांगा तो इस्मत आपा ने लिखा, "क्या हाथ मारा रजा तुमने." यह फिकरा देकर उन्होंने हमारी लाज रख ली.

आपा के चिता पर जलने की खबर सुनकर हमको दुख हुआ. वे तो न जलना चाहती थीं, न मिट्टी में दफन होना चाहती थीं. हमसे उन्होंने एक बार नहीं, कई बार कहा था, "मैं चाहती हूं कि मेरी लाश समुद्र में फेंक दी जाए. कम-से-कम मछलियों का तो पेट भर जाएगा."

इस्मत आपा हम आपको कहां ढूंढ़ें. आप जैसा कोई नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र

भक्त भौंचक

बलात्कार के आरोप में गुरु बंदी

(बाएं) पुलिस गिरफ्त में त्रिपाठी; और गुरु का विरोध

नागपुर में कृपालु महाराज की गिरफ्तारी से धर्म के नाम पर चल रहे शोषण का ऐसा सिलसिला सामने आया कि लोग भौंचक रह गए

यह अजीब विडंबना है. "पैसे और स्त्री का लोभ मत रखो. उनसे दूर रहो. इसके बदले जितना गुरु को दोगे, तुम्हें दस गुना मिलेगा," यह उपदेश देने वाले एक गुरु को पुलिस ने बलात्कार के आरोप में गिरफ्तार किया और कुछ पीड़ित भक्तों ने उन पर अपहरण और पैसे ऐंठने के आरोप लगाए.

उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में मनगढ़ कस्बे के बहुचर्चित 70 वर्षीय रामकृपालु त्रिपाठी उर्फ 'कृष्णावतार, भक्तियोगी, रसावतार, जगद्गुरु कृपालु महाराज' को नागपुर पुलिस ने जब हवाई अड्डे पर बंदी बनाया तो धर्म के नाम पर चल रहा एक ऐसा विकृत सिलसिला सामने आया कि लोग भौंचक रह गए.

पुलिस ने त्रिपाठी और उनके चेले प्रियाशरण महाराज के खिलाफ एफआईआर क्रमांक 147/91 में दंड संहिता की धारा 363 (नाबालिग का अपहरण), 366 (वयस्क का अपहरण) 376 (बलात्कार) और 34 (अपराध में एक से ज्यादा के शामिल होने) के तहत मामला चार महीने पहले ही दर्ज कर रखा था. इसके अलावा वह बागी हुए एक शिष्य और विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट के सामने दिए तीन पीड़ित लड़कियों के बयानों से भी लैस थी.

27 सितंबर को त्रिपाठी की गिरफ्तारी के दिन ही उनके साथ आए मशहूर वकील राम जेठमलानी ने अदालत में घंटे भर तक जिरह की पर उनके मुवक्किल को जमानत नहीं मिल सकी. और 'मैं ही राम, कृष्ण, ब्रह्मा, पैगंबर, ईसा, पृथ्वी, आकाश और पाताल हूं' का प्रवचन करने वाले त्रिपाठी से पूछताछ के लिए पुलिस ने तीन दिन का रिमांड ले लिया. बाद में उन्हें मजिस्ट्रेट रिमांड पर दस दिन सेंट्रल जेल में रखा गया. आखिर 10 अक्तूबर को सत्र न्यायाधीश देशपांडे की अदालत ने उन्हें जमानत पर रिहा किया. त्रिपाठी ने पुलिस को बताया, "मुझ पर लगे आरोप झूठे हैं. मेरे खिलाफ साजिश नितीन पंडे ने की है."

दरअसल, यह नितीन पंडे उर्फ नित्यानंद तथा एक और शिष्य कांस्टेबल राजेंद्र पांडे ही थे जो दूसरे भक्तों के साथ त्रिपाठी के विरुद्ध शिकायतों का पुलिंदा लेकर अखिल भारतीय अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के पास गए. संगठक श्याम मानव की अगुआई में 1986 में बनी समिति इससे पहले कई नामी बाबाओं के खिलाफ जन-जागरण अभियान चला चुकी है. उसके विदर्भ इकाई के अध्यक्ष उमेश चौबे और महासचिव हरीश देशमुख ने 17 अप्रैल को पुलिस आयुक्त सुरेंद्र मोहन पठानिया को त्रिपाठी की पूरे ब्यौरे के साथ लिखित शिकायत की. उन्होंने डीसीपी प्रेमकिशन जैन की अगुआई में इंस्पेक्टर देवनाथ सिंह ठाकुर और सब-इंस्पेक्टर सतीश देशमुख की जांच टीम बना दी.

जांच अधिकारियों के मुताबिक नितीन ने पुलिस को बयान दिया कि "फरवरी 91 में एक वरिष्ठ रेलवे अधिकारी के घर में कृपालु महाराज के मुकाम के दौरान उसने छिपकर देखा कि महाराज बंद कमरे में एक निर्वस्त्र युवती के साथ अश्लील हरकतें कर रहे हैं." इसके बाद उसने दूसरे भक्तों को सावधान करना शुरू कर दिया. इसी बीच पुलिस को एक ठोस शिकायत मिली. करीब तीन वर्षों से 'महाराज' की प्रचारक बनीं दो सुशिक्षित युवतियों—26 वर्षीया मीरा और 24 वर्षीया हेमा के पिता ने (जो सपरिवार महाराज के भक्त थे) धंतोली थाने में 10 मई को देर रात में प्रियाशरण महाराज के खिलाफ अपनी बेटियों के अपहरण की रिपोर्ट लिखाई. पुलिस का कहना है कि ये दोनों बहनें 'बागी हो गई थीं' इसलिए उन्हें मनगढ़ ले जाया गया. बहरहाल, पुलिस दल तुरंत मनगढ़ भेजा गया. 16 मई को प्रियाशरण को पकड़ा गया. लड़कियां भी मिल गईं. इन दोनों बहनों तथा नागपुर के ही एक अन्य भक्त परिवार की नाबालिग लड़की 14 वर्षीया सुलक्षणा के विस्फोटक बयानों के आधार पर पुलिस ने 19 मई को त्रिपाठी के खिलाफ बलात्कार का मामला दर्ज किया. इस बीच 25 मई को त्रिपाठी ने सत्र न्यायाधीश घोडेस्वार की अदालत से अग्रिम जमानत हासिल कर ली.

मीरा, हेमा और सुलक्षणा ने 20 जून से लगातार तीन दिन विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट के सामने पुलिस की गैर हाजिरी में रोंगटे खड़े करने वाले बयान दिए. बीए पास हेमा ने बयान दिया, "पहली बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1986 में जब बी.ए. (प्रथम) में पढ़ती थी तब बलात्कार हुआ. मुझसे कहा गया कि महाराज परीक्षा लेते हैं. पास हो गई तो मोक्ष प्राप्ति होगी वरना नरक प्राप्ति...1987 में मनगढ़ में बलात्कार हुआ." मीरा और सुलक्षणा ने भी ऐसे ही बयान दिए.

इन बयानों की पृष्ठभूमि में पुलिस ने त्रिपाठी की अग्रिम जमानत के विरोध में मुंबई हाईकोर्ट की नागपुर बेंचपीठ में पुनरीक्षण याचिका दायर की तो अदालत ने निचली अदालत के फैसले पर तीखी टिप्पणी करते हुए अग्रिम जमानत रद्द कर दी. न्यायाधीश बाऊ वाहणे ने फैसले में लिखा, "पीड़ित लड़कियों की कहानी दुखद वास्तविकता के समान है जिसमें संत के वेष में व्यक्ति ने मासूम लड़कियों की इज्जत से खिलवाड़ किया...ऐसे व्यक्ति को कोई छूट नहीं दी जा सकती जिसने इतने भयानक, अनैतिक, शर्मनाक अपराध ढिठाई से किए हों." इस फैसले से जांचकर्ताओं का मनोबल बढ़ा और पुलिस की टुकड़ियां त्रिपाठी को पकड़ने के लिए मसूरी, वृंदावन, दिल्ली, मुंबई और मनगढ़ भेजी गईं पर आरोपी नहीं मिला. इसी दरम्यान त्रिपाठी की ओर से सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया गया. पर कोर्ट ने 12 सितंबर को उन्हें नागपुर की अदालत में आत्मसमर्पण का आदेश दिया. हवाई अड्डे पर पुलिस ने उन्हें यह दलील देकर बंदी बनाया कि "सुप्रीम कोर्ट ने पुलिस से गिरफ्तारी का आदेश नहीं छीना है."

जांच-पड़ताल में यह तथ्य भी सामने आया कि त्रिपाठी के 10 भक्तों में समाज के हर तबके के लोग—व्यापारी, उद्योगपति, बड़े अफसर, नेता है जो देश भर में फैले हैं. एक पुलिस अधिकारी के मुताबिक, मनगढ़ के आलीशान आश्रम में सिर्फ 'महाराज' की पूजा होती है. वे दिन में तीन बार 'प्रेमदान' करते हैं."

पुलिस की बनाई सामाजिक सुरक्षा समिति के माध्यम से इस मामले से शुरू से जुड़ीं डॉ. रूपा कुलकर्णी का आरोप है कि कृपालु महाराज के बारे में मिली ज्यादातर शिकायतें लड़कियों और महिलाओं पर असंख्य लैंगिक अत्याचारों की हैं. परिस्थितियों ने इन लड़कियों के साथ तो इंसाफ नहीं किया, अब उनकी मर्मभेदी पीड़ा का शमन होने की आशा की जानी चाहिए.

—इंद्र कुमार जैन

शतरंज

नई उम्र की नई फसल

आनंद से प्रेरणा लेकर कई खिलाड़ी आ रहे

एशिया के जूनियर चैंपियन, विश्व जूनियर चैंपियन, भारत के पहले ग्रैंडमास्टर और कैंडिडेट्स क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाले पहले भारतीय. सबसे बढ़कर इसी टूर्नामेंट में कास्पारोव और कार्पोव पर विजय. 21 वर्षीय विश्वनाथन आनंद की उपलब्धियां मात्र इतनी ही नहीं हैं. उन्होंने इस देश में शतरंज को फिर से प्रतिष्ठित किया है और कई युवा खिलाड़ियों को प्रेरित किया है.

उनकी नकल करने वाले अब उन-सा इंटरनेशनल मास्टर्स को नौकरी दी, तो अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं के लिए पुरस्कार राशि बढ़ती गई.

लेकिन भारत सरकार के शब्दकोश में शतरंज तृतीय श्रेणी का खेल है. इस श्रेणी में न पैसा है, न दूसरी सुविधाएं, न नौकरियां, न ही विदेश के निर्बाध दौरे.

हाल ही में मलेशिया में आयोजित एशियाई टीम चैंपियनशिप का उदाहरण सामने है. भारत को निमंत्रण मिला लेकिन दुर्भाग्य से तीन सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी उपलब्ध नहीं थे. खेल मंत्रालय का जवाब था कि ऐसे खिलाड़ियों को बाहर जाने की मंजूरी

भाग्यश्रीः उभरती प्रतिभा

यूएनआई

आनंदः नए खिलाड़ियों के आदर्श

शरद सक्सेना

सरकार की उदासीनता, प्रोत्साहन की कमी, प्रशिक्षण का अभाव जैसी तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद देश में अंतरराष्ट्रीय स्तर के कई खिलाड़ी उभर रहे हैं

सम्मान पाने के लिए लाइन में लगे हैं. अब भारत दो ग्रैंडमास्टर और 14 इंटरनेशनल मास्टर होने का दावा कर सकता है.

भाग्यश्री थिप्से ने हाल ही में एशियाई महिला चैंपियन का खिताब जीता है. आठ वर्षीय सूर्य शेखर गांगुली दस वर्ष से कम उम्र के खिलाड़ियों की विश्व प्रतियोगिता में तीसरे नंबर पर रहे. सबसे बढ़कर तो यह कि देश में अंतरराष्ट्रीय स्तर के सौ से भी ज्यादा खिलाड़ी तैयार हो रहे हैं.

खिलाड़ियों के लिए प्रोत्साहन और पुरस्कारों का तांता भी लग गया. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने आधा दर्जन नहीं मिलेगी जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन नहीं किया है.

खेल मंत्रालय का यह रवैया इसी अबूझ पहेली को दोहराता है कि पहले अंडा बना या मुर्गी? कोई खिलाड़ी खुद को अंतरराष्ट्रीय स्तर का कैसे साबित करे? क्या राष्ट्रीय स्तर पर खेलकर?

भारत की धरती पर शुरू हुआ यह खेल फिर पनपने लगा है तो इसका श्रेय कुछ उन युवा खिलाड़ियों को जाता है जिन्होंने आनंद से प्रेरणा लेकर बरुआ की तकनीक उधार ली है. अब इस पर ध्यान देने की बारी सरकार की है.

—राहुल पाठक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिकेट

चयन में चूक

आगामी दौरों के लिए भारतीय टीम असंतुलित

भारतीय क्रिकेट टीम दावा कर सकती है कि दुनिया में उसकी बल्लेबाजी सबसे मजबूत है. पर राष्ट्रीय चयन समिति उसके खिलाड़ियों पर जैसे गाज गिराती रही है, उसका सामना शायद उम्दा से उम्दा खिलाड़ी भी न कर पाएं.

नरेन तम्हाणे की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय चयन समिति ने ऑस्ट्रेलियाई दौरे और उसके बाद होने वाले विश्व कप के लिए खिलाड़ियों के नामों पर विचार किया और हमेशा की तरह इस बार भी आश्चर्यजनक फैसले किए गए.

के. श्रीकांत, दिलीप वेंगसरकर और चंद्रकांत पंडित को टीम में वापस ले लिया गया. इनके अलावा दो नए चेहरे भी शामिल किए गए: ऑल राउंडर सौरभ गांगुली और बल्लेबाज प्रवीण आमरे. डब्ल्यू वी. रमण (जो अभी फॉर्म में नहीं हैं), लेग स्पिनर अनिल कुंबले और विनोद कांबली को टीम से बाहर कर दिया गया. कांबली का निष्कासन आश्चर्यजनक है, उन्होंने शारजाह में कुछ उम्दा पारियां खेली थीं.

मुहम्मद अजहरुद्दीन के नेतृत्व वाली नई टीम ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट शृंखला के लिए बहुत ही असंतुलित नजर आती है. इसमें जहां बल्लेबाजों की भरमार है (15 में से 10), वहीं आक्रामक गेंदबाजों का अभाव है. पूर्व सलामी बल्लेबाज और टीम के मैनेजर अब्बास अली बेग कहते हैं, "हमारे पास इतने बल्लेबाज हैं कि दूसरों को मुश्किल में डाल दें. लेकिन दुर्भाग्यवश, टेस्ट मैचों के लिए हमारी गेंदबाजी इतनी कमजोर है कि हम खुद मुश्किल में पड़ सकते हैं."

ऑस्ट्रेलियाई पिचें सख्त और उछाल लेने वाली और तेज गेंदबाजों के लिए सहायक हैं. लेकिन कई पिचें स्पिन भी लेती हैं. ऑफ स्पिनर ऑस्ट्रेलिया में प्रायः सफल रहे हैं. लेकिन चयनकर्ता सिर्फ एक नियमित लेफ्ट आर्म स्पिनर वेंकटपति राजू का चयन करके ही संतुष्ट हो गए. चयनकर्ता तेज गेंदबाजों पर ज्यादा भरोसा कर रहे हैं. जबकि सही मायने में कोई तेज गेंदबाज टीम में है ही नहीं.

बल्लेबाजों के चयन में भी चयनकर्ताओं ने झक्कीपन दिखाया है. अजहरुद्दीन के समर्थन से श्रीकांत अचानक मान्य हो गए. अजहरुद्दीन ने बैठक में इस बात पर जोर दिया कि उन्हें एक तीसरे सलामी बल्लेबाज की जरूरत है. वजह यह है कि ऑस्ट्रेलिया की उछाल वाली पिचें श्रीकांत की विस्फोटक बल्लेबाजी के अनुकूल हैं. लेकिन हकीकत यह है कि अजहरुद्दीन कप्तानी के भावी दावेदार रवि शास्त्री पर दबाव डालने के लिए श्रीकांत को ले आए हैं.

दिलीप वेंगसरकर को मध्यक्रम की बल्लेबाजी में वापस लाकर उनके साथ हुए अन्याय को दूर कर दिया गया है. लेकिन इस प्रक्रिया में कांबली को बलि का बकरा बना दिया गया, वह भी बड़े विचित्र कारणों से. वे चयन में हावी प्रसिद्ध 'कोटा' प्रणाली के शिकार हुए. हालांकि तम्हाणे इससे इनकार करते हैं लेकिन चयन प्रक्रिया में शामिल एक सदस्य ने संकेत दिया कि नए खिलाड़ियों पर नजर दौड़ाने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि क्षेत्रीयतावाद धड़ल्ले से चल रहा है.

सचाई चाहे जो हो लेकिन भारत में चयन प्रक्रिया पर खिलाड़ियों के फॉर्म और प्रदर्शन की जगह दूसरी बातें हावी रही हैं. जैसा कि पूर्व टेस्ट खिलाड़ी और राष्ट्रीय चयनकर्ता, और अब सांसद चेतन चौहान कहते हैं, "टीम में ढेर सारे परिवर्तन किए गए हैं जिनमें कई तो बेमतलब हैं." बताया जाता है कि चयनकर्ताओं की सनक के ताजा शिकार कांबली ने अपने को टीम में शामिल न किए जाने को बहुत बुरा माना है. इतना अधिक कि केंद्रीय मंत्री माधवराव सिंधिया, जो क्रिकेट बोर्ड के प्रमुख भी हैं, जब मुंबई गए तो उन्होंने कांबली को बुलाकर आश्वासन दिया कि विश्व कप में उन्हें शामिल किए जाने की अभी भी संभावना है.

चार पूर्व कप्तानों वाली इस नई टीम को यदि ऑस्ट्रेलिया में बढ़िया प्रदर्शन करना है तो उसे कई क्षेत्रों में अपनी खामियां दूर करनी होंगी. गेंदबाजी कमजोर है ही, अजहरुद्दीन को छोड़ बाकी खिलाड़ियों का क्षेत्ररक्षण भी सुस्त है. बल्लेबाजों की दौड़ में भी खामी है. इन खामियों को जब तक दूर नहीं किया जाता, कोई दैविक चमत्कार ही भारतीय टीम को टेस्ट मैचों में विजय दिला सकता है.

—राज चेंगप्पा

क्षेत्रीय कोटा के कारण कांबली छंट गए

दिलीप वेंगसरकर

विनोद कांबली

और नए शामिल खिलाड़ियों से क्षेत्रीय संतुलन बनाया गया

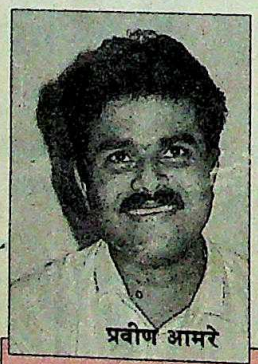
प्रवीण आमरे

के. श्रीकांत

सौरभ गांगुली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालीन निर्यात

मखमली जमीन पर उभरते पैबंद

कभी फलते-फूलते इस उद्योग को मूल्य वृद्धि, बदलती रुचियों और बढ़ती स्पर्धा के साथ-साथ बाल श्रमिकों को लेकर बदनामी के चलते मंदी का सामना

—नैतिक विश्वास,
भदोही और मिर्जापुर में

अंग्रेजी राज के दौर के विशाल बंगले, गेट के पीछे भौंकते भयावह कुत्ते और संकरी-सर्पीली गलियों में तांगों, बैलगाड़ियों और ट्रकों के बीच आगे बढ़ने का रास्ता तलाशती हुई मर्सिडीज बेंज, टोयटा व मारुति-1000 जैसी गाड़ियां.

वाराणसी के उत्तर-पश्चिम में एक घंटे की मोटर यात्रा के बाद आने वाले भदोही और मिर्जापुर कस्बों में ऐसे दृश्य आम हैं. यहां भारत के कालीन उद्योग के धुरंधरों की तूती बोलती है. दुनिया भर से कालीन के खरीदार माल लेने यहां आते हैं. कई दशकों से यह धंधा ऐसे ही चल रहा है. वर्ष 1990-91 में 539 करोड़ रु. मूल्य के कालीन निर्यात किए गए. इसमें से 80 फीसदी कालीन इसी क्षेत्र के थे.

बस इसी साल हालात बहुत अच्छे नहीं हैं. बाजार में खरीदारों की भीड़ तो है पर ऊंची कीमतें, स्पर्धा, बदलती रुचियां और बाल श्रमिकों को लेकर बदनामी आदि ने मिल-जुलकर धंधे की खटिया खड़ी कर रखी है. भदोही के निर्यातक रवि पटोदिया ने पिछले साल 5 करोड़ रु. का धंधा किया था. वे बताते हैं, "बीस साल में पहली बार हमें बहुत कम ऑर्डर मिले हैं."

अखिल भारतीय कालीन निर्माता संघ ने 1991-92 का अपना निर्यात लक्ष्य 150 करोड़ रु. घटाकर 600 करोड़ रु. कर दिया है. यह धंधे की ऋणात्मक वृद्धि दर है क्योंकि रुपए के अवमूल्यन के बाद पिछले साल वाला स्तर कायम रखने के लिए ही इस साल 650 करोड़ रु. का निर्यात होना चाहिए. घरेलू बाजार में इसकी बिक्री पर कोई फर्क नहीं पड़ा है पर यह बिक्री निर्यात की एक फीसदी ही है.

लेकिन लोगों के कामकाज पर इसका असर दिखना शुरू हो गया है. पास ही के खमरिया की सबसे पुरानी फर्म ई. हिल ऐंड कंपनी का निर्यात कारोबार 1989-90 में 9 करोड़ रु. से घटकर इसके अगले वर्ष 5 करोड़ रु. का हो गया. इस साल आंकड़ा पिछले साल वाला ही रहेगा पर डॉलर के

वर्ष 1991-92 के लिए निर्यात में अनुमानित वृद्धि भ्रामक है—दरअसल यह पिछले साल के 29.9 करोड़ डॉलर से गिरकर 23 करोड़ डॉलर रह जाएगी

नन्नी फोटो: पैबल दास

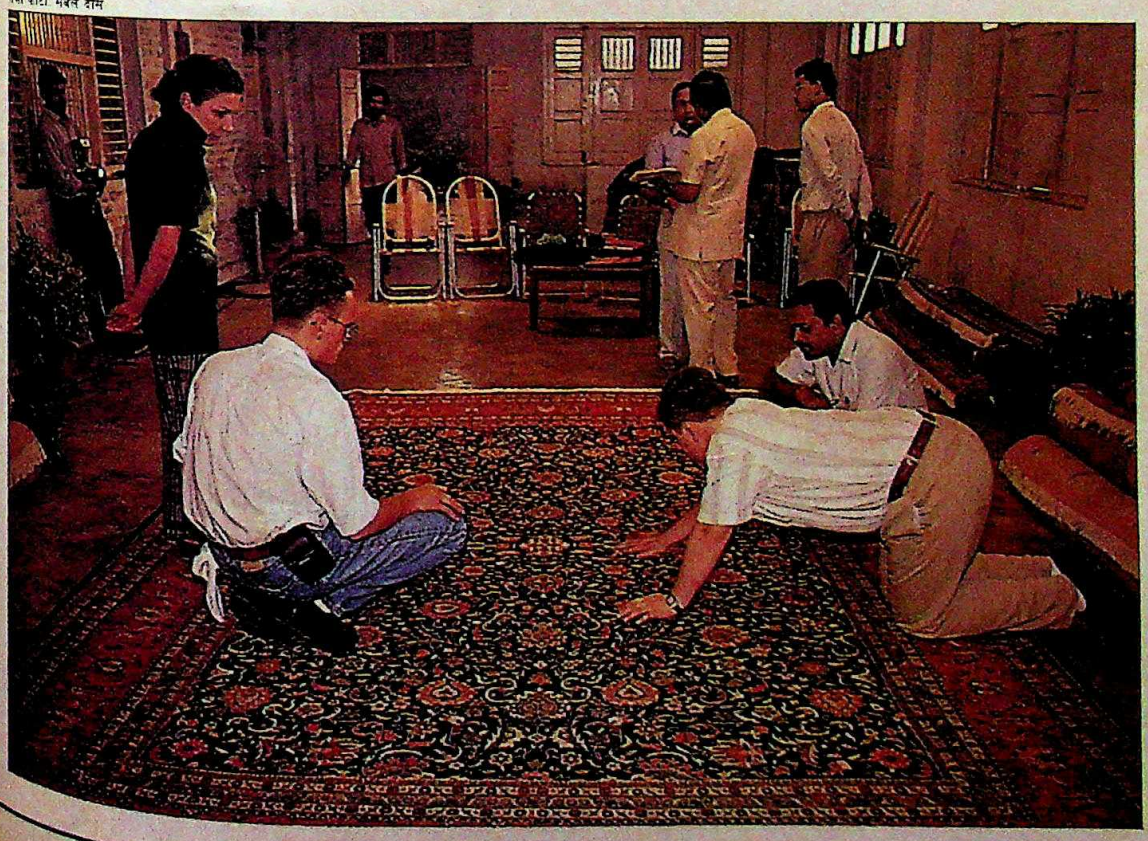

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिसाब से कम हो जाएगा. शाहजहांपुर में कालीन लादकर यहां लाने वाले अनूप कपूर को इस साल बिक्री आधी घटकर 30 लाख रु. की हो जाने की उम्मीद है. वे कहते हैं, "हालात काफी खराब हैं."

एक समस्या यह है कि भारतीय कालीन हालांकि आला दर्जे के होते हैं पर वे महंगे बहुत हैं. और यह मूल्यवृद्धि भी बहुत गलत समय पर हुई है, क्योंकि सबसे अच्छे समझे जाने वाले ईरानी कालीन की कीमतें गिर गई हैं. पाकिस्तानी, चीनी और नेपाली कालीन भारतीय कालीन के मुकाबले सस्ते होते हैं. चार फुट चौड़ा, छह फुट लंबा अच्छा कालीन 7,000 रु. से 20,000 रु. तक में मिल जाता है और मंदी से पीड़ित पश्चिम के लोग उन्हें ही चुनना पसंद करते हैं.

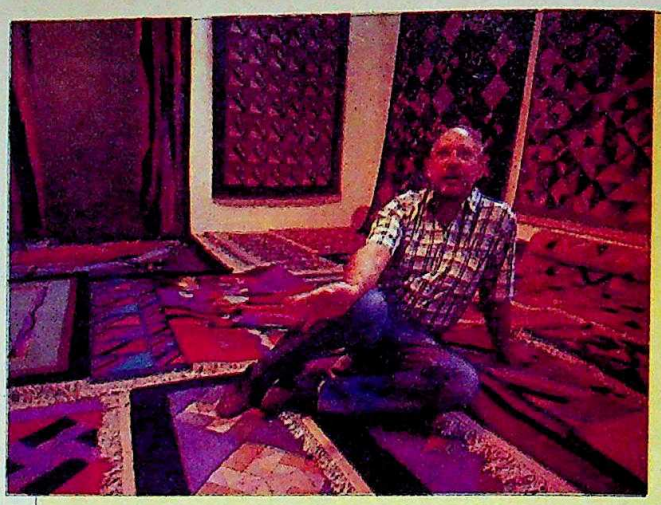

"पारंपरिक भारतीय-ईरानी कालीन का जमाना अब लद गया है. आज डिजाइनर कालीन पसंद किए जाते हैं"

जर्गेन विसेनबैख
मालिक, आईसीटी विसनबैख, फ्रैंकफुर्त

भारत के परंपरागत बाजार जर्मनी और अमेरिका ठंडे पड़े हैं. जर्मनी भारत से निर्यात होने वाले एक-तिहाई कालीन खरीदता है और अमेरिका 30 फीसदी से ज्यादा. लागत बढ़ने से हालत और खराब होने वाली है. इसका आधा कच्चा माल (धागा) आयात किया जाता है. इसकी कीमत पिछले साल सीमा शुल्क बढ़ जाने व इस साल के अवमूल्यन के कारण 65 रु. प्रति किलो से बढ़कर 150 रु. प्रति किलो हो गई है.

फिर, आजकल मांग नीले व हल्के रंग की पृष्ठभूमि वाले साधारण नक्काशी के कालीन की है. नेपाल ने बड़ी तेजी से इसे अपना लिया है और डॉलर के हिसाब से उसका धंधा 20 फीसदी सालाना की दर से बढ़ रहा है इस साल उसका निर्यात संभवतः 10 करोड़ डॉलर (260 करोड़ रु.) की सीमा पार कर जाएगा. हॉलैंड की आयातक फर्म जैन्नसेंस की प्रतिनिधि मारिया वेरहोवेन का कहना है, "पहले भारतीय कालीन खूब बिकते थे पर अब नहीं बिकते. अब नेपाली कालीन का चलन है. उनके डिजाइन नए हैं और वे भारतीय कालीन से सस्ते भी हैं."

अब लोगों का रुझान हल्के डिजाइनों वाली दरियों की ओर बढ़ रहा है. इनका निर्यात कुल निर्यात के 7 फीसदी से कुछ ज्यादा है. पिछले साल 20 करोड़ रु. के कालीन आयात करने वाली फ्रैंकफुर्त (जर्मनी) की कंपनी आईसीटी विसेनबैख के मालिक जर्गेन विसेनबैख का कहना है, "पारंपरिक शैली के भारतीय-ईरानी कालीन का जमाना अब लद गया." उनका कहना है कि पहले ईरान ने भी पारंपरिक शैली छोड़ने से मना कर दिया था पर अब वह भी बदल रहा है. यानी बाजार की जरूरत के अनुसार तेजी से डिजाइन बदले जाने चाहिए. वैसे, भारतीय बुनकर नए तरीके भी अपना रहे हैं.

बुरी खबर यह है कि भारतीय कालीन पश्चिम के उस गुट का निशाना बन गए हैं जो भारतीय सामान का बहिष्कार करता है. उनका तर्क: भारतीय कालीन उद्योग बाल श्रमिकों पर बुरी तरह निर्भर है. 5 से 12 साल की उम्र के 7.5 लाख बच्चे इस धंधे में लगे हुए हैं. 15.5 करोड़ रु. के निर्यात वाले इस धंधे की सबसे बड़ी कंपनी मिर्जापुर स्थित ओबीटी लिमिटेड के ब्रिटिश प्रबंध निदेशक एडवर्ड ओकले का कहना है, "एक दिन हमें यह खबर मिलेगी कि बाल मजदूरी की वजह से भारतीय कालीन के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया गया है. विदेशों में साख पर ही सब कुछ निर्भर है."

सरकार इस मामले में कुछ नहीं कर रही है और भदोही-मिर्जापुर के लोगों को भी रातोरात किसी चमत्कार की उम्मीद नहीं है. वे सिर्फ कम कीमत पर उम्दा माल देने की कोशिश कर सकते हैं और इस तरह दुनिया भर में साख बनाने का प्रयास भी. पटोदिया के शब्दों में, "पूरी स्थिति से हमें सबक लेना पड़ेगा."

"कभी यह खबर मिलेगी कि बाल मजदूरी के कारण भारतीय कालीन के आयात पर प्रतिबंध लग गया है"

एडवर्ड ओकले
प्रबंध निदेशक ओबीटी लि., मिर्जापुर

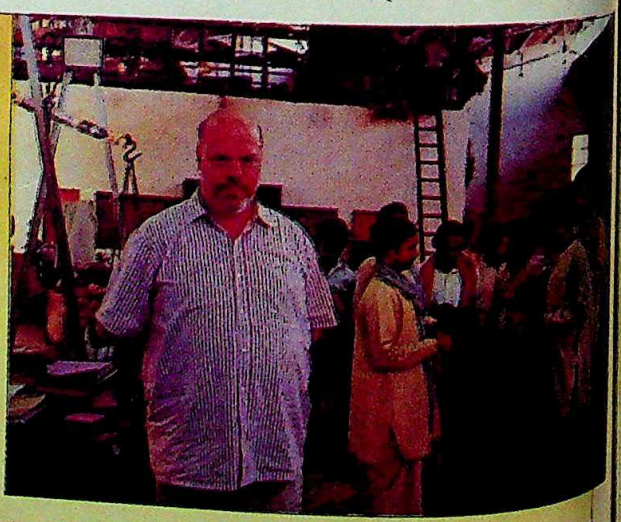

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरकाशी

मदद को तरसे भाग्यहीन

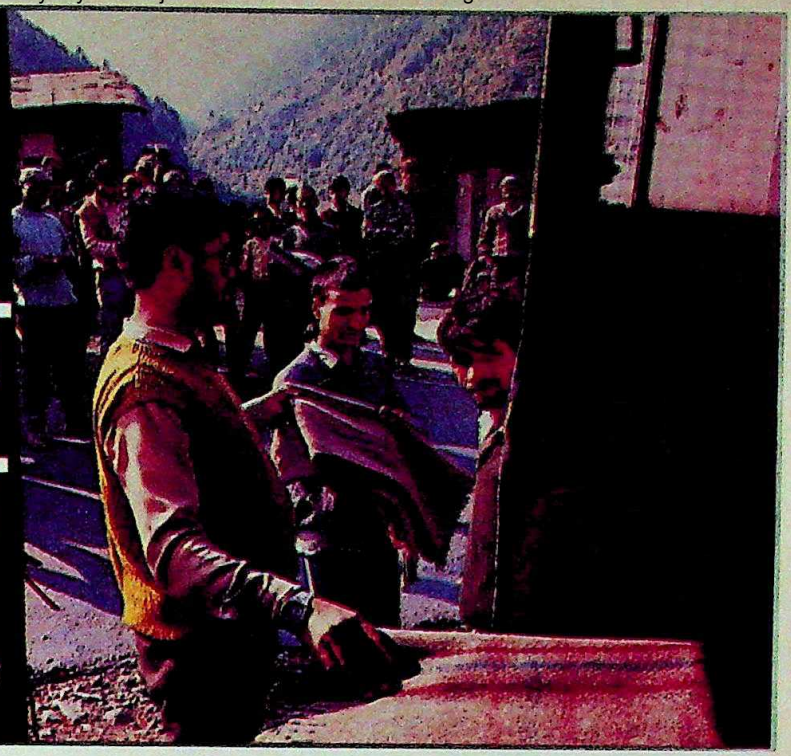

राहत सामग्री की बंदरबांट से पीड़ितों की रही-सही आस भी टूटी

–रिपोर्ट: **राहुल पाठक**; फोटो: **प्रशांत पंजियार**

भूकंप प्रभावित उत्तरकाशी जिले में मौत एक मुहावरा बन गई है, तो राहत क्रूर मजाक साबित हो रही है. हालांकि सरकारी राहत सामग्री चारों तरफ बिखरी देखी जा सकती है—कलेक्टर के दफ्तर के बाहर, ट्रकों के अंदर और ग्राम प्रधानों के घरों में—लेकिन इतनी प्रचुरता के बावजूद जिसकी लाठी उसकी भैंस की कहावत चरितार्थ होती देखी जा सकती है. जिन लोगों पर इस आपदा की मार सबसे ज्यादा पड़ी है, वे अपने हिस्से की राहत सामग्री नहीं ले पा रहे हैं और जिंदगी और मौत के बीच झूल रहे हैं.

भूकंप के एक महीने बाद भी लोगों की मुसीबतों का अंत नहीं हुआ है. कुछ तो पूरी तरह भाग्यवादी बन गए हैं. भरकोट के 38 वर्षीय बचन दास को ही लें. उनका कहना है, "जो मर गए वे किस्मत वाले थे, हम किसके लिए जिएं, और कैसे जिएं." उन जैसे सैकड़ों लोग आधे-अधूरे मन से जिंदगी के टूटे तार को जोड़ रहे हैं. सिर पर खड़ा सर्दी का मौसम उनकी मुसीबतों में और इजाफा करने जा रहा है.

तिस पर सरकारी राहत अभियान माशाअल्लाह है. पहाड़ के पर्यावरणवादी सुंदरलाल बहुगुणा कहते हैं, "लोग न आकाशवाणी की खबरें सुनना चाहते हैं, न किसी हेलिकॉप्टर को यहां देखना चाहते हैं." वजह: आकाशवाणी राहत कार्यों को बढ़ा-चढ़ाकर

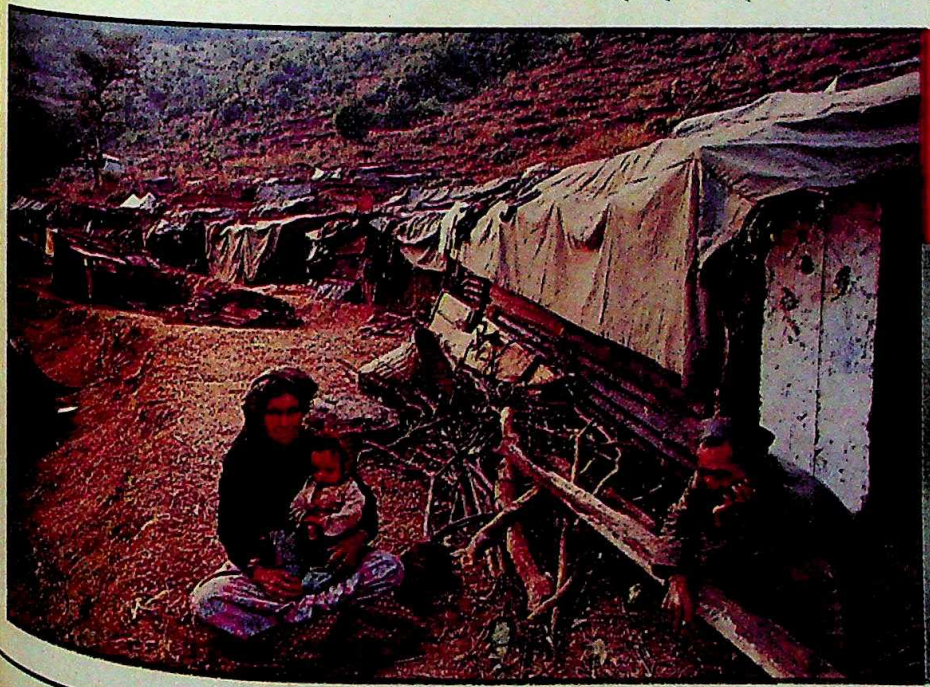

हीरा सिंह (60 वर्ष) औंगी के हैं जो चरवाहों का गांव है

"ठंड की जानलेवा मार से हम तो शायद बच जाएं लेकिन हमारे बच्चे, मवेशी कतई नहीं बचेंगे"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

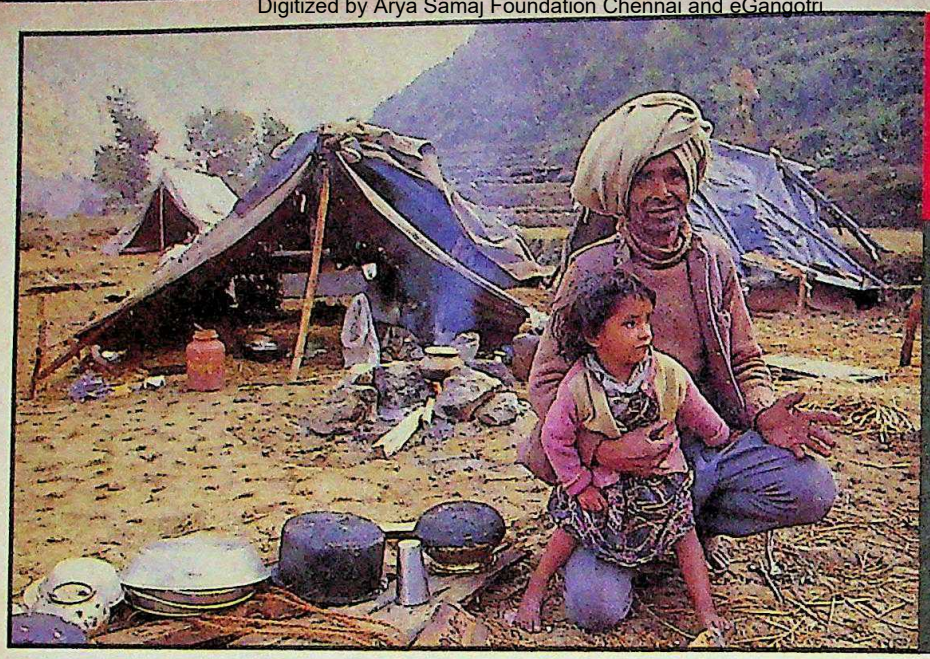

अनिरुद्ध प्रसाद (65 वर्ष) की विवाहित बेटी भूकंप में मारी गई. अब नन्ही नातिन उनके ही सहारे है

"कोई मेरे आगे चले तो मैं पीछे चलूंगा. पर बीच रास्ते में रुक गया तो मारा जाऊंगा"

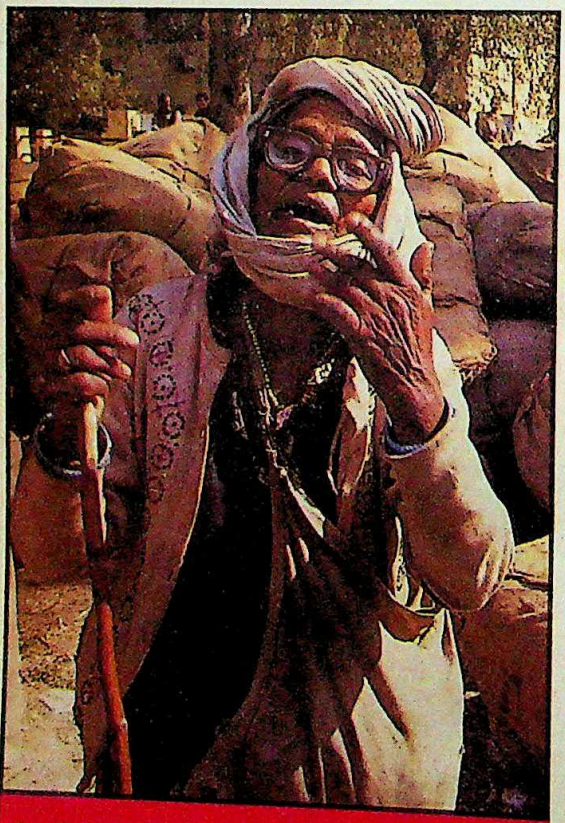

बैसाखी (70 वर्ष) को जब ग्राम प्रधान ने कंबल नहीं दिया तो वह शिकायत लेकर जिलाधिकारी के पास पहुंची

"चुनाव के दिन तो हमें मतदान केंद्र पर ले जाया जाता है और अब वे कहते हैं कि मतदाता सूची में नाम ही नहीं है"

बताती है और हेलिकॉप्टर बस दिखावे भर के लिए हैं.

पर बहुगुणा की शिकायत एकदम सटीक नहीं है. आकाशवाणी झूठ तो नहीं बोल रही. हां, आधा सच जरूर सुना रही है. सरकारी राहत कार्य सचमुच विशाल पैमाने पर चल रहे हैं. अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट यू.डी. चौबे धड़ाधड़ आंकड़े उद्धृत करते जाते हैं. गेहूं और चावल की अनगिनत बोरियां, 55,000 से ज्यादा कंबल, 25,000 से ज्यादा तंबू-तिरपाल, और नकद 60 लाख रु. से ज्यादा बांटे जा चुके हैं. लेकिन हकीकत में यह राहत अभी पीड़ितों तक पहुंची ही नहीं है. राहत कार्य चला रहे नौकरशाहों के पास कोई ठोस रणनीति नहीं है. नतीजतन, कुछ भूकंप पीड़ितों को राहत के लिए भेजे कंबल उन लोगों से 20 रु. में खरीदने पड़ रहे हैं जिन्हें इनकी जरूरत नहीं है. कुछ लोग निमोनिया की वजह से मर रहे हैं क्योंकि तापमान शून्य से पांच डिग्री सेल्सियस नीचे गोता लगा गया है, हालांकि सर्दियां अभी शबाब पर आनी हैं.

असल में दुर्घटना के बाद से ही उत्तरकाशी को ऊहापोह में उलझा दिया गया. शुरू के चार दिन तो कुछ नहीं हुआ. इसके बाद खाद्य सामग्री पहुंचनी शुरू हुई जबकि ग्रामीणों को असल जरूरत कंबलों की थी. इसलिए क्षेत्रीय आयुक्त नगेंद्र सिंह ने कंबलों के वितरण का आदेश दिया. इसके बाद कंबलों की बंदरबांट शुरू हो गई. चौबे भी मानते हैं, "ऐसे सैकड़ों लोगों को कंबल मिले, जिन्हें उनकी जरूरत ही नहीं थी." चौबे के दफ्तर के बाहर उन्नाव जेल से आए सैकड़ों बदबूदार, दीमक खाए कंबल पड़े हैं जिनके बारे में यहां के चौकीदार का कहना है, "ये तो ढोकर ले जाने के भी काबिल नहीं." पर ठंड से कांपते ढेरों लोग इन्हीं कंबलों के लिए मिन्नतें कर रहे हैं.

चौबे से मिलने आई दो बूढ़ी महिलाओं—प्रतिमा देवी और बैसाखी के चेहरे पर हताशा साफ देखी जा सकती है. भूकंप में पति और चार बच्चों को खो चुकी बैसाखी को उसके ग्राम प्रधान ने कंबल नहीं दिया. उसकी शिकायत है, "चुनाव के दिन तो हमें ही सबसे पहले मतदान केंद्र की तरफ धकेला जाता है. अब हमें बताया जा रहा है कि हमारा नाम मतदाता सूची में नहीं है. इनके लिए तो हम हैं ही नहीं." प्रतिमा देवी की व्यथा यह है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारे भाग्य में तो मौत ही लिखी है. इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम भूकंप से मरें या हमें तेंदुआ खा जाए"

मोहन लाल (34 वर्ष) भरकोट गांव के हैं. इस गांव में एक आदमखोर तेंदुए का जबरदस्त आतंक है

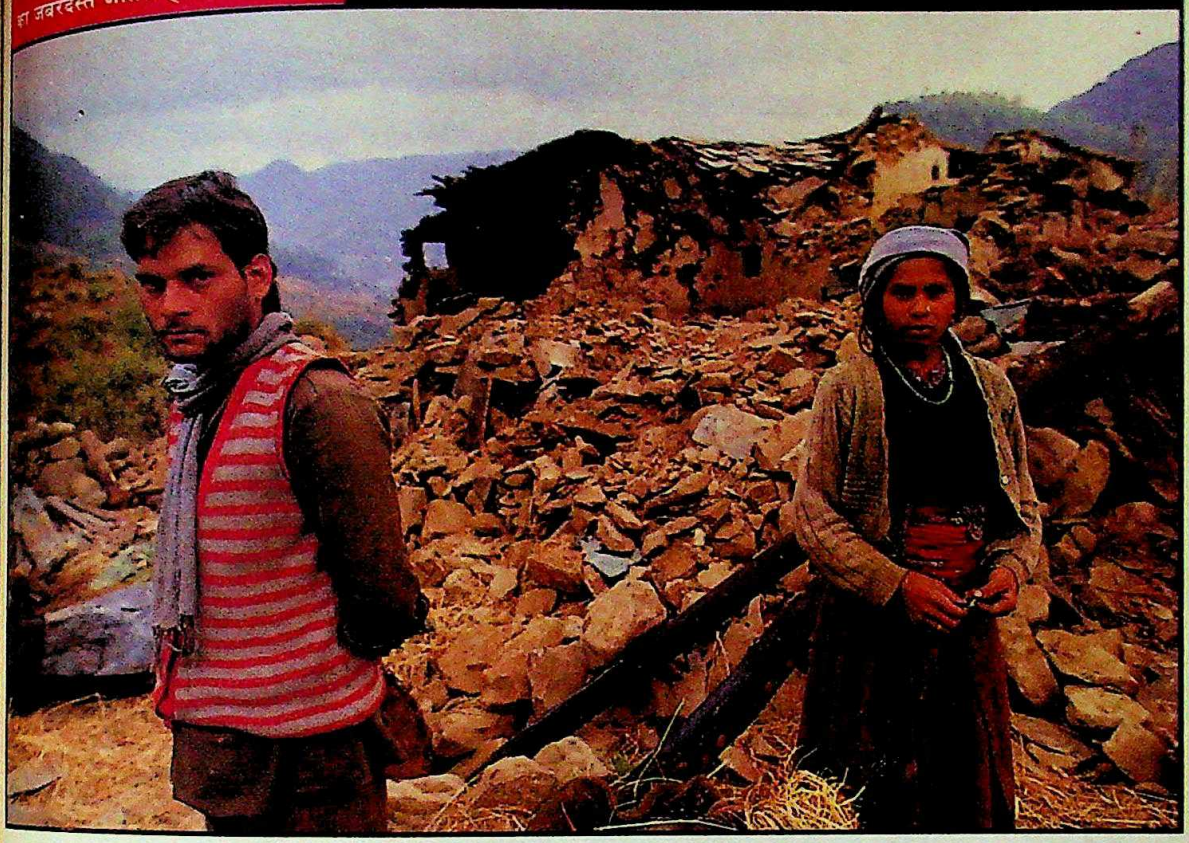

जब राहत सामग्री वहां पहुंची तो उन्हें पीछे धकेल दिया गया.

इन शिकायतों की वजह यह है कि उन्हें ग्राम प्रधान के जरिए इमदाद के लिए हाथ पसारने पड़ रहे हैं. और कई ग्राम प्रधानों ने मृत्यु को भी अपने फायदे के धंधे में तब्दील कर लिया है. चौबे भी कबूल करते हैं, "कई लोगों ने तो राहत सामग्री अपने घर में ही रख ली है." लेकिन अब तक सिर्फ एक के ही खिलाफ मामला दर्ज हो पाया है.

गांववालों को कई बाधाएं पार करनी पड़ रही हैं. प्रमुख वितरण केंद्र भटवारी में है. 80 वर्षीय सोबन दास वहां से खाली हाथ घर लौट रहे हैं. वे हरिजन हैं और राहत सामग्री उन्हें इसलिए नहीं मिली क्योंकि 50 वर्ष पहले एक राजपूत की जमीन पर उन्होंने अपना दावा पेश किया था. आज राजपूत प्रधान ने इसका बदला चुका लिया. सोबन बताते हैं, "जब मैंने प्रधान को बताया कि मैं बेघर हो गया हूं तो जवाब मिला कि ठाकुरों की जमीन पर बसने की कोशिश करने वाले हरिजनों को इससे अच्छा सबक मिल जाएगा." लेकिन सारे दरवाजे बंद नहीं हो गए हैं. जैसे, स्थानीय तहसीलदार अंतरिम मुआवजे के लिए मंजूर 750 रु. में से 500 रु. सोबन को दे चुके हैं.

वितरण केंद्र हताश लोगों से अटा नजर आता है. एक संन्यासिन को जवाब मिला कि भिक्षुओं को तंबू और कंबलों की क्या जरूरत है जबकि कियारक गांव के प्रधान शरण सिंह के घर में अनाज के कई बोरे भरे हैं और सात तंबुओं में उनके ढोर-डंगर आराम फरमा रहे हैं. जिले के ज्यादातर लोग, जिनके घर ढह गए वे भी और जिनके बचे रहे वे भी, अपने मकान छोड़ चुके हैं. उन्हें डर है कि भूकंप के किसी अगले धक्के में उनके घर जमींदोज हो जाएंगे. वैसे भी उस विनाशकारी भूकंप के बाद 45 छोटे-मोटे भूकंप यहां आ चुके हैं. इस कारण परेशान हाल प्रशासन को 30,000 बेघर लोगों की देखभाल भी करनी पड़ रही है.

सिर पर छत न होने की वजह से इनके लिए जस्ते की चादरें भी उतनी ही जरूरी हैं, जितने कि कंबल. प्रशासन ने 24,000 चादरों का आदेश दिया. लेकिन जैसा कि होता आया है, चादरों से भरे 51 ट्रक दो रात तक ऋषिकेश में खड़े रहे क्योंकि कोई भाड़ा चुकता करने वाला ही नहीं था.

लेकिन तीन प्रभावित गांवों—दिंदसारी, लूंथरू और बयाना के निवासियों की तरह दूसरे लोगों ने भी तिरपाल लगाकर छत का अस्थायी विकल्प तैयार कर लिया है. अनजुते खेतों में पनाह लेने वाले 60 परिवारों में से 12 तो बिलकुल असहाय हैं. मुसीबतों का सिलसिला अंतहीन है. 65 वर्षीय अनिरुद्र प्रसाद की बेटी भूकंप में मारी गई तो नन्ही नातिन को वे अपने पास ले आए.

अनिरुद्र अब खुद को असहाय और अंधकार से घिरा पाते हैं. यह पूछने पर कि बच्ची के पालन-पोषण के बारे में उन्होंने क्या सोचा है, उनका जवाब था, "यदि कोई मेरे आगे चले तो मैं उसके पीछे चलूंगा. पर मैं बीच रास्ते में ही रुक गया तो मारा जाऊंगा." वे अपने पशुओं को बड़े स्नेह से याद करते हैं. 7,200 रु. में खरीदी उनकी जर्सी गाय भी मारी गई. भूकंप ने 30,000 पशुओं को भी लील लिया. अब बचे-खुचे पशुओं के मालिक बड़े जतन से उनकी देखभाल करते हैं. औंगी गांव के 60 वर्षीय हीरा सिंह कहते हैं, "ठंड की मार से हम तो शायद बच जाएं लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

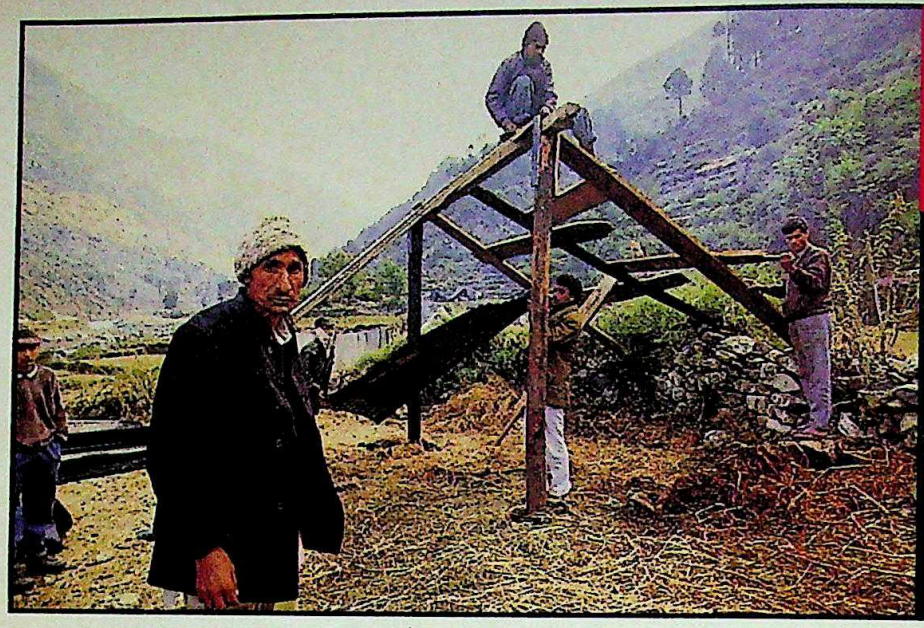

रामेश्वर (55 वर्ष) को डर है कि उनके खड़े खेत मवेशी चर गए होंगे

"मेरा बेटा भूकंप में मर गया. अब जिंदगी में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है"

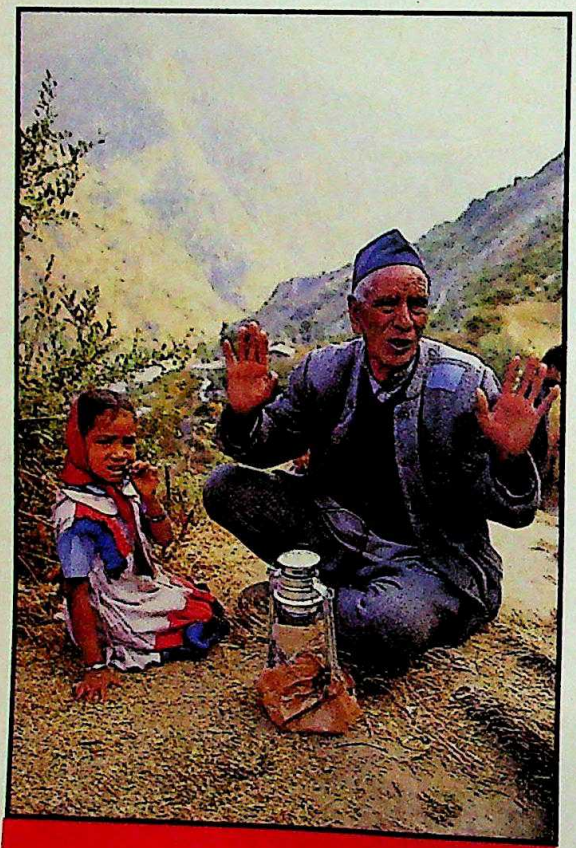

सोबन दास (80 वर्ष) प्रमुख राहत वितरण केंद्र भटवारी के पास के हैं. उन्हें ग्राम प्रधान ने खाली हाथ लौटा दिया

"प्रधान को मैंने बताया कि मैं बेघर हूं तो जवाब मिला कि ठाकुरों की जमीन पर बसने वाले हरिजनों को इससे अच्छा सबक मिलेगा"

हमारे बच्चे और जानवर नहीं बचेंगे."

सरकारी सहायता भले ही मृग-मरीचिका लगती हो, दूसरी जगहों से सहायता जरूर आ रही है. केंद्रीय हिमालय कार्य दल (चिराग) और भुवनेश्वरी महिला आश्रम ने अस्थायी गांव बसाए हैं. और अस्थायी घर बनाने में मदद कर रहे हैं. यहां मात्र एक डॉक्टर अभिजित दास हैं, जो निमोनिया के मरीजों की देखभाल कर रहे हैं. यहां पानी का एकमात्र स्रोत कीचड़ और मलमूत्र से घिरा है जिससे महामारी फैलने का अंदेशा है.

पीड़ितों के साथ डेरा डाले पड़े सामाजिक कार्यकर्ताओं को जिला प्रशासन से अत्यल्प मदद मिली है क्योंकि राहत कार्यों के आर्थिक और प्रबंधकीय पहलू के अलावा राजनैतिक पहलू भी हैं. अफसरों ने उनसे कहा है कि राहत सामग्री उन्हें आरएसएस के जरिए मिलेगी. आरएसएस की उत्तरकाशी इकाई के प्रमुख ज्ञानचंद कहते हैं, "प्रशासन ने हमें बहुत सहयोग दिया. गैस सिलिंडर और वाहन भी मुहैया कराए." लेकिन कांग्रेस (इ) के नेताओं, कार्यकर्ताओं को लगता है कि संघ वाले हादसे से फायदा उठा रहे हैं.

राजनैतिक लाभ-हानि के गणित ने हालात बिगाड़ने में ही योगदान किया है. बेघरों की समस्या पहले ही विकराल थी. अब उत्तरकाशी से सटे गांव भरकोट के निवासियों के सामने एक और समस्या आ खड़ी हुई है. घर ढहने के बाद खुले मैदान में सोने को मजबूर ग्रामीणों को एक आदमखोर तेंदुए के हमलों का सामना करना पड़ रहा है. मलबा हो चुके अपने घर के आगे खड़े 34 वर्षीय माखनलाल कहते हैं, "हमारे भाग्य में मौत ही लिखी है. इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम भूकंप से मरें या तेंदुआ हमें खाए." छह महीने बाद इन लोगों को और बुरे दिन देखने पड़ेंगे. भूकंप ऐसे मौके पर आया है जब धान की फसल कटने को थी और गेहूं की बुवाई होनी थी. जमीन के खासे बड़े टुकड़े के मालिक 55 वर्षीय रामेश्वर कहते हैं कि उनकी खड़ी फसल अब तक पशु चर गए होंगे. रामेश्वर को जिंदगी में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है. वे कहते हैं, "मेरा बेटा मर गया. अब मेरा कुछ भी करने को मन नहीं करता."

रामेश्वर, सोबन दास, बैसाखी जैसे लोगों के लिए, जो जीने की इच्छा भी गंवा चुके हों, इससे बुरे दिन और क्या होंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषों के लिए आधुनिक घड़ी, जिसके मेन डायल पर है एक अनोखा सेकन्ड डायल. Rs.1150*

टाइटन की क्लासीक. बारीक पसन्द की पहचान.

हीरे और मोती का फ़र्क तो सबको नज़र आता है. पर हीरों में कोहिनूर की पहचान के लिए चाहिए नज़र की बारीकी.

वो नज़र जो स्वयं टिक जाती है टाइटन की क्लासीक पर. घड़ियों का एक ख़ज़ाना जिसमें १८ और २३ कैरेट गोल्ड प्लेटिंग की दोहरी पत के रूप को उभारता है शानदार लैदर स्ट्रैप. और आपको मिलती हैं शानदार घड़ियाँ जिनमें झलकता है पुराना राजसी अन्दाज़ या आधुनिक शान-शौकत.

टाइटन की क्लासीक एक पसन्द है ४०० से ज़्यादा अन्तर्राष्ट्रीय क्वॉर्ट्ज़ घड़ियों के खज़ाने से. हर घड़ी के साथ आपको मिलेगा टाटा के नाम का भरोसा और २ साल की गारण्टी.

टाइटन की क्लासीक. फ़र्क शान का. बारीक पहचान का.

Classique

Rs. 944* Rs. 944* Rs. 908* Rs. 835* Rs. 835*

TITAN
QUARTZ
The Changing Face Of Time

* दिल्ली में लागू सभी कर इस क़ीमत में शामिल हैं.

Ogilvy & Mather 3348 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Q'3 86 70
27301 22
MACHINE WASH CO
DURABLE PRESS
CYCLE, ONLY NON-
CHLORINE BLEACH
IF NEEDED
TUMBLE DRY LOW
WARM IRON IF
NEEDED.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सही वॉशिंग मशीन के चुनाव में आपकी सहायता करते हैं

मिस्टर लिवाइ स्ट्रौस

...करने की बात है कि लिवाइस जैसे ...सारे कपड़ों को एक ही चीज़ चाहिए... ...में ठंडे पानी से धुलाई और ये बात ...विदेशों में निर्मित कपड़ों के साथ ही ...स्वदेशी कपड़ें भी इसी की मांग करते ...लेकिन गर्म पानी क्यों नहीं? इसलिए कि ...पानी से आपको कुछ इस तरह के ...नाम मिलते हैः रंग का उड़ना, कपड़ों ...सिलवटें और धागों का कमज़ोर होना।

पूरी तरह ऑटोमेटिक

बस इसलिए ठंडे पानी (10°-40°C) की सिफ़ारिश की जाती है। लेकिन क्या ठंडे पानी से भी बेहतरीन सफ़ाई मिल सकती है? जी हाँ, क्यों नहीं ! खास इसलिए तो ये अनोखा एजिटेटर धुलाई सिस्टम बनाया गया ...टी वी एस वॉशिंग मशीन की जान है और बिलकुल इन्सानी हाथों की तरह काम करता है। कपड़ों को मसलने की इसकी ये क्रिया ठंडे पानी में भी बेहतरीन धुलाई करती है और अड़ियल से अड़ियल मैल को भी खींच निकालती है। इसके अनोखे 'रोल ओवर एक्शन' (कपड़ों को ऊपर – नीचे करने की क्रिया) के कारण कपड़ों को कोई नुकसान नहीं पहूंचता। और तो और, इतना सारा काम ये दूसरे कई वॉशिंग मशीनों से 50% कम बिजली खर्च करके निपटाती है। मैल के लिए ये बातें ज़रूर डराने वाली है, मगर आपके लिए...

तीन साल की वॉरंटी

दिल लुभाने वाली।

धन्यवाद मिस्टर स्ट्रौस !

TVS AGITATOR WASH

सफ़ाई में कमाल . सही देख भाल

...या के सर्वप्रथम उपकरण निर्माता Whirlpool CORPORATION यु.एस.ए. के सहयोग से निर्मित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

TWL 1001 C1 2738 HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

◆ 'वर्ल्ड दिस वीक' हिंदी में? जी हां, प्रणय रॉय जल्दी ही इसे हिंदी में लेकर आ रहे हैं. यह बहुचर्चित कार्यक्रम भाषायी अड़ंगे के कारण फिल्म आधारित कार्यक्रमों अथवा रात 9 बजे वाले धारावाहिकों की लोकप्रियता के स्तर को कभी नहीं छू पाया. अब 'वर्ल्ड दिस वीक' की चांदी हो गई है. कार्यक्रम बिलकुल अंग्रेजी वाला ही होगा, बस कमेंट्री भर हिंदी में होगी और लोग जो कुछ बोलेंगे उसके सबटाइटल हिंदी में लिख दिए जाएंगे.

◆ तकषी शिवशंकर पिल्लै की मशहूर कृति 'कयर' अंततः छोटे परदे पर आ ही गई. लेखक जिसे 'केरल का सामंती इतिहास' कहते हैं वह छिटपुट कमियों के बावजूद एम.एस. सथ्यू के निर्देशन में बहुत खूबसूरती से दूरदर्शन के परदे पर आ गया है. सारा हो-हल्ला उस एक दृश्य पर था जिसमें एक औरत सजा से बचने के लिए अपने वस्त्र उतार फेंकती है. बस इसे वयस्कों का समय माने जाने वाली देर रात में रखने के लिए इतना कारण काफी था. दिल्ली दूरदर्शन आखिर कब सयाना होगा? इस उपन्यास को जिस समझदारी और परिपक्वता से सथ्यू ने फिल्माया है, उसके लिए वे निश्चित ही प्रशंसा के पात्र हैं.

◆ टीपू सुलतान अब कन्नड भाषा में दिखाया जाने वाला है. यानी शामत आई कन्नड़ के धारावाहिक निर्माताओं की जिन्होंने आंदोलन छेड़ने की धमकी भी दे रखी है. बंगलूर दूरदर्शन ने इसके डब किए हुए 60 प्रकरण खरीदे हैं. आम तौर पर दिल्ली दूरदर्शन राष्ट्रीय नेटवर्क कार्यक्रमों के अनुवाद की अनुमति नहीं देता. यहां तक कि रामानंद सागर ने तमिल में 'रामायण' के लिए बहुत जोर लगाया था. लेकिन इस बार कर्नाटक के मुख्यमंत्री बंगारप्पा ने इसके डब किए गए संस्करण के लिए दबाव डाला. अगर ऐसा होता है और यह परिपाटी बन जाती है तो 'चाणक्य' भी बहुभाषी धारावाहिक हो जाएगा. अगर दिल्ली दूरदर्शन क्षेत्रीय भाषाओं में डबिंग की इजाजत नहीं देता तो सबटाइटल तो उपलब्ध करा ही सकता है.

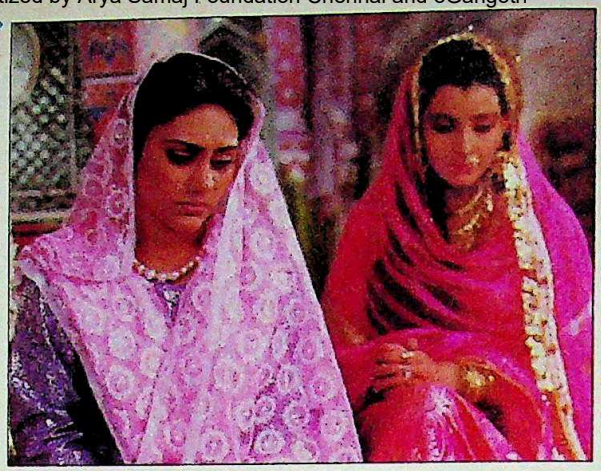

▲ 'टीपू सुलतान' में दीपिका और तिवारीः भाषायी सीमा से ऊपर

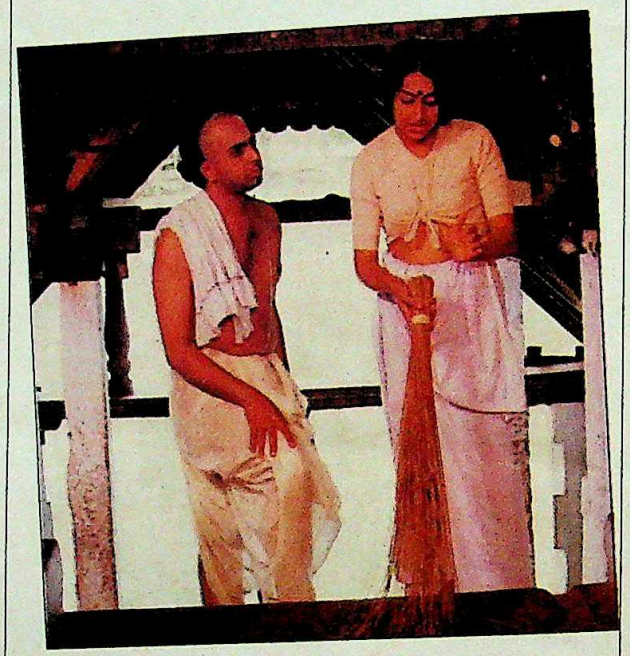

▲ 'कयर' धारावाहिक का दृश्यः सयानेपन की बातें

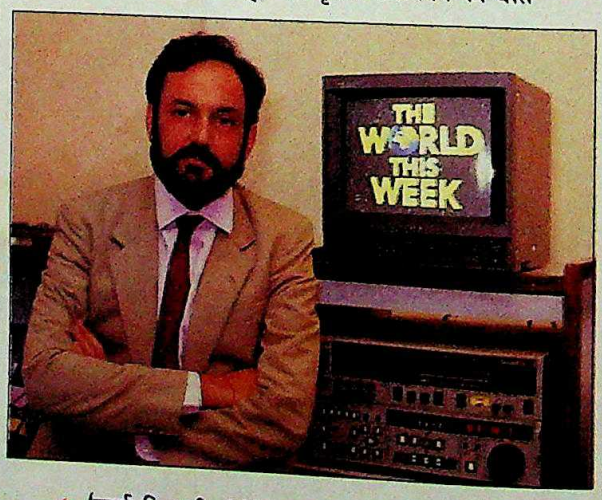

▲ 'वर्ल्ड दिस वीक' में प्रणय रॉयः दोऊ हाथ बटोरिए

◆ दीदी ने फिल्म बनाई तो छोटी क्यों पीछे रहे? इसीलिए उषा मंगेशकर छोटे परदे के दर्शकों को 'फूलवंती' के दर्शन कराने जा रही हैं. 10 एपीसोड के इस सीरियल का नाम भले ही गावदी-सा हो लेकिन पात्र और कहानी रसदार हैं. नृत्यांगना फूलवंती (अर्चना जोगलेकर) ने शास्त्री जी यानी अपने गुरु (अरुण गोविल) से शर्त लगी है कि यदि नृत्य के मुकाबले में वह उनसे हार जाएगी तो उनकी दासी हो जाएगी. वह हार जाती है और अपनी गठरी लेकर सचमुच शास्त्री जी के घर पहुंच जाती है. अब शास्त्री जी परेशान क्योंकि घर में बीवी तो पहले से मौजूद है. लेकिन खूबसूरत और जवान स्त्री समर्पण भाव से सेवा करे तो विश्वामित्र भी फिदा हो जाते हैं पर दीदी की फिल्म 'लेकिन' की तरह उषा ने भी इस दिलचस्प कहानी का करुण अंत किया है. संगीत हृदयनाथ मंगेशकर का है. इससे कुछ हो न हो 'राम' की वापसी जरूर हो गई है.

◆ टीवी के हिंदी समाचार वाचकों की गरदन जैसे इन दिनों फंस गई है. वे अब बंद गले के कोट या बंडी में नजर आने लगे हैं. दूरदर्शन मुख्यालय ने उन्हें 'प्रिंस कोट' पहनकर समाचार पढ़ने का निर्देश दिया है. लेकिन अंग्रेजी समाचार वाचकों को इससे मुक्त रखा. इसकी वजह तो दूरदर्शन ही जाने. बहरहाल, हिंदी समाचार वाचक ऐसे लगते हैं मानो शादी की दावत उड़ाते-उड़ाते समाचार-कक्ष में आ बैठे हों.

◆ एक समय था जब प्रायोजक उन लोगों के पीछे-पीछे भागते थे जिनके हाथ में टीवी सीरियल की स्वीकृति भर की चिट्ठी होती थी. लेकिन घटिया सीरियलों ने प्रायोजकों की भीड़ को छांटकर रख दिया है. ढेरों सीरियल प्रायोजक के इंतजार में हैं. पर 'सुनहरे वर्क' सीरियल ने तो एक नई परंपरा शुरू कर दी है. इसका प्रायोजक सीरियल को बीच में चलता छोड़ ही भाग खड़ा जिससे इसका प्रसारण बीच में ही रोकना पड़ा. माल ही घटिया तो खरीदारों को दोष देने का क्या फायदा.

— मधु जैन और प्रदीप सरदाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊटी

जन्नत का भरपूर भोग

हिंदी फिल्मों के निर्माताओं का रुख अब इस पर्वतीय सैरगाह की ओर

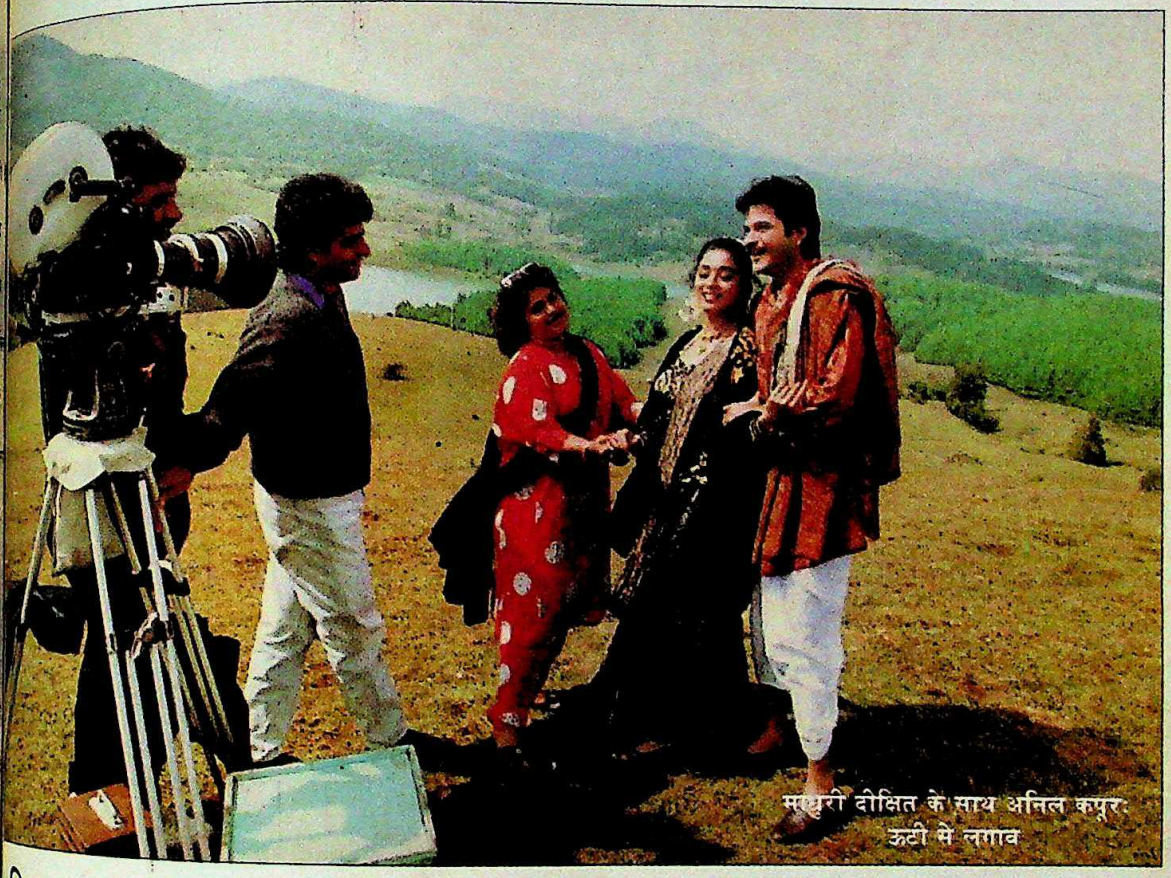

माधुरी दीक्षित के साथ अनिल कपूर: ऊटी में लगाव

नीलगिरि पर्वतश्रृंखला की मलिका ऊटी अब मुंबइया फिल्मों के शैदाइयों की नई 'जन्नत' बन गई है. शूटिंग के लिए हिंदी फिल्म निर्माताओं के पहले से ऊटी की ओर रुख करने से अंग्रेजी राज के दिनों की यह पर्वतीय सैरगाह एक छोटे फिल्म स्टुडियो जैसी दिखने लगी है.

यह रुख इसी साल की शुरुआत में तब जब निर्माता, निर्देशक, अभिनेता और यूनिट की पूरी फिल्म यूनिटें इन नीली, धुंध भरी पहाड़ियों की ओर बढ़ने लगीं. हालांकि भारतीय निर्देशक तो ऊटी में वर्षों से शूटिंग करते रहे हैं लेकिन मुंबइया फिल्मवालों के लिए इस 'जन्नत' के दरवाजे अब खुले हैं. ऊटी के वाशिंदे यहां फिल्माई गई हिट हिंदी फिल्मों को बड़े गर्व से गिनाते हैं—'हम', 'दिल', 'आशिकी', 'दिल कि मानता नहीं', 'साजन' आदि. अभिनेत्री माधुरी दीक्षित कहती हैं, "मेरी फिल्मों में करीब 95 फीसदी की शूटिंग ऊटी में ही हुई है."

मैं ऊटी के प्रति वैसे ही आसक्त हूं जैसे कुत्ता हड्डी से. मैं इससे मुक्ति पाना नहीं चाहता"

महेश भट्ट
फिल्म निर्देशक

यह स्थान कई मायनों में फायदेमंद भी हैं. मुंबई से यहां सीधे पहुंचा जा सकता है, आवास और मजदूर सस्ते हैं, दक्षिण भारतीय फिल्म केंद्रों—बंगलूर और मद्रास— के नजदीक होने से साजोसामान और जूनियर आर्टिस्ट उपलब्ध है.

महत्वपूर्ण बात तो यह है कि कश्मीर और उत्तर प्रदेश के पहाड़ी इलाकों में आतंकवाद के चलते पहुंच असंभव हो जाने से ऊटी आदर्श विकल्प साबित हो रही है. ऊटी में ऋषि कपूर को लेकर 'दीवाना' बना रहे ललित कपूर कहते हैं, "मैंने शिमला को पसंद किया होता पर हालात अच्छे न होने के कारण मैंने ऊटी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललित कपूर की 'दीवाना' का दृश्य

चुना.'' ऐसा करने वाले वे अकेले नहीं हैं. ऊटी में 'कर्ज', 'हीरो', और 'राम लखन' जैसी हिट फिल्मों की शूटिंग कर चुके सुभाष घई कहते हैं, ''कश्मीर की जगह इसे चुनना पड़ा तो क्या? आज हर दूसरी फिल्म की शूटिंग यहां हो रही है.''

और यहां की छटा ही मनोरम नहीं है, यहां ब्रिटिश काल की आलीशान इमारतें भी हैं. 'हम' के कुछ बेहतरीन दृश्य ब्रिटिश काल के बंगलों और लॉजों में ही फिल्माए गए थे. अब ताज समूह के होटल में परिवर्तित फर्नहिल पैलेस, तमिलनाडु सरकार के अतिथि गृह तमिषगम और सदियों पुराने बाटलीबोई हाउस जैसे निजी बंगले फिल्मों में दिखने लगे हैं.

ऊटी में रहने वाले उद्यमी भी इस मौके का फायदे उठाने में पीछे नहीं हैं. नए होटल खुल रहे हैं और जेनरेटर तथा फिल्मी उपकरण मुहैया कराने वाली दुकानें चांदी काट रही हैं. असल में फिल्मी लोगों के यहां पांव पड़ने के साथ जिंसों के दाम आसमान छूने लगे हैं. यहां के निवासी तिरुमूर्ति कहते हैं, ''आजकल ऊटी में रहना खर्चीला हो गया है.''

ए. जगन्नाथन जैसे उद्यमी दलाल फिल्मवालों को वाहन मुहैया कराने से लेकर हवाई जहाज और रेल के आरक्षण, उपकरण का प्रबंध और होटल में जगह दिलवाने जैसी हर जरूरत पूरी करके पैसा बना रहे हैं. वे निर्देशकों को घने जंगलों में लोकेशन तक भी सुझाते हैं.

ऊटी को कश्मीर के बदले चुनना पड़ा तो क्या? यह जगह बेहतरीन है''

सुभाष घई
फिल्म निर्देशक

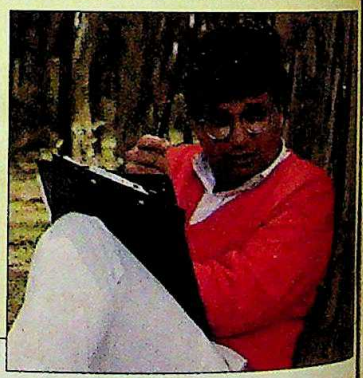

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें इस स्थान से लगाव हो गया है, जैसे अभिनेता मिथुन चक्रवर्ती और निर्देशक महेश भट्ट. हाल ही में 'आशिकी' और 'दिल है कि मानता नहीं' की ऊटी में शूटिंग कर चुके महेश भट्ट कहते हैं, ''मैं ऊटी के प्रति वैसा ही आसक्त हूं जैसे कुत्ता हड्डी से होता है. मैं इससे मुक्ति पाना नहीं चाहता.'' मिथुन ने तो पड़ोस के कुन्नूर में फिल्मवालों के लिए होटल ही खोल लिया है. और अगले साल वे ऊटी में ही एक लैक्जरी होटल खोलने की सोच रहे हैं.

कई लोग तो यहां चैन से समय बिताने पहुंचते हैं. सैव्वॉय होटल के लॉबी मैनेजर बी.सी. कुमार कहते हैं, ''अमिताभ बच्चन अक्सर होटल के रोज कॉटेज में आकर ठहरते हैं और चैन से छुट्टी बिताते हैं.'' अभिनेता ऋषि कपूर और अनिल कपूर कम खर्चीले 'सदर्न स्टार' में ठहरते हैं. फिल्मवालों की पसंद को ध्यान में रखकर कई होटल मनोरंजन की सुविधाएं बढ़ाने की योजना बना रहे हैं.

और विपरीत पक्ष यह है कि अंधाधुंध व्यवसायीकरण के चलते इस पहाड़ी शहर की खूबसूरती जाती रहेगी. लेकिन फिलहाल तक फिल्मवाले और फिल्मी सितारे ऊटी का भरपूर भोग लेना चाहते हैं. चहकती हुई माधुरी दीक्षित कहती हैं, ''ऊटी स्वर्ग है, अभी तक तो है ही.''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या संपत्ति बेच रहे हैं?

खरीदिए एन एच बी 9% कैपिटल बॉण्ड्स दीर्घकालीन संपत्ति जैसे ज़मीन, मकान, शेयर, सेक्योरिटी और आभूषण की बिक्री से प्राप्त आपका कैपिटल गेन 100% कर मुक्त एन एच बी 9% कैपिटल गेन बॉण्ड्स के तहत कई लाभ आपके लिए - आपकी पूँजी के लिए.

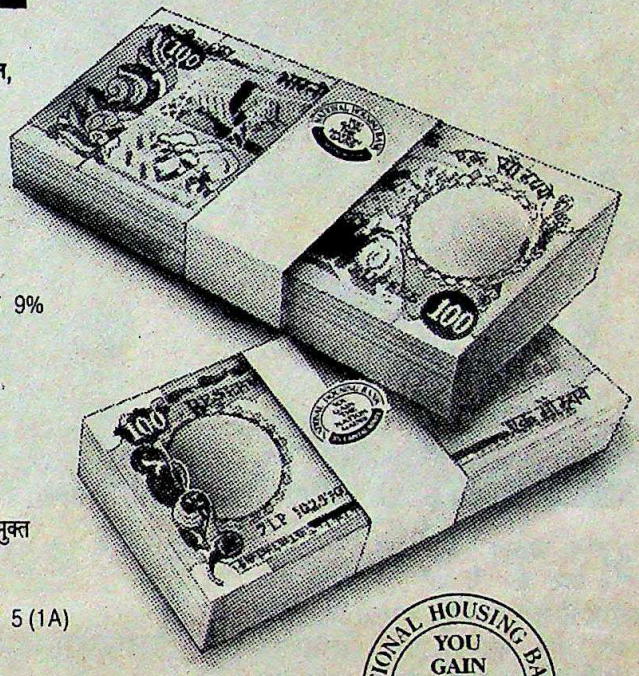

- लगायी गयी पूंजी पर आपको सालाना 9% ब्याज मिलता है, जिसे आप अर्धवार्षिक आधार पर प्राप्त कर सकते हैं.
- या, अगर आप चाहें तो बॉण्ड्स खरीदने की तारीख़ से तीन महीने बाद 9% सालाना की दर से पूरे तीन साल का अग्रिम ब्याज कमीशन काटकर प्रति 1000 रु. की पूंजी पर 240 रु. के हिसाब से प्राप्त कर सकते है. इसमें बीच के तीन महीने का भी ब्याज शामिल है - इस प्रकार आपको एक दिन के भी ब्याज का नुक़सान नहीं होता.
- आयकर अधिनियम 1961 के u/s 54E के तहत कैपिटल गेन कर मुक्त
- ब्याज उपार्जन के स्रोतों पर कोई कर कटौती नहीं
- धारा (1)(xvie) के तहत 5 लाख रु. तक की छूट जिसमें संपत्ति कर 5 (1A) के तहत अन्य 'इलिजिबल एसेट्स भी शामिल है.
- आयकर अधिनियम 80L के तहत ब्याज कर मुक्त.
- पैसा भेजने का खर्चा एन एच बी उठाएगा.
- 150 से भी अधिक केंद्रों पर सालो भर सममूल्य पर उपलब्ध.

NATIONAL HOUSING BANK
YOU GAIN THE NATION GAINS
9% CAPITAL BONDS

- प्रमुख आवास वित्तिय संस्थान होने के नाते हमारा फ़र्ज है मकान उपलब्ध कराना. तथा इसके लिए धन जुटाना. इसलिए यह बहुत ही संतोष की बात है कि इस बॉण्ड के माध्यम से लगी हुई आपकी पूंजी का इस्तेमाल अधिक-से-अधिक लोगों के लिए मकान उपलब्ध कराने में होगा.

नीचे लिखे पते पर आवेदन पत्र उपलब्ध हैं और यहीं पर स्वीकार भी किए जाते हैं. राष्ट्रीय आवास बैंक (बंबई तथा दिल्ली) • कैनफ़िना कार्यालय • इश्यू संबंधी इन 10 बैंकों की 151 शाखाएं 51 केन्द्रों पर इलाहाबाद बैंक, आंध्र बैंक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, कनारा बैंक, सिटी बैंक (साखर भवन बंबई), फ़ेयरग्रोथ फ़ाइनांशियल सर्विसेज़, इंडियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ़ मैसूर, दि वैश्य बैंक लिमिटेड.

राष्ट्रीय आवास बैंक

(भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्ण स्वामीत्व में)

निजी आवास का सुनहरा विश्वास

तीसरा माला, बंबई लाइफ़ बिल्डिंग, अकबर अलीज़ के ऊपर, 45 वीर नरिमन रोड, बंबई 400 023 फ़ोनः 222702, 224347.
छठा माला, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, 18-20, कस्तुर्बा गांधी मार्ग, नई दिल्ली 110 001. फ़ोनः 3712016, 3712036.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर

दूर से भी देव दर्शन

क्लोज सर्किट टीवी पर पूजा की नई विधि लोकप्रिय हो रही

हेमंत पिठवा

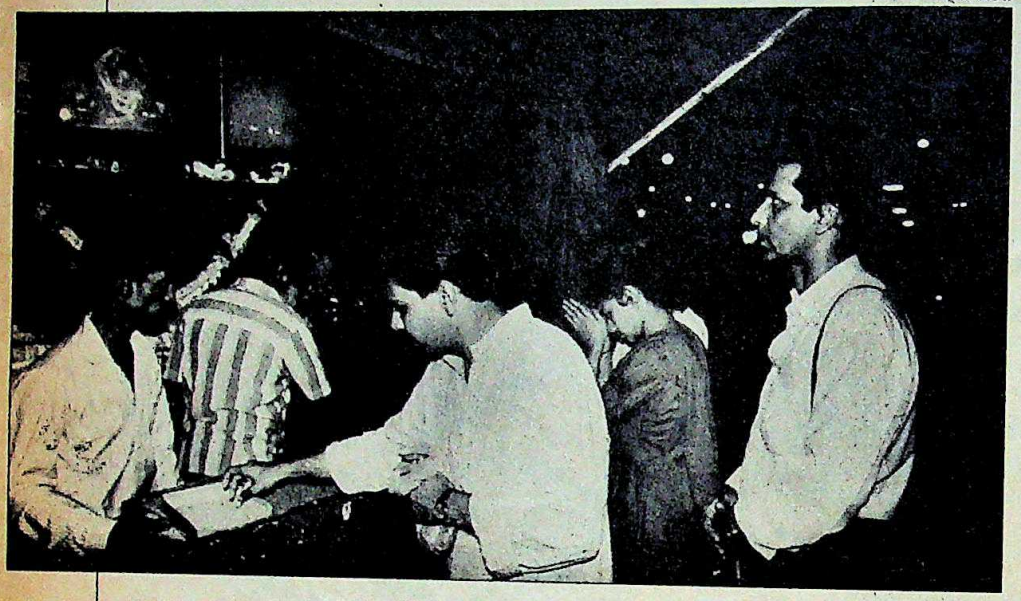

■ मॉनीटर के पास श्रद्धालुओं की भीड़

अब उत्सुक श्रद्धालुओं को अपने इष्ट देव के दर्शन के लिए घंटों कतार में लगे रहने की जरूरत नहीं रही. देवता अब क्लोज सर्किट टेलीविजन (सीसीटीवी) पर भी प्रकट हो सकेंगे. इसे टेलीदर्शन के नाम से जाना जाने लगा है.

मध्य मुंबई के प्रभादेवी इलाके में श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर में केल्ट्रान कंपनी ने काले पत्थर में खुदी रिद्धि-सिद्धि देवियों के साथ गणपति की ढाई फुट की प्रतिमा पर एक टेलीविजन कैमरा लगा दिया है. यह कैमरा दो रंगीन संचालकों (मॉनीटर) से जुड़ा है जिससे हर रोज हजारों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन का लाभ उठाते हैं.

यह योजना श्री सिद्धिविनायक मंदिर न्यास ने शुरू की है. न्यास ने इससे पहले 300 साल पुराने इस मंदिर को जीर्णोद्धार के लिए बंद कर देने का निर्णय लिया था. लेकिन जब लोगों ने इसका विरोध किया तो न्यासियों ने सीसीटीवी सेट लगाने का फैसला किया ताकि जीर्णोद्धार का काम भी चलता रहे और देव दर्शन में भी बाधा न पड़े. 1993 के मध्य तक मंदिर बनकर तैयार होगा तो 15 × 15 वर्ग फुट का वर्तमान भवन संगमरमर की पांचमंजिला इमारत में तब्दील हो जाएगा.

फिलहाल आठ महीने से चल रहा सीसीटीवी का प्रयोग काफी सफल रहा है. पिछले जुलाई में अंगारखी चतुर्थी पर दर्शनार्थियों की भीड़ को ध्यान में रखते हुए पांच अतिरिक्त मॉनीटर लगाए गए. अधिकारियों का दावा है कि उस दिन करीब 1.3 लाख लोगों ने दर्शन का लाभ उठाया. इस प्रयोग से आम तौर पर चार से छह घंटे का इंतजार अब घंटे भर तक का ही रह गया है.

टेलीदर्शन बहुत सफल साबित हो रहा है और अब इसे कट्टर धार्मिकों की भी स्वीकृति मिलने लगी है. इस विधि से दर्शन के लिए इंतजार के घंटे बहुत कम हो गए हैं

दरअसल, टेलीदर्शन छिपा वरदान साबित हो रहा है. यह दर्शन की आधुनिक सुविधा जैसा है. पिछले 35 वर्ष से लगातार दर्शन को आते रहे कोल्हापुर के श्रद्धालु रघुनंदन काले कहते हैं, "मैं मंदिर के भीतर जाकर साक्षात् दर्शन का ही प्रयास करता हूं पर समयाभाव में टेलीदर्शन भी पर्याप्त है."

कट्टर धार्मिक लोग भी अब इस साधन को स्वीकार करने लगे सिद्धिविनायक मंदिर के मुख्य पुजारी वर्षीय भालचंद्र फाटक कहते हैं, "देवता स्पर्श जैसा अनुभव तो इससे नहीं होता पर हम मंदिर में भक्तजनों मूर्तियां छूने की अनुमति नहीं देते. टेलीदर्शन भी उतना अच्छा है."

राज्य के दूसरे हिस्सों भी यह प्रयोग असर दिखा रहा है. पंढारपुर में वारकरी संप्रदाय के लोग विष्णु पूजा करते हैं. सीसीटीवी द्वारा धार्मिक व्यवस्था बन चुका है. शोलापुर में चंद्रभागा नदी के किनारे 12वीं सदी के इस मंदिर आषाढ़ी और कार्तिक एकादशी के मेलों के अवसर पर लाखों तीर्थयात्री जुटते हैं. पहले दर्शनार्थी प्रतिमा के करीब पहुंच सकते थे लेकिन अब वे दर्शन का लाभ टीवी के परदे पर ही उठाते हैं. नासिक के शिरडी के साईं बाबा की समाधि पर भी सीसीटीवी काफी सफल सिद्ध हो रहा है. पूरे समारोह का सीधा प्रसारण एक कैमरे के माध्यम से श्रद्धालुओं तक पहुंचता है.

पंढारपुर और शिरडी में सीसीटीवी का सफल प्रयोग श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर में दुहराया गया. यह दिनोदिन लोकप्रिय होता जा रहा है. अब यहां तीर्थयात्रियों की संख्या पांच गुना बढ़ गई है. चढ़ावे की राशि में भी नाटकीय इजाफा हुआ है. आज राज्य में यह सबसे संपन्न मंदिर है. यहां हर साल करीब 75 लाख रु. का चढ़ावा चढ़ता है. इसके पास 5 करोड़ रु. की सामग्री है. बताया जाता है कि अमिताभ बच्चन ने कुछ साल पहले अपनी बीमारी से उठने के बाद बड़ा दान दिया था. लता मंगेशकर ने भी 20 तोला सोना दान देने की बात बताई जाती है. मंदिर के निकट फूल बेचने वाली 44 वर्षीया गीता पादुबिद्री कहती हैं, "पिछले साल से धंधा लगभग दुगना हो गया है." असल में कमी का असर दर्शन के लिए इंतजार करती लंबी कतारों में ही हुआ दिखता है. यानी टेलीदर्शन अब नई पूजाविधि होती जा रही है.—अरुण कार्तिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही सुनहरा मौका है हमारे

एजेंट

बनने का.

सुनहरे ख्वाब भला किसे नहीं भाते. और इण्डियन बैंक म्यूचूअल फंड सुनहरे ख्वाबों को हक़ीकत में बदलने का काम बखूबी जानते हैं. तभी तो हम अक्सर नयी-नयी योजनाएं सामने लाते हैं, जो सबको फायदा पहुंचाती हैं.

खुद ही देखिये. सन् 1990 से हमने 6 सफल योजनाओं की शुरुआत की. इंद रत्ना, स्वर्ण पुष्प, इंद 88 ए, इंद ज्योति, इंद सागर और इंद मोती. 3 लाख पूंजी निवेशकों ने हमारे साथ क़दम मिलाये. हमने रु. 400 करोड़ से अधिक की राशि जमा की. जल्दी ही हम कुछ और आकर्षक योजनाएं शुरु करने वाले हैं, इसके लिए हमें आपके सहयोग की आवश्यकता है. भले ही आप पहले से ही किसी संस्थान के एजेंट हो. साथ ही साथ आप हमारे भी एजेंट बन सकते है और आकर्षक कमीशन कमा सकते हैं.

हमारे कार्पोरेट कार्यालय को पूरे विवरण के साथ निम्नलिखित प्रारूप में 1 दिसम्बर '91 तक लिखिये और हमारे कमीशन एजेंटों के विशाल परिवार में शामिल हो जाइये:

(1) नाम व पता (2) पिता का नाम / पति का नाम (विवाहित महिलाओं के लिए) (3) उम्र (4) लिंग (5) शैक्षिक योग्यताएं (6) पूर्व अनुभव (दूसरे संस्थानों में कार्यरत एजेंटों के विवरण) (7) दो व्यक्तियों के सन्दर्भ जो आपको भली भांति जानते हों. (8) अन्य सूचनाएं (9) हस्ताक्षर (10) कृपया साथ में राजपत्रित अधिकारी या इण्डियन बैंक के किसी भी शाखा प्रबन्धक द्वारा सत्यापित पासपोर्ट आकार की फोटो भेजें. (एजेंटों की नियुक्ति म्यूचूअल फंड के नियम व शर्तों पर निर्भर करेगा.)

इंडियन बैंक
म्यू चु अ ल फ़ं ड
प्रधान ट्रस्टी: इंडियन बैंक

आपकी समृद्धि में सहायक

कॉर्पोरेट ऑफिस: 1ली मंजिल, 100/104, नानक मोटवानी मार्ग, डी.जी. चैम्बर्स, फोर्ट, बम्बई 400 023.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा गांधी

जीवंत संपर्क में विश्वास

बापू की कुछ चिट्ठियों से उनके व्यक्तित्व का नया पहलू उजागर

रामजी नामक एक व्यक्ति ने महात्मा गांधी को चिट्ठी लिखकर अपनी वैवाहिक समस्या का निदान पूछा. जवाब में गांधी ने उन्हें सलाह लिख भेजी कि "पहले आप ब्रह्मचर्य पर पूरा भरोसा रखें और फिर पत्नी के प्रति वासना विहीन प्यार उपजाएं...ऐसे प्यार से ही पत्नी को अपनी धर्मपरायणता से प्रभावित कर सकेंगे."

रामजी को लिखी यह चिट्ठी गांधी की उन 1,400 चिट्ठियों मे से है जो हाल ही में अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम को मिली हैं. इनसे गांधी के व्यक्तित्व के दिलचस्प पहलुओं का पता चलता है. दरअसल, महात्मा अथक पत्र-लेखक थे और चिट्ठियों का जवाब देने में कभी कोताही नहीं बरतते थे. आज आश्रम के पास गांधी की लिखी या उन्हें संबोधित 34,000 चिट्ठियां हैं, जो दुनिया में अपनी किस्म का सबसे बड़ा संग्रह है.

एडोल्फ हिटलर को 1939 में लिखी उनकी चिट्ठी महत्वपूर्ण है. उन्होंने लिखा था, "मित्रगण मुझसे अनुरोध करते रहे हैं कि मानवता की रक्षा के लिए मैं आपको पत्र लिखूं. लेकिन मैं उन लोगों का यह अनुरोध इसलिए टालता रहा कि आपको चिट्ठी लिखना धृष्टता होगी. बावजूद इसके, कोई चीज मुझे प्रेरित करती है कि मैं यह अपील जरूर करूं, चाहे उस पर ध्यान दिया जाए या नहीं. स्पष्ट है कि आज की स्थिति में अकेले आप ही युद्ध को रोक सकते हैं..."

विभिन्न व्यक्तियों के पास सुरक्षित गांधी की चिट्ठियों को तलाश करने के आश्रम के अथक प्रयासों से ही नई चिट्ठियां सामने आई हैं. ये चिट्ठियां विशेष महत्व की हैं और जवाहरलाल नेहरू, राजकुमारी अमृत कौर और दूसरे आश्रमवासियों के साथ महात्मा के संबंधों की झलक देती हैं. दो महत्वपूर्ण चिट्ठियां तो नेहरू ने 20 के दशक के आखिर में गांधी को लिखी थीं. पहली चिट्ठी टाइप की हुई है और इस पर 22 फरवरी 1929 की तारीख है. नेहरू ने इसे कांग्रेस महासचिव के रूप में लिखा था. इसमें उन्होंने गांधी को 'डियर सर' संबोधित किया है. वे लिखते हैं, "आप बर्मा जा रहे हैं, इसलिए आपसे अनुरोध है कि बर्मा प्रदेश कांग्रेस कमेटी का निरीक्षण करके हमें अपनी रिपोर्ट भेज दें."

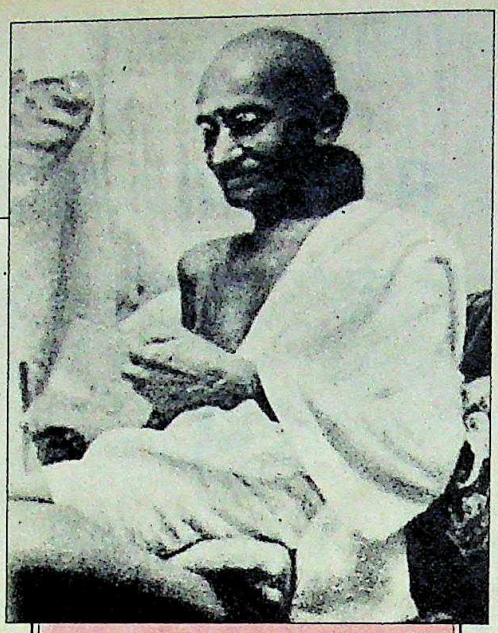

"पहले आप ब्रह्मचर्य पर पूरा भरोसा रखें. और फिर पत्नी के प्रति वासनाहीन प्यार उपजाएं... ऐसे प्यार से ही आप पत्नी को अपनी धर्मपरायणता से प्रभावित कर सकेंगे"

रामजी को गांधी की सलाह

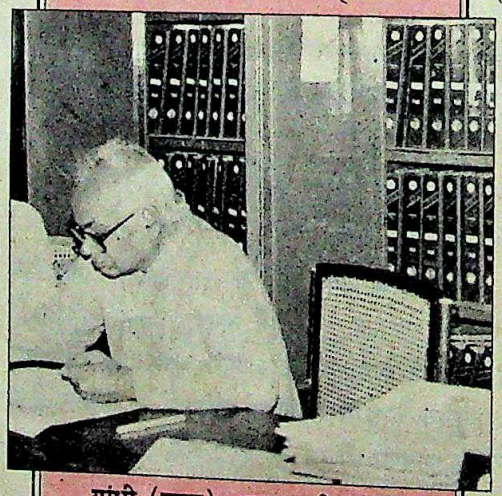

गांधी (ऊपर); साबरमती आश्रम में मोदी: संजोया इतिहास

लेकिन 1 दिसंबर 1924 [illegible] लिखी दूसरी चिट्ठी व्यक्तिगत [illegible] 'मेरे प्रिय बापू जी' से [illegible] करके उन्होंने इसमें उत्तर प्रदेश [illegible] एक प्रदर्शन के दौरान [illegible] कार्यकर्ताओं पर हुए [illegible] लाठीचार्ज का वर्णन किया [illegible] लिखते हैं, "मेरे समेत [illegible] ज्यादातर लोगों को लाठी की [illegible] आईं. थोड़ी-बहुत पीड़ा निस्संदेह [illegible] रही है लेकिन इतनी नहीं कि [illegible] निकल रही हो... मुझे कम [illegible] आई क्योंकि विश्वविद्यालय के [illegible] तीन छात्रों ने, जिनमें कमला [illegible] भाई भी था, मेरे ऊपर पड़ने [illegible] लाठियां खुद झेल लीं. मेरा उन्हें [illegible] इससे बढ़ा ही. मेरे लिए यह [illegible] अपूर्व अनुभव था."

ज्यादातर नई चिट्ठियां गुजराती [illegible] में हैं. इनमें वे 300 चिट्ठियां भी हैं [illegible] महात्मा ने अपने चचेरे भाइयों [illegible] छगनलाल और नारायणदास को [illegible] थीं. इनसे जाहिर होता है कि महात्मा [illegible] आश्रम के कामकाज से संबंधित [illegible] छोटी बातों पर भी कितना ध्यान [illegible] थे. 1932 में येरवडा जेल से आश्रम [illegible] तत्कालीन सचिव नारायणदास [illegible] भेजी चिट्ठी में गांधी आश्रम [illegible] चोरी गए बिस्तरों के बारे में [illegible] हैं, "बिस्तरे चुराने वाला [illegible] हमारा परिचित ही होगा...क्या [illegible] चोर को नहीं पकड़ सकते?"

साबरमती आश्रम संरक्षण [illegible] स्मारक न्यास के निदेशक [illegible] मोदी कहते हैं, "वे हर तरह [illegible] लोगों से जीवंत संपर्क बनाए [illegible] में विश्वास करते थे. और [illegible] अपनी विचारधारा को फैलाने [illegible] लिए प्राय: चिट्ठियों का इस्तेमाल [illegible] किया." महात्मा छह भाषाओं [illegible] लिख सकते थे और दक्षिण भारतीय [illegible] लिपियों सहित 11 भाषाओं [illegible] दस्तखत कर सकते थे.

पटियाला की राजकुमारी अमृत [illegible] कौर को लिखी गांधी की चिट्ठियां [illegible] विनोद से भरी हैं, जिनसे उनके [illegible] घनिष्ठ संबंधों पर भी प्रकाश पड़ता [illegible] चिट्ठियों में गांधी उन्हें विभिन्न तरह [illegible] संबोधित करते हैं.

गांधी ने कितनी चिट्ठियां लिखीं [illegible] बनी हुई हैं. लेकिन, जैसा कि मोदी [illegible] हैं, "हम चिट्ठियों का संग्रह जारी [illegible] क्योंकि महात्मा और उनकी चिट्ठियों [illegible] अध्याय अनंत है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अगर आपको ये वाकिया बढ़ाया-चढ़ाया सा लगे...

तो शायद आपने अब तक 'फ्रेंची' पहना ही नहीं!

वी आइ पी फ्रेंची. छोटा-सा बढ़िया जांघिया... चुस्त-दुरुस्त और मर्दाना ताकत से सराबोर. सारी दुनिया में इसकी मर्दानगी ने तहलका मचा रखा है और हमारे शहरों में भी इसी की धाक है, बोलबाला है! सचमुच एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय स्टाइल, एक ऐसा अंदाज़ जो वी आइ पी लाये हैं ख़ास आपके लिए!

VIP

फ्रेंची

जांबाज़ मर्दों के मनपसंद

Avenues HH 1024 90

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल कुमार

मामा

कमल कुमार की कहानियों में मानवीय संवेदनाओं और संबंधों का जीवंत वर्णन मिलता है. प्रस्तुत कहानी में भी एक दंगापीड़ित और एक उग्रवादपीड़ित के दर्द और उनकी संवेदनाओं को बखूबी उकेरा गया है.

सुरिंदर कौर बाहर खड़ी व्याकुल हो रही थी. कहीं कोई सवारी नहीं थी. उसने घड़ी देखी, बारह बज चुके थे. सतवीर की बस उसके वहां पहुंचने से पहले आ गई तो वह सड़क पर अकेला घबराएगा. पर वह क्या करे? दूर से आता खाली स्कूटर देखा तो उसने आवाज दी थी, "स्कूटर...स्कूटर...रोको!"

स्कूटरवाला रुका जरूर था पर उसकी हांक से नहीं. सुरिंदर कौर सड़क पार करके उसकी तरफ बढ़ी थी. इससे पहले कि वह कुछ कहे, स्कूटरवाला उपेक्षा से बोला था, "खाली नईं गड्डी."

सुरिंदर कौर ने फिर कोशिश की थी, "मुझे जरूरी जाना है. किराया ज्यादा ले लेना," कहकर स्कूटर में बैठने को हुई थी.

"ओ नईं जाना. कहा न आपनूं." वह ऊंची आवाज में झुंझलाया था.

सुरिंदर कौर के पैर वहीं ठिठक गए थे. उसने घड़ी देखी, सवा बारह बज गए थे. सड़क पर अकेले खड़े सतवीर की बात सोचकर उसे घबराहट हो रही थी. उसने चारों तरफ नजर दौड़ाई, कहीं कोई सवारी आती-जाती दिखाई नहीं दे रही थी. वही स्कूटरवाला खाली स्कूटर लिये बैठा था. उसने उसकी तरफ देखा, बीच की उम्र का सरदार था. हरी पगड़ी पहने और शाल की बुक्कल मारे मांझा लगी डोर की तरह अकड़ा हुआ था. सुरिंदर कौर ने पल भर सोचा और फिर झटके के साथ उछलकर स्कूटर में बैठ गई.

"ओ बोला ना आपनूं नईं जाना! गड्डी वापस करने का टैम हो गया. रोटी वी खानी ऐ," वह गुर्राया था और स्कूटर स्टार्ट किया, "उतरो छेती." स्कूटर शायद गीयर में था. झटका खाकर रुक गया था. सुरिंदर कौर ने देखा वह पंजाबी में हिंदी मिलाकर बोल रहा था.

उसने आखिरी कोशिश की, "वीर जी. आप सीधे ही तो जाएंगे. चौराहे पर छोड़ देना. बड़ी मेहरबानी होगी. वहां से दूसरी सवारी मिल जाएगी. बहुत जरूरी है."

स्कूटरवाले ने गौर से उसकी तरफ देखा था. शायद यह 'वीर जी' का असर था. स्कूटर स्टार्ट करके वह चल पड़ा.

"कित्थे जाना ऐ?"

"आप बस चौराहे पर छोड़ देना. वहां से दूसरी सवारी मिल जाएगी."

"फेर वी दस्सो ते सई जाना कित्थे ऐ?"

"आर.के. पुरम."

"चंगा, बैठो अराम नाल," स्कू[illegible] गुरुवाणी की टेप लगा दी थी [illegible] की रफ्तार भी तेज कर दी थी.

चौराहे पर पहुंचते ही सुरिंदर [illegible] रोका था, "बस यहीं रोक दो."

"हुण आप बैट्ठे रहो. ऐत्थे [illegible] कोई सवारी."

सुरिंदर कौर एकबारगी निश्चि[illegible] थी. पीछे पीठ टिकाकर आराम [illegible] थी. हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो [illegible] फिर ध्यान आया सतवीर की [illegible] आ गई तो सड़क पर अकेला [illegible] उसने देखा स्कूटरवाला शीशे [illegible] उसकी तरफ देख रहा था. "इदर [illegible] डाल दूं? बारिश पै रई ऐ."

उसके भीतर डर की एक ल[illegible] गई थी. "नईं. रैण देओ. ऐदा ई [illegible] इस बार उसने पंजाबी में जवाब [illegible]

परदा डालते-डालते उसने [illegible] वापस खींच लिया.

"विचकार हो के बैठो. आप [illegible] जाओगे," थोड़ी देर बाद उसने [illegible]

"पंजाब दे ओ बीबी आप."

"हां," न चाहते हुए भी सुरिंद[illegible] उत्तर दिया.

"कौन सा पिंड ऐ आप [illegible] सुरिंदर कौर को लगा था जैसे [illegible] कच्चे जख्मों को छील दिया हो. [illegible] को जब्त किया था और तटस्थ [illegible] था, "सिंघवा."

"सिंघवा?" वह उछलकर [illegible] तरफ मुड़ा और हो-हो कर हंसने [illegible]

आश्चर्य से सुरिंदर कौर ने [illegible] "क्यों, क्या हुआ?"

"मैं वी तो सिंघ[illegible] आप मैनू दस्स रए हो. [illegible] उसने बात खत्म [illegible]

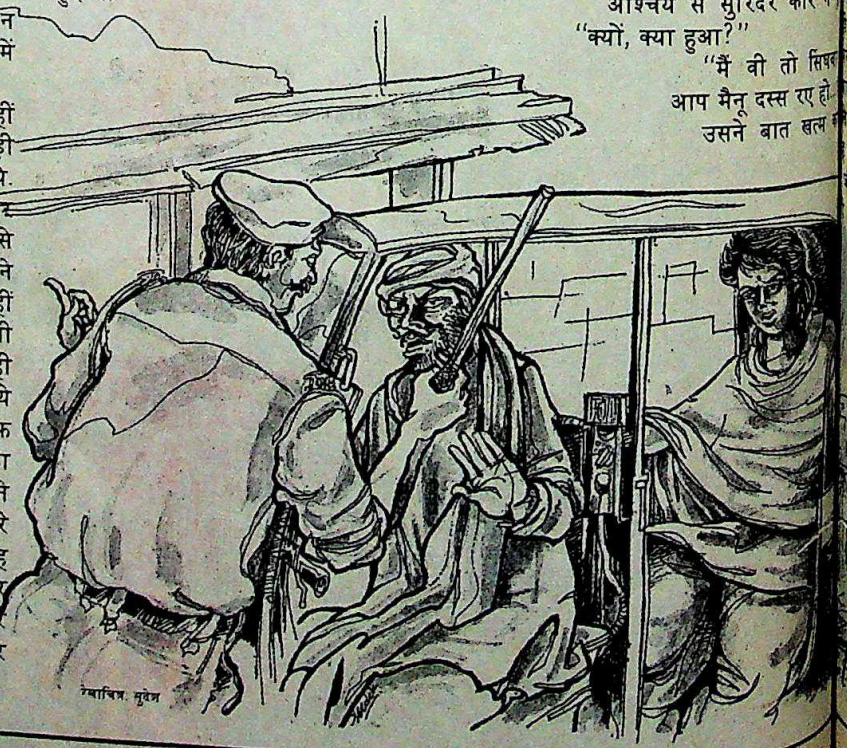

रेखाचित्र: सुदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराना था और खाना भी खाना था..."

"ओ—आप जी बैठ्ठो. काके नूं लैके बारिश में कहां दूजी सवारी ढूंढोगी."

उसने सतवीर की बांह पकड़कर उसे उठाकर स्कूटर की सीट पर बैठा दिया था और उसका बस्ता उसके पास रख दिया था. "की नां ऐ पुत्तर तेरा?"

"सतवीर."

"चंगा, जिंदा रै. बैठो बीबी रानी आप वी." उसने स्कूटर मोड़ा था बचाकर ताकि पानी के छपाके ऊपर न पड़ें. "क्यों बीबी. पिंड तो जाना होता होगा आपदा?"

सुरिंदर कौर की छाती को फाड़कर एक जोर का हौवका निकला था, अब वह जब्त नहीं कर सकती थी और फूट पड़ी थी, "वहां अब क्यों जाऊंगी मैं? कौन बैठा है मेरा अब वहां? मां, दारजी और दोनों जवान-जहान भाइयों को दिनदहाड़े गोलियों से भून दिया जालिमों ने. किसी को नहीं बक्शा उन्होंने. सब खत्म कर दिया."

वह सन्नाटे में आ गया था. उसके बाद उसने कुछ नहीं पूछा और कुछ नहीं कहा. आखिर में सुरिंदर कौर ही बोली थी, "बस यहां रोक दो." पहले वह उतरी, फिर सतवीर को उतारा था. वह भी स्कूटर छोड़कर सामने आ खड़ा हुआ था. एक पल सोचकर बोला था, "ऐत्थे ई रैंदे हो?"

"हां, यहीं सामने.

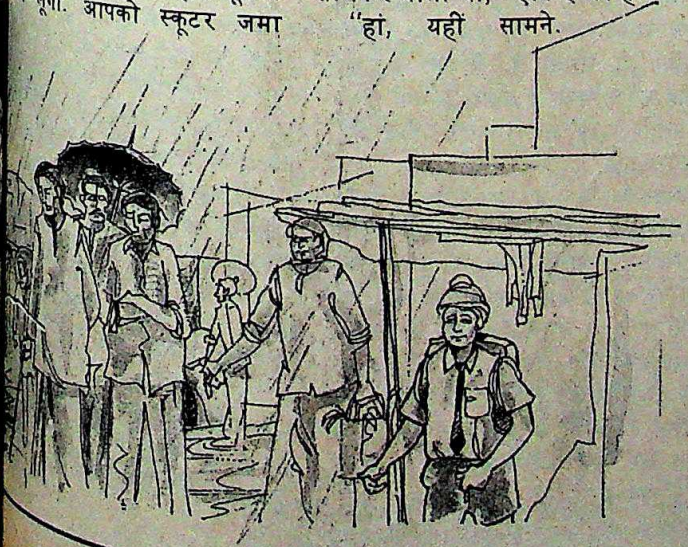

अच्छा वीर जी. बहुत शुक्रिया," सुरिंदर कौर ने मीटर देखा था और एक दस रुपये का नोट उसकी ओर बढ़ाया था.

"ना जी, शुक्रिया काहे का? और यह रुपए आप रक्खो अपने पास ही."

सुरिंदर कौर हैरान थी. उसने विरोध करना चाहा तो उसने रोका था. "सुन बीबी रानी, रुको जरा." उसने स्कूटर की पिछली सीट उठाकर बक्से में से दो पोटलियां निकालकर उसको थमा दी थीं.

"ये रक्ख लो आप. पिंड तों आज सवेरे मेरा दोस्त हरवेल सिंह आया सी. ओ दे गया सी. कैता था रात नूं आके भाभी गुरमीत दे हाथ का बना साग रोटी खाएगा ते हरभजन ते हरबंस नूं पिंड दी कहानियां सुनाएगा. उस विचारे नूं पताई नईं के 84 के दंगयां विच न गुरमीत कौर रई ते न रए हरभजन ते हरबंस. जिंदा जला दिया सी सबनूं एक साथ. शाम नूं घर आया ते सब

एकाएक वह हो-हो कर हंसने लगा था, "हुन क्या? कहीं पड़े रहो, कहीं खा लो. चंगा जो मरजी वाहे गुरु जी दी. जीवै राक्खे तांहि रहे ना." उसने सतवीर के सिर पर हाथ रखा था और जेब से पचास का एक नोट निकालकर सतवीर के हाथ में पकड़ा दिया था. "तेरी मिठाई वास्ते पुत्तर"

कुछ खत्म हो चुकेया सी. मैंने किसी को खबर नई दित्ती सी. फैदा वी की सी? पिंड विच लोग सुनदे ते ऐत्थे दी आग औत्थे तक जलदी जांदी," एकाएक वह हो-हो कर हंसने लगा था, "हुन क्या? कहीं पड़े रहो, कहीं खा लो. चंगा जो मरजी वाहे गुरु जी दी. जीवै राक्खे तांहि रहे ना."

उसने सतवीर के सिर पर हाथ रखा था और जेब से पचास का एक नोट निकाल कर सतवीर के हाथ में पकड़ा दिया था. "तेरी मिठाई वास्ते पुत्तर." और स्कूटर मोड़कर वह तीर-सा निकल गया था.

सुरिंदर कौर खड़ी थी, फिर जैसे सपने से जागी हो. उसने पोटलियों को बांह में लेकर कुहनी के बीच थाम लिया था और दूसरे हाथ से सतवीर की उंगली पकड़कर चल पड़ी थी. पोटलियों में से उठती खेतों से तोड़े ताजे सरसों के साग और घर की चक्की पर पिसे मक्का के आटे की ताजी महक उसके नथुनों से होती हुई उसके पूरे वजूद में समाती जा रही थी. सतवीर ने पूछा था, "ये कौन था मम्मी?"

सुरिंदर कौर एक पल को रुकी थी—"तेरा मामा था. चल अब घर चलें."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण

मन के अंकुर

रजनीश-दर्शन के दर्शन

मन मिर्जा तन साहिबां
अमृता प्रीतम. लिप्यांतरः अवतार कौर
किताब घर, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली
कीमतः 40 रुपए; कुल पृष्ठः 87

जिस प्रकार लेखिका अमृता प्रीतम का नाम लेते ही हमारे सामने अपने आप में एक पूरी शख्सियत की तस्वीर उभरती है; बहुत कुछ वैसे ही अमृता प्रीतम के मन में भी रजनीश का नाम आते ही एक पूरा आकार, एक पूरी चेतना, एक क्रांति, एक अंतर्ध्वनि उभर आती है. इस शख्सियत से अभिभूत उनका तन साहिबां और मन मिर्जा बन चुका है.

यदि इस पुस्तक की शब्द सृष्टि को काया मानें तो निश्चित ही वह सुंदर कही जा सकती है. काव्यात्मक है, लयात्मक है. खास बात यह कि फिर भी दर्शन को वहन करने में समर्थ. इस पुस्तक की चेतना और अंतर्भाव को यदि रजनीश-दर्शन का पर्याय मानें तो उन्हीं के अर्थों की अथाह सृष्टि परिलक्षित होती है.

'मन मिर्जा तन साहिबां' लेखिका की उन कृतियों से हटकर है जिनका मिलाजुला रूप टीवी सीरियल में कड़ी-दर-कड़ी कुछ समय पहले देखा गया. वास्तव में, जिस बीज की गाथा इस पुस्तक में पूरी हुई है, उसका संकेत 'चेतना की अंतर्ध्वनि' प्रथम पृष्ठ से ही मिलने लगता है.

साधारण पाठक को पुस्तक हाथ में लेते ही कुछ बोरियत भी हो सकती है क्योंकि जिस विषयवस्तु का प्रतिपादन किया गया है, वह साधारण समझ से परे की वस्तु है और उस दृष्टि में शुष्क विषय है. पर जैसे-जैसे बीज अंकुरित होता है और उसकी यात्रा शुरू होती है, सरस क्षणों की अभिव्यक्ति में उनके संस्मरण विषयानुरूप बनकर पुस्तक को रोचक बनाने में सहायक होते हैं.

वैसे ही इमरोज का कला पक्ष भी विषय के अनुरूप है. अमूर्त भी है और मूर्त भी. खुली आंख दिखाकर लेखिका के सपनों की जागृतावस्था भी प्रकट करने का सुंदर प्रयास है.

भाषा में ठेठ उर्दू-अरबी-फारसी शब्दों की बहुतायत है. लेखिका जहां रजनीश के वाक्यांशों का उल्लेख करती है—"अरे ! यह मैं जो कुछ तुमसे कह रहा हूं, तुम्हारे मस्तक को खाली करने के लिए कह रहा हूं. वह जो दूसरों के अनुभव से भरा हुआ है, उसे खाली कर दो. देखो ! यह मत करना कि मैंने जो कहा—तुम उसे जमा कर लो और तुम्हारा भीतर और भी भारी हो जाए..."

तो एक सवाल पाठक सहज ही लेखिका से पूछ सकता है, इस पुस्तक को पढ़ने के बाद कि क्या यह पुस्तक रजनीश की इस उपरोक्त आशंका से अछूती रह पाई है? बल्कि स्थान-स्थान पर उसी की विशद व्याख्या ही लगती है. लेकिन वे सारे सवाल जो लेखिका ने उठाए हैं, क्या इतने ही सतही हैं कि झट-से उत्तर देकर आगे बढ़ा जा सके?

वास्तव में, वे मन-मस्तिष्क को झकझोरते हैं. लेखिका ने सभी प्रश्न अपनी अंतश्चेतना से करने के बाद ही पाठकों की सुप्त-चेतना को जगाने का प्रयत्न किया है. उत्तर अपने ही अनुभवों से देने का प्रयत्न करना है—यही लेखिका को स्वीकृत है, यही पुस्तक की चेतना रजनीश को अभीष्ट है. आदि से अंत और अनादि से अनंत तक जुड़े सवाल-जवाबों का सुंदर साहित्यिककरण है. काव्यात्मक भी, गद्यात्मक भी.

—प्रवीण कपूर

"मेरा सूरज बादलों के महल में सोया है
जहां कोई सीढ़ी नहीं,
कोई खिड़की नहीं
और वहां पहुंचने के लिए—
सदियों के हाथों ने जो डंडी बनाई है
वो मेरे पैरों के लिए बहुत संकरी है..."

अमृता प्रीतम

काव्य संग्रह

सच से रू-ब-रू

समय के द्वंद्व से परिचय

बहुत दिनों के बाद
सुधीर सक्सेना
परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद
कीमतः 60 रुपए; कुल पृष्ठः 120

इन कविताओं पढ़ते हुए हम बहु तक एक ऐसी दु से रू-ब-रू होते अनोखी है पर दु और अंतर्विरोधों में हुई भी है.

सुधीर सक्सेना के इस प्रथम संग्र कविताएं हमें समय की मुश्कि विडंबनाओं और विद्रूपताओं में परिचित ही नहीं करवातीं बल्कि उ जड़ों तक जाकर देखने और दिखाने जोखिम भरा काम भी करती हैं.

'पाल बर्जमैन: तीन कविताएं' उ ऐसी ही कविताएं हैं. इन कविताओं कवि नागासाकी में हुई भीषण त्रास्द साथ वर्तमान युद्ध के खतरों के प्रति सजग है. पर सबसे महत्वपूर्ण बात इस त्रासदी पर लिखते हुए भी कवि आंखों से जीवन का सबसे सुंदर ओझल नहीं हुआ है. अनायास नहीं सुंदर पक्ष उनकी कविताओं में बार ध्वनित होता है: सबसे बड़ी बात पर/आज भी है/जीवन /अभी भी कम किलकारियां."

'इक्कीसवीं सदी' में कवि दुनिया के देशों में हो रहे व्यापक शोषण के प्रति केवल चिंतातुर नहीं अपने प्रगतिशील विचारों के सुविचारित प्रतिरोध भी प्रकट दिखता है: "किसे सौंप दी है तूने/धन से भरी यह धरती/ कि अमरीका में/अनाज ही अनाज है/ और/ अफ्रीका के पेट में/भूख ही भूख."

युवा कवि सुधीर सक्सेना का यह काव्य संग्रह हमारे समय के द्वंद्व संकटों को काव्य भाषा के सार्थक में रचने वाली कविताएं हैं. उनकी कविताओं में केवल भाषा का रचाव कसाव भर नहीं है बल्कि विचारों ठोस, मूर्त और सघन फैलाव भी है.

—रमेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

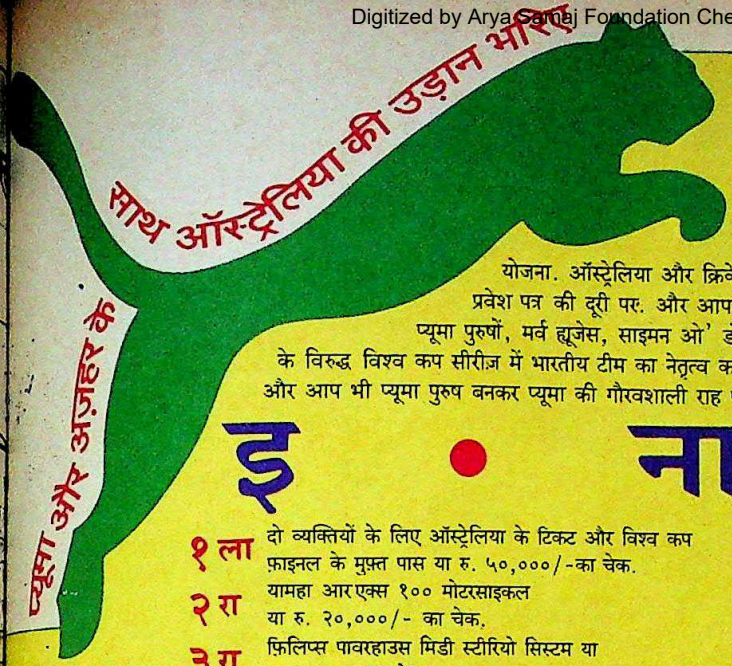

प्यूमा करोना, आपके पैरों को ध्यान में रखकर बनाये गये जूतों की ओर से, अब एक शानदार इनामी योजना. ऑस्ट्रेलिया और क्रिकेट विश्व कप १९९२ आपसे बस एक प्रवेश पत्र की दूरी पर. और आप हमारे प्यूमा पुरुष अज़हर को हमारे कुछ अंतर्राष्ट्रीय प्यूमा पुरुषों, मर्व ह्यूजेस, साइमन ओ' डोनेल, ज्यॉफ मार्श व ब्रूस रीड के विरुद्ध विश्व कप सीरीज़ में भारतीय टीम का नेतृत्व करते अपनी आंखों से देख सकते हैं. और आप भी प्यूमा पुरुष बनकर प्यूमा की गौरवशाली राह पर चल सकते हैं.

इ • ना • म

१ ला दो व्यक्तियों के लिए ऑस्ट्रेलिया के टिकट और विश्व कप फ़ाइनल के मुफ़्त पास या रु. ५०,०००/-का चेक.

२ रा यामहा आर एक्स १०० मोटरसाइकल या रु. २०,०००/- का चेक.

३ रा फ़िलिप्स पावरहाउस मिडी स्टीरियो सिस्टम या रु. ५०००/-का चेक.

४ था ५०० इनाम - एक जोड़ा प्यूमा करोना टॉप जेटर ट्रेनिंग शूज़.

५ वाँ ५०० इनाम - एक प्यूमा करोना कैरी बॅग.

६ ठा १००० इनाम - एक प्यूमा करोना टी-शर्ट.

प्रवेश मुफ़्त! कुछ भी खरीदने की शर्त नहीं!

प्रवेश पत्र

• नीचे तीन कथन दिए गए हैं. इनका दांयी ओर दिए प्यूमा पुरुषों से सही मेल कीजिए और आगे दिए गये खानों में उचित कथन की संख्या लिखिए.

१. वह पहनता है प्यूमा कट्रोल, इन्डोर कोर्ट शू ☐ मोहम्मद अज़हरूद्दीन
२. उसे पसंद है प्यूमा सुपर कप, शानदार टेनिस शू ☐ प्रकाश पाडुकोण
३. उसकी चाहत है प्यूमा डॉमिनेटर, जॉगिंग शू. ☐ विजय अमृतराज

• अब नीचे दिए गए प्रश्न का खाली जगह में उत्तर लिखिए.
अज़हर ने टेस्ट क्रिकेट में कब और कहां से शुरूआत की ? _____

• और अंत में, नीचे दिए गये स्लोगन को १० से कम शब्दों में पूरा कीजिए - प्यूमा करोना जैसा जूता दूसरा नहीं क्योंकि _____

इस को साफ पठनीय लिखाई में भरकर अपने प्रवेश पत्र प्यूमा इनामी योजना, पोस्ट बैग नं. ९१७९, माहीम, बम्बई ४०० ०१६ को भेजिए. अपने लिफ़ाफ़े के दूसरी तरफ अपना पूरा पता लिखिए.

मैं इस प्रतियोगिता के सभी नियम तथा शर्तें पढ़ ली हैं तथा मैं उन्हें मानने के लिए तैयार हूं. हस्ताक्षर : _____

प्रवेश पत्र ५-१२-९१ तक हमारे पास पहुंच जाने चाहिएं. प्रवेश मुफ़्त. कुछ भी खरीदने की शर्त नहीं.

नाम : _____ _____
प्रथम नाम कुलनाम

पता : _____

नगर _____

_____ राज्य _____ पिन कोड _____

जहां लागू हो निशान लगाइए

उम्र : < १५ ☐ १५-२० ☐ २०-३० ☐ ३०-४० ☐ ४०+ ☐ लिंग : पु. ☐ स्त्री ☐

व्यवसाय : विद्यार्थी _____ नौकरी _____ स्व : रोजगार _____ अन्य _____

शिक्षा : मैट्रिक तक _____ अन्डरग्रेजुएट _____ ग्रेजुएट _____

पर की मासिक आय (रु.) : २५०० तक _____ २५०१-३५०० _____ ३५०१-५००० _____ ५००१-५५०० _____ ५५००+ _____

आजकल कौन सा स्पोर्ट शू पहनते हैं : ब्राण्ड / मेक _____ साइज _____

कीमत : रु. २५० तक _____ रु. २५०-रु. ३५० _____ रु. ३५०-रु. ५५० _____ रु. ५५०+ _____

स्पोर्ट शू का इस्तेमाल : रोजाना _____ कभी-कभी _____

कब इस्तेमाल करते हैं : चलने/जॉगिंग के लिए _____ यात्रा के लिए _____ खेल-कूद के लिए _____ आम पहनावे के लिए _____

नियम तथा शर्तें : • सभी प्रवेश पत्र हर तरह से पूरे भरे जाने चाहिए. अपूर्ण प्रवेश पत्र मान्य नहीं होंगे • आप जितनी चाहें, उतनी प्रविष्टियां भेज सकते हैं लेकिन प्रत्येक प्रविष्टि अलग प्रवेश पत्र पर भी जानी चाहिए • प्रवेश पत्र केवल साधारण डाक से भेजे जाने चाहिएं • प्रवेश पत्र केवल अंग्रेजी या हिन्दी में भरे जाने चाहिए • प्रपत्र के साथ कोई पत्र मत भेजिए, प्रपत्र को बिदग्ध लाइन से काटिए • प्रविष्टियां पहुंचने की अंतिम तिथि ५-१२-९१ है • प्रतियोगिता के आयोजक प्रविष्टियों के डाक में देरी होने, खो जाने अथवा चुराई होने • इस विज्ञापन के व्यक्तिगत रूप से सूचित किया जाएगा • पहला, दूसरा और तीसरा इनाम जीतने वालों के नामों की घोषणा प्रेस में की जाएगी • यात्रा, ठहरने आदि के लिए आवश्यक विदेशी मुद्रा रिज़र्व बैंक के नियमों व शर्तों के अधीन व एक ही दिया जाएगा • किसी प्रकार का विवाद होने पर न्यायाधिकरण का क्षेत्र केवल बम्बई होगा • सभी स्लोगन करोना लिमिटेड की पूर्ण सम्पत्ति होंगी तथा वे उनका प्रयोग किसी भी रूप में प्रचार/विज्ञापन के लिए कर सकेंगे.

PUMA®
CARONA.*

® प्यूमा एजी. जर्मनी का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क * करोना लिमिटेड, इंडिया का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

आपके पैरों को ध्यान में रखकर बनाये गये जूते.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटकर घर को आए

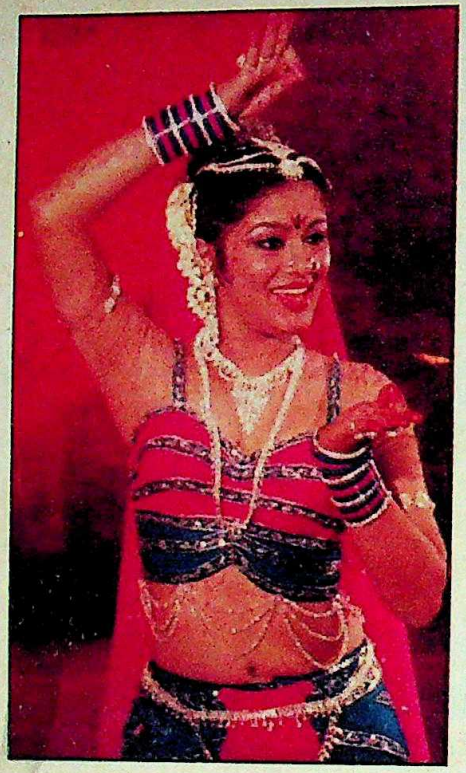

सुधाः अंग प्रदर्शन काम न आया

नृत्य फिल्माया जाने वाला था फिल्म की हीरोइन **सुधाचंद्रन** पर. और सुधाचंद्रन थीं कि सेट पर आने का नाम नहीं ले रही थीं.

पता चला कि खटपट ड्रेस को लेकर है. शास्त्रीय आधार वाले गीत के लिए काया-दर्शना ड्रेस बनाया गया था. सुधा का कहना था कि वे इसे नहीं पहनेंगी और ड्रेस डिजाइनर का दावा था कि यह ड्रेस उसने सुधा के सुझाव पर ही तैयार की थी.

आखिर यह चक्कर पड़ा क्यों? यह फिल्म डेढ़ साल से भी पहले, उस वक्त शुरू हुई थी जब सुधा इस गलतफहमी में थी कि शरीर प्रदर्शन के सहारे वे बड़ी फिल्में पा जाएंगी. अब पता चल गया कि हर हीरोइन श्रीदेवी या माधुरी दीक्षित नहीं हो सकती. "अब मैंने फैसला कर लिया है कि भारतीय संस्कृति की मर्यादा छोड़ पश्चिमी रंग-ढंग नहीं अपनाऊंगी..." उन्होंने बताया.

क्या कहावत है वह? लौट के बुद्धू घर को आए?

सिर चढ़ी गरमी

शाही अंदाज के अभिनेता रा उस दिन क्यों इतना बिफरे हुए उन्होंने स्टुडियो में दोपहर के उस के चिथड़े उड़ा दिए? लोगों का उनका तो मिजाज ही ऐसा है असलियत कुछ और ही है.

शॉट्स के बीच बचे समय में अकेले बैठे चाय की चुस्कियां ले कोई स्पॉटब्वॉय आकर उन्हें अंग्रेजी अखबार दे गया. उन्होंने अखबार के टुकड़े-टुकड़े कर डाले उस स्पॉटब्वॉय का पता पूछने.

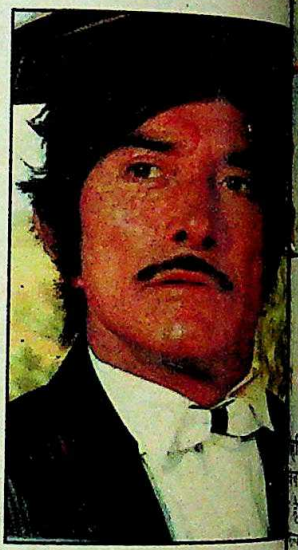

राजकुमारः गुस्सा क्यों आता

दरअसल, उस अखबार में एक छपी थी जिसमें मुंबई में आजकल तेज गरमी को कोसा गया था. उसमें बताया गया था कि गोल्फ प्रेमी राज किस तरह बार-बार पसीना पोंछ खबर के अनुसार गरमी ने उन्हें सताया कि आसपास बैठे लोगों की तक का उन्हें ध्यान नहीं रहा और विग उतार, सिर का पसीना पोंछने

भीगी कला

मुंबई से कुछ दूर उस पिकनिक स्पॉट पर सैलानियों से गुलजार नदी के किनारे **शिखा स्वरूप** जिस तरह नहा रही थीं उससे शूटिंग एक समस्या बन गई. निर्देशक ने उन्हें पानी में किल्लोल के लिए उन्मुक्त छोड़ दिया था और शिखा ने उन्मुक्तता को अश्लीलता में बदलकर शूटिंग देख रहे मजमे की कल्पनाओं को कहीं का कहीं पहुंचा दिया. स्थिति बिगड़ने के पहले शूटिंग कैंसिल करके निर्देशक ने शायद बहुत कुछ बचा लिया.

भीड़ छंट जाने पर शिखा से बात हुई. शब्दों को उन्होंने बहुत संभाला, पर सच बाहर छलक ही आया. क्यों वे इस तरह उत्तेजक अंग प्रदर्शन का सहारा ले रही हैं. सवाल के जवाब में उन्होंने जो कुछ कहा, उसका आशय यही था कि जबरदस्त प्रतियोगिता के इस जमाने में 'सूखी' कला भला किस काम आती है? 'लेकिन' की डिंपल का उदाहरण सामने रख दिया उन्होंने, "क्या मिला उन्हें इस फिल्म से जबकि 'बॉक्की' और फिर 'सागर' ने उन्हें स्टार बना दिया था."

है कोई काट इस तर्क की?

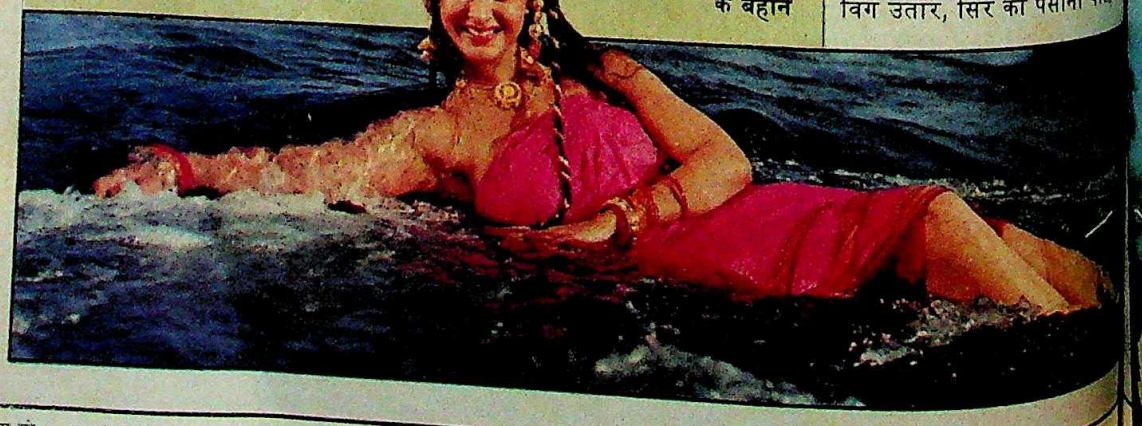

शिखाः जल किल्लोल के बहाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फर्क की बात

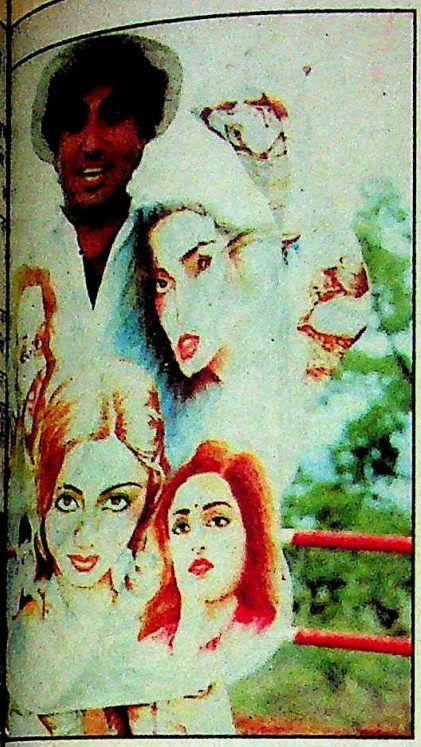

राज बब्बरः सब चलता है

राज बब्बर हंसी से दोहरे हुए जा रहे थे, "अरे भई, यह तो शुरू से पता है कि दो में से एक को तो हारना ही है. तो फिर राजेश और शत्रुघ्न ने यह दोस्त...दोस्त की रट क्यों लगा रखी थी?"

"राजनीति में सब चलता है. आप भी तो खड़े होने वाले थे किसी पार्टी के टिकट पर."

"होने वाले थे और 'हो गए' में फर्क है," राज बब्बर फिर खिलखिलाए, "वैसे ही जैसे 'फिल्में छोड़ दूंगा' कहने और छोड़ कर दिखा देने में है, या फिर खुद को जनता का प्रतिनिधि बताकर बंगले में रहने और हवाई जहाज से सफर करने में है, जैसे पत्नी को मुसीबत में डाल देने और वक्त पड़ने पर पुचकार लेने में है, जैसे..."

अब क्या जवाब दें?

हालांकि वह आयोजन मलयालम फिल्मों के सुपरस्टार मम्मूटी को मुंबई के फिल्म प्रेस से मिलवाने के लिए रखा गया था लेकिन 7 बजे आने की बात कहकर साढ़े नौ बजे तक नदारद मम्मूटी की वजह से दूसरों को कई मौके मिल गए.

सी प्रिंसेज के लाउंज में ही एक बड़े प्रोड्यूसर ने वहां मौजूद **सोनू वालिया** के सामने प्रस्ताव रख दिया, "अगर यह मम्मूटी मुझे पसंद आ गया तो इसके साथ हीरोइन आपको

सोनूः हां कहें या न!

लूंगा, पर एक शर्त है."

इंडस्ट्री में कई शर्तें साफ-साफ नहीं रखी जातीं, फिर भी समझा दी जाती हैं, समझ ली जाती हैं. सोनू वालिया मुस्करा दीं पर प्रोड्यूसर ने साफ-साफ कह कर सब गुड़ गोबर कर दिया, "नहाने, भीगने, लिपटने, चिपटने के सीन वैसे ही करने होंगे जैसे विनोद खन्ना के साथ किए थे."

अब इसका सबके सामने क्या जवाब देतीं सोनू? कौन नहीं जानता कि एक फिल्म के इन दृश्यों ने सोनू की जिंदगी में कितने तूफान बरपा कर दिए थे? तो फिर हां करें तो कैसे? और ना भी क्यों कहें? धृष्ट निर्माता सबके सामने सवाल दोहराए इसके पहले सरक जाने में खैर समझी सोनू ने.

गई तो चले क्यों नहीं

...लिम खां सनी सुपर साउंड थियेटर ...स करने आए तो हर किसी से पहले ...हेरानी की वजह पूछते फिर रहे थे ...ल्म 'साथी' जिसमें आदित्य पंचोली ...उनकी भी मुख्य भूमिका है, चल ...ई?

...ऐसे मासूम सवाल का जवाब ...के घाघ सिवा इसके और क्या देते ...लाब जिस फिल्म में आप जैसा ...का आर्टिस्ट काम कर रहा हो, वह भला कैसे नहीं चलेगी?" चार जगह से जब एक-सा ही जवाब मिला तो मियां मोहसिन की छाती चौड़ी हो गई. इतना ही नहीं, उन्होंने प्रोड्यूसरों को भी कोस डाला, "समझ नहीं है किसी को. इतना बढ़िया और हिट आर्टिस्ट मैदान में है और वे हैं कि आपको जैसे भूल ही बैठे हैं."

बस, तभी से मोहसिन परेशान हैं. अब वे हर किसी से यही पूछते फिर रहे हैं, "भई, मैं हिट आर्टिस्ट हूं तो प्रोड्यूसर मुझे साइन क्यों नहीं कर रहे?"

...इंडस्ट्री वालों
...परेशान

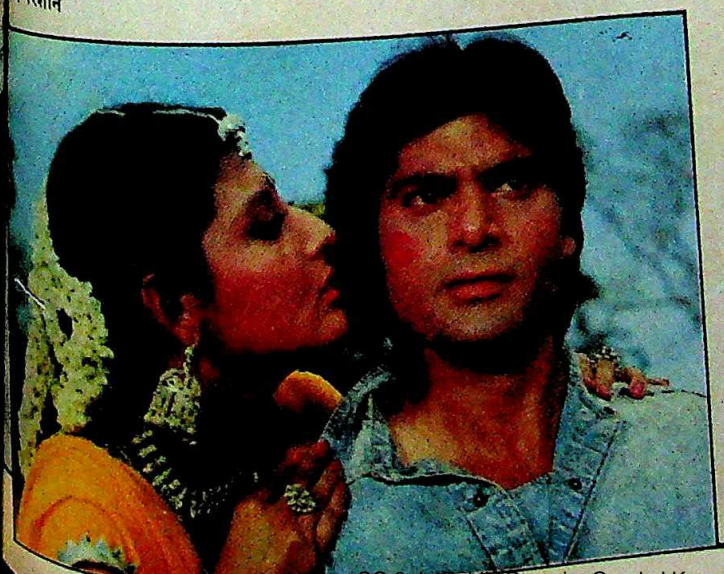

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्भुत लय

◆ हालांकि उनकी पदचाप किसी बैले नर्तक जैसी है लेकिन नृत्य की

जामेयेव: मनोहारी प्रदर्शन

शैली एकदम ही अलग है. भरतनाट्यम के सोवियत नर्तक, 24 वर्षीय **दिमित्री जामेयेव** ने दुर्योधन, धर्मपुत्र और पांचाली के भाव-अनुभावों का पिछले दिनों मनोहारी प्रदर्शन किया. लेकिन फिलहाल उनका ध्यान जितना अपने प्रदर्शन पर है, उतना ही अपने देश पर भी. ठेठ हिंदी में उन्होंने कहा, "अब यह नया देश है. पर लोग तो वही हैं."

महज विज्ञापन

◆ एक साया इंडियन आयल के निदेशक के. दुरैस्वामी का पीछा कर रहा है. एकाएक वह पूछ बैठता है. "नाम?" "दुरैस्वामी." लेकिन साये को तो उनकी लांड्री के नाम से मतलब है. सो, वे जवाब देते हैं, "घर में धुले हैं. अल्ट्रा डबल डिटर्जेंट से." दुरैस्वामी नए साबुन के विज्ञापन में दिखने जा रहे हैं. लेकिन वे खुद साबुन नहीं अपनाएंगे.

चटखारेदार व्यंजन

◆ केक और शोरबा! भला क्या रिश्ता हो सकता है? पर लंदन के एंग्लोइंडियन रेस्तरां 'चटनी मेरी' ने रिश्ता बैठा दिया है. रेस्तरां की निदेशक **नमिता पंजाबी** ने विलायती व्यंजनों को मसालेदार बनाकर लजीज व्यंजन तैयार किए हैं. कुछ मिसालें: मसाला रोस्ट लैंब और मसालेदार सैल्मोन केजीरी. और अंग्रेजी राज के दौर से सम्मोहित लोगों के लिए व्यंजन 'राज कॉटेज पी (मटर)' भी है. करी क्लब ने 'चटनी मेरी' को ब्रिटेन में भारतीय व्यंजन बेचने वाले 7000 (जयती) रेस्तरांओं में उम्दा माना है. इस प्रतिष्ठित रेस्तरां ने चीन की प्रसिद्ध दीवार को भी लांघ लिया है. पेइचिंग में 'मैक्जिम' के बाद **डमी सभरवाल** ने अब शंघाई में 'द फर्स्ट इंडिया' नाम से कबाब और शोरबे की दुकान खोल ली है. सभरवाल कहते हैं, "लजीज भोजन का मजा देना ही मकसद है." आखिर शोरबे ने हर जगह अपनी धाक जमा ही ली है.

नमस भोजानी

सभरवाल (ऊपर), और पंजाबी: अनूठे व्यंजन

कन्या ही चाही

◆ नारी को इतना सम्मान और कहां. मद्रास के **माइलापोर परिवार** में पिछली पांच पीढ़ियों से एक भी पुत्र नहीं जन्मा. पर कोई शिकवा नहीं. उलटे वे बेहद खुश हैं. सबसे उम्रदराज 88 वर्षीया जयालक्ष्मी हैं, तो नई पीढ़ी की वारिस अभी जन्मी ही है.

माइलापोर परिवार

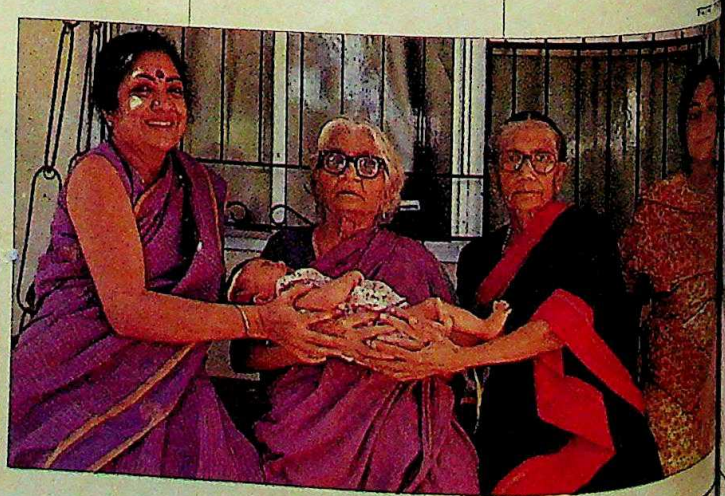

जयालक्ष्मी की बेटी 77 शांता कहती हैं, "हम नहीं तो नहीं हैं पर हमने कन्या ही चाही." पुरुषों का क्या हाल है? लगता है वे अल्पसंख्यक गए हैं. आश्चर्य नहीं परिवार ने कुत्ता कुतिया पाली है. इस कदर हावी है

बंध गया फौजी

◆ छोटे परदे का एक सितारा परिणय सूत्र में बंध धारावाहिक 'फौजी' में मशहू **शाहरुख खां** ने दिल्ली की **छिब्बा** से शादी कर ली. उन्हें का बेहतरीन तोहफा भी जी.पी. सिप्पी की फिल्म 'रा गया जेंटलमैन' में प्रमुख

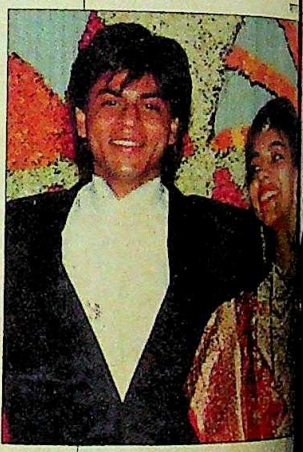

शाहरुख और गौरी: जीवन

के बतौर. मगर उन्होंने कई को तोड़ भी दिया. हाल कहते हैं, "मैंने किसी का दि तोड़ा." कौन यकीन करेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झलके इनसे प्यार तुम्हारा
ऐसे रंग सजाए तुमने
अपने हाथों के जादू से
बुने तुमने हजारों सपने

मुलायम प्यार भरी गरमाहट पैदा करने वाले वर्धमान निटिंग यार्न रंग बिरंगे तरह तरह के रंगों में उपलब्ध हैं..... ब्रायलौन, मेफेयर, क्रिस्टीना, एंजल हेयर, बेबी लव, फैदरलाईट, फरलौन, गोल्डमोहर, रैबिट, ब्रोकेड़, टिफनी-सबके सब एक्रलिक और सोलर शुद्ध मेरीनोंवूल की रचना

Vardhman

वर्धमान स्पिनिंग
एण्ड जनरल मिल्ज़ लि०
चण्डीगढ़ रोड, लुधियाना 141 011

वर्धमान निटिंग यार्न
जिसमें सिमट जाये आपका संस

JAISONS VS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

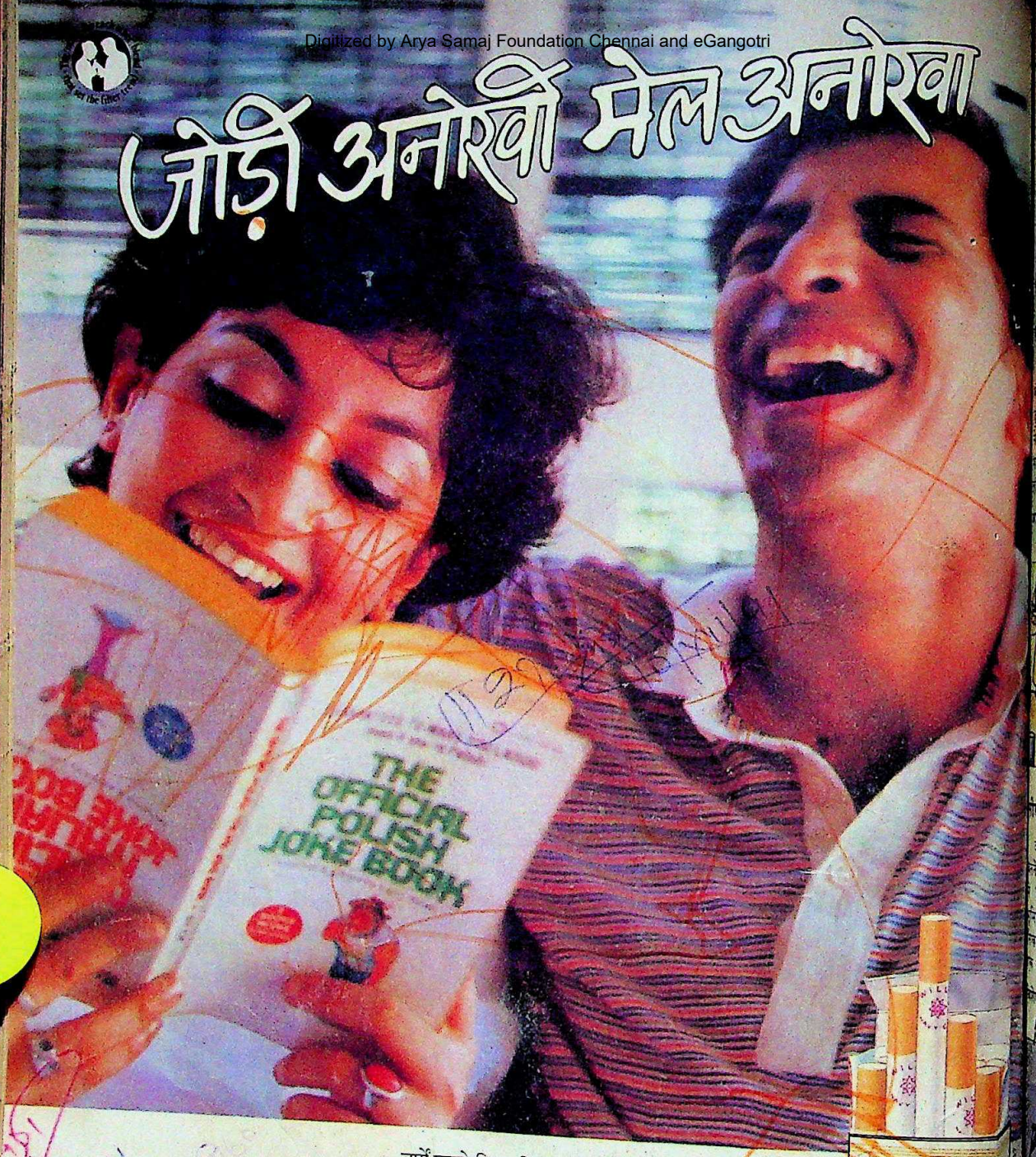

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट-प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

आई.टी.सी. लिमिटेड का
अपना एक ब्राण्ड
भारत में निर्मित

WILLS
FILTER

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

वैधानिक चेतावनी:
सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

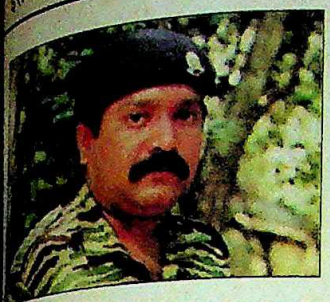

साजिश बेनकाब

विशेष जांच दल और तमिलनाडु पुलिस की क्यू शाखा ने राजीव गांधी हत्याकांड से जुड़ी कई गुत्थियों को सुलझा लिया है. जांच में यह राज भी खुला है कि एलटीटीई की योजना महा ईलम बनाने की थी, जिसमें तमिलनाडु भी शामिल होता.

आवरण कथा 22

बदलते वक्त से बेखबर

भारतीय विदेश नीति घोर असमंजस के दौर में है. बदलती विश्व व्यवस्था की चुनौतियों का डटकर मुकाबला करने के बजाए विदेश मंत्रालय एक के बाद एक भीषण गलतियां करता जा रहा है. और माधव सिंह सोलंकी विदेशमंत्री के रूप में विफल रहे हैं.

खास रपट 16

सीखने और सिखाने की ललक

अधिक से अधिक लोग समाज में अंग्रेजीदां बनने की कोशिश करते रहे हैं. इसे आंच देने में 'रैपिडेक्स इंगलिश स्पीकिंग कोर्स' की भूमिका महत्वपूर्ण रही है. बेअटक अंग्रेजी सिखाने का दावा करने वाली इस किताब की एक करोड़ प्रतियां बिक चुकी हैं.

विशेष लेख 61

जीवन की टूटती डोर

केंद्र और राज्य सरकार द्वारा दी गई छूट में कटौती के कारण आंध्र प्रदेश के 30 लाख से भी अधिक बुनकर भुखमरी के साए में जी रहे हैं. भुखमरी से 60 लोगों की जान जा चुकी है. दूसरे लोग राज्य सरकार की मदद के इंतजार में कंगाली की ओर बढ़ रहे हैं.

विशेष लेख: 86

ये हैं रुस्तम

भारतीय नौसेना का कमांडो दस्ता अति गोपनीय और गुप्त किस्म के अभियानों को अंजाम देने के लिए बनाया गया था. गहन प्रशिक्षण प्राप्त यह दस्ता वर्षों गुमनाम रहा. पहली बार प्रकाशित विशेष रिपोर्ट.

विशेष लेख 48

पटाक्षेप की तैयारी

जोरदार हंगामे के साथ शुरू हुआ राष्ट्रीय मोर्चा गठन के दो वर्षों के भीतर ही बिखरने लगा है. सबसे ज्यादा नुकसान वी.पी. सिंह का हुआ है, जिनके जनता दल की सार्थकता और बुनियाद दोनों खतरे में हैं. उधर, एन.टी. रामराव के लटके-झटके फिर शुरू हो गए हैं.

खास रपट 73

अगले पन्नों पर

कसौटी 7
तेवर 8
राजरंग 10
हिंदोस्तां हमारा 12
खास रपट
विदेश नीति:
बदलते वक्त से बेखबर 16
आवरण कथा
एलटीटीई: साजिश बेनकाब 22
आजकल
लिबियू राद्दू:
अंत भला तो सब भला 29
चिमनभाई पटेल:
पुराने बसेरे की ओर 31
एकता यात्रा: अब नई टेक 34
सनद रहे 36
खास रपट
पंजाब: नायक की वापसी 41
छाया-लेख
नौसैनिक कमांडो दस्ता: छुपे रुस्तम 48
विशेष लेख
बोलचाल की अंग्रेजी:
सीखने और सिखाने की ललक 61
शिक्षा
बिहार: नया नुस्खा 70
व्यापार चक्र 71
कारोबार
शेयर बाजार 72
खास रपट
राष्ट्रीय मोर्चा: पटाक्षेप की तैयारी 73
वाराणसी: फिर-फिर दंगों का दौर 78
अपराध
मुंबई: माफिया से मुठभेड़ 80
धर्म
द्वारिकाधीश मंदिर: नया धर्मयुद्ध 81
वर्ग पहेली 82
अंतरंग 83
सिनेमा
दिशा: सार्थक संकेत 84
विशेष लेख
आंध्र प्रदेश के बुनकर:
जीवन की टूटती डोर 86
विकास
मेधा पाटकर: इस्पाती इरादे 93
कुछ अपनी, कुछ परायी 95
कहानी 96
किताबें 100
परदे के उस पार 102
चर्चित चेहरे 104

आवरण: प्रबाल मंडल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ed by Arya

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये वॉशिंग मशीन है कोई अंतरिक्ष यान नहीं (नासा, कृपया नोट करें)

पूरी तरह ऑटोमेटिक

...ो अपनी बाईं ओर देख रहे हैं, ये ...है अनोखे एजिटेटर का; और ये जान ...ी एस वॉशिंग मशीन की. ये मशीन ...चंद सितारों का वादा तो नहीं करती, ...ा ये आपके कपड़ों को यक़ीनन एक ...धुलाई और बेहतरीन सफ़ाई जरूर दे ...है - आपकी मनपसंद क़ीमत में. ...तौर पर ठंडे पानी से धुलाई के ...ाया गया है. क्योंकी आजकल

ज़्यादातर कपड़ों को ठंडे पानी से धुलाई (10• से 40•C के अंदर) की ज़रूरत होती है. (गर्म पानी के कुछ दुष्परिणाम होते है, जैसे रंग का उड़ना, सिलवटों का पडना, ...को कमज़ोर होना) खास इसीलिए इस अनोखे एजिटेटर धुलाई सिस्टम का आविष्कार किया गया है. ये टीवीएस मशीन बिलकुल इन्सानी हाथों की तरह काम करती है. अड़ियल से अड़ियल मैल को भी खींच निकालती है आपके हाथों ही की तरह कपड़ों का ख़याल रखती है और दूसरी कई मशीनों के मुक़ाबले इतना सारा काम 50% कम बिजली ख़र्च करके निपटाती है.

तीन साल की वॉरंटी

अब आपको टी वी एस के बारे में और ज्यादा जानने की ज़रूर बेताबी होगी, तो इसके लिए नासा से नहीं, अपने क़रीबी टी वी एस डीलर से संपर्क करें.

TVS AGITATOR WASH

सफ़ाई में कमाल। . सही देखभाल.

...या के सर्वप्रथम उपकरण निर्माता Whirlpool CORPORATION यु एस ए. के सहयोग से निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

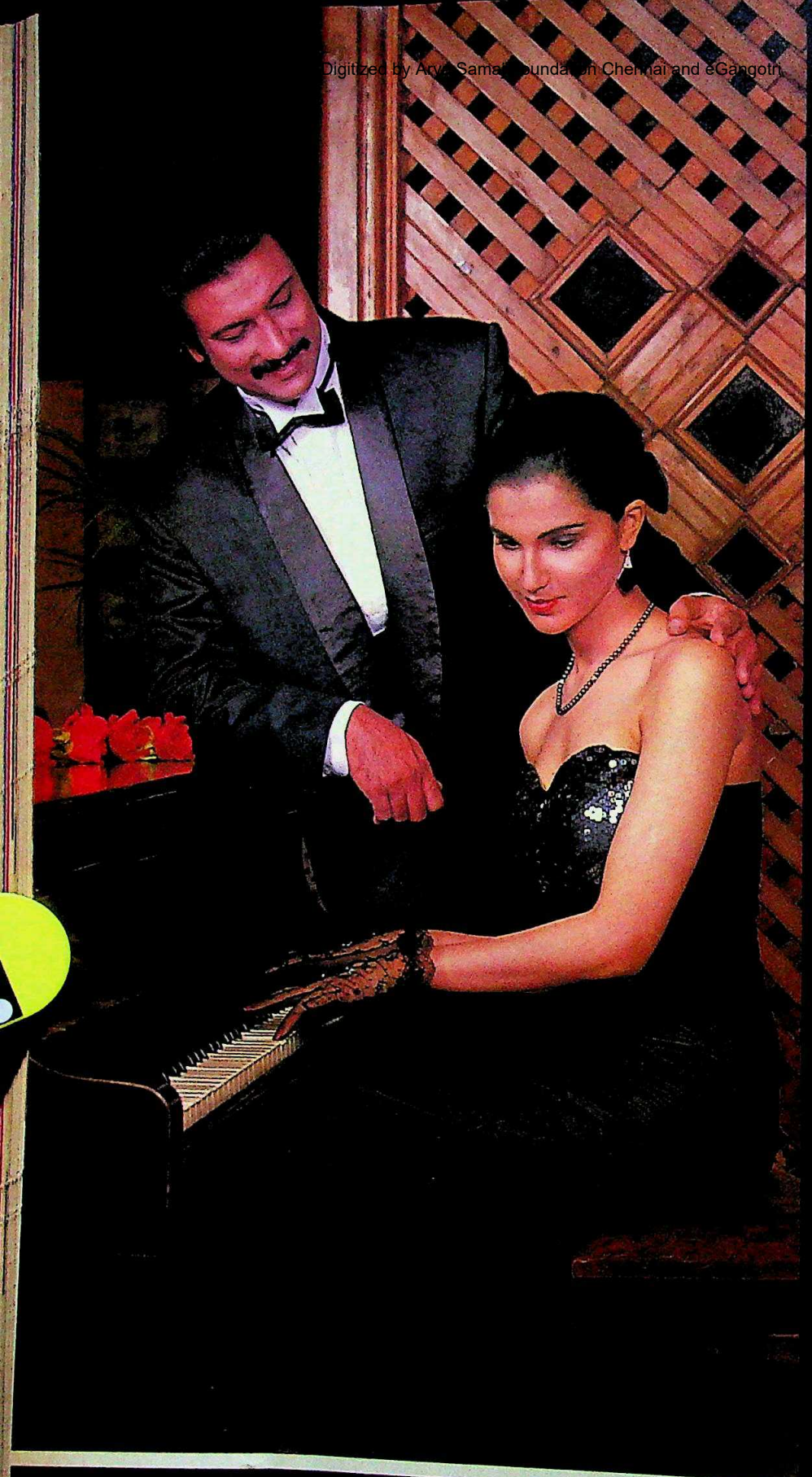

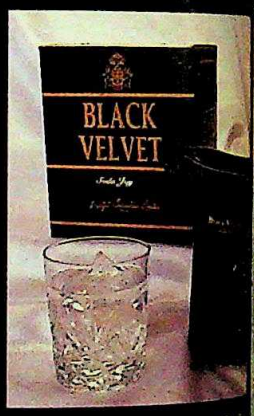

Soda jug bubbling with the
of good cheer.

BLACK
VELVET
Soda Jug

Available at select

The best things in life are blac

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले न सोचा

भाजपा,रास्वसंघ और विहिप के बिगड़ते रिश्तों पर आवरण कथा (30 नवंबर) में आपने भाजपा की विवशता और दुविधा को बखूबी उभारा है. दरअसल चुनावी वैतरणी पार कर लेने की उतावली में भाजपा ने सोचा ही नहीं कि ऐसे उग्रवादी संगठनों से गठजोड़ का क्या अंजाम होगा.

संजय कुमार
दिल्ली

सभी हदें टूटीं

'तन बोले, मन डोले' (आवरण कथा 15 नवंबर) सिनेमा में बढ़ती अश्लीलता को उजागर करने वाली जरूर थी लेकिन सेंसर बोर्ड की खामियां, और इसकी रोकथाम के सुझावों के साथ प्रस्तुत किया जाता तो लेख और प्रभावशाली होता. तब ही प्रशासन भी कुछ कदम उठाने को सक्रिय होता.

संतोष रॉय
छिंदवाड़ा (म.प्र.)

■ वास्तव में आज के नायक-नायिकाओं ने अंग-प्रदर्शन की सभी हदें पार कर ली हैं. एक जमाना था जब प्रेम और लाज की एक आदर्श परिभाषा हुआ करती थी परंतु आधुनिक युग के इन कलाकारों ने प्रेम तथा लाज को इतना अधिक घृणित कर दिया है कि समाज में प्रेम का अर्थ 'खुला सेक्स' और लज्जा का अर्थ 'गर्भ धारण करने' से लिया जाने लगा है.

असीम अंसारी
बुरनी (म.प्र.)

■ साहित्य, कला तथा सिनेमा को समाज का दर्पण होने का गौरव प्राप्त है. लेकिन हमारे निर्माता सिनेमा के नाम पर जिन अश्लील चित्रों को संजोकर दर्शकों के सामने परोस रहे हैं क्या इससे हम यह अनुमान लगा लें कि समाज का इतना अधिक नैतिक पतन हो चुका है कि हमारी आंखें इसका विरोध करने की जहमत भी नहीं उठा पातीं.

पद्मेश कुमार
कोटद्वार (उ.प्र.)

■ फिल्में एक ऐसा माध्यम है जिससे जनता सीधे तौर पर जुड़ी होती है. यह बहुत कुछ समाज की दिशा को प्रकट करती हैं, समाज की नैतिकता और मौलिकता को मापते हुए एक महत्वपूर्ण रोल अदा करती हैं. हर दौर में ऐसी फिल्मों का निर्माण होता रहा है लेकिन समाज इसे ठुकराता रहा, अब उसी समाज ने इन्हें गले लगाया है तो वही उत्तरदायी भी होगा.

मुहम्मद तारिक
अलीगढ़ (उ.प्र.)

अनेक प्रतिक्रियाएं

आवरण कथा 'तन बोले, मन डोले' (15 नवंबर) पर हमें 72 पत्र मिले जिनमें तकरीबन सभी ने ऐसे चित्र छापने का विरोध किया है. कुछ ने ऐसे उत्तेजक चित्रों को पत्रिका के स्तर और प्रतिष्ठा के प्रतिकूल बताया तो कुछ ने सिनेमा और विज्ञापनों में बढ़ती अश्लीलता की दौड़ में शामिल होने का आरोप लगाया. कुछेक पाठकों का मानना था कि फिल्मों में बढ़ता देह प्रदर्शन समाज में गिरते नैतिक मूल्यों और यौन उन्मुक्तता का ही प्रतिबिंब है. थोड़े पाठकों का यह भी सुझाव था कि सेंसर को नियम और कड़े कर देने चाहिए. हालांकि कई पाठकों का मानना है कि समांतर, हिंसा, एक्शन फिल्मों की तरह देह प्रदर्शन का दौर भी जल्द ही बीत जाएगा क्योंकि अंततः दर्शक ऐसी उन्मुक्तता से ऊब जाएंगे और निर्माताओं को फिर मर्यादा और नैतिकता की सीमा के भीतर ही फिल्में बनानी पड़ेंगी.

■ हिंदी फिल्में ही समाज में फैली हिंसक प्रवृत्ति के लिए पूर्ण रूप से जिम्मेदार नहीं हैं. इसके लिए वे दर्शक भी जिम्मेदार हैं जिन्हें वह सब कुछ अच्छा लगता है और यही सब कुछ देखना पसंद करते हैं. इसे रोकना है तो दर्शकों को अपनी मनोवृत्ति बदलनी होगी.

संजय कुमार आर्य
कनखल (उ.प्र.)

■ फिल्में मनोरंजन का साधन ही नहीं बल्कि शिक्षा का सशक्त माध्यम भी हैं. आज की फिल्में राष्ट्रीय चरित्र को पलीता लगाकर हिंसा, बलात्कार, चोरी, डकैती व कामुकता की नई पौध पनपा रही हैं. युवा पीढ़ी अश्लीलता व कामुकता के सागर में डूबती-उतराती नजर आती है. अश्लील व हिंसात्मक फिल्मों ने राष्ट्रीय चरित्र तथा भारतीय संस्कृति के पावन मूल्यों पर ग्रहण लगा दिया है.

बसंत त्रिपाठी
मावली जं. (राज.)

■ हिंदी फिल्मों में बार-बार उन्हीं कहानियों को दोहराना और परदे पर प्रस्तुत कर देना प्रोड्यूसरों की कमजोरी बनती जा रही है. इन सबसे दर्शक ऊब चुके हैं, अब उनके लिए 'ताजा चीज' रोमांटिक दृश्य वाली फिल्में हैं.

चंद्रशेखर शर्मा
उज्जैन (म.प्र.)

■ 'पथ प्रदर्शक' राजकपूर के बारे में पढ़ा. दुर्भाग्यवश कहें या अज्ञानतावश, राजकपूर को फिल्मों की अश्लीलता का पथ प्रदर्शक मान लिया गया है. राजकपूर कहानी की मांग पर ही शिष्टता के दायरे में शारीरिक सौंदर्य का चित्रण करते थे लेकिन दूसरी तरफ आज के निर्देशक तो उत्तेजक प्रदर्शन पर ही विश्वास करते हैं. इसलिए अवांछित सेक्सी दृश्यों का पथ प्रदर्शक राजकपूर को नहीं बल्कि बी.आर. इशारा को कहा जाना चाहिए.

दिनेश कुमार सिंह
लखनऊ (उ.प्र.)

■ जो व्यक्ति सिनेमा के इस रूप से जैसे-तैसे बच गया वह आपकी इस पत्रिका के फिल्मी दृश्यों को देखकर अवश्य ही मारा गया होगा. यह तो वही बात हुई कि दूसरों को नसीहत, खुद मियां फजीहत.

सैयद नौशाब अली
दिल्ली

वर्ष: 8, अंक: 3, 1-15 दिसंबर 1991
● समाचार कार्यालय: लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन 3315001-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. चाहकी चंदा भेजें: इंडिया टुडे (हिंदी), डी-114, नई दिल्ली-110001 ● सर्कुलेशन कार्यालय: इंडिया टुडे, एफ-14, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ● मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 24 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435. टेलेक्स: 11-8379 THOM IN. तार: लिवमीडिया, मुंबई. ● क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय: के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321023, 3321273; टेलेक्स: 31-62134 THOM IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● द्वितीय मंजिल, 98 ए, डॉ. राधाकृष्णन सलाई, मायलापोर, मद्रास-600004. फोन: 831605, 831719, 831729, 832428, 832247 तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 मेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089. टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016. फोन: 225398, 221922. टेलेक्स: 21-7138 INTO IN. तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा मुद्रित और प्रकाशित तथा पॉलसन प्रेस, इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■ क्या अपनी पांचवीं वर्षगांठ पर ही कोई इतना 'एडल्ट' हो सकता है जितना 'इंडिया टुडे' अपनी पांचवी वर्षगांठ पर हो गया ?

गाजियाबाद (उ.प्र.) प्रमोद कुमार दीक्षित

कंपा देने वाली त्रासदी

'विपदाओं का पहाड़' (15 नवंबर) पढ़ा. ऐसे भयावह एहसास वाली प्राकृतिक त्रासदी वास्तव में मनुष्य को कंपित कर देने वाली है. ऐसे में पत्रिका के मुखपृष्ठ पर एक गरम दृश्य को छापना यह ही साबित करता है कि इंडिया टुडे भी धड़कते दिलों में उत्तेजना पैदा करने में औरों से पीछे नहीं रहना चाहता.

गोरखपुर (उ.प्र.) उदय प्रकाश श्रीवास्तव

■ उत्तरकाशी के भूकंप की रिपोर्ट ने मन मस्तिष्क को हिला डाला. एक तरह से देखा जाए तो इस विनाश के लिए मनुष्य ही जिम्मेदार है. पर्यावरण और प्रकृति से खेलने का फल तो उसे भुगतना ही पड़ेगा. प्रकृति मनुष्य की कारगुजारियों को भला कब तक सहती रहेगी.

जबलपुर (म.प्र.) संजय कुमार शर्मा

पहाड़ों में दहशत

'बुराई की विजय' (15 नवंबर) पढ़कर लगा कि सिख आतंकवादियों के इरादे अब उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में पैठ बनाने के बाद पहाड़ों में भी दहशत फैलाने के हैं. नैनीताल जिले में उनकी घुसपैठ एक खतरनाक पहलू को उजागर करती है.

पिथौरागढ़ (उ.प्र.) सैयद रईस अहमद

बड़ा धोखा?

'शारजाह से सबक' (15 नवंबर) में आपने निष्पक्ष विवरण नहीं दिया. शारजाह कप के फाइनल में पाकिस्तानी टीम खेल भावना से खेल ही नहीं रही थी. फाइनल मैच शारजाह क्रिकेट का सबसे बड़ा धोखा साबित हुआ. ऐसा लग रहा था कि श्रीलंकाई अंपायर भी पाकिस्तान को जिताने के पक्ष में थे.

आगरा (उ.प्र.) कुलदीप जयसवाल

■ पाकिस्तान को दर्शकों का समर्थन उनका समर्थन नहीं, वरन भारत का विरोध प्रदर्शन है. भारत-पाक मैच सामान्य हार-जीत के नहीं वरन राष्ट्रों की हार-जीत के मामले होते हैं.

उज्जैन (म.प्र.) नीरज जैन

निर्णय की अक्षमता

'वर्षगांठ परिशिष्ट' (15 नवंबर) गागर में

'विवाद के तेज झटके' से स्पष्ट हुआ कि टिहरी बांध कितना विनाशकारी साबित हो सकता है. किंतु परियोजना को स्वीकृति देने वाली समिति के सदस्य को इसे पूर्णतः सुरक्षित बता देने से पहले उत्तर देना होगा कि क्या भोपाल और चेरनोबिल पूर्णतः सुरक्षित नहीं थे?

कैथल (हरि.) देवेंद्र कुमार सचदेवा

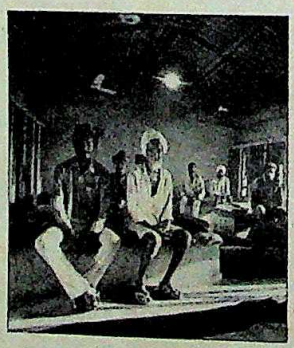

बंधन मुक्त खुले वातावरण में रहने से कैदियों में जहां खुद को सुधारने की रुचि बलवती होती है, वहीं वे प्रशासन का आर्थिक बोझ भी कम करते हैं.

अजमेर (राज.) राजेंद्र सिंह सिसोदिया

सागर-सा लगा. सचमुच पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्रीय समस्याएं उग्रतर रूप में उभरी हैं और इसका एकमात्र कारण दिल्ली की गद्दी पर बैठे लोगों की अकर्मण्यता और सही समय पर सही निर्णय लेने की अक्षमता ही है. वर्तमान स्थिति में सुधार के कोई लक्षण यदि नजर नहीं आ रहे तो वजह यही है कि महत्वपूर्ण विषयों पर कठोर निर्णय लेने का माद्दा वर्तमान सरकार में भी नहीं है.

पटना (बिहार) सौमित्र मोहन

लाजवाब बेबाकी

'पति काहे का परमेश्वर' (15 नवंबर) पढ़ा. भले ही पुरुषों को सादिया की बेलाग और सपाट लहजे में कही बात नागवार गुजरे, उनकी बेबाकी बहुत भाती है. यह सच है कि स्त्रियों ने ही पुरुषों को शासक समझ लिया है और खुद को शोषित. यह परंपरा अब बदलनी चाहिए.

सिंहभूमि (बिहार) सुनीता साहू

नेता उत्तरदायी

'अयोध्या विवादः फिर उफान की ओर' (15 नवंबर) पढ़कर लगा कि जिन्ना से शहाबुद्दीन तक सभी मुस्लिम नेताओं ने हमेशा धमकी की भाषा का प्रयोग किया है. आज की सांप्रदायिकता इन्हीं कट्टर मुस्लिम नेताओं के 40 वर्षों के आचरण का परिणाम है. यदि यह सांप्रदायिकता हिंदू उग्रवाद की सीमा तक पहुंची, तो इसके लिए मुस्लिम नेता अधिक उत्तरदायी होंगे. और इसका नुकसान भी अंततः मुसलमानों को ही होगा.

भोपाल (म.प्र.) जितेंद्र तिवारी

■ लेख पढ़कर लगा कि सरकार इस विवाद के लिए अलग कदम उठा रही है तो विहिप अलग उसकी दिलचस्पी नया विवाद खड़ा करने की है. अब अयोध्या में ऐसी स्थिति आएगी कि न राम मंदिर बन सकेगा और न ही बाबरी मस्जिद सुरक्षित बच सकेगी.

अकोला (महाराष्ट्र) विनोद भोलाने

संकीर्ण धारा

'मजबूरी का नाम तालीम' (31 अक्तूबर) पढ़कर बहुत क्षोभ हुआ कि आज भी मजहब के नाम पर मुस्लिम समाज में ऐसी संकीर्ण धारा पनप रही है. ऐसी ही शिक्षा इन्हें समाज की मुख्य धारा से अलग करने और इनके पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार है. अब भी समय है कि ऐसी तालीम लें. जो उन्हें अपने पैरों पर खड़ा कर सके. अच्छा नागरिक बनाए.

मुंबई (महाराष्ट्र) जितेंद्र [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महज बचकानापन

सभी रेखांकन: अजीत नैनन

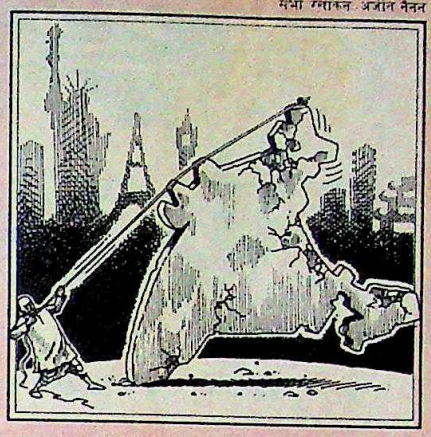

भारतीय विदेश नीति के नियंता नेतागण तथा नौकरशाह अंतरराष्ट्रीय वास्तविकताओं की जगह सैद्धांतिक आग्रहों पर ही फैसले करते रहे हैं. उनमें विश्व-दृष्टि का अभाव रहा है. वे विश्व में हो रहे परिवर्तनों को भारतीय हितों के संदर्भ में देखने में भी विफल रहे हैं.

पिछले दिनों सोवियत संघ में जो युगांतरकारी घटनाएं हुईं. उन्हें भारतीय विदेश मंत्रालय न तो अच्छी तरह समझ पाया और न उन पर समझदारी भरी प्रतिक्रिया व्यक्त कर पाया. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और भी कई ऐसी घटनाएं हुई जिन्होंने भारत की विदेश नीति के बचकानेपन को उजागर किया. मसलन सोवियत संघ ने जब एशिया को परमाणु हथियार मुक्त क्षेत्र घोषित करने के पक्ष में मतदान किया तो भारत ने उसे 'भारत विरोधी' कार्रवाई कहा, विदेश मंत्री माधव सिंह सोलंकी सोवियत संघ गए तो बोरिस येल्तसिन के साथ क्या बात करनी है यही नहीं तय कर पाए, दक्षेस की शिखर बैठक को लेकर जो विवाद उठा इससे भारत-श्रीलंका संबंध और कड़वे हुए.

भारतीय विदेश नीति के बारे में जो धारणाएं हैं वे निराधार भी नहीं हैं. आज फर्क यह हुआ है कि सोवियत संघ (जिस भी रूप में मौजूद है) दुनिया में हो रहे परिवर्तनों के प्रति अपने हितों का ध्यान रखते हुए प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहा है. और भारत है कि अभी भी महाशक्तियों के समीकरणों के संदर्भ में सोच रहा है. आज जबकि परमाणु अप्रसार को विश्वव्यापी समर्थन मिल रहा है तब केवल नैतिकता की दुहाई देते रहने का कोई मतलब नहीं रह गया है. भारत अगर अपना रवैया नहीं बदलता तो उसे दुनिया भर में विश्वासघाती माना जाएगा.

विडंबना यह है कि पाकिस्तान ने परमाणु मुक्त क्षेत्र वाला प्रस्ताव रखकर कूटनीतिक बढ़त हासिल कर ली है जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए था. परमाणु हथियारों के मामले में उसके अपने इरादे संदेहास्पद रहे हैं. अमेरिका खास तौर से उस पर संदेह करता रहा है. और आज तो इन दोनों देशों के संबंध भी बहुत अच्छे नहीं रह गए हैं. अमेरिका ने उसे मदद देने से इनकार किया है और अब उसे उन अग्रणी देशों में नहीं गिनता जो अमेरिकी हितों को पुष्ट करते हैं. भारत के लिए यह सुनहरा मौका है कि वह विदेश नीति में परिवर्तन करके विश्व जनमत को अपने पक्ष में करे. लेकिन सरकार को कथनी और करनी में मौलिकता दिखानी होगी.

शर्मनाक लापरवाही

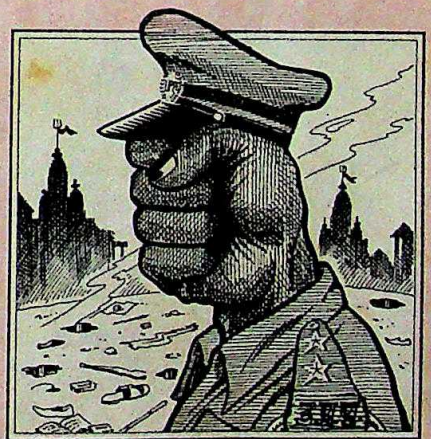

बाबरी मस्जिद के आसपास जमीन के सरकारी अधिग्रहण के बाद उभरे सांप्रदायिक तनाव के मद्देनजर उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार को अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए थी कि धार्मिक समारोहों के दौरान हिंसा न फूटने पाए. लेकिन पिछले पखवाड़े वाराणसी में जो कुछ हुआ उससे उलटी बात ही उजागर हुई. लगभग एक हफ्ते की सांप्रदायिक हिंसा में 19 लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया.

इस तरह की वारदात होना और इनमें एक भी व्यक्ति का मारा जाना राष्ट्रीय शर्म की बात है. लेकिन वाराणसी में प्रशासन की लापरवाही और भी शर्मनाक थी. प्रतिमा विसर्जन के दौरान शहर में कभी भी सांप्रदायिक दंगा नहीं हुआ था. फिर भी एहतियात के तौर पर जुलूस के साथ केंद्रीय सुरक्षा बल और पीएसी के जवान हमेशा साथ लगाए जाते रहे हैं. इस बार अयोध्या विवाद के कारण फैले तनाव के बावजूद चंद दारोगा और कुछ सिपाही ही इन जुलूसों के साथ थे, जबकि जुलूस के संयोजक नवसंघ क्लब ने ज्यादा सुरक्षा की मांग की थी. गड़बड़ी तब शुरू हुई जब इस क्लब के बागी गुट ने भाजपा के एक पार्षद के नेतृत्व में उस समय बेवजह पटाखे आदि फोड़ने शुरू कर दिए जब जुलूस मुस्लिम इलाके से गुजर रहा था. पुलिसवाले कम संख्या में थे और असहाय थे. और जैसा कि ऐसे मौकों पर होता है, अफवाह फैलाने वालों की बन आई. अफवाह फैलाई गई कि हिंदू कत्ल किए जा रहे हैं. नतीजा यह हुआ कि दुकानों, सिनेमाघरों आदि से निकलने वाले बेकसूर लोगों की बर्बरता से हत्या की गई.

हिंसा का यह तांडव पांच दिनों तक चलता रहा उसके बाद भी सरकार ने पता नहीं किन कारणों से कर्फ्यू में ढील देने का फैसला किया. और एक बार फिर हत्यारों के गिरोह सड़कों पर उतर आए और बेकसूरों के खून बहाए गए. गड़बड़ी फैलाने वाले खुलकर दंगे करते रहे. पुलिस कुछ नहीं कर पाई.

देश में सांप्रदायिक खून-खराबे का एक और काला अध्याय लिखा गया. उत्तर प्रदेश सरकार ने गलतियों का सिलसिला जारी रखा. उसने दूसरे दलों के नेताओं को तो कर्फ्यू वाले इलाकों में जाने की इजाजत नहीं दी लेकिन भाजपा सांसद श्रीश दीक्षित को दौरा करने दिया. यह पक्षपात पूर्ण रवैये का द्योतक है. इससे भाजपा के बारे में यह धारणा नहीं बनती कि वह मध्यमार्गी राजनीति में शामिल होने की इच्छुक है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

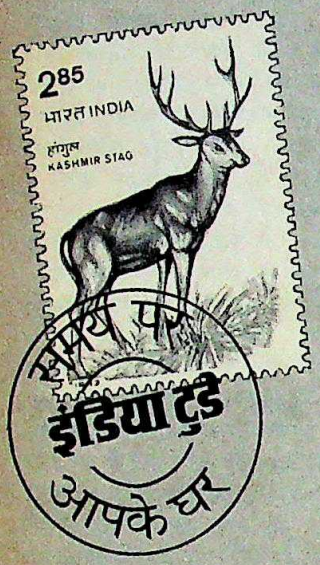

समय पर
इंडिया टुडे
आपके घर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य वार्षिक रु. 210/-
भुगतान का माध्यम-चैक/डिमांड ड्राफ्ट
दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास के चैक/डिमान्ड ड्राफ्ट एमआईसीआर वाले ही होना चाहिये।
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 15/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
दर व फेरफार केवल भारत में लागू
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें।
इंडिया टुडे (हिन्दी)
पोस्ट बॉक्स नं.-114
नई दिल्ली-110 001

इंडिया टुडे

MILESTONES/IT/120

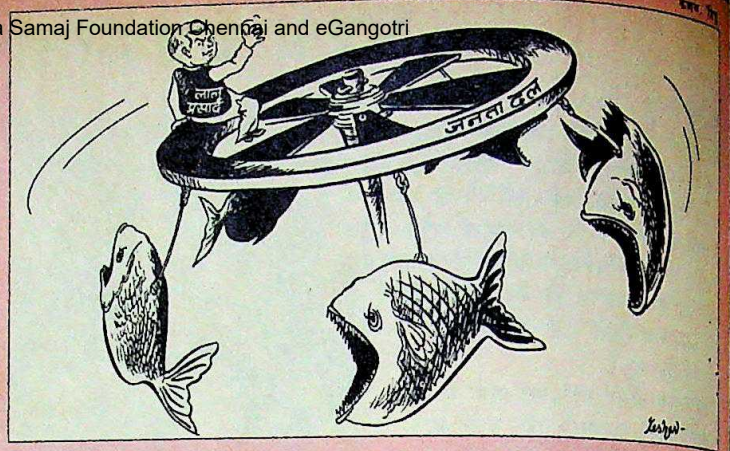

● जब जनता मेरे साथ है तो शेषन के बाप भी हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं.
■ **लालू प्रसाद यादव**, जनसत्ता

● जनता दल एक बीमार पार्टी है. जो लोग कांग्रेस (इ) में जाना चाहते हैं वे जाएं. हम उनके जाने पर विदाई समारोह का आयोजन करेंगे.
■ **जॉर्ज फर्नांडीस**, पंजाब केसरी

● कांग्रेस ही भाजपा की सांप्रदायिकता को रोक सकती है. जद, सजपा तो नाकारा साबित हो चुके हैं.
■ **रामकृष्ण हेगड़े**, नई दुनिया

● जब हम कांग्रेस (इ) को हराने के लिए भाजपा से गठजोड़ कर सकते हैं तो भाजपा और सांप्रदायिक ताकतों को हराने के लिए कांग्रेस (इ) से मेल क्यों नहीं कर सकते.
■ **अजित सिंह**, टेलीग्राफ

● भगवान जगन्नाथ ने प्रधानमंत्री और मेरी जरूरत के हिसाब से सीटें दी हैं.
■ **बीजू पटनायक** (उपचुनाव के नतीजों पर), हिंदुस्तान

● आज योग्य शंकराचार्य कम हैं. कुछ तो शंकराचार्य पद के लिए ही उपयुक्त नहीं हैं. उन्हें शंकर सिद्धांत का ज्ञान तो दूर, ठीक से संस्कृत भी नहीं आती है.
■ काशी सुमेरू पीठ के **जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी शंकरानंद**, दैनिक जागरण

● अल्पसंख्यक 40 साल से कांग्रेस से धोखा खाते आ रहे हैं. एक बार भाजपा के साथ खड़े होकर देखें. ज्यादा से ज्यादा एक बार धोखा और खा जाएंगे. लेकिन सच कहता हूं एक बार भाजपा के साथ जुड़ गए तो फिर अलग होने का नाम नहीं लेंगे.
■ **भैरों सिंह शेखावत**, राजस्थान पत्रिका

● ऑस्ट्रेलिया में अपने प्रदर्शन से आलोचकों का मुंह बंद कर दूंगा.
■ **प्रवीण आमरे**, नई दुनिया

● जिस दिन मुझे लग गया कि कप्तान मुझे छुपाना चाहता है और मैं बोझ बन गया हूं उस दिन में अलविदा कह दूंगा.
■ **कपिलदेव**, स्पोर्टसवर्ल्ड

● न बाबा न, अब किसी चक्कर में नहीं पड़ना चाहती. मैं विवाह के बिना ही अपना जीवन बेहतर ढंग से बिता सकूंगी.
■ **नीलिमा अजीम**, दैनिक ट्रिब्यून

● ये नहीं कि कॉमर्शियल स्टार्स अच्छे एक्टर नहीं हो सकते. कई अच्छे एक्टर भी हैं पर वे अपनी इमेज, अपना हेयर स्टाइल तक नहीं बदल सकते तो ऐसे में मेरी फिल्मों के किरदार वे कैसे निभा पाएंगे?
■ **सई परांजपे**, हिंदुस्तान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके पहले कि आपका शिशु पहला डगमगाता क़दम उठाए...

आप ऐसा क़दम उठाएं ताकि वो बड़ा होकर लखपति बन जाए.

पहले कि आपका बच्चा इस विशाल दुनिया

ना सामना करे, आप ऐसी योजना बनाइए जो

ने भविष्य को एक नए मुकाम से शुरू करने

हल है. ~ यूनिट ट्रस्ट की बाल उपहार वृद्धि

योजना में निवेश कीजिए. ~ आपकी

थोड़ी बचत से भी आपका बच्चा बड़ा होकर

ी बन सकता है. ~ आप चाहें तो एकमुश्त

का निवेश कीजिए या हर वर्ष थोड़ी-थोड़ी

बढ़ते जाइए. आपके बच्चे के विकास के साथ

ाल उपहार भी बढ़ता जाता है ताकि जब वह

ष्क हो तो उपहार भी परिपक्व हो जाए और

को किसी भी ज़रूरत के लिए उपलब्ध हो. ~

फल और सुविधा आपका बच्चा 18 वर्ष की

के बाद साल में दो बार रकम निकाल सकता है.

ताकि जब किसी भी कार्य के लिए पैसे की ज़रूरत हो तो वह उपलब्ध हो. बकाया रक़म बच्चे की 21 वर्ष की आयु होने तक निरंतर बढ़ती जाती है. ~

मुफ़्त जानकारी पुस्तिका के लिए भारतीय यूनिट ट्रस्ट के किसी भी कार्यालय या प्रमुख प्रतिनिधि या एजेंट से संपर्क कीजिए.

अब डिवीडेंड बढ़कर 13% हो गया है. याद रखिए, हर 5 वर्ष बाद बोनस डिवीडेंड* भी दिए जाते हैं.

* 1986-91 के लिए 5% बोनस डिवीडेंड घोषित हुआ है.

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

एक करोड़ यूनिटधारकों की सेवा में समर्पित.

यूनिट ट्रस्ट की बाल उपहार वृद्धि निधि में निवेश कीजिए.

सभी सिक्योरिटी निवेश के साथ बाज़ार का जोखिम होता है. किसी भी निवेश से पहले अपने निवेश सलाहकार या यूनिट से सलाह अवश्य लें.

Sasta-UTI-346/91 HIN A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुहार की करामात

● पत्रकार अकसर अपना दुखड़ा पुलिस, अदालत या प्रेस कौंसिल के सामने ही लेकर जाते हैं. मगर वे प्रधानमंत्री के सामने गुहार लगाने को कब मजबूर होते

हैं? जब प्रधानमंत्री के तथाकथित दोस्त उन्हें खुलेआम धमकी दें तो.

पी.वी. नरसिंह राव को एक चिट्ठी में मुंबई के अंग्रेजी दैनिक 'डेली' के संपादक रजत शर्मा ने आरोप लगाया है कि वकील पिनाकी मिश्र ने क्रिकेट खिलाड़ी कपिलदेव द्वारा आयोजित एक भोज में "मेरे साथ मारपीट की और गालीगलौज किया." पत्र में आगे लिखा है कि चंद्रास्वामी के सहायक "पिनाकी मिश्र मेरे सिर पर प्रहार करने ही वाले थे कि 'इंडियन एक्सप्रेस' के कार्यकारी संपादक प्रभु चावला ने बीचबचाव किया. अगर चावला वहां न होते तो मेरी जान खतरे में होती."

पूर्व मुख्य न्यायाधीश रंगनाथ मिश्र के भतीजे और असम के राज्यपाल लोकनाथ मिश्र के बेटे पिनाकी मिश्र को अपने और चंद्रास्वामी के खिलाफ 'डेली' में छपी कुछ रिपोर्टें नागवार गुजरीं. पत्र के मुताबिक, पिनाकी मिश्र ने चंद्रास्वामी को प्रधानमंत्री का खास दोस्त बताया और शर्मा को सांप बताकर उन्हें कुचल देने की धमकी दी. अगर हालात नाटकीय नहीं बनते तो मामला आया-गया हो जाता. पिनाकी मिश्र को प्रधानमंत्री कार्यालय में विशेष कार्य अधिकारी बनाने की बात लगभग तय हो गई थी लेकिन बाद में इस पद पर उनकी नियुक्ति किन्हीं कारणों से रुक गई.

ठाटदार रिहाइश

● आखिरकार, पूर्व उप-प्रधानमंत्री देवीलाल ने वेलिंगडन क्रिसेंट के प्रतिष्ठित बंगले से मवेशियों को हरियाणा के सिरसा स्थित अपने गांव भेज दिया. खुद भी वे वह बंगला छोड़कर तुगलक रोड के एक साधारण बंगले में रहने आ गए हैं.

लेकिन सवाल यह है कि ताऊ संसद सदस्य नहीं हैं, फिर भी उन्हें सरकारी मकान क्यों दिया गया? उनके सहयोगियों के मुताबिक, स्वतंत्रता सेनानी होने के नाते उन्हें यह मकान मिला. तो फिर उनके बेटे ओमप्रकाश चौटाला का क्या मामला है? चौटाला लगभग दो साल से राज्यसभा के सदस्य भी नहीं रहे. फिर भी वे राजधानी के लकदक वाले इलाके, शाहजहां रोड के शानदार बंगले में ठाट से रह रहे हैं.

सभी कार्टून: अजीत नैनन

हवाई दावे

● लगता है, सरकार में खर्च घटाने की कोई मुहिम चल रही है. मसलन, केंद्रीय पर्यावरण और वन राज्यमंत्री कमलनाथ ने हाल ही में घोषणा की कि वे फूल-मालाओं से

स्वागत नहीं करवाना चाहते. एक मंत्री कुछ ऐसी घोषणा करे तो दूसरा भला कहां मात खाने वाला. खर्च तथा आडंबर घटाने की इस होड़ में संचार राज्यमंत्री राजेश पायलट ने अपना कार टेलीफोन हटवा दिया है. उनका मानना है कि चूंकि मंत्रियों का समय कार में कम ही बीतता है इसलिए बेहद खर्चीले कार फोन आडंबर हैं.

लेकिन संचारमंत्री हर मामले में इस दलील पर खरे नहीं उतरते. बात जब किसान रैलियों में जाने की हो तो सादगी कोई मतलब नहीं रखती. पड़ोस के हरियाणा में किसान रैली के लिए भी वे विमान या हेलिकॉप्टर से 10 मिनट की हवाई यात्रा करने में नहीं झिझकते. इतनी दूरी तो वे कार से भी नाप सकते हैं, वह बहुत ही कम खर्च में. हिसाब-किताब की फुरसत मंत्री जी को!

मंत्री हैं तो क्या!

● केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री शंकरानंद को एहसास हो कि आम आदमी को एजेंसियों के साथ कितनी का सामना करना पड़ता कर्नाटक के मूल निवासी और के वरिष्ठतम सदस्य शंकरानंद राजधानी के उथलपुथल माहौल में वर्षों रहने के अवकाशप्राप्त जीवन शांति बिताने के लिए बंगलूर का किया.

लेकिन उन्होंने जमीन के लिए राजनैतिक प्रभाव इस्तेमाल न करने की इसलिए उन्होंने जमीन कराने वाली संस्था बंगलूर प्राधिकरण (बीडीए) के को शहर में कहीं भी प्लॉट के लिए आवेदन भेजा. पर उन्होंने यह भी जिक्र किया

जब केंद्रीय जल संसाधनमंत्री बंगलूर को पेयजल की योजनाओं को मंजूरी दिलाने अहम भूमिका निभाई थी, और भी कि चूंकि वे राज्य के मामलों में भी मददगार इसलिए उनके आवेदन गंभीरता से गौर किया जाए.

छह महीने बीत गए मंत्री को प्राधिकरण के प्लॉट तो क्या, कोई जवाब नहीं मिला है.

...और एक चुटकी

कॉफी बोर्ड के पूर्व अधिकारी बी. बालू ने हाल ही में एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में कहा, "भारत के सरकारी अधिकारियों को लंच के बाद कॉफी की चुस्कियां नहीं सुहातीं. इससे दोपहरबाद उनकी नींद में खलल पड़ता है."

सुनी-सुनाई

डी.पी. यादव और मदन भैया के जेल में रहते विधानसभा चुनाव जीत जाने से सजपा को अब समाजवादी जेल पार्टी कहा जाना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माईक्रो ओवन से 53% अधिक जल्दी पकाता है

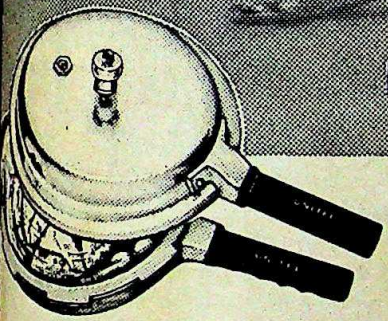

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

उत्तर प्रदेश

...बाद: चौक: गुरु प्रसाद हीरा लाल, नॉवल्टी हाऊस 6-... नेहरु रोड, पावर हाऊस के पास, एस. नसीम अहमद ... गुप्ता ब्रदर्स लाल डिग्गी चौक • **ठठेरी बाजार:** राजा ... प्रसाद, लक्ष्मी बर्तन गृह • **सिविल लाईन्स:** अल्का ... खन्ना भाई • **कटरा:** जेन ट्रेडिंग कं०, □ **आगरा:** ... बाजार: आगरा बर्तन भण्डार, आहूजा बर्तन भण्डार, ... बर्तन भण्डार, स्टील हाउस, मानसिंह मोहन लाल, ... बर्तन भण्डार, दौलत मार्केटउ जौहरी बाजार, गुप्ता ग्लास ... बाजार. □ **अलीगढ़: महावीरगंज:** सी०एस० ... कं०, जय दीपक बर्तन भण्डार, लीलाधर बाबूलाल, ... किशोरी लाल, दीपक बर्तन भण्डार, रेलवे रोड़. □ ... मोती रेडिओ सेन्टर. □ **बहराइच:** श्याम लाल एण्ड ... □ **बलिया:** विजय गन हाउस, स्टेशन रोड. □ ... क्रोकरी हाउस, गुसाई गंज. □ **बस्ती:** सुशील ... मर्चेंट, मंगल बाजार. □ **बरेली:** दुआ ब्रदर्स, ... रोड, मिगलानी क्रोकरीज, हास्पीटल रोड. संजय स्टील ... 722 शिवाजी मार्ग. □ **देहरादून: पटेल बाजार:** ... कं०, सत्य प्रकाश एण्ड कं०, कैपिटल स्टोर्स, दाता ... कुमार, धामवाला. सेठी लाल सुरेश चन्द, पीपल मंडी. ... बाजार: अग्रवाल क्रोकरी हाउस, देहली दरवाजा, मोहम्मद ... संस, चौक. हरी बर्तन स्टोर्स, रकाब गंज. □ ... बाजार: राज ग्लास एण्ड क्रोकरी स्टोर्स, नेहरु मार्केट. • ... रोड: सालिग राम भोला नाथ, जय प्रकाश नारायण वेद

अधिकृत विक्रेता

प्रकाश. □ **गोरखपुर: जलकल भवन:** श्री गणेश इंटरप्राइसिस, मॉडर्न क्रोकरी म्यूजियम. • **टाउन हाल:** विजय एजेंसी, किचन म्यूजियम. • **रेती चौक:** फैन्सी बर्तन स्टोर्स, नारायण बर्तन स्टोर्स, स्टील वाला, सीता राम श्याम लाल, गणेशी लाल एण्ड संस, सिनेमा रोड. • **माया बाजार:** अमर क्रोकरी सेन्टर. • **गोरख नाथ रोड:** मोती स्टील हाउस. □ **गोंडा: उतरौली रोड:** पारस स्टील इम्पोरियम. □ **हरिद्वार: मोती बाजार:** ओम प्रकाश चेला राम. □ **हलद्वानी:** सरदार क्रोकरी हाउस, बरेली रोड. प्रेम सिंह बर्तन वाला, बर्तन बाजार. □ **हापुड़: रेलवे रोड:** क्रोकरी सेन्टर. □ **हरदोई: रेलवे गंज:** श्याम लाल एण्ड संस, काशी राम बनवारी लाल. □ **झाँसी: सर्राफा बाजार:** काशी राम मैथिली शरण, संतोष पात्र गृह, बॉम्बे स्टील इम्पोरियम, लक्ष्मी स्टील सेन्टर, सिपरी. □ **जौनपुर: हर लाल का रोड:** ग्लास स्टोर्स. • **औलंद गंज:** भारत ग्लास स्टोर्स. □ **कानपुर: हटिया:** गोपी लाल गुप्ता, स्टील हाउस. • **मेस्टन रोड:** एस.एम. रशीद एण्ड संस, मोहम्मद हनीफ मोहम्मद अनीस, एशिया लाइट हाउस, नफीस क्रोकरी हाउस, जौहरी क्रोकरी हाउस, कुमार फैन्सी स्टोर्स, नवीन मार्केट. • **हुला गंज:** रस्तोगी स्टील सेन्टर, कृष्ण कुमार उमेश चन्द, भुसा टोली, भसीन बर्तन भण्डार, गुमटी नं० 5. □ **लखनऊ: नजीराबाद:** कन्हैया लाल प्राग दास. • **अमीनाबाद:** इन्द्र चन्द जैन, बांके लाल राम सरन, संसार एजेंसी. • **याहया गंज:** कन्हैया लाल प्राग दास, अजीत प्रसाद अरविंद कुमार. □ **लखीमपुर खीरी:** अंबर लाल राधे श्याम, मेन बाजार. □ **मेरठ: सदर बाजार:** कृष्णा क्रोकरीज, सुरेश चन्द नरेश चन्द, सोना इलैक्ट्रिक एजेंसी, शकुन बर्तन भण्डार, बेगम पुल. □ **मुजफ्फर नगर:** मित्तल इंटरप्राइसिस, भगत सिंह रोड. □ **मुरादाबाद:** नवीन ग्लास एजेंसी, कटरा पुरानजट बाजार गंज. □ **नजीबाबाद:** श्याम लाल एण्ड संस, चौक. □ **नौतनवाँ:** लक्ष्मी बिसाता भण्डार. □ **रामपुर: मेस्टन गंज:** अग्रवाल क्रोकरी हाउस, **सफदरगंज:** सलैक्शन इम्पोरियम. □ **राय बरेली:** गुप्ता ट्रेडर्स, कैपर गंज, राज बंधु मिलन सिनेमा रोड, राधे श्याम घनश्याम दास गुप्ता, मालखाना. □ **रुपईडिहा:** रामदूत स्टोर्स, श्री राम स्टोर्स. □ **सहारनपुर: नेहरु मार्केट:** निहाल चंद हरबंस लाल, कृपाल सिंह प्रीतम सिंह, जसवंत राय नरेन्द्र कुमार, सर्राफा बाजार, लक्ष्मी मार्केट. □ **शाहजहांपुर:** सहगल क्रोकरीज, सदर बाजार, सहगल गिफ्ट सेन्टर, गोविंद गंज. □ **शामली:** सुगन चंद सोहन लाल, बड़ा बाजार. □ **सुल्तानपुर:** एस.आर. स्टील इम्पोरियम, शाह गंज, दसरथ लाल एण्ड संस, चौक. □ **वाराणासी: बाँस फाटक:** गिरधर दास एण्ड संस, स्टेनलैस स्टील सेन्टर, मित्तल ट्रेडर्स. • **दाल मंडी:** भारत ग्लास स्टोर्स, एस.एम. अयूब एण्ड संस, आइडियल ग्लास हाउस, महादेव प्रसाद हरी राम, सी.के.62/30 काशी पुरा, इब्राहिम रसूलजी, सराय हड़हा, मोहन लाल किशन चंद, विश्वनाथ गली. □ **कलकत्ता:** कृष्णा ट्रेडिंग कं०, पी-11, चितपुर स्पर. □ **भुवनेश्वर:** जी.पी. सर्विस, 28, बापूजी नगर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात कैसे बने?

पिछले कुछ समय से रेयान बनाने वाली एक भारतीय कंपनी ने फिलिपींस में अपने संयंत्र के कर्मचारियों की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए नई तरकीब अपनाई है. विशाल क्षेत्र में फैली मशीनों पर निगरानी रखने के लिए कर्मचारियों को काफी भाग-दौड़ करनी पड़ती थी. सो उनका काम आसान करने और कम कर्मचारियों से अधिक काम निकालने के लिए कंपनी ने उन्हें स्केट-रोल मुहैया करा दिए हैं. स्केट-रोल पर दौड़ते कर्मचारी अब कम मेहनत से ज्यादा काम करने लगे हैं. कंपनी ने अपनी भारतीय इकाइयों में भी यह

सभी कार्टून: अयनो

पद्धति अपनाने की सोची. लेकिन कंपनी को डर है कि स्केट-रोल अपनाते ही कर्मचारी स्केटिंग भत्ते की मांग कर बैठेंगे. अब लेने की जगह देने में भला कौन कंपनी विश्वास करेगी?

दावत और अदावत

अगर दावत वाला रिश्ता अचानक अदावत में बदल जाए और दावत को ही अदावत के हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया जाए तो? इस हथियार का हमला पिछले पखवाड़े त्रिचुर के एक होटल पर हुआ और बेचारे होटल प्रबंधकों को हार मानकर कान पकड़ने पड़े. हुआ यह कि त्रिचुर के एक लोकप्रिय रेस्तरां के कर्मचारियों और वहां आए कुछ छात्रों के बीच कहा-सुनी हो गई. बेचारे छात्रों को अपमानित होकर वहां से जाना पड़ा. इसका बदला उन्होंने एक नई शैली में लिया.

उन्होंने शहर के सबसे बड़े पेटू का दरवाज़ा खटखटाया और अगले दिन योजना के मुताबिक होटल जा पहुंचे. वहां इन साहब के लिए 'भरपेट थाली' वाला 25 रु. का टिकट खरीदा गया और उन्हें एक कुर्सी पर बिठा दिया गया. इधर वेटर ने इन साहब के आगे थाली परोसी और उधर लड़कों की टोली बाहर से नजारा देखने लगी. चपातियां और इडलियां मंगाने का जो क्रम शुरू हुआ, थमने का नाम नहीं ले रहा था. उधर रेस्तरां का मैनेजर रेस्तरां को लगते हुए चूने का हिसाब लगा रहा था. उसके सब्र का बांध टूटा तब तक ये साहब 857 रु. का भोजन डकार चुके थे. आखिर प्रबंधकों ने पुलिस बुलाने का फैसला किया. बात को हद से बाहर जाते देख इन पेटू महाशय और छात्रों ने बात को यहीं बंद करने का फैसला किया. प्रबंधकों ने भी इन साहब के बारे में अपनी दूसरी शाखाओं को यह नोटिस जारी कर दिया कि इस शक्ल वाले किसी भी ग्राहक को 25 रु. वाला टोकन न जारी किया जाए. पर अब पछताए होत क्या जब.....

असली दांव

आज भी जुए के ऐसे रसिक मिल जाएंगे जो दूसरों की दौलत को भी दांव पर लगा दें. पिछले पखवाड़े जुए के एक ऐसे ही रसिया को पुलिस ने इलाहाबाद में धर दबोचा. खबर मिलने पर पुलिस ने जुए के एक अड्डे पर छापा मारा. कुछ जुआरी तो निकल भागे पर कइयों की गिरफ्त पुलिस के हाथ में आ गई.

पुलिस के हाथ और भी कुछ लगा जिसमें नकदी और साढ़े पंद्रह लाख रु. का एक बैंक ड्राफ्ट भी था. हैरानी यह थी कि यह बैंक ड्राफ्ट उत्तर प्रदेश के एक निगम के नाम एक प्राइवेट कंपनी की ओर से बनवाया गया था.

एक जुआरी ने जेब खाली हो जाने के बाद यह ड्राफ्ट भी दांव पर लगा दिया था. बेचारे जुआरी की जेब तो खाली हो ही गई इस दांव में उसकी नौकरी भी हाथ से निकल गई.

शिवभक्त बंदर

श्रद्धा आखिर अपना रंग दिखाती ही है, चाहे यह गुण मनुष्य के भीतर हो या पशु के भीतर. पिछले दिनों दिल्ली में यमुना के एक घाट पर लगभग बीस हजार लोगों के जुलूस के

साथ पहुंची एक अर्थी को देखकर घाटवालों को लगा कि या तो कोई बड़ा नेता गुजर गया है या कोई पहुंचे हुए साधु-महात्मा ने शरीर त्याग दिया है. लेकिन वे यह देखकर हैरान रह गए कि अर्थी न तो किसी नेता की है और न ही साधु-महात्मा की, बल्कि एक बंदर की थी.

यह बंदर पहाड़गंज के एक मंदिर में रहता था और अपनी शिवभक्ति के कारण भक्तों में बहुत लोकप्रिय था. पूजा के समय वह पेड़ से उतरकर हाथ जोड़ शिवलिंग के सामने बैठ जाता. यह क्रम पिछले दिनों उसकी मृत्यु के साथ ही टूटा. मंदिर से जुड़े श्रद्धालु लोगों ने यमुना के घाट पर पूरी धार्मिक रीति के साथ बंदर के शव को स्नान कराया और उसे जल समाधि दी.

अखबारी लॉटरी

बिछुड़े हुए भाइयों के वर्षों बाद मिलन के किस्से अब तक हिंदी फिल्मों में ही दिखाए जाते थे. लेकिन एक अखबारी करिश्मे ने 17 साल बाद सचमुच दो भाइयों को मिला दिया.

पुणे विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले एक अध्यापक पिछले दिनों एक मराठी अखबार पढ़ते-पढ़ते अचानक चौंक गए. संपादक के नाम पाठकों के पत्रों के बीच छपे एक नाम ने उन्हें चौंका दिया. उन्होंने बिना देरी किए अखबार के दफ्तर का रास्ता पकड़ा और संपादक के नाम आई डाक में से उस पत्र को ढूंढ निकाला. बाद में पत्र में छपे पते पर पहुंचे तो वहां उन्हें वह मिल गया जिसकी 17 साल से उन्हें और उनके पूरे परिवार को तलाश थी. उनका सगा भाई था जो 197[illegible] हायर सेकंडरी परीक्षा में फेल होने पर डर के मारे घर से भाग गया था. पर इस बीच वह जिंदगी में अच्छे ठिकाने पर पहुंच चुका था और तीन बच्चों का पिता भी बन चुका था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिलैक्सॉन... चुस्ती, स्फुर्ति, ज्यादा दम

नया जोश ... नयी गति ... नयी स्फुर्ति। हर साँस में ताज़गी। रिलैक्सॉन हर पल चुस्ती जगाये। रबराइज्ड़ कॉयर मैट्रेसों की दुनिया में पहला नाम—रिलैक्सॉन। आकर्षणीय। आरामदायक। शरीर को दे मज़बूत सहारा। मन को रखे स्वस्थ। रिलैक्सॉन। किफायती दाम, ज़िन्दगी भर आराम। एक प्यार भरा सहारा, हर कदम—रिलैक्सॉन।

RILAXON

आपके आराम के लिए

मैट्रेस • कुशन • तकिया

श्री दिग्विजय सिमेन्ट कॉ. लि. कोयर और फेल्ट डिविजन

१४ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-७०० ००१

ISI 8391-1977

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Only the Ver

1992 INDIA TODAY DIARIES

COMPANION
Code: 102

POCKET DIARY
Code : 104

SLIMLINE DIARY
Code : 103

The 1992 India Today Diary set expresses an elegance associated with people who demand the very best. Attractively produced, each diary is characterised by gold leaf embossing, gilt edged pages and handy ribbon markers.* Adding style to substance – an excellence that comes with a distinct personality.

*** Except for Pocket Diary.**

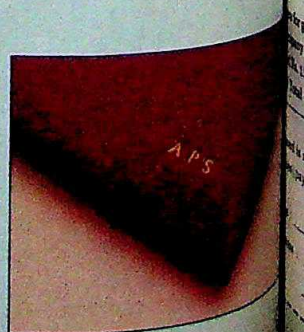

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

erest for you

a Today
book 1992

ective time manager, the Today Yearbook is much than just a desk diary. It is a lly selected compendium of ation compiled in sections. iary section is laid out in an o-read format.

panion

ew Companion diary is t for either carrying in your ase or for use as a desk It has Airline Maps, City s, Indian Missions abroad, TD Codes, International ... and more.

YEA
Cod

line and Pocket Diaries

act and convenient, these s are designed to carry all formation you need on your person. Its pages are packed with important features, including sections on hotels and essential ISD/STD codes.

Personalise these elegant diaries

Whether you order the diaries as a set or as singles. For yourself or as a gift for someone, personalise them with gold leaf embossing of upto three initials or company logo at a nominal charge.

The richness of leather. Discover its elegance.
Limited Edition Premium Diaries

The 1992 India Today Diary set also comes in premium rich brown leather. Each diary is meticulously hand crafted and impeccably finished. A handsome leather book-mark accompanies the Yearbook.

POCKET DIARY
Code : 204

COMPANION
Code : 202

YEAR BOOK
Code : 201

SLIMLINE DIARY
Code : 203

your selection and send in your order today.

ORDER FORM 1992

Product Details	Size	Price (Rs)	Quantity Ordered	Total Amount (Rs)
India Today Yearbook 1992 (Regular)	20.9 x 27.9 cm	295	.....	.....
India Today Companion (Regular)	12.7 x 19.1 cm	150	.....	.....
India Today Slimline Diary (Regular)	8.2 x 17.1 cm	75	.....	.....
India Today Pocket Diary (Regular)	7.6 x 12.0 cm	49	.....	.....
India Today Yearbook 1992 (Leather)	20.9 x 27.9 cm	550	.....	.....
India Today Companion (Leather)	12.7 x 19.1 cm	270	.....	.....
India Today Slimline Diary (Leather)	8.2 x 17.1 cm	165	.....	.....
India Today Pocket Diary (Leather)	7.6 x 12.0 cm	115	.....	.....

for gold embossing of initials @ Rs. 10/- per diary (maximum three initials) Rs .....
pany logo embossing (not exceeding 6 Sq. Cms.) @ Rs. 10/- per diary Rs .....
Rs. 15 for non Delhi cheques. Rs .....
Total Rs .....
Rs .....

d is my crossed Cheque/DD No ..... dated ..... for Rs. ..... (add Rs. 15 for non Delhi
payable to Living Media India Ltd.

An ideal gift for the New Year

Please note :

- Cheques/drafts payable at Bombay, Madras, Calcutta and Delhi must be MICR only.
- Diaries will be home delivered by Registered Post/ Courier. Please allow 6-8 weeks lead-time towards processing.
- For gift instructions, please give recipient's name and address alongwith details for embossing initials on a separate sheet.
- Minimum order for gold embossing company logo is 25 diaries. Logo artwork or positive to be supplied.
- If the order form has been used, mail your order alongwith remittance to Living Media India Ltd.
- Offer and rates valid in India only.

Remittance should be drawn in favour of Living Media India Ltd. and mailed alongwith your name, address and the completed order form to Living Media India Ltd., P B No. 29, New Delhi 110 001.

ors interested in dealership, please write to Living Media India Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेश नीति

बदलते वक्

—शेखर गुप्ता और शहनाज अंकलेसरिया अय्यर

माहिर से माहिर भारतीय विदेशमंत्री भी आज अंतरराष्ट्रीय हालात और कूटनीतिक समीकरणों को देखकर चकरा सकता है. पूरी दुनिया के ताने-बाने नए सिरे से बुने जा रहे हैं. विचारधारात्मक आग्रह मिट रहे हैं, नक्शे फिर से खींचे जा रहे हैं और सत्ता के नए समीकरण बिठाए जा रहे हैं. बरसों पुराने दोस्तों के रणनीतिक गठबंधन ढीले पड़ रहे हैं और महाशक्तियां अब प्रतिद्वंद्विता छोड़ संधियां कर रही हैं. इस उथल-पुथल में यह भी हो रहा है कि भारत के दशकों पुराने दोस्त आज अचानक यह महसूस कर रहे हैं कि यह दोस्ती तो खुशफहमी थी, कि पुराने जातीय और राजनैतिक मतभेद तो आज भी जीवित हैं. इसलिए जाहिर है कि भारतीय विदेश नीति के नियंताओं को पुरानी समझदारियों को जल्दी से जल्दी भुलाकर आगे की सोचनी पड़ेगी.

संकोची तथा हंसमुख विदेशमंत्री माधव सिंह सोलंकी की समस्या यह नहीं है कि वे माहिर या चतुर नहीं हैं. समस्या यह है कि वे अपने पद की जिम्मेदारियों से बेहद आतंकित लगते हैं. गुजरात की राजनीति का यह धाकड़ खिलाड़ी विदेश मंत्रालय में आकर महज संभाषणकर्ता बन गया है, जबकि आज जरूरत थी गतिशील और निर्णायक नेतृत्व देने की. चाहे-अनचाहे वे भारतीय राजनय की असमंजस और ऊहापोह की मिसाल बन गए हैं.

गफलतें ही गफलतें

निर्णायक घड़ी, घातक उलझन

मॉस्को में बगावत के ठीक बाद प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव ने उस पर जो शाश्वत किस्म की टिप्पणी की थी कि 'अति उत्साही सुधारकों' को इससे सबक लेना चाहिए, उसके बाद भारतीय विदेश नीति बेहिसाब भटकाव ही उजागर करती रही है. और पिछले महीने तो भारत को अपने पड़ोसियों की नाराजगी भी झेलनी पड़ी. कोलंबो में आयोजित होने वाले दक्षेस शिखर सम्मेलन को जिस तरह शिष्टाचार आदि के बहाने स्थगित करवाया गया उससे भारतीय विदेश नीति का बचकानापन ही सामने आया. पूर्व विदेशमंत्री इंद्र कुमार गुजराल कहते हैं, "हमने पाकिस्तान को हमारी आलोचना करने का मसाला जुटा दिया." फिर, सोवियत संघ ने राष्ट्रसंघ में भारत को धक्का पहुंचाया. उसने दक्षिण एशिया को परमाणु हथियार मुक्त क्षेत्र घोषित करने के पाकिस्तानी प्रस्ताव के पक्ष में मतदान किया तो घबराहट में भारतीय विदेश मंत्रालय (साउथ ब्लॉक) ने अपने 'क्षोभ' का ढिंढोरा पीटकर विश्व समुदाय के सामने खुद को ही हास्यास्पद बना डाला.

अगले तीन हफ्तों में तीन बड़े विदेशी अतिथि—चीनी प्रधानमंत्री ली फंग, नेपाली प्रधानमंत्री गिरिजा प्रसाद कोइराला और संभवतः रूसी राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन—दौरा करने वाले

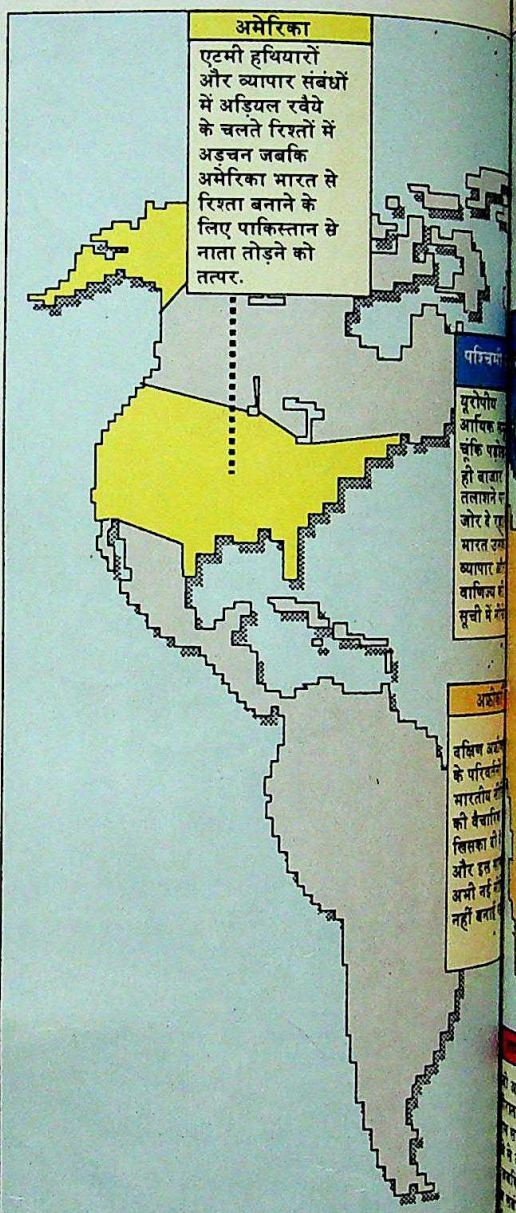

तेजी से बदल रही दुनिया में भारत जैसे लोकतंत्र के लिए बेहिसाब संभावनाएं हैं. दोनों शक्ति गुटों के साथ पुराने संबंधों को बढ़ाने के शानदार मौके हैं...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेखबर

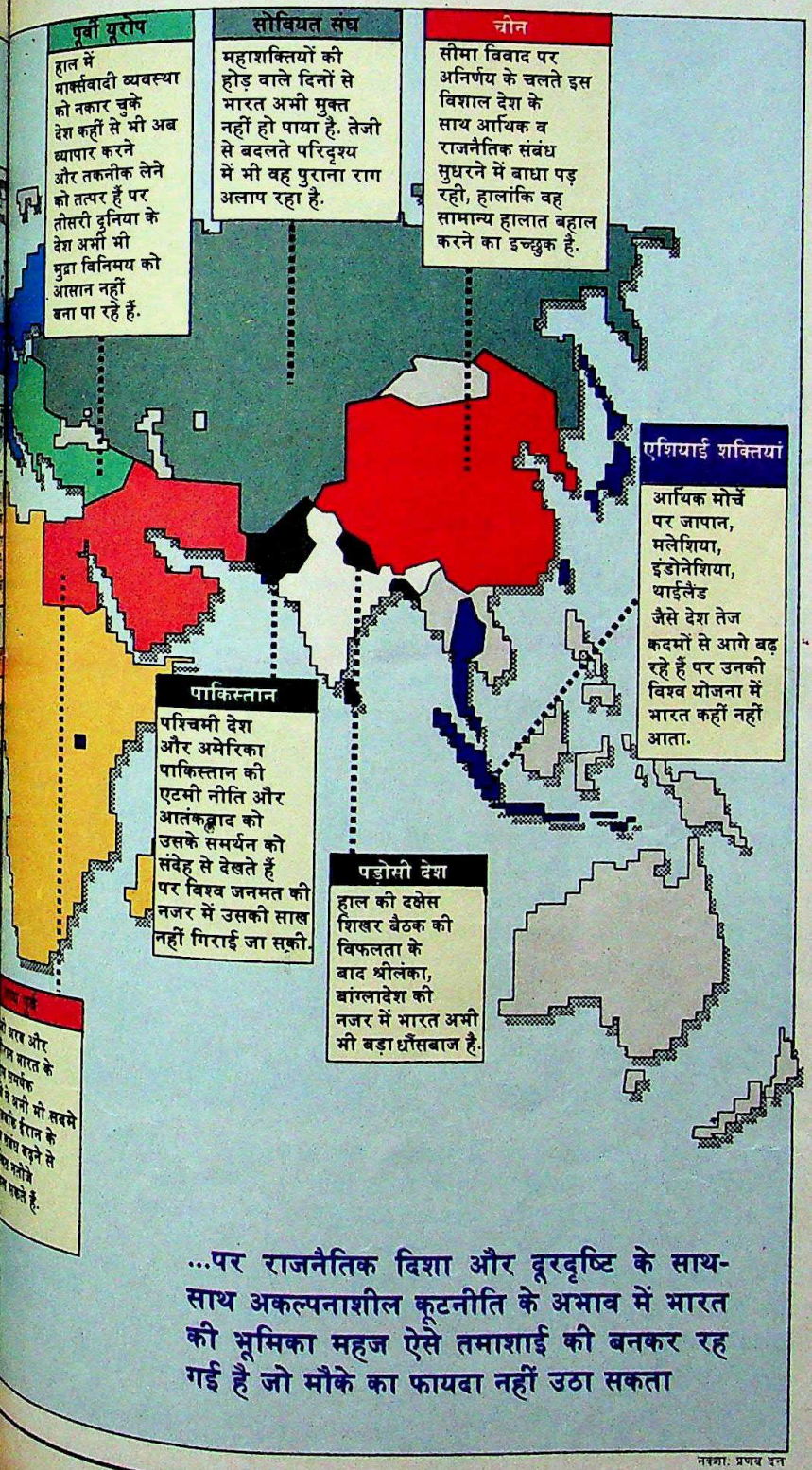

"आजादी के बाद भारत की विदेश नीति एक बार फिर निर्णायक मोड़ पर पहुंच गई है"

जे.एन. दीक्षित
विदेश सचिव

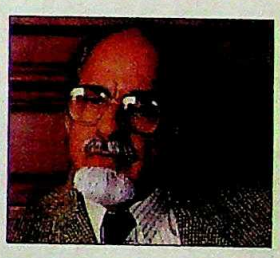

"दक्षेस सम्मेलन स्थगित करवाकर हमने पाकिस्तान को भारत-निंदा का मसाला दे दिया"

इंद्र कुमार गुजराल,
पूर्व विदेशमंत्री

"हमारी विदेश नीति अपने सुरक्षा हितों का ध्यान नहीं रख रही है"

ब्रजेश मिश्र,
पूर्व कूटनयिक, भाजपा नेता

...पर राजनैतिक दिशा और दूरदृष्टि के साथ-साथ अकल्पनाशील कूटनीति के अभाव में भारत की भूमिका महज ऐसे तमाशाई की बनकर रह गई है जो मौके का फायदा नहीं उठा सकता

नक्शा: प्रणव धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गलतियों का सुधार

- भारत के लिए अपने ही बनाए मंच को नष्ट करना वाजिब नहीं है
- छोटी-मोटी बातों को भुलाकर वह दक्षेस के जरिए नेतृत्व संभाले

SAARC

अरुण चाकी

भारत अभी तक द्विपक्षीय पहल नहीं कर पाया है

हैं. नए विदेश सचिव जे.एन. दीक्षित वर्तमान दौर को भा
विदेश नीति के लिए 1947 के बाद के चार निर्णायक दौरों में
करते हैं. यह वह दौर है जब भारतीय कूटनीति को ठोस
चाहिए. शीत युद्ध वाले दौर की समाप्ति ने गुटनिरपेक्ष आ
की जमीन खिसका दी है. पूर्व रक्षामंत्री कृष्णचंद्र पंत क
"पुराने नियामक अचानक बेमानी हो गए हैं. हम चौराहे प
हैं. हम पहल करने की जगह प्रतिक्रिया ही ज्यादा जाहिर
दिखते हैं."

जाहिर है, प्रतिक्रिया में चलाई गई कूटनीति गफलतों को
देती है. विदेश मंत्रालय के सूत्र इन सबके लिए 'राजनैतिक स्त
स्पष्ट दिशाबोध के अभाव' को ही कारण मानते हैं. सोलंकी
में एक अदूरदर्शी और अप्रभावी विदेशमंत्री ने मंत्रालय को
कर दिया है (देखें बातचीत). बदतर तो यह है कि उप-विदे
पद पर एडुआर्डो फलेरो को बैठा दिया गया है जो अक्षम सा
रहे हैं. विदेश नीति के मामले में अपने लंबे अनुभव के
प्रधानमंत्री खुद इस मंत्रालय को कम महत्व देते लगते हैं. सूत्र
हैं कि विदेश मंत्रालय ने परमाणु हथियार के मामले पर पाकि
के साथ संयुक्त पहल करने का सुझाव प्रधानमंत्री को पांच
पहले ही भेजा था. राव को समय ही नहीं मिला कि इस पर
टिप्पणी करें. चीन से सीमा विवाद के मामले में भारतीय
विचार करने की भी फुरसत राव को तीन महीने से नहीं मि
जबकि ली फंग अगले ही पखवाड़े यहां पहुंच रहे हैं.

राव के करीबी सूत्रों का कहना है कि उनकी
प्राथमिकता भारतीय अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण ही है. कहा

माधव सिंह सोलंकी

'जमाना बदल गया है, हम भी बदल रहे हैं'

*गुजरात की राजनीति में अपने अच्छे दिनों में माधव सिंह सोलंकी अपनी बुद्धिमानी के लिए मशहूर थे. अति मिलनसार, व्यवहारकुशल सोलंकी का व्यक्तित्व आत्मविश्वास से पूर्ण था. लेकिन विदेश मंत्रालय में आते ही वह सब जैसे लुप्त हो गया है. अनिश्चय, असमंजस और पराजय के भाव के साथ सोलंकी अपनी कुर्सी पर एक अनाड़ी नेता नजर आने लगे हैं. पांच से भी अधिक महीनों से विदेशमंत्री पद पर टिके रहने के बावजूद सोलंकी गुमनाम से ही रहे हैं और समाचार माध्यमों की नजर से बचते आए हैं. पर पिछले पखवाड़े उन्होंने वरिष्ठ संपादक **शेखर गुप्ता** और प्रमुख संवाददाता **शहनाज अंकलेसरिया अय्यर** से मिलना कबूल कर लिया. यह भेंट संसद भवन में अमेरिका के उप-विदेशमंत्री रेगिनाल्ड बार्थोलोमेव के साथ उनकी बैठक के तुरंत पहले हुई.*

बातचीत के शुरू में ही सोलंकी ने लिखित उत्तरों की एक प्रतिलिपि आगे कर दी. उनके कार्यालय ने 'इंडिया टुडे' से प्रश्नों की सूची पहले ही मंगवा ली थी. जाहिर था कि विदेशमंत्री मौखिक जवाब देने से कतरा रहे थे और इसीलिए उन्होंने पहले लिखित उत्तर पढ़ने पर जोर दिया. लगभग बचाव वाली अपनी परिचित मुद्रा अपनाते हुए उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण सवालों के जवाब दिए. उनके विचारों में गुटनिरपेक्ष आंदोलन, उत्तर-दक्षिण संबंध और परमाणु हथियारों के बारे में पुरातनपंथी आग्रहों की झलक साफ मिली. विभिन्न मुद्दों पर उनके कुछ विचार.

- ***विश्व के बदलते हालात पर:***

हां, दुनिया काफी बदल गई है. हमने अपनी नीतियों में बुनियादी परिवर्तन किए हैं. सैनिक गठबंधन खत्म हो गए हैं नए आर्थिक सत्ता केंद्र उभरे हैं. अमीर और गरीब, विकसित

विकासशील देशों में तालमेल के कई नए अवसर बन
पिछले दो वर्षों में नए क्षेत्रीय संगठनों का गठन और
संगठनों में नए गुटों का बनना आम बात हो गई है. सोवियत
में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं.

- ***नई विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका के बारे में:***

मैं नहीं मानता कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन अपनी प्रासंगि
खो बैठा है. अलबत्ता शीत युद्ध का दौर समाप्त हो चुका है
शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व में हमारी आस्था और दृढ़ हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव युग की हंगामी और शिखर राजनीति के प्रति उपेक्षा रखने वाले तथा अपने पूर्ववर्ती दो प्रधानमंत्रियों के काम से राव ने अपना मकसद अर्थव्यवस्था को सही रास्ते पर लाना हर भारतीय के आंख के आंसू पोंछना' तय कर रखा है. हर तो यह मकसद वाजिब भी है. नरसिंह राव को कर्ज देने विश्व एजेंसियों, अमेरिका और विश्व की अन्य आर्थिक से तालमेल कायम करना है. अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के में भारत को स्थितियां आश्चर्यजनक रूप से अपने अनुकूल ही हैं. साउथ ब्लॉक को इसका एहसास तो है, पर समस्या इस को नीतिगत स्वरूप देने की है.

नैतिकता का आग्रह

प्रतिक्रिया में चलाई गई परमाणु नीति

रमाणु हथियारों के मुद्दे पर भारतीय आग्रह नीतिगत असमंजस की बेहतरीन मिसाल है. पिछले पखवाड़े इसे लेकर धिक गतिविधियां चरम पर थीं. पहले, दक्षिण एशिया को णु हथियार मुक्त क्षेत्र घोषित करने के पाकिस्तानी प्रस्ताव राष्ट्रसंघ में मतदान का दौर, फिर ईरान को 10 मेगावाट रिएक्टर मुहैया कराने के लिए बातचीत, और फिर की उप विदेशमंत्री रेगनाल्ड बार्थोलोमेव का दौरा—इन तीनों में भारत ने अपने को बेतुका और परमाणु हथियारों के उलूक ही साबित किया. इन सबकी वजह है प्रतिक्रिया में

बदलते समीकरण

- सोवियत संघ से संबंध सुधारा जाए
- भारतीय हितों की रक्षा करने में सोवियत मजबूरी मानी जाए

पीटीआई

मॉस्को में पानकिन और सोलंकी

रता में हुए हाल के सम्मेलन में काफी सोच-विचार के बाद इस नतीजे पर पहुंचे कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन अब पहले से क महत्वपूर्ण हो गया है. नए समीकरण अब बेहद जरूरी हो क्योंकि आर्थिक क्षेत्र में नए गुट बन चुके हैं. इसीलिए हमने परिषद के पुनर्गठन की बात उठाई है और कहा है कि और सदस्य होने चाहिए. केवल पांच सदस्य निर्णय क्यों

गुटनिरपेक्ष आंदोलन बेमानी नहीं हो गया है. मुस्करा में लंबी बहस के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे कि यह आंदोलन आज पहले से ज्यादा प्रासंगिक है''

ढांचा भी और मजबूत और गतिशील होना चाहिए. दूसरे युद्ध के बाद पांच सदस्यों को वहां बिठा दिया गया. अब स्थिति बदल चुकी है. हम यह भी चाहते हैं कि सुरक्षा परिषद कार्रवाई और खुले तरीके से हो.

● ***लेकिन भारत की बात कोई क्यों सुनेगा?***

133 विकासशील देशों की आवाज कम-से-कम आम राय तो हो सकती है. इनमें से अधिकतर देश गरीब और पिछड़े हैं. इस बात की उम्मीद रहती है कि भारत उनकी आवाज उठाएगा. हमें गरीब देशों की समस्याओं को उजागर करना ही है क्योंकि विकास के लिए उन्हें मदद की आवश्यकता है. इसे दूर करने के लिए आर्थिक विकास जरूरी है. हम शांति करने में अपना योगदान दे सकते हैं. मसलन, हरारे में संपन्न राष्ट्रमंडल देशों के सम्मेलन में विकसित देशों ने यह बात कही कि आर्थिक मदद उन्हीं देशों को दी जानी चाहिए जिनकी अर्थव्यवस्था अच्छी हो. लेकिन हमने इसका विरोध किया, क्योंकि अच्छी व्यवस्था की कोई स्थापित परिभाषा नहीं है. कर्जदाता देश अधिक रूखे होते जा रहे हैं. मलेशिया के प्रधानमंत्री ने भी पश्चिमी पूर्वाग्रहों की ओर संकेत दिया था.

● ***फिर तीसरी दुनिया के देश अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का समर्थन क्यों नहीं करते?***

कई देश आजकल अमेरिकी रास्ते पर चल पड़े हैं. तीसरी दुनिया के देशों में भी विचार-भिन्नता है. कई देश तो पश्चिमी देशों पर आश्रित हैं.

● ***सोवियत वोट के बारे में:***

इसे भारत की हार नहीं कहा जा सकता. इस दफा सामान्य से अधिक—23—देशों ने वोट नहीं दिया. इसमें कई ऐसे विकसित यूरोपीय देश भी हैं जो हमारा समर्थन करते हैं. हम अपनी स्थिति

''राष्ट्रसंघ में मतदान में भारत की पराजय नहीं हुई. कई देशों ने हिस्सा नहीं लिया. इनमें कई पश्चिमी यूरोपीय देश भी थे जो हमारे रवैये का समर्थन करते हैं''

और स्पष्ट करेंगे. फिर सोवियत वोट का तो हमें पता था. उन्होंने इसके बारे में हमें पहले ही बता दिया था, और साथ में यह भी स्पष्ट कर दिया गया था कि इससे हमारे संबंधों पर कोई असर नहीं पड़ेगा.

● ***फिर मॉस्को जाकर आप को क्षोभ व्यक्त करने की जरूरत क्यों पड़ी?***

हमें अपनी प्रतिक्रिया तो जाहिर करनी ही थी. हमने उनसे साफ-साफ बात कर ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुराई की जरूरत

- परमाणु अप्रसार पर नैतिक रवैये से भारत अलग-थलग पड़ सकता
- प्रतिक्रियाजनित कूटनीति से बाज आकर पाकिस्तान पर पहल हो

शरद सक्सेना

अमेरिकी उप विदेशमंत्री बार्थोलोमेव ने परमाणु नीति पर सावधान तो किया मगर हमदर्दी भी जताई

चलाई जाने वाली कूटनीति.

महत्वपूर्ण बात यह है कि बार्थोलोमेव ने भारत को इस मामले में अपनी नीति पर मजबूर करने की जगह यह स्पष्ट कर दिया कि अमेरिका इस मामले में भारत की दिक्कतें समझता है. लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका चाहता है कि भारत इन सवालों पर 'वाजिब प्रतिक्रियाएं' व्यक्त करे और अनुकूल संकेत दे. मगर यह विडंबना ही है कि उलटे संकेत ही सामने आए. पिछले पखवाड़े ईरान को रिएक्टर बेचने की बातें उछलीं. भारत की इस बात में दम तो है कि परमाणु अप्रसार संधि से बंधे देश को मात्र 10 मेगावाट शक्ति के रिएक्टर बेचना कोई खास चिंता की बात नहीं है लेकिन यह कदम उठाने का उचित मौका अभी नहीं था. एक वरिष्ठ पश्चिमी कूटनयिक कहते हैं, "आर्थिक तथा राजनैतिक कारणों से, और पाकिस्तान को दरकिनार करने के लिए ईरान की ओर हाथ बढ़ाना तो चतुराई ही है. लेकिन इसके लिए आपको थोड़ा इंतजार करना चाहिए था."

इस उपमहाद्वीप के मामले में भी भारत को पाकिस्तान ने राष्ट्रसंघ में शिकस्त दे दी. पाकिस्तान के प्रस्ताव के पक्ष में उक्रेन और बायलोरशिया समेत सोवियत संघ ने वोट दिया. भारत के पास दमदार आपत्तियां थीं. मसलन, यह कि इसमें चीन को शामिल नहीं किया गया और हिंद महासागर में परमाणविक नौकाएं तथा पनडुब्बियां मौजूद हैं. लेकिन अपनी बात को तार्किक ढंग से न रख पाने के चलते भारत की छवि टांग अड़ाने वाले देश की बनी. राष्ट्रसंघ में पूर्व भारतीय दूत और भाजपा नेता ब्रजेश मिश्र कहते हैं, "यह शर्म की बात है कि हम विश्व समुदाय के सामने पाकिस्तान जैसे परमाणु क्षमता संपन्न देश के दोमुंहेपन का पर्दाफाश नहीं कर पाए." मजेदार बात यह है कि भारत अभी भी सोवियत संघ से पूरे समर्थन की आस लगाए हुए है जबकि मॉस्को परमाणु अप्रसार के मामले में पूरी तरह अमेरिकी रवैये से सहमत है. इस बार उसने भारत को बहुत पहले ही आगाह कर दिया था कि वह द्विपक्षीय संबंधों की सीमा से थोड़ा बाहर जाकर प्रस्ताव के पक्ष में मतदान करेगा. इसलिए भारत का 'क्षोभ' प्रदर्शन अतिरिक्त प्रतिक्रिया ही जान पड़ती है. मॉस्को में सोलंकी से साफ-साफ कहा गया, "नया सोवियत संघ आपके हर तरह के हितों का रक्षक नहीं रहेगा."

अप्रासंगिक दृष्टिकोण

अतीत से मोह, वास्तविकता से दूर

सोवियत सूत्रों के मुताबिक, भारत शीत युद्ध के 'पुराने दिनों' के प्रति जिस तरह मुग्ध है उससे सोवियत संघ हैरत में है. सोलंकी की मॉस्को यात्रा और येल्तसिन को देर से महत्व देने की भारत की कोशिशों पर भी कई सवाल उठे हैं. भारत ने सोलंकी को येल्तसिन के पास प्रधानमंत्री के दूत के रूप में और मिखाइल गोर्बाचेव के पास महज विदेशमंत्री के रूप में भेजकर समझदारी दिखाई. मॉस्को में इस भेदभाव को साफ महसूस किया गया. लेकिन येल्तसिन का व्यवहार रूखा था. वे चाहते थे कि भारत रूस को सोवियत संघ की सत्ता और हैसियत का सही उत्तराधिकारी मानते हुए उनके साथ सीधे एक संधि पर दस्तखत करे. लगता है, येल्तसिन और नए रूसी नेतृत्व को भारत के बारे में गलतफहमी है और भारत ने इसे दूर करने की कोशिश भी नहीं की है. दुखद बात तो यह है कि तख्तापलट के बाद येल्तसिन से पहली बार कोई भारतीय अधिकारी मिला. इस बीच येल्तसिन की उपेक्षा भारतीय विदेश मंत्रालय की बड़ी विफलताओं में से एक है. राजनैतिक विश्लेषकों का मानना है कि क्रेमलिन के पुराने नेताओं के प्रति पुरानी प्रतिबद्धता के कारण ही यह उपेक्षा हुई है.

सोवियत संघ के मामले में भारतीय असमंजस की तुलना पड़ोसी देशों के प्रति इसके तीखे रवैये से ही की जा सकती है. पिछले महीने 'दक्षेस' शिखर सम्मेलन को लेकर जो कुछ हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

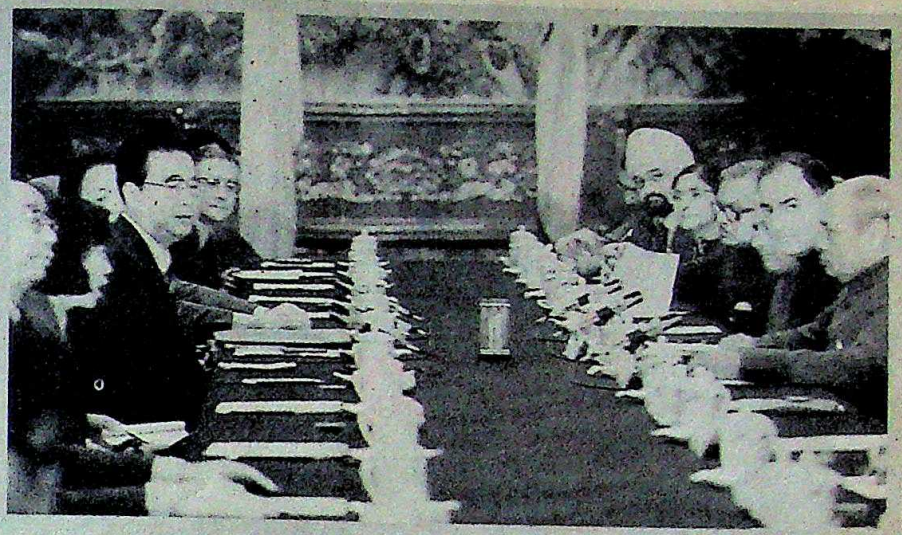

प्रशांत पंजियार

1988 में राव ने राजीव के साथ ली फंग से मुलाकात की थी. ऐसी पहल जारी रहे

फूंक-फूंककर आगे बढ़ना

- आज चीन अलग-थलग महसूस करता है. सो भारत को उसके साथ समझौता करना चाहिए
- ली फंग के दौरे से मिला सुनहरा मौका न गंवाएं
- लेकिन सीमा के सवाल पर ज्यादा झुके बिना बातचीत चलानी चाहिए

यह इसकी ही मिसाल है. उच्चस्तरीय सूत्र मानते हैं कि इस तरह की कूटनीति से बुरी नीयत ही जाहिर होती है. एक पूर्व विदेश सचिव कहते हैं, "आप कल्पना नहीं कर सकते कि हमारे विदेश मंत्रालय में राष्ट्रपति प्रेमदास के प्रति कितनी घृणा है." विदेश मंत्रालय दक्षेस सम्मेलन स्थगित करवाकर उनकी फजीहत करने में सफल रहा. लेकिन बदले में कुछ छींटे इधर भी पड़े. इससे भारत ने अपना दीर्घकालिक नुकसान कर लिया है. पहली बात तो यही कि इससे पाकिस्तान और श्रीलंका को भारत की 'दादागीरी' के खिलाफ प्रचार का मौका मिल गया. दूसरे, इससे उस संगठन को गहरा धक्का पहुंचा जो भारत के लिए अपनी क्षेत्रीय हैसियत बढ़ाने का आदर्श मंच हो सकता था. अंततः इससे मुश्किल में फंसे प्रेमदास को भारत का हौवा खड़ा करके अपने विरोधियों पर हावी होने का मौका मिल गया.

इस तरह के ऊहापोह के बावजूद भारत-अमेरिका संबंध कायम हैं तो इसकी एक वजह यह है कि सभी कारक विदेश मंत्रालय की पहुंच के बाहर थे. कई नकारात्मक कारणों से अमेरिका भारत के करीब होता गया. मसलन, भारत को अब सोवियत संघ के मित्र के रूप में नहीं देखा जा रहा है, दुश्मनिस्तान में युद्ध की समाप्ति के बाद पाकिस्तान महत्वपूर्ण नहीं रह गया है, और पाकिस्तान की परमाणविक महत्वाकांक्षाओं पर भारत से ज्यादा अमेरिका चिंतित है. भारत इस परिवर्तन का लाभ उठाने में कामयाब रहा है. इस कामयाबी की एक वजह मंत्रिमंडल, विदेश मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय के बीच दुर्लभ तालमेल और विचारों का आदान-प्रदान रहा है. मसलन, थल सेनाध्यक्ष एस. एफ. रोड्रिग्स जब अगस्त में अमेरिका गए तो अपने साथ विदेश मंत्रालय का एक प्रभावशाली प्रस्ताव भी ले गए और इस तरह अमेरिका की प्रशांत कमान के प्रमुख ले. जनरल किकलीटर के शुरू के रक्षा सहयोग प्रस्तावों को ठोस रूप दिया. इसका नतीजा इतना उत्साहवर्धक रहा कि प्रधानमंत्री ने पिछले महीने एक सम्मेलन में सेना के कमांडरों से "पाकिस्तानी समकक्षों के साथ इसी तरह के संबंध स्थापित करने" को कहा. यह नतीजा व्यवस्थित पहल का स्पष्ट उदाहरण है. मंत्रिमंडल की राजनैतिक मामलों की समिति ने अमेरिका से संबंध सुधारने का फैसला किया. विदेश मंत्रालय ने पृष्ठभूमि तैयार की और नई नीति पर अमल में सेना को भी शामिल किया गया. भारत में नीति निर्धारण के अपेक्षाकृत रूढ़ माहौल में यह घटना अपूर्व ही है. फिर, इस पर पूरी तेजी के साथ क्यों न काम किया जाए?

तालमेल नहीं, अराजकता

दूरदर्शिता की कमी, परस्पर विरोधी कार्रवाइयां

विदेश विभाग के विभिन्न अफसर अलग-अलग नीति चलाते हैं, तो सरकार की विभिन्न शाखाएं भी बिना तालमेल के काम करती हैं. पश्चिम के वरिष्ठ कूटनीतिकों का कहना है कि भारत उन गिने-चुने देशों में है जिसके पास विदेश नीति बनाने वाली कोई समिति नहीं है. गुजराल कहते हैं, "इस तरह की समिति हर हाल में जरूरी है."

विदेश नीति सिर्फ कूटनीतिकों से ही जुड़ी हुई चीज नहीं होती. उसे अंदरूनी और बाहरी सुरक्षा उपायों और आर्थिक हितों का मिला-जुला रूप होना चाहिए. इसके लिए एक मजबूत अंतरमंत्रिमंडलीय समिति की जरूरत है जो मंत्रिमंडल की राजैनतिक समिति की सहायता करे. लेकिन भारत की विभिन्न सेवाओं में मतभेद ही मतभेद हैं. विदेश मंत्रालय की शिकायत है कि वह आर्थिक कूटनीति को आगे बढ़ाना चाहता है लेकिन किसी आईएफएस अफसर को विदेशी निवेश बोर्ड और भुगतान संतुलन समिति जैसी प्रमुख संस्थाओं में शामिल नहीं किया जाता. दो महीने पहले सोलंकी ने राव को इसके विरोध में चिट्ठी लिखी थी. लेकिन आईएएस लॉबी ने प्रधानमंत्री तक चिट्ठी पहुंचने नहीं दी.

राव भी इस स्थिति को बदलने की जरूरत महसूस करते हैं. आने वाले महीनों में घरेलू और आर्थिक मामलों पर दीर्घकालिक प्रभाव डालने वाले, विदेश नीति से संबंधित बड़े फैसले करने होंगे. यह भारत के हित में होगा कि वह ली फंग के भारत दौरे का इस्तेमाल चीन के साथ अपने संबंधों को सुधारने में करे. 32 वर्षों में चीन के किसी प्रधानमंत्री की यह पहली भारत यात्रा है. आने वाले महीनों में इज्राएल के साथ संबंध बनाने, अफगान समस्या के अंतिम समाधान में भूमिका निभाने और दक्षिण अफ्रीका के साथ व्यापार जैसे पुराने मुद्दों पर भी चतुराई दिखानी होगी. जापान और 'एसिएन' क्षेत्र में भी पहल की सख्त जरूरत है. आर्थिक उदारीकरण नरसिंह राव की पहली वरीयता भले हो. उन्हें यह मानना होगा कि दुविधाग्रस्त विदेशनीति भी विदेशी निवेश को बाधित करती है. ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एलटीटीई साजिश बेनकाब

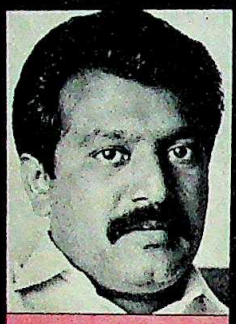
प्रभाकरन

राजीव हत्याकांड की पड़ताल के लिए बने विशेष जांच दल और तमिलनाडु पुलिस की 'क्यू' शाखा की खोजबीन से पता चलता है कि यह हत्या एक बहुत बड़ी साजिश का एक हिस्सा थी. भारत के लिए इस साजिश का पर्दाफाश बहुत अहमियत रखता है

पोत्तूअम्मन

—**अनिरुद्ध मित्र**, मद्रास में

राजीव गांधी की हत्या को लेकर नाराजगी और इस हत्याकांड की जांच के प्रति उत्सुकता जबकि ठंडी पड़ती जा रही थी, अचानक एक धमाका हो गया है. अब तक की जांच से जो तथ्य मिले हैं वे एक भारी साजिश की ओर संकेत कर रहे हैं जिसका न केवल अंतरराष्ट्रीय महत्व है बल्कि यह तमिलनाडु की राजनीति में भी भारी उथलपुथल मचा सकता है.

तमिल मुक्ति चीतों का पीछा करते जांचकर्ताओं ने पिछले पखवाड़े तमिलनाडु के पूर्व गृह सचिव आर. नागराजन को गिरफ्तार करके यह मान लिया कि उन्होंने इतनी बड़ी साजिश का पर्दाफाश कर दिया है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता. विशेष जांच दल और राज्य पुलिस की क्यू शाखा ने जो सबूत जुटाए हैं उनके अनुसार राजीव गांधी की हत्या उत्तर-पूर्वी श्रीलंका और तमिलनाडु को मिलाकर महा ईलम बनाने के षड्यंत्र का ही एक हिस्सा थी. एलटीटीई की पैठ राज्य की कई राजनैतिक पार्टियों, पुलिस और प्रशासन तथा खुफिया एजेंसियों में भी है.

अब यह लगता है कि यह जांच राजीव गांधी के हत्यारों की शिनाख्त से आगे भी जाएगी. जांचकर्ता जबकि एलटीटीई के सर्वेसर्वा वी. प्रभाकरन, खुफिया प्रमुख पोत्तूअम्मन, नीतिकार बेबी सुब्रह्मण्यम आदि पर राजीव की हत्या की साजिश के लिए वारंट जारी करने का इरादा कर रहे हैं तब यह साफ लग रहा है कि श्रीलंका के अलगाववादियों के प्रति भारत के रवैये में बड़ा परिवर्तन होने जा रहा है. श्रीलंका से यह भी अनुरोध किया जाने वाला है कि वह इन बागियों को अपने यहां से निकाल बाहर करे. हालांकि इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि श्रीलंका [illegible] का उत्तरी इलाकों पर कोई नियंत्रण नहीं रह गया है, लेकिन [illegible] राजनैतिक नतीजे महत्वपूर्ण हो सकते हैं. इसकी वजह यह कि प्रभाकरन से बातचीत शुरू करने की राष्ट्रपति रणसिंघे प्रेमदास कोशिशें प्रभावित होंगी.

घरेलू राजनीति पर भी इसके गंभीर असर पड़ सकते हैं. मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि ने जयललिता सरकार पर बदले की कार्रवाई करने का आरोप लगाया है और उनके समर्थकों ने [illegible] गिरफ्तारी की अफवाह पर प्रदर्शन किए हैं (देखें बॉक्स) [illegible] है, तलवारें तन गई हैं. अन्नाद्रमुक अपनी पुरानी प्रतिद्वंद्वी द्रमुक [illegible] परेशानहाली पर खुश तो है मगर फूंक-फूंक कर कदम रख [illegible]

विशेष जांच दल और क्यू शाखा अलग-अलग काम कर [illegible] है. इन दोनों को जो सबूत मिले हैं उनके आधार पर यह [illegible] लगाया जा रहा है कि जनवरी 1990 के बाद से एलटीटीई ने [illegible] और इसके सहयोगियों की हमदर्दी का लाभ उठाते हुए इन्हों [illegible] नेताओं का इस्तेमाल कई गड़बड़ी वाली कार्रवाइयों में [illegible] जांचकर्ताओं के मुताबिक तमिलनाडु में इसके घुटे हुए कर्ता [illegible] शिवरासन के नेतृत्व में काम कर रही शाखा कई नेताओं की [illegible] करने की साजिश बना रही थी. इन नेताओं में राजीव [illegible] जयललिता, और तमिलनाडु इंका अध्यक्ष वी. राममूर्ति शामिल [illegible] इस वर्ष जनवरी में एम. करुणानिधि की सरकार की बरखा [illegible] और जयललिता तथा राजीव की वापसी तय देखकर एलटीटीई [illegible] अपनी योजनाओं पर तेजी से अमल करने का फैसला किया.

बड़े-बड़ों में पैठ: जांच दल ने अपने आरोप पत्र में राज्य [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनमानार

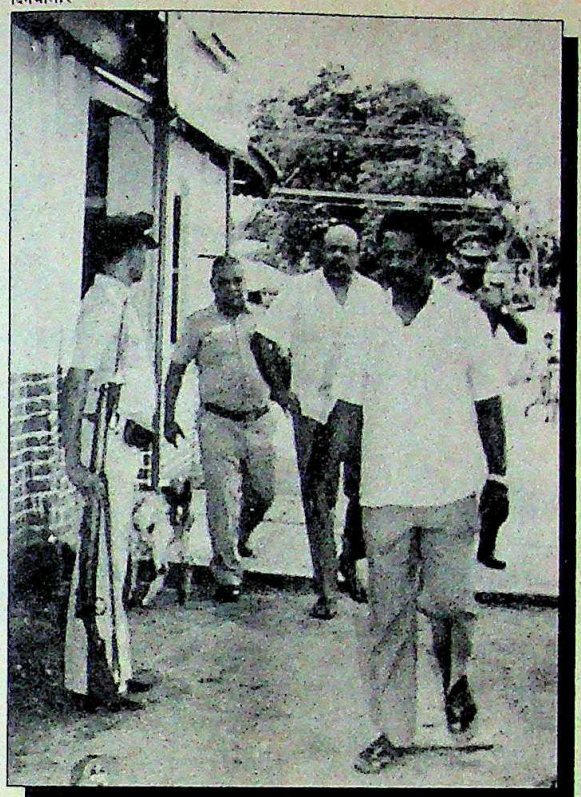

■ नागराजन की गिरफ्तारी से द्रमुक भयभीत

...ों का नाम दर्ज किया है ...कि सू शाखा इनमें से कुछ को ...ा और रासुका के तहत ...ार कर रही है. सूत्रों का ...ना है कि इनमें से कई नेता ...टीई के बड़े षड्यंत्र के बारे ...ी तरह परिचित हैं.

...लिंक महा ईलम के सपने के ...ी सम्मोहित होने वालों में ...न नेतागण ही नहीं थे, ...कर्ताओं का कहना है कि ...टीई के अड्डों से बरामद कई ...ुओं से पता चलता है कि इस ...ठन ने राज्य की पुलिस और ...या व्यवस्था तक में अपनी पैठ ...ली थी और संदेह की जद में ...न नागराजन ही एकमात्र बड़े ...कारी नहीं थे. जांचकर्ताओं ...का है कि कई वरिष्ठ पुलिस ...कारी भी दोहरा खेल खेल रहे ...ई मामले तो ऐसे भी हैं कि ...ों और सरकारी ...कारियों की मिलीभगत से ...टीई को अपना काम जारी ...ने की सुविधा दी गई.

उनमें कई हिंदुस्तानी रंगरूट भी पल रहे हैं. 1 अक्तूबर को क्यू शाखा ने डिंडीगुल में तमिल नेशनल रिट्रिवल ट्रूप्स (टीएनआरटी) के 17 लोगों को गिरफ्तार किया जो जाफना में एलटीटीई द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त 1000 भारतीयों में से थे. उनकी गिरफ्तारी से यह पता चला कि एलटीटीई इन लोगों को श्रीलंका और भारत सरकार से लड़ने के लिए पूरा साज-सामान दे रहा था. गिरफ्तार किए गए टीएनआरटी नेता रवि चंद्रन और महेश से पूछताछ में पता चला कि टीएनआरटी वालों को पहली बार इस वर्ष अगस्त में एलिफैंट दर्रे की रक्षा के लिए एलटीटीई की ओर से इस्तेमाल किया गया.

इस वर्ष जनवरी में टीएनआरटी के कार्यकर्ताओं की भारत वापसी के बाद तमिल चीतों ने उनकी और तस्करों की मदद से हथियार तथा गोला-बारूद का भंडार जमा किया. ...और हथियार: शिवरासन का पीछा करते हुए जांचकर्ताओं ने ...न चीतों की कई मांदों का भी मुआयना किया और पाया कि जुलाई और अगस्त के दौरान कोडकाडु के जंगलों में मारे गए छापों से हथियार, गोला-बारूद और वायरलेस सेट बरामद किए गए.

तमिल चीते: पंजों की पहुंच

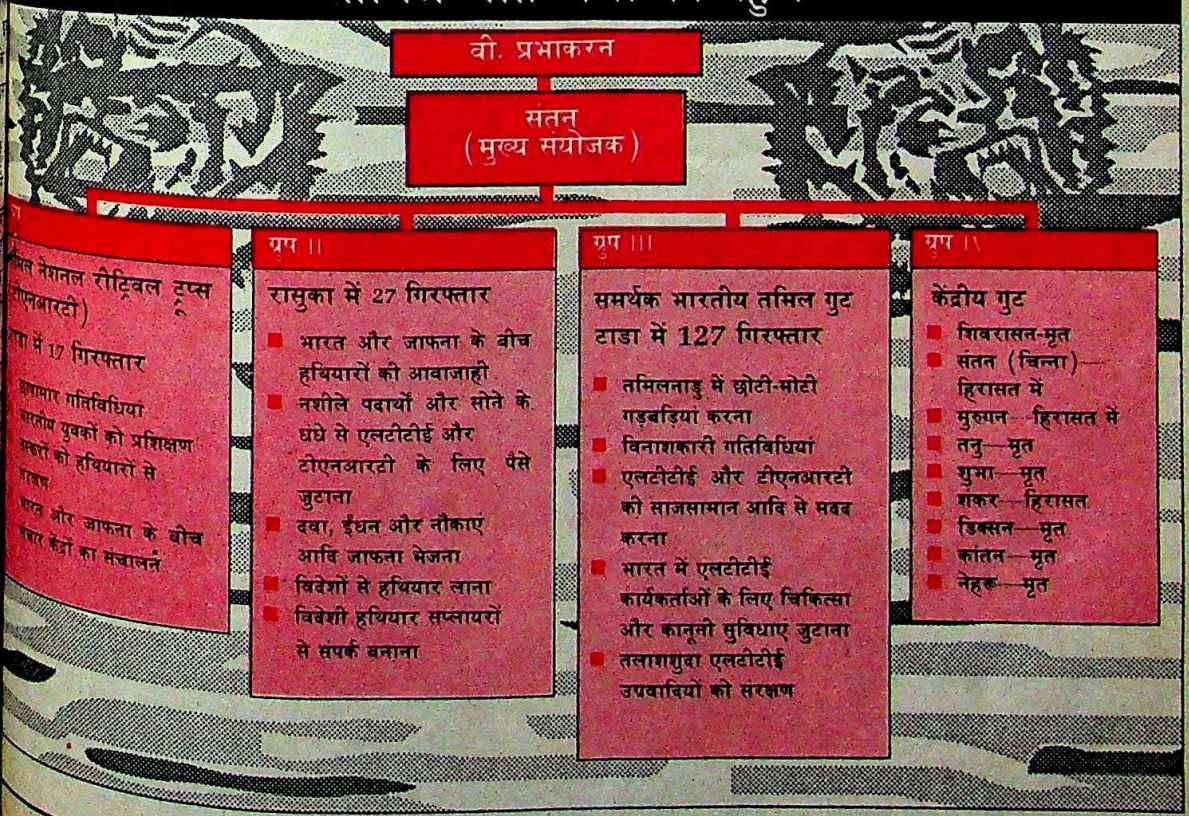

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी तरह कोयंबटूर में हथगोला बनाने की एक फैक्टरी और आंध्र प्रदेश में नेल्लूर के पास गोला-बारूद का एक गोदाम पकड़ा गया.

तमिल चीतों ने अपने संचार माध्यमों पर भी काफी मेहनत की. एसटीडी या आइएसडी पर बातचीत करने के लिए उन्होंने सार्वजनिक टेलीफोन बूथों का इस्तेमाल किया. और कुछ जगहों पर तो फैक्स की सुविधा भी मुहैया की गई. इसका फायदा उन्हें तब हुआ जब श्रीलंका सेना और भारतीय नौसेना ने राजीव गांधी की हत्या के बाद उनके संदेशों को पकड़ना शुरू कर दिया. तमिल चीतों ने समूचे तमिलनाडु में वायरलेस का जाल बिछा रखा था. साथ ही कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में भी संचार प्रणाली सक्रिय थी. डिक्सन, जिसने बाद में आत्महत्या कर ली थी, समूची योजना के केंद्र में था और जुलाई में गिरफ्तार किए गए विकी और रघु उसकी सहायता करते थे. अपने ठिकानों तक माल को सुरक्षित पहुंचाने के लिए तमिल चीतों ने मद्रास, त्रिची, कोयंबटूर, बंगलूर, तूतीकोरिन, नई दिल्ली, बंबई और कलकत्ता की ट्रैवल एजेंसियों के साथ-साथ त्रिचि, मद्रास, बंबई और दिल्ली में पासपोर्ट का धंधा करने वालों को भी पैसे दिए. दिल्ली में तो सीबीआई ने इस काम में लगे तीन उग्रवादियों को जाली पासपोर्ट और वीसा बनाने के आरोप में गिरफ्तार भी किया. गिरफ्तार लोगों में से दो श्रीलंकाई थे—डी.पी. रणसिंघे और कमल विक्रम रणसिंघे, जबकि एक महिला चंद्रावती, भारतीय तमिल थी. जांचकर्ताओं के अनुसार, द्रविड़ कषगम और टीवीपी समर्थकों ने एलटीटीई की इन कार्रवाइयों को भरपूर मदद दी. लेकिन द्रविड़ कषगम के नेता के. वीरमणि के कहना है कि इस तरह की खबरें "पार्टी की छवि को धूमिल करने को लिए गढ़ी गई हैं." वे कहते हैं कि एलटीटीई के लक्ष्यों के प्रति उनकी सहृदयता का अर्थ यह नहीं है कि उग्रवादियों के साथ उनका तालमेल है.

बी.कृष्णन

एलटीटीई के 'तोंगनोवा' जैसे पोत व्यापारिक जहाज के हुलिये में

जहां तक हथियारों की सप्लाई का प्रश्न है, पड़ताल से पता चलता है कि एलटीटीई के पास जहाजों का एक पूरा बेड़ा है जो पश्चिमी यूरोप स्थित विभिन्न सप्लायरों से सामान लेकर जाफना पहुंचा करता है. इन जहाजों पर होंडूरास, साइप्रस, पनामा, सेंट किट्स, थाइलैंड, सेंट विंसेंट और केमैन द्वीप समूह के झंडे लगे होते हैं. भारतीय नौसेना ने हाल ही में 'तोंगनोवा' नामक एक जहाज को रोका. जांचकर्ता यह तय नहीं कर पाए कि जहाज किसी सिंहली का है या फिर मलेशियाई का. लेकिन जहाज पर से एलटीटीई के कुछ उग्रवादी गिरफ्तार किए गए. इन उग्रवादियों को 'सी बर्ड्स' के नाम से जाता था. भारत सरकार अब इंटरपोल की मदद से उन देशों साथ संपर्क कर रही है, जिनके झंडों का इस्तेमाल निकल भागने लिए किया जाता रहा है.

एलटीटीई को पैसे का कोई अभाव नहीं रहा है क्योंकि उसे लिए पैसों का इंतजाम मुख्य रूप से दिल्ली और बंबई के हवाला व्यापारियों के मार्फत होता रहा है. ऐसे ही एक लेनदेन भंडाफोड़ दिल्ली के पहाड़गंज इलाके के कृष्णा लॉज में हुआ एलटीटीई के दो सदस्य संतनन और के. वेल्लू के पास से 12 डॉलर की राशि बरामद हुई. जांच दल का कहना है कि एलटीटीई प्रवक्ता किट्टू को ही धन के इस विप्रवाह का श्रेय दिया जा सकता है. तथ्य यह भी है कि ब्रिटेन की सरकार विदेशी धन जुटाने और अनियमित से विदेशी मुद्रा के संचय के आरोप किट्टू को देश निकाला दे दिया. डिक्सन ने तो अपने एक संदेश में बात का संकेत भी दिया था कि बीसीसीआई की लंदन शाखा का उपयोग किया था.

टीएनआरटी का प्रमुख रवि, जो डिंडिगुल में पकड़ा गया

दो बंदियों के मुताबिक एलटीटीई ने 1000 लोगों के टीएनआरटी दस्ते के कुछ सदस्यों का इस्तेमाल एलिफैंट दर्रे की लड़ाई में किया

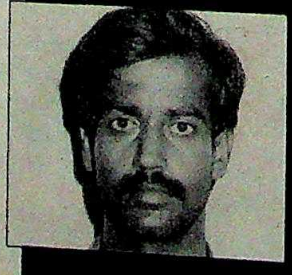
टीएनआरटी का उप प्रमुख महेश, पुलिस हिरासत में

कई गंभीर खामियां: विशेष जांच और तमिलनाडु पुलिस की क्यू शाखा जांच के दौरान राज्य की कानून व्यवस्था में कई गंभीर खामियों का लगाया है. इनमें से कुछ खामियां:

► 6 नवंबर 1989: हथियारों से करीब 12 एलटीटीई उग्रवादी दो गाड़ियों में रामनाथपुरम तट की बढ़ रहे थे कि त्रिचि के पास एसपी के नेतृत्व में एक बंदूक की पर पुलिस दल ने उग्रवादियों को उग्रवादियों ने पुलिस दल को छोड़ने के लिए कहा. पुलिस ने जबरदस्ती नहीं की और उग्रवादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ साल के बूढ़े या साठ साल के जवान?

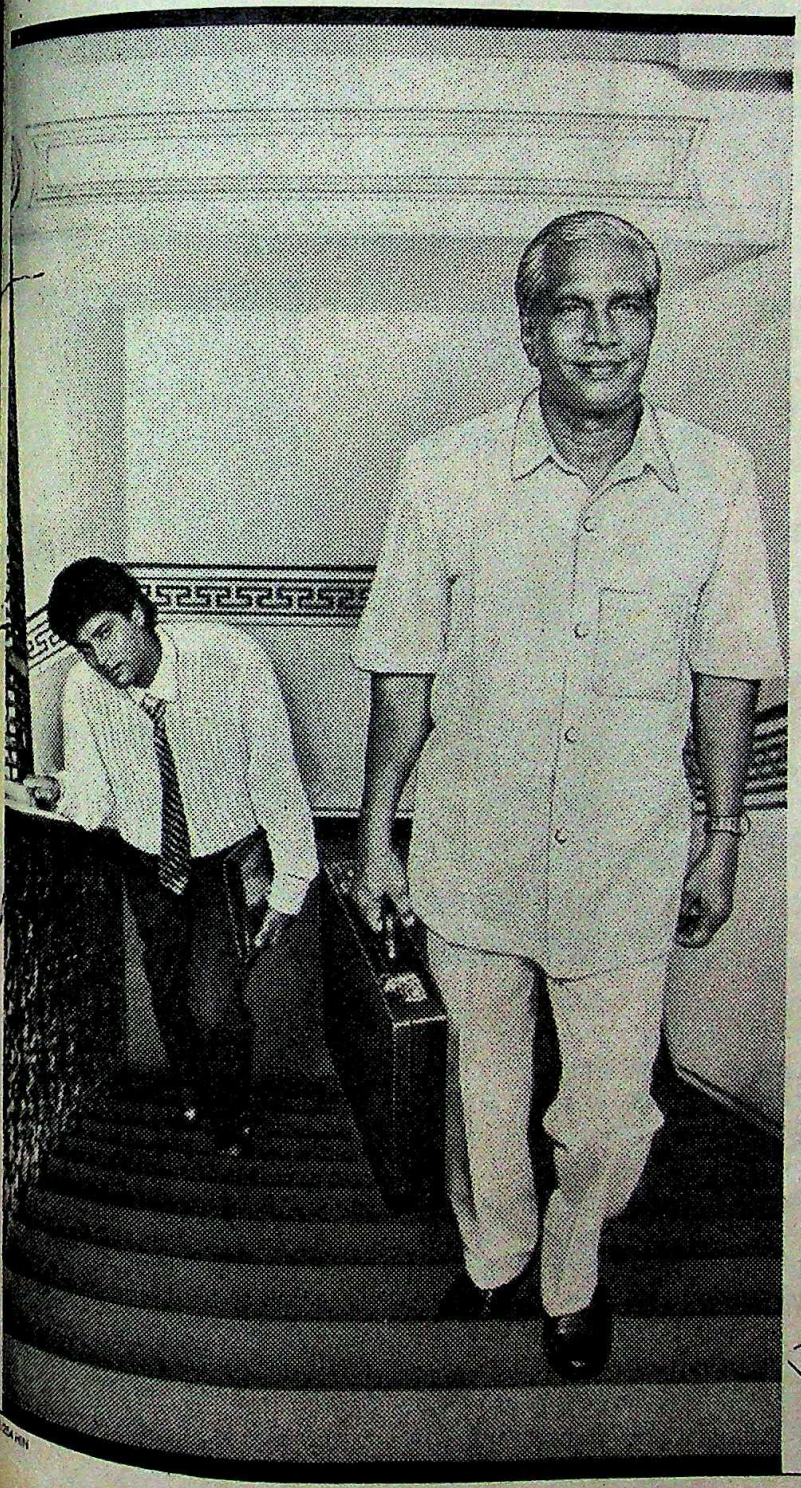

देखा आपने? ६० साल की उम्र में भी कितनी शक्ति, कितनी स्फूर्ति! जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थकान महसूस करते हैं. क्यों?

इसका जवाब है - केसरी जीवन.

हर दिन, दिन में दो बार दो चम्मच.

ज़ाफ़रान (केसर) - अनमोल तत्व!

केसरी जीवन की बोतल खोलिए... दुनिया की सबसे महँगी जड़ी-बूटी असली ज़ाफ़रान की खुश्बू आपका स्वागत करेगी... कश्मीर की वादियों से चुना गया ज़ाफ़रान.

केसरी जीवन में ज़ाफ़रान के आरोग्यकर और सौन्दर्यवर्धक गुणों के साथ ताज़ा आंवला व अन्य अनेक जड़ी-बूटियों भी तो हैं जो शरीरगठन मज़बूत बनाएं, शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त रखें, तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी के तनावों से मुक्त रखने में सहायक हों और बीमारियों से मुकाबला करने की शक्ति दें.

ज़िंदगीभर सेहत का अनमोल रत्न

आप भी पाइए. जीभर कर जीने की तरो-ताज़गी महसूस कीजिए.

झंडु केसरी जीवन

रग रग में जान - ज़िन्दगी की शान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गए. इस मामले की आगे जांच ही नहीं की गई.

► 18 जून 1989: वेदारण्यम से प्वाइंट पेड्रो जा रही हथियारों से लदी एक नाव के पकड़े जाने पर सीमा शुल्क विभाग के एक अधीक्षक और दो इंस्पेक्टरों का अपहरण कर उन्हें जाफना ले जाया गया. तीनों अधिकारियों को 40 दिनों तक कैद रखा गया. केंद्र से कोई सहायता आती नहीं दिखी तो स्थानीय सीमाशुल्क अधिकारियों ने एलटीटीई के लिए तस्करी करने वाले षण्मुगम की सहायता ली. विशेष जांच दल द्वारा पकड़े जाने के बाद षण्मुगम की पुलिस हिरासत में ही मृत्यु हो गई थी. षण्मुगम ने दो दिन के अंदर ही तीनों को वापस लाने में सफलता पाई. सीमाशुल्क विभाग ने उसके बाद फिर किसी उग्रवादी को हथियार ले जाते हुए नहीं पकड़ा और स्थानीय पुलिस भी खामोश रही.

► 12 जून, 1990: ईपीआरएलएफ के नेता पद्मनाभ और 14 दूसरे लोगों की मद्रास में हत्या के बाद शिवरासन और उसके सहयोगी चिन्ना संतन की, जो अब पुलिस हिरासत में है, अगुआई में उग्रवादियों का एक दल मौका एक वारदात से एंबेसेडर कार में त्रिचि की तरफ निकल भागा. मद्रास के बाहरी इलाके वंदलूर में रुककर उन्होंने अपने कपड़े बदले. दो सिपाहियों ने उन्हें पकड़ लिया. पर सिपाहियों को मारपीट कर ये उग्रवादी भाग गए. दोनों सिपाहियों ने बाद में पुलिस स्टेशन में उक्त घटना की रिपोर्ट दर्ज करा दी और फरार उग्रवादियों के हुलिये और कार के नंबर को राज्य भर में प्रसारित कर दिया गया. लेकिन रास्ते में उग्रवादियों ने एक मारुति वैन हथिया ली. वैन के मालिक ने को सूचित कर दिया कि हमलावर सिंहली भाषा बोल रहे संभवतः एलटीटीई उग्रवादी थे. उधर, उग्रवादी त्रिचि संतन के घर रुके. रात वहीं गुजारने के बाद वे अगले दिन और आसपास घूमते रहे. 14 जून को दोपहर के करीब जाफना के लिए जहाज पकड़ने समुद्र तट पर पहुंचे. चूंकि इंजन में कोई खराबी थी और उन्हें तीन घंटे तक इंतजार करना था, उन्होंने कुछ स्थानीय लोगों को बुलाकर चावल और बनवाई. उनके जाने के एक घंटे बाद पुलिस आई और मछुआरों को पकड़ ले गई, जिन्होंने उग्रवादियों के लिए पकाया था. उस रात तत्कालीन पुलिस महानिदेशक ने टी प्रसारित अपने संदेश में गिरफ्तारियों की घोषणा की, पर किए गए लोगों के बारे में कुछ नहीं बताया. इस मामले को महीने ही खोला गया.

सुरागों की तलाशः 'टाडा' के तहत नागराजन की गिरफ्तार

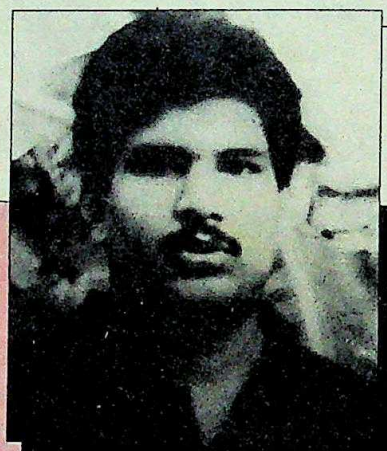

■ संतनः नेता को संदेश

■ तनुः 'महत्वपूर्ण' काम को अंजाम

प्रभाकरन के नाम संतन और तनु की चिट्ठियों की बरामदगी के बाद जांचकर्ताओं का कहना है कि ये चिट्ठियां ही बताती हैं कि राजीव की हत्या का आदेश प्रभाकरन ने दिया था

राजीव गांधी हत्याकांड

पत्रों ने जुटाए ठोस सबूत

शिवरासन मर तो गया लेकिन अपने साथ 'ठोस सबूत' को नहीं मिटा सका. जांचकर्ताओं का कहना है कि इनमें से कम-से-कम दो दस्तावेज "यह साबित कर देंगे कि हत्या का आदेश खुद प्रभाकरन ने ही दिया था."

पहला सबूत हत्यारिन तनु की 10 मई 1991 को एलटीटीई के कोदुंगैयूर अड्डे से प्रभाकरन को लिखी चिट्ठी है. तनु ने उसे 'महत्वपूर्ण' काम सौंपने के लिए प्रभाकरन को धन्यवाद देते हुए 8 मई को मद्रास के नंदनम में वी. पी. सिंह पर आजमाए नकली योजना की सफलता की जानकारी दी है. और जब जांचकर्ताओं ने श्रीलंकाई अधिकारियों के जरिए तनु की स्कूल नोटबुक हासिल कर उसकी हस्तलिपि चिट्ठी से मिलाई तो दोनों हस्तलिपियां मिल गईं.

दूसरा सबूत भी एक चिट्ठी ही है जिसे 7 सितंबर को भारत में एलटीटीई के मुख्य संयोजक संतन ने प्रभाकरन को लिखी थी. यह चिट्ठी उस समय पकड़ी गई थी जब भारतीय नौसेना ने एलटीटीई के पत्रवाहक इरुम्बुरै को गिरफ्तार कर लिया. कई मामलों में उसकी तलाश थी. इस चिट्ठी के मजमून से लगता है कि इसका लेखक गिर जाने पर भी लड़ रहा है. चिट्ठी के अंशः

मेरे बड़े भाई वेलुपिल्लै प्रभाकरन,

मैं यह चिट्ठी संकट में लिख रहा हूं. लेकिन हमने आत्मविश्वास नहीं खोया है. आपको रेडियो के जरिए यहां की घटनाओं की जानकारी मिल ही गई होगी. बाकी बातें मैं मिलने पर बताऊंगा. हमारे कई सदस्यों की गिरफ्तारी से लगता है कि सीबीआई को हमारे बारे में सब कुछ मालूम हो गया है. पोत्तूअम्मन के सभी लड़कों को गिरफ्तार कर लिया गया यही गिरफ्तारी रघुवरन (शिवरा की मृत्यु का कारण बनी. चिन्ना संत गिरफ्तारी सीबीआई ने पद्मनाभ के के बारे में जानकारी पा ली. साथ ही यह भी मालूम हो गया कि शिवरा गांव चावाकचेरी से पोत्तूअम्मन का संचालन कर रहा है.

इतनी गिरफ्तारियां देखकर मैं सभी लड़कों को सायनायड की गोलि दी हैं. मेरे निर्देश/आदेश के बाद अब तक 25 लोग मर चुके हैं (दास) और नलिनी के प्रेम प्रस कारण भारतीय समाचार जगत भी संगठन को बदनाम कर रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

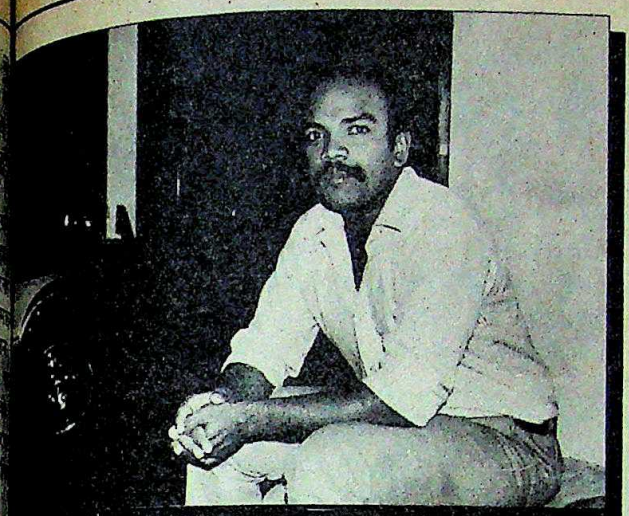

किट्टू: विदेशी संपर्कों की जिम्मेदारी निभा रहे

चेंगलपट्टू के वर्तमान एसपी टी.एस. राधाकृष्णन ने, जो ईपीआरएलएफ सदस्यों के हत्याकांड के समय मद्रास में कानून एवं व्यवस्था के डिप्टी कमिश्नर (डीसी) थे, कहा है कि नागराजन ने उन्हें जांच के काम में ढिलाई बरतने की सलाह दी थी. इसी तरह कोयंबटूर के वर्तमान पुलिस कमिश्नर जी.एस. रमणन को, जो पिछले वर्ष फरवरी में रामनड के डीआईजी थे, अपने मुख्यालय वापस आने के लिए कहा गया. उन्होंने ऐसा ही किया. और इसके कारण हाथ में आया एलटीटीई उग्रवादी भाग निकला.

द्रमुक सांसद वी.गोपालास्वामी के भाई रविचंद्रन की गिरफ्तारी के बाद से द्रमुक के नेताओं को यह भय संताने लगा है कि और भी गिरफ्तारियां हो सकती हैं. रविचंद्रन की गिरफ्तारी उग्रवादियों को प्रश्रय देने के आरोप के कारण की गई है. 'क्यू' शाखा के एक अधिकारी के अनुसार, "हमारे पास काफी सूचनाएं हैं. हम सबूत जुटाने में लगे हैं. ठोस सबूत मिलते ही हम किसी को भी नहीं बख्शेंगे, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो." रविचंद्रन की गिरफ्तारी के बाद शुरू में तो द्रमुक नेताओं ने मौन साधे रखा, पर अब करुणानिधि ने अपने एक बयान में मुख्यमंत्री जयललिता पर "बदले की भावना" से काम करने का आरोप लगाया है. मगर जयललिता के हौसले ठंडे नहीं पड़े हैं. तमिलनाडु के पुलिस महानिदेशक संकेत देते हैं, "एलटीटीई के खिलाफ हमारी कार्रवाई तब तक जारी रहेगी जब तक उन्हें राज्य भर में उनके

...ऐसी कार्रवाई है जो विशेष जांच दल ने खुले तौर पर की ...नागराजन के खिलाफ लगे आरोपों में से एक यह है कि वे ...राव की हत्या में शामिल थे. नागराजन के खिलाफ बयान देने ...में त्रिचि में गिरफ्तार किए गए दो श्रीलंकाइयों के अलावा ...स के दो वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल हैं. सूत्रों के अनुसार,

...उसके गर्भवती होने की खबर को ...तूल दे रहा है.

...के अखबारों में यह खबर भी छपी ...है कि भारत सरकार राजीव गांधी ...हत्या के सिलसिले में आपकी ...तारी का वारंट जारी करने पर ...कर रही है. सभी भारतीय ...रों को ध्यान से पढ़िए... आपको ...ाई की रणनीतियों का पता चल ...ा. उन्होंने षण्मुगम को नियोजित ...से पीटकर मार डाला. इसका ...द हमारे समर्थकों को हमसे अलग ...ी था.

...ही स्थिति ठीक वैसी ही है जैसी ...ीय जाति सेना की कार्रवाई के ...ल जाफना में थी. जिस तरह ...लोग भारतीय ...को पानी तक देने ...करते थे, ठीक वैसा ...व्यवहार आज यहां ...कार्यकर्ताओं के साथ ...जा रहा है. तमिलनाडु ...ार ने राज्य में हमारे ...ताओं की सूचना देने पर ...की घोषणा की है. यहां ...श्रीलंकाइयों को पंजीकृत ...का नया नियम लागू हो ...इससे हमें घर मिलना मुश्किल हो गया.

मेरा सुझाव है कि यहां हमारे पास काम के लिए अपेक्षाकृत एक छोटी टीम होनी चाहिए. कृपया यहां कुछ नौकाएं भेज दीजिए. मैंने कई रात इंतजार किया... लेकिन कोई नौका नहीं आई. मैं सामान कैसे भेजूं? राजीव की हत्या के बाद हमसे वादा किया गया था कि चुनाव खत्म होने पर नौकाएं भेज दी जाएंगी. लेकिन कोई नौका नहीं आई...

नौकाएं और वायरलेस सेट तुरंत भेजें ताकि हमारे और कार्यकर्ता गिरफ्तारी से बच जाएं. अगर मुझे एक वायरलेस सेट मिल जाए तो हम पहुंचने या रवाना होने की जगह निश्चित कर सकते हैं. या इरुम्बुरै को पूरी योजना समझा दीजिए. वर्धन की गिरफ्तारी से आपके साथ मेरा आखिरी संपर्क सूत्र भी टूट गया. पोत्तूअम्मन के लड़के आपके पास मेरा संदेश नहीं ले जाते हैं. कृपया जरूरी कार्रवाई करिए. इरुम्बुरै जब इस चिट्ठी के साथ आपसे मिले तो उसे जरूरी निर्देश दे दें. वह आपको पूरी जानकारी दे देगा. वह आपको बताएगा कि रघु और गुन्ना ने किस तरह हमें बेनकाब किया. वे जानते थे कि नौसेना काफी सक्रिय है. फिर भी उनकी लापरवाही से हमारे फ्रिक्वेंसी लेवेल को पकड़ लिया गया.

कुछ भी हो, मैं पूरे आत्मविश्वास से काम कर रहा हूं. और मैं सही समय पर भाग कर आपसे मिलूंगा. लेकिन कभी-कभी दुख और चिंताएं मुझे घेर लेती हैं. यहां की सरकार ने हमारे खिलाफ जबरदस्त अभियान छेड़ा हुआ है. कोलातुर मणियम संभावित गिरफ्तारी से मैं चिंतित हूं क्योंकि उससे कई दूसरे भारतीय गिरफ्तार किए जा सकते हैं. सीबीआई मुझे नहीं पकड़ सकती. मेरे ऊपर भरोसा रखिए. शुभम्!

आपका संतन

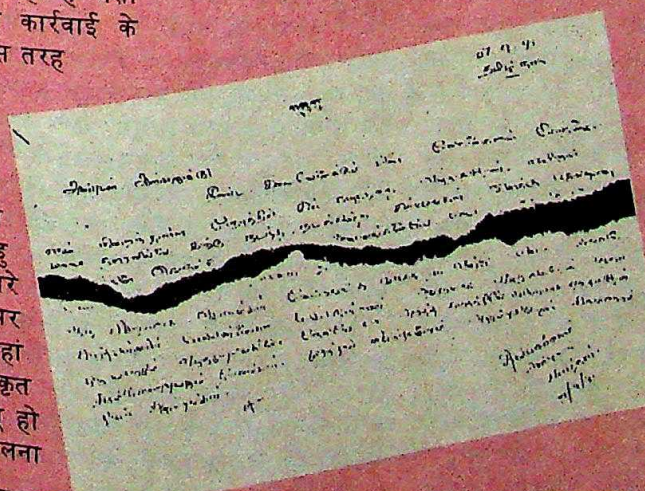

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनैतिक पहलू

खलबली व उलझन

आज हर कोई यह जानना चाहता है कि टाडा में तमिलनाडु के पूर्व गृह सचिव आर. नागराजन की गिरफ्तारी के बाद अब किसकी बारी है. क्या करुणानिधि की?

25 नवंबर को मद्रास में जब यह अफवाह फैल गई कि पूर्व मुख्यमंत्री मुत्तुवेल करुणानिधि को गिरफ्तार कर लिया गया है तो द्रमुक के समर्थक सड़कों पर निकल आए. पुलिस को सक्रिय होना पड़ा. और जैसी कि उम्मीद थी द्रमुक प्रवक्ता अलाडी अरुण ने बयान जारी किया कि पुलिस इन अटकलों को हवा दे रही है. मुख्यमंत्री जयललिता की कार्रवाइयों को द्रमुक ने मिनी इमरजेंसी लगाने और टाडा के दुरुपयोग का उदाहरण बताया और उसके विरोध में 6 और 7 दिसंबर को राज्य भर में जनसभाएं करने का फैसला किया.

■ करुणानिधि (बाएं): और मूपनार: अटकलें

लेकिन अन्ना द्रमुक कहती है कि द्रमुक जिस तरह से एलटीटीई से सांठगांठ कर रही थी उसके फलस्वरूप यह होना ही था. अन्ना द्रमुक के वरिष्ठ नेता और राज्य के श्रममंत्री सी. अरंगनायगम आरोप लगाते हैं, "द्रमुक के शासनकाल में एलटीटीई हथियार, नशीली दवाएं, सोना और चांदी की तस्करी कर रही थी. और द्रमुक के लोग भी इनमें शामिल थे."

राजीव गांधी की हत्या के बाद सहानुभूति लहर पर सवार होकर सत्ता में आई अन्ना द्रमुक को उम्मीद है कि द्रमुक की साख को लगे बट्टे के बाद उसकी स्थिति और मजबूत होगी. और चतुर मुख्यमंत्री जयललिता को यह भी एहसास है कि उनका कोई भी गलत कदम करुणानिधि को शहीद की हैसियत प्रदान कर सकता है जिसका लाभ उनके समर्थक उठा सकते हैं.

लेकिन इंका उलझन में है. वह उठ रहे विवादों का रुख भांप रही है. पूर्व इंका महासचिव जी.के. मूपनार कहते हैं, "एलटीटीई का समर्थन करना द्रमुक और खासकर करुणानिधि की सबसे भारी राजनैतिक भूल थी. वे अब इसकी कीमत चुका रहे हैं." लेकिन खुद इंका को भरोसा नहीं है कि वह द्रमुक की परेशानियों से कितना फायदा उठा सकेगी.

नौकरशाही भी भयभीत है. कोई भी अधिकारी कुछ भी बताने को तैयार नहीं है. लेकिन संदेह में घिरे आईपीएस अधिकारियों का कहना है कि उन्होंने वही किया जो उनके ऊपर के लोगों ने कहा. कुछ आईएएस अधिकारियों ने अपना परिचय गुप्त रखते हुए नागराजन की गिरफ्तारी का विरोध किया है. उनका कहना है कि नागराजन ने अगर राजनैतिक आदेशों का पालन किया तो भी किसी वरिष्ठ अधिकारी से ऐसा सलूक नहीं किया जाना चाहिए था. जाहिर है, राज्य में खलबली मची है और पता नहीं अंतिम नतीजा क्या होगा.

—मालन, मद्रास में

सभी भूमिगत अड्डों से खदेड़ नहीं दिया जाता."

वैसे 'क्यू' शाखा द्रमुक के एक पूर्व राज्य मंत्री पर नजर रखे हुए हैं, जिसने एलटीटीई की भारतीय गतिविधियों के मुख्य कर्ताधर्ता संतन को पनाह दी थी. संतन ने गिरफ्तारी से बचने के लिए हाल में ही त्रिचि में आत्महत्या कर ली. इसके अलावा द्रमुक के एक पूर्व सांसद की भी खोज है जिसके घर से संतन ने वायरलेस पर जाफना के साथ संदेशों का आदान-प्रदान किया था. द्रविड़ कषगम के समर्थक मेत्तूर के कोलातूर मणियम की भी तलाश की जा रही है, जिसने 1989-90 के दौरान उग्रवादियों को मोटरबोटों की आपूर्ति की थी.

इस तरह जांच का सिलसिला जारी है. लक्ष्य अब एलटीटीई के अंतरराष्ट्रीय संपर्कों का पर्दाफाश करने का है. विशेष जांच दल ने कनाडा, ब्रिटेन, जर्मनी, अमेरिका, फ्रांस और मलेशिया में सक्रिय एलटीटीई उग्रवादियों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने के लिए अधिकार पत्रों के जरिए इन देशों से सीधा संपर्क कायम कर लिया है. सूत्रों का कहना है कि इरादा यह पता करने का है कि इन देशों में सक्रिय उग्रवादी क्या राजीव हत्याकांड से सीधे जुड़े थे. दूसरी तरफ, विशेष जांच दल स्विट्जरलैंड में बसे "एक अत्यंत महत्वपूर्ण एलटीटीई सदस्य" की तलाश भी पूरे जोर-शोर से कर रहा है, जो पैसों के अलावा हथियारों की खरीद का काम भी करता है. खोजबीन से यह संकेत भी मिला है कि बीसीसीआई की कम से कम चार शाखाओं (लंदन, केमन द्वीपसमूह, पनामा और फ्रैंकफुर्ट) तथा सिंगापुर स्थित एक और बैंक के जरिए पनामा, साइप्रस, होंडुरास और सिंगापुर के हथियार व्यापारियों को पैसों का भुगतान किया जाता था. सीबीआई का एक दल मामले की और तहकीकात करने के लिए इन देशों की यात्रा करेगा. सीबीआई गुप्तचर एजेंसियों के मार्फत किट्टू पर भी नजर रखेगी, जो इस समय जेनेवा में है.

राजधानी में बना विशेष जांच दल का नया कार्यालय दूसरी जांच एजेंसियों के साथ मिलकर एलटीटीई के अंतरराष्ट्रीय ताने-बाने का भंडाफोड़ करने की ताक में है. इसे गृह, रक्षा, विदेश, श्रम और कानून मंत्रालयों के अधीन कार्यरत कई एजेंसियों के साथ मिलकर काम करना होगा. जांच दल को हवाला और गुप्त बैंकों में एलटीटीई के कारोबार का पता लगाने के लिए राजस्व खुफिया निदेशालय को, भारतीय सेना में उसकी पैठ का पता लगाने के लिए रक्षा अधिकारियों को, और फर्जी पासपोर्टों के धंधे में उसकी हरकतों की जांच के लिए पासपोर्ट अधिकारियों की सेवा ली है.

राजीव गांधी की हत्या को छह महीने बीत गए हैं. इस बीच शिवरासन की आत्महत्या के बाद के तीन महीनों में हत्याकांड की गुत्थियां और अधिक उलझती, और अधिक बड़ी होती गई हैं. भारत में एलटीटीई के चीते फिलहाल भले ही खामोश कर दिए गए हों, पर उनके खात्मे की खबर मिलने में अभी कुछ और देर लग सकती है. ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

रिहाई के बाद पत्रकारों से बात करते राद

लिवियू राद

अंत भला तो सब भला

अपहरण की समूची कार्रवाई उग्रवादियों को महंगी पड़ी. वे अपने मकसद में नाकाम

सुर्खियों में छाए अपहरण के नाटक का अंत निहायत शांति से हुआ. नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर सुबह 10 बजे जब झेलम एक्सप्रेस आई तो रोमानिया के प्रभारी राजदूत लिवियू राद किसी आम यात्री की तरह ही उतरे. और पिछली ही रात को उनकी मुक्ति की खबर मिल जाने के कारण स्टेशन पर मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें ताड़ लिया. वे चुपचाप उन्हें एक प्रतीक्षारत टैक्सी तक ले गए, जिसने उन्हें जोरबाग स्थित उनके घर पहुंचा दिया. इस तरह सिख उग्रवादियों की कैद में उनकी 49 दिन की अग्नि परीक्षा का अंत हुआ.

राद की वापसी इससे अधिक शांत ढंग से नहीं हो सकती थी. उनकी रिहाई अंतरराष्ट्रीय कूटनैतिक दबावों के चलते ही संभव हो पाई और 'खालिस्तान कमांडो फोर्स' के अपहर्ताओं को समूची कार्रवाई महंगी ही पड़ी. अपनी ओर विश्व समुदाय का ध्यान खींचने के मकसद से किए गए इस अपहरण से उन्हें मामूली सफलता ही मिली. रिहाई के बाद राद ने कहा, "रोमानियाई सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वह पंजाब के किसी उग्रवादी को हरगिज नहीं छोड़ेगी. उन पर रोमानिया में ही मुकदमा चलाया जाएगा." भारत सरकार को भी, जिसने उग्रवादियों से किसी किस्म का समझौता नहीं किया लगता, सीख मिली कि कड़ा रुख अपनाना फायदेमंद ही होता है.

मध्य अक्तूबर में रोमानिया सरकार के इस्लामाबाद से संपर्क करने के बाद ही स्थिति संभलती नजर आई. उस समय तक रोमानिया में भारतीय राजदूत जूलियो रिबेरो पर कातिलाना हमले में शामिल सिख उग्रवादियों से पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस के

इस प्रकरण ने यह साबित कर दिया है कि अपहर्ताओं की मांग मानना ही सरकार के सामने एकमात्र उपाय नहीं है. कड़ा रुख अपनाना भी फायदेमंद होता है

संबंध उजागर हो चले थे. दूसरे पश्चिमी यूरोपीय देशों ने भी पाकिस्तान पर दबाव डाला. अपहर्ताओं को लग गया कि उनकी रणनीति नाकाम हो गई है.

इस बीच, भारत में खुफिया ब्यूरो ने राद के निवास पर उग्रवादियों के फोन की जानकारी के लिए एक विशेष कक्ष स्थापित कर दिया था. उन्होंने अपहर्ताओं को बताने के लिए राद के परिवारवालों को भी दो टेलीफोन नंबर दिए. लेकिन उग्रवादियों ने ब्यूरो से संपर्क नहीं किया.

इसी समय एक अपहर्ता देवपाल सिंह दिल्ली पुलिस से मुठभेड़ में मारा गया. इसके तुरंत बाद राद को सादिक नगर के सुरक्षित घर से, जिसे देवपाल सिंह ने किराए पर लिया था, हटाकर उत्तरी दिल्ली में नानक पिआऊ गुरद्वारे में ले जाया गया. वहां उन्हें हफ्ते भर रखने के बाद सिंघू सीमा से पंजाब ले जाया गया.

सूत्रों के मुताबिक, इस दौरान न तो खुफिया ब्यूरो और न ही दिल्ली पुलिस को उनका कोई सुराग मिल पाया. देवपाल सिंह के मारे जाने के बाद उग्रवादियों ने राद के निवास पर और दिल्ली में अपने संपर्कों को फोन करना बंद कर दिया. इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह खुफिया ब्यूरो का जाल बेमतलब हो गया. सादिक नगर के घर पर छापा डालने से भी कुछ हासिल नहीं हुआ.

आखिरकार, दूसरे उग्रवादियों से बातचीत से पता चला कि देवपाल सिंह का संबंध आचार्य के नाम से मशहूर भारतीय खेल प्राधिकरण के एक प्रशिक्षक गुरजंत सिंह बुद्धसिंहवाला से था. प्रशिक्षक की खोज शुरू हुई. और खुफिया ब्यूरो की पंजाब शाखा के विशेष दल को पता चला कि वह पहले ही सीमा पार कर चुका है. बाद में पंजाब पुलिस की सूचना पर दिल्ली में पकड़े गए उसके दो साथी—हरि सिंह खालसा और शर्मा ने उसके सीमा पार जाने की खबर की पुष्टि की.

उधर, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कूटनैतिक मंत्रणाएं चलती रहीं. भारतीय सुरक्षा एजेंसियों को इस बात का पूरा यकीन था कि रादू सुरक्षित हैं और उग्रवादी उन्हें नुकसान नहीं पहुंचाएंगे. उसके बाद समूचे घटनाक्रम ने राजनैतिक मोड़ ले लिया. उग्रवादियों ने यह संकेत देने की कोशिश की कि उनका मकसद न सिर्फ जनरल ए. एस. वैद्य के हत्यारों को रिहा कराना है बल्कि इसके मार्फत विश्व समुदाय को यह जताना भी है कि वे जूलियो रिबेरो पर बुखारेस्ट में हमले के दौरान रोमानियाई सरकार की कार्रवाई का विरोध करते हैं.

इसके बाद दो महत्वपूर्ण घटनाएं हुईं. अमेरिकी उप-विदेशमंत्री रेगनाल्ड बार्थोलोमेव 21 नवंबर को इस्लामाबाद से नई दिल्ली आए और 24 नवंबर को पाकिस्तान स्थित दूसरी पंथक कमेटी (सोहन सिंह गुट) ने रादू की रिहाई की घोषणा कर दी. सीमा पार से हरी झंडी मिलने पर पंजाब में उग्रवादियों ने पुलिस को सूचित किया कि रादू अगले दिन रिहा होंगे पर उन्होंने स्थान और समय के बारे में कुछ भी नहीं बताया.

प्रसन्न रादू कहते हैं, "मैं आशावादी हूं, इसलिए मैंने उम्मीद कभी नहीं छोड़ी. हां, मैं अपने स्वास्थ्य के बारे में जरूर थोड़ा चिंतित था. मेरे अपहर्ताओं ने दवाइयों के साथ-साथ अखबार-पत्रिकाओं का प्रबंध कर दिया था जिससे मैं खबरों से वाकिफ होता रहा. उन्होंने मेरे सामने अपना लक्ष्य कभी जाहिर नहीं किया." दरअसल 'लक्ष्य' अपहर्ताओं के लिए बहुत भारी पड़ा था. इससे यह संगठन दुनिया भर में बदनाम ही नहीं हुआ बल्कि यह भी साबित हो गया कि भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के सामने अपहर्ताओं की मांग मानना ही एकमात्र उपाय नहीं है. दरअसल, कश्मीर में हाल के अपहरण के कम-से-कम तीन ऐसे मामले रहे हैं जिनमें बिना किसी समझौते के अपहृत रिहा हो गए. सरकार के लिए यह बड़ा सबक है.

—अनिरुद्ध मित्र

घटनाक्रम

9 अक्तूबर: लिवियू रादू का जोरबाग से अपहरण कर लिया गया.

10 अक्तूबर: रादू और अपहर्ताओं की कार सुंदर नगर में पाई गई.

12 अक्तूबर: उग्रवादियों ने रादू की रिहाई के बदले अपने साथियों के छोड़े जाने की मांग की.

16 अक्तूबर: केएलएफ के देवपाल सिंह की दिल्ली पुलिस के साथ मुठभेड़ में मृत्यु के साथ ही रादू को पंजाब ले जाने का सिलसिला शुरू.

22 नवंबर: उग्रवादियों ने घोषणा की कि वे 24 नवंबर को रादू को छोड़ देंगे.

26 नवंबर: रादू नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से टैक्सी लेकर घर लौटे.

PHILIPS

एक उपाय जो वी.सी.आर.का 'हेड' बचाए

फ़िलिप्स वीडियो हेड क्लीनर.
अत्यन्त तेज़ असरकारक, पुर्ज़ों को नुकसान न पहुँचाने वाला द्रव.
मैग्नेटिक टेप के कारण आपके वी सी आर या वी सी पी के हेड पर जमा होने वाले हानिकारक ऑक्साइड, धूल-गंदगी को प्रभावशाली ढंग से हटाने का सर्वोत्तम तरीका यही है.
यह धातु व प्लास्टिक के पुर्ज़ों को ज़रा भी नुकसान नहीं पहुँचाता - अंतर्राष्ट्रीय फ़ार्मूले से तैयार एकमात्र वीडियो हेड क्लीनर.
सर्वोत्तम परिणामों के लिए हफ़्ते में एक बार ज़रूर इस्तेमाल करें.
जब आपके वी सी आर के हेड व अन्य प्लास्टिक पुर्ज़ों को नुकसान का जोखिम हो तो भला घटिया ब्रांडों को क्यों आज़माया जाए?

PHILIPS
AUDIO-VIDEO HEAD CLEANER
Accessories

क्योंकि 'हेड' बदलने से 'हेड' बचाना है आसान.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिमनभाई पटेल

पुराने बसेरे की ओर

मौका ताड़कर अब इंका में विलय की जोड़-तोड़

चिमनभाई पटेल के नाम के साथ चतुर-चालाक उपाधि भी जुड़ी होनी चाहिए. वजह यह कि हर तरह की मुश्किलों के बावजूद वे गुजरात के मुख्यमंत्री पद पर तिकड़मों के बूते पर काबिज हैं. पिछले पखवाड़े इंका समर्थित उनकी अल्पमत वाली जनता दल (गुजरात) सरकार ने एक वर्ष का कार्यकाल पूरा किया ही था कि चिमनभाई ने लगे हाथ इंका के साथ विलय की जोड़-तोड़ शुरू कर दी. वे वी.पी. सिंह और चन्द्रशेखर को तो पहले ही धता बता चुके हैं.

बुलंदियां छूते उनके हौसले की वजह यह है कि उन्होंने कच्छ की सीट के लिए अपना पूरा जोर लगाकर इंका उम्मीदवार की जीत पक्की कर दी. उनकी यह मेहनत बेकार नहीं गई. प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव ने उन्हें खुद फोन पर धन्यवाद दिया. प्रसन्न चिमनभाई ने कहा, "अब वक्त आ गया है कि भाजपा का सामना करने के लिए राष्ट्रवादी शक्तियां एकजुट हो जाएं." इंका और जनता दल (गु.) के बीच निकटतर सहयोग की राह सचमुच खुल गई है. शुरू में इसके विरोधी रहे दो राज्यमंत्री—दिनशा पटेल और शशिकांत लखानी—भी एकाएक विलय के समर्थक हो गए हैं.

उधर, चिमनभाई के पुराने प्रतिद्वंद्वी, माधवसिंह सोलंकी विदेश मंत्रालय में अपनी असफलता के कारण राज्य में कमजोर पड़े हैं. सोलंकी में चिमनभाई जैसी राजनैतिक चुस्ती की सख्त कमी है.

लाभ कहां है, चिमनभाई को यह पहचानना भी खूब आता है. लिहाजा, उन्होंने कांग्रेसियों पर खास ध्यान दिया है. उनके प्रति निष्ठा रखने वालों की सूची में राज्य इंका अध्यक्ष नटवरलाल शाह, इंका विधायक दल के नेता सी.डी. पटेल, और पार्टी की युवा शाखा के अध्यक्ष नरेश रावल के अलावा उसके 34 में से 24 विधायक हैं. मुख्यमंत्री कहते हैं, "हमारा तालमेल लाजवाब है." पर उनके विरोधी यही मानते हैं कि यह तालमेल पैसे और सत्ता के बल पर कायम है. वैसे, हर कोई जानता है कि चिमनभाई को इंका के एक-एक नेता की कमजोरियों का बखूबी पता है.

इसके अलावा चिमनभाई गुजरात के प्रभारी पार्टी महासचिव गुलाम नबी आजाद, माखनलाल फोतेदार, सीताराम केसरी और बलराम जाखड़ के साथ अपने पुराने संबंधों का भरपूर फायदा उठाते आ रहे हैं. अब इंका के नीति-नियंताओं से वे यह वादा कर रहे हैं कि अजित सिंह गुट को जनता दल से फोड़कर लाने में वे सफल हो जाएंगे. एक वरिष्ठ इंका नेता के अनुसार, "अगर चिमनभाई जनता दल को तोड़ सकते हैं तो हम इस बात की चिंता क्यों करें कि गुजरात में पार्टी का क्या हाल होगा."

यही नहीं, चिमनभाई की संगठनात्मक कुशलता ने उन्हें इंका अध्यक्ष के काफी नजदीक ला खड़ा किया है. महात्मा गांधी की प्रतिमा के अनावरण के मौके पर जब प्रधानमंत्री गांधीनगर आए तो मुख्यमंत्री ने 2.2 लाख की भीड़ इकट्ठा करके नरसिंह राव को खासा प्रभावित कर लिया. मौका न चूकते हुए चिमनभाई ने अपनी सरकार की उपलब्धियां भी गिना डालीं. बदले में नरसिंह राव ने भी उन्हें बधाई दे डाली.

इसके मद्देनजर इंका के साथ चिमनभाई गुट के विलय की बात अब दिवास्वप्न भर नहीं रहेगी. हाल ही में नरसिंह राव ने यह कहकर इस बात का संकेत भी दिया है कि "पुराने कांग्रेसियों की वापसी का स्वागत है." इसलिए, संभव है कि चतुर चिमनभाई जल्द ही पुराने बसेरे में लौट आएं. —उदय माहूरकर

अपने संपर्कों का लाभ उठाते हुए चिमनभाई ने इंका आलाकमान को अपनी उपयोगिता का विश्वास करा दिया है

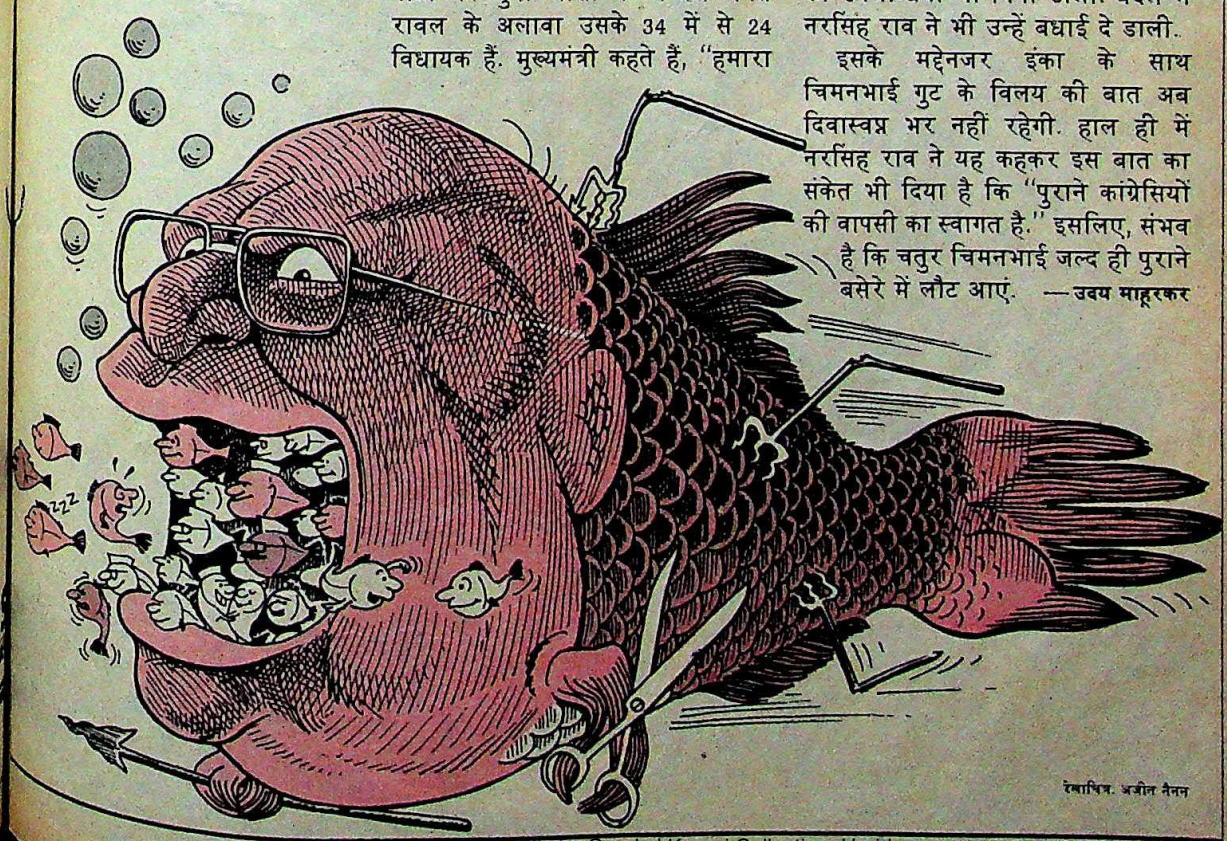

रेखाचित्र: अजीत नैनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरसों रफ़्तार भरी ज़िंदगी जीने के बाद, अचानक हृदय रोग की आशंका से पुरी साहब बहुत सहम गए थे।

...ट आने पर तो उनकी घबराहट और भी बढ़ गई। और अब ऐसा लगने लगा था ...पनी ज़िंदगी की रफ़्तार धीमी करनी ही होगी। **सौ**भाग्यवश, उनकी मुलाकात एक ...क डॉक्टर से हो गई। और तब उन्होंने अनुभव किया होम्योपैथी के सहज उपचार का ...सर। राहत मिली उन्हें श्वाब निर्मित "**इसैन्शिया औरिआ**" से। डॉक्टर की ...ह ली गई इस होम्योपैथिक दवा से पुरी साहब को जल्द ही काफ़ी फ़ायदा हुआ। ...क महीने के अन्दर अन्दर उनका कामयाब अतीत वापस लौट आया और ज़िंदगी ...वा पकड़ ली। **श्वाब** — होम्योपैथिक दवाओं के विश्वविख्यात जर्मन निर्माता। ...सैन्शिया औरिआ" सहित 2,500 (पच्चीस सौ) से भी ज़्यादा दवाओं के ज़रिए, ...के सहज उपचार को दुनिया के कोने-कोने में प्रचलित किया है। **श्वाब** की दवाएँ ...ी तकलीफ़ों और कई गम्भीर बीमारियों में लाभदायक सिद्ध हुई हैं। सभी दवाओं ...य उद्देश्य है — सहज उपचार। यानि ऐसा उपचार जो बिना किसी दुष्प्रभाव के, जल्द ...ुरक्षित और स्थायी तौर पर राहत पहुँचाए। होम्योपैथी के सहज उपचार के विषय ...जानकारी के लिए संलग्न कूपन भरकर भेजिए।

कृपया मुझे अपनी "होम्योपैथी-सहज उपचार का सुखद स्पर्श" नामक मुफ़्त पुस्तिका भेजें।

नाम : _____

पता : _____

_____

पत्र भेजने का पता : मार्किट लिंक्स,
पोस्ट बैग नं.-3582,
लाजपत नगर, नई दिल्ली-110 024.

SCHWABE
125 वर्ष

होम्योपैथी — सहज उपचार का सुखद स्पर्श।

UNTASDELHI/WS/7/2837/H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकता यात्रा

अब नई टेक

कन्याकुमारी से कश्मीर तक यात्रा की तैयारी

भाजपा केवल राम जन्मभूमि के मुद्दे पर ही नहीं टिकी रहना चाहती. इसलिए वह देश की एकता और अखंडता का मसला उठाने जा रही है. इसके लिए एक बार फिर रथयात्रा की तैयारी हो रही है. लेकिन इस बार रथ की सवारी करने वाले व्यक्ति लालकृष्ण आडवाणी नहीं होंगे बल्कि उनकी जगह लेंगे भाजपा अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी. यह यात्रा 11 दिसंबर को कन्याकुमारी से शुरू होगी.

दो साल से भी कम समय में दूसरी रथ यात्रा आयोजित करके पार्टी खुद को देश की एकता और अखंडता के लिए फिक्रमंद पार्टी साबित करने की कोशिश करेगी.

पार्टी एक झटके में ही न सिर्फ इंका से राष्ट्रीय एकता की 'ठेकेंदारी' हड़प लेना चाहती है, बल्कि (राष्ट्रीय स्वयंसेवक) संघ परिवार के उन सभी लोगों को भी इस काम में लगा देना चाहती है जो मंदिर निर्माण के मसले पर हुल्लड़ मचा रहे हैं.

भाजपा के उपाध्यक्ष कृष्णलाल शर्मा कहते हैं, "जो लोग धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अयोध्या जाने में बहुत जोश दिखा रहे थे, उन्हें पंजाब और कश्मीर भी जाना चाहिए." यह कटाक्ष वैसे तो जनता दल पर किया गया था लेकिन इसका इशारा विश्व हिंदू-परिषद की ओर भी है जिसका अस्तित्व राम जन्मभूमि के मुद्दे पर ही टिका है. भाजपा को लगता है कि विहिप अपने संकट के कारण ही कश्मीर के मुद्दे को अनदेखा कर रही है.

14 प्रदेशों से होते हुए श्रीनगर पहुंचकर 26 जनवरी को तिरंगा फहराने की इस योजना को जोशी "अलगाववाद, आतंकवाद से निबटने में केंद्र की नाकामी" को उजागर करने वाली बताते हैं.

खुद को इंका के एकमात्र विकल्प के रूप में पेश करने की भाजपा की योजना कोई कमजोर भी नहीं है. जोशी की इस रथयात्रा को अब धार्मिक से ज्यादा राष्ट्रीय स्वरूप देना होगा. इसीलिए इस यात्रा को एकता यात्रा का नाम दिया गया है. 11 दिसंबर को तमिल कवि सुब्रह्मण्यम भारती का जन्म दिन होने के साथ ही गुरु तेग बहादुर का शहीदी दिवस भी है. दिल्ली से जम्मू के बीच यात्रा के अंतिम दौर में पत्र-पत्रिकाओं का पूरा ध्यान खींचकर भाजपा नरसिंह राव सरकार से सीधी टक्कर भी लेगी. हो सकता है कि यह टक्कर श्रीनगर में जोशी के प्रवेश पर रोक लगाने के रूप में चरम पर पहुंच जाए. तब भाजपा इंका को राष्ट्र विरोधी, या अलगाववाद के मसले पर नरम रुख रखने वाली पार्टी बताने में नहीं चूकेगी.

यही कारण है कि इस 47 दिवसीय यात्रा का पूरा विवरण तैयार करने के लिए पिछले पखवाड़े देश भर से पार्टी के 50 वरिष्ठ नेताओं को दिल्ली बुलाया गया था. इस बैठक में शामिल हुए राजस्थान के मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत कहते हैं, "कश्मीर काफी बड़ा मसला है. दूसरे मुद्दों के चलते इसकी उपेक्षा करना ठीक नहीं है. राष्ट्र को एकता के संदेश की जरूरत है." मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा भी ऐसी ही बात कहते हैं, "राष्ट्रीय एकता परिषद को इसे राष्ट्रीय महत्व का विषय मानकर इस पर विचार करना चाहिए."

यात्रा के लिए तैयार होती गाड़ी; और जोशी

गोपाल संगर

दो साल से भी कम समय में दूसरी रथ यात्रा आयोजित करके भारतीय जनता पार्टी खुद को देश की एकता और अखंडता के लिए फिक्रमंद पार्टी साबित करने की कोशिश करेगी

भाजपा उपाध्यक्ष कृष्णलाल शर्मा को उम्मीद है कि इससे सबका ध्यान कश्मीर और पंजाब समस्या पर जाएगा.

इस बीच यात्रा के वाहन—डीसीएम टोयटा—को रथ का आकार नहीं दिया जा रहा है. जयपुर में इसे बना रहे आजाद बॉडी बिल्डर्स के मालिक ए.एस. चड्ढा कहते हैं, "इसका डिजाइन अनोखा है." इस गाड़ी में माइक, मंच और तेज रोशनी की व्यवस्था है. लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा के संचालक रहे नरेंद्र मोदी ही इस यात्रा के भी संचालक हैं. आडवाणी के रथ पर काम करने वाले शक्ति देव भी प्रकट हो गए हैं. दूसरी तैयारियां भी जोरों पर हैं—खासकर भाजपा शासित प्रदेशों राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में.

माना जा रहा है कि जोशी जब श्रीनगर पहुंचेंगे तो वहां दो लाख स्वयंसेवक भी पहुंचेंगे. कश्मीर जाने वाली 'केसरिया वाहिनी' के लिए लोगों की भर्ती मध्य प्रदेश में जारी है. उम्मीद है कि आडवाणी और अटल बिहारी वाजपेयी भी श्रीनगर पहुंचेंगे. इस कार्यक्रम के बारे में आडवाणी कहते हैं, "आज राष्ट्रीय एकता का सवाल दांव पर लगा है." और भाजपा यही कामना कर रही है कि जब यह यात्रा शुरू हो और इसका जुनून चढ़े तो लोग मंदिर को बिसरा दें."

—जफर आगा और नरेंद्र कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य अपराध कथाओं की वह पत्रिका जो गंगा सी पवित्र है

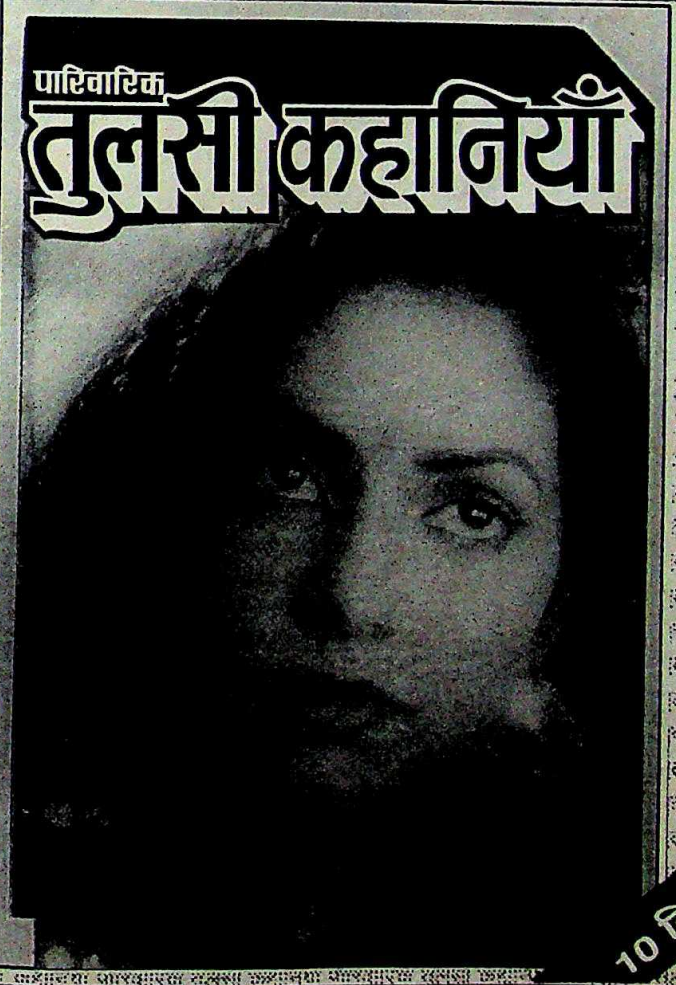

- आकर्षक
- विश्वसनीय
- साफ सुथरी

- रोचक
- रोमांचकारी
- सत्य घटनायें

10 दिसम्बर को प्रकाशित

तुलसी पॉकेट बुक्स देहली रोड, मेरठ-250002 का सह प्रकाशन, फोन : 24531, 22005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटाक्ष: अजीत नैनन

'सैटेलाइट-मेव जयते!'

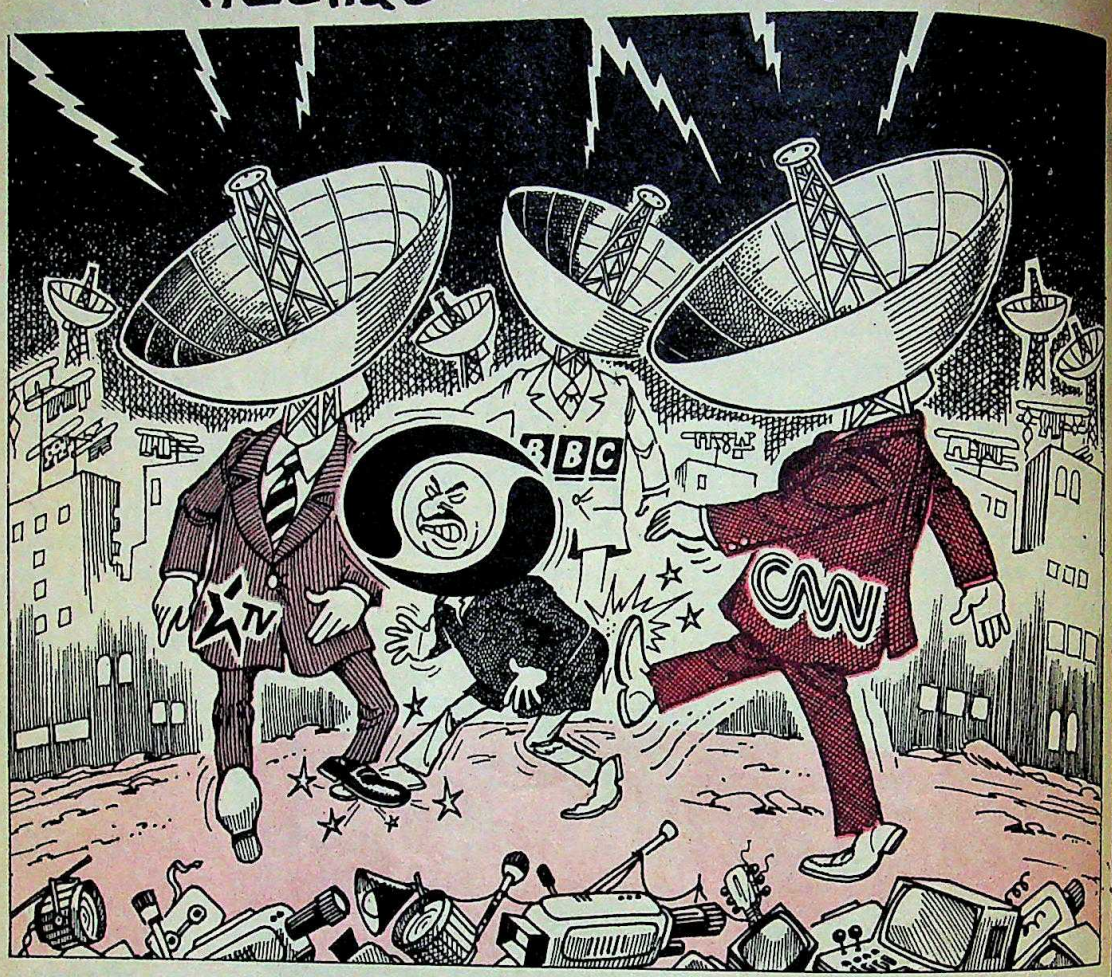

सनद रहे

गिनीज बुक में: आंध्र प्रदेश में नांदयाल लोकसभा सीट 5,80,297 वोटों से जीतने के बाद प्रधानमंत्री **पी.वी. नरसिंह राव** का नाम गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज हो गया है. उन्होंने 1989 में बिहार की हाजीपुर लोकसभा सीट 5,04,488 वोट से जीतने वाले जनता दल रामविलास पासवान का रिकॉर्ड तोड़ दिया.

रद्द: सरकार ने वह **विधेयक लाने का प्रस्ताव** रद्द कर दिया है जिसके तहत अलगाववादियों के पंजाब में चुनाव लड़ने पर रोक लगाई जानी थी. ऐसा इस सलाह पर किया गया कि संविधान के अनुसार पंजाब के उम्मीदवारों और देश के दूसरे इलाकों के उम्मीदवारों में भेदभाव नहीं बरता जा सकता.

खारिज: सुप्रीम कोर्ट ने जनता दल की वह अर्जी खारिज कर दी जिसमें बोफोर्स मामले से संबंधित **विन चड्ढा** की याचिका को दिल्ली हाईकोर्ट से सुप्रीम कोर्ट में तबादला करने की मांग की गई थी. अब मामले की सुनवाई हाईकोर्ट में फिर शुरू हो सकेगी. दो न्यायाधीशों की पीठ ने फैसला सुनाया कि अपील का अधिकार केवल अभियुक्त को ही है.

इस्तीफा: दीपक नैयर ने वित्त मंत्रालय में प्रमुख आर्थिक सलाहकार के पद से इस्तीफा दे दिया. उनकी नियुक्ति वी.पी. सिंह सरकार ने एक साल के लिए की थी. केंद्रीय मंत्रिमंडल ने प्रमुख आर्थिक परामर्शदाता का नया पद बनाकर इस पर अशोक देसाई को नियुक्त किया तो नैयर ने विरोध में इस्तीफा दे दिया.

पुरस्कृत: संयुक्त जर्मनी के प्रथम चांसलर **हेल्मुट कोल** को 1990 के जवाहरलाल नेहरू अंतरराष्ट्रीय सद्भावना पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. उपराष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा की अध्यक्षता वाले पुरस्कार निर्णायक मंडल ने कोल को "युद्ध के बाद की जर्मनी का असाधारण राजनेता" बताया जो 1944 से राजनीति में हैं.

नामजद: दिवंगत राज कपूर की फिल्म **फिर** को विदेशी भाषा वाली फिल्मों के बीच ऑस्कर अवार्ड की प्रतियोगिता में भारत सरकार की ओर से नामजद किया गया है. इसका निर्देशन रणधीर कपूर ने किया है और जेबा बख्तियार, सईद जाफरी, अश्विनी भावे और ऋषि कपूर इसके प्रमुख अदाकार हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SMART GENERATION RADIA

AMAZER

RADIALS FOR MARUTI

ENGINEERED TO THE POINT OF
EXCELLENCE.

CONTROL TO THE POINT OF
PERFECTION.

STYLING TO THE POINT OF
ART.

Fit them and feel the difference in **Mileage**, **Safety**, **Comfort** and **Style.**

APOLLO TYRES

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

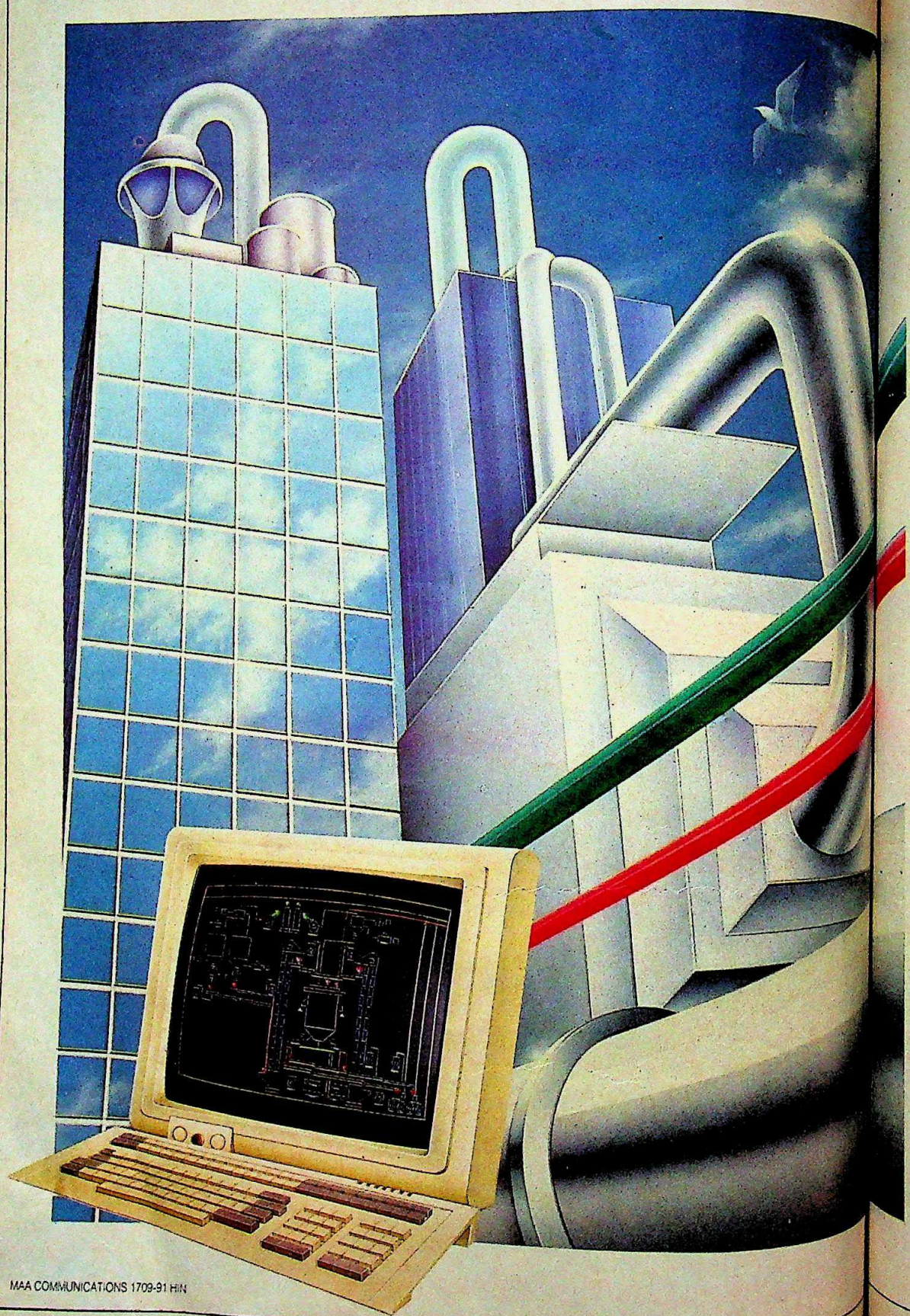

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कारखाना लगे जैसे सोने की खान है ।

इस कॉम्पलेक्स में कहीं ३०० लोग ५० लाख टन सीमेन्ट बना रहे हैं।

ABB की औद्योगिक सहायक प्रणालियां, उत्पादन व उत्पादकता को ऐसे स्तर तक बढ़ाने में कार्यरत हैं जिसका अब तक अनुमान नहीं किया गया।

पाश्चात्य देशों में (भारत में भी) ABB की स्वचलन प्रणालियों द्वारा चलने वाले संयंत्र, मानव त्रुटियों को लगभग पूर्ण रूप से दूर करते हैं ।

ABB अपने विस्तृत तकनीकी संसाधन अब भारत को प्रस्तुत करती है ।

ABB, भारत के लिए कोई अजनबी नहीं है । देश के आधुनिकतम सबस्टेशन और संयंत्र (सीमेन्ट, चीनी और स्टील), ABB द्वारा ही स्वचालित किए गए हैं । उदाहरण के लिए, जेपी रेवा सीमेन्ट लि. तीस प्रक्रिया स्वचलन प्रणालियों का उपयोग करती है ; और टाटा इलेक्ट्रिक कम्पनीज़ लि. में हैं, बारह ।

ABB ने बल्लारपुर इन्डस्ट्रीज़ को उनंचास डीसी ड्राइव्स सप्लाई किए हैं और इन्डियन एल्यूमिनियम को अड़तीस । ABB आर्क और इन्डक्शन फर्नेस ४०० से अधिक ग्राहकों की सेवा में हैं । इसके अलावा चीनी के मिलों में औद्योगिक स्टीम टर्बाइन और कारखानों व फार्मों में लाखों की संख्या में एसी मोटर भी पाए जाएंगे ।

यही सबूत है कि ABB की औद्योगिक प्रणालियां एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी, ऐसे समय में जब भारत अपनी औद्योगिक शक्ति को आनेवाली शताब्दी की ओर प्रेरित कर रहा है ।

इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग में विश्व अग्रणी

- विद्युत्-शक्ति उत्पादन
- विद्युत्-शक्ति संचरण
- विद्युत् -शक्ति वितरण
- औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक्स
- औद्योगिक उपकरण व प्रणालियां
- परिवहन
- पर्यावरण प्रणालियां

असेया ब्राउन बोवेरी लिमिटेड
संचार विभाग
सोना टावर्स,
७१, मिल्लर रोड,
बैंगलूर-५६० ०५२.

ABB
ASEA BROWN BOVERI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन कहता है कि मर्द रोमैन्टिक नहीं होते?"

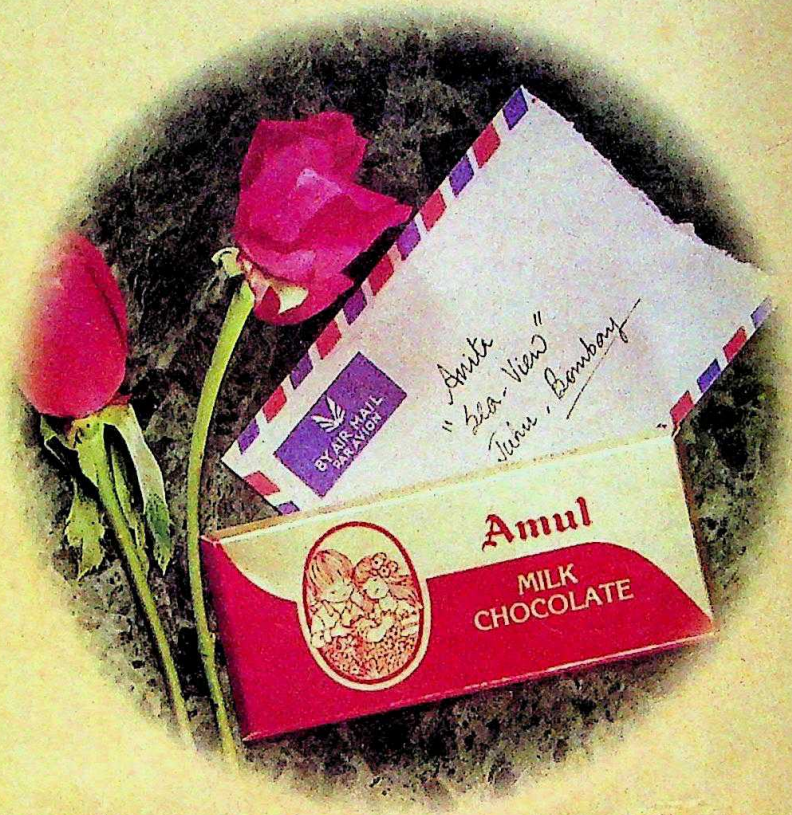

"सरोज पता है संदीप ने मुझे क्या भेजा है.
लिफ़ाफ़े में ख़त नहीं बस एक अमूल चॉकलेट.
पहले तो मेरी समझ में कुछ नहीं आया.

फिर मुझे याद आया... अमूल चॉकलेट
प्यार की मीठी भेंट.

और मैं खुशी से झूम उठी."

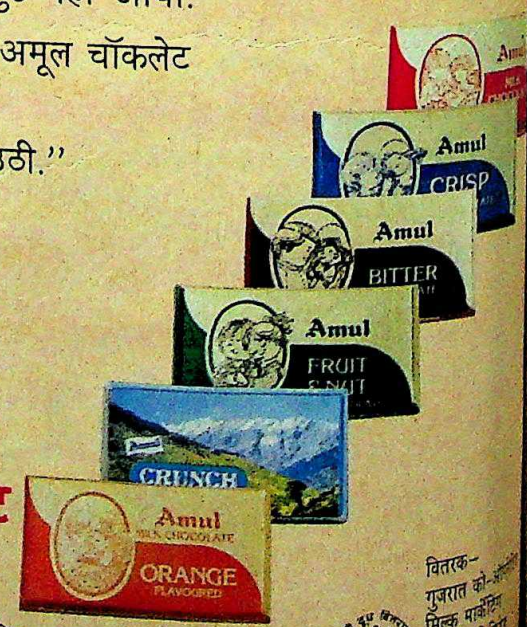

अमूल चॉकलेट

प्यार की मीठी भेंट

६ स्वादिष्ट चॉकलेट

अमूल मिल्क चॉकलेट, अमूल क्रिस्प, अमूल बिटर,
अमूल फ्रूट एण्ड नट, अमूल क्रंच, अमूल ऑरेंज.

वितरक–
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फेडरेशन लिमिटेड
आणंद ३८८ ००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

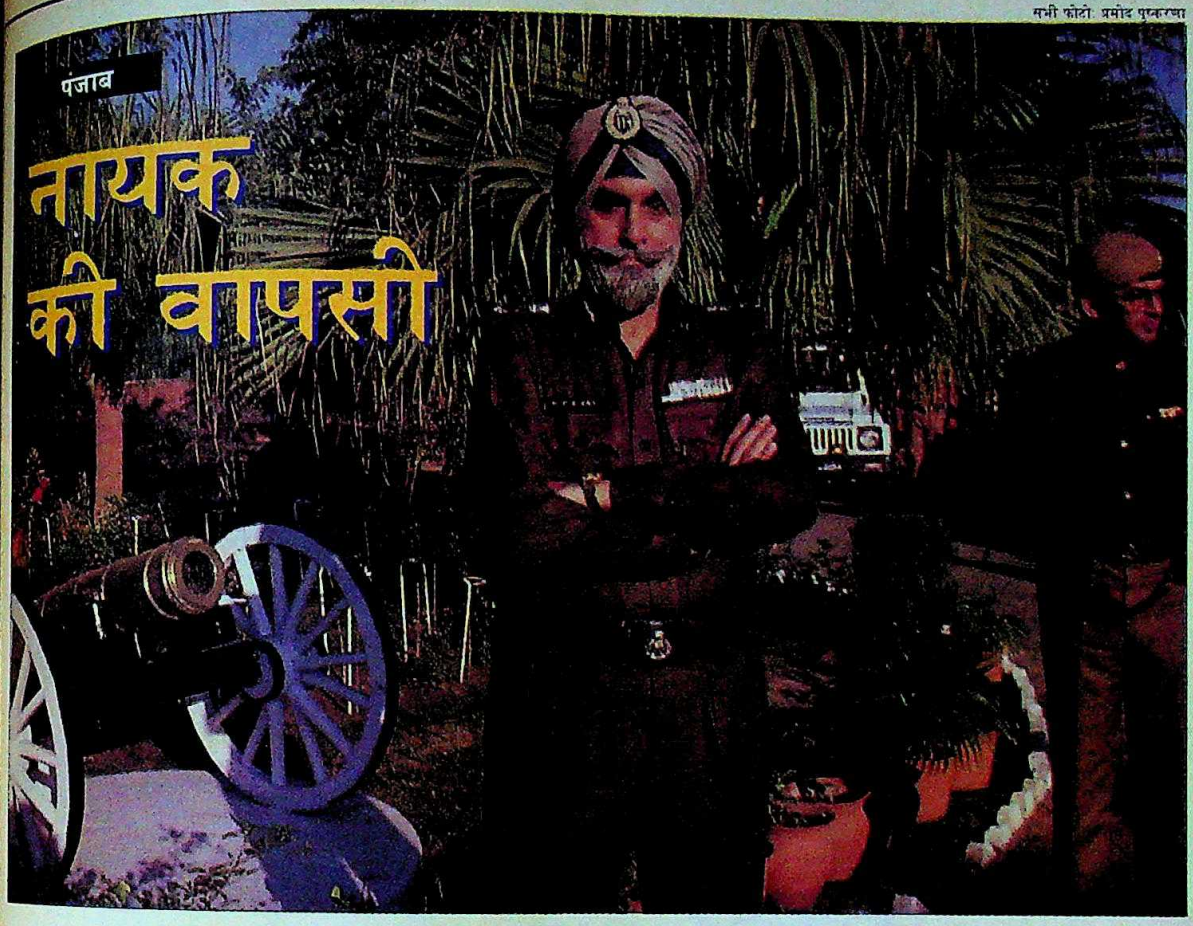

पंजाब

नायक की वापसी

मगर विवादास्पद रहे पुलिस महानिदेशक गिल के लिए चुनौतियां भी बेहिसाब

—हरिंदर बवेजा

राज्य में कई लोगों के मन में कंवरपाल सिंह गिल के नाम से ही आक्रोश के भाव उठने लगते हैं. मगर पंजाब के पुलिस महानिदेशक पद पर फिर से वापस आ गए हैं. उनकी वापसी से राज्य पुलिस खुश है क्योंकि वह उन्हें हर मोर्चे पर अगुआई करने वाले और समर्थन देने वाले नेता के रूप में देखती है. मगर उन्हें एक अक्खड़ अधिकारी मानने वाली नौकरशाही सहमी हुई है. आतंकवादियों को लग रहा है कि अब मुकाबला एक विकट दुर्जेय प्रतिद्वंद्वी से है. उधर, राज्यपाल सुरेंद्रनाथ ऐसे पुलिस महानिदेशक की वापसी से खिन्न हैं, जो खुद को गवर्नर जनरल समझता है और वैसा ही आचरण करता है.

बहरहाल, केंद्र से उन्हें मिले दिशा-निर्देश स्पष्ट हैं. उन्हें यहां अरसे से टलते आ रहे चुनाव के लिए जमीन तैयार करनी है. इस दुरूह काम में उन्हें केंद्र और सेना का पूर्ण समर्थन हासिल होगा. सेना गांवों तक में तैनात की जा रही है. अपनी जानी-पहचानी शैली के अनुरूप ही गिल ने रणनीति तैयार कर ली है. वे आतंकवादियों के खिलाफ युद्ध छेड़ेंगे और किसी किस्म का हस्तक्षेप नहीं चाहेंगे.

गिल को बुलाने के केंद्र के फैसले की वजह भी साफ है. राज्य की बद से बदतर होती कानून और व्यवस्था की स्थिति पर केंद्र आंखें मूंदे नहीं रह सकता. जैसा कि गृह मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया, "इंका सरकार अब चुनावों को और टाल नहीं सकती." गिल को इसलिए चुना गया क्योंकि इससे पहले यहां उनका कार्यकाल काफी हद तक सफल था और उनके अधीन ऑपरेशन ब्लैक थंडर भी सफल रहा था. चंद्रशेखर सरकार ने 11 महीने पहले उन्हें केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का महानिदेशक बनाकर भेजा था. वजह यह थी कि सरकार आतंकवादियों से गुप्त समझौता करने की कोशिश में थी और गिल को इसमें रोड़ा मान रही थी.

पंजाब में अपना कार्यभार संभालते वक्त गिल राज्य के मौजूदा हालात से बखूबी परिचित थे. अपने अधिकारियों से उन्होंने कहा, "आतंकवादी बहुत आगे बढ़ चुके हैं जबकि पुलिस जहां की तहां है." आतंकवादी अब 15 में से 12 पुलिस जिलों में सक्रिय है. नए-नए आतंकवादी नए रंगरूटों को भर्ती कर जहां-तहां उभर रहे हैं. और हिंसा बढ़ी है.

कुशल नेतृत्व और अदम्य साहस के लिए विख्यात गिल हवाई जहाज से अमृतसर गए और रात को गश्त कर रहे पुलिसकर्मियों से मिले. पुलिस जिला प्रमुखों को उन्होंने 'ऑपरेशन इलेक्शन' की रूपरेखा बताई. उनकी योजना रोपड़, पटियाला, संगरूर, लुधियाना, जालंधर से आतंकवादियों को अमृतसर और गुरदासपुर जिलों में खदेड़ने की है, जहां उनसे निबटा जाएगा.

लेकिन गिल की इससे भी बड़ी समस्या आतंकवादियों द्वारा पुलिसवालों और उनके परिवारजनों की हत्या से पुलिस बल के गिरे मनोबल को ऊपर उठाना है. अपने पिछले कार्यकाल के विपरीत इस बार गिल पुलिस की ज्यादतियों से आंखें मूंदे नहीं रह सकते क्योंकि चुनाव से पहले उन्हें प्रशासन में पंजाबियों का खोया विश्वास भी लौटाना है. इंस्पेक्टर, थानेदार और दारोगा स्तर के कई पुलिस अधिकारी आतंकवादियों की ही तरह लूट-खसोट में सक्रिय हैं. इसी तरह नकली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वास है भारत के पास

में अनूठी सफलताएं प्राप्त करने वाले चमचमाते तारा-मण्डल को देखें तो उनमें भारत में जन्मे सितारे भी नज़र आएंगे. वे दीप्तिमान व्यक्ति जिन्होंने , दर्शनशास्त्र, कला और साहित्य को नए शिखरों तक पहुँचाया. खुले आकाश में ऊपर ...और ऊपर जाने की उमंग लिए एक पतंग की तरह. क्योंकि विश्वास है हर मुश्किल, हर चुनौती को पार कर सकती है वह. भारत की तरह. भारत बुद्धिजीवी पूँजी से सम्पन्न है, इस बात को समस्त विश्व मानता है. हमें इसका पूर्ण रूप से सदुपयोग करना है. हिन्दुस्तान लीवर ने ऐसा ही किया.

तिहास है भारत के पास

जैसे पतंग ऊँची उड़ती है, उसे अपनी शक्ति का ज्ञान होता है. वह और ऊपर उठती है. इस विश्वास के साथ कि कोई शक्ति इसकी डोर थामे है, दिशा देती है. वे हाथ जो समर्थ और कृतसंकल्प हैं. आज भारत का भविष्य योग्य एवं सक्षम हाथों में है. भारत पिछले 60 वर्षों में तकनीकी और क्षेत्र में अपना सामर्थ्य सिद्ध कर चुका है. भारत में विकसित उन्नत अनुवेषणों की सूची विस्तृत और विविध है. परन्तु सफलताओं ने इसे मिथ्या सन्तोष के में नहीं डाला. भारत आज भी सीख रहा है. हर दिन एक नई खोज की शुरुआत है,उत्तमता की ओर उत्कृष्टता पाने के लिए. हिन्दुस्तान लीवर अपनी जयन्ती भारतीय दूरदर्शियों की उपलब्धियों के उत्सव के रूप में मनाना चाहेंगे. वे दूरदर्शी जिन्होंने आकाश की ऊंचाइयां छूने में इसकी सहायता की है.

आस है भारत के पास

पतंग के पास पक्का निश्चय और उचित दिशा हो तो कोई भी ऊँचाई उसकी पहुँच के बाहर नहीं. यही बात भारत के लिए भी ठीक बैठती है. आज भारत एक युग के द्वार पर है, आर्थिक तथा औद्योगिक ऊँचाइयों का युगद्वार. सफलता पाने की सक्रिय शक्ति है भारत के पास,और सफलता उसे मिलेगी. हीरक जयन्ती वर्ष में हम भारत की बुद्धिजीवी पूँजी के पोषण और विकास का संकल्प लेते हैं. वैज्ञानिक अनुसंधान, विपणन, वितरण, उर्जा की बचत ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में हमने सदैव प्रेरणा पाई भारत के बुद्धिजीवियों से. अतः अगर हम इस पूँजी में किसी प्रकार भी वृद्धि कर पाएं तो हमारे लिए बात होगी. क्योंकि यही हमारी सफलता का मापदण्ड भी है.

1931 ★ DIAMOND JUBILEE ★ 1991

HINDUSTAN LEVER

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुठभेड़ों, और मजबूरी में आतंकवादियों को पनाह देने वालों का सताया जाना भी आम बात है.

इस बार गिल सावधान हैं. पुलिस अधिकारियों के साथ राज्यपाल की दो बैठकों में गिल ने अधिकारियों को नकली मुठभेड़ों के प्रति सावधान तो किया ही, यह आदेश भी दिया कि आतंकवादियों का समर्थन करने वालों और उन्हें मजबूरी में पनाह देने को एक न समझा जाए.

गिल की राह में दूसरा रोड़ा होगी नौकरशाही, जिसने गिल की वापसी रोकने की भरपूर कोशिश की. इसकी दो वजहें थीं. उनके अनुसार एक तो यह कि गिल के आने से पंजाब की परिस्थिति पर उलटा असर पड़ेगा. यह डर भी है कि गिल और उनके मातहतों का रवैया जनता को प्रशासन से दूर कर देगा, जैसा कि सेना के 'ऑपरेशन ब्लूस्टार' के दौरान हुआ था.

दूसरी वजह, जैसा कि एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी ने बताया, "पंजाब में गिल की मौजूदगी से उपायुक्त स्तर के अधिकारी भी महसूस करने लगते हैं कि वे जिला पुलिस प्रमुखों के प्रति जवाबदेह हैं."

अकाली दल भी गिल की वापसी के सख्त खिलाफ है. प्रकाश सिंह बादल इसे 'सिखों के दमन का एक और तरीका' मानते हैं, और सिमरनजीत सिंह मान ने चुनावों के बहिष्कार का ही फैसला किया है. उन्हें डर है कि केंद्र चुनाव में हेराफेरी के लिए गिल का इस्तेमाल करेगा.

अपनी राह में इतनी बाधाओं के चलते गिल को इस बार सफल होने के लिए औपचारिक साहस और दर्प के अलावा और भी बहुत कुछ दिखाना होगा. यदि सेना की मौजूदगी में चुनाव होते भी हैं तो आतंकवादियों की बंदूकों का सामना अंततः उन्हें ही करना होगा, क्योंकि राज्य में चुनी गई सरकार तो उन्हें बंद कर नहीं पाएगी. जाहिर है, इस बार गिल का काम बहुत चुनौती भरा है, क्योंकि उन्हें सख्ती बरतने के साथ-साथ जनता का भरोसा भी जीतना है. ■

खुला दरबार

घाव पर मरहम

बैसाखियों के सहारे लंगड़ाते हुए वे मंच तक पहुंच जाते हैं. उन्हें उम्मीद है कि इस दफा तो उनकी सुनवाई हो ही जाएगी. घिरिंडा गांव में राज्यपाल सुरेंद्रनाथ की मौजूदगी में हुए खुले दरबार में तरसेम सिंह नौकरी मांगने आए हैं. पर अर्जी थामे वे अकेले नहीं हैं. भीड़ में अमर सिंह भी हैं जो भैंस खरीदने के वास्ते लिए गए कर्ज की माफी की तमन्ना लेकर आए हैं. बलबीर सिंह, उनकी पत्नी भी पुलिस के खिलाफ कार्रवाई की मांग लेकर आए हैं. आरोप है कि पुलिस ने उनके 'बेगुनाह' बेटे को मार डाला.

खुला दरबार योजना इसी वर्ष अगस्त में सुरेंद्रनाथ ने राज्यपाल बनने के बाद शुरू की थी. वे सभी सभाओं में लोगों से कहते हैं, "यह मेरा दरबार नहीं है. अपने अधिकारियों के साथ मैं आपके दरबार में आया हूं." अब तक वे पांच ऐसे दरबार लगा चुके हैं और हर बार उन्होंने अपनी मंशा जाहिर की कि उनका उद्देश्य पंजाब में राष्ट्रपति शासन के प्रति लोगों की नाराजगी को बाहर आने का मौका देना और इस प्रक्रिया में पुलिस की छवि सुधारना है.

लेकिन शिकायतें लेकर आने के लिए लोगों को प्रेरित करना आसान काम नहीं. सुरेंद्रनाथ जनता से कहते हैं, "कुछ लोगों ने मुझे बताया है कि आप मेरे सामने पुलिस की शिकायत करने से डरते हैं. पुलिस कठिन काम में जरूर लगी है पर उसे बेगुनाह लोगों को सताने का कोई अधिकार नहीं है." इसके बाद वे मंच की सीढ़ियों पर बैठकर लोगों की बातें सुनते हैं.

ज्यादातर शिकायतें रोजमर्रा की जरूरतों से संबंधित हैं. वैसे, इन दरबारों में पंजाब के लोग राज्य में चुनाव कराने के हिमायती लगते हैं.

पर कुछ कटु सत्य भी उजागर होते हैं. मसलन यह कि प्रशासन पर से लोगों का भरोसा उठ गया है और वे पुलिस से आक्रांत हैं. कुछ मुट्ठी भर लोग ही पुलिसिया भ्रष्टाचार की बात उठा पाते हैं. यह बात राज्य के सीमावर्ती जिलों पर तो खासकर लागू होती है. गौरतलब तथ्य यह भी है कि किसी भी व्यक्ति ने आतंकवादियों की शिकायत नहीं की है. सुरेंद्रनाथ के अनुसार, "यह लड़ाई लोगों का दिल जीतने के लिए है." और इसके लिए उन्हें पहले पंजाब पुलिस को ही नकेल डालनी होगी. यह कोई आसान काम नहीं है. —हरिंदर बवेजा, अमृतसर में

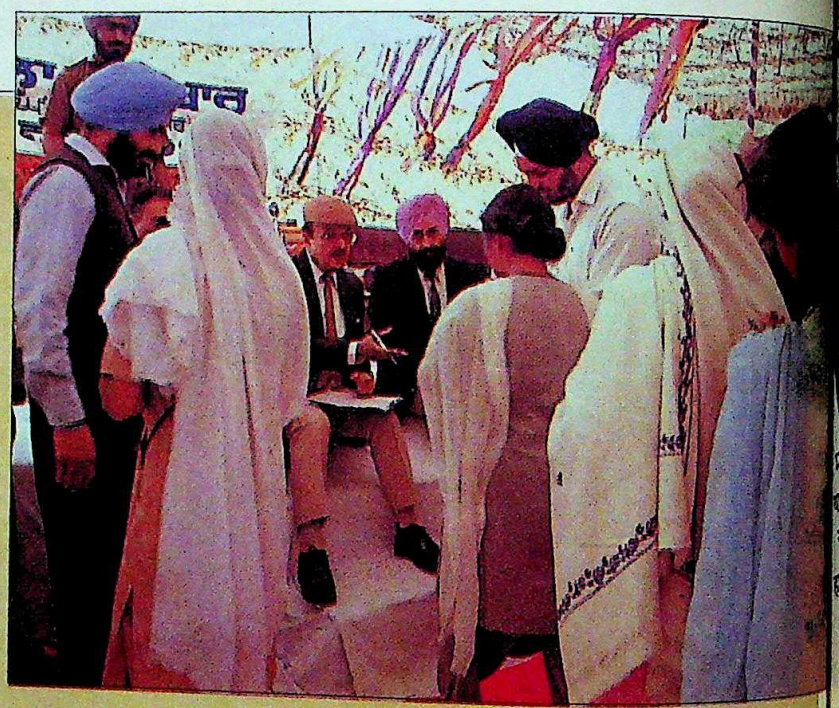

अधिकारियों के साथ राज्यपाल: शिकायतों पर कान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

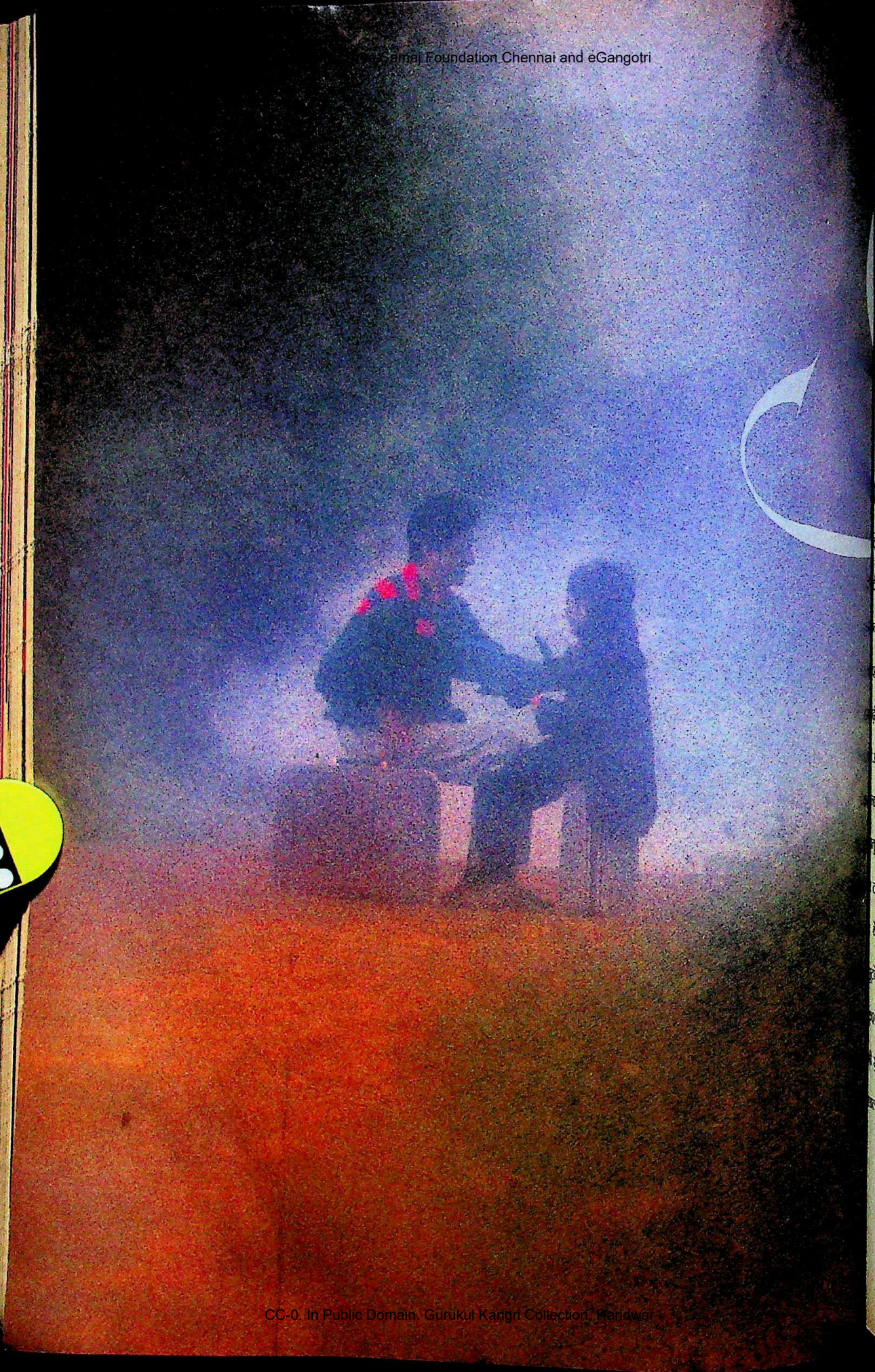

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ल भी
आ ज भी
क ल भी

...यां!... पहाड़... सुंदर वादियाँ... रम्य ...र... या फिर सागर का चहकता ...रा... हर सैलानी परिवार इन स्थानों पर कभी न कभी गया होगा. और ...र्य की बात सबका हमसफ़र वही वी.आइ.पी.! परिवार-दर-परिवार, ...-दर-पीढ़ी जब कभी लगेज की बात आई, वी.आइ.पी. ने साथ निभाया. ...आइ.पी. ने जो विश्वास जगाया वो हरदम कायम रहा. वी.आइ.पी. को टिकाऊ ...ने के लिए बहुत कुछ किया गया है. जैसे, सुदृढ़ खोल को सहारा देनेवाला ...का फ्रेम उसे इतना मज़बूत बनाए कि वो सफ़र की हर मुश्किल ...कर ले पाए. इतना ही नहीं, वी.आइ.पी. में मिलती ...बेजोड़ ख़ूबियां. जैसे, मल्टी सेफ़ लॉकिंग सिस्टम, ...केस उल्टा न खुलने की व्यवस्था और सॉफ़्ट ...नवाले हैंडल... छोटी-छोटी बातें जो सफ़र को और ...सुविधाजनक बनाएं - छुट्टी -दर-छुट्टी... ...-दर-साल.

और अब हॉलिडे लाइन - छुट्टियों की मौज-मस्ती में हमसफ़र. आपके परिवार की हर आवश्यकता को पूरी करने के लिए खास बैग. ट्रैवेलाइट - सैलानियों का ख़ूबसूरत हमसफ़र - आपके सफ़र को शानदार बनाए. टाइटन में मज़बूती के लिए है दोहरा फ्रेम. और टॉपलाइन में - जगह-ही-जगह – छुट्टियों के दौरान आकस्मिक ख़रीदी सभी चीज़ों को रखने के लिए. ये तीनों सूटकेस अलग-अलग साइज़ों और तरह-तरह के मनमोहक रंगों में मिलते हैं. अब जब भी आप छुट्टियों का मज़ा लेना चाहें, मज़बूत - टिकाऊ वी.आइ.पी. को ही अपना हमसफ़र बनाएं.

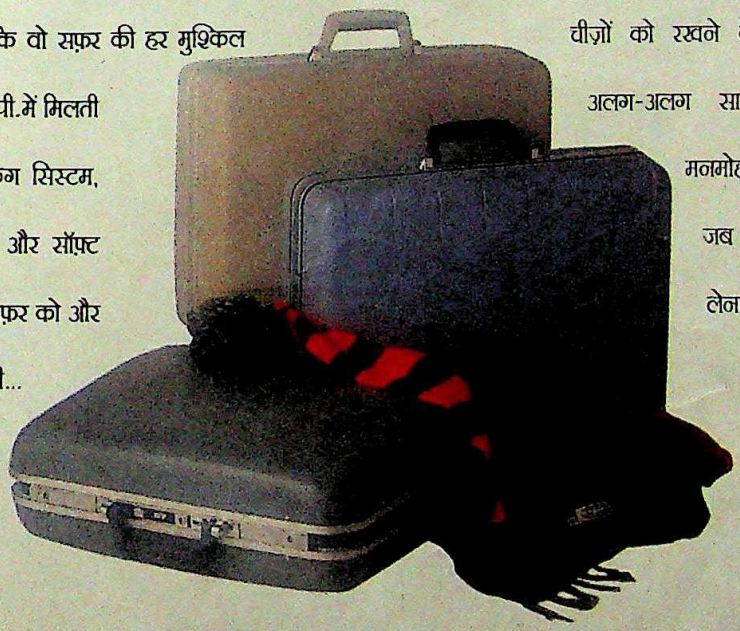

हैप्पी हॉलिडे लाइन - **वी.आइ.पी.** के तीन हमसफ़र ख़ूबियों में एक से एक बढ़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

HTA-2353

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौसैनिक कमांडो दस्ता

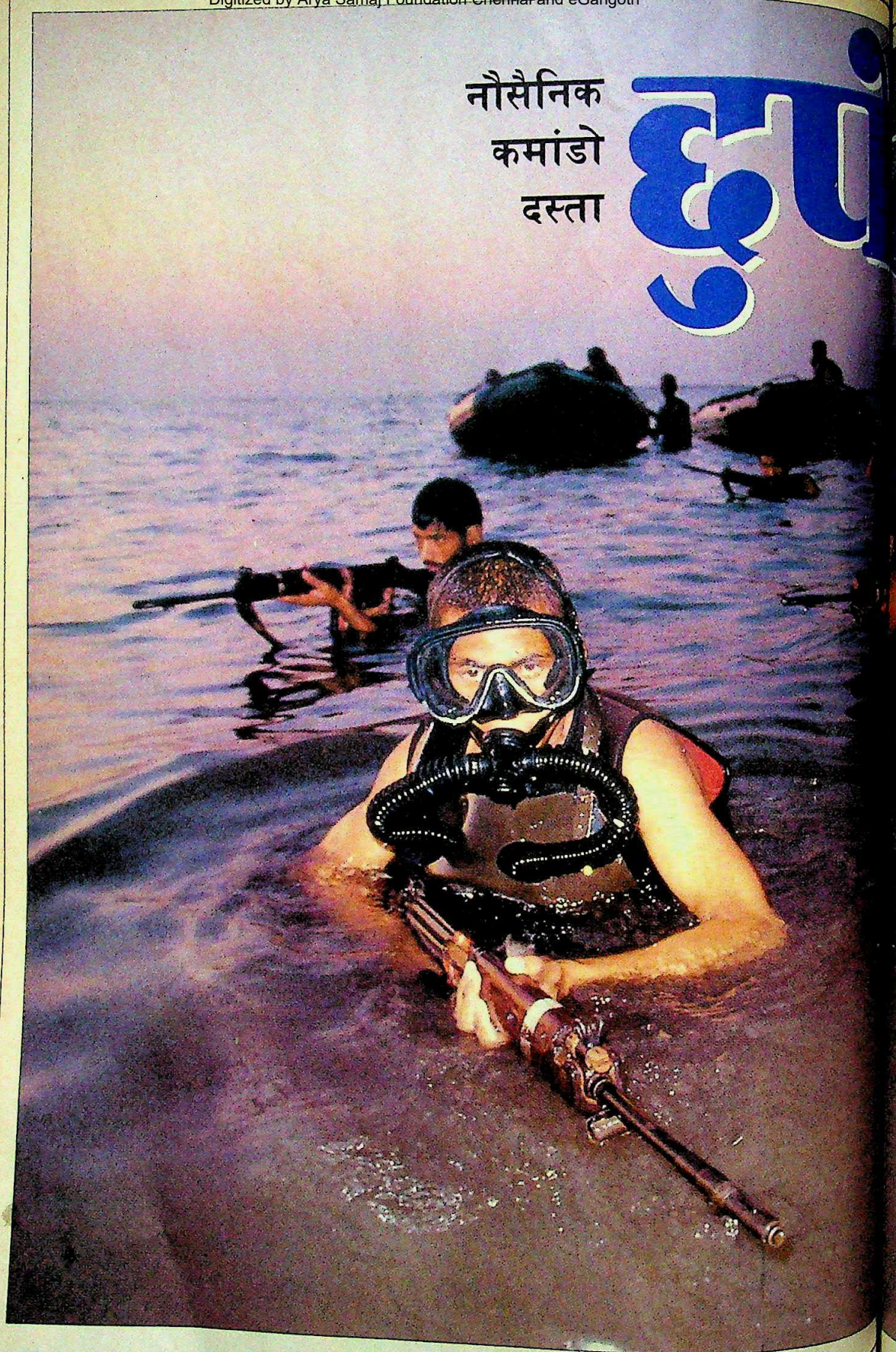

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ंस्तान

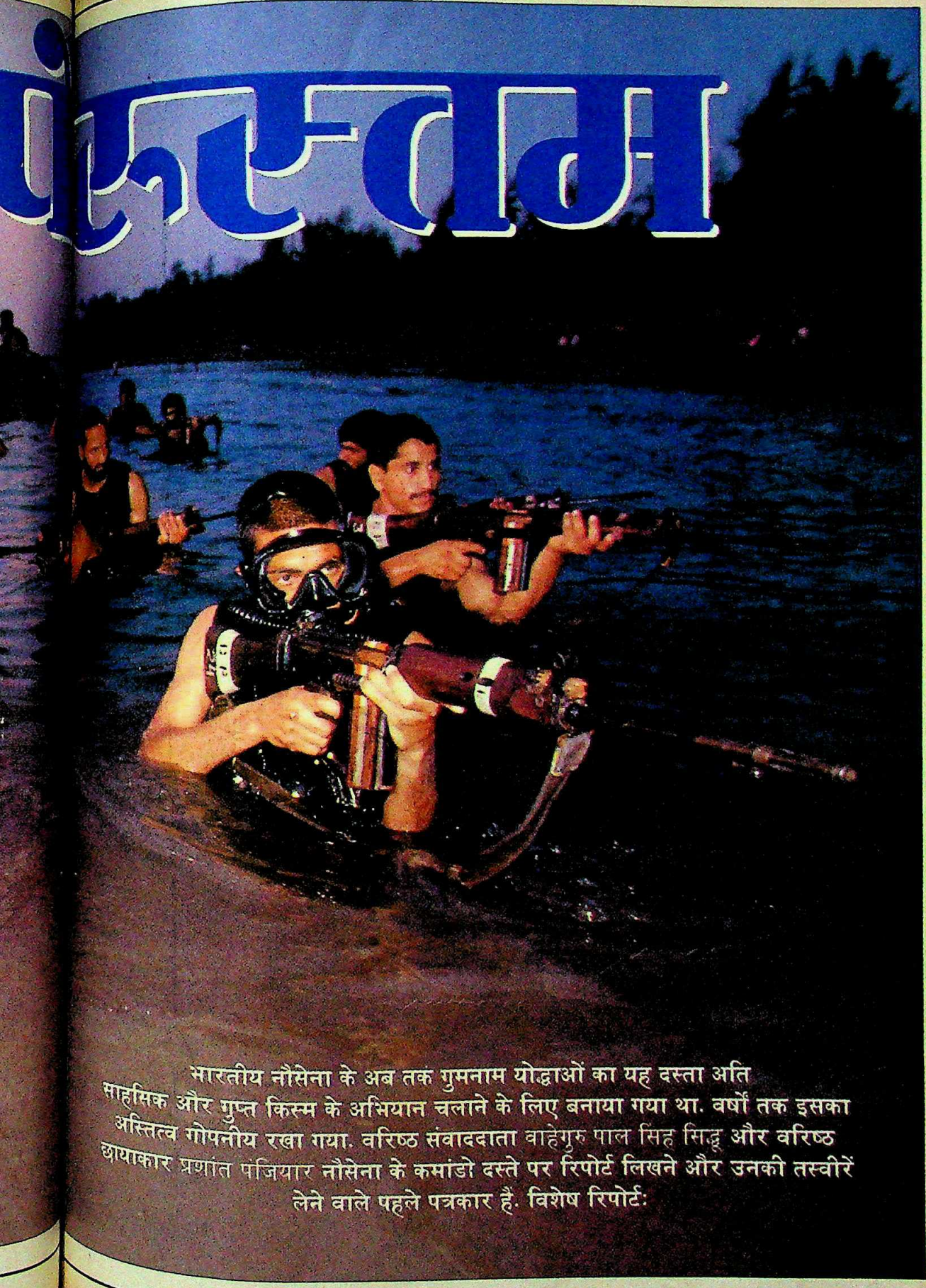

भारतीय नौसेना के अब तक गुमनाम योद्धाओं का यह दस्ता अति साहसिक और गुप्त किस्म के अभियान चलाने के लिए बनाया गया था. वर्षों तक इसका अस्तित्व गोपनीय रखा गया. वरिष्ठ संवाददाता वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू और वरिष्ठ छायाकार प्रशांत पंजियार नौसेना के कमांडो दस्ते पर रिपोर्ट लिखने और उनकी तस्वीरें लेने वाले पहले पत्रकार हैं. विशेष रिपोर्ट:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

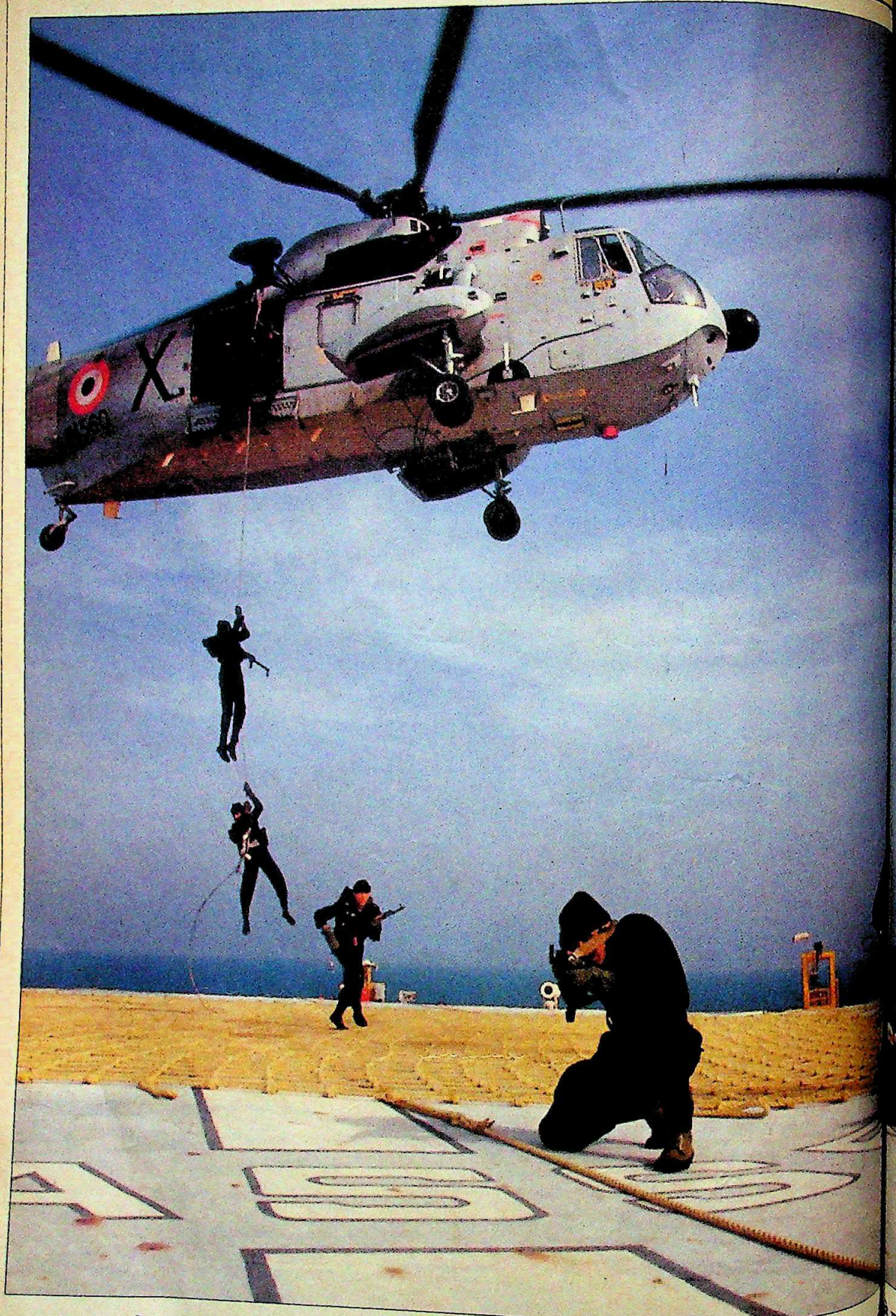

बांबे हाई को 'उग्रवादियों के कब्जे' से छुड़ाने के लिए धावा बोलता क्यूआरएस का एक दल (ऊपर); और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

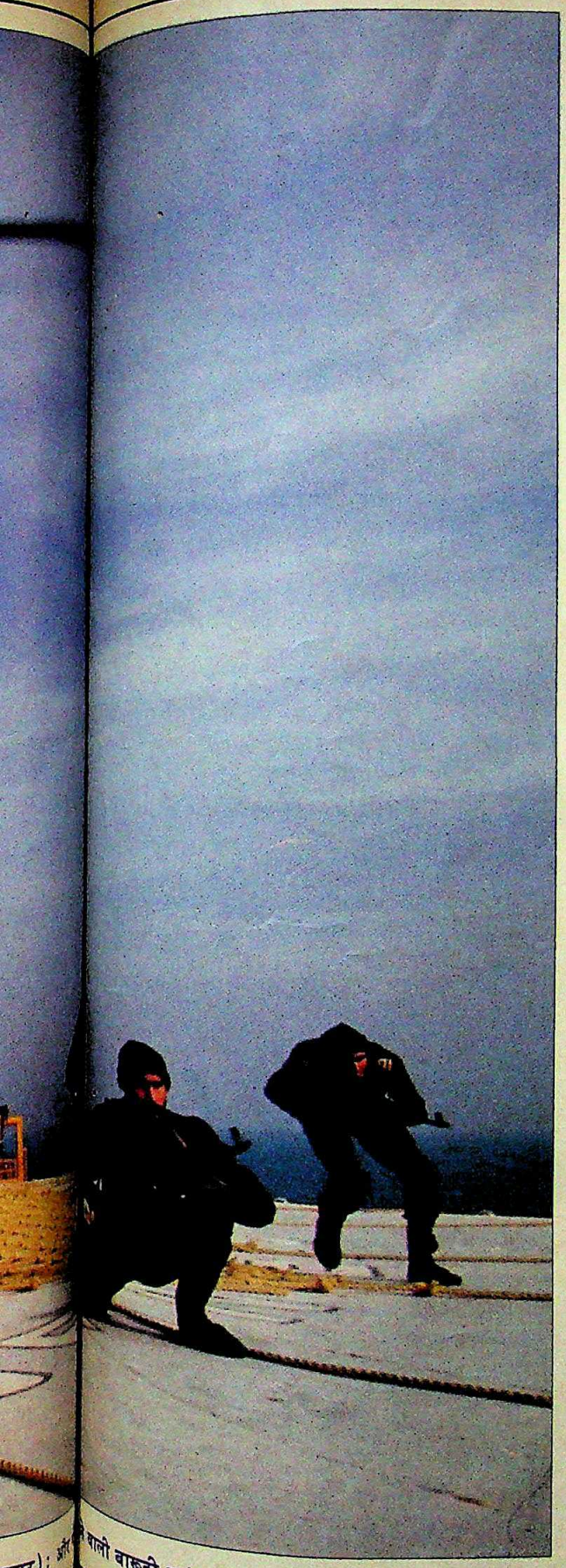

ऊपर); और ... वाली बारूदी सुरंग ले जाता गोताखोर

दृश्यः बांबे हाई में तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ओएनजीसी) का एक प्लेटफॉर्म. उस पर काबिज 14 उग्रवादी लगभग अंधेरे-से छह कमरों में 14 लोगों को बंधक बनाए हुए हैं. खबर मिलने के 30 मिनट के भीतर ही भारतीय नौसेना की विशिष्ट मरीन कमांडो फोर्स (एमसीएफ) (नौसैनिक कमांडो दस्ता) के 'क्विक रिएक्शन सेक्शन' (क्यूआरएस) के 24 जवान हरकत में आ जाते हैं. वे इस्पाती रंग के जंगी हेलिकॉप्टर सी-किंग 42 से उड़ पड़ते हैं. सभी ऊपर से नीचे तक काले कपड़ों में हैं. उनमें से आधे रूसी 'एके-47' राइफल से और बाकी जर्मन 'हेकलर' और 'कोच एमपी-5' सबमशीनगन से लैस हैं.

आधा घंटा बाद हेलिकॉप्टर प्लेटफॉर्म के 25 फुट ऊपर मंडराता है और सभी कमांडो कुछ ही सेकंड के भीतर उससे कूद जाते हैं. एके-47 से लैस कमांडो हेलिकॉप्टर के चारों ओर मोर्चा संभाल लेते हैं. फिर एक छोटा विस्फोट होता है जो उस प्लेटफॉर्म पर धावा बोलने की कार्रवाई का संकेत है.

00 सेकंडः भारी बूटों की मार से मुख्य दरवाजा खुल जाता है. एमपी-5 सबमशीनगन से लैस दो कमांडो आगे-पीछे देखते हुए आगे बढ़ते हैं और मुख्य हॉल में झांकते हैं.

02 सेकंडः कमरे की धीमी रोशनी के अभ्यस्त हो जाने पर वे एक बंधक के पीछे छिपे हुए एक उग्रवादी को देख लेते हैं.

03 सेकंडः उनमें से एक कमांडो अपनी एमपी-5 का घोड़ा धीरे से दबाता है. एक बार. दो बार. गोलियां उड़कर उग्रवादी के सिर को बींध देती हैं.

04 सेकंडः 'क्लियर!' एक कमांडो चिल्लाता है, जबकि पहला जोड़ा रक्षात्मक पोजीशन ले लेता है. इसी हथियार से लैस अब दूसरा जोड़ा आगे बढ़ता है. वह इस 'निरापद' हॉल से दौड़ते हुए दूसरे कमरे में घुस जाता है और अपनी अचूक निशानेबाजी से पहले वाली प्रक्रिया को दोहराता है.

संकेतक विस्फोट के महज 22 सेकंड बाद गुप्त योद्धा प्लेटफॉर्म पर कब्ज़ा कर लेते हैं. इस पूरी कार्रवाई में 13 उग्रवादी मारे जाते हैं और एक बंधक जख्मी होता है.

यह नजारा उन कई अभ्यासों में से एक का है जिसे नौसेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

START

COMMITMENT and INTEGRITY

Canban ual

Now launches yet anoth th, inc

CAN

HOME
AS YOU PASS HOME COLLECT
3 Times +
OF YOUR INVESTMENT IN JUST 90 MONTHS

Canbank Mutual Fund, promoted by the dynamic Canara B with the highest profitability amongst nationalised banks, h unparalleled track record.

The best of professional skills, financial acumen and intima knowledge of the corporate world, turn market opportunities lucrative returns to ensure a rewarding experience to invest No doubt, Canbank Mutual Fund has a base of over 13 lac happy investors, big and small, who have contributed to bu corpus of over Rs. 2500 crores in just 36 months.

We make your assets grow all the ti

OFFER OPEN TILL 7TH DECEMBER, 1991

YOU HAVE WON

The fastes
und with
irst mutu
peration
pportuni
epurchas
asy liquid
ne year
o deduct
ax benef
ull and fi

al Fund an
essarily indi
e investme

C
Orie
Prin
Alw

URIT
f cour
OWTI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PERFORMANCE thru PROFESSIONALISM

ual Fund

t anoth, income-oriented scheme

NIPLE

HIGHLIGHTS

- The fastest growing, professionally-managed, bank-sponsored Mutual Fund with an unmatched track record and the largest investor base
- First mutual fund to declare bonus in the very first year of operation in both its pure growth funds
- Opportunity to triple, or more, your investment in just 90 months
- Repurchase facility after 3 years
- Easy liquidity and transferability — listing on Stock Exchanges after one year
- No deduction of tax at source
- Tax benefits under Capital Gains and Wealth Tax
- Full and firm allotment assured

Fund and securities are subject to market risks. Past performance is not necessarily indicative of future results. The returns mentioned are only indicative, based the investment policy of the fund.

CANBANK MUTUAL FUND
Orient House, Adi Marzban Path (Mangalore Street), Bombay 400 038
Principal Trustee : CANARA BANK
Always a step ahead

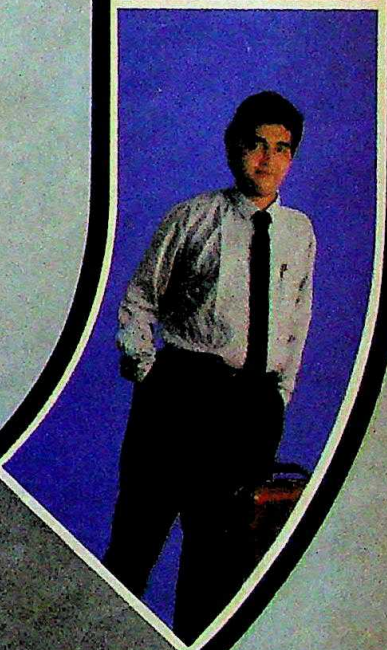

URITY
f course,
OWTH

Concep

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

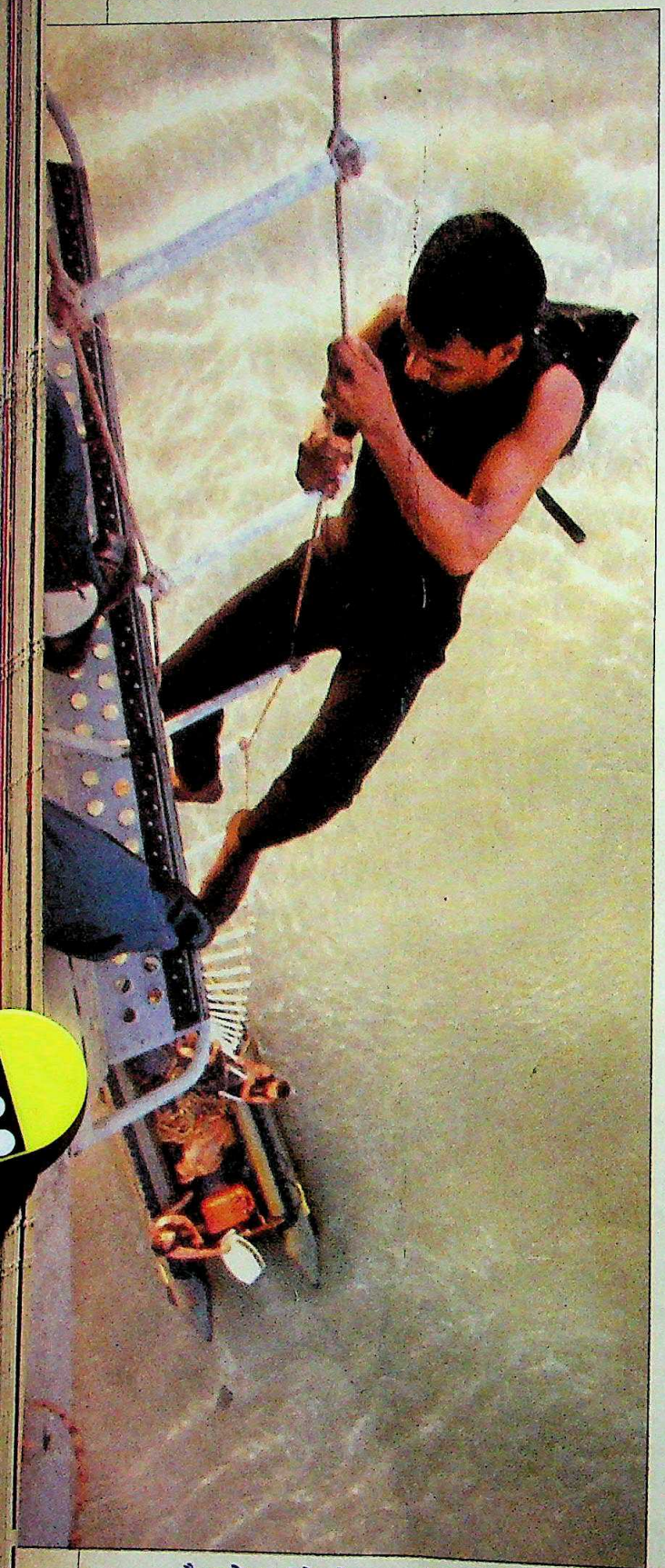

नौका से कमांडो को ऊपर खींचता हेलिकॉप्टर

की सबसे गुप्त रूप से काम करने वाली इकाई किस्म-कि
की भूमिकाओं में अपनी दक्षता बढ़ाने के लिए करती है.
नजारे में वारदात नकली है, 'उग्रवादी' और 'बंधक' काई
के हैं और दुश्मन काल्पनिक हैं. लेकिन इस्तेमाल की
गोलियां असली हैं. कमांडो सैनिकों की मांद माने जाने
युद्धपोत 'आइएनएस अभिमन्यु' के प्रमुख कमांडर एस.
कुलकर्णी कहते हैं, "हम प्रशिक्षण तक में असली विस्फोट
का इस्तेमाल करते हैं. वे फर्जी नहीं होते हैं."

भारतीय नौसेना ने लड़ाई के दौरान समुद्रतट
प्रतिष्ठानों पर होने वाले हमलों से निबटने और
कार्रवाइयों के लिए 'क्विक रिएक्शन' की जरूरत महसूस
थी. सो, उसने अप्रैल 1986 में भारतीय नौसेना विशेष
(आइएमएसएफ) बनाया. अमेरिका की नेवी सील्स
ब्रिटेन की स्पेशल एअर सर्विस और स्पेशल बोट सर्विस
तर्ज पर बनाए गए इस दस्ते में प्रशिक्षित गोताखोर, कमा
और छाताधारी सैनिकों को भर्ती किया जाना था.

इसलिए, नौसेना ने ऐसे गोताखोरों को चुना जो 50 मी
तक गोता लगा सकते थे और पानी के भीतर बारूदी सु
और विस्फोटकों को निष्क्रिय कर सकते थे. साथ ही, दुश्मन

एक दुस्साहसिक मिशन पर जा रही 'चैरियट' लघु-पनडु

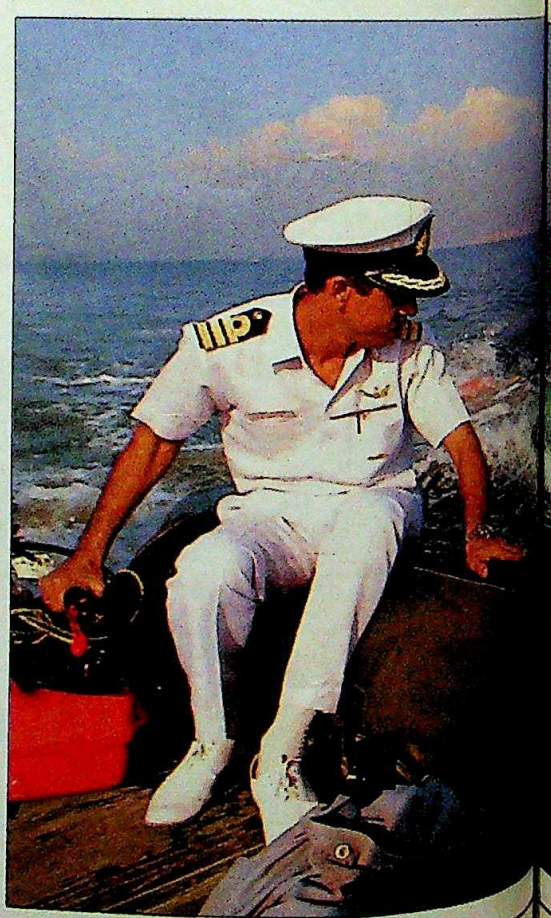

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...तों में सुरंग लगाने जैसी गुप्त कार्रवाइयों के लिए दो ...क्तियों वाली लघु पनडुब्बी 'चैरियट' का इस्तेमाल कर ...कते थे. शुरू में इनमें से तीन अधिकारियों को कैलिफोर्निया ...कोरोनैडो स्थित अमेरिकी नेवी सील्स स्कूल में प्रशिक्षण के ...लिए भेजा गया. लेकिन अब चुनींदा लोगों को भारत में ही ...वादियों से निबटने और छतरी सैन्य कार्रवाई का प्रशिक्षण ...दिया जाता है. और हाल ही में जब एडमिरल एल. रामदास ...सेनाध्यक्ष बने तो आइएमएसएफ का नाम बदल कर ...एमसीएफ कर दिया गया. एमसीएफ के कमांडो इस मामले में ...अनूठे हैं कि वे समुद्र, आकाश और धरती किसी भी जगह ...कार्रवाई करने में सक्षम हैं. वे समुद्री बारूदी सुरंग, क्लोज ...क्वार्टर बैटल के हथियार, बिषबुझे शर या विस्फोटक नोंक ...वाले तीर के साथ आड़ी कमानों के इस्तेमाल में दक्ष हैं. वे ...निहत्थी लड़ाई में भी प्रशिक्षित होते हैं और खाली हाथों से ...दुश्मन की जान ले सकते हैं.

एमसीएफ की ताकत उसके प्रशिक्षण में है. उसके जवानों ...को अमेरिकी सील्स की तरह कठोर, प्रशिक्षण दिया जाता है, ...जिसकी अवधि नौ महीने होती है. पहले महीने में तंदुरुस्ती पर ...ध्यान दिया जाता है. दिन भर की मेहनत में कसरत, 8.5 ...किमी तक की दौड़ और 4 किमी तक की तैराकी शामिल है.

...यट' लघु-पनडु...

उसके पाइलट पर नजर रखे एक अधिकारी

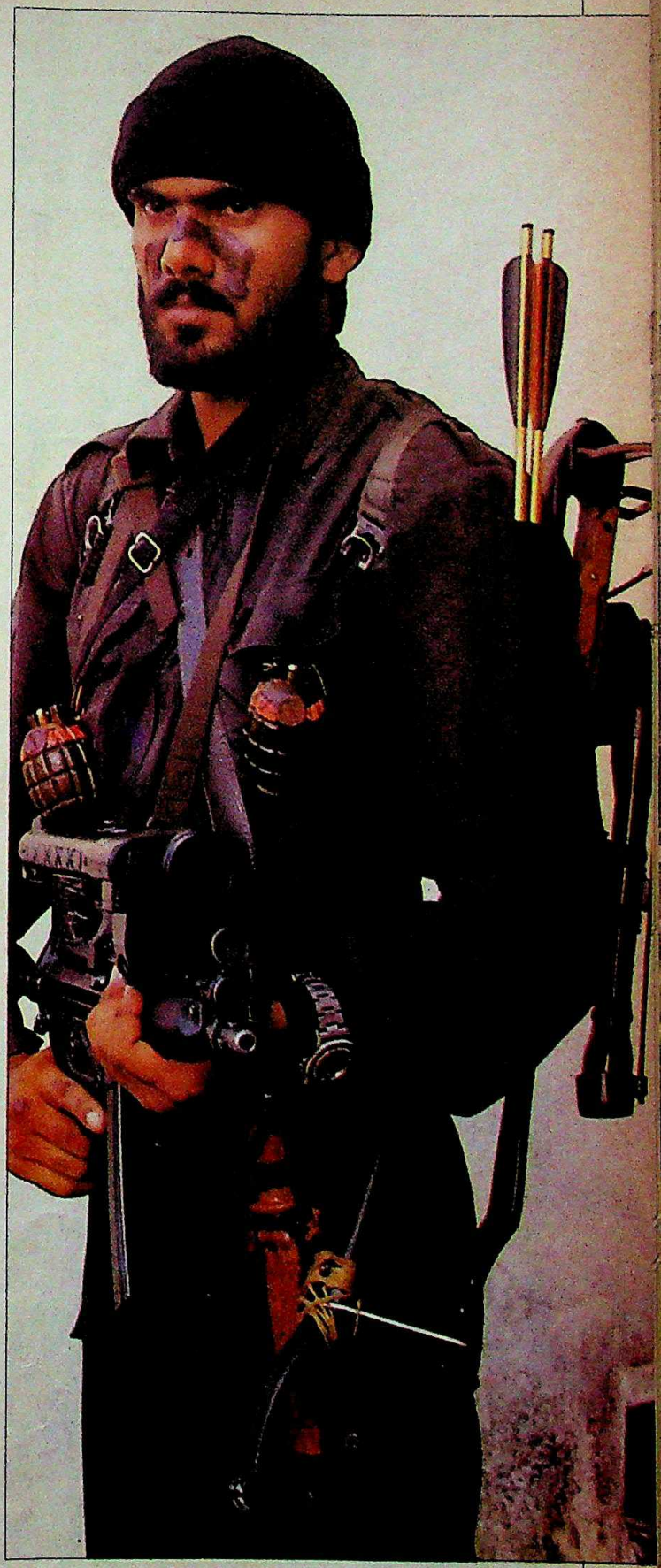

लड़ाई के लिए तैयार एक कमांडो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

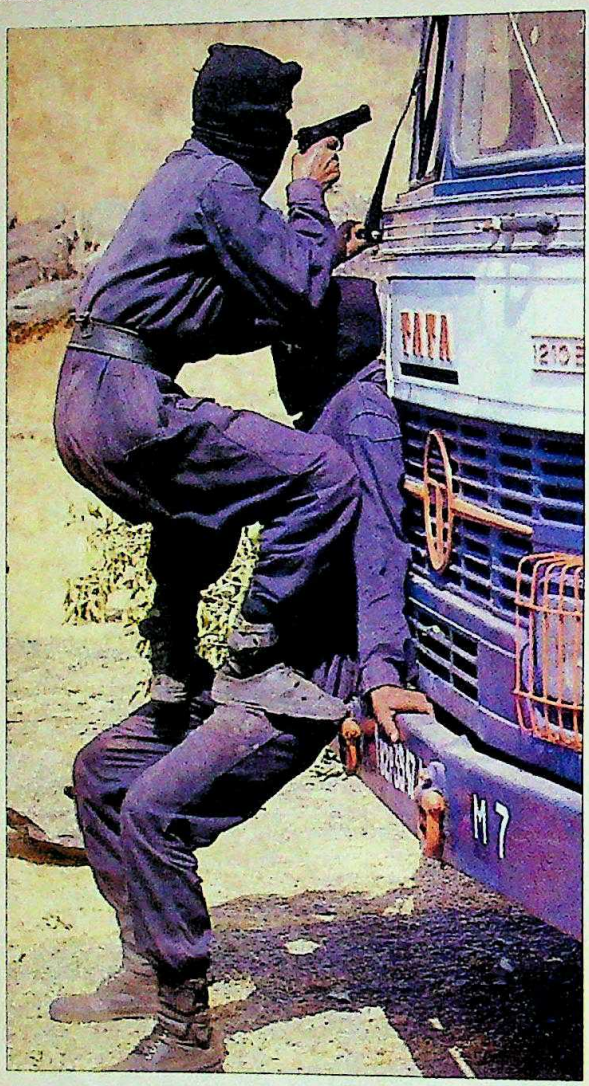

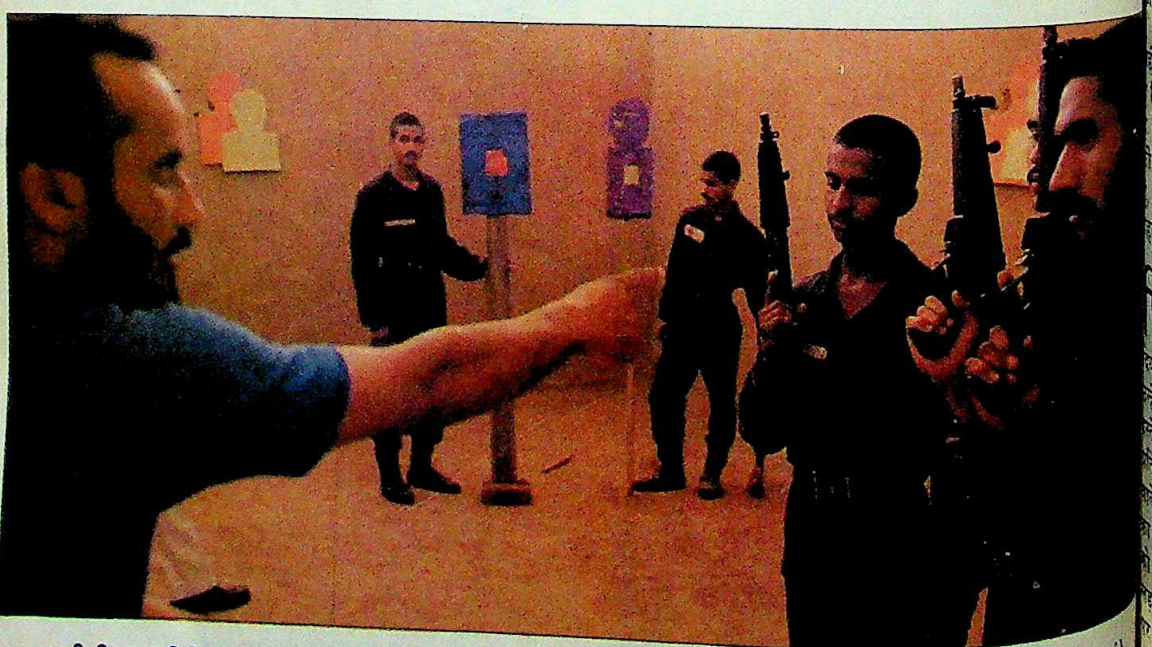

करीबी लड़ाई के दांवपेंच बताता एक अफसर; और एक अपहृत बस में उग्रवादियों से लड़ते कमांडो (ऊपर बाएं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

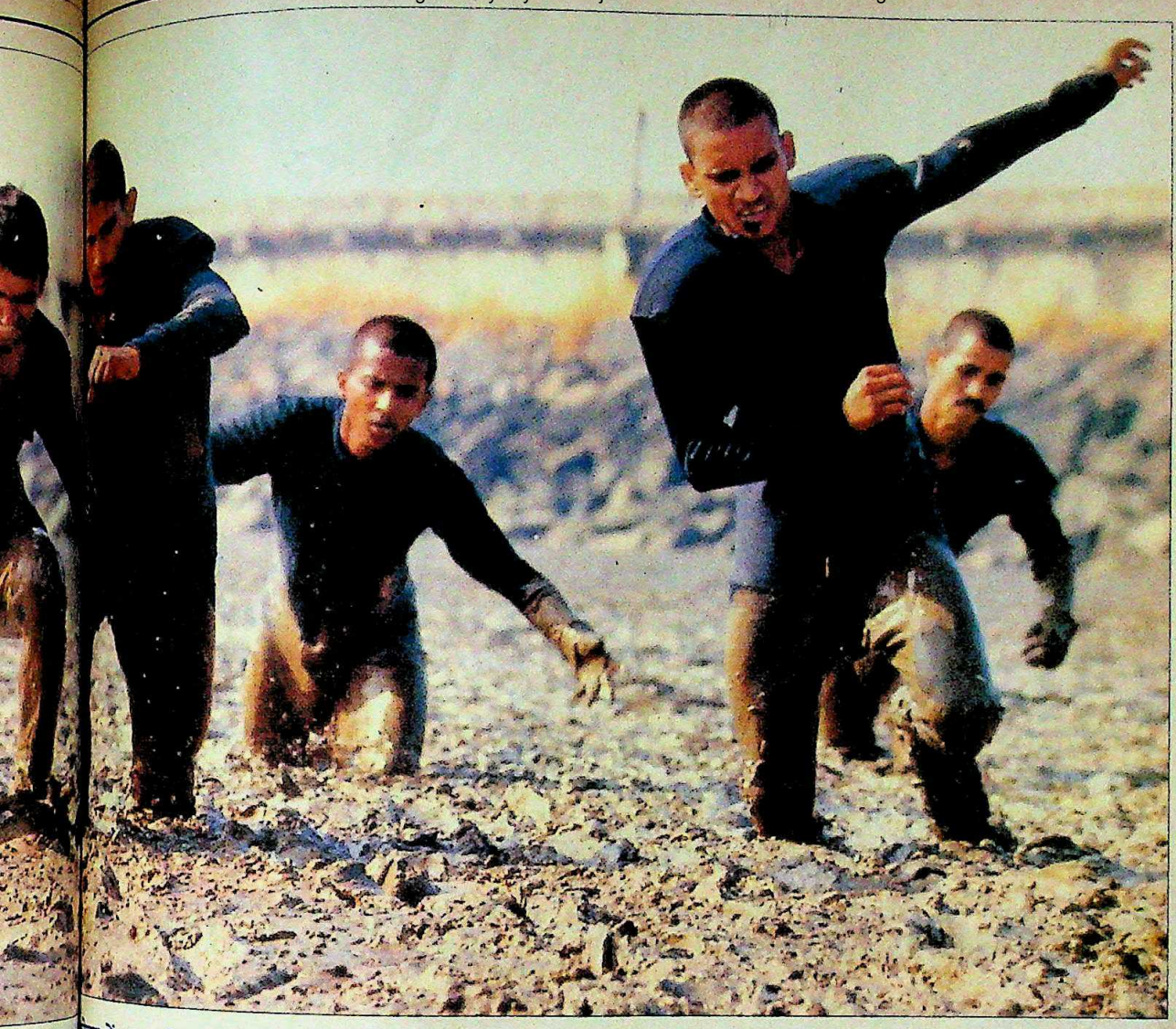

कीचड़ में 200 मीटर तक रेंगना बेहद यंत्रणादायक होता है, पर हौसले अगर बुलंद हों तो कोई मुश्किल नहीं

...ही नहीं, 200 मीटर तक कीचड़ में रेंगना भी सिखाया जाता ...जिसमें पहले 15 कदमों के बाद हर क्षण यंत्रणादायक होता ...लेफ्टिनेंट के.जी. विश्वनाथन, जो किसी रंगरूट के एक घंटे ...तुलना में इसे सिर्फ 22 मिनट में पूरा कर दिखाते हैं, कहते ...इसे पूरा करने के लिए आपको मानसिक रूप से भी तैयार ...पड़ता है.''

...र रंगरूटों को एमपी-5, एके-47, पीएसजी-1 स्नाइपर ...राइफल और अगड़ी कमान चलाने का प्रशिक्षण ...दिया जाता है. जो लोग 80 प्रतिशत सही निशाना लगाते हैं ...पास कर दिया जाता है. समुद्री प्रशिक्षण में 'चैरियट' का ...संभाल करना, समुद्रतट पर धावा बोलना और तटवर्ती ...ठिकानों पर हमला करना सिखाया जाता है. प्रशिक्षण देने ...अफसर लेफ्टिनेंट वी.पी.एस. रावत कहते हैं, ''हम लड़ाई ...वास्तविक माहौल बनाते हैं.'' प्रशिक्षणार्थियों को तस्वीरों ...समझने, खुफिया जानकारी इकट्ठा करने और छापामार ...लड़ाई का भी प्रशिक्षण दिया जाता है. प्रशिक्षण पूरा हो जाने ...उन्हें पहनने के लिए काले और सुनहरे रंग का 'मरीन कमांडो' बिल्ला दिया जाता है जिस पर कटार और लंगर के चिन्ह बने होते हैं. 'ऑपरेशन पवन' के वयोवृद्ध लेफ्टिनेंट के. धीर कहते हैं, ''हमारे लड़के प्रतिभाशाली हैं. जब हम दूसरों को साथ प्रशिक्षित करते हैं तो वे हमसे नई चीज सीखते हैं.''

एमसीएफ की दक्षता तो कसौटी पर भी कसी गई है. दरअसल, अपनी स्थापना के एक साल बाद ही इसे चुनौती का सामना करना पड़ा. इसके जवानों ने 'ऑपरेशन पवन' के दौरान जाफना और बट्टीकलोआ में तमिल मुक्ति चीतों के नियंत्रण वाले समुद्रतटों और जलमार्गों से सुरंगें हटाकर भारतीय सेना को आगे बढ़ने में बहुत मदद की थी. आजादी के बाद से जिन एमसीएफ के नौसैनिकों को महावीर चक्र पुरस्कार मिला उनमें ले. अरविंद सिंह भी हैं. और अस्तित्व में आने के महज पांच साल के भीतर ही एमसीएफ ने, जिसकी असली ताकत बेहद गोपनीय है, छह कार्रवाइयों में भाग लिया. इनमें 'ऑपरेशन कैक्टस' और वर्गीकृत 'ऑपरेशन जॉडियाक' शामिल हैं. नौसेना के उपाध्यक्ष वायस एडमिरल बी. गुहा कहते भी हैं, ''एमसीएफ ने नौसैनिक कार्रवाइयों और रणकौशल को महत्वपूर्ण आयाम दिया है.'' ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

But for Modern—the suiting th ma

For once-in-a-lifetime occasions. Traditional times touched with grandeur of Modern Suitings. A triumph of contemporary classics. In rich,

Modern Suitings Ltd.

AMADEUS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

g th makes love a 24 carat feeling.

colours. And fascinating weaves. Of Poly/Wool and other exciting blends.

Made to perfection. Here's to things created to celebrate life!

FOREVER MODERN

Megacorp/492/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊनी कपड़ों के ज़्यादा दिन चलने का राज़...

सिर्फ़ ईज़ी के पास.

क्या आप जानते हैं कि ऊनी कपड़ों को धोने के माध्यम पर ही ऊनी कपड़ों की ज़िंदगी निर्भर है?

साधारण डिटर्जेंट पाउडरों को ही लीजिए. यदि ऊनी कपड़ों की धुलाई पाउडरों से की जाए तो उन्हें नुकसान हो सकता है. पाउडर की कठोर धुलाई क्रिया नाज़ुक, मुलायम ऊन फ़िलामेंट को तोड़-मोड़ सकते हैं, उनकी गरमाहट घटा सकते हैं.

ईज़ी सुपर लिक्विड – ऊनी कपड़ों के लिए.

ईज़ी ही एकमात्र सुपर लिक्विड डिटर्जेंट है जो ऊनी कपड़ों को धोने के लिए ख़ासतौर से तैयार किया गया है.

इसकी कोमल सफ़ाई क्रिया ऊनी कपड़ों की अच्छी तरह धुलाई करती है. ऊन फ़िलामेंट को ज़रा भी नुकसान नहीं होता. इस प्रकार ऊनी कपड़े ज़्यादा दिन गरमाहट देते रहते हैं.

इतना ही नहीं, ईज़ी में मौजूद 'सॉफ़्टनर' ऊन फ़िलामेंट को ज़्यादा नर्म और फूला हुआ बनाता है जिससे गरमाहट भी बढ़ती है. तो अब यदि ऊनी कपड़ों को धोने का वक्त आए तो सिर्फ़ ईज़ी ही लीजिए. नर्म, मुलायम, सुरक्षित धुलाई करनेवाली ईज़ी.

CLARION/B-138/284/HIN

CC-0. In Public Domain. Pankul Rangri Collection, Nagpur

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलचाल की अंग्रेजी

सीखने और सिखाने की ललक

समाज में अपना रुतबा बढ़ाने से लेकर रोजगार पाने तक के लिए बोलचाल की अंग्रेजी सीखने की बढ़ती चाहत और मजबूरी, और अंग्रेजी सिखाने वालों की चांदी

—विजय क्रान्ति और राहुल पाठक

भारतीय समाज में अंग्रेजी के प्रति मोह और दासता का भाव तो दशकों से रहा है मगर अब यह और भी तीव्र हो गया है. रुतबे और 'तरक्की' के लिए अंग्रेजी सीखने की ललक अब एक आंदोलन का शक्ल ले चुकी है. यह आंदोलन रोजगार दफ्तर की लंबी कतारों में खड़े कस्बाई लड़कों, व्यापार और धंधे में ऊपर की सीढ़ियां जल्दी से जल्दी चढ़ने को लालायित दुकानदारों और किटी पार्टी में ढेर सारे गहनों और 'इंपोर्टिड' परफ्यूम की महक के बावजूद मुंह सिलकर बैठी सुंदरियों को

उनकी मन की मुरादें पूरी कराने को समर्पित है.

पूरे हिंदुस्तानी समाज को सपनों की रुपहली दुनिया में ले जाने को आमादा इस अभियान का संचालन दिल्ली, मेरठ, पुणे और त्रिचुर जैसे शहरों के एलआइजी फ्लैटों से लेकर पॉश कॉलोनियों को संगमरमरी भवनों से हो रहा है. बगल में 'रैपिडेक्स इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स' जैसी किताबें दबाए लोग सहमे-सहमे कदमों से सीढ़ियां चढ़ते हैं और गिट-पिट अंग्रेजी में बतियाते पूरी दुनिया को फतह कर लेने के इरादे से बाहर निकलते हैं.

इन्हीं में से एक हैं 22 वर्षीया सरिता सेठी. ठेठ पंजाबी मध्यमवर्गीय परिवार की, बीए पास सरिता इस सवाल पर शरमाकर मुंह फेर लेती हैं कि वे अंग्रेजी क्यों सीख रही हैं. उनकी ओर से उन्हीं की क्लास की एक लड़की शरारत भरे लहजे में जवाब देती है, "सर, हम बताते हैं. इसकी ना, अभी-अभी सगाई हुई है. इसके 'हैं-जी' ने कह दिया है कि जब तक तू अंग्रेजी बोलना नहीं सीख लेती तब तक मैं तेरे घर बारात नहीं लाऊंगा."

रेखाचित्र अजीत नैनन और अनिल शर्मा

शानदार साड़ी और तीखे परफ्यूम की वजह से अपनी अलग पहचान रखने वाली 28 वर्षीया श्रीमती भल्ला तो पतिभक्ति की एक आदर्श मिसाल हैं. उत्तरी दिल्ली के एक स्कूल में पिछले एक महीने से अंग्रेजी सीख रहीं यह ग्रेज्युएट देवी जी बताती हैं कि वह दरअसल अपने ग्यारहवीं फेल पति के 'बेहाफ' पर अंग्रेजी सीख रही हैं. 'माता राणी की किरपा' से उनके 33 वर्षीय पति राजेश भल्ला का 'गारमेंट एक्सपोर्ट' का बिजनेस काफी 'अक्सपैंड' हो गया है. अब आए दिन 'फारेन' की पार्टियों से भी वास्ता पड़ता रहता है. और थोड़ा-सा कुरेदने पर ही एक राज जाहिर करते हुए वे कहती हैं, "अब मैं दिन में क्लास में सीखती हूं और रात को हम दोनों इकट्ठे प्रैक्टिस करते हैं." इस 'प्रैक्टिस' का एक असर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त* उपहार
अधिक बचत
इंडिया टुडे की ओर से

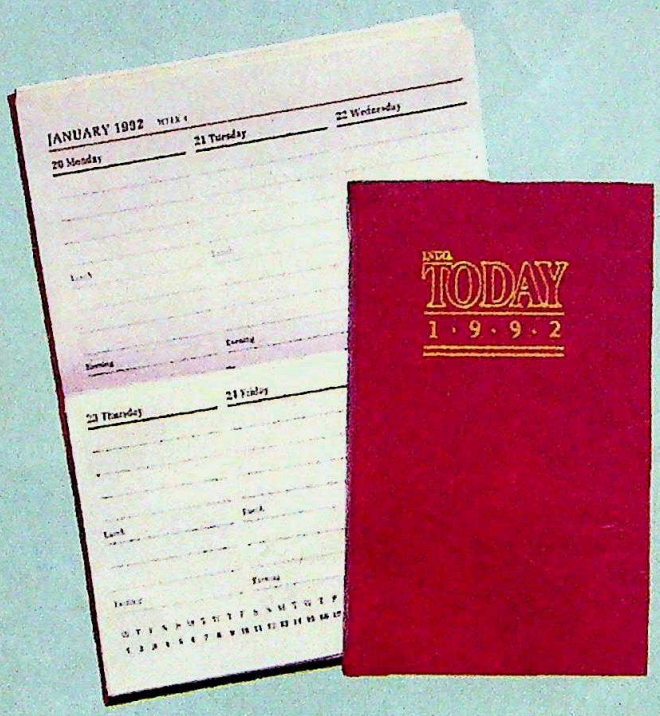

इंडिया टुडे की प्रति का मूल्य भले ही 11 रुपए हो गया है पर आप अपनी प्रति अभी भी 9 रुपए में पा सकते हैं। अभी से ग्राहक बनकर 2 रुपए प्रति बचाएं। और साथ में आपको मिले 49 रु. मूल्य की इंडिया टुडे पॉकेट डायरी बिल्कुल मुफ्त*।

इस विशेष पेशकश के लिए आपको देने होंगे :

इंडिया टुडे के वार्षिक ग्राहकी शुल्क के लिए 210 रु. और मुफ्त पॉकेट डायरी का प्रबंध और प्रेषण खर्च 15 रु.*।

इंडिया टुडे का ग्राहक बनने और मुफ्त* पॉकेट डायरी पाने के लिए आज ही रकम के साथ-साथ निम्नलिखित आर्डर फार्म भी डाक से रवाना करें।

ऑर्डर फार्म

हां। मैं विशेष उपहार पेशकश का लाभ उठाना चाहूंगा/गी। मैं (किसी एक खाने में निशान लगाएं)

☐ नया/नई ग्राहक हूं। कृपया इंडिया टुडे की मेरी वार्षिक ग्राहकी शुरू कर 1992 की मेरी मुफ्त* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी भेजें।

☐ वर्तमान ग्राहक हूं।** कृपया अगले साल तक इंडिया टुडे के लिए मेरी ग्राहकी का नवीकरण कर 1992 की मेरी मुफ्त* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी भेजें।

लिविंग मीडिया इंडिया लि. को देय मेरा ..... रु. का चेक/डीडी संख्या ..... दिनांक ..... संलग्न है।

नाम .....

पता .....

..... पिन .....

ग्राहक संख्या ..... (केवल ऐसे वर्तमान ग्राहकों के लिए जो ग्राहकी के नवीकरण के इच्छुक हैं।

कृपया ध्यान दें :

* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी का प्रबंध और प्रेषण खर्च अतिरिक्त 15 रु. प्रति।

** इस पेशकश के तहत ग्राहकी का नवीकरण कराने के इच्छुक वर्तमान ग्राहक अपना नाम और पता वही लिखें जो इंडिया टुडे की आपकी प्रति पर लगाए गए बाहरी कव्हर के लेबल पर चिपका होता है।

– राशि लिविंग मीडिया इंडिया लि. को देय रेखांकित चेक/डीडी द्वारा ही भेजें।

– यह पेशकश 31 दिसंबर 1991 तक उपलब्ध।

– दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता और मद्रास से भेजे गए चेक/ड्राफ्ट एम आई सी आर ही होने चाहिए।

– यह पेशकश और दरें भारत में ही लागू होंगी।

– ऑर्डर पूरा करने के लिए कृपया 6-8 हफ्तों का समय दें।

– ऑर्डर फार्म न होने पर ऑर्डर कृपया नाम, पते और भुगतान के साथ निम्नलिखित पते पर भेजें :

इंडिया टुडे (हिंदी)
पोस्ट बॉक्स नं. 114, नई दिल्ली-110 001.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह हुआ है कि आपके पूछने से पहले ही राजेश तपाक से हाथ मिलाते हुए कहेंगे, "माई सैल्फ रजेश पॅ-ल्ला."

लॉरेंस रोड पर 'इंग्लिश स्पीकिंग सेंटर' के प्रिंसिपल आनंद शर्मा 45 वर्षीया एक महिला के बारे में बताते हैं जो लंदन में अपने बेटे के यहां रहने जा रही थी. चार महीने में ही उसने पूरे आत्मविश्वास के साथ बोलचाल वाली अंग्रेजी का इस्तेमाल शुरू कर दिया. शर्मा बताते हैं, "सीखने के मामले में सबसे बड़ी बात तो सीखने वाले का अपना इरादा होता है. इन स्कूलों में आने वाले ज्यादातर लोग पहले से ही पक्का इरादा करके आते हैं."

इन स्कूलों के विद्यार्थियों में सांसद और गैर-अंग्रेजी देशों के राजनयिक भी हैं जिन्हें अंग्रेजी के बिना कैरियर की गली बंद दिखाई दे रही है. पूसा रोड समेत छह स्थानों पर चलने वाले ब्रिटिश स्कूल ऑफ लैंग्विज (बीएसएल) में दसवीं लोकसभा के चार सांसद अंग्रेजी सीख रहे हैं. स्कूल के संचालक और प्रिंसिपल एम.पी. सिंह बेदी बताते हैं कि उनके छात्रों में एक भूतपूर्व राष्ट्रपति और दर्जनों केंद्रीय मंत्री भी रह चुके हैं.

बाजार में 'फर्राटेदार' और 'बेअटक' अंग्रेजी सिखाने वाली दर्जनों किताबें और बीबीसी, लिंगुआफोन तथा अमेरिकन इंग्लिश के ऑडियो कैसेट भी मिलते हैं पर ठेठ हिंदुस्तानी माहौल में ठेठ हिंदुस्तानी अंग्रेजी सिखाने का काम स्कूलों में ही हो सकता है. सो, 'इंग्लिस-इस्पीकिंग-कोरसिज' चलाने वाले स्कूलों का धंधा खूब चल निकला है.

एक से चार महीने में ही 'कॉन्वेंट लेवल' की फर्राटेदार अंग्रेजी सिखाने का दावा करने वाले इन स्कूलों के हर तरह के संस्करण अब अपने बैनर और बोर्ड चमकाकर मैदान में उतर चुके हैं. अगर पूसा रोड, कनॉट प्लेस और साउथ एक्सटेंशन जैसे संभ्रांत इलाकों के बस स्टॉपों की पहचान इन स्कूलों के नाम से बन चुकी है तो यमुना पार की लक्ष्मी नगर और झील कुरंजा जैसी मध्यम और निम्न-मध्यमवर्गीय बस्तियों में भी रिक्शे के रेट इन्हीं 'मील के पत्थरों' से तय होते हैं.

हर उम्मीद और जेब की नाप पर तैयार किए गए इन स्कूलों का भीतरी वातावरण एलआइजी फ्लैट की बदबू और एयरकंडीशंड केबिनों के बीच वाला पूरा इंद्रधनुष पेश करता है. लेकिन इस अंतर के बावजूद हर स्कूल का लक्ष्य एक ही है: अंग्रेजी बोलने की उस कला में महारत दिलाना जिसके बिना आज हैसियत नहीं बन पाती. हिंदुस्तानी समाज में इस सेवा के लिए चढ़ावे की मात्रा भी हैसियत पर निर्भर करती है.

अगर बीएसएल में एक खास व्यावसायिक अंग्रेजी कोर्स की मासिक फीस तीन हजार रु. है तो लक्ष्मीनगर के सर्वोदय इंस्टीट्यूट में सिर्फ एक सौ रु. में ही अपनी मुराद पूरी की जा सकती है. और अगर कोई भक्त इससे भी कम खर्च करना चाहे तो किसी एलआइजी फ्लैट में चलने वाले टाइपिंग 'कॉलेज' के मास्टर जी से वह सिर्फ पचास

मेरा पहला पाठ

ताकि 'इस्कोप' बने

जमाना बदल रहा है. भले ही पार्टी में जाना हो या नौकरी के लिए इंटरव्यू देना हो. यहां तक कि बस स्टॉप पर किसी से 'टैम' भी पूछना हो तो अंग्रेजी के बिना बात नहीं बनती. अंग्रेजी न बोलो तो लोग मानने को ही तैयार नहीं होते कि आप भी पढ़े-लिखे हैं, इंटेलिजेंट हैं. बस यही वजह है कि मैंने अंग्रेजी सीखने के लिए यह इंस्टीट्यूट 'ज्वैन' किया है.

इरादा किया तो 'फर्राटेदार' अंग्रेजी सिखाने वाला वह बैनर याद आया जो हर रोज बस में दिखाई देता था. प्रिंसिपल-सर खुद बैठे मिल गए. प्रॉपर्टी के धंधे और कंप्यूटर से लेकर आईएएस की कंपीटीशन क्लासों के लिए

मशहूर सर बहुत मिलनसार निकले. पान की पीक को मुंह में सहेजते हुए जब उन्होंने चार महीने में ही 'इंग्लिस-इस्पीकिंग' की 'फुलम-फुल गिरंटी' और तसल्ली न होने पर 'सारे का सारा रिफंड वापस' करने का आश्वासन मेरे हाथ में थमाया तो दिलासा हुई. सौ रु. के रेट पर सौदा महंगा नहीं था.

ज्ञान के इस मंदिर में मेरे जैसे बीस भक्त और भी हैं. 'कार-मैट्स, बेचने वाले बुजुर्ग सरदार जी भी हैं जो तीन महीने बाद अमेरिका में अपने बेटे और पोतों के पास रहने जा रहे हैं. नीचे खड़ी मारुति कार पर उन्हीं के प्यारे पोतों के नाम छपे हुए हैं: "T-2 & B-2 दी गड्डी." कम-से-कम चार ऐसी खुशबूदार देवियां हैं जिनके 'हसबैंड जी' बड़े बिजनेसमैन हो गए हैं. वे अपनी 'किटियों' में 'सोशलिस्टिंग' करने के लिए अंग्रेजी सीख रही हैं. एक बातूनी सेल्समैन भी है जिस बेचारे की 'परमोशन' अंग्रेजी में 'हाथ तंग' होने की वजह से रुकी हुई है. लेकिन उसके बारे में क्लास की सबसे सुंदर लड़की नीना को शिकायत रहती है कि वह हर मामले में अपनी 'इंपोर्टेंस' दिखाता फिरता है. कुछ स्कूली लड़के भी हैं जिनके थ्रू अपनी ड्राइंग-रूम वैल्यू बढ़ाने के लिए उनके मां-बाप ने उन्हें यहां दाखिल कराया है.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रु. में भी वही सब हासिल कर सकता है. अकेले दिल्ली शहर में ही ऐसे लगभग डेढ़ सौ स्कूल और इंस्टीट्यूट हैं जबकि टाइपिंग कॉलेजों की संख्या एक हजार से ऊपर है. इन स्कूलों में अंग्रेजी सीखने वालों की गिनती 25 हजार से ऊपर ही रहती है.

बिना हींग फिटकरी लगाए धंधा चमकाने वालों ने अंग्रेजी स्कूल खोलने की इस नई कला का आविष्कार किया है. सरकारी स्कूलों की नीलामी से खरीदी गई बेंचों के अलावा स्कूल के लिए बस एक कमरे की ही दरकार होती है. यमुना पार के एक स्कूल में लगभग दो सौ लोगों को पढ़ाने के लिए पांच 'मास्टर' रखे गए हैं. इनमें से दो सरकारी स्टेनोग्राफर हैं, एक एमए का विद्यार्थी है और दो सरकारी अध्यापक हैं. अगर हर महीने डेढ़ हजार रु. की यह 'एक्स्ट्रा इनकम' 'मास्टर जी' की जिंदगी में रंग भर सकती है तो स्कूल के मालिक के लिए दस-बारह हजार रु. भी कम आकर्षक नहीं है. और एलआइजी फ्लैट में चलने वाले टाइपिंग कॉलेज में तो जरूरत ही नहीं रहती. 'मास्टर' रखने की छह-छह टाइपराइटरों की खट-खट वाले अंधियारे कमरे के एक कोने में 'स्टेनोग्राफी-सर' खुद ही चार बैच में 15-20 छात्रों से सात-आठ सौ से ऊपर कमाई कर लेते हैं.

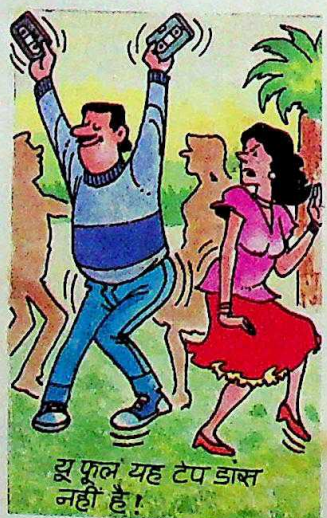

एक नई सामाजिक क्रांति के पहरुए और परचमधारी इन स्कूलों ने एक नई पीढ़ी को भविष्य के प्रति नई आशा दी है तो पुरानी पीढ़ी को अपने सपने साकार करने का रास्ता भी दिखाया है.

बिना अंग्रेजी बीकॉम पास करने वाले मेरठ के विनीत गोयल को पूरी उम्मीद है कि दिल्ली के किसी स्कूल से अंग्रेजी सीखने के बाद एक रेयाने कंपनी में अफसर उसके अंकल उसे सेल्समैन बनवा देंगे. और दिल्ली की गुरुनानक मार्किट में ट्रक-पार्ट्स में 52 वर्षीय सप्लायर चावला बताते हैं कि अंग्रेजी सीखने से पहले वे यही समझते थे कि फौज के कमीशंड अफसर का मतलब होता है कि उन्हें कमीशन खाने की सरकारी इजाजत है. और फिर एक व्यापारिक राज जाहिर करते हुए वे कहते हैं, 'दीज़ अफसर्स आर वेरी उस्ताद यू नो. यू कांट पटाओ देम विदोट अंग्रेजी, परा-जी.''

समृद्धि की देवी को पटाने और सामाजिक खाइयों को पाटने का यह काम अंग्रेजी देवी की ही बदौलत हो रहा है.

राम अवतार गुप्ता

बड़े-बड़ों से बड़े

एक अनाम लेखक की 'रैपिडेक्स इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स' ने वह कर दिखाया है जो बड़े-बड़े लेखक नहीं कर पाए. ऐसा लगता है कि अंग्रेजी सीखकर समाज और धंधे में नई उंचाइयां छूने को उतावली नई पीढ़ी ने 45 रुपए कीमत वाली इस किताब को अपने धर्मग्रंथ के तौर पर अपना लिया है. हिंदी से शुरू होकर 14 भारतीय भाषाओं में छप चुकी इस किताब की कम-से-कम एक करोड़ प्रतियां बिक चुकी हैं और अपने प्रकाशक 48 वर्षीय राम अवतार गुप्ता की जेब में तकरीबन दस करोड़ रु. का मुनाफा डाल चुकी हैं.

गुप्ता को इसका नुस्खा अपने पिता की दुकान से मिला जहां 'दस रु. में मैट्रिक पास' और 'हिंदी-अंग्रेजी बोलचाल' जैसी किताबें धड़ल्ले से बिकती थीं. 1976 में उनकी रैपिडेक्स के पहले तीन संस्करण हाथोंहाथ बिक गए. इसके बीसियों संस्करण दूसरी भाषाओं में और 151 संस्करण हिंदी में निकल चुके हैं.

उनकी इस सफलता ने 'स्पीडली', 'स्पीडैक्स', 'सिंपलेस्ट' जैसे चोरी-छिपे छपने वाले संस्करणों को भी बढ़ावा दिया है. वे बताते हैं कि इन संस्करणों के बारे में तो वे कुछ नहीं कर पाए पर बाकी संस्करणों में बार-बार बदलाव करके चोर संस्करणों पर नकेल डाले हुए हैं. हाल ही में तेलुगु में छपे ऐसे एक संस्करण से निबटने के लिए उन्होंने पूरी किताब को दोहरे रंग में छाप डाला और टीवी पर 9 लाख रु. का विज्ञापन भी दे दिया. गुप्ता के अनुसार, "बेचारे प्रकाशक का अपना पैसा भी डूब गया."

किताब की एक खासियत उसमें व्याकरण के अलावा रोजमर्रा के इस्तेमाल के वाक्य और चिट्ठी-पत्री भी हैं. 'चुल्लू भर पानी में डूब मरो,' 'भाड़ में जाओ,' जैसे गुस्से के इजहार के अलावा प्रेमिका और मकान मालिक के नाम पत्र लिखने या फिर वैवाहिक विज्ञापन लिखने की कलाएं भी इस छप्पन भोग में शामिल हैं. और एक ही हाथ में पूरे हिंदुस्तान को अंग्रेज बनाने के इस अति उत्साह में टैक्सी ड्राइवर और कुली के साथ अंग्रेजी में बात करने के पैकेट भी प्रकाशक ने परोस दिए हैं.

—विजय कालिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषों के लिए आधुनिक घड़ी, जिसके मेन डायल पर है एक अनोखा सेकन्ड डायल. Rs. 1150*

टाइटन की क्लासीक. बारीक पसन्द की पहचान.

हीरे और मोती का फ़र्क तो सबको नज़र आता है. पर हीरों में कोहिनूर की पहचान के लिए चाहिए नज़र की बारीकी.

वो नज़र जो स्वयं टिक जाती है टाइटन की क्लासीक पर. घड़ियों का एक ख़ज़ाना जिसमें १८ और २३ कैरेट गोल्ड प्लेटिंग की दोहरी परत के रूप को उभारता है शानदार लैदर स्ट्रैप. और आपको मिलती हैं शानदार घड़ियाँ जिनमें झलकता है पुराना राजसी अन्दाज़ या आधुनिक शान-शौकत.

टाइटन की क्लासीक एक पसन्द है ४०० से ज़्यादा अन्तर्राष्ट्रीय क्वॉर्ट्ज़ घड़ियों के खज़ाने से. हर घड़ी के साथ आपको मिलेगा टाटा के नाम का भरोसा और २ साल की गारण्टी.

टाइटन की क्लासीक. फ़र्क शान का. बारीक पहचान का.

Classique

Rs. 944* Rs. 944* Rs. 908* Rs. 835* Rs. 835*

TITAN
QUARTZ
The Changing Face Of Time

* दिल्ली में लागू सभी कर इस क़ीमत में शामिल हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्काद स्की रिज़ॉर्ट

स्विटज़रलैंड

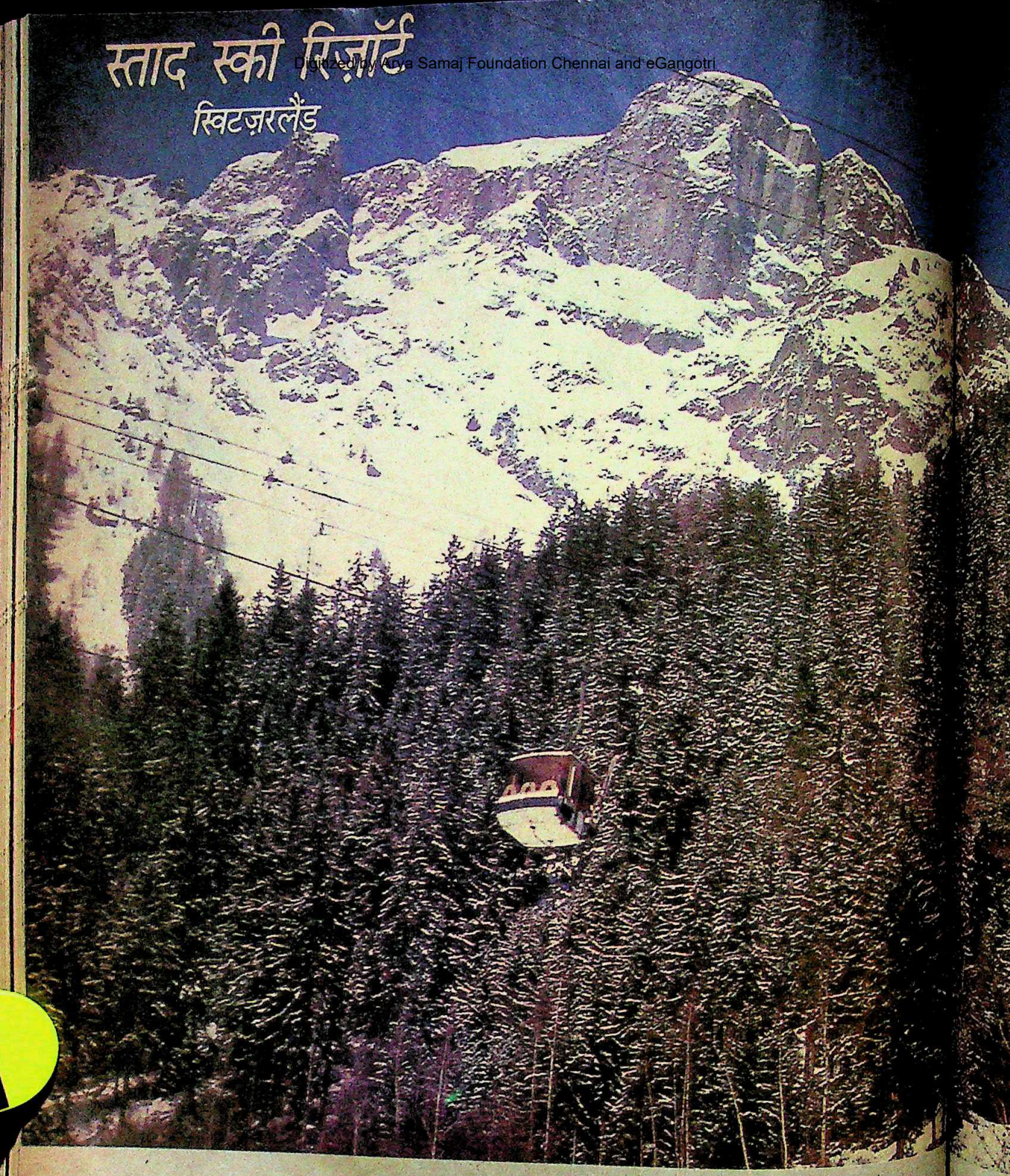

बर्फ पर स्कीज़ की सरसराहट, बड़ी निपुणता से की 'क्रिस्टी' का मनमोहक अंदाज़, नीला आकाश। कोनियेक और जलती आग की अनूठी गर्माहट।

और आप हर तरह निश्चिंत हैं, रंग में हैं... दिग्जैम के साथ।

दिग्जैम यूरोप और विश्व के कई अन्य भागों को बड़ी मात्रा में सूटिंग्स निर्यात करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

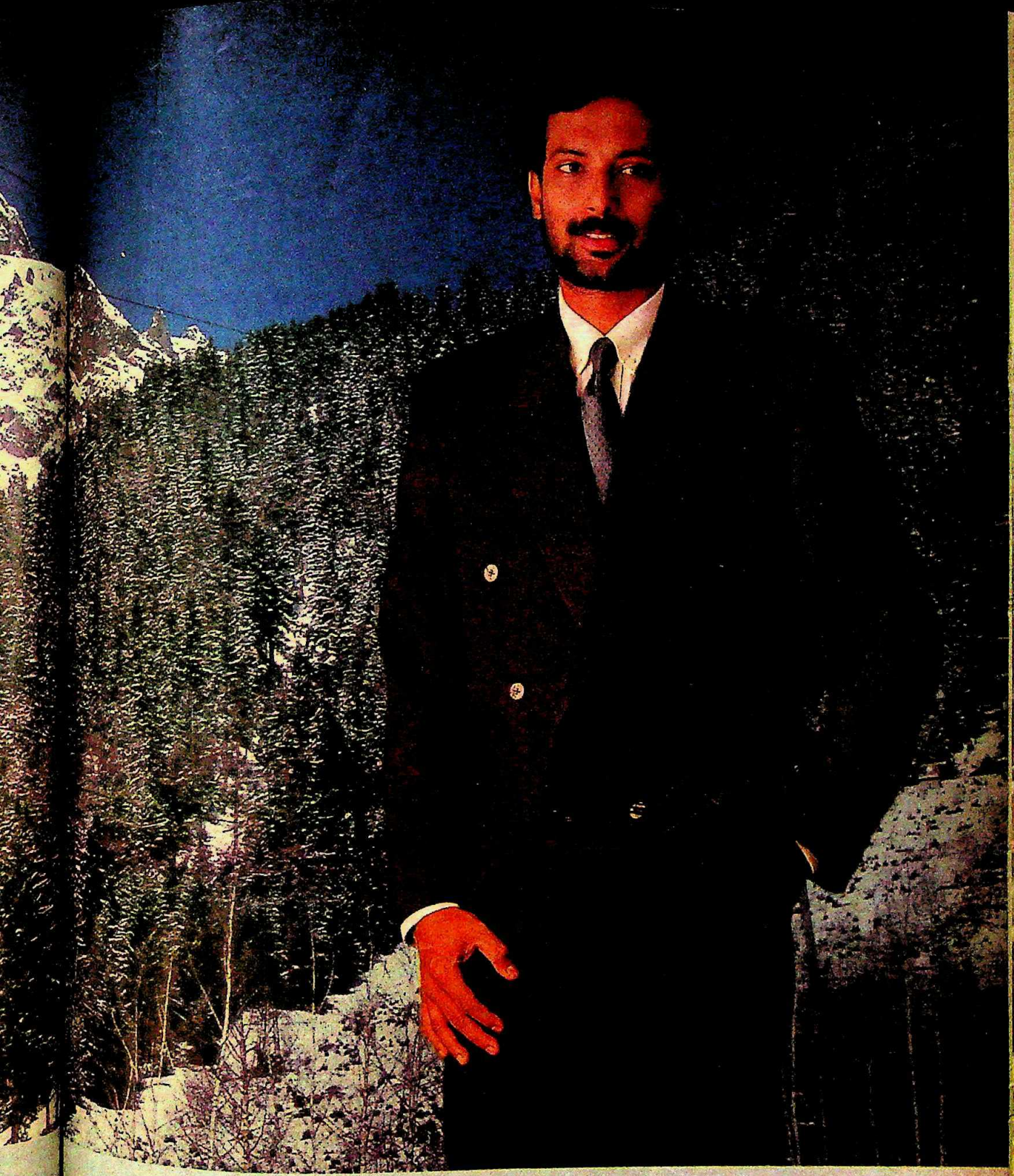

DIGJAM

फैशन के कदरदानों की पहली पसंद

वी एक्स एल इंडिया लि. का उत्पाद

SUMANGAL और अन्य प्रमुख स्टोर्स में उपलब्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉकिन्स डीलर्स

दिल्ली

चांदनी चौक भगवान दास जगन्नाथ, ६३३, कूचा नटवां के सामने • **बुध सिंह एंड संस**, १८५४, चांदनी चौक • **फतेहपुरी** रघुवीर दयाल एंड संस, ६५०४, फतेहपुरी • **गांधी नगर** लंडामल कृष्ण लाल, ४१३/१, गांधी नगर • **कमला नगर** क्रॉकरी एम्पोरियम, दुकान नं. ११-एफ • **करोल बाग** विशाल बर्तन भंडार, २५६८, अजमत खां रोड • **कोटला मुबारकपुर** भगवान दास अग्रवाल, ४८२/१, सुभाष मार्केट • **कृष्ण नगर** श्री कृष्ण बर्तन स्टोर, डी-४/१, लाल क्वार्टर मार्केट • **लाजपत नगर** नेशनल बर्तन भंडार, ३४, सेंट्रल मार्केट • **मोती नगर** भूटानी बर्तन स्टोर, मेन मार्केट • **सदर बाज़ार** गोवरसंस, ३१०, निरंजन एस्टेट, प्रताप मार्केट • **सरोजिनी नगर** पंजाब बर्तन स्टोर, ६४, बाबू मार्केट • सानकला बर्तन स्टोर, ३, बाबू मार्केट • वंदना, ९३, मेन मार्केट • **सब्ज़ी मंडी** क्रॉकरी एंड एलाइड स्टोर, १५३५, चंद्रावल रोड • त्रिनगर जैन इलेक्ट्रॉनिक्स, १५३२, लोता राम बाज़ार • यूसुफ सराय जैन पुटींसिल्स, १५/२, मंदिर वाली गली • तख्ती हाउस होल्ड एम्पोरियम, ७४/२, यूसुफ सराय • मुनी लाल बिशन स्वरूप, ७२/६, यूसुफ सराय • राम किशन एंड संस, ७२/७, यूसुफ सराय

आंध्र प्रदेश

भीमावरम : रत्नम एंटरप्राइज़ेस, पी.पी. रोड ☐ **गुंटुर** : **बॉडीमेट** राज्यलक्ष्मी स्टील हाउस, ४/१ लेन • **मेन रोड** मट्टुपल्ली साबमूर्ती, अरंडलपेठ ☐ **हनुमाकोंडा** : **मेन रोड** रमेश स्टील पैलेस, पुलिस स्टेशन के पास ☐ **हैदराबाद** : **अमीरपेठ** महावीर स्टील पैलेस, सत्यम थिएटर रोड • **मेट्रो एस्टेट** विशाल होम अप्लायंसेस, अबीद रोड • **नामपल्ली स्टेशन रोड** अंजली इलेक्ट्रॉनिक्स, होटेल अप्सरा के पास • स्टील पैलेस, होटेल काकतिया के पास • **नारायणगुडा** सिटी एम्पोरियम, पुलिस क्वार्टर्स के पास • **सुल्तान बाज़ार** बलीराम श्रियाराम, वेजिटेबल मार्केट के पास ☐ **काकिनाडा** : **मेन रोड** गुप्ता एम्पोरियम, सूर्यराव पेठ ☐ **कर्नूल** : **पार्क रोड** आंध्र किचनवेयर्स ☐ **महबूबनगर** : **रायचूर रोड** न्यू गुप्ता ट्रेडर्स ☐ **राजामंड्री** : **फोर्ट गेट के पास** आंध्र मशीन एजेंसीज़ ☐ **सिकंदराबाद** : **राष्ट्रपती रोड** सकीनाला स्टील पैलेस, बाटा के सामने • डेक्कन आयर्न वर्क्स ☐ **विजयवाड़ा** : **कालेश्वर राव स्ट्रीट** श्री सत्यनारायण मेटल्स • **कोतगुल्ल** श्री वेंकटेश्वरा मेटल हाउस, शेषैया स्ट्रीट • **प्रकाशम रोड** ज्योति मेटल्स, गवर्नरपेठ ☐ **विशाखापट्टनम** : **मेन रोड** बॉम्बे गैस लाइट स्टोर्स, कोत रोड के पास.

अरुणाचल प्रदेश

पासीघाट : **गांधी मार्केट** अरुणाचल इलेक्ट्रिकल्स.

असम

डिब्रूगढ़ : **एच.एस. रोड** वर्मा क्रॉकरी स्टोर्स • **न्यू मार्केट** एस. दत्त एंड कं. ☐ **गुवाहाटी** : **एस.आर.सी.बी. रोड** आर. चंपकलाल (असम) एंड कं. • श्याम मेटल स्टोर्स ☐ **नलबारी** : **एन.टी. रोड** मारुती इलेक्ट्रॉनिक्स ☐ **शिवसागर** : **अस्पताल रोड** अनामिका स्टोर्स • **जे.पी. अग्रवाल पथ** हनुमान बक्स प्रदीप कुमार • **टॅक्सल रोड** चिमनलाल अग्रवाल ☐ **सिलचर** : एन.एस. एक्वेन्यू रवि प्रकाश आनंद एंड कं. ☐ **तीनसुकिया** : **डेली बाज़ार** नज़ीर अहमद एंड संस • **जी.एन.बी. रोड** रवि प्रकाश आनंद एंड कं.

बिहार

बेगुसराय : **के.एन. मार्केट** बिहार कमर्शियल एजेंसी, दुकान नं. १ • **मेन रोड** देव बर्दर्स ☐ **भागलपुर** : **डी.एन. सिंह रोड** डोकानिया एंड संस • लाइट सेंटर • मेला स्टोर्स ☐ **बोकारो स्टील सिटी** : **सेक्टर-४** आम्रपाली, ई-४, सिटी सेंटर • बॉम्बे वेरायटी स्टोर्स, ई-१३, सिटी सेंटर ☐ **चाइबासा** : **सदर बाज़ार** के.सी. पाल एंड बर्दर्स ☐ **दरभंगा** : **सुभाष चौक** बाबा स्टील हाउस ☐ **डेहरीओन सोन** : **सिनेमा रोड** ग्लासीना • सहेली ☐ **देवगढ़** : **श्यामगंज रोड** बैद्यनाथ इलेक्ट्रिक स्टोर्स ☐ **गया** : **जी.बी. रोड** पप्पू ट्रेडिंग क., गोल पत्थर ☐ **जमशेदपुर** : **साकची बाज़ार** बिंदेश्वरी प्रसाद अनंत प्रसाद, डालडा लाइन • कुकर हाउस, २५, ओल्ड आलू लाइन, पान मार्केट • नील कमल स्टील सेंटर, २४, ओल्ड आलू लाइन, पान मार्केट ☐ **कटिहार** : **मंगल बाज़ार** भौमिक बर्दर्स • **शाह कटरा** रूप रंग, न्यू मार्केट रोड ☐ **खगड़िया** : **मिल रोड** श्याम इलेक्ट्रिकल्स ☐ **मोतीहारी** : **मेन रोड** दुलन ज्वेलरी एंड स्टील हाउस • स्टील कॉर्नर

"देखो, मेरा अपना छोटा-सा हॉकिन्स"

हॉकिन्स के निर्माताओं द्वारा हाल ही में पेश किया गया छोटा हॉकिन्स एकदम सही-सही, उत्कृष्ट इंजीनियरिंग तकनीक से निर्मित, विश्व प्रसिद्ध हॉकिन्स यूनिवर्सल प्रेशर कुकर का खिलौना मॉडल है. बॉडी का व्यास ५.४ से.मी. असली कुकर के समान इसकी बनावट में भी शामिल हैं - दर्पण जैसी चमकदार धातु की बॉडी और ऐसा ढक्कन जिसे बिलकुल असली हॉकिन्स की तरह खोला और बंद किया जा सकता है, निकल सकनेवाला गास्केट, चार अलग-अलग रिवेट, सब सही पैमाने पर बने. ख़ास अपने छोटे-से डिब्बे में बंद मिलता है. छोटा हॉकिन्स चार वर्ष से बड़े बच्चों के लिए सुरक्षित और शिक्षाप्रद खिलौना है. यह बड़ों को भी आनंद और मनोरंजन प्रदान करता है, और रोचक चर्चा का अनूठा विषय बनता है. अधिकतम फुटकर मूल्यः रु. ७५. सूची में दर्ज विक्रेताओं व अन्य के पास उपलब्ध. कोई कठिनाई हो तो यहां लिखें:

हॉकिन्स, विभाग क्र. ६२, पी.ओ. बॉक्स १६०८३, माहिम, बम्बई ४०० ०१६.

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा

हॉकिन्स®

१ करोड़ से ज़्यादा प्रेशर कुकर बिके हैं

१९९१ कॉपीराइट आरक्षित

☐ **मुंगेर** : **चौक महेन्द्र** इलेक्ट्रिक स्टोर्स • टाउन हाल रोड जालान ट्रेडर्स ☐ **मुज़फ़्फ़रपुर** : **सरैयागंज** बिजराजका स्टील हाउस ☐ **पटना** : **बोरिंग रोड** एच.सी. एंटरप्राइज़ेस, नेपाली कोठी • **मुरावपुर** स्टील कॉर्नर, बांकीपुर पोस्ट ऑफ़िस के सामने • **न्यू मार्केट** साहनी इलेक्ट्रिकल्स ☐ **पुर्णिया** : **मद्दा बाज़ार** लखन लाल एंड कं ☐ **रांची** : **मेन रोड** कैलाश क्रॉकरी हाउस • दि रांची मोटर एंड साइकिल स्टोर्स, बाटा की दुकान के पास • उदयन • उजाला • उदय एजेंसीज़, खजांची मार्केट ☐ **रक्सौल** : **बैंक रोड** पवन जनरल स्टोर्स ☐ **सीतामढ़ी** : **मेन रोड** श्री चंद्रिका स्टोर्स ☐ **सिवान** : **नया बाज़ार** न्यू आशा स्टोर्स, दरबार मार्केट,

चण्डीगढ़

सेक्टर १५ डी इंडियन क्रॉकरी हाउस, दुकान नं. ४५ • **सेक्टर १७ई** जगत सिंह एंड संस, एस.सी.एफ. ३२

गोवा

मापसा : रामचंद्र बिल्डिंग मयुर एजेंसीज़, १७, रामचंद्र बिल्डिंग ☐ **मडगांव** : **न्यू मार्केट** डी.डी. सडेकर एंड संस, १०, न्यू मार्केट • **नगर पालिका के सामने** टी.डी. परोडकर • **स्टेशन रोड** टी.ए. हजारे एंड संस ☐ **पणजी** : **आज़ाद मैदान के सामने** एस.टी. पोकले एंड संस ☐ **पोंडा** : शांता इलेक्ट्रिक स्टोर्स ☐ **वास्को** : **डोराडो बिल्डिंग** बरकत अली ट्रेडर्स.

गुजरात

बड़ौदा : **एम.जी. रोड** कंसारा बापूलाल रणछोडजी.

हरियाणा

हिसार : **मोती बाज़ार** केवल कृष्ण इंद्र सैन ☐ **जगाधरी** : **मनोहर नगर** ओ.पी. मेटल इंडस्ट्रीज़ ☐ **रोहतक** : **रेलवे रोड** प्रकाश क्रॉकरी हाउस ☐ **सिरसा** : **रोड़ी बाज़ार** अग्रवाल बर्तन भंडार

हिमाचल प्रदेश

कुल्लू : अत्ताड़ा बाज़ार विग्मन जनरल स्टोर

जम्मू और कश्मीर

जम्मू : न्यू मार्केट लाभु मल देस राज जैन न्यू मार्केट

कर्नाटक

बंगलोर : **एक्वेन्यू रोड** बी.एस. एजेंसीज़, ३८९, **रोड** • **ब्रिगेड रोड** पंट्स एंड पेन्स, ११, **ब्रिगेड रोड** • **बी.बी.के. अयैंगार रोड** महेश इलेक्ट्रिकल्स, १९, बी.बी.के. अयैंगार रोड • **चिकपेट** राजा ट्रेडिंग क., ८०२, बालेपेट स्क्वेयर के पास • रम्मी सीज़ ३८, चिकपेट • **जयनगर** सारथी, १६, ९ वा मेन, ३ ब्लॉक • **शिवाजी नगर** ऐडम्स एंड कं. ११, सिल्वर स्क्वेयर ☐ **बेलगांव** : मारुती गली रेवण्णा इलेक्ट्रिकल्स, राम प्रसाद बिल्डिंग्स ☐ **चिकमगलूर** : **रत्नागिरी रोड** मल्टी एंटरप्राइज़ेस, पी.बी.नं. ८ ☐ **हासन** : **सुभाष स्क्वेयर** नॉवेल्टी हाउस ☐ **मैसूर** : **अशोका रोड** अरुणोदय, १५/१, **अशोक रोड** ☐ **शिवमोग्गा** : **नेहरू रोड** साधना ट्रेडिंग कं. ☐ **जुबली के.एम. मार्ग** हर्षा.

नेपाल

काठमांडू : **पर्मेल मानू ट्रेडिंग**, १६७८, **पर्मेल**

केरला

अलेप्पी : सी.सी.एन.बी. रोड गुड मॉर्निंग एजेंसीज़ • **मुलक्कल** भीमा स्टेनलेस स्टील एंड स्टील इंडस्ट्रीज़ ☐ **अल्वाय** : **कैथलिक सेंटर** वायरलेस मेट्टू ☐ **कालिकट** बाइट मेटल्स, मुतलकुलम • पंकज डिस्ट्रिब्यूटर्स, एस.एम. स्ट्रीट ☐ **कन्नूर** : स्टेनलेस स्टील मेन कैम्प बाज़ार • गृहलक्ष्मी, एस.एन. पार्क रोड ☐ **एरनाकुलम** : **बॉडवे** ऐथनी फ्रांसिस एंड सन • **मट्टनचेरी**, क्रॉकरीज़, केरला वक्फ़ बोर्ड बिल्डिंग • **पलारीवट्टम** जंक्शन शांति वेलस्त्र • **टी.डी. रोड** (नॉर्थ) हॉस्पिटल सर्विसेस ☐ **इरिंजालकुडा** : **बिना बाइपास** इलेक्ट्रिकल्स एजेंसीज़, वेल्लानीकारन बिल्डिंग ☐ **कोट्टायम** : **के.के. रोड** केम्प एजेंसीज़, एल.डी. कलेक्टर सेंटर • **पुलीमूड जंक्शन** भुवना मेटल मार्ट • **तेल्लिचेरी** ऐथनीज़ ☐ **माही** : कर्मा एंटरप्राइज़ेस, मेन रोड • **मुल्लरकट्टु** के सामने श्रीलेख एजेंसीज़, मेन रोड ☐ **मुल्लरकट्टु** न्यू बाज़ार मिनी स्टोर्स ☐ **पालघाट** : स्टील पैलेस, जी.बी. रोड ☐ **पत्तनमतिट्टा** : **प्राइवेट बस स्टैंड** ट्रेडर्स ☐ **पेरुंबवूर** : ए.एम. रोड विट्टायिलेत्त एजेंसीज़, बेजिटेबल मार्केट के पास ☐ **कोइलॉन** : **मेन रोड** बर्दर्स स्टील हाउस, सुलतानिया बिल्डिंग ☐ **तलश्शेरी** नारंगपुरम कृष्णा इलेक्ट्रॉनिक्स, ए.वी.के. नायर रोड ☐ **तोडुपुझा** : **मेन रोड** मण्णूर बर्दर्स • **थाना** स्टील कॉम्प्लेक्स सेंट पीटर्स एजेंसीज़, द्वारा अलप्पाट ट्रेडर्स ☐ **त्रिचूर** : **पोस्ट ऑफ़िस रोड** हनीफ़ ट्रेडर्स बिल्डिंग • स्टीलालयम, हेड पोस्ट ऑफ़िस के सामने • राउंड साउथ केरला लेदर कं., गवर्नमेंट हॉस्पिटल के पास ☐ **त्रिवेंद्रम** : **चाला बाज़ार** एस. इब्राहिम एंड सं. इब्राहिम बिल्डिंग.

मध्य प्रदेश

अंबिकापुर : सदर बाज़ार सोना रूप ☐ **बैतूल** : बाल मुकुंद गुप्ता ☐ **भिलाई** : **कैम्प नं. २** जनरल स्टोर्स, बी-१४, सर्कुलर मार्केट ☐ **छतरपुर** : **महल रोड** अग्रसेन एम्पोरियम ☐ **इंदौर** : **एम.जी. मार्केट** आधुनिक किचनवेयर ☐ **इटारसी** : **अजंता ट्रेडर्स** ☐ **गाडरवारा** : **जवाहरगंज** बाबा झंडा चौक ☐ **ग्वालियर** : टोपी बाज़ार गुप्ता हार्डवेयर ☐ **लोकवानी** ☐ **इन्दौर** : **जवाहर मार्ग** कुबेर दुकान नं ३७० • **राम लक्ष्मण बाज़ार** एल.जी. इलेक्ट्रॉनिक्स, दुकान नं. २३ ☐ **खंडवा** : **एम.जी. रोड** (अगले पृष्ठ पर जारी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलिए चार लाख विक्रेता

मेन रोड सुशील इलेक्ट्रिकल्स, नगर पालिका के सामने • **मेन रोड** सुशील इलेक्ट्रिकल्स, नगर पालिका के सामने • **मल्लेशीय रोड** सुराना सेल्स • सुरेश साउंड, रामपुर : **मल्लेशीय रोड** सुराना सेल्स • सुरेश साउंड, रामपुर • श्री पात्र भंडार • **मेन बाजार** एन.एस. ट्रेडर्स • श्री पात्र भंडार • **मेन बाजार** एन.एस. ट्रेडर्स, हल्द्वानी : **मेन रोड** छोटे साउंड सिस्टम • **मेन बाजार** जुनी हाटली छोटे साउंड सिस्टम • **मेन बाजार** : जी सभी इण्डियन स्टोर्स • **सिक्कीम : बारा** बाजार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

नया नुस्खा

लालू की अब चरवाहा विद्यालय की योजना

बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव भले ही गांव का दर्द कम न कर सके हों पर हर पल नए मरहम के नुस्खे तलाश जरूर करते रहते हैं. पिछले बीस महीनों में उन्होंने गरीब ग्रामीण जनता के कराहते सपनों पर ऐसे कई तरह के मरहम आजमाने की कोशिश की. कभी उन्होंने 'ट्री-टैक्स-फ्री-टैक्स' यानी ताड़ी पर से आबकारी शुल्क माफ करने की बात की, तो कभी उन्होंने तालाबों को गरीब मछुआरों को सौंप दिया. पिछले पखवाड़े इस युवा मुख्यमंत्री की नजर असहाय गरीब चरवाहों पर पड़ी और उन्होंने झट से उनके लिए भी नुस्खा सोच लिया—'चरवाहा विद्यालय'.

सुनने में 'चरवाहा विद्यालय' भले ही मजाक लगे मगर यह उनके शब्दों में उस दर्दनाक दास्तां की उपज है जिसमें करोड़ों गरीब लोग अपने गाय-गोरू, बकरी और भेड़ का पेट भरने के लिए दर-दर की ठोकरें खाते जमींदारों की गालियां सुनते हैं, अपनी उम्र गवां देते हैं और रह जाते हैं अनपढ़-गंवार. इस गरीबी और अशिक्षा के अंधकार से उन्हें मुक्त कराने के लिए लालू यादव ने यह नई योजना बनाई है.

हर गांव में 'परती जमीन' की घेराबंदी कराकर सरकार उसमें तरह-तरह के घास, मवेशियों के खाने लायक पत्तेदार पेड़ और पौधे लगवाएगी और उन्हें गांव के चरवाहों के लिए छोड़ देगी. उन चरागाहों के चारों ओर शीशम के घने जंगल लगाए जाएंगे, ताकि प्रदूषण की समस्या कम हो सके और कुछ साल के बाद वह लाखों, करोड़ों की संपत्ति हो जाए. हर चरागाह में कुछ कमरे बनेंगे जहां गरीब चरवाहे बच्चे मुफ्त शिक्षा पा सकेंगे और उनके लिए सरकार दिन में भोजन (खिचड़ी) का भी प्रबंध करेगी. इतना ही नहीं, वहां गांव के कारीगरों—जैसे बढ़ई, लोहार के लिए भी जगह होगी ताकि वे वहां पर खेतीबाड़ी के उपकरण बनाते रहें और जो बच्चे उस काम में रुचि लें उन्हें प्रशिक्षण मिल सके. फिर, वहां गौशालाओं के लिए 'चिलिंग प्लांट' लगाए जाएंगे और दूध बिक्री के केंद्र भी खोले जाएंगे.

लालू यादव का कहना है कि इस स्कीम को लागू करने में सरकार का एक भी पैसा नहीं लगेगा. वे कहते हैं जमीन तो सरकार की है ही जिसका मजबूत तबकों के लोग दुरुपयोग करते हैं. फिर प्रौढ़ शिक्षा योजना का पैसा जिसे राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता और सरकारी कर्मचारी हजम कर जाते हैं, चरवाहों की शिक्षा पर खर्च किया जाएगा. सरकार के पास पूरे राज्य में प्रयोग के तौर पर करीब 400 'फार्म' चलाए जाते हैं जिनमें कुछ को छोड़कर सभी मृत अवस्था में पड़े हैं. उनके धन और उपकरणों का चरवाहा विद्यालय

कार्टून: जयंतो

चरवाहा विद्यालय की योजना अगर अमल में आई तो दुनिया भर में एक अनोखा तजुर्बा होगी

में उपयोग किया जाएगा. लालू यादव ने, जो बचपन में खुद भी चरवाहा थे, 'इंडिया टुडे' को बताया, "मैं इस चरवाहा विद्यालय के द्वारा चरवाहों को इज्जत की जिंदगी जीने योग्य बनाऊंगा और अशिक्षा के अंधकार से निकालकर रहूंगा. साथ ही पशुओं को भी, जिन पर गांव की अर्थव्यवस्था चलती है, वह पेट घास और पत्ते मिलें और गांव में खुशहाली आ जाएगी."

यह एक अद्भुत योजना है और यदि लालू यादव सही में इसे अमल में ला सके तो यह देश में ही नहीं बल्कि विश्व में एक अनोखा तजुर्बा होगा. मगर गरीब जनता के बीच सपने बेचना और उस पर अमल करना दो अलग बातें हैं. पूर्व मुख्यमंत्री और विरोधी दल के नेता डॉ. जगन्नाथ मिश्र का आरोप है कि लालू सारी घोषणाएं वाहवाही लूटने के लिए करते हैं जो केवल कागज तक ही सीमित रहती हैं. समाजवादी जनता पार्टी के प्रदेश महासचिव लक्ष्मी साहू की नजर में इस तरह की घोषणाओं के पीछे केवल लालू की अपने जातीय आधार को मजबूत करने की चाल होती है.

लेकिन लालू को इन सब आलोचनाओं की कोई परवाह नहीं. पिछले माह उन्होंने वैशाली जिला के राघोपुर दियारा में चरवाहा विद्यालय की घोषणा की तो उसे भी लालू के 'यादववाद' का हिस्सा माना गया. यादव बहुल राघोपुर दियारा में बहुत बड़ी भूमि पर विद्यालय निर्माण की योजना को अंतिम रूप दिया जा रहा है. हालांकि इसमें कुछ दिक्कतें भी हो रही हैं. चूंकि इस तरह की कोई वस्तु इस धरती पर है ही नहीं इसलिए इसकी रूपरेखा बनाने के लिए कोई गाइडलाइन उपलब्ध नहीं है. फिर भी सरकारी स्तर पर इस संबंध में विचार-विमर्श चल रहा है. वजह सीधी-सादी है कि खुद मुख्यमंत्री ने इस योजना को प्राथमिकता दी है.

लालू का दिमाग इस दिशा में कुछ ज्यादा ही तेज चलता है. अभी चरवाहा विद्यालय की रूपरेखा तैयार भी नहीं हो सकी मगर उन्होंने पिछले पखवाड़े सोनपुर मेले में कुश्ती-दंगल का उद्घाटन करते हुए 'पहलवान विद्यालय' बनाने की घोषणा जाहिर कर दी. लगता है बिहार में खेल शिक्षण संस्थान लगभग मर चुके हैं. अब चरवाहा और पहलवान विद्यालय ही चलेंगे. लोग पूछने लगे हैं कि क्या बिहार अब चरवाहा और पहलवान युग में प्रवेश कर रहा है.

—करण थापर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रलोभनों का प्रभाव नहीं

विदेशी मुद्रा को आकर्षित करने की सरकारी योजनाएं सफल होती नहीं नजर आ रही हैं. हर तरह के कर से मुक्ति और भारत विकास बांड के जरिए नवंबर के अंत तक 2 अरब डॉलर (5000 करोड़ रु.) विदेशी मुद्रा आने की उम्मीद सरकार ने लगाई थी. पर लगता है कि ज्यादा से ज्यादा 1500 करोड़ रु. ही आ पाएंगे. काला धन निकालने के लिए बनी राष्ट्रीय आवास बैंक योजना भी फ्लॉप रही है. इसकी अंतिम तारीख 30 नवंबर ही थी पर अब इसे मार्च तक बढ़ाने की सोची जा रही है. अभी तक मात्र 20 करोड़ रु. ही आए हैं. मगर इससे भी कोई बहुत फायदा होने वाला नहीं लगता.

सुधार की ओर

लगता है मद्रास की स्टैंडर्ड मोटर्स कंपनी अपनी हालत सुधारने के रास्ते पर है. औद्योगिक और वित्तीय पुनर्गठन बोर्ड द्वारा पिछले महीने इसको फिर से खड़ा करने के लिए 94.26 करोड़ रु. का ऋण देने के साथ ही कंपनी झाड़-पोंछ में जुट गई है. नई योजना के अनुसार कंपनी कारों का निर्माण बंद करेगी और अपने हल्के व्यावसायिक वाहनों के लिए ईंधन की बचत करने वाले इंजन तैयार करने पर ही सारा ध्यान लगाएगी. इसके लिए राज्य सरकार और वित्तीय संस्थान तो ऋण देंगे ही, मालिक भी 6.03 करोड़ रु. लगाएंगे. उधर, तमिलनाडु सरकार ने भी प्रति वर्ष 1000 हल्के व्यावसायिक वाहन खरीदने की पेशकश की है.

बिकने के तरीके

अंतरराष्ट्रीय विपणन का महत्व बढ़ते जाने के साथ ही कंपनियां अपनी बेहतर छवि पेश करने के लिए अलग-अलग तरीके भी अपनाने लगी हैं. औद्योगिक क्षेत्र में प्रसिद्ध ब्रांडों की श्रृंखला या समूहों वाली कंपनियों से गठबंधन हो रहे हैं जिससे कि उनके नेटवर्क का लाभ उठाया जा सके. पर्यटन उद्योग, खासकर होटलों के मामले में अलग रास्ता अपनाया जा रहा है. यहां 'विशेष विक्रय अधिकार' का सौदा हो रहा है. पिछले पखवाड़े बेस्ट वेस्टर्न इंटरनेशनल (बीडब्ल्यूआई) को दिल्ली में ऐसा ही कारोबार करने की अनुमति मिल गई. योजना है कि 1995 तक करीब 50 भारतीय होटलों को इस श्रृंखला के अधीन लाया जाए और इनके नाम अपनी निदेशिका में शामिल किए जाएं जिसकी प्रसार संख्या अमेरिका में 80 लाख है. देखें, इससे भारत के पर्यटन व्यवसाय को कितना बढ़ावा मिलता है और अंतरराष्ट्रीय बनने वाली धारा साफ दिख रही है.

बेकार शर्तें

आईबीएम-टाटा कंप्यूटर योजना का अनपेक्षित परिणाम निकला है. उद्योग मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार विदेशी गठबंधन के हर प्रस्ताव पर कुछ 'शर्तें' लगाई जाती हैं. ऐसी एक शर्त है कि गठबंधन में शामिल भारतीय कंपनी इसके तकनीकी ज्ञान और डिजाइन को देश के अंदर 'सब-लाइसेंस' करने को आजाद होगी. एक दूसरी शर्त के अनुसार ऐसे 'सब-लाइसेंस' वाले मामलों में सलाह भी हिंदुस्तानी साझीदार ही देगा. आईबीएम इन शर्तों को मानने को तैयार न थी और सरकार ही झुकी. अधिकारियों ने इन शर्तों की पूरी समीक्षा की और अधिकांश को 'बेकार' पाया. परिणामः मध्य दिसंबर तक अधिकांश शर्तें खत्म कर दिए जाने की उम्मीद है.

खतरे की घंटी

देश के शेयर बाजारों का मौजूदा उफान जबकि शांत पड़ता लग रहा है, तेजड़ियों को एक और तेजी की उम्मीद है. यह उम्मीद सरकार की उदार नीतियों के कारण बंधी है. लेकिन जरूरत से ज्यादा उत्साह वाले निवेशकों को विशेषज्ञ एक खास चीज—कीमत-मुनाफा अनुमान—की तरफ इशारा कर रहे हैं. यह अनुपात शेयरों के बाजार मूल्य और उन पर मिलने वाले वार्षिक लाभांश का है. अन्य देशों की तुलना में यह अनुपात भारत में पहले ही काफी अधिक हो चुका है. अपवाद सिर्फ जापान है जहां भारी सट्टेबाजी के चलते कीमतें आसमान छूती हैं. वैसे, अनुपात के बढ़ जाने के बाद बाजार को संभालना मुश्किल हो जाता है और गिरावट आती ही है. भारत में यह स्थिति आ गई है और तेजड़ियों के लिए यह खतरे की घंटी है.

चार्ट: बी.के. शर्मा

नए धंधे की दिशा में

श्रीराम समूह की 130 करोड़ रु. कारोबार वाली कंपनी, उषा इंटरनेशनल लि. अब एकदम ही नए क्षेत्र में कदम रखने जा रही है. होटल व्यवसाय में वह पहली बार उतरेगी. उपभोक्ता सामान बनाने वाली यह प्रमुख कंपनी अब मध्यम आय वर्ग के लोगों के लिए उत्तर भारत के पांच शहरों में तीन सितारा होटल खोलेगी. ये ऐसी जगहों में ही खुलेंगे जहां पर्याप्त सुविधाएं नहीं हैं. पर्यटन व्यवसाय को मिलने वाले प्रोत्साहन और होटल कमरों की संख्या में 20 फीसदी की कमी से चरत राम की इस कंपनी को लाभ मिलना चाहिए.

सफाई अभियान

शराब के व्यवसायी विजय माल्या अभी तक तो आंख मूंदकर कंपनियों को अपनी झोली में भरते जाने में लगे थे. अब वे इन कंपनियों का गर्दो-गुबार साफ करने में जुटे हैं. माल्या अपने समूह के वित्तीय पुनर्गठन की योजना पर काम कर रहे हैं. खबर है कि उन्होंने कैडबरीज इंडिया लि. के अपने 11 फीसदी शेयर यूनिट ट्रस्ट को बेचे हैं. एक सहयोगी कंपनी बुश ब्रुक एलम के शेयरों को भी निकालने की योजना है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

उत्साह कायम

तेजड़ियों की बांछें खिलीं

देश के शेयर बाजारों की गहमागहमी में खुशफहमी का माहौल है. इससे राजीव गांधी राज के प्रारंभिक दिनों की याद ताजा हो जाती है. उस समय पेप्सी कोला पैठ बना रही थी तो आज कोका कोला पांव रखने की जुगाड़ में है. विश्व की बड़ी कंपनियां—जनरल मोटर्स, बीएमडब्ल्यू, आईबीएम, केलॉग्स, जनरल इलेक्ट्रिक वगैरह अब भारत की ओर गंभीरता से रुख कर रही हैं.

सो, आश्चर्य नहीं कि तेजड़ियों की बांछें खिली हुई हैं. साथ ही नई नीति से अब विदेशी शेयरों वाली ज्यादातर कंपनियों को विदेशी निवेश 51 फीसदी तक बढ़ाने की रिजर्व बैंक से स्वत: ही मंजूरी मिल जाएगी. इससे भी उत्साह बना है.

इसके अलावा निवेश पर अधिक फायदा देने वाली नई दवा नीति की संभावना से भी दवा कंपनियों की उम्मीदें उछाल भर रही हैं. इन कंपनियों के शेयरों की मांग बढ़ी है और ग्लैक्सो, फाइजर, बरोज वेलकम, हेक्सर के भाव बढ़ गए.

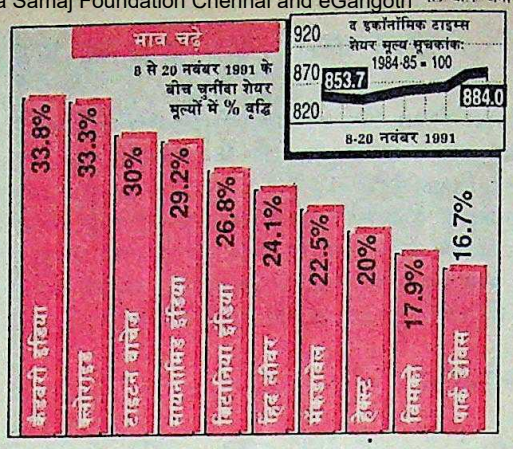

बाजार में नए उत्साह की झलक मुंबई शेयर बाजार (मुंशेबा) के सूचकांक में भी मिली. 19 नवंबर को इस सूचकांक ने 53 अंकों तक उछाल लेकर 1924.15 का नया रिकॉर्ड ही बना डाला. राष्ट्रीय सूचकांक ने 910.27 पर पहुंचकर 14.02 अंकों की बढ़ोतरी दर्ज की.

रिलायंस का शेयर 8 रु. बढ़कर 163.00 रु. पर पहुंच गया. ग्लैक्सो 191.25 रु. से 212.50 रु., कैसट्रॉल 485 रु. से 505 रु., हिंदुस्तान सीबा गाइगी 1975 रु. से 2225 रु. और एशियन ब्राउन बोवेरी 205 रु. से 327.50 रु. पर पहुंचे.

बाजार के जानकार अभी और उछाल की भविष्यवाणी करते हैं. जमना दास मोरारजी एंड कंपनी के शेयर दलाल मफतलाल कंपानी कहते हैं कि मुंशेबा सूचकांक फरवरी 1992 तक 2,000 का अंक पार कर जाएगा. लेकिन एमफीटे पोर्टफोलियो मैनेजमेंट कंसल्टैंट्स प्रा. लि. के प्रताप पारीख चेतावनी देते हैं, "नई नीति से नुकसान भी हैं. इजारेदारों के बुरे दिन आ रहे हैं. बाजार में सिर्फ स्पर्धा करने वाले ही बच पाएंगे."

इस बीच, बाजार में पुनर्नियोजन नीति और नरसिंहन समिति की रिपोर्ट का बेताबी से इंतजार है. बताया जाता है कि इस रिपोर्ट में कंपनियों का रिजर्व अनुपात (सीआरआर और एसएलआर) मौजूदा 53.5 फीसदी से घटाकर 40 फीसदी करने का सुझाव है. आशा के इस माहौल में लगता है मंदड़ियों को अभी थोड़ा धीरज रखना होगा.

जमा स्टॉक

	1991 ऊंचा	1991 नीचा	बंद 20.11.91	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	174.00	105.00	134.00	4.00+
एसो.सीमेंट	3900.00	1300.00	3230.00	305.00–
एशियन पेंट्स	325.00	215.00	300.00	7.50–
एटलस कोप्को	118.75	42.00	102.50	–
बजाज ऑटो	760.00	310.00	327.50	27.50–
बड़ोदा रेयॉन	1000.00	400.00	620.00	80.00–
बाटा इंडिया	149.00	72.00	141.00	16.00+
बल्लारपुर	310.00	228.00	295.00	5.00+
बिरला जूट	404.00	168.00	378.00	12.00–
ब्लो प्लास्ट	210.00	40.00	130.00	22.50+
बांबे डाइंग	405.00	150.00	393.75	38.75+
ब्रिटा.इंडिया	247.00	112.00	241.00	51.00+
बुक बांड	172.00	116.00	165.00	26.00+
कैडबरी इंडिया	255.00	132.50	242.50	61.25+
कैस्ट्रोल इंडिया	540.00	162.50	505.00	13.75–
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	9050.00	3625.00	6950.00	40.00+
कोलगेट पामो.	461.25	250.00	300.00	112.50–
सायनामिड.	220.00	78.25	210.00	47.50+
डीसीएम	319.50	123.00	309.50	11.50+
डनलप	111.00	46.50	79.00	1.00–
ईआई होटल्स	107.50	35.00	97.50	2.50+
एस्कार्ट्स	172.00	127.00	142.50	19.50–
फिनो. केबल्स	400.00	140.00	300.00	15.00+
गरवारे नाइलोन	44.00	27.00	32.00	3.00–
जी.ई. शिपिंग	116.50	25.00	106.50	5.00+
गुज.स्टेट फर्टि.	341.25	150.00	315.00	17.50–
ग्रासिम इंडिया	347.50	167.50	333.75	7.50–
गुज.अबुंजा	317.50	90.00	265.00	20.00–
हिंदु.एल्यू.	367.50	200.00	310.00	5.00+
हिंदु.सीबा	2350.00	650.00	2225.00	300.00+
हिंदुस्तान लीवर	185.00	132.50	180.00	35.00+
हिंदुस्तान मोटर्स	48.50	16.80	29.50	3.50–
हेक्स्ट	425.00	240.00	420.00	70.00+
आईसीआई	38.00	30.00	86.00	9.50+
इंडियन आर्गेनिक	80.00	30.00	53.50	3.00–
इंडियन रेयॉन	269.00	104.50	241.00	6.00–
इंगरसॉल-रैंड	385.00	240.00	380.00	15.00+
आईटीसी	396.00	99.00	387.00	9.00–
जे.के.सिंथेटिक्स	74.00	27.00	64.00	8.50+
काइनेटिक इंजी.	225.00	145.00	160.00	5.00–
किर्लो. क्युमिस	225.00	95.00	221.25	12.50+
केएसबी पंप्स	310.00	160.00	250.00	5.00+
लार्सन ऐंड टुब्रो	163.75	90.00	139.00	9.00+
लिप्टन	205.00	57.50	190.00	10.00+
लोहिया-मशीन्स	42.50	21.00	28.00	2.00–
महिंद्रा-महिंद्रा	115.00	57.50	76.25	6.25–
मास्टरशेयर्स	42.50	20.00	25.50	1.00–
मोटर इंडस्ट्रीज	1950.00	675.00	1900.00	25.00+
मुकुंद लिमि.	215.00	117.50	170.00	3.75–
नेशनल आर्गे.	1950.00	925.00	1650.00	110.00+
नेस्ले इंडिया	233.00	111.25	233.00	35.00+
निरलॉन	41.25	16.00	26.00	–
ओरके सिल्क मि.	40.00	17.50	33.50	0.50–
पेट्रको इलेक्ट्रॉनिक्स	170.00	53.00	156.00	11.00+
प्रीमियर ऑटो	69.00	30.00	46.00	3.50–
रेमंड	215.00	110.00	206.25	17.25+
फाइजर	167.50	60.00	163.75	16.25+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	206.00	91.25	163.00	4.50–
सीमेंस इंडिया	255.00	112.50	232.50	2.50–
शॉ वैलेस	185.00	77.00	157.00	3.00+
श्रीराम फाइबर्स	79.00	33.00	11.00	1.00+
एसकेएफ बेय	3000.00	1650.00	2700.00	25.00+
स्पिक	104.00	33.00	92.00	7.50–
टाटा स्टील	255.00	170.00	231.00	4.00–
टेल्को	347.50	142.50	296.25	36.25–
टाइटन वाचेस	140.00	58.00	130.00	30.00+
वाम ऑर्गेनिक	410.00	102.50	390.00	1.50+
वीडियोकॉन	380.00	133.75	272.50	7.50–
वोल्टास	145.00	92.50	127.50	–
बिमको	57.50	16.00	56.00	8.50+

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	खरीद मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	20.5391	20.5191
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	231.6874	231.4331
बहरीन	दीनार	1	69.2598	67.3301
बांग्लादेश	टका	100	70.4781	68.4781
कनाडा	डालर	1	23.0152	22.7752
डेनमार्क	क्रोना	1	4.1958	4.1558
मिस्र	पौंड	1	8.1127	7.8127
फ्रांस	फैंक	1	4.8426	4.7926
जर्मनी	मार्क	1	16.5563	16.3963
हांगकांग	डालर	1	3.3587	3.3287
इंडोनेशिया	रुपिया	100	1.3192	1.2892
ईरान	रियाल	100	–	–
इटली	लीरा	100	2.1576	2.1376
जापान	येन	100	20.4682	20.2682
केन्या	शिलिंग	1	0.9258	–
कुवैत	दीनार	1	–	–
मलेशिया	डालर	1	9.5164	9.4264
मारीशस	रुपया	1	1.7043	1.6743
नेपाल	रुपया	1	0.6870	0.6770
हालैंड	गिल्डर	1	14.4716	14.3316
पाकिस्तान	रुपया	1	1.0192	1.0092
सिंगापुर	डालर	1	15.6359	15.4759
स्पेन	पैसो	1	0.2575	0.2535
श्रीलंका	रुपया	1	0.6165	0.6065
स्वीडन	क्रोना	1	4.4662	4.4162
स्विट्जरलैंड	स्विस फैंक	1	18.3645	18.1845
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1189	0.1169
थाईलैंड	बहत	100	103.2990	102.2990
ब्रिटेन	पौंड	1	46.7917	46.3317
अमेरिका	डालर	1	26.0417	25.7817
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	7.0929	7.0229
सोवियत संघ	रूबल	1	29.9379	29.6379

स्रोत: बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 20.11.91.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय मोर्चा

पटाक्षेप की तैयारी

मोर्चा और उसकी घटक पार्टियां अस्तित्व के लिए संघर्षरत

जावेद एम. अंसारी
और ब्यूरो रिपोर्ट

नई दिल्ली के विंडसर प्लेस पर राष्ट्रीय मोर्चा कार्यालय को देखकर ही मोर्चे की दुर्दशा का अनुमान लग जाता है. महज दो वर्ष पहले यह स्थान भारतीय राजनीति की तमाम उथल-पुथल का केंद्र था और इसी जगह विपक्ष के नेताओं ने भ्रष्टाचार के मुद्दे पर इंका सरकार को धूल चटाने की रणनीति तय की थी. इसी जगह कई दिग्गजों ने लंबी-लंबी बैठकों के बाद सत्ता के गलियारों की चमक देखी थी. वही कार्यालय आज नितांत सूना पड़ा है. कर्मचारियों को पिछले कई महीनों से वेतन नहीं दिया गया है. टेलीफोन बिल और किराए की बकाया रकम बढ़ती जा रही है. एकमात्र कार्यालय सचिव भी नदारद नजर आता है.

किसी ने भी नहीं सोचा था कि इतनी जल्दी ये हालात हो जाएंगे. इंका के विकल्प के रूप में खड़ा किया गया पांच दलों का यह मोर्चा आज अलग-अलग धड़ों में बंट गया है. मोर्चे की दुर्दशा का वृत्तांत खुद इसके अध्यक्ष एन.टी. रामराव बताते हैं. अब वे शर्मिंदा महसूस करते हैं और अलविदा कहने का मौका ढूंढ़ रहे हैं. मोर्चे के दूसरे नेता इसे 'राष्ट्रीय' कम और 'तयाली' अधिक मानने लगे हैं. आलोचक भी पीछे नहीं हैं. भाजपा अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी कहते हैं, "जनता दल और राष्ट्रीय मोर्चा दोनों ही विभाजन के कगार पर हैं और अब हमारी पार्टी ही इंका के सशक्त विकल्प के रूप में उभरेगी." मोर्चे के पक्षधर और प्रसिद्ध समाजवादी विचारक मधु लिमये भी अब मानते हैं कि, "ग्रेट ब्रिटेन की तरह यहां भी दो मध्यमार्गी राजनैतिक मोर्चे एक साथ अस्तित्व में नहीं रह सकते."

वैसे, अभी भी कई लोग आशा से भरे हैं. वी.पी. सिंह मानते हैं कि कोई भी मतभेद 'हल से परे नहीं है.' जबकि मोर्चे के प्रवक्ता के.पी. उन्नीकृष्णन भविष्य की बात करते हैं, "वर्तमान सरकार की नई नीतियों का उलटा असर छह महीने में ही नजर आने लगेगा और लोगों को भयंकर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा. तब लोग हमारी तरफ ही मुड़ेंगे." मोर्चे के दूसरे सहयोगी भी इससे सहमत हैं. माकपा

रेखाचित्र: प्रणव दत्त

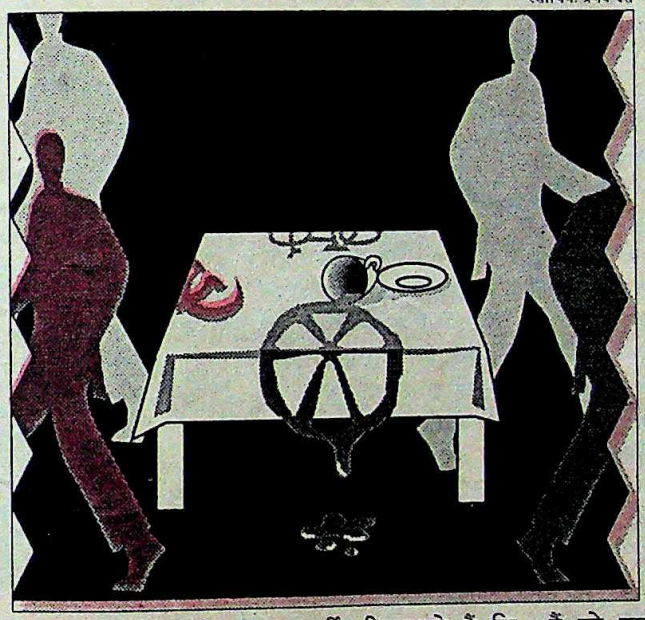

नेता सोमनाथ चटर्जी भी मानते हैं कि लोग जल्द ही भाजपा और इंका से तंग आ जाएंगे. उनके अनुसार, "मोर्चा एक बार फिर शीर्ष पर होगा."

मगर इस तरह का आत्मविश्वास छलावा भरा है, क्योंकि मोर्चे की भीतरी समस्याएं काफी गहरा चुकी हैं. जनता दल के नेता एक-दूसरे के खिलाफ लड़ने में ही व्यस्त हैं. दक्षिण में तेलुगु देशम और द्रमुक को पिछले चुनावों में पड़ी करारी मार से ही उबरना मुश्किल हो रहा है. असम गण परिषद भी टूट चुकी है. अविभाजित घटक के रूप में कांग्रेस (एस) ही है, जिसमें विभाजन की कोई गुंजाइश नहीं.

एक वर्ष पहले जनता दल के हाथों में देश की बागडोर थी और आज वह ढाई राज्यों में सिमट गया है. इसके गढ़ उत्तर प्रदेश में भाजपा ने इसे काफी नुकसान पहुंचाया है, जबकि ओडीसा में मुख्यमंत्री बीजू पटनायक इंका के प्रति मधुर भाव से भरे हैं. जनता दल केवल बिहार में मजबूत नजर आता है पर उसमें पार्टी से ज्यादा लालू प्रसाद यादव के चमत्कार का हाथ है. गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश में पार्टी तीसरे स्थान पर है. भाजपा उपाध्यक्ष के. आर. मल्काणी कहते हैं, "इन राज्यों में जनता दल को यह फैसला कर लेना होगा कि वह तीसरे नंबर पर ही बने रहना चाहता है या इंका के साथ विलय चाहता है."

एन.टी. रामराव और उनकी तेलुगु देशम पार्टी भी बदहाली के दौर से गुजर रही है. कुछ वर्ष पहले रामराव ने तेलुगु गौरव के नाम पर इंका को मात दी थी पर दिल्ली की गद्दी पर एक तेलुगु के बैठने के बाद से उनके अपने भविष्य को ग्रहण लग गया है. वैसे, नरसिंह राव के खिलाफ कोई प्रत्याशी खड़ा नहीं करने की उनकी पेशकश खास असर नहीं डाल सकी, क्योंकि दूसरी संसदीय सीट और विधानसभा की चार सीटों पर भी इंका की जीत हुई.

तमिलनाडु में द्रमुक और एम. करुणानिधि की दशा तो और भी खराब है. जयललिता की शानदार जीत के बाद से द्रमुक अपने जख्म ही सहलाने में लगी है. वैसे भी एलटीटीई के साथ द्रमुक के संदेहास्पद गठजोड़ ने उसे खासा नुकसान पहुंचाया है. करुणानिधि अस्तित्व बचाने में ही लगे हैं. सो, उनके पास मोर्चे की समस्याओं से निबटने का समय नहीं होगा.

लगता यही है कि राष्ट्रीय मोर्चे के दिन अब लद रहे हैं. कुछ लोग यह भी मान रहे हैं कि भाजपा द्वारा अयोध्या में उठाए गए हंगामे के बाद कई कांग्रेसी क्षोभ में धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील ताकतों की तरफ मुड़ेंगे. भाकपा महासचिव चतुरानन मिश्र कहते हैं, "सच्चे वामपंथी झुकाव वाले गठबंधन के लिए हमेशा पर्याप्त संभावनाएं रहेंगी."

लेकिन अभी तो खुद वी.पी. सिंह की आंखें ही सूनी नजर आती हैं. स्वयं उन्होंने जनता दल को 'बेवकूफी भरा प्रयोग' बताया है. जनता दल कगार से वापस लौटेगा इसकी उम्मीद क्षीण ही लगती है. इसका कारण यह है कि इसके अपने नेताओं ने न सिर्फ इसे नुकसान पहुंचाया दिखाया है, बल्कि इसके पटाक्षेप का भी ऐलान कर दिया है. ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वी.पी. सिंह

बिखरता कारवां

साथी एक-एक करके किनारा करते जा रहे हैं. और ऊपर से अमेठी में विफलता ने कभी करिश्माई छवि वाले नेता को मुश्किल में डाला

—जफर आगा

विश्वनाथ प्रताप सिंह ने जातीय समीकरण, अल्पसंख्यक वोट बैंक, अपूर्व आकर्षक नारों और लोकप्रिय व साफ-सुथरी नेता की करिश्माई छवि आदि के बूते तीन साल से जो साम्राज्य खड़ा किया था उसके पाये चरमराते नजर आ रहे हैं.

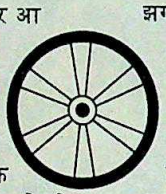

आज जब उनके साथी एक-एक करके उनसे किनारा करते जा रहे हैं, प्रधानमंत्री रह चुके इस नेता को यह हैरानी जरूर हो रही होगी कि जनमोर्चा, जनता दल और राष्ट्रीय मोर्चा जैसे लोकतांत्रिक प्रयोगों में कहां क्या चूक हो गई, और उनकी झलक पाने को उमड़ती भीड़ के वे नजारे क्या सपने ही थे.

उप चुनाव के दौरान अमेठी में वे जिस तरह जम गए थे उसे राष्ट्रीय मंच पर वापसी की उनकी जद्दोजहद का सबूत माना जा रहा था. लेकिन लगता है किसी ने उनके आह्वान पर कान नहीं दिया. विडंबना यह है कि वे राजीव गांधी के गढ़ में उनकी यादों के साये से टक्कर ले बैठे. जनता दल उम्मीदवार राम सिंह अगर जीत जाते या टक्कर भर भी दे पाते तो मांडा के राजा अपनी 'प्रजा' का मन जीत लेते. वहां मतदाताओं का समीकरण भी अनुकूल ही था. एक लाख से अधिक मुसलमान मतदाता, और पिछड़ी जातियों के तथा राजपूत मतदाता भी अच्छी संख्या में हैं. पर वी.पी. सिंह के उम्मीदवार अपनी जमानत तक गंवा बैठे.

अमेठी ने साबित कर दिया कि कभी दुर्दमनीय रहे ठाकुर अपने वोट बैंक पर भी पकड़ खो बैठे हैं. लेकिन अभी भी वे दावे कर रहे हैं. वे कहते हैं, "इंका उत्तर प्रदेश और बिहार में अभी भी तीसरे स्थान पर है." शायद उन्हें भान ही नहीं कि उनकी फौज बिखरने लगी है. जनता दल वैचारिक रूप से दो खेमों में बट चुका है. विश्वनाथ प्रताप सिंह, लालू यादव, शरद यादव और राम विलास पासवान के साथ पार्टी के अधिकांश सांसद अभी 'सामाजिक न्याय' का झंडा उठाए हुए हैं जबकि अजित सिंह, बीजू पटनायक और रामकृष्ण हेगड़े इससे निजात पाना चाहते हैं. वे इंका से तालमेल भी चाहते हैं. लेकिन वी.पी. सिंह कहते हैं, "उत्तर प्रदेश और बिहार में सिर्फ जनता दल ही यथास्थितिवादी इंका और सांप्रदायिक भाजपा से लोहा ले सकता है." लेकिन दूसरे नेता पार्टी में चल रहे अनवरत झगड़ों, उलझनों और मतभेदों से आजिज आ चुके हैं. जॉर्ज फर्नांडीस कहते हैं, "मेरी पार्टी बीमार है." कुछ दूसरों का मानना है कि पार्टी अंतिम सांस गिन रही है.

जनता दल की जैसी-तैसी हालत तो है ही, ऊपर से तेलुगु देशम के आका एन.टी. रामराव ने राष्ट्रीय मोर्चे से अलग होने की चेतावनी दे दी है. वी.पी. सिंह उन्हें साथ रखने में कामयाब हो जाते हैं तो भी राष्ट्रीय मोर्चा इंका का विकल्प नहीं दिखती.

जाहिर है, वी.पी. सिंह की नैया भंवर में फंस चुकी है. इतना जरूर है कि पार्टी के ज्यादातर नेता अभी भी उनके साथ हैं. बिहार के सांसद एम.ए. फातमी कबूलते हैं, "राजा साहब ही हमारे नेता हैं. हम उनके साथ बने रहेंगे." लेकिन अमेठी में विफलता उनकी लंबी यात्रा में रोड़ा बन सकती है. बुलंदशहर में भी, जहां मुसलमान मतदाता एक लाख से ऊपर हैं, जनता दल के उम्मीदवार को मुंह की खानी पड़ी. साथ ही 29 अक्तूबर को उनकी अयोध्या यात्रा भी उत्साहवर्द्धक नतीजा नहीं दे सकी. जैसा कि बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के सह-अध्यक्ष जफरयाब जिलानी कहते हैं, "मुसलमानों में वी.पी. के प्रति काफी आदर है पर उन्हें लग गया है कि जनता दल उत्तर प्रदेश में भाजपा से लोहा लेने के काबिल नहीं है."

बदतर तो यह कि जिस वोट बैंक की खातिर वी.पी. सिंह ने अपनी सरकार गंवा दी, वह आज उनके साथ वैसी मजबूती से नहीं है. मंडल के इस मसीहा को उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव से ही, जिन्हें यादव आज भी अपना नेता मानते हैं, हाथ नहीं मिलाना पड़ा है बल्कि कांशीराम से भी ताल्लुक बढ़ाना पड़ा जिनकी पकड़

मुद्दों पर बंटा दल

जद वैचारिक रूप से बंट गया है. [illegible] और हेगड़े इंका से तालमेल और [illegible] निजात चाहते हैं. वी.पी. सिंह, लालू यादव, शरद यादव इंका विरोधी [illegible] पर जमे हुए हैं. यादव लोगों का [illegible] वी.पी. से मोहभंग हो रहा है.

बीजू पटनायक

लालू यादव

सहयोगी असमंजस में

रामराव की ओर से राष्ट्रीय मोर्चा की धारणा को खुलेआम नकारने और भारत देशम पार्टी बनाने की घोषणा करने से ज्योति बसु जैसे वामपंथी नेता भी वी.पी. सिंह के नेतृत्व के प्रति आशंकित हो उठे हैं.

एन.टी.रामराव

ज्योति बसु

साथी नाराज

जॉर्ज फर्नांडीस पार्टी में बिखराव के लिए वी.पी. सिंह के जोड़-तोड़ को मानते हैं, तो अजित सिंह विद्रोह का झंडा बुलंद कर रहे हैं. वे मुसलमानों को भी अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रहे हैं.

जॉर्ज फर्नांडीस

अजित सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता दल

बंटने के कगार पर

आखिरकार, अंतकाल आ ही गया लगता है. लंबे समय से एक-दूसरे से भिड़ते आ रहे जनता दल सुरमा—विश्वनाथ प्रताप सिंह और अजित सिंह अब पूरी तरह ताल ठोंककर अखाड़े में उतर आए दिखते हैं. अजित सिंह के दाहिने हाथ और उत्तर प्रदेश जनता दल विधायक मंडल के प्रमुख कैलाश नाथ सिंह यादव को प्राथमिक सदस्यता से निकालकर पार्टी अध्यक्ष एस. आर. बोम्मई ने ज़ाट नेता को सीधी चुनौती दे दी है. अब अगर अजित सिंह इसे स्वीकार कर जैसे ही कोई कदम उठाएंगे, पार्टी उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करेगी.

इन दोनों नेताओं के बीच संकट की शुरुआत हाल के आम चुनावों के तत्काल बाद तब हुई जब अजित सिंह ने बोम्मई और पूर्व प्रधानमंत्री को चुनावों में पार्टी की करारी हार के लिए दोषी ठहराया. तभी से पार्टी के टूटने की प्रक्रिया शुरू हुई. बहरहाल, वी.पी. सिंह ने देश में उपचुनावों तक चुप रहने का फैसला कर लिया था.

लगता है अजित सिंह भी दो-दो हाथ कर लेने के लिए तैयार हैं. उन्होंने पहले ही अपने समर्थकों के साथ अगले महीने किसी समय लोकदल को पुनर्जीवित करने के लिए सलाह-मशविरा किया है. लेकिन यह काम इतना आसान नहीं होगा. बुलंदशहर संसदीय चुनाव क्षेत्र से उनके उम्मीदवार को उपचुनावों में करारी हार का मुंह देखना पड़ा. दरअसल, उत्तर प्रदेश में मांडा के राजा के मुकाबले अजित सिंह के खेमे में विधायकों की संख्या कम है. वहां राज्य विधानसभा में जनता दल के 91 विधायक हैं. और अजित खेमे के अधिकांश विधायक पाला बदल सकते हैं.

वी.पी. सिंह और अजित सिंह के रास्ते अगर अलग हो जाते हैं तो इससे इंका के साथ गठजोड़ करने के सवाल पर दोनों के सैद्धांतिक मतभेद ही उजागर होंगे. अजित सिंह जहां ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक और कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री रामकृष्ण हेगड़े की तरह इंका के साथ मेलजोल की वकालत करते हैं, वहीं वी.पी. सिंह इसका दृढ़ता से विरोध करते हैं. जैसा कि अजित सिंह ने हाल ही में घोषणा की, "जनता दल को इंका के साथ किसी तरह का तालमेल करना ही चाहिए." लेकिन वी.पी. सिंह को लगता है कि जनता दल अपने ही दम पर इंका और भाजपा से मुकाबला कर सकता है.

अगर अजित सिंह पार्टी छोड़ते हैं तो उनके बाद हेगड़े के नेतृत्व में उनके समर्थक भी बाहर आ सकते हैं और तब मध्यमार्गी गुटों का एक नया समीकरण बनेना शुरू हो सकता है. —ज़फर आगा

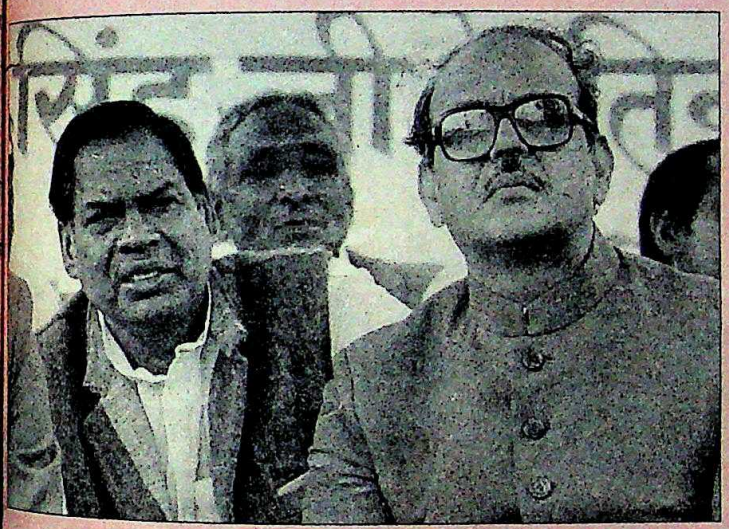

कैलाश नाथ यादव और वी.पी. सिंह: अपने अपने दावे

हरिजनों पर मजबूत है. इस चतुर इलाहाबादी नेता को पता है कि उत्तर प्रदेश की चुनौती को झेलना ही होगा. सो, वे मुलायम सिंह और कांशीराम का इस्तेमाल करना चाहते हैं लेकिन इन दोनों के अहं के मद्देनजर इस गठजोड़ के टिकाऊ होने में संदेह ही है. उधर, बिहार में भले ही जद का प्रदर्शन अच्छा हो पर यादव नेता अपने साम्राज्य में उन्हें पांव नहीं ही धरने देंगे. बाढ़ के उपचुनाव में नीतीश कुमार की चुनाव सभा में जिस तरह हो-हल्ला हुआ, वह पहले की स्थिति से उलट था जब उनका भव्य स्वागत किया गया था.

वैसे, वी.पी. सिंह अब नारों और वास्तविकता के बीच फर्क को भांपने लगे हैं. सामाजिक न्याय और मूल्य आधारित राजनीति के नारे बुलंद करना आसान है पर उन पर अमल करना लोहे के चने चबाने समान है. वे अब निष्प्रभावी नेता हैं. उनकी सबसे बड़ी विफलता यह है कि उनका कोई यकीन नहीं करता क्योंकि वे किसी पर भरोसा नहीं करते. वे गर्व से कहते रहे हैं कि वे विरोधाभासों का समन्वय करने की अपनी क्षमता के बल पर टिके रहेंगे. लेकिन सचाई यह है कि वे बांटो और राज करो की पुरानी नीति पर ही चलते रहे हैं. उन्होंने देवीलाल का चंद्रशेखर के खिलाफ, बोम्मई का जयपाल रेड्डी के खिलाफ, अरुण नेहरू और आरिफ मुहम्मद खां का शरद यादव तथा पासवान के खिलाफ, शरद यादव का अजित सिंह के खिलाफ, पासवान का रामधन के खिलाफ, और श्रीकांत जेना का बीजू पटनायक के खिलाफ इस्तेमाल किया.

वी.पी. सिंह की कुल मिलाकर यही छवि याद रहती है मानो वे निरंतर ऊंचाइयां छूने वाले राष्ट्रीय नेता नहीं बल्कि मुहल्लेबाजी के झगड़ों में उलझे कोई कस्बाई नेता हों. वी.पी. सिंह का राजनैतिक करिश्मा उनकी नेतृत्व क्षमता से नहीं बना बल्कि देश में राजीव गांधी विरोधी लहर के कारण बना था. उनकी देसी बोली, 21 वीं सदी की संस्कृति को झिड़क देनी की उनकी क्षमता आदि ने मिलकर उनकी छवि 'गरीबों के हमदर्द' वाली बनाई.

एक मायने में वी.पी. सिंह की साख को राजीव गांधी के विरोध से राजनैतिक ताकत मिली थी. लेकिन राजीव की मौत ने वी.पी. सिंह को बौना बना दिया. जैसा कि ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक कहते हैं, "जनता दल राजीव गांधी की शैली के खिलाफ एक हौवा था. जिस दिन राजीव मरे, यह भी मिट गया. अब पार्टी को नया धरातल तलाशना होगा." ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदमूरि तारक रामराव

संहार पर उतारू

राष्ट्रीय मोर्चा की विफलता और चिकचिक से चिढ़े रामराव अब नई राष्ट्रीय पार्टी बनाने और नई राह की तलाश में

—सरिता राय, हैदराबाद में

सृष्टि के सर्जक और संहारक शिव की तरह तेलुगु और विपक्षी राजनीति की प्रमुख हस्ती नंदमूरि तारक रामराव के भी दो रूप हैं और वे बड़ी आसानी से कभी एक रूप में सामने आते हैं, कभी दूसरे में. राष्ट्रीय मोर्चा के सर्जक की अपनी भूमिका से ऊबे रामराव अब इसके संहार पर उतारू दिखते हैं. मोर्चे के अध्यक्ष ने पिछले पखवाड़े सबको हैरानी में डालते हुए एक नई पार्टी, भारत देशम बनाने की अपनी मंशा जाहिर की.

तेलुगु देशम अध्यक्ष ने इसकी घोषणा अल्लागड्डा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के येरगुंटला में नाटकीय ढंग से किया. इस क्षेत्र में प्रचार यात्रा पर आए 69 वर्षीय रामराव ने कहा, "मै राष्ट्रीय मोर्चे के कामकाज से एकदम असंतुष्ट हूं. मेरी पार्टी ने मोर्चे को मजबूत करने के लिए अनेक कुरबानियां दीं लेकिन सत्ता में आने पर मोर्चे की सरकार साल भर भी नहीं चल पाई."

अपने दो अन्य क्षेत्रीय साझीदारों द्रमुक और असम गण परिषद के बाहर हो जाने से पहले ही मुश्किल में पड़े इस मोर्चे के लिए यह घोषणा एक बड़े सदमे जैसी थी. रामराव ने यह कहकर मोर्चे को और भी मुश्किल में डाल दिया कि "अध्यक्ष के रूप में मेरा सिर्फ सजावटी उपयोग भर किया जाता है." वे अपने भारत देशम को इंका का विकल्प बनाने की बात कह रहे थे, पर सभी के लिए यह बात स्पष्ट थी कि उनका निशाना दरअसल राष्ट्रीय मोर्चा था.

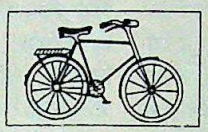

यह घोषणा करके रामराव फिर वहीं पहुंच गए हैं जहां पहले थे. 1984 से ही, जब उनका राजनैतिक सितारा बुलंदी पर था, वे विपक्षी दलों को एक छतरी के नीचे लाने का सपना देख रहे हैं. इस सिलसिले में उन्होंने विपक्षी नेताओं के अनेक सम्मेलन आयोजित कराए और अगस्त 1988 में राष्ट्रीय मोर्चे का गठन करके उन्होंने यह काम करीब-करीब अकेले दम पर कर भी दि था. 1989 के चुनाव के पहले इस मोर्चे के गठन महत्वपूर्ण माना जा रहा लेकिन अब इस मोर्चे से मोहभंग भी ही हो गया है. तेलुगु देशम के नेता रामराव के प्रबल पक्षधर रघुम रेड्डी हैं, "रामराव चाहते हैं कि सब कुछ उ फिल्मों की कहानियों की तरह तीन घं ही घटित हो जाए."

वैसे, अभी भी उनके जीवन में फि की भूमिका महत्वपूर्ण है. भारत दे बनाने की उनकी घोषणा भले राजनीति और राष्ट्रीय मोर्चे के लि विस्फोटक हो, वे अभी भी नच स्थित अपने रामकृष्ण स्टुडियो ही अधिक समय गुजारते हैं. बजट की अपनी फिल्म 'सम्राट अशोक' की शूटिंग में लगे राम का दिन तड़के 3 बजे से ही शुरू जाता है. नित्यकर्म, पूजा और योगासन के बाद वे 5 बजे अपने स्टुडियो में पहुंच जाते और फिर शाम को देर से ही घर लौट पाते हैं. उनके दामाद और पार्टी महासचिव चंद्रबाबू नाय कहते हैं, "एक दिन मैं उनसे पा के मसलों पर बात करना चाहता लेकिन जब मैं तड़के घर गया तो मा हुआ कि वे स्टुडियो निकल चुके थे."

रामराव पर निश्चित रूप से अभ 'सम्राट अशोक' का जुनून सवार है और पूरे जोश से इसमें जुटे हैं. इस फिल्म की योजना, इसकी कहानी और निर्माण सारा कुछ गोपनीय है. रामकृष्ण स्टुडियो पर कड़ा पहरा है और यहां दर्शकों के आने पर रोक है. फिल्म की एक भी तस्वीर नहीं जारी की गई है. दो-तीन महीनों में पूरी होने वाली इस फिल्म ने रामराव को रास न आती राजनीति से कुछ समय तक परे रहने का मौका भी दे दिया है. रामराव परिवार के करीबी एक पार्टी कार्यकर्ता बताते हैं, "वी.पी. सिंह का फोन हो, तब भी वे बात नहीं करते."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

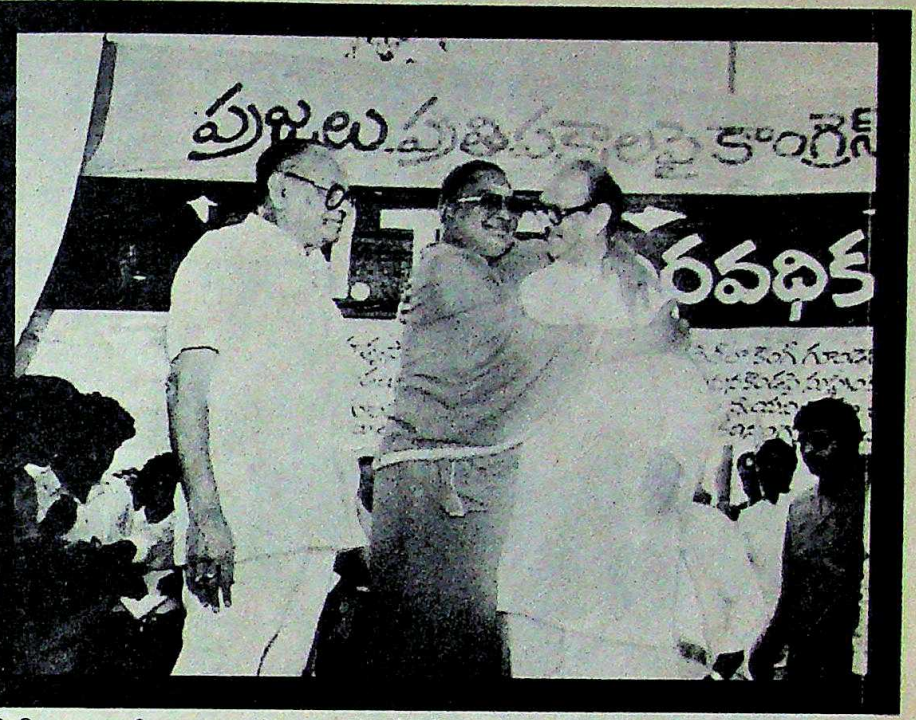

बोम्मई, रामराव और वी.पी. सिंह: कहां गए वो दिन

रास्ते अलग-अलग

राष्ट्रीय मोर्चे के नेतृत्व से मोहभंग होने के बाद इसके अध्यक्ष नंदमूरि तारक रामराव ने अब अपनी राहें एकदम अलग करने की ठान ली है

लेकिन इस बार जब तक उनकी फिल्म पूरी होगी तब तक उनका सामना तेजी से बिखर रहे राष्ट्रीय मोर्चे से होगा. मोर्चे के नेताओं के रिश्तों में खटास के संकेत पहले से दिख रहे हैं. 1989 के चुनाव में रामराव मोर्चे के सभी उम्मीदवारों को एक चुनाव चिह्न पर नहीं लड़वा पाए थे. मंडल मुद्दे पर भी बड़ा विवाद था. आरक्षण के साथ आर्थिक आधार की शर्त जोड़ने के रामराव के सुझाव को वी.पी. सिंह ने नहीं माना था. यही हाल गरीबों को दो रुपए किलो चावल बेचने के सुझाव का भी हुआ था. अयोध्या और मंत्रिमंडल से देवीलाल की बरखास्तगी जैसे महत्वपूर्ण मामलों पर रामराव की पूरी उपेक्षा की गई. कभी रामराव का दाहिना हाथ माने जाने वाले वी. उपेंद्र कहते हैं, "रामराव को लगता था कि वे जनता दल के अंदरूनी विवाद को सुलझाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते थे. लेकिन उनकी सलाह नहीं ली गई."

लेकिन रामराव ने भी नहले पर दहला मारा. उन्होंने फैसला किया कि नांदयाल उपचुनाव में उनकी पार्टी नरसिंह राव के खिलाफ कोई उम्मीदवार नहीं खड़ा करेगी. उन्होंने घोषणा की, "यह तेलुगु गौरव की बात है." राष्ट्रीय मोर्चे के पास अपने प्रमुख के फैसले को मानने के अलावा कोई और चारा नहीं रहा. इंका ने विपक्षी खेमे के बिखराव का पूरा लाभ उठाया. और ताबूत में आखिरी कील रामराव ने खुद की आलोचना करके ठोंकी.

उनके दांव से मोर्चे पर तो भारी चोट आई पर भारत देशम बनाने की घोषणा का राज्य में भी बहुत लाभ नहीं हुआ. यह घोषणा उस वक्त हुई है जब खुद उनकी लोकप्रियता अपने निम्नतम स्तर पर है. प्रदेश में उनकी पार्टी विपक्ष में है. हाल के उपचुनावों में भी उसे कोई सफलता नहीं मिली. दोनों संसदीय और चारों विधानसभाई सीटें इंका ने जीतीं. तेलुगु देशम संसदीय पार्टी के उपनेता अशोक गणपति राजू कहते हैं, "जब पार्टी नेता का करिश्मा प्रदेश में ही नहीं चल पा रहा है तो यह बाहर भी नहीं काम करेगा."

हाल में जिस तरह से रामराव ने नरसिंह राव का गुणगान शुरू किया है उससे भी भविष्य में तेलुगु देशम की छवि बिगड़ेगी. उन्होंने पार्टी का गठन सिर्फ 'तेलुगु आत्म गौरव' के नाम पर ही नहीं, इंका विरोधी जनभावना को देखकर भी किया था. जैसा कि चंद्रबाबू नायडू कहते हैं, "हमारा आधार कांग्रेस-विरोधी वोट है. यही हमारी विश्वसनीयता है." यही कारण है कि अपनी विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न लगाकर ही रामराव इंका की तारीफ कर सकते हैं.

और अभी लग रहा है कि भारत देशम की बात करके रामराव खुद अपनी पार्टी के लोगों के लिए भी उपहास का पात्र बन गए हैं. उनके मनमानेपन और गिरते सिनेमाई करिश्मे ने भी, जिसमें 'महर्षि विश्वामित्र' की असफलता ने और तेजी ला दी है, इसमें अपनी भूमिका निभाई है. उन्हें अपनी पार्टी के असंतोष को दबाने के लिए सारे कर्म करने पड़ रहे हैं. उनके भरोसेमंद सिपहसालार पी. उपेंद्र उनसे दूर हो गए हैं. जबकि रेणुका चौधरी जैसी प्रमुख नेता अपनी नाराजगी भी नहीं छुपातीं. पार्टी के कार्यकर्ता संगठन चला रहे उनके दामादों—वेंकटेश्वर राव और नायडू—के तानाशाही रवैये की शिकायत करते हैं.

पूरी स्थिति के बारे में जनता दल नेता रामकृष्ण हेगड़े कहते हैं, "भारत देशम एक हवाई खयाल है क्योंकि अब खुद रामराव का पहले जैसा असर नहीं रह गया है. वे सदा की तरह दिग्भ्रमित हैं." तेलुगु देशम नेता एम. रघुम रेड्डी भी इस बात से सहमत हैं. भारत देशम को वे "राष्ट्रीय मोर्चे में दरकिनार हो जाने पर रामराव का भावनात्मक जवाब" बताते हैं. वे कहते हैं, "अगर हमें सचमुच भारत देशम पार्टी बनानी है तो सबसे पहले आंध्र प्रदेश की गड़बड़ियों को दूर करना होगा. हमें अपने लोगों को भरोसा दिलाना होगा कि इस मामले में हम सचमुच गंभीर हैं."

रामराव को भी इस बात का एहसास है. वे जानते हैं कि भारत देशम की सफलता के लिए गैर-कांग्रेसवाद का मंत्र कारगर नहीं होगा. अगर लोग भारत देशम को गंभीरता से लें तो इसके लिए उनको अपना आधार व्यापक करना पड़ेगा. राष्ट्रीय मोर्चे का गठन करने वाले शख्स को अपनी फिल्म 'सम्राट अशोक' खत्म करने के बाद इसके लिए भी श्रम करना पड़ेगा. और इस बीच मोर्चे के नेता इस संहारक देवता के तांडव के शुरू होने का इंतजार कर रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाराणसी

फिर-फिर दंगों का दौर

प्रतिमा विसर्जन के दौरान गड़बड़ी ने प्रशासनिक लापरवाही के कारण भयावह दंगे का रूप लिया

दंगों के दूसरे दौर में सबसे ज्यादा प्रभावित मुस्लिम-बहुल मदनपुरा में पुलिस की गश्त: मौके पर सुस्त, बाद में चुस्त

साधु-संतों की पावन नगरी वाराणसी में पिछले पखवाड़े श्मशान की-सी शांति व्याप्त थी. जिला प्रशासन ने जहां मामले की गंभीरता को भांपने में देर की, वहीं हिंदुओं और मुसलमानों ने बारी-बारी से मार-काट का नृशंस खेल खेला. सप्ताह की समाप्ति तक सांप्रदायिक हिंसा में मारे जाने वालों की संख्या 18 तक पहुंच गई.

गड़बड़ी की शुरुआत 8 नवंबर को काली प्रतिमा के विसर्जन के मौके पर हुई. 1977 से 1991 के बीच यहां हुए सात में से चार दंगे प्रतिमा विसर्जन के दौरान गड़बड़ी से ही हुए. इस तथ्य के बावजूद इस बार धार्मिक जुलूस को भीड़भाड़ वाले रास्तों से जाने दिया गया. यही नहीं, जुलूस के साथ पीएसी या किसी केंद्रीय सुरक्षा बल के जवान भी नहीं थे.

खतरे की घंटी तब सुनाई देने लगी जब जुलूस ने उकसाने वाले सांप्रदायिक नारे लगाने शुरू कर दिए. उसके बाद भाजपा पार्षद पुष्पनाथ शुक्ल के नेतृत्व में पटाखे फोड़ने शुरू किए तो उन्हें रोकने वाला कोई न था. मुसलमान बहुल क्षेत्र मदनपुरा के लोगों ने आपत्ति जताई तो कहा-सुनी शुरू हो गई और फिर हालात बेकाबू हो गए. इंका नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री श्यामलाल यादव ने कहा, "काली प्रतिमा के जुलूस में पटाखे आदि पहली बार फोडे गए. पहले यह परंपरा नहीं थी."

शहर में दंगों का इतिहास

1947: कई पूजास्थलों पर हमले.
अप्रैल 1967: मुहर्रम पर ताजिये के जुलूस के मार्ग को लेकर तनाव.
2 दिसंबर 1969: लाट भैरव मंदिर में पूजा-पाठ को लेकर झगड़ा.
23 अक्तूबर 1977: दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के दौरान रास्ते को लेकर विवाद.
12 दिसंबर 1979: मुहर्रम के दिन दोनों वर्गों के असामाजिक तत्वों में विवाद.
23 अक्तूबर 1985: दुर्गा प्रतिमा विसर्जन के अवसर पर विवाद.
13 अगस्त 1989: गौरीगंज क्षेत्र में एक बारात पर पुलिस फायरिंग.
18 मई 1991: बेनियाबाग में भाजपा की ओर से आयोजित शत्रुघ्न सिन्हा की चुनाव सभा में विस्फोट.
8 नवंबर 1991: काली प्रतिमा पर पथराव.

जुलूस के कुछ लोग तुरंत ही भागकर पास के गोदौलिया चौक पर जा पहुंचे और यह अफवाह उड़ा दी कि मुसलमानों ने मारपीट की है. फिर तो गोदौलिया और जंगमबाड़ी के हिंदुओं ने कहर बरपा दिया. पास के एक सिनेमाघर से बाहर निकलते लोगों से उनकी जाति-धर्म के बारे में पूछा गया और मुसलमानों को मौत के घाट उतार दिया गया. भगदड़ के दौरान किसी ने बिजली के तारों पर साइकिल की चेन फेंककर बिजली गुल कर दी. इससे मामला और भी गंभीर हो गया. हिंसा की इस चपेट में सात लोग मारे गए. वाराणसी के महापौर स्वालेह अंसारी का कहना है, "यह सब बाकायदा नियोजित ढंग से हुआ. पुलिस के जवान बेबस खड़े थे." भाजपा के युवा सभासद रामगोपाल मोहले का भी मानना है कि प्रशासन के ढीले होने से ही दंगा भड़का.

प्रशासन ने इन वारदातों से कोई सबक नहीं लिया. और 13 नवंबर को सात अन्य क्षेत्रों में कर्फ्यू में ढील दे दी. कर्फ्यू ढील की समाप्ति से आधा घंटा भर पहले ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: मसूर आलम

दंगे में मारे गए नौजवान मूसेराम की शोक संतप्त मां

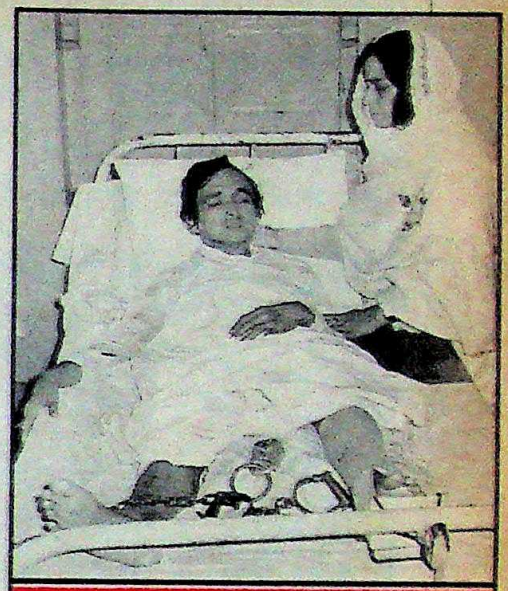

अस्पताल में डॉ. मोहसिन: बेड़ियां अब खुलीं

मुसलमानों ने धावा बोल दिया. मदनपुरा की संकरी गलियों में करीब 40 मुसलमानों ने हिंदू नाम वाले लोगों को जबरन खींचकर मार डाला. हिंसा के इस नए तांडव में 11 लोग मारे गए. पुलिस हाथ पर हाथ धरे बैठी रही. सजपा नेता और प्रदेश के पूर्व मंत्री शतरुद्ध प्रकाश कहते हैं, "पुलिस गांडे हवेली और जंगमबाड़ी में थी. बीच का इलाका एकदम खाली था, जहां खूनी खेल हुआ."

इससे भी अधिक बुरी बात यह हुई कि प्रशासन ने पूर्व पुलिस महानिदेशक और भाजपा सांसद श्रीशचंद्र दीक्षित को तो कर्फ्यूग्रस्त शहर में जाने की इजाजत दे दी लेकिन दूसरे नेताओं को इनकार कर दिया. अजित सिंह और उनके समर्थकों को दंगाग्रस्त इलाकों में घुसने से पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया. जब पीएसी ने मदनपुरा, रेवड़ी तालाब और दालमंडी इलाकों में दंगाइयों की खोज शुरू की तो तनाव और भी बढ़ गया. पत्थरों और बमों से लैस मुसलमानों ने छतों से पुलिस पर ही हमला कर दिया. पुलिस अधीक्षक जे.एन. पांडेय भी इस आक्रोश से बच नहीं सके.

दंगे में मारे गए 17 वर्षीय मूसेराम की लाश के पास एक सिपाही की टोपी मिलने के बाद पुलिस अधिकारियों को अंदेशा हो गया कि पुलिसकर्मी को भी घसीटकर ले जाया गया है. इस पर उनका रुख एकदम बदल गया. तलाशी के दौरान बंद दरवाजों को पुलिस ने कुल्हाड़ों और गैस कटर से काटकर घरों में प्रवेश किया.

फिर पुलिस की हिरासत में प्रसिद्ध स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. अनीस अंसारी की मौत ने खाई को और गहरा कर दिया. उनके भाई डॉ. मोहसिन के पैर में चोट आई और वे अभी अस्पताल में हैं. बुनकर रईस अंसारी के शब्दों में, "हमारा शक सच निकला. इस राज में तो हिंदू और सरकार के लोग हमें दबाएंगे ही." पर जिलाधिकारी सौरभचंद्र के मुताबिक, "हमारे अफसरों ने हमें बताया कि पुलिस पर बम फेंकने की शुरुआत डॉ. अनीस के घर से ही हुई." अनीस की मौत के बारे में उनका कहना है, "जब पुलिस दबिश देती है तो कुछ ज्यादतियां होती ही हैं."

दूसरे दौर के दंगे के लिए स्वालेह अंसारी पर आरोप लगाया गया जबकि अंसारी का कहना था कि उनकी छवि खराब करने के लिए उन्हें इसमें घसीटा जा रहा है.

कुछ भी हो, वाराणसी में हुए दंगों ने दंगामुक्त शासन देने के भाजपा मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के दावे को तो खोखला साबित किया ही, भविष्य के लिए भी कुछ अनिष्टकारी संकेत दिए हैं जो स्थानीय साड़ी व्यापारी शालिग्राम गुप्ता के इस बयान से उभरते हैं कि "क्या उन्हें (मुसलमानों को) उनके बहशीपन की सजा नहीं मिलनी चाहिए?"

—[illegible] और सियाराम यादव, वाराणसी में

मुहम्मद स्वालेह अंसारी

'मुझ पर आरोप सही नहीं'

वाराणसी के महापौर मुहम्मद स्वालेह अंसारी पर शहर में दंगों के दूसरे दौर को भड़काने का आरोप लगाया गया है, जिसे वे अपनी छवि खराब करने के लिए किया गया षड्यंत्र करार देते हैं. सियाराम यादव की उनसे हुई बातचीत के कुछ अंश.

- ***आरोप है कि दंगे के दौरान आपने सिर्फ मुस्लिम संप्रदाय के लोगों की खोज-खबर ली.***

गलत आरोप है. अस्पताल में मैंने हिंदू या मुसलमान, जो भी घायल थे, सबकी देखरेख की. जो मेरी हैसियत थी, किया. लेकिन पुलिस को आदेश देना मेरी हैसियत की बात नहीं थी.

- ***यह चर्चा पिछले दिनों आम थी कि हिंसक घटनाएं वही हुईं जहां आप लगातार बैठकें कर रहे थे.***

यह आरोप निराधार है. दरअसल, कुछ लोग नहीं चाहते कि 'काशी' में मेयर की कुर्सी पर स्वालेह अंसारी बैठे.

- ***वे कौन लोग हैं?***

महापौर पद के लिए मेरे खिलाफ एक ही दल ने अपना उम्मीदवार खड़ा किया था. वहां मुंह की खाने पर फिर वही लोग मेरे खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव ले आए. अब वही लोग ओछे ढंग से मेरी छवि खराब कर रहे हैं.

- ***दंगे के पीछे किन लोगों का हाथ रहा है?***

अब न्यायिक जांच हो रही है तो क्या कहूं.

- ***क्या आपको लगता है कि पुलिस ने ज्यादती की है?***

आप लोग खुद जाकर देखिए. मैं क्या कहूं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुंबई

माफिया से मुठभेड़

भाड़े के अनेक दूसरे बदमाशों को भी कंपकंपी छूटने लगी

इंडियन एक्सप्रेस

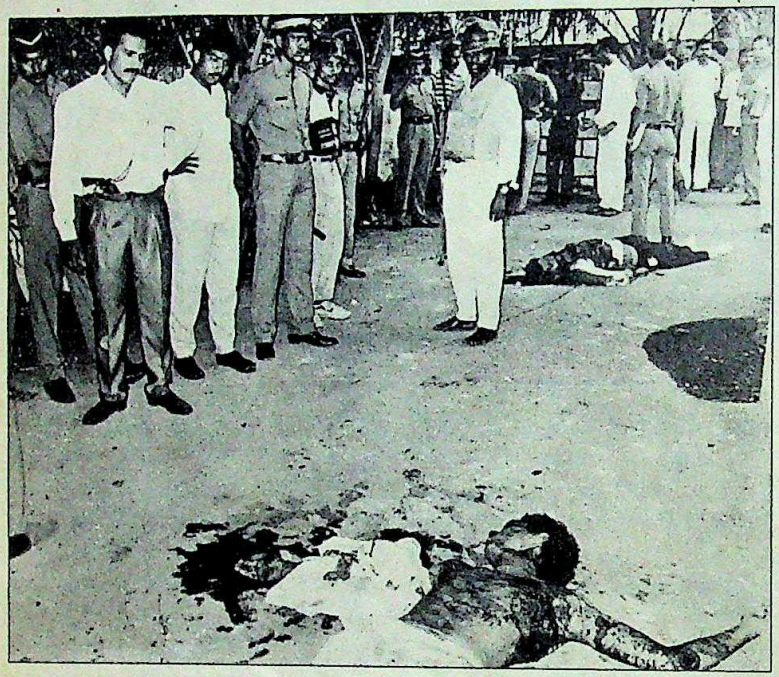

उत्तरी मुंबई के उपनगर अंधेरी की उच्च मध्यमवर्गीय लोखंडवाला कॉलोनी के निवासियों ने पिछले पखवाड़े तक बंदूकों की लड़ाई टीवी के परदे पर ही देखी थी. लेकिन शनिवार के दिन दोपहर बाद जब लोग वीडियो चालू कर ही रहे थे कि बंदूकों की गरजती आवाज टीवी से नहीं, खिड़की के बाहर से आ रही थी.

मारे गए अपराधीः दूसरों को चेतावनी

और यह सिलसिला चार घंटे जारी रहा. मुंबई की सबसे खूनी पुलिस-माफिया मुठभेड़ों में से एक मानी जाने वाली इस मुठभेड़ में 500 पुलिसकर्मियों ने भाग लिया. इसमें दुबई स्थित माफिया सरगना दाऊद इब्राहिम के लिए काम करने वाले सात खतरनाक बदमाश मारे गए. इनमें कुख्यात माया डोलास और दिलीप बुवा भी शामिल थे जो भाड़े पर हत्याएं करते थे. सात पुलिसवाले घायल हुए. मुठभेड़ के दौरान दो एके-47 राइफलों सहित कई खतरनाक हथियार भी बरामद हुए. पुलिस कमिश्नर एस. राममूर्ति ने कहा, "मुंबई पुलिस कई वर्ष से इन गिरोहों से टक्कर ले रही है लेकिन इस कार्रवाई का स्पष्ट अंत दिखा. मैं तो यह जोर देकर कहूंगा कि दाऊद गिरोह को परास्त किया जा सकता है."

उत्तरी मुंबई के अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर आफताब अहमद खां को सूचना मिली कि डोलास और बुवा लोखंडवाला कॉलोनी के फ्लैट में छिपे हैं तो उन्होंने तुरंत आतंकवाद निरोधक दस्ते को सक्रिय किया. मुठभेड़ में दोनों अपराधी मारे गए. रोजाना अपहरण और हत्या की खबरों के बीच जीने वाले इस शहर ने राहत की सांस ली और खां उसके चहेते बन गए. मुठभेड़ में मारे गए सभी बदमाश जबरदस्ती रकम ऐंठने वाले धंधे से जुड़े थे और थोड़ी देर बाद ही कुछ भवन निर्माताओं के अपहरण के लिए निकलने वाले थे.

पिछले कुछ हफ्तों में मुंबई में फिरौती के लिए कई सनसनीखेज अपहरण हुए हैं परंतु इसमें संदेह नहीं कि शनिवार की मुठभेड़ से भाड़े के उन बदमाशों में कंपकंपी छूट गई होगी जो दादागीरी के बल पर जबरदस्ती रकम ऐंठने की योजना बना रहे होंगे.

इस बीच बंदूकें सिर्फ टीवी के परदे पर ही नहीं, उसके बाहर भी गरजती रहीं क्योंकि पुलिस इन हथियारबंद गिरोहों के खिलाफ और कार्रवाई करने जा रही है.

—एम. एम.

आफताब अहमद खां

बड़ा दांव

मुखपृष्ठ की तस्वीर ने ही सब कुछ कह दिया. मृत पड़े बदमाश के सिरहाने पर उत्तरी मुंबई के अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर 50 वर्षीय आफताब अहमद खां खड़े थे.

लोखंडवाला ऑपरेशन खां की बड़ी सफलता थी. पिछले साल अक्तूबर में पद भार संभालने वाला यह तोंदियल पुलिस अफसर इस साल जनवरी में उस समय सुर्खियों में आया जब उसने और उसके आतंकवाद निरोधक दस्ते ने बडोदरा में एक अड्डे पर छापा मारकर चार सिख आतंकवादियों का सफाया कर दिया था. बाद में खां ने दाऊद इब्राहिम के प्रतिद्वंद्वी अरुण गावली के

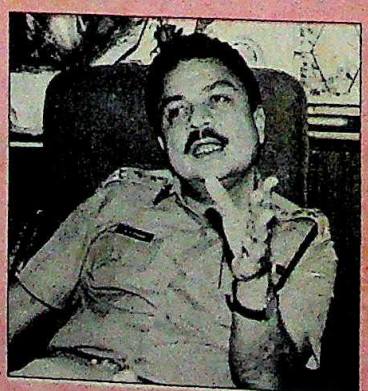

खांः घर-घर चर्चित

गिरोह के अड्डे पर छापा मारा और चार बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया.

लोखंडवाला की गोलीबारी के बाद बंदियों को उठाकर न ले आने के लिए खां की आलोचना हो रही है. लेकिन वे कहते हैं, "हम आखिर क्या कर सकते थे? उन लोगों ने हमारा स्वागत गोलियों से किया." उनका कहना है कि अब लोग खुद ही माफिया जगत के बारे में जानकारी दे रहे हैं. यदि खां को उनकी शैली के अनुसार काम करने दिया गया तो दूसरे अपराधियों के लिए भी खतरे की घंटी बज सकती है.

—एम. राहत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो विजय क्रांति

द्वारिकाधीश मंदिर

नया धर्मयुद्ध

जमीन-जायदाद को लेकर विवाद

करोड़ों वैष्णव श्रद्धालुओं के सर्वोच्च केंद्रों में गिना जाने वाला उत्तर भारत का सबसे धनी मथुरा का द्वारिकाधीश मंदिर पिछले पखवाड़े एक नए विवाद का केंद्र बन गया और अदालत की दहलीज तक भी जा पहुंचा.

एक मोटे अनुमान के अनुसार मंदिर के तोशाखाने में संदूकों में बंद आभूषणों, हिंडोलों और ठाकुर जी के इस्तेमाल की दूसरी सामग्री की मौजूदा कीमत लगभग 100 करोड़ रु. है. मंदिर के स्वामित्व वाली जमीन-जायदाद की ताजा बाजार कीमत भी 100 करोड़ रु. से कम नहीं है. सालाना चढ़ावे और दान की मात्रा भी परस्पर विरोधी दावों के मुताबिक दस लाख रु. से कुछ करोड़ रु. के बीच है. मंदिर की जमीन-जायदाद से मिलने वाली किराए की नियमित आमदनी भी कम नहीं है. इसमें कई रिहायशी मकान, महंगे इलाकों की जमीनें और एक पुलिस चौकी का भवन भी शामिल है.

असकुंडा घाट पर 1830 में निर्मित इस मंदिर में ठाकुर द्वारिकाधीश जी की प्रतिमा है जिसे एक स्थानीय सेठ, 47 वर्षीय विजय कुमार के पूर्वज ग्वालियर से लाए थे. मंदिर बनाने वाले सेठ लक्ष्मीचंद को बचपन में ही इस परिवार ने अपने एक जैन मुनीम से गोद लिया था. बाद में 1873 में सेठ परिवार ने मंदिर की पूजा-अर्चना और व्यवस्था का काम कांकरोली (राजस्थान) के द्वारिकाधीश मंदिर के गोस्वामी गिरधारीलाल को सौंप दिया. इस बारे में हुई सहमति को एक कानूनी दस्तावेज 'दस्तूर अमल' में दर्ज किया गया था. इसके मुताबिक मंदिर के तोशाखाने के बाहरी दरवाजों पर सेठ और गोस्वामी के साझे ताले रहते हैं जबकि अंदर रखे संदूकों पर सेठ के ताले हैं.

नए शुरू हुए महासंग्राम में एक ओर सेठ विजय कुमार हैं, और दूसरी ओर मंदिर के 52 वर्षीय 'शिवायत' गोस्वामी दृजेश कुमार हैं. 23 नवंबर को मामला स्थानीय सिविल जज की अदालत में गया. मजेदार बात यह है कि दोनों पक्ष 'दस्तूर अमल' को गायब करने का आरोप एक-दूसरे पर लगा रहे हैं.

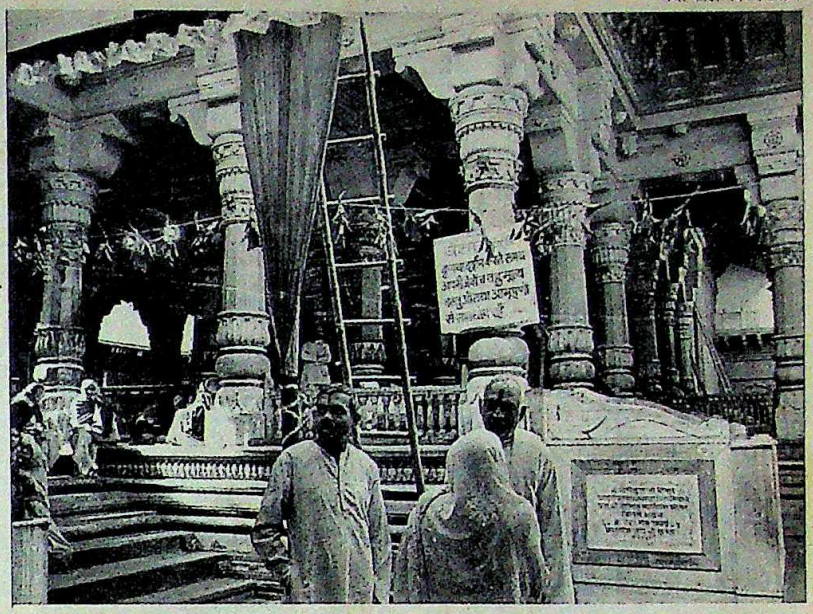

मथुरा का विख्यात मंदिरः विवाद में फंसा

कानपुर में एक होटल का संचालन करने वाले और स्थानीय कांग्रेसी संगठन में गहरी पैठ रखने वाले सेठ का 'इंडिया टुडे' से कहना था, "मेरे पूर्वजों ने गोस्वामी जी के पुरखों को सिर्फ इसलिए मंदिर के प्रबंध की जिम्मेदारी सौंपी थी कि ठाकुर जी की विधिवत तरीके से पूजा-अर्चना और सेवा हो सके. लेकिन गोस्वामी जी तो अपने मुंहलगे लोगों के हाथ मंदिर को सौंपकर खुद कांकरोली में जमे रहते हैं. ये सब लोग मिलकर संपत्ति को बरबाद कर रहे हैं." अदालत में दर्ज याचिका में ठाकुर जी की ठुड्डी में लगे असली हीरे और दूसरे गहनों की चोरी, मंदिर की करोड़ों रु. की संपत्ति का चोरी-छिपे हस्तांतरण और गोलक में पैसा बटोरने से लेकर संस्थापकों को भोग न भेजने जैसे अनेक आरोप हैं.

दूसरी ओर गोस्वामी इस पूरे विवाद को अमान्य करने की मुद्रा में कहते हैं, "सेठ विजय कुमार को मंदिर के बारे में बोलने का कोई अधिकार नहीं है. वे वैष्णव नहीं, जैन हैं. इस मंदिर पर भला किसी गैर-वैष्णव का अधिकार कैसे हो सकता है?" लेकिन मंदिर के तोशाखाने से गहनों और दूसरी बहुमूल्य चीजों की चोरी के आरोप के जवाब में वे कहते हैं, "तोशाखाने से हमारा क्या वास्ता? वहां के संदूकों की चाबियां तो सेठ जी के ही पास रहती हैं. हमारा तो तोशाखाने के दरवाजे पर सिर्फ साझा ताला ही रहता है." मंदिर की प्रतिमाओं के बारे में यह स्वीकार करते हुए कि ठाकुर जी और इष्ट देवों की मूर्तियों की सजावट में नकली गहनों का भी इस्तेमाल किया जा रहा है, लेकिन जवाबी आरोप लगाते हुए वे कहते हैं, "जब तोशाखाने से हमें ठाकुर जी के शृंगार के असली गहने और छप्पन-भोग के लिए सोने के थाल नहीं दिए जाते तो हम असली गहनों के लिए पैसा कहां से लाएं?"

लेकिन मंदिर के कर्णधारों में संपत्ति को लेकर चल रहे विवाद से अनभिज्ञ हर रोज हजारों की संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में कोई अंतर नहीं आया है.

—विजय क्रांति, मथुरा में

सेठ विजय कुमार; और गोस्वामी (दाएं)

अरबों रु. की संपत्ति के विवाद में एक ओर मंदिर के निर्माता और दूसरी ओर पुजारी हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-45

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

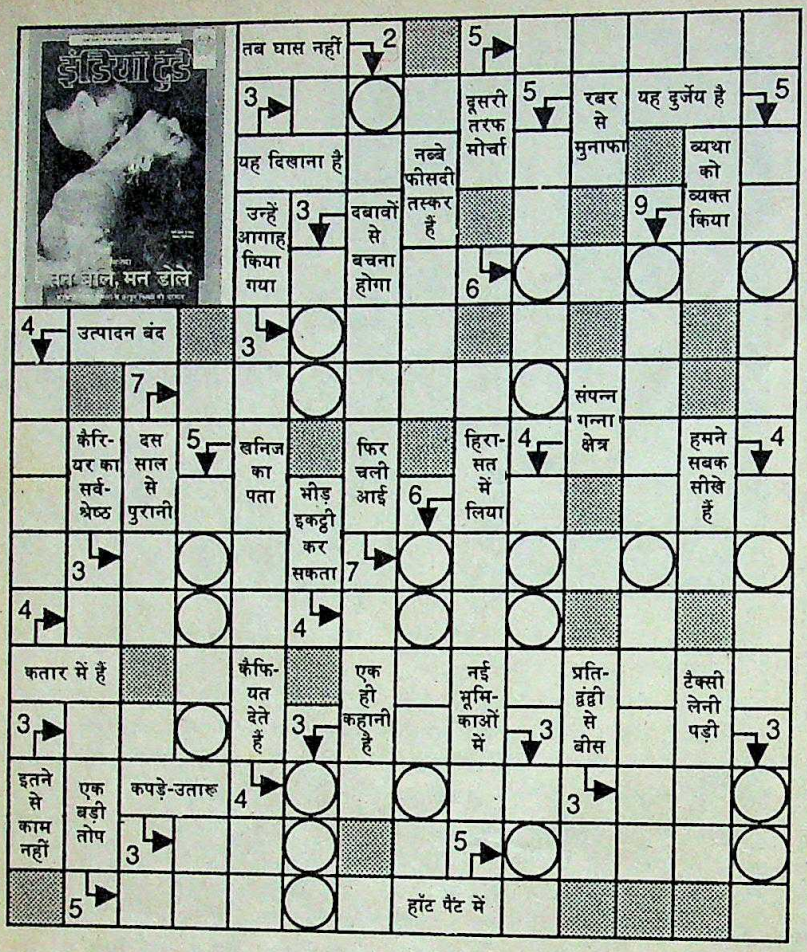

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-45, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि
20 दिसंबर 1991
उत्तर के लिए देखें:
1-15 जनवरी 1992 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 15 नवंबर 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुन: होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

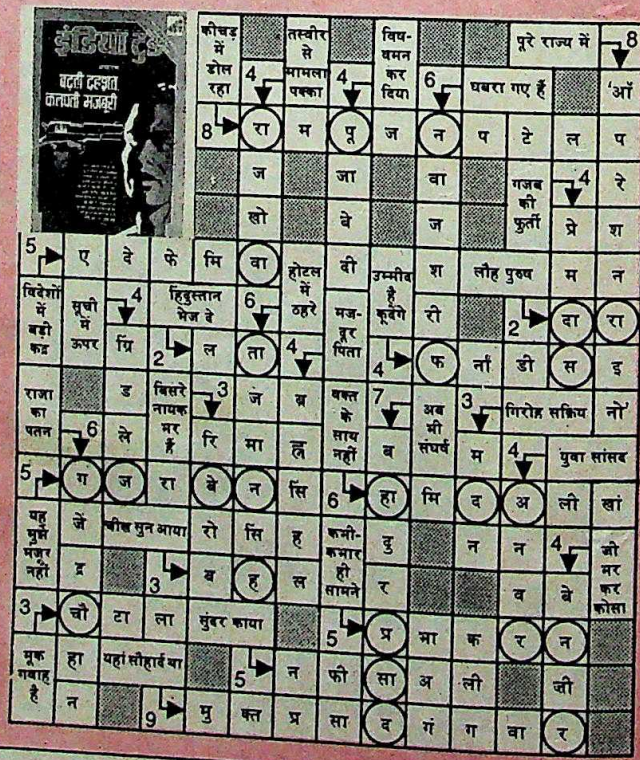

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-43 का हल

पुरस्कार विजेता

ईश्वरलाल संगतानी 'नितेश'
द्वारा—एम.पी. होटल
श्री हनुमंत भवन
बालोतरा (राज.)
पिन-344022

इस वर्ग पहेली के जवाब में हमें कुल 1396 प्रविष्टियां प्राप्त हुईं पर सर्वशुद्ध हल मात्र एक ही निकला है. विजेता को बधाई सहित 500 रु. का चेक भेजा जा रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ सांसदों ने अब आईने के सामने बोलने का अभ्यास शुरू कर दिया है. वजह: दिसंबर में सत्र के प्रश्नकाल का प्रसारण होने जा रहा है. मंडी हाउस के अधिकारियों का मानना है कि कैमरे में अध्यक्ष के आसन के सामने कूदने की बाबत सांसद दो बार सोचेंगे. इंका प्रवक्ता पी.पी. ठाकुर को उम्मीद है कि हंगामा करने वालों पर इसका उल्टा असर होगा.'' पर जनता दल के जयपाल रेड्डी का मानना है कि ''कैमरे का ध्यान खींचने वाले और ज्यादा अमर्यादित होंगे.''

कार्यवाही का सीधा प्रसारण तो होगा नहीं, इसलिए ज्यादा रंगीन भाषा और भंगिमाओं को संपादन की मेज पर काट दिया जाएगा.

पिछले साल जब अयोध्या विवाद के केंद्र में था और सांप्रदायिक घृणा चरम पर थी तो दूरदर्शन सईद नकवी की सांप्रदायिक सद्भाव वाली छोटी-छोटी फिल्में नियमित रूप से दिखा रहा था. अचानक इनका दिखाया जाना बंद कर दिया गया. नकवी ने अभी-अभी एक दृश्यस्पर्शी फिल्म 'सूफीवाद और भारत की मिश्रित संस्कृति' बनाई है जिसमें इन छोटी फिल्मों का इस्तेमाल तो किया ही गया है और भी कई चीजें जोड़ी गई हैं. 'इस भारत में हम रहते हैं,' फिल्म के जरिए उसकी यात्रा कराते हुए हमें यह दिखाया गया है यह सद्भावना अभी भी जिंदा है और अच्छी तरह जिंदा है. यह फिल्म दूरदर्शन द्वारा दिखाई जाने वाली प्रोपेगैंडा फिल्मों से ज्यादा असरदार साबित होगी. इस फिल्म का एक संदेश यह भी है कि अयोध्या का मंदिर देश का एकमात्र मंदिर नहीं है.

सवेरे संस्कृति, शाम को संस्कृति और रात के खाने के बाद संस्कृति. कभी-कभी लगता है कि दूरदर्शन को 'न' कहना नहीं आता. सिद्धार्थ काक की 'सुरभि' को और छह कड़ियां दिखाने की इजाजत मिल गई है. लेकिन चूंकि मंडी हाउस शृंखला का आधा हिस्सा पहले ही सीरीआई-टीवी को देने का वादा कर चुका था, सो सुरभि को सवेरे का समय दे दिया गया है, और शाम का समय 'ताना-बाना' को. नई टीम में शशि कुमार और भारती शर्मा होंगी. 'ताना-बाना' में संस्कृति की गहराइयों का विवरण होगा. इसके साथ कई विद्वान जुड़े हैं.

टीपू सुलतान की तरह ही दक्षिण में एक और साहसी और प्रतापी राजा हुए थे मुदरा नायकन. अभिनेता कमल हासन इन्हीं के जीवन और संघर्षों पर 21 एपीसोड का एक सीरियल बनाने जा रहे हैं. इसमें वे खुद मुदरा नायकन की भूमिका तो कर ही रहे हैं, निर्देशन भी कर रहे हैं.

चुपके-चुपके उन्होंने इसका पायलट भी बना लिया है. अपने सिवा बाकी सभी कलाकार उन्होंने नए लिए हैं. इस सीरियल को अभी मंत्रालय स्तर पर परखा जा रहा है. 'मुदरा नायकन' के निर्माता राजन लाल और निर्देशक कमल हासन दोनों ही भागदौड़ कर रहे हैं कि इस सीरियल को जल्दी और अच्छे समय पर शुरू कराया जा सके.

अब देखना यह है कि संभवत: 'टीपू सुलतान' की प्रेरणा से बनने वाला यह ऐतिहासिक सीरियल कौन सा नया इतिहास रचता है.

सीरियल 'आमने-सामने' को लेकर एक दूरदर्शन अधिकारी का कहना है कि यहां हमारे चाहने या न चाहने से कुछ नहीं होता. हम लोगों ने 'आमने-सामने' को शुरू न करने की सलाह दी थी क्योंकि इसके इंटरव्यू में बासीपन की जबरदस्त सड़ांध है.

विपिन हांडा का 'आमने-सामने' इस समय का सबसे बड़ा मजाक है. इसमें रामानंद सागर से 'रामायण' सीरियल की बात की जाती है, जबकि उनका 'कृष्णा' चर्चा में है. दीपिका शादी न करने की बात कहती हैं पर हकीकत में वह दो हफ्ते बाद शादी कर लेती हैं. अलका याज्ञिक को उनकी शादी के लिए मुबारकबाद दी जाती है जबकि वह दो बच्चों की मां बन चुकी हैं.

यह ठीक है कि ये सभी इंटरव्यू तीन बरस पहले लिए गए थे. लेकिन विपिन और दूरदर्शन की आपसी खींचातानी का नतीजा दर्शक क्यों भुगतें?

—मधु जैन और प्रदीप सरदाना

प्रसून भौमिक

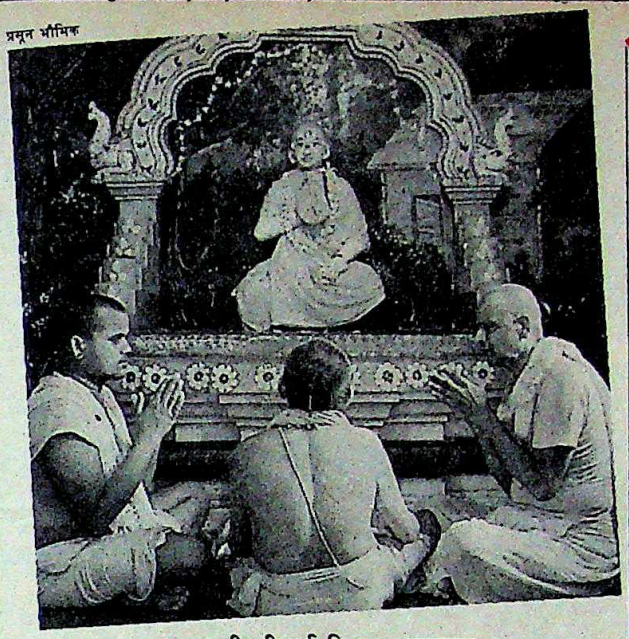

▲ नकवी की नई फिल्म: असरदार

रेखाचित्र: जयंतो

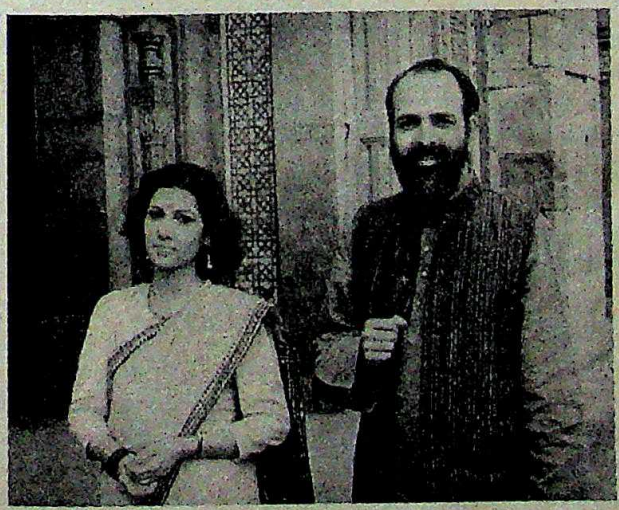

▲ भारती शर्मा और शशि: संस्कृति की सरमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिशा

सार्थक संकेत

सई परांजपे की नई फिल्म में यथार्थ का बारीक चित्रण

"यह बंबई शहर शेर की गुफा है. इसकी ओर आने वाले जानवरों के पैरों के निशान ही दिखते हैं, लौटने वाले पैरों के निशान नहीं"— फिल्म 'दिशा' का यह संवाद अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है. सई परांजपे की यह फिल्म इन्हीं निशानों की पहचान करती और कराती है. और यह काम वह बहुत ही सहजता से करती है. यह सहजता ही सई परांजपे की फिल्मों की विशेषता रही है.

गांव से शहर की ओर पलायन या बंबई के महानगरीय जीवन की त्रासदियों पर कई फिल्में बन चुकी हैं. मगर 'दिशा' कुछ मामलों में उन सबसे भिन्न है. इसकी कहानी मुख्यतः एक गांव के इर्द-गिर्द बुनी गई है और यह गांव बीच में छूट नहीं जाता, बार-बार प्रकट होता है अपने कड़वे यथार्थों के साथ.

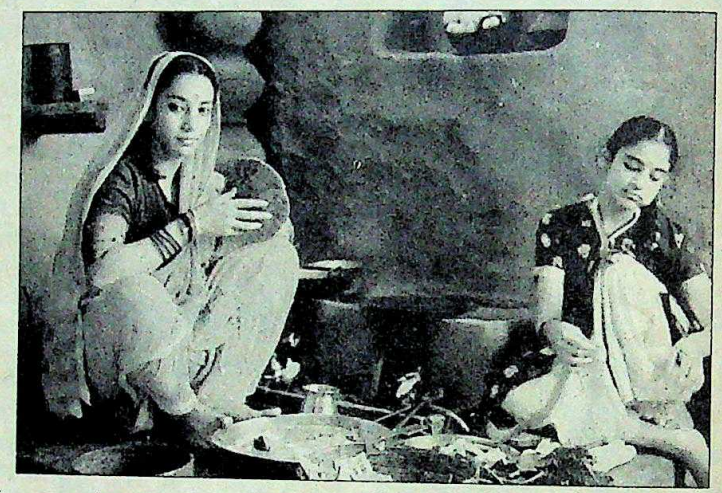

यह फिल्म गांव से शहर आने वाले पैरों के निशानों की पहचान बड़ी सहजता से करती और कराती है

बबई से कुछ दूरी पर बसे इस सूखाग्रस्त बकुरी गांव में नौजवानों के लिए रोजगार नहीं है. इसलिए जाहिर है वे बस पकड़ कर बंबई की राह लेते हैं. मगर इसी गांव में एक किसान है परशा (ओमपुरी), जो अपनी पथरीली जमीन में सोलह वर्षों से कुआं खोद रहा है. उसका बेरोजगार भाई सोमा (रघुवीर यादव) बंबई चला जाता है और कपड़ा मिल मजदूर बन जाता है. उसका दोस्त वसंत (नाना पाटेकर) भी अपनी नवविवाहिता पत्नी के सामने बेरोजगार रहने की शर्म से बचने के लिए बंबई चला जाता है. पीछे उसकी पत्नी पास के गांव में बीड़ी फैक्टरी में मजदूरी करके बीमार ससुर और अपना जीवन चलाती है. मगर फैक्टरी के मुंशी की वहशी नजरें उस पर रहती हैं. इस बीच वसंत अपनी पत्नी को बंबई की हवा भी खिलाकर वापस गांव भेज देता है. और अचानक एक दिन पिता की चिट्ठी पर गांव पहुंचता है. वहां अपने घर पर मुंशी के असर को देख सन्न रह जाता है.

इस बीच परशा के कुएं में पानी निकल आता है और उसकी चिट्ठी पाकर उसका भाई सोमा गांव लौट आता है. मगर वसंत वापस बंबई पहुंच जाता है, बंबई का हमेशा के लिए होकर रहने को.

कहानी कुल मिलाकर इतनी है. मगर यह फिल्म पहले दृश्य से ही समाज की दशा और दिशा पर कटाक्ष करने लगती है. परशा के बच्चों का नाम अमिताभ, जितेंद्र और शर्मिला रखना, और बीमार बाप का बेटे शादी पर पूरे गांव प्रभावित करने के लिए हजार रु. कर्ज लेना, ग्रामीण समाज का यथा प्रस्तुत करता है, तो बंबई की एक खोली में खूंटियों पर टंगे सोने भर की जगह पर, शिफ्टों में जीवन जीते मिल मजदूरों का भी चित्रण किया गया है. मगर ये परेशानहाल होते हुए भी जीवंत आते हैं.

पात्रों में पाटेकर, रघुवीर यादव ओमपुरी और शबाना आजमी सभी अपनी भूमिकाओं के साथ करते दिखते हैं.

पूरी फिल्म में और शहर के दृश्य तरह बारी-बारी से पर पर आते हैं संपादन की चुस्ती दिखती ही है, गांव शहर के विरोधाभासों ज्यादा एक साम्यता नजर आती है. सामा इस मायने में कि गरीब का जीवन गांव शहर में लगभग समा ही है. शहर में अपने बिछड़े जोड़े को पहु ही रात में खो इसलिए खाली करनी पड़ती है कि उस असली मालिक का परिवार आ धमकता है तो उधर गांव में दमे से पीड़ित बाप को अपने नवविवाहित बेटे-बहू के लिए छोड़कर तबेले में सोना पड़ता है. शहर में अगर मिल में काम करने के लिए पास बनवाने की परेशानी झेलनी पड़ती तो गांव में बीड़ी फैक्टरी में काम वाली युवा स्त्री को मुंशी की लालची झेलनी पड़ती हैं.

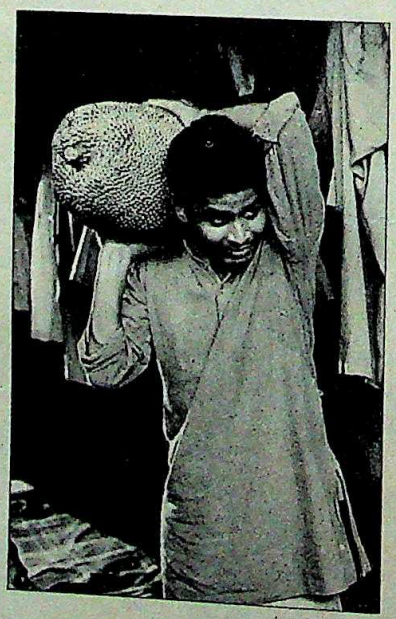

शबाना (ऊपर): संवेदनशील घरवाली; यादव: शहर में, मगर गांव से लगाव

सबसे मजबूत है फिल्म का अंत. गांव भाई की मेहनत से कुएं में निकले पानी समाचार पाकर सोमा का गांव और गांव से हताश होकर वसंत का शहर लौटना अपने आप में फिल्म के पूरे को स्पष्ट कर देता है. मेहनत के महत्व प्रतीकात्मक रूप से रेखांकित किया गया है तो समाज में बह रही परस्पर विरोधी धाराओं को भी उजागर किया गया है आदर्शवादी स्थापनाओं से बचने की कोशिश ही इसकी जान है. —अशोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

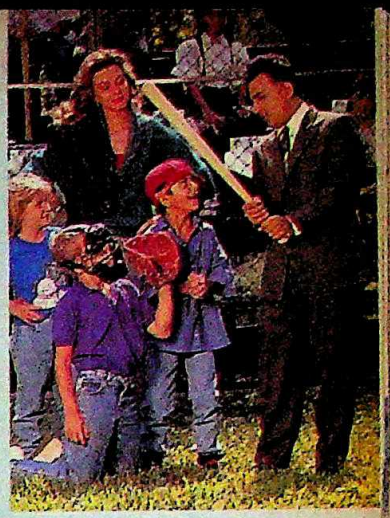

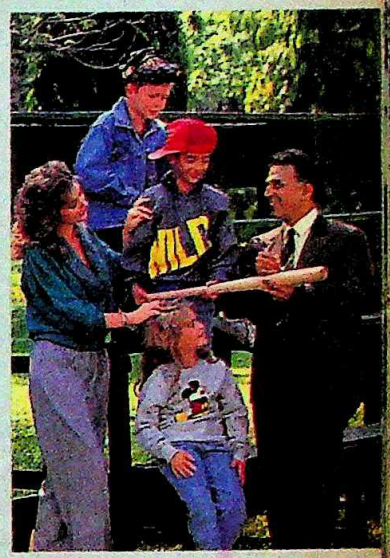

• GROOVO LOOK • TREND SETTER • MATCH MAKER SATINS • HI FASHIONS SUITINGS

dinesh

THE CHOICE OF LEADING FASHION HOUSES. INTERNATIONALLY

AUTHORISED DEALERS: **RANCHI:** R.C. FIRAYALAL & CO. • KASHMIR VASTRALAYA COLLECTIONS • MANGAL DEEP • VARIETY SHRIMAN SRIMATI • VIJAY KUMAR & BINA VASTRALAY • RAJ SONS • **GAYA:** SWADESHI VASTRALAYA • RAJESH STORES • VARIETY BIHAR FANCY STORES • **RAMGARH CANTT:** GUPTA CLOTH STORES • GOYAL FANCY CLOTH STORES.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(ITH/91/10)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्र प्रदेश के बुनकर

जीवन की टूटती डोर

सरकारी नीतियों में परिवर्तन, और लापरवाही के कारण आंध्र प्रदेश के 30 लाख हथकरघा मजदूर भूखों मरने के कगार पर

—आलेख: **सौरिश भट्टाचार्य,** और फोटो: **शरद सक्सेना,** चिराला और तेनाली में

उम्मीद की कोई किरण थुम्मा रतैया को नजर नहीं आती. दो महीने से ऊपर हो गए हैं जब उसकी 24 वर्षीया बीवी राधा एक जीती-जागती कामकाजी महिला से सरकारी फाइलों में दर्ज महज एक आंकड़ा भर बन गई थी. और आज भी स्थिति वही है. आंध्र प्रदेश के विख्यात हथकरघा उद्योग की बदहाली के साथ जो 60 कारीगर भगवान को प्यारे हो गए उनमें राधा भी एक थी. लेकिन अब राज्य सरकार राधा को इस कारोबार के चौपट होने के चलते भुखमरी का शिकार हुआ नहीं मानती. उसके अनुसार राधा "खराब स्वास्थ्य और कुपोषण" के कारण मरी.

प्रकाशम जिले के चिराला मंडल के युरुपलेम गांव के 30 वर्षीय रतैया को, जो धागे की पॉलिश करता था, पिछले तीन महीने से कोई काम या भरपेट भोजन नहीं मिला है. वह आसपास के घरों से भीख मांग लाता है और दो बच्चों और 70 साल की बूढ़ी मां के खाने के बाद अगर कुछ बच गया तभी वह खाता है. अपने झोंपड़े में अपने मरणासन्न बच्चे को गोद उठाए रतैया पूछता है, "क्या सरकार से कोई मदद नहीं मिलेगी?"

लेकिन सरकारी नीतियों में बदलाव ने ही रतैया और प्रदेश के 30 लाख बुनकरों की यह हालत की है और उन्हें धीरे-धीरे मौत के मुंह में समाते जाने को मजबूर किया है. पहला प्रहार तो राज्य सरकार के समाज कल्याण विभाग द्वारा 12 मार्च को जारी आदेश संख्या 168 से हुआ. इसके जरिए राज्य सरकार के 1983 के उस आदेश को बदल दिया गया जिसमें वर्दी और दफ्तर की सजावट वगैरह के लिए हथकरघा का कपड़ा खरीदना अनिवार्य कर दिया गया था. लेकिन नए आदेश के बारे में जनार्दन रेड्डी सरकार की कैफियत है, राज्य के कर्मचारी कपड़े के खराब स्तर के बारे में शिकायत कर रहे थे.

रघुनाथ राव
(युरुपलेम का बुनकर)

राव को 'आप्को' ने तीन महीने से पैसा नहीं दिया है. अभी पिछले दिनों उसकी पत्नी नौ महीने के गर्भ के साथ भुखमरी के कारण मौत की शिकार हो गई

इस आदेश का असर भयावह हुआ. आंध्र प्रदेश राज्य बुनकर सहकारी समिति (आप्को) और राज्य कपड़ा विकास निगम (आप्टेक्स) के गोदामों में 22 करोड़ रु. का कपड़ा जमा हो गया. इन दो संगठनों पर आश्रित 10 लाख बुनकरों को चार महीने से अधिक समय की मजदूरी नहीं मिली. एकदम कमजोर हो गए युरुपलेम के बुनकर 28 वर्षीय रघुनाथ राव, जिनकी पत्नी नौ माह के गर्भ के साथ ही भुखमरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब समय हो फ़र्नीचर की पॉलिश का— लाइए टचवुड.

फ़र्नीचर बोल नहीं सकते तो क्या हुआ. एक बार देखते ही पता चल जाता है किसे पॉलिश की ज़रूरत है, किसे नहीं. और फिर उस खूबसूरत फ़र्नीचर की भी क्या शान जो बेजान सा पड़ा रहे! इसलिए अगली बार जब आप अपने घर में पेन्ट करवाएं तब फ़र्नीचर को भी ज़रूर पॉलिश करवाएं—टचवुड़ से.

टचवुड को लगाना इतना आसान है कि इसके लिए किसी पॉलिश वाले को बुलाने की ज़रूरत नहीं पड़ती. आपका पेन्टर ही इसे ब्रश से लगा सकता है.

जानते हैं, टचवुड लगा फ़र्नीचर सालों साल नए जैसा कैसे बना रहता है? वो इसलिए क्योंकि इसमें है पॉलीयूरिथेन जो फ़र्नीचर को मज़बूती देता है, दाग-धब्बों, निशान और खरोचों से बचाए रखता है. अब चाहे उसपर गरम-गरम चाय गिरे या कोई फूलदान रगड़ खाए. टचवुड लगे फ़र्नीचर को ज़रा भी डर नहीं!!

टचवुड की ग्लॉस फ़िनिश के चमकीले रूप को तो लाखों में पहचाना जा सकता है. पर अगर आप चमकीली फ़िनिश के शौकीन नहीं हैं तो इस्तेमाल करिए इसकी मैट फ़िनिश.अब टचवुड आपका है. आप चाहें तो मैट और ग्लॉस फ़िनिश को मिलाकर भी अपनी पसन्द का रूप तैयार कर सकते हैं. तो फ़र्नीचर की बात मानकर, अब उसके लिए लाइए – टचवुड.

अपने पेन्टर से लगवाइए.

फ़र्नीचर में जान डाल दे, खूबसूरती से.

कृपया मुझे, टचवुड की सालों साल चलती खूबसूरती के बारे में एक मुफ़्त पुस्तिका भेजिए.

नाम: _____

पता: _____

मुफ़्त

IT4

भेजिए: एशियन पेन्ट्स
टचवुड विभाग, पोस्ट बॉक्स नं. 11701, बम्बई 400 021.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

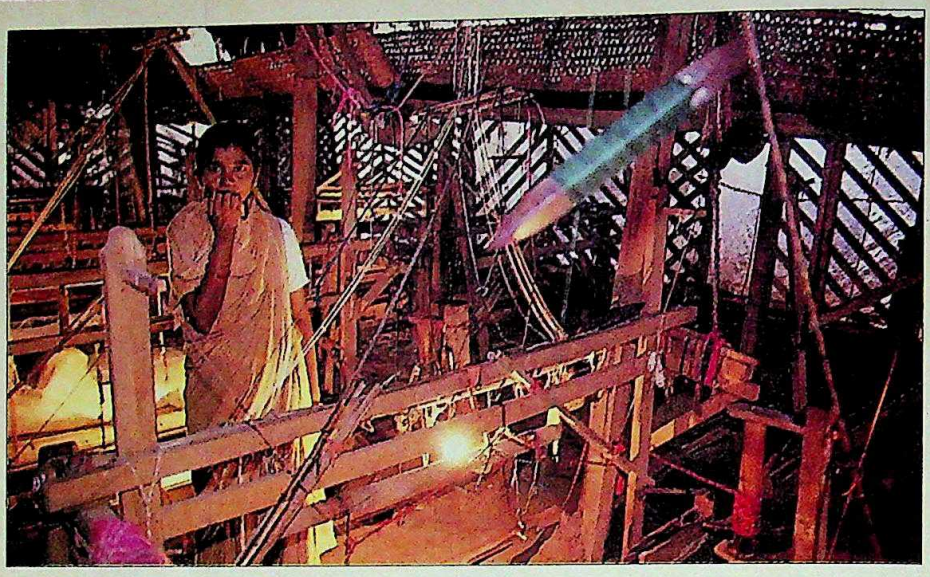

वेंकटेश्वरम्मा (मु... में बाहर से आई...

सरकार से मिलने वाले पांच किलो चा... पर उसका परिवार किसी तरह जिंदा है मगर उसकी शिकायत है कि इस चावल में भी कंकड़... पत्थर भरा होता है

की शिकार हो गई, कहते हैं, "आप्को के मैनेजर कहते रहते हैं, 'कल आना'. हम यह बात पिछले तीन महीनों से सुन रहे हैं."

अपने इस आदेश के असर को समझ पाने में राज्य सरकार को छह महीने लग गए. और उसकी नींद भी तब खुली जब तेलुगु देशम के प्रदेश सचिव और आप्को के पूर्व अध्यक्ष रुमंद रामचंद्रैया के नेतृत्व में हथकरघा बुनकर समन्वय समिति ने आंदोलन किया. 28 अक्तूबर को मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि राज्य सरकार बुनकरों के 22 करोड़ रु. के बकाये की दो-तिहाई रकम जल्दी ही जारी करेगी; यह विवादास्पद आदेश वापस लिया जाएगा; बुनकरों का सामूहिक बीमा कराया जाएगा; उनके लिए वृद्धावस्था पेंशन की व्यवस्था की जाएगी और बुनकरों के परिवारों को अपने खर्च के लिए एक-एक हजार रुपए के कर्ज कम ब्याज पर दिए जाएंगे. लेकिन बुनकर इन घोषणाओं पर अमल होने के इंतजार में हैं.

विश्वप्रसिद्ध पोचमपल्ली रेशमी साड़ियां बेचने वाले सहकारी संगठन के प्रबंधक एस.एन. दास भी कहते हैं, "सरकार ने कोई पैसा नहीं दिया है. अगर यही स्थिति रही तो यह पूरा उद्योग बैठ जाएगा." इसी घोर निराशा में चार बुनकरों ने आत्महत्या कर ली. चिराला से 2 किमी दूर सिंडिकेट बैंक बुनकर कॉलोनी के 33 वर्षीय कटक्कम लक्ष्मीनारायण भी ऐसे ही बुनकर थे. तीन महीने से अधिक समय से बेकार बैठे लक्ष्मीनारायण ने धागों से ही एक रस्सी बना ली और करघे के पास ही उसके फंदे से झूलकर जान दे दी.

राज्य सरकार के इस रवैये के अलावा केंद्रीय बजट ने जले पर नमक छिड़कने का काम किया. बजट घाटे को कम करने को बेचैन सरकार ने बुनकर सहकारी समितियों को दिए जाने वाले गुंडी के सूत पर 25 फीसदी सब्सिडी को वापस लेते हुए उस पर 7 फीसदी कर ठोक दिया. जनता कपड़े वाली योजना में भी फीसदी की कमी कर दी केंद्र की देखादेखी सरकार ने भी 40 गुना पर से अपनी सब्सिडी वापस ले ली जनता कपड़ा खरीदने का अपना कोटा 50 फीसदी कम कर दिया. पहले मुश्किल में फंसे इस उद्योग के लिए ये घातक ही साबित हुए.

वित्तमंत्री मनमोहन सिंह के 'सब्सिडी बंद' मंत्र के चलते सूत की कीमतें आ... छूने लगीं और इनके निर्यात ने बाजार... इनकी भारी कमी पैदा कर दी. बजट ने... की कीमत बढ़ा दी. दास कहते... "पोचमपल्ली सहकारी संगठन से जुड़े... के पिछले 20 वर्षों के दौरान मैंने इ... भारी बढ़ोतरी कभी नहीं देखी थी."

गांव के स्कूल, शिशु मंदिर पर भी... बदहाली की मार पड़ी है. पोचमपल्ली... बुनकर इस स्कूल में पढ़ रहे अपने बच्चों... फीस, जो 12 रु. से 35 रु. तक है, नहीं... रहे हैं. तेलुगु और समाजशास्त्र के अध्या... एस. सत्य नारायण कहते हैं, "पूरा...

प्रियलक्ष्मी (भट्टीप्रोलु के बुनकर की बेटी)

प्रियलक्ष्मी के परिवार जैसे दूसरे परिवारों के लिए जीने का एकमात्र उपाय आधा पेट भोजन करना रह गया है. वे किसी तरह गुजारा कर रहे हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डैंड्रफ़ रहने पर मैं क्लिनिक स्पेशल क्यों इस्तेमाल करती हूं.
क्योंकि क्लिनिक स्पेशल से ज्यादा असरगार कुछ है ही नहीं.

क्लिनिक स्पेशल सचमुच प्रभावशाली है, क्योंकि यह तैयार किया गया है अंतर्राष्ट्रीय फ़ॉर्मूले से जिसमें है पिरॉक्टोन.

क्लिनिक स्पेशल सिर की त्वचा से, जहाँ डैंड्रफ़ पैदा होते हैं,डैंड्रफ़ को बड़ी नरमाई से ढीला करके हटा देता है और इस प्रकार सिर की त्वचा और बाल डैंड्रफ़ मुक्त हो जाते हैं.

क्लिनिक स्पेशल जाँच

डैंड्रफ़ है तो इसको आज़माएं. क्लिनिक स्पेशल कितना प्रभावशाली है आप जान जाएंगे.

सिर के आधे हिस्से को 4 हफ़्ते तक मामूली शैम्पू से धोइए.

इसी दौरान सिर के दूसरे आधे हिस्से पर क्लिनिक स्पेशल हौले-हौले मलिए.

4 हफ़्ते बाद

यहां आपको डैंड्रफ़ नज़र आएगा.

डैंड्रफ़ का नामोनिशान नहीं. बस मुलायम,चमकीले, शानदार बाल.

मैं क्लिनिक स्पेशल इस्तेमाल करती हूं.

डैंड्रफ़ रहने पर और डैंड्रफ़ न रहने पर.

डैंड्रफ़ न रहने पर भी मैं क्लिनिक स्पेशल क्यों इस्तेमाल करती हूं.
बस इसीलिए कि डैंड्रफ़ दुबारा न होने पाए. इतना ही नहीं इसके इस्तेमाल से मेरे बाल शानदार नज़र आते हैं. इसीलिए तो मैं क्लिनिक स्पेशल नियमित रूप से इस्तेमाल करती हूं.

क्लिनिक स्पेशल दो तरह से काम करता है.

सिर की त्वचा पर यह प्रभावशाली ढंग से काम करता है और उसे डैंड्रफ़ मुक्त रखता है. और इसका घना मुलायम कंडीशनर बालों को मुलायम, चमकदार और शानदार बनाए रखता है.

क्लिनिक स्पेशल

ऐंटी-डैंड्रफ़ शैम्पू

स्वस्थ बालों के लिए क्लिनिक देखभाल

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

HTA 2264

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही बदल गया है. इस साल दिवाली भी बहुत ही उदासी में बीती." इससे भी बुरी बात यह हुई है कि अनेक बुनकर तो अब हथियार डालने लगे हैं. सूरत और भिवंडी जाने वाले बुनकर परिवारों की संख्या बढ़ती जा रही है.

उनके लौटने की संभावनाएं भी कम ही हैं क्योंकि यहां उनकी कमाई दिन-ब-दिन कम ही हुई जा रही है. युरुपलेम में, जहां 30,000 बुनकर रहते हैं, पांच लोगों का परिवार महीने में छह गज वाली 10 विंदीजरी (चांदी की जरी) साड़ियां बुनकर महीने में 400 रु. ही कमा पाता है. इसमें उन्हें प्रधान बुनकर को दो आना (12.5 फीसदी) कमीशन भी देना होता है. साल भर पहले यही परिवार 600 रु. महीना कमा लेता था. प्रधान बुनकर ने भी मांग कम होने से उत्पादन कम कर दिया है. युरुपलेम के एक प्रधान बुनकर अव्वरु बालकृष्णमूर्ति कहते हैं कि वे अब कारीगरों से 25 की जगह 15 दिन ही काम लेते हैं. वे कहते हैं, "मैं तो तभी काम दे सकता हूं जब माल बिके."

सो, अब बुनकरों के पास पेट काटकर ही जीने का रास्ता रह गया है. युरुपलेम, भट्टीप्रोलू मंगलगिरी, चेब्रोले और 12 जिलों में फैले ऐसे ही सैकड़ों बुनकर गांवों में एक-एक परिवार भात और एक कटोरा सांभर पर जी रहे हैं. 25 वर्षीया वेंकटेश्वरम्मा, जो कृष्णा जिले के अपने गांव से युरुपलेम आई है, कहती है, "सरकार से मिलने वाले 5 किलो चावल पर हम जिंदा हैं. इसमें कंकड़ भरा होता है, पर ना मामा से काना मामा भला." गांव के पूर्व सरपंच और इंका कार्यकर्ता राजेंद्र प्रसाद राशन में 1.90 रु. प्रति किलो मिलने वाले चावल के बारे में कहते हैं, "जरा इसे खाकर देखिए. आप दिल्लीवालों को नहीं मालूम कि सरकार आपको कितना लाड़-प्यार देती है." वे कहते हैं कि चारों ओर भरपूर धान उगाने वाले खेतों के बीच भुखमरी एक विडंबना ही है.

बुनकर संरक्षण समिति के तहत युरुपलेम के बुनकरों को संगठित करने वाले प्रसाद ने 17 से 21 अक्तूबर तक सामूहिक धरना आयोजित कराया था. पुलिस ने उपवास तोड़ दिया. प्रसाद ने 17 नवंबर से फिर से उपवास करने का निश्चय किया था लेकिन चक्रवात और बारिश ने उनका फैसला बदलवा दिया. वे कहते हैं, "इसे अपशकुनी माना जाता है."

1988 में इंका ने तेलुगु देशम सरकार के राज में प्रकाशम और गुंटूर जिले में हुई बुनकरों की मौतों का बहुत शोर मचाया था. आज वह एकदम बदली भूमिका में है. वह कहती है कि भुखमरी के लिए सरकार जिम्मेदार नहीं है. उधर, अपनी 1988 वाली भूमिका को भुलाकर तेलुगु देशम इन मौतों से राजनैतिक लाभ उठाने के [illegible] में है. रामचंद्रैय्या कहते हैं, [illegible] और राज्य सरकारें संवेदनहीन [illegible] गई हैं. जब पूरा उद्योग मुश्किल [illegible] हो तो सब्सिडी में कटौती [illegible] और सूत का निर्यात होने [illegible] गलत है."

मगर राज्य सरकार [illegible] लगाए हुए है. वरिष्ठ मंत्री [illegible] निजी बातचीत में मानते हैं [illegible] मुख्य मुद्दा यह नहीं है कि मौत किस [illegible] तरह हुई. चिराला का प्रतिनिधित्व [illegible] करने वाले स्वास्थ्यमंत्री के. रोसैया [illegible] कहते हैं, "बुनकरों को पर्याप्त [illegible] और विपणन की सुविधाएं देना [illegible] ही मुख्य मुद्दा है. सरकार ने [illegible] दिशा में अल्पकालिक कदम [illegible] उठाए हैं. कपड़े की 22 किस्मों [illegible] नौवें अनुच्छेद में रखने [illegible] दीर्घकालिक उपायों से ही [illegible] बनेगी." वे कीमतों में वृद्धि को [illegible] कहते हुए उचित करार देते हैं [illegible] सहकारी समितियों को उद्योग [illegible] परवाह करनी चाहिए. वे कहते [illegible] "आखिरकार सरकारी सब्सिडी [illegible] तो हमारी जेब से ही जाती [illegible] लोगों को हथकरघा उद्योग [illegible] मदद करनी चाहिए और [illegible] अधिक कीमत देने से नहीं हिचकि [illegible] चाहिए."

लेकिन असलियत कुछ और [illegible] रोसैया की कल्पना लोक वाले [illegible] जमीन पर हैं नहीं जिनके पास [illegible] मुश्किल में पड़े उद्योग को उबा [illegible] के लिए भरपूर पैसा हो. साड़ी [illegible] पोचमपल्ली साड़ियों की, जिन्हें देश भर [illegible] पसंद किया जाता है, कीमत 900-1000 [illegible] से बढ़कर 1100-1400 रु. हो गई है. [illegible] के मार्केटिंग सुपरिंटेंडेंट और सहकारी [illegible] कर्मचारी यूनियन के महासचिव सी. [illegible] पंकज कहते हैं, "कीमतें बढ़ने से इस [illegible] बिक्री कम हो गई है."

ऐसा लगता है कि राज्य सरकार के [illegible] भी पैसा नहीं है. कपड़ा और हथकरघा [illegible] धर्मन प्रसाद राव जिस तरह से [illegible] दिलचस्पी दिखा रहे हैं, वह बहुत साफ [illegible] पर सरकारी नजरिए को स्पष्ट कर देता [illegible] 'इंडिया टुडे' द्वारा उनसे बार-बार [illegible] की कोशिशों के जवाब में उधर से [illegible] जवाब आता था कि "साहब सो रहे हैं [illegible] हम उन्हें डिस्टर्ब नहीं कर सकते." वे [illegible] दिन में तीन घंटे सोते हैं. पर रतीमा [illegible] उस जैसे दूसरे बुनकरों के जीवन [illegible] अंधेरा घिर आया है वह एक न खत्म [illegible] वाली रात जैसा ही है.

आर. रामलिंगम
(साड़ियों के विक्रेता)

सिल्क और सूती साड़ियों की कीमतें इस कदर आसमान पर चढ़ती जा रही हैं कि इनकी बिक्री में 90 फीसदी तक की कमी आ गई है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

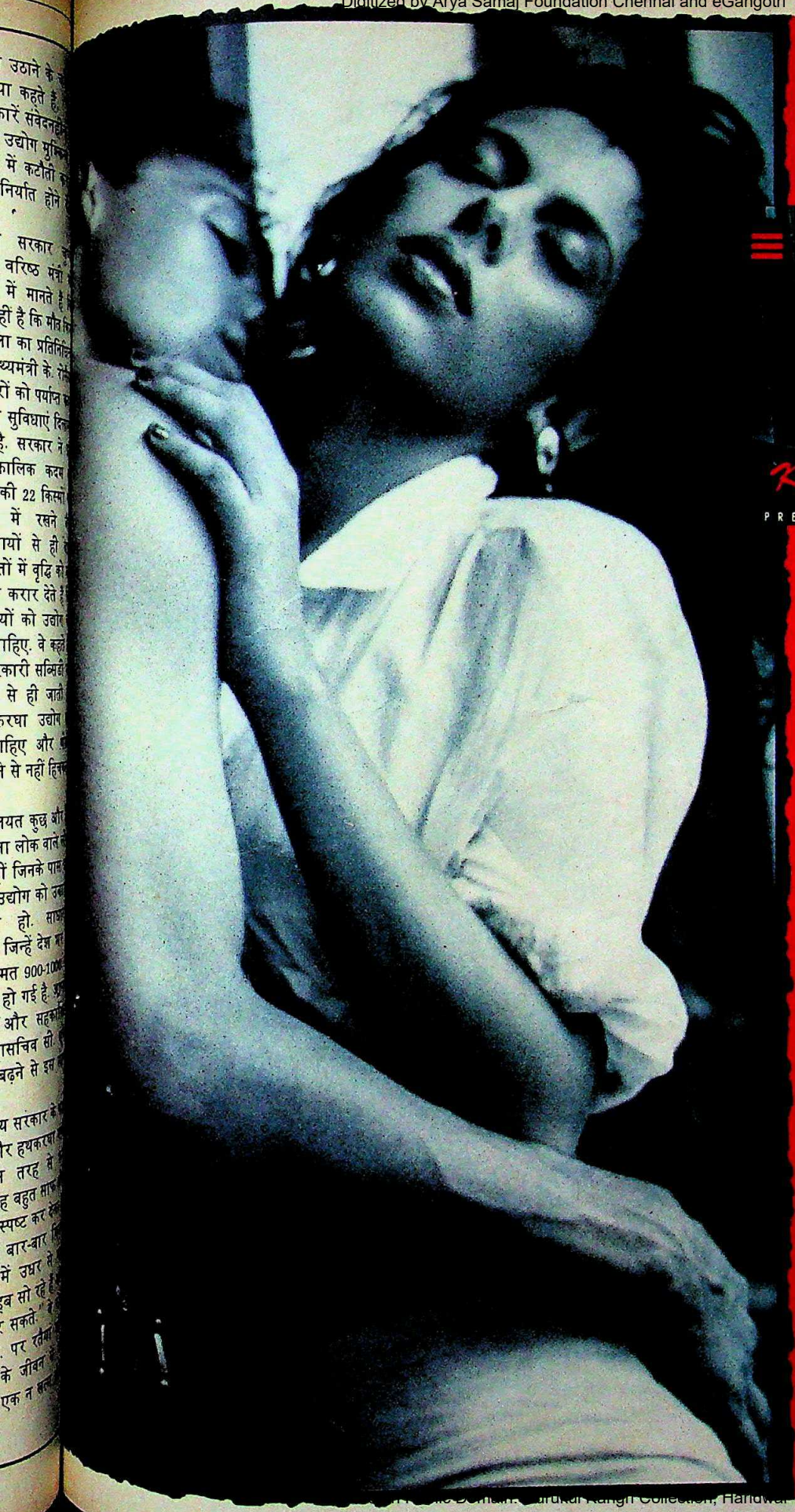

कामसूत्र के अनुसार
प्रणय आनंद अपार

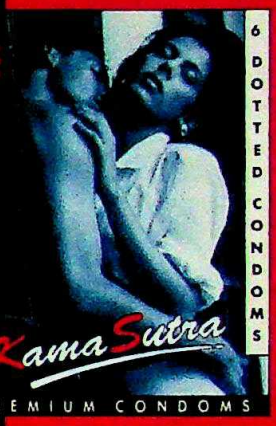

...प्रणय के क्षणों में स्त्री को उत्साहित करने के लिए पुरुष को वो सब कुछ करना चाहिए जो स्त्री के मन भाए और पूर्ण करनी चाहिए उसकी हर इच्छा. ("कामसूत्र द बुक" मूल अंग्रेजी अनुवाद से अनुवादित.)

(प्रेम III भाग III)

क्या एक कॉन्डोम प्रणय - मिलाप का मजा किरकिरा करने की बजाए उत्तेजना बढ़ा सकता है? कामसूत्र कॉन्डोम में यही बात है... क्योंकि ये बाहर की तरफ से डॉटेड होते हैं, या कॉन्टूर्ड या होते हैं अल्ट्रा - थिन. आपको प्रणय में अपार आनंद तक ले जाने के लिए.

• आनंद की वो पराकाष्ठा जो पहले कभी न पाई •

KamaSutra
PREMIUM CONDOMS
केवल के.एस. ही मांगिए.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

McDOWELL 2000 GUINEAS.
THE SPIRIT'S RIDING HIGH.

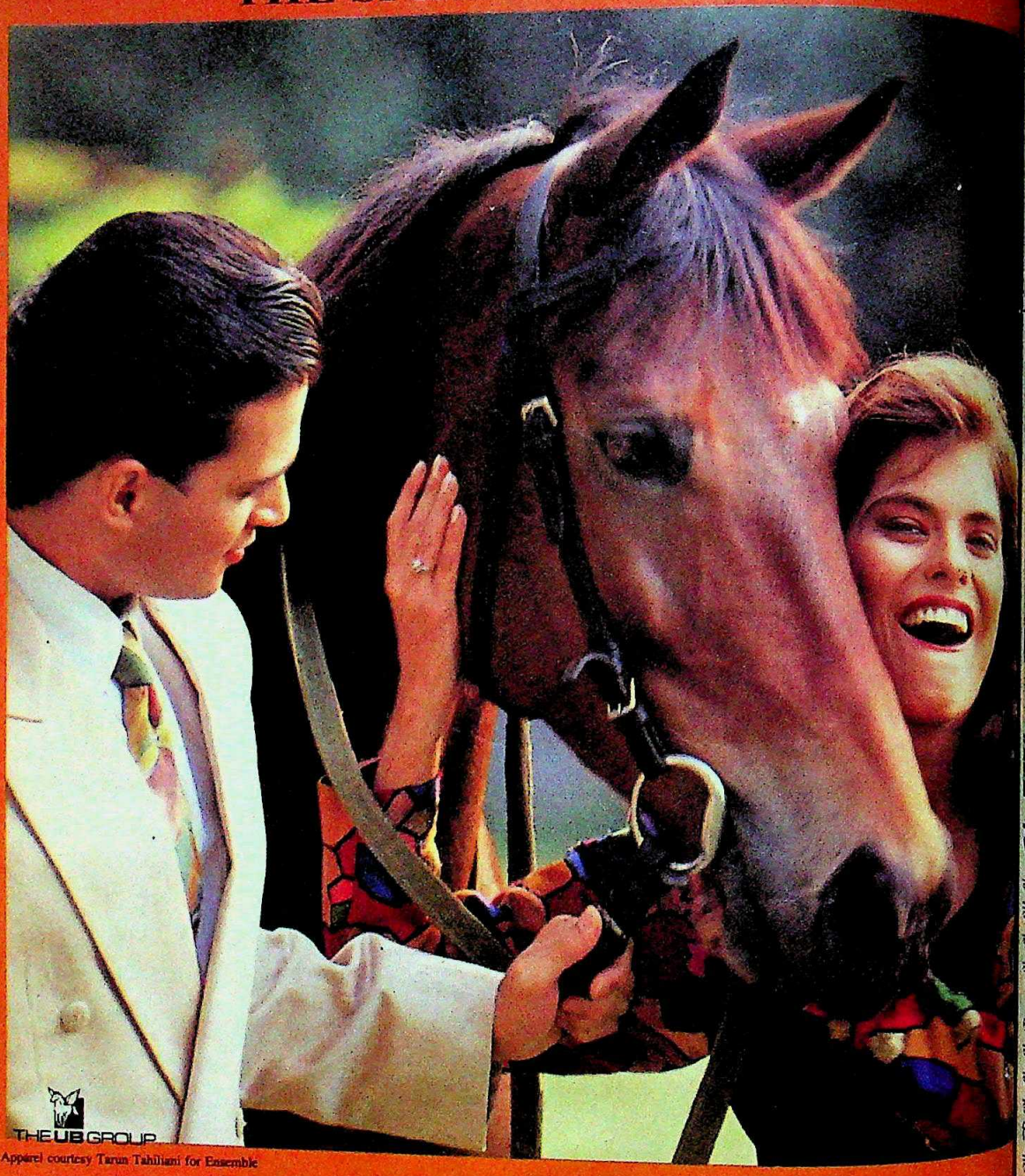

Apparel courtesy Tarun Tahiliani for Ensemble

The passion. The pleasure.
The excitement. The exhilaration.
The McDowell 2000 Guineas.
Bangalore, December 1, 1991.
Bombay, December 22, 1991.

THE McDOWELL 2000 GUINEAS

BANGALORE, DECEMBER 1
BOMBAY, DECEMBER 22

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

GOLDEN MOMENTS. McDOWELL MOMENTS.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमन भोजानी

मेधा पाटकर

इस्पाती इरादे

पर्यावरण सुरक्षा के लिए संघर्षशील महिला को अंतरराष्ट्रीय ख्याति

खादी की पतली साड़ी उनके दुबलेपन को और भी उजागर करती है. उम्र से पहले पक गए बाल अंतरतीब ढंग से बंधे होते हैं. और पैरों में कपड़े के पुराने जूते उनके खानाबदोशनुमा व्यक्तित्व को पूरा कर देते हैं.

मगर 36 वर्षीया मेधा पाटकर ने 6,400 करोड़ रु. की नर्मदा बांध परियोजना का विरोध करते हुए अपने इस्पाती इरादे का पर्याप्त परिचय दिया है. पांच वर्षों के दौरान ही उन्होंने इस योजना को चलाने वाली राज्य सरकारों—मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात—के खिलाफ लड़ रहे 120 संगठनों को एकजुट करने में कामयाबी हासिल की है. इस एकजुटता से इन सरकारों के लिए परेशानी पैदा हो गई है. पूर्व पर्यावरण राज्यमंत्री मेनका गांधी कहती हैं, "अकेले दम पर उन्होंने इस आंदोलन को जीवित रखा, जबकि इसके सफल होने की कोई उम्मीद नहीं थी."

ऐसा करते हुए मेधा ने देश के पर्यावरण सुरक्षा आंदोलन को एक ऊंचे स्तर तक भी पहुंचाया है. इसे सिर्फ वनों को बचाने की जगह मानवाधिकार के आंदोलन का रूप दिया है. अब इस संघर्षशील महिला को अंतरराष्ट्रीय ख्याति भी मिली है. पिछले महीने उनके 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' को वैकल्पिक नोबल पुरस्कार माने जाने वाले स्वीडन के 'राइट टु लाइवलीहुड अवार्ड' से पुरस्कृत किया गया. मेधा ने कहा, "हम खुश हैं, पर ऐसे पुरस्कारों से सिर्फ नजरिया भर बदलेगा."

मेधा की निष्ठा, तथ्यों की बारीक जानकारी और नर्मदा घाटी के विस्थापितों को उनके अधिकार के प्रति जागृत करने की लगन ने उन्हें एक प्रखर योद्धा बना दिया है

लेकिन खुद उनका नजरिया नहीं बदला है. पिछले हफ्ते जब उन्हें पुरस्कार लेने स्टॉकहोम जाना था तब भी उन्होंने महाराष्ट्र के धुले जिले में एक और रैली आयोजित करने की तैयारी जारी रखी.

विरोध रैली का नेतृत्व

और इसी क्रम में जब राज्य की पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया तो दुनिया भर में इसका विरोध हुआ. कई दिन बाद उन्हें बिना शर्त रिहा कर दिया गया.

लेकिन मेधा को परेशानियां झेलने की आदत पड़ गई है. 1985 में जब वे इस इलाके में काम करने आई थीं तो नर्मदा परियोजना से विस्थापित होने वाले पांच लाख लोगों ने उनका बहुत स्वागत नहीं किया था. उन्होंने डूब क्षेत्र के 225 गांवों की यात्रा पैदल, बस से या मोटरसाइकिल से की. धीरे-धीरे वनवासियों का भरोसा उन पर जमता गया. वे कहती हैं, "हमने सिद्धांत गढ़ने और उन्हें सेमिनारों में रखने का काम नहीं किया." आज वे विस्थापितों की दुलारी हैं. वनवासी चोगलाल कहते हैं, "हमारे लिए वह नर्मदा मैया हैं, अगर वह हमें छोड़ देंगी तो हम बिना मां के हो जाएंगे."

नामों और चेहरों को बहुत याद रखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मामले में तेज मेधा को तथ्यों की भी पूरी जानकारी है. प्रमुख पर्यावरणवादी नलिनी जयाल कहती हैं, "वे तर्क में किसी भी विरोधी को हरा सकती हैं." लेकिन इसे सभी लोग नहीं मानते. गुजरात के नर्मदा विकास मंत्रालय के अधिकारी हंसमुख पटेल कहते हैं, "अपने तर्कों को मजबूत करने के लिए वे तथ्यों में उलटफेर करती हैं." लेकिन उद्देश्य के प्रति उनकी निष्ठा पर कोई भी शक नहीं कर सकता. उन्होंने आंदोलन के लिए किसी भी तरह की विदेशी मदद लेने से इनकार कर दिया. उनके पास न तो जीप है, न फोन.

मेधा को असल प्रेरणा अपने मां-बाप से मिलती है. उनके पिता वसंत खानोलकर मजदूर आंदोलन से जुड़े हैं जबकि मां औरतों की 'स्वाधार' नामक संस्था में काम करती हैं. मेधा ने मुंबई के टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विसेज से मास्टर डिग्री हासिल की है. उनके जीवन में तब नया मोड़ आया जब वे नर्मदा घाटी में गईं और फिर विस्थापितों की मुश्किलों के लिए लड़ने का फैसला किया.

मेधा के नेतृत्व में वनवासियों ने इ बात के लिए कमर कस ली है कि वे संरक्षण के छोटे और देसी तरी अपनाएंगे और बांध का बनना रोक लेकिन सरकार जिस तरह से परियो को आगे बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प दि है उससे भी यह हारी हुई लड़ाई लगती अगर ऐसा होता भी है तो भविष्य योजनाओं के लिए मेधा का संदेश बहुत स्पष्ट हो चुका है.

—उदय माहूरकर

वांसडा

उत्साहवर्धक उपलब्धियां

गांधीवादी उपायों से वनवासियों के जीवन में खुशहाली

पिछड़ा वनवासी तालुका वांसडा तेजी से प्रगति कर रहा है. इसका श्रेय भारत एग्रो इंडस्ट्रीज फाउंडेशन (बीएआइएफ) के कार्यक्रमों को जाता है. मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त मनुभाई देसाई ने 10 साल पहले यह योजना शुरू की थी. इसने दक्षिण गुजरात के वनवासियों के अभावग्रस्त जिंदगी में आज हरियाली ला दी है.

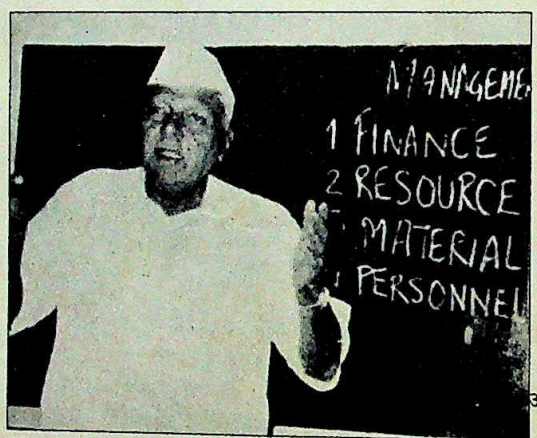

महत्वपूर्ण बात यह है कि सरकारी प्रयास जहां सिरे ही नहीं चढ़ पाए, वहीं प्रकृति से सामंजस्य रखने वाले गांधीवादी उपाय सफल हो रहे हैं. 20 सदस्यीय दल के उत्थान कार्यक्रम में विशेष जोर वनवासियों को खेती और सिंचाई के साधारण वैज्ञानिक उपायों से जोड़ने पर है. झूम खेती के अभ्यस्त ये वनवासी अब पहाड़ की ढलानों पर सीढ़ीनुमा खेत बनाते हैं और पानी रोकने के लिए तालाब खोदते हैं तथा पौधे लगाते हैं.

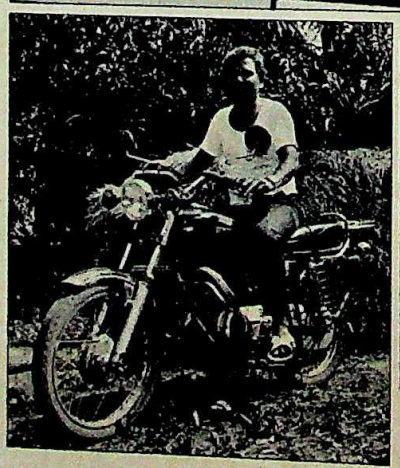

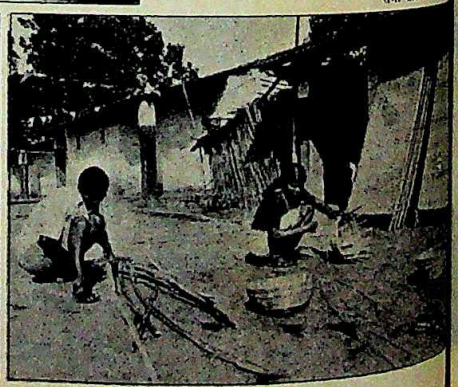

कार्यक्रम के जनक देसाई (ऊपर); और कुछ लाभान्वित लोग: कामयाबी

बीएआइएफ ने जल संग्रह का एक अनूठा तरीका भी ईजाद किया है. वे पानी के छोटे-छोटे स्रोतों को बालू या मिट्टी के बोरों से बांध देते हैं. फिर इनमें जमा पानी पाइपों से खेतों में पहुंचता है. इससे आश्चर्यजनक नतीजे मिले हैं. लगभग 1,619 हेक्टेयर बंजर भूमि को खेती योग्य बना लिया गया है. युक्लिप्टस, बांस, सुबबूल आदि के करीब 9 लाख पेड़ लगाए गए हैं. इस कार्यक्रम से जुड़े 5,000 परिवारों के लिए आम के बगीचे ही मुख्य आधार हैं. साथ ही इस कार्यक्रम के चलते दलालों का भी सफाया हो गया है. अब बीएआइएफ खुद ही वनवासियों की पैदावार को बेचता है. आम और लक्ड़ की बिक्री से उन्हें 1,500 रु. की मासि आय होने लगी है. उनकी अन्य उपलब्धि में कम लागत वाले मकान, स्वास्थ्य सेव सफाई और शिक्षा की व्यवस्था प्रमुख है

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि अनेक वनवासियों की शराब पीने की लत छुड़ाने में भी कामयाबी मिली है. फाउंडेशन ने महिलाओं के लि रोजगार पैदा करने वाली नर्सरी भी स्थापित की है. इससे महिलाओं को 300 रु. माह आय हो जाती है.

सरकार मुंह छिपाने के लिए दलील देती है कि "हमारे पास प्रतिबद्ध लो नहीं हैं." दूसरी ओर, बीएआइएफ के सफलता का राज, बकौल सामाजि कार्यकर्ता सूर्यकांत पारीख, यह है कि "इस संस्थान ने अपनी योजनाएं लोग के द्वार तक पहुंचाईं जबकि सरकार अधिकारी लोगों के खुद आने की प्रती

ऐसी सफलता हासिल कर देसाई बेह उत्साहित हैं. वे कहते हैं, "वांसडा में हम जो कुछ कर दिखाया है, वह दूसरी जग पर भी आसानी से किया जा सकता है सरकार को यह सुध कब आएगी?

—उदय माहूरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमदर्दी का मुगालता

जैसे-जैसे अयोध्या का मसला जोर पकड़ता जा रहा है, पाकिस्तान बढ़-चढ़कर हिंदुस्तानी मुसलमानों के जान और माल की हिफाजत की फिक्र वाले बयान देने लगा है. हिंदुस्तानी मुसलमानों की नई पौध की वफादारी पाकिस्तान के साथ नहीं है, यह बात पाकिस्तान को मुश्किल से समझ में आती है.

पाकिस्तान का बनना शायद पाकिस्तानी के लिए बहुत अच्छी घटना रही होगी लेकिन हम हिंदुस्तानी मुसलमान इस किए की सजा अब तक भुगत रहे हैं. जब पाकिस्तान हमसे हमदर्दी का ढोंग रचाता है तो हिंदू कट्टरवाद को बेवजह बढ़ावा मिलता है.

हम सच बताएं कि जब हिंदुस्तानी मुसलमान खेलकूद में पाकिस्तान की जीत का जश्न मनाते हैं तो यह पाकिस्तान से मुहब्बत नहीं, बल्कि हिंदुओं को चिढ़ाने के लिए करते हैं. जैसे उर्दू का मुहावरा है—'हुब्बे अली नहीं बुग्जे मुआविया.

एक पाकिस्तानी से निकाह करने वाली मैं लगातार अपनी मातृभूमि भारत आती रहती हूं. मैं पाकिस्तान से एक चुभता हुआ सवाल पूछना चाहती हूं. हिंदुस्तान के मुसलमानों से उनकी हमदर्दी किस तरह की है? अगर उन्होंने अपनी सीमाएं हम लोगों के लिए खोल रखी होतीं तो और बात होती. पाकिस्तान को याद रखना चाहिए कि वह मुसलमानों के लिए एक पवित्र भूमि नहीं है और न ही पाकिस्तान इज्राएल की तरह है जहां दुनिया के किसी कोने से यहूदी आ कर बस सकता है. पाकिस्तान ने तो अब तक उन बिहारी शरणार्थियों को भी अपने यहां जगह नहीं दी जो वर्षों से बांग्लादेश में पड़े हुए हैं और पाकिस्तानी पासपोर्ट रखते हैं.

जब भी कोई हिंदुस्तान से पाकिस्तान जाता है तो घूम-फिरकर एक ही बात हमसे की जाती है, "मुसलमानों का तो आपके यहां बहुत बुरा हाल है." हमें तो सबसे ज्यादा हैरानी इस बात से होती है कि यह सवाल हर कोई पूछता है चाहे वह नौकर हो, गृहिणी हो या संपादक. यानी उनकी सूझ-बूझ या अक्लमंदी से इस बात का कोई सरोकार नहीं.

हमने देखा है कि अगर हम उनकी बात को गलत साबित करते हैं तो वे कुछ परेशानी में घिर जाते हैं. हिंदुस्तान के पढ़े-लिखे मुसलमानों की बात उनको अच्छी नहीं लगती. उनसे फिर वह कान में कहते हैं, "आप खुलकर बात करें, आपस की बात है." हम फिर उन्हें याद दिलाते हैं कि सब हिंदुस्तानियों को बोलने की आजादी है. भई, हमको अपने मुल्क के गुण गाने

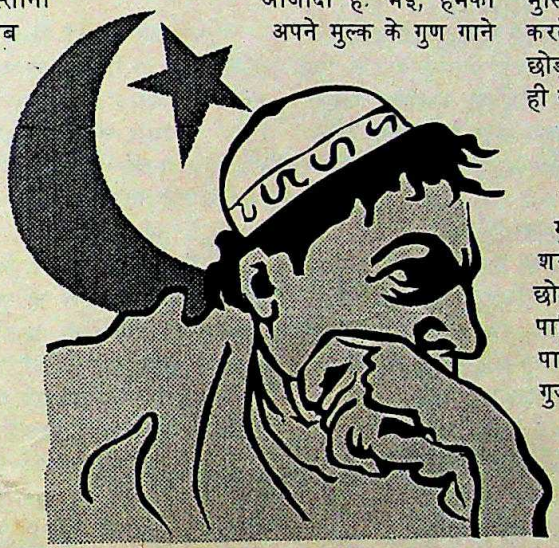

रेखाचित्र: प्रणव दत्त

हिंदुस्तानी मुसलमानों से पाकिस्तान की हमदर्दी किस तरह की है? अगर उन्होंने अपनी सीमाएं हम लोगों के लिए खोल रखी होती तो और बात होती

के पैसे नहीं मिलते. सीधी बात है, जैसा-तैसा. मुल्क है, है तो हमारा. और फिर हमारे गम, हमारी सारी मुसीबतें हिंदुस्तान की ही समस्याएं तो हैं.

हम जब किसी पाकिस्तानी को उनके यहां होने वाले खून-खराबे की याद दिलाते हैं तो फौरन बात पलट दी जाती है. अब ये तो कोई बात न हुई. हम अकसर कहते हैं कि हमें हिंदू गोली से शहीद होना मंजूर है लेकिन हम किसी मुसलमान के हाथों मर कर दोजख में नहीं पहुंचना चाहते. इस सूरत में हमें अल्लाह मियां को अपने गुनाहों का हिसाब देना पड़ जाएगा.

चंद हफ्ते पहले इस्लामाबाद में एक पढ़ी-लिखी औरत ने हमसे बड़े मजे की बात पूछी, "आप लोग हिंदू कब बन रहे हैं." एक और ने कहा, "आप लोग हिंदू नाम कब रखना शुरू करेंगे ताकि चैन से रह सकें." बेवकूफी के सवालों का जवाब बेतुकी से ही दिया जाता है. हमने फौरन जवाब दिया कि हम अपने भतीजे का नाम लक्ष्मण रख रहे हैं और अपना नाम सीता रखने जा रहे हैं.

इसी तरह, जब भी हमको यह बताया जाता है कि हिंदुस्तान में रोज हिंदू-मुस्लिम फसाद होता है तो हम इसरार करते हैं कि यह रोज नहीं बल्कि एक दिन छोड़कर होता है. पचास प्रतिशत तो यों ही कम हो गया.

हमने एक और बात नोट की. पाकिस्तान में हिंदुस्तानी मुसलमानों से सबसे ज्यादा हमदर्दी जताने वाले मुहाजिर हैं. इस कौम में ज्यादातर वे शरणार्थी हैं जो हिंदुस्तान के उत्तरी प्रांतों छोड़कर अच्छे भविष्य की तलाश में पाकिस्तान गए थे. यही वजह है कि पाकिस्तान के लोगों को भारत के केरल, गुजरात या असम सरीखे प्रांतों में रहने वाले मुसलमानों के बारे में कम ही जानकारी है. हम लोगों की तरक्की उनको खलती है क्योंकि यह उनकी हिजरत को बेमानी कर देती है. मुहाजिर अपना वतन छोड़कर एक बेबुनियाद जिंदगी गुजार रहे हैं जहां वे अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए तरसते हैं.

अफसोस तो यह कि मुहाजिरों को अब तक पाकिस्तान की धरती के पुत्रों ने नहीं अपनाया चाहे वह पंजाबी हो, सिंधी हो, पठान हो या बलूच. मुहाजिर तो बेसूबे हैं. उनको 'तिलियर' कहकर चिढ़ाया जाता है. तिलियर एक शरणार्थी चिड़िया का नाम है. इनके साथ बराबरी का सलूक नहीं होता और इसी महरूमी के कारण ताकतवर सियासी पार्टी मुहाजिर कौमी मूवमेंट पैदा हुई.

अगर पाकिस्तान और हिंदुस्तान के बीच हाल में शुरू हुई बातचीत किसी फायदेमंद अंजाम तक पहुंचनी है तो यह जरूरी है कि पाकिस्तान अपने आपको दुनिया भर के मुसलमानों का ठेकेदार समझना छोड़ दे. ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच के सि

जीलानी बानो

उर्दू साहित्य में जीलानी बानो का नाम अपनी एक हैसियत रखता है. इनकी कहानियों के अनुवाद भारत की लगभग सभी भाषाओं में हो चुके हैं. गालिब अकादमी पुरस्कार, पाकिस्तान दोशीजा राइटर्स अवार्ड और सोवियत नेहरू अवार्ड से सम्मानित इस लेखिका की एक सशक्त रचना का हिंदी रूपांतर सुरजीत द्वारा.

तुम जो कुछ कहोगे सच कहोगे, सच के सिवा कुछ न कहोगे."

"मगर सच के सिवा तुम हर बात सुनोगे जज साहब..." मैंने गरदन उठाकर देखा. सच सुनते-सुनते जज साहब निढाल हो गए थे. उनके चेहरे की रौनक खत्म हो चुकी थी. सचाई की गंदगी टटोलते-टटोलते उनके हाथ लरज़ने लगे थे. इंसाफ के कड़वे घोल ने उनके मुंह का मजा कड़वा कर दिया था.

मुलजिम जाकिर अली उर्फ गीदड़ ने एक तेरह साल की लड़की मासूमा को चाकू मारकर हलाक कर दिया. इस कत्ल के बाद सारे शहर में फिरकादाराना फसाद फैल गया और ग्यारह आदमी हलाक हुए...

"मुलजिम जाकिर अली उर्फ गीदड़, क्या तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है? क्या तुम सो रहे हो? नहीं सुना...? फिर सुनो...मुहल्ला नूरखां बाजार में जहां अलम (मुहर्रम में निकलने वाला झंडा) उठाए जाते हैं, एक लड़की मासूमा अपने खानदान के साथ आई थी. मुलजिम जाकिर अली अपने पूरे गैंग के साथ वहां पहुंचा और जिस वक्त अलम उठाया जा रहा था, उसने मासूमा को चाकू मारकर हलाक कर दिया.

"क्या तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है?"

स्याह लिबास की स्याही में छुपा हुआ सरकारी वकील मुझसे पूछ रहा था. उस वकील ने हमेशा अपनी मुट्ठी गरम करके हमें बेकसूर साबित किया था,. मगर आज वह मुझ पर फर्दे-जुर्म (अभियोग-पत्र) लगा रहा था, जबकि मैंने कोई गुनाह नहीं किया.

"वह शहादत की रात थी," मैंने आहिस्ता से कहा.

"अच्छा...यानी नौ-मुहर्रम की रात. फिर?"

"मेरे साथी वहां कब आए, मुझे नहीं मालूम. मैं तो इमामबाड़े में अकेला गया था."

"क्यों, अकेले क्यों गए?"

"जी...फातहा करने...दुआ मांगने."

"तो फिर? फिर क्या हुआ? आगे कहो."

"आगे...आगे क्या कहूं? जुल्म की तारीख (इतिहास) का आखिरी बाब (अध्याय) तो कर्बला में लिखा गया, मगर लोग मुझे आज अदालत में फिर मुजरिम बनाकर लाए हैं."

"वह बहुत मासूम थी साहब...मेरी समझ में नहीं आता, और क्या कहूं?"

"सुन लिया आपने माई लार्ड? मुजरिम इकरार करता है कि वह लड़की मासूम थी, बेगुनाह थी."

मैंने स्याही में लिपटे हुए उस स्याह इनसान को फिर देखा, जो मेरी सच्ची-उजली बात को मसलहत की स्याही में डुबोकर झूठ बना रहा था.

मैं एक आदी मुजरिम था. जब मैं घर से भागा था तो एक शहज़ादा था. आजादी की ख्वाहिशों को हासिल करने के लिए बेकरार...आपा ने एक शहज़ादे की कहानी सुनाई थी जिसे अपने मकसद की तरफ भागते वक्त पीछे मुड़कर नहीं देखना था. मगर मैंने पीछे मुड़कर आपा की तरफ देख लिया था, और फिर मैं पत्थर बन गया. ऐसा बेहिस इनसान, जो किसी को कत्ल करते वक्त प्यार से नहीं पुकारता. किसी औरत की इज्जत लूटते वक्त जालिम शौहरों की तरह मुहब्बत का ढोंग नहीं रचाता. मैं एक ही वार में टुकड़े करने का आदी था. जैसे मैंने एक सेकेंड में फैसला किया और मेरा चाकू मासूमा के कलेजे को काट चुका था.

"तुमने उस लड़की को कत्ल क्यों किया?"

हम उस बस्ती में पहले कभी नहीं गए थे, जिसे जलाने [illegible] हमें कल जाना था. हमारे गुरु गैंडे को यह आर्डर मिला था. [illegible] रुपया भी मिल चुका था. इसलिए हमने रात को शराब [illegible] खूब मौज मनाई थी. अब हमें पेट्रोल के डिब्बे, लाठियां और [illegible] प्लेट के बगैर कारें...हर चीज तैयार करनी थी. दिन भर [illegible] तैयारी में लगे रहे थे.

इस गैर-आबाद गांव के किनारे वीरान तबेले में हमारा [illegible] था. यह किसी किसान का तबेला था. मगर अब हमने उसे [illegible] ठिकाना बना लिया था. चोरी का माल, लड़ाई में काम आने [illegible] हथियार, अगवा की हुई औरतें और बच्चे सब यहीं छुपाए जा [illegible] गैंडे ने दो-चार मरियल-सी गायें-बकरियां भी बांध रखी थीं [illegible] गांववाले उसे हमारा तबेला ही समझें.

पुलिसवालों की तरफ से हम बेफिक्र थे, क्योंकि गैंडे ने [illegible] सारे पुलिसवालों को अपनी जेब में उतार रखा था. [illegible] डीएसपी साहब भी अकसर कार रोककर पूछते थे कि कोई [illegible]

सभी रेखाचित्र: सुदेश

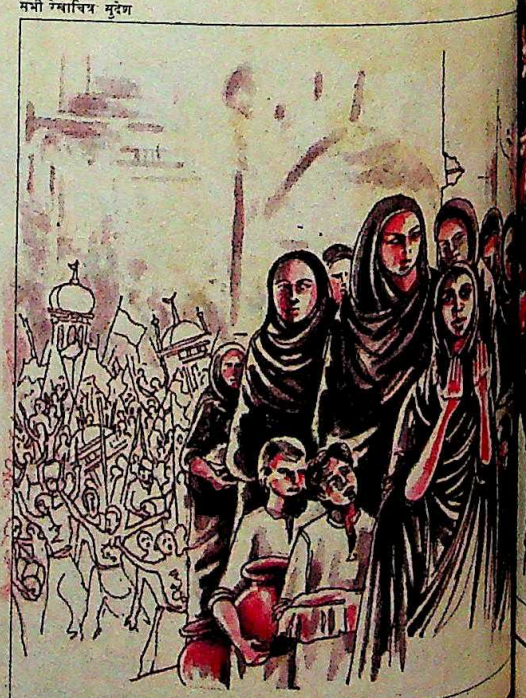

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अगर कोई ताजा माल होता, (जिसे हम कल का चुके होते) तो हम झट उनकी खिदमत में पेश कर देते. गुरु ने हम सबके नाम रख छोड़े थे. कोई कुत्ता था, कोई तरह हमारे असली नाम छुप गए थे और हमारी जाहिर हो जाती थी. हमारे गिरोह में एक चीता था. का चीता. उसका निशाना कभी खाली नहीं जाता था. वह उड़ता कई मंजिलों वाली बिल्डिंग से छलांग लगाता. को उठाकर भागने में वह हम सब का उस्ताद था. इसलिए नेताओं को शहर में दंगा-फसाद कराना होता, तो भाव- चीता ही जाता. हम तो साफ कह देते थे कि हम सच्चे दार आदमी हैं. जो कहते हैं, उससे बढ़कर काम करते हैं. ताओं को हम पर भरोसा था.

बात सुन लो तुम सब, जब घरों में घुसो, तो जलाने से तों को देख लेना!"

यार, तू औरतों पर वार ही कब करता है. तेरे इस शौक एक दिन हम सब फंस जाएंगे."

की बात गलत नहीं थी. वैसे, यह और कि शहर के पुलिसवाले भी हमें देखकर जाते थे. जब से हमारा ग्रुप शहर में खूब लड़ाई-झगड़े होते थे. सिर्फ एक कि खूबसूरत लड़कियां हमारी थी. जब फसाद शुरू होता तो हम ली औरतों को अलग छांट लेते और कर तबेले में ले आते. बाद में उनके के किसी तालाब में फेंक देते या पाड़ देते. यह हमारी हॉबी थी. पांच हम यह खेल खेलते आ रहे थे.

अब हमने उसे सुबह ही शुरू हो जाए. कल मुहर्रम तारीख है." गैंडा हमें हिदायत दे रहा

की नौ तारीख...? कहीं मेरे अंदर गरज हुई, मगर मैंने तो हर चीज मुहर्रम की नौ तारीख भी. यजीद ने मुझ पर जीना हराम कर दी थी. वह मुझे बुला रहा था और मेरे रास्ते में रेत ही रेत थी.

"कल मैं कोई काम नहीं करूंगा. बॉस, कोई और तारीख तय कर लो. कल अपन छुट्टी मनाएंगे." मैंने सान पर चाकू घिसते-घिसते दूर उछालकर फेंक दिया. और तबेले की टूटी, गोबर में सनी सीढ़ी पर बैठकर सिगरेट सुलगा ली.

आज के दिन घर में रोज़ा होता था. घर का चूल्हा ठंडा पड़ा रहता. झाड़ू न लगती. मातम करते-करते अब्बा के सीने से खून की धार जमीन पर गिरती. रोते-रोते अम्मां और आपा की आंखें सूज जातीं. फिर मैं अब्बा की उंगली पकड़े-पकड़े एक घर से दूसरे घर की मजलिस में जाता. नंगे पांव! स्याह शेरवानी पहने. मुझे एक ही इंतजार होता कि कब मजलिस खत्म हो और फातहा का मीठा शीरमाल मिले, मगर एक दिन आपा ने खूब डांटा था, "इमामों की शहादत के दिन ऐसी बातें. तोबा कर उजाड़ सूरत." और डर के मारे मेरे हाथ से शीरमाल छूट गया था.

लो किन मैं दोस्तों की तरफ देख रहा था जो उस लड़की को घेरने की तैयारी में थे. रीछ की नजर से किसी लड़की का बचना नामुमकिन था

मेरी आपा बड़ी मासूम थी—बिलकुल मरियम की तस्वीर जैसी. नौ-मुहर्रम की रात को वह मातम करते-करते निढाल हो जाती थी. फिर अम्मां और आपा नंगी कलाइयां लिये, बाल खोले, स्याह चादरों में लिपटी अलम पर फातहा करने, नियाज चढ़ाने जाती थीं. पीछे-पीछे मैं सिर पर थाल उठाए चलता. बगल में शरबत की कोरी ठिलिया. सिर पर फातहा की ट्रे. तेरह-चौदह बरस की आपा के चेहरे पर उस दिन ऐसी उदासी छा जाती थी, जैसे इमामों की शहादत का वाकया उसकी नजरों के सामने हुआ हो. मगर उस दिन वह अलम के आगे स्याह चादर में अपना गोरा चेहरा छुपाए दुआ मांगते-मांगते न जाने क्यों हंस पड़ी थी. उस रोज आपा रोते-रोते क्यों हंसी थी? वह हाथ फैलाए अल्लाह मियां से क्या मांग रही थी? यह बात मैंने आपा से बार-बार पूछी थी, मगर उस दिन घर आने के बाद आपा बहुत रोई, जब मैंने आपा की मंगनी की अंगूठी चुराकर दोस्तों के साथ जुआ खेला था. बाद में मुझे अपनी हिमाकत का अहसास हुआ और मैंने अम्मां के आगे कान पकड़कर कसम खाई कि अब दोस्तों के साथ नहीं खेलूंगा, मगर अब्बा ने मुझे बहुत मारा.

"यह पक्का चोर है. गुंडा, कातिल, खूनी बनेगा. मैं अब इसे घर में नहीं घुसने दूंगा."

अगर अब्बा यह बात न कहते तो मैं थोड़ी देर बाद घूम-फिरकर शायद घर पहुंच जाता, मगर अब तो मेरी अपने आप से लड़ाई शुरू हो गई थी. मैंने हमेशा अपने ऊपर वार किए थे. हमेशा अपने आपको लूटता था. जैसे अब्बा मेरे सामने खड़े हों और मैं अपने बदन पर खचाखच चाकू मारकर दिखा-दिखा रहा होऊं, "लो देख लो, मैं कितना बुरा हूं."

बस उस दिन से यजीद ने मुझ पर भी जिंदगी हराम कर दी. मैं ऐसा प्यासा था, जिसके आगे किसी दजला और फिरात का सराब (मरीचिका) नहीं चमका. मेरी मंजिल तपती हुई रेत थी.

न जाने आपा की शादी हुई या नहीं, लेकिन मैं फिर कभी अपने घर की पाक दहलीज पर पांव न रख सका. कितनी ही बार रातों को मैंने अपने घर के गिर्द दीवानों की तरह चक्कर लगाए. अब वह घर मेरे लिए इतना पाकीज़ा बन गया था कि उसकी दीवारों को छूने की मुझमें हिम्मत नहीं थी. उस घर के वासी मेरे लिए एक ख्वाब बन गए थे और मैं बंद आंखों से उन्हें थामे रहता था. आज सोचता हूं, मैं उस तबेले तक क्यों पहुंचा? क्या सिर्फ आपा को

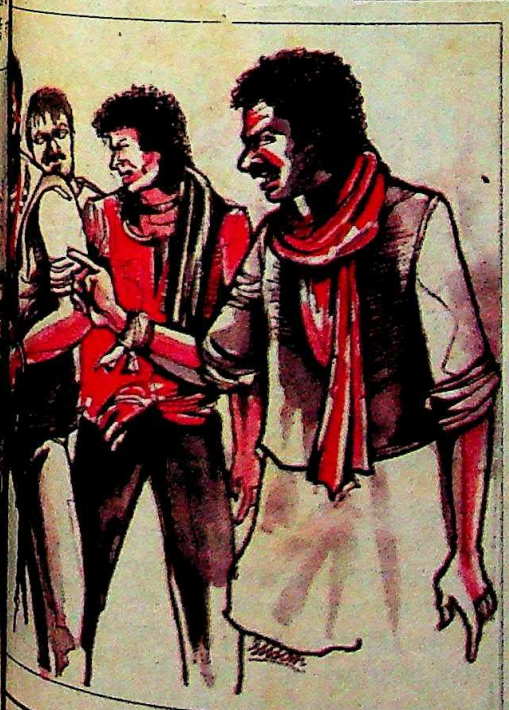

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलाने के लिए? वे घर में हर चीज के खो जाने पर मुझे चोर समझते थे. उन्हें यकीन था कि मेरे गुंडे दोस्त मुझे एक दिन जेल पहुंचाकर रहेंगे.

दूसरे दिन मैं सुबह को ही शहर आ गया.

सड़क के किनारे एक नल पर नहाया. कपड़े धोकर पहने. फूल और अगरबत्ती खरीदी और फिर सिर पर रूमाल बांधकर इमामबाड़े की तरफ चला गया.

स्याह शेरवानी पहने, नंगे पांव, नंगे सिर लोग एक मजलिस खत्म करके दूसरी मजलिस में जा रहे थे. थके-थके, सुर्ख आंखों, फाके से निढाल चेहरे. यह कौन-सा दुख था, जो सदियों से उन्हें रुला रहा था. सीने पर खंजर मार-मारकर वे पुकार रहे थे, इब्ने उलज्ज़हरा वावेला... हुसैन...हुसैन...हुसैन...जुल्म की अंधियारी में नेज़ों पर चढ़े हुए शहीदों के सिर वह रोशन चिराग थे, जो आज भी उन्हें मंजिलों का पता बताते थे. मैं कहां जाऊं? मैं भी आज उन लोगों में शामिल था, जिन्हें छोड़कर काफिला आगे बढ़ गया...अब्बा की उंगली मेरे हाथ से छूट गई थी और मैं हुजूम में खोए हुए बच्चे की तरह पुकार रहा था: हुसैन...हुसैन...या अली मुश्किलकुशा. आज जमीन व आसमान से यही आवाज गूंज रही थी. फिर ऊद (अगरु) और लोबान की खुशबू ने मुझे घेर लिया. ऊद की खुशबू सूंघते ही मेरा दिल डूबने लगता है. जैसे अम्मां का डोला दालान में रखा हो, जैसे घर में मजलिस हो रही हो, जैसे

उस वकील ने हमेशा अपनी मुट्ठी गरम करके हमें बेकसूर साबित किया था, मगर आज वह मुझ पर फर्दे-जुर्म (अभियोग-पत्र) लगा रहा था...

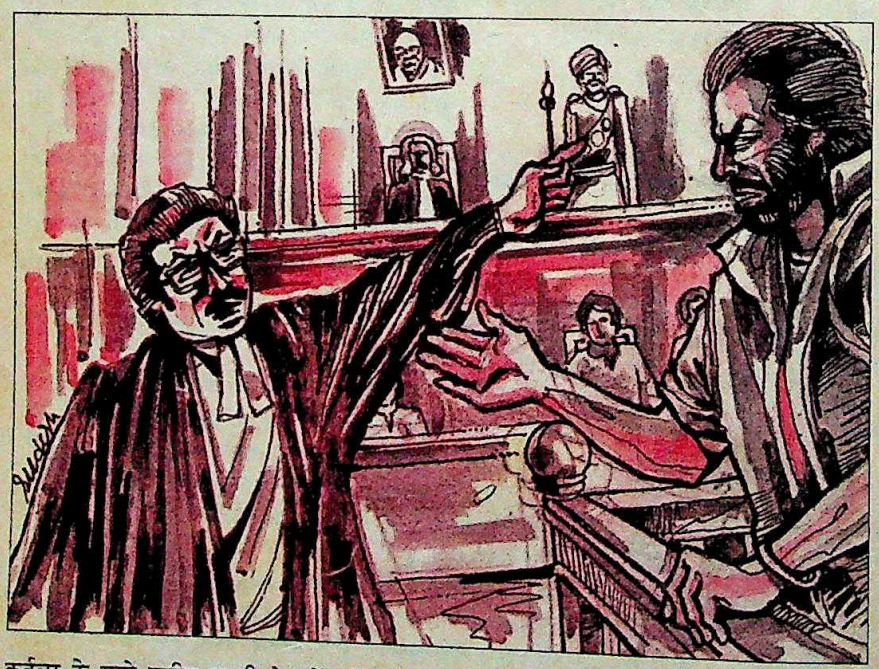

कर्बला के सारे शहीद तपती रेत में पड़े हों. शायद मैंने किसी औरत के टुकड़े करके मिट्टी में दबा दिए थे...हुसैन...हुसैन...हुसैन...गुनाहों के बोझ से सिर झुकाए, थर-थर कांपता, हाथ जोड़े मैं मौला के दरबार में खड़ा हुआ. हाथ फैलाए मैं एक ही नाम पुकारे जा रहा था: हुसैन...हुसैन...हुसैन...किसी के धक्का देने पर मैंने आंखें खोलीं. मेरे पास रीछ, चीता, गैंडा पूरी पलटन के साथ खड़े थे. ये सब आज बाला नगर में लूट-मार करने के बजाय इधर क्यों आ गए? शायद वहां सीआरपी आ होगी. उन्होंने मुझे आंख मारी तो मुझे गुस्सा आ गया.

"यहां क्यों आ गए? यह तुम्हारे आने की जगह नहीं है" गुस्से से कहा.

"एक तरफ को हो जाओ, मियां! उधर औरतें आ रही एक मौलवी साहब ने हमें शक भरी नजरों से देखकर कहा

काली चादरें ओढ़े दस-बारह औरतें और बच्चे अंदर उनके साथ फातहा के लिए खान (थाल) और शरबत मटकियां थीं. फिर उन औरतों को पीछे तरफ ढकेलकर एक लड़की मेरे सामने खड़ी हुई. बारह-तेरह साल की एक गोरी सेहतमंद लड़की, स्याह चादर में अपने आप छुपाए. बगैर चूड़ियों वाली कलाइयां उठ हाथ जोड़े वह दुआ मांग रही थी. फिर चुपके हंसने लगी...आपा...आपा...अरे यह बिलकुल आपा थी. उनकी तरह मजलिसों दीवानी, मरसिए पढ़ने में रो देती मांगते-मांगते हंस पड़ती.

रीछ और चीते की नजरें भी लड़की थीं. और अंधेरे में चिराग की लौ चमकती हुई लड़की...हाथ फैलाए खड़ी

मजमा बढ़ता जा रहा था. ऊद लोबान की बू से मुझे चक्कर आने लगा जोर-जोर से चिल्ला रहे थे. या मौला मुश्किलकुशा... हुसैन ...हुसैन... नौबत-नक्कार जोर-जोर से बज रहे थे. फिर सिर पर बांधे, अपने आप में गुम एक आदमी हुआ आगे बढ़ा और अलम को उठा लिया. अब अलम समेत झूम रहा था.

और उसके साथ जमीन आसमान झूम रहे थे. अब अलम उठाए बाहर दहकते अंगारों पर नंगे पांव अब्बा कहते थे—उस आदमी पांव नहीं जलेंगे. हुसैन की में आने वालों पर कोई आंच आएगी. यह तमाशा देखने लिए खलकत टूटी पड़ रही नफीरी की उदास लय ढोल आवाज के साथ तेज हो गई एक-दूसरे पर गिरते-पड़ते के गिर्द इकट्ठे होने लगे. नजरें अलम उठाने वाले के कदमों की तरफ लगी हुई थीं

लेकिन मैं अपने दोस्तों तरफ देख रहा था, जो लड़की को घेरने की तैयारी लग गए. मुझे मालूम था कि रीछ की नजर जब किसी लड़की तरफ उठ जाए, तो उसका बच जाना नामुमकिन है. अब देर में यह लड़की तबेले पहुंचा दी जाएगी. कई लड़कियों को हमने ठोकरें मार-मारकर हफ्तों जिंदा रखा है. फिर उसके अगर वे खुद नहीं मरतीं, तो हम खुद उन्हें ठिकाने लगा देते कभी कोई औरत बहुत शोर मचाती है, तो उसका मुंह बांधना पड़ता है, मगर यह लड़की तो अभी बहुत छोटी है. ज्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोटरी की ओर से एक बार फिर, बच्चों के लिए,
दुनिया की सबसे अनमोल भेंट.
जीवन. और स्वस्थ भविष्य.

६ अक्टूबर १९९१, १० नवम्बर १९९१

८ दिसम्बर १९९१

शिशु सुरक्षा दिवस

भारत में आज भी, हर साल, हज़ारों बच्चे पोलियो के शिकार होते हैं. इनमें से अनेक जीवन भर के लिए अपाहिज हो जाते हैं, या अपने माता-पिता को बिलखता हआ छोड़कर मौत के मुंह में समा जाते हैं.

इस क्रूर हादसे का सबसे दयनीय पहलू तो यह है कि इन मासूम बच्चों को पोलियो टीके की कुछ बूंदों से आसानी से बचाया जा सकता था.

एक विश्वव्यापी निधि संचय प्रयास के ज़रिए रोटरी इंटरनेशनल इस मौखिक पोलियो टीके को उपलब्ध कराने में सहायता करते हैं.

रोटरी इंटरनेशनल, भारत सरकार, विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा युनिसेफ 'पोलियो प्लस' कैम्पेन के अंतर्गत मुफ़्त पोलियो टीकाकरण के व्यापक कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं. पहला ऐसा कार्यक्रम ६ अक्टूबर को था, दूसरा १० नवम्बर को. ८ दिसम्बर को भी दोहराया जाएगा.

आप भी इसमें मदद कर सकते हैं.

इस संदेश को गरीब, अनपढ़ मज़दूरों और श्रमिकों तक फैलाइए. उन्हें कार्यक्रम के बारे में बताइए तथा उन्हें अपने बच्चों को यह टीका दिलाने के लिए प्रेरित कीजिए.

और यदि आप अपना समय दे सकें, तो टीकाकरण के दौरान सहायता के लिए अपनी सेवाएं दे सकते हैं. अथवा भंडारण (आइस बॉक्स, वैक्यूम फ़्लास्क, आदि) की व्यवस्था करने या विभिन्न स्थानों में टीके वितरित करने में मदद कर सकते हैं.

आइए आप भी योगदान दीजिए. हज़ारों बच्चों के इन अमूल्य जीवनों की रक्षा का ऐसा पुण्य अवसर आपको रोज़-रोज़ नहीं मिलेगा.

अधिक जानकारी के लिए अपने नज़दीकी रोटरी क्लब से सम्पर्क कीजिए.

PolioPlus

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आईटीसी लिमिटेड द्वारा स्थान प्रदत्त

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मचाएगी. अभी तो वह हाथ फैलाए इमाम हुसैन से रंगीन चूड़ियां, मोतियों की माला और एक बांका-सजीला, गुड्डे जैसा दूल्हा मांग रही है. वह क्या जाने कि उसे ले जाने वाले बाराती आ गए हैं. आज उसकी सुहागरात है. जब सात दूल्हे उसका घूंघट उठाएंगे... हु सैन... हु सैन... हु सैन... ने की और बदी की लड़ाई जोबन पर थी...आज शहादत की रात है... अब किसकी बारी है?

इतने में रीछ और चीता लोगों को हटाकर लड़की के करीब पहुंच गए थे. यह हमारी खास चाल थी. हुजूम में घुल-मिलकर अचानक औरत के मुंह पर इस तरह हाथ रखते कि वह बेबस हो जाती और आस-पास खड़े लोगों को जरा भी पता न चलता. फिर कमर में हाथ डालकर औरत को इस तरह पीछे की तरफ घसीटते, जैसे वह खुद ही पीछे हट रही हो. फिर कुछ दूर जाकर उसके सिर पर एक खास ढंग से मुक्का मारते कि वह बेहोश हो जाती, फौरन रीछ चिल्लाता, "रास्ता छोड़ो भाई. मेरी बहन बेहोश हो गई है. अरे कोई अस्पताल के लिए एक रिक्शा तो ला दो."

और इससे पहले कि लोग रिक्शा लाने के लिए दौड़ते, कुत्ता वह कार ले आता जिसे हम इसी काम के लिए कहीं पास ही पार्क करते थे. बेहोश लड़की को लेकर फरार होते वक्त हम कभी तबेले पहुंचने की जल्दी न करते. सब अलग-अलग रास्तों से जाते, ताकि पकड़े न जाएं.

नौबत वालों ने मातमी धुन तेज कर दी. अब चंद लमहों में रीछ लड़की के मुंह पर झपट्टा मारने वाला था.

"आगे बढ़ो...कार सामने ले आओ," बंदर ने मुझे टहोका दिया.

अलम उठाने वाला अब दहकती आग के पास पहुंच गया था. शोले लहरा रहे थे. मातम करने वाले हाथों में चाकू थामे अपने नंगे सीनों से खून उछाल रहे थे. हुसैन...हुसैन...

जैसे ही अलम उठाने वाला आग पर पांव रखेगा, सारा मजमा उधर ही देखेगा, और उसी वक्त रीछ का हाथ...

वह लड़की सारी दुनिया के तमाशों से मुंह मोड़े, हाथ फैलाए इतने इत्मीनान से खड़ी दुआ मांग रही थी, जैसे अलम उठाने वाले पर कोई आंच आ ही नहीं सकती उसकी नाक में छोटी-सी नथ झिलमिला रही थी. इतना उजाला, जैसे कोई फानूस जल रहा हो...

फिर रीछ का हाथ उस फानूस को बुझाने के लिए उठा...और मेरा चाकू फिज़ा में लहराया...हुसैन...हुसैन... ■

रिपोर्ताज संकलन

बारीक वर्णन

रेणु के रिपोर्ताज का अनूठा संकलन

समय की शिला पर
फणीश्वरनाथ रेणु
संकलन-संपादन: भारत यायावर
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
कुल पृष्ठ: 317; कीमत 125 रुपए

यह महान कथाशिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु के अब तक उपलब्ध रिपोर्ताज का संकलन है. कथा रस से सराबोर इन रिपोर्ताज में रेणु ने सामाजिक, राजनैतिक और प्राकृतिक त्रासदियों के दौरान मानव प्रकृति के रंगों का जिस बारीकी से वर्णन किया है, वैसा शायद ही कोई दूसरा लेखक कर पाया हो. इनमें रेणु बेहद सामान्य ढंग से घटनाक्रम के अंग बन जाते हैं.

रेणु ने जो पहला रिपोर्ताज लिखा था वह 'विदापत नाच' था. मुसहरों, धांगड़ों और दुसाधों के इस लोकनृत्य के जरिये उन्होंने अभिजात वर्ग पर कड़ी चोट करते हुए दलित वर्ग के लोगों की जीवन-स्थितियों को रोचक किंतु मार्मिक तरीके से उकेरा है.

'हड्डियों का पुल' और 'भूमिदर्शन की भूमिका' क्रमशः बाढ़ और सूखा से उत्पन्न अकाल पर लिखे गए रिपोर्ताज हैं जिनमें 'देवता रूपी' नेताओं और 'देवदूत रूपी' समाज सेवकों की असलियत उजागर की गई है. 'हड्डियों का पुल' में रेणु "आशा की चमक...क्रांतिकारी की चिनगारी निकलते" देखते हैं लेकिन 'भूमिदर्शन की भूमिका' में वे 'बोतल दास' बनकर अपना ही मजाक उड़ाते हैं. और कहते हैं, "इतने लोग मर गए तो क्या हुआ? ... क्या होगा/ कुछ नहीं होगा." यह दरअसल एक बेहद संवेदनशील लेखक की निराशा और पीड़ा है जिसने सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ता के रूप में आपदाओं में राहत पहुंचाने का काम करते हुए समाज के 'बड़े लोगों' की लूट को बहुत करीब से देखा है.

इन दोनों रिपोर्ताज में रेणु ने भूख से तड़प-तड़प कर मरने वालों का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है तो 'पटना-जलप्रलय' व्यंग्य रूप दिया है. पटना में आई गरीबों की झोपड़ियां भले ही वह लेकिन शहर के तथाकथित अभिजात के लोगों ने बाढ़ का इस्तेमाल मनाने जैसा किया. बाढ़ पर ही एक रिपोर्ताज 'पुरानी कहानी: नया पाठ' 'एकलव्य के नोट्स' आजादी के बाद बदलते हुए गांव का चित्र है. उसे समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण भी कहा सकता है. इसके कुछ अंशों का इस्ते 'पाती-परिकथा' में हुआ है.

नेपाल, जिसे रेणु अपनी सोन (मौसी) कहते थे, पर दो रिपोर्ताज 'नेपाली क्रांति-कथा' बी.पी. कोइराल नेतृत्व में राणाशाही को खत्म करने लिए हुई सशस्त्र क्रांति का आंखों हाल है तो 'सरहद के उस विराटनगर के मिल-मजदूरों के हाल का. राणाशाही के खिलाफ 195 क्रांति में रेणु ने अपनी पार्कर-51 और टॉमीगन के साथ भाग लिया था

'समय की शिला पर: सिताब खाजा' में नालंदा-राजगिर के बदले स्वरूप और 'नए सवेरे की आशा' 194

संकलन की भूमिका से

रेणु साहित्य का महत्व ही इसलिए है कि वह अपने स्वर या 'टोन' में आंचलिकता का बराबर अतिक्रमण करता है. खासकर ये रिपोर्ताज इसके सशक्त उदाहरण हैं...वे वर्तमान को देखते हुए सुदूर अतीत के स्मृति-चित्रों को कभी याद करते हैं तो कभी भविष्य में भी झांकने की कोशिश करते हैं...

पटना में हुए ऐतिहासिक किसान मजदूर पर लिखे गए रिपोर्ताज हैं.

'तीसरी कसम' फिल्म से संबंधित रिपोर्ताज 'तीसरी कसम के सेट पर दिन' और 'स्मृति की एक रील' बहुत दिलचस्प हैं. रेणु ने इनमें अपने मित्र मशहूर गीतकार शैलेंद्र को तरह से याद किया है, उसके पीछे गहरी आत्मीयता तो है ही, जैसे मानवीय गुणों को भी व्यापक संदर्भ उजागर किया गया है

समाज की विडंबनाओं विद्रूपताओं को उकेरने वाले समय शिला पर अंकित इन रिपोर्ताज से कथा साहित्य तो समृद्ध हुआ ही है, पत्रकारिता को भी नई दिशा मिली है।

—ज. का. स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास... जिसका आधार है यह भरोसा कि हाँ, कोई है अपने साथ भी. जैसे युनाइटेड इंडिया. बीमा हमसे कराइए. कठिन राह के हर कदम पर हम होंगे आपके साथ. यानी हर खतरे पर आपकी पूरी देखरेख.

क्योंकि युनाइटेड इंडिया को फिक्र बनी रहती है आपकी. आपके कामकाज की सुरक्षा की. बहुत जतन से संजोए आपके साज सामान के संरक्षण की. फिक्र रहती है आपके परिवार की. बल्कि यूँ कहिए कि आपके आसपास के पूरे वातावरण की.

सारे देश में फैले अपने करीब 1200 कार्यालयों के जरिए आपकी जरूरत के वक्त मदद के लिए हम तुरंत पहुंचते हैं आपके पास. हमारे कार्यालयों में आइए... पूछिए... बताइए. सुखी भविष्य की सही राह पे ले चलने में, हम आपकी मदद करेंगे.

युनाइटेड इंडिया की बीमा योजनाएँ
जिम्मेवारी सुरक्षा की ❑ देखभाल की.

युनाइटेड इंडिया इन्श्यूरेन्स कं. लि.
(भारतीय साधारण बीमा निगम की सहायक कंपनी)
24 व्हाइट्स रोड, मद्रास 600 014.

युनाइटेड इंडिया की बीमा पॉलिसियां हर प्रयोजन के लिए, जैसे : घर, कारखाने, दुकानें, दुर्घटनाएं, विविध व्यापारिक व ग्रामीण क्षेत्र की गतिविधियां.

HTA 8025

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचाई खुलने का डर

उस पार्टी में **शिल्पा शिरोडकर** के स्वागत में रीमा सप्रू (शिल्पा के सेक्रेटरी राकेशनाथ की लेखिका पत्नी) आगे बढ़ीं तो शिल्पा कन्नी काट गई. थोडी देर में रीमा ने स्नैक्स पेश करने की कोशिश की. इस बार शिल्पा ने अनदेखा करके मुंह फेर लिया और किसी से बातचीत शुरू कर दी. कुछ समय बाद रीमा कोल्ड ड्रिंक लेकर आई तो शिल्पा इस कोने से हटकर बिलकुल दूसरे कोने में चली गई. लेकिन रीमा थकी नहीं. थोड़ी-थोड़ी देर में शिल्पा का पीछा जारी रखा उन्होंने. अब तक इस खेल में दर्शकों को भी मजा आने लगा था लेकिन जरा देर में देखा, शिल्पा पार्टी से अचानक ही गायब!

इस खेल का रहस्य जानना चाहते हैं आप? एक तरफ शिल्पा शिरोडकर हर जगह, हर किसी को यह सफाई देती फिरती हैं कि अपने सेक्रेटरी राकेशनाथ के साथ उनके वैसे नजदीकी संबंध नहीं हैं जैसे उन्हें बदनाम करने के लिए बताए जाते हैं. उनके मुताबिक इंडस्ट्री में उनसे चिढ़ने वालों ने यह शगूफा छोड़ा है. दूसरी तरफ वे हर ऐसे मौके से बचती फिरती हैं जहां रीमा से सामना की संभावना हो.

आखिर रीमा से दूरी क्यों रखना चाहती हैं शिल्पा? सचाई पर परदा डालने के लिए या परदा उठ जाने का खतरा बचाने के लिए?

शिल्पाः कहीं सामना न हो जाए

करिश्माई तर्क

करिश्मा की अभी सिर्फ एक रिलीज हुई है—'प्रेम कैदी'. वह भी बस ऐसी कि सो-सो. पिछली फिल्म निर्माता का इरादा था कि फटाफट 'क्विकी' बना डालें. करिश्मा को लेने फायदे नजर आ रहे थे. वे नई जल्दी मिलेंगी. थोड़ी अनुभवी परेशानी नहीं होगी और फिर भी सीमा में ही होगा. मगर करिश्मा रेट बताया, उसे सुनकर निर्माता गए. अगर तिहाई बजट सिर्फ हीरोइन लग गया तो बाकी फिल्म कहां से उसने करिश्मा को समझाना चाहा इतना ऊंचा पारिश्रमिक मांगना वाजिब नहीं.

करिश्मा के तर्क थे—"मैं स्टार्स—रणधीर कपूर और बबीता स्टार बेटी हूं. मुझे तो लोग यों ही चाहते हैं. दूसरे, मैं हिट फिल्म की हूं. और तीसरे, मैंने इतनी फिल्में रखी हैं कि अभी एक साल तक डेट्स नहीं हैं. मैंने आपको जो प्राइ है, वह तो रियायत करके..."

गैर-रियायती प्राइस पूछने ही कहां बाकी बची थी प्रोड्यूसर

करिश्मा कपूरः भाव ऊंचे

सपनों की चोरी

नटराज स्टुडियो के अहाते में मुहूर्त शॉट हुआ और बड़ा अच्छा हुआ. फिर भी प्रसन्न नहीं थे हीरो **संजय दत्त**. उनकी परेशानी एक ही बात को लेकर थी—उनके सपने चोरी कैसे हो जाते हैं?

दरअसल, संजय समय से काफी पहले स्टुडियो आ गए थे. एक प्रोड्यूसर को उन्होंने मिलने यहीं बुला लिया था. प्रोड्यूसर अपने लेखक को भी लाए और जल्दी-जल्दी में उन्होंने कहानी का संक्षिप्त आइडिया भी सुना दिया. बस, तभी से संजय का मूड उखड़ा-उखड़ा-सा हो गया. क्योंकि यह बिलकुल वही आइडिया था जिस पर वे खुद फिल्म बनाने की बात सोच रहे थे. ऐसा पहले भी हो चुका है.

सपने चोरी हो जाने का रहस्य! दरअसल वे सारी विदेशी फिल्में, जिनका भारतीय संस्करण बनाने का सपना संजय संजोते हैं, उन प्रोड्यूसरों-डायरेक्टरों ने भी देख ली होती हैं जो संजय से बेहतर निशाना साध लेते हैं.

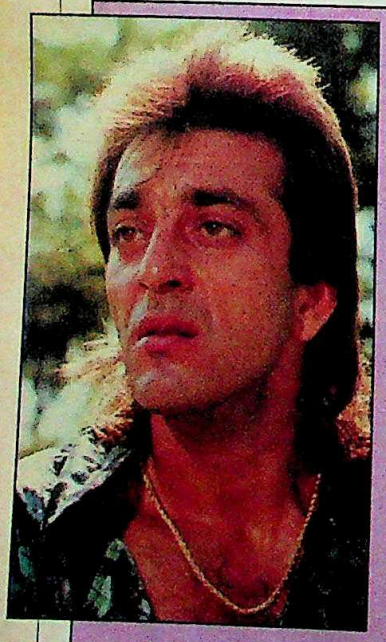

संजयः अजीब उलझन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों ठंडे हुए

आनंद का डबिंग और रिकॉर्डिंग स्टुडियो 'आनंद' उस दिन एक
क का रंगमंच बनते-बनते रह गया. भला हो उस सुंदर कन्या का
न **चक्रवर्ती** को समझा-बुझाकर ले गई.
न यहां आए थे अपनी किसी पुरानी, अटकी
की डबिंग पूरी कराने. फिल्म का नाम किसी का
नाया नहीं था और वैसे भी बंगाली बाबू काफी
के बाद इस स्टुडियो में दिखाई दिए थे और फिर
हीरो की जब फिल्में फ्लाप होने लगती हैं तो हर
न्नी कसने को आजाद हो जाता है. सो, यहां भी
नी फब्तियां कसी गईं.
र बस मिठुन आगबबूला हो उठे. बात और
के पहले मिठुन की महिला मित्र उन्हें बहला-
कर ले गईं और जब वे फिर लौटे तब
न सामान्य, ज्यादा तरोताजा नजर आ रहे थे.
को 'आत्मविश्वास' बनाए रखने को
हारा तो चाहिए ही.

मिठुनः सहारा हो तो ऐसा

मधुर झिड़की

एक जमाना वह था जब इस फिल्म नगरी में उनके मौजूद रहने भर से फिल्म इंडस्ट्री में सनसनाहट रहती थी. हां, जिक्र श्रीदेवी का ही है. मगर आज हालत यह है कि वही श्रीदेवी महबूब स्टुडियो में शूटिंग करती रहीं और किसी को कुछ फर्क नहीं पड़ा. सिवा **माधुरी दीक्षित** के, क्योंकि इंडस्ट्री ने श्रीदेवी के सूर्य को अस्ताचलगामी मान लिया है.

लेकिन माधुरी श्रीदेवी के हर कदम, हर चाल पर इतनी गौर से नजर रखती हैं कि महबूब में श्री ने कौन-सा शॉट किस तरह दिया, वे 35 किलोमीटर दूर फिल्मसिटी में शूटिंग करते-करते सब मालूम करती रहीं.

श्रीदेवी के प्रति उनकी इतनी उत्कंठा देखकर एक असिस्टेंट का उत्साह बढ़ा, "अजी, अब श्रीदेवी हैं क्या आपके सामने? '100 डेज़' और 'साजन' दो-दो हिट फिल्में दी हैं आपने. उनके पास क्या है गिनाने को...?"

इसके पहले कि सहायक अति उत्साहित हो जाता, माधुरी ने उसकी जबान को मधुर लगाम दे दी, "अपनी खूबियों और उनकी कमियों से मुझे मतलब नहीं. उनकी कोई खूबी और मेरी कोई कमी गिना सको तो बात करो आगे."

ऐसी हिमाकत नहीं कर सकता मामूली असिस्टेंट, यह तो माधुरी को मालूम होगा ही.

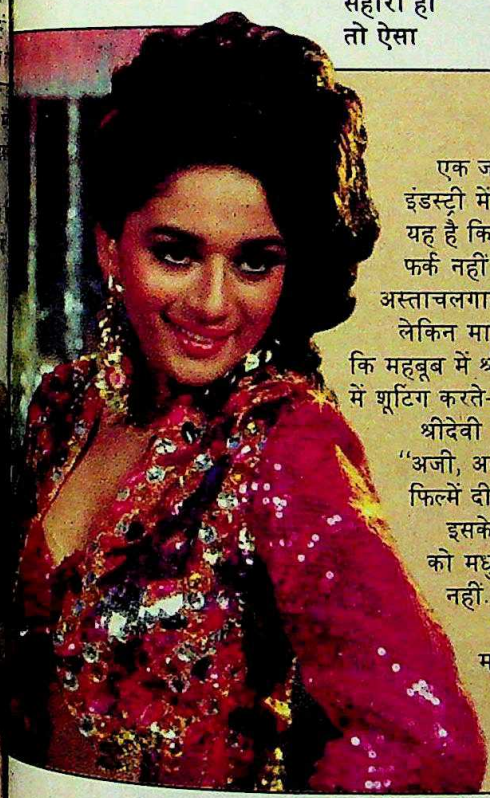

माधुरी दीक्षितः श्रीदेवी पर नजर

दूसरी औरत?

मूर्त **रीमा लागू** आधुनिक मां की भूमिकाओं के लिए डायरेक्टरों की पहली पसंद हैं.
नय स्टुडियो में वे किसकी मां बनने की तैयारी कर रही थीं, इसका पता लगाने की
ही नहीं आई क्योंकि 'दूसरी औरत' की दास्तां का वहां जोर था.
म से कोई ताल्लुक न रखने वाली इस कहानी के मुताबिक रीमा के पहुंचने से पहले
ी उनकी तलाश में चक्कर लगाकर लौट गई थी. उसका आरोप था कि रीमा लागू
के धनाढ्य पति को भरमा लिया है.
ब्रेक में जब पत्रकारों ने पूछना शुरू किया तो जानते हैं क्या हुआ? तबीयत ठीक न
की वजह से रीमा शूटिंग से छुट्टी लेकर घर चली गईं.

रीमा लागूः 'दूसरी औरत' की भूमिका?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेमंत पिठवा

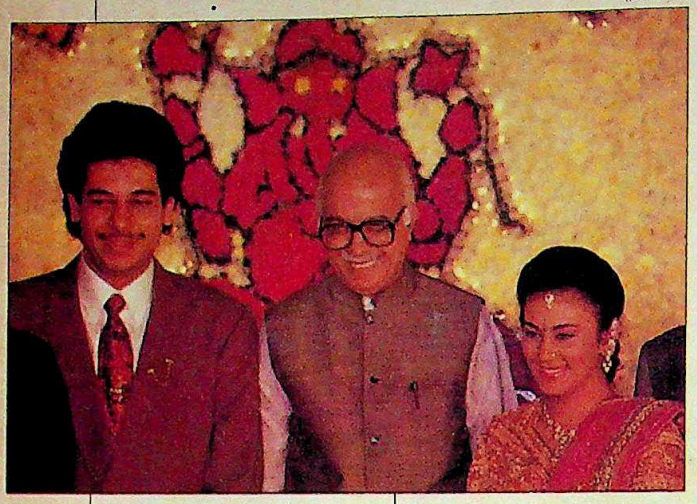

टोपीवाला, आडवाणी, दीपिका

राम मिल गए

◆ दुलहन भगवा रंग...नहीं, नहीं, लाल रंग के कपड़ों में सजी हुई थी. मौका था: सीता... नहीं **दीपिका चिकलिया** (जो कि भाजपा सांसद हैं) और उनके असली जीवन के राम **हेमंत टोपीवाला** का विवाह भोज. इसमें रामानंद सागर और राजेश खन्ना सहित कई हस्तियां शामिल हुईं. दीपिका ने कहा, "जहां तक हेमंत का सवाल है, मैं नहीं चाहती कि वे पूरी तरह से राम बन जाएं."

सचमुच हरफनमौला

हरफनमौला **कपिलदेव** क्रिकेट के मैदान में जितना सहज रहते हैं उतना ही कैमरे की आंख के सामने भी. अब वे छोटे परदे के व्यावसायिक विज्ञापनों से निकलकर बड़े परदे पर आ गए हैं. राज बब्बर की नई फिल्म 'कर्मयोद्धा' में वे थोड़े समय के लिए दिखाई पड़ते हैं. उनकी भूमिका. नशीले पदार्थों से दूर रहने का संदेश देना. फिल्म देखने के बाद उत्तेजित कपिलदेव ने कहा, "मैं नहीं जानता था कि मेरी आवाज इतनी गंभीर है." सो, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि क्रिकेट मैदान से लेकर फिल्मी परदे तक वे हरफनमौला नजर आए.

राज बब्बर और कपिलदेव

चौंकाऊ चर्चा

◆ सनसनीखेज समाचार देने वाले पाकिस्तानी अखबारों के लिए यह बड़ा मसाला था और उन्होंने प्रधानमंत्री नवाज शरीफ और हिंदुस्तानी अभिनेता फिरोज खां की बेहद खूबसूरत बहन **दिलशाद खां** के प्रेम प्रसंगों की सुर्खियों में खबरें छापीं. फिर अंबानी के 'संडे आब्जर्वर' ने भी इसे पहले पेज पर छापा. पर दिलशाद इससे खुश नहीं हुईं. बताया जाता है कि अगर आब्जर्वर ने अपनी खबर का खंडन नहीं किया तो वे एक करोड़ रु. का मानहानि का दावा करेंगी. लेकिन संपादक प्रीतीश नंदी कहते हैं, "हरगिज नहीं. यह खबर हमें भरोसेमंद सूत्रों से मिली है." शायद अभी और कुछ पढ़ने को मिले.

दिलशाद: सुर्खियों से नाखुश

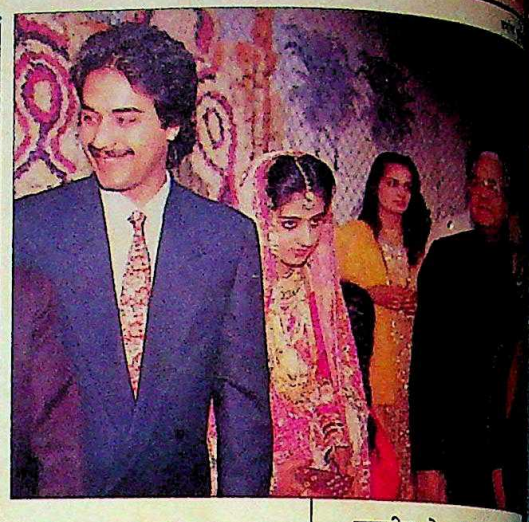

कुलदीप, रेणुका, भजनलाल

सारी मर्यादाएं ताक

◆ हरियाणा के मुख्य भजनलाल के निर्वाचन मंडी आदमपुर को दुलहन तरह सजाया गया था था उनके बेटे कुल **बिश्नोई** की शादी का छह घोड़ों वाले रथ में **रेणुका** के घर आया. फूलों से सजी एक 3-डी के सामने शर्माए-से लगभग 50,000 लोगों ने खाया. इस शादी में करोड़ रु. खर्च हुए. लेकिन कि एक रिश्तेदार ने कहा, मिनिस्टर हैं. अब लड़कों की कोई रोज-रोज थोड़ी न होती

सम्मानों की वर्षा

◆ अमूमन ऐसा कम ही होता है कि सम्मानों से झोली एकाएक ही भर जाए. अमिताभ बच्चन ऐसे ही खुशकिस्मत हैं. शुरुआत लंदन फिल्म समारोह से हुई. उन्होंने प्रतिष्ठित 'गार्जियन' व्याख्यान माला में व्याख्यान दिया. एशियाई लोगों की अपार भीड़ उन्हें सुनने आई. इसके पहले सत्यजित राय और रॉबर्ट डि नीरो जैसी हस्तियां यहां व्याख्यान दे चुकी हैं. लंदन के बाद ऐम्स्टर्डम, दमिश्क और काहिरा में पुनरावलोकन का आयोजन होगा. मुंबई की तो बात ही छोड़ दीजिए. अमिताभ कहते हैं, "खैर, ज्यादा पुनरावलोकनों का मतलब चुक जाना भी हो सकता है." लेकिन अमिताभ अभी आप कहां चुके हैं.

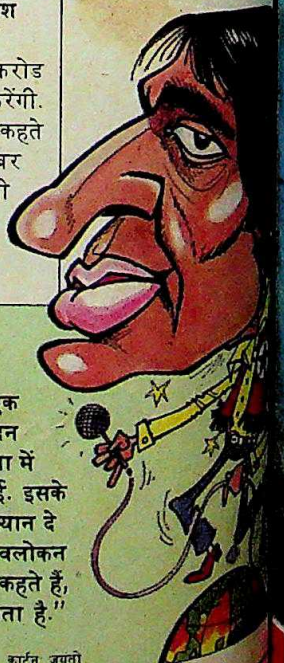

कार्टून: जयंती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

31 दिसंबर 1991 11 रुपए

इंडिया टुडे

नरसिंह राव: मजबूती से जमते पांव
जनता दल: तकरार और वार
मनमोहन सिंह: भविष्य तो अनिश्चित है

हवाई अड्डों की सुरक्षा

खतरनाक खामियां

इंदिरा गांधी हवाई अड्डे पर बम नाकाम करने वाले दस्ते का सदस्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AVAILABLE AT SELECTED CITY

Rothmans

KING SIZE

WORLD LEADER

THE BEST TOBACCO MONEY CAN BUY

Made in India under licence by Godfrey Phillips (India) Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

Statutory Warning
Cigarette smoking is injurious to h

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खतरनाक खामियां

एअर इंडिया के विमान में मिले बम के बाद की पड़तालों से हवाई अड्डों की सुरक्षा व्यवस्था की भारी खामियां उजागर हुई हैं. विमानों को बाहर से ही नहीं, उडान से जुड़े कर्मचारियों से भी खतरा है. मौजूदा व्यवस्था में हवाई अड्डे बेहद असुरक्षित हो गए हैं.

आवरण कथा 14

भीतरी तकरार से खुले वार तक

जनता दल का संकट अब भीतरी तकरार से खुले वार तक पहुंच गया है. विश्वनाथ प्रताप सिंह खेमे ने चुनौती दे रहे प्रतिद्वंद्वी अजित सिंह खेमे पर खुला वार करके उसे फिलहाल शिकस्त तो दे दी है मगर इससे कुल मिलाकर पार्टी ही कमजोर हुई.

खास रपट 23

मजबूती से जमते पांव

प्रतिद्वंद्वियों को मात देकर नरसिंह राव ने साबित किया है कि अल्पमत सरकार भी राजनैतिक-आर्थिक क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम उठा सकती है. वैसे, इनका कसौटी पर खरा उतरना बाकी है लेकिन राव ने अपनी कार्यशैली से भारी प्रशंसा बटोर ली है.

विशेष लेख 25

परंपरा के परास्त प्रहरी

तमिलनाडु में मंदिरों के शहर चिदंबरम में बसा दीक्षितर ब्राह्मण समुदाय आज भी मंदिरों का रखरखाव करते हुए प्राचीन परंपरा के निर्वाह में जुटा हुआ है. मगर बदलते सामाजिक-आर्थिक दबावों के आगे वह परास्त होता भी दिख रहा है.

छाया-लेख 52

पैसा और प्रसिद्धि

अमृतराज बंधु टेनिस कोर्ट से विदा ले चुके हैं लेकिन पैसे और प्रसिद्धि की चकाचौंध बरकरार है. करोड़ों डॉलर का कारोबार जमा लेने वाले अमृतराज बंधु शानो-शौकत से जी रहे हैं. जल्द ही वे कैलिफोर्निया के प्रसिद्ध भारतीय परिवारों में शुमार होंगे.

विशेष लेख 60

'भविष्य तो अनिश्चित है'

देश की डांवाडोल आर्थिक स्थिति को दुरुस्त करने के लिए वित्तमंत्री मनमोहन सिंह ने कई बुनियादी परिवर्तनों की शुरुआत की. पांच महीनों में उनका बहुत असर तो नहीं दिख सकता मगर आगे क्या कुछ हो सकता है, इस पर वित्तमंत्री से लंबी बातचीत.

मुलाकात 78

अगले पन्नों पर

कसौटी 7
तेवर 8
राजरंग 10
हिंदोस्तां हमारा 12
आवरण कथा
हवाई अड्डों की सुरक्षा:
खतरनाक खामियां 14
खास रपट
जनता दल:
भीतरी तकरार से खुले वार तक 23
विशेष लेख
पी.वी. नरसिंह राव:
मजबूती से जमते पांव 25
आजकल
पप्पू यादव: बाहुबली बंदी 33
शिवसेना: नासूर टूटे शेर के 34
उत्तर प्रदेश: जान सांसत में 35
हरियाणा:
धरी रह गई सारी चौकसी 36
एकता यात्रा: फीकी शुरुआत 37
दिल्ली: दर्जे के दर्द को मलहम 38
सनद रहे 40
खास रपट
दत्ता सामंत:
सुर्खियों से हाशिये की ओर 45
छाया-लेख
दीक्षितर समुदाय:
परंपरा के परास्त प्रहरी 52
विशेष लेख
अमृतराज बंधु: पैसा और प्रसिद्धि 60
पास-पड़ोस
भूटान: बारूद के ढेर पर 69
खास रपट
तमिलनाडु:
चूक करके चक्कर में फंसे 74
व्यापार चक्र 77
मुलाकात
मनमोहन सिंह:
'भविष्य तो अनिश्चित है' 78
विशेष लेख
आंध्र प्रदेश:
दबी-दबी सुलगती चिनगारी 87
शिक्षा
काशी हिंदू विश्वविद्यालय:
हिंसा का दौर 89
पुण्यस्मृति
बिमल मित्र:
सही अर्थों में पाठकों के लेखक 90
खेलकूद
क्रिकेट: खाता खुलते ही खामी दिखी ... 93
कुछ अपनी, कुछ परायी 101
किताबें 108
अंतरंग 109
परदे के उस पार 110
चर्चित चेहरे 112

आवरण: भवान सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डैंड्रफ़ रहने पर मैं क्लिनिक स्पेशल क्यों इस्तेमाल करती हूं.

क्योंकि क्लिनिक स्पेशल से ज्यादा कारगर कुछ है ही नहीं.

क्लिनिक स्पेशल सचमुच प्रभावशाली है, क्योंकि यह तैयार किया गया है अंतर्राष्ट्रीय फ़ॉर्मूले से जिसमें है पिरॉक्टोन.

क्लिनिक स्पेशल सिर की त्वचा से, जहाँ डैंड्रफ़ पैदा होते हैं, डैंड्रफ़ को बड़ी नरमाई से ढीला करके हटा देता है और इस प्रकार सिर की त्वचा और बाल डैंड्रफ़ मुक्त हो जाते हैं.

क्लिनिक स्पेशल जाँच

डैंड्रफ़ है तो इसको आज़माएं. क्लिनिक स्पेशल कितना प्रभावशाली है आप जान जाएंगे.

सिर के आधे हिस्से को 4 हफ़्ते तक मामूली शैम्पू से धोइए.

इसी दौरान सिर के दूसरे आधे हिस्से पर क्लिनिक स्पेशल हौले-हौले मलिए.

4 हफ़्ते बाद

यहां आपको डैंड्रफ़ नज़र आएगा.

डैंड्रफ़ का नामोनिशान नहीं. बस मुलायम, चमकीले, शानदार बाल.

मैं क्लिनिक स्पेशल इस्तेमाल करती हूं.

डैंड्रफ़ रहने पर और डैंड्रफ़ न रहने पर.

डैंड्रफ़ न रहने पर भी मैं क्लिनिक स्पेशल क्यों इस्तेमाल करती हूं.

बस इसीलिए कि डैंड्रफ़ दुबारा न होने पाए. इतना ही नहीं इसके इस्तेमाल से मेरे बाल शानदार नज़र आते हैं. इसीलिए तो मैं क्लिनिक स्पेशल नियमित रूप से इस्तेमाल करती हूं.

क्लिनिक स्पेशल दो तरह से काम करता है.

सिर की त्वचा पर यह प्रभावशाली ढंग से काम करता है और उसे डैंड्रफ़ मुक्त रखता है. और इसका घना मुलायम कंडीशनर बालों को मुलायम, चमकदार और शानदार बनाए रखता है.

क्लिनिक स्पेशल

ऐंटी-डैंड्रफ़ शैम्पू

स्वस्थ बालों के लिए क्लिनिक देखभाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

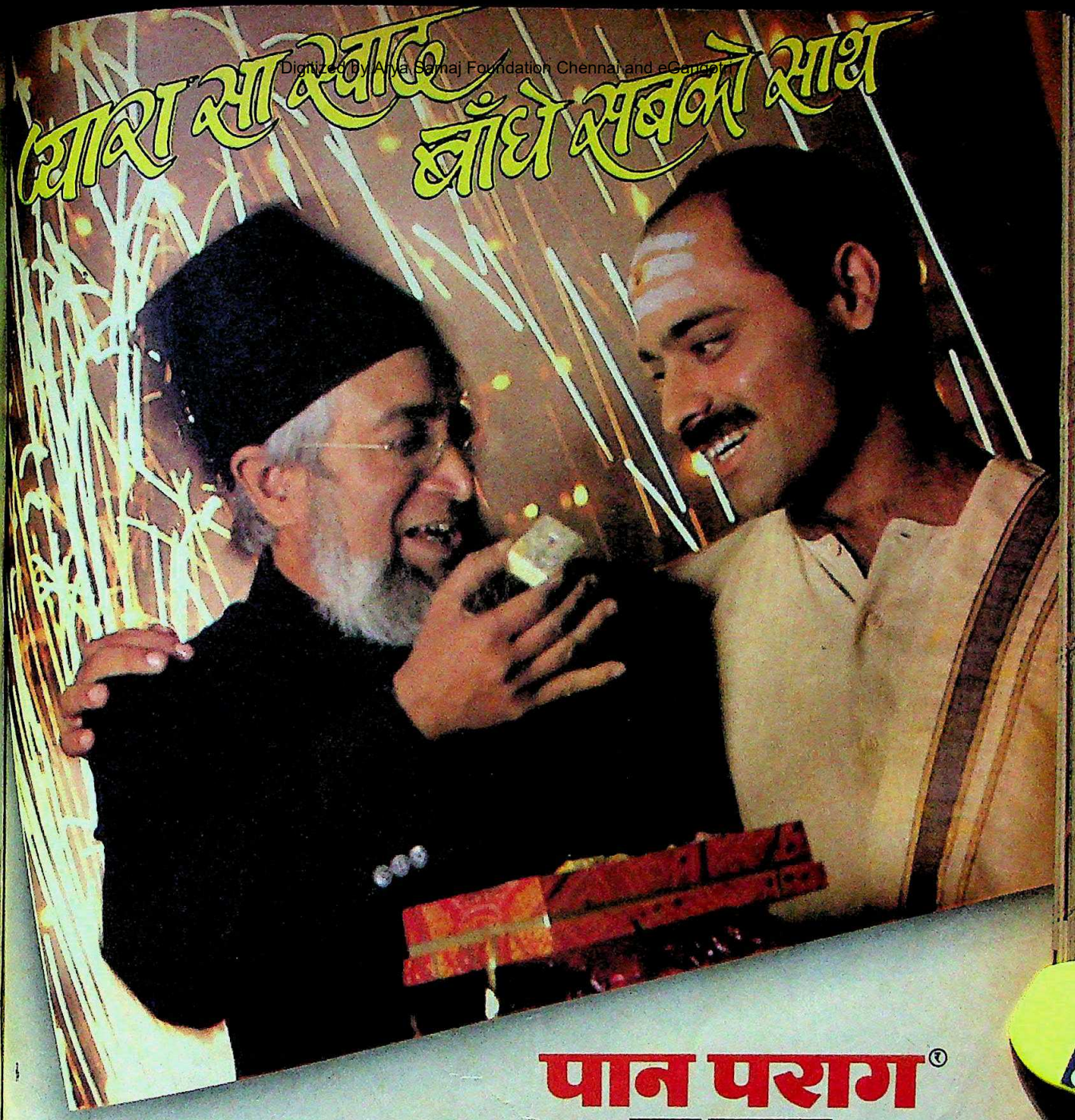

पान पराग®

पान मसाला

अलग-अलग भाषाओं में, धर्मों की सीमाओं में, इक
प्यारा सा नज़राना भी है, जिसे थामे सबका हाथ, जो
बाँधे सबको साथ। छोटी सी डोर दीवार गिरा दे,
धूम मचा दे, रंग जमा दे।
प्यारा सा स्वाद जो बाँधे सबको साथ।

धूम मचा दे... रंग जमा दे

पान मसाला चबाना स्वास्थ्य के लिये
हानिकारक हो सकता है।

...tion, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Yes! Mein Tumhe Super Snowcem
He De Raha Hoon. Jyada Biknewala,
Jyada Tiknewala **Super Snowcem.**"

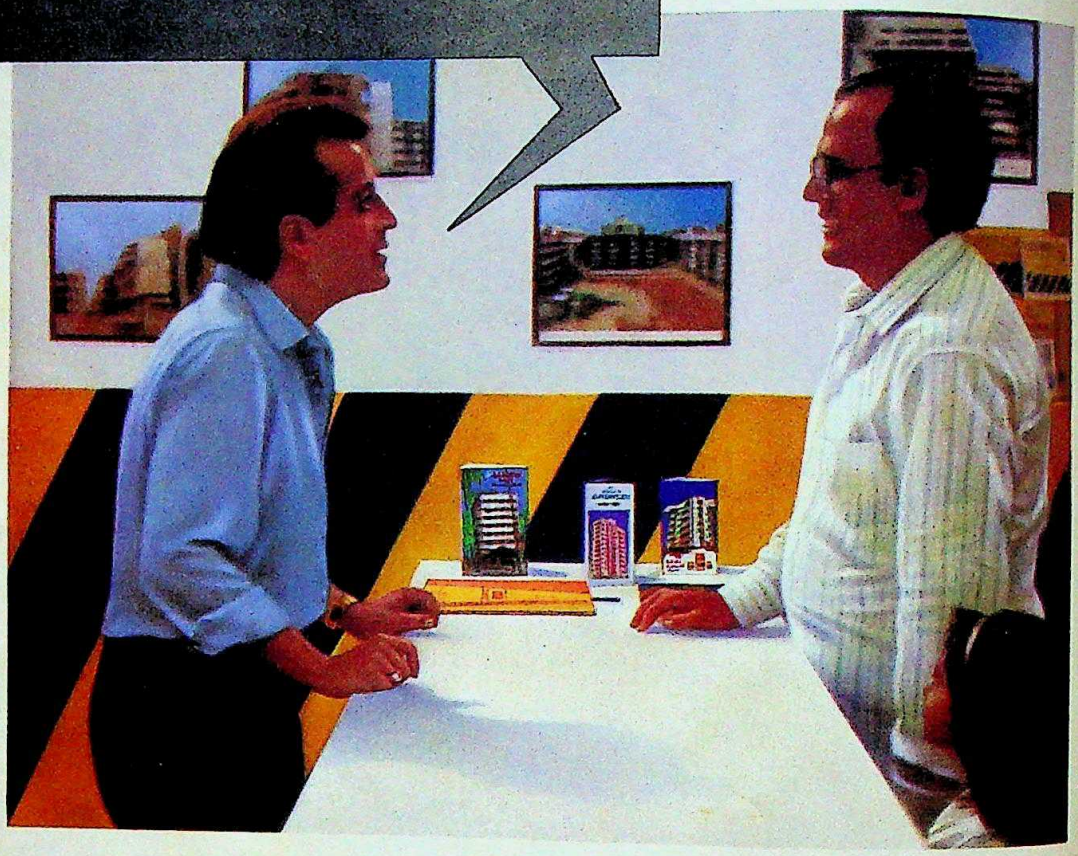

We have been hearing this conversation for over 30 years. Super Snowcem has been and still continues to be the first choice of the public, architects, builders, painters and dealers.

SUPER SNOWCEM*

India's No.1 Cement Paint.

Snowcem India Ltd. Killick Estate, Baji Pasalkar Marg, Chandivali, Bombay - 400 072.
Tel.: 578 1482 (7 lines). • Ahmedabad - 352052, Bangalore - 572308, Calcutta - 304200, Cochin - 366583, Jaipur - 61714, Kanpur - 212461, Madras - 869301, New Delhi - 312511, Secunderabad - 842788.

Call or write today for a free shade card.

* Manufactured under licence from Blue Circle Industries Ltd., U.K.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना नारा सिरदर्द बना

आवरण कथा 'बिगड़ते रिश्ते' (30 नवंबर) एक अचंभा-सी लगी. भाजपा द्वारा हिंदुओं की भावनाएं भड़काने के नारे ही उसके लिए सिरदर्द बन गए हैं. भाजपा-रास्वसंघ-विहिप गठजोड़ का भविष्य अंधकारमय ही है, क्योंकि भाजपा के सहयोगी उत्तर प्रदेश सरकार से आवश्यकता से अधिक अपेक्षा रखते हैं.

कैथल (हरियाणा) **मुनीश कुमार राणा**

■ संघ परिवार के बेमेल संबंधों की कटुता का एकमात्र कारण राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद आंदोलन के प्रति इनकी विविधतापूर्ण निष्ठा है जो अब तक काफी नकारात्मक रूप धारण कर चुकी है. सच तो यह है कि रामभक्ति के प्रति इनके ढपोरशंखी दावे खोखले कारतूस से अधिक कुछ नहीं.

पटना (बिहार) **सौमित्र मोहन**

■ स्पष्ट है कि विहिप ही हिंदुत्व का राग अलाप रही है. लेकिन विहिप की बढ़ती भूमिका को लेकर भाजपा में व्याकुलता का कोई लक्षण अभी नहीं है और हिंदुत्व से फायदा उठाने के लिए अशोक सिंघल-लालकृष्ण आडवाणी में मतभेद भी नहीं हैं. लेकिन मौजूदा समय में भाजपा के लिए यह उचित नहीं है कि वह नरम दिखाई दे.

इलाहाबाद (उ.प्र.) **सत्येंद्र बहादुर सिंह**

■ भाजपा, बजरंग दल और शिवसेना के संबंधों के बिगड़ने की आखिर इतनी चिंता क्यों? आखिर ये भी तो राजनैतिक दल ही हैं. आज जब लोगों को इनके टूटने की आवाज सुनाई देती है तो भारत के टूटने की आवाज क्यों नहीं, क्या आज भाजपा मुस्लिम लीग की भूमिका अदा नहीं कर रही है? क्या बाल ठाकुरे के तानाशाही बयान हिटलर की याद नहीं दिलाते? क्या प्रेस पर हमला लोकतंत्र पर हमला नहीं है? अगर यह सब है तो इस राष्ट्र में जिन्ना और हिटलर जन्म ले चुके हैं और भारत की अखंडता पुनः खतरे में आ चुकी है.

अलीगढ़ (उ. प्र.) **मुहम्मद तारीक**

■ भाजपा की उलझनों की अच्छी विवेचना की गई है. मंदिर मुद्दे पर अब अगर भाजपा कानूनी, संवैधानिक, तकनीकी आदि अड़चनों का बहाना लेकर निर्माण में देर करेगी तो आम लोगों के साथ-साथ उसके सहयोगी भी यह बेचैनी भरा सवाल तो पूछेंगे ही कि क्या अड़चनें पहले नहीं थीं?

पटना (बिहार) **पंकज पुनु**

'बिगड़ते रिश्ते' में दिया गया विवरण कोई शुभ संकेत नहीं है. 31 अक्तूबर की अयोध्या की घटनाएं सिद्ध करती हैं कि यह आंदोलन उग्रपंथियों के हाथों में जा सकता है.

कलकत्ता **राम अवतार सराफ**

राम जन्मभूमि के आंदोलन में कुछ कार्यकर्ताओं का उग्र होना इन सभी संगठनों के लिए मामूली घटना है. आवरण कथा से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आदेश सबके लिए सर्वोपरि है.

सींगताम **शिव भ. पुरोहित**

■ 'बिगड़ते रिश्ते' शीर्षक उपयुक्त ही है. भाजपा शासित उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार होते हुए मंदिर अब भी नहीं बना तो कब बनेगा? मंदिर की आड़ में भाजपा 1991 के चुनावों में काफी सीटें ले चुकी है. जनता ने उसे मंदिर निर्माण के लिए चुना है, न कि राज करने के लिए! अगर मंदिर का निर्माण जल्द न हुआ तो भाजपा आरएसएस-विहिप के रिश्ते और बिगड़ेंगे.

यमुनानगर (हरि.) **सिम्पल सिंह**

■ सत्ता से बाहर रहकर हो-हल्ला करना कितना आसान होता है परंतु सत्ता की कुर्सी पर आसीन होने के बाद कानून व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करना कितना पेचीदा हो जाता है, यह बात तो कल्याण सिंह से पूछो. यही कारण है कि भाजपा-आरएसएस-विहिप तथा बजरंग दल के संबंधों में कड़वापन पैदा हो गया है.

हल्द्वानी (उ.प्र.) **विजय पाल**

खोखलापन उजागर

खास रपट 'दिखाने के दांत' (30 नवंबर) ने साबित कर दिया है कि अपने को हरिजनों और पिछड़ों का मसीहा कहने का दंभ पालने वाली लालू सरकार के दावे कितने खोखले साबित हो रहे हैं. ये राजनेता तो कुर्सी पर अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए जनता को बरगलाते हैं पर वास्तविक स्थिति यह है कि इस राज्य में पिछड़ों के प्रति सामाजिक शोषण और भ्रष्टाचार की जड़ें काफी गहरी जम चुकी हैं. महज हरिजन थाने खोल देने भर से ही उन पर हो रहे जुल्मों में कमी नहीं हो सकती है.

दरभंगा (बिहार) **विनय पंकज**

सराहनीय जद्दोजहद

'जीने के लिए जोखिम भरी जद्दोजहद' (30 नवंबर) पढ़ा. केरल के इडुक्की जिले में पेरियार नदी के किनारे कुछ गांवों में बसे लोगों की बांस और नरकट काटकर जीवन गुजारने की दास्तान वास्तव में दर्द भरी है.

विलासपुर (म.प्र.) **रामानंद दुबे**

वर्ष: 6, अंक: 4, 16-31 दिसंबर 1991
● संपादकीय कार्यालय: लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313601-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ग्राहकी चंदा भेजें: इंडिया टुडे (हिंदी), पी.बॉक्स 114, नई दिल्ली-110001 ● सर्कुलेशन कार्यालय: इंडिया टुडे, एफ-14, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8. टेलेक्स: 31-62634 INTO IN. तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली ● मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN. तार: लिवमीडिया, मुंबई. ● क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय: के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● द्वितीय मंजिल, 98 ए, डॉ. राधाकृष्णन सलाई, मायलापोर, मद्रास-600004. फोन: 831605, 831719, 831729, 832428, 832247 तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एबरेस्ट 40-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016. फोन: 225398, 221922, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN. तार: लिवइन-मीडिया, कुलकत्ता. ● कॉपीराइट 1991 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कपिटेट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■ दूर बीहड़ में कैमरे की आंख ने जिस तरह 'बांस और नरकट' के बीच जीवन से जूझते लोगों का चित्रांकन किया वह सचमुच अदम्य साहस का हृदयंगम दृश्य उपस्थित करता है.

दुर्ग (म.प्र.) **गोपाल सिंह पटेल**

अक्षम्य अपराध

खास रपट 'लापरवाही का जहर' (30 नवंबर) दिल दहला देने वाला हादसा है. गांधी, राम, कृष्ण की धरती पर 'जहरीली शराब' से प्रति वर्ष सैकड़ों लोग मौत की नींद सो जाते हैं किंतु गांधी के नक्शेकदम पर चलने वाली सरकारों की नींद का न खुलना ही सबसे बड़ी त्रासदी, लापरवाही व अक्षम्य अपराध है. 'जहरीली शराब' पर 'सख्त-से-सख्त' प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए.

खाचरौद (म.प्र.) **हरिशंकर 'एन.' उपाध्याय**

■ अब चाहे जितना प्रतिबंध लगा दें या कानून कठोर बना दें किंतु उन लोगों को वापस नहीं लौटा सकते जिन्हें त्यौहार की मस्ती की जगह वीभत्स मौतें मिलीं. जहरीली 'सुरा' का उत्पादन करके 'सुरा' नाम को ही बदनाम कर देना हमारी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर, आयुर्वेद पर प्रहार भी है.

इंदौर (म.प्र.) **नीति अग्निहोत्री**

■ आयुर्वेद में कहीं भी किसी भी सुरा, आसव, या अरिष्ट में अलग से अल्कोहल मिलाने का निर्देश नहीं है. यह स्वतः ही प्राकृतिक निर्माण प्रक्रिया के फलस्वरूप पैदा होता है. इस औषधि में अलग से कृत्रिम रूप से अल्कोहल मिलाने की अनुमति देकर यह सरकार भी इस अपराध में पूर्ण रूप से भागीदार है.

लखीमपुर खीरी (उ.प्र.) **अमित तिवारी**

क्यों तुले हैं?

'जिन्न को न जगाएं' (कसौटी, 30 नवंबर) पढ़ा. यह सही है कि पिछले दिनों अयोध्या में घटी घटनाएं उकसाने वाली ही थीं और गंभीरता से सोचा जाए तो देश के लिए यह बहुत बड़ी उथल-पुथल हो सकती थी, लेकिन यह हमारा सौभाग्य ही है कि स्थिति बेकाबू नहीं हुई. पता नहीं हमारे नेतागण अयोध्या मसले को इतना अधिक विकृत करने पर क्यों तुले हैं? अब तो उन्हें स्वार्थी एवं वोट बैंक मजबूत करने वाली राजनीति छोड़नी चाहिए.

बुरहानपुर (म.प्र.) **सुनील बरोले**

दुखद पतन

'आहत को राहत नहीं' (30 नवंबर) पढ़कर बहुत दुख हुआ. आज मनुष्य इतना नीचे गिर गया है कि वह पीड़ितों की राहत सामग्री भी चोरी कर रहा है.

अलीपुर **दिनेश चंद्र प्रसाद**

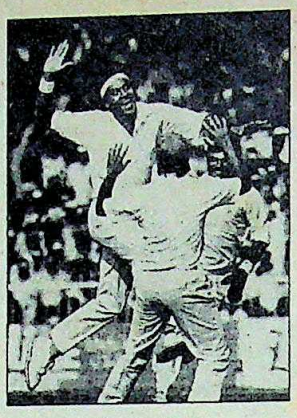

'चयन में चूक' भारतीय टीम के लिए घातक हो सकती है. हमारे यहां वैसे ही खेलों में राजनीति हावी है, फिर ऊपर से क्षेत्रीयता के चलते कांबली जैसे खिलाड़ी को बाहर कर दिया गया, जिनकी अभी ही नहीं भविष्य में भी आवश्यकता पड़ेगी.

बड़ौद (म.प्र.) **गिरीश भावसार**

लेख पढ़कर जहां 'सुरा कांड' की भयावहता का पता चला, वहीं यह सोचने पर भी मजबूर हुआ कि दोहरे कानूनी मानदंडों से मौत के ये सौदागर भविष्य में क्या फिर फायदा नहीं उठाएंगे.

लोहाघाट (उ.प्र.) **सैयद रईस अहमद**

■ भूकंप पीड़ित पर्याप्त राहत सामग्री के अभाव और ठंड के कारण मृत्यु के कगार पर रहे हैं और हमारी सरकार अर्नाप-शनाप खर्च करती रहती है. जाहिर है, भारत के लिए क़ुदरती ख़तरों का वास्तविक मूल्यांकन करने का वक्त आ गया है.

टिमरनी (म.प्र.) **राजमोहन चौरसिया**

एक तो झुके

'आक्रामक रवैया' (आजकल, 30 नवंबर) में हड़ताली इंजीनियरों और सरकार दोनों के रुख का अच्छा विश्लेषण किया गया है. इंजीनियरों की मांग उचित है तो मंत्री जी का तर्क भी. अतः दोनों में से एक को झुकना होगा. यदि दोनों का रुख अड़ियल रहा तो इसमें कोई संदेह नहीं कि यह हड़ताल देश की सबसे लंबी हड़ताल होगी.

तोपखाना बाजार (बिहार) **[illegible]**

■ यह दीर्घ हड़ताल भारतीय अर्थव्यवस्था को असंतुलित करने का नाजायज तरीका है. डॉक्टरों एवं इंजीनियरों की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष आय इतनी है कि उन्हें अन्य शासकीय सुविधाओं की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए.

गोंदिया (महा.) **योगेश कुमार**

सबसे जुदा

'आपा जैसा कोई नहीं' (कुछ अपनी, कुछ परायी, 30 नवंबर) में सादिया ने अपनी कलम से जो भावभीनी श्रद्धांजलि इस्मत चुगताई को दी है वह काबिले-तारीफ है. इसमें कोई संदेह की गुंजाइश नहीं कि इस्मत आपा अपने आप में विशिष्ट थीं. शायद ही कोई ऐसा पहलू हो जो उनकी कलम से अछूता रहा हो या जिसे उन्होंने बेपरदा ना किया हो.

झोटवाड़ा (राज.) **दीपक [illegible]**

परिवर्तन आवश्यक

खास रपट 'घर की नहीं फिकर' (30 नवंबर) पढ़ी. आज देश में जो हालात हैं उन्हें देखते हुए गृहमंत्री के रूप में शंकरराव चव्हाण अपने विभाग के कार्य को जो अंजाम दे रहे हैं उससे 'जब रोम जल रहा था नीरो बंशी बजा रहा था' जैसी कहावत ताजा हो जाती है. प्रधानमंत्री को चाहिए कि वे सुस्त और महत्वपूर्ण विभागों में परिवर्तन कर अपना आत्मविश्वास का परिचय दें?

सेंधवा (म.प्र.) **[illegible]**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने पूर्वाग्रह कायम

अजीत नैनन

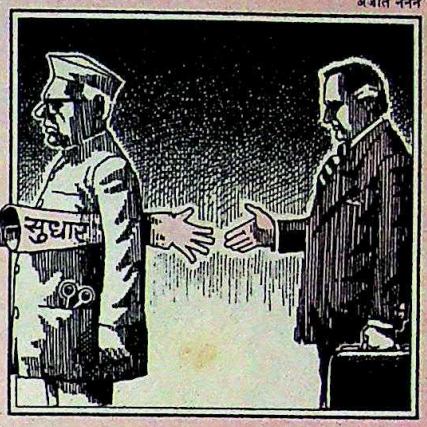

सरकार की नई आर्थिक नीति को लेकर जितना हो-हल्ला और वार किया आ रहा है उसे देख-कर कोई भी अंदाज लगा सकता है कि अब साहसी, परिश्रमी उद्यमियों की न आएगी. पिछले वर्षों में वसायियों की काफी आलोचना होती रही और उन्हें उपेक्षित किया जाता रहा. लेकिन नई नीति के तहत सरकार हली उद्यमियों में जिस तरह भरोसा जाहिर करती रही है और वित्तमंत्री मनमोहन सिंह संपत्ति-वृद्धि और निवेश आदि की जिस नई दुनिया की कल्पना करते रहे हैं उसमें तो इन व्यवसायियों के लिए काफी गुंजाइश नजर आती है. परंतु असलियत यह है कि पुरानी आदतें और रूढ़वादी पूर्वाग्रह जल्दी मिटते नहीं. इसलिए व्यवसायियों के प्रति घृणा भाव कायम है.

वरना ग्रुप-15 की बैठक के अवसर पर सरकार ने व्यवसायियों के जिस प्रतिनिधिमंडल को विदेशी सरकारों के साथ व्यापार और वाणिज्य संबंधी बातचीत के लिए वेनेजुएला जाने को प्रोत्साहित किया था उसके साथ अपमानजनक व्यवहार का कोई कारण नहीं नजर आता. भारतीय अधिकारियों ने इन व्यवसायियों को वहां शुरू से ही दो हाथ दूर रखा.

चूंकि भारत सरकार ने आगे बातचीत के लिए कोई तैयारी नहीं की थी इसलिए वहां गए अधिकतर व्यवसायी इस उधेड़बुन में थे कि आखिर उनके आने का मकसद क्या है. इसके विपरीत, बैठक में शामिल दूसरे देशों की सरकारों ने जो कुछ किया वह काबिलेगौर है. मलेशिया के प्रधानमंत्री महातिर मुहम्मद ने अपने देश के व्यवसायियों के साथ विमान यात्रा की. नाइजीरिया के राष्ट्र प्रमुख तो नहीं आए मगर उनके व्यापारियों का प्रतिनिधिमंडल जरूर वहां पहुंचा.

आर्थिक प्रगति और समृद्धि के लिए रणनीतियां तय करने में जितनी दक्षता का परिचय जापान ने दिया है उतनी दक्षता का परिचय शायद किसी और देश ने नहीं. वहां सरकार और व्यवसाय जगत एक दूसरे की पूरक भूमिका में काम करते हैं. वहां अंतरराष्ट्रीय व्यापार और उद्योग मंत्रालय तथा उद्योगपतियों के बीच का संबंध उदाहरणयोग्य है. भारत सरकार को यह समझ लेना चाहिए कि नीतियों की उदारता मात्र से कोई नतीजा नहीं निकलने वाला है अगर व्यवसाय जगत के प्रति उपेक्षा का रवैया नहीं छोड़ा जाता और उसे विकास की कोशिशों में बराबर का साझीदार नहीं माना जाता.

बड़े से भला छोटा

जयंतो

आजादी के बाद देश में राज्यों का भाषायी आधार पर जब पुनर्गठन किया गया था तब यह सोचा गया था कि इससे एक तरह की समरसता आएगी और राज्यों का समान विकास होगा. मगर वैसा बहुत दूर तक हुआ नहीं. राज्यों के भीतर भी नए राज्य के गठन की मांग समय-समय पर उठती रही और प्रबल रूप से उठती रही है. उत्तराखंड, झारखंड, विदर्भ, आदि-आदि के लिए उभरे आंदोलन इसके प्रमाण हैं. कुछ राज्यों को तो दोबारा बांटना भी पड़ा.

राज्यों के शुरुआती पुनर्गठन से कुछ विसंगतियां भी उभरीं. कुछ राज्य तो आकार के हिसाब से बहुत बड़े और आर्थिक असंतुलन तथा सामाजिक विषमताएं समेटे हुए नजर आते हैं. इनके अलावा केंद्रीय सत्ता और खजाने पर भी इनका दावा बड़ा होता है. मसलन हिंदी क्षेत्र के दो राज्यों—बिहार और उत्तर प्रदेश—ही संसद में करीब एक चौथाई उपस्थिति दर्ज करते हैं. यह एक तरह का असंतुलन ही पैदा करता है.

संभवतः इन्हीं तर्कों का बहाना लेकर उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार ने पिछले दिनों राज्य के आठ पहाड़ी जिलों को मिलाकर 'उत्तरांचल' राज्य बनाने का प्रस्ताव विधानसभा से पास करवाया. मगर यह प्रस्ताव इन तर्कों से ज्यादा राजनैतिक लाभ की आकांक्षा से ही प्रेरित दिखता है. उत्तराखंड राज्य की मांग लंबे अरसे से उठती रही है. इसी मांग पर उभरी जनभावना को भाजपा ने पिछले चुनाव में खूब भुनाया. और उसके प्रतिदान के रूप में यह प्रस्ताव पास करवा कर उसने अपने कर्तव्य की इतिश्री मान ली. वरना यह प्रस्ताव बिना बहस के ध्वनि मत से पास न करवाया जाता. अगर राज्य सरकार इस क्षेत्र के विकास के प्रति या अलग राज्य बनाने के प्रति सचमुच ईमानदार होती तो शायद इस प्रस्ताव पर व्यापक बहस को जरूर आमंत्रित करती ताकि भावी व्यवस्था पर विस्तार से विचार किया जाता.

इस बात में कोई शक नहीं कि छोटे राज्य कई दृष्टियों से श्रेयस्कर हैं. हरियाणा, हिमाचल आदि इसके प्रमाण हैं. और यह भी सही है कि बड़े राज्यों का आकार भी इनके विकास के रास्ते में एक बड़ा रोड़ा बन गया है. इसलिए इन राज्यों का व्यावहारिक और तार्किक दृष्टि से पुनर्गठन जरूरी है. मगर ऐसा करते हुए अलगाववादी आंदोलनों के दबावों से बचने का राजनैतिक कौशल भी दिखाना होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य वार्षिक रु. 210/-
भुगतान का माध्यम-चेक/डिमांड ड्राफ्ट
दिल्ली, बम्बई, कलकता और मद्रास के चेक/डिमान्ड ड्राफ्ट एमआईसीआर वाले ही होना चाहिये।
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए15/- रु. प्रति चेक की अतिरिक्त राशि देय है।)
दर व फोकश केवल भारत में लागू
कृपया चेक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें।
इंडिया टुडे (हिन्दी)
पोस्ट बॉक्स नं.- 114
नई दिल्ली- 110 001

इंडिया टुडे

● प्रजातंत्र को बचाने का हमने ठेका नहीं लिया है. अगर वैलट को बुलेट कुचला गया तो हमें बुलेट की तरफ ध्यान देना होगा. ■ **काशीराम,**

● वी. पी. सिंह ने सदैव ही 'डील पालिटिक्स' की है और वह पाटी को भी पर चलाना चाहते हैं. ■ **अजित सिंह,** *राजस्थान*

● अजित भाई अपना संतुलन खो बैठे हैं. अब वे मेंटल केस हैं. उन्हें दिल्ली पहले बरेली या आगरा जाना चाहिए था.
■ **हरिकिशोर सिंह** (जनता दल नेता), *नवभारत*

● बिना किसी आमंत्रण के मैं जनता दल की अंदरूनी लड़ाई में मध्यस्थता पसंद नहीं करता. ■ **लालू प्रसाद यादव**

● जो कुछ भी मन में आता है आप लोग बक दिया करते हैं. अब क्या यह आ गई है कि हर काम के लिए मैं उनसे (शरद पवार) पूछता फिरूं कि मैं करूं, क्या नहीं? ■ **सुधाकर नाईक** (महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री)

● जब हम अयोध्या में मंदिर का निर्माण शुरू करेंगे तो बड़ा संघर्ष होगा लिए हमारी पूरी तैयारी है. ■ **अशोक सिंघल,** *दैनिक*

● वह (छगन भुजबल) बेवफा है. वह लालची है. जब तक शिव सेना में रहा, लेता रहा जब कांग्रेस ने रोटी का टुकड़ा दिखाया तो दौड़ा चला गया.
■ **दिवाकर रावते (बंबई के महापौर),** *नवभारत*

● मैं नहीं चाहता था कि मेरा हश्र भी वही हो जो मौलवी फारूक का इसलिए मैंने देश के बाहर ही रहना पसंद किया. ■ **फारूक अब्दुल्ला,**

● हम कोई सफाई नहीं देना चाहते.
■ **मुहम्मद अजहरुद्दीन,** *ऑस्ट्रेलिया में पहला मैच हारने*

● भारत में रंगमंच से रोटी कमाना बहुत मुश्किल है.
■ **अजित वाच्छानी,** *साप्ताहिक*

● इस उद्योग में हर कोई वेश्या है. ■ **चिप्पू कपूर,**

● कहां राम-राम और कहां टैं-टैं, मेरी और अमिताभ बच्चन जी की करना प्रेस की सरासर नासमझी है. ■ **अनिल कपूर,**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोई में आपका साथी

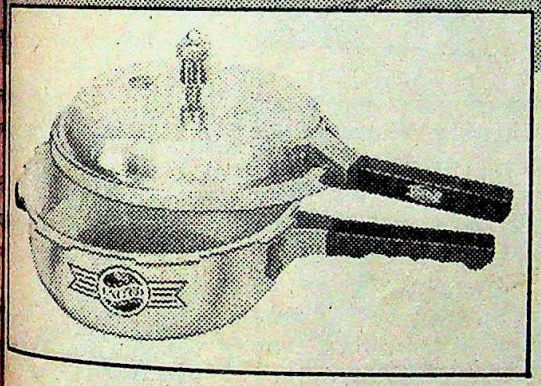

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

अधिकृत विक्रेता

गुजरात

...दाबाद: मै० फैन्सी नावल्टी स्टोर्स, 1811/2, थ्री गेट, ...ल कादिर मो० हुसैन, 1812, थ्री गेट, • मै० अकबर ...र भाई, 1822, थ्री गेट, □ बड़ौदा: मै० मोती लाल ...कन्सारा, एम०जी० रोड, • मै० श्रीजी मेटल ...ट, ढोलकी मुखने पोल, बजवाड़ा, □ बल्सर: मै० ...ट्याराम बलभ राम एण्ड कं०, राम जी स्ट्रीट, • मै० ...र्स, C/o. ए०एस० मैमन, मोटा ताइवाड, □ ...: मै० धर्मेन्द्रा वासन भंडार, एम जी रोड, • मै० ए ...वस्तु भंडार, वोरा बाजार, महालक्ष्मी मंदिर के सामने, ...: मै० महावीर मेटल का०, पुराने बस स्टोप के पास, ...: मै० पुष्पांजली स्टेनलेस स्टील मार्ट, 12 सत्या ...मार्केट, दूधिया तालाब, • मै० दीपक वासन भंडार, ...स्ट्रीट मोटा बाजार, • मै० नीतिन वासन भंडार, ...सेन्टर दूधिया तालाब, • मै० शक्ति वासन भंडार, ...दूधिया तलाब, □ नडीआड: मै० चारभुजा वासन ...बाजार, □ सूरत: मै० अरीहंत स्टील ...छोटा बाजार मैन रोड, • मै० ठक्कर ब्रदर्स, 5/569 ...चकला, हरीपुरा, • मै० ठाकुर दास जीवा राम एण्ड ...4227, बुन्देलवाड भागल, • मै० संगीता स्टील सेन्टर, ...कृष्ण शौपिंग सेन्टर, कालापीठ, • मै० कनसारा ...राम मोदी, रेशम वाली बिल्डिंग, बरानपुरी ...रोड

राजस्थान

□ अलवर: मै० जुनेजा ब्रदर्स, 1 वीर चौक, होप सर्कस, • मै० भारत बर्तन भंडार, बाजाजा बाजार, □ अजमेर: मै० गोर्वधन लाईट हाउस, मदर गेट, □ चित्तौड़गढ़: मै० आप की दुकान, मीरा मार्किट, कालीकोठरी चोवारा, • मै० सुरेश स्टील एम्पोरियम, 26 नेहरू बाजार, • मै० चारभुजा बर्तन भंडार, 6 नेहरू मार्किट, □ जयपुर: मै० महावीर जनरल स्टोर्स, 215 तरीपोलिया बाजार, • मै० जैन स्टील सेन्टर, 141 तरीपोलिया बाजार, • मै० जगदीश जनरल स्टोर्स, तरीपोलिया बाजार, □ जोधपुर: मै० सुपर स्टील सेंटर, तरीपोलिया रोड, • मै० एवन ट्रेडर्स, सोजाती गेट के अन्दर, □ कोटा: मै० गोस्वामी ब्रदर्स, भारतेन्दू भवन, लादपुरा, • मै० नारायण जनरल स्टोर्स, रामपुरा बाजार, □ नाथवाड़ा: मै० कंसारा तारा चन्द शंकर लाल, दिल्ली बाजार, □ उदयपुर: मै० लाल चन्द छगन लाल चौधरी, घंटा घर, • मै० राजेश मैटल्स, गली भगवाली, सुरज पोल, उदयपुर

हरियाणा

□ अम्बाला सिटी: मै० दीवान चन्द मनोहर लाल, कोतवाली बाजार, • मै० सचदेवा बर्तन भंडार, पटेल रोड, • मै० संजीव ब्यर हाउस, केसरा बाजार, □ बल्लबगढ़: मै० जींदल मेटल हाउस, मेन बाजार, □ चण्डीगढ़: मै० अग्रवाल डिस्ट्रीबुटर्स, शो रूम नं० 30, सेक्टर-26, मध्या मार्ग, • □ फरीदाबाद: मै० मोहन स्टोर्स, मेन बाजार, • मै० न्यू लाईट हाउस, मार्किट नं० 1, एनआईटी, • मै० कृष्ण लाल संजीव कुमार, दुकान नं० 116, मार्किट नं० 1, एनआईटी, □ हाँसी: मै० प्रशोत्तम लाल एण्ड सन्स, मदर बाजार, □ जाखल मण्डी: मै० शिव दत्त राय कमल चन्द, अनाज मंडी, □ हिसार: मै० क्रोकरी पैलेस, मोती बाजार, □ जगाधरी: मै० सेठी मेटल स्टोर्स, रेलवे रोड, □ जींद: मै० केदार नाथ पवन कुमार, मेन बाजार, □ कालका: मै० रल्ला राम द्वारका दास, चादनी चौक, • मै० बेनी प्रसाद परदूमन कुमार, बस स्टैण्ड, गांधी चौक, □ कैथल: मै० सरस्वती बर्तन भण्डार, नरवारिया बिल्डिंग, • मै० राम प्रकाश रामेश कुमार, तलाई बाजार □ कुरुक्षेत्र: मै० सरस्वती बर्तन भण्डार, मोती चौक, थानेसर, • मै० कुमार बर्तन स्टोरज़, कृष्णा गेट, □ पानीपत: मै० मोहन सिंह धारी मल, मेन बाज़ार, • मै० जैन बर्तन भण्डार, मेन बाजार, • मै० जिया लाल जैन दास, हलवाई हाटा, मेन बाज़ार, □ रोहतक: मै० श्याम लाल आदेश कुमार जैन, रेलवे रोड़ □ रिवाड़ी: मै० शमा बर्तन भण्डार, किला रोड, • बलदेव सहाय हेमराज सैनी, गोकल बाज़ार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान-मनौवल

सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री अजित कुमार पांजा पिछले दिनों खासे परेशान रहे. हुआ यह कि हाल ही में उन्होंने 4.25 करोड़ रु. मूल्य का एक

आयातित ट्रांस्पौंडर अपने गृह राज्य पश्चिम बंगाल को देने का फैसला किया, हालांकि इसे तिरुवनंतपुरम दूरदर्शन केंद्र के लिए मंगाया गया था. उस ट्रांस्पौंडर के लग जाने से समूचे दक्षिणी राज्यों को लाभ होता. इसलिए पांजा केरल की राजधानी गए तो उन्हें मुख्यमंत्री के. करुणाकरन सहित स्थानीय राजनीतिकों और प्रेस का भी कोपभाजन बनना पड़ा.

उनका क्रोध शांत करने को आतुर पांजा ने तिरुवनंतपुरम प्रेस क्लब की रजत जयंती के मौके पर उसे 5 लाख रु. अनुदान देने का वादा कर दिया. मंत्री के निर्णय से असहमति जताते हुए सूचना और प्रसारण सचिव ने फाइल पर यह टिप्पणी लिख दी कि उक्त राशि घटाकर दो लाख रु. कर दी जाए. इसके बाद पांजा ने फाइल प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआइबी) को भेज दी. ब्यूरो का जवाब था कि उसके पास ऐसे मदों में देने के लिए इतनी धनराशि नहीं है.

पर पांजा ने आस नहीं छोड़ी. उन्होंने पीआइबी से कहा कि वह तिरुवनंतपुरम प्रेस क्लब के लिए यथायोग्य सहायता का जुगाड़ करे क्योंकि उक्त प्रेस क्लब पत्रकारिता का डिप्लोमा कोर्स भी चला रहा है. लेकिन मजे की बात है कि पैसे को जहां पहुंचना चाहिए था वहां पहुंच चुका है.

बगलें झांकनी पड़ीं

प्रधानमंत्री का आम सहमति वाला नुस्खा उलटा भी पड़ सकता है. वेनेजुएला जाने से पहले उन्होंने कुछ ज्वलंत समस्याओं पर परामर्श करने और ग्रुप-15 की शिखर बैठक में सरकार का रुख निर्धारित करने के लिए विपक्षी नेताओं के साथ बैठक की.

बैठक में बिहार की चुनावी धांधलियों पर भी चर्चा चल पड़ी. लेकिन प्रधानमंत्री किसी विवाद में नहीं फंसना चाहते थे. सो, उन्होंने कहा कि बिहार और उनके अपने राज्य आंध्र प्रदेश में काफी समानताएं हैं. दोनों की जनसंख्या अधिक है और उसी अनुपात में गरीबी भी.

एक विपक्षी नेता ने चुटकी ली, "हां इन्हीं दोनों राज्यों में लोग चार-पांच लाख वोटों के अंतर से चुनाव जीता करते हैं!"

सभी कार्टून: अजीत नैनन

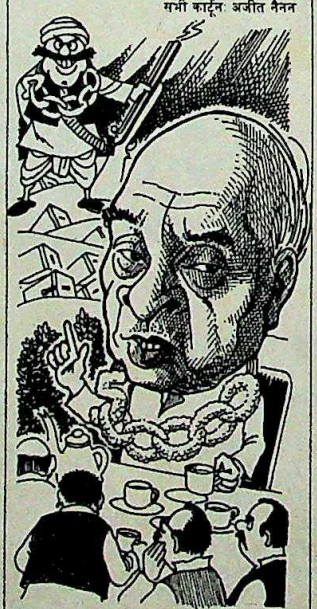

अब राव के पास बगलें झांकने के सिवा कोई चारा न था.

...और एक चुटकी

पुरानी औद्योगिक नीति पर आर्थिक सलाहकार डॉ. राकेश मोहन की टिप्पणी: "पहले रूसी मोदी को बाथरूम जाने के लिए भी अनुमति लेनी पड़ती थी."

मोदी का जवाब: "नॉर्थ ब्लॉक में घुसते ही मैं पहले बाथरूम जाता हूं क्योंकि वहां सबसे आरामदायक जगह वही है."

तास महल पर मार

सोवियत संघ पर पड़ी समय की मार भले ही ऐतिहासिक हो, पर नई दिल्ली स्थित वहां के कुछ संवाददाताओं पर भी कोई कम प्रकोप नहीं हुआ है. सोवियत

समाचार एजेंसी 'तास' के आठ संवाददाताओं के कार्यालय और आवास नई दिल्ली के वसंत विहार इलाके में एक विशाल सफेद इमारत में हैं, जिसे 'तास महल' कहा जाता है.

लेकिन हाल ही में 'तास' को मकान मालिक की ओर से मकान खाली करने का नोटिस मिला. वजह: नगर निगम अधिकारियों ने तास महल को गैर-आवासीय इमारत करार देकर जुर्माना ठोंक दिया था.

सोवियत संघ की आर्थिक दुर्दशा के मद्देनजर पत्रकारों के लिए कहीं और मकान तलाशना काफी मुश्किल है. वैसे भी, दिल्ली के ज्यादातर मकान मालिक एक साल का अग्रिम किराया ले लेते हैं. इसके अलावा, तास के सभी संवेदनशील संचार उपकरण 'तास महल' में ही लगे हुए हैं. ऐसे में

अब तास के लिए भारत-
मैत्री की दुहाई देना ही
रास्ता बचा है.

दो दिग्गजों में तक

सरकार के एक
अकसर दूसरे विभाग के
का पता नहीं होता. ने
मामले में विधि मंत्रालय
ही में यह सुझाव
एकाधिकार तथा
व्यापार व्यवहार
(एमआरटीपीसी) के
संख्या आठ से बढ़ाकर 10
जाए. यह राय भी दी
शिकायतों के जल्दी
लिए मद्रास, कलकत्ता
में भी आयोग की पीठ
जाए. बड़ी कंपनियों के
को रोकने और उनमें
कम करने की आयोग की
भूमिका को देखते हुए
अड़ंगा लगा दिया. उनकी
थी कि इससे उद्योग
गलत संकेत मिलने लगेंगे.

पर विधि राज्यमंत्री पी

कुमारमंगलम का तर्क था
कदम बदली परिस्थिति
उपभोक्ता अधिकारों की
लिए उठाया जा
उदारीकरण की गति कम
लिए नहीं. लेकिन सच
कि आयोग मामले को
काफी समय से लिया
और इससे उपभोक्ताओं
विश्वास जीतना काफी
बहरहाल, कैबिनेट समिति
अपना फैसला नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नववर्ष जनवरी 1992

अ र्द्ध वा र्षि कां क

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

विद्यार्थियों, युवा वर्ग के उज्ज्वल भविष्य के लिये

१० दिसम्बर तक बाजार में उपलब्ध

नई साज-सज्जा के साथ

- लगातार प्रथम पत्रिका
- प्रसार संख्या में
- उपयोगिता में
- लोकप्रियता में

साथ में विशेष भेंट वर्ष १९९२ का कैलेण्डर

मूल्य २० रू.

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

निरन्तर बढ़ता प्रसार

श्रेष्ठता का प्रमाण

ह र क द म आ गे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू डाल-डाल मैं...?

■ पुलिस को अपना हिस्सा मिल ही जाता है. लेकिन कभी-कभी लेने के देने भी पड़ जाते हैं. पिछले पखवाड़े बिहार में पूर्णिया के कुछ पुलिसवालों के साथ एक ऐसा ही वाकया हुआ.

असम से आने वाला एक ट्रक एक स्थानीय वाहन से टकरा गया. बात पुलिस तक जा पहुंची. ट्रक का ड्राइवर बात को बिगड़ने से बचाने के लिए कुछ लेने-देने के लिए भी तैयार हो गया. लेकिन बात रकम की मात्रा पर आकर अटक गई. आखिर वहां जमा हुए कुछ अन्य ट्रक ड्राइवरों ने एक योजना बनाई. ड्राइवर ने सिपाहियों को सड़क के किनारे

सभी कार्टून: जयंतो

एक ढाबे पर मीट-मुर्गे के साथ छककर इतनी शराब पिलाई कि वे वहीं टुन्न हो गए. ड्राइवर ने इन दोनों को वहीं खाट पर रस्सियों से बांधा और अपना ट्रक लेकर रफूचक्कर हो गया.

दूल्हे पर दावा

■ **ऐसे किस्से तो आए दिन सुनने में आते हैं कि जबरन दूसरी जगह शादी कराए जाने से पहले ही प्रेमिका को उसका प्रेमी भगाकर ले गया. या फिर दुलहन ने दूल्हे के गले में वरमाला डालने से इनकार कर दिया हो. लेकिन ऐसा शायद ही कहीं हुआ होगा जैसा पिछले दिनों पंजाब के गुरदासपुर जिले में हुआ. वहां के दीनानगर शहर के निकट एक बस्ती में उस समय हंगामा खड़ा हो गया जब एक हिजड़े ने आकर घोड़ी चढ़े दूल्हे पर अपना अधिकार जता दिया. इस हिजड़े ने घोषणा कर दी कि दूल्हे के साथ उसकी शादी पहले से हो चुकी है. बस्तीवालों ने उसे समझाने-बुझाने की कोशिश की. लेकिन जब वह नहीं माना तो उसे कुछ लोग उठाकर कहीं दूर छोड़ आए. लेकिन अगले दिन हिजड़े ने दूल्हे के घर पर उस समय हंगामा खड़ा कर दिया जब दुलहन का वहां स्वागत हो रहा था. यहां भी किसी तरह उस पर काबू पाया गया. लेकिन बात तब हाथ से निकल गई जब सुहागरात से ठीक पहले हिजड़े ने आकर घोषणा कर दी कि अगर दूल्हा उसके साथ नहीं गया तो अगली सुबह वह घर के सामने आत्महत्या कर लेगा.**

असल में दूल्हा हिजड़ों की एक टोली के साथ ढोलक बजाने का काम करता था. हिजड़े का कहना था कि दोनों ने काफी समय पहले एक दूसरे के साथ शादी कर ली थी और उनका यह रिश्ता काफी समय से चला आ रहा था. मामला अब इस हद तक आगे बढ़ चुका था कि पूरी बात दुलहन के कानों तक भी जा पहुंची. अगली सुबह मामला तब खत्म हुआ जब दुलहन दूल्हे का घर छोड़ मायके चली गई.

नया प्रसाद

■ लॉटरी का धंधा अब भगवान के घर तक भी जा पहुंचा है. कर्नाटक के तुमकूर इलाके में सिद्धिविनायक मंदिर में गणेश जी के नाम पर दान इकट्ठा करने के लिए प्रबंधकों ने लक्ष्मी देवी का आशीर्वाद बांटना शुरू कर दिया है. प्रबंधकों द्वारा चलाई जा रही एक योजना के तहत जो मंदिर को दान देने वाले दानियों को प्रसाद के साथ-साथ एक लॉटरी का भी लालच रहता है. गणेश जी के जन्मदिवस पर यह मंदिर श्रद्धालुओं से ढेर सारा दान प्राप्त करता है. मूर्ति विसर्जन वाले दिन शाम के समय इन दानियों की एक सूची तैयार

की जाती है और उनके नाम पर लाटरी निकाली जाती है. इस लाटरी में जीतने वालों को गणेश जी के प्रिय लड्डू नहीं बल्कि कार और स्कूटर का प्रसाद दिया जाता है.

धंधा क्यों हो मंदा

■ दिल्ली पुलिस के एक सिपाही की रिश्वतखोरी के कारण उसके वरिष्ठ अधिकारियों ने उसे उत्तरी दिल्ली के रिज के एक ऐसे स्थान पर तैनात कर दिया जहां न कोई दुकान थी और न कोई

घर. अफसर को उम्मीद थी कि सड़क किनारे कुछ दिन बैठे रहने के बाद उसकी अकल ठिकाने आ जाएगी. लेकिन तीन-चार दिन बाद ही अफसर महोदय तब चकरा गए जब ऑटो ड्राइवरों का एक प्रतिनिधिमंडल उनके यहां एक अजीब शिकायत लेकर हाजिर हुआ.

पता चला कि पुलिसवाले ने एक बड़ा-सा पत्थर कहीं से खिसकाकर सड़क किनारे रख लिया और खाली ऑटोरिक्शा देखते ही रोक लेता. और बताता कि वह उस पत्थर को निकटवर्ती थाने तक पहुंचाना चाहता है. बिना किराया लिए एक भारी पत्थर लदवाने और उतरवाने के विचार से परेशान ड्राइवर दो-चार रु. सिपाही की मुट्ठी में रखकर छुट्टी कर लेते.

छप्पर फाड़कर...

■ भगवान किसी को मालामाल करना चाहे तो शायद वह वही करता है जो उसने पिछले पखवाड़े कर्नाटक के कंवर इलाके में एक राह जाती गरीब महिला के साथ किया.

अचानक आ गए तूफान से बचने के लिए इस महिला ने सड़क छोड़कर किनारे खड़े एक पेड़ की शरण ले ली. उसे अपने पैरों के पास जमीन में गड़ी एक हांडी का मुंह दिखाई दिया. उत्सुकतावश उसने एक पत्थर से हांडी के आसपास की मिट्टी हटाई तो हांडी के मुंह पर रखा ढक्कन खुलकर अलग हो गया. महिला ने हांडी के अंदर हाथ डाला और पाया कि हांडी खनकते सोने की अशर्फियों से भरी हुई है. उसकी आंखें चौंधिया गईं. बाद में स्थानीय पुरातत्व विभाग ने जांच करने पर पाया कि ये सिक्के चोल काल के थे. इस और सिक्के मिलने की बात पड़ोसी गांव के लोगों ने पता आसपास की पूरी जमीन को डाला था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या पुरानी रेडियल तकनीक आपको गुमराह कर रही है ?

सब रेडियल टायर एक जैसे नहीं होते।

यदि आपको अपनी मोटर के लिये सर्वोत्तम रेडियल चाहिये, तो देखिये, सड़क के नीचे क्या है।

कॉर्ड? साधारण कपड़ा या फाइबर ग्लास?

कपड़ा या फाइबर ग्लास स्टील का मुकाबला कभी नहीं कर सकते।

केवल स्टील बेल्टेड रेडियल आपकी मोटर की क्षमता बढ़ाते हैं। यह ईंधन अधिक बचाते हैं, ज्यादा माइलेज देते हैं एवं हर प्रकार की सड़कों पर बेहतर पकड़ रखते हैं।

तभी तो संसार की 97% मोटरें स्टील बेल्टेड रेडियल टायरों पर चलती हैं।

फिर आपकी मोटर क्यों न उठाए स्टील का फ़ायदा। ब्रेक लगाते समय, मोड़ते समय या गीली सड़कों पर मोटर चलाते समय, स्टील रेडियल टायरों की मज़बूती और सुरक्षा का मुकाबला नहीं।

लीजिए, अन्तर्राष्ट्रीय-स्तर के स्टील रेडियल टायर।

केवल जे के द्वारा निर्मित।

यही है असली रेडियल।

असली रेडियल के बारे में अधिक जानकारी के लिए, इस पते पर लिखें: श्री एस. वी. श्रीनिवासन्,
रेडियल क्लब,
जे.के.इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड
3, बहादुर शाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली-110002

असली रेडियल
जेके स्टील रेडियल

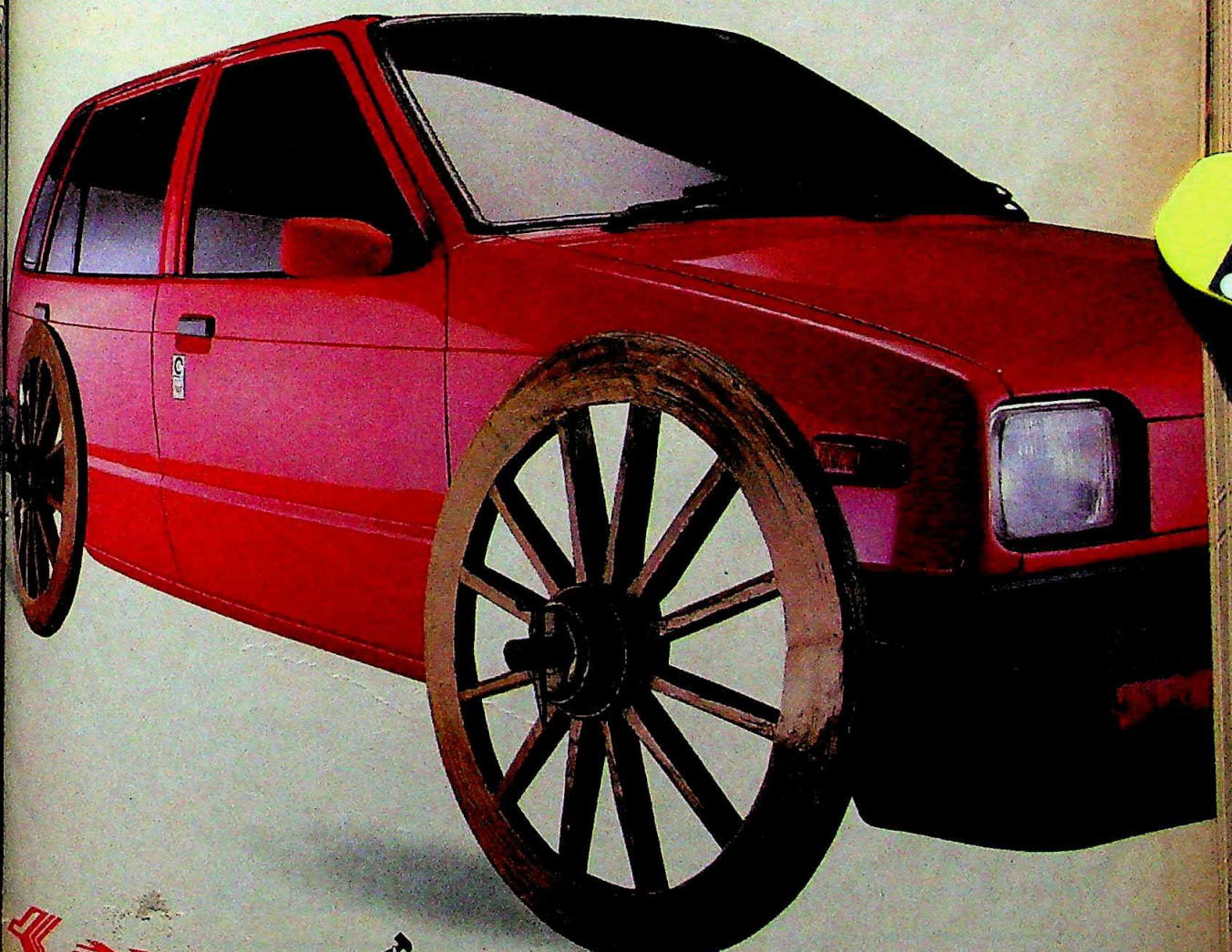

जेकेटायर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Sista's-JK/610/91

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई अड्डों की सुरक्षा

खतरनाक खामियां

देश की नागरिक उड्डयन सुरक्षा व्यवस्था को बाहर ही नहीं, भीतर से भी खतरा

—राज चेंगप्पा,
वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू
और अनिरुद्ध मित्र के साथ

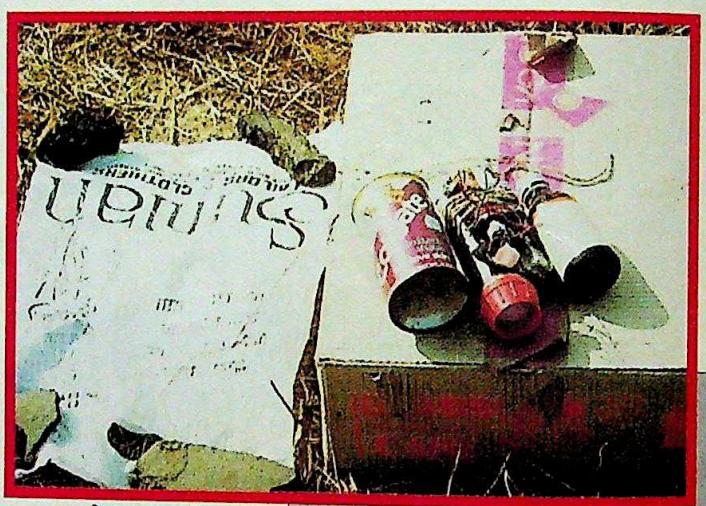

देसी अग्नि बम (बाएं): देखने में छोटे लगे, घात करे गंभीर

विमान की भोजन ट्रॉली में छिपाकर रखी गई प्लास्टिक की वह थैली ऊपर से तो धमाकेदार बम नहीं लग रही थी. और इसके अंदर रखी चीजें? रसोई गैस से भरी शेविंग क्रीम की ट्यूब, पेट्रोल से भरी दवा की बोतल, बैटरी समेत एक पुराना टॉर्च और तार से बंधे विस्फोटक तथा एक छोटा रेडियो ट्रांसमीटर.

इन चीजों से भरी यह मामूली-सी थैली भारी तबाही मचा सकती थी. अगर एअर इंडिया की उड़ान नं. 111 का बोइंग 737 विमान उस रविवार की सुबह इस थैली के साथ नई दिल्ली से न्यूयॉर्क की ओर उड़ जाता, तो बम फट सकता था और विमान भारी मुसीबत में फंस जाता जिससे उसका बच पाना मुश्किल होता. बम विस्फोट से विमान की नियंत्रण व्यवस्था तो क्षतिग्रस्त हो ही जाती, उसमें छेद भी हो सकता था. और संभवतः विमान के चालक दल के 22 सदस्य और 398 यात्री काल के गाल में समा जाते.

1 दिसंबर को अगर एक बड़ी विमान दुर्घटना टाली जा सकी तो इसका श्रेय देश की बहुप्रचारित उड्डयन सुरक्षा व्यवस्था को तो कतई नहीं जाता. इसकी वजहः बम अति सुरक्षित मानी जाने वाली भोजन ट्रॉली में छिपाकर विमान की रसोई में ले जाया गया था. अगर कथित अपराधी ओवन में बम रखने के समय घबरा न गया होता तो इसकी भनक भी किसी को नहीं लग पाती. नागरिक उड्डयन मंत्री माधवराव सिंधिया स्वीकार करते हैं, "महज संयोग से ही बम का पता चल पाया."

नागरिक उड्डयन मंत्रालय के अधिकारियों को जांच-पड़ताल के दौरान कई खतरनाक खामियां नजर आईं:

► कथित अपराधी बलविंदर सिंह निगाह सरकारी कंपनी 'शेफ एअर' का खान-पान अधिकारी था और इस साल के शुरू में उसे प्रधानमंत्री समेत सभी वीआईपी लोगों के साथ विमान में जाने की मंजूरी दे दी गई थी.

► विमान में भोजन रखने की कार्रवाई की देखरेख के लिए 'शेफ एअर' का एक अतिरिक्त सुरक्षा अधिकारी तैनात रहना चाहिए था. लेकिन उस दिन ऐसा कोई मौजूद नहीं था.

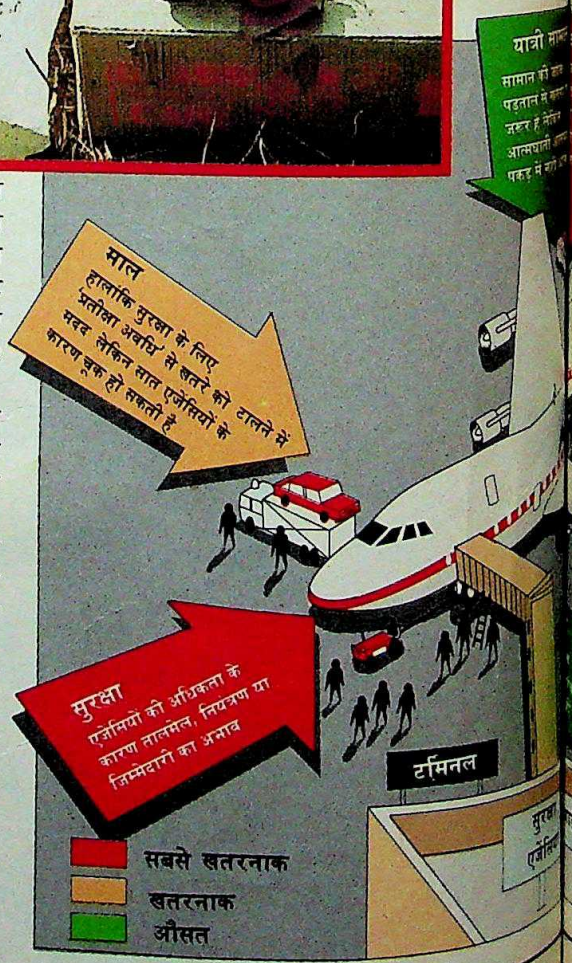

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• विमान में बम मिलने पर सबसे पहले विमान परिवहन नियंत्रण व्यवस्था को घटना के ब्यौरों से अवगत कराया जाना चाहिए था लेकिन उसे इसकी सूचना आधे घंटे बाद दी गई.

• सुरक्षा के नियमों के मुताबिक विमान को तुरंत दूर कहीं किनारे ले जाया जाना चाहिए था. लेकिन यह घंटे भर बाद हुआ.

उड्डयनमंत्री सिंधिया मानते हैं, "सुरक्षा में एक चूक बर्दाश्त के बाहर है. हम बहाने बनाकर इसे नहीं चुराना चाहते. हमारी सुरक्षा व्यवस्था में भारी फेरबदल की जरूरत है." मंत्री महोदय अपनी बात पर सचमुच गंभीर थे, इसकी मिसाल कई बड़े अधिकारियों को हटाए जाने से मिली. एअर इंडिया के क्षेत्रीय निदेशक को तीन महीने की छुट्टी पर जाने को कहा गया. तीन महीने बाद ही वे अवकाश प्राप्त करने वाले हैं. 'शेफ एअर' के वरिष्ठ खान-पान अधिकारी और एअर इंडिया के एक सुरक्षा प्रबंधक को मुअत्तल कर दिया गया.

इस बीच 'शेफ एअर' से कहा गया कि वह दोनों राष्ट्रीय विमान कंपनियों के विमानों में भोजन देना तब तक बंद कर दे जब तक उसकी सुरक्षा व्यवस्था फिर दुरुस्त न कर ली जाए. इंडियन एअरलाइंस से पूरी खान-पान व्यवस्था की समीक्षा करने और सभी संदिग्ध भोजन सप्लायरों से भोजन लेना बंद कर देने को कहा गया है और दोषी व्यक्तियों का पता लगाने के प्रयासों के अलावा मंत्रालय ने पूरी सुरक्षा प्रक्रिया की सर्वांगीण समीक्षा का आदेश दिया है. आदेश सही समय पर दिया गया है क्योंकि हाल की घटना ने देश की उड्डयन सुरक्षा व्यवस्था की खतरनाक खामियों को उजागर कर दिया है. जैसा कि नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सचिव एस. कानूनगो बताते हैं, "सबसे चिंतनीय बात तो यह है कि फिलहाल हमारी सुरक्षा व्यवस्था को केवल किसी यात्री या आगंतुक जैसे बाहरी व्यक्ति से संभलने के लिए चौकस बनाया गया है. लेकिन इस घटना ने दिखा दिया कि खतरा तो संस्था के भीतर से भी उठ सकता है."

सुरक्षा के उपाय

जांच करना:

- ★ देश के 86 हवाई अड्डों पर सालाना तकरीबन 2 करोड़ यात्रियों की
- ★ सालाना लगभग 6 करोड़ सूटकेसों और दूसरे बैगों की
- ★ 4 करोड़ भोजन पैकटों की

23 जून 1985 को बम विस्फोट के कारण कनिष्क विमान दुर्घटना के बाद यात्रियों पर चौकसी कड़ी कर दी गई. इस विमान दुर्घटना में सभी 329 यात्रियों की मृत्यु हो गई थी. इसके बाद देश के सभी बड़े हवाई अड्डों पर बम निरोधक दस्ता बनाया गया; विमान में आने वाले सामान के सभी मालिकों के बारे में पूछताछ शुरू की गई; यात्री के हाथ के सामान की एक्स-रे जांच भी शुरू की गई; और विमान से जाने वाले सामान को 24 से 36 घंटे पहले बुक करना आवश्यक बनाया गया.

लेकिन विमानों में बम या विस्फोटक पदार्थ रखने की घटनाएं काफी बढ़ गईं. पिछले दो साल में ही विमान में बम विस्फोट की सात घटनाओं में 1,500 लोग मारे गए. भारत में कनिष्क विमान दुर्घटना के पहले 1984 में मद्रास के मीनाबक्कम हवाई अड्डे पर एक सूटकेस में रखे बम के फटने से 30 लोगों की मृत्यु हुई थी. मई 1991 में इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के बाहर एक बम विस्फोट से उसकी इमारत क्षतिग्रस्त हो गई थी.

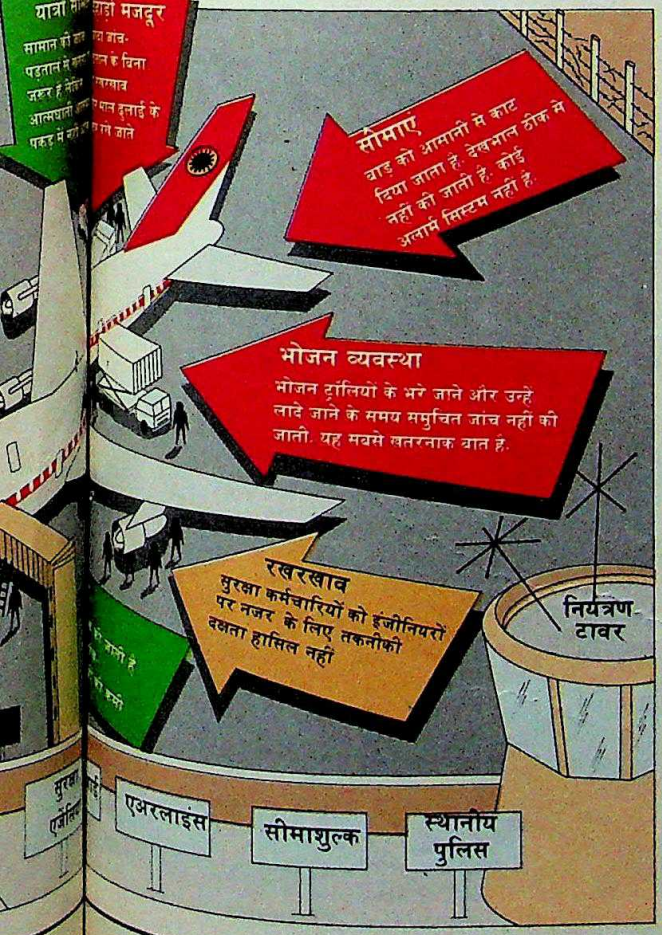

रेखाचित्र: बी.के. शर्मा

शिप्रा दास

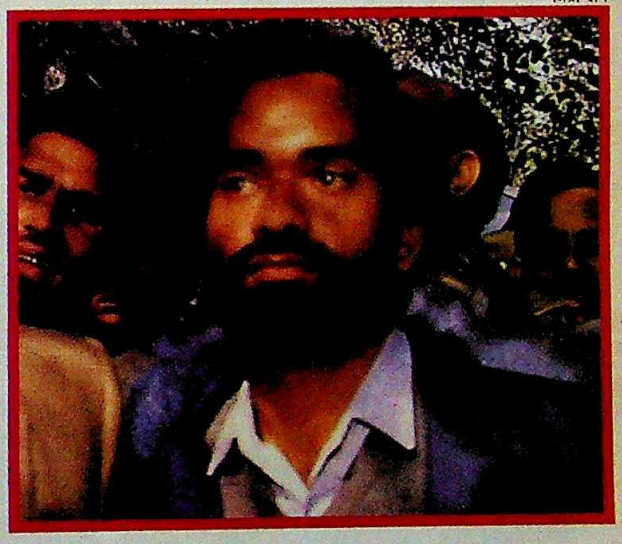

बलविंदर सिंह निगाह: संदिग्ध षड्यंत्रकारी

लेकिन 1 दिसंबर को 'सम्राट अकबर' नामक विमान में बम पाए जाने की घटना कनिष्क हादसे के बाद सबसे सनसनीखेज वारदात है. इससे जाहिर हो गया कि पूरी व्यवस्था किसी कट्टरपंथी या सिरफिरे के इरादों के आगे कितनी लचर है जबकि देश में विभिन्न हवाई अड्डों पर विमान परिवहन की निगरानी में करीब एक लाख कर्मचारी लगे हैं. और हवाई अड्डों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार विभिन्न संगठनों में भारी अराजकता है.

यहां कई सवालों का जवाब जानना लाजिमी हो जाता है. क्या दो राष्ट्रीय विमान कंपनियों के विमानों की हर साल करीब 1.5 लाख उड़ानों से यात्रा करने वाले 2 करोड़ यात्रियों की जांच की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकम्मल व्यवस्था देश के सभी 86 हवाई अड्डों पर है? क्या सुरक्षा व्यवस्था सालाना करीब 6 करोड़ सूटकेसों और पार्सलों में बम की जांच कर पाने में सक्षम है? क्या हर साल भोजन के 4 करोड़ पैकेटों की जांच करने की व्यवस्था है? क्या उड्डयन के करीब एक लाख कर्मचारियों-अधिकारियों की पृष्ठभूमि की जांच की व्यवस्था है? सार यह कि कितने सुरक्षित हैं हमारे हवाई अड्डे? इन सवालों का, चिंता में डाल देने वाला, जवाब यह है कि पर्याप्त सुरक्षा नहीं है. इसकी वजहें नीचे के विवरण से स्पष्ट हो जाएंगी.

मुख्य समस्याएं

- ★ सुरक्षा के काम में छह एजेंसियां लगी हैं जिनमें तालमेल नहीं
- ★ अतिशय चौकसी के मामले में लापरवाही
- ★ किसी की जिम्मेदारी तय नहीं

उलझन और अराजकता

उड्डयन की सुरक्षा की जिम्मेदारी आखिर है किसकी? हैरानी यह है कि इस सवाल का सीधा जवाब है ही नहीं. कानूनी तौर पर तो इसकी जिम्मेदारी नागरिक उड्डयन महानिदेशक पर है लेकिन उनके पास इसके लिए साधन नहीं हैं. नागरिक उड्डयन सुरक्षा ब्यूरो केवल सलाह देने वाली संस्था है और यह सिर्फ दिशा-निर्देश जारी करती है. अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय हवाई अड्डे के अधिकारियों पर सुरक्षा की जिम्मेदारी जरूर है पर इन पर अमल के लिए उन्हें दूसरी एजेंसियों या पुलिस पर आश्रित रहना पड़ता है.

मामला इतना ही नहीं है. यात्रियों और उनके हाथ के सामान की जांच स्थानीय पुलिस करती है पर वह हवाई अड्डे के अधिकारियों के प्रति कतई जवाबदेह नहीं है. माल ढुलाई क्षेत्र और विमान मरम्मत की जगहों पर एअरलाइंस अपने सुरक्षाकर्मी रखती हैं क्योंकि इनकी जिम्मेदारी पुलिस पर नहीं है. विमान में खान-पान की व्यवस्था करने वाली एजेंसियां सुरक्षा की अपनी व्यवस्था करती हैं. लेकिन वे एअरलाइंस के प्रति जवाबदेह नहीं होतीं.

यह स्थिति एअर इंडिया की उड़ान संख्या 111 के विमान में बम मिलने के बाद उजागर हो गई. तब करीब आधे घंटे तक ऊहापोह की स्थिति रही. एक वरिष्ठ उड्डयन अधिकारी हताशा में कहते हैं, "यह पता ही नहीं है कि किसकी जिम्मेदारी क्या है या किसका अधिकार क्षेत्र कहां खत्म होता है." सिंधिया भी स्वीकार करते हैं कि संस्थाओं की बहुतायत से 'अराजकता बेपनाह बढ़ जाती है' इस कारण सुरक्षा को भेदना आसान हो जाता है.

स्पष्ट निर्देश और जवाबदेही के अभाव में पूरी सुरक्षा व्यवस्था लगभग पंगु हो गई है. मसलन नागरिक उड्डयन सुरक्षा ब्यूरो ने सितंबर में खुफिया सूचनाओं के आधार पर सभी हवाई अड्डों पर अतिशय चौकसी रखने का आदेश दिया. उन्होंने इस चेतावनी को नवंबर में दोहराया. 'अतिशय चौकसी' का मतलब है कि हर जगह सुरक्षा दोहरी कर दी जाए. यह बात भोजन ट्रॉली से संबंधित सुरक्षा के जांच के मामले में भी लागू होती है लेकिन ताजा घटना से पता चलता है कि इस नियम को नजरअंदाज कर दिया गया. एअरलाइंस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने स्वीकार किया कि उन्हें 'रेड एलर्ट' का पता ही नहीं था.

1985 में 'कनिष्क' विमान में उड़ान के दौरान हुए बम विस्फोट के शिकार: खामियों की मिसाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड्डयन सुरक्षा के लिए एक संयुक्त बल के सुझाव को हमेशा कई वजहों से अनसुना कर दिया जाता रहा है. एक वजह तो यह कि राज्य ऐसा नहीं चाहते और दूसरी यह कि इसमें खर्च ज्यादा है. लेकिन अब नागरिक उड्डयन मंत्रालय संयुक्त कमान बनाने की कोशिश कर रहा है. उसकी योजना विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के प्रमुखों की एक शिखर समिति बनाने की है. फिर भी जवाबदेही की मूल समस्या हल नहीं हो पाएगी.

दूसरा उपाय यह है कि नागरिक उड्डयन महानिदेशालय को ताकतवर बनाया जाए और उसे अमेरिका के संघीय उड्डयन प्राधिकरण जितने अधिकार भी मुहैया किए जाएं. इसी के प्रति सुरक्षा की सभी एजेंसियों की जवाबदेही भी मुकर्रर की जानी चाहिए.

सबसे अरक्षित

- ★ भोजन पैकेटों की ट्रॉलियों पर लगी सील अपर्याप्त
- ★ कर्मचारियों की तलाशी में लापरवाही
- ★ दोबारा जांच की व्यवस्था नहीं

विध्वंस को बुलावा

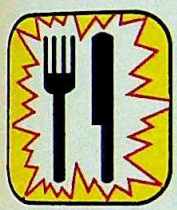

सुरक्षा एजेंसियों का बाहुल्य तो समस्या का सिर्फ एक पहलू ही है. विमान जब उड़ने को तैयार होता है तब उस तक दर्जनों एजेंसियों के लोगों की पहुंच होती है. वहां कम-से-कम खान-पान व्यवस्था के 10 कर्मचारी, छह मरम्मत मिस्त्री, दो सफाई कर्मचारी, आठ कुली, तीन ड्यूटी अधिकारी, विमान में ईंधन भरने वाले तीन कर्मचारी. यानी कम-से-कम 40 लोग तो विमान के पास होते ही हैं.

संभवत: सभी हवाई अड्डों पर सबसे असुरक्षित महकमा खान-पान व्यवस्था का ही होता है. दिल्ली में ही करीब 25,000 कैसरोल पांच रसोइयों में तैयार किए जाते हैं और हर कैसरोल में विमान को उड़ाने लायक एक बम ले जाया जा सकता है. जैसा कि ओबेरॉय फ्लाइट सर्विस के महाप्रबंधक वी. के. ए. मेनन कहते हैं, "किसी जंबो विमान की उड़ान के समय 300 से 400 ट्रे की जांच असंभव ही है."

आम तौर पर रसोई-व्यवस्था का मूल मकसद बस इतना देखना होता है कि भोजन विषाक्त न हो, इसलिए ट्रॉलियों के भरे जाने के बाद ही उनकी जांच होती है. इसके बाद उन पर खान-पान व्यवस्था वालों की सील लगा दी जाती है. लेकिन कागज की ये सील नितांत अपर्याप्त हैं. सील की गई ट्रॉली ट्रकों में भरी जाती है और उन पर ताला लगा दिया जाता है. ट्रक सीधे हवाई अड्डे पर पहुंचता है जहां अधिकारी कागजात की तो जांच करते हैं पर ट्रक की बमुश्किल ही जांच करते हैं.

व्यवस्था बस ऐसे ही चलती है. लेकिन दिल्ली की इस घटना से पता चलता है कि खान-पान सुरक्षा एकदम कमजोर है. कुछ गंभीर समस्याएं ये हैं:

- ▶ निजी सुरक्षाकर्मी कर्मचारियों की ऊपर-ऊपर से जांच करते हैं. इसी कारण बलविंदर विस्फोटक उपकरण अंदर ले जा सका.
- ▶ ट्रॉलियों की जांच खान-पान अधिकारी बलविंदर ही करता था और सुरक्षा सुपरवाइजर या गार्ड उसे फिर जांच नहीं करते थे. वे ट्रॉली पर कागज की सील भर लगाते थे.
- ▶ हालांकि बलविंदर की ड्यूटी खत्म हो रही थी पर उसने सामान की ढुलाई की देखरेख के लिए विमान तक जाने पर जोर दिया. उसके वरिष्ठ अधिकारी जेड.ए. खां ने आपत्ति जरूर की

प्रशांत पंजियार

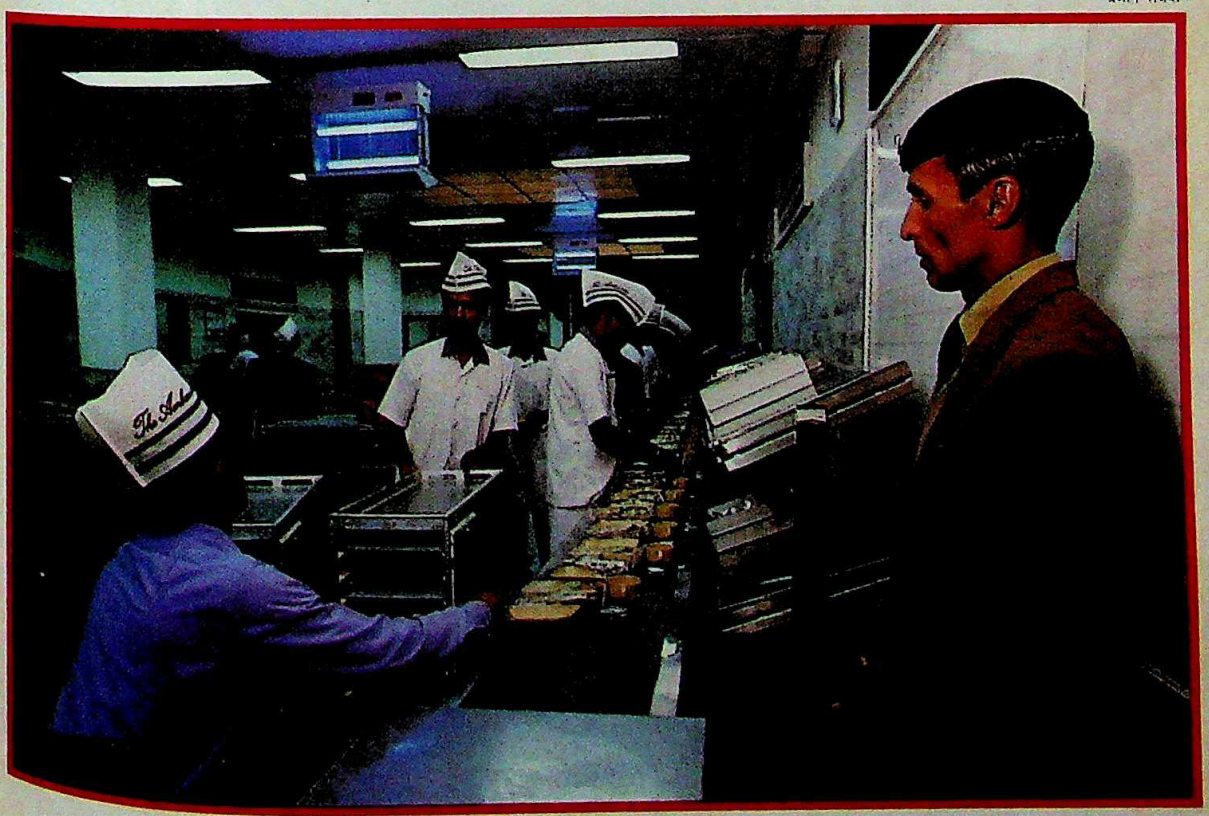

दिल्ली में विमान यात्रियों के लिए भोजन सप्लाई करने वाली एक एजेंसी की रसोई: सुरक्षा अब मजबूत हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अपने 'पास' के कारण वह हवाई पट्टी तक जा पहुंचा. किसी ने उसे नहीं रोका.

एंबेसेडर और ओबेरॉय जैसी दूसरी केटरिंग एजेंसियों में सुरक्षा संबंधी जांच काफी कड़ाई से की जाती है. और अब 'शेफ एअर' भी अपनी मौजूदा व्यवस्था बदलकर एक नया सुरक्षा विभाग खोलने की योजना बना रहा है. काम पर आने वाले सभी कर्मचारियों के शरीर की जांच की जाने लगी है. उधर, एअर इंडिया भी इनकी दोबारा जांच खुद अपने कर्मचारियों द्वारा करने की तैयारी कर रहा है ताकि किसी किस्म की लापरवाही न हो.

सतर्कता में खामी

★ नकली जांच की 1200 में से आठ कवायदों में अधिकारी हथियार सहित निकल गए

★ सुरक्षित क्षेत्र में घुसपैठ आम बात

लेकिन इन योजनाओं पर अमल अभी शुरू नहीं हुआ है. वैसे, नई व्यवस्था लागू किए जाने के कुछ ही दिन बाद 8 दिसंबर को अहमदाबाद जाने वाले एक विमान पर अचानक की गई जांच से पता लगा कि भोजन ट्रॉली को ड्यूटी पर मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने जांचा ही नहीं था. जाहिर है, एअरलाइंस ने हाल ही की घटना से कोई सबक नहीं लिया और लापरवाही बरती गई.

काम करने वालों की कमी

स्थानीय पुलिस हवाई अड्डे के सुरक्षा विभाग में काम करने के प्रति निहायत उदासीन रवैया अपनाया करती है. यात्रियों और उनके सामान की एक्स-रे मशीनों द्वारा की जाने वाली जांच को काफी उबाऊ माना जाता है. साथ ही वहां सामान्य पुलिसिया 'आमदनी' की गुंजाइश भी नहीं के बराबर होती है. नतीजतन, काफी पद खाली पड़े रहते हैं. दिल्ली में हर स्तर पर करीब 100 पद खाली हैं.

बेमन से ही सही, पर हाथ से की गई शरीर की जांच अधिक कारगर सिद्ध होती है. लेकिन सामान की जांच के दौरान ही गड़बड़ी की ज्यादा आशंका रहती है. मिसाल के तौर पर, पटना हवाई अड्डे पर एक्स-रे मशीन और 'मेटल डिटेक्टर' अक्सर काम नहीं करते. भीड़ ज्यादा होती है और एक आदमी को ही एक्स-रे मशीन पर एक घंटे से ज्यादा समय तक तैनात रहना पड़ता है, जबकि आंखों पर जोर न पड़े इसलिए नियमानुसार 20 मिनट का समय ही बहुत माना जाता है.

पर्याप्त सुविधाओं और उपकरणों के अभाव में सुरक्षा व्यवस्था अकसर लचर साबित हो जाती है. मद्रास अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा टर्मिनल पर पुलिस 16 जगहों पर टॉर्च की रोशनी से जांच का काम करती है. पटना में कोई जेनरेटर नहीं है, लिहाजा अगर बिजली गुल हो जाए तो पुलिस हाथ पर हाथ धरे खड़ी रह जाती है. मुंबई हवाई अड्डे पर तो कई झुग्गी-झोंपड़ियां सुरक्षित क्षेत्र में उग आई हैं. कलकत्ता में तो कुछ वर्षों पहले हवाई पट्टी पर लगे बल्ब ही चोरी कर लिए गए थे. पुलिस को बाहरी घुसपैठियों पर संदेह है.

भवान सिंह

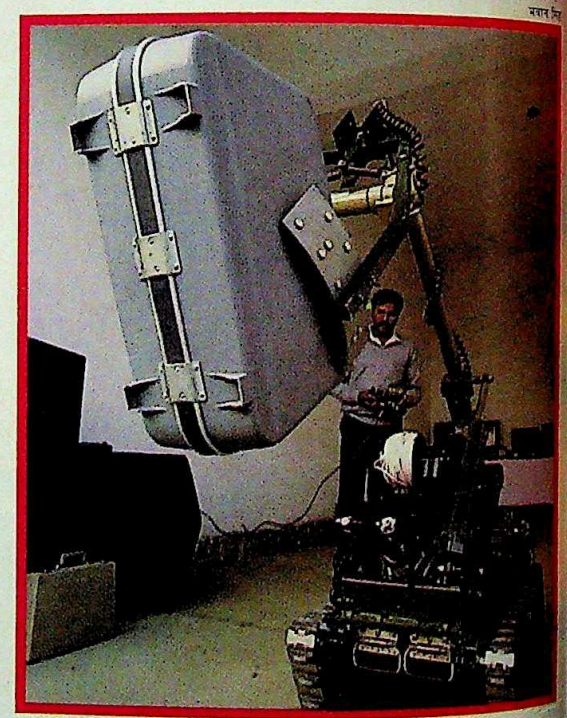

भवान सिंह

बम निरोधक दस्ते का रोबोट (ऊपर); और पार्सल बम को निष्क्रिय करने की कार्रवाई: फिर भी दुर्घटनाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

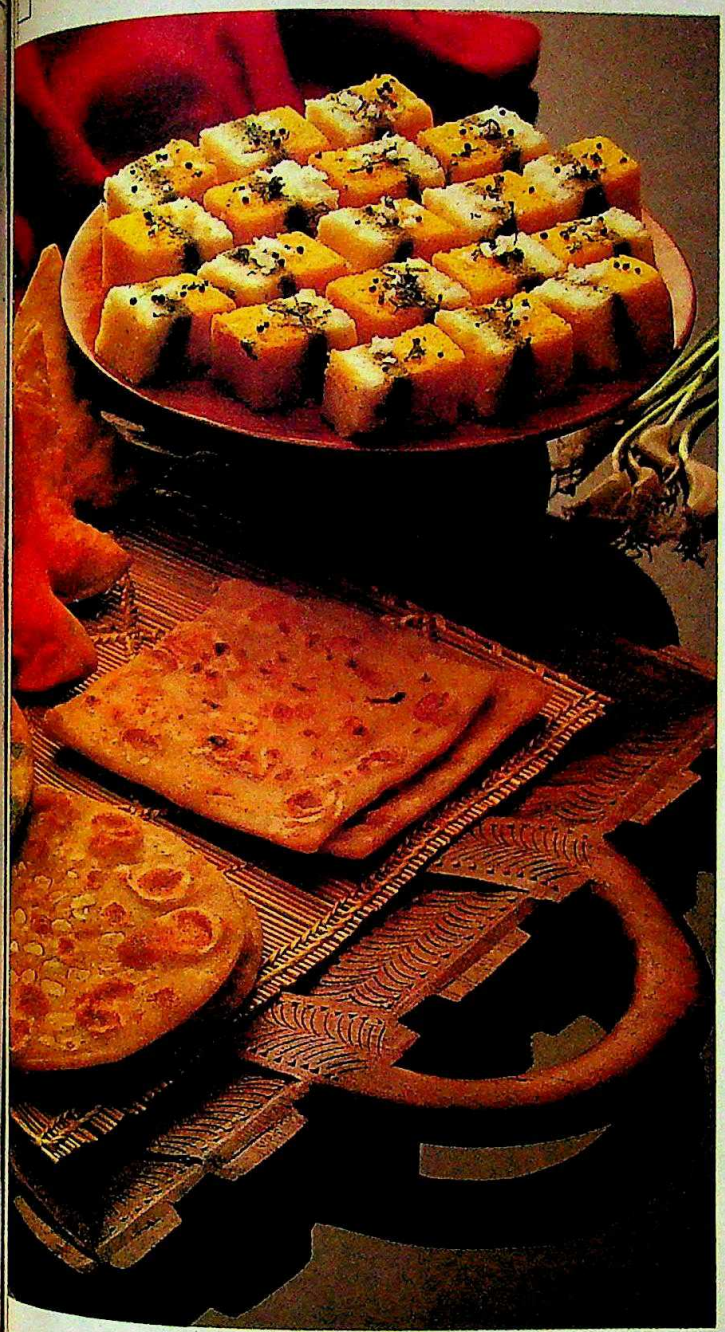

हर 15 दिन बाद
1 घन्टा लगाइये,
स्वादिष्ट व्यंजन
हर दिन खिलाइये.

थोडा सा समय, ज़रा सी कोशिश और मील्सेंट घरेलू आटा चक्की. बस यही तो चाहिये घर पर बने स्वादिष्ट व्यंजन के लिये.

ताज़ा, प्रोटीनयुक्त आटा और सुगंधित मसाले. रविवार की सुबह एक घन्टे की शांत प्रभावशाली कार्यप्रणाली से आधे महीने की ज़रूरतें पूरी कीजिये. मील्सेंट में गेहूँ, दालें व मसाले आराम से पीसे जाते हैं. बारीक या दरदरा, आपकी ज़रूरतों के अनुसार. चाहें तो चना व गेहूँ मिला आटा भी पीस सकती हैं. शुद्ध, ताज़ा व घर पर बना.

आज ही मील्सेंट ले आइये. आपका परिवार हर रोज़ आपकी सराहना करेगा.

स्वस्तिक इंजीनियरिंग वर्कस,
20, विट्ठल उद्योगनगर, आनन्द- 388 121, (गुजरात).

मील्सेंट
घरेलू आटा चक्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यादातर हवाई अड्डों पर नियमित गश्त की व्यवस्था नहीं है. भीतर आने वाली गाड़ियों के अनुमति पत्र भर देखे जाते हैं.

अतिशय चौकसी की स्थिति में भी सुरक्षा व्यवस्था मुख्य परिसर तक ही सीमित रह जाती है और 60 फीसदी से भी अधिक क्षेत्र भगवान भरोसे ही रहता है. पश्चिम के अधिकतर देशों की तरह कंटीले तारों के काटे जाने पर खतरे का कोई सायरन नहीं बजता. मौके पर मौजूद पुलिस को आतंकवादियों का सामना करने के लिए भी सैन्य प्रशिक्षण जैसा कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता. ऐसे वक्त में जबकि कश्मीर, पंजाब, असम और यहां तक कि श्रीलंका के तमिल उग्रवादियों से सुरक्षा को काफी खतरा है, हवाई अड्डों की अनदेखी नहीं की जा सकती.

लोगों से खतरे
★ बम के बारे में झूठी सूचनाओं से सुरक्षा व्यवस्था कई बार कुंद हो जाती है
★ वीआईपी लोग जांच नहीं पसंद करते

कार्ड और रुतबे की धौंस

हवाई अड्डे पर परिचय पत्र के रंग से रुतबे का अंदाजा मिल जाता है. पीला: देश के किसी भी हवाई अड्डे पर बेरोकटोक प्रवेश. लाल: किसी एक हवाई अड्डे के सभी क्षेत्रों में प्रवेश की आजादी. नीला: रखरखाव और माल की चढ़ाई-ढुलाई क्षेत्र तक प्रवेश. हरा या सफेद: 'नॉन ऑपरेशनल' इलाके में आने-जाने की अनुमति.

हवाई अड्डों से संबद्ध हरेक एजेंसी अपने कार्ड जारी करती है. दिल्ली में ही इस तरह के 25,000 से अधिक कार्ड जारी किए जा चुके हैं. मुंबई में यह संख्या 30,000 को पार कर चुकी है. पीला, लाल और नीला कार्ड दिए जाने से पहले गृह मंत्रालय की जांच-पड़ताल आवश्यक होती है, लेकिन ज्यादातर मामलों में इसकी औपचारिकता भर निभाई जाती है.

इसके अलावा और भी कई बातों पर ध्यान देना जरूरी है. मसलन, परिचय पत्र वाले लोगों में से बहुत कम को ही रोककर पत्र की जांच की जाती है. पर यह चूक कभी बहुत भारी साबित हो सकती है.

एक और बड़ी समस्या है जिसे अधिकारियों ने 'वीआईपीज' नाम दिया है. वैसे भी, पुलिस खादीधारी व्यक्ति की तलाशी लेने हिचकती है. किसी मुख्यमंत्री के आने पर भी कई बार भीड़ अनियंत्रित हो जाती है. पार्टी कार्यकर्ता सुरक्षा सीमाएं लांघते चले जाते हैं और कोलाहल मच जाता है. ऐसे में बम विस्फोट की आशंका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता.

और भी चिंता की बात यह है कि सरकारी अधिकारी भी अब अपनी गाड़ी विमान की सीढ़ियों तक ले जाने में अपना हक मानते हैं. शुरू में केवल राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की गाड़ियों को विमान तक जाने की इजाजत थी. फिर मुख्य न्यायाधीश और राज्यपालों को यह सुविधा दी गई. अब तो सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश भी अपनी गाड़ी में विमान तक जाते हैं. देखादेखी कई विशिष्ट लोगों के परिवारजन भी अब हवाई पट्टी तक कार लाने की जिद करते हैं. इससे सुरक्षा व्यवस्था बेमानी नजर आती है.

सुरक्षाकर्मियों के लिए बम की झूठी खबरें भी काफी सिरदर्द

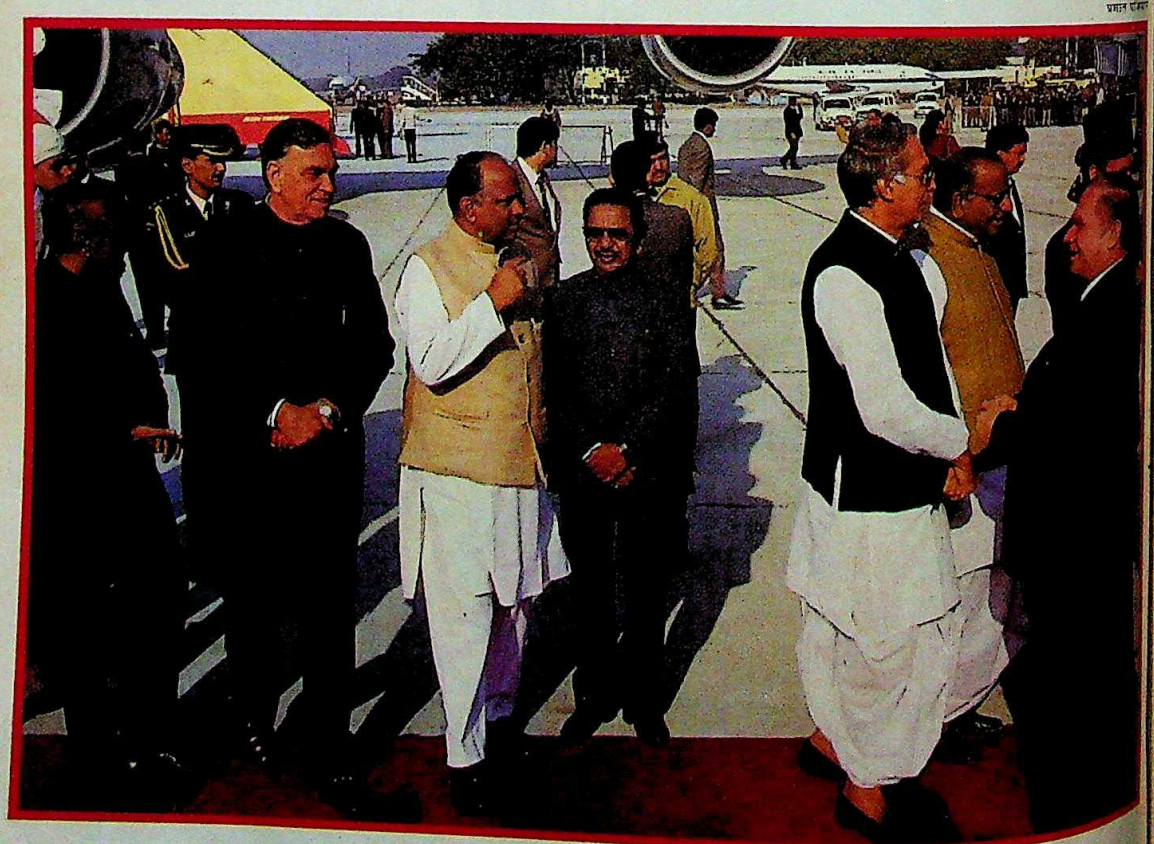

विमान के खड़े होने वाली जगह पर कथित वीआईपी लोगों की भीड़: सुरक्षा व्यवस्था का मखौल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

HMV का सबसे शानदार नज़राना

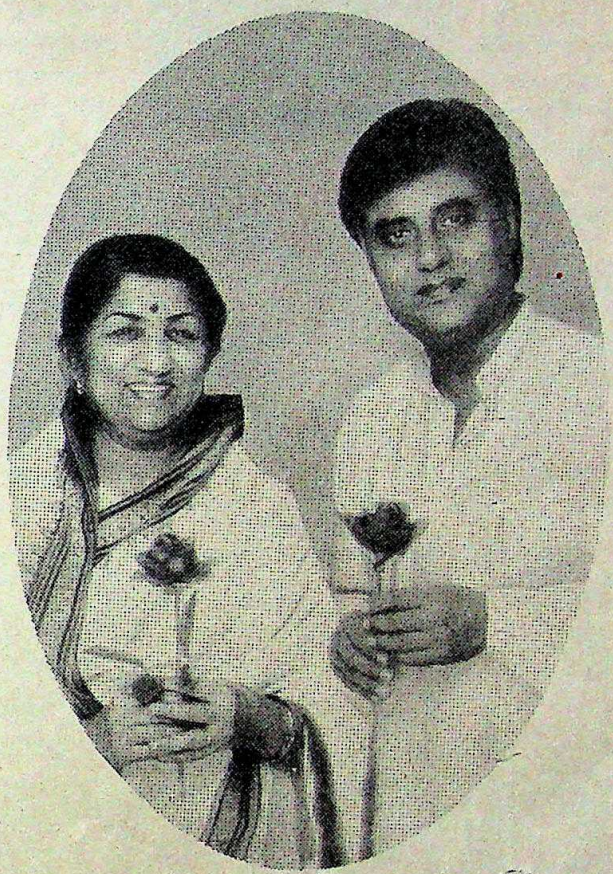

लता मंगेशकर और जगजीत सिंह पहली बार एक साथ.

लता मंगेशकर. देश की सबसे मशहूर आवाज़. हिन्दी फ़िल्मी संगीत की मलिका. लगभग ५० वर्षों से भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग.

जगजीत सिंह. देश के सबसे लोकप्रिय ग़ज़ल गायक. आधुनिक ग़ज़ल के निर्माता.

और जब दो मंझे हुए फ़नकार पहली बार मिलते हैं तो तारीख़ में एक और पन्ना जुड़ता है.

सजदा–लता मंगेशकर और जगजीत सिंह की भेंट. उनके द्वारा संवारा गया एक ऐसा उपहार जो पिछले दो वर्षों के अथक प्रयत्नों का सफ़ल परिणाम है.

सजदा–एक डबल कैसेट नज़राना जिसमें शामिल हैं १६ ग़ज़लें जो कि डिजिटल रिकॉर्डिंग का नमूना हैं. लता मंगेशकर और जगजीत सिंह द्वारा गाई गई ६-६ ग़ज़लें साथ ही में ४ युगल ग़ज़लें.

सजदा–सुप्रीम क्वालिटी टेप पर रिकॉर्ड किया गया एक सीमित डी-लक्स संस्करण (साथ में 'सजदा' की ग़ज़लों के बोलों की मुफ़्त किताब) भी जिसे गिने-चुने HMV विक्रेताओं से उपलब्ध करें.

सजदा–एक नज़राना अब HMV ऑडियो कैसेट पर उपलब्ध है.

HMV

R2G

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैदा करती हैं. दिल्ली और मुंबई हवाई अड्डों पर हर महीने औसतन 25 ऐसी घटनाएं हुआ करती हैं. ऐसे में बम निरोधक दस्तों के अलावा सुरक्षा अधिकारियों के लिए यात्रियों को विमान से उतारने और फिर विमान की पूरी जांच करने की भी जहमत उठानी पड़ती है. भारतीय अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा प्राधिकरण के अध्यक्ष वी. के. माथुर शिकायती लहजे में कहते हैं, "समूची व्यवस्था ऐसी झूठी अफवाहों के कारण परेशान है. इनके कारण सही मौकों पर कार्रवाई करने की हमारी क्षमता पर भी असर पड़ा है."

सुविधाओं की कमी

★ इंडियन एअर-लाइंस के विमानों में लादे जाने वाले सामान की एक्स-रे जांच सुविधा देश में सिर्फ 7 हवाई अड्डों पर ही उपलब्ध

माल असबाब से आशंका

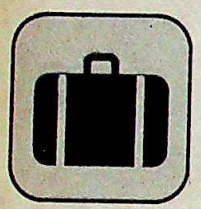

सुरक्षा एजेंसियां ढोए जाने वाले माल और यात्री के सामान को काफी खतरनाक मानती हैं. हालांकि अब इन दोनों के लिए पहचान के कड़े नियम लागू कर दिए गए हैं. 'चेक इन' किए गए यात्री सामान की विमान में लदाई से पहले संबद्ध यात्री द्वारा पहचान आवश्यक हो गई है. इसका कारण यह माना गया है कि उग्रवादी सामान्य तौर पर खुद को खत्म करने से कतराएंगे. पर श्रीलंका के तमिल उग्रवादियों ने इस मान्यता को भी काट दिया है.

अंदर के लोगों से होने वाले खतरों के मद्देनजर अब यात्रियों द्वारा सामान की पहचान कराने की व्यवस्था में आसानी से घुसपैठ संभव है. अभी के हालात में 100 में से केवल 20 सूटकेसों की एक्स-रे द्वारा जांच की जाती है. और इंडियन एअरलाइंस के उड़ान मार्गों के 57 हवाई अड्डों में से केवल सात में एक्स-रे की सुविधा है. अमेरिका में सभी हवाई अड्डों पर 'इलेक्ट्रॉनिक वेपर डिटेक्टर' लगे होते हैं जो पलक झपकते ही बम की मौजूदगी भांप लेते हैं.

सामान की ढुलाई के समय कर्मचारी आसानी से कोई सूटकेस आगे कर उसे सफेद खड़िया से सत्यापित कर दे सकता है. इससे बचाव के लिए नियमतः सामान की ढुलाई करने वालों के कपड़ों की ठीक तरह से जांच जरूरी है. मगर जैसा कि इंडियन एअरलाइंस के सुरक्षा निदेशक बी.एस. राठौड़ कहते हैं, "यह जांच हम नियमित रूप से नहीं कर पा रहे क्योंकि हमारे पास पर्याप्त कर्मचारी नहीं हैं."

कुछ वर्ष पहले कलकत्ता में बुक किए गए एक पैकेट में विस्फोट हो गया था. जांच से मालूम हुआ कि पैकेट में ज्वलनशील पदार्थ थे. उसके बाद से पार्सल वाले सभी सामान के लिए ढुलाई से पहले 24 घंटे तक रखा जाना अनिवार्य कर दिया गया.

कार्गो द्वारा भेजे जाने वाले सामान के लिए 'कूलिंग' की अवधि 36 घंटे के लिए अनिवार्य है. लेकिन कार्गो विभाग में ही किसी सामान को सात अलग-अलग एजेंसियों से होकर गुजरना पड़ता है. उस दौरान भी वहां कोई हेराफेरी संभव है. वहां पड़े कई सामान बिना किसी ताले के होते हैं और उन पर केवल रेक्सिन का खोल चढ़ा होता है.

उड्डयन विशेषज्ञों का कहना है कि यात्री सामान और माल दोनों पर नजर रखने के लिए एक स्वतंत्र सुरक्षा एजेंसी का होना जरूरी है. एअर एंडिया के निगरानी विभाग के प्रमुख डी. सी. जुगरान कहते हैं, "अनजान घुसपैठियों से विमान का बचाव करने से ज्यादा जरूरी है भीतर के उन दुश्मनों से होशियार रहना जो विमान तक आसानी से आ-जा सकते हैं."

'अकबर' बम कांड का एक सकारात्मक नतीजा यह निकला है कि समूची सुरक्षा प्रणाली की विस्तारपूर्वक समीक्षा की गई है. नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने खान-पान सहित कई महत्वपूर्ण बातों पर दोहरी जांच प्रणाली लागू कर दी है. पहचान पत्रों की जांच भी गंभीरता से होने लगी है. एजेंसियों के कामकाज में बेहतर तालमेल कायम करने के प्रति भी जागरूकता बढ़ी है.

लेकिन इन सभी प्रयासों के साथ मुश्किल वाली बात यह जुड़ी है कि यह सब रोज-रोज पूरी चौकसी से करना जरूरी है. यह संबंधित कर्मचारियों को कुछ दिनों बाद नीरस और उबाऊ लगने लग सकता है. फिर ऐसे में चूक की गुंजाइश भी बढ़ जाती है. सुरक्षा व्यवस्था में ऐसी प्रवृत्ति न पनपे तभी बेहतर! क्योंकि अगली दफा जरूरी नहीं कि भारतीय उड्डयन व्यवस्था हादसे से पहले ही चेत जाए.

—मद्रास से **प्रकाश एम. स्वामी,** मुंबई से **एम. रहमान,** पटना से **फरजंद अहमद** और कलकत्ता से **रूबेन बनर्जी** की रिपोर्टों के साथ

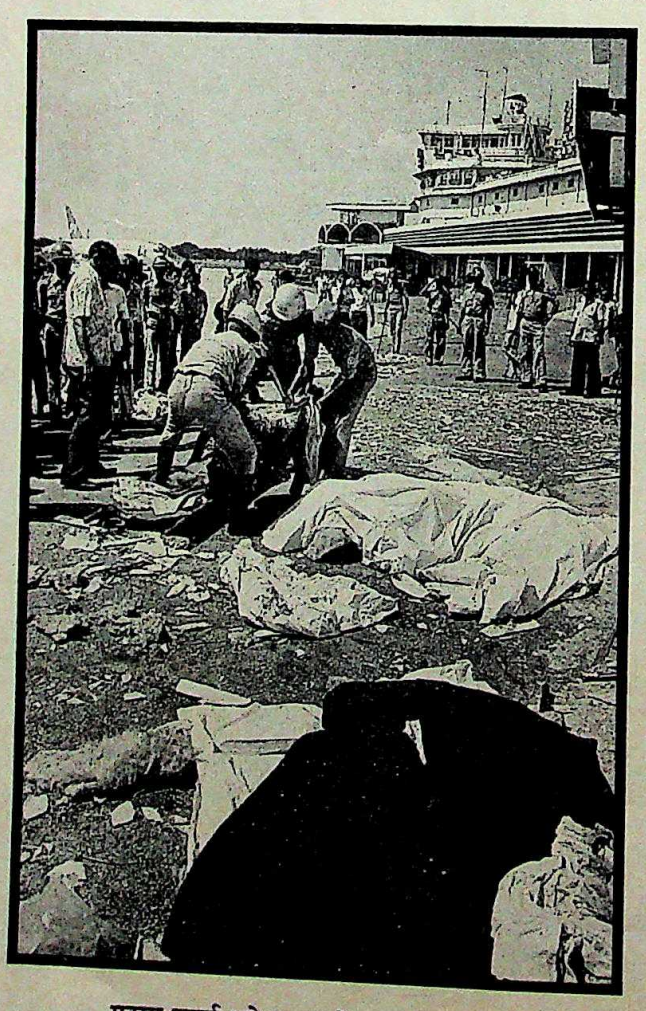

मद्रास हवाई अड्डे पर सूटकेस बम के शिकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता दल

भीतरी तकरार से खुले वार तक

पार्टी में कलह और भितरघात के इस दौर में विश्वनाथ प्रताप सिंह भले ही विजयी नजर आ रहे हों पर इससे दल की बुनियाद कमजोर हुई है. इसके परिणामस्वरूप अजित सिंह के राजनैतिक जीवन पर भी ग्रहण लग सकता है

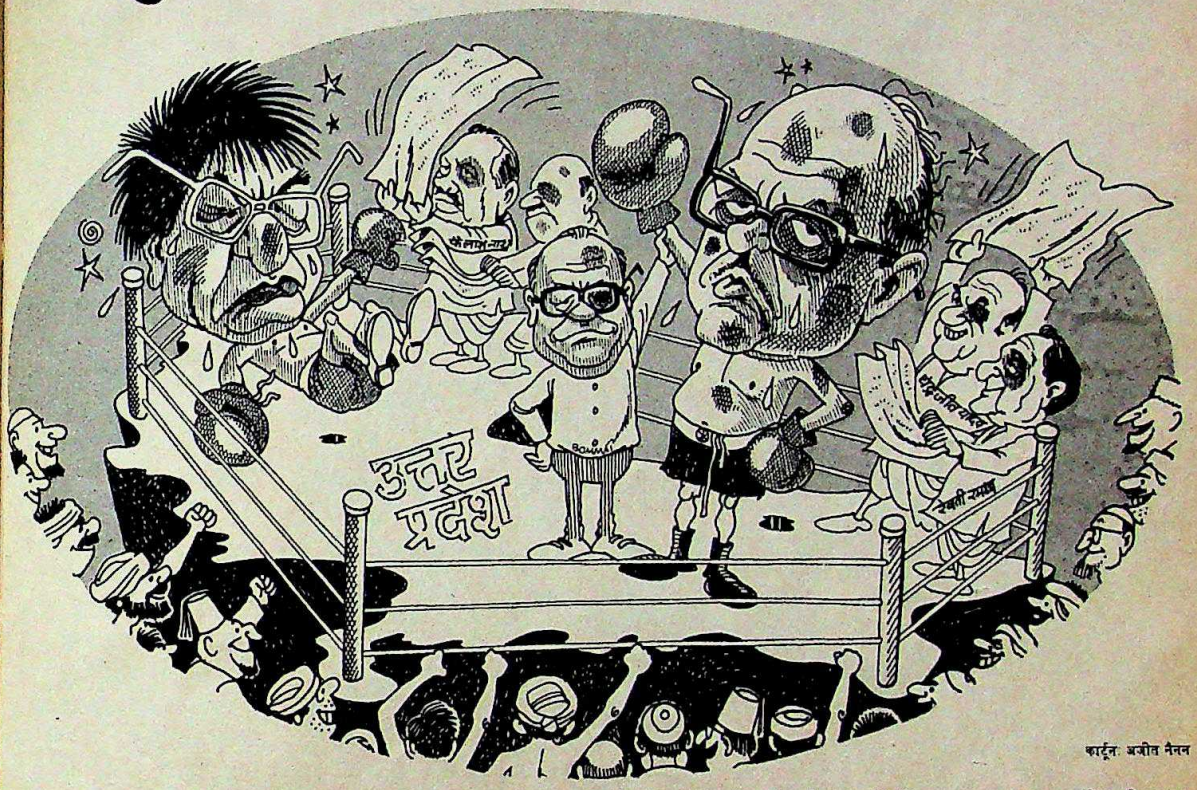

कार्टून: अजीत नैनन

—जावेद एम. अंसारी और दिलीप अवस्थी

सयानों का कहना है कि जब योद्धा घायल होकर गिर पड़े तो उस पर वार नहीं करना चाहिए. लेकिन पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह शायद इसमें विश्वास नहीं करते. उन्होंने परेशानी का सबब बने अपने प्रतिद्वंद्वी अजित सिंह पर उस समय हमला कर दिया जब उनकी किस्मत ने भी उनका साथ छोड़ दिया था. बदतर तो यह कि अजित सिंह की मांद में घुसकर हमला हुआ. लेकिन उत्तर प्रदेश में जनता दल के विभाजन की गहमागहमी शांत होने के बाद लगा कि वी.पी. सिंह के इस कदम से उनकी जगह राज्य भाजपा को ही लाभ हुआ.

जनता दल के नेता आरोपों और प्रत्यारोपों में इतने मशगूल थे कि उन्होंने दीर्घकालिक नतीजों की तरफ ध्यान नहीं दिया. अजित सिंह ने अपने सहयोगियों को 'पार्टी की लूट-खसोट करने वाला बदमाश कहा', तो वी.पी. सिंह के खेमे के हरिकिशोर सिंह ने अजित को 'आगरा में कुछ दिन इलाज कराने' की सलाह दी.

अजित के सामने परेशानियां कम नहीं हैं. हाल के उपचुनावों में उनके ज्यादातर समर्थकों की हार के बाद पार्टी आलाकमान ने पहला वार किया. अजित के समर्थक और उ.प्र. जनता विधायक दल के नेता कैलाशनाथ यादव को, कारण बताओ नोटिस थमा दी गई. उधर, लखनऊ में वी.पी. सिंह खेमे के 52 विधायकों ने रेवती रमण सिंह के नेतृत्व में विधानसभा अध्यक्ष केसरी नाथ त्रिपाठी को लिखा कि यादव में उनका विश्वास नहीं रहा.

यादव ने ठीक वही किया जो वी.पी. सिंह ने चाहा होगा. उन्होंने जनता दल के 14 विधायकों को पार्टी से निष्कासित कर दिया. पार्टी अध्यक्ष एस.आर. बोम्मई ने इस मौके का लाभ उठाते हुए यादव को दरवाजा दिखा दिया. उन्होंने कहा कि राज्य इकाई के अध्यक्ष ने विधायकों को निष्कासित कर अपनी सीमाओं का उल्लंघन किया है. दोनों गुटों के बीच लड़ाई शुरू हो गई और वे फरियाद लेकर त्रिपाठी के पास पहुंच गए.

उधर, राजधानी में अजित सिंह ने अपने समर्थकों की बैठक बुलाई. कहने को तो यह चौधरी चरण सिंह के जन्म दिन की योजनाएं बनाने के लिए बुलाई गई थी लेकिन उसका असल मकसद अपनी ताकत आजमाना था. अजित सिंह यह देख दंग रह गए कि पार्टी के 59 लोकसभा सदस्यों में से सिर्फ पांच आए. अजित सिंह के सिकुड़ते समर्थन से उत्साहित होकर वी.पी. सिंह के समर्थकों ने 5 दिसंबर को लखनऊ में जनता विधायक दल की बैठक बुलाई. इसके तीन दिन पहले वी.पी. सिंह ने उत्तर प्रदेश के सभी 22 सांसदों को आमंत्रित किया. इसमें 16 सांसदों ने हिस्सा लिया और जौनपुर के सांसद अर्जुन यादव सहित अजित सिंह के कुछ जाने-माने समर्थकों ने फोन पर अपना समर्थन व्यक्त किया. अपने पार्टीजनों के लिए वी.पी. सिंह का संदेश बहुत संक्षिप्त था:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने विधायकों का समर्थन बटोरिए.

सांसदों ने संदेश का मतलब जरूर समझ लिया था. उन लोगों ने अन्य सांसदों से संपर्क किया और जो विधायक तटस्थ बने हुए थे उन्हें समझा-बुझाकर अपनी तरफ मिलाया. इस काम में जिन दूसरे नेताओं को लगाया गया था, वे थे—पटना में लालू यादव, लखनऊ में रेवती रमण और दिल्ली में शरद यादव.

और जब त्रिपाठी ने अपने 4 दिसंबर के फैसले में कहा कि कैलाशनाथ यादव विपक्ष के नेता के रूप में बने रहेंगे तो वी.पी. सिंह ने पूर्व मुख्यमंत्री और कभी दोस्त रहे मुलायम सिंह यादव से मदद मांगी. पुरानी दुश्मनी को खत्म करने के लिए मुलायम सिंह ने पिछड़ी जातियों के एक दर्जन विधायकों से संपर्क करके वी.पी. सिंह को उपकृत कर दिया. अजित सिंह के विश्वासपात्र,

नेता चुने जाने पर रेवती रमण का स्वागत

आर.के. गुप्ता

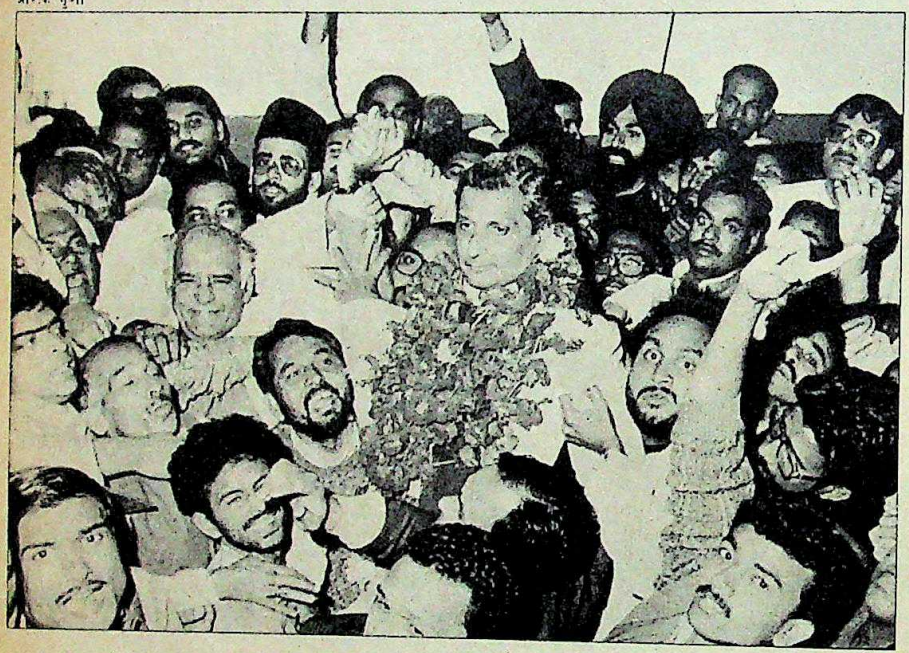

सहारनपुर के सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री रशीद मसूद के अस्पताल में होने से अजित समर्थक संकट में फंस गए.

इसके अलावा वी.पी. सिंह ने अजित सिंह के हर कदम को पहले ही ताड़कर बेकार कर दिया. जिस समय अजित सिंह लखनऊ के राजकीय अतिथि गृह में विश्राम कर रहे थे, उस समय वे इस बात से बेखबर थे कि उनके कट्टर समर्थकों—आगरा के विधायक अरिदमन सिंह और फिरोजाबाद के विधायक ओम प्रकाश दिवाकर—को फोड़ लिया गया है. और जब तक अजित सिंह पार्टी विधायकों छतरपाल सिंह और मुहम्मद कासिम से फोन पर बात करते, वे भी पाला बदल चुके थे. और जब तक अजित सिंह ने शरद यादव और लालू यादव से मेलमिलाप की कोशिश की तब तक तो समय गुजर गया था. शरद यादव को मनाने के लिए सत्यपाल सिंह यादव तथा राजनाथ सोनकर और पटना में लालू यादव को मनाने के लिए सूर्य नारायण यादव को भेजा गया. लेकिन शरद और लालू, और वी.पी. सिंह भी, फंदा ढीला करने को तैयार नहीं थे. दरअसल, मतभेद नवंबर से ही बढ़ने शुरू हो गए थे जब अजित सिंह ने वी.पी. सिंह के अयोध्या मार्च में भाग लेने से इनकार कर दिया था.

सो, वी.पी. सिंह खेमे का लक्ष्य अजित सिंह को पूरी तरह से अपमानित करना हो गया. और जब 5 दिसंबर को लखनऊ में 56 विधायकों और चार विधान परिषद सदस्यों ने रेवती रमण सिंह को जनता विधायक दल का नेता चुना तो अजित सिंह का अपमान हो भी गया. नई राष्ट्रीय पार्टी बनाने के अजित सिंह के ख्वाब पर भी इसका बहुत बुरा असर पड़ेगा. घर में कोई हैसियत न रहने पर अजित सिंह केंद्रीय ढांचे में बगावत का झंडा उठाने की स्थिति में नहीं हैं. यहां तक कि उनके समर्थक सांसद भी अब उनका साथ देने पर पुनर्विचार कर सकते हैं. जैसा कि इलाहाबाद की सांसद सरोज दुबे कहती हैं, "हमें राजा ने जितवाया है. हम उनका साथ नहीं छोड़ेंगे."

जहां तक बागपत के हीरो और चरण सिंह के उत्तराधिकारी का सवाल है, पार्टी से उनके निष्कासन की मांग दिन-ब-दिन तेज होती जा रही है. संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष मुफ्ती मुहम्मद सईद कहते हैं, "अनुशासन हर हाल में बना रहना चाहिए ताकि यह भविष्य के लिए सबक रहे." बोम्मई जैसे दूसरे नेता नरम रुख अख्तियार कर रहे हैं. हालांकि वी.पी. सिंह अजित सिंह को पार्टी से निकालने की मांग नहीं कर रहे हैं लेकिन उनके इस बयान से कि 'पार्टी ने इस मुद्दे पर अपना फैसला सुना दिया है', यही अर्थ निकलता है. जॉर्ज फर्नांडीस, सुरेंद्र मोहन और बीजू पटनायक सरीखे लोग भी हैं जो चाहते हैं कि अजित सिंह पार्टी में बने रहें ताकि शरद, लालू और रामविलास पासवान का वजन ज्यादा न बढ़े.

इस जंग में असली फायदा तो अंततः उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार को ही हुआ है. विपक्ष के बंटने से उसकी राह आसान हुई

लेकिन यदि अजित सिंह जनता दल में बने रहते हैं तो उन्हें वी.पी. सिंह की शर्तें माननी होंगी. अजित सिंह का जाट आधार भी खिसकता जा रहा है. सतपाल मलिक कहते हैं, "अब वे जाटों को प्रेरित करने में सक्षम नहीं रहे." पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 10 विधायक पहले ही उनके खेमे से निकल चुके हैं. उधर, इंका भी अजित सिंह को स्वीकार करने का संकेत नहीं दे रही है. एक केंद्रीय मंत्री कहते हैं, "अजित सिंह पहले अपनी खुद की पार्टी में तो अपनी समस्याएं सुलझा लें."

बहरहाल, जीत वी.पी. सिंह की ही हुई है. लेकिन वे हार भी सकते थे. यदि विधानसभा अध्यक्ष त्रिपाठी ने यादव के निष्कासन के आधार पर 14 विधायकों को 'असंबद्ध' घोषित कर दिया होता तो वी.पी. सिंह गुट राज्य में मुख्य विपक्ष नहीं रह पाता. लेकिन यह तो समय ही बताएगा कि राज्य में जनता दल पहले की तरह ताकतवर बना रह पाता है या नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पी.वी. नरसिंह राव

मजबूती से जमते पांव

अंतहीन समस्याओं और उनके ठोस समाधान न खोज पाने के बावजूद प्रधानमंत्री अपनी आडंबरहीन कार्यशैली के बूते सर्वमान्य

—जफर आगा

"सारी उठापटक, सारी विविधताओं के साथ जीवन अपने आप में एक मजेदार और अनूठा अनुभव है. इसमें कुछ हद तक डूबकर, आनंद उठाते हुए और निरपेक्ष भाव से जीने की कोशिश करनी चाहिए. भारतीय संस्कृति का यही सार है."

एक भेंटवार्ता के दौरान यह कहते हुए प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव अपने जीवन में उपनिषदों के इस सार तत्व की महत्ता का ही बयान कर रहे थे—"मा भया मा समविक्ता," (न हार से दुख, न जीत से उत्तेजना). अपनी नियति के अनुसार कर्म करते हुए उनका पूरा व्यक्तित्व ही जैसे इस श्लोक पर क्रियाशील नजर आता है: अप्रभावशाली, शिथिल, अबोधगम्य लेकिन चिंतनशील, सचेत और आडंबरहीन. वे 'मीठी वाणी से किसी को परास्त करने' की नीति में विश्वास करते हैं. वे कृष्ण द्वारा अर्जुन को दी गई इस सलाह में भी विश्वास करते हैं, "भावातिरेक, दुर्भावना, क्रोध या अनुरक्ति से मुक्त होकर संघर्ष करो."

उन्हें नजदीक से जानने वाले लोग जोर देकर कहते हैं कि उनके व्यक्तित्व में रचे-बसे ब्राह्मणोचित गुणों को जाने बिना यह समझना असंभव है कि वे कैसे काम करते हैं, या क्यों करते हैं. या जिस शख्स के पास अपना कोई निर्वाचन क्षेत्र तक नहीं था, वह क्यों भारी बहुमत से न सिर्फ संसद में पहुंचा, बल्कि एक समस्याग्रस्त देश की कमान भी संभाले हुए है. समस्याओं से निर्लिप्त रहते हुए उनसे निबटने की उनकी अलौकिक क्षमता ही उन्हें विशिष्ट पहचान देती है. और विशिष्ट शैली भी देती है: तभी तो वे स्थितियों पर काबू पाने, प्रशंसा और सम्मान पाने में सफल रहे हैं.

समस्याओं से निर्लिप्त रहते हुए उनसे निबटने की उनकी अलौकिक क्षमता ही उन्हें विशिष्ट पहचान और विशिष्ट शैली देती है. तभी तो वे स्थितियों पर काबू पाने में सफल रहे

यह वही असंभाव्य नायक है जिसने अपनी सरकार के अल्पमत होने पर कभी चिंता नहीं जाहिर की. उसने देश में पहली बार दूरगामी नतीजों वाले आर्थिक सुधार लागू करके अपने आलोचकों का भी मुंह बंद कर दिया. अपनी 'स्थितप्रज्ञता और प्रतिबद्धता' के कारण ही वे जनता दल के खिलाफ मंडल कार्ड का इस्तेमाल करने या ताजा अयोध्या आंदोलन में भाजपा को मुसीबत में डालने के लिए अपराध बोध से पीड़ित नहीं हुए. और जब लालकृष्ण आडवाणी ने उन्हें लालबहादुर शास्त्री के बाद सर्वोत्तम प्रधानमंत्री कहा, या जब एम.जे. अकबर ने 'सही मायने में आदर्श ब्राह्मण' कहा तो वे 'पृथक अहं के भाव से' उत्तेजित भी नहीं हुए.

वे आपको बेहिसाब ऊब में डाल सकते हैं. लेकिन नाटकों से ऊबा हुआ यह देश झगड़े और हिंसा की राजनीति में लौटने का इच्छुक नहीं है. बीजू पटनायक के मुताबिक, राव ने "राजनीति में सादगी लाई और निरंकुशता खत्म की." देश के इस कर्णधार के बारे में शुरुआती संदेह खत्म हो गए हैं और अब वह अपने पांव मजबूती से जमा रहा है. और परिवारवादी राजनीति के बाद के नए माहौल में उसे बड़ी गंभीरता से लिया जा रहा है.

आडंबरहीनता और अनौपचारिकता

सहजता ने सार्वजनिक छवि को चमक दी

आडंबर और विवाद नरसिंह राव के स्वभाव के प्रतिकूल हैं. वे इतने एकांतप्रिय और सादगीपसंद हैं कि उनके करीबी से करीबी राजनैतिक सहयोगी भी यह नहीं जानते कि वे बाहर खाना नापसंद करते हैं. एक दशक से उनके अतिरिक्त निजी सचिव के.आर. पांडेय कहते हैं, "वे बहुत ही सादा खाना पसंद करते हैं और जब कभी सरकारी लंच या डिनर के लिए बाहर जाते हैं तो बहुत कम खाते हैं. भरपेट भोजन घर लौटने पर ही करते हैं." यहां तक कि जब वे विदेश यात्रा पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ साल के बूढ़े या साठ साल के जवान?

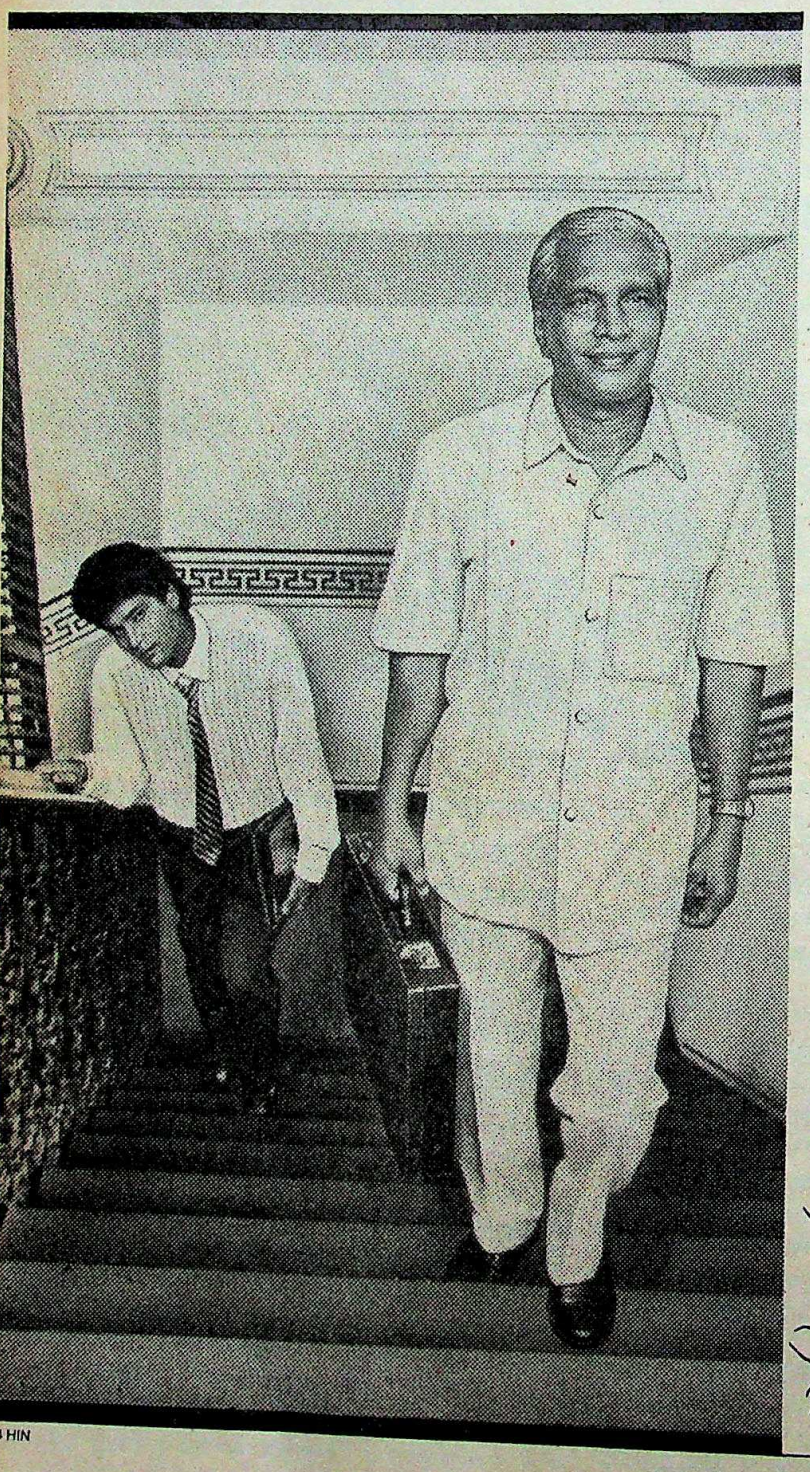

देखा आपने? ६० साल की उम्र में भी कितनी शक्ति, कितनी स्फूर्ति! जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थकान महसूस करते हैं. क्यों?

इसका जवाब है - केसरी जीवन.

हर दिन, दिन में दो बार दो चम्मच.

ज़ाफ़रान (केसर) - अनमोल तत्व!

केसरी जीवन की बोतल खोलिए... दुनिया की सबसे महँगी जड़ी-बूटी असली ज़ाफ़रान की खुश्बू आपका स्वागत करेगी... कश्मीर की वादियों से चुना गया ज़ाफ़रान.

केसरी जीवन में ज़ाफ़रान के आरोग्यकर और सौन्दर्यवर्धक गुणों के साथ ताज़ा आंवला व अन्य अनेक जड़ी-बूटियां भी तो हैं जो शरीरगठन मज़बूत बनाएं, शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त रखें, तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी के तनावों से मुक्त रखने में सहायक हों और बीमारियों से मुकाबला करने की शक्ति दें.

ज़िंदगीभर सेहत का अनमोल रत्न

आप भी पाइए. जीभर कर जीने की तरो-ताज़गी महसूस कीजिए.

झंडु केसरी जीवन

रग रग में जान - ज़िन्दगी की शान

ZP/21/254 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं तब भी उनका मलयाली रसोइया कन्नन उनकी मनपसंद निरामिष चीजें बनाकर खिलाता है. वह अपने साथ सारी चीजें चावल, आटा, तरकारी और बरतन तक ले जाता है. यदि तवा और बेलन साथ में नहीं होता है तो 'साहब' चपाती के बिना ही काम चला लेते हैं.

यही वह विशेषता—सादगी और अनौपचारिकता के लिए सहज आग्रह—है जिसने नरसिंह राव की छवि को चमक दी है. पिछले प्रधानमंत्रियों—इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई और यहां तक कि वी.पी. सिंह—को इसलिए राजनैतिक रूप से बदनाम होना पड़ा था क्योंकि उनके सगे-संबंधी विवादों में फंसे थे. ऊंचे हलकों में विचरने वाले गुरु चंद्रास्वामी से नरसिंह राव के संबंधों के बावजूद उनके कट्टर विरोधी भी उनके परिवार पर कोई लांछन नहीं लगा सके हैं. पी.वी. रंगा राव को, जो आंध्र प्रदेश के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षामंत्री हैं, छोड़कर उन्होंने न तो अपने बाकी दोनों बेटों और न ही पांचों बेटियों में से किसी को सार्वजनिक जीवन में आने की इजाजत दी. हैदराबाद में रहने वाले उनके पुत्र पी.वी. राजेश्वर राव ने जब उनके प्रधानमंत्री बनने का लाभ उठाना चाहा और नई दिल्ली में उद्योगपति उन्हें पटा रहे थे तो प्रधानमंत्री ने उन्हें मय सामान आंध्र प्रदेश रवाना कर दिया.

इस सादगी से कौन न मारा जाए

चतुर चालों से पांसा पलटने का गुर

लेकिन अपनी सादगी के बावजूद चतुर और अनुभवी नरसिंह राव सभी सही चालों को जानते हैं. अब तक की उनकी सबसे महत्वपूर्ण परीक्षा सोनिया गांधी को अमेठी उपचुनाव न लड़ने के लिए राजी करना था. एक मंत्री कहते हैं, "नरसिंह राव ने महसूस किया कि सोनिया की दिलचस्पी राजनीति में नहीं है, लेकिन उन्हें यह भी मालूम था कि सोनिया के इर्द-गिर्द के लोग उन्हें राजनीति में धकेल सकते हैं." ऐसे में एक ही तरीका था कि सोनिया का विश्वास हासिल किया जाए और उन लोगों की साजिश को नाकाम कर दिया जाए जो उन्हें राजनैतिक मोहरे के रूप में इस्तेमाल करना चाहते थे. नरसिंह राव ने यही किया. उन्होंने न सिर्फ सोनिया से रोजाना व्यक्तिगत संपर्क बनाए रखा, बल्कि शपथ ग्रहण करने के तुरंत बाद अपने मंत्रियों के नामों की सूची पर उनकी स्वीकृति हासिल की. साथ ही उन्होंने राजीव के वफादारों—अमिताभ बच्चन और सतीश शर्मा—से भी बराबर संपर्क बनाए रखा और यह पक्का कर लिया कि वे उनके समर्थन में रहें. पायलट से राजनीतिक बने सतीश शर्मा और नरसिंह राव के बीच की संपर्क कड़ी थे चंद्रास्वामी. यह रणनीति काफी फायदेमंद रही क्योंकि सोनिया गांधी ने नरसिंह राव से व्यक्तिगत रूप से कहा कि वे चुनाव नहीं लड़ेंगी. पार्टीजनों के सामने सोनिया के आखिरी फैसले की अधिकृत घोषणा भी उन्होंने ही की, किसी और ने नहीं. इसके बाद ही राजीव गांधी के सहायक विंसेट जॉर्ज को, जिन्होंने चुपचाप नरसिंह राव विरोधी साजिश रची थी, बदले हुए सत्ता समीकरणों का पता चला. जॉर्ज ने अपनी आदत के मुताबिक प्रधानमंत्री को कुछ मंत्रालयों में नियुक्तियों से संबंधित फोन किया. अतीत में, सोनिया का सीधे नाम लिए बिना भी, जब वे फोन करते थे तो माना जाता था कि सोनिया की दिलचस्पी है. लेकिन बदली हुई परिस्थितियों में, नरसिंह राव ने बड़ी रूखाई से जवाब दिया, "काम हो जाएगा. अब सोनिया जी से बात करवाइए." जाहिर है, सारे समीकरण एकदम बदल गए थे.

बस आपसी रजामंदी का सहारा

सबको खुश रखो, खुद भी खुश रहो

अपने ऊपर उन्हें भरोसा तो पूरा है पर वे अपनी सीमाएं भी जानते हैं. न उनके समर्थकों की कोई जमात है, न ही कोई करिश्मा उनसे जुड़ा है. और अल्पमत सरकार का मुखिया होने के नाते वे लोकसभा में विपक्षी दलों के समर्थन पर ही आश्रित हैं. इसके मद्देनजर उनका मूल मंत्र है—आम राय. विपक्षी नेताओं से अपनी बरसों पुरानी पहचान के बूते वे उन्हें रजामंद कर लेते हैं. पिछले दिनों जब बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने

अपने ऊपर उन्हें भरोसा तो पूरा है पर वे अपनी सीमाएं भी जानते हैं. अल्पमत सरकार चलाने के लिए उन्होंने इस बात का बराबर खयाल रखा कि भाजपा की भौंहें न टेढ़ी हों

अयोध्या की विवादास्पद इमारत पर धावा बोल दिया तब भाजपा से उनके रिश्तों में खटास के लक्षण दिखने लगे थे. लेकिन नरसिंह राव ने अर्द्धसैनिक बल लगाकर उग्रपंथी हिंदू अभियान को धराशायी करने के बदले उसे स्थानीय कानून-व्यवस्था की समस्या भर माना. और आडवाणी को यह धारणा बनाने का कोई संकेत नहीं दिया कि उनकी पार्टी अछूत है बल्कि उन्हें यकीन दिलाया कि वे वी.पी. सिंह की तरह भाजपा को सांसत में नहीं डालेंगे. पार्टी से यह आश्वासन लेकर कि वह हाईकोर्ट के फैसले को मानेगी, नरसिंह राव संघ परिवार की तू-तू, मैं-मैं का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद उठाते रहे. दरअसल, उन्होंने इस बात का बराबर खयाल रखा कि भाजपा की भौंहें न टेढ़ी हों.

मौके पर निर्णय भी

विरोधियों को औकात बताने में पीछे नहीं

अक्सर नरसिंह राव जो कहते हैं, वे करते नहीं. जनता दल नेता विश्वनाथ प्रताप सिंह और वामपंथी नेताओं को संसद के बजट सत्र के दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त टी. एन. शेषन

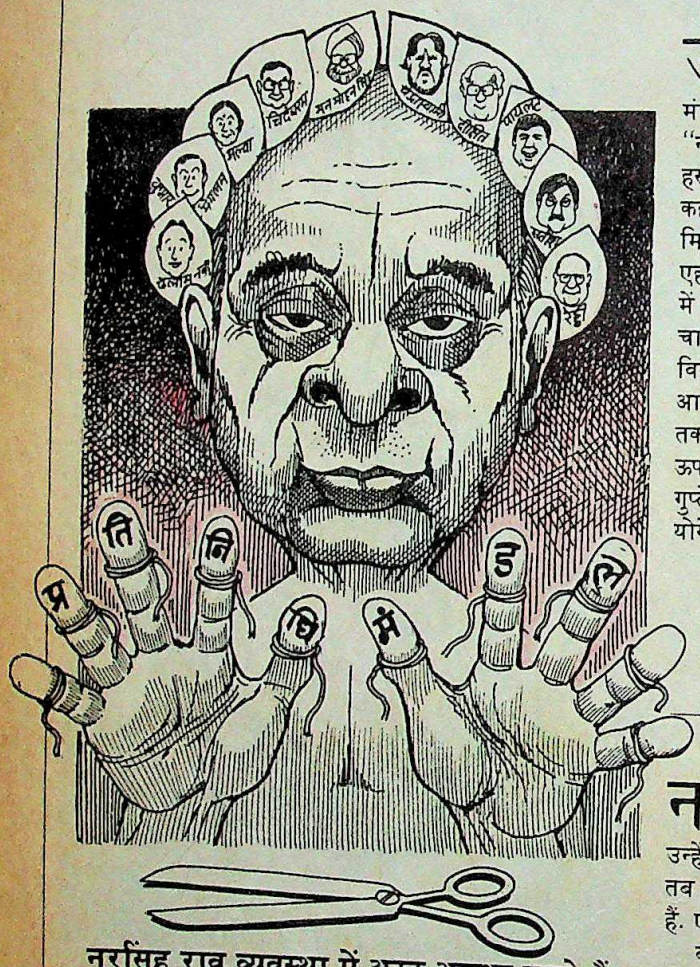

नरसिंह राव व्यवस्था में अटूट आस्था रखते हैं. वरिष्ठ नेताओं को सम्मान—भले ही वह वास्तविक न हो—देकर वे उन्हें शिकायत का कोई मौका नहीं देते

के मामले में इसका बड़ा तीखा एहसास हुआ. प्रधानमंत्री ने उनसे शेषन को बदल देने का वादा किया और महाभियोग का विचार छोड़ देने को कहा. रामविलास पासवान कहते हैं, "तब हमने उनकी मंशा पर शंका नहीं की थी." लेकिन संसद का सत्र खत्म होने के बाद भी शेषन अपनी जगह बने रहे.

पार्टी के भीतर अपने प्रतिद्वंद्वियों के प्रति भी नरसिंह राव इतने ही निर्मम हैं. नरसिंह राव जब नांदयाल से चुनकर आए तभी मानव संसाधन विकासमंत्री अर्जुन सिंह को लोकसभा में दल के नेता के तौर पर इस्तीफा दे देना चाहिए था. लेकिन प्रधानमंत्री के कराकास से गुट-15 शिखर सम्मेलन में भाग लेकर लौटने के बाद भी उन्होंने ऐसा नहीं किया. शायद अर्जुन सिंह की मंशा उन्हें नीचा दिखाने की थी. लेकिन उनकी यह मंशा धरी रह गई. प्रधानमंत्री ने गुलाम नबी आजाद से लोकसभा अध्यक्ष को एक चिट्ठी भेजने को कहा कि अबसे नरसिंह राव लोकसभा में पार्टी के नेता होंगे. अध्यक्ष ने 6 दिसंबर को इसकी घोषणा कर दी और अर्जुन सिंह को हटना पड़ा.

बेवजह हस्तक्षेप से इनकार

मंत्रिमंडल को पूरी स्वायत्तता

उनकी सत्ता को चुनौती न देने वालों के साथ उनका व्यवहार बहुत ही उदारतापूर्ण होता है. उनके अधिकांश मंत्री अद्भुत स्वतंत्रता का आनंद उठा रहे हैं. आजाद कहते हैं, "नीतिगत मामलों को छोड़ राव साहब हमारे काम में कोई हस्तक्षेप नहीं करते." केंद्रीय संचार राज्यमंत्री राजेश पायलट भी कहते हैं, "हमें प्रधानमंत्री कार्यालय से कभी कोई निर्देश नहीं मिलता." पिछले दिनों इस कार्यालय ने प्रधानमंत्री की सत्ता का एहसास कम ही करवाया है. मसलन जब आइबीएम ने हाल ही में टाटा घराने के साथ अपनी परियोजना के बारे में जानना चाहा तो प्रधानमंत्री कार्यालय से उसे बड़ी विनम्रता के साथ विदेशी पूंजी निवेश बोर्ड से संपर्क करने को कहा गया जो इसकी आधिकारिक संस्था है. यही नहीं, उनके विरोधियों को भी तब तक निर्मम व्यवहार का सामना नहीं होता जब तक पानी सिर से ऊपर न बहने लगे. सिंधिया ने एअर इंडिया के अध्यक्ष सुभाष गुप्ते की जगह अपने उम्मीदवार वेलकम समूह के अध्यक्ष योगेश्वर दयाल को लाना चाहा तो इजाजत मिल गई. लेकिन अगर कोई अपनी शान दिखाना चाहे तो अर्जुन सिंह और केंद्रीय रक्षामंत्री शरद पवार की मिसाल सामने है जिन्हें नाममात्र की ही छूट मिली.

व्यवस्था में अटूट आस्था

उदार और उग्र रवैये की मिली-जुली रणनीति

नरसिंह राव व्यवस्था में अटूट आस्था रखते हैं. वरिष्ठ नेताओं को सम्मान—भले ही वह वास्तविक न हो—देकर वे उन्हें शिकायत का मौका नहीं देते. जब वे विदेश दौरे पर होते हैं तब राजनैतिक मामलों की कैबिनेट समिति को अधिकार दे जाते हैं. एक मंत्री कहते हैं, "यह चतुराई भरा कदम है."

बहरहाल, संकट की असली घड़ी में ही उनके उदार और उग्र रवैये की मिली-जुली रणनीति की अग्निपरीक्षा होगी. जब कोई विरोधी खुलकर मैदान में आ जाए या अर्थव्यवस्था डूबने-उतराने लगे या फिर खुद उनका आधार खिसकने लगे, तब नरसिंह राव का कौन-सा रूप सामने आएगा?

क्या सारी व्यवस्था को इशारे पर नचाने वाले चतुर रणनीतिज्ञ का रूप सामने आएगा या बुजुर्ग राजनेता का जो व्यवस्था का अपने हक में इस्तेमाल करता है? राजीव गांधी की चमक-दमक को फीका पड़ने और विश्वनाथ प्रताप सिंह की नैतिकतावादी छवि को धूमिल होने में एकाध साल ही लगे. जब विपक्ष अपने को एकजुट करने लगेगा और अनुशासनहीन इंकाई पुराने रवैये अपनाने लगेंगे तब क्या नरसिंह राव इस प्रक्रिया को रोक पाएंगे या देश की यह विशाल पार्टी एक और नेता को अपने जाल में उलझा लेगी? इन प्रश्नों का उत्तर आकाश से तारे तोड़ने के समान है लेकिन जैसा कि बीजू पटनायक कहते हैं, फिलहाल देश को उनकी 'मरहम पट्टी' की ही जरूरत है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

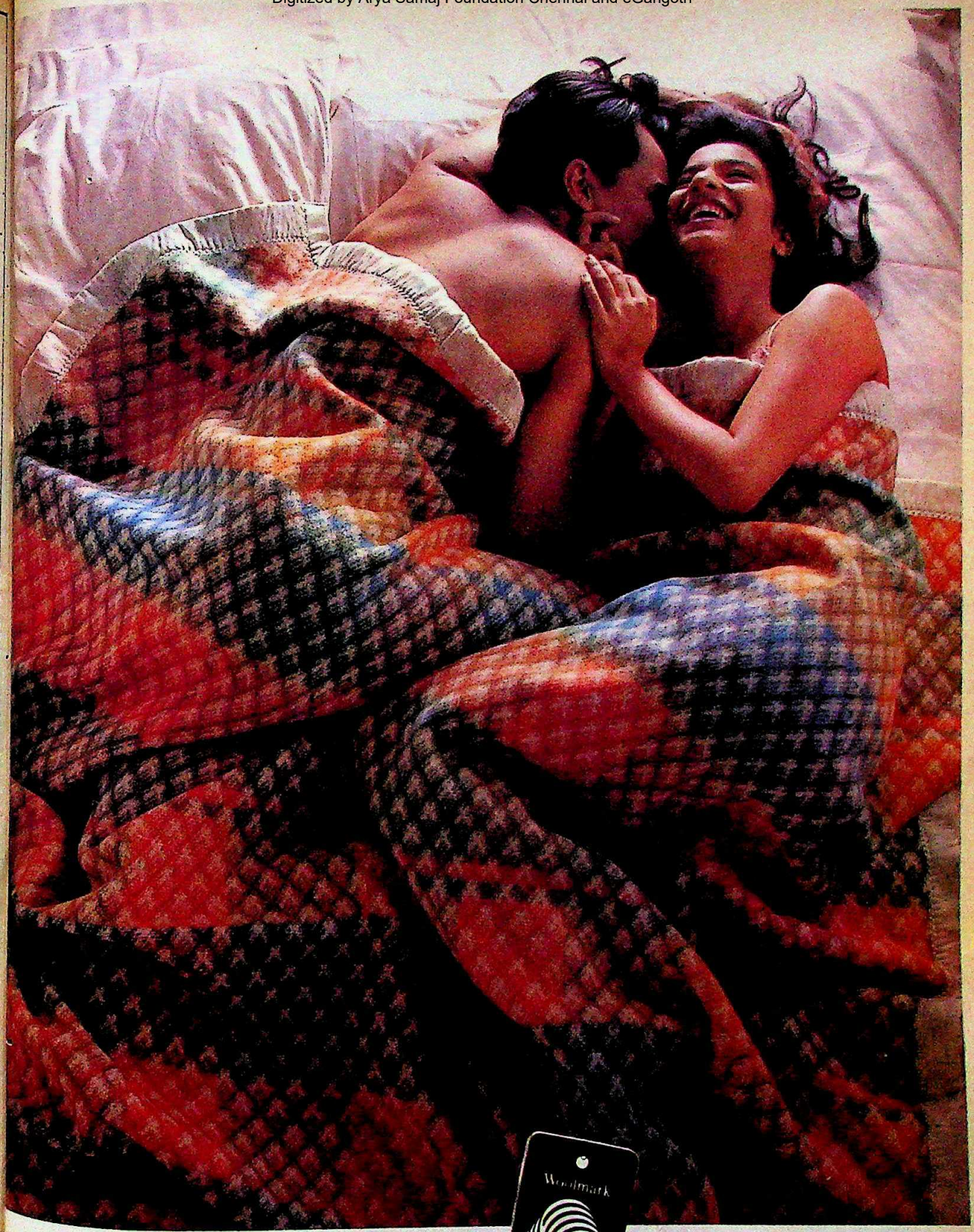

ज़िन्दगी को बिठाएं सर आँखों पर!

रेमण्ड
ब्लैंकेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

MAA COMMUNICATIONS 1721-91 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर वहां, क्या नरीमन पॉइंट है ?

चित्र में आप देख रहे हैं, मुम्बई की गगनचुंबी इमारतें और एक विमान की रफ़्तार से गुज़रती बोरिवली एक्सप्रेस ।

यदि ट्रेन चर्चगेट स्टेशन से नौ सेकेंड पहले छूटी हो तो अब से नौ मिनट बाद वह बोरिवली पहुंचेगी ।

कोरी कल्पना ? नहीं ।

इसके लिए तकनॉलजी यहां मौजूद है, ABB की मुट्ठी में ।

इस तकनॉलजी ने गज़ब कर दिखाया है यूरोप में, जहां ABB की अंतर्नगरीय ट्रेनें ३५० किमी प्रति घंटे तक की गति से सफ़र करती हैं ।

ABB की टिल्टिंग ट्रेन तकनॉलजी ने स्वीडन में भी आश्चर्यजनक काम किया है । वहां ABB ने मौजूदा पटरियों पर ऐसी ट्रेनें स्थापित की हैं जो मोड़ों पर ४०% अधिक रफ़्तार से चलने की क्षमता रखती हैं ।

शीघ्र ही, ABB लोकोमोटिव्स, यूरो टनेल के आर-पार भी सफ़र कर सकेंगे जो इंगलैंड और फ्रांस के बीच एक अंतर्जलीय सम्पर्क है ।

ABB के पास विस्तृत विश्वव्यापी संसाधन हैं जो वह अब भारत को पेश करती है ।

ABB भारत के लिए कोई अजनबी नहीं है । उसकी तकनॉलजी पहले से ही भारतीय रेलवे की सेवा में कार्यरत है । आज चलने वाले हर डीज़ल और इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव में हैं ABB द्वारा सप्लाइ किए हुए महत्वपूर्ण उपकरण। पटरियों के किनारों पर स्थापित आधुनिक सिग्नलिंग उपकरणों के अलावा टैप चेंजर्स, टर्बो चार्जर्स, सिंगल फ़ेज़ एसी ब्रेकर्स इत्यादि । मौजूदा पटरियों पर चलने के लिए छः लोकोमोटिव्स, ABB द्वारा विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए हैं ।

एक बात निश्चित है । ऐसे समय पर जब भारत २१ वीं शताब्दी में क़दम रख रहा है, ABB अवश्य एक ठोस भूमिका अदा करेगी ।

इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग में विश्व अग्रणी

- विद्युत्-शक्ति उत्पादन
- विद्युत्-शक्ति संचरण
- विद्युत्-शक्ति वितरण
- औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक्स
- औद्योगिक उपकरण व प्रणालियां
- परिवहन
- पर्यावरण प्रणालियां

असेया ब्राउन बोवेरी लिमिटेड
संचार विभाग
सोना टावर्स,
७१, मिल्लर रोड,
बैंगलूर-५६० ०५२.

ABB
ASEA BROWN BOVERI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालें जिनमें छलके मुगलों की आन-बान सदियों की शान और प्राकृतिक अद्‌भुतता!

पश्मीना
शाहतूश
जामावार

आहूजासंस शालों की दुनिया की वैभवशाली परम्पराओं को आपके सम्मुख गर्व से प्रस्तुत करते हैं।
शालें जो सम्राटों, नरेशों और नवाबों की मनमोहक सज्जा की प्रतीक रहीं हैं।
शालें जो प्रकृति की उत्कृष्ट कला तथा रंगों को दर्शाती हैं—जिनके प्रत्येक धागे में पिरोया गया है—वैभव तथा सौंदर्य।

आहूजासंस—ज़िनके लिए शाल कोई व्यापारिक वस्तु नहीं है, बल्कि एक गौरवपूर्ण परम्परा है।

आहूजासंस
शाल वाले (प्रा०) लि०

6/44, अजमल खां रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-110 005, फोन : 5720304, 5751850

खुदरा विक्रेता • थोक विक्रेता • निर्यातक

TRENDS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

बाहुबली बंदी

अंततः लालू ने मुस्तैदी दिखाई

बिहार विधानसभा का शीतकालीन अधिवेशन शुरू होने के ठीक पहले पटना में बहुत ही तैयारी के साथ एक नाटक हुआ. निर्दलीय विधायक और राजनीति में आए कुख्यात लोगों के सिरमौर राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव को आखिरकार पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया. बाहुबल के सहारे 'सामाजिक न्याय' आंदोलन के अगुआ बने पप्पू यादव मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के प्रबल पक्षधर रहे हैं. लेकिन उनकी गिरफ्तारी पर मुख्यमंत्री ने कहा, "कोई भी आदमी कानून के ऊपर नहीं है. जो कोई भी कानून को अपने हाथ में लेने की कोशिश करेगा, उससे सख्ती से निबटा जाएगा."

पप्पू यादव को मधेपुरा-सहरसा क्षेत्र में जातीय दंगे फैलाने का एक प्रमुख अभियुक्त घोषित किया गया था. उनके मुकाबले राजपूतों की अगुआई करने वाले सजपा विधायक आनंद मोहन पर भी राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत वारंट जारी है. पर यादव को गिरफ्तार किए जाने का किस्सा नाटकीय है. 10 दिसंबर को शाम सात बजे वे एक स्कूटर पर पीछे बैठकर वेली रोड स्थित अपने आवास पर आए और बिना वर्दी में तैनात पुलिसवालों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया. उन्हें गिरफ्तार करके संजय गांधी जैव उद्यान के रेस्ट हाउस में रखा गया है. यह गिरफ्तारी कुछ अविश्वसनीय लगती है. और इतनी ही अविश्वसनीय उनकी यह टिप्पणी लगती है कि, "उस चुनाव के समय मैंने मुख्यमंत्री के लिए इतना कुछ किया और फिर भी अब मैं गिरफ्तार कर लिया गया हूं."

इस गिरफ्तारी के दो हफ्ते पहले पप्पू यादव और आनंद मोहन ने पूर्वी बिहार के कोशी क्षेत्र में जाति युद्ध छेड़कर आतंक मचा दिया था. ये दोनों अपनी-अपनी जाति के सम्मान के रक्षक माने जाने लगे थे. विवाद का तात्कालिक कारण तो मधेपुरा का उपचुनाव था जिसमें आनंद मोहन सजपा के उम्मीदवार थे और पप्पू यादव वहां से जीते शरद यादव के लिए काम कर रहे थे. चुनाव के समय आनंद मोहन के काफिले पर हुए हमले में दो लोग मारे भी गए थे.

लेकिन चुनाव के बाद सरकार ने सिर्फ आनंद मोहन के खिलाफ ही गिरफ्तारी के आदेश जारी किए. फिर जब लालू प्रसाद यादव पर पक्षपात का आरोप लगने लगा तो उनके साथ पप्पू यादव के खिलाफ भी वारंट जारी हुए. और अर्द्धसैनिक बल लगाए गए. पप्पू जिले से भाग गए पर आनंद मोहन अपने गांव पंचगछिया में ही रहे. यह गांव सहरसा शहर से मात्र 10 किमी दूर है. जब पुलिस और अर्द्धसैनिक बल के लोग वहां पहुंचे, हजारों स्त्री-पुरुष-बच्चों ने उन्हें घेर लिया. पुलिस को वापस लौटना पड़ा.

उधर, पप्पू पटना में मजे से रहे. फिर उन्हें मुगलसराय पहुंचा दिया गया. वे वाराणसी में रहे. फिर धनबाद गए. और दंगा कराने, चोरी, हथियार जमा करने, गैरकानूनी जमावड़ा करने जैसे आरोपों में गिरफ्तार होने के लिए पटना पहुंचे.

राजनैतिक प्रेक्षकों का मानना है कि विधानसभा में अपनी भद पिटने से बचने के लिए ही मुख्यमंत्री ने उनकी यह गिरफ्तारी कराई है.

कई लोगों का मानना है कि पप्पू यादव की गिरफ्तारी के दूसरे कारण भी हैं. यादवों के बीच वे बड़ी तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं और उन्हें सामाजिक न्याय आंदोलन का अगुआ माना जाने लगा है. पूर्णिया में निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में उतरे यादव अब दिल्ली की राजनीति में दखल देने को उत्सुक हैं. शरद यादव के मधेपुरा से चुनाव लड़ने से उन्हें जनता दल के प्रधान महासचिव के करीब आने का मौका भी मिल गया. इंका के कुछ पिछड़ी जाति के नेताओं में भी उनके ताल्लुकात हैं. जनता दल के कई नेता निजी बातचीत में कहते हैं कि पप्पू के पंख कतरने के लिए भी लालू प्रसाद ने यह गिरफ्तारी कराई है.

लेकिन पप्पू यादव की गिरफ्तारी से सहरसा-मधेपुरा में शांति आ जाएगी इसमें संदेह है. अगर पप्पू यादव जातीय हिंसा के अलावा रंगदारी टैक्स वसूली, फिरौती के लिए अपहरण जैसे अपराधों से जुड़े थे तो उनके मुकाबले में खड़े आनंद मोहन भी कम नहीं हैं. उन पर सारे कड़े और बड़े कानूनों के तहत मामले चल चुके हैं. अगर पप्पू के राजनैतिक रिश्ते बहुत ऊंचे है तो आनंद मोहन सीधे पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर से जुड़े हैं. एक स्वतंत्रता सेनानी परिवार के इस युवा नेता के खिलाफ 67 आपराधिक मामले चल चुके हैं. अभी भी 17 मामलों में वे वांछित अपराधी हैं जिनमें हिंसा से लेकर हत्या तक के अनेक मामले शामिल हैं.

कृष्णमुरारी किशन

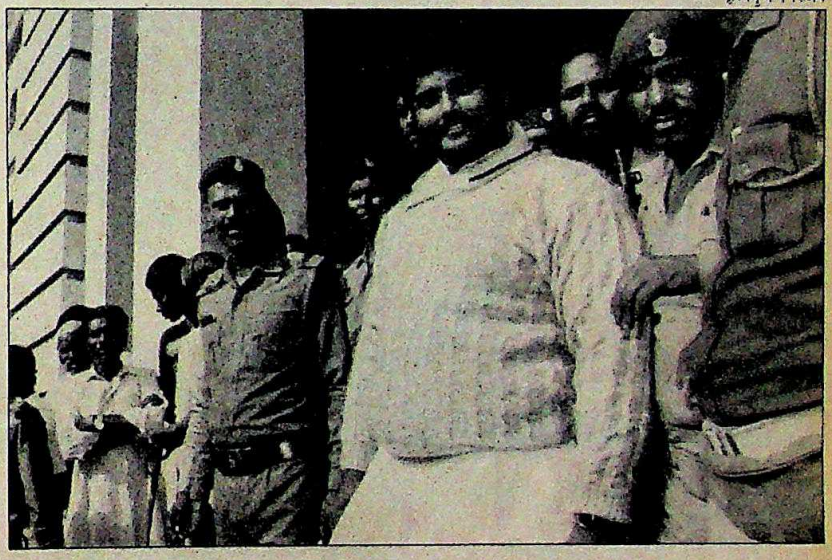

अदालत में ले जाए जाते पप्पू यादवः कानून की गिरफ्त

सरकार की इस नई मुस्तैदी से भी प्रदेश की राजनीति में अपराधियों के असर में कोई कमी नहीं आने वाली है. हाल के उपचुनाव में पटना के आसपास के इलाके के सबसे बड़े अपराधी दुलारचंद यादव से खुले तौर पर रिश्ता रखने के बाद मुख्यमंत्री ने कहा है, "मैं सभी राजनैतिक दलों से अपील करता हूं कि वे सभी अपराधी तत्वों और संदेहास्पद पृष्ठभूमि के लोगों को अपने यहां से हटाएं." पर उनकी बात का किसी पर, खासकर उनकी पार्टी पर, असर होगा इसमें संदेह ही है.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवसेना

नाखून टूटे शेर के

पार्टी में पहली बार विभाजन से अध्यक्ष बाल ठाकरे परेशान

शेर अपनी गुर्राहट मुश्किल से ही रोक पाता है. शिवसेना के 25 साल के इतिहास में पहली बार उसमें बड़ी फूट पड़ते देखकर पार्टी के सर्वेसर्वा बाल ठाकरे का पारा मानो आसमान छूने लगा. बड़े जतन से जिस परिषद में विपक्ष के नेता क्रमशः मनोहर जोशी और प्रमोद नवलकर के साथ तुरत-फुरत बैठकों के बाद उनमें 12 विधायकों ने अपना बयान वापस ले लिया. उनके अधिकांश समर्थक अपने कदम भले ही

भुजबल (बाएं); और ठाकरेः बेकाबू हो गई बगावत

फोटो: हेमंत पिटवा

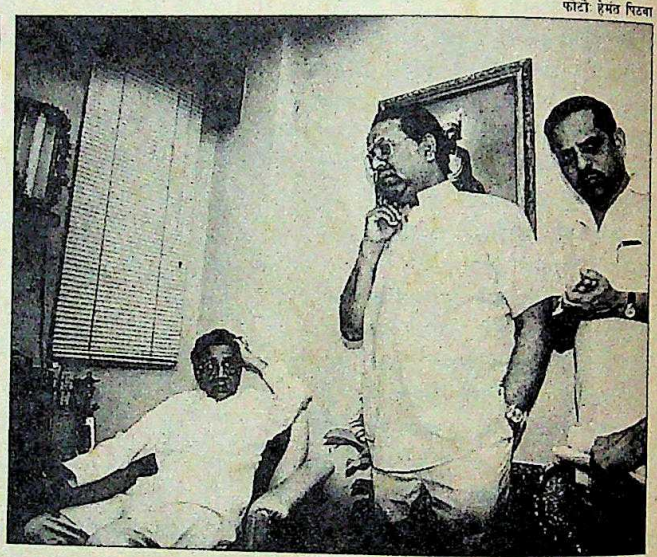

कुनबे को उन्होंने जोड़ा था, वह बिखराव के कगार पर है.

पार्टी को इस कगार पर ढकेलने वाले शख्स हैं—छगन भुजबल. वे पार्टी के 12 नेताओं या अष्टप्रधानों में से हैं. पिछले पखवाड़े मज़गांव के इस विधायक ने नाटकीय ढंग से घोषणा कर दी कि वे शिवसेना से अलग होकर शिवसेना (भु) का गठन कर रहे हैं. यही नहीं, उन्होंने अपने साथ शिवसेना के 52 विधायकों में से 17 को खींच लाने की धमकी भी दी. उन्होंने दरअसल, शीतकालीन सत्र के दौरान विधानसभा अध्यक्ष मधुकरराव चौधरी को एक चिट्ठी भी सौंपी जिसमें पार्टी छोड़ने की घोषणा की गई थी.

उम्मीद के मुताबिक, ठाकरे आगबबूला हो उठे. 24 घंटे के भीतर भुजबल को निष्कासित करके उन्होंने उलटा प्रहार किया. इससे कुछ विद्रोही विधायकों के कदम रुक गए. विधानसभा और विधान

इस विघटन में केंद्रीय रक्षामंत्री शरद पवार का हाथ भी माना जा रहा है. पर अपनी पार्टी में फूट डालने के कांग्रेस के प्रयास को शिवसेना के सर्वेसर्वा बाल ठाकरे पचा नहीं पाए हैं

वापस खींच चुके हैं पर भुजबल का अभी भी दावा है कि उनकी शिवसेना (भु) को 25 विधायकों का समर्थन प्राप्त है. उनके समर्थक विधायक राजेंद्र गोडे कहते हैं, "हम वापस न जाने के अपने फैसले पर आडिग हैं. जो लोग वापस गए हैं, बंदूक और खंजर की नोंक पर ही गए हैं."

यह विवाद का मुद्दा हो सकता है लेकिन पार्टी की छवि को इससे निश्चिय ही क्षति पहुंची है. नवलकर ने कहा भी, "पहले ऐसा कभी नहीं हुआ. फूट अब जगजाहिर हो गई है. इससे मानो झटका लगा हो." मगर यह झटका कुछ अरसे से ठोस रूप ले रहा था. भुजबल और जोशी के बीच बढ़ते मनमुटाव के चलते ही फूट की यह नौबत आई. गोडे कहते भी हैं. "हमारी लड़ाई बालासाहब के साथ नहीं बल्कि शिवसेना को कब्जाए बैठे जोशी और दूसरे लोगों के साथ है." इस साल मार्च से ही भुजबल विधानसभा में विपक्ष के नेता पद की मांग करते आ रहे थे, जो कि फरवरी 1990 में विधानसभा चुनावों के बाद से जोशी के पास है, भुजबल का दावा है, "शरद पवार के साथ सुलह को जोशी हमेशा तत्पर रहते हैं."

बहरहाल, इस विघटन में पवार का हाथ भी माना जा रहा है. विद्रोही विधायक—जिनमें अधिकांश पूर्व कांग्रेसी हैं—पिछले कुछ अरसे से रक्षामंत्री की ओर खिंच रहे थे. पर अपनी पार्टी में फूट डालने के कांग्रेस के प्रयास को ठाकरे पचा नहीं पाए हैं. उन्होंने मुख्यमंत्री सुधाकर नाईक को चेतावनी दी कि पार्टी तोड़ने की कोशिश उलटी पड़ सकती है.

बहरहाल, पिछड़ी माली जाति के भुजबल सेना के निर्विवाद नेता बाल ठाकरे से उस दिन से ही नाराज हैं जब उन्होंने मंडल कमीशन को 'मंडल-बंडल' कहकर रद्द कर दिया था. उन्हें इस तथ्य से बल मिला कि मराठवाड़ा और विदर्भ में पिछड़ी जातियों के समर्थन से सेना को चुनावों में अच्छी सफलता मिली थी. गोडे कहते हैं, "विदर्भ क्षेत्र में शिवसेना के सभी नौ विधायक भुजबल का समर्थन कर रहे हैं." जाहिर है शिवसेना में विद्रोहियों को नकेल डालना उतना आसान नहीं होगा.

—लेखा रत्नाणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

जान सांसत में

तराई में आतंकवादी सक्रिय, पुलिस सुस्त

पिछले पखवाड़े उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में सिख आतंकवादियों के हमले से पूरे राज्य में दहशत फैल गई. एक सप्ताह के अंतराल में उन्होंने पीलीभीत और लखीमपुर खीरी जिलों में 26 लोगों को गोलियों से भून दिया. मगर राज्य पुलिस की ओर से उन्हें कोई चुनौती दिए जाने का संकेत तक नहीं मिला.

यही नहीं, स्थानीय निवासियों के अनुसार, पिछले एक महीने में नैनीताल और पीलीभीत जिलों में एक दर्जन अपहरण हुए लेकिन थाने में किसी की रिपोर्ट नहीं दर्ज कराई गई. लोगों में इतना डर समा गया है कि तराई के पलियां कलां के निवासियों ने सीधे केंद्रीय गृहमंत्री एस.बी. चव्हाण से सुरक्षा मुहैया कराने की अपील की है.

जाहिर है, लोग अब पुलिस को आतंकवादियों के बारे में सूचनाएं देकर अपनी जान खतरे में नहीं डालना चाहते. खास तौर पर सिख, क्योंकि आतंकवादी उन्हें उनकी 'दोहरी वफादारी' के लिए चुन-चुनकर मार रहे हैं. अक्तूबर के आखिर में प्रभावशाली स्थानीय नेता जोगा सिंह और पिछले दो महीने में अलग-अलग घटनाओं में 11 दूसरे सिखों की हत्या निश्चित रूप से यही साबित करती है.

तराई क्षेत्र में बब्बर खालसा के घुस जाने से स्थानीय पुलिस की नींद हराम हो गई है. इस गुट ने 1 दिसंबर को हजारा में एक ताकतवर रिमोट कंट्रोल विस्फोटक यंत्र से तीन पुलिसवाले मार डाले और फिर 5 दिसंबर को पीलीभीत के नेवरिया में कम-से-कम 1,000 चक्र गोलियां चलाकर सात लोगों को मार डाला. प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार आतंकवादी एक घंटे तक गोलियां चलाते रहे लेकिन पास की तीन पुलिस चौकियों के कान पर जूं तक नहीं रेंगी.

समस्या यह भी है कि तराई क्षेत्र में पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था में बहुत खामियां हैं. यात्री तो राम भरोसे ही यात्रा करते हैं. आतंकवादियों ने इन खामियों का लाभ उठाते हुए 6 दिसंबर को खीरी-भीरा राजमार्ग पर एक मारुति कार और एक ट्रक को रोककर दस लोगों को गोलियों से भून दिया. पिछले महीने आतंकवादियों ने क्षेत्र के सात जिलों में 15 हमले किए लेकिन पुलिस ने एक बार भी मोर्चा नहीं लिया. स्थानीय प्रशासन आतंकवादियों की कार्रवाइयों के बारे में इतना अनिश्चित है कि उसने राजमार्गों और जंगलों से दिन की गश्त भी हटा ली लगती है. पीलीभीत के पत्रकार शकीलुर रहमान शम्सी कहते हैं, "आजकल पुलिस तो आतंकवादी हमले के बाद ही सड़क पर दिखाई पड़ती है." पर पुलिस महानिदेशक प्रकाश सिंह बचाव में कहते हैं, "मूलतः आतंकवाद हमारी समस्या नहीं है. लेकिन हमारे जवान अब चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं."

मुख्यमंत्री कल्याण सिंह आतंकवादियों के बढ़ते हुए खतरे के लिए 'पिछली सरकारों' को दोषी ठहराते हैं. लेकिन हकीकत यह है कि इस साल आतंकवाद के शिकार 206 लोगों में से 169 भाजपा सरकार के अब तक के पांच महीने के शासनकाल में ही मारे गए हैं. इंका नेता नारायणदत्त तिवारी कहते हैं, "राम जन्मभूमि मुद्दे से संबंधित विवाद उछालने की जगह राज्य सरकार को आतंकवाद जैसे गंभीर मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए."

पिछले दो महीनों में इस मामले को लेकर मुख्यमंत्री कई बैठकें कर चुके हैं लेकिन अभी कोई ठोस रणनीति नहीं बन पाई है. राज्य सरकार अपने कुछ करने की जगह केंद्र से अर्द्धसैनिक सुरक्षा की मांग करके सारी जिम्मेदारी उसी पर थोपने की कोशिश कर रही है. भाजपा महासचिव राजनाथ सिंह कहते हैं, "यदि हमें केंद्र से समय पर सहायता मिले तो हम आतंकवाद से कारगर तरीके से निबट सकते हैं." लालकृष्ण आडवाणी ने भी गृहमंत्री के साथ मुलाकात के दौरान कहा, "आतंकवाद विरोधी अभियान चलाने के लिए बार-बार केंद्रीय मदद की मांग की गई है लेकिन अभी तक कुछ नहीं हुआ है." कल्याण सिंह इस मांग को मनवाने के लिए 5 और 6 दिसंबर को दिल्ली में डेरा डाले रहे. लेकिन केंद्र की इंका सरकार फिलहाल उत्तर प्रदेश सरकार को अपने हाल पर छोड़ने को ही उत्सुक दिखती है.

—दिलीप अवस्थी

आर के. गुप्ता

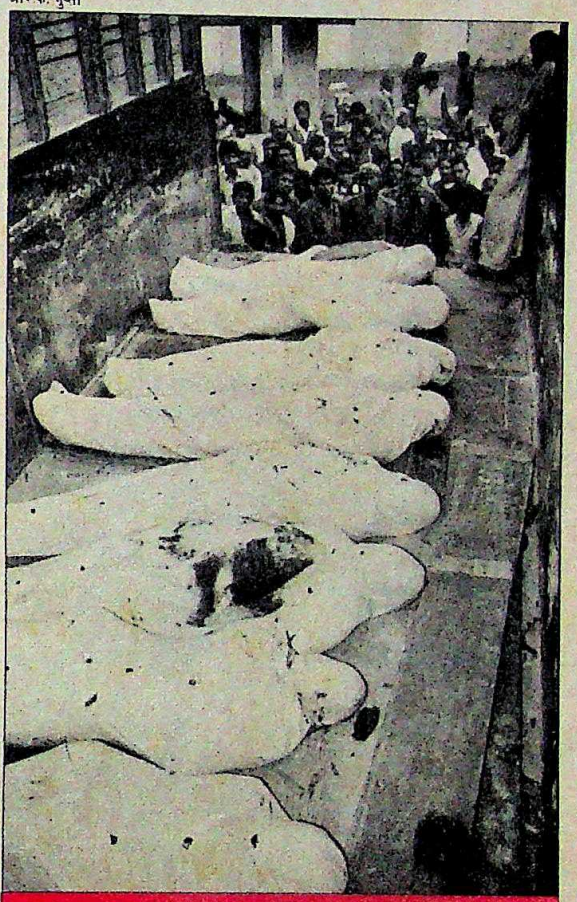

लखीमपुर खीरी में आतंकवादियों के शिकार

अनेक बैठकें करने के बावजूद भाजपा सरकार कोई रणनीति नहीं खोज पाई है. उलटे वह केंद्र पर दोष डालकर जिम्मेवारी से बचने की फिराक में है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा

धरी रह गई सारी चौकसी

राज्य पुलिस की साख को धक्का

पंजाब की सीमा से मात्र दो किलोमीटर दूर बसे हरियाणा के टोहाना कस्बे के लिए 5 दिसंबर का दिन बहुत मनहूस साबित हुआ. चार हथियारबंद आतंकवादियों ने दिन-दहाड़े 26 लोगों को मार डाला.

मौत का यह खेल शाम लगभग पांच बजे स्थानीय नेहरू मार्किट से शुरू होकर आधे घंटे बाद तीन किलोमीटर दूर कस्बे के दूसरे कोने में स्थित हरियाणा कॉटन मिल में समाप्त हुआ. मारुति कार में आए चार आतंकवादियों में से तीन ने कम-से-कम छह स्थानों पर कार से बाहर निकलकर फायरिंग की और गलियों तथा दुकानों के भीतर जाकर लोगों को मारा.

हत्याकांड का सबसे बड़ा निशाना कॉटन मिल बनी जहां आतंकवादियों ने अंदर घुसकर चार कर्मचारियों को मार डाला. पंजाब में आतंकवाद से डरकर टोहाना चले आए रामदयाल ने अभी एक सप्ताह पहले ही यह मिल खोली थी. मरने वालों में उनका पुत्र अशोक कुमार भी था जिसे मंडी के भीतर आतंकवादियों ने उस समय मारा जब वह लोगों को चौकस करता हुआ अपने स्कूटर पर जा रहा था.

इस कांड में पुलिस की भूमिका पर नागरिकों में भारी रोष है. हत्याकांड के चश्मदीद गवाहों ने 'इंडिया टुडे' को बताया कि पांच मिनट के भीतर सूचना मिलने के बावजूद पुलिस ने वहां पहुंचने में पंद्रह-बीस मिनट लगा दिए. उसके बाद पुलिसवाले तमाशा ही देखते रहे. स्थानीय स्वयंसेवी संगठन मानव सेवा संगम के अध्यक्ष, वर्षीय शशिभूषण बताते हैं, "कम-से-कम पंद्रह मिनट तक पुलिस की जीप आतंकवादियों की कार के पीछे सौ मीटर से भी कम दूरी पर चलती रही. पुलिस थोड़ा-सा साहस दिखाती तो आखिरी पंद्रह मिनट में मारे गए कम-से-कम बारह लोगों की जान बच जाती."

मंडी के सामने कीटनाशक दवाओं के व्यापारी सत्यनारायण ने बरसती गोलियों के बीच भागकर अपनी जान बचाई. वे बताते हैं, "मैं भागकर पड़ोस की धर्मशाला में जा घुसा जहां कमांडो फोर्स के कई जवान रहते हैं. लेकिन आतंकवादियों का मुकाबला करने के बदले उनका टका-सा यही जवाब था कि असले वाले बक्से की चाबी जिस जवान के पास है, वह बास्केटबॉल खेलने गया है."

लोगों को गुस्सा निकालने का पहला मौका अगली सुबह मिला जब विशाल पुलिस दल-बल के साथ आए मुख्यमंत्री भजनलाल स्थानीय अस्पताल में घायलों को देखने आए. गुस्से भरी नारेबाजी और पत्थरों की बौछार से बचने के लिए उन्हें अपनी कार में शरण लेनी पड़ी. बाद में स्थानीय डीएसपी और थानेदार का तबादला कर दिया गया और जीप में सवार सहायक सब-इंस्पेक्टर को मुअत्तल कर दिया गया. मात्र तीन दिन के भीतर हरियाणा पुलिस ने एक मुठभेड़ में हत्याकांड में शामिल पांच आतंकवादियों को मार गिराने का दावा किया.

टोहाना को निशाना बनाने के पीछे आतंकवादियों का असली मकसद अपनी मौजूदगी दर्ज कराना ही था. पंजाब में सैनिक अभियान 'रक्षक--2' ने उनकी गतिविधियों को ठप कर दिया है. हरियाणा पुलिस के अधिकारियों की मान्यता है कि सेना को पहले यह सुनिश्चित करना चाहिए था कि आतंकवादी हथियारों के साथ राज्य से बाहर न भाग सकें. पिछले पखवाड़े ऐसे आतंकवादियों की धरपकड़ में जुटे पुलिस अधिकारियों को आशंका है कि पंजाब से करीब 200 आतंकवादी भागकर हरियाणा के निकटवर्ती क्षेत्रों में आ छिपे हैं.

हिसार क्षेत्र के पुलिस अधीक्षक हरीश कुमार बताते हैं कि पंजाब सीमा के साथ-साथ चलने वाली भाखड़ा नहर के रास्तों को सील कर दिया गया है. पुलिस चौकियों को बंदूकों के अलावा अब लाइट मशीनगनें भी जारी कर दी गई हैं. लेकिन यह तय है कि टोहाना में खोई अपनी साख को बहाल करने और नागरिकों में सुरक्षा का विश्वास पैदा करने के लिए अब हरियाणा पुलिस को पहले से कहीं ज्यादा चौकस रहना होगा.

—**विजय क्रान्ति**, टोहाना और हिसार में

अगर पुलिस थोड़ा भी साहस दिखाती तो कई लोगों की जान बच जाती लेकिन वह तमाशबीन बनी रही. पुलिस के इस रवैये से उपजे जन आक्रोश की चपेट में मुख्यमंत्री भजनलाल भी आ गए

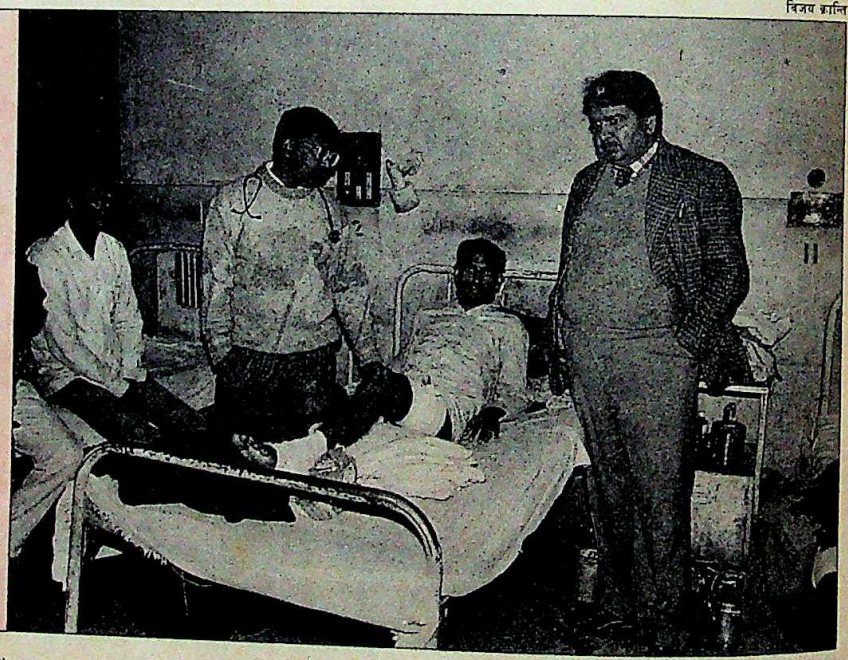

विजय क्रान्ति

टोहाना अस्पताल में एक घायल: आतंकवाद की मार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकता यात्रा

फीकी शुरुआत

अभियान को औसत जन समर्थन

जितना इसे प्रचारित किया गया था, उसकी तुलना में 'एकता यात्रा' को औसत जन समर्थन ही मिला. भाजपा के दिग्गज नेताओं और महज 5,000 दर्शकों की मौजूदगी में पार्टी अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी कन्याकुमारी के समुद्रतट से श्रीनगर तक की 46 दिन की यात्रा पर निकल पड़े. पर यात्रा की शुरुआत में वह गरमी नहीं थी जो इस मुद्दे के कारण नई दिल्ली में पैदा हो रही थी.

पिछले पखवाड़े सर्वदलीय बैठक में देश की सांप्रदायिक स्थिति पर इस यात्रा के प्रभाव की चिंता व्यक्त किए जाने के साथ-साथ प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंह राव बड़ी सावधानी से कदम उठा रहे हैं.

कन्याकुमारी में जोशीः विवाद में

यात्रा रद्द करने के लिए उन्होंने भाजपा को जो सलाह दी, वह मानी नहीं गई. आडवाणी का तर्क था, "इसके लिए बहुत देर हो चुकी है." बाद में आडवाणी ने संवाददाताओं को बताया कि भाजपा को अलग-थलग रखने की कोशिश की जा रही है लेकिन पार्टी इसका विरोध करेगी.

खुफिया एजेंसियों ने गृह मंत्रालय को संभावित तनाव की चेतावनी दे रखी है. लेकिन प्रधानमंत्री दुविधा में हैं. देश की अखंडता बनाए रखने के जाहिरा उद्देश्य वाली यात्रा को यदि वे रुकवाते हैं तो भाजपा देशव्यापी अभियान छेड़कर सरकार पर अलगाववाद के प्रति नरम रवैया अपनाने का आरोप लगाएगी. और यदि वे इसे नहीं रोकते तो इंका के भीतर उनके प्रतिद्वंद्वी—अर्जुन सिंह और शरद पवार—उन्हें सांप्रदायिकता के प्रति नरम रवैया रखने वाला करार देंगे.

फिलहाल सरकार ने फैसला किया है कि जम्मू तक तो यात्रा जाने दी जाए. जोशी की डीसीएम टोयोटा वैन ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रही है, पार्टी का खयाल है कि त्यों-त्यों इसका भाग्य भी बदलता जाएगा.

—आनंद विश्वनाथन, कन्याकुमारी में

PHILIPS

एक उपाय जो वी.सी.आर.का 'हेड' बचाए

फ़िलिप्स वीडियो हेड क्लीनर. अत्यन्त तेज़ असरकारक, पुर्ज़ों को नुकसान न पहुँचाने वाला द्रव. मैग्नेटिक टेप के कारण आपके वी सी आर या वी सी पी के हेड पर जमा होने वाले हानिकारक ऑक्साइड, धूल-गंदगी को प्रभावशाली ढंग से हटाने का सर्वोत्तम तरीका यही है. यह धातु व प्लास्टिक के पुर्ज़ों को ज़रा भी नुकसान नहीं पहुँचाता - अंतर्राष्ट्रीय फ़ार्मूले से तैयार एकमात्र वीडियो हेड क्लीनर. सर्वोत्तम परिणामों के लिए हफ़्ते में एक बार ज़रूर इस्तेमाल करें. जब आपके वी सी आर के हेड व अन्य प्लास्टिक पुर्ज़ों को नुकसान का जोखिम हो तो भला घटिया ब्रांडों को क्यों आज़माया जाए?

PHILIPS
AUDIO-VIDEO HEAD CLEANER
ACCESSORIES

क्योंकि 'हेड' बदलने से 'हेड' बचाना है आसान.

CLARION/B/P/441/124 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली

दर्जे के दर्द को मलहम

केंद्र का आठ महीने के अंदर विधानसभा देने का वादा

दिल्ली में चुनाव कराने की राह में अड़चनें ही अड़चनें आ रही हैं. पिछले पखवाड़े केंद्रीय गृहमंत्री शंकर राव चव्हाण ने दिल्ली को 35 साल बाद अंततः विधानसभा देने और आठ महीने के भीतर चुनाव कराने की घोषणा संसद में भले ही की लेकिन लगता नहीं कि इतने से ही इंका का संकट खत्म हो जाएगा.

अरसे से दिल्ली को राज्य का दर्जा दिलाने की मुहिम चला रही भारतीय जनता पार्टी तो खास तौर पर इतने से संतुष्ट नहीं होगी. हालांकि सत्ताधारी दल होने के नाते इंका इस मामले में भाजपा की पहल छीनकर खुश तो है पर इसके लिए उसे एड़ी-चोटी का पसीना एक करना होगा. दिल्ली के भाजपा सांसद मदनलाल खुराना और पार्टी के दूसरे नेताओं ने इस कदम का स्वागत तो किया है लेकिन वे सरकार से ठोस बातें तय करने की मांग कर रहे हैं. वैसे, भाजपा के दबाव के बिना यह घोषणा भी शायद संभव नहीं हो पाती.

विपक्षी दलों ने जैसे ही जाना कि इंका स्थानीय निकायों का चुनाव फिर टालने के लिए अधिसूचना जारी करने जा रही है, तो उन्होंने केंद्र सरकार से इन चुनावों को तुरंत कराए जाने की मांग की. भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी ने कहा, "चुनावों को और टालना लोकतांत्रिक परंपरा के प्रतिकूल होगा." दरअसल भाजपा इस मामले को जनहित का मामला बताकर संसद में काम रोको प्रस्ताव लाने पर विचार कर रही थी.

जब चव्हाण को एहसास हुआ कि इससे वे मुश्किल में पड़ सकते हैं तो उन्होंने विपक्ष को बातचीत के लिए आमंत्रित किया. नतीजा यह हुआ कि सरकार ने घोषणा तो कर ही देने का फैसला किया. संसद में चव्हाण ने जिस सावधानी से बयान दिया उससे ही लग जाता है कि सरकार को दिल्ली में विधानसभा स्थापित करने के लिए संविधान संशोधन विधेयक लाने में खासी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा. चव्हाण ने कहा, "अगर संभव हुआ तो हम दिल्ली के लिए नई सरकार का विधेयक संसद के इसी सत्र में लाएंगे और उसे पारित भी करवा ही लेंगे."

(ऊपर से) मदनलाल खुराना; एस.बी. चव्हाण; जगप्रवेश चंद्र

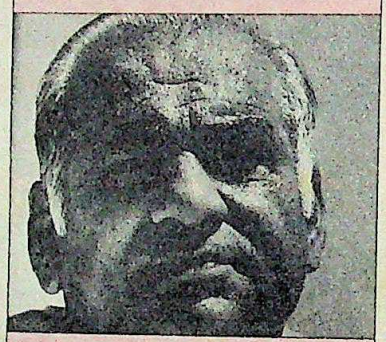

विधानसभा देने की घोषणा का भाजपा ने स्वागत किया मगर निकायों के चुनाव कराने की मांग की

चव्हाण को एहसास है कि 'अगर संभव हुआ' का मतलब असंभव भी हो सकता है. वैसे, भाजपा चाहे तो विधेयक पारित हो सकता है. और दिल्ली में चुनाव हुए तो उसकी स्थिति इंका से बेहतर रह सकती है. परंतु भाजपा चाहती है कि दिल्ली के मंत्रिमंडल को कानून-व्यवस्था, स्थानीय निकाय और वित्त सारे अधिकार दिए जाएं. लेकिन केंद्र सरकारिया आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक ये तीन विभाग हाथ से जाने देना नहीं चाहता. दिल्ली के पूर्व मुख्य कार्यकारी पार्षद जगप्रवेश चंद्र कहते हैं, "केंद्र दिल्ली पर नई दिल्ली से शासन चलाना चाहता है. चुनाव तो कब के हो जाने चाहिए थे."

चुनाव कराने के पहले केंद्र को राजधानी में क्षेत्रों के सीमा निर्धारण की कठिन समस्या से भी जूझना पड़ेगा. चव्हाण भी इस बात को मानते हैं. वैसे, यह विवाद तो पहले से ही चला आ रहा है कि क्षेत्र निर्धारण का आधार 1991 की जनगणना हो या दिल्ली की सभी सात संसदीय सीटों में बराबर-बराबर विधानसभा क्षेत्र हों.

दिल्ली को विधानसभाओं की सूची में लाने के लिए संविधान की धारा 239 (ब) में संशोधन करना पड़ेगा. और संशोधन के लिए केंद्र को दो-तिहाई बहुमत चाहिए. पहले से ही अल्पमत में होने के कारण केंद्र की इंका सरकार को इतना भारी बहुमत तभी मिल पाएगा जब सरकार भाजपा के कहे अनुसार चलती रहे.

इंका को इस बात का एहसास था. सो, भाजपा को खुश करने के लिए चव्हाण ने पहले भाजपा सांसदों के साथ बैठक की और उन्हें राजी कर लिया. इसके बाद उन्होंने अन्य विपक्षी दलों को विचार-विमर्श के लिए आमंत्रित किया. इस बैठक में आडवाणी से भी उपस्थित होने का आग्रह किया गया. लेकिन भाजपा ने भांप लिया कि केंद्र से फायदा निचोड़ लेने का यही उपयुक्त समय है. इसलिए आडवाणी बैठक में आने के लिए इस शर्त पर राजी हुए कि केंद्र सरकार छह माह में चुनाव कराने के अपने वादे से नहीं मुकरेगी.

बहरहाल, अगर सरकार भाजपा से किए गए अपने वादों पर टिकी रहती है तो संसद के इसी सत्र में विधेयक पारित हो सकता है. या पता नहीं दिल्ली के लोगों को अपनी विधायिका के लिए अभी और इंतजार करना पड़े.

—हरिंदर बवेजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कावेरी जल विवाद

खतरे का निशान पार

दोनों मुख्यमंत्री इस विवाद से लाभ उठाने की फिराक में

कावेरी जल विवाद खतरे का निशान पार करता लग रहा है और उसके राजनैतिक परिणाम से इसके तटबंध टूटने का खतरा पैदा हो गया है. पिछले पखवाड़े कर्नाटक और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री नई दिल्ली पधारे तो बातचीत का प्रत्यक्ष मुद्दा जल विवाद ही था. लेकिन नेपथ्य में राजनैतिक चालें चली जाती रहीं. जयललिता और एस. बंगारप्पा दोनों ने ही एक-दूसरे को पटखनी देने की कोशिश की.

राज्य में पार्टी की भीतरी कलह से परेशान बंगारप्पा 100 सदस्यों वाले सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के साथ प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव से मिले. उनका मकसद प्रदेश इंका असंतुष्टों की धार को कुंद करना था जिनका उत्साह जून में लाए गए उनके अध्यादेश को निरस्त करने के सुप्रीम कोर्ट फैसले से बढ़ा है. और 11 दिसंबर को जब केंद्र ने संसद को सूचित किया कि कावेरी पंचाट के अंतरिम आदेश को अधिसूचित कर दिया गया है तो विरोध की बाढ़ उमड़ती दिखी. इस तरह केंद्र ने कर्नाटक को 205 अरब घन फूट पानी तमिलनाडु और पांडिचेरी के लिए जारी करने का निर्देश दिया है. इसकी खबर आते ही कावेरी घाटी में कई जगहों पर स्वतःस्फूर्त विरोध प्रदर्शन और मैसूर में बंद से भी गुस्सा बढ़ने का संकेत मिला है.

असल में नरसिंह राव पर अंतरिम आदेश को अधिसूचित न करने के लिए दबाव डालकर बंगारप्पा पार्टी में असंतोष को काबू करना चाहते थे. उन्होंने दिल्ली के कर्नाटक भवन में अपने समर्थकों को प्रेस के सामने प्रस्तुत करके प्रधानमंत्री को स्पष्ट संकेत भी दिया. वह यह कि उनसे सत्ता छीनी गई तो उनकी शामत आ सकती है. असंतुष्ट इंकाई सांसद एच. हनुमंतप्पा मानते हैं, "बंगारप्पा अभी हटाए गए तो शहीद बन जाएंगे." लेकिन रेलमंत्री सी.के. जाफर शरीफ और मानव संसाधन राज्यमंत्री मार्गरेट अल्वा ने राज्य के 26 सांसदों के प्रतिनिधिमंडल के साथ नरसिंह राव से अलग से भेंट करके अपना सिक्का जमा दिया. बंगारप्पा तो सात सांसदों और तीन केंद्रीय मंत्रियों को ही अपने पक्ष में जुटा सके.

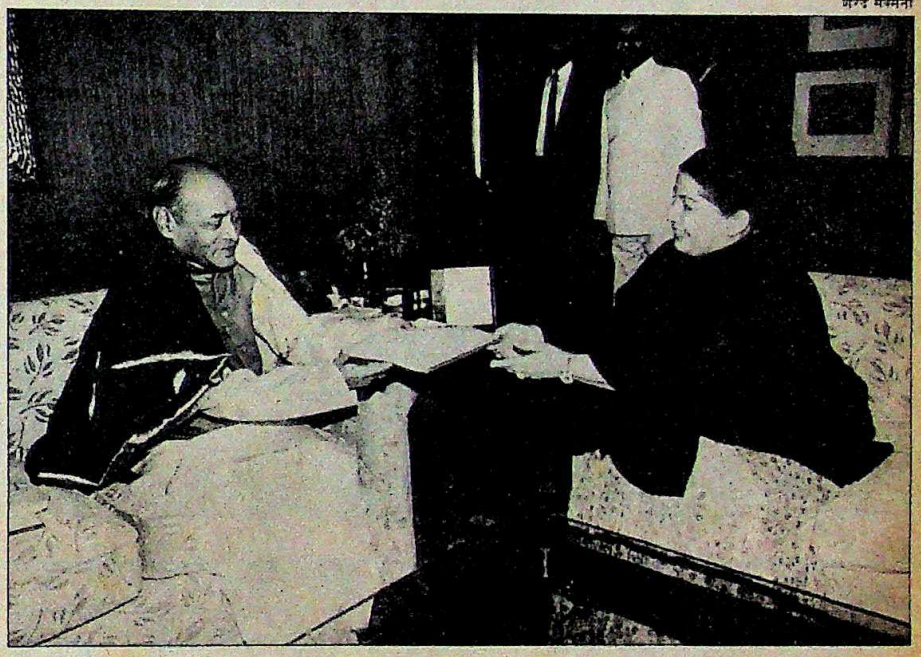

शरद सक्सेना

राव के साथ जयललिता: लेन-देन

बंगारप्पा को राज्य के ग्रामीण विकासमंत्री के.एच. पाटील का खुला विरोध भी झेलना पड़ा. पाटील ने कहा, "बंगारप्पा के नेतृत्व में राज्य के हितों की रक्षा नहीं की जा सकती." बंगारप्पा सिर्फ यही कर पाए कि नरसिंह राव से उनकी शिकायत करके उन्हें हटाने की अनुमति मांगी. पर राव ने इनकार कर दिया. यही नहीं, उनके वरिष्ठ सहयोगी, शिक्षामंत्री एम. वीरप्पा मोइली ने भी असंतुष्टों के साथ बैठक की, हालांकि वे किसी षड्यंत्र में शामिल होने से इनकार करते हैं.

इसके विपरीत तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता जयराम ने चुपचाप सब निबटा लिया. उन्होंने प्रधानमंत्री में पूरा भरोसा जताया और जल विवाद का निबटारा उन्हीं पर छोड़ दिया. प्रधानमंत्री से 45 मिनट की बातचीत में उन्होंने कावेरी विवाद के बजाए राज्य की राजनीति और अपनी निजी चिंताओं पर ही चर्चा की. इस तरह वे प्रधानमंत्री से कई वादे करवाने में सफल रहीं.

वे अपने लिए राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड की सुरक्षा जारी रखवाना चाहती थीं. नरसिंह राव ने इस शर्त पर अपनी रजामंदी दे दी कि वे द्रमुक नेता के. करुणानिधि की गिरफ्तारी में जल्दबाजी नहीं दिखाएंगी. जयललिता राज्य में इंका की जोड़तोड़ पर रोक और सार्वजनिक वितरण के लिए केंद्र से मुहैया कराए जाने वाले चावल में एक लाख टन की बढ़ोतरी भी चाहती थीं. उनके सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल में केंद्रीय मंत्री पी. चिदंबरम के शामिल रहने और अन्ना द्रमुक के 11 सांसद मुट्ठी में होने के बावजूद उनके दिमाग में केंद्र से टकराव की बात दूर तक भी नहीं लगती.

जयललिता के लिए ऐसी बेहतर स्थिति पहले कभी नहीं थी. लेकिन बंगारप्पा तो पानी गंवा ही चुके हैं, शायद अपने को बनाए रखने की जंग भी हार चुके हैं. दिल्ली में उनके विरोधी अब कहते हैं कि वे केंद्र के लिए समस्या बनने की कोशिश करेंगे. इंका के असंतुष्ट तो अब 'कर्नाटक के हितों की रक्षा में नाकामी' के चलते उनसे गद्दी छोड़ने की मांग करेंगे ही. मुख्यमंत्री क्या चाल चलेंगे, यह जानना तो मुश्किल है पर अफवाह यह है कि वे इंका छोड़कर क्षेत्रीय पार्टी बनाएंगे और राज्य की अन्य क्षेत्रीय पार्टियों से तालमेल करके सत्ता में बने रहने की कोशिश करेंगे.

—जफर आगा और सरिता रॉय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनद रहे

अस्पताल में : प्रख्यात फिल्म अभिनेता **दिलीप कुमार** को मुंबई के अस्पताल में भरती होना पड़ा. आर. के. स्टुडियो में फिल्म 'कलिंग' की शूटिंग के दौरान उन्हें बेचैनी महसूस हुई थी. इस फिल्म में वे पहली बार निर्देशन कर रहे हैं. उन्हें सप्ताह भर आराम करने को कहा गया है. दिलीप की यादगार फिल्में हैं 'मुगले आज़म', 'अंदाज', 'शक्ति' और 'सौदागर'.

मामला खुलेगा: लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा में **भाजपा द्वारा चुनाव चिह्न के कथित दुरुपयोग** की सुनवाई चुनाव आयोग ने 7 जनवरी 1992 से करना तय किया है.

निधन: डॉ. वी.एम. घाटगे का बंगलूर में निधन हो गया. वे 82 वर्ष के थे. पद्मश्री से सम्मानित घाटगे ने फ्लाइंग क्लबों द्वारा इस्तेमाल के लिए प्रशिक्षण विमान एचटी 2 और वायुसेना के प्रशिक्षण विमान एचजेडी 16 का डिजाइन तैयार करने में मदद की.

बढ़ोतरी: विदेशियों को **ताजमहल** में प्रवेश पाने के लिए अब ज्यादा प्रवेश शुल्क देना पड़ेगा. विश्व का आठवां आश्चर्य माने जाने वाली इस ऐतिहासिक धरोहर को और आगरा किला को देखने के लिए उन्हें अब दस डॉलर मूल्य के बराबर प्रवेश शुल्क का भुगतान करना पड़ेगा. मगर जहां तक भारतीय पर्यटकों का सवाल है उनके लिए प्रवेश शुल्क पहले की तरह दो रुपए ही रहेगा.

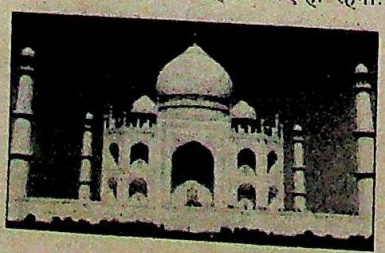

हजार दिन पूरे: प्रख्यात लेखक **सलमान रुश्दी** ने भूमिगत जीवन के एक हजार दिन पूरे कर लिए. ईरान के अयातुल्ला खुमैनी द्वारा हत्या का फतवा जारी किए जाने के बाद से भारतीय मूल के ये ब्रिटिश लेखक ब्रिटेन में भूमिगत हैं. उनके खिलाफ यह फतवा उनकी विवादास्पद पुस्तक 'द सैटैनिक वर्सेज' के प्रकाशन के बाद जारी किया गया था.

जारी : संचार उपमंत्री पी.वी. रंगैया नायडु ने प्रख्यात संगीतकार **वल्फगैंग अमाडियस मोजार्ट** की 200वीं पुण्य तिथि पर उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया. यह टिकट नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में जारी किया गया. यह टिकट 6.50 रु. का होगा. ऑस्ट्रियाई संगीतकार मोजार्ट को 'द मैजिक फ्लयूट' और 'द मैरेज ऑफ फिगारो' शीर्षक धुनों के लिए याद किया जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

याद है वह टांगे की पहली सवारी
जब बच्ची की भांति तुम थीं चिल्लाई.
मैं भी तो यूं सहम गया था
और तुम भी कैसी घबराई हुई.
आज हम कहां से कहां आ गये...
और अपनों में कैसे छा गये.
भूलकर उस गाँव को, वक्त के साथ चलते गये
जीवन के कुछ मोड़ पर लगता है हरदम
जैसे सफलता चूमती रहती है कदम.

IYARAM SUITINGS

COME HOME TO

THE PREMIUM SUITING BLENDS

Siyaram's

® Regd. Trade Mark of Siyaram Silk Mills Ltd., Bombay-11.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

PERCEPT

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Only the Very

1992 INDIA TODAY DIARIES

COMPANION
Code: 102

YEAR BOOK
Code : 101

POCKET DIARY
Code : 104

SLIMLINE DIARY
Code : 103

The 1992 India Today Diary set expresses an elegance associated with people who demand the very best. Attractively produced, each diary is characterised by gold leaf embossing, gilt edged pages and handy ribbon markers.* Adding style to substance – an excellence that comes with a distinct personality.

*** Except for Pocket Diary.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ry Best for you

dia Today arbook 1992

effective time manager, the dia Today Yearbook is much re than just a desk diary. It is a efully selected compendium of rmation compiled in sections. diary section is laid out in an y-to-read format.

mpanion

new Companion diary is fect for either carrying in your fcase or for use as a desk ry. It has Airline Maps, City ides, ISD/STD Codes, ernational me ... and more.

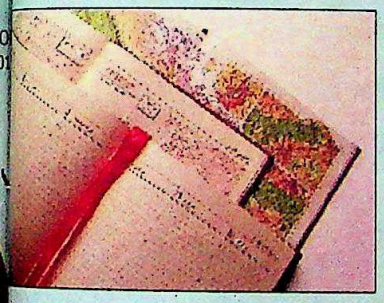

YEAR BOO
Code : 101

imline and Pocket Diaries

mpact and convenient, these aries are designed to carry all e information you need on your person. Its pages are packed with important features, including sections on hotels and essential ISD/STD codes.

Personalise these elegant diaries

Whether you order the diaries as a set or as singles. For yourself or as a gift for someone, personalise them with gold leaf embossing of upto three initials or company logo at a nominal charge.

The richness of leather. Discover its elegance. Limited Edition Premium Diaries

The 1992 India Today Diary set also comes in premium rich brown leather. Each diary is meticulously hand crafted and impeccably finished. A handsome leather book-mark accompanies the Yearbook.

POCKET DIARY
Code : 204

COMPANION
Code : 202

YEAR BOOK
Code : 201

SLIMLINE DIARY
Code : 203

Take your selection and send in your order today.

ORDER FORM 1992

Product Code	Product Details	Size	Price (Rs)	Quantity Ordered	Total Amount (Rs)
101	India Today Yearbook 1992 (Regular)	20.9 x 27.9 cm	295	.....	.....
102	India Today Companion (Regular)	12.7 x 19.1 cm	150	.....	.....
103	India Today Slimline Diary (Regular)	8.2 x 17.1 cm	75	.....	.....
104	India Today Pocket Diary (Regular)	7.6 x 12.0 cm	49	.....	.....
201	India Today Yearbook 1992 (Leather)	20.9 x 27.9 cm	550	.....	.....
202	India Today Companion (Leather)	12.7 x 19.1 cm	270	.....	.....
203	India Today Slimline Diary (Leather)	8.2 x 17.1 cm	165	.....	.....
204	India Today Pocket Diary (Leather)	7.6 x 12.0 cm	115	.....	.....

Total Rs .....
Extra for gold embossing of initials @ Rs. 10/- per diary (maximum three initials) Rs .....
Company logo embossing (not exceeding 6 Sq. Cms.) @ Rs. 10/- per diary Rs .....
Add Rs. 15 for non Delhi cheques. Rs .....
and Total Rs .....

Enclosed is my crossed Cheque/DD No ..... dated ..... for Rs. ..... (add Rs. 15 for non Delhi cheques), payable to Living Media India Ltd.

Name : _____

Address : _____

_____ Pin _____

An ideal gift for the New Year

Please note :

- Cheques/drafts payable at Bombay, Madras, Calcutta and Delhi must be MICR only.
- Diaries will be home delivered by Registered Post/ Courier. Please allow 6-8 weeks lead-time towards processing.
- For gift instructions, please give recipient's name and address alongwith details for embossing initials on a separate sheet.
- Minimum order for gold embossing company logo is 25 diaries. Logo artwork or positive to be supplied.
- If the order form has been used, mail your order alongwith remittance to Living Media India Ltd.
- **Offer and rates valid in India only.**

Remittance should be drawn in favour of Living Media India Ltd. and mailed alongwith your name, address and the completed order form to Living Media India Ltd., P B No. 28, New Delhi 110 001.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Distributors interested in dealership, please write to Living Media India Ltd.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे सारे डाई एक तरफ,

गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई दूसरी तरफ...

फिर भी,

गोदरेज हेयर डाई इस्तेमाल करने वाले ज़्यादा ही होंगे!

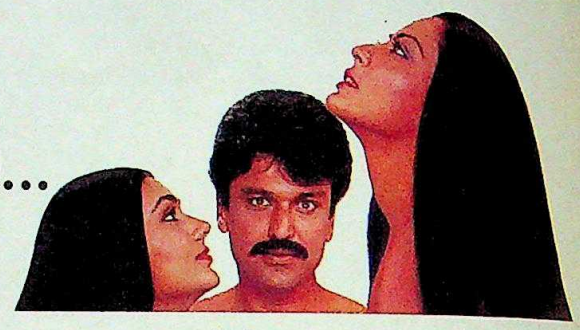

इन ३ ख़ास कारणों से:

१ *गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई बालों को क़ुदरती रंग और छवि देता है. इसमें कन्डीशनर भी है जो बालों को नर्म-मुलायम बनाए रखता है.* ***बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएँ.***

२ *गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं.*

जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितना.

३ *आप गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई की क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं. क्योंकि यह खास तौर से आपके बालों के लिए बनाया गया है.* ***क्वॉलिटी जिसपर आप भरोसा करें. यही गोदरेज का वादा है.***

Godrej शैम्पू-आधारित हेयर डाई

दो रंगों में उपलब्ध: क़ुदरती काला और गहरा भूरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CLARION/B/GS/130/275 HIN R

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दत्ता सामंत

सुर्खियों से हाशिये की ओर

चुनावी में करारी हार और कपड़ा मिल हड़ताल की विफलता के बाद अब विश्वसनीय सहयोगी के भी साथ छोड़ देने से धाकड़ मजदूर नेता मुश्किल में पड़े

—एम. रहमान

सजी-संवरी दाढ़ी और लंबी नाक वाले तुकाराम एस. बोराडे हिंदी फिल्मों के चरित्र अभिनेता सरीखे लगते हैं. लेकिन मजदूर संगठनों की विशाल सल्तनत को अपनी गिरफ्त में रखने के लिए जूझ रहे नामी मजदूर नेता दत्ता सामंत के लिए वे फैक्टरी गेट पर खड़े खलनायक से कम नहीं. धाकड़ मजदूर नेता के रूप में विख्यात रहे सामंत जहां अपने हाथ से फिसलते कैरियर को बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, वहीं लंबे अरसे तक उनके सहयोगी रहे बोराडे मजदूरों को अपने पूर्व बॉस के खिलाफ संगठित कर रहे हैं. बोराडे मजदूरों को ऐसे इनसान की 'हेकड़ी और तानाशाही' बर्दाश्त न करने को कह रहे हैं, जिसे अभी हाल तक मजदूर वर्ग का मसीहा माना जाता रहा है.

दो दशक से भी ज्यादा समय तक सामंत के सहयोगी रहे बोराडे ऐसे समय उन्हें छोड़ रहे हैं, जब उनके सितारे वैसे ही गर्दिश में हैं. अभी जून में ही सामंत को मुंबई दक्षिण-मध्य लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से करारी हार का मुंह देखना पड़ा था. 80 वाले दशक के शुरू में कपड़ा मिल मजदूरों की हड़ताल से सुर्खियों में आए दत्ता सामंत का कैरियर फिर उतार पर है. मजदूर मामलों के जानकारों का मानना है कि उनके समर्थक मजदूरों की संख्या, जो कभी छह लाख थी, अब 1.5 लाख पर सिमट गई है. मोरारजी गोकुलदास मिल्स के अध्यक्ष अजय पीरामल कहते हैं, "उनका प्रभाव निश्चित रूप से घटा है." टाटा सामाजिक अध्ययन संस्थान की श्रम अध्ययन इकाई के ए.एम. शर्मा का भी मानना है, "दत्ता सामंत की ऐतिहासिक भूमिका खत्म हो गई है. अब तो कोई नया मजदूर नेता ही आगे आएगा."

लेकिन सामंत अपने घटते प्रभाव की इन खबरों को हंसी में उड़ा देते हैं. मुंबई में घाटकोपर उपनगर के अपने छोटे-से दफ्तर में गणेशजी के चित्र के नीचे बैठे सामंत बताते हैं कि कोई फर्क नहीं पड़ा है. "मेरी सभी यूनियनें मेरे साथ हैं. बल्कि महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में तो मेरे समर्थक बढ़ रहे हैं. मुझे अभी भी 15 लाख मजदूरों का समर्थन हासिल है."

सामंत के लिए बोराडे का साथ छोड़ जाना राजनैतिक प्रतिद्वंद्वियों द्वारा उनके सहयोगियों को फुसलाने की 'घटिया हरकतों' का ही उदाहरण है. इस बार यह काम इंका और केंद्रीय रक्षामंत्री शरद पवार ने किया है. सामंत कहते हैं, "बोराडे के साथ मुश्किल से 300 मजदूर गए हैं. पिछले 10 वर्षों में उस जैसे कई लोग जा चुके हैं. क्योंकि मैं व्यवस्था में बदलाव चाहता हूं" इसके साथ ही सामंत ने इस बात पर भी कड़ा विरोध प्रकट किया कि पवार के विश्वस्त और महाराष्ट्र के श्रम राज्यमंत्री अरुण मेहता अपने पद का इस्तेमाल बोराडे को बढ़ावा देने के लिए कर रहे हैं. वे बोराडे को 'किसी भी फैक्टरी के चुनाव में' उतरने की चुनौती देते हैं. वे कहते हैं, "तब उन्हें पता लगेगा कि 80 फीसदी मजदूर हमारे साथ हैं." हालांकि इसमें पेंच है. किसी मान्यताप्राप्त संगठन को हटाने के लिए यह साबित करना होता है कि उसका समर्थन 25 फीसदी से कम रह गया है.

कार्टून अजीत नैनन और मनोजित दत्त

जानकारों के मुताबिक बोराडे के अलग होने से सामंत का प्रभाव घट गया है पर खुद सामंत इसे हंसी में उड़ा देते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KEEP THE SPR

Officer's Choice Aqua Pura

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

THE OFFICIAL SPONSORS OF THE INDIA CKE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PRITS FLOWING

Best of Luck! Have a great series.

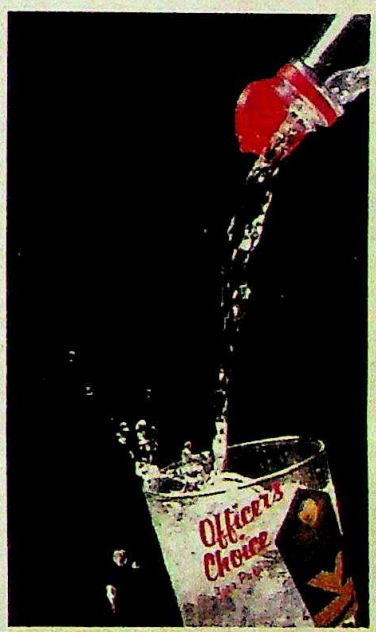

Officer's Choice
Aqua Pura

INDIA CRICKET TEAM.

LET THE CELEBRATIONS CONTINUE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोराडे यह तो कबूलते हैं कि वे इंका की गोद में लौट आए हैं पर यह भी घोषणा करते हैं कि "अब मेरा मकसद डॉ. सामंत द्वारा बंद कराई गई फैक्टरियों को पुन: खुलवाना है." इनमें 150 करोड़ रु. की लागत वाली वीआईपी इंडस्ट्रीज की नासिक इकाई भी है, जिसमें अगस्त में तालाबंदी के चलते लगभग 2,000 मजदूर बेरोजगार हो गए हैं. मजदूरी में भारी वृद्धि की सामंत की मांग प्रबंधकों ने नामंजूर कर दी थी. वीआईपी के अध्यक्ष दिलीप पीरामल कहते हैं, "सामंत के रुख से हमारा कम, मजदूरों का ज्यादा नुकसान हो रहा है. उन्हें समझ जाना चाहिए कि संगठित मजदूर पहले ही काफी ऊंची मजदूरी पा रहे हैं."

लेकिन 58 वर्षीय मजदूर नेता सामंत यह नहीं समझ पा रहे. कभी निजी प्रैक्टिस करने वाला यह डॉक्टर खान मजदूरों के शोषण से द्रवित होकर 60 के दशक में मजदूर नेता बन बैठा था. मजदूरी में भारी वृद्धि की मांग उठाकर सामंत ने फैक्टरी मालिकों में दहशत फैला दी थी. शुरुआती वर्षों में उन्होंने इंका के भारतीय राष्ट्रीय मजदूर संगठन (इंटक) में काम किया. लेकिन 1972 में गोदरेज फैक्टरी में हुई हिंसा के बाद वे बोराडे जैसे सहयोगियों के साथ इंटक से अलग हो गए. सामंत की लोकप्रियता बढ़ती गई. जनवरी 1982 में जब उन्होंने मुंबई में कपड़ा मिल मजदूरों की हड़ताल करवाई तो एसोसिएशन ऑफ इंजीनियरिंग वर्कर्स और महाराष्ट्र गिरनी कामगार यूनियन जैसे अनेक मजदूर संगठनों के माध्यम से मजदूरों की एक बड़ी संख्या उनके नेतृत्व में थी. उनके मजदूर संगठन कामगार अघाड़ी से जुड़े रहे, जिसे उन्होंने राजनैतिक दल का रूप दे दिया.

मगर कपड़ा मिल मजदूरों की हड़ताल सामंत की नेतृत्व संबंधी कई खामियों को उजागर कर गई. कमजोर रणनीति और कपड़ा मिलों की खस्ता हालत की समझ न होने की वजह से यह हड़ताल लंबी और निरर्थक साबित हुई जिसे गिरनी कामगार यूनियन ने अभी भी अधिकृत रूप से वापस नहीं लिया है. हताश मजदूर धीरे-धीरे काम पर लौटने लगे. कैडबरीज़ के कार्मिक निदेशक अरुण जोशी का मानना है, "आक्रामक रवैया एक सीमा तक ही कामयाब रहता है, उसके बाद नहीं."

लेकिन सामंत मजदूरों का समर्थन बटोरते चले गए. 1985 में वे दक्षिण-मध्य मुंबई की लोकसभा सीट से जीते. उनकी पत्नी विनिता सामंत समेत कामगार अघाड़ी के तीन नेताओं ने भी विधानसभा सीटें जीतीं. श्रमिक मामलों के वकील कॉलिन गोंसाल्वेज बताते हैं, "सामंत की सफलता यह थी कि उन्होंने मजदूरों को इज्जत दिलवाई और प्रबंधकों को सबक सिखाया कि मजदूरों को धोखा देना बंद करें. इसीलिए वे एक आंदोलन के नेता रहे, पारंपरिक मजदूर नेता नहीं."

पर सामंत की सफलता ने उनके पतन के बीज भी बोए. मजदूरी उन्होंने बढ़वाई, तो मजदूरों का जीवन स्तर भी ऊपर उठा. हड़ताल और तालाबंदी से उनका नुकसान भी ज्यादा होने लगा. शिक्षित और अच्छा वेतन लेने वाले मजदूरों में आत्मनिर्भरता भी बढ़ी और फैक्टरियों के ऐसे मजदूर संगठन सफल होते गए, जिनका बाहरी संगठनों से कोई संबंध न था. सामंत का दबदबा बढ़ता गया पर संगठनात्मक ढांचा तैयार करने में उनकी नाकामी ने उनके समर्थकों में हताशा पैदा की.

दरअसल, सामंत किसी पर भरोसा नहीं करते. मजदूर संगठन के विशाल साम्राज्य का संचालन वे अपने छोटे-से दफ्तर से निजी संपत्ति की तरह करते हैं. उनके बड़े भाई पी.बी. सामंत उनके ही दिशा-निर्देश में काम करते हैं, हालांकि अपने तीनों बेटों को उन्होंने इस क्षेत्र में नहीं आने दिया. मजदूरों के मामलों को अदालत तक ले जाने में उनकी झिझक और कंपनी के आय-व्यय का लेखा-जोखा समझ न पाना, ये दो ऐसी बड़ी खामियां थीं जो आंदोलन का उग्र स्वरूप खत्म होने पर सामंत के खिलाफ गईं. रही-सही कसर भ्रष्टाचार के आरोप और समर्थकों में बढ़ते असंतोष ने पूरी कर दी. सामंत के प्रतिद्वंद्वी और स्वतंत्र मजदूर नेता आर.जे. मेहता दार्शनिक अंदाज में कहते हैं, "यदि कोई बदलती दुनिया के साथ खुद को नहीं बदलेगा तो एक दिन किनारे तो कर ही दिया जाएगा."

बहरहाल, तेजतर्रार डॉक्टर का प्रभाव भले ही घट रहा हो पर उन्हें चुका हुआ मानने वाले लोग अभी ज्यादा नहीं हैं. बहुत-से जानकारों का मानना है कि गहराती आर्थिक समस्याएं मजदूरों की नौकरी और बड़ी कठिनाई से जुटाई खुशहाली को लील लेंगी. इससे फिर उग्र आंदोलन भड़क सकता है और सामंत फिर मजदूर राजनीति के केंद्र में आ सकते हैं. लेकिन तब तक सामंत को पुरजोर मेहनत करनी होगी कि जिस लहर पर सवार होकर वे इस बुलंदी पर पहुंचे थे, वह उन्हें मजदूर संघ के इतिहास के पन्नों में न दफन कर दे. ■

हेमंत मिश्रा

मजदूरों को संबोधित करते तुकाराम बोराडे: अलग राह

बोराडे मजदूरों को सामंत के खिलाफ जोड़ने में लगे हैं. वे उन्हें उनकी 'हेकड़ी' की परवाह न करने को कहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SONY

नौवें दशक के लिए वीडियो
सोनी वीएचएस

पेश करते हैं आपके लिए घर में मनोरंजन का विश्व में सर्वोत्तम साधन–सोनी वीएचएस वीडियो केसेट
जिसमें है अलबेली आसान वीडियो चालन विशेषता 'डुएल मोड शटल रिंग'. अब अलग-अलग बटन
के स्थान पर टेप के विभिन्न कार्य सूचक जैसे प्ले, फॉर्वर्ड या रिवर्स, स्लो, नॉर्मल, डबल स्पीड, क्यू/रिव्यू,
आर पिक्चर सर्च आदि के लिए आपको सिर्फ़ सोनी का नया शटल रिंग ही घुमाना है.
न नहीं आता ना? मगर यह सच है. और उतना ही आसान है! इतना ही नहीं,
से आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप इसमें अनेक आधुनिक विशेषताएं भी हैं.

VHS

अनोखे "डुएल मोड शटल" रिंग के साथ

V-X50: • 2-सिस्टम (PAL/MESECAM) • एक सेकेंड से कम समय में स्क्रीन पर पिक्चर के लिए सुपर
मेकेनिज़्म • DA प्रो 4 हेड-साफ़, स्थिर और धीमी गति के लिए • एचक्यू • यूनी कमांडर (SLVX50 तथा
ट्रिनीटॉन दोनों पर कंट्रोल) • 1 माह/8 घटनाओं के लिए टाइमर • ऑटो मेनू • डिजिटल ऑटो ट्रैकिंग
आर पिक्चर सर्च • हाई-स्पीड रिवाइंड • ऑटो हेड क्लीनर • ऑटो वोल्ट.

V-X20 • 2-सिस्टम (PAL/MESECAM) • सुपर एक्सेस
म • यूनी कमांडर

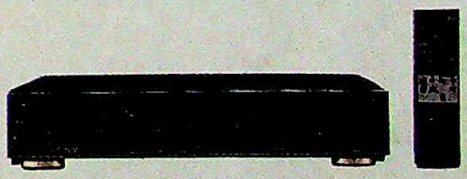

SLV-X30 • 2-सिस्टम (PAL/MESECAM) • डुएल मोड शटल • ऑटो हेड क्लीनर • सुपर एक्सेस मेकेनिज़्म • हाई-स्पीड रिवाइंड • यूनी कमांडर

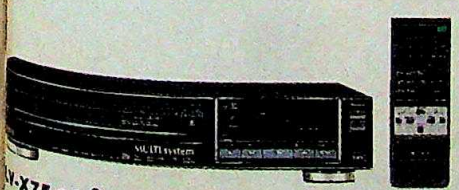

V-X75 • 3-सिस्टम (PAL/MESECAM/NTSC
Q/SECAM PB) • ऑटो ट्रैकिंग • ऑटो हेड क्लीनर
स्लो • यूनी कमांडर

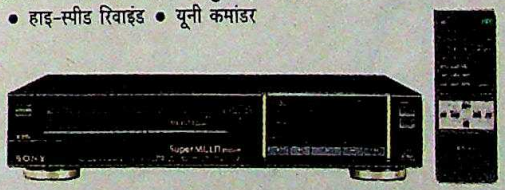

SLV-X95 • 4-सिस्टम (PAL/MESECAM/NTSC 3.58/4.43/SECAM PB) • 4 हेड • ऑटो ट्रैकिंग • ऑटो हेड क्लीनर • नॉइसलेस स्थिर/स्लो • यूनी कमांडर

सोनी "V" वीएचएस वीडियो केसेट टेप

नए बेहतर हाइ-रिज़ॉल्यूशन
"VIVAX" टेप
E-180 V 180-मिनट रेकॉर्डिंग टाइम
E-120 V 120-मिनट रेकॉर्डिंग टाइम

इसके लिए आपकी हाँ सोनी वीएचएस

SERVICE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत में सोनी अधिकृत सर्विस सेंटर – **नई दिल्ली:** ओलंपिया सर्विस सेंटर, 55-ए, सिद्धार्थ चेंबर्स,(आज़ाद अपार्ट्मेंट्स के बाजू में),हॉस खस, नई दिल्ली- 110 016 फ़ोन : 6864947 **बंबई:** ओलंपिया सर्विस सेंटर, अरूण चेंबर्स, ग्राउंड फ्लोर, एस 22/23, ताड़देव रोड, बंबई- 400 034 फ़ोन : 8840629 **कलकत्ता:** ओलंपिया सर्विस सेंटर, 6-सी मिडलटन स्ट्रीट, कलकत्ता- 700 071 फ़ोन : 403601, 478995 **मद्रास:** स्टीरियो विज़न, 846-ए, माउंट रोड,(इंडिया सिल्क हाउस के बाजू में),मदास- 600 002 फ़ोन : 835444 **बंगलोर:** टेलीवीडियो सर्विसेज, 108 ईएण्डएफ़, शाहज़ाद बिल्डिंग, जे.सी. रोड, बंगलोर- 560 002 फ़ोन : 220164 **हैदराबाद:** माबूद इलेक्ट्रॉनिक्स, 5-8-602, शॉप नं. 8, मुबारक बाज़ार, आबिद रोड, हैदराबाद- 500 001 फ़ोन : 203131 **कोचिन:** बायोनिक्स,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

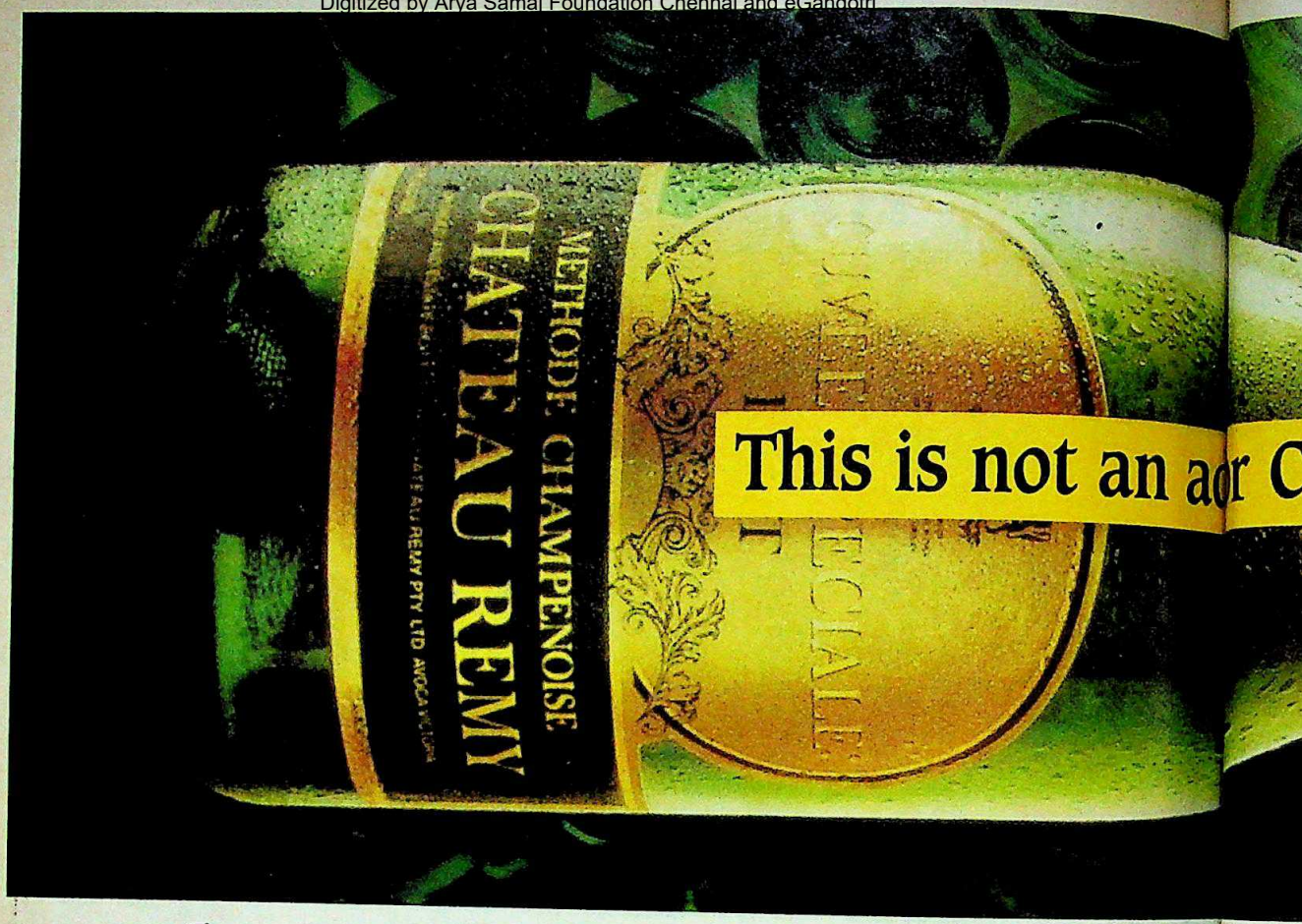

But for Modern–suitings to celebra

Special moments that sparkle with joy, are moments dressed

by Modern Suitings. A triumph of contemporary classics. In rich,

Modern Suitings Ltd.

AMADEUS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

celebrate life's finer moments with.

colours. And fascinating weaves. Of Poly/Wool and other exciting blends. Created to perfection. A toast to life's finer moments, indeed.

FOREVER MODERN

Megacorp/501/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षितर समुदाय

परंपरा के परास्त प्रहरी

आर्थिक और सामाजिक दवाबों के चलते तमिलनाडु में दीक्षितर समुदाय विलुप्त होने के कगार पर है. संवाददाता *कविता शेट्टी* और छायाकार *श्याम टेकवानी* की इस पुजारी समुदाय पर रिपोर्ट:

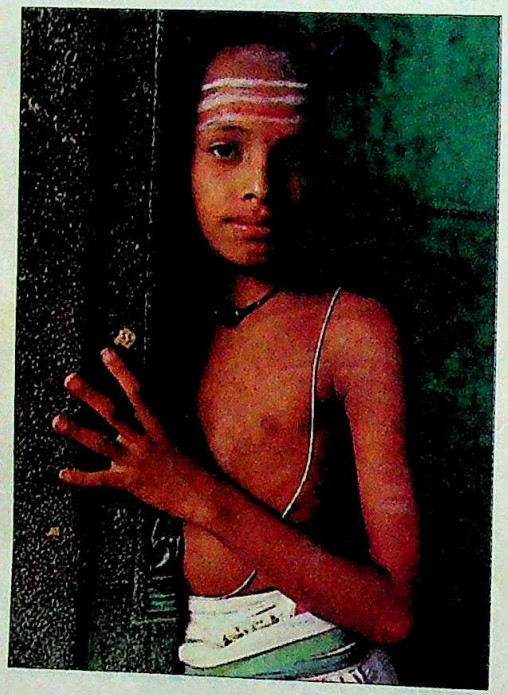

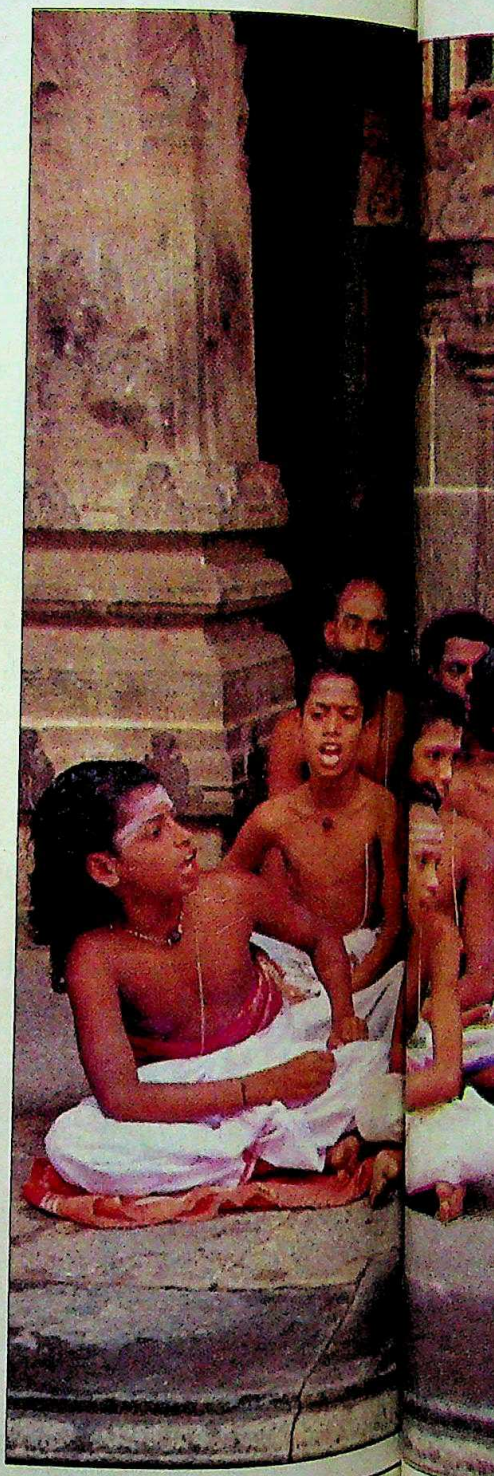

तमिलनाडु में मंदिरों के शहर चिदंबरम के प्राचीन नटराज मंदिर के बरामदे में कुछ बालक पालथी मारे बैठे हैं. उनके माथे पर भभूत लगी है और लंबे केश *कुडुमियों* (चोटियों) में गुथे हुए हैं. वैदिक श्लोकों का उच्चारण करते हुए उनकी नजरें श्रद्धा से अपने सामने बैठे *वाद्यार* (गुरु) पर टिकी हैं. पांच से 12 साल की उम्र के बीच के इन बालकों के भाग्य में मंदिर का संरक्षक बनना ही लिखा है.

ये बालक दीक्षितर समुदाय से ताल्लुक रखते हैं. माना जाता है कि 3,000 साल पहले भगवान नटराज (शिव) इन लोगों को कैलाश पर्वत से चिदंबरम लाए थे. तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन से ही दीक्षितर बच्चे की प्राथमिकताएं तय हो जाती हैं. धार्मिक अनुष्ठान, उपासना और पूजा-पाठ का स्थान सर्वप्रथम है जबकि स्कूल, खेल और मित्र बाद में आते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से यहां के मंदिरों की देखरेख और कर्मकांड पर इन्हीं लोगों का एकाधिकार रहा है. कभी वेदों के पांडित्य के लिए विख्यात रहे इस समुदाय के सामने आज अपने ही अस्तित्व के लिए खतरा पैदा हो गया है. वह आज अपना अस्तित्व बचाने की लड़ाई लड़ रहा है. इस समुदाय की आबादी तेजी से घटती जा रही और आज इसकी संख्या महज 800 रह गई है.

नटराज मंदिर का संचालन 20 सदस्यों की एक निर्वाचित समिति करती है जिसकी बैठक हर 20 दिन बाद होती है. समुदाय का हर विवाहित पुरुष—और ऐसे 250 पुरुष हैं—मंदिर का न्यासी है और उसे वहां पूजा करने का अधिकार है. उसकी कमाई का एक भाग मंदिर के रखरखाव के लिए दिया जाता है.

दीक्षितर समुदाय की प्राचीन परंपराएं अकसर उन्हें परेशानी में डाल दिया करती हैं. मसलन, जब वे सामूहिक बाल विवाह के कार्यक्रम आयोजित करते हैं तो समाज में पुरातनपंथी कहकर उनका उपहास उड़ाया जाता है. 1988 में 20 बाल दंपती जब वैवाहिक बंधन में बांधे गए तो द्रविड कषगम ने इस प्रथा पर आपत्ति उठाई और इस पर रोक लगाने की मांग करते हुए एक मुकदमा दायर किया. पर यह समुदाय हाईकोर्ट से स्थगन आदेश पाने में कामयाब रहा. वे अपनी परंपराओं से चिपके रहना चाहते हैं और उसमें किसी भी प्रकार की दखलंदाजी पसंद नहीं करते. छह साल पहले 15 वर्षीय शामसुंदरी से शादी कर चुके 21 वर्षीय तांडव दीक्षितर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हते हैं, "ये हमारी अपनी परंपराएं हैं. मुझे इनमें अच्छाई ोड़ कोई खराबी नहीं नजर आती."

उनकी परंपराएं पूरी तरह मंदिर से जुड़ी हुई हैं. बोलना खते ही दीक्षितर बच्चा अपने इर्द-गिर्द के धार्मिक तावरण, घर में नियमित उपासना, पूजा, मंदिर और उससे ड़े आयोजनों से प्रभावित होने लगता है. यही उसकी दुनिया ती है. इससे बाहर निकलना उसके लिए मुश्किल ही नहीं, संभव भी होता है. स्कूल, खेल और मित्र प्राथमिकता में बाद आते हैं. इसी समुदाय के 23 वर्षीय सुंदर कहते भी हैं, भगवान नटराज का स्थान सर्वप्रथम है." सात साल की उम्र दीक्षितर बच्चा यज्ञोपवीत संस्कार के बाद वैदिक कक्षाओं जाने लगता है. कुछ ही साल के भीतर वह शादी करने लायक हो जाता है. लेकिन लड़की के रजस्वला होने पर ही किसी विवाहित जोड़े को इकट्ठे रहने की अनुमति दी जाती है.

सदियों तक दीक्षितर अपनी ही दुनिया में रमे रहे हैं मगर अब भौतिक संसार की उथल-पुथल उनकी जिंदगी पर अधिकाधिक असर डालने लगी है. मंदिर की कमाई, जिस पर वे हमेशा निर्भर रहे हैं, अब उनके लिए पर्याप्त नहीं रही है कि घर का सारा खर्च चल जाए. आसमान छूती महंगाई के कारण भी दीक्षितर समुदाय की परंपराएं अब आर्थिक रूप से अनुपयोगी हो गई हैं.

ऐसी स्थिति में कुछ लोग वैकल्पिक धंधे ढूढ़ने को मजबूर हुए हैं. 35 वर्षीय गणेशमूर्ति जो मद्रास में काष्ठ कला सीखकर आने के बाद अब स्थानीय स्कूल में यह विषय पढ़ाते हैं, कहते

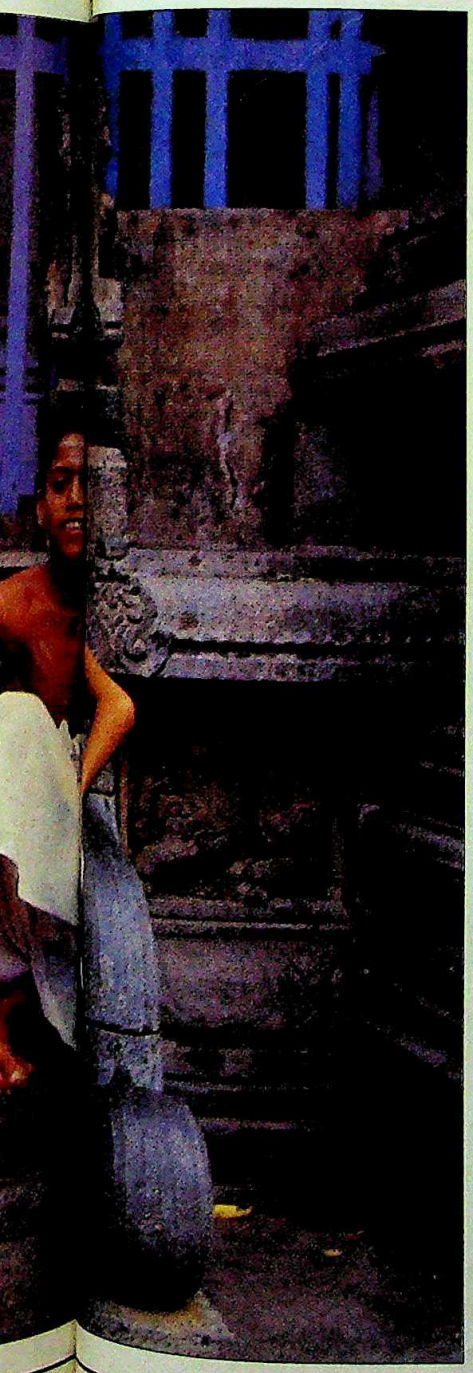

परंपरा से बंधे होने के बावजूद बहुत-से दीक्षितर आर्थिक कठिनाइयों के चलते वैकल्पिक धंधे ढूंढ़ने को मजबूर हुए हैं

(बाएं से) केश खोलकर चित्र खिचवाता बालक; दीक्षितर परिवार; और बढ़ईगीरी का प्रशिक्षण

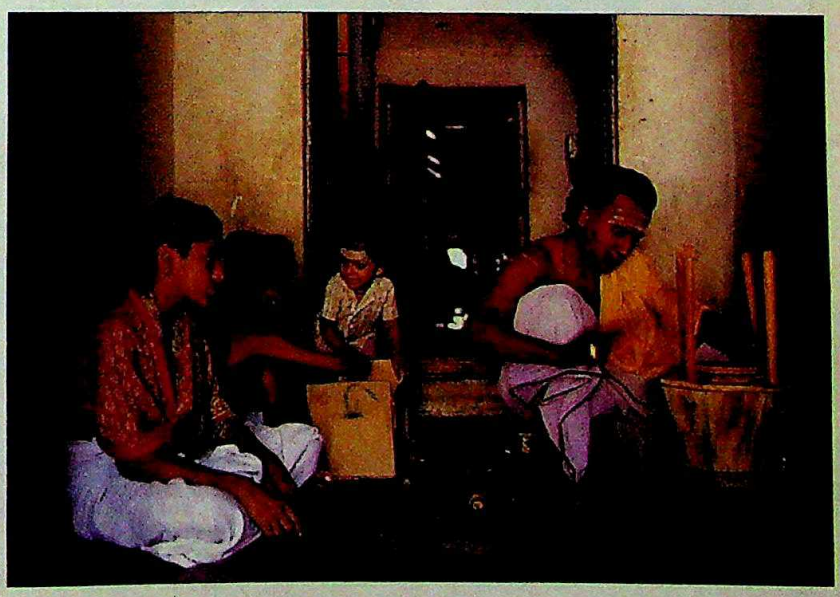

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हैं, "मंदिर की आमदनी स्थिर नहीं है. यह महीने में कभी 500 रु. से ऊपर नहीं जाती लेकिन स्कूल में मैं 1,000 रु. कमा लेता हूं." बैंक से कर्ज लेकर साइकिल किराये पर देने और मरम्मत करने की दुकान खोलने वाले 42 वर्षीय बाला गणेश दीक्षितर का भी यही मानना है. वे कहते हैं, "अगर हम रोजी-रोटी के लिए मंदिर की आमदनी पर ही निर्भर होते तो आज तक भूखों मर गए होते."

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कई जगह की खाक छानकर अपने पुराने धंधे में लौट आए हैं. 23 वर्षीय गणपति सुब्रह्मण्यम का ही उदाहरण लें. वे एक मेकेनिक दुकान में अंशकालिक काम कर रहे थे कि पांडिचेरी के निकट कराइकल में उन्होंने तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग के एक दफ्तर में ड्राइवर की नौकरी ढूंढ़ ली. उन्होंने अपने बाल कटवा लिए और वहीं काम पर जाने लगे.

लेकिन उनकी नौकरी लगे महज तीन महीने ही बीते थे कि वे चिदंबरम लौट आए और फिर मंदिर से मेकेनिक दुकान के साथ-साथ घर के कामकाज में भी व्यस्त हो गए. अब वे स्वीकार करते हैं, "मैं मंदिर से दूर कतई नहीं रह सकता. तब

दीक्षितर समुदाय का बालक सात साल का होते ही यज्ञोपवीत संस्कार के बाद वैदिक पाठशालाओं में जाना शुरू कर देता है

मुख्य पूजा के दौरान मंदिर के विशाल घड़ियाल बजाते किशोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद पुजारी की जिंदगी में नियमित पूजा, मंदिर के आयोजन, और वैदिक श्लोकों तथा कर्मकांडों का प्रशिक्षण ही हावी रहता है

दिवाली से पूर्व कृतिकै उत्सव पर मंदिर में दीप जलाता बालक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन सभ्यता के अवशेषों की तरह दीक्षितर समुदाय धीमी चाल से घटते-घटते जिंदगी का सफर पूरा कर रहा है

साधना में लीन पुजारी के सामने से हाथ जोड़े गुजरते भक्तजन

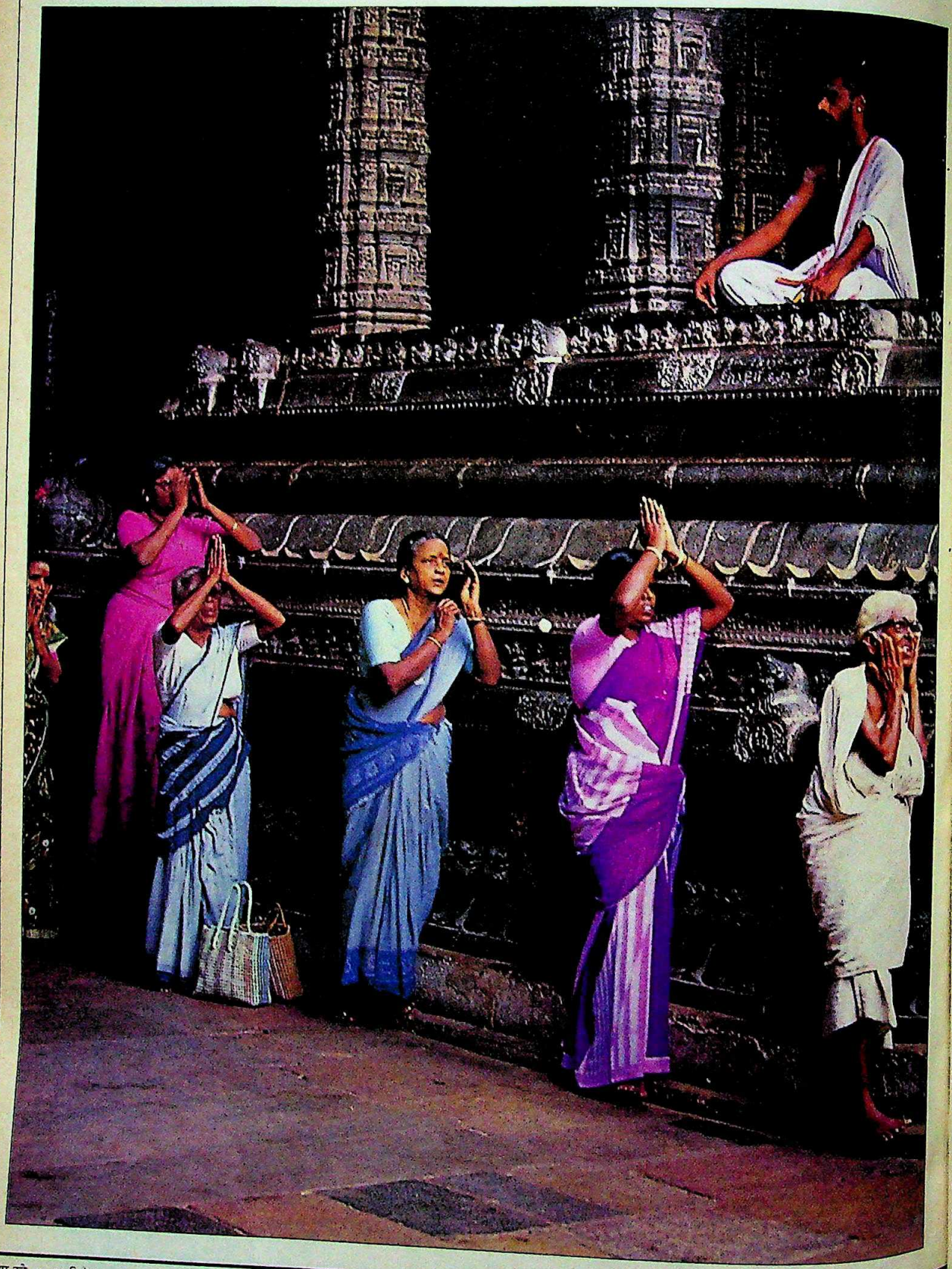

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा मन कहीं नहीं लगता है यही मेरी नियति है.''

सिर्फ आर्थिक कठिनाइयों के चलते ही दीक्षितर समुदाय के सामने विलुप्त होने का खतरा नहीं है. वैसे, उनकी संख्या भी तेजी से घटती जा रही है. यह समुदाय अपनी आबादी बढ़ाने की मनौतियां मनाता आया है पर भगवान ने उनकी फरियाद शायद नहीं सुनी है. आबादी लगातार घटते जाने की वजह कोई नहीं बता पाता. पर दीक्षितर समुदाय के एक बुजुर्ग बताते हैं, ''यह शायद इसलिए है कि हम सदियों से आपस में ही शादी करते आए हैं.''

उनकी बात सही भी हो सकती है क्योंकि यह समुदाय समाज के दूसरे वर्गों से कोई मतलब नहीं रखता है. वे अपने में ही सीमित रहे हैं. मंदिर के इर्द-गिर्द करीब 200 दीक्षितर परिवार रहते हैं. वे चार उपजातियों में बंटे हुए हैं. इन्हीं के बीच शादियां होती हैं. इस सगोत्रीय विवाह प्रणाली ने हालांकि समुदाय को एकजुट रखने में सहायता की है मगर समाज के दूसरे हिस्सों से उसे अलग-थलग भी रखा है. भारत विशेषज्ञ और दीक्षितर समुदाय में विदेश यात्रा करने वाले पहले सदस्य नटराजरथिना दीक्षितर कहते हैं, ''पवित्र जीवन जीने और मोक्ष प्राप्त करने वाले लोग दोबारा जन्म नहीं लिया करते. शायद ऐसा ही कुछ दीक्षितर समुदाय के साथ भी हो रहा है.'' क्या यह समुदाय एक शताब्दी के अंदर-अंदर विलुप्त हो जाएगा? यह पूछने पर उनका जवाब है, ''शायद. भगवान नटराज ही जानते हैं.''

उनकी महिलाएं अरसे से पारंपरिक कामों में जकड़ी हुई हैं. यौवनारंभ के दिन से ही नौ गज की साड़ी में लिपटी हर दीक्षितर महिला अपने जीवन का अधिकांश समय रसोई या पूजागृह में बिताती है. यह उनकी नियति है. सिर घुटाए और भगवा साड़ी पहने दीक्षितर समुदाय की एक बुजुर्ग विधवा राजलक्ष्मी पूछती हैं, ''रसोई और पूजाघर छोड़ महिलाओं के लिए और काम भी क्या है?''

यह मान्यता पुरानी पीढ़ी में ही नहीं, आज की पीढ़ी में भी मौजूद है. उनके पोते की बहू 20 वर्षीया धनलक्ष्मी, जो 14 साल की उम्र में ब्याह कर इस परिवार में आई थीं, आज दो साल के बच्चे की मां हैं. उनके पति 23 वर्षीय कनकसाबेसन घर का खर्च चलाने के लिए मंदिर की आमदनी के अतिरिक्त किराने की एक छोटी दुकान भी चलाते हैं.

दीक्षितर समुदाय के आत्मसंतोष को झकझोरने की कोशिशें भी पिछले वर्षों में हुई हैं. एमजीआर के नेतृत्व में अन्ना द्रमुक सरकार और इससे भी पहले द्रमुक सरकार ने इस समुदाय से मंदिर का अधिग्रहण करने के लिए कई बार प्रयास किए. लेकिन वे सफल नहीं हुईं. यही वजह है कि यह समुदाय सरकारी अनुदान कबूल करने से अभी भी डरता है. उसे आशंका है कि इसके जरिये सरकार मंदिर के प्रबंधन में हस्तक्षेप करने लगेगी. नटराजरथिना दीक्षितर कहते हैं, ''हम सरकार से अनुग्रह कबूल करने के बदले मंदिर के रखरखाव के लिए अपनी कमाई का एक हिस्सा देते रहना ज्यादा बेहतर मानते हैं.''

और इस तरह धीमी चाल वाली उनकी जिंदगी का सफर उस प्राचीन सभ्यता के अवशेषों की तरह जारी है जिसे वक्त ने भुला दिया. नटराजरथिना दीक्षितर यह कहकर अपने समुदाय की दुविधा ही अभिव्यक्त करते हैं कि, ''आज हमारी स्थिति सांप-छछूंदर जैसी है. हम अपनी परंपराएं नहीं छोड़ सकते. लेकिन बदलते हालात की भी आखिर कब तक अनदेखी करते रह सकते हैं?'' ■

मंदिर में दखलंदाजी की आशंका के चलते दीक्षितर समुदाय सरकारी अनुदान नहीं लेता

पूजा से पहले पुजारी नटराज मंदिर के कुंड में स्नान करते हैं

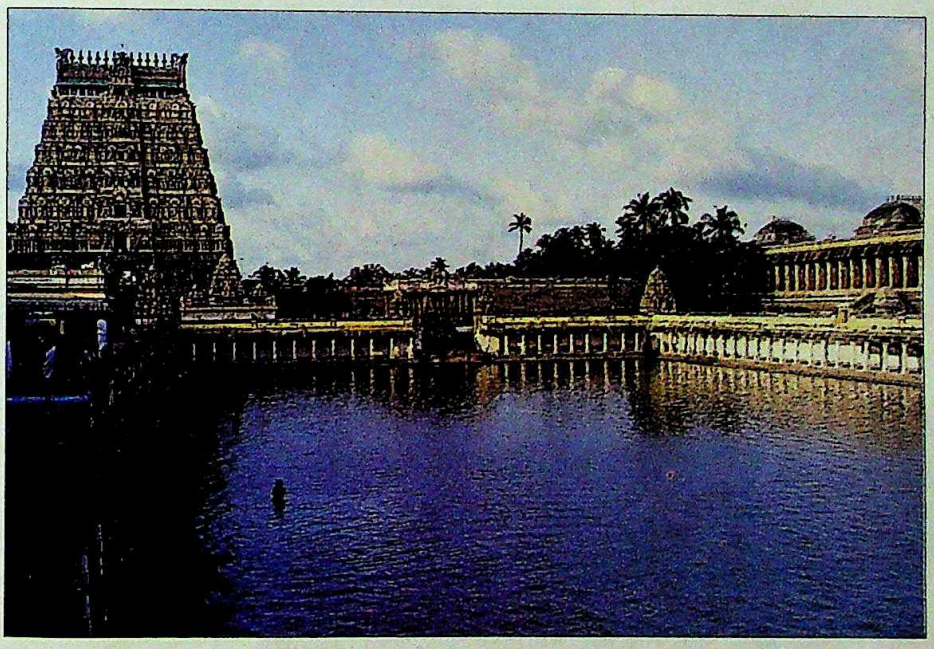

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृतराज बंधु

पैसा और प्रसिद्धि

टेनिस के मैदान से इन जाने-माने खिलाड़ियों की शुरू हुई विजय यात्रा आज मनोरंजन और खेलकूद के करोड़ों के कारोबारों में भी जारी

—दीप्ती खरोद अहमद
लॉस एंजिलिस में

अभी जीत का सिलसिला थमा नहीं है. विजय अमृतराज और उनके भाई आनंद और अशोक के लिए मद्रास से सात समंदर दूर कैलिफोर्निया तक की बंधु आज अमेरिका में पूरी तरह से स्थापित हो गए हैं.

मगर अमृतराज बंधु अपनी अमीरी का जिक्र आते ही आज भी संकोच में पड़ जाते हैं. इसी संदर्भ में ऑल इंडिया लॉन टेनिस एसोसिएशन के साथ आमदनी को लेकर विजय का विवाद दिलचस्प है. लेकिन अंदाज ही काफी कुछ संकेत करता है. लॉस एंजिलिस के पश्चिमी इलाके में एंसिनो स्थित विजय का विशाल महल समृद्धि का प्रतीक नजर आता है. लोहे के बड़े फाटक, टेनिस कोर्ट, तरणताल, खूबसूरत फर्नीचर और एक से एक झाड़-फानूस से सजी उनकी भव्य इमारत काफी

सभी फोटो: इम्तियाज अहमद

(बाएं से) आनंद, हेलेन, विजय, श्यामला, अशोक और चित्रांजलि

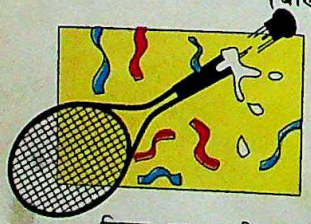

दुनिया की चमक-दमक में अपनी छवि कायम करने के साथ-साथ अमृतराज बंधु कैलिफोर्निया के सर्वाधिक प्रभावशाली भारतीय परिवार के रूप में स्थापित होने की तैयारी में हैं

विजय यात्रा की शुरुआत टेनिस के खेल से हुई थी. टेनिस से इन जाने-माने खिलाड़ियों के संन्यास ग्रहण के बाद भी इनकी प्रसिद्धि और समृद्धि की रफ्तार पहले जैसी ही है. अमृतराज बंधुओं का कारोबार करोड़ों में पहुंच गया है और इसका अधिकतर भाग मनोरंजन प्रधान है. कई क्षेत्रों में हाथ-पांव फैलाकर अमृतराज अमृतराज बंधुओं की ताजा उपलब्धि अशोक की फिल्म 'डबल इम्पैक्ट' है. इस फिल्म ने 3 करोड़ डॉलर से भी अधिक का मुनाफा कमाया है. आनंद का अंदाजा है कि कुल मिलाकर इन भाइयों का सालाना कारोबार करीब 1 करोड़ डॉलर का है.

अमृतराज बंधुओं की जीवन शैली और उनके रहन-सहन का शानदार हॉलीवुड कुछ 'व्हाइट हाउस' जैसी नजर आती है. इस मकान को सजाया है विजय की श्रीलंकाई पत्नी श्यामला ने.

पैसा और प्रसिद्धि बटोरने में सबसे आगे रहे विजय. यह सत्तर वाले दशक की बात है. तब टेनिस के एबीसी—अमृतराज, बोर्ग और कोनर्स—के नाम खूब चर्चित हुए थे. हालांकि 37 वर्षीय विजय अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
CLARION/BLR/HMT/9160/HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

TEN YEARS OF QUARTZ

दस साल पहले, एचएमटी ने अंतरराष्ट्रीय तकनीक के सहारे, भारत की पहली क्वार्ट्ज़ घड़ी बनाई थी।

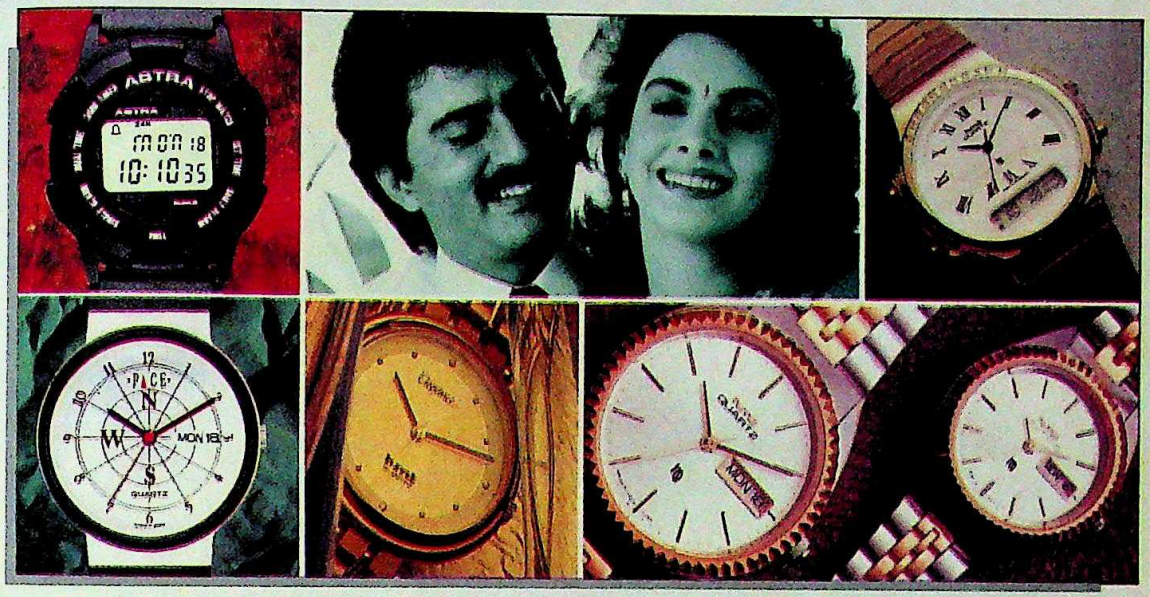

आज, दस साल बाद, वे क्वार्ट्ज़ रेंज अपने आप में एक तकनीक हैं।

CITIZEN 1981. यह वह समय था जब क्वार्ट्ज़ तकनीक सारी दुनिया पर छा गई। इस तकनीक की बुनियाद है घड़ी का एक छोटा-सा हिस्सा जिसको कहते हैं 'मूवमेंट'। 'मूवमेंट' वह छोटा-सा पुर्ज़ा है जो घड़ी को सही ताल देता है। दुनिया भर के घड़ी निर्माताओं को सिटीज़न मूवमेंट पर विश्वास है। बेशक यह आधुनिकतम तकनीक है। लेकिन एचएमटी ने सिटीज़न से गठबंधन कर, दस साल पहले ही इसका निर्माण आरम्भ कर दिया था।

समय के साथ-साथ, एचएमटी ने क्वार्ट्ज़ रेंज को भारतीय स्वरूप दिया। इसकी बैटरी तक भारतीय है, परंतु है अंतरराष्ट्रीय स्तर की। और तो और, क्वार्ट्ज़ तकनीक को कई नये रूप दिए गये - एनाडीजी, एलीगेन्स - डिज़ाइनर क्वार्ट्ज़ कलेक्शन। पेस - एक शानदार पौलीमाइड। और एस्ट्रा - भारत की पहली डिजिटल रेंज।

आज, एचएमटी को अपने सम्पूर्ण और शानदार रेंज पर गर्व है। एक तरह से एचएमटी क्वार्ट्ज़ रेंज भारत के लोगों की तकनीक है। उनकी पसंद, उनकी ज़रूरतों की तकनीक। वरना ऐसी आधुनिक तकनीक का क्या फ़ायदा जो आधुनिक लोगों के लिए न हो?

एच hmt QUARTZ

Q U A R T Z

आज की तकनीक। आज के लोगों के लिए।

CLARION/BLR/HMT/9160/HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

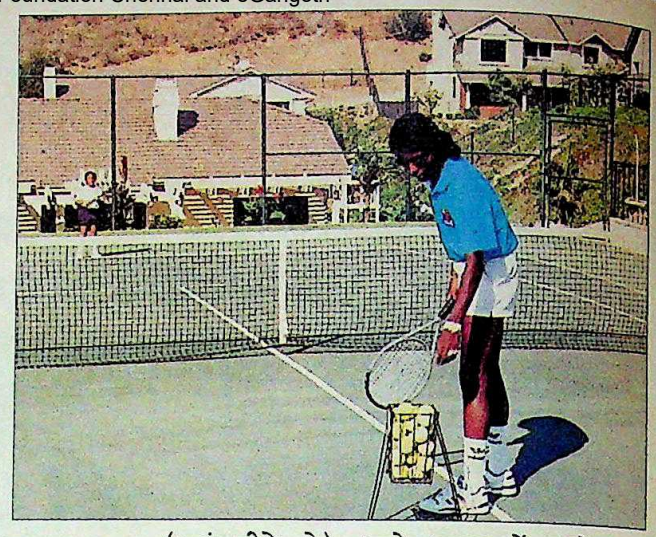

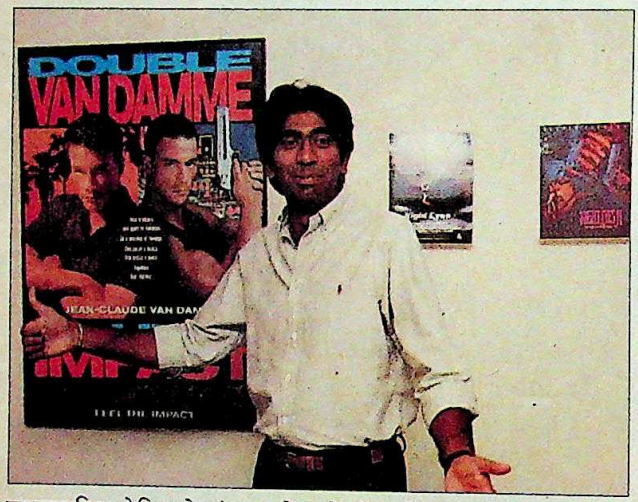

(बाएं नीचे से) अपने दफ्तर में अशोक; कर्मचारियों के साथ विजय; बेटे के साथ आनंद

आनंद हेल्थ क्लब चलाते हैं, तो विजय तथा अशोक टीवी चैनेल तथा फिल्मों के चमक-दमक वाले कारोबार में लगे हैं

व्यावसायिक टेनिस से संन्यास ले चुके हैं पर प्रदर्शन मैचों और लोकप्रिय खिलाड़ियों के नाम पर होने वाले खेलों में वे अब भी खेलते हैं. विजय का अधिकांश समय अब कैमरों के सामने या उनके पीछे बीता करता है.

जेम्स बांड श्रृंखला की फिल्म 'ऑक्टोपसी' में अपनी चर्चित भूमिका के बाद विजय अपने करोड़ों रु. की लागत वाले 'अमृतराज एंटरटेनमेंट' के काम में ही व्यस्त हो गए हैं. विजय का ध्यान इन दिनों अपने तीन वर्ष पुराने 'ट्रांस ग्लोबल नेटवर्क' पर लगा हुआ है. संवाद एजेंसी 'सीएनएन' की तरह का यह केबल टेलीविजन चैनेल जनवरी 1992 से शुरू होने वाला है. वैसे, विजय पहले से ही केबल चैनेल 'एशिया न्यूज ऐंड एंटरटेनमेंट नेटवर्क' (एएनईएन) पर 'इंडिया वीज़न' के नाम से एक कार्यक्रम देते रहे हैं. इस नेटवर्क में विजय अमृतराज राज दत्त के साझेदार हैं. इसी महीने विजय ने वीडियो पत्रिका भी शुरू की है.

मगर ऐसा नहीं है कि खेल की दुनिया बिलकुल पीछे छूट गई है. विजय की दूसरी व्यस्तताओं में 'ब्रिटानिया ऐंड प्यूमा करोना' के निर्देशक मंडल की बैठकों में शरीक होना, एसोसिएशन ऑफ टेनिस प्रोफेशनल्स' (एटीपी) के अध्यक्ष पद का दायित्व निभाना और फिर मद्रास में चल रहे परिवार के टेनिस कैंप का काम देखना शामिल है.

काम में डूबे विजय को इस बात का अफसोस नहीं कि टेनिस छूट गया. आत्मकथा में विजय के शब्द हैं, "टेनिस ने वह सब कुछ दिया है, जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी."

ऐसी ही उपलब्धियों में राजीव गांधी, रोनाल्ड रेगन, जॉर्ज बुश, जॉर्ज शुल्ज और जेम्स बेकर के साथ उठना-बैठना भी शामिल है. घर से केवल 15 मिनट की दूरी पर स्थित उनके कार्यालय में ऐसे ही विशिष्ट लोगों के साथ उनकी तस्वीरें टंगी हैं. संयोगवश वे प्रसिद्ध 'रिपब्लिकन' अमेरिकी नेताओं के साथ ही दिखते हैं. पर विजय इस बात पर कायम हैं कि वे अमेरिका या भारत में राजनीति से बहुत दूर हैं.

लेकिन कई मायनों में विजय अमेरिका में भारत के गैरसरकारी राजदूत हैं. मसलन, जब रेगन प्रशासन ने पाकिस्तान को चार 'अवाक्स' लड़ाकू विमान बेचने की पेशकश की थी तो विजय ने सक्रियतापूर्वक उस प्रस्ताव के विरुद्ध आवाज उठाई थी.

दुनिया भर में फैले संपर्कों के बावजूद विजय के लिए उनका परिवार सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है. रविवार का दिन पत्नी श्यामला और बेटों—विक्रम और प्रकाश के लिए होता है, जबकि पूरा परिवार मैकडोनल्ड जाकर नाश्ता किया करता है. लेकिन विजय के अनुसार, "मुझे तो बस भारतीय भोजन ही पसंद रहा है."

39 वर्षीय भाई आनंद विजय के डबल्स पार्टनर भी हैं. उनके रहन-सहन में भी यही समानता है. आनंद अभी भी एटीपी, ग्रैंड चैंपियन मैचों या लोकप्रिय खिलाड़ियों के नाम पर होने वाले मैचों में डबल्स खेलते हैं. हाल ही में उन्होंने बहरीन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगलवार था नीला।

जिस दिन उसे लिपस्टिक का दाग़ मिला।

और बर्फ़ सी जम गई।

हां नीला। बर्फ़-की-गहराई-में-शोला-नीला।

वह जली, भड़की,

गरजी। मैं अड़ा रहा।

फिर पिघली - तो पूरी की पूरी।

बर्फ़-की-गहराई-में-शोला-नीला। हाय! कैसी चिनगारी है यह नारी!

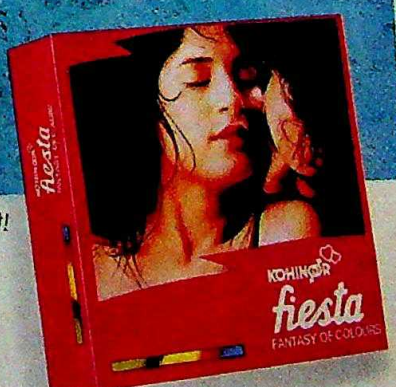

KOHINOOR
fiesta

ल्यूब्रिकेटेड रंगीन कॉन्डोम

उत्पादन

MAA COMMUNICATIONS 1591 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

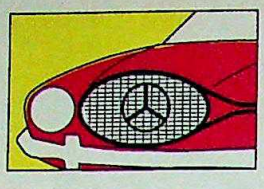

अपनी शानदार जीवन शैली के बावजूद अमृतराज बंधुओं ने भारतीय पहचान बनाए रखी है. परिवार को आज भी वे सर्वोपरि मानते हैं

विजय के साथ खेला. वे नियमित रूप से मद्रास जाकर टेनिस कैंप या फिर ब्रिटानिया अमृतराज ट्रेनिंग प्रोग्राम (बीएटी) की देखरेख किया करते हैं. इस प्रोग्राम का जिम्मा उनकी माता मैगी अमृतराज ने उठाया हुआ है और इसके निमित्त धन प्रति माह 3 लाख रु. ब्रिटानिया कंपनी देती है. यह प्रशिक्षण संस्थान डेविस कप के लिए आठ खिलाड़ी तैयार करता है. आनंद के अनुसार, "मैं तो पूरी तरह टेनिस से संबंधित व्यापार में ही रहना चाहूंगा."

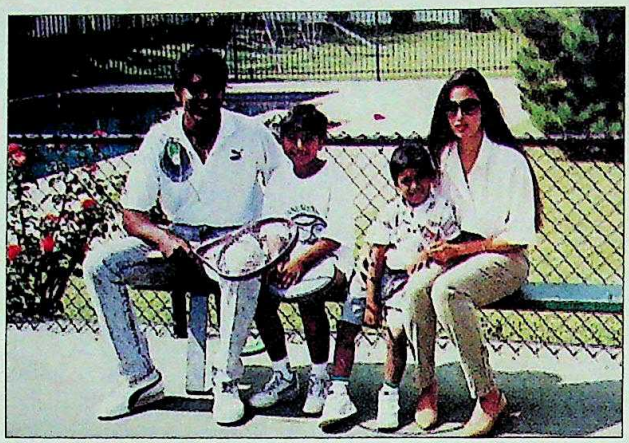

(ऊपर से) बेटों के साथ विजय और श्यामला; चित्रांजलि और अशोक; तथा आनंद और हेलेन

आनंद टेनिस और शतरंज दोनों के खिलाड़ी हैं और इसके अलावा वे न्यूयॉर्क में छह वर्ष पुराने 'अमृतराज रैकेट ऐंड हेल्थ स्पा' की देखभाल करते हैं. दो एकड़ में फैले इस हेल्थ क्लब के करीब 3,000 सदस्य हैं और इससे हर साल करीब 15 लाख डॉलर का फायदा पहुंचता है. इस क्लब में चार इनडोर टेनिस कोर्ट, 10 रैकेटबॉल कोर्ट, एक जकूज्जी, एक रेस्तरां और एक बार भी है.

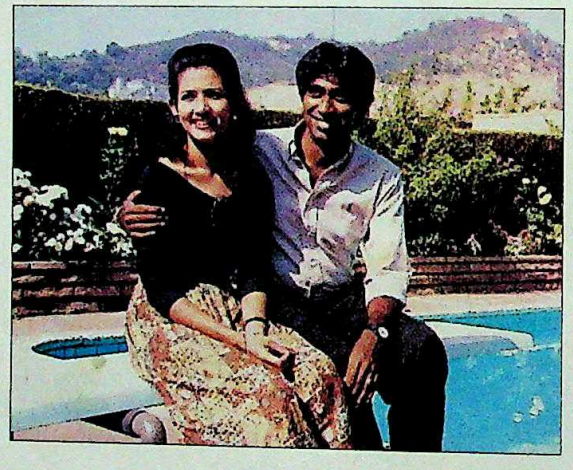

मगर आनंद की जीवन शैली विजय की तेजरफ्तार जिंदगी से बिलकुल अलग है. आनंद कहते हैं, "जब मैं घर में होता हूं, तो पूरी तरह घर में ही होता हूं." अपनी इतालवी-अमेरिकी पत्नी हेलेन के साथ पास्ता और तंदूरी चिकन बनाते या अपने सात वर्षीय बेटे स्टीफन को माइक्रोवेव में हैमबर्गर बनाने में सहायता देते उनका वक्त गुजर जाता है. वैसे, स्टीफन टेनिस में काफी रुचि लेने लगा है.

34 वर्षीय अशोक सबसे छोटे भाई हैं. उनके लिए भी परिवार का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है. टेनिस के क्षेत्र में अशोक कम जाने गए पर उन्होंने अमृतराज के मशहूर नाम का उपयोग कर सिने संसार में पैठ बना ली. आज अशोक बेल एअर जैसी महंगी जगह पर एक तरणताल वाले शानदार मकान में रहते हैं.

अशोक उन लोगों में हैं जिन्होंने मुराद पा ली. 2 करोड़ डॉलर की लागत वाली उनकी नवीनतम फिल्म 'डबल इम्पैक्ट' ने उन्हें सफलता के शीर्ष पर पहुंचा दिया है. 'अमृतराज एंटरटेनमेंट' के अध्यक्ष अशोक इस धंधे में प्रतिष्ठित हो गए हैं. वे हॉलीवुड की 'मोशन पिक्चर ऐकडमी' के सदस्य हैं और उन्होंने 'पॉपकॉर्न' जैसी हॉरर फिल्मों से लेकर 'लास्ट कॉल' और 'लीगल टेंडर' जैसी कामुक-रोमांचक फिल्में बनाई हैं. अशोक दो और फिल्मों—'क्रिमिनल इंटेंट' और 'वाइल्ड डेट' पर काम कर रहे हैं. उनके शब्दों में, "1992 के लिए हमारा बजट 1991 से ज्यादा होगा." अशोक हॉलीवुड के शहंशाह न सही, पहले सफल भारतीय उद्यमी तो जरूर हैं. रोनाल्ड और नैंसी रेगन के लिए अक्तूबर में हुए समारोह में अशोक और उनके पार्टनर ने पहला पुरस्कार जीता.

अमृतराज बंधुओं के बारे में सबसे गौरतलब बात यह है कि उन्होंने कैलिफोर्निया की चमक-दमक में अपनी विजेता छवि कायम करने के साथ-साथ अपनी भारतीय पहचान को भी बनाए रखा है. कभी वे अपने खेल के बूते विदेश में भारत का नाम रोशन करते थे. पर आज वे कैलिफोर्निया के सर्वाधिक प्रभावशाली भारतीय परिवार के रूप में स्थापित होने की तैयारी में हैं. ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

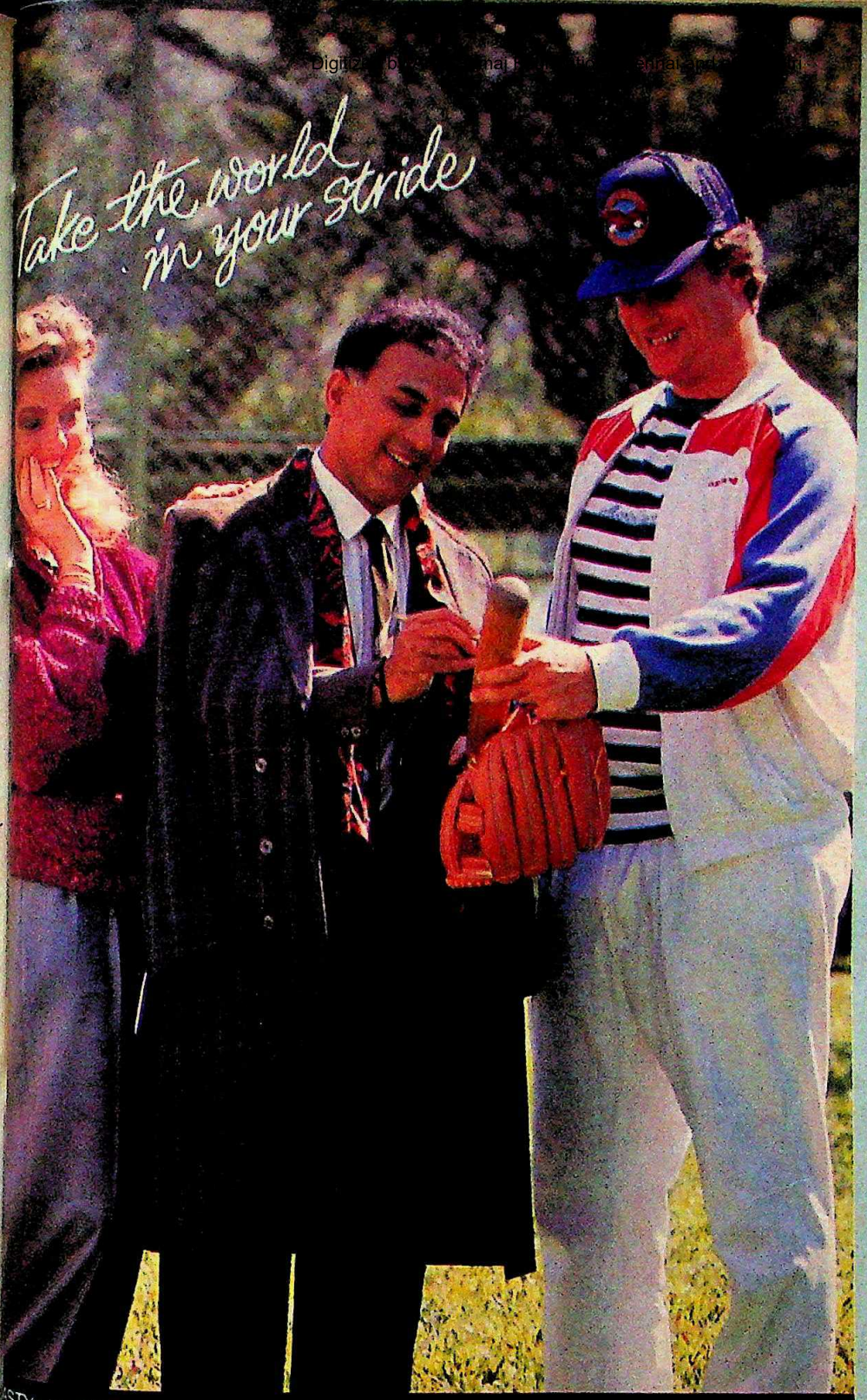

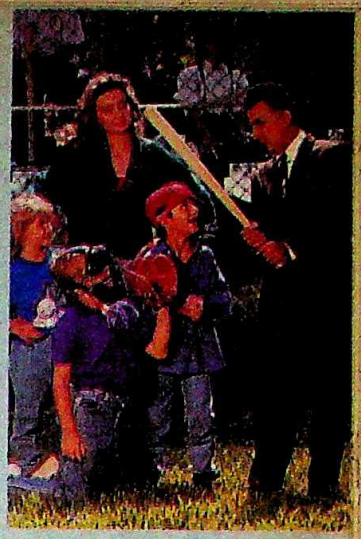

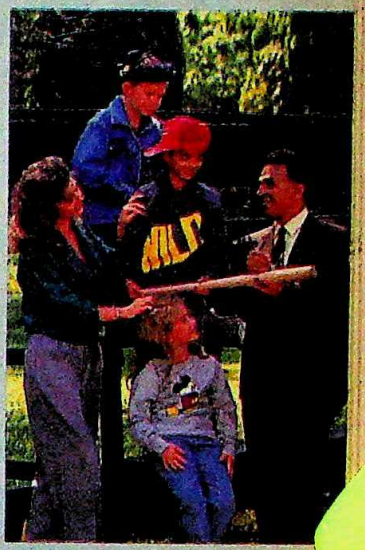

STY • NUOVO LOOK • TREND SETTER • MATCH MAKER SATINS • HI FASHIONS SUITINGS

dinesh

THE CHOICE OF LEADING FASHION HOUSES. INTERNATIONALL

HORISED DEALERS: **JABALPUR:** SELECTIONS • SAMPATLAL BROS. • RAJENDRA & CO. (MADRAS TEXTILES) • RAJNESH KUMAR (ROOPALI) • GAL'S &
S • DULICHAND GULZARILAL • **NAGPUR:** HIND WASTRA BHANDAR • PRASAD SONS • UDAY • KARACHI GENERAL STORE • PERFECTION HOUSE • VIDYA
S • DARSHAN CLOTH CUTPIECE HOUSE.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

(ITH/91/16

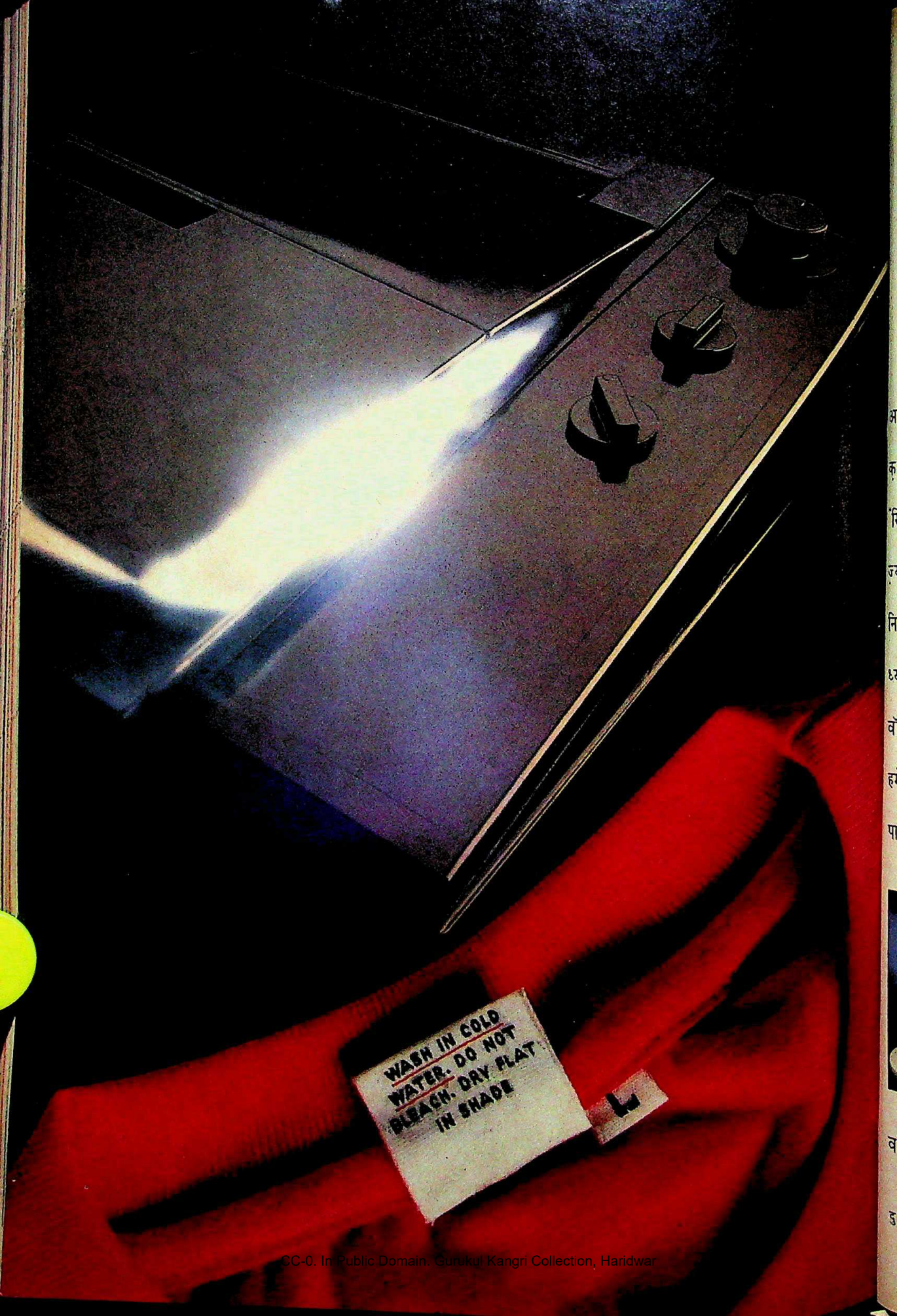

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वॉशिंग मशीन ख़रीदनी हो तो फ़ैसला करने दें अपने कपड़ों को

अपनी बाईं ओर के लेबल को ज़रा क़रीब से देखिए. इसपर लिखा है, "सिर्फ ठंडे पानी से धुलाई". आजकल ज़्यादातर लेबलों पर आपको यही निर्देश मिलेगा. एक तरह ये आपका ध्यान ले जाते हैं टी वी एस वॉशिंग मशीन की ओर – हमने हमेशा आपके कपड़ों के लिए ठंडे पानी की धुलाई पर ही ज़ोर दिया है.

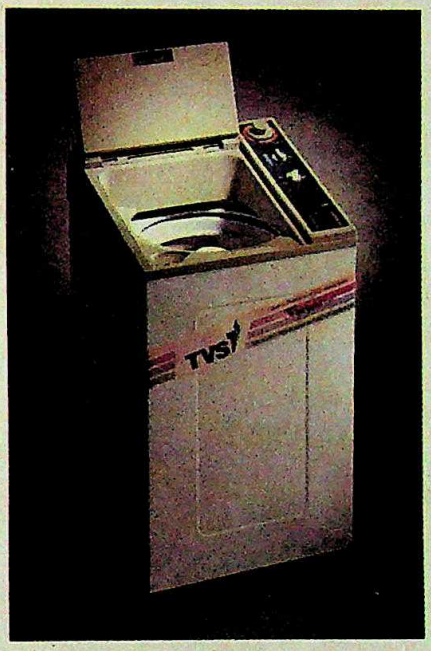

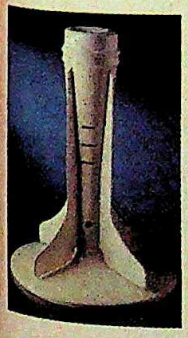

यानी 10°C से 40°C के तापमान वाले पानी से. यही सबसे बेहतरीन धुलाई है. (गर्म पानी के कुछ दुष्परिणाम होते हैं, जैसे रंग का उड़ना, सिलवटों का पड़ना, धागों का कमज़ोर होना) यही वजह है कि टी वी एस, विश्वप्रसिद्ध एजिटेटर धुलाई सिस्टम को आप तक ले आए हैं. ताकि आपको मिले, ठंडे पानी से भी बेहतरीन सफ़ाई. इसकी कपड़ों को मसलने की अनोखी क्रिया अड़ियल से अड़ियल मैल को भी खींच निकालती है. साथ ही इसकी सौम्य क्रिया आपके कपड़ों को देखभाल भी करती है और इतना सारा काम ये दूसरे कई वॉशिंग मशीनों से 50% कम बिजली ख़र्च करके निपटाती है. इसके और भी कई फ़ायदे है, जिन्हें आपके कपड़ें तो नहीं जानते, हां आपका क़रीबी टी वी एस डीलर ज़रूर जानता है.

तीन साल की वॉरंटी

पूरी तरह आटोमेटिक

TVS ACITATOR WASH

सफ़ाई में कमाल . सही देखभाल

इंडिया के सर्वप्रथम उपकरण निर्माता Whirlpool यु.एस.ए. के सहयोग से निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्त* उपहार
अधिक बचत
इंडिया टुडे की ओर से

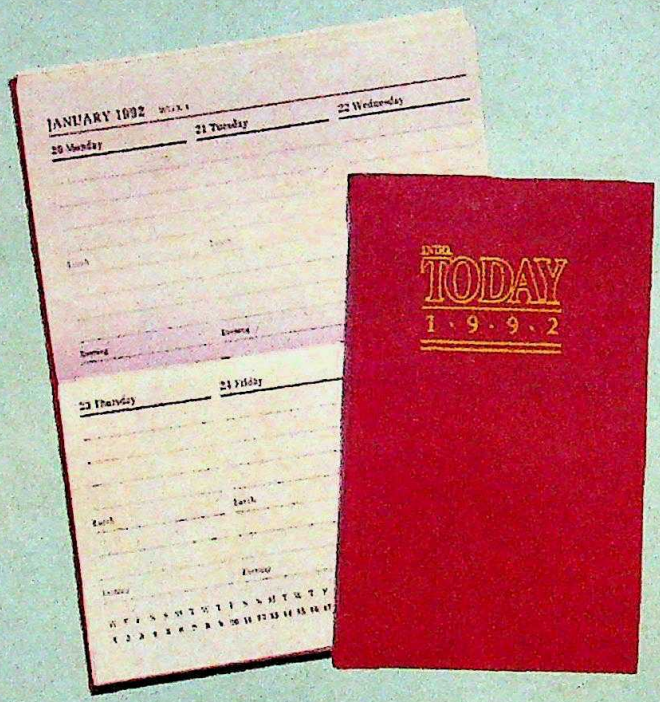

इंडिया टुडे की प्रति का मूल्य भले ही 11 रुपए हो गया है पर आप अपनी प्रति अभी भी 9 रुपए में पा सकते हैं। अभी से ग्राहक बनकर 2 रुपए प्रति बचाएं। और साथ में आपको मिले 49 रु. मूल्य की इंडिया टुडे पॉकेट डायरी बिल्कुल मुफ्त*।

इस विशेष पेशकश के लिए आपको देने होंगे :

इंडिया टुडे के वार्षिक ग्राहकी शुल्क के लिए 210 रु. और मुफ्त पॉकेट डायरी का प्रबंध और प्रेषण खर्च 15 रु.*।

इंडिया टुडे का ग्राहक बनने और मुफ्त* पॉकेट डायरी पाने के लिए आज ही रकम के साथ-साथ निम्नलिखित आर्डर फार्म भी डाक से रवाना करें।

ऑर्डर फार्म

हां। मैं विशेष उपहार पेशकश का लाभ उठाना चाहूंगा/गी। मैं (किसी एक खाने में निशान लगाएं)

☐ नया/नई ग्राहक हूं। कृपया इंडिया टुडे की मेरी वार्षिक ग्राहकी शुरू कर 1992 की मेरी मुफ्त* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी भेजें।

☐ वर्तमान ग्राहक हूं।** कृपया अगले साल तक इंडिया टुडे के लिए मेरी ग्राहकी का नवीकरण कर 1992 की मेरी मुफ्त* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी भेजें।

लिविंग मीडिया इंडिया लि. को देय मेरा ..... रु. का चेक/डीडी संख्या ..... दिनांक ..... संलग्न है।

नाम .....

पता .....

..... पिन .....

ग्राहक संख्या ..... (केवल ऐसे वर्तमान ग्राहकों के लिए जो ग्राहकी के नवीकरण के इच्छुक हैं।

कृपया ध्यान दें :

* इंडिया टुडे पॉकेट डायरी का प्रबंध और प्रेषण खर्च अतिरिक्त 15 रु. प्रति।

** इस पेशकश के तहत ग्राहकी का नवीकरण कराने के इच्छुक वर्तमान ग्राहक अपना नाम और पता वही लिखें जो इंडिया टुडे की आपकी प्रति पर लगाए गए वाहरी कव्हर के लेबल पर चिपका होता है।

– राशि लिविंग मीडिया इंडिया लि. को देय रेखांकित चेक/डीडी द्वारा ही भेजें।

– यह पेशकश 31 दिसंबर 1991 तक उपलब्ध।

– दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता और मद्रास से भेजे गए चेक/ड्राफ्ट एम आई सी आर ही होने चाहिए।

– यह पेशकश और दरें भारत में ही लागू होंगी।

– ऑर्डर पूरा करने के लिए कृपया 6-8 हफ्तों का समय दें।

– ऑर्डर फार्म न होने पर ऑर्डर कृपया नाम, पते और भुगतान के साथ निम्नलिखित पते पर भेजें :
इंडिया टुडे (हिंदी)
पोस्ट बॉक्स नं. 114, नई दिल्ली-110 001.

CC-0. JK Trust Collection. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूटान

बारूद के ढेर पर

.हिमालय की गोद में बसे देश से नेपालियों के पलायन से जातीय समस्या और गहराई

सभी फोटो सैबल दास

भूटान नरेश जिग्मे सिंगे वांग्चुक ने पिछले महीने दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस) की शिखर बैठक में जाने का कार्यक्रम रद्द करके पहली बार खुलेआम कबूल किया कि उनकी शांत रियासत में बदअमनी फैल चुकी है. नरेश का खयाल था कि उनकी गैरहाजिरी में देश में 'आतंकवाद और प्रदर्शनों' का सिलसिला बढ़ जाएगा. लेकिन अब उनके रहते हुए भी इसके घटने के

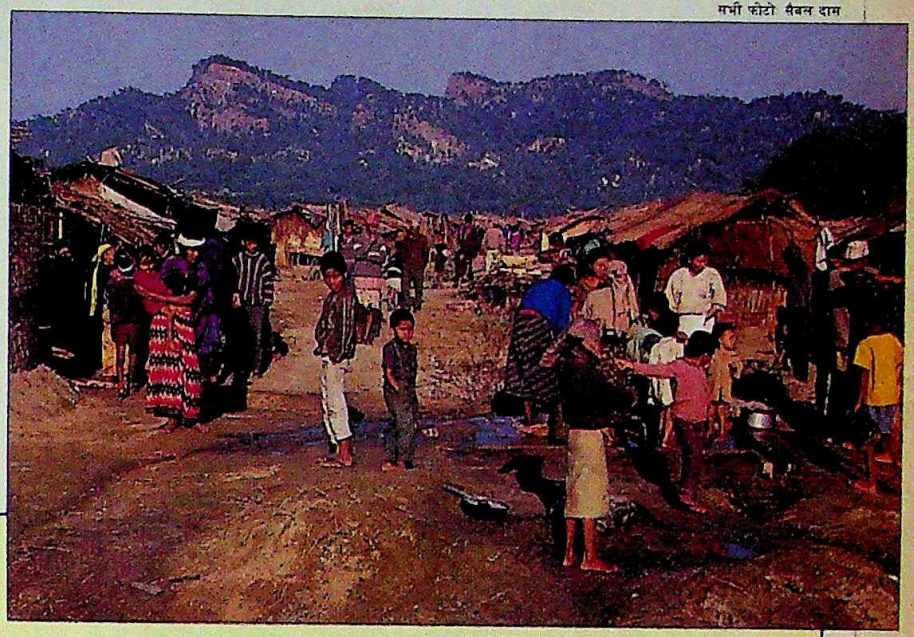

शरणार्थी शिविर

ज्यादतियों की दास्तान

मामूली धार से शुरू होकर इसने जल्दी ही बाढ़ का रूप ले लिया. इस वर्ष के शुरू से नेपाली मूल के लगभग 8,000 भूटानी शरणार्थियों को नेपाल भाग आना पड़ा. नेपाल में झापा और तिमाई शिविरों में रह रहे इन लोगों के पास शाही सेना की ज्यादतियों की ढेरों दास्तानें हैं.

दक्षिण भूटान से आए ये शरणार्थी हताशा की जीती-जागती तस्वीर हैं. झापा शिविर में 82 शरणार्थी मौत के मुंह में समा चुके हैं. इनमें आधे बच्चे थे. 31 वर्षीय चंद्रप्रसाद राय और उनकी 30 वर्षीया पत्नी बुद्धारानी के दो बच्चे भी इसी शिविर में मरे हैं. वे कहते हैं, "मुझे चिंता मर गए बच्चों की नहीं. मैं तो भूटान में रह रहे दूसरे दो बच्चों के पास लौटना चाहता हूं."

48 वर्षीय धनमान जिंबा भी अपना 25 वर्षीय पुत्र शिविर में ही गंवा चुके हैं. लेकिन वे भूटान नहीं लौटना चाहते. "वहां मेरी दवा-दारू नहीं होगी. हमें तो देशनिकाला दिया गया है."

लेकिन यह निर्वासन कहानी की शुरुआत भर है. 26 वर्षीय दोनम दोरजी चार महीने पहले सेना के अत्याचारों से बचकर भागे थे. वे बताते हैं, "मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकता था. वे लोग घरों को जला रहे थे और महिलाओं से बलात्कार कर रहे थे."

बलात्कार की दास्तानें भी अनंत हैं. माया बसनात याद करती हैं, "10 अक्तूबर की रात को तीन सैनिक मेरे घर में घुसे और मेरे पति से बाहर जाने को कहा. फिर मेरे साथ बलात्कार कर चले गए." 23 वर्षीया दिलकुमारी के साथ जेल में बलात्कार हुआ था. बाद में शिविर में दो कन्याओं को जन्म दिया

चार्ट: बी.के. शर्मा

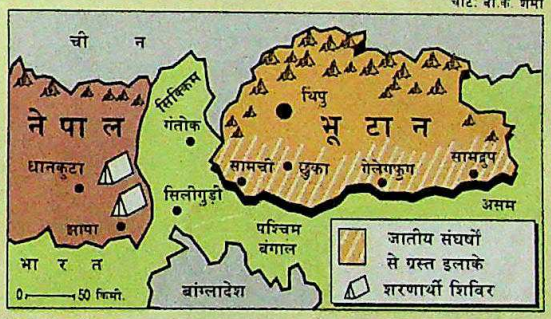

झापा शिविर में दक्षिण भूटानी

पर दोनों ही मर गईं.

अविश्वसनीय हालात से बचते शरणार्थी शिविरों में आ रहे हैं. 7 दिसंबर को 60 शरणार्थी और आए. ये सभी अपने पीछे भारी जायदाद छोड़कर आए हैं. कुछ लोगों को लोकतंत्र समर्थक बीपीपी की मदद करने के आरोप में देश छोड़ने को कहा गया. पत्नी और तीन बच्चों के साथ शिविर में आए 50 वर्षीय पूर्णबहादुर को 10 एकड़ कृषियोग्य जमीन के एवज में सिर्फ 20,000 रु. मुआवजा दिया गया. कई लोगों को तो कुछ भी नहीं मिला.

पर भूटान के विदेशमंत्री दागो त्सेरिंग इसका खंडन करते हैं. वे कहते हैं, "ये आरोप राष्ट्रविरोधियों के हैं. अब तक हमें कोई शिकायत नहीं मिली है. हम किसी को बाहर नहीं निकाल रहे. वे खुद ही जा रहे हैं."

लेकिन शरणार्थियों का आना जारी है.

—सौतिक विश्वास, झापा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

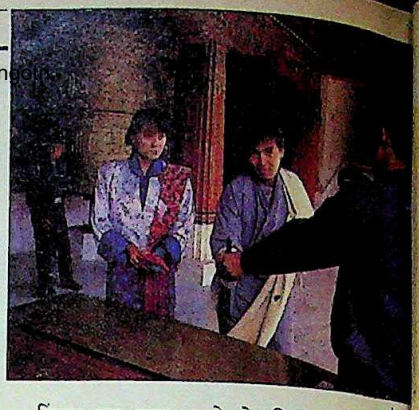

आसार नजर नहीं आ रहे. बल्कि राजतंत्र विरोधी आंदोलन और उग्र ही हुआ है और दक्षिण भूटान में जातीय झड़पें अधिक हिंसक हो गई हैं. नेपाल से आकर बसे लोगों के प्रति द्वेष भाव गहराया है. और शाही सरकार में कट्टरपंथी उसके दमन में लगे हैं. लेकिन सबसे बुरी खबर यह है कि दक्षिण भूटान में रह रहे नेपाली मूल के निवासी, जिन्हें ज़ोलोप कहते हैं, नेपाल भागने पर मजबूर हुए हैं.

बढ़ती मुसीबतें

- बीपीपी का नरेश-विरोधी आंदोलन उग्र हो गया है.
- कट्टरपंथियों ने नरेश के नरम रवैये को नकारा दिया है.
- नेपालियों के प्रति नफरत को हवा दी जा रही है.
- विदेशी सहायता बंद हो सकती है.

भारत भूटान नरेश की बढ़ती चिंताओं पर नज़र रखे हुए है. नरेश समस्याओं से घिर गए हैं, यह अक्तूबर में ही स्पष्ट हो गया था जब उन्होंने यह घोषणा कर नेशनल असेंबली को स्तब्ध कर दिया कि दो वर्षों में इन समस्याओं को नहीं सुलझा पाए तो वे गद्दी छोड़ देंगे. पर कोई समाधान फिलहाल मृगतृष्णा ही दिखता है.

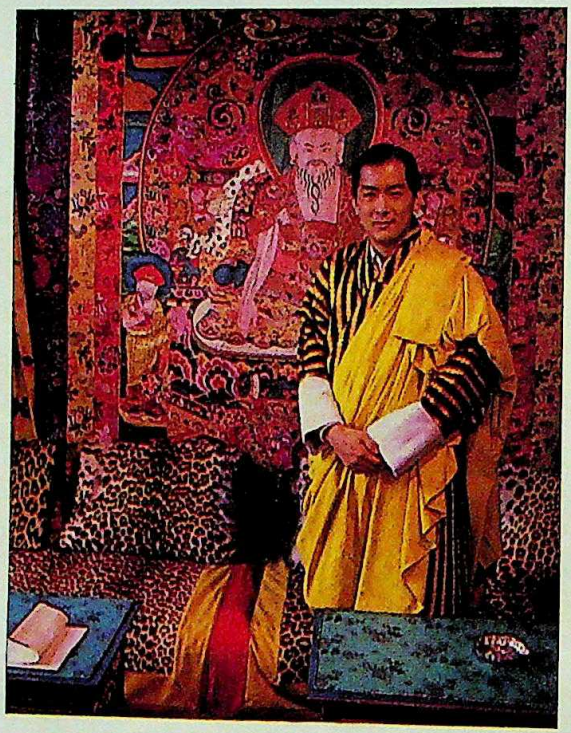

भूटान नरेश; तासिछो जोंग में पहचान पत्र की जांच

35 वर्षीय वांग्चुक हालांकि सुलह वाला रवैया अपनाना चाह रहे हैं लेकिन थिंपू के कूटनीतिक हलकों का मानना है कि तासिछो जोंग नामक सत्ता के केंद्र पर कट्टरपंथी नेता अपनी पकड़ तनिक भी ढीली नहीं करना चाहते. उन्हें नेपाल की तरह यहां भी लोकतांत्रिक आंदोलन द्वारा राजशाही को हाशिए पर धकेल दिए जाने का अंदेशा है. उन्हीं के इशारे पर शाही सरकार ने 'गैरकानूनी' नेपाली प्रवासियों को बाहर का रास्ता दिखा दिया, लोकतंत्र समर्थक भूटान पीपुल्स पार्टी (बीपीपी) पर प्रतिबंध लगा दिया और दक्षिणी भूटान के पांच जिलों को अशांत क्षेत्र घोषित कर दिया.

भारत के लिए यह चिंता का विषय है. एक तो इसलिए कि हिमालय की गोद में बसे इस देश के साथ भारत का आयात-निर्यात व्यापार संतुलन उसके पक्ष में है. दूसरे, इस देश को मिलने वाली विदेशी सहायता में 40 फीसदी हिस्सा भारत का है, जो कि छह लाख आबादी वाले इस देश के कुल बजट का 70 फीसदी है. पर जैसा कि थिंपू के दौरे पर आए एक अंतरराष्ट्रीय बैंक अधिकारी ने कहा, "यह सहायता अब दक्षिण भूटान में सरकारी सुरक्षा मजबूत करने में लगाई जाएगी. लेकिन यहां के भारतीय कूटनयिक इस बाबत बोलने से कन्नी काट रहे हैं."

भूटान के रक्षा मंत्रालय के एक अधिकारी ने यह मानते हुए कि देश में राजशाही शाश्वत नहीं है, कहा, "अभी हम लोकतंत्र के लिए तैयार नहीं हैं. अभी तो इससे खूनखराबा हो जाएगा." उनका कहना शायद ठीक ही है. तीन वर्ष पहले तक इस देश में कोई राजनैतिक गतिविधि नहीं थी. तभी सहसा बीपीपी का उदय हुआ. इस पार्टी पर प्रतिबंध भले ही है लेकिन बहुदलीय लोकतंत्र के लिए इसके आंदोलन में कई जानें जा चुकी हैं. गृह मंत्रालय ने इस बारे में कुछ चौंकाने वाले आंकड़े जारी किए हैं. अभी तक 33 हत्याएं, 174 अपहरण, 'राष्ट्रविरोधियों' द्वारा 123 मूल भूटानियों पर हमले होने के अलावा आगजनी की अनेक वारदातें तथा स्कूल, वन कार्यालयों, भंडारों, स्वास्थ्य केंद्रों और पुलों को नष्ट करने की अनेक घटनाएं हो चुकी हैं.

हिंसा पर काबू पाने के लिए देश के 2,000 पुलिसकर्मियों और 5,000 सैनिकों में से काफी बड़ी संख्या दक्षिण में तैनात की गई है. इस दबाव के चलते लगभग 8,000 ज़ोलोप अपने मूल देश को भाग जाने को मजबूर हुए (देखें बॉक्स), और एमनेस्टी इंटरनेशनल जैसी मानवाधिकार संस्थाओं द्वारा शरणार्थी शिविरों का दौरा करने से भूटान की जातीय समस्या दुनिया की नजर में आ गई है.

लेकिन समस्याएं और भी हैं. नेपाली मूल के एक लाख लोगों की समस्या अभी सुलझी नहीं है. कहीं ये लोग भूटान मूल के द्रुकपा लोगों के अस्तित्व को ही खतरा न बन जाएं, इसलिए सरकार इन्हें बाहर खदेड़ना चाहती है. सरकार नेपाली-विरोधी भावनाओं को भी हवा दे रही है. इसने भूटान के स्कूलों में 'एंटी नेशनल एक्टीविटीज़ इन साउथ भूटान— ए टैररिस्ट मूवमेंट' नाम की पुस्तिका की प्रतियां भेजी हैं. इनमें तोड़फोड़, सिर काटने और बम से उड़ाए मानव शवों के चित्र और राष्ट्र विरोधियों द्वारा की गई कथित आगजनी के चित्र शामिल हैं. थिंपू में एक कूटनयिक ने कहा, "अब सरकार नौजवानों का दिमाग नेपालियों के प्रति नफरत से भर देना चाहती है."

कट्टरपंथियों ने नरेश के नरम रवैये को भी नकार दिया है. विदेशमंत्री दागो त्सेरिंग कहते हैं, "नरेश ने सहिष्णु रवैया अपनाया है पर कई लोगों का खयाल है कि आतंकवादियों के साथ नरमी से काम नहीं चलता."

लेकिन बाहरी सहायता के मानवाधिकारों से जुड़ते जाने की वजह से दावा त्सेरिंग भी चिंतित हैं. नरेश को इस उमड़ते तूफान को रोकना ही होगा. अन्यथा अजगर अपनी फुंकार खो देगा.

—सौतिक विश्वास, थिंपू में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के रंग अजीब...

शुक्र है बोरोलीन करीब

बोरोलीन

खुशबूदार ऐन्टिसेप्टिक क्रीम
सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

जी डी फार्मास्युटिकल्स
कलकत्ता ७०००५३

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉकिन्स मिनिएचर कुकर विक्रेता

दिल्ली

चांदनी चौक भगवान दास जगन्नाथ, ६३३, कूचा नटवां के सामने • **बुध सिंह एंड संस**, १८५४, चांदनी चौक • **फतेहपुरी** रघुबीर दयाल एंड संस, ६५०४, फतेहपुरी • **गांधी नगर** झंडामल कृष्ण लाल, ४१३/१, गांधी नगर • **कमला नगर** क्रॉकरी एम्पोरियम, दुकान नं. ११-एफ • **करोल बाग** विशाल बर्तन भंडार, २५६८, अजमल खां रोड • **कोटला मुबारकपुर** भगवान दास अग्रवाल, ४८२/१, सुभाष मार्केट • **कृष्ण नगर** श्री कृष्ण बर्तन स्टोर, डी-४/१, लाल क्वार्टर मार्केट • **लाजपत नगर** नेशनल बर्तन भंडार, ३४, सेंट्रल मार्केट • **मोती नगर** भूटानी बर्तन स्टोर, मेन मार्केट • **सदर बाज़ार** ग्रोवरसंस, ३१०, निरंजन एस्टेट, प्रताप मार्केट • **सरोजिनी नगर** पंजाब बर्तन स्टोर, ६४, बाबू मार्केट • सानकला बर्तन स्टोर, ३, बाबू मार्केट • वंदना, ९३, मेन मार्केट • **सब्ज़ी मंडी** क्रॉकरी एंड एलाइड स्टोर, १५३५, चंद्रावल रोड • **त्रिनगर** जैन इलेक्ट्रॉनिक्स, १५३२, तोता राम बाज़ार • **यूसुफ सराय** जैन युटेंसिल्स, १५/२, मंदिर वाली गली • लक्ष्मी हाउस होल्ड एम्पोरियम, ७४/२, यूसुफ सराय • मुनी लाल बिशन स्वरूप, ७२/६, यूसुफ सराय • राम किशन एंड संस, ७२/७, यूसुफ सराय.

आंध्र प्रदेश

भीमावरम : रत्नम एंटरप्राइज़ेस, पी.पी. रोड ☐ **गुंटुर** : **ब्रॉडीपेट** राज्यलक्ष्मी स्टील हाउस, ४/१ लेन • **मेन रोड** मट्टुपल्ली सांबमूर्ती, अरंडलपेठ ☐ **हनुमाकोंडा** : **मेन रोड** रमेश स्टील पैलेस, पुलिस स्टेशन के पास ☐ **हैदराबाद** : **अमीरपेठ** महावीर स्टील पैलेस, सत्यम थिएटर रोड • **मेट्रो एस्टेट** विशाल होम अप्लायंसेस, अबीद रोड • **नामपल्ली स्टेशन रोड** अंजली इलेक्ट्रॉनिक्स, होटेल अप्सरा के पास • स्टील पैलेस, होटेल काकतिया के पास • **नारायणगुडा** सिटी एम्पोरियम, पुलिस क्वार्टर्स के पास • **सुल्तान बाज़ार** बलीराम स्त्रियाराम, वेजिटेबल मार्केट के पास ☐ **काकिनाडा** : **मेन रोड** गुप्ता एम्पोरियम, सूर्यराव पेठ ☐ **कर्नूल** : **पार्क रोड** आंध्र किचनवेयर्स ☐ **महबूबनगर** : **रायचूर रोड** न्यू गुप्ता ट्रेडर्स ☐ **राजामंड्री** : **फोर्ट गेट के पास** आंध्र मशीन एजेंसीज़ ☐ **सिकंदराबाद** : **राष्ट्रपती रोड** सकीनाला स्टील पैलेस, बाटा के सामने • डेक्कन आयर्न वर्क्स ☐ **विजयवाडा** : **कालेश्वर राव स्ट्रीट** श्री सत्यनारायण मेटल्स • **कोत्तगुल्लु** श्री वेंकटेश्वरा मेटल हाउस, शेषैया स्ट्रीट • **प्रकाशम रोड** ज्योति मेटल्स, गवर्नरपेठ ☐ **विशाखापट्टनम** : **मेन रोड** बॉम्बे गैस लाइट स्टोर्स, कोत रोड के पास.

अरुणाचल प्रदेश

पासीघाट : **गांधी मार्केट** अरुणाचल इलेक्ट्रिकल्स.

असम

डिब्रूगढ़ : **एच.एस. रोड** वर्मा क्रॉकरी स्टोर्स • **न्यू मार्केट** एस. दत्त एंड कं. ☐ **गुवाहाटी** : **एस.आर.सी.बी. रोड** आर. चंपकलाल (असम) एंड कं. • श्याम मेटल स्टोर्स ☐ **नलबारी** : **एन.टी. रोड** मारुती इलेक्ट्रॉनिक्स ☐ **शिवसागर** : **अस्पताल रोड** अनामिका स्टोर्स • **जे.पी. अग्रवाल पथ** हनुमान बल प्रदीप कुमार • **टॅफल रोड** विमनलाल अग्रवाल ☐ **सिलचर** : **एन.एस. एवेन्यू** रवि प्रकाश आनंद एंड कं. ☐ **तीनसुकिया** : **डेली बाज़ार** नज़ीर अहमद एंड संस • **जी.एन.बी. रोड** रवि प्रकाश आनंद एंड कं.

बिहार

बेगुसराय : **के.एन. मार्केट** बिहार कमर्शियल एजेंसी, दुकान नं. १ • **मेन रोड** देव ब्रदर्स ☐ **भागलपुर** : **डी.एन. सिंह रोड** डोकानिया एंड संस • लाइट सेंटर • मेला स्टोर्स ☐ **बोकारो स्टील सिटी** : **सेक्टर-४** अग्रिपाल, ई-४, सिटी सेंटर • बॉम्बे वेरायटी स्टोर्स, ई-१३, सिटी सेंटर ☐ **चाइबासा** : **सदर बाज़ार** के.सी. पाल एंड ब्रदर्स ☐ **दरभंगा** : **सुभाष चौक** बाबा स्टील हाउस ☐ **डेहरीओन सोन** : **सिनेमा रोड** ग्लासीना • सहेली ☐ **देवगढ़** : **श्यामगंज रोड** बैद्यनाथ इलेक्ट्रिक स्टोर्स ☐ **गया** : **जी.बी. रोड** पप्पू ट्रेडिंग कं., गोल पत्थर ☐ **जमशेदपुर** : **साकची बाज़ार** बिंदेश्वरी प्रसाद अनंत प्रसाद, डालडा लाइन • कुकर हाउस, २५, ओल्ड आलू लाइन, पान मार्केट • नील कमल स्टील सेंटर, २४, ओल्ड आलू लाइन, पान मार्केट ☐ **कटिहार** : **मंगल बाज़ार** भौमिक ब्रदर्स • **शाह कटरा** रूप रंग, न्यू मार्केट रोड ☐ **खगडिया** : **मिल रोड** श्याम इलेक्ट्रिकल्स ☐ **मोतीहारी** : **मेन रोड** दुल्हन ज्वेलरी एंड स्टील हाउस • स्टील कॉर्नर ☐ **मुंगेर** : **चौक** महेन्द्र इलेक्ट्रिक स्टोर्स • **टाउन हाल रोड** जालान ट्रेडर्स ☐ **मुज़फ़्फ़रपुर** : **सरैयागंज** बिंजराजका स्टील हाउस ☐ **पटना** : **बोरिंग रोड** एच.सी. एंटरप्राइज़ेस, नेपाली कोठी • **मुरादपुर** स्टील कॉर्नर, बांकीपुर पोस्ट ऑफ़िस के सामने • **न्यू मार्केट** साहनी इलेक्ट्रिकल्स ☐ **पुर्णिया** : **भट्टा बाज़ार** लखन लाल एंड कं ☐ **रांची** : **मेन रोड** कैलाश क्रॉकरी हाउस • दि रांची मोटर एंड साइकिल स्टोर्स, बाटा की दुकान के पास • उदयन • उजाला • उदय एजेंसीज़, खज़ांची मार्केट ☐ **रक्सौल** : **बैंक रोड** पवन जनरल स्टोर्स ☐ **सीतामढ़ी** : **मेन रोड** श्री चंद्रिका स्टोर्स ☐ **सिवान** : **नया बाज़ार** न्यू आशा स्टोर्स, दरबार मार्केट.

"देखो, मेरा अपना छोटा-सा हॉकिन्स"

हॉकिन्स के निर्माताओं द्वारा हाल ही में पेश किया गया छोटा हॉकिन्स एकदम सही-सही, उत्कृष्ट इंजीनियरिंग तकनीक से निर्मित, विश्व प्रसिद्ध हॉकिन्स यूनिवर्सल प्रेशर कुकर का खिलौना मॉडल है. बॉडी का व्यास ५·४ से.मी. असली कुकर के समान इसकी बनावट में भी शामिल हैं - दर्पण जैसी चमकदार धातु की बॉडी और ऐसा ढक्कन जिसे बिलकुल असली हॉकिन्स की तरह खोला और बंद किया जा सकता है, निकल सकनेवाला गास्केट, चार अलग-अलग रिवेट, सब सही पैमाने पर बने. ख़ास अपने छोटे-से डिब्बे में बंद मिलता है. छोटा हॉकिन्स चार वर्ष से बड़े बच्चों के लिए सुरक्षित और शिक्षाप्रद खिलौना है. यह बड़ों को भी आनंद और मनोरंजन प्रदान करता है, और रोचक चर्चा का अनूठा विषय बनता है. अधिकतम फुटकर मूल्यः रु. ७५. सूची में दर्ज विक्रेताओं व अन्य के पास उपलब्ध. कोई कठिनाई हो तो यहां लिखें:

हॉकिन्स, विभाग क्र. ६२, पी.ओ. बॉक्स १६०८३, माहिम, बम्बई ४०० ०१६.

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा

हॉकिन्स®

१ करोड़ से ज़्यादा प्रेशर कुकर बिके हैं

१९९१ कॉपीराइट अर्थसंगत

चण्डीगढ़

सेक्टर १५ डी इंडियन क्रॉकरी हाउस, दुकान नं. ४५ • **सेक्टर १७ई** जगत सिंह एंड संस, एस.सी.एफ़. ३२.

गोवा

मापसा : **रामचंद्र बिल्डिंग** मयूर एजेंसीज़, १७, रामचंद्र बिल्डिंग ☐ **मडगांव** : **न्यू मार्केट** डी.डी. सडेकर एंड संस, १०, न्यू मार्केट • **नगर पालिका के सामने** टी.डी. परोडकर • **स्टेशन रोड** टी.ए. हज़ारे एंड संस ☐ **पणजी** : **आज़ाद मैदान के सामने** एस.टी. पोकले एंड संस ☐ **पोंडा** : शांता इलेक्ट्रिक स्टोर्स ☐ **वास्को** : **डोराडो बिल्डिंग** बरकत अली ट्रेडर्स.

गुजरात

बड़ौदा : **एम.जी. रोड** कंसारा बापूलाल रणछोडजी.

हरियाणा

हिसार : **मोती बाज़ार** केवल कृष्ण इंद सैन ☐ **जगाधरी** : **मनोहर नगर** ओ.पी. मेटल इंडस्ट्रीज़ ☐ **रोहतक** : **रेलवे रोड** प्रकाश क्रॉकरी हाउस ☐ **सिरसा** : **रोड़ी बाज़ार** अग्रवाल बर्तन भंडार

हिमाचल प्रदेश

कुल्लू : **अखाड़ा बाज़ार** विगसन जनरल स्टोर

जम्मू और कश्मीर

जम्मू : **न्यू मार्केट** लघु मल देस राज जैन, न्यू मार्केट.

कर्नाटक

बंगलोर : **एवेन्यू रोड** बी.एम. एजेंसीज़, ३०१, एवेन्यू रोड • **ब्रिगेड रोड** पॉट्स एंड पैन्स, ११, कर्जन कॉम्प्लेक्स • **बी.बी.के. अयैंगार रोड** महेश इलेक्ट्रिकल्स, १४/५, बी.बी.के. अयैंगार रोड • **चिकपेट** राजा ट्रेडिंग कं., ८०२, बालेपेट स्क्वेयर के पास • रश्मी स्टील्स, ३४०, चिकपेट • **जयनगर** सारथी, १६, ९ वा मेन, ३ रा ब्लॉक • **शिवाजी नगर** ऐडम्स एंड कं., १९, रिचर्ड्स स्क्वेयर ☐ **बेलगांव** : **मारुती गली** रेवणकर इलेक्ट्रिकल्स, राम प्रसाद बिल्डिंग्स ☐ **चिकमगलूर** : **रत्नागिरी रोड** मल्टी एंटरप्राइज़ेस, पो.बॉ.नं. ८ ☐ **हासन** : **सुभाष स्क्वेयर** नॉवेल्टी हाउस ☐ **मैसूर** : **अशोका रोड** अरुणोदय, १५/१, अशोका रोड ☐ **शिवमोग्गा** : **नेहरू रोड** साधना ट्रेडिंग कं. ☐ **उडुपी** : **के.एम. मार्ग** हर्षा.

नेपाल

काठमांडू : **थमेल** मालू ट्रेडिंग, १६/७८, थमेल

केरला

अलेप्पी : **सी.सी.एन.बी. रोड** गुड मॉर्निंग एजेंसीज़ • **मुलक्कल** भीमा स्टेनलेस स्टील एंड स्टील इंडस्ट्रीज़ ☐ **अल्वाय** : **कैथलिक सेंटर** वायरलेस मेट्रो ☐ **कालिकट** : ब्राइट मेटल्स, मुतलकुलम • पंकज डिस्ट्रिब्यूटर्स, एस.एम. स्ट्रीट ☐ **कन्नूर** : स्टेनलेस स्टील सेंटर, कैम्प बाज़ार • गृहलक्ष्मी, एस.एन. पार्क रोड ☐ **एरनाकुलम** : **ब्रॉडवे** ऐंथनी फ्रांसिस एंड सन • महमूद क्रॉकरीज़, केरला वक्फ़ बोर्ड बिल्डिंग • **पालारीवट्टम जंक्शन** शांति वेसल्स • **टी.डी. रोड (नॉर्थ)** प्रॉडक्ट्स एंड सर्विसेस ☐ **इरिजालकुडा** : **बिग बाज़ार** वेल्लानीकारन एजेंसीज़, वेल्लानीकारन बिल्डिंग ☐ **कोडुगल्लूर** : **मेन रोड** करुण स्टोर्स, साउथ नाडा ☐ **कोट्टारकारा** : **मेन रोड** आयडियल एजेंसीज़, आयडियल हाउस ☐ **कोट्टयम** : **के.के. रोड** केम्स एजेंसीज़, एम.डी. कामर्स सेंटर • **पुलीमूड जंक्शन** भुवना मेटल मार्ट • सेंट ऐंथनीज़ ☐ **माही** : कर्मा एंटरप्राइज़ेस, मेन रोड • **चर्च के सामने** श्रीलेख एजेंसीज़, मेन रोड ☐ **मुवट्टुपुला** : **न्यू बाज़ार** मिनी स्टोर्स ☐ **पालघाट** : स्टील पैलेस, जी.बी. रोड ☐ **पत्तनमतिटा** : **प्राइवेट बस स्टैण्ड** लेखा ट्रेडर्स ☐ **पेरुंबवूर** : **ए.एम. रोड** पिट्टापिल्लील एजेंसीज़, वेजिटेबल मार्केट के पास ☐ **कोइलॉन** : **मेन रोड** ब्रदर्स स्टील हाउस, सुलतानिया बिल्डिंग ☐ **तलशेरी** : **नारंगपुरम** कृष्णा इलेक्ट्रॉनिक्स, ए.वी.के. नायर रोड ☐ **तोडुपुला** : **मेन रोड** मण्णूर ब्रदर्स • **माता शॉपिंग कॉम्प्लेक्स** सेंट पीटर्स एजेंसीज़, द्वारा अलप्पाट एजेंसीज़ ☐ **त्रिचूर** : **पोस्ट ऑफिस रोड** हनीफ़ ट्रेडर्स, जियो बिल्डिंग • स्टीलालयम, हेड पोस्ट ऑफ़िस के सामने • **राउंड साउथ** केरला लेदर कं., गवर्नमेंट हॉस्पिटल के पास ☐ **त्रिवंद्रम** : **चाला बाज़ार** एस. इब्राहिम एंड कं., इब्राहिम बिल्डिंग.

मध्य प्रदेश

अंबिकापुर : **सदर बाज़ार** सोना रूपा ☐ **बैतूल** : गंज बाल मुकुंद गुप्ता ☐ **भिलाई** : **कैम्प नं. २** गार्गी जनरल स्टोर्स, बी-१४, सर्कुलर मार्केट ☐ **छत्तरपुर** : **महल रोड** अग्रसेन एम्पोरियम ☐ **डबरा** : **कमला मार्केट** आधुनिक किचनवेयर ☐ **दमोह** : **सिनेमा रोड** अजंता ट्रेडर्स ☐ **गाडरवारा** : **जवाहरगंज** मंगल कलश, झंडा चौक ☐ **ग्वालियर** : **टोपी बाज़ार** पाहूराम पेसूराम लोकवानी ☐ **इन्दौर** : **जवाहर मार्ग** कुकर हाउस, दुकान नं. ३७० • **राम लक्ष्मण बाज़ार** एन आर. इलेक्ट्रॉनिक्स, दुकान नं. २३ ☐ **खण्डवा** : **एम.जी.**

(अगले पृष्ठ पर जारी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉकिन्स मिनिएचर कुकर विक्रेता

...खण्डवा प्लास्टिक सेंटर, ४६२, बॉम्बे बाज़ार ☐ ...गढ़ : मेन रोड सुप्रीम इलेक्ट्रिकल्स, नगर पालिका ...न ☐ रायपुर : मालवीय रोड सुराना सेल्स • सुरेश ...र्स • सदर बाज़ार एम.एस. ट्रेडर्स • श्री पात्र भंडार ☐ राजनन्दगांव : जुनी हाटरी छोटे साउंड सिस्टम ☐ ...लाम : दो बत्ती रूपायन स्टोर्स ☐ सिवनी: बारा ...र विशाल स्टील सेंटर.

मणीपुर

...फाल : पावना बाज़ार पासा एंटरप्राइज़ेस • थांगल ...ज़ार रूपक एजेंसी • सुदर्शन्स ☐ सिंगजामेइ : मेन ...ड न्यू वेरायटी.

महाराष्ट्र

...मदनगर : न्यू क्लॉथ मार्केट काशीनाथ त्र्यंबक रासने, ...जी. रोड, दुकान नं. २५५४ ☐ बंबई (दक्षिण ...नगर): दावर पीरज सेल्स कॉर्पोरेशन, ३३, पाध्ये वाडी, ...नी शंकर रोड • पी.बी. पुनमिया एंड कं., एम.सी ...ले मार्ग • ग्रांट रोड वेरायटी जनरल स्टोर्स, २९७, ...टन रोड ☐ मध्य उपनगर : चेंबूर नटराज ...ोरियम, स्टेशन रोड • सिल्वर सेंटर, ३, लक्ष्मी मार्केट ...सायन सर्कल श्री मुरूगन स्टील हाउस, ११/३९, ...लैंड कॉर्नर ☐ पश्चिम उपनगर : बोरिवली (प.) ...ल स्टील सेंटर, १८, गोयल शॉपिंग सेंटर • ...णिक सेंटर, एस.वी. रोड • विले पार्ले (पू.) मनसुख ...ल मार्ट (मनसुख डिस्ट्रिब्यूटर्स), २९(बी), अग्रवाल ...र्केट ☐ डोंबिवली (पू) : फडके रोड मुकेश स्टील ...ड नॉवेल्टीज़, दामले बिल्डिंग ☐ कल्यान : बाज़ार पेठ ...त अप्लायेंसेस, विष्णु मंदिर के सामने ☐ कोल्हापुर ...पुरी बी.टी. वनकुद्रे ☐ नागपुर : इतवारी बंदेअली ...म्मदअली, भंडारा रोड • सीताबल्डी मेघना मेटल्स, ...र मार्केट ☐ नासिक : बर्तन बाज़ार, प्रकाश ...दास काले, ८४८, बर्तन बाज़ार • शिवाजी रोड ...य ट्रेडिंग कं., शालिमार बिल्डिंग • वीर सावरकर पथ ...सुखलाल नारायणदास ☐ पिंपरी : आर्य समाज के ...ल राज कुमार एंटरप्राइज़ ☐ पुने : कर्वे रोड जैन ...ल्स, बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र के सामने, ३९/२४ बी, कर्वे ...ड • रविवार पेठ मेहता ब्रदर्स, फूलवाला चौक, २०६, ...वार पेठ • राजेंद्र एंड कं., दारुवाला पुल, ८९४, ...वार पेठ ☐ सांगली : हरभट रोड भगाटे स्टील ...र, आरवडे हायस्कूल के पास • मेन रोड श्री अमेय ...ल सेंटर, करमरकर बिल्डिंग ☐ सातारा : मनीष ...र्केट ठोंबरे नॉवेल्टीज़, पैलेस स्ट्रीट ☐ सोलापूर : नवी ...ल स्टील सेंटर, ४ ए, एल.बी. शास्त्री शॉपिंग सेंटर • ...लापुर स्टेनलेस स्टील हाउस, ४, पारस एस्टेट ☐ ...ने : गोखले रोड, नौपाडा महावीर, हेम शॉपिंग सेंटर ☐ उंब्रज : मेन रोड एस.एम. मोहिरे ☐ वाशी : ...टर-१७ मुरुगुन एंटरप्राइज़ेस, दुकान नं. ५५, बिग ...ल.

मेघालय

शिलॉंग : बावरी मैंशन वी.के.घई एंड कं., थानखेती.

उड़ीसा

...गढ़ : मेन रोड अशोक इलेक्ट्रिकल्स ☐ बड़बिल : ...न रोड भवानी वेरायटीज़ ☐ बेरहमपुर : भापुर बाज़ार ...ला गोपालम एंड संस • गिरि मार्केट एलाइड स्टोर्स • ...न-बे ट्राफ़िक रोड जे.के. एंटरप्राइज़ेस • साना बाज़ार ...वेंद्र एंड कं. ☐ ब्रजराजनगर : मेन रोड महेंद्र ☐ ...टक : महताब रोड इंडियन इंडस्ट्रीज़ • तिनिकोनिया ...ीया सुनीता ☐ जशीपुर : मेन रोड जनता एजेंसीज़ ☐ झारसुगुड़ा : मेन रोड झारसुगुड़ा मेटल स्टोर ☐ ...ुआर : न्यू मार्केट प्रिया स्टोर • श्री दुर्गा एजेंसीज़ ☐ ...गुड़ा : मेन रोड राजेश बुक स्टोर ☐ फूलबानी : ...न रोड अर्जुन सेनापती एंड संस ☐ राजगांगपुर : मेन ...ड प्रदीप स्टोर्स ☐ राउरकेला : फर्टिलाइज़र ...प्लीज़ श्री बलदेवजी एंटरप्राइज़र्स • सेक्टर-५ मार्केट ...ल्टीज़, दुकान नं. १ • सिलेक्शन सेंटर, दुकान नं. १६.

पंजाब

...मृतसर : हाल बाज़ार रघुबीर सिंह कटारिया एंड संस • ...ल बाज़ार पुरी बैटरी स्टोर ☐ भटिण्डा : धोबी ...ज़ार गोयल बर्तन स्टोर • गांधी मार्केट कंचन क्रॉकरी ...ल • सुभाष एंड कं. ☐ जालंधर : बाज़ार शेखां ...दा शॉपिंग सेंटर • जी.टी. रोड जे. ओम प्रकाश एंड संस, सिविल हस्पताल के सामने • नया बाज़ार बॉम्बे स्टेनलेस स्टील (रजि.), मिलाप चौक के पास ☐ कोटकपूरा : रेलवे रोड आहूजा गिफ्ट हाउस ☐ मोगा : बाग गली क्रॉकरी पैलेस • मेन बाज़ार नंदकिशोर अग्रवाल एंड संस ☐ पठानकोट : मेन बाज़ार सिंगला गिफ्ट हाउस ☐ फगवाड़ा : लोहा मण्डी रोड ए.के ट्रेडर्स, द्वारा तिलक राज दर्शन कुमार माटा.

राजस्थान

अलवर : होप सर्कस जनता बर्तन भंडार, दुकान नं. ३९ ☐ भरतपुर : नीम दा गेट किशोरी श्याम ब्रिजेश कुमार ☐ जयपुर : नेहरू बाज़ार अशोका डिपार्टमेंटल स्टोर, मयूर सिनेमा के पास • राजा पार्क लॉंग लाइफ डिपार्टमेंटल स्टोर, ३७२, गली नं. १ ☐ खेतड़ीनगर : सुभाष मार्केट अमर ज्योति फैंसी स्टोर, दुकान नं. ३८ ☐ सीकर : नेहरू मार्ग सीकर बर्तन भंडार.

तमिलनाडु

चिदम्बरम : साउथ कार स्ट्रीट श्री विनायक पातिरकडइ, २५, साउथ कार स्ट्रीट ☐ कोइंबतूर : लक्ष्मी कॉम्प्लेक्स कोवइ स्टील्स, ४८, गांधीपुरम • आर.एस. पुरम आयडियल गिफ्ट हाउस, नं. ८, ईस्ट भास्यगारुलू रोड ☐ दिंडीगल : बिग बाज़ार एस.एम.बी. माणिकम नाडार (फ़र्म) १६३-१६४, बिग बाज़ार • सेंट मेरीज़ शॉपिंग कॉम्प्लेक्स एस.एम.बी.एम. ट्रेडर्स, ४१, माता बिल्डिंग, मेन रोड ☐ ईरोड : माधव कृष्ण स्ट्रीट यूनिवर्सल ट्रेडर्स, ३२, माधव कृष्ण स्ट्रीट ☐ मद्रास : अडैयार सेल्व विनायगार स्टोर्स ७३/१, एल.बी. रोड • अलवारपेट संतोष नाडार एजेंसी, १७, बीमण्णा मुदली स्ट्रीट • ईविनिंग बाज़ार एम.ए. एतिराजुलु नायडु, १८, ईविनिंग बाज़ार • पी.एल.डी. राजेंद्रन ब्रदर्स, १५-सी, ईविनिंग बाज़ार • एस. संतोष नाडार सन (फ़र्म), ८८, नायनीअप्पा नायकर स्ट्रीट • पुरसवाक्कम राजा मेटल स्टोर, २६४, पुरसवाक्कम हाय रोड • टी. नगर रत्ना मेटल्स, ५५, रंगनाथन स्ट्रीट • रत्ना स्टोर्स (फ़र्म), ४७-ए, पाँडी बाज़ार • शबरी डिस्ट्रिब्यूटर्स, नं. ६४, रत्ना कॉम्प्लेक्स, रंगनाथन स्ट्रीट • सरवणा स्टोर्स, १३, रंगनाथन स्ट्रीट • सुदर स्टोर्स, ६८, उस्मान रोड ☐ मदुरई : अम्मन सन्नदी एस. संतोष नाडार कॉर्पोरेशन, नं. ३, अम्मन सन्नदी • ईस्ट अवनी मूला स्ट्रीट इब्राहिम एंड कं. ९०-९२, ईस्ट अवनी मूला स्ट्रीट • ईस्ट वेली स्ट्रीट आत्विनराज मेटल सेंटर, १८०-१८१, ईस्ट वेली स्ट्रीट • कामराजर सालइ एस. चेल्लैया नाडार एंड संस, २६७, कामराजर सालइ • नेताजी रोड न्यू मुथुसेल्वी कॉर्पोरेशन, १०९, नेताजी रोड • साउथ अवनी मूला स्ट्रीट अनंत स्टोर्स, ४२, साउथ अवनी मूला स्ट्रीट ☐ मार्थान्डम : नॉर्थ स्ट्रीट ताय सुब्बैयन मेटल्स, ३२-९८, नॉर्थ स्ट्रीट ☐ नागरकोइल : कोर्ट रोड पोनैया एंटरप्राइज़ेस, ११७, कोर्ट रोड ☐ पट्टुकोटई : तलइवारी स्ट्रीट श्री रामू फ़र्निचर, १९, तलइवारी स्ट्रीट ☐ सेलम : बाज़ार स्ट्रीट नैशनल एजेंसीज़, ३४८, बाज़ार स्ट्रीट • वी. चंद्रशेखरम एंड कं., ३६१, बाज़ार स्ट्रीट • वी. चंद्रशेखरम एंड संस, ३५७, बाज़ार स्ट्रीट • बिग बाज़ार स्ट्रीट वी.सी.आर. मेटल कं., ८७, बिग बाज़ार स्ट्रीट ☐ सिवाकासी : साउथ कार स्ट्रीट एम.वी.के.डी. तंगवेलु नाडार, ८, साउथ कार स्ट्रीट ☐ तेनी : सुब्बन चेट्टी स्ट्रीट गिरि ट्रेडर्स, २९९, सुब्बन चेट्टी स्ट्रीट ☐ तिरुनलवेली : हाय रोड एस. संतोष नाडार एंड संस, ३७, हाय रोड ☐ तिरुप्पूर : ईश्वरन कोइल स्ट्रीट कविता एजेंसी, ४५, ईश्वरन कोइल स्ट्रीट ☐ त्रिची : डबल माल स्ट्रीट श्री मंगल एंटरप्राइज़ेस, १९, डबल माल स्ट्रीट • एन.एस.बी. रोड प्रेमा एवरसिल्वर पैलेस, ४१, एन.एस.बी. रोड ☐ वेल्लूर : आर्कोट रोड सीनू एजेंसीज़, नं. ८०, आर्कोट रोड • मेन मार्केट ब्राइट स्टील हाउस, जी-३१, मेन मार्केट ☐ विरुदुनगर : कचहरी रोड जेमिनी एजेंसीज़, २०३, कचहरी रोड.

उत्तर प्रदेश

आगरा : जौहरी बाज़ार दादा ग्लास एंड क्रॉकरीज़ ☐ अलीगढ़: रेलवे रोड गुलाटी स्टोर्स, न्यू मार्केट • जय भारत क्रॉकरी हाउस ☐ इलाहाबाद : चौक गुर प्रसाद हीरा लाल • कटड़ा जैन ट्रेडिंग कंपनी, ११४३, कटड़ा क्रॉसिंग • बिजली घर के पास नॉवेल्टी हाउस, ६-सी, कमला नेहरू मार्ग • दि सायर कंपनी • विवेकानंद मार्ग डायमण्ड टी सेल्स, चमेली धर्मशाला के सामने ☐ बलिया : स्टेशन मालगोदाम रोड विजय गन हाउस ☐ बहराईच : चौक बाज़ार श्याम लाल एंड संस ☐ बरेली : नैनीताल रोड दुआ ब्रदर्स ☐ बुलंदशहर : अंसारी रोड कसल क्रॉकरी स्टोर ☐ देवरिया : मोतीलाल रोड ओम स्टोर्स ☐ देहरादून : फ़ल्टन बाज़ार सुशील एंड कंपनी, दुकान नं. ९५ • वेद प्रकाश गोयल, दुकान नं. १२० ☐ फ़ैज़ाबाद : चौक करीम खान ☐ गोण्डा : उत्तरीला रोड पारस स्टील एम्पोरियम, राजा रघुरन मार्केट ☐ गोरखपुर : सिनेमा रोड गनेशी लाल एंड संस • गोलघर फ़ाइन क्रॉकरी हाउस, १६, जल कल भवन • गनेशी लाल राम निवास एजेंसीज़, स्टेशन रोड • मॉडर्न क्रॉकरी म्यूज़ियम, १८, जल कल भवन • टाउन हॉल विजय एजेंसीज़, दुकान नं. १६-१७ ☐ हलद्वानी : बरेली रोड सरदार क्रॉकरी हाउस, सिंधी स्वीट्स के पास • कारखाना बाज़ार बॉम्बे क्रॉकरी हाउस ☐ हापुड़ : रेलवे रोड क्रॉकरी सेंटर, गांधी भवन ☐ हरिद्वार : मोती बाज़ार ओम प्रकाश चेला राम ☐ जौनपुर : हरलालका रोड ग्लास स्टोर ☐ ज्वालापुर : मेन बाज़ार न्यू विमल मेटल्स ☐ कानपुर : बिरहाना रोड एम.के. ट्रेडर्स (बर्तनवाले), ५८/४५, बिरहाना रोड • गुमटी नं. ५ ईश इलेक्ट्रिकल्स, ११८/२, कौशल पुरी, जय हिंद सिनेमा के सामने • लक्ष्मी स्टील हाउस, ११८/१६४, कौशल पुरी • हर्ष नगर एम.के. एजेंसीज़, दुकान नं. १११/२, पहली मंज़िल, बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने • नवीन मार्केट कुमार फैंसी स्टोर्स, दुकान नं. ११४ ☐ लखनऊ : अमीनाबाद राम सरन एंड कंपनी • नज़ीराबाद चमन लाल अग्रवाल एंड संस, द्वारा कन्हैया लाल प्राग दास, दुकान नं. ७ • याहिया गंज कन्हैया लाल प्राग दास, पीली कोठी ☐ मेरठ : पान दरीबा मॉडर्न लाईट हाउस, २२२, खैर नगर बाज़ार ☐ मिर्ज़ापुर : वैसली गंज कृष्णा इलेक्ट्रिकल एजेंसी, सरदार भगत सिंह मार्ग ☐ मुरादाबाद : बाज़ार गंज क्रॉकरी एम्पोरियम, कोतवाली के सामने • चौमुखापुल प्रेम क्रॉकरीज़, अमरोहा गेट ☐ मुज़फ़्फ़रनगर : कचहरी रोड गोयल एजेंसीज़ ☐ नजीबाबाद : बाज़ार चौक क्वालिटी एम्पोरियम ☐ रेणुकूट : सुपर बाज़ार हिण्डालको ☐ ऋषिकेश : क्षेत्र रोड मोती राम रमाकांत ☐ रुड़की : सिविल लाइन्स मुरादाबाद हाउस ☐ रूपैड़िया : रामदूत स्टोर्स ☐ सहारनपुर : नेहरू मार्केट निहाल चंद हरबंस लाल, दुकान नं. १४ ☐ शक्तिनगर : विद्युत विहार ज्योति स्टोर्स, दुकान नं. ६, शॉपिंग सेंटर ☐ सुलतानपुर : शाह गंज चौक एस. आर. स्टील एम्पोरियम, लाला सूरज लाल मार्केट ☐ वाराणसी : बांस फाटक गिरधर दास एंड संस • लहुराबीर यू.पी. ग्लास स्टोर्स, दुकान नं. सी-२६/१० बी, स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने • नीची बाग रसोईघर, बाटा शू कंपनी के पास.

पश्चिम बंगाल

अलिपुरद्वार : न्यू टाउन बासंती इलेक्ट्रिक स्टोर्स ☐ आमतोला : कन्यानगर प्रभास चंद साहा ☐ आरामबाग : गर्ल्स स्कूल के पास न्यू रामकृष्ण बासनालय ☐ आसनसोल : पुराना बस स्टैण्ड के पास ईगल ग्लास हाउस, जी.टी. रोड ☐ बांकुड़ा : नूतनगंज पापुलर फ़र्निचर सिंडिकेट, डॉ. एस.पी. मुखर्जी रोड ☐ बाली : बाली बाज़ार अन्नपूर्णा स्टोर्स, ४/१, ईश्वर डे लेन ☐ बालूरघाट : लेनिन सरणी श्री कृष्ण स्टोर्स ☐ बारासात : कैपिटल मार्केट न्यू संसार ☐ बेरहमपुर : आजकल, ५३, बन बिहारी सेन रोड ☐ भद्रकाली : क्वालिटी स्टोर्स, ६९, बी.एफ़.बी. सारणी ☐ भद्रेश्वर : भद्रेश्वर बाज़ार सोनाली, ६५, जी.टी. रोड ☐ बैंची : बैंची रेल गेट सोनारतरी ☐ बर्दमान : थाना के पास प्रयोजनी, ४९७, बी.सी. रोड • शिल्पा सदन, २५, बी.सी. रोड • लेंतुलतला वेस्ट बंगाल स्टोर्स, बी.बी. घोष रोड ☐ कलकत्ता : आलम बाज़ार वीनस, २, कालीकृष्ण टैगोर रोड • बागरी मार्केट युनाइटेड स्टेशनर्स, सी-२१, बागरी मार्केट • विनोद एंड कं., डी-५, बागरी मार्केट • बागुइआटी दुर्गावाड़ी मणिमाला, ए.ए./१२, बागुइआटी रोड • बागुइआटी एम.जी. इलेक्ट्रॉनिक्स, बागुइआटी बाज़ार • बड़ा बाज़ार मोहनलाल माधवजी, ५९, कॉटन स्ट्रीट • बेहाला न्यू बेहाला स्टील हाउस, ४००/१, डी.एच.रोड • बेलियाघाट संसार, १२३, हेमचंद्र नस्कर रोड • भवानीपुर अमिता स्टोर्स, १४४ए, ए. मुखर्जी रोड • पोर्सिलीन स्टोर्स, २ बी, एस.पी. मुखर्जी रोड • बिराटी प्रियव्रत एजेंसी, रेलवे क्वार्टर के पीछे • चांदनी चौक क्रॉकरी सेंटर, ४१-बी, चांदनी चौक • नाग एंड सन, ६, चांदनी चौक स्ट्रीट • कॉलेज स्ट्रीट मार्केट दत्त ब्रदर्स, ४१/४२, कॉलेज स्ट्रीट • देशप्रिया पार्क नेपाल शंकर एंड कं., ८५, रास बिहारी एवेन्यू • गड़िया यूनाइटेड सेल्स एम्पोरियम, पी-४५, राजा एस.सी. मल्लिक रोड • गोलपार्क टी.आर. इलेक्ट्रिक कं., २३/३७, गड़ियाहाट रोड • हातीबागान अशोक ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन, ८३/२ ई, बिधान सरणी • मॉडर्न म्यूज़ियम, १३७, बिधान सरणी • हाज़रा रोड श्याम ट्रेडर्स, ६२/१ए, हाज़रा रोड • हेदुआ अवंतिका इलेक्ट्रॉनिक, १७३/३, बिधान सरणी • इटलगाछा आनंद ट्रेडर्स, २२, तरुण सेनगुप्ता सरणी (१ नं. एयरपोर्ट गेट) • लेक मार्केट लेक बासन स्टोर्स, १०४, रास बिहारी एवेन्यू • श्री दुर्गा स्टोर्स, डी-५ १०४, रास बिहारी एवेन्यू • नागेरबाज़ार सुजाता एंटरप्राइज़ेस, ६, ए.एम. बोस रोड (सातगाछी मोड़ के पास) • ओल्ड चीना बाज़ार अमरनाथ कुंडु एंड ब्रदर्स, १४/३, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट • लैम्प हाउस प्राइवेट लिमिटेड, २३, कैनिंग स्ट्रीट • पैरेगान ट्रेड सेंटर, १७, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट • एस. एल. कुंडु एंड कं., दुकान नं. २०६, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट • सातकड़ी दास एंड कं., १९६, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट • पोस्ता नंदी स्टोर्स, ५०, कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट • निर्मल चंद्र नंदी • शियालदह लक्ष्मीनारायण बासनालय, १३३/एच, ए.जे.सी. बोस रोड (अशोका होटेल के नीचे) • रूबी साइकिल स्टोर्स, ११, एम.जी. रोड, छबिघर सिनेमा के सामने • शीतला एजेंसी, ९ए, एम.जी. रोड • तारकनाथ स्टोर्स, १५१ए, बी.बी. गांगुली स्ट्रीट (कोले मार्केट के पास) • श्याम बाज़ार संगीता एंटरप्राइज़ेस, १२३, बिधान सरणी • टॉबिन रोड मल्लिका इलेक्ट्रॉनिक्स, ८३/२, बी.टी. रोड ☐ चाकदाह : बस स्टैण्ड बासन बिपनी, बनग्राम रोड • पोस्ट ऑफ़िस के सामने स्टील वेरायटी, एन.एस. रोड ☐ चंदननगर : लक्ष्मीगंज बाज़ार वेस्टर्न ट्रेडिंग कं. ☐ चिन्सुरा : छड़ुआ बाज़ार महादेव कुंडु एंड कं. ☐ चित्तरंजन : अमलादही मार्केट मॉडर्न स्टील फ़र्निचर (यूनिवर्सल), ए-१/आर-३, दुकान नं. ☐ कांथि : मेन रोड सावित्री भंडार ☐ धनियाखालि : धनियाखालि बाज़ार कोहिनूर स्टील फ़र्निचर ☐ डायमण्ड हार्बर : बटकृष्ण पाल एंड ब्रदर्स, यूको बैंक के पास ☐ दिनहाटा : चौड़ाहाट वैद्यनाथ साहा एंड ब्रदर्स ☐ दुर्गाचौक : कॉलनी मार्केट प्रतीक ☐ दुर्गापुर : बेनाचिति दीप्ति • चण्डीदास मार्केट प्रिन्स • स्टेशन बाज़ार रकमारी, स्टेशन रोड • रूज ब्रदर्स, द्वारा असित कुमार रूज, हटतला रोड ☐ फ़ाराक्का : चित्तरंजन मार्केट मॉडर्न ट्रेडिंग एजेंसी, दुकान नं. ६-१९ ☐ घाटाल : कूठी बाज़ार तैजसपात्र ☐ हावड़ा : माकाली भंडार, जेसोर रोड ☐ हावड़ा : बंगवासी सिनेमा के सामने हावड़ा इलेक्ट्रॉनिक्स, ४, चिंतामणी दे रोड • कालीबाबूर बाज़ार इलेक्ट्रोसाउंड, ३२४, एन.एस. रोड • शिवपुर बाज़ार श्री गुरु बासनालय, ३४/२, शिवपुर रोड ☐ जियागंज : चूरीपट्टी जोगमाया स्टोर्स (लक्ष्मी सिनेमा के सामने) ☐ कांचड़ापाड़ा : बंगलक्ष्मी बासनालय, वर्कशॉप रोड ☐ खड़गपुर : डी.वी.सी. मार्केट कुसुम स्टील एम्पोरियम, तालबगीचा • गोल बाज़ार अरविंद स्टोर्स, ८७, रेलवे मार्केट ☐ किर्नाहार : किर्नाहार बाज़ार विचित्रा स्टोर्स ☐ मालदह : डी.सी. आर. मार्केट श्री विश्वनाथ स्टोर्स, ३/६२, डी.सी.आर. मार्केट • पुराना बाटा के पास रेडियो साइन, नेताजी सुभाष रोड ☐ मेदिनीपुर : बड़ा बाज़ार ट्रंक हाउस • बीबीगंज चावड़ि एंटरप्राइज़, राणा गराज के पास • स्कूल बाज़ार दास इलेक्ट्रॉनिक्स ☐ पुरुलिया : टेलिग्राफ़ ऑफ़िस के पास मोनिका, चाइबासा रोड ☐ रघुनाथगंज : बाज़ारपाड़ा प्रभात स्टोर्स (दुलु की दुकान) • सदर घाट सुकाता, म्युनिसिपल सुपर मार्केट ☐ श्रीरामपुर : बटतला वेस्ट, ७९, जी.टी. रोड • मानसी सिनेमा के सामने ईस्ट एंड ट्रेडर्स, ३९, एन.एस. एवेन्यू ☐ शियाखाला : शियाखाला बाज़ार शियाखाला बासनालय ☐ सिलिगुड़ी : आलुपट्टी नीलम, मेटल मार्केट • विधान मार्केट गृहश्री • नदिया स्टोर्स, बी-३ (आर.), बिधान मार्केट • स्टेनलेस हाउस, ए/९३, बिधान मार्केट • हिल कार्ट रोड महेश्वरी मेटल स्टोर्स ☐ सिमूरालि : कुंडु बासनालय ☐ सोदपुर : विद्यासागर कॉर्नर प्रयोजनी, स्टेशन रोड ☐ सोनामुखी : रफ़तला पाल्स फ़र्निचर ☐ तमलुक : टाउन पदुमबासन ताम्रलिप्ता अलूमिनियम स्टोर्स, पासकुड़ा बस स्टैण्ड के पास ☐ तारकेश्वर : बी.पी.आर. गेट सुपर सॉनिक रेडियो ☐ उलुबेड़िया : हेमंत बसू मार्केट के पास रक्षित स्टील स्टोर्स, उलुबेड़िया बाज़ार ☐ उत्तरपाड़ा : उत्तरपाड़ा बाज़ार तापसी, २१९, जी.टी. रोड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागराजन कांड, और द्रमुक

चूक करके चक्कर में फंसे

राज्य के पूर्व गृह सचिव नागराजन ने द्रमुक नेता करुणानिधि के खिलाफ बयान देकर द्रमुक को जिस तरह परेशानी में डाल दिया है उस का असर राज्य की राजनीति पर भी पड़ सकता है

—प्रकाश एम. स्वामी

तमिलनाडु में एलटीटीई की गतिविधियों की ओर से आंखें फेर लेने की भूल पूर्व मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि को अब भारी पड़ रही है. पूर्व गृह सचिव आर. नागराजन ने अपनी गिरफ्तारी के बाद अपने बचाव में कहा कि उन्होंने महज राजनैतिक आकाओं के आदेशों का पालन किया था. उनके इस बयान के बाद राज्य भर में अटकलें लगाई जाती रही हैं कि करुणानिधि को गिरफ्तार कर लिया जाएगा. पहले से ही संकटों से घिरे द्रमुक प्रमुख को मजा चखाने को कटिबद्ध-सी दिखती जयललिता सरकार ने उनके मातहत काम कर चुके कई पुलिस अफसरों और नौकरशाहों के साथ-साथ कई बड़े पार्टी नेताओं को भी गिरफ्तार करने की सूची बनाई है. द्रमुक से बड़े पैमाने पर पलायन की संभावना के मद्देनजर राजीव गांधी हत्याकांड की पड़ताल का नतीजा अब राजनैतिक झगड़े के रूप में सामने आ रहा है.

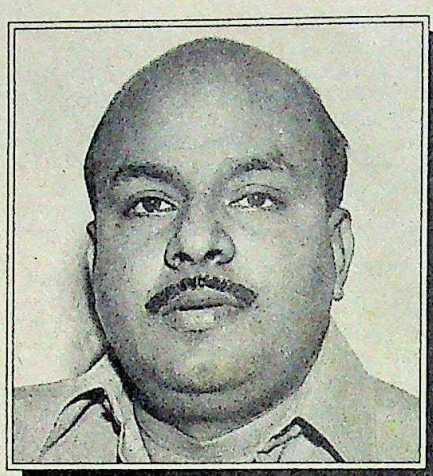

नागराजन ने तमिलनाडु को मुक्ति चीतों की मांद बनने देने के लिए करुणानिधि को दोषी ठहराया है

नागराजन करुणानिधि के प्रशासन में सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी थे. उन्होंने कहा कि उनके खिलाफ 'टाडा' से संबंधित जो आरोप लगाए गए हैं, वे प्रशासनिक खामियां नहीं बल्कि राजनीति से संबंधित थीं. यह आरोप भी है कि नागराजन ने ईपीआरएलएफ नेता पद्मनाभ के हत्यारों के पीछे न पड़ने के लिए मद्रास के डीसीपी को मौखिक निर्देश दिए थे. पूर्व गृह सचिव ने तमिलनाडु को तमिल मुक्ति चीतों की मांद बनने देने के लिए पूरी तरह से करुणानिधि और पूर्व मुख्य सचिव (जो अब केंद्र में खेल सचिव हैं) एम.एम. राजेंद्रन को दोषी ठहराया है.

हालांकि, 'टाडा' के तहत नागराजन के बयान का इस्तेमाल दूसरों को गिरफ्तार करने के लिए किया जा सकता है, और राज्य पुलिस की 'क्यू' शाखा का दावा है कि उनके पास करुणानिधि के खिलाफ प्रथम दृष्टया सबूत मौजूद हैं लेकिन उन्हें शायद अभी गिरफ्तार नहीं किया जाएगा. लोगों का मानना है कि जयललिता करुणानिधि को 'शहीद' नहीं बनने देंगी. बल्कि समाचार जगत और जनता के हाथों ही उनकी मिट्टी पलीद होने देंगी.

उधर, करुणानिधि ने घोषणा की कि नागराजन के बयान को बदला गया है. उन्होंने बयान की मूल प्रति भी पेश की और कहा,

जांच

बड़ी मछली

विशेष जांच दल एलटीटीई प्रमुख वी. प्रभाकरन के खिलाफ यह आरोप पत्र तैयार कर रहा है कि उन्होंने राजीव गांधी की हत्या के आदेश दिए थे. साथ ही राज्य में एलटीटीई द्वारा की गई दूसरी हत्याओं की जांच का काम भी शुरू हो गया है. जयललिता सरकार ने इसके लिए तमिलनाडु विशेष जांच दल बनाया है. पुलिस महानिदेशक एस.श्रीपाल के दिमाग की उपज इस दल के मुखिया आईजी पी.सी. पंत होंगे.

शिवरासन गुट के सदस्य मुरुगन ने माना है कि एलटीटीई मुख्यालय से

प्रमोद पुष्करणा

प्रभाकरन: जद में

निर्देश मिलने के बाद उसने हत्या की साजिश अंजाम दी. भारत में एलटीटीई के लिए संपर्क बनाने वाले संतन की उस चिट्ठी का भी आरोप पत्र में इस्तेमाल किया जाएगा जिसमें उसने अपने नेता को 'आदेश' पालन हो जाने की सूचना दी थी.

श्रीकांत की गिरफ्तारी से भी कई सुराग मिले हैं. उसकी सूचना के आधार पर द्रमुक कार्यकर्ता टी. मरिमूकी को गिरफ्तार कर लिया गया. 'क्यू' शाखा करुणानिधि के बेटे अषगिरि पर भी नजर रख रही है. अषगिरि का दोस्त जॉर्ज उस गाड़ी में था जिसका इस्तेमाल एलटीटीई ने एक पुलिसवाले और एक नागरिक को मारने के लिए किया था. मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के अध्यक्ष ए.बलराज पर भी नजर रखी जा रही है जिनके अतिथि गृह में करुणानिधि ने एलटीटीई के नेताओं से भेंट की थी.

—प्रकाश एम. स्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धिमानी से चलिए चाल

पूंजी लाभ को कर-मुक्त बनाने के लिए बेहतरीन निवेश

आईडीबीआई पूंजी बांड

ज़मीन जायदाद, ज़ेवरों, शेयरों आदि की बिक्री से अर्जित दीर्घकालीन पूंजी लाभ पर आयकर लगता है. लेकिन इससे राहत पाइए. आई.डी.बी.आई. पूंजी बांड में निवेश कीजिए. अपनी पूंजी सुरक्षित रखिये और ब्याज भी कमाइए.

- बांड सालभर सममूल्य पर उपलब्ध.
- आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 54E के अंतर्गत पूंजी लाभ पर कर नहीं.
- धारा 80L के अंतर्गत आयकर में लाभ.
- संपत्तिकर अधिनियम, 1957 की धारा 5(1) (xvie) के अंतर्गत संपत्तिकर में 5 लाख रुपये तक की छूट. देखिए संपत्तिकर अधिनियम की धारा 5(1A)
- 9% वार्षिक दर से ब्याज का अर्ध-वार्षिक रूप से भुगतान.
- अनिवासी भारतियों का निवेश भी स्वीकार किया जाता है.
- पूंजी निवेशकर्त्ता की इच्छानुसार 3 वर्ष की पूरी अवधि के ब्याज का डिस्काउंट आधार पर अग्रिम भुगतान.
- स्रोत पर कोई कर-कटौती नहीं.
- दूसरे शहरों के चैक स्वीकृत, वसूली खर्च आई.डी.बी.आई. के जिम्मे.

Sobhagya/IDBI/91 Hin. Rev.

देश के औद्योगिक विकास में सहयोगी बनेगा आपका निवेश.

अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम कार्यालय से संपर्क करें या प्रबंधक को लिखें:

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक

आई.डी.बी.आई. टॉवर, कफ़ परेड, बम्बई 400005. फ़ोन: 2189111/21

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रीलंकाई तमिलों की समस्याओं के प्रति हमारा सहानुभूतिपूर्ण रवैया रहा है लेकिन मेरी पार्टी या सरकार ने किसी आतंकवादी गुट को सहानुभूति का लाभ उठाने नहीं दिया."

फिर भी अधिकारियों ने उनका नाम राजीव हत्याकांड से जोड़ दिया है. उनका तर्क है कि पद्मनाभ के हत्यारों को भागने की छूट देकर द्रमुक सरकार ने एलटीटीई को राजीव की हत्या की योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित किया.

करुणानिधि के खिलाफ आरोप अंततः ठहरते हैं या नहीं, यह तो समय ही बताएगा लेकिन जयललिता का ताजा हमला प्रतिशोध से भरा लगता है. नागराजन को तो शुरू में ही निशाना बना लिया गया था. उन्हें नौकरी से निलंबित कर दिया गया था. राज्य के पूर्व पुलिस महानिदेशक पॉल दुरै को भी, जिन्होंने जयललिता से दुश्मनी मोल ले ली थी, गिरफ्तार किया जाना था लेकिन उनकी मृत्यु हो गई (देखें बॉक्स).

शरद सक्सेना

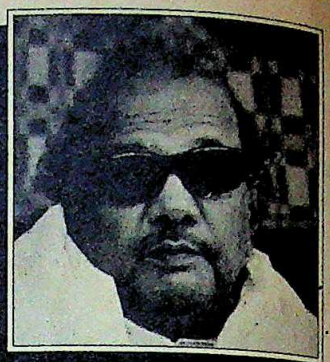

करुणानिधि ने जयललिता पर राजनैतिक बदले की कार्रवाई करने का आरोप लगाया है, तो जयललिता उनके खिलाफ सावधानी से कार्रवाई कर रही हैं

इसके अलावा करुणानिधि ने संकेत किया, एमजीआर के तहत अन्ना द्रमुक ने खुद एलटीटीई की मदद की थी. जयललिता की दोरंगी चाल के बारे में उन्होंने कहा, "भारतीय शांति सेना की कार्रवाई के दौरान जयललिता ने कहा था कि एलटीटीई को शामिल किए बिना श्रीलंका में तमिलों के हितों की रक्षा नहीं की जा सकती. वे यह भी चाहती थीं कि प्रभाकरन को बातचीत के लिए न्यौता भेजा जाए." करुणानिधि ने आरोप लगाया कि जयललिता सरकार 'टाडा' का गैरकानूनी इस्तेमाल कर द्रमुक समर्थकों को झूठे मामलों में फंसा रही है.

लेकिन नागराजन ने जिन लोगों पर आरोप लगाए हैं उनमें करुणानिधि के पुत्र एम.के. अषगिरि और भतीजे, पूर्व केंद्रीय मंत्री मुरासोली मारन, राज्य के पूर्व मंत्री सुब्बुलक्ष्मी जगदीशन, तंगवेलु और सुंदरम भी शामिल हैं. इनसे पूछताछ भी की जा सकती है. इनके अलावा केंद्र में खेल सचिव राजेंद्रन, चेंगलपट्टू के तत्कालीन डीआईजी रंजीत सिंह और मद्रास के तत्कालीन डीसीपी राधाकृष्णन पर भी गाज गिर सकती है.

द्रमुक दबाव से चरमराती नजर आ रही है. आशंका जाहिर की जा रही है कि गिरफ्तार किए जा चुके रामचंद्रन के भाई वी. गोपालस्वामी को द्रमुक नेतृत्व बलि का बकरा बना सकता है. गोपालस्वामी प्रभावशाली नेता हैं और उनके बाहर जाने से पार्टी टूट सकती है. राजनैतिक पंडितों का कहना है कि कुछ पूर्व मंत्री और दूसरी पंक्ति के नेता अपने बचाव के लिए अन्ना द्रमुक में शामिल भी हो सकते हैं. इस बीच, वकील समुदाय ने करुणानिधि के इस आरोप का समर्थन किया है कि 'टाडा' का दुरुपयोग हो रहा है.

लेकिन अपने राजनैतिक अस्तित्व के लिए शायद अंतिम लड़ाई लड़ रहे करुणानिधि को इससे कोई खास लाभ होने वाला नहीं है. वैसे, उन्हें कुछ जन समर्थन अभी भी हासिल है. जिस दिन दूरदर्शन में नागराजन का बयान प्रसारित किया गया, उस दिन ऐसा व्यापक उत्पात मचा कि बसें चलनी बंद हो गईं. लेकिन श्रीपेरुंबुदूर कांड के सदमे से अब तक नहीं उबर पाए इस राज्य के अधिकतर लोगों की भावनाएं उनके खिलाफ हैं. इसकी जानकारी जयललिता को है और वे फोर्ट सेंट जॉर्ज से अपने प्रतिद्वंद्वी पर संघातिक प्रहारों का निर्देशन कर रही हैं.

पॉल दुरै

ताकतवर तिकड़ी

राज्य के अवकाशप्राप्त पुलिस महानिदेशक पॉल दुरै ने एम. करुणानिधि और नागराजन के साथ ताकतवर तिकड़ी बना ली थी. सो, नागराजन की संभावित गिरफ्तारी की खबर सुनकर वे सन्न रह गए थे. 'क्यू' शाखा को संदेह था कि पद्मनाभ के हत्यारों के खिलाफ धीमी कार्रवाई में उनका भी हाथ था. तुरंत इन घटनाओं के बाद ही उनका निधन हो गया जिससे यह अफवाह फैल गई कि उन्होंने आत्महत्या कर ली.

लेकिन उनके परिवार के सदस्यों ने आत्महत्या की अफवाह का खंडन किया. दुरै की मृत्यु से कई सवाल अनुत्तरित रह जाएंगे. नागराजन ने कहा है कि पद्मनाभ के हत्यारों को दुरै जानते थे. दुरै ने बार-बार कहा था कि हत्यारे तमिल मुक्ति चीते नहीं हैं.

दुरै की पत्नी अंबुजन आरोप लगाती हैं कि उनके पति को 19 एकड़ कीमती जमीन के खरीद के मामले में उत्पीड़ित किया गया. इस खरीद की जांच करने वाले कर अधिकारियों ने उन्हें उनकी मृत्यु के एक दिन पहले बुलाया था. उत्पीड़न के बारे में कहा जा रहा है: दुरै जब नगर पुलिस के कमिश्नर थे तो उनके आदमियों को तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष के नाम जयललिता का लिखा वह पत्र मिल गया जिसमें उन्होंने राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा की थी. इस पत्र के प्रचार से जयललिता मुश्किल में पड़ गई थीं. तभी से वे दुरै के खिलाफ हो गई थीं.

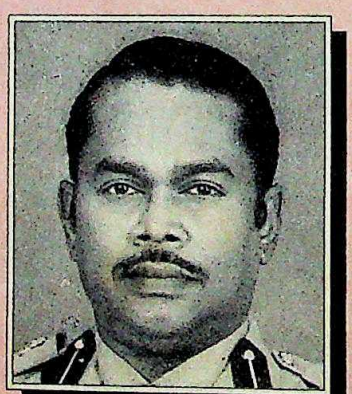

पॉल दुरै: संदेहास्पद मौत

—प्रकाश एम. स्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काले बादलों के टलने के संकेत

अर्थव्यवस्था पर से काले बादलों के टलने का पहला संकेत दिख रहा है. पिछले पखवाड़े रिजर्व बैंक के गवर्नर आर. वेंकिटरमनन ने पूंजीगत माल के अलावा खुले लाइसेंस से आयात होने वाले सामान के लिए रुपए के रूप में पड़ता जमा कराने की दर 150 फीसदी से घटाकर 50 फीसदी करने की घोषणा की. विदेशी मुद्रा भंडार 8,000 करोड़ रु. (करीब 3 अरब डॉलर) हो जाने के बाद यह कदम उठाना आसान हो गया. लेकिन इसका मतलब आयात पर पाबंदियों का शीघ्र खत्म हो जाना नहीं है. निर्यात का मामला अभी भी गड़बड़ ही है, विदेशी निवेश नहीं हो रहा है. जब तक इसमें वृद्धि न हो, पाबंदियां रहेंगी—मुद्रा कोष और विश्व बैंक से कर्ज लेने की मजबूरी के बावजूद.

कपड़े से प्लास्टिक की ओर

कपड़ा उद्योग के प्रमुख उद्योगपति एम.के. मोदी अपनी कंपनी मोदीपॉन लि. को दूसरे क्षेत्रों में उतारने की योजना बना रहे हैं. 175 करोड़ रु. कारोबार वाली यह कंपनी अभी नाइलॉन और पॉलिएस्टर फिलामेंट धागे बनाती है. अब जल्दी ही यह प्लास्टिक में उपयोग होने वाला बाइस्फेनॉल और मुख्यतः कार के ढांचे में लगने वाला पॉलीकार्बोनेट बनाएगी. कोचीन में लगने वाली इसकी नई फैक्टरी की वार्षिक उत्पादन क्षमता 20,000 टन की होगी और यह आयात होने वाला माल बनाएगी. 140 करोड़ रु. की लागत से बनने वाली यह फैक्टरी तीन साल में उत्पादन शुरू करेगी. इसका एक हिस्सा देश की जरूरत पूरी करेगा—1995 तक देश में इसकी खपत 10,000 टन होने का अनुमान है—और शेष का निर्यात होगा.

घरों में पहुंचने की तैयारी

एक और कंपनी घरेलू उपकरणों का उत्पादन शुरू करने जा रही है. अभी तक श्रीराम फाइबर्स नाम से जानी जाने वाली डीसीएम समूह की कंपनी एसआरएफ लि. जल्दी ही एसआरएफ अप्लाएंसेज नाम से नया उपक्रम शुरू करेगी. इसके प्रमुख ए.के. सेन के अनुसार यह बिजली की इस्त्री से लेकर मिक्सी, वाशिंग मशीन और बरतन धोने वाली मशीनें बनाएगी. इस सूची में फ्रिज भी है. सारे उत्पाद सफेद रंग के होंगे. सेन बताते हैं, "भारी इंजीनियरिंग कंपनी होने के चलते हम अपना सामान खुद ही बनाएंगे, न कि किसी कंपनी का माल लेकर अपने लेबल लगाकर सिर्फ बेचने का काम करेंगे, जैसा कि अभी बाजार में चल रहा है." उद्योग जगत के सूत्रों के अनुसार इस कंपनी के लोग फिलिप्स के पुराने वितरकों से बात कर रहे हैं.

और भी लगे हैं पीछे

संभव है कि भारत सरकार के अलावा भी कुछ लोग यूनियन कारबाइड इंडिया लि. के पीछे पड़े हों. कलकत्ता के तीन व्यवसायियों—शंकरलाल सराफ, राधेश्याम तुलसियान और केदारनाथ फतेहपुरिया—की टोली ने अक्तूबर 1990 से लेकर इस साल जुलाई के बीच यूनियन कारबाइड के 13,28,847 शेयर खरीदे हैं. कंपनी के प्रबंधक इससे परेशान हैं क्योंकि ये कुल शेयरों के 4 फीसदी से ज्यादा हैं. कंपनी इन शेयरों को पंजीकृत नहीं कर रही है. उसने कंपनी कानून बोर्ड से शिकायत की है कि यह टोली किसी ताकतवर आदमी की ओर से यह खरीद कर रही है. कंपनी ने बोर्ड से कंपनी कानून की धारा 247 और 250 के तहत धन के स्रोत की जांच कराने की मांग की है.

बीमारों की बात

बीमार उद्योगों को बंद करने के शोर-शराबे के कारण कुछ तथ्य सामने ही नहीं आए हैं. अनेक उद्योगपति अपनी फैक्टरियों को बंद करने की जगह उसे बीमार बनाए रखना चाहते थे. इसका एक कारण तो यह लगता है कि बीमार घोषित होते ही कर्जदाता इससे अपना पैसा वापस नहीं पा

चार्ट: बी.के. शर्मा

	1988	1989	1990	1991
बीआईएफआर के विचारार्थ आए मामले	31	50	95	46
काम समेटने की सलाह के खिलाफ अपीलें	6	20	44	27
स्वीकृत अपीलें	2	13	24	8
स्वीकृति अपीलें	2	-	2	2
लंबित अपीलें	-	4	18	17

स्रोतः औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्गठन बोर्ड (बीआईएफआर)

सकते. पिछले कुछ वर्षों में औद्योगिक और वित्तीय पुनर्गठन बोर्ड को जो अर्जियां दी गईं उनमें 40 फीसदी अर्जियां कंपनी बंद करने की सिफारिश रद्द करने के लिए थीं. करीब आधी अर्जियों को ठुकरा दिया गया.

जोखिम भरी पहल

दोपहिया उद्योग में काइनेटिक होंडा स्कूटरों के जरिए तकनीकी क्रांति लाने वाले अरुण फिरोदिया अब कारोबार फैलाकर उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक बाजार में उतरना चाहते हैं. पुणे की उनकी कंपनी काइनेटिक मोटर्स उच्च तकनीक वाले रंगीन टीवी सेट बनाने जा रही है जिसमें 240 किलोबाइट मेमोरी वाला कंप्यूटर लगा होगा. इसकी कीमत क्या होगी, इस बारे में कंपनी अभी चुप्पी साधे है. टीवी उद्योग जब मुश्किल दौर में फंसा हो तो ऐसा उत्पाद लाना जोखिम भरा काम है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनमोहन सिंह

'भविष्य तो अनिश्चित है'

पिछले चार दशक से डांवाडोल आर्थिक स्थिति में पड़े देश के लिए पांच महीने का अरसा कोई ज्यादा नहीं होता. इस बात को वित्तमंत्री मनमोहन सिंह से बेहतर कौन जानता है. कांटों भरी अपनी कुर्सी पर बैठे वे निराशाजनक हद तक संकट में पड़ी इस व्यवस्था की गुत्थियां सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं. पर वे इस स्थिति को निराशाजनक नहीं बताते क्योंकि इसका मतलब हार मान लेना ही होगा. उनको अब तक थोड़ी सफलता मिली है मगर घाटे, महंगाई, सुस्त औद्योगिक कामकाज, विदेशी निवेश और बीमार इकाइयों को बंद करने की नीति के संग उन्हें अभी लंबी दूरी तय करनी है. इन मामलों पर पिछले पखवाड़े प्रधान संपादक ***अरुण पुरी,*** *बिजनेस एडीटर* ***सुदीप चक्रवर्ती*** *और प्रमुख संवाददाता* ***शहनाज अंकलेसरिया अय्यर*** *ने उनसे बातचीत की. इस विशेष भेंटवार्ता के कुछ अंश:*

• *अभी तक आप खुद को कितना सफल मानते हैं ?*

मैं इस सवाल का जवाब अपने तात्कालिक, अल्पकालीन और मध्यावधि लक्ष्यों के नजरिए से ढूंढ़ता हूं. जून में हम कंगाल घोषित हो जाने के कगार पर थे. विदेशी मुद्रा का हमारा भंडार मात्र 2,500 करोड़ रु. रह गया था. मेरा फौरी मकसद इस रुझान को पलटना था और मैं इसमें सफल रहा. आज हमारा यह भंडार 8,000 करोड़ रु. से अधिक का है. और कई व्यावसायिक बैंक भारत को दीर्घकालिक निवेश के लिए उपयुक्त मान रहे हैं. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक का समर्थन नहीं मिलता तो हम इस हालत में नहीं लौटे होते.

"यह न समझिए कि देश पर आया संकट टल गया है. अगर अभी वाली गाड़ी पटरी से उतरी तो पानी हमारे सिर से ऊपर जाने लगेगा. सो, हमें सावधानी रखनी है"

"यह काम एक ही झटके में संभव नहीं है. पूरी वित्तीय व्यवस्था के दुरुस्त होने में कई साल लगेंगे. इस मामले में हमने अपनी दिशा के बारे में सही संकेत दिए हैं"

"जितनी जल्दी संभव हुआ, रुपया परिवर्तनशील हो जाएगा. अगर वित्तीय हालात नियंत्रण में रहे तो खतरे कम ही लगते हैं"

"सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के मसले ज्यादा आसानी से निबटेंगे. इसमें निजी क्षेत्र जितना वक्त और मेहनत नहीं खर्च होगी"

दूसरे, मैं ऐसी प्रक्रिया शुरू करना चाहता था जिसमें हम कम समय के अंदर ही मुद्रास्फीति को कम कर सकें. मैं जानता था कि अवमूल्यन करने, खाद और चीनी पर सब्सिडी कम करने से मुद्रास्फीति बढ़ेगी और मुझे उम्मीद थी कि 1 अक्तूबर तक हम ऐसी प्रक्रिया शुरू कर लेंगे जिसमें कीमतें गिरने लगेंगी. 16.5 फीसदी की उच्चतम दर से मुद्रास्फीति में थोड़ी गिरावट आ भी गई है. यह अब 13.3 फीसदी रह गई है.

• *लेकिन आपने मुद्रास्फीति एक अंक तक लाने...*

मैंने कहा था कि वित्त वर्ष के अंत तक ऐसा हासिल करना चाहूंगा. मुद्रास्फीति में गिरावट और अधिक होती तो मुझे खुशी होती. लेकिन हम मिश्रित अर्थव्यवस्था वाले लोग हैं.

• *तो इस मामले में आप असफल रहे?*

समस्या का एक पहलू यह भी है कि सफलता से परेशानियां पैदा होती हैं. अगर विदेशी मुद्रा का भंडार बढ़े तो हम उदारता ला सकते हैं. लेकिन पहले मैं इस बारे में निश्चिंत हो जाना चाहता हूं कि यह तात्कालिक वृद्धि है या निरंतरता वाली. तभी मैं आयात पर से पाबंदियां हटाने का फैसला करूंगा. पूरा भरोसा हुए बगैर मैं ऐसा नहीं कर सकता.

• *लेकिन क्या आप उदारता नहीं ला रहे हैं?*

अभी तो यह काम धीरे-धीरे ही हो रहा है.. अगर मुझे इसमें स्थायी सुधार दिखता तो हम इतने बड़े पैमाने पर उदारता लाते कि मुद्रास्फीति का अंदेशा काफी कम हो जाता. जबसे आयात पर पाबंदियां लगी हैं, अपने यहां के उद्योगों को कच्चे माल की कोई कमी नहीं आई है. पर अनिश्चितता के चलते मैं आयात के मामले में मनमाफिक उदारता नहीं ला पाया हूं.

• *खेती की पैदावार की कीमतें इस कदर क्यों बढ़ी हुई हैं?*

कुछ समस्या तो मुद्रास्फीति और इस तथ्य की कारण है कि हमने खाद की कीमतों में भारी वृद्धि की है. हम मुद्रा की आपूर्ति को काफी नियंत्रित कर रहे हैं. इस बात का एहसास अभी नहीं हुआ है. अगले दो-तीन महीने में अगर हम सही कदम उठाते रहे तो यह असर भी दिखेगा.

• *ये सही कदम क्या हैं?*

मसलन, हम आयात में ढील दे सकते हैं, जिससे मुद्रा की आपूर्ति में काफी कमी आ जाएगी.

• *लोगों को भरोसा नहीं कि आप मुद्रास्फीति पर अंकुश लगा पाएंगे, क्या इसी लिए कीमतें बढ़ रही हैं?*

पहली बात तो यह है कि अगर लोगों को भरोसा नहीं होता तो वे हमारे देश में अपना पैसा नहीं भेजते. हमारा भंडार नहीं बढ़ता.

• *क्या हम बहुत किफायत वाले बजट की उम्मीद करें?*

मैं बजट के बारे में किसी भी सवाल का जवाब नहीं देना चाहता. लेकिन यह काम एक ही झटके में हो जाने वाला नहीं है. पूरी वित्तीय व्यवस्था के दुरुस्त होने में तीन से चार वर्ष का समय लगेगा. इस मामले में हमने अपनी दिशा के बारे में सही संकेत दिए हैं. अब हमें इसी रास्ते पर आगे बढ़ना है.

• *विदेशी निवेशकों की प्रतिक्रिया अच्छी क्यों नहीं रही है?*

इससे मैं हैरान नहीं हूं. मैंने यह उम्मीद नहीं की थी कि रातोरात हमारे पास विदेशी मुद्रा की बाढ़ आ जाएगी. वैसे, अगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो शरद सक्सेना

हम नीतियों पर अडिग रहे तो पर्याप्त पूंजी आएगी. लेकिन भारत की असली मुश्किलें घरेलू बचत दर में वृद्धि करने, उत्पादकता बढ़ाने, अर्थव्यवस्था में प्रतिद्वंद्विता लाने और निर्यात के मामले में बहुत गतिशीलता लाने से ही दूर होंगी.

● ***क्या अपने यहां समर्थन की कोई प्रणाली बनी है?***

सारे उपायों पर काम हो रहा है, यह तथ्य इस समर्थन का सबूत है. बीमार उद्योगों पर हमारे काम को ही देखिए. हमने इस देश में पहली बार यह चेतना पैदा की है कि औद्योगिक रुग्णता को प्राथमिकता के आधार पर निबटाना होगा. हम साल-दर-साल घाटा दे रही इकाइयों में पैसा नहीं लगाते जा सकते. जो लोग सार्वजनिक रूप से, संसद के अंदर हमारा विरोध करते हैं, वे भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं.

● ***मजदूरों को कैसे निकालेंगे और इकाइयों को कैसे बंद करेंगे?***

हम मजदूरों को समझा सकते हैं कि कुछ इकाइयों को आंशिक तौर पर ठीक किया जा सकता है और कुछ हिस्से को बंद करना ही पड़ेगा...'उद्योगों को बंद करना' कहना ठीक नहीं है. असल में यह मजदूरों को एक जगह से हटाकर दूसरी जगह लगाना है. औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्गठन बोर्ड (बीआईएफआर) वाला समाधान भी है.

● ***बीआईएफआर के निष्कर्षों को किसी भी हाईकोर्ट में चुनौती दी जा सकती है...***

मैंने संसद में कहा कि बोर्ड अभी तक सिर्फ निजी क्षेत्र के मामले देख रहा था, इसीलिए ज्यादा सुस्त है. लेकिन जहां कंपनी ही सरकारी हो और बोर्ड अपने निष्कर्षों के बारे में पक्का हो तो सरकार को अदालत में जाने की जरूरत कहां है.

● ***क्या आप बोर्ड को कंपनी की जायदाद का कब्जा लेकर उसे बेचने की इजाजत देंगे?***

सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों के मसले ज्यादा आसानी से निबटेंगे. इसमें निजी क्षेत्र जितना वक्त और मेहनत नहीं खर्च होगी.

● ***लेकिन क्या आप अधिकार क्षेत्र के बाहर नहीं जा रहे हैं?***

जहां औद्योगिक क्षेत्र बड़े पैमाने पर रोजगार नहीं पैदा कर रहा है, इस प्रक्रिया के जारी रहने पर बड़ी संख्या में बेकारी बढ़ने का अंदेशा पैदा हो जाएगा. अगर अपने यहां तानाशाही होती तब तो मैं इन बातों की परवाह नहीं करता. मुझे पूरा यकीन है कि जो रास्ता हमने अख्तियार किया है, एकदम सही है. मजदूर नेता भी मुझसे अकेले में यही कह जाते हैं कि बीमार इकाइयों को बंद करना ही होगा. वे हमें ऐसा करने से मना नहीं करते, इसका तरीका भर जानना चाहते हैं.

● ***लेकिन कभी न कभी आपको भी वार सहना ही होगा?***

सभी मोर्चों पर तो लड़ा नहीं जा सकता. रणनीति के अनुसार भी काम करना जरूरी होता है और मैं सोचता हूं कि हमारी चुनौती ऐसा माहौल बनाने की है जिसमें संरचनात्मक बदलाव इस भरोसे के साथ किए जा सकें कि इनका लाभ मुट्ठी भर लोगों को नहीं, काफी लोगों को होगा.

● ***क्या सरकार निजीकरण के बारे में सचमुच गंभीर है? क्या वह कारखानों की मिल्कियत निजी क्षेत्र को सौंप देगी या कुछ कंपनियों के कुछ शेयर ही बेचेगी?***

फिलहाल तो हम कुछ शेयर बेचने की ही सोच रहे हैं.

● ***आपके सहयोगियों ने क्यों कहा कि निजीकरण नहीं होगा. आपकी सरकार अलग-अलग बोलियां क्यों बोलती है?***

मैंने बजट में सरकार की स्थिति बताई है. हम वहीं करेंगे. हलवा खाने से ही स्वाद पता चलेगा.

● ***अगर घाटे और महंगाई पर छह महीने के अंदर अंकुश नहीं लगा तो आपकी सुधार नीतियां धरी नहीं रह जाएंगी?***

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे उम्मीद है कि घाटे को हम सकल घरेलू उत्पादन के 6.5 फीसदी तक, जितने की बात मैंने कही थी, कर लेंगे. मेरे पास पर्याप्त समय है.

● ***आपने बजट घाटा कम करने के लिए कुछ कोशिशें की हैं पर सरकारी खर्च कम करने के मामले में काम नहीं हुआ है...***

मैंने ऐसा कदम उठाया (खाद पर सब्सिडी कम करना) जिसका असर 70 फीसदी लोगों पर पड़ा.

● ***आपको सरकारी खर्च कम करने के मामले में काफी कुछ करना चाहिए था, संरचनात्मक खर्चों के मामले में...***

हमारे पास वक्त नहीं था, सिर्फ पांच महीने ही तो मिले हैं.

● ***सीमा शुल्क की वसूली में 3,500 करोड़ रु. की कमी क्यों आई?***

सीमा शुल्क के राजस्व में कमी आएगी. लेकिन मैं कोई पक्का आंकड़ा नहीं दे सकता. मैं उम्मीद करता हूं कि हम इसकी काफी हद तक भरपाई कर लेंगे.

● ***क्या ऋण के मामले में लगी पाबंदियों में नरमी आएगी?***

आनी ही चाहिए. हमने अपने संरचनात्मक समायोजन ऋण को ठीक कर लिया है और पैसा आसानी से आ रहा है.

● ***क्या घाटा कम करने की आपकी कोई अल्पकालिक योजना है?***

जैसा कि मैंने कहा, घाटा सकल घरेलू उत्पादन का 6.5 फीसदी हो जाएगा. सिर्फ तीन महीने ही रह गए हैं (बजट आने में).

मुद्रा की आपूर्ति कम करने के प्रयासों का एहसास अभी नहीं हो पाया है. इनका असर दिखने लगेगा''

मुझे उम्मीद है कि हम घाटे पर काबू पा लेंगे. हमारे पास इसे दुरुस्त करने का पर्याप्त समय है''

कर्ज के मामले में लगी पाबंदियां नरम होने लगेंगी. स्थिति ठीक हो चली है और पैसा आ रहा है''

मजदूर नेता भी मानते हैं कि बीमार इकाइयां बंद होनी चाहिए. वे तरीका भर जानना चाहते हैं''

● ***यह लक्ष्मण-रेखा आप कैसे छूएंगे?***

बजट के ब्यौरों में आपकी कुछ ज्यादा ही दिलचस्पी है.

● ***आपको किस बात के बिगड़ जाने का डर है?***

अगर आयात पर पाबंदियां ज्यादा समय खिंची तो बाजार में एक तरह की मंदी आएगी और मुद्रास्फीति भी बढ़ेगी. ऐसी स्थिति में राजस्व संबंधी गिनती गड़बड़ा जाती है.

● ***औद्योगिक उत्पादन में गिरावट के बारे में आप क्या कहेंगे?***

थोड़े समय में घरेलू खपत में 2 फीसदी की कमी के लिए या तो उपभोग या निवेश में गिरावट होती है. पिछले वर्ष तक हमें विदेशी व्यावसायिक बैंकों से 4,000 करोड़ रु. मिला करते थे, जो इस साल उपलब्ध नहीं हैं. आप्रवासी भारतीयों से 2,500 करोड़ रु. आते थे. ये भी उपलब्ध नहीं हैं. और हमें अपनी अर्थव्यवस्था पर ये समायोजन थोपने पड़े हैं.

● ***क्या निर्यात में कमी भारी चिंता का विषय नहीं है?***

तत्काल बड़े परिणामों की उम्मीद मैंने कभी नहीं की थी. सोवियत संघ की घटनाओं और आयात पर आश्रित रहने की स्थिति को देखते हुए मेरे पास प्रमाण हैं कि आने वाले महीनों में निर्यात बढ़ना चाहिए.

● ***वित्त मंत्रालय से ही कानूनों का जाल-जंजाल नहीं घटा है? आपने पूंजी निर्गम नियंत्रक का पद, बैंकिंग कंट्रोल विभाग, बैंकिंग विभाग वगैरह को समाप्त नहीं किया है?***

नियंत्रक के काम के बारे में यह कहना है कि हम उन पदों को खत्म कर देंगे जिनकी उपयोगिता खत्म हो चुकी है. और जो काम अभी उपयोगी है उन्हें हम भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमयन बोर्ड को सौंप देंगे. जैसे ही इस विषय संबंधी कानून बन जाएगा, हम काम शुरू कर देंगे. बैंकिंग का कोई विभाग नहीं है. मैं बता दूं कि यह सिर्फ संसद में जवाब देने का बंटवारा भर है. बैंकर भी राजनीति करते हैं.

● ***आपकी कल्पना के अनुसार कैसा काम होना चाहिए?***

मैं कामना करता हूं कि सरकार के सभी विभाग ज्यादा तेज रफ्तार से काम करें. मैं यह एहसास पैदा नहीं करना चाहता कि देश पर आया संकट टल गया है. किसी को यह नहीं मान लेना चाहिए कि भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियादी बातों में बदलाव आ गया है. अगर अभी वाली गाड़ी पटरी से उतरी तो हम सीधे पानी में जा सकते हैं. और मैं यह चेतावनी भी देना चाहूंगा कि अगली बार हमें अंतरराष्ट्रीय समुदाय का समर्थन भी नहीं मिलेगा.

● ***रुपया कब परिवर्तनशील हो पाएगा?***

जितना जल्दी संभव हुआ. मैं इस बारे में भविष्यवाणी नहीं कर सकता. अगर वित्तीय हालात मेरे नियंत्रण में आ जाएं, अगर मैं सरकार द्वारा तय कीमतों को उठा दूं, तब परिवर्तनशील मुद्रा वाली स्थिति में कम खतरे हैं. मेरी इतनी ही चिंता है कि कीमतें जबरन तय की गईं तो यह प्रणाली बर्दाश्त नहीं कर सकती.

● ***अर्थव्यवस्था को उदार बनाने में पाकिस्तान भी हमसे तेज रफ्तार दिखा रहा है.***

वहां संगठनात्मक आधार बहुत ही कम लोगों, अधिकारियों और नेताओं का है. हमारे यहां अधिक खुली राजनैतिक प्रणाली है, जिसमें सर्वानुमति बनानी पड़ती है.

● ***क्या आप आशावादी हैं?***

भविष्य तो अनिश्चितता का ही नाम है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुशियों की दुनियाँ में मॉर्टन लगाये चार-चाँद।

MORTON
SWEETS

मॉर्टन कन्फैक्सनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री
पो० ओ० मढ़ौरा - ८४१४१८, सारन, बिहार

खुशियों के अवसर पर बस मॉर्टन की स्वाद भरी दुनियाँ में खो जाईये। अपने मनपसंद ज़ायको से मॉर्टन कराते हैं एक अलग अहसास ;बच्चे तो बच्चे बड़े भी हैं मॉर्टन के कायल

कोकोनट कुकीज़ ;रोज एक्लेयर्स ;सुप्रीम, कोकोनट तथा चाकलेट टाफियाँ ;लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक स्वादिष्ट स्वादों में उपलब्ध।

और अब केसर बाइट !केसर का कमाल जिसका स्वाद बेमिसाल।

चेतावनी

MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अॅपर गॅंगेज सूगर एंड इन्डस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापार चिन्ह है।
किसी भी प्रकार से व्यापार-चिन्ह अधिकारों का उल्लंघन अभियोजनीय है।

CC/A-3/91 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल भी आज भी कल भी

ट्टियां!... पहाड़... सुंदर वादियाँ... रम्य
ीर... या फिर सागर का चहकता
नारा... हर सैलानी परिवार इन स्थानों पर कभी न कभी गया होगा. और
श्चर्य की बात सबका हमसफ़र वही वी.आइ.पी.! परिवार-दर-परिवार,
ढ़ी-दर-पीढ़ी जब कभी लगेज की बात आई, वी.आइ.पी. ने साथ निभाया.
ी.आइ.पी. ने जो विश्वास जगाया वो हरदम कायम रहा. वी.आइ.पी. को टिकाऊ
नाने के लिए बहुत कुछ किया गया है. जैसे, सुदृढ़ खोल को सहारा देनेवाला
नु का फ्रेम उसे इतना मज़बूत बनाए कि वो सफ़र की हर मुश्किल
ो टक्कर ले पाए. इतना ही नहीं, वी.आइ.पी. में मिलती
ं बेजोड़ ख़ूबियां. जैसे, मल्टी सेफ़ लॉकिंग सिस्टम,
ूटकेस उल्टा न खुलने की व्यवस्था और सॉफ़्ट
ड्डेवाले हैंडल... छोटी-छोटी बातें जो सफ़र को और
ी सुविधाजनक बनाएं - छुट्टी -दर-छुट्टी...
साल-दर-साल.

और अब हॉलिडे लाइन - छुट्टियों की मौज-मस्ती में हमसफ़र. आपके परिवार की हर आवश्यकता को पूरी करने के लिए ख़ास बैग. ट्रैवेलाइट - सैलानियों का ख़ूबसूरत हमसफ़र - आपके सफ़र को शानदार बनाए. टाइटन में मज़बूती के लिए है दोहरा फ्रेम. और टॉपलाइन में - जगह-ही-जगह – छुट्टियों के दौरान आकस्मिक ख़रीदी सभी चीज़ों को रखने के लिए. ये तीनों सूटकेस अलग-अलग साइज़ों और तरह-तरह के मनमोहक रंगों में मिलते हैं. अब जब भी आप छुट्टियों का मज़ा लेना चाहें, मज़बूत - टिकाऊ वी.आइ.पी. को ही अपना हमसफ़र बनाएं.

हैप्पी हॉलिडे लाइन - वी.आइ.पी. के तीन हमसफ़र
ख़ूबियों में एक से एक बढ़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एग्जिक्यूटिव क्लब' ही जाने एक एग्जिक्यूटिव का अंदाज़

जीत का एहसास मुकाबले के बाद !

मुकाबले से आये जोश, हौसलें हो बुलंद।
और कामयाबी लगे हाथ, यही तो है
सही वक्त पर सही पसन्द !

Executive Club

उत्कृष्ट कट ग्लास कलेक्शन *

सही पसन्द

कॉकटेल और फ्रूट जूस के लिए बजोड
केवल चुनी हुई दुकानो मे उपलब्ध.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-46

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

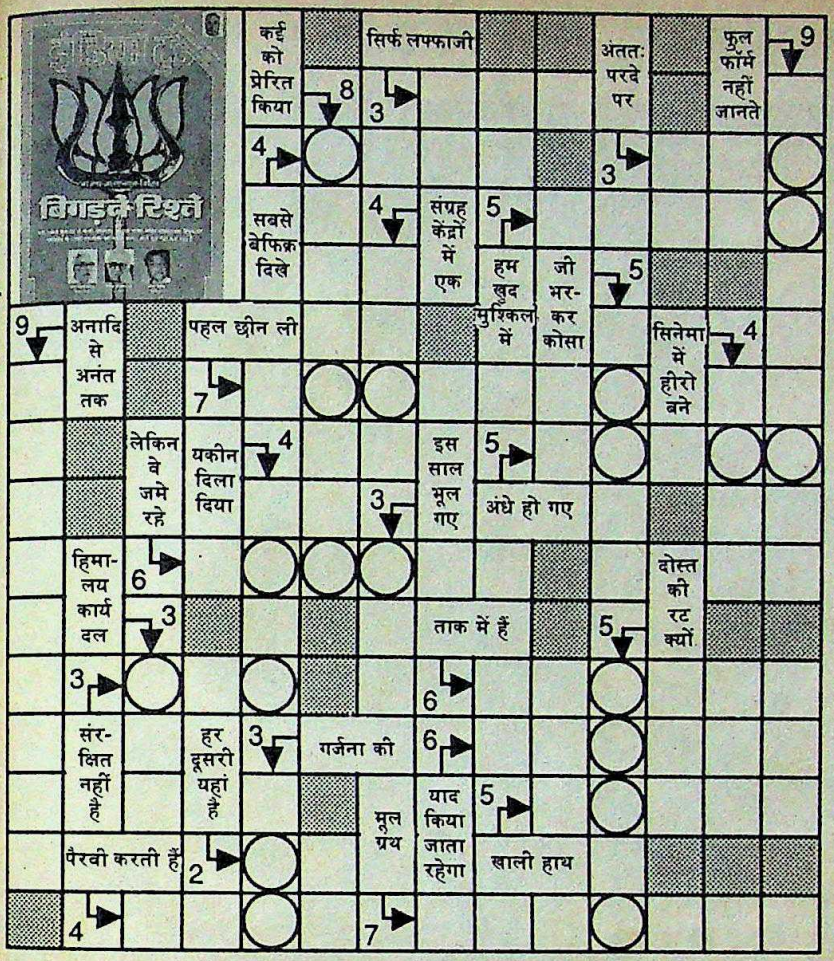

नाम _____

पता _____

पिन _____

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-46, इंडिया टुडे, एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि: 5 जनवरी 1992

उत्तर के लिए देखें: 16-31 जनवरी 1992 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 30 नवंबर 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुन: होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

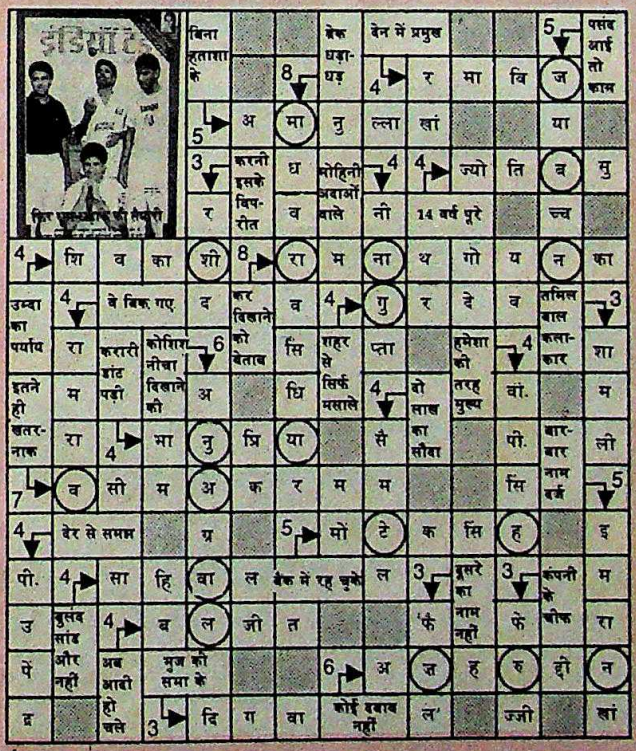

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-44 का हल

पुरस्कार विजेता

प्रेम कुमार
102, जवाहर चौक
इलाहाबाद (उ.प्र.)
पिन-211003

जी.पी. सिंह
सी-73, रिजर्व बैंक
कॉलोनी, चार इमली
भोपाल (म.प्र.)
पिन-462016

ब्रह्म प्रकाश
मं.नं. 139 ए
मुहम्मदपुर, आर.के.
पुरम, नई दिल्ली
पिन-110066

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं.

विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब बचत का हो सवाल तो सबको क्यूं आता है एच.डी.एफ़.सी. का ही ख़्याल?

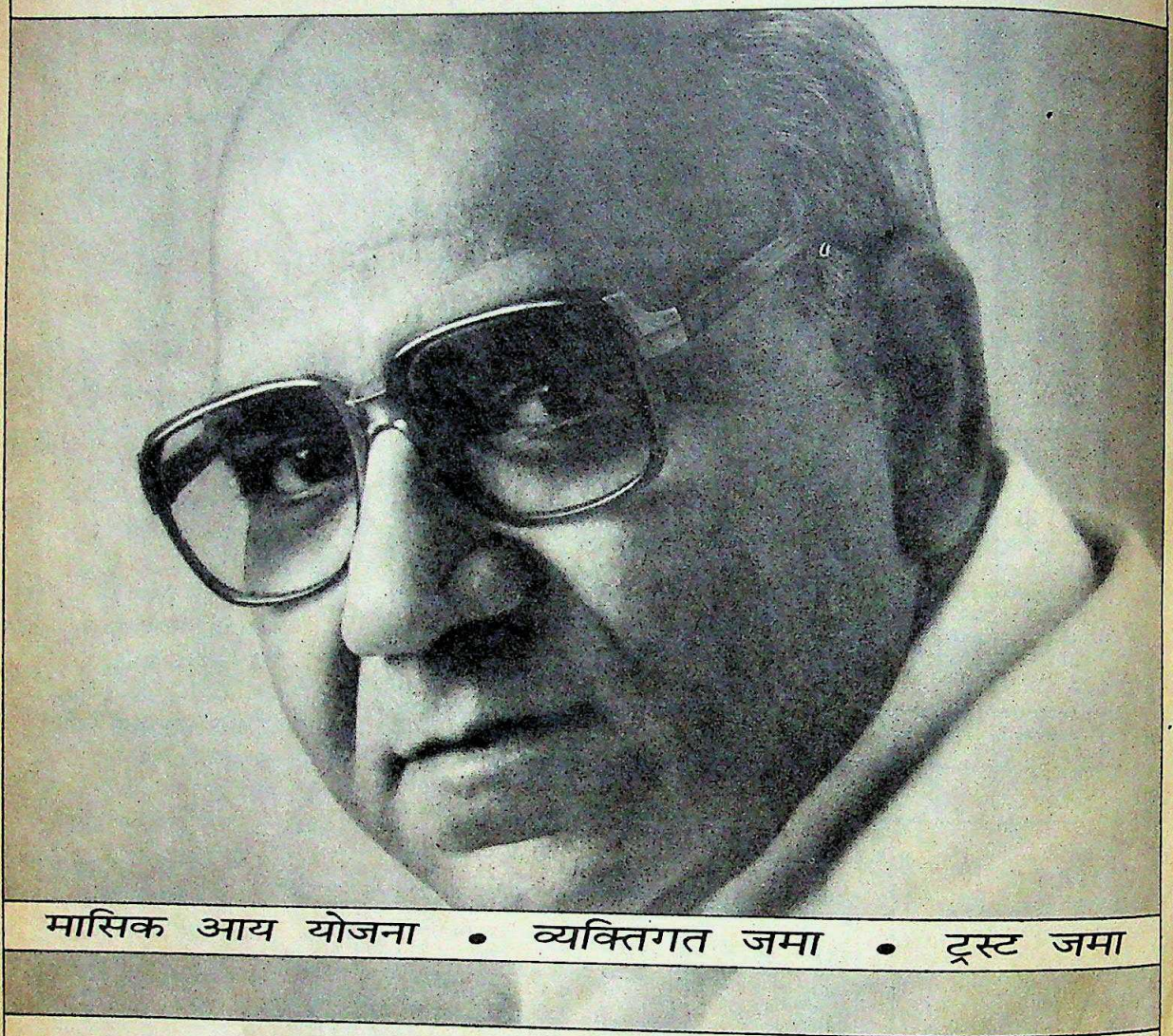

मासिक आय योजना • व्यक्तिगत जमा • ट्रस्ट जमा

क्यूं कि पैसे के मामले में सब से ज़रुरी है उसकी सुरक्षा.

पूंजी की सही देखभाल का गुण एच.डी.एफ़.सी. के लिए कुदरती है. एच.डी.एफ.सी. भारत की सबसे बड़ी ऐसी आवास वित्त संस्था है जो मज़बूत और भरोसेमन्द संस्था के रुप में उभरी है. जिसमें हैं 2000 करोड़ रुपए की परिसम्पत्तियां और 700 करोड़ रु. से ज्यादा की जमा पूंजी के आधार. साथ इस विषय में भरपूर जानकारी और तजुर्बा. यही वजह है कि हमारे यहां पूंजी जमा करने वालों को पूरा भरोसा रहता है कि उनका पैसा सुरक्षित हाथों में है. और यह विश्वास भी कि उन्हें उस पर भरपूर लाभ के साथ पैसे की सुरक्षा और सेवा भी मिलेगी. आइये आप भी जान जाइये इस बारे में! आज ही, एच.डी.एफ़.सी. आकर!

एच·डी·एफ़·सी
हाउसिंग डिवेलपमेंट फाइनेंस कार्पोरेशन लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िस: बम्बई

बचत पर लाभ पाएं, सुरक्षित बनाएं.

यह संक्षिप्त विज्ञापन, अगस्त 1, 1991 को निगम द्वारा प्रकाशित वैधानिक विज्ञापन के बाद प्रकाशित हो रहा है.

बम्बई: (रजिस्टर्ड ऑफ़िस): रेमन हाउस, 169, बैकबे रेक्लेमेशन, बम्बई 400 020. फ़ोन: 225475 (केवल जमा के लिए), 220282 (8 लाइनें). नई दिल्ली: एच.डी.एफ़.सी. हाउस, बी-6/3, सफदरजंग एनक्लेव, डी डी ए कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, (डियर पार्क के सामने), नई दिल्ली 110 029. फ़ोन: 603146/7. कलकत्ता: कुक एण्ड कैल्ली बिल्डिंग, पहली मंजिल, 20, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता 700 001. फ़ोन: 289980 (केवल जमा के लिए), 281981, 282146. मद्रास: 123, मार्शल्स रोड, ऐग्मोर, मद्रास 600 008. फ़ोन: 866574, 869575. अहमदाबाद: फ़ोन: 460480/806/859. बम्बई (परेल): फ़ोन: 4137497 (4 लाइनें). वाशी (न्यू बॉम्बे): फ़ोन: 671206/207. नासिक: फ़ोन: 71492/93. पुणे: फ़ोन: 52493, 55605/905. वडोदरा: फ़ोन: 327326. बंगलूर: फ़ोन: 210438, 214600. कोइम्बतूर: फ़ोन: 34735. हुबली: फ़ोन: 62138. हैदराबाद: फ़ोन: 233875, 237964. कोचीः फ़ोन: 360925, 362302, 363819. तिरुवनंतपुरम: फ़ोन: 77593. तिरुचिरापल्ली: फ़ोन: 44744. विशाखापटनम्, भुवनेश्वर: फ़ोन: 401942 (केवल जमा के लिए), 51942. गुवाहाटी: फ़ोन: 27156 (केवल जमा के लिए), 26795/93. जमशेदपुर: फ़ोन: 28733. चंडीगढ़: फ़ोन: 27932, 40664. इंदौर: फ़ोन: 7784, 7376. जयपुर: फ़ोन: 63895, 64362. कानपुर: फ़ोन: 311468, 310264. लखनऊ: फ़ोन: 247505, 235055.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ULKA-14598-HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंध्र प्रदेश

दबी-दबी सुलगती चिनगारी

अगस्त हत्याकांड में मारे गए आठ हरिजनों को दफनाए जाने के मामले से रेड्डी बहुल चुंदूर गांव में सामाजिक दरार गहराती जा रही है

—सौरिश भट्टाचार्य, चुंदूर में

अतीत अभी भी चुंदूर पर एक स्याह धब्बे की तरह हावी है. आंध्र प्रदेश का धान के हरे-भरे खेतों वाला यह गांव 6 अगस्त को खेली गई खून की होली की याद करके अभी भी सिहर उठता है. उस दिन रेड्डी समुदाय के लोगों ने आठ हरिजनों की हत्या कर दी थी.

और विडंबना यह कि अब विवाद 100 वर्ग फुट की उस जमीन को लेकर उठ खड़ा हुआ है जहां हत्या के तीन दिन बाद गुंटूर के जिला अधिकारियों के सामने मृतकों को, जो तीन-चार पीढ़ी पहले से ईसाई धर्म अपना चुके थे, दफन किया गया था. बेतरतीब घास और झाड़ियों वाली इस जमीन का नाम 'रक्तक्षेत्रम' पड़ चुका है. हथियारबंद पुलिसकर्मी इसके चारों ओर पहरा देते हैं. यह स्थान रेड्डी लोगों के राम मंदिर और शिवालय से केवल 200 मीटर की दूरी पर है.

रेड्डी समुदाय के लोगों में से 219 पर दंगा-फसाद करने से लेकर हत्या तक के आरोप हैं. लेकिन उन लोगों का कहना है कि हरिजन जानबूझकर गांव के धार्मिक स्थलों को अपवित्र करने पर तुले हैं. मृतकों के दफन शरीर को हटाने की मांग करने वाले लोगों का नेतृत्व पास के ही सीतानगरम के कमउम्र स्वामी त्रिदंडी चिन्ना श्रीमन्नारायण रामनुजा जीर स्वामी जी कर रहे हैं.

अपने किशोरवय और नन्हें शिष्यों के वेद पाठ तथा मंत्रोच्चार के बीच उन्होंने बताया, "हरिजनों के पास अपनी कब्रगाह है. उन्होंने मृतकों को वहां दफन क्यों नहीं किया?" स्वामी जी 25 सितंबर और 1 अक्तूबर को गांव का दौरा कर चुके हैं लेकिन हरिजनों ने उनके साथ बात करने से इनकार कर दिया.

बहुजन समाज पार्टी की राज्य शाखा के महासचिव बोज्जा तरकम, जो हरिजनों पर बढ़ते अत्याचार के खिलाफ राज्यव्यापी मुहिम चला रहे हैं, कहते हैं, "मृतकों को कलेक्टर और एसपी की अनुमति से दफनाया गया. स्वामी यह क्यों नहीं बताते कि सबसे नजदीक की कब्रगाह करीब 10 किमी दूर है. हम तो पूरी ताकत से उनका विरोध करेंगे."

उधर, गांव की सामाजिक व्यवस्था में

सभी फोटो: हरद मक्सेना

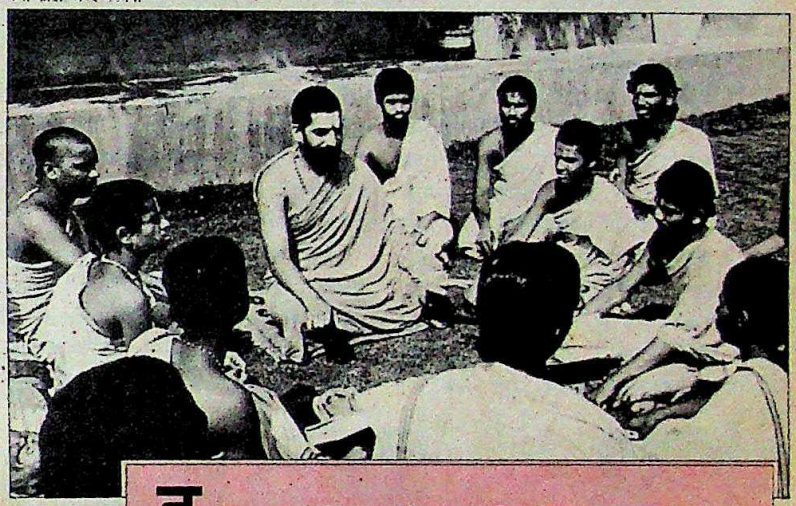

हरिजन कार्यकर्ता तो स्वामी जी के इस आरोप का खंडन करते हैं कि उस जगह मृतकों को दफन करके गांव के धार्मिक स्थलों को अपवित्र करने की कोशिश की गई

अपने शिष्यों के साथ स्वामी त्रिदंडी (ऊपर); विवादग्रस्त जमीन

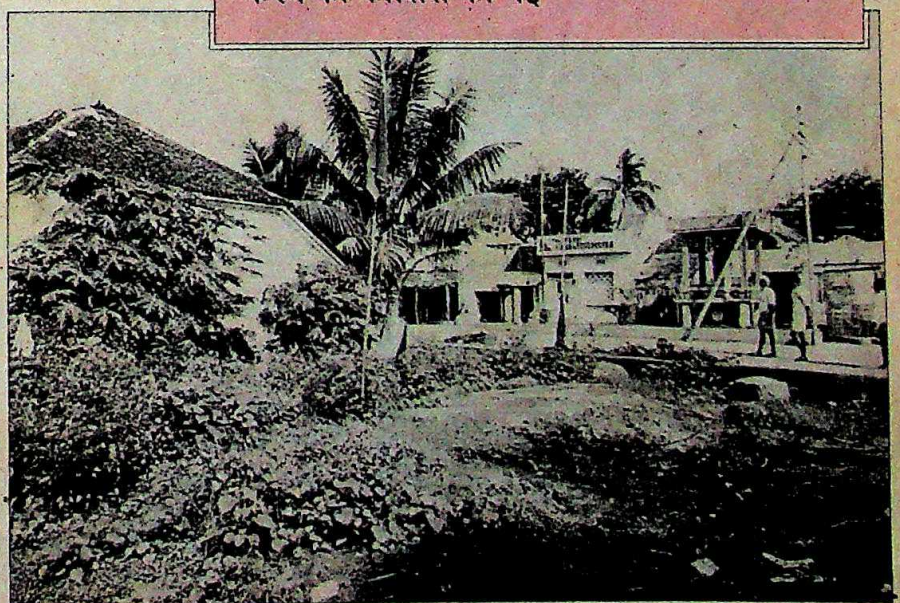

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

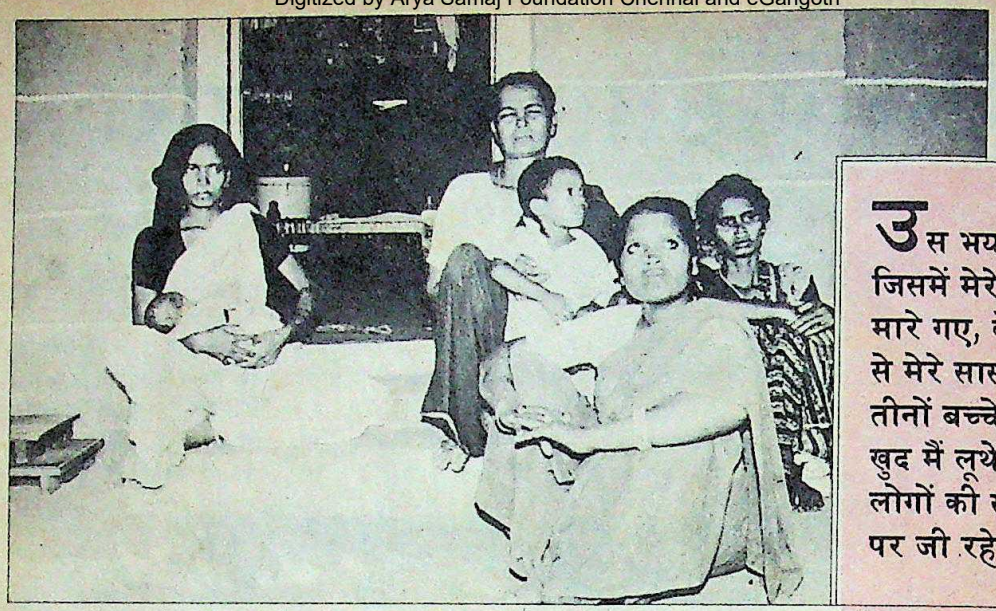

हत्याकांड के शिकार इसाक की विधवा, 23 वर्षीया सामदानम

"उस भयानक रात, जिसमें मेरे पति मारे गए, के बाद से मेरे सास-ससुर, तीनों बच्चे और खुद मैं लूथेरा लोगों की सहानुभूति पर जी रहे हैं"

दरार गहराती जा रही है. रेड्डी लोगों ने अपने खेतों में हरिजनों को काम पर लेना बंद कर दिया है. 35 वर्षीया सरोजिनी रेड्डी नाराजगी से बताती हैं, "हम तो अपना काम धोबियों से करवा रहे हैं." हत्याकांड के बाद हरिजनों के जवाबी हमले में मारे गए मल्ला रेड्डी सरोजिनी के ससुर थे. 6 अगस्त की घटना के लिए सरोजिनी के पति शिव रेड्डी पर भी आरोप लगा है. सरोजिनी के अनुसार, "हरिजन लड़के हमारी लड़कियों को स्कूल जाते समय छेड़ा करते थे. हम कब तक बर्दाश्त करते?"

पर स्वामी जी कहते हैं, "बेरोजगार युवक रेड्डी लड़कियों को छेड़ते भर नहीं थे, वे तो शादी के समय दुलहन को भी उठा ले जाया करते थे." हरिजन नेता आरोपों का खंडन करते हैं.

35 वर्षीया सरोजिनी रेड्डी, जिनके पति शिव रेड्डी का भी नाम पुलिस के पास दर्ज 163 नामों में शामिल है

"हरिजन लड़के स्कूल जाती हमारी लड़कियों से छेड़खानी करते थे. आखिर हम कब तक यह सब बर्दाश्त करते? हम उन्हें कभी काम पर नहीं लेंगे"

मगर हरिजनवाड़ा के लोगों पर रेड्डी समुदाय के बहिष्कार का असर होने लगा है. खेतिहर मजदूर, 23 वर्षीया सामदानम, जिसके 25 वर्षीय पति को पिटाई के बाद गोली मार दी गई, बताती हैं, "उस भयंकर रात के बाद से मेरे सास-ससुर, तीनों बच्चे और खुद मैं लूथेरा लोगों की सहानुभूति पर जी रहे हैं."

रेड्डी लोगों के बढ़ते आक्रामक तेवर ने हरिजनों के मन में इस संशय को और बढ़ा दिया है कि हाल के उपचुनावों में इंका की जीत और राज्य में रेड्डी-बहुल सरकार के होते चुंदूर मामले का कुछ नहीं होगा. वकील तरकम के अनुसार, "न्याय व्यवस्था में हमारी आस्था कैसे हो सकती है, जबकि 1985 के कर्मचेडू हत्याकांड के दोषियों के खिलाफ सुनवाई शुरू ही नहीं हुई है."

लेकिन हरिजनों के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले लोगों का दावा है कि वे हैदराबाद और दिल्ली तक दबाव बनाए रखेंगे. पिछले तीन महीनों से चुंदूर में डेरा डाले दलित महिला संघम की कार्यकर्ता, 22 वर्षीया लीला कुमार के अनुसार, "पुलिस ने मुख्य अभियुक्त उस लंगड़े मल्लिकार्जुन रेड्डी को अभी तक गिरफ्तार क्यों नहीं किया? 200 से भी ज्यादा गवाह सुनवाई की प्रतीक्षा में हैं."

हरिजनवाड़ा के बाशिंदों के लिए वास्तविक चुनौती कर्मचेडू के दुखद अनुभव की पुनरावृत्ति से बचे रहने की है. उनकी इच्छा है कि उनका अतीत सब को यह सबक दे सके कि हरिजनों की सबसे बड़ी सुरक्षा दमन का विरोध करने के आत्मबल में ही है. ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशी हिंदू विश्वविद्यालय

हिंसा का दौर

छात्र संघ चुनाव में विघ्न का अंदेशा

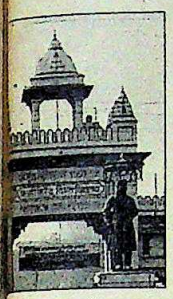

अपनी स्थापना की 75वीं वर्षगांठ मना रहे काशी हिंदू विश्वविद्यालय में 1 दिसंबर को अचानक बड़े पैमाने पर तोड़-फोड़ हुई और कई इमारतों, कार्यालयों में आग लगा दी गई. चिकित्सा विज्ञान संस्थान के सचल चिकित्सा दस्ते के दो वाहनों और उनके लाखों के उपकरण फूंक दिए गए. करीब 35 लोग घायल हो गए. यह सब ऐसे समय में हुआ जब छह वर्षों बाद 11 जनवरी '92 को छात्र संघ के चुनाव कराने की घोषणा हो चुकी है और चुनावी तैयारियां शुरू हो गई थीं.

संकट की शुरुआत तब हुई जब दंगे के कारण महीने भर बंद रहने के बाद 2 दिसंबर को विश्वविद्यालय खुल रहा था और कला संकाय प्रमुख प्रो. एल.के. त्रिपाठी ने बिड़ला छात्रावास को अनधिकृत लोगों के कब्जे से मुक्त कराने के लिए 28 नवंबर को ही एक नोटिस सभी 468 कमरों में डलवा दिया. नोटिस में कहा गया था कि अनधिकृत लोग छात्रावास के कमरे खाली कर दें अन्यथा 1 दिसंबर को प्रशासन खुद ऐसे लोगों का सामान बाहर करके कमरों पर ताला लगा देगा. चीफ प्रॉक्टर डॉ. ओंकार सिंह कहते हैं, "यहीं प्रशासन से गलती हो गई. अनधिकृत ढंग से रहने वालों के कमरों में ही नोटिस डालने थे. छात्रों ने समझा कि पूरा छात्रावास खाली कराया जाएगा. फिर अनधिकृत ढंग से रहने वालों के सरगनाओं को उन्हें भड़काने का मौका मिल गया."

प्रो. त्रिपाठी 1 दिसंबर को जब वार्डन और विश्वविद्यालय सुरक्षाकर्मियों को लेकर आए तो छात्रावास का मुख्य द्वार जंजीर से बांध दिया गया. अंदर करीब दो-ढाई सौ छात्र इकट्ठे हो गए. यह स्थिति देख प्रशासन ने सीआरपीएफ और पीएसी बुलवा ली. छात्र उन्हें देखते ही उत्तेजित हो गए. उधर, छात्र नेता शक्ति सिंह के नेतृत्व में 15-20 लोगों ने छात्रावास के मुख्य द्वार को घेर लिया. तीन-चार घंटे की जद्दोजहद के बाद पुलिस वृत्ताधिकारी विष्ट ने चीफ प्रॉक्टर से कुछ गुफ्तगू की

अग्रवाल स्टूडियो

बिड़ला छात्रावास को घेरे पुलिस; और घायल छात्र नेता शक्ति सिंह

मंसूर आलम

और पुलिसकर्मियों को गेट के भीतर घुसने का आदेश दिया. इधर जंजीर तोड़कर पुलिस अंदर घुसी और उधर जमकर पथराव होने लगा. विश्वविद्यालय के एक कर्मचारी के अनुसार बमों के धमाके हुए और देसी पिस्तौलों से फायर भी किए गए. इस कार्रवाई में अवैध कब्जे वाले 107 कमरों में से मात्र 36 कमरों पर प्रशासन के ताले लगाए जा सके. पुलिस में 17 छात्रों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई जबकि घायल शक्ति सिंह सहित कुछ छात्रों को गिरफ्तार कर लिया गया. दूसरे दिन भी हिंसा और आगजनी हुई.

इस पूरी घटना के बारे में कहा जा रहा है कि कुछ लोग अलग-अलग कारणों से नहीं चाहते कि छात्र संघ के चुनाव हों. इसीलिए वे ऐसी स्थिति पैदा करना चाह रहे हैं कि कुलपति विश्वविद्यालय बंद करने को मजबूर हो जाएं. ओंकार सिंह कहते हैं, "आम छात्र मेरे कदम को उचित मानते हैं. गुंडा तत्व मुझसे नाराज रहते हैं. वे मुझे चीफ प्रॉक्टर पद से हटवाने के लिए यह सब कर रहे हैं. इनमें से ही दो विधायकों (उनका इशारा उ.प्र. विधानसभा के सजपा सदस्य भरत सिंह और ओमप्रकाश सिंह की ओर था) ने कुलपति पर मुझे हटाने के लिए दबाव डाला." दूसरी ओर ओमप्रकाश सिंह के शिष्य कहे जाने वाले शक्ति सिंह का कहना है, "ओंकार सिंह नए कुलपति को यह दिखाना चाह रहे हैं कि विश्वविद्यालय में शांति सिर्फ उनके चीफ प्रॉक्टर बने रहने से ही संभव है."

उधर, इस घटना को विश्वविद्यालय में फल-फूल रहे जातिवाद से जोड़कर देखा जा रहा है. शिक्षक संघ के अध्यक्ष डॉ. हरिकेश बहादुर सिंह कहते हैं, "शिक्षा संकाय में प्रवेश की तिथि बीत जाने पर आठ छात्रों को कुलपति के विशेष आदेश पर दाखिला मिला और इनमें छह एक खास जाति से संबंध रखते हैं." मगर विश्वविद्यालय कार्यकारिणी के सदस्य और प्रौद्योगिकी संस्थान के प्रोफेसर रघुनाथ का कहना है, "कुलपति सब कुछ के बावजूद एक प्रोफेसर हैं और वे इतने संकीर्ण नहीं हो सकते. हां, प्रोफेसरों में भी कुछ निहित स्वार्थी तत्व हैं जो अपना हित साधन के लिए अनर्गल और भड़काऊ बातें किया करते हैं."

बहरहाल, 75 वर्ष पहले पं. मदन-मोहन मालवीय ने जिस उद्देश्य से एशिया के इस सबसे बड़े शिक्षा संस्थान की स्थापना की थी, वह आरोपों-प्रत्यारोपों और हिंसक घटनाओं के कारण लुप्त होता दिख रहा है. —**सियाराम यादव, बनारस में**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिमल मित्र

सही अर्थों में पाठकों के लेखक

—त्रिलोचन

बिमल मित्र उन लेखकों में गिने जाएंगे जो पाठक की रुचि का ध्यान रखते हुए कथावस्तु और घटनाओं का संतुलित तालमेल रखते हैं. लोकप्रियता की दृष्टि से देखा जाए तो बंगला में आशापूर्णा देवी का ही नाम उनके साथ लिया जा सकता है. उनकी कई कृतियों पर फिल्में भी बन चुकी हैं. उनका रचनात्मक कर्म कहानी और उपन्यास इन दो विधाओं में विशेष है. आरंभ में उन्होंने कविताएं भी लिखीं.

हिंदी के पाठकों के लिए भी उनका नाम अनजाना न था. नौकरी के दिनों में वे मध्य प्रदेश के पूर्वी जिलों में कार्यशील रहे. उनकी कृतियों में इसका स्थान की दृष्टि से उपयोग है. उनका उपन्यास 'सुरसतिया' साप्ताहिक हिंदुस्तान में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था. उसके बाद उसकी कहानी के आधार रूप में जिन स्थानों का जिक्र था उन स्थानों में विरोध प्रदर्शन हुए. बिमल बाबू ने विरोध पर ध्यान दिया और पुस्तक में आवश्यक संशोधन कर दिया.

रचनाकार विरोध से अछूता बच जाए ऐसा अक्सर नहीं होता. विरोध यह तो सिद्ध करता ही है कि लेखक पर अधिक लोगों का ध्यान है और वे अप्रिय बातों पर प्रदर्शन आदि तक बढ़ सकते हैं. ऐसी स्थिति में कोई भी लेखक चिंतित हो सकता है. परंतु लेखक के लिए ज्यादा कष्टप्रद होता है यदि उसकी कृति पर कोई ध्यान ही न दे. बिमल बाबू का ऐसे कष्ट से सामना नहीं पड़ा. उनकी पुस्तकों की इतनी खपत थी कि पुस्तक की आवृतियों पर आवृतियां निकलती रहीं.

1954 में जब रांची के प्रसिद्ध लेखक लाल बाबू यानी राधाकृष्ण ने मेरी बेकारी दूर करने के लिए मुझे बुलाकर एक प्रेस की मैनेजरी दिला दी तब मैं लाल बाबू के जरिए ही नगर के कुछ और लेखकों के संपर्क में भी आया. उन्हीं दिनों लाल बाबू ने एक दिन एक बंगला पुस्तक दिखाते हुए कहा आपने क्या 'साहब बीवी गुलाम' पढ़ा है. मेरे इनकार करने पर उन्होंने कहा दो-तीन दिन में मैं दे दूंगा. आप इसे पढ़िए. और उनके आश्वासन पर मैंने उसे पढ़ा भी. मैंने पाया कि पुस्तक पाठक की दृष्टि को बांधे रखती है. कुछ समय बाद इस पर गुरुदत्त ने अपनी पसंद की फिल्म बनाई.

इसके कुछ ही बाद प्रसिद्ध कवि हंस कुमार तिवारी ने इस उपन्यास का अनुवाद हिंदी में किया. हिंदी में इस उपन्यास को प्रशंसा पाठकों के साथ समीक्षकों से भी मिली. धीरे-धीरे बिमल बाबू की रचनाएं हिंदी में इतनी आने लगीं कि लोगों को बिमल बाबू हिंदी के ही लेखक जान पड़ने लगे. हिंदी पाठकों का जितना प्यार बिमल मित्र को मिला वह बंकिम, रवींद्र और शरद के बाद ही आता है. उन्होंने छठे दशक के पूर्वार्ध में नौकरी छोड़कर लेखन से ही निर्वाह करने का व्रत लिया. बंगाल में कोई भी अच्छा लेखक केवल लेखन से ही निर्वाह कर सकता है. हिंदी में यह संभावना अभी दृष्टि से ओझल है. लेखन को जीविका का साधन बना लेने से कुछ भी, कैसा भी लिखना पड़ सकता है. पर बिमल बाबू का एक सामान्य स्तर उनकी हर रचना में मिलता है.

बिमल बाबू ने सौ के लगभग पुस्तकें लिखीं और उनके लेखन की गति तेज ही कही जाएगी. दो-तीन कभी-कभी चार पुस्तकें साल में उनकी आईं. उनके बड़े उपन्यास भी कई हैं लेकिन कथावस्तु की दृष्टि से शिथिलता नहीं मिलती. कथावस्तु की दृष्टि से हिंदी में अमृतलाल नागर का ही नाम सही अर्थों में उनके साथ लिया जा सकता है. हिंदी के अधिकतर उपन्यासकार पाठक का ध्यान न रखकर केवल अपनी रुचि के अनुसार चरित्र को स्वतंत्र न करके मनचाहे रूप से क्रियाशील दिखाते हैं. सन् 40 के बाद से हिंदी में प्रयोगधर्मिता लेखकों को कुछ भी लिखने के लिए उभारती रही. परंतु बंगला में लेखक पाठक की रुचि और प्रवृत्ति का भी ध्यान बराबर रखता रहा है. जबकि विभूति भूषण बंद्योपाध्याय और महाश्वेता देवी के उपन्यासों में भिन्नता विशिष्ट रही फिर भी इनकी रचनाओं में पर्यवेक्षण की सूक्ष्मता के साथ-साथ कथासूत्रों का तार बराबर बना दिखता है.

बिमल बाबू अपने चरित्रों की काल सीमा का सही संदर्भ में ग्रहण करने के विचार से नेशनल लाइब्रेरी में प्रायः जाया करते थे. वे अंग्रेजी और यूरोप के प्रसिद्धतम लेखकों की रचनाओं का भी अध्ययन करते थे. उन्होंने अपने प्रिय लेखकों—डिकेंस, ताल्स्तॉय, दोस्तोएव्स्की आदि के प्रभाव को स्वीकार किया है. अच्छी तरह विचार करने पर उन पर सबसे ज्यादा डिकेंस का ही प्रभाव परिलक्षित होता है. यह प्रभाव स्वीकृत कथावस्तु के स्तर निर्धारण में सहायक माना जा सकता है, कहीं अनुकरण नहीं है. यही कारण है कि भारतीय उपन्यासकारों में उन्होंने अपना विशिष्ट स्थान बनाया. ■

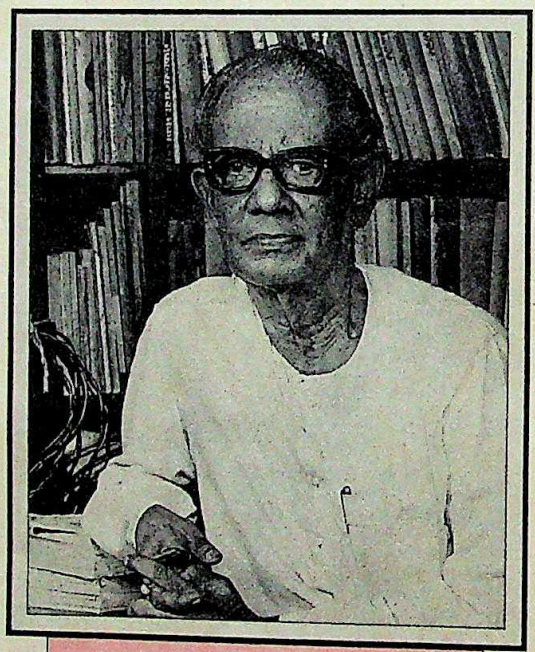

बिमल मित्र उन लेखकों में गिने जाएंगे जो पाठक की रुचि का ध्यान रखते हुए कथावस्तु और घटनाओं का संतुलित तालमेल रखते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय जीवन बीमा निगम की नयी पॉलिसी कहे- "मुझे तुमसे प्यार है!"

जीवन सरिता

यानी श्री-इन-वन योजना

"मैं और मेरी पत्नी... एक दूसरे की खुशी और सुरक्षा के लिए क्या कुछ नहीं करते? और तभी तो हमने ली है विशेष रूप से तैयार की गई भारतीय जीवन बीमा निगम की जीवन सरिता पॉलिसी. जो हम जैसे हर पति-पत्नी के लिए खास तौर से एक आदर्श पॉलिसी है. इसमें संयुक्त जीवन बीमा सुरक्षा के साथ ही हम दोनों को मिलेगा आजीवन पेंशन का लाभ भी! इतना ही नहीं, इस पॉलिसी के ज़रिए हम अपने बच्चों के लिए एक अच्छी खासी रकम का भी इंतजाम कर सकते हैं!

भारतीय जीवन बीमा निगम की जीवन सरिता एक ऐसी जीवन बीमा पॉलिसी जो कहे - "मुझे तुमसे प्यार है!"

जीवन सरिता संबंधी अधिक जानकारी के लिए अपने नज़दीकी भारतीय जीवन बीमा निगम कार्यालय, विकास अधिकारी या एजेंट से मिलिए.

योगक्षेमं वहाम्यहम्

भारतीय जीवन बीमा निगम

daCunha LIC 16 90 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KYOCERA

वाइड एन्गल। स्टैंडर्ड।
क्लोज़ अप। मॅकरो क्लोज़ अप।

नया
याशिका ज़ूमटैक 90

ॲक्शन सीन हो या मुन्नी बिटिया की सालगिरह। अब आधुनिक इन्फ्रा रेड वायरलेस रिमोट कन्ट्रोल से शूट करें।
नया याशिका ज़ूमटैक 90 कॉम्पैक्ट 35mm ज़ूम कैमेरा।
इलेक्ट्रोनिक कन्ट्रोल स्टैपलेस ज़ूम।
वाइड एन्गल (38mm) से टैलिफोटो (90mm) तक,
जैसे चाहे चित्र को फ्रेम करे।
कंटीन्युअस ऑटो फ़ोकस से चित्र हमेशा साफ़।
साथ मॅकरो मोड जिस के सहयोग से आप 50 cms की नज़दीकी से भी चित्र खींच सकते है। याशिका ज़ूमटैक 90 में ये सब सुविधाए। और अगर चाहे तो रिमोट कन्ट्रोल भी।

ज़ूमटैक 90 के अलावा, ज़ूमटैक 80 और ज़ूमटैक 60 भी उपलब्ध।

कैमेरे के आगे से।

कैमेरे के पीछे से।

रिमोट कन्ट्रोल के सहयोग से।

कैमरा हो-तो
याशिका YASHICA

KYOCERA CORPORATION. Optical Equipment Division, 27-8, 6-chome Jingumae, Shibuya-ku, Tokyo 150, Japan.
"YASHICA" is a trademark of KYOCERA CORPORATION.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिकेट

खाता खुलते ही खामी दिखी

ऑस्ट्रेलियाई दौरे पर भारतीय टीम की फीकी शुरुआत

ऑस्ट्रेलिया में क्रिकेट का उपभोक्ता वस्तुओं की तरह प्रचार किया जा रहा है. भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पहले टेस्ट मैच के पहले ब्रिसबेन की सड़कों पर विज्ञापन के बड़े-बड़े बोर्ड लगे थे. उन पर रंग-बिरंगे कपड़े और रत्नजड़ित पगड़ी पहने एक जादूगर का चित्र बना था. उसकी आंखों से अंगारे निकल रहे थे और हाथ कोई करतब दिखाने जा रहे थे. उस जादूगर के आगे दो खिलाड़ी थे. उनमें से एक क्रिस श्रीकांत की तरह लग रहा था जो स्वीप-पुल शॉट मारने की मुद्रा में था और दूसरा कोई स्पिन गेंदबाज था. नारा लिखा था: ऐन इंडियन समर (भारतीय गरमी).

लेकिन भारतीय टीम के प्रदर्शन में कोई गरमी नहीं दिखी. मजबूत मानी जाने वाली भारतीय बल्लेबाजी ऑस्ट्रेलियाई पिचों की उछाल और उसके तेज गेंदबाजों की धार से टकराकर भरभरा गई. भारतीय स्पिन गेंदबाजी कुंद लगी, जबकि उसकी बेहद कमजोर समझी जाने वाली तेज गेंदबाजी ने सबको चकित कर दिया.

तैयारी वाले खेलों से लेकर पहले टेस्ट तक हुई हार से टीम का मनोबल काफी गिरा. ब्रिसबेन टेस्ट में उसकी अपमानजनक हार के बाद तो ऑस्ट्रेलियाई उसे घटिया टीम कहने लगे. लेकिन भारतीय टीम ने जब उन्हें बेंसन ऐंड हेजेज सिरीज में रविवार को 107 रनों से पीट दिया तो वे उसके बारे में राय बदलने को मजबूर हो गए. संजय मांजरेकर और सचिन तेंडुलकर के फॉर्म में आने के शुभ संकेत भी दिखे. दरअसल, पूरी टीम ही फॉर्म में आती दिखी.

लेकिन मध्य क्रम के बल्लेबाजों का प्रदर्शन निराशाजनक दिखा. भारतीय बल्लेबाजी को ग्रहण लगने की वजह भी है. समस्या मानसिक और तकनीकी दोनों है. स्वदेश में कई एकदिवसीय मैच खेलने के बाद यहां पहुंचे भारतीय बल्लेबाज सीमित ओवर की बल्लेबाजी की लय में ही पूरी तरह खोए दिखे. उन्होंने लापरवाही से बल्लेबाजी की, जिसका

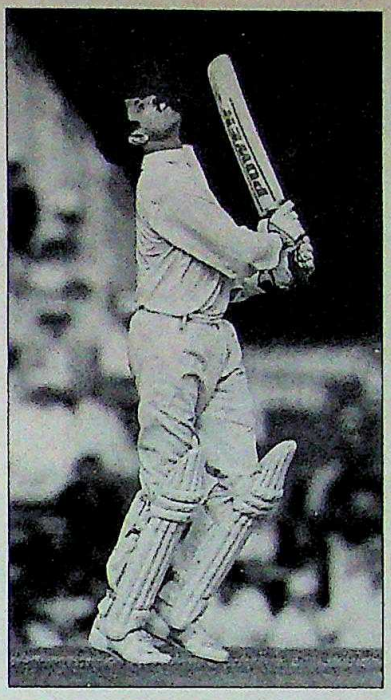

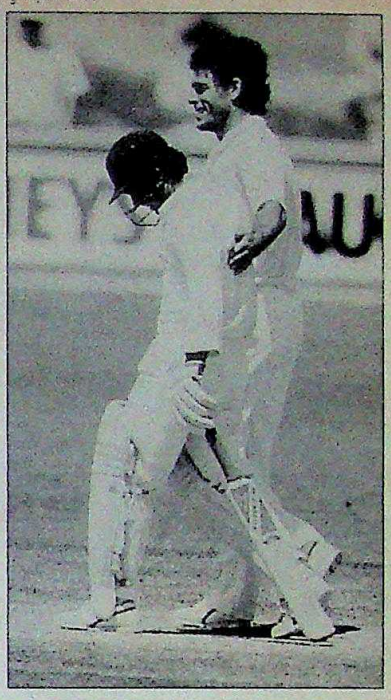

बुनादेव फीचर्स

कपिल; और (दाएं) सचिन को पुचकारते व्हिटनी: कहां गई वो चमक

नतीजा विफलता के रूप में सामने आया.

जब तक यह महसूस किया जाता कि यह अलग तकनीक वाला खेल है, पहला टेस्ट हाथ से निकल चुका था. गब्बा पिच पर, जिसमें उछाल और गति दोनों थी, ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाजों क्रेग मैकडरमॉट और मर्विन ह्यूज ने भारतीय बल्लेबाजी की कमजोरियों को पूरी तरह से उजागर कर दिया. दक्षिण अफ्रीका के पूर्व सलामी बल्लेबाज और अब क्वींसलैंड क्रिकेट एसोसिएशन के मुख्य अधिकारी बैरी रिचर्ड्स ने कहा, "ऑस्ट्रेलियाई विकेटों की उछाल ही भारतीय बल्लेबाजों के लिए सारी मुसीबत खड़ी कर रही है. गेंद बल्ले पर ऊंची और तेजी से आती है. धीमे विकेटों पर खेलने के अभ्यस्त खिलाड़ियों को ऑस्ट्रेलियाई पिचों का अभ्यस्त होने में मुश्किल होती है."

भारतीय बल्लेबाज, जो परंपरागत रूप से कलाई से खेलते हैं, जब फ्लिक करते थे तो गेंद ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों के हाथों में पहुंच जाती थी. गब्बा के पहले टेस्ट में चार बल्लेबाज फार्वर्ड शॉर्ट लेग पर इसी तरह लपके गए. संजय मांजरेकर मानते भी हैं, "हमारी प्रवृत्ति अपने स्ट्रोक में ज्यादातर कलाई के इस्तेमाल की है. लेकिन अब अगर हमें शैली बदलने के लिए कहा जाएगा तो हमारी बल्लेबाजी पूरी तरह से कुंद हो जाएगी."

पिचों ने भारतीय बल्लेबाजों को भले ही मुसीबत में डाला हो लेकिन भारतीय गेंदबाजी को काफी धारदार बना दिया है. लेकिन इसका श्रेय केवल पिचों को देना गेंदबाजों के साथ अन्याय होगा क्योंकि उन्होंने अभी तक जिस सोद्देश्यता और लगन से गेंदबाजी की, उसका अभाव भारतीय बल्लेबाजों में रहा है.

मैसूर के इंजीनियरिंग के छात्र 22 वर्षीय जवागल श्रीनाथ इस दौरे की खोज रहे हैं. लंबे, छरहरे श्रीनाथ कभी-कभी मैकडरमॉट जितनी रफ्तार से ही गेंद फेंकते हैं. वे उतनी ही उछाल भी पाने में कामयाब रहे हैं. उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को बैकफुट पर खेलने को विवश कर दिया. ऑस्ट्रेलियाई कोच बॉबी सिंपसन तक को भी उनकी गेंदबाजी की बारीकियां समझने के लिए कई बार वीडियो रिकॉर्डिंग देखनी पड़ी. कप्तान एलन बॉर्डर का भी मानना है कि ऑस्ट्रेलिया के लिए वे खतरनाक हैं.

हमले की नई तेजी की अगुआई सदाबहार कपिल देव कर रहे हैं. उन्होंने अपना खतरनाक हथियार आउट-स्विंगर फिर हासिल कर लिया लगता है. मनोज प्रभाकर ने अपनी गति में विविधता लाकर और इन-स्विंगर को देर तक हवा में लहराकर ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को परेशान किया. यहां तक कि सुब्रतो बनर्जी ने भी अच्छा प्रदर्शन किया.

लेकिन टीम का क्षेत्ररक्षण शर्मनाक रहा. अजहरुद्दीन को छोड़कर किसी भी खिलाड़ी ने झुककर गेंद पकड़ने और फेंकने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वा स है भा र त के पा स

में अनूठी सफलताएं प्राप्त करने वाले चमचमाते तारा-मण्डल को देखें तो उनमें भारत में जन्मे सितारे भी नज़र आएंगे. वे दीप्तिमान व्यक्ति जिन्होंने , दर्शनशास्त्र, कला और साहित्य को नए शिखरों तक पहुँचाया. खुले आकाश में ऊपर ...और ऊपर जाने की उमंग लिए एक पतंग की तरह. क्योंकि श्वास है हर मुश्किल, हर चुनौती को पार कर सकती है वह. भारत की तरह. भारत बुद्धिजीवी पूँजी से सम्पन्न है, इस बात को समस्त विश्व मानता है. में इसका पूर्ण रूप से सदुपयोग करना है. हिन्दुस्तान लीवर ने ऐसा ही किया.

ति हा स है भा र त के पा स

जैसे पतंग ऊँची उड़ती है, उसे अपनी शक्ति का ज्ञान होता है. वह और ऊपर उठती है. इस विश्वास के साथ कि कोई शक्ति इसकी डोर थामे है, से दिशा देती है. वे हाथ जो समर्थ और कृतसंकल्प हैं. आज भारत का भविष्य योग्य एवं सक्षम हाथों में है. भारत पिछले 60 वर्षों में तकनीकी और क्षेत्र में अपना सामर्थ्य सिद्ध कर चुका है. भारत में विकसित उन्नत अनुवेषणों की सूची विस्तृत और विविध है. परन्तु सफलताओं ने इसे मिथ्या सन्तोष के में नहीं डाला. भारत आज भी सीख रहा है. हर दिन एक नई खोज की शुरुआत है,उत्तमता की ओर उत्कृष्टता पाने के लिए. हिन्दुस्तान लीवर अपनी जयन्ती भारतीय दूरदर्शियों की उपलब्धियों के उत्सव के रूप में मनाना चाहेंगे. वे दूरदर्शी जिन्होंने आकाश की ऊंचाइयां छूने में इसकी सहायता की है.

ा स है भा र त के पा स

पतंग के पास पक्का निश्चय और उचित दिशा हो तो कोई भी ऊँचाई उसकी पहुँच के बाहर नहीं. यही बात भारत के लिए भी ठीक बैठती है. आज भारत एक युग के द्वार पर है, आर्थिक तथा औद्योगिक ऊँचाइयों का युगद्वार. सफलता पाने की सक्रिय शक्ति है भारत के पास,और सफलता उसे मिलेगी. ने हीरक जयन्ती वर्ष में हम भारत की बुद्धिजीवी पूँजी के पोषण और विकास का संकल्प लेते हैं. वैज्ञानिक अनुसंधान, विपणन, वितरण, उर्जा की बचत ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में हमने सदैव प्रेरणा पाई भारत के बुद्धिजीवियों से. अतः अगर हम इस पूँजी में किसी प्रकार भी वृद्धि कर पाएं तो हमारे लिए की बात होगी. क्योंकि यही हमारी सफलता का मापदण्ड भी है.

1931 ★ DIAMOND JUBILEE ★ 1991

HINDUSTAN LEVER

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की चुस्ती नहीं दिखाई. हर मैच के पहले अभ्यास के दौरान भी यह लापरवाही दिखी. उनके इस घटिया प्रदर्शन को देखकर रिचर्ड्स ने टिप्पणी की, "मैच का रुख तो अभ्यास के दौरान ही तय हो जाता है. पता नहीं, भारतीय टीम इस बात को जानती है या नहीं."

आम तौर पर विनम्र रहने वाले अब्बास अली बेग भी टेस्ट मैच के दौरान अपना धैर्य खो बैठे और टीम की खिंचाई कर दी. उन्होंने कहा, "हमारे कुछ वरिष्ठ खिलाड़ियों को गंभीरता से सोचना और खेलना होगा." उनकी कठोर बातों का असर भी हुआ.

पूर्व भारतीय कप्तान सुनील गावसकर ने, जो वहां महत्वपूर्ण तकनीकी जानकारी देने के लिए उपलब्ध थे, श्रीकांत को अपने स्टैंस की चौड़ाई घटाने की सलाह दी. और अजहरुद्दीन को गेंद तक जाने की जगह गेंद का इंतजार करने के लिए कहा. गावसकर मानते हैं, "इस टीम में कोई गंभीर खामी नहीं है. ऐसी कोई खामी नहीं है जिसे अपने कमरों में लौटकर आईने के सामने आधा घंटा अभ्यास करके सुधारा न जा सके."

अजहरुद्दीन का व्यवहार बदला हुआ दिखा. टेस्ट मैच हारने के पहले तक भारतीय कप्तान मदुभाषी रहे और अपनी

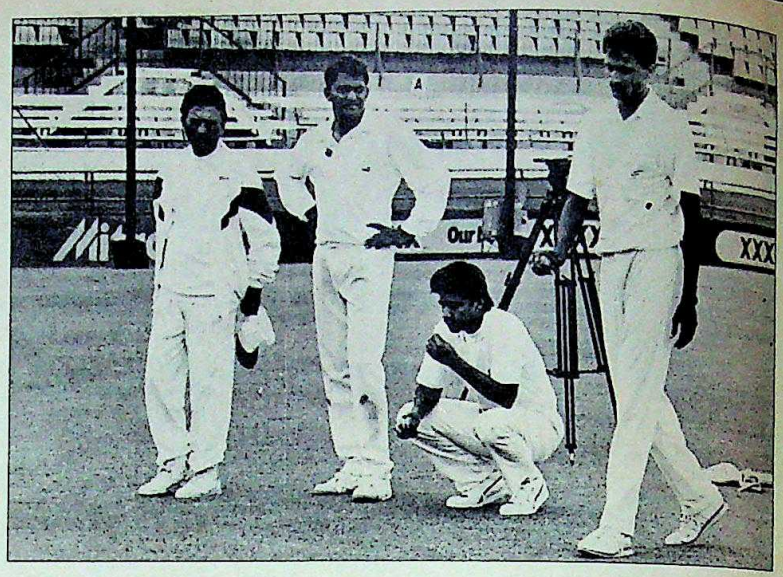

श्रीनाथ, मनोज, अजहर और अब्बास अली बेग: तेज गेंदबाजी में जान

किसी बात या व्यवहार से किसी को आहत नहीं किया. लेकिन अपमानजनक हार के बाद अजहरुद्दीन आग उगलने लगे.

लेकिन लगता है एकदिवसीय मैचों ने भारतीय टीम को वह टॉनिक दे दिया जिसकी उसे जरूरत थी. श्रीकांत फिर अपने फॉर्म में आ गए हैं. और मध्य क्रम बल्लेबाजी संवरती नजर आ रही है. लेकिन यदि टीम को बाकी मैचों में अच्छा प्रदर्शन करना है तो उसके प्रमुख बल्लेबाजों को धैर्य और सजगता से खेलना होगा. क्षेत्ररक्षण में काफी सुधारा लाना होगा. तभी भारतीय गरमी की आंच ऑस्ट्रेलियाई फौलाद को नरम कर पाएगी.

—अयाज मेनन, ऑस्ट्रेलिया में

झलकियां

चैनल का चमत्कार

सत्तर के दशक के अंत में क्रिकेट जगत पर संकट खड़ा करने वाले कैरी पैकर ने भले ही पोलो की ओर रुख कर लिया हो लेकिन उनका चैनल-9 आज भी क्रिकेट के प्रसारण में बेमिसाल है. पिछले पखवाड़े पैकर, जो फेयरफैक्स समाचार पत्र समूह को अपने हाथ में लेने की असफल कोशिश के कारण चर्चा में थे, पोलो खेलने के लिए तुरंत अर्जेंटीना रवाना हो गए. लेकिन चैनल-9 कहीं से भी ढीला नहीं दिखा. वहां दर्जनों कैमरे महत्वपूर्ण कोणों से खेल की हर हरकत को कैद करते रहे, जिसमें 'स्टंप विजन' भी शामिल था जो विकेट में छुपाए गए एक सूक्ष्म लेंस के द्वारा दिखाया जा रहा था. और इसके साथ-साथ गावसकर व टॉनी ग्रेग समेत छह नामी-गिरामी पूर्व कप्तानों की कमेंटरी भी चल रही थी.

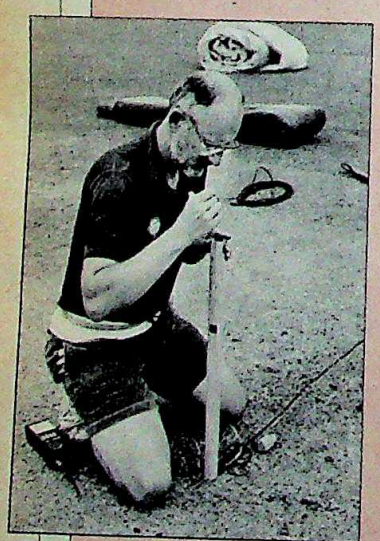

स्टंप में लगा कैमरा

बॉर्डर के साथ गावसकर: नए दूत

तुर्की-ब-तुर्की

भारतीय क्रिकेट के नए दूत की उनकी भूमिका के लिए सुनील गावसकर की पीठ थपथपाई जा रही है. चैनल-9 पर ऑस्ट्रेलियाई कमेंटेटरों के साथ तर्क-वितर्क में उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई पूर्वाग्रह पर जमकर हमला किया, विशेष रूप से मनोज के गेंद फेंकने के संदिग्ध तरीके को लेकर उठे विवाद पर. और पर्थ में तो टीम की मदद के लिए वे नेट पर ही जा पहुंचे. क्या वे क्रिकेट टीम के मैनेजर भी बनना पसंद करेंगे? जवाब में, गावसकर मुस्कराकर रह गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नितिन के. डेविड

कच्ची उम्र, पक्की कला

नौ वर्ष में 25,000 चित्र बनाने वाला फनकार खाड़ी यात्रा पर

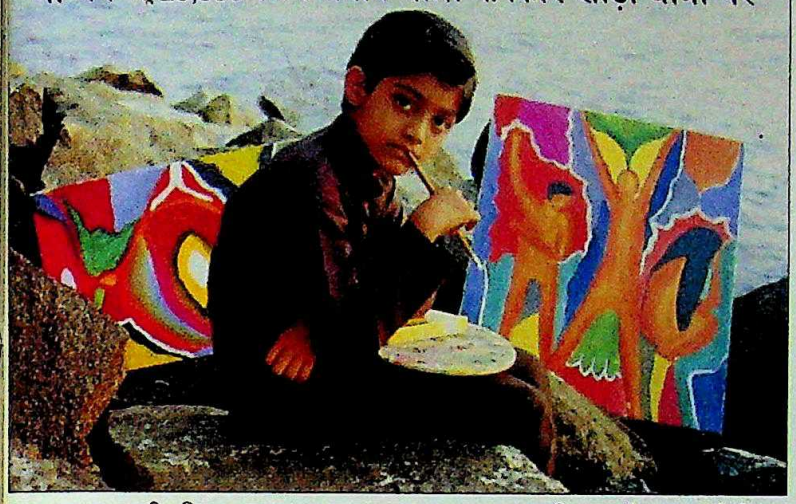

समुद्र तट पर चित्रकारी करता नितिन

यह अलग ही किस्म का सद्भावना प्रदर्शन था. इसी के चलते कलाकार नितिन के. डेविड पिछले पखवाड़े दो महीने की संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा पर रवाना हुआ जहां वह अपने चित्रों की प्रदर्शनी लगाएगा. वह दुबई में बसे मलयाली व्यापारी आर. शिव कुमार का एहसानमंद होगा, जिनकी दो वर्षों की भागदौड़ के बाद यह यात्रा संभव हो पाई. नितिन के कार्यक्रमों का खर्च वहां की सरकार उठाएगी और उसकी विमान यात्रा का खर्च शिव कुमार ने उठाया है.

नौ वर्ष के इस कलाकार की कूंची आश्चर्यजनक चित्र बनाती है. मात्र दो वर्ष की उम्र से ही उसने चित्रकारी शुरू कर दी थी. अभी तक वह 25,000 से अधिक चित्र बना चुका है, जिनमें 1,000 वाटर कलर के और 13 तैल चित्र है. और केरल में क्विलोन का यह अद्भुत बालक अभी भी दनादन चित्र बनाए जा रहा है. पांच वर्ष की उम्र में उसके 40 चित्रों की पहली प्रदर्शनी त्रिचुर में लगी थी.

जब इस बच्चे ने समुद्र तट पर कंकड़ और शंखों के माध्यम से पहली बार एक हैरान करने वाली आकृति बनाई तब उसकी मां विजया और पिता जेवियर डेविड को उसकी प्रतिभा का पता चला. कागज-पेंसिल दिए जाने पर उसने छह घंटे के अंदर 100 रेखांकन करके दिए. जेवियर कहते हैं, "कई बार उसकी कूंची संगीत से भी तेज चलती है."

उसके शुरुआती रेखांकन पशु-पक्षियों के थे. पिछले दो वर्षों में उसने हिंदू और यूनानी मिथकों का चित्रांकन शुरू किया है. ओ.एन.वी. कुरुप जैसे केरल के कवियों की कविताओं को भी उसने चित्रों में उतारा है. उसका एक और बढ़िया चित्र है 'कन्नगी' जो उसने एक नामी तमिल महिला का विवरण पढ़कर ही तैयार किया है. वह कहता है, "कला नैसर्गिक है." यही कारण है कि अच्छी कीमत का प्रस्ताव आने पर भी उसने अपनी कोई तस्वीर नहीं बेची है.

उसे दूसरे तरह की प्रशंसा भी मिली है. कला समीक्षक के.पी. अप्पन कहते हैं, "मैं देवी-देवताओं की उसकी तस्वीरों में भी मावनीय भावनाओं को उभरा हुआ पाता हूं." इस वर्ष के शुरू में केरल के कार्टूनिस्ट वाई.ए. रहीम ने 'नितिन्स एलबम' नाम से उसके श्रेष्ठ चित्रों की किताब प्रकाशित की है. रहीम कहते हैं, "अनेक बड़े कलाकार भी इतनी कुशलता से कूंची नहीं चला सकते."

फिर भी, नितिन आम बच्चों जैसा ही है. उसके सेंट एंथनी सेंट्रल स्कूल के प्रिंसिपल वी. के. जोसेफ कहते हैं, "वह स्कूल के दूसरे बच्चों जैसा ही है—एकदम शरारती. हमें उस पर नाज है." ऐसा मानने वाले वे अकेले नहीं. शिव कुमार कहते हैं, "इस लड़के पर हर मलयाली को नाज है." यह लड़का क्विलोन के वाडी तट पर साधारण-से घर में रहता है. उसके शिक्षक मां-बाप की मासिक आय 4,000 रु. से कुछ अधिक है. —आनंद विश्वनाथन

सभी पेंटिंग नकार

'समुद्री पक्षी'

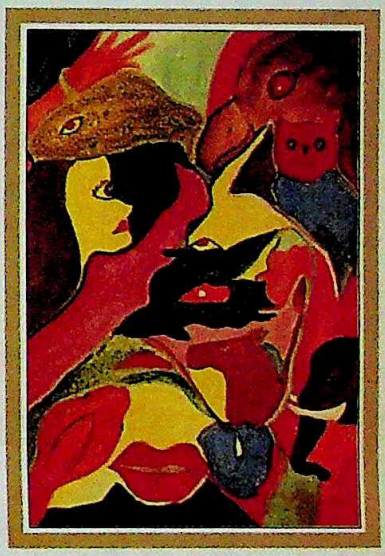

'मानव मस्तिष्क'

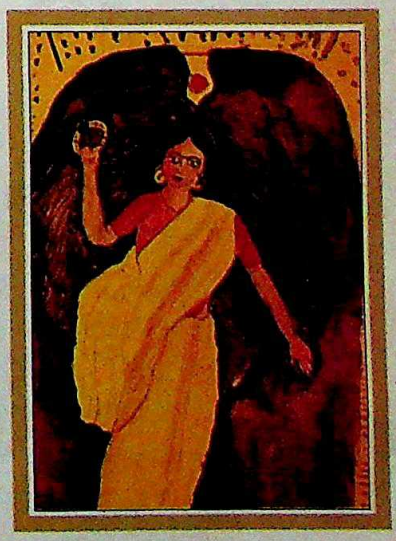

'कन्नगी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्यार क्यों न

शेखावटी के जीते-जागते भित्ति चित्र

अनूठे अहसास के क्षण ही तो राजस्थान का दूसरा नाम है. ■ जीवन के हर रंग और रूप में, हर पल और अनुभव में. ■ राजस्थान की धरती पर छुट्टियाँ बिताने का अर्थ है – इन अहसासों से सीधा साक्षात्कार. ■ इस मरुस्थली की अनुपम रेत जब रोमांच के इस अनोखे अहसास को जीती है तो समय जैसे ठहर सा जाता है. ■ माऊंट आबू के मंदिरों में अद्वितीय नक्काशी का नजारा - एक आत्मविस्मृति भरा अहसास; कहते हैं अग्नि कुल अनुष्ठान जिससे राजपूतों के चारवेश उत्पन्न हुए थे – यहीं सम्पन्न हुआ था: ■ कुंदन की भव्य कारीगरी और चांदी के मनमोहक आभूषण; एक-एक अलंकार को बनाने में लगे छः-छः कुशल स्वर्णकार. ■ और ये कैसा अनूठा अनुभव है जैसे पैरों के नीचे रेत नहीं, समय की परतें हों जो खुल रही हों – परत दर परत ; मन जैसे जैसलमेर के रेगिस्तान की चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार कर रहा हो. ■ तो आइए, पंख लगा उड़ चलें सायबेरिया से लंबी उड़ान भर लौट रहे इन सारसों के साथ, जिन्हें कहीं प्यार मिला तो इसी धरती की मिट्टी पर. ■ झूम-झूम उठें राजस्थान की अनोखी नृत्य कला तेरहताली की लय पर. ■ राजस्थान. ■ जिसके रंगों में जीवन छलकता है ; विविधता छलकती है. ■ खो जाएं राजस्थानी संस्कृति के ऐसे जीवंत अनंत इतिहास में, वर्तमान जिसका अभिन्न अंग है.

VISIT INDIA TOURISM YEAR 1991

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज हो जाए

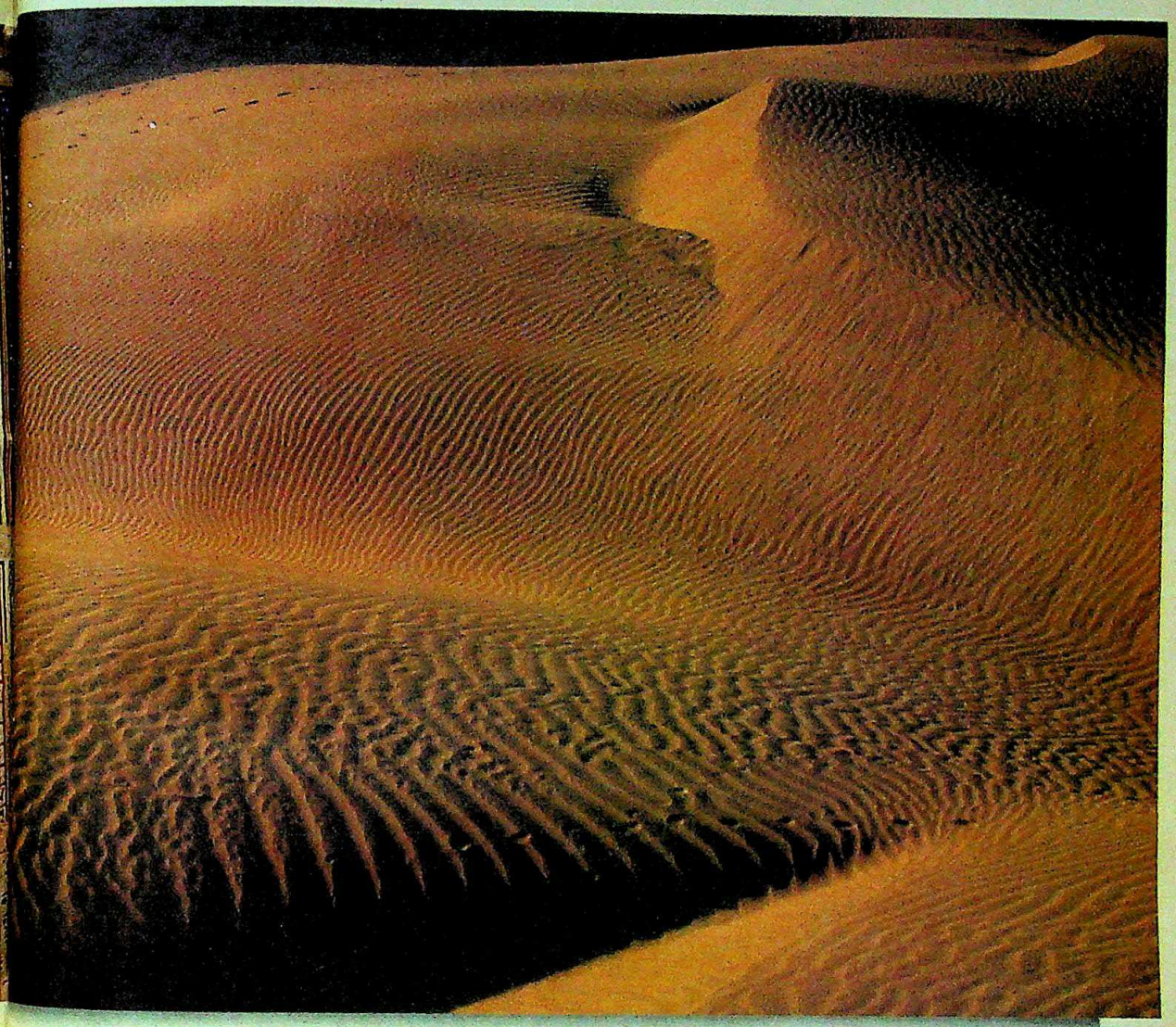

रेगिस्तान का अनूठा संसार

ये अनूठे, अहसास कि विदा लेने को जी न चाहे.

राजस्थान
इतिहास और वर्तमान,
यहां जैसा कहीं नहीं.

आइए, राजस्थान चलें

- **मत्स्य भ्रमण :** जयपुर-सरिस्का-अलवर-डीग-भरतपुर-जयपुर
- **रेगिस्तान भ्रमण :** जयपुर-अजमेर-जोधपुर- ओसियां- जैसलमेर-बाड़मेर-बीकानेर
- **शेखावटी भ्रमण :** जयपुर-सीकर-नवलगढ़-मंडावा-झुंझनू-फतेहपुर-जयपुर
- **'प्रोजेक्ट टाइगर' भ्रमण :** जयपुर-टोंक-रणथम्भौर-जयपुर
- **मेवाड़-हड़ौती भ्रमण :** उदयपुर-चित्तौड़गढ़, मैनाल-बूंदी-कोटा-झालावाड़
- **मेवाड़– माऊन्ट आबू भ्रमण :** उदयपुर-कुंभलगढ़-राणकपुर-माऊन्ट आबू-सिरोही

पधारो म्हारे देश
RAJASTHAN TOURISM

पर्यटन, कला और संस्कृति विभाग
राजस्थान सरकार

दूरभाष : जयपुर 70180, दिल्ली 3322332, बम्बई 2044162, अहमदाबाद 490127, कलकत्ता 279051

RK SWAMY/BBDO RT 6460 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो: नबेल दास

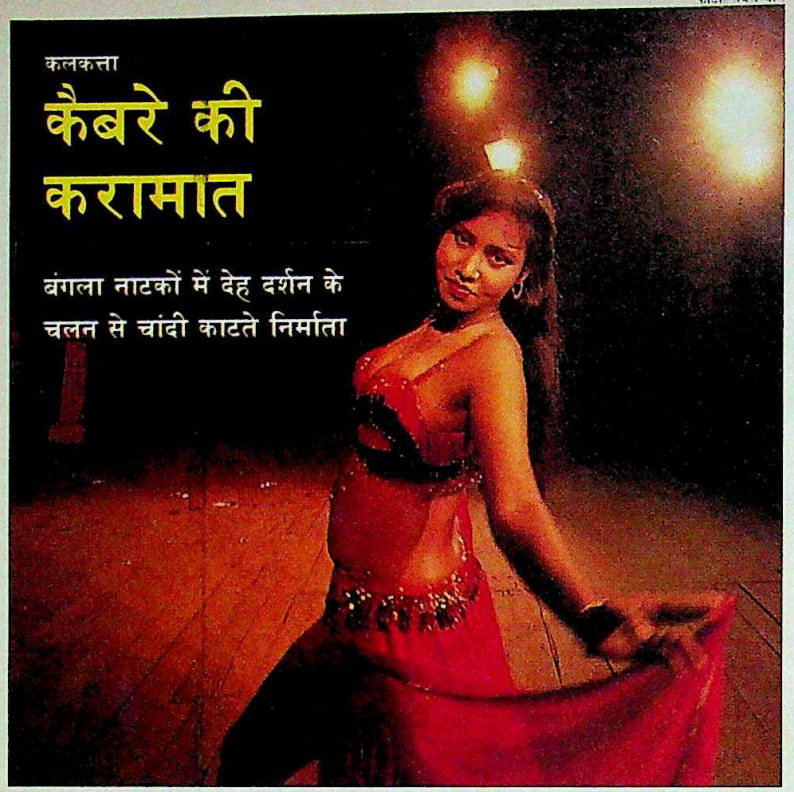

कलकत्ता

कैबरे की करामात

बंगला नाटकों में देह दर्शन के चलन से चांदी काटते निर्माता

कैबरे ही जीवन है. यह मानने वाली सिर्फ लिज़ा मिनेली ही नहीं हैं. व्यावसायिक बंगला रंगमंच पर अर्धनग्न महिलाओं के नृत्य की बाढ़ से कलकत्ता के रंगमंच दर्शक भी यही मानने लगे हैं.

फिलहाल, शहर में प्रदर्शित किए जा रहे नौ नाटकों मे से करीब आधे सेक्सी नृत्यों से भरे पड़े हैं. इनमें 'इज्जत', 'ओरा कारा' (वे कौन हैं?) 'सुधु एकटी रात' (सिर्फ एक रात) और 'संगम' शामिल हैं. प्रचार अभियान से ही यह जाहिर है. 'सुधु एकटी रात' का शीर्षक ही संकेतात्मक नहीं, विज्ञापन तो इससे भी बढ़कर है. रंगमंच के दिग्गज रुद्रप्रसाद सेनगुप्त दुख प्रकट करते हैं, "रंगमंच की पवित्रता नष्ट हो गई है."

यह सही भी है. इनमें नृत्य तो महज उत्तेजना पैदा करने के लिए होते हैं. कहानी से उनका कोई लेना-देना नहीं. नतीजतन, ऐसे सभी नाटक भीड़ खींच रहे हैं. 'इज्जत' के तो 105 सफल प्रदर्शन हो भी चुके हैं. कमनीय काया वाली मिस शेफाली, मिस रेशमा और मिस शोभना के कैबरे के बल पर ही यह नाटक चल रहा है. टिकटों के दाम 7 से 15 रु. के बीच हैं. इसके निर्माता कंचन भट्टाचार्य कहते हैं, "मैंने तहलका मचा दिया है." हर शो में वे करीब 11,000 रु. कमा लेते हैं. अपनी जेब से उन्होंने 40,000 रु. ही लगाए हैं.

'संगम' (ऊपर) और 'इज्जत' में नृत्य

'संगम' के भी 60 प्रदर्शन हो चुके हैं और अभी भी जारी हैं. वजह: इसमें मिस रिंकी, मिस रोमी और मिस प्रोतिमा के कैबरे नृत्यों की भरमार है. 'संगम' के पटकथा लेखक सुनील दास कहते हैं, "नाटक लिखते वक्त मैं मनोरंजन का भी ध्यान रखता हूं."

सेक्सी प्रदर्शन की वजहें भी स्पष्ट हैं. ऐसे नाटक पैसों की बरसात करते हैं. नर्तकी प्रोतिमा कहती हैं, "हमारे कार्यादर्शन से ही नाटकों में भीड़ होती है." और फिर, वाममोर्चा सरकार की ओर से होटलों और रेस्तराओं में कैबरे पर प्रतिबंध लगाए जाने से उत्तेजक प्रदर्शनों के लिए रंगमंच ही बचता है. 'इज्जत' के सहायक निदेशक वरुण घोष बेहिचक मानते भी हैं, "हम इन नृत्यों के चलते चांदी काट रहे हैं." नर्तकियों की भी यही स्थिति है. शेफाली को एक नाटक में प्रति माह 8,000 रु. मिलते हैं. दूसरी नर्तकियां 800 से 1,500 रु. के बीच पाती हैं. लेकिन इनमें बहुत-सी वेश्यालयों में से आने के कारण कम पैसे पर ही सौदा कर लेती हैं.

कई निदेशकों ने भी ऐसे नाटकों की ओर महज इसलिए रुख किया क्योंकि गंभीर रंगमंच के उनके प्रयास विफल रहे. कंचन भट्टाचार्य का नाटक 'जीवन संगिनी' इसकी एक मिसाल है, हालांकि उसमें अच्छे कलाकार भी थे. इसी तरह, 'संगम' के निर्माता आलोक दास को 'सुधु भालोबासा' और 'प्रिया बारबधू' की असफलता के कारण तीन लाख रु. का घाटा उठाना पड़ा. मगर उत्तेजनापूर्ण 'संगम' के चलते वे अपना कुछ कर्ज चुकता कर पाए हैं.

निदेशकों ने नाटकों में कैबरे को शामिल करने का समर्थन किया है. 70 के दशक में 'चौरंगी' नाटक से रंगमंच पर कैबरे की शुरुआत करने वाले निदेशक समर मुकर्जी तर्क देते हैं, "कहानियों की जरूरत के चलते कैबरे का महत्व है."

पर गंभीर किस्म के रंगमंच प्रेमी इससे क्षुब्ध हैं. समकालीन शिल्पी दल के अंबर राय कहते हैं, "फिल्मी गानों की तरह कैबरे नृत्य भी अप्रासंगिक हैं." यहां तक कि नर्तकी शेफाली भी परेशानी में कहती हैं, "अब तो हद हो गई है."

फिर भी, गंभीर रंगमंच अभी बचा हुआ है. मसलन, राम प्रसाद बानिक का नया नाटक 'भालो खराब मेये' (अच्छी बुरी लड़की), जिसमें अपर्णा सेन की भूमिका है, खचाखच भीड़ खींच रहा है.

पर गंभीर नाटक अपवाद ही हैं, भरमार तो नग्नता की है.

—रुबेन बनर्जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबको भाती हैं चटपटी चीजें

तहमीना दुर्रानी से हमें मिलने का शौक था क्योंकि हर तरफ उनकी किताब 'माइ फ्यूडल लॉर्ड' यानी मेरे जमींदार सरताज धड़ाधड़ बिक रही है. तहमीना के चर्चे हर जगह हो रहे हैं, हिंदुस्तान हो या पाकिस्तान. कोई तारीफ करता है, कोई बुराई, तो कोई नफरत की निगाह से देखता है. हमें यह 'किताब' औरत के दृष्टिकोण से अच्छी लगी. इस बात की दाद देनी पड़ेगी कि तहमीना ने घुटन भरे समाज में अपनी निजी और सियासी जिंदगी के बारे में खुलकर लिखा है. किताब में काबिलियत की और कोई बात नहीं. साहित्यिक मूल्य तो दूर की बात, कहीं-कहीं तो लिखाई भी बचकानी-सी है. जैसे गुस्से में किसी स्कूली लड़की ने लिखी हो. यह किताब इतनी तेजी से क्यों बिक रही है, हमारी समझ से बाहर है.

तहमीना आजकल लाहौर में अकेली रहती हैं. उनका घर बहुत ही खूबसूरत तरीके से सजा हुआ है. जब वो हमसे मिलने के लिए अपने कमरे से बाहर आईं तो ढीली-ढाली सफेद कमीज-सलवार पहने रंग-बिरंगे कढ़े हुए कुशन के बीच तसवीर की तरह लग रही थीं. उनके चेहरे पर कुछ डर और कुछ हिम्मत एक साथ नजर आ रही थी. हमने उन्हें बताया कि उनकी तरह हमारी भी पहली शादी 18 साल में हुई और दूसरी बार हमने भी अपने से 20 वर्ष से ज्यादा उम्र के मर्द से शादी की. शुक्र है कि हमारा मियां जमींदार नहीं है. जब हमने बताया कि लोग उनकी बात पर यकीन नहीं करते तो तहमीना ने हंसकर कहा, "हो सकता है मैं कुछ भूल गई हूं लेकिन मैंने कम ही लिखा है, बढ़ा-चढ़ाकर नहीं."

तहमीना दुर्रानी मुस्तफा खर की सातवीं बीवी थीं. किताब में उन्होंने विस्तार से पति के साथ अपनी मुहब्बत और नफरत के किस्से लिखे हैं. खर ने उनको कब, कहां और कैसे मारा-पीटा. हिंदुस्तान, और खास तौर से हिंदुस्तानी मर्दों में इन बातों को कुछ ज्यादा दिलचस्पी से पढ़ा जा रहा है. हम जहां-जहां जाते हैं, इस किताब का जिक्र जरूर होता है. मर्द खर को बुरा-भला कहना शुरू कर देते हैं. "यह कैसा आदमी है जो इस तरह काम करता है," यह जुमला जगह-जगह सुनने को मिलता है. हमें यकीन है कि तहमीना के साथ उनकी हमदर्दी में दरअसल खर से ईर्ष्या है.

वैसे, शेरे-ए-पंजाब खर को हर किस्म के शिकार का शौक है, वह सियासत का हो, औरत का या हिरन का. वे सियासी तौर पर ताकतवर हैं और पंजाब के राज्यपाल रह चुके हैं. तहमीना से तलाक के बाद उन्होंने एक और खूबसूरत 22 वर्षीया लड़की को अपनी आठवीं बीवी बना लिया. कमाल यह है कि जितनी खर की उम्र बढ़ती है, उतनी ही उनकी नई दुलहन की उम्र कम होती जाती है. इस बात के लिए भी हमारे यहां कोई मर्द शायद उन्हें माफ नहीं करना चाहता.

मशहूर अंग्रेजी साहित्यकार टी.एस. इलियट ने एक बार कहा था कि दुनिया में कोई ऐसा मर्द नहीं जिसने अपनी जिंदगी में कम-से-कम एक बार अपनी बीवी को मारने के बारे में न सोचा हो. हम यह कह रहे हैं कि एक तरह से मुस्तफा खर हर मर्द का रूप है. यानी उसमें एक मुस्तफा खर छिपा हुआ है. खर यह सब हरकतें करके बाइज्जत बरी हो जाते हैं. यह बात हमारे यहां के मर्दों को शायद बर्दाश्त नहीं हो रही. या वे सिर्फ मजे ले रहे हैं. और तहमीना से मिलने की कल्पना में खोए हुए हैं. तहमीना ने भी हमें बताया कि उनके पास हर उम्र के मर्दों के फोन मुलाकात के सिलसिले में आते हैं. अब आप हमारा भी मुंह न खुलवाएं, किन-किन लोगों ने हमसे तहमीना से मिलवा देने की इच्छा प्रकट की है. इस सूची में काफी नेता और दूसरी मशहूर हस्तियां शामिल हैं. कुछ तो तहमीना से ज्यादा उसकी छोटी बहन आदिला के ख्वाब देख रहे हैं, जिसकी खूबसूरती और बेवफाई के किस्से किताब में हैं.

तहमीना ने घुटन भरे समाज में अपनी जिंदगी के बारे में खुलकर लिखा है. किताब में काबिलियत की और कोई बात नहीं

किताब बिकने की एक और वजह है, जो शायद सब पर भारी है. किसी दूसरे घर के लड़ाई-झगड़े में हमें बड़ी दिलचस्पी रहती है. ऐसे चटपटे किस्से सुनने के लिए फुरसत ही फुरसत है. सोने से पहले साहित्यिक किताबों के बदले रसीली-रंगीली किताबें पढ़कर नींद बड़े मजे की आती है.

हमारे अपने समाज में हर तरफ तहमीना दुर्रानी हैं. हिंदुस्तान में क्या कम बीवियां अपने पति से मार खाती हैं. जाने क्यों मर्दों को यह गलतफहमी रहती है कि औरत पर हाथ उठाना मर्दानगी और ताकत की निशानी है. जिस जमींदारी जुल्म का जिक्र तहमीना ने किया है वह हमारे यहां उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, और कहां-कहां नहीं होता. हिंदुस्तान में औरतों पर अत्याचार पाकिस्तान के बराबर ही होता है, कम नहीं.

तहमीना ने सियासी भांडे भी फोड़े हैं. यहां भी वही सवाल है. क्या हमारे यहां नेता लोग कम बिकाऊ हैं. अगर खर सिर्फ अपने फायदे की बात सोचते हैं तो हमारे मुल्क में जनता की कौन सोचता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टॉन्सिलाइटिस* से परेशान नन्हे राहुल को ऑपरेशन की सलाह दी गयी।

लेकिन ...

... लेकिन, राहुल तो ऑपरेशन का नाम सुनते ही चीख-पुकार मचाने लगता था। सौभाग्यवश, उसे एक होम्योपैथिक डॉक्टर को दिखाया गया। और तब उसने अनुभव किया होम्योपैथी के सहज उपचार का अनोखा असर। राहत मिली उसे **श्वाब** निर्मित "टॉन्सिऑट्रिन" से। डॉक्टर की सलाह पर ली गई इस होम्योपैथिक दवा से राहुल को जल्द ही काफ़ी फ़ायदा हुआ। न ऑपरेशन की पीड़ा। और न ही अस्पताल की दौड़।

श्वाब — होम्योपैथिक दवाओं के विश्वविख्यात जर्मन निर्माता। जिन्होंने "टॉन्सिऑट्रिन" सहित 2,500 से भी ज़्यादा दवाओं के ज़रिए होम्योपैथी के सहज उपचार को दुनिया के कोने-कोने में प्रचलित किया है। **श्वाब** की दवाएँ रोज़मर्रा की तकलीफ़ों और कई गंभीर बीमारियों में लाभदायक सिद्ध हुई हैं। सभी दवाओं का एकमात्र उद्देश्य है — सहज उपचार। यानि ऐसा उपचार जो बिना किसी दुष्प्रभाव के, जल्द से जल्द, सुरक्षित और स्थायी तौर पर राहत पहुँचाए। होम्योपैथी के सहज उपचार के विषय में अधिक जानकारी के लिए संलग्न कूपन भरकर भेजिए।

तुण्डिका-शोथ

कृपया मुझे अपनी "होम्योपैथी-सहज उपचार का सुखद स्पर्श" नामक मुफ़्त पुस्तिका भेजें।

नाम : _____

पता : _____

_____

पत्र भेजने का पता : मार्किट लिंक्स,
पोस्ट बैग नं.-3582,
लाजपत नगर, नई दिल्ली-110 024. 15

SCHWABE
125 वर्ष

होम्योपैथी —
सहज उपचार का
सुखद स्पर्श।

UNTAS(DELH)WS/5/2837/HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बया

क्षमा शर्मा

संवेदनाओं की सूक्ष्म पकड़ वाली अपनी कहानियों के जरिए क्षमा शर्मा हिंदी साहित्य में अपना स्थान बना चुकी हैं. उनके दो कहानी संग्रह और एक उपन्यास तथा बच्चों से संबंधित तीन पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं. प्रस्तुत कहानी बदलते संदर्भों के साथ रिश्तों में आए मतलबीपन को बखूबी उजागर करती है.

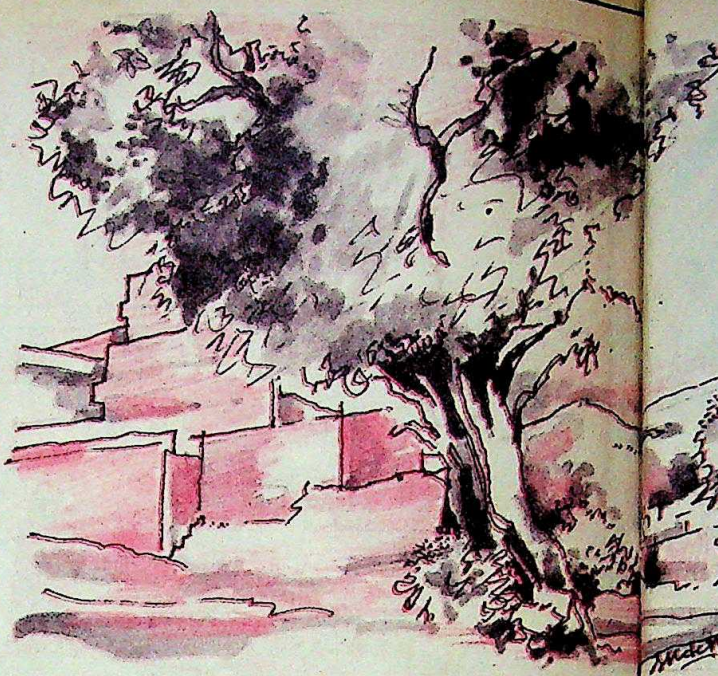

यह जैसे बांहें फैला-फैलाकर बुलाता है. जब इसके पास जाओ तो लतियाने में दो मिनट नहीं लगाता. आंखें तरेरता-सा पूछता है—क्या कहा? मैं बहुत बदल गया हूं? इतने वर्षों में तुम क्या बिलकुल वैसी ही हो.

मेरा शहर पूछता है—तो अब मुझमें बहुत गंदगी नजर आती है. मत भूलो कि इसी गंदगी से निकलकर तुम साफ जगहों में चली गईं और तुमने कभी इधर पलटकर नहीं देखा, कभी नहीं सोचा कि तुम्हारी तरह न जाने कितने बच्चे इसी गंदगी के बीच पल रहे हैं.

कभी अच्छे मूड में हुआ तो लगता है जैसे किसी व्याकुल पिता की तरह धीरे-धीरे पूछता है—कब आई? कैसी हो, कब जाओगी? बाल-बच्चे तो सब ठीक हैं. सच रिपु! आइ लव यू!

और तो और यह नामाकूल शहर अपने आपको झुठलाने भी नहीं देता. वक्त की परतों को इतनी निर्ममता से उधेड़ देता है कि सिवाय छटपटाने के कोई चारा नहीं रहता.

इस शहर ने मुझे क्या दिया है सिवाय उन तकलीफों के जो आज भी याद आती हैं तो मन न जाने कैसी बेचैनी से भर उठता है. और यह कहता है कि मैं तो सिर्फ देता हूं.

क्या दिया है इसने मुझे. एक नौकरी तक नहीं... अपनों से उखाड़ने, अपने अतीत से काटने की साजिश! जानी-पहचानी सड़कों, घर, गलियों, लोगों से दूर फेंक देने के षड्यंत्र.

आइ हेट दिस सिटी.

हूं...हूं...हूं....शहर चुटीली आंखों से घूरता मुझे देखता है. व्यंग्य-सा करता है—रियली, यू हेट मी! ओ बेबी...

मैं अंदर से सहम जाती हूं. क्या वास्तव में मैं इसे हेट करती हूं, कर सकती हूं! मैं चीखना चाहती हूं— नहीं-नहीं तुमसे क्या! आइ हेट एवरी बडी.

शहर पर गुस्सा आता है. एक बुढ़िया की तरह गलियाती हूं—कमीने, नामाकूल, नामुराद, नासपीटे! क्या दिया तुमने मुझे.

शहर मुझे चिढ़ाता-सा हंसता है. फिर गहरी आंखों से पूछता है—बस, तुम्हारा शब्दकोश खाली हो गया. जानती हो इस घृणा का मतलब! कितना चाहती हो तुम मुझे?

फारगेट इट. तुम्हें और चाहना! तुम्हारी याद भर से मेरी आंखें जलने लगती हैं. मैं तुम्हें पसंद करूं, क्यों भला? तुम्हें तो मेरा नाम भी याद न होगा."

मुझे नाम की जरूरत नहीं. मैं आदमी की गति, उसकी परछाईं से उसे पहचानता हूं. यों वैसे भी वक्त की बात है, कौन किसे याद करता है? तुम अपनी ही बात कहो?

मैं! अपनी बात!

और क्या! तुम्हारी मां, उनकी मृत्यु, तुम्हारे पिता अप्पी...कितनी बार याद करती हो तुम उन्हें... कितनी बार? और मुझसे उम्मीद करती हो मैं हर एक को याद रखूं, तुम्हें याद रखूं. कैसे? कितने लोग आए, चले गए, मैं तो वहीं का वहीं रहा. कितना कुछ तो बदल गया. जहां खेत थे वहां मीनारें खड़ी हो गईं. जहां कच्ची पगडंडियां थीं, वे निशान भी मकानों की छातियों के नीचे दब गए. न जाने कितने हंसते-लहलहाते पेड़ सूखे ठूंठों में बदल गए. अस्पताल तो एक ही रहा और कब्रिस्तान एक की जगह चार-चार हो गए. कितना कुछ बदल गया? और तुम!

अपने से बातचीत करती, मैं घर के अंदर जा रही हूं. बेरियां कितनी बड़ी हो गई हैं. शाखाएं दूसरों की दीवारों का सहारा ले उनके आंगन में कूदी जा रही हैं. बेर का मौसम नहीं है पर फिर भी रिपु के मन में आशा है कोई सूखा-सर्रा ही सही मुंह में टपक पड़े. एक शहर रहता है हर वक्त मेरे भीतर, अपना शहर. दूर, इस महानगर से दूर. एक कस्बा.

"भाभी अब भी बया इस पर घोंसले बनाती हैं?"

"अरे भाई कहां! जब अपनी ही बया परायी हो गई तो वह तो पहले ही परायी थी", भाभी आटा गूंथते हुए मजाक करती हैं.

अगर मां की अलमारी खोलो तो शायद अब भी एक-दो घोंसले वहां रखे मिल जाएंगे. मां को कितने अच्छे लगते थे! खास तौर से उनकी बुनावट. बड़े से बड़ा कारीगर भी इतना सुंदर नहीं बुन सकता. वह एक-एक घोंसले को उलटती-पलटती कहती थी.

मां थीं तो आंगन मूली, गोभी, सरसों, पोदीना कितनी तरह की सब्जियों से भरा रहता था.

शादी से पहले लड़कियां शादी के बाद के परायेपन को जान नहीं सकतीं. जब से रिपु आई है, कोई चीज उठाकर खाने तक में उसे डर लगता है. घर जैसे ही मां-बाप से स्थानांतरित होकर भाई-भाभी तक पहुंचता है, सब कुछ बदल जाता है.

"रिपु नाश्ता कर लो," भाभी आवाज दे रही हैं. वह रसोई में बैठती है. मां ने बड़ी-सी रसोई बनवाई थी, जिससे बार-बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

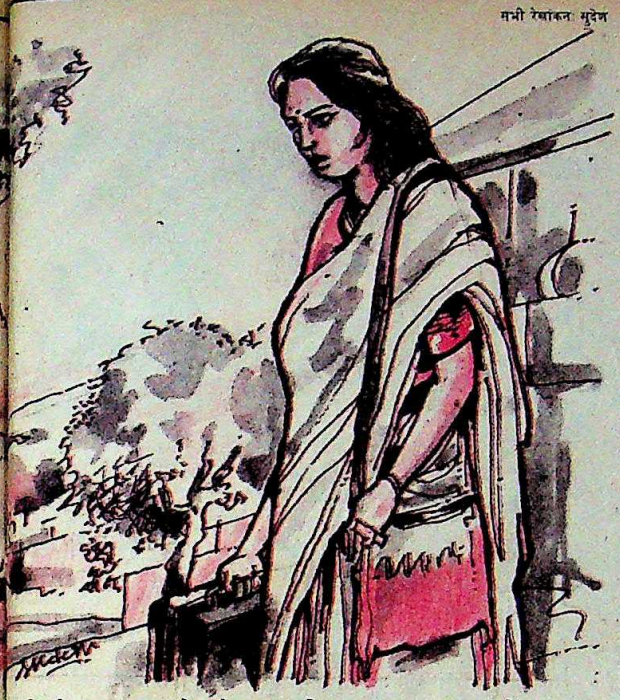
सभी रेखांकन: मुदेश

परोसने न जाना पड़े और सब लोग गरम-गरम खा सकें. पर तब कोई रसोई में बैठता तक न था. सारी रसोई चूल्हे के धुएं से भरी रहती थी. ऊपर की दीवारें ऐसी हो जाती थीं जैसे कालिख पुती हो.

काश! मां के जमाने में गैस होती तो जिंदगी के पैंतीस वर्ष उसने जो इस धुएं में काटे...मगर मां ने शायद धुएं के बारे में सोचा तक न हो. सोचती भी कैसे? रसोई के अलावा और क्या कर सकती थी वह! अपनी तकलीफें कई बार खुद को दिखाई नहीं देतीं, दूसरे ज्यादा अच्छी तरह देख पाते हैं. भाभी परांठा परोसने लगीं तो उसने दोनों हाथों से थाली ढक ली थी.

"अरे बस एक परांठा!"

"ज्यादा भूख नहीं है. भइया और अप्पी कब तक आएंगे?"

"क्या पता. यहां किसी के लौटने का टाइम है!"

"नहीं, बात यह है, सोच रही हूं कल लौट जाऊं."

"आज आई हो और कल लौट जाओगी. क्या विजय जी को एक दिन अलग रहना गवारा नहीं."

कितना कुछ तो बदल गया. जहां खेत थे वहां मीनारें खड़ी हो गईं. जहां कच्ची पगडंडियां थीं, वे निशान भी मकानों की छातियों के नीचे दब गए

"क्या करूं छुट्टी थी नहीं. भइया का पत्र आया कि देखते ही चली आओ. विजय भी हैरत में थे. पता नहीं क्या बात है."

"इन्होंने चिट्ठी लिखकर तुम्हें बुलाया है?"

"तुम्हें नहीं मालूम?"

"ऐसी बातों की हवा भी मुझे नहीं लगने देते. कुछ कहूं तो कहते हैं बीच में मत बोलो, मेरे घर का मामला है."

"मुझे क्यों बुलाया है भइया ने?"

"यह तो अपने भइया से ही पूछना, मगर अप्पी के मारे ही बुलाया होगा."

"अप्पी के मारे? क्या हो गया, तबीयत खराब है उनकी."

"उनकी क्या खराब है, हम सबकी खराब कर रखी है."

"बात क्या है?"

"अपने भइया से मत कहना मैंने बताया है सब कुछ. उस रांड ने न जाने क्या जादू कर दिया है. कभी जलेबी, कभी साड़ी कभी कुछ. बच्चे तक पूछने लगे हैं. और तो और, पड़ोसियों ने तो सिनेमा देखते तक देखा है दोनों को."

"कुछ भी सही भाभी, वह औरत है किस्मत वाली. मां से तो अप्पी ने सिनेमा क्या, कभी दो मीठे बोल भी न बोले होंगे."

"अम्मा जी तो भाग्य में ही लिखाकर ऐसा लाई थीं. पर अम्मा जी क्या! तुम्हारे भइया ही अप्पी से क्या कम हैं? अब जब सारे अड़ोसी-पड़ोसी थूकने लगे तो तुम्हें लिख भेजा. अब भी अप्पी से कुछ नहीं पूछा."

यह अप्पी और इस औरत का क्या चक्कर है? कई संभावनाएं भी अपना आकार लेने लगीं. हो सकता है अप्पी उसे बेटी मानते हों. क्या पता वह उनके किसी दोस्त की विधवा हो. लोगों को तो गलत मतलब निकालते देर नहीं लगती.

भाभी ने खाना पकाकर रसोई साफ कर दी. "चलो तुम्हें अपने खेत दिखा लाऊं. आजकल तो मक्का बोई जा रही है."

मन नहीं था पर रिपु साथ चल दी थी. रास्ते चलते वह सोचती रही. इस गांव को शहर बनने में कितना कम समय लगा—"अपने कलमी आम के पेड़ पर अब भी उतने ही आम लगते हैं."

"कलमी आम का पेड़! वह बाग तो तुम्हारे भइया ने बेच दिया. बाग एक साल तो खूब फसल देता और एक साल कोरा का कोरा, तो क्या फायदा."

"फायदा नहीं, पर पुरखों का बाग था."

"अब पुरखों के नाम पर क्या-क्या रखें?'

"मगर अप्पी कैसे मान गए?"

"क्यों न मानते. तुम्हारे भइया बाग के पैसे कुएं में तो डाल नहीं रहे थे. यूक्लिप्टस फार्म खरीद रहे थे. वह रहा अपना फार्म."

रिपु ने देखा, नुकीले तीर जैसे पेड़ों से भरे कई खेत. खेतों को फार्म कहने से पढ़ा-लिखापन कुछ ज्यादा मालूम होता है.

वह भाभी के साथ-साथ चलती रही थी. "अब तो यही अच्छा है कि अप्पी के पास कोई जायदाद न रहे. जो कुछ होगा उसी पर लुटा देंगे और हमें खड़ा कर देंगे सड़क पर," भाभी कह रही थीं.

"जब आपको नहीं मालूम था तो अप्पी को तो कतई नहीं मालूम होगा कि मैं आ रही हूं."

"हां!"

"मगर मैं अप्पी से क्या बात करूंगी जो भइया नहीं कर सकते."

"बेटी का कुछ तो लिहाज करेंगे. तुम अप्पी को कुछ दिन के लिए अपने साथ क्यों नहीं ले जातीं."

"वह जाएंगे?" रिपु और भाभी लौट रहे थे—"अभी तक तीसरी-चौथी सदी में जी रहे हैं कि बेटी के घर का पानी भी पी लिया तो सीधे नरक में चले जाएंगे."

"अप्पी पुराने जमाने के हैं तो क्या! हम तो नए जमाने के हैं. आजकल लड़का-लड़की में क्या फर्क है?"

यह बात तभी क्यों कही जाती है जब कोई मुसीबत खड़ी हो जाती है. वैसे तो कभी लोग सोचते तक नहीं कि बेटे-बेटी बराबर हैं—बाग बेचा, मां के जेवर बेचे, खेत बेच देंगे, कभी हिस्सा देना तो दूर, राय तक नहीं मांगी और अब...कहीं ऐसा तो नहीं कि अप्पी से पिंड छुड़ाना चाहते हों. अप्पी का रहना तक उन्हें अच्छा न लगता हो. रिपु के दिमाग में न जाने कैसे-कैसे खयाल आते रहे.

रिपु को पता है वह दो साल में क्यों आई है? कभी उसने किसी को बताया नहीं, किसी ने पूछने की जरूरत भी नहीं समझी. पर मां की मौत के कुछ दिनों बाद ही उसने अप्पी की जो हालत देखी थी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

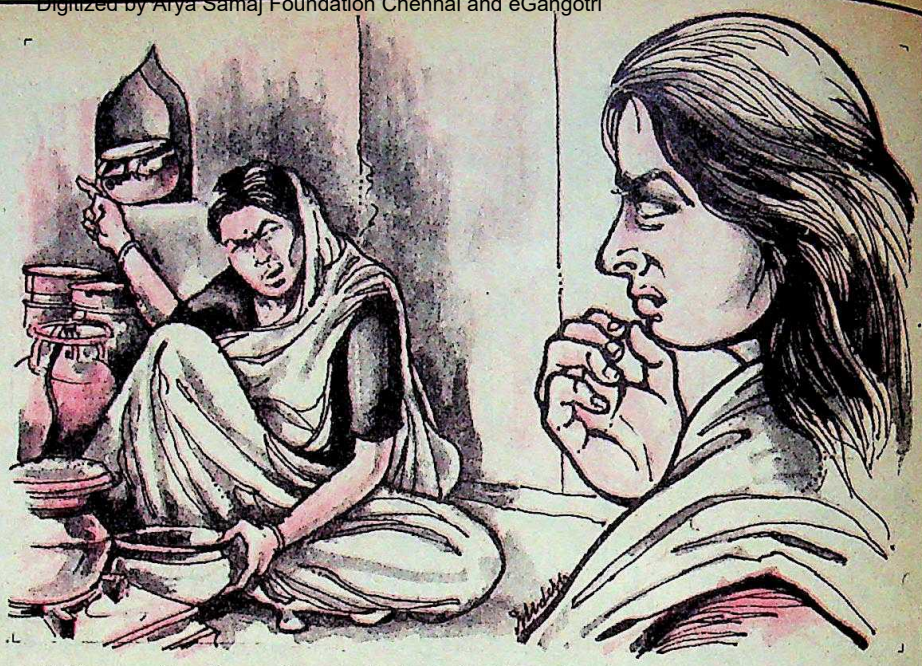

उससे उसका मन खराब हो गया था. उस उमर में भी अप्पी हैंडपंप से पानी खींच रहे थे. सुबह खाने वाले अप्पी को बारह बजे खाना मिलता. भाभी ने अलग ताना सुना दिया था—"मुझे इस घर में क्या मिला है सिवा पिसने के."

तब रिपु को लगा था जैसे उससे ही कहा जा रहा है. ठीक है, इस घर में अब रहा ही क्या सिवा अप्पी के.

रिपु ने अपने मन को टटोला. शायद वह इस बात के लिए उधार खाए बैठी थी कि कोई उसे बुला ले और वह दौड़ी चली जाए. लेकिन यहां आकर लगा जैसे भइया ने वह लाइन तो सिर्फ दिखावे के लिए लिखी थी कि तुम्हें देखे बहुत दिन हो गए हैं. किसी को उसकी जरूरत रही नहीं. वक्त के साथ सबकी जरूरतें बदल गईं और वह उसी वक्त को सीने से चिपकाए फिर रही है. रिपु की आंखें भर आईं.

घर लौटकर भाभी चाय बनाने लगीं तो रिपु ने कहा—"भाभी मैं आज ही लौट जाऊंगी."

"आज ही? तुम्हारे भइया...उनसे नहीं मिलोगी!"

"नहीं, फिर कभी ज्यादा समय के लिए आऊंगी. अप्पी का जहां तक सवाल है मेरे मुकाबले भइया उन्हें ज्यादा अच्छी तरह से समझा सकते हैं."

"अप्पी को तुम्हें एक बात के लिए राजी करना है," भाभी अधूरी बात कहकर चुप हो गईं.

"कौन-सी बात?"

"दरअसल बच्चे बड़े हो गए हैं. अब यहां का माहौल तो तुम्हें पता ही है. हम सोच रहे हैं शहर में मकान ले लें."

"इसमें क्या दिक्कत है. अप्पी क्यों नहीं राजी होते?"

यह बात तभी क्यों कही जाती है जब कोई मुसीबत खड़ी हो जाती है. आम तौर पर तो लोग कभी सोचते तक नहीं कि बेटे-बेटी बराबर हैं

"वह कहते हैं शहर में मकान लो या विलायत में, इस मकान को नहीं बेचने दूंगा."

"तो इसमें क्या गलत है?"

"गलत तो कुछ नहीं. पर मकान बेचकर ही मकान लिया जा सकता है." भाभी की आंखों में शिकार को झपटने से पहले वाला बिल्ली जैसा हिंस्र भाव उतर आया.

अप्पी...बाग...मकान...खेत सबसे बेदखल!

"इस बारे में मैं अप्पी को क्या समझा सकती हूं?"

"देख लो अगर कुछ कह सकती हो तो, नहीं तो हमने तो सोच लिया है चले जाएंगे...रहें अप्पी अकेले इस घर में. खुद पकाएंगे-खाएंगे तो दो दिन में आटे-दाल का भाव मालूम पड़ जाएगा!"

"ठीक है!"

"तुम्हारे भइया ने शायद कागज तैयार कराए हैं. मकान बेचने के लिए तुम्हारे दस्तखत चाहिए. मैंने तो कह दिया हमारी रिपु भाई-भाभी के लिए जान दे देगी. मकान में हिस्सा मांगने की बात तो वह सोच भी नहीं सकती."

सब कुछ तैयार है...बस. बात कहने के लिए इतनी लंबी पृष्ठभूमि...अप्पी और दूसरी औरत...गांव का वातावरण!

"टीवी ने यह तो अच्छा कर दिया. छोटे-छोटे कानून भी सब जान गए हैं."

"हां, सच्ची."

"और उनका गलत इस्तेमाल भी."

"गलत इस्तेमाल?"

"हां, अगर कोई करना चाहे तो. भइया से कहिएगा कागज भेज दें. मैं सिग्नेचर करके वापस भेज दूंगी." रिपु भाभी की बात सुनने से पहले बाहर निकल आई. रिपु चली जा रही है. आसमान पीला हो गया है. हवा बिलकुल बंद है. आंधी आ रही है. रिपु के लिए यह आंधी भी इस गांव में शायद अंतिम हो.

स्टेशन दूर से दिखाई दे रहा है. क्या सचमुच भाभी को चिट्ठी के बारे में नहीं पता था. क्या अप्पी किसी दूसरी औरत के चक्कर में हैं? क्या पता रिपु को कभी सच्ची बात पता नहीं चलेगी. इस शहर की विशेषता है, कभी सच्ची बात सामने नहीं आने देता.

रिपु कोने के पीपल के नीचे खड़ी है. वह ऊपर देखती है. पत्ते थरथरा रहे हैं, उसके होंठ भी. इस कोने से अपना घर साफ दिखाई देता है. जब वह स्कूल के लिए निकलती थी तो मां खड़ी-खड़ी तब तक देखती थी जब तक वह आंखों से ओझल नहीं हो जाती थी...कौन कहता है जाने वाला...अपने साथ कुछ नहीं लेकर जाता... कितना कुछ चला जाता है उसके साथ...अपने घर का, मां के घर का एहसास मां के साथ चला गया है. रिपु की आंखें भर आई हैं...उसे लगता है कोने पर खड़ी मां देख रही है...मां अब कहां...अब तो यह कोना भी किसी और का हो जाएगा.

रिपु और मां, मां और अप्पी, अप्पी और भाई, भाई और भाभी—सब की स्निग्धता मां अपने साथ समेट ले गई है...रिपु झटकती है...वह शहर की तरफ देखती है...सड़कों पर गड्ढे. नहीं वह गिरेगी नहीं...आगे चले, पीछे देखने को अब कुछ नहीं बचा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोदरेज
आपके लिए लाए हैं

आयुर्वेदिक हेअर ऑइल. जानी-मानी और
जांची-परखी जड़ी-बूटियां से बना. जो आपके सर की त्वचा और बालों
को नया जीवन दे. बालों को झड़ने से रोके.

निर्माता - **एस. गोपालकृष्णन नायर**
आर्शिक हर्बल रेमडीज़ (इंडिया), वानचियूर, त्रिवेन्द्रम, पिन ६९५०३५ केरल.

वितरक - **गोदरेज सोप्स लिमिटेड,** बम्बई ४०० ०७९.

भारत-भर के प्रमुख शहरों में उपलब्ध.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता संकलन

आलोक यात्रा

आनंद और अवसाद के अक्स

मुझे और अभी कहना है
गिरिजा कुमार माथुर
भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
कुल पृष्ठः 382; कीमतः 120 रु.

प्रस्तुत संकलन में कवि ने सन् 1939 से 1990 के बीच लिखी अपनी कविताओं में से चुनकर सवा सौ से अधिक कविताएं संकलित की हैं. लेकिन प्रारंभ में ही कवि का जो लंबा वक्तव्य है, वह कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है. इसमें कवि के संस्कार, संवेदन, आत्मदर्प तथा सरोकार—सभी की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है. यह कवि का आत्म-परिचय है.

कवि अपने समय के प्रभुतासंपन्न मुहावरों से पर्याप्त अभिभूत है और साथ ही, वह ज्ञान के आलोक के प्रति खुला भी रहना चाहता है. कवि का यह भी कहना है कि कविता उनकी मुक्ति का माध्यम बनी. लेकिन किन बंधनों से, यह स्पष्ट नहीं है. एक जगह कवि समय और काल का भेद करते हुए समय को 'लौकिक इतिहास' और काल को 'सनातन' कहते हैं. वहीं वे वक्तव्य के अंत में कहते हैं—"मेरी कविता मनुष्य की कालजयी आलोक यात्रा के प्रति समर्पित है." लेकिन कोई भी यात्रा 'कालजयी' कैसे हो सकती है और उसके ऐसा होने के लक्षण तथा प्रमाण क्या हैं. इसका संकेत तक कवि ने नहीं किया है. 'मुक्ति' एक शब्द-फैशन है. कवि भी इसके प्रति उत्तेजित हैं.

यों ये कविताएं पढ़कर तो वक्त में ही फैली हुई रोशनी काफी नजर आती है. लेकिन एक गहरे अवसाद को व्यक्त करती कविताएं भी बड़ी संख्या में हैं, जोकि अपने वक्त का ही अवसाद है. इस प्रकार अंधेरा और उजास दोनों ही 'समय' में हैं. और रोशनी के लिए अंधेरे से तो युद्ध समझ में आ सकता है, पर वक्त से युद्ध? और कवि का धर्म क्या युद्ध है? जाहिर है, यह युद्धवाद या संघर्षवाद, एक विशिष्ट बौद्धिकता एवं मान्यसिकता की रचना है.

संग्रह की कुछेक कविताएं शायद 'रेडियो' के लिए, साधारण भावशक्ति से ही प्रेरित होकर लिखी गई थीं. महात्मा गांधी की मृत्यु पर लिखी कविता 'सायंकाल' बेहद मामूली है, जबकि 'दियाधरी' जैसी लंबी कविता निस्संदेह उत्तम कोटि की है.

माथुर का काव्य सामर्थ्य उत्कृष्ट है. लंबी कविताओं और लघु गीतों दोनों के विधान में उनकी सामर्थ्य प्रकट है. यह सही है कि वे एक बड़े दृष्टा कवि नहीं हैं. दर्शन, इतिहास, साहित्य और समाज का कोई एक व्यापक बोध उनमें नहीं है. लेकिन वे निश्चय ही बहुश्रुत, बहुज्ञ एवं अच्छे कवि हैं.

अपनी लंबी कविताओं में कई जगह वे बहुत वाचाल हो उठते हैं, मानो बतरस में बह चलें हों. इसकी जगह 'दिया-बाती' के अठारहों गीतों में कसाव है. रति-परक बिंबों और भावों की अभिव्यक्ति कवि अधिक अच्छी तरह कर पाते हैं. इतिहास और राजनीति के संदर्भों में वैसी संवेदनात्मक धार नहीं दिखती.

'हम होंगे कामयाब' उत्तम गीतात्मक अनुवाद है. कवि ने मूल रचना का संदर्भ देना आवश्यक नहीं समझा है. 'धूप के धान' और 'शिला पंख चमकीले' संग्रहों से ली गई कविताएं सशक्त हैं. —पंकज

पुस्तक की भूमिका से

"मेरे सारे अभावों की संपूर्ति कविता ने की है. .... कविता को मैं जीवन के आलोक की वाणी मानता हूं. इसीलिए मनुष्य की कालजयी आलोकयात्रा के प्रति मेरी कविता समर्पित है"

—गिरिजा कुमार माथुर

रचनावली

हीरो की छवि

बिस्मिल पर महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ

रामप्रसाद 'बिस्मिल' रचनावली (खंडःएक)
संपादकः **दिनेश शर्मा, आशा जोशी**
संदर्भ प्रकाशन, नई दिल्ली
कुल पृष्ठः 204; कीमतः 110 रु.

काकोरी कांड के हीरो अमर शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल' की 64वीं पुण्यतिथि पर रामप्रसाद 'बिस्मिल' रचनावली (खंडःएक) का प्रकाशन किया गया है. संपादकद्वय दिनेश शर्मा और आशा जोशी ने इसके माध्यम से बिस्मिल के साहित्यिक पक्ष को उजागर किया है.

रचनावली (खंडःएक) में 'बिस्मिल' की आत्मकथा (जो उन्होंने जेल में लिखी थी) तो है ही, इसके अलावा मैनपुरी षड्यंत्र केस के नेता पं. गेंदालाल दीक्षित, देशमान्य बाबू मोतीलाल घोष, देशभक्त बाबू सूफी अंबाप्रसाद और अशफ़ाकउल्ला के बारे में लिखे उनके लेख शामिल किए गए हैं. 'राज्य क्रांति का एक अंक' बंगला से अनूदित लेख है. इसके अलावा जीवनी में केथराइन या स्वाधीनता की देवी और गनीमी युद्ध के नियम नामक युद्ध विज्ञान पर लिखा लेख भी संकलित किया गया है.

बिस्मिल की आत्मकथा—'निज जीवन की एक छटा' (ग्यारह वर्षीय क्रांतिकारी जीवन चरित्र) में 'बिस्मिल' ने अपने जीवन की सफलताओं और कमियों का बड़ी बेबाकी के साथ चित्रण किया है. यह आत्मकथा ब्रिटिश साम्राज्य के दिनों में प्रकाशित हुई थी और ब्रिटिश सरकार ने उसे जब्त भी कर लिया. लेकिन बाद में स्वयं उसका अनुवाद करके उसे फिर प्रकाशित किया और स्थान-स्थान पर 'बिस्मिल' द्वारा किए गए उल्लेखों का खंडन भी उसमें दिया ताकि वास्तविकता को झुठलाया जा सके.

रचनावली में काकोरी षड्यंत्र का संक्षिप्त विवरण और 'शहीद रामप्रसाद बिस्मिल; विशेष परिचय' भी दिया गया है. रचनावली समग्र रूप से 'बिस्मिल' के व्यक्तित्व और रचनात्मक पहलू को जानने में मदद करती है. 19 दिसंबर 1927 को फांसी के फंदे पर झूलने से पहले गोरखपुर जेल से 'बिस्मिल' ने अपनी मां के नाम 'विदाई का संदेश' लिखा था जिसमें युवकों का आह्वान किया गया कि वे उनकी मृत्यु से उत्तेजित न हों. संपादकद्वय ने जिस मेहनत से इस रचनावली को प्रस्तुत किया है उसे अनदेखा नहीं किया जा सकता. निश्चित रूप से वे शाबाशी के पात्र हैं.

—देवेंद्र उपाध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

◆ छोटे परदे के धारावाहिकों में अभिनय का स्तर गिरता जा रहा है. यह नतीजा निकाला है आइएमआरबी के एक सर्वेक्षण ने. एक ही साथ कुटिल और परोपकारी 'मुल्ला नसीरुद्दीन' बने रघुवीर यादव दर्शकों का मन जीतते जा रहे हैं. कहने की जरूरत नहीं कि कद के छोटे इस व्यक्ति की अभिनय प्रतिभा बेमिसाल है. इसी तरह 'उड़ान' की कविता चौधरी 'छुपा रुस्तम' साबित हो रही हैं. 'उड़ान' लोकप्रियता में बस हिंदी फीचर फिल्म के बाद ही है. इसी तरह 'ये दुनिया गजब की' के 'आफसर ऑन स्पेशल ड्यूटी' नवीन शाह दर्शकों को हंसी से लोटपोट कर रहे हैं. धारावाहिक में सरकारी कर्मचारियों पर काफी तीखे कटाक्ष किए गए हैं.

◆ मगर मुल्ला नसीरुद्दीन जल्दी ही विदा होने वाले हैं. उनकी जगह 'हमराही' शुरू हो रहा है. मंगलवार 28 जनवरी से शुरू होने वाला 'हमराही' कुछ उसी तरह का सोप ओपेरा है जिस तरह 'हम लोग' और 'बुनियाद' थे. इसे भी मनोहर श्याम जोशी ने लिखा है. यह अलग बात है कि 'हमराही', 'हम लोग' और 'बुनियाद' की तरह यह लंबा सीरियल नहीं होगा. इसे फिलहाल सिर्फ 13 एपीसोड दिए गए हैं. इसका निर्देशन कुंवर सिन्हा कर रहे हैं जिनका नाम और काम पी. कुमार वासुदेव और रमेश सिप्पी की तरह मशहूर नहीं रहा. फिर भी टाटा का एक समूह इसे प्रायोजित कर रहा है. 'हमराही' में काम करने वाले कलाकारों में प्रमुख हैं—अनंग देसाई, प्यारे मोहन सहाय, हिमानी शिवपुरी और आनंद मिश्र.

◆ नाना पाटेकर ने अपनी बहुमुखी अभिनय प्रतिभा से उस शून्य को भर दिया है. जो नसीरुद्दीन शाह छोड़ गए थे. पिछले पखवाड़े टेलीविजन पर दिखाई गई अरुण कौल की फिल्म 'दीक्षा' में पाटेकर ने ऐसे विनम्र दीन-हीन शूद्र की भूमिका

▲ 'मुल्ला नसीरुद्दीन' में यादवः बेमिसाल अभिनय

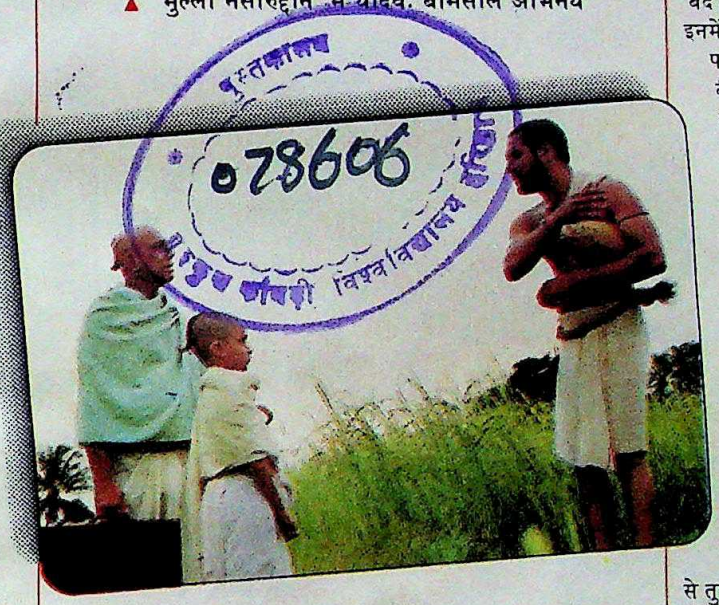

पुस्तकालय 078606 इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय

▲ 'दीक्षा' में पाटेकरः सबसे बाजी मार ले गए

▲ 'उड़ान' का दृश्यः फिल्मों वाली लोकप्रियता

की है, जिसका करुणा भाव एक गर्भवती ब्राह्मण विधवा पर ब्राह्मण समाज के अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने का साहस देता है. एक शूद्र के आत्मबल को परदे पर जीवंत करने में पाटेकर, मनोहर सिंह और के.के. रैना जैसे मंजे कलाकारों से भी बाजी मार ले जाते हैं. उनका दर्द सिर्फ यह नहीं है कि धर्म कितना रुग्ण हो गया है, बल्कि यह भी कि जब समाज से सहिष्णुता का तत्व गायब हो जाए तब क्या होता है.

◆ हिंदी समाचारवाचकों के 'बंद गलों' पर कुछ और खबर! इनमें से कुछ तो इस नए आदेश पर अब तक कुढ़ रहे हैं, क्योंकि बैठे ठाले बंद गले के कोट बनवाने में इतना पैसा खर्च करना पड़ गया. इसके अलावा पहचान का संकट भी उठ खड़ा हुआ है. एक समाचारवाचक की शिकायत थी, "हम बैंड वाले नहीं हैं." समाचारवाचक शम्मी नारंग ने तो अंग्रेजी के समाचारवाचकों की तरह टाई और कमीज पहन-कर एक बार नियम तोड़ा. लेकिन इस बार दूरदर्शन वेशभूषा के मामले में काफी कठोर नजर आ रहा है. अतिरिक्त महानिदेशक की तरफ से तुरंत एक नोटिस जारी हुआ कि हिंदी समाचारवाचक बंद गले के कोट ही पहनें क्योंकि और किसी पोशाक में वे भारतीय नहीं लगते.

◆ दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले चित्रहार में प्रायोजित गीतों का शिकंजा अब ढीला पड़ गया है. अब तक चित्रहार में उन फिल्मों के प्रायोजित गीत दिखा दिए जाते थे जो सेंसर भी नहीं होती थीं. इस तरह निर्माता और वितरक 'अनसेंसर्ड' फिल्मों के गीत दूरदर्शन पर देकर अपनी आने वाली फिल्मों का अच्छा प्रचार कर लेते थे. पर अब दूरदर्शन के नए नियम के तहत चित्रहार में सिर्फ उन्हीं फिल्मों के गीत प्रसारित किए जाएंगे जो सेंसर बोर्ड से पास हो चुकी हैं. जाहिर है, इसके कारण अब प्रायोजित गीतों की संख्या कम हो जाएगी.

—मधु जैन और प्रदीप सरदाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतरंजी चाल के मोहरे

पूजा भट्टः चाबी वाली गुड़िया?

जब से **पूजा भट्ट** ने बी. आर. चोपड़ा को ठीक समय पर उनकी फिल्म छोड़कर 'डिच' किया है, इंडस्ट्री में यह माना जाने लगा है कि वे सिर्फ चाबी की गुड़िया हैं. आजाद-खयाल और खुदमुख्तार होने के जितने दावे वे करती हैं, वो भी उन्हें पापा महेश भट्ट ने ही सिखाया है. नासमझ लड़की की छवि बिंदास बाला की बनाकर उसे सुरक्षित रखने की तरकीब अपनाई है निर्देशक पिता ने.

जुहू के हरे कृष्ण मंदिर में हुए इस मुहूर्त पर आई पूजा से साफ सवाल किया, "सुना है आपने बी. आर. चोपड़ा की फिल्म इसलिए छोड़ी कि उनसे आपके पिता को अपने एक पुराने अपमान का बदला लेना था?"

"मैं अपने फैसले खुद करती हूं," पूजा ने रटे हुए संवाद की तरह, कई बार कही बात का जैसे रिटेक दिया. आगे बोलीं, "मेरे पापा ने फिल्म छुड़वानी ही होती तो वे मुझे भला इसे साइन ही क्यों करने देते?"

यानी फिल्म तो पूजा ने पूछकर ही साइन की थी पर वह शतरंजी चाल पूजा को बताई नहीं गई, जिसका मोहरा उन्हें बनाया गया. फिल्म साइन ही न करने दी जाती तो यह प्रचारित करने का मौका कैसे हाथ आता कि "अब हीरोइनों को बी.आर. के बैनर की कोई परवाह नहीं रह गई है."

टूट गए सपने

स्वप्नाः नया सपना

अभिनेत्री **स्वप्ना** को लेकर रंगीन सपने देखने वालों की दक्षिण से लेकर उत्तर तक कतार लगी है. हिंदी के अलावा इन दोनों क्षेत्रों की भाषाओं में उन्होंने फिल्में की हैं. लेकिन उस दिन फोटो सेशन कराती मिलीं तो तुरंत सारे सपनों पर पानी फेर दिया उन्होंने, "मैं फिल्मों से संन्यास ले रही हूं."

इसकी दो वजहें बताई स्वप्ना ने. एक तो यह है कि इतने बरसों में हिंदी की उनकी कोई फिल्म ऐसी हिट नहीं हो सकी जो उन्हें स्टार बना देती जबकि किसी भी स्टारनी को पटखनी दे सकने की सारी खासियतें— उनमें मौजूद हैं. दूसरी वजह यह कि फिल्म कैरियर जितना मंदा चल रहा है, उनके अपने बुटिक का धंधा उतनी ही तेजी से चल रहा है. इसलिए सपना ने फिल्मों के सपने देखने की जगह बिजनेस को बढ़ाने का फैसला कर लिया है.

तीसरी और सबसे सशक्त वजह बताना स्वप्ना शायद भूल गईं. निर्माता-निर्देशक अनिल शर्मा के साथ घर बसाने का सुनहरा सपना भी तो अनिल की बेवफाई की वजह से चकनाचूर हो ही चुका है.

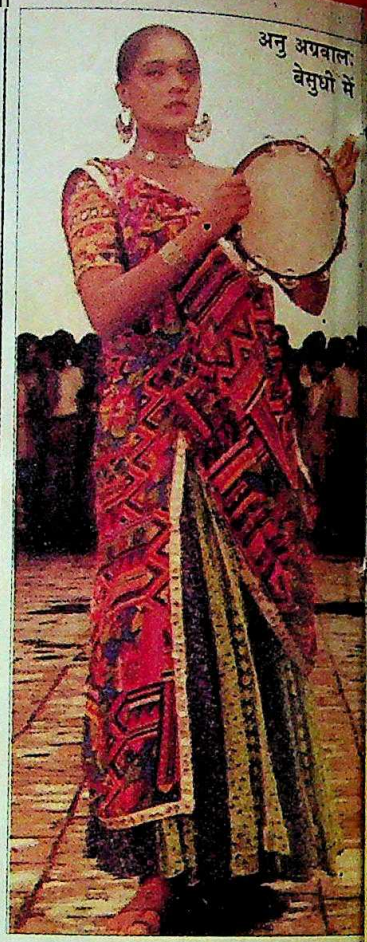

अनु अग्रवालः बेसुधी में

तो क्यों न बहकें?

यह न पूछें कि **अनु अग्रवाल** वहां, उस अनजानी-सी जगह में उस वक्त क्या कर रही थीं? किसके साथ किस हाल में आई थीं और किस हाल में गईं?

जहां सारा माहौल ही नशीला हो, तो अनु क्या करें? दो-चार सुगंधित सुट्टे मार लेने का दोस्तों का अनुरोध आखिर कब तक टाला जाता? वह भी मुंबई से तीन घंटे की कार यात्रा करके पहुंचे अलीबाग के इस समुद्री किनारे पर, जहां एक सिगरेट कंपनी ने जॉज संगीत की मस्ती बिखेर रखी थी. आधी रात हो चली थी और समुद्र तट खाली बोतलों से पट चला था.

अनु इसमें शामिल क्यों थीं, जवाब यही हो सकता है कि शायद अपने जमाने की सुप्रसिद्ध नर्तकी सितारा देवी के इस पुत्र रंजीत की लय-ताल अनु को इतनी पसंद हो जिसके लिए मुंबई से अलीबाग का सफर उन्हें अखरा नहीं. या वापसी में किसी ज्यादा रंगीन प्रोग्राम की प्लानिंग पहले से रही हो. तभी बेसुधों की उस जमात में बेसुध, इस जोड़े को सबसे नजरें बचा, साथ-साथ निकल जाने की सुध खूब रही.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

va Samaj Foundati... eGangotri

...रा वक्त आता है तो ऐसे

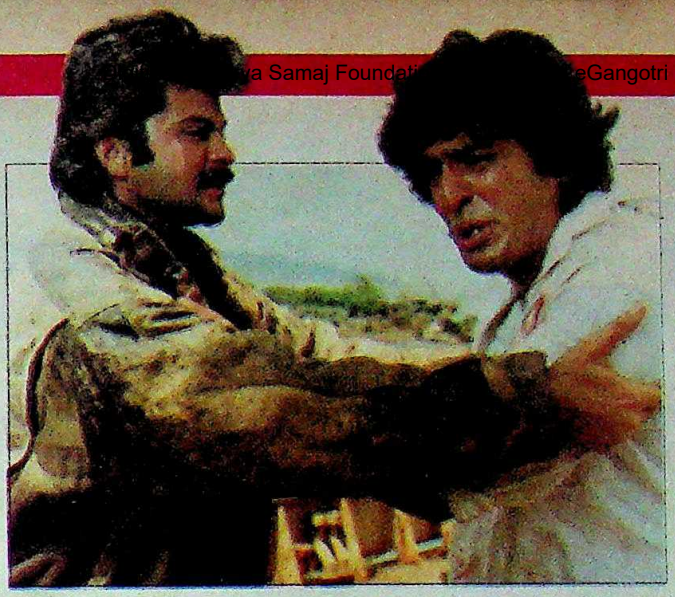

अनिल कपूर: फब्तियों की फुहार

...म्हें' का शानदार ...यर नामचीन थियेटर ...' में जिस शान के साथ ...जित किया गया था, ...कमी थी तो बस एक ...जान की. गुलदस्ते थे, ...इयां थीं, गले मिल-कर शाबाशी देने वाले कथित शुभचिंतक थे, ...क थी, उसे खदेड़ने के ...पुलिस थी पर नहीं था ...स उत्साह.

...ॉफियां लेने-देने का सिलसिला खत्म ...तो **अनिल कपूर** बेचैन नजर आने लगे, ...निकल चलें?"

...तनी जल्दी क्यों थी अनिल को चुपचाप ...जाने की? फिल्म के मुहूर्त के दिन बार-बार फोटोग्राफरों और पत्रकारों के सामने चक्कर काटने वाली चाहत को आज यहां क्या हो गया?

दरअसल फिल्म रिलीज होने के पहले इसके कई शो आपस के लोगों के लिए लगातार रखे गए थे. इन सभी में वे स्त्रियां, जो चाव से फिल्म देखने आई थी, कसैले स्वाद वाला मुंह बिचकाए लौटीं. तभी सब समझ गए थे कि फिल्म में प्रेमिका की हमशक्ल उसकी बेटी से हीरो के ब्याह का वह एंगल कोई पचा नहीं पा रहा जिसका हर किसी ने हर एंगल से विरोध किया था. बुरा वक्त झेल रहे अनिल को प्रीमियर में जिस बात का डर था, आखिर वही हुआ. प्रीमियर के शुरू में चुपचाप सरक लेते तो बेहतर था क्योंकि अब लौटती भीड़ में से फब्तियां कसी जाने लगी थी जो किसी भी नामवर को नागवार गुजरेंगी ही.

सवालों की बारिश

सनी देओल: तब क्या होता?

कई दिन के आराम के बाद **सनी देओल** कमालिस्तान आउटडोर लोकेशन पर आए और आते ही सवालों की बारिश में फंस गए.

"डिपल की बड़ी बेटी ट्विंकल को साइन किया है आपके पापा ने फिल्म के लिए?"

सनी कुछ नहीं समझे. उन्होंने बेखटके अनुमोदन कर दिया, "हां".

"आपके छोटे भाई बॉबी के साथ?"

"हां," सनी चहके. उन्होंने फौरन सुनाया, "जानते हैं, करोड़ रुपए प्रति टेरेटरी तक भाव पहुंचेगा इस जोड़ी के साथ फिल्म का."

"आपकी बेटी जैसी ट्विंकल, बॉबी के साथ हीरोइन?" पूछने वाला कहीं लपक लिया और सनी सोचते रह गए—'वह जवाब लिए बगैर न जाता तब क्या होता?'

फूल बने कांटे

पार्टी जुहू के पांच सितारा होटल में ही हुई थी और 'फूल और कांटे' प्रदर्शित होने की खुशी में दी गई थी. फिल्म की हीरोइन हैं हेमामालिनी की निकट संबंधी **मधु**. वे हेमा के भाई की बेटी हैं और फाइट कंपोजर वीरू देवगन के बेटे अजय के साथ पहली बार नायिका बनकर आई हैं.

सबको उम्मीद थी कि हेमामालिनी जरूर आएंगी. जब देर रात गए तक भी हेमा नहीं आई और मेहमानों ने मधु से कई बार उनके बारे में पूछ लिया, तब मधु की खीझ रुक नहीं सकी. झल्लाकर बोली, "अब भूल भी जाइए हेमा जी को! उनका जमाना लद गया. मैं फिल्म की हीरोइन, मौजूद हूं, क्या इतना काफी नहीं पार्टी की सक्सेस के लिए?"

तो क्या हेमा कांटे की तरह गड़ रही हैं इस फूल को या यह फूल कांटा बन फूल-सी हेमा को चुभ जाने की कोशिश में है?

मधु: फूल और कांटे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेमंत पिठवा

पामेला, करण, नाइटले

हेमंत पिठवा

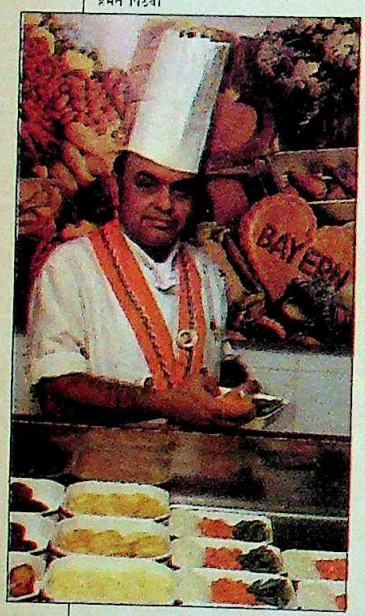

अरोड़ाः सफल प्रयोग

व्यंजनों के नवाब

◆ वे दिलकश और लजीज व्यंजनों के नवाब माने जाते हैं. ताज होटल के प्रमुख शेफ, 44 वर्षीय **सतीश अरोड़ा** की खूबी बंद गोभी और बैंगन का भुर्ता बनाने में है. **'मेंबर्स'** पत्रिका ने उन्हें दुनिया के 20 नामी रसोइयों की सूची में छापा है. गोर्बाचेव, प्रिंस चार्ल्स, मित्तरां, आगा खां, मार्गरेट थैचर और इंदिरा गांधी जैसी कई हस्तियां सतीश की पाक कला का लोहा मान चुकी हैं.

पूछे जाने पर हैरानी जाहिर करते हुए अरोड़ा कहते हैं, "मुझे यह सुनकर सुखद आश्चर्य हुआ है. मुझे तो सिंघाड़ा जैसी नितांत असामान्य चीजों को भी नए रूप में पेश करने में बेहद आनंद मिलता है." यहां तक कि कड़वे करेले को भी वे नहीं बख्शते.

तो क्या वे अगला प्रयोग करेले पर करने जा रहे हैं.

मोहिनी मूरतें

◆ प्रसिद्ध पत्रिका **'फॉर्चून'** ने कभी दुनिया के बेहद अमीर लोगों की सूची प्रकाशित की थी. अब ब्रिटेन की 'टैन' पत्रिका ने चुने हुए 30 'सेक्सी' एशियाइयों के नाम छापे हैं. दिलचस्प बात यह कि स्वनामधन्य **पामेला बॉर्डेस** का नाम भी इस सूची में है. इसमें फोटोग्राफर **करण कपूर**, मॉडल **अल्या नाइटले** और अभिनेता **अयूब खां दीन** भी हैं जिनकी 'मैमी ऐंड रोजी गेट लेड' चर्चित रही थी. 'सेक्सी' की परिभाषा? संपादक

माइकल तरत के अनुसार, "आकर्षक व्यक्तित्व, सफल जीवन और दूसरे एशियाइयों के लिए अनुकरणीय भूमिका का मेल ही" किसी के व्यक्तित्व को 'सेक्सी' बनाता है यानी कसौटी निश्चित ही काफी कड़ी थी.

नई धुन

◆ काले लिबास में नाचता-गाता ऊधम मचाता कौन है वह नौजवान? 29 वर्षीय गज़ल गायक **तलत अज़ीज**, जो एक अलग ही धुन में रमे नजर आ रहे हैं. तलत महेश भट्ट की नई फिल्म 'धुन' के हीरो हैं. उनकी भूमिका एक छोटे शहर से आए युवक की है जो महानगर में संघर्ष करके सफल

अज़ीजः गायकी से दूर

गायक बन जाता है. फिल्म का कथानक क्या आत्मकथात्मक है? बकौल तलत, 'नहीं.यह कस्बे से महानगर आने वाले हर शख्स की कहानी' है. लेकिन अपनी गजल गायकी के भविष्य के बारे में वे कहते हैं, "फिलहाल तो सब कुछ ठप पड़ा है." कहीं उससे मुंह मोड़ लेने का ही इरादा तो नहीं.

कार्टून जयंतो

कायाकल्प की कोशिश?

◆ यह कोई कायाकल्प करने की कोशिश नहीं है. आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. जनार्दन रेड्डी आजकल टी-शर्ट पहने दिखाई देने लगे हैं. पिछले पखवाड़े एड्स के खिलाफ आयोजित एक दौड़ का उद्घाटन करने गए रेड्डी की टी-शर्ट पर एड्स के विरोध में नारा छपा था. एक और मौके पर उन्होंने ऐसी टी-शर्ट पहन ली जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'मैक्डॉवेल' छपा था. यह नामी शराब कंपनी का लोगो था. उद्देश्य कंपनी की शराब का प्रचार नहीं, बस मैक्डॉवेल द्वारा प्रायोजित क्रिकेट मैच का उद्घाटन करना था. उनकी टिप्पणी, "मैं तो बस यूं ही पहन लिया करता हूं और शायद फोटोग्राफरों को अच्छा भी लगने लगता हूं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका प्यारा परिवार... इसके सुरक्षित भविष्य के प्रति आपकी चिंता में कोई और भी साथ है आपके... युनाइटेड इंडिया. हमसे बीमा कराइए. आपके परिवार को भविष्य की चिंता से छुटकारा दिलाने में हम मदद करेंगे.

...क्योंकि युनाइटेड इंडिया को फिक्र बनी रहती है आपकी. आपके कामकाज की सुरक्षा की. बहुत जतन से संजोए आपके साज सामान के संरक्षण की. फिक्र रहती है आपके परिवार की. बल्कि यूं कहिए कि आपके आसपास के पूरे वातावरण की.

सारे देश में फैले अपने करीब 1200 कार्यालयों के ज़रिए आपकी ज़रूरत के वक्त मदद के लिए हम तुरंत पहुंचते है आपके पास. हमारे कार्यालयों में आइए... पूछिए... बताइए. हमें अपने परिवार के सदस्य सा ही समझिए.

युनाइटेड इंडिया
इन्श्यूरेन्स कं. लि.
(भारतीय साधारण बीमा निगम की सहायक कंपनी)
24 व्हाइट्स रोड, मद्रास 600 014.

युनाइटेड इंडिया की
बीमा योजनाएं
जिम्मेवारी सुरक्षा की ■ देखभाल की.

युनाइटेड इंडिया की बीमा योजनाएं हर प्रयोजन के लिए, जैसे : घर, कारखानें, दुकानें, दुर्घटनाएं, विविध तरह की व्यापारिक व ग्रामीण क्षेत्र की गतिविधियां.

HTA 8040

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTERED No. L/NW/FDD/46/87
D—(C) 14/86

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

आई.टी.सी. लिमिटेड का
अपना एक ब्राण्ड
भारत में निर्मित

WILLS
FILTER

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

वैधानिक चेतावनी:
सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri